

जैनचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-घासीलालजी-महाराज-

विरचितया प्रमेयचन्द्रिकाख्यया व्याख्यया समलङ्कृतं

हिन्दी-गुर्जर-भाषाऽनुवादसहितम्

॥ श्री-भगवतीसूत्रम् ॥

(सप्तदशो भागः)

नियोजकः

संस्कृत-प्राकृतज्ञ-जैनागमनिष्णात-प्रियव्याख्यानि
पण्डितमुनि-श्रीकन्हैयालालजी-महाराजः

प्रकाशकः

राजकोटनिवासी-श्रेष्ठिश्री-शामजीभाई-वेलजीभाई वीराणी

तथा कडवीभाई-वीराणी इमारकट्रस्टप्रदत्त-द्रव्यसाहाय्येन

अ० भा० श्वे० स्था० जैनशास्त्रोद्धारसमितिप्रमुखः

श्रेष्ठि-श्रीशान्तिलाल-मङ्गलदासभाई-महोदयः

मु० राजकोट

प्रथमा-आवृत्ति

वीर-संवत्

विक्रम-संवत्

ईसवीसन्

प्रति १२००

२४९८

२०२८

१९७२

मूल्यम्-रु० ३५-०-०

અગવાલું દેખાણું :
 ઈ. ગા. વા. રૂ. ન્યાનકવાસી
 લેનશાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ,
 ઈ. ગરેડિયા કુવા રોડ,
 રાજકોટ, (સૌરાષ્ટ્ર).

Published by :
Shri Akhil Bharat S. S.
Jain Shastrodhara Samiti,
Garedia Kuva Road, RAJKOT,
(Saurashtra), W. Ry, India.



ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां,
जानन्ति ते किमपि तान् प्रति नैष यत्नः ।
उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा,
कालोह्यं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी ॥ १ ॥



हरिगीतचन्द्रः

करते अवज्ञा जो हमारी यत्न ना उनके लिये ।
जो जानते हैं तत्त्व कुछ फिर यत्न ना उनके लिये ॥
जनमेजा मुझसा व्यक्ति कोई तत्त्व इससे पायगा ।
हैं काल निरवधि विपुलपृथ्वी ध्यान में यह लायगा ॥ १ ॥



મૂલ્ય: રૂ. ૩૫=૦૦

प्रथम आवृत्ति प्रत १२००
 वीर संवत् २४६८
 विक्रम संवत् २०२६
 धनवीर १६७२

: સુદ્રઃ :
મણિલાલ છગનલાલ શાહ
નવપ્રભાત પ્રિન્ટીંગ પ્રેસ,
ધીકાંટા રોડ, અમદાવાદ.

श्री भगवतीसूत्र भाग सत्तरहवें की विषयानुक्रमणिका

अनुक्रमांक	विषय	पृष्ठाङ्क
	अठाइसवां शतक उद्देशक पहला	
१	जीवों के पापकर्म समार्जन का निरूपण	१-११
	दूसरा उद्देशक	
२	अनन्तरोपपन्नक नारक जीवों के पापकर्म समार्जन का निरूपण	१२-१६
	तीसरा उद्देशक से ग्यारहवां उद्देशक पर्यन्त	
३	उद्देशकों की परिपाटि का कथन	१७-२०
	उन्तीसवें शतक का पहला उद्देशक	
४	पापकर्म भोगने का एवं उनको नष्ट करने का कथन	२१-३७
	दूसरा उद्देशक	
५	अनन्तरोपपन्नक नारकादिकों को आश्रित करके पापकर्म प्रस्थापन आदि का कथन	३८-४७
	तीसरा उद्देशक से ग्यारहवें पर्यन्तके उद्देशकों का कथन	
६	नैरयिकों के अचरमत्व, पापकर्म भोगने का कथन	४८-६०
	तीसवें शतक का प्रारंभ-प्रथम उद्देशक	
७	जीवों के कर्मबन्ध होने के कारणों का कथन	६१-७४
८	जीवों के आयुबन्ध का निरूपण	७४-९७
९	नैरयिकों के आयुबन्ध का निरूपण	९७-११८
१०	क्रियावादि जीवों के भवसिद्धि आदि होने का कथन	११९-१३३
	३० दूसरा उद्देशक	
११	अनन्तरोपपन्नक नैरयिकों के क्रियावादी आदि होने का कथन	१३४-१४६

तीसरा उद्देशक

- १२ परंपरोपपन्नक नैरयिकों के क्रियावादी
आदि होने का कथन १४७-१४९
- चौथे उद्देशक से ग्यारहवें पर्यन्त के उद्देशक
- १३ उद्देशकों के परिपाटि का कथन १५०-१५४
- इकतीसवें शतक का प्रथम उद्देशक
- १४ चार प्रकार के युगों का कथन १५५-१७६
- दूसरा उद्देशक
- १५ कृष्णलेश्यावाले क्षुल्लक कृतयुगम नैरयिक
आदि के उत्पाद का कथन १७७-१८८
- तीसरा उद्देशक
- १६ नीललेश्यावाले क्षुल्लक कृतयुगम नैरयिक
आदिकों के उत्पात आदि का कथन १८९-१९४
- चतुर्थ उद्देशक
- १७ कापोतलेश्यावाले क्षुल्लक कृतयुगम नैरयिकों के
उत्पात आदि का कथन १९५-२०२
- पांचवां उद्देशक
- १८ भवसिद्धिक क्षुल्लक कृतयुगम नैरयिकों
के उत्पात आदि का कथन २०३-२१०
- छठा उद्देशक
- १९ कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक क्षुल्लक कृतयुगम
नैरयिकों के उत्पात आदि का कथन २११-२१४
- सातवां उद्देशक
- २० नीललेश्यावाले भवसिद्धिक क्षुल्लक कृतयुगम
नैरयिकों के उत्पात आदि का कथन २१६-२१५
- आठवां उद्देशक
- २१ कापोतलेश्यावाले भवसिद्धिक चार उद्देशकों का कथन २१६-२१७

नववे' से बारहवे' पर्यन्त के उद्देशकों का कथन

३२ ३० अभवसिद्धि नैरयिकों के एवं कृष्णादि लेश्या-
युक्त नैरयिकों के उत्पत्ति आदि का कथन २१८-२१९

तेरहवे' से सोलहवे' पर्यन्त के उद्देशकों का कथन

३३ ३२ कृष्णादि लेश्यायुक्त सम्पद्दृष्टि नारकों के
चार उद्देशकों द्वारा उत्पत्ति आदि का कथन २२०-२२३

सत्तरवे' से बीसवे' पर्यन्त के उद्देशकों का कथन

३४ ३३ कृष्णादि चार लेश्यायुक्त मिथ्यादृष्टि
नारकों के चार उद्देशकों द्वारा कथन २२३-

१९ से २४ पर्यन्त के चार उद्देशक का कथन

३५ ३४ कृष्णादि लेश्यायुक्त कृष्णपाक्षिक नैरयिकों
के उत्पत्ति आदि का चार उद्देशक द्वारा कथन २२४-
२५ से २८ पर्यन्त के चार उद्देशकों का कथन

३६ ३५ कृष्णादि चार लेश्यायुक्त शुक्लपाक्षिक क्षुल्लक
कृतयुग्म नैरयिकों का चार उद्देशक से कथन २२५-२२७

वत्तीसवां शतक का प्रथम उद्देशक

३७ ३६ नारकादि जीवों की उद्घर्तना का निरूपण २२८-२३५
दूसरे उद्देशक से २८ पर्यन्त के उद्देशक का कथन

३८ ३७ कृष्णलेश्यावाले कृतयुग्म नैरयिक आदि के
उद्देशकों के निर्देशपूर्वक कथन २३६-२३८

तेतीसवे' शतक का प्रथम उद्देशक

३९ ३८ एकेन्द्रिय जीवों का निरूपण २३९-२४५
दूसरा उद्देशक

४० ३९ अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीवों का निरूपण २४६-२५५
तीसरा उद्देशक प्रथम अवान्तर शतक

४१ ४० परंपरोपपन्नक एकेन्द्रिय से अचरम पर्यन्त के
एकेन्द्रियों का निरूपण २५६-२७५

दूसरा एकेन्द्रिय शतक

- ३२ कृष्णादि लेश्यायुक्त एकेन्द्रिय जीवों का निरूपण २७६-२८८
- तीसरा एकेन्द्रिय शतक
- ३३ नीललेश्यायुक्त एकेन्द्रिय जीवों के उत्पत्ति आदि का निरूपण २८९-
- ३४ कापीतलेश्यायुक्त एकेन्द्रियों के उत्पत्ति आदि कथनयुक्त चतुर्थ शतक २९०-
- पाँचवां एकेन्द्रिय शतक
- ३५ अवसिद्धिक एकेन्द्रियों का निरूपण २९०-२९४
- छठा एकेन्द्रिय शतक
- ३६ कृष्णलेश्यायुक्त अवसिद्धिक आदि एकेन्द्रिय जीवों का निरूपण २९४-३०३
- सातवां एवं आठवां एकेन्द्रिय शतक
- ३७ नीललेश्यायुक्त अवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीवों के एकादश उद्देशात्मक शतक का कथन ३०३-३०४
- ३८ कापीतलेश्यायुक्त अवसिद्धिकों के ग्यारह उद्देशात्मक आठवें शतक का कथन ३०४-३०५
- नववां शतक
- ३९ अवसिद्धिक एकेन्द्रियों का निरूपण ३०५-३०७
- दशवां ग्यारहवां एवं बारहवें शतक का कथन
- ४० कृष्णलेश्यावाले अवसिद्धिका एकादश उद्देशात्मक दसवां एकेन्द्रिय शतक नीललेश्यायुक्त अवसिद्धिक एकेन्द्रियों का ग्यारह उद्देशात्मक ग्यारहवां शतक तथा कापीतलेश्यायुक्त अवसिद्धिकों का बारहवां शतक का निरूपण ३०७-३११
- चौतीसवें शतक का आरंभ
- पहला अवान्तर शतक प्रथम उद्देशक
- ४१ विग्रहगति से एकेन्द्रिय जीवों का निरूपण ३१२-३३२

- ४२ विग्रहगति से जीवों के उत्पात का निरूपण ३३३-३५६
- ४३ रत्नमभापृथिव्याश्रित पृथिव्याद्येकेन्द्रिय
जीवों का निरूपण ३५७-
- ४४ शर्करामभा पृथिव्याश्रित एकेन्द्रिय जीवों के
उत्पात आदि का कथन ३५८-३६८
- ४५ सामान्य से अधःक्षेत्र उर्ध्वक्षेत्र का आश्रय-
करके एकेन्द्रिय जीवों के उत्पात का कथन ३६९-३७४
- ४६ अपर्याप्तक सूक्ष्मपृथ्वीकाय आदि के अधोलोक में
विग्रहगति से उत्पात आदिका कथन ३७५-३९४
- ४७ लोक के पोरस्त्यादि चरमान्त विषय
अपर्याप्तक सूक्ष्मपृथ्वीकायके उत्पत्ति आदि का कथन ३९४-४१४
- ४८ अपर्याप्तक सूक्ष्मपृथ्वीकायिक जीव का लोक के
दक्षिण चरमान्तमें उत्पत्ति आदि का कथन ४१४-४२४
- ४९ वादर पृथ्वीकाय आदि के स्थान आदि का निरूपण
दूसरा उद्देशक ४२४-४४४
- ५० अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रियों के भेद आदि का निरूपण
तीसरा उद्देशक ४४५-४६४
- ५१ परम्परोपपन्नक एकेन्द्रिय जीव के भेदों का निरूपण
चौथे उद्देशक से ११ वें पर्यन्त के उद्देशक का कथन ४६५-४७०
- ५२ अनन्तरावगाढ से अचरम पर्यन्त के जीवों के
भेदों का कथन ४७१-४७२
दूसरा एकेन्द्रिय शतक
- ५३ कृष्णलेश्यायुक्त एकेन्द्रियों के भेदों का निरूपण
तीसरा चौथा और पांचवां शतक ४७३-४७८
- ५४ नील-कापोत एवं शुक्ललेश्यावाले एकेन्द्रिय
जीवों के ग्यारह उद्देशान्मक शतको द्वारा कथन ४७९-४८९

५५	छठा एकेन्द्रिय शतक कुण्डल्यायुक्त भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीवों के भेदों का कथन	४८२-४८९
५६	सातवें से १२ वें पर्यन्त के एकेन्द्रिय शतक नीलादि लेख्यायुक्त भवसिद्धिक एकेन्द्रियों के उद्देशात्मक शतक से निरूपण	४९०-४९६
५७	पैंतीसवां शतक का प्रथम उद्देशक राशि के क्रम से महायुग्मों का निरूपण	४९६-५१४
५८	कृतयुग्म, कृतयुग्म एकेन्द्रिय जीव के उत्पत्ति आदि का निरूपण	५११-५२६
५९	अवशिष्ट पन्द्रह भेद कृतयुग्म योज आदि के उत्पत्ति आदि का निरूपण	५२९-५४३
६०	दूसरा उद्देशक प्रथमसमय कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रिय जीवों के उत्पत्ति का निरूपण	५४४-५४९
६१	तीसरे उद्देशक से ११ पर्यन्त के उद्देशकों का कथन अप्रथम समयादि कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रियों के उत्पत्ति आदि का कथन	५५०-५५४
६२	चरमसमय कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रियों के उत्पत्ति का निरूपण	५५५-५५७
६३	अचरमसमय कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रियों के उत्पत्ति का निरूपण	५५७-५५८
६४	प्रथमसमय प्रथमसमय कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रिय के उत्पत्ति का निरूपण	५५९-५६०
६५	प्रथमअप्रथमसमय कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रिय के उत्पत्ति का निरूपण	५६०-५६२
६६	प्रथमचरमसमय कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रिय जीवों के उत्पत्ति का निरूपण	५६२-५६३

- ६७ प्रथमअवरसमय कृतयुग कृतयुग एकेन्द्रिय
जीवों के उत्पत्ति का निरूपण ५६४-५६५
- ६८ चरमचरम, एवं चरम अवरसमय कृतयुग
कृतयुग एकेन्द्रिय जीवों के उत्पत्ति का निरूपण ५६६-५६९
- ६९ दूसरा एकेन्द्रियमहायुग शतक
- ७० कृष्णलेखावाले कृतयुग कृतयुग एकेन्द्रिय
जीवों के उत्पत्ति का निरूपण ५७०-५७४
- ७१ प्रथमसमय कृष्णलेखावाले कृतयुग कृतयुग
जीवों के उत्पत्ति का निरूपण ५७४-५७८
- तीसरा एकेन्द्रिय महायुग शतक
- ७२ नीललेखायुक्त कृतयुग कृतयुग एकेन्द्रिय
जीवों के उत्पत्ति का निरूपण ५७९-५८०
- चतुर्थ एकेन्द्रिय महायुग शतक
- ७३ कापोतलेखायुक्त कृतयुग कृतयुग एकेन्द्रिय
जीवों के उत्पत्ति का निरूपण ५८१-
- ५ से १२ पर्यन्तके एकेन्द्रिय जनक
- ७४ भवसिद्धिक कृतयुग कृतयुग एकेन्द्रिय
जीवों के उत्पत्ति का निरूपण ५८२-५८५
- ७५ कृष्णलेखानाले भवसिद्धिक कृतयुग कृतयुग
एकेन्द्रिय जीवों की उत्पत्ति का निरूपण ५८६
- ७६ नीललेख भवसिद्धिक कृतयुग कृतयुग एकेन्द्रिय
जीवों की उत्पत्ति का निरूपण ५८७
- ७७ कापोतलेखावाले भवसिद्धिक कृतयुग कृतयुग
एकेन्द्रियों की उत्पत्ति का निरूपण ५८८-५८९
- ७८ अभवसिद्धिवाले के चार शतकों का कथन ५८९-५९०
- छत्तीसवें शतक में प्रथम द्वीन्द्रिय
महायुग शतक के प्रथम उद्देशक

- ७८ कृतयुगम कृतयुगम त्रीन्द्रिय जीवों के
उत्पत्ति का निरूपण ५९१-५९७
२ से ग्यारह पर्यन्त के उद्देशक
- ७९ प्रथमसमय कृतयुगम कृतयुगम द्वीन्द्रिय
जीवों के उत्पत्ति का निरूपण ५९८-६०३
२ से ४ द्वीन्द्रिय महायुगम शतक
- ८० कृष्णछेयावाले कृतयुगम कृतयुगम द्वीन्द्रिय
जीवों के उत्पत्ति का कथन ६०४-६०६
५ से १२ पर्यन्त के द्वीन्द्रिय महायुगम
शतकों का कथन
- ८१ भवसिद्धिक कृतयुगम कृतयुगम द्वीन्द्रिय
जीवों के एवं अभवसिद्धिक कृतयुगम कृतयुगम
द्वीन्द्रिय जीवों के उत्पत्ति का कथन ६०६-६१२
सडतीसवां त्रीन्द्रिय शतक
- ८२ कृतयुगमकृतयुगम त्रीन्द्रिय जीवों के उत्पत्ति का कथन ६१३-६१५
अडतीसवां शतक
- ८३ कृतयुगमकृतयुगम चतुरिन्द्रिय जीवों के
उत्पत्ति का कथन ६१६-६१८
उन्चालीसवां शतक
- ८४ कृतयुगमकृतयुगम असंज्ञिष्वेन्द्रिय जीवों के
उत्पत्ति का कथन ६१९-६२१
चाळीसवां शतक प्रथम उद्देशक
- ८५ कृतयुगमकृतयुगम संज्ञिष्वेन्द्रिय जीवों के
उत्पत्ति का कथन ६२२-६३९
दूसरा उद्देशक
- ८६ प्रथमसमय कृतयुगम कृतयुगम संज्ञिष्वेन्द्रिय
जीवों के उत्पत्ति का कथन ६३९-६४३

- दूसरा कृष्णलेश्य संज्ञिपञ्चेन्द्रिय महायुग्म शतक
 ८७ कृष्णलेश्यावाले कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रिय
 आदि के उत्पत्ति का कथन ६४४-६४९
- ८८ प्रथमसमय कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रियो
 के उत्पत्ति का कथन ६५०-६५३
- ८९ अप्रथमसमय से लेकर चरमाचरम पर्यन्त के
 उद्देश्यों का कथन ६५३
- तीसरा संज्ञिमहायुग्म शतक
 ९० नीललेश्यायुक्त कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रिय
 जीवों के उत्पत्ति का कथन ६५४-६५६
- चतुर्थ संज्ञिमहायुग्म शत
 ९१ कापोतलेश्यावाले कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रिय
 जीवों के उत्पत्ति का कथन ६५७-६५९
- पांचवां महायुग्म शत
 ९२ तेजोलेश्यावाले कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रिय
 जीवों के उत्पत्ति का कथन ६६०-६६१
- छठा महायुग्म शत
 ९३ पद्मलेश्यावाले कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रिय
 जीवों के उत्पत्ति का कथन ६६२-६६५
- सातवां संज्ञिमहायुग्म शत
 ९४ शुक्ललेश्यावाले कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रिय
 जीवों के उत्पत्ति का कथन ६६५-६६८
- आठवां संज्ञिमहायुग्म शत
 ९५ भवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रिय
 जीवों के उत्पत्ति का कथन ६६९-६७१
- नववां संज्ञिमहायुग्म शत
 ९६ कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्म
 संज्ञिपञ्चेन्द्रिय जीवों के उत्पत्ति का कथन ६७१-६७२

दसवां संज्ञिमहायुग्न शत

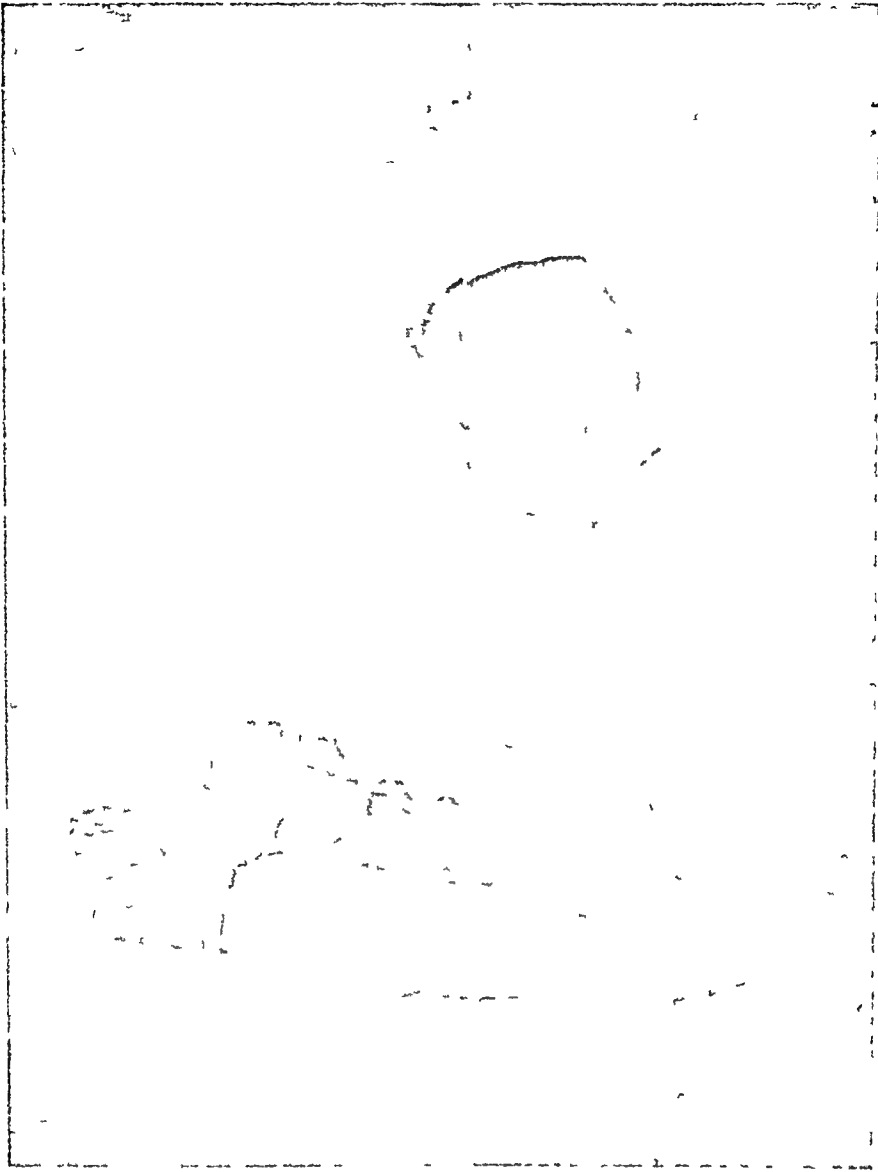
- ९७ नीललेश्यावाले कृतयुग्नकृतयुग्न संज्ञिपञ्चेन्द्रिय
जीवों के उत्पत्ति का कथन ६७३-६७५
- ११ वें से १४ पर्यन्त के संज्ञिमहायुग्न शतक
- ९८ अमवसिद्धिक एकैन्द्रिय के सात शतकों का कथन ६७५-६७७
- पन्द्रहवां संज्ञिमहायुग्न शत
- ९९ अमवसिद्धिक कृतयुग्नकृतयुग्न संज्ञिपञ्चेन्द्रिय
जीवों के उत्पत्ति का कथन ६७८-६८४
- दूसरा उद्देशक
- १०० प्रथमसमय अमवसिद्धिक कृतयुग्नकृतयुग्न संज्ञि-
पञ्चेन्द्रिय जीवों के उत्पत्ति का कथन ६८५-६८७
- सोलहवां संज्ञिमहायुग्न शत
- १०१ कृष्णलेश्यावाले अमवसिद्धिक कृतयुग्नकृतयुग्न
संज्ञिपञ्चेन्द्रियों के उत्पत्ति का कथन ६८८-६९०
- १७ से २१ पर्यन्त के महायुग्न शत
- १०२ नील, कापोत आदि छह लेश्यायुक्त
अमवसिद्धियों के उत्पत्ति आदि का कथन ६९१-६९६
- ४१ वां शतक का प्रथम उद्देश
- १०३ राशियुग्न का निरूपण ६९७-७१७
- दूसरा उद्देश
- १०४ राशियुग्न त्रयीजनैरथिजों के उत्पाद का निरूपण ७१८-७२२
- तीसरा उद्देश
- १०५ राशियुग्न द्वापरयुग्नराशिनाले नैरथिजों के
उत्पाद का कथन ७२३-७२५
- चौथा उद्देश
- १०६ राशियुग्न कल्योनैरथिजों के उत्पाद का निरूपण ७२६-७२८

- ६ वे' से आठशं पर्यन्त के चार उद्देशक
 १०७ कृष्णलेश्यावाले राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकों के
 उत्पाद का कथन ७२९-७३१
- १०८ कृष्णलेश्यावाले त्र्योज-द्वापरयुग्म, कलयोज
 राशिवाले नैरयिकों के उत्पाद का कथन ७३२-७३३
 नववे से १२ पर्यन्त के उद्देशकों का कथन
- १०९ नीललेश्यावाले चार उद्देशकों के नैरयिकों के
 उत्पाद का कथन ७३४-७३५
- १३ वे' से नील पर्यन्त के उद्देशक
 ११० कापोतलेश्यायुक्त नैरयिकों के उत्पाद का
 चार उद्देशक एवं तेजोलेश्यावाले नैरयिकों के
 चार उद्देशकों द्वारा कथन ७३६-७३९
 २१ से २८ पर्यन्त के उद्देशक का कथन
- १११ पञ्चलेश्या शुक्ललेश्या से युक्त चार चार
 उद्देशकों का कथन ७३९-७४२
 २९ से ५६ पर्यन्त के उद्देशकों का कथन
- ११२ भवसिद्धिक राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकों की
 उत्पत्ति का कथन ७४३-७४५
- ११३ कृष्णलेश्यायुक्त भवसिद्धिक राशियुग्म कृतयुग्म
 नैरयिकों के उत्पत्ति का कथन ७४५-७४६
- ११४ नीललेश्या एवं कापोतलेश्यायुक्त भवसिद्धिक
 राशियुग्म नैरयिकों के उत्पत्ति का कथन ७४७-
- ११५ तेजोलेश्या पञ्चलेश्यायुक्त भवसिद्धिकों का
 चार चार उद्देशक ७४८-
- ११६ शुक्ललेश्यायुक्त भवसिद्धिकों का चार
 उद्देशकों से कथन ७४९-

५७ से ८४ पर्यन्त के उद्देशकों का कथन

११७	अभवसिद्धिक राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकों के उत्पत्ति का कथन	७५०-७५२
११८	कृष्णलेश्यावाले अभवसिद्धिक राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकों के उत्पत्ति का कथन	७५३-
११९	नीललेश्यावाले आदि लेश्यायुक्त अभवसिद्धिक राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकों के उत्पत्ति का कथन ८५ से ११२ पर्यन्त के उद्देशकों का कथन	७५४-७५७
१२०	सम्यग्दृष्टि आदि राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकों के उत्पत्ति का निरूपण	७५७-७५९
१२१	कृष्णादि लेश्यायुक्त राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकों के उत्पत्ति का निरूपण	७५९-७६१
	११३ वे' से १४० पर्यन्तके उद्देशक का कथन	
१२२	मिथ्यादृष्टि राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकों के उत्पत्ति का कथन	७६२-७६३
	१४१ से १६८ पर्यन्त के उद्देशक का कथन	
१२३	कृष्णपाक्षिक राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकों के उत्पत्ति का कथन	७६४-७६५
	१६९ से १९६ पर्यन्त के उद्देशकों का कथन	
१२४	शुक्लपाक्षिक यावत् शुक्लपाक्षिक शुक्ललेश्य राशियुग्म नैरयिकों के उत्पत्ति का कथन	७६६-७७२
१२५	भगवतीसूत्र के शतक एवं उद्देशकों का कथन	७७३-७७४
१२६	भगवतीसूत्र के उपदेश के प्रकार का कथन	७७५-७८०

“ असंख्यं जीविनं मा पमायए ”



श्री विनोदकुमार वीराणी
(दीक्षा लीधा पहिलां शास्त्राध्यास करता)
जन्म पोर्टसुदान सा. १९८२

दीक्षा

भीमन - (राजस्थान)
सं. २०१३ वैशाख वद १२
ता. २६-५-५७ रविवार

निर्वाण

इलोही - (राजस्थान)
सां २०१३ श्रावण सुद १०
ता. ७-८-५७ बुधवार

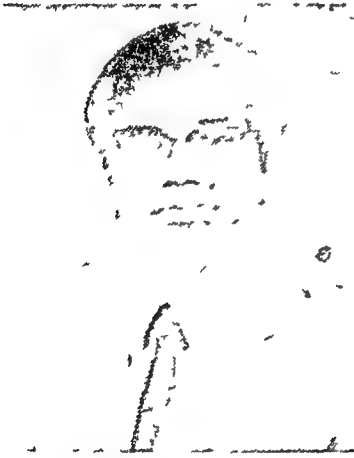
આવમુરખીશ્રીઓ



ગૅ શ્રી શાંતિલાલ મંગળદાસભાઈ
અમદાવાદ.



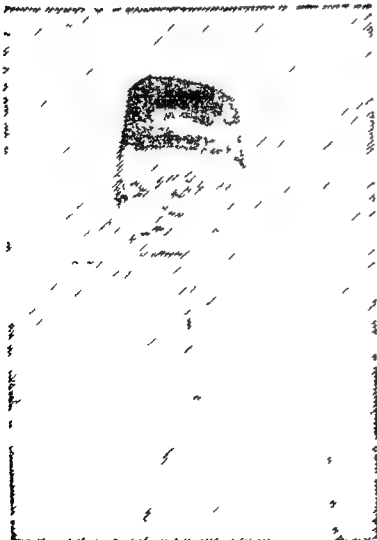
(સ્વ) શેઠશ્રી શામળભાઈ વેલહલભાઈ
વીરાણી-રાજકોટ



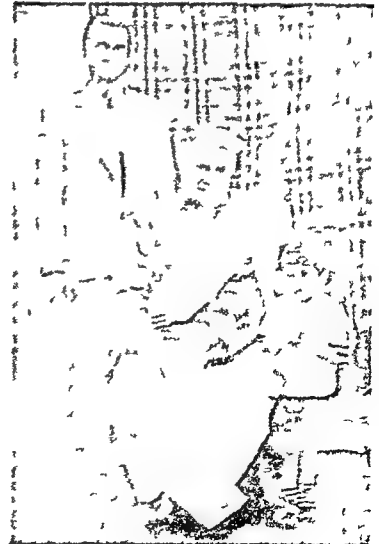
સ્વ. સુધીરભાઈ જય તીલાલ ઝવેરી
મુંબઈ.



(સ્વ) શેઠશ્રી જગનલાલ શામળદાસ
ભાવસાર અમદાવાદ.

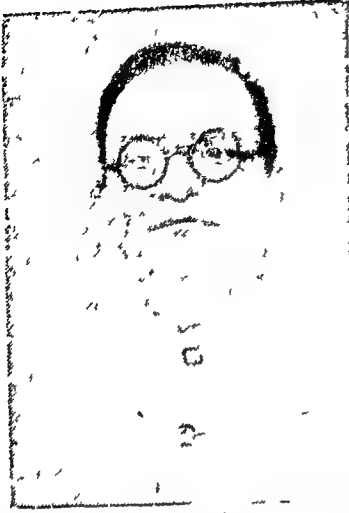


ગૅશ્રી રામલભાઈ શામળભાઈ
વીરાણી-રાજકોટ.

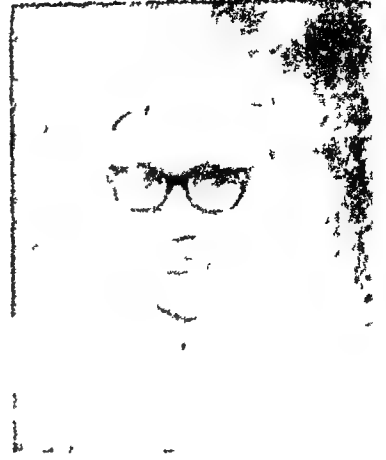


ચચે બેડેલા
લાલાલ દિગંતચંદલ સા જોડેરી
કેમેલા મુપુત્ર ચિ મહેતાખચંદલ સા.
નાના - અનિલકુમાર જૅન (દોયના)

આધ્યમુરવ્વીશ્રીઓ



શ્રીમાન્ શેઠ પોપટલાલ માવજીભાઈ
મહેતા, જામજોધપુર



શ્રીમાન્ શેઠ ધનરાજજી પન્નાલાલજી
જાંગડા, મુ. જાલના



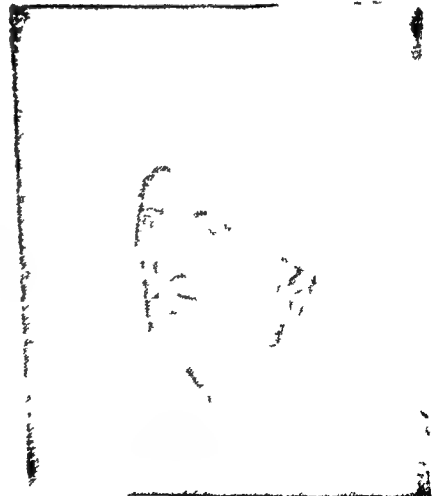
શેઠશ્રી મિશ્રીલાલજી લાલચંદજી સા. લુણિયા
તથા શેઠશ્રી જેવંતરાજજી લાલચંદજી સા



શેઠ પ્રભુદાસભાઈ મુલજીભાઈ દેસી
રાજકોટ



દાનવીર શેઠશ્રી અગરચન્દજી
મેરુદાનજી સા. સેઠિયા, મુ. વીકાનેર



સ્વ શ્રીમાન્ શેઠશ્રી મુકન્દચંદજી સા.
બાલિયા પાલી મારવાડ

આચમુરખીશ્રીઓ



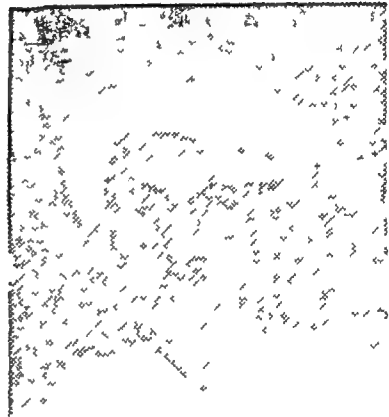
(સ્વ) શેઠશ્રી હરખચંદ કાલીદાસ વારિઆ
ભાણુવડ.



(સ્વ) શેઠ રંગજીભાઈ મોહનલાલ શાહ
અમદાવાદ.



(સ્વ) શેઠશ્રી દિનેશભાઈ કાંતિલાલ શાહ
અમદાવાદ.



સ્વ. શેઠશ્રી જીવરાજભાઈ મૂલચંદભાઈ
ધ્રાંગધ્રા

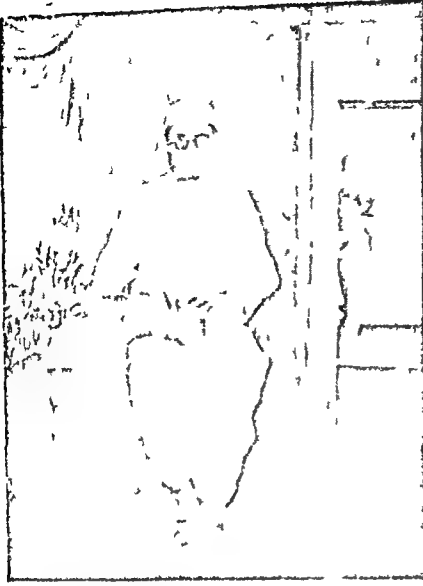


શેઠશ્રી જેસિંગભાઈ પોચાલાલભાઈ
અમદાવાદ

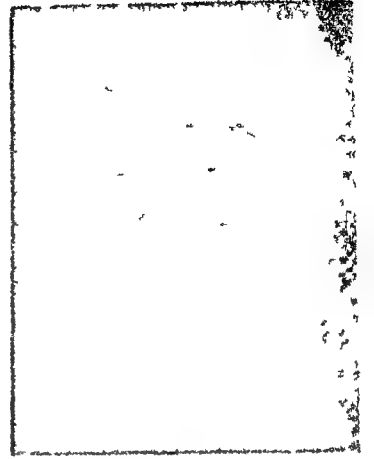


સ્વ. શેઠશ્રી આત્મારામ માણેકલાલ
અમદાવાદ

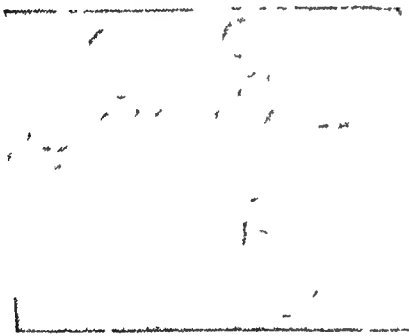
આવમુરખીશ્રીઓ



સ્વ. શેઠશ્રી હરિલાલ અનોપચંદ ગાહ
ખંભાત.



સ્વ. શેઠ તારાચંદ્રજી નાહેર મેલડા
મદ્રાસ.



શ્રીમાન્ શેઠ સા. ચીમનલાલજી સા.
કપમચંદ્રજી સા અંજીતવાલે (સપરિવાર)



શ્રેષ્ઠ ટ્રીગનલાલજી હુલચંદ ગાહ
બે ગલોરવાળા



૨૨૨ બેઠેલા મોટાભાઈ શ્રીમાન્ મૂલચંદ્રજી
જવાહીરલાલજી બરડિયા
૨ બાબુભા બેઠેલા ભાઈ મિશ્રીલાલજી બરડિયા
૩ ઉમેલા સૌથી નનાભાઈ પૂનમચંદ બરડિયા

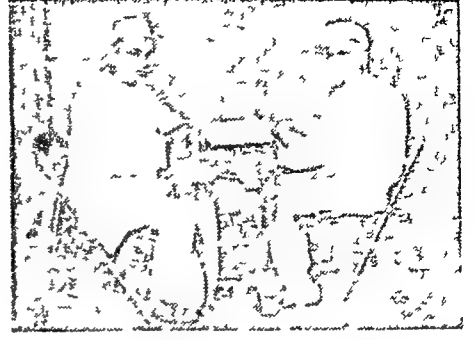


શ્રીમાન્ સેઠશ્રી
શ્રીમરાજજી સા. ચોરડિયા

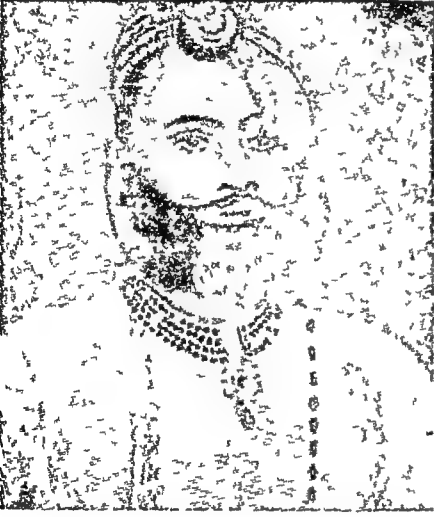
આવમુરખીશ્રીઓ



પટેલ ડાસાભાઈ ગાપાલદાસ
મુ. સાણંદ (જી. અમદાવાદ)



૧ અમીચંદભાઈ તથા
૨ ગીરધરભાઈ બાંટવિયા



શાહજી શ્રી મોડીલાલજી ગલુન્ડિયા



સ્વર્ગસ્થ ન્યાયમતિ
રતીલાલભાઈ ભાયચંદભાઈ મહેતા

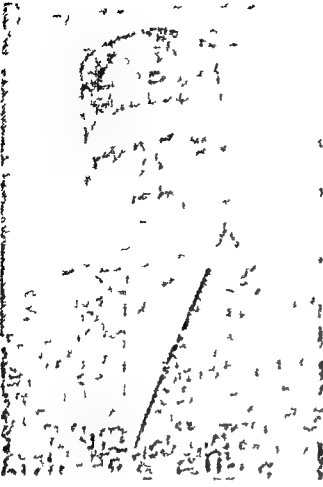


સ્વ૦ શેઠ માણેકચંદ નેમચંદ
માંગરોલવાળા ('મુંબઈ')

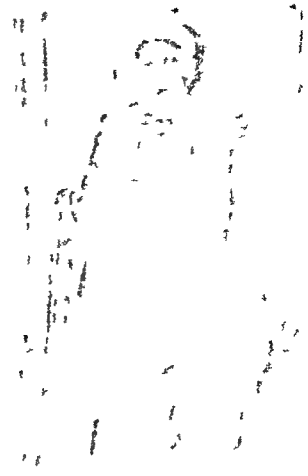


શ્રીમાન્ શેઠ સા.
શ્રી કાનુગા ધિંગડમલજી

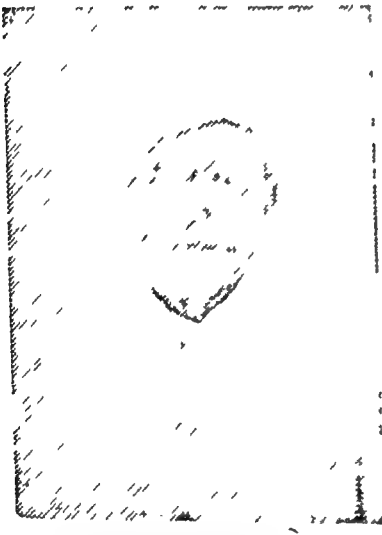
આચમુરવ્વીશ્રીઓ



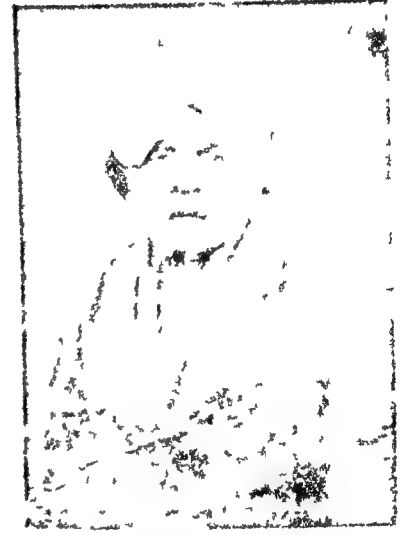
શ્રીમાન્ શેટ મણીલાલ પોપટલાલ વોરા
અમદાવાદ, જન્મ તા. ૧૦-૬-૧૯૦૪



શ્રીમાન્ શેટ લાલાજી કપુરચન્દજી
નાહટા, મુ. દેહલી



શ્રી વ્રજનાલ દુર્લભજી પારેખ
રાજકોટ.



ડોહારી દુર્ગાબાઈ જયદાસ
રાજકોટ.



શ્રી મણીલાલ જેઠલાલ
પાલનપુરવાળા

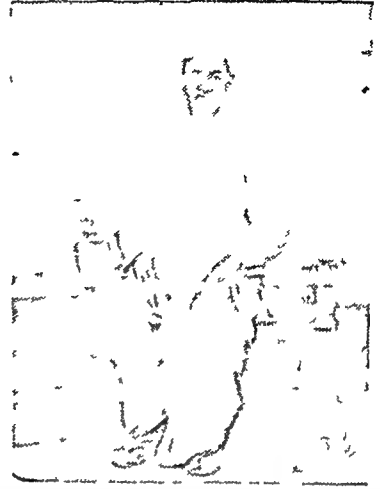


કપુરચન્દ નાહટા દેહલીવાલા

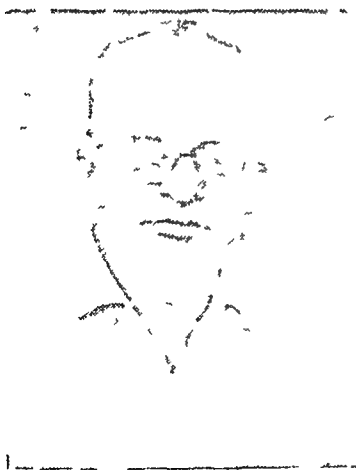
આદ્યમુરવ્વીશ્રીઓ



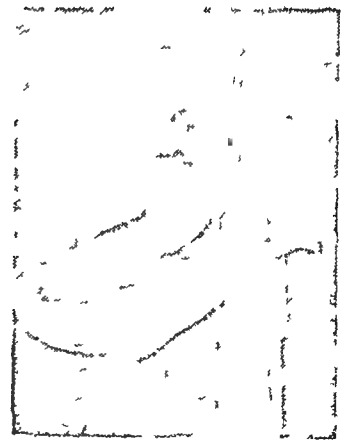
(૨૫.) શેઠશ્રી ધારશીલાલ અચર્યાલ
બારસી



શ્રીમાન્ શેઠ જગજીવનભાઈ રતનસીભાઈ
વગડિયા, મુ. દામનગર



શેઠશ્રી દેવચંદભાઈ ફોજીલાલભાઈ
વલાળી-સુરત



અમુલખલાઈ મલુકચં
પાલનપુરવાલા

બા. ધ્ર. શ્રી વિનોદમુનિનું સંક્ષિપ્ત જીવનચરિત્ર

પરમ વૈરાગી અને દયાના પુંજ જેવા આ પુરુષનો જન્મ વિક્રમ સંવત્ ૧૯૯૨ પોર્ટુગલ (આફ્રિકા)માં કે જ્યાં વીરાણી કુટુંબનો વ્યાપાર આજ દિવસ સુધી ચાલુ છે, ત્યાં થયો હતો.

શ્રી વિનોદકુમારના પુણ્યવાન પિતાશ્રીનું નામ શેઠશ્રી દુર્લભજી શામજી વીરાણી અને મહાભાગ્યવંતા તેમના માતૃશ્રીનું નામ જેન મણિજેન વીરાણી. બન્નેનું અસલ વતન રાજકોટ (સૌરાષ્ટ્ર) છે. જેન મણિજેન ધાર્મિક ક્રિયામાં પહેલેથી જ રુચિવાળા હતા, પરંતુ શ્રી વિનોદકુમાર ગર્ભમાં આવ્યા પછી વધારે દઢધર્મી અને પ્રિયધર્મી બન્યા હતા.

પૂર્વલવના સંસ્કારથી શ્રી વિનોદકુમારનું લક્ષ ધાર્મિક અભ્યાસ અને ત્યાગ ભાવ તરફ વધારે હોવા છતાં તેઓશ્રીએ નોનમેટ્રીક સુધી અભ્યાસ કરી વ્યવહારિક કેળવણી લીધેલી અને વ્યાપારની પેઢીમાં કુશળતા ખતાવેલી.

તેઓશ્રીએ યુનાઇટેડ કિંગડમ, ફ્રાન્સ, બેલ્જિયમ, હોલેન્ડ, જર્મની સ્વી-ઝર્લેન્ડ, તેમજ ઇટાલી, ઇજિપ્ત વગેરે દેશોમાં પ્રવાસ કરેલ સં. ૨૦૦૯ના વેશાખ માસ, સને ૧૯૫૩માં લંડનમાં રાણી એલીઝાબેથના રાજ્યારોહણ પ્રસંગે તેઓશ્રી લંડન ગયા હતા. કાશ્મીરનો પ્રવાસ પણ તેમણે કરેલ, દેશ પરદેશ ફરવા છતાં પણ તેમણે કોઈ વખતે પણ કંદમૂળનો આહાર વાપરેલ નહીં.

ઉગતી આવતી યુવાનીમાં તેઓશ્રીએ દુનિયાના રમણીય સ્થળો જેવાં કે કાશ્મીર, ઇજિપ્ત અને યુરોપનાં સુંદર સ્થળોની મુલાકાત લીધી હોવા છતાંએ તેઓને તે રમણીય સ્થળો કે રમણીય યુવતીઓનું આકર્ષણ થયું નહીં. એ એના પૂર્વલવના ધાર્મિક સંસ્કારનો જ રંગ હતો અને એ રંગે જ તેમને તે બધું ન ગમ્યું અને તુરત ત્યાંથી પાછા ફર્યા અને સાધુ-સાધ્વીજીનાં દર્શન-કરવાને ઠેકઠેકાણે ગયા અને તેમના ઉપદેશનો લાભ લીધો અને વૈરાગ્યમાં જ મન લગાડ્યું. હુંડાકાલ અવસર્પિણિના આ દુષ્પ્રભ નામના પાંચમાં આરાનું [વચિત્ર વાતાવરણ જોઈ તેમને કંઈક દોષ થતો કે તુરત જ તેનો ખુલાસો મેળવી લેતા અને ત્યાગ ભાવમાં સ્થિર રહેતા. દેશ પરદેશમાં પણ સામાયિક, પ્રતિક્રમણ, ચોવિહાર આદિ પરચક્રાણુ વિ. ધર્મકાર્ય તેઓ ચૂક્યા નહીં. ઊંચી કોટિની શૈયાનો ત્યાગ કરી તેઓ સૂવા માટે માત્ર એક શેતરજી, એક ઓસીકું અને ઓઢવા એક ગ્રાહર ફક્ત વાપરતા અને પ્રલંગ ઉપર નહીં પણ ભૂમિ પર જ

શયન કરતા. અને પહેરવા માટે એક ખાદીનો લેંઘા અને ઝખ્લો વાપરતા, કોઈ વખતે કબજે પહેરતા બહુ ઠંડી હોય તો વખતે સાદો ગરમ કેટ પહેરી લેતા અને મુહપત્તિ, પાથરણું, રઝોહરણ અને બે ચાર ધાર્મિક પુસ્તકની ઝોળી સાથે રાખતા સંઢાસમાં નહીં પણ જંગલમાં એકાંત જગ્યામાં ઘણે ભાગે શરીરની અશુચિ દૂર કરવા જતા, હાલનાં ચાલતાં, સંઢાસ અને પેશાળ સંબંધમાં જીવહયાની ધરાબર જાતના કરતા.

દેશમાં કે પરદેશમાં જ્યારે તેમને કોઈની સાથે મળવાનું થતું ત્યારે તેમની સાથે અહિંસામય જૈનધર્મનું સ્વરૂપ પ્રકટ કર્યા વગર રહેતા નહીં.

દીક્ષાર્થીઓને દીક્ષા લેવાની પ્રેરણા કરતા અને એમ જ કહેતા કે જીવંતીનો કોઈ ભરોસો નથી “જસંસ્વયં જીવિયં મા પમાવણ” આયુષ્ય તૂટતાં વાર લાગતી નથી, જીવન તૂટ્યું સંધાતું નથી માટે ધર્મકરણીમાં સમયમાત્રનો પ્રમાદ ન કરવો જોઈએ.

ગોંડલ સંપ્રદાયના ઘણાખરા પૂ. સુનિવરે અને પૂ. મહાસતીજીઓનો તથા બોટાદ સંપ્રદાયના પૂ. આચાર્યશ્રી માણેકચંદજીમહારાજ અને દરિયાપુરી સંપ્રદાયના શાંત-શાસ્ત્ર પૂ. સુનિશ્રી લાયચંદજી મહારાજ શ્રમણસંઘના મુખ્ય આચાર્યશ્રીજી આત્મારામજી મહારાજ તપોમય જ્ઞાનનિધિ શાસ્ત્રોદ્ધારક બા. જ. પૂ. આચાર્ય મહારાજ શ્રી ઘાઝીશાહજી મહારાજ વગેરે અનેક સાધુ-સાધ્વીના ઉપદેશનો તેમજ લાભ લીધેલ સુખર્ષમાં સં. ૨૦૧૧ સાલમાં શ્રી ધર્મસિંહજી મહારાજના સંપ્રદાયના પંડિતરત્ન શ્રી લાલચંદજી મહારાજનો પરિચય થયો. લાલચંદજી મહારાજ પોતે, તથા સંભારપક્ષના ત્રણ પુત્રો અને બે પુત્રીઓ એમ કુલ ૬ બંદકે આખા કુટુંબે સંયમ અગીકાર કરેલ. તે બાણી તેમને અદ્ભૂત ત્યાગભાવના પ્રગટ થઈ કે જે કદી ક્ષય પામી નહીં.

આ પહેલાં તેઓ જ્યારે માતા-પિતા સાથે પૂજ્ય આચાર્ય શ્રી માણેકચંદજી મહારાજના દર્શને બોટાદ ગયેલા ત્યારે તેમના ઉપદેશની જે અસર થઈતે મુખ્ય અમર પહેલી હતી અને બીજી અમર તે પૂજ્ય લાલચંદજી મહારાજના સહકુટુંબની દીક્ષા એ હતી. આ બેઉ પ્રસંગો પૂર્વભવની બાકી રહેલી આરાધનાને પૂરી કરવાના નિનિત્તરૂપ હોઈને વખતોવખત તેઓ માતા-પિતા પાસે દીક્ષાની આજ્ઞા માગતા હતા અને તેનો જવાબ તેમના પિતાશ્રી તન્દ્રથી એક જ હતો. ‘જે હજી વાર છે સમય પાકવા દીક્ષા જ્ઞાનાભ્યાસ વધારો,

સં. ૨૦૧૨ના અષાઠ સુધી ૧૫ થી શ્રી વિનોદકુમારે ગોંડલ સંપ્રદાયના શાસ્ત્ર સૂ આચાર્યશ્રી પુરુષોત્તમજી મહારાજ સાહેબ પાસે વેરાવળ ચાતુર્માસ દરમ્યાન ખાસ નિયમિત રીતે દીક્ષાની તૈયારી કરવા માટે તેમની પાસે જ્ઞાનાભ્યાસ કર્યો. તેની સાથે પૂ આચાર્યશ્રી પુરુષોત્તમજી મહારાજના સંસાર પક્ષના કુટુંબી દીક્ષાના ભાવિકે શ્રી જસરાજભાઈ પણ જ્ઞાનાભ્યાસ કરતા હતા. તેઓએ ત્યાં એવો નિર્ણય કરેલો કે આચાર્યશ્રી પુરુષોત્તમ મહારાજ પાસે આપણે બન્નેએ દીક્ષા લેવી, પહેલાં વિનોદકુમારે અને પછી શ્રી જસરાજભાઈએ દીક્ષા લેવી, શ્રી જસરાજભાઈની દીક્ષાતિથિ પૂઠ શ્રી પુરુષોત્તમજી મહારાજ સાહેબે સં. ૨૦૧૩ના જેઠ સુદ ૫ ને સોમવારે માંગરોલ મુકામે નક્કી કરી શ્રી જસરાજભાઈ વિનોદકુમારને રાજકોટ મળ્યા. શ્રી વિનોદકુમારે શ્રી જસરાજભાઈની યથાયોગ્ય સેવા બજાવી, માંગરોળ રવાના કર્યા અને પોતે નિશ્ચયપૂર્વક દીક્ષા માટે આજ્ઞા માગી પણ તેઓના પિતાશ્રીની એકને એક વાણી સાંભળીને તેમને મનમાં આઘાત થયો અને દીક્ષા માટેનો તેમણે બીજો રસ્તો શોધી કાઢ્યો.

પૂજ્યશ્રી લાલચંદજી મહારાજ અને તેમના શિષ્યોનો પરિચય મુંબઈમાં થયેલ હતો અને ત્યારબાદ કોઈ વખત પત્રવહેવાર પણ થતો હતો. છેલ્લા પત્રથી તેમણે જાણેલ હતું, જે પૂઠ શ્રી લાલચંદજી મહારાજ. ખીચન ગામે પૂ. આચાર્યશ્રી સમરથમલજી મહારાજ સાહેબ પાસે જ્ઞાનાભ્યાસ અર્થે ગયા છે. પોતાને પિતાશ્રીની આજ્ઞા (દીક્ષા માટે) મળે તેમ નથી અને દીક્ષા તો લેવી જ છે આજ્ઞા વિના કોઈ સાધુ મુનિરાજ દીક્ષા આપે નહીં અને સ્વયંમેવ દીક્ષા સૌરાષ્ટ્રમાં લઈને આચાર્યશ્રી પુરુષોત્તમજી મહારાજ પાસે જવામાં ઘણાં વિઘ્નો થશે, એમ ધારીને તેઓએ દૂર રાજસ્થાનમાં ચાલ્યા જવાનું નક્કી કર્યું.

તા. ૨૪-૫-૫૭ સં. ૨૦૧૩ના વૈશાખ વદ ૧૦ ને શુક્રવારના રોજ સાંજના તેમના માતૃશ્રી સાથે છેલ્લું જમણું કર્યું. લોજન કરી, માતૃશ્રી સામાયિકમાં બેસી ગયા. તે વખતે કોઈને જાણુ કર્યા વગર દીક્ષાના વિઘ્નોમાંથી બચવા માટે ઘર, કુટુંબ, સૌરાષ્ટ્રભૂમિ અને ગોંડલ સંપ્રદાયનો પણ ત્યાગ કરી તેઓ ખીચન તરફ રવાના થયા.

શ્રી વિનોદમુનિના નિવેદન પરથી માલૂમ પડ્યું કે તા. ૨૪-૫-૫૭ના રોજ રાત્રે આઠ વાગે ઘેરથી નીકળી, રાજકોટ જંકશને જઈ જોધપુરની ટિકિટ લીધી તા. ૨૫-૫-૫૭ના સવારે આઠ વાગ્યે મહેસાણા પહોંચ્યા ત્યાં અહીં કલાક ગાડી પડી રહે છે, તે દરમ્યાન ગામમાં જઈને લોચ કરવા માટેના વાળ રાખીને બાકીના કઠાવી નાખ્યાં અને ગાડીમાં બેસી ગયા મારવાડ જંકશન તથા જોધપુર જંકશન થઈને તા. ૨૬-૫-૫૭ની સવારે ૪|| વાગ્યે ફલોદી

પ્રહોદ્યા ત્યાંથી રજો આવીને ખીચત ઉપાશ્રયમાં જઈ ત્યાં બિરાજતા મુનિવરોના દર્શન કર્યાં વંદણ નગરકાર કરી મુખશાતા પૂછી, બંદાર નીકળ્યા અને પોતાના સામાયિકના કપડાં પહેર્યા અને પછી પ્રભુ શ્રી મુનિવરોની ગન્ધુજ સામાયિક કરવા બેઠા, તેમાં “જાવ નિયમં પઞ્જુવાસામિ દુવિહં નિનિદેષં” ના બદલે “જાવજીવપઞ્જુવાસામિ નિવિહં તિરિદેષ” બોલ્યા તે શ્રી લાલચંદ્ર મહારાજે સાંભળ્યું અને તેઓશ્રીએ પ્રશ્ન કે વિનોદકુમાર ! તમે આ શું કરો છો ? તેનો જવાબ આપવાને બદલે “જન્માર્ણ કોમિરામિ” બોલી પાઠ પૂરો કર્યો અને પછી વિનયપૂર્વક બે હાથ બેઠીને બોલ્યા કે “સાહેબ !” એ તો બની ચૂક્યું અને શેં સ્વયમેવ દીક્ષા લઈ લીધી, તે બરોબર છે અને તેમાં કંઈ ફેરફાર થઈ ગયે તેમ નથી. આ શિવાય આપશ્રીની બીજી કોઈપણ પ્રકારની આજ્ઞા હોય તો ફરમાવો.”

તેજ દિવસે બપોરના શાશ્વત પૂ. મુનિશ્રી સમરથમલજી મહારાજ સાહેબે શ્રી વિનોદકુમાર મુનિને પોતાની પાસે બોલાવ્યા અને સમજાવ્યા કે “તમે એક સારા જ્ઞાનદાન કુટુંબની વ્યક્તિ છો. તમારી આ દીક્ષા રાંખીકાર કરવાની રીત બરાબર નથી, કારણ કે તમારા માતા પિતાને આ વ્યકીતવળી હું આપ અને તેથી મારી સંગતિ છે કે રજોદરણની હાંડી ઉપરથી કપડું કાઢી નાખો જેથી તમે શ્રાવક ગણાવ અને જરૂર પડે તો શ્રાવકોનો સાથ લઈ શકો, એના વળતાર પૂ. મહારાજશ્રીએ સમજાવેલા પરંતુ તેમણે ત્રણેય વળત એક જ ઉત્તર આપેલો કે “જે થયું, તે થયું હવે મારે આગળ શું કરવું તે ફરમાવો.”

શ્રી વિનોદમુનિના શ્રી સમરથમલજી જેવા મહાગુનિના પ્રશ્નના જવાબ પછી ખીચતનો ચતુર્વિધ સઘ વિચારમાં પડી ગયો અને મુનિશ્રીએ પર સંસારીઓને દોષ પણ પ્રગટના નિષ્કારણ હુમલો ન આવે તે માટે વિનોદમુનિને જણાવવામા આવ્યું કે “તમારી સલામતી માટે તમારે બહાર નિવેદન બહાર પાડવાની જરૂર છે” ત્યારે શ્રી વિનોદમુનિએ પોતાના હસ્તાક્ષરે નિવેદન શ્રીસંઘ સમક્ષ પ્રગટ કર્યું, તેનો સાર નીચે મુજબ છે:-

મારા માતા-પિતા ચોહને વશ થઈને દીક્ષાની આજ્ઞા આપે તેમ ન હતું અને “અસંસ્રવ જીવિત્ત્વં મા પમાત્વ” ને આધારે હું એક ક્ષણ પણ દીક્ષાથી વચિત રહી શકું તેમ નથી, એમ મને લાગ્યું. શ્રી લાલચંદ્ર મહારાજ સાહેબ-વજીરેએ મને મારી દીક્ષા માટે વિચારી પછી રજા લેવાનું કહેલ પરંતુ મને

સમય માત્રનો પ્રમાદ કરવો ઠીક ન લાગ્યો, તેથી શ્રી અરિહંત ભગવંતો તપ્ત શ્રી સિદ્ધ ભગવંતોની સાક્ષીએ મારા ગુરુ મહારાજ સમક્ષ પ્રવ્રજ્યાનો પાઠ લાણીને મારા અત્માના કહ્યાણુ માટે દીક્ષા અંગીકાર કરી છે. સમાજને જોડો ખ્યાલ ન આપે કે મારી દીક્ષા ક્ષણિક જુસ્સાથી અગર ગેરસમજથી થઈ છે તેથી તથા સમાજમાં જૈનશાસનની પ્રભાવના થાય તે હેતુથી મારે મારો વૃત્તાત પ્રગટ કરવો ઉચિત છે.

ઉત્તરાધ્યયનજી સૂત્રના ૧૬ મા અધ્યયન પરથી મને લાગ્યું કે મનુષ્ય જીવનનું ખરૂં કર્તવ્ય મોક્ષરૂપ આપનારી દીક્ષા જ છે.

છેવટ સુધી મેં મારા બાપુજી પાસે દીક્ષા માટે આજ્ઞા માગી અને તે વખતે પણ પહેલાની જેમ વાત ઉઠાવી દીધી અને અનંત ઉપકારી એવા મારા બાપુજી સમક્ષ હું તેમને કડક લાપામાં પણ કહી શકતો ન હતો અને બીજી બાબુથી મને થયું કે આયુધ્ય અશાશ્વત છે અને આવા ઉત્તમ કાર્ય માટે જરાપણુ પ્રમાદ કરવો ઉચિત નથી, તેથી મેં વિચારીને આ પગલું લયું છે અને મને પૂર્ણ વિશ્વાસ છે કે શ્રી વીરપ્રભુ મહાવીર સ્વામીનો સકળ સંઘ મારા આ કાર્યને અનુમોદશે જ “ તથાસ્તુ ”.

રાજકોટમાં શ્રી વિનોદકુમારના ગયા પછી પાછળથી ખખર પડી કે વિનોદકુમાર દેખાતા નથી એટલે તપાસ થવા માડી ગામમાં ક્યાંય પત્તો ન લાગ્યો એટલે ખરારગામ તારો કર્યા ક્યાંયથી પણ સંતોષકારક સમાચાર સાંપડ્યા નહીં. અર્થાત્ પત્તો મળ્યો જ નહીં. આમ વિમાસણના પરિણામે તેમના પિતાશ્રીને જે મહિના પહેલાની એક વાતની યાદ આવી તે એ હતી કે તે વખતે શ્રી વિનોદકુમારે આજ્ઞા માગેલી કે “ બાપુજી ! આપની આજ્ઞા હોય તો આ ચાતુર્માસમાં બીચન (રાજસ્થાન) જાઉં કારણ કે બીચનમાં પૂર્વ ગુરુમહારાજ શ્રી સમરથમલજી મહારાજ કે જેઓ સિદ્ધાંત વિશારદ છે અને અનેકાંતવાદના પૂરા બાણકાર છે, તેઓ ત્યાં બિરાજમાન છે જેઓશ્રી પાસે શાસ્ત્રાભ્યાસ કરવા માટે પૂ. શ્રી લાલચંદજી મહારાજ આદિ ઠાણા ૪ જવાના છે. તો મારી ઇચ્છા પણ ત્યાં તેમની પાસે જવાની છે.

આ વાતચીતનું સ્મરણ પિતાશ્રીને આવવા સાથે તેઓએ પ. પૂર્ણચંદ્રજી દેકને પોતાની પાસે બોલાવ્યા અને વિનોદકુમાર માટેની પોતાની ચિંતા વ્યક્ત કરી. પંડિતનું આ વાતને સમર્થન મળ્યું. તેઓશ્રીએ જણાવ્યું કે થોડા સમય પૂર્વે વિનોદકુમારે મારી પાસે બાણવા માગ્યું હતું કે, બીચનમાં કેવા પ્રકારની

સંગવડ છે? આમ મારી સાથે વાર્તાલાપ થયો હતો. જાને આ પ્રમાણે એકમત થતાં તેમના પિતાશ્રીએ ખીચન તાર કરવા સૂચના કરી તા. ૨૭-૫-૫૭ ના રોજ પૃથ્વીરાજજી માલુ ખીચન (રાજસ્થાન) ઉપર તાર કર્યો.

તા. ૨૮-૫-૫૭ના રોજ જવાબ આપ્યો કે શ્રી વિનોદલાલજીએ ખીચનમાં સ્વયમેવ દીક્ષા ગ્રહણ કરી છે એટલે તેમના પિતાશ્રીએ રાવબહાદુરશ્રી એમ. પી. સાહેબ શ્રી કેશવલાલભાઈ પારેખ અને પંડિતજી પૂર્ણચંદ્રજી દક એમ ત્રણેયને શ્રી વિનોદકુમારને પાછા તેડી લાવવા માટે ખીચન મોકલ્યા તા. ૨૮-૫-૫૭ના રોજ રવાના થઈ તા. ૩૦-૫-૫૭ના રોજ સવારે ફ્લોદી સ્ટેશને પહોંચ્યા. બગદગાડીમાં તેઓ ખીચન ગયા કે જ્યાં સ્થવિર મુનિશ્રી શીરોમલજી મહારાજ પૂજ્ય પંડિતરત્ન શાસ્ત્ર વિશારદ શ્રી સમરથમલજી મહારાજ આદિ ઠાણા ૮ તથા પૂજ્ય તપસ્વી મહારાજ શ્રી લાલચંદજી મહારાજ આદિ ઠા. ૪ બિરાજમાન હતા. કુલ્લે સાધુ-સાધ્વીની સંખ્યા અઠાવીસથી ત્રીસની હતી.

પૂછપરછના જવાબમાં શ્રી વિનોદમુનિએ કેશવલાલભાઈ પારેખને કહ્યું કે “મેં તો દીક્ષા અંગીકાર કરી લીધી છે તેમાં કાંઈ ફેરફાર થાય તેમ નથી. તમો અમારા વીરાણી કુટુંબના હિતૈષી છો. અને જો સાચા હિતૈષી હો તો મારા પૂ જા અને બાપુજીને સમજાવીને મારી હવે પછીની મોટી દીક્ષાની આજ્ઞા અઠવાડિયાની અંદર અપાવી દો એટલું જ નહીં પણ “સવિ જીવ કઈં શાસન રસી”ની ભાવનામાં અને આજ દિવસ સુધીના મારી ઉપરના ઉપકારના બદલામાં આગમને અનુલક્ષીને મારી ભાવના એ જ હોય કે, મારી દીક્ષા તેઓની દીક્ષાનું નિમિત્ત બને અને મારા માતા-પિતા સદ્ગતિને સાધે અર્થાત્ મારી સાથે દીક્ષા લીએ.

આવા દેહ જવાબના પરિણામે તેજ સમયે શ્રી વિનોદકુમારને પાછા લઈ જવાની ભાવનાને નિષ્ફળતા સાંપડી અને તા. ૩૧-૫-૫૭ ની રાત્રીના રવાના થઈ તા. ૨-૬-૫૭ના સવારે મહા પરીષદરૂપ ક્ષેત્રનો અનુભવ કરી, શ્રી વિનોદકુમારના પિતાશ્રીને તમામ વાતથી વાકેફ કર્યાં.

થોડા વખતમાં ફ્લોદીના શ્રી સંઘે પૂ શ્રી લાલચંદજી મહારાજને ફ્લોદીમાં ચોમાસુ કરવાની વિનંતી કરી તેનો અસ્વીકાર થવાથી સંઘ ગમગીન બન્યો એટલે નિર્ણય ફેરવ્યો અને અષાઢ શુદ્ધ ૧૩ ના રોજ ખીચનથી વિહાર કરી ફ્લોદી આવ્યા.

દૌક્ષા પછી અઢી મહિનાને આંતરે ક્ષ્ણોદી થોસાસા દરમ્યાન શ્રી વિનોદ-
મુનિને હાજતે જવાની સંજ્ઞા થઈ અને તે માટે જવા તૈયાર થયા એટલે
તેમના ગુરુએ કહ્યું કે બહુ ગરમી છે, જરાવાર થોભી જાવ એટલે શ્રી વિનોદ-
મુનિએ રજોહરણ વગેરેની પ્રતિવેખના કરી તે દરમ્યાન ન રોકી શકાય એવી
હાજત લાગી તેથી ફરી આજ્ઞા માગતાં જણાવ્યું કે મને હાજત બહુ લાગી
છે તેથી જાઉં છું, જલદી પાછો ફરીશ કાળની ગહન ગતિને દુઃખદ્વ રચના રચવી
હતી. આજે જ હાજતે એકલા જવાનો બનાવ બન્યો હતો, હંમેશાં તો બધા સાધુઓ
સાથે મળીને દિશાએ જતા.

હાજતથી મોકળા થઈ પાછા ફરતા હતા, ત્યાં રેલ્વે લાઈન ઉપર બે ગાયો
આવી રહી હતી. બીજી બાજુથી ટ્રેન પણ આવી રહી હતી તેની બિહસલ
વાગવા છતાં પણ ગાયો ખસતી ન હતી શ્રી વિનોદમુનિનું હૃદય થરથરી
ઉઠ્યું અને મહા અતુકંપાએ મુનિના હૃદયમાં સ્થાન લીધું. હાથમાં રજોહરણ
લઈ જાનના જોખમની પરવા ક્યાં વગર ગાયોને બચાવવા ગયા. ગાયોને
તો બચાવી જ લીધી પરંતુ આ ક્રિયામાં છકાય જીવની દયાના સાધનભૂત
જે રજોહરણ કે વિનોદમુનિને આત્માથી વધારે ખ્યારું હતું, તે રેલ્વે લાઈન
ઉપર પડી ગયું. અને શ્રી વિનોદમુનિએ તે પાછું સંપાદન કરવામાં જડવાદને
સિદ્ધ કરતાં રાક્ષસી એન્જિનને ઝપાટે આવ્યા અને પોતાનું બલિદાન આપ્યું.
અરિહંત....અરિહંત...એવા શબ્દો મુખમાંથી નીકળ્યા અને શરીર તૂટી પડ્યું.
રક્ત પ્રવાહ છૂટી પડ્યો અને થોડા જ વખતમાં પ્રાણાંત થઈ ગયો, બધા લોકો
કહેતા લાગ્યા કે ગૌરક્ષામાં મુનિશ્રીએ પ્રાણ આપ્યા અંતિમ સમયે મુનિશ્રીના
ચહેરા પર ભવ્ય શાન્તિ જ દેખાતી હતી

હંમેશાં તેઓ જે તરફ હાજતે જતા હતા તે તરફ ક્ષ્ણોદીથી પોકરણ
તરફ જવાની રેલ્વે લાઈન હતી. આ લાઈન ઉપર રેલ્વે સત્તાવાળાઓએ ફાટક
મૂકેલ નથી ત્યાં રસ્તો પણ છે એટલે પશુઓની અવરજવર હોય છે.
અને વખતો વખત ત્યાં ઢોરો રેલ્વેની હડફેટે ચડી જવાના પ્રસંગ બને છે.

ક્ષ્ણોદી સંઘે આ દુર્ઘટનાના બળર રાજકોટ, ટેલીફોનથી આપ્યા. જે
વખતે ટેલીફોન આવ્યો તે વખતે વિનોદમુનિના પિતાશ્રી બહાર ગયા હતા.
અને માતૃશ્રી મણિબેન સામાયિક-પ્રતિક્રમણમાં બેઠાં હતાં, માત્ર એક નોકર જ
ઘરમાં હતો કે જેણે ટેલીફોન ઉઠાવ્યો પણ તે કાંઈ ટેલીફોનમાં હકીકત
સમજી શક્યો નહીં અને સાચા સમાચાર મોઢા મળ્યા. જેથી તેઓ સ્પેશલ
પ્લેનથી ક્ષ્ણોદી પહોંચે તે પહેલાં અગ્નિસંસ્કાર થઈ ગયો સૂચનાનો ટેલીફોન

-અર્ધા કલાક મોડો પહોંચ્યો તો સંદેશો સમગ્રર પહોંચ્યો હાત તે માતા-પિતાને શ્રી વિનોદમુનિના શગરૂપે પણ ચંદ્રો જોવાનો અને અતિર દર્શનનો પ્રસંગ મળત પરંતુ અંતરાય કચે તેમ જન્યું નહીં.

આથી જ્યેષ્ઠનનો પ્રોગ્રામ પડતો મૂકવામાં આવ્યો અને માતા-પિતા તા. ૧૪-૮-૫૭ના રોજ ટ્રેઈન મારફત ફ્લોદી પહોંચ્યાં, શ્રી દુર્લભભાઈ અને મણિબેને પૂજ્ય તપસ્વીશ્રી લાલચંદજી મહારાજ સાહેબના દર્શન કર્યાં.

આ પ્રસંગે શ્રી લાલચંદજી મહારાજ સાહેબે અવસરને પિછાણીને અને ધૈર્યનું એકાએક એક્ય કરીને. શ્રી વિનોદમુનિના માતા-પિતાના સાંત્વન અર્થે ઉપદેશ શરૂ કર્યા જેનો ટૂંકમાં સાર આ પ્રમાણે છે—

“હવે તો રત્ન વ્યાધ્યું ગયું! સસાજનો આશાદીપક જોલવાઈ ગયો! ઝટ ભગીને આથમી ગયો! હવે એ દીપ ફરીથી આવી શકે તેમ નથી”

શ્રી વિનોદમુનિના સંસારપક્ષના માતૃશ્રી મણિબેનને મુનિશ્રીએ કહ્યું કે:-
બેન! ભાવિ પ્રગળ છે. આ જાળતમાં મહાપુરુષોએ પણ હાથ ધોઈનાખ્યા છે એમ સૌને મરણને શરણ થવું પડે છે, તો પછી આપણા જેવા પામર પ્રાણીનું શું જણું છે? હવે તો શોક દૂર કરીને આપણે એમના મૃત્યુનો આદર્શ લેઈને માત્ર ધીરજ ધરવાની રહી.

પૂ. શ્રી સમરથમહાજી મહારાજ સાહેબનો અભિપ્રાય:-

પ્રાથમિક તેમ જ અલ્પકાળના પરિચયથી મને શ્રી વિનોદમુનિના વિષે અનુભવ થયો, કે તેમની ધર્મપ્રિયતા અને ધર્માભિપ્રાય ‘અદ્વિમિત્રા પેણાણુરાગરત્તે’ નો પરિચય કરાવતી હતી પ્રાપ્ત સંસારિક પ્રચર વેલવ તરફ તેમની રુચિ દ્રષ્ટિગોચર થતી ન હતી પરંતુ તેઓ પીતરાગવાળીના સંસર્ગથી વિપયવિમુખ ધર્મકાર્યમાં સદા તત્પર અને તલ્લીન દેખાતા હતા. આસ પરિચયના અભાવે વૈરાગ્ય પણ તેમની ધારાથી તેમની ધર્માનુરુગિતા તથા જીવનચર્યાથી કઠિન કાર્ય કરવામાં પણ ગભરાટના રથાને સુખાનુભવની વૃત્તિ લક્ષમાં આવતી હતી.

હવે

શ્રી વિનોદમુનિના જીવનના જે પ્રશ્નો ઉપસ્થિત થાય છે તેનો ખુલાસો કરવામાં આવે છે.

પ્ર. ૧. તેમણે આજ્ઞા વગર સ્વયમેવ દીક્ષા કેમ લીધી?

ઉત્તર-પંચમાં આરાનાં ભદ્રા શેઠાણીના પુત્ર એવંતા (અતિમુક્ત) કુમારને તેમની માતૃશ્રીએ દીક્ષાની આજ્ઞા આપવાની તદ્દન ના પાડી એટલે તેણે

સ્વયમેવ દીક્ષા લીધી. ત્યાર બાદ લદ્દા શેઠાણીએ પોતાના કુમારને ગુરુને સોંપી દીધા તેજ રાત્રે તેણે ખારમી લિખ્ખુની પડિમા અંગીકાર કરી અને શિયાળણીના પરીષદથી કળ કરી નક્કીનગુદમ વિમાનમાં ગયા તેવી જ રીતે શ્રી વિનોદકુમાર સ્વયં દીક્ષિત થયા.

પ્ર. ૨. આવા વૈરાગી જીવને આવો ભયંકર પરીષદ કેમ આવે ?

ઉત્તર:-કેટલાક ચરમ શરીરી જીવને મારણાંતિક ઉપસર્ગ આવેલ છે. જુઓ ગજસુકુમાર મુનિ, મેનાર્ગ મુનિ, કેશવ મુનિ, કારણ કે તેમની સત્તામાં હજારો ભવનાં કર્મ હોવા જોઈએ ત્યારે તેમને એકદમ મોક્ષ જવું હતું, તો મારણ તિક ઉપસર્ગ આવ્યા વગર એટલાં બધાં કર્મ કેવી રીતે જાય ? બા. ધ્ર. શ્રી વિનોદમુનિને આવો પરીષદ આવ્યો, જે ઉપરથી એમ અનુમાન થાય છે કે તે એકાવતારી જીવ હોય.

શ્રી વિનોદમુનિનું વિસ્તૃત જીવનચરિત્ર જુદા પુસ્તકથી ગુજરાતી ભાષા નથા હિન્દી ભાષામાં છપાયેલ છે તેમાંથી પ્રાર રૂપે અહીં સંક્ષેપ કરેલ છે.



॥ श्री-भगवतीसूत्रम् ॥

(सप्तदशो भागः)

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

श्री जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री घासीलालव्रतिविरचितया
प्रमेयचन्द्रिकाख्यया व्याख्यया समलङ्कृतम्

॥ श्री-भगवतीसूत्रम् ॥

(सप्तदशो भागः)

॥ अथाष्टाविंशतितमं शतकमारभते ॥

कर्मवृत्तव्यता संवलितं सप्तविंशतितमं शतकं व्याख्यातम् अथ क्रमप्राप्तं
तथाविधमेव अष्टाविंशतितमं शतकं व्याख्यायते, अत्रापि एकादशोद्देशकाः जीवा
द्येकादशद्वारानुगत पापकर्मादि दण्डकोपेताः सन्ति, तदनेन सम्बन्धेन आयातस्या-
ष्टाविंशतितमशतकस्य प्रथमोद्देशकस्येदं सूत्रम्-‘जीवा णं भंते’ इत्यादि,

मूलम्-जीवा णं भंते ! पावं कम्मं कहिं समज्जिणिसु कहिं
समायरिसु ? गोयमा ! सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा१,
अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य होज्जा२, अहवा
तिरिक्खजोणिएसु य मणुस्सेसु य होज्जा३, अहवा तिरिक्ख-
जोणिएसु य देवेषु य होज्जा४, अहवा तिरिक्खजोणिएसु य
नेरइएसु य मणुस्सेसु य होज्जा५, अहवा तिरिक्खजोणिएसु य
नेरइएसु य देवेषु य होज्जा६, अहवा तिरिक्खजोणिएसु य
मणुस्सेसु य देवेषु य होज्जा७, अहवा तिरिक्खजोणिएसु य
नेरइएसु य मणुस्सेसु य देवेषु य होज्जा८ । सलेस्सा णं भंते !
जीवा पावं कम्मं कहिं समज्जिणिसु ? कहिं समायरिसु ? एवं
चेव । एवं कण्हलेस्सा जाव अलेस्सा । कण्हपक्खिया सुक्क-
पक्खिया । एवं जाव अणागारोवउत्ता । नेरइया णं भंते ! पावं
कम्मं कहिं समज्जिणिसु ? कहिं समायरिसु ? गोयमा ! सव्वे वि
तिरिक्खजोणिएसु होज्ज त्ति एवं चेव अट्ठ भंगा भाणियव्वा ।
एवं सव्वत्थ अट्ठ भंगा एवं जाव अणागारोवउत्ता वि । एवं
जाव वेमाजियाणं । एवं णाणावरणिज्जेण दंडओ एवं जाव

અંતરાદિષ્ણાં । એવં એષ જીવાદીયા વૈમાણિયપજ્જવસાણા નવ
દંડગા ભવંતિ । સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ જાવ વિહરદ્ ॥સૂ૦ ૧॥

અઠાવીસદ્દમે સપ્ત પદ્ધતો ઉદેસો સમત્તો ॥૨૮-૧॥

છાયા-જીવાઃ સ્વલુ મદન્ત ! પાપં કમ્મં કુત્ર સમાર્જન્ કુત્ર સમાચરન્ ? ગૌતમ !
સર્વેઽપિ તાવત્ તિર્યગ્ચોનિકેષુ ભવેયુઃ ૧, અથવા તિર્યગ્ચોનિકેષુ ચ નૈરયિકેષુ ચ
ભવેયુઃ ૨, અથવા તિર્યગ્ચોનિકેષુ ચ મનુષ્યેષુ ચ ભવેયુઃ, અથવા તિર્યગ્ચોનિકેષુ ચ
દેવેષુ ચ ભવેયુઃ ૪, અથવા તિર્યગ્ચોનિકેષુ ચ નૈરયિકેષુ ચ મનુષ્યેષુ ચ ભવેયુઃ ૫,
અથવા તિર્યગ્ચોનિકેષુ ચ નૈરયિકેષુ ચ દેવેષુ ચ ભવેયુઃ ૬, અથવા તિર્યગ્ચોનિકેષુ ચ
મનુષ્યેષુ ચ દેવેષુ ચ ભવેયુઃ ૭, અથવા તિર્યગ્ચોનિકેષુ ચ નૈરયિકેષુ ચ મનુષ્યેષુ ચ
દેવેષુ ચ ભવેયુઃ સહેશ્યાઃ સ્વલુ મદન્ત ! જીવાઃ પાપં કમ્મં કુત્ર સમાર્જન્ કુત્ર
સમાચરન્ ગૌતમ ! સર્વેઽપિ તાવત્ તિર્યગ્ચોનિકેષુ ભવેયુરિતિ એવમેવાઘ્રો મજ્ઞા
મણિતવ્યાઃ । એવં સર્વત્રાઘ્રો મજ્ઞાઃ, એવં યાવદનાકારોપયુક્તા અપિ । એવં યાવદ્વૈમા
નિકાનામ્ । એવં જ્ઞાનાવરણિયેનાપિ દણ્ડકાઃ । એવં યાવદ્ અન્તરાચિકેણ । એવમેતે
જીવાદિકાઃ વૈમાનિકપર્યવસાના નવદણ્ડકા ભવન્તિ । તદેવં મદન્ત ! તદેવં
મદન્ત ! इति यावद्वિहरति ।સૂ૦ ૧ ॥

અઠાવિંશતિતમશતકે પ્રથમોદ્દેશકઃ સમાપ્તઃ ॥૨૮-૧॥

ટીકા—‘જીવા ણં મંતે !’ જીવાઃ સ્વલુ મદન્ત ! ‘પાવં કમ્મં’ પાપમ્—અશુભ
કર્મ ‘કર્હિં’ કુત્ર-કસ્યાં ગતૌ ‘સમજ્જિણિંસુ’ સમાર્જન્-ગૃહીતવન્તઃ કસ્યાં ગતૌ

અઠાવીસ વેં શતકકા પહેલા ઉદ્દેશક કા પ્રારંભ

કર્મવત્તવ્યતા સહિત ૨૭ વાં શતક વ્યાખ્યાત હો તુકા અથ
ક્રમ પ્રાપ્ત ૨૮ વાં શતક પ્રારંભ હોતા હૈ । યર્હા પર ખી ૧૧ ઉદ્દેશક
હે । ઓર યે ઉદ્દેશક જીવાદિક ૧૧ દ્વારો મેં અનુગત પાપકર્માદિક
દણ્ડકોં સે યુક્ત હે ।

‘જીવા ણં મંતે ! પાવં કમ્મં કર્હિં સમજ્જિણિંસુ’ હત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—ગૌતમસ્વામીને હસ સૂત્રદ્વારા પ્રભુશ્રી સે એસા પૂછા હૈ

અઠાવીસમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશનો પ્રારંભ—

કર્મના સંબંધમાં સત્યાવીસમું શતક કહેવાઈ ગયું હવે ક્રમથી આવેલા
આ અઠાવીસમા શતકનો પ્રારંભ થાય છે, આ અઠાવીસમા શતકમાં પદ્ધ
૧૧ અગીયાર ઉદ્દેશાઓ કહ્યા છે અને આ ઉદ્દેશાઓ ૭૫ વિગેરે દંડકો
સહિત કહ્યા છે—‘જીવા ણં મંતે ! પાવં કમ્મં કર્હિં સમજ્જિણિંસુ’ હત્યાદિ

ટીકાર્થ—ગૌતમ સ્વામીએ આસૂત્રદ્વારા પ્રભુશ્રી ને એવું પૂછ્યું છે કે—

વર્તમાના જીવાઃ પાપકર્મણાં સાવયવમકુર્વન્નિત્યર્થઃ । ‘કહિં સમાયર્ણિસુ’ કસ્યો ગતૌ
વર્તમાના જીવાઃ પાપં કર્મ સમાચરન્-પાપકર્માચરણં કૃતવન્તઃ પાપકર્મહેતુ
સમાચરણેન તદ્વિપાકાનુભવનેન વા, ભગવાનાહ-‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘સઘ્વે વિ
તાવ તિરિક્કલ્લજોણિણ્ણુ હોજ્જા’ સર્વેઽપિ તાવત્ જીવા સ્તિર્યગ્ચોનિકેષુ ભવેયુઃ
इह तिर्यग्योनिः सर्वजिवानां मातृस्थानीया तस्या बहुत्वात्, ततश्च सर्वेऽपि
तिर्यग्योऽन्ये नैरयिकाद् ये जीवा स्तिर्यग्योनिकेभ्यः समागत्योत्पन्नाः कदाचि-
द्भवेयुः ततस्ते सर्वेऽपि तिर्यग्योनिकेषु अभूवन्निति व्यपदिश्यन्ते, तदयमर्थः
ये जीवा विविक्षितसमये नारकादयोऽभूदन् ते अल्पत्वेन समस्ता अपि सिद्धिगम-

कि ‘जीवा णं भंते ! पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु’ हे भदन्त ! जीवों
ने किसगति में पापकर्म का उपार्जन किया है ? ‘कहिं समायर्णिंसु’
और किसगति में वर्तमान जीवों ने पापकर्म का आचरण किया है ?
अर्थात् पापकर्म के हेतुओं के समाचरण से-सेवन से-और तज्जन्य
विपाक के अनुभव से पापकर्म का आचरण किया है ? उसका फल
भोगा है ? इसके उत्तर में प्रभुश्रीने उनसे ऐसा कहा है-‘गोयमा !
सઘ્વે વિ તાવ તિરિક્કલ્લજોણિણ્ણુ હોજ્જા’ हे गौतम ! समस्त जीव
पहिले तिर्यग्योनि में रहें हुए हैं-इसलिये तिर्यग्योनि में होने के
कारण वह योनि उनकी माता के स्थानापन्न हैं । क्योंकि तिर्यग्योनि
बहुत हैं । इसलिये तिर्यग्ओं से भिन्न जो नैरयिकादि जीव हैं वे सब
तिर्यग्योनिकों में से आ करके उत्पन्न हुए हैं । इसलिये वे सब पहिले
तिर्यग्योनि कों में रहे हुए हैं ऐसा कहा जाता है । इस कारण तिर्य-

‘જીવા ણં ભંતે ! પાવં કમ્મં કહિં સમજ્જિણિસુ’ હે ભગવન્ ભવેએ કઈ ગતિમાં
પાપકર્મનું ઉપાર્જન કર્યું છે ? ‘કહિં સમાયર્ણિસુ’ અને કઈ ગતિમાં રહેલા
ભવેએ પાપકર્મનું આચરણ કર્યું છે ? અર્થાત્ પાપકર્મના હેતુઓના આચરણથી
એટલે કે સેવનથી અને તેનાથી થનારા વિપાકના અનુભવથી પાપકર્મનું
આચરણ કર્યું છે ? અને તેનું ફળ લોગ્યું છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી
ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે ‘ગોયમા ! સઘ્વે વિ તાવ તિરિક્કલ્લજોણિણ્ણુ હોજ્જા’
હે ગૌતમ ! સઘણા ભવે પડેલાં તિર્યગ્યોનિમાં રહેલા છે, તેથી તિર્યગ્યોનીમાં
હોવાને કારણે તે યોનિ તેની માતાને સ્થાને ગણાય છે. કેમ કે-તિર્યગ્યોની
ઘણી છે. તેથી તિર્યગ્યોથી અન્ય જે નૈરયિકો વિગેરે ભવે છે, તે તિર્યગ્ય-
યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થયેલા છે. તેથી તે બધા પડેલાં તિર્યગ્ય-
યોનિકોમાં રહેલા છે. એ પ્રમાણે કહેવામાં આવે છે. આ કારણથી તિર્યગ્ય-

તિર્યગ્ગતિપ્રવેશેન ચ નિર્લેપતયા ઉદ્વૃત્તાઃ તત્ત્ર તિર્યગ્ગતેરનન્તત્ત્વેન અનિ-
ર્લેપનીયત્વાત્ તત્ત ઉદ્વૃત્તા સ્તિર્યઞ્ચ સ્તત્સ્થાનેષુ નારકાદિત્વેન ઉત્પન્નાઃ, તતસ્તે
તિર્યગ્ગતૌ નારકગત્યાદિકારણિભૂતં પાપં કર્મ સમર્જિતવન્ત્ત્વેન પ્રથમો ભગ્નઃ ૧।
'અહવા તિરિક્કલ્લજોણિણ્ણુ ચ નેરહણ્ણુ ચ હોજ્જાર' અથવા તિર્યગ્ગોનિકેષુ ચ
નૈરયિકેષુ ચ ભવેયુઃ, વિવિક્ષિતસમયે યે મનુષ્યા દેવા વા અભૂવન્ તે નિર્લેપતયા
તથૈવોદ્વૃત્તાઃ તત્સ્થાનેષુ ચ તિર્યગ્નારકેભ્ય આગત્યોત્પન્નાઃ તે ચ એવં વ્યપદિશ્યન્તે-
તિર્યગ્નૈરયિકેષુ અભૂવન્તે, યે ચ યત્રાભૂવન્ તે તત્રૈવ કર્મોપાર્જિતવન્ત્ત્વેન ર્શ્યર્થો-
લ્ભ્યતે ઇતિ દ્વિતીયો ભગ્નઃ ૨। 'અહવા તિરિક્કલ્લજોણિણ્ણુ ચ મણુસેસુ ચ હોજ્જાર'
અથવા તિર્યગ્ગોનિકેષુ ચ મનુષ્યેષુ ચ ભવેયુઃ વિવિક્ષિતસમયે યે નૈરયિકા દેવા વા
પ્રગતિ સે નિકલ્લે હુણ્ણુ જીવ્ણુ ઉન-૨ સ્થાનો મેં-નારકાદિ રૂપ મેં જો
ઉત્પન્ન હુણ્ણુ હૈં સો વહાં પર તિર્યઞ્ચગતિ મેં ઉન્હોને નારક ગતિ આદિ
મેં પ્રાપ્ત હોને કે કારણ ભૂતકાલ મેં પાપકર્મ કો ઉપાર્જન ક્રિયા હૈં।
એસા યહ પ્રથમ ભંગ હૈં।

'અહવા--તિરિક્કલ્લજોણિણ્ણુ ચ નેરહણ્ણુ ચ હોજ્જાર' અથવા-
સમસ્ત જીવ તિર્યગ્ગોનિકો મેં ઓર નૈરયિકો મેં રહે હુણ્ણુ હૈં-વિવિક્ષિત
સમય મેં જો મનુષ્ય અથવા દેવ હુણ્ણુ હૈં વે ઉન સ્થાનો મેં તિર્યગ્ગો-
નિકો સે યા નારકો સે આકર કે ઉત્પન્ન હુણ્ણુ હૈં, ઇસલિયે એસા કહા
જા સકતા હૈં કિ યે પહિલે તિર્યગ્ગોનિકો મેં યા નૈરયિકો મેં રહે હુણ્ણુ
હૈં, જો જહાં રહા હુઆ હૈં ડાલને વહીં પર કર્મ કા ઉપાર્જન ક્રિયા હૈં,
એસા યહ દ્વિતીય ભંગ હૈં। 'અહવા તિરિક્કલ્લજોણિણ્ણુ ચ મણુસેસુ ચ

ગતિમાંથી નિકળેલા હોવા તે-તે સ્થાનોમાં નારક વિગેરે રૂપથી ઉત્પન્ન
થયા છે, તેઓ તિર્યચ ગતિમાં, નારક ગતિ વિગેરેમાં, ઉત્પન્ન થવાને કારણે
ભૂતકાળમાં પાપકર્મનું ઉપાર્જન કર્યું છે એ પ્રમાણે આ પહેલો ભંગ છે. ૧
'અહવા-તિરિક્કલ્લજોણિણ્ણુ ચ નેરહણ્ણુ ચ હોજ્જાર' અથવા-સઘળા હોવા તિર્યચ
ગોનિકોમાં અને નૈરયિકોમાં રહેલા છે.-વિવિક્ષિત સમયમાં જેઓ મનુષ્ય
અથવા દેવ થયા છે, તેઓ તે સ્થાનોમાં તિર્યચ ગોનિકોથી નારકોથી આવીને
ઉત્પન્ન થયા છે. તેથી એમ કહેવામાં આવે છે કે તેઓ પહેલાં તિર્યચ
ગોનિકોમાં અથવા નૈરયિકોમાં રહેલા છે, જેઓ ત્યાં રહેલા છે, તેઓએ
ત્યાંજ કર્મનું ઉપાર્જન કર્યું છે, એ પ્રમાણે આ બીજો ભંગ કહેયો છે. ૨

'અહવા તિરિક્કલ્લજોણિણ્ણુ ચ મણુસેસુ ચ હોજ્જાર' અથવા સઘળા હોવા
તિર્યચગોનિકોમાં અથવા મનુષ્યોમાં રહેલા છે. તેથી ત્યાંથી નિકળીને

ય હોજ્જા' અથવા તિર્યગ્યોનિકેષુ નૈરયિકેષુ ચ દેવેષુ ચ મવેયુરિતિ પઠ્ઠો મઙ્ગઃ ૬ । 'અહવા તિરિક્લજોણિણસુ ય મણુસ્સેસુ ય દેવેસુ ય હોજ્જા' અથવા તિર્યગ્યોનિકેષુ ચ મનુષ્યેષુ ચ દેવેષુ ચ મવેયુરિતિ સપ્તમો મઙ્ગઃ ૭ । 'અહવા તિરિક્લજોણિણસુ ય નેરહણસુ ય મણુસ્સેસુ ય દેવેસુ ય હોજ્જા' અથવા તિર્યગ્યોનિકેષુ ચ નૈરયિકેષુ ચ મનુષ્યેષુ ચ દેવેષુ ચ મવેયુરિતિ-અષ્ટમો મઙ્ગ ઇતિ ।

તિર્યગ્યોનિકોં મેં, નૈરયિકોં મેં ઓર દેવોં મેં રહે હુણ હેં । સાતવાં મંગ હસ પ્રકાર સે હૈ-‘અહવા-તિરિક્લજોણિણસુ ય મણુસ્સેસુ ય દેવેસુ ય હોજ્જા’ અથવા-સમસ્ત જીવ તિર્યગ્યોનિકોં મેં મનુષ્યોં મેં ઓર દેવોં મેં રહે હુણ હેં । આઠવાં મંગ હસ પ્રકાર સે હૈ-‘અહવા-તિરિક્લજોણિણસુ ય નેરહણસુ ય મણુસ્સેસુ ય દેવેસુ ય હોજ્જા’ અથવા-સમસ્ત જીવ તિર્યગ્યોનિકોં મેં નૈરયિકોં મેં, મનુષ્યોં મેં ઓર દેવોં મેં રહે હુણ હેં, હસ પ્રકાર સે યે આઠ મંગ હેં । હનમેં પ્રથમ મંગ તિર્યગ્ગતિ કો હી લેકર હુઆ હૈ । અન્ય ત્રીન મંગ તિર્યગ્નારકોં કે, તિર્યગ્ મનુષ્યોં કે, તિર્યગ્દેવોં કે સંયોગ કો લેકર હુણ હેં । હસ પ્રકાર સે યે ચાર મંગ હો જાતે હેં । ત્રિક સંયોગ કો લેકર-તિર્યગ્નારક મનુષ્ય કે, તિર્યગ્નારક દેવ કે તિર્યગ્મનુષ્ય દેવકે સંયોગ સે ત્રિક સંયોગી મંગ ત્રીન હોતે હેં, હસ પ્રકાર સે સાત મંગ હો જાતે હેં । ચતુષ્ક સંયોગ મેં-તિર્યગ્નારક મનુષ્ય દેવ, હનકે

અવેા તિર્યગ્યોનિકોમાં નૈરયિકોમાં, અને દેવોમાં રહેલા છે, એ પ્રમાણે આ છઠ્ઠો ભંગ કહ્યો છે.

‘અહવા તિરિક્લજોણિણસુ ય મણુસ્સેસુ ય દેવેસુ ય હોજ્જા’ અથવા સધળા અવેા તિર્યગ્ય યોનિકોમાં મનુષ્યોમાં અને દેવોમાં થયા છે. એ રીતે આ સાતમે ભંગ કહ્યો છે, ‘અહવા તિરિક્લજોણિણસુ ય નેરહણસુ ય મણુસ્સેસુ ય દેવેસુ ય હોજ્જા’ અથવા સધળા અવેા તિર્યગ્ય યોનિકોમાં, નૈરયિકોમાં, મનુષ્યોમાં અને દેવોમાં થયા છે. આ રીતે આ આઠમે ભંગ કહ્યો છે આમાં પહેલો ભંગ તિર્યગ્ગતિને લઈને કહ્યો છે અને બાકીના ત્રણ ભંગો તિર્યગ્ય નારકોના, તિર્યગ્ય મનુષ્યોના, તિર્યગ્ય દેવોના સંયોગથી થયા છે આ રીતે આ ચાર ભંગો થઈ ગયા છે. ત્રિક સંયોગને લઈને તિર્યગ્ય મનુષ્યના, તિર્યગ્ય નારકના તિર્યગ્ય દેવના, સંયોગથી ત્રિક સંયોગી ત્રણ ભંગો હોય છે. આ રીતે સાત ભંગો થઈ ગયા છે.

ચતુષ્ક સંયોગમાં-તિર્યગ્ય નારક, મનુષ્ય દેવ, આના સંયોગથી એકજ

તદેવમષ્ટૌ મજ્ઞાઃ પ્રદર્શિતા સ્તત્ર પ્રથમો મજ્ઞઃ કેવલં તિર્યગ્ગત્યૈવ ભવતિ । ૧ ।
 અન્યે ત્રયો દ્વિકસંયોગેન ભવન્તિ, તથાહિ તિર્યગ્નારકાભ્યાં તિર્યક્મનુષ્યાભ્યાં
 તિર્યગ્દેવાભ્યામિતિ ત્રયો મજ્ઞા દ્વિકસંયોગિનઃ, એતે સદ્કલ્પનયા જાતાશ્ચત્વારઃ,
 તથા તિર્યગ્નારકમનુષ્યૈઃ ૧, તિર્યગ્નારકદેવૈઃ ૨, તિર્યક્મનુષ્યદેવૈઃ ૩ રિતિ ત્રયો મજ્ઞાઃ
 ત્રિકસંયોગિનઃ, જાતા સપ્ત । એક સ્તિર્યગ્નારકમનુષ્યદેવૈ રિતિ ચતુષ્કસંયોગી
 અષ્ટમો મજ્ઞઃ ૮ । સદ્કલ્પનયા સર્વે અષ્ટૌ મજ્ઞા । ભવન્તીત્યુત્તરમ્ । ‘સલેસ્સા ણં મંતે !
 જીવા પાવં કમ્મં કહિં સમજ્ઞિણિંસુ કહિં સમાયરિંસુ’ સલેશ્યાઃ—લેશ્યાસહિતા
 જીવાઃ પાપં કર્મ કુત્ર કસ્યાં ગતૌ સમાર્જન કસ્યાં ગતૌ સમાચરન્ ? इति प्रश्नः.
 મગવાનાહ—હે ગૌતમ ! ‘એવં ચેવ’ એવમેવ—પૂર્વદેવ અષ્ટૌ મજ્ઞાન્ કૃત્વા ઉત્તરં
 કર્તવ્યમિતિ । ‘એવં કળ્હલેસ્સા જાવ અલેસ્સા’ એવં કળ્પલેશ્યાવન્તો જીવા
 યાવત્ અલેશ્યા લેશ્યારહિતા જીવાઃ કસ્યાં ગતૌ પાપ કર્મ સમર્જિતવન્તઃ સમા-

સંયોગ મેં એક હી ભંગ હોતા હૈ । સબ મિલાકર કુલ આઠ ભંગ હો
 જાતે હૈ । એસે થે આઠ ભંગ ગૌતમસ્વામી કે પ્રશ્ન કે ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી
 ને કહે હૈ । ‘સલેસ્સા ણં મંતે ! જીવા પાવં કમ્મં કહિં સમજ્ઞિણિંસુ
 કહિં સમાયરિંસુ’ હે ભદન્ન ! સમસ્ત લેશ્યા સહિત જીવોં ને પાપકર્મ
 કા ઉપાર્જન કિસ ગતિ મેં કિયા હૈ ? કિસ ગતિ મેં ઉસકા સમાચરણ
 કિયા હૈ ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈ—ગોયમા ! એવં ચેવ’ હે ગૌતમ !
 પૂર્વ કે જૈસે યહાં આઠ ભંગ બનાકર ઉત્તર સમજ્ઞના ચાહિયે, ‘એવં
 કળ્હલેસ્સા જાવ અલેસ્સા’ હે ભદન્ત ! લેશ્યા સહિત જીવોં ને એવં
 લેશ્યા રહિત જીવોંને કિસ ગતિ મેં પાપકર્મ કા ઉપાર્જન કિયા હૈ ? ઓર
 કિસ ગતિ મેં ઉસકા સમાચરણ કિયા હૈ—ફલ ભોગાં હૈ ? હિસકે
 ઉત્તર મેં પ્રભુ ને કહા હૈ—કિ હે ગૌતમ ! યહાં પરંભી આઠ ભંગ બનાકર

ભંગ હોય છે તમામ મળીને કુલ આઠ ભંગો થઈ જાય છે. એ પ્રમાણેના આ
 આઠ ભંગો ગૌતમ સ્વામીને પ્રભુશ્રીએ તેમના પ્રશ્નના ઉત્તરમાં કહ્યા છે.

‘સલેસ્સા ણં મંતે ! જીવા પાવં કમ્મં કહિં સમજ્ઞિણિંસુ કહિં સમા-
 યરિંસુ’ હે ભગવન્ સધળા લેશ્યાવાળા જીવોએ કઈ ગતિમાં પાપકર્મનું
 ઉપાર્જન કર્યું છે ? કઈ ગતિમાં તેનું સમાચરણ કર્યું છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં
 પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘ગોયમા ! એવં ચેવ’ હે ગૌતમ ! પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે આ
 વિષયમાં આઠ ભંગોવાળો ઉત્તર સમજાવે ‘એવં કળ્હલેસ્સા જાવ અલેસ્સા’
 હે ભગવન્ લેશ્યાવાળા જીવોએ અને લેશ્યા વિનાના જીવોએ કઈ ગતિમાં
 પાપકર્મનું ઉપાર્જન કર્યું છે ? અને કઈ ગતિમાં તેનું કળ્પ લોગવ્યું છે ?
 આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—હે ગૌતમ ! આ વિષયમાં પણ

चरितवन्त इति प्रश्नः, अष्टमङ्गैरुत्तरं पूर्ववदेवेति, अत्र यावत्पदेन नीलकापो-
ततेजः पद्म शुक्ललेश्यावतां संग्रहो भवति । सर्वत्राऽऽलापप्रकारः स्वयमेव
उद्दनीय इति । ‘कण्ठपक्खिया सुक्कपक्खिया एव’ कृष्णपाक्षिकाः शुक्लपाक्षिका
एवम्-एवमेव-पूर्वोक्तवदेव विज्ञेयाः । कियत्पर्यन्तमित्याह-‘जाव अणागारोवउत्ता’
यावदनाकारोपयुक्ताः अनाकारोपयुक्तप्रकरणपर्यन्तमिति, अत्र यावत्पदेन सम्य-
ग्दृष्टि-मिथ्यादृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टि-ज्ञान्याभिनिबोधिकज्ञानि-श्रुतज्ञानि याव-
त्केवलज्ञान्यज्ञानि-मत्यज्ञानि-श्रुतज्ञानि-विभङ्गज्ञान्याहारसंज्ञोपयुक्त यावन्नो संज्ञो-
पयुक्तसवेदक-यावदवेदक-सकपायि-यावदकपायि-सयोगि-मनोयोगि-वाग्यो-
गि-काययोग्ययोगि-साकारोपयुक्तानां संग्रहो भवतीति ।

उनका उत्तर समझना चाहिये, यहाँ यावत्पद से नीललेश्यावालों का,
कापोतलेश्यावालों का, पीतलेश्यावालों का, पद्मलेश्यावालों का और
शुक्ललेश्यावालों का ग्रहण हुआ है । इनमें आलाप का प्रकार अपने
आप उद्भावित करना चाहिये, ‘कण्ठपक्खिया सुक्कपक्खिया एवं’
कृष्णपाक्षिक और शुक्लपाक्षिक जीवों के सम्बन्ध में भी ऐसा ही
कथन यावत् अनाकारोपयुक्त प्रकरण तक जानना चाहिये, यहाँ यावत्
पद से’ सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, ज्ञानी अभिनि-
बोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी यावत् केवलज्ञानी, अज्ञानी, मत्यज्ञानी श्रुत-
ज्ञानी विभङ्गज्ञानी, आहारसंज्ञोपयुक्त यावत् नोसंज्ञोपयुक्त, सवेदक,
यावत् अवेदक, सकपायी-यावत् अकपायी, सयोगी, मनोयोगी, वाक्
योगी, काययोगी और साकारोपयुक्त’ इन पदों का संग्रह हुआ है ।

આઠ ભગો બનાવીને તેનો ઉત્તર સમજી લેવો, અહિયાં યાવત્ પદથી નીલ
લેશ્યાવાળાઓનું કાપોત લેશ્યાવાળાઓનું પીતલેશ્યાવાળાનું પદ્મલેશ્યાવાળા
ઓનું અને શુક્લ લેશ્યાવાળાઓનું ગ્રહણ કરાયું છે. તેઓના આલાપકોનો
પ્રકાર સ્વયં બનાવીને સમજી લેવો. ‘કણ્ઠપક્ખિયા સુક્કપક્ખિયા એવ’
કૃષ્ણપાક્ષિક અને શુક્લપાક્ષિક જીવોના સંબંધમાં પણ એજ પ્રમાણે કથન
યાવત્ અનાકારોપયોગવાળાના પ્રકરણ સુધી સમજી લેવું. અહિયાં યાવત્
પદથી ‘સમ્યગ્દૃષ્ટિ, મિથ્યાદૃષ્ટિ, સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિ, જ્ઞાની, આભિનિબોધિક
જ્ઞાની, શ્રુતજ્ઞાની, ઔદિકજ્ઞાની, અજ્ઞાની, મતિ અજ્ઞાની શ્રુત અજ્ઞાની, વિભંગ-
જ્ઞાની, આહારસંજ્ઞોપયોગવાળા, યાવત્ પરિગ્રહ સંજ્ઞોપયોગવાળા, સવેદક,
નપુસક વેદક, સકપાયી, યાવત્ લોભકપાયી, સયોગી, મનોયોગી, વચનયોગી
અને સાકારોપયોગવાળાઓ ગ્રહણ કરાયા છે.

સામાન્યતો જીવાનાં કર્મ્યાં ગતૌ પાપાર્જનં ભવતીતિ પ્રદર્શ્ય વિશેષતો જીવાનાં તદ્દર્શયિતું પ્રશ્નચન્નાહ—‘નેરહ્યાણં’ इत्यादि । ‘નેરહ્યાણં મંતે’ નૈરયિકાઃ સ્વલુ મદન્ત ! ‘પાવં કર્મ્મં કહિં સમ્મજ્જિણિસુ કહિં સમાયરિસુ’ પાપમ્—અથુર્મં કર્મ કુત્ર—કર્મ્યાં ગતૌ સમાર્જનં કુત્ર—કર્મ્યાં ગતૌ પાપં કર્મ સમાચરન્ કાં ગતિમાશ્રિત્ય કર્મણાં સંચયં કુર્વન્તિ યેન કર્મણા એતેષાં નારકગતૌ ગમનં ભવતીતિ શ્રુતઃ । મગ્ધાનાહ—‘ગોયમા’ इत्यादि, ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘સવ્વે વિ તાવ તિરિક્કજોણિણસુ હોજ્જા સિ, એવંચેવ અટ્ટ મંગા માણિયવ્વા’ સર્વેઽપિ તાવત્ જીવાઃ તિર્યગ્યોનિકેષુ અશૂચન્ ઇતિ એવં પ્રકારેણ અઢાવપિ મદ્ધાઃ દ્વિતીયાદિરભ્યાષ્ટા ગતાઃ પ્રરૂપણીયા ઇતિ । ‘એવં સવ્વત્થ વિ અટ્ટ મંગા’ પદમેવ

સામાન્ય રીતે જીવો કે દ્વારા કિસ ગતિ મેં પાપકર્મ્મ કા ઉપાર્જન કિયા જાતા હૈ—હ પ્રગટ કરકે અથ સૂત્રકાર ફલી વાત શો વિશેષ રૂપ સે પ્રગટ કરતે હૈ—હમ મેં ગૌતમસ્વામી ને પ્રશુશ્રી સે એવા પૂછા હૈ—‘નેરહ્યાણં મંતે ! પાવં કર્મ્મં કહિં સમ્મજ્જિણિસુ કહિં સમાયરિસુ’ હે મદન્ત ! નૈરયિકજીવો ને કિસ ગતિ મેં પાપકર્મ્મ કા ઉપાર્જન કિયા હૈ ઓર કિસ ગતિ મેં ચલતા સમાચરણ કિયા હૈ ? અર્થાત્ કિસ ગતિ મેં રહકર એ કર્મોં કા સંચય કરતે હૈ કિ જિસ કર્મ્મ સે ફનકા નરકગતિ મેં ગમન હોતા હૈ ? ફલ પ્રશ્ન કે ઉત્તર મેં પ્રશુશ્રી કહતે હૈ—‘ગોયમા ! સવ્વે વિ તાવ તિરિક્કજોણિણસુ હોજ્જા એવંચેવ અટ્ટ મંગા માણિયવ્વા’ હે ગૌતમ ! સમસ્ત જીવ તિર્યગ્યોનિક મેં રહે હૈં ફલ પ્રકાર સે યહાં પૂર્વ કે અનુવાદ આઠ મંગ ઉત્તર રૂપ મેં કહના ચાહિયે, ‘એવં સવ્વત્થ વિ અટ્ટ મંગા’ ફલી પ્રકાર સે સર્વજ્ઞ સલેશ્યાદિ નારક પદોં મેં ઉત્તર

સામાન્ય રીતે જીવો દ્વારા કઈ ગતિમાં પાપકર્મ્મનું ઉપાર્જન કરવામાં આવે છે, આ વિષય પ્રગટ કરીને હવે સૂત્રકાર આ વાતને વિશેષ રૂપથી બતાવે છે.—આમાં ગૌતમસ્વામીએ પ્રશુશ્રીને એવું પૂછ્યું છે કે—‘નેરહ્યાણં મંતે ! પાવં કર્મ્મં કહિં સમ્મજ્જિણિસુ કહિં સમાયરિસુ’ હે ભગવન્ નૈરયિક જીવોએ કઈ ગતિમાં પાપકર્મ્મનું સમાચરણ કર્યું છે ? અર્થાત્ કઈ ગતિમાં રહીને તેઓ કર્મોના સંચય-સંગ્રહ કરે છે ? કે જે કર્મથી તેઓ નારક ગતિમાં જાય છે આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રશુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—‘ગોયમા સવ્વે વિ તાવ તિરિક્કજોણિણસુ હોજ્જા એવંચેવ અટ્ટ મંગા માણિયવ્વા’ હે ગૌતમ ! સધળા જીવો તિર્યગ્ય યોનીમાં રહ્યા છે, આ રીતે અહિયાં પણ પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે આઠ ભંગો ઉત્તર રૂપે સમજી લેવા, ‘એવં સવ્વત્થ વિ અટ્ટ મંગા’ એજ પ્રમાણે સલેશ્યાદિ નારક પદોમાં બધે જ

સર્વત્ર સલેશ્યાદિનારકપદેષુ ઉત્તરપક્ષે અષ્ટૌ મજ્ઞાઃ કર્તવ્યાઃ 'एवं जाव अणागारोवउत्ता वि' एवं यावदनाकारोपयुक्ता अपि । अत्र यावत्पदेन कृष्ण-
 लेश्यादित आरभ्य साकारोपयोगयुक्तानां सर्वेषां ग्रहणं कर्तव्यमिति, सर्वत्र पदेषु
 अष्टौ मज्ज्ञाः ग्रहणीया इति । 'एवं जाव वैमाणियाणं' एवं नारकवदेव
 यावद्वैमानिकानाम्, यावत्पदेन एकेन्द्रियादि सर्वजीवानां ग्रहणं भवति । 'एवं
 णाणावरणिज्जेण वि दंडओ' एवं पापकर्मदण्डकवदेव ज्ञानावरणीयकर्मणा अपि
 दण्डको भणितव्यः । 'एवं जाव अंतराहणं' एवं यावत् अन्तरायिकेण कर्मणा-
 ऽपि दण्डको भणितव्यः, यावत्पदेन दर्शनावरणीयादीनां संग्रहो भवतीति ।
 'एवं एए जीवादीया वैमाणियपज्जवसाणा नवदंडगा भवन्ति' एवमेते जीवादिका

પક્ષ મેં આઠ ભંગ કહના ચાહિયે, 'एवं जाव अणागारोवउत्ता वि' इसी
 प्रकार से यावत् अनाकारोपयुक्त तक के पदों में भी आठ भंग कहना
 चाहिये, यहां यावत् पद से कृष्णलेश्या से लेकर साकारोपयुक्त तक के
 नरक पदों का ग्रहण हुआ है । 'एवं जाव वैमाणियाणं' नारक के जैसा
 यावत् वैमानिकों तक प्रत्येक दंडक में भी आठ भंग कहना चाहिये,
 यहां यावत् पद से एकेन्द्रियादि सर्व जीवों का ग्रहण हुआ है । 'एवं
 णाणावरणिज्जेण वि दंडओ' पापकर्म दण्डक के जैसा ज्ञानावरणीय
 कर्म के साथ भी ऐसा ही दण्डक कहना चाहिये, 'एवं जाव अंत-
 राहयं' इसी प्रकार से यावत् अंतराय कर्म के साथ भी ऐसा ही दण्डक
 कहना चाहिये, यहां यावत् पद से दर्शनावरणीय आदि कर्मों का
 संग्रह हुआ है । 'एवं एए जीवादीया वैमाणियपज्जवसाणा नव दंडगा

ઉત્તર પક્ષમાં આઠ આઠ ભંગો સમજાવેલા 'एवं जाव अणागारोवउत्ता वि'
 એજ પ્રમાણે યાવત્ અનાકારોપયોગવાળાના કથન પર્યાન્તના પદોમાં પણ
 આઠ આઠ ભંગો સમજવા. અહિયાં યાવત્પદથી કૃષ્ણલેશ્યાથી લઈ ને સાકારોપ
 યોગ સુધીના પદો ગ્રહણ કરાયા છે. 'एवं जाव वैमाणियाणं' નારકના કથન
 પ્રમાણે યાવત્ વૈમાનિકોને પણ આઠ આઠ ભંગો સમજવા- અહિયાં યાવત્પદથી
 એક ઈન્દ્રિય વિગેરે સઘળા જીવો ગ્રહણ કરાયા છે.

'एवं णाणावरणिज्जेण वि दंडओ' પાપકર્મના દંડકના કથન પ્રમાણે
 જ્ઞાનાવરણીય કર્મની સાથે એજ પ્રમાણેના દંડકો કહેવા જોઈએ અહિયાં
 યાવત્પદથી દર્શનાવરણીય વિગેરે કર્મોના સંગ્રહ થયો છે

'एवं एए जीवादीया वैमाणियपज्जवसाणा नव दंडगा भवन्ति' આ રીતે જીવ
 ઈન્દ્રિયોને વૈમાનિક સુધીના જીવોમાં આ નવ દંડકો થાય છે, તેમ સમજવું.

વૈમાનિકપર્યવસાનાઃ જીવાદારબ્ય વૈમાનિકાન્તેષુ નવદણ્ડકા ભવન્તિ । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ જાવ વિહરઈ તદેવં’ મદન્ત ! તદેવં ભવન્ત ! ઇતિ યાવદ્વિહરતિ, હે મદન્ત ! જીવાનાં કર્મોપાર્જનવિષયે યદ્ દેવાનુપ્રિયેણ કથિતં તત્સર્વં સત્યમેવેતિ કથયિત્વા ગૌતમો મગવન્તં વન્દતે નમસ્યતિ, વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા સંયમેન તપસા આત્માનં ભાવયન્ વિહરતીતિ ॥સૂ. ૧॥

॥ ઇતિ શ્રી વિશ્વવિખ્યાત-જગદ્વલ્લભ-પ્રસિદ્ધવાચક-પશ્ચદશભાષા-
કલિતલલિતકલાપાલાપકપ્રવિશુદ્ધગદ્યપદ્યનૈકગ્રન્થનિર્માપક,
વાદિમાનમર્દક-શ્રીશાહચ્છત્રપતિ કોલ્હાપુરરાજપદ્મ-
‘જૈનાચાર્ય’ પદશૂષિત — કોલ્હાપુરરાજગુરુ-વાલ-
બ્રહ્મચારિ-જૈનાચાર્ય-જૈનધર્મદિવાકર-પૂજ્ય શ્રી
ઘાસીલાલવ્રતિવિરચિતાયાં શ્રી “મગ
વતીસૂત્રસ્ય” પ્રમેયચન્દ્રિકાવ્યાયાં-
વ્યાખ્યાયાં અષ્ટાવિંશતિતમશતકે
પ્રથમોદ્દેશકઃ સમાપ્તઃ ॥૨૮-૧॥

‘ભવંતિ’ હસ પ્રકાર સે જીવ સે લેકર વૈમાનિકાન્ત જીવોં મેં યે નૌ
દણ્ડક હોતે હૈં । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ જાવ વિહરઈ’ હે મદન્ત જીવોં
કે કર્મોપાર્જન કે વિષય મેં જો આપ દેવાનુપ્રિયને કહા હૈં વહ સબ સર્વથા
સત્ય હી હૈં ૨ એસા કહ કર ગૌતમને પ્રભુ કો વન્દના કી ઓર નમસ્કાર
કિયા ઓર ફિર વે વન્દના નમસ્કાર કર સંયમ ઓર તપ સે આત્મા
કો ભાવિત કરતે હુએ અપને સ્થાન પર ચિરાજમાન હો ગયે ॥સૂ. ૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત
“મગવતીસૂત્ર” કી પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાકે અઠાવીસવેં શતકકા

॥પ્રથમ ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥૨૮-૧॥

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ જાવ વિહરઈ’ હે ભગવન્ ભુવોના કર્મોના
ઉપાર્જનના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન
સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન આપ હોવાથી સર્વથા
સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર
કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના
આત્માને ભવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ. ૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકરપૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત “ભગવતીસૂત્ર”ની
પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના અઠવાવીસમા શતકનો પહેલો ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥૨૮-૧॥

॥ अथद्वितीयोद्देशकः प्रारभ्यते ॥

अथ क्रमप्राप्तं द्वितीयोद्देशकमारभते—‘अणंतरोववन्नगा णं’ इत्यादि ।

मूलम्—अणंतरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु कहिं समायरिंसु ? गोयमा ! सव्वे वि ताव तिरि-
क्खजोणिणसु होज्जा एवं एत्थ वि अट्ठ भंगा । एवं अणंतरो-
ववन्नगाणं नेरइयाईणं जस्स जं अत्थि लेस्सादियं अणा-
गारोवजोगपज्जवसाणं तं सव्वं एयाए भयणाए भाणियव्वं
जाव वेमाणियाणं । नवरं अणंतरेसु जे परिहारियव्वा ते जहा
बन्धिसए तहा इहंपि । एवं नाणावरणिज्जेण वि दंडओ एवं
जाव अंतराइएणं निरवसेसं । एसो वि नवदंडगसंगहिओ
उद्देसओ भाणियव्वो । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥सू० १॥

अट्ठावीसइमे सए वीओ उद्देसओ ससत्तो ॥२८-२॥

छाया—अनन्तरोपपन्नकाः खलु भदन्त ! नैरयिकाः पापं कर्म कुत्र समाजिन्
कुत्र समाचरन्, गौतम ! सर्वेऽपि तावत् तिर्यग्योनिकेषु अभूवन् एवमनापि अष्टौ
भङ्गाः, एवमनन्तरोपपन्नकानां नैरयिकादीनां यस्य यदस्ति लेखादिकमनाकारो-
पयोगपर्यवसानं तत्सर्वम् एतया भजनया भणितव्यं यथाऽनैरयिकानाम्, नवर-
मनन्तरेषु ये परिहर्तव्या स्ते यथा बन्धिशते तथा इहापि । एवं ज्ञानावरणीये-
नापि दण्डकाः, एवं यावदान्तरायिकेन निरवशेषम्, एवः अपि नवदण्डकसंगृहीत
उद्देशको भणितव्यः । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥सू० १॥

अष्टाविंशतितमे शतके द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥२९-२॥

टीका—‘अणंतरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया’ अनन्तरोपपन्नकाः प्रथमसमये
जायमानाः खलु भदन्त ! नैरयिकाः ‘पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु’ पापम्—

दूसरा उद्देशक का प्रारंभ

‘अणंतरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया पावं कम्मं’ इत्यादि

टीकार्थ—हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नक नैरयिकों ने पापकर्म का
उपार्जन किस गति में किया है और किस गति में उसका समाचरण

॥शील उद्देशाने। प्रारंभ—

‘अणंतरोववन्नगा णं भंते ! पावं कम्मं’ इत्यादि

टीकार्थ—हे भगवन् अनन्तरोपपन्नक नैरयिकों ने पापकर्म की प्राप्ति कઈ
गति में करे छे ? अने कई गति में तेने लोगवे छे ? आ प्रश्नना उत्तरमां प्रबुद्धी

અશુભં કર્મ કુત્ર-કસ્યાં ગતૌ સમર્જિતવન્તઃ-ગૃહીતવન્તઃ 'કર્હિં સમાચરિસુ' કુત્ર-
કસ્યાં ગતૌ સમાચરન્ સમાચરિતવન્તઃ અશુભકર્મણાં વન્ધનં કસ્યાં ગતૌ કૃતવન્ત
इति प्रश्नः । भगवानाह-‘गोयमा’ इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम । ‘सर्वे वि ताव
तिरिक्खजोणिएसु होज्जा’ सर्वेऽपि अनन्तरोपपन्नकाः तावत् तिर्यग्योनिकेषु
अभूवन् ‘एवं एत्थ वि अट्ठ भंगा’ एवमत्रापि अष्टौ भङ्गा भणितव्याः, ये चाष्टौ
अस्य शतकस्य प्रथमोद्देशके कथिताः तथाहि-सर्वेऽपि तावत् तिर्यग्योनिकेषु
अभूवन् १ अथवा तिर्यग्योनिकेषु च नैरयिकेषु चाभूवन् २ अथवा तिर्यग्योनिकेषु
च मनुष्येषु चाभूवन् ३, अथवा तिर्यग्योनिकेषु च देवेषु चाभूवन् ४, अथवा तिर्य-
ग्योनिकेषु च नैरयिकेषु चाभूवन् ५, अथवा तिर्यग्योनिकेषु च नैरयिकेषु च
देवेषु चाभूवन् ६, अथवा तिर्यग्योनिकेषु च मनुष्येषु च देवेषु चाभूवन् ७, अथवा
तिर्यग्योनिकेषु च नैरयिकेषु च मनुष्येषु च देवेषु चाभूवन्निति ८ । ‘एवं अनन्तरो-

કિયા હૈ-ફલોપભોગ કિયા હૈ ? ઉત્તર મેં પ્રમુશ્રી કહતે હૈ-‘ગોયમા !
‘सर्वे वि तावतिरिक्खजोणिएसु होज्जा’ हे गौतम ! समस्त अनन्तरो-
पपन्नक जीवों ने पापकर्म का उपार्जन तिर्यग्योनिकों में जन्म लेकर
किया है इस प्रकार से पूर्वोक्त कथन के जैसे आठ भंग उत्तर रूप में
यहां कहना चाहिये, जैसे-समस्त अनन्तरोपपन्नक नैरयिक नैरयिक
पर्याय प्राप्ति के पहिले तिर्यग्गति में थे १ अथवा-तिर्यग्योनिकों में
थे, और नैरयिकों में थे २ अथवा-तिर्यग्योनिकों में और मनुष्यों में
थे ३ अथवा तिर्यग्योनिकों में और देवों में थे ४ अथवा-तिर्यग्यो-
निकों में नैरयिकों में और मनुष्यों में थे, ५ अथवा-तिर्यग्यो-
निकों में नैरयिकों में और देवों में थे, ६ अथवा तिर्यग्योनिकों में
मनुष्यों में और देवों में थे ७ अथवा तिर्यग्योनिकों में नैरयिकों

ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે-‘સર્વેવિ તાવ તિરિક્કજોણિસુ હોજ્જા’ હે ગૌતમ !
સઘણા અનંતરોપપન્નક જીવોએ તિર્યક્ યોનીમાં જન્મ લઈને પાપકર્મનું
ઉપાર્જન કર્યું છે આ રીતે પહેલાં કહેલ પ્રકારથી આઠ ભંગો ઉત્તરરૂપે
અહિયાં સમજવા જેમ કે-સઘણા અનંતરોપપન્નક નૈરયિકપર્યાય પ્રાપ્તિની પહેલાં
તિર્યંચ ગતિમાં હતા ૧ અથવા તિર્યંચ યોનિકોમાં હતા અને નૈરયિકોમાં
હતા. ૨ અથવા તિર્યંચયોનિકોમાં અને મનુષ્યોમાં હતા. ૩ અથવા તિર્યંચ
યોનીકોમાં નૈરયિકોમાં હતા અને દેવોમાં હતા ૪ અથવા તિર્યંચયોનિકોમાં
અને નૈરયિકોમાં અને મનુષ્યોમાં હતા. ૫ અથવા તિર્યંચયોનિકોમાં નૈર-
યિકોમાં અને દેવોમાં હતા ૬ અથવા તિર્યંચયોનિકોમાં મનુષ્યોમાં અને
દેવોમાં હતા. ૭ અથવા તિર્યંચયોનિકોમાં નૈરયિકોમાં મનુષ્યોમાં અને

વવન્નનેરહ્યાઈ ણં' એવમ્ અનન્તરોપપન્નકનૈરયિકાદીનામ્ 'જસ્સ જં અત્થિ
 હેસ્સાદિયં' યસ્ય નૈરયિકાદે ર્યત્ લેશ્યાદિકમસ્તિ વિચયે 'અનાકારોપયોગપજ્જ
 વસાણં' અનાકારોપયોગપર્યવસાણં લેશ્યાદિત આરમ્મ્ય અનાકારોપયોગપર્યન્તમ્
 'તં સવ્વં ઇયાણ મયણાણ માણિયવ્વં' તત્સર્વં લેશ્યાદિકં સ્થાનમ્ એતયા મજ્જનયા
 મણિતવ્યં વક્તવ્યમેવ । કિયત્પર્યન્તં વક્તવ્યં તત્રાહ—'જાવ' ઇત્યાદિ, 'જાવ વેમા-
 નિયાણં' યાવદ્દૈમાનિકાનામ્ એકેન્દ્રિયાદિત આરમ્મ્ય વૈમાનિકાન્તેષુ સર્વત્ર લેશ્યા-
 દિકં યસ્ય યદસ્તિ તસ્ય તદ્ વક્તવ્યમેવેતિ ભાવઃ । 'નવરં' અણંતરેસુ પરિહરિયવ્વા
 તે જહા વંધિસણ તહા ઇહંપિ' નવરમ્—કેવલમ્ અનન્તરેષુ—અનન્તરોપપન્નનાર
 કાદિષુ યાનિ સમ્યગ્મિથ્યાત્વમનોયોગવાગ્મયોગાદીનિ પદાનિ પરિહર્તવ્યાનિ
 અસંભવાન્ન પ્રચ્છનીયાનિ તાનિ યથા વન્ધિશતકે પદ્વિંશતિતમે ગતકે દ્વિતીયો-

में मनुष्यों में और देवों में थे ८, 'एवं अणंतरोववन्न नेरह्याईणं' इस
 प्रकार अनन्तरोपपन्न नैरयिक आदिकों के मध्य में 'जस्स जं अत्थि
 'हेस्सादियं' जिस नैरयिक आदि के जो लेश्यादिक अनाकारोपयोग
 पद तक है 'तं सव्वं एयाण भयणाण भाणियव्वं' वह सब लेश्यादिक
 स्थान इस अज्जना से यावत् वैमानिक तक कहना चाहिये, यहां यावत्
 पद से 'एकेन्द्रिय आदि से लेकर वैमानिकान्त पदों' में सर्वत्र जो
 लेश्यादिक जिस के हैं उसके वह कहना चाहिये' यह पाठ ग्रहीत हुआ
 है । 'णवरं अणंतरेसु परिहरियव्वा ते जहा वंधिसण तहा इहंपि'
 किन्तु अनन्तरोपपन्न नारकादिकों में सम्यग्मिथ्यात्व मनोयोग, वाग्-
 योग आदि जो पद हैं वे पूछने के योग असंभव होने से नहीं हैं ।
 इनके विषय का कथन जैसा हमने वन्धि शतक में द्वितीय उद्देशक में

દેવોમા હતા. ૮ એવં અણંતરોવવન્નનેરહ્યાઈ ણં' આજ પ્રકારથી અનંત-
 રોપપન્નક નૈરયિક વિગેરેમાં 'જસ્સ જં અત્થિ હેસ્સાદિયં' જે નૈરયિક વિગેરેને
 જે લેશ્યા વિગેરે અનાકારોપયોગ પદ સુધીમાં કહ્યા છે, 'તં સવ્વં' ઇયાણ
 મયણાણ માણિયવ્વં' તે તમામ લેશ્યા વિગેરે સ્થાનો આ ભજનાથી—વિકલ્પથી
 યાવત્ વૈમાનિક સુધીના કથનમાં સમજી લેવા. અહિયાં યાવત્પદથી એકદંદ્રિય
 વિગેરેથી લઈને વૈમાનિક સુધીના પદોમાં બધે જે લેશ્યા વિગેરે જેને કહ્યા
 છે, તેને તેજ લેશ્યા વિગેરે કહેવા ભોળા. આ પાઠ ગ્રહણ કરાયો છે.
 'ણવરં' અણંતરેસુ પરિહરિયવ્વા તે જહા વંધિસણ તહા ઇહંપિ' અનંતરોપપન્નક
 નારક વિગેરેમાં સમ્યગ્મિથ્યાત્વ, મનોયોગ વચ્ચનયોગ વિગેરે જે પદો છે, તે
 અસંભવ હોવાથી પૂછવાયોગ્ય નથી. તેના સંબંધમાં બંધિશતકમાં ગીત્ત ઉદ્દેશા-
 માં જે પ્રમાણે કથન કહેવામાં આવ્યું છે. એજ પ્રમાણેતું કથન અહિયાં સમજવું.

દેશકે કથિતાનિ તથૈવેહાપિ જ્ઞાતવ્યાનિ । ‘અં નાનાવરણિજ્જેણ વિ દંડઓ’
 એવં પાપકર્મવદેવ જ્ઞાનાવરણીયકર્મણાઽપિ દંડકો વિધેયઃ, આલાપપ્રકારશ્ચેત્યમ્
 ‘અંતરોવવન્નગાણં મંતે ! નેરહ્યા નાનાવરણિજ્જં કમ્મં કહિં સમજ્જિણિંસુ કહિં
 સમાયરિંસુ ? ગોયમા ! સવ્વે વિ તાવ તિરિક્ખજોણિંસુ હોજ્જા’ ઇત્યાદિ સર્વત્ર
 સ્વયમેવોદનીય ઇતિ । ‘એવ જાવ અંતરાહણં નિરવસેસ’ એવં જ્ઞાનાવરણીયેન
 કર્મણા યથા દંડકો નિરૂપિત સ્તથૈવ યાવત્ આન્તરાયિકકર્મણાઽપિ નિરવશેષં
 સર્વં દંડકાદિ કર્તવ્યમ્ અત્ર યાવત્પદેન દર્શનાવરણીય-વેદનીય-મોહનીયા-યુ-
 નામગોત્રકર્મણાં સંગ્રહો ભવતીતિ । ‘એસો વિ નવ દંડગસંહિઓ ઉદેસઓ માણિ
 યવ્વો’ એષોઽપિ નવદંડકસંગૃહીત ઉદ્દેશકઃ પાપકર્મ જ્ઞાનાવરણીયાદિત આરમ્ભ
 અન્તરાયપર્યન્તો મણિતવ્ય ઇતિ । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ તદેવં મદન્ત !

કિયા હૈ-વૈસા હી વહ યહાં જાનના ચાહિયે, ‘અં નાનાવરણિજ્જેણ
 વિ દંડઓ’ પાપકર્મ કે દંડક કે જૈસે હી જ્ઞાનાવરણીયાદિક કર્મ
 કે સાથ મી દંડક બનાકર કહના ચાહિયે, ઉસકા આલાપ હસ પ્રકાર
 સે હૈ ‘અંતરોવવન્નગાણં મંતે ! નેરહ્યા નાનાવરણિજ્જં કમ્મં કહિં
 સમજ્જિણિંસુ કહિં સમાયરિંસુ-ગોયમા ! સવ્વે વિ તાવ તિરિક્ખ-
 જોણિંસુ હોજ્જા એવં જાવ અંતરાહણં નિરવસેસ’ જ્ઞાનાવરણીય
 કર્મ કે સાથ જૈસા દંડક થતલાયા ગયા હૈ ઉસી પ્રકાર સે દંડક યાવત્
 આન્તરાયિક કર્મ કે સાથ સમ્પૂર્ણ રૂપ સે કરના ચાહિયે યહાં યાવત્
 પદ સે ‘દર્શનાવરણીય, વેદનીય, મોહનીય આયુ, નામ ઓર ગોત્ર ‘इन
 કર્મો’ કા સંગ્રહ હુઆ હૈ । ‘એસો વિ નવ દંડગસંહિઓ ઉદેસઓ’
 માણિયવ્વો !’ નવ દંડક સહિત યહ ઉદ્દેશ મી પાપકર્મ જ્ઞાનાવરણી
 યાદિ સે પ્રારમ્ભ કર અન્તરાય કર્મ તક મણિતવ્ય હૈ । ‘સેવં મંતે !

‘અં-નાનાવરણિજ્જેણ વિ દંડઓ’ પાપકર્મના દંડકોના કથન પ્રમાણે
 જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે કર્મની સાથે દંડક બનાવીને સમજી લેવા તેના
 આલાપકોના પ્રકાર આ પ્રમાણે છે — ‘અંતરોવવન્નગાણં મંતે નેરહ્યા નાના-
 વરણિજ્જં કમ્મં કહિં સમજ્જિણિંસુ કહિં સમાયરિંસુ ગોયમા ! સવ્વે વિ તાવ
 તિરિક્ખજોણિંસુ હોજ્જા એવં જાવ અંતરાહણં નિરવસેસ’ જ્ઞાનાવરણીય કર્મની
 સાથે જે પ્રમાણે દંડક કહ્યો છે એજ પ્રમાણેનો દંડક યાવત્ અંતરાય કર્મની
 સાથે સંપૂર્ણ પછાથી કહેવો જોઈએ. અહિયાં યાવત્પદથી ‘દર્શનાવરણીય, વેદનીય,
 આયુ, નામ, અને ગોત્ર, આ કર્મપ્રકૃતિયો ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે ‘એસો વિ
 નવ દંડગસંહિઓ ઉદેસઓ માણિયવ્વો’ નવ દંડકો સહિત આ ઉદ્દેશો પણ
 પાપકર્મ, જ્ઞાનાવરણીય કર્મથી આરંભ કરીને અંતરાય કર્મ સુધી કહેવો જોઈએ.

તદેવં ભદન્ત ! इति, हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नक नारकादीनां पापकर्मादि मंग्रह विषये यद् देवानुप्रियेण कथितं तत्सर्वम् एवमेव-सर्वथा सत्यमेवेति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्कृति, चन्दित्वा नमस्कृत्या संयमेन तपसा आत्मानं भाष्यन् विहरतीति ॥सू० १॥

॥ इति श्री विश्वप्रिययात-जगद्गल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
कालितललितकलापात्पापकप्रविशुद्धगणपचर्नकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमाननर्दक-श्रीगङ्गाहूचक्रपति कोल्हापुरराजपदत्त-
' जैनाचार्य ' पदभूषित-—कोल्हापुरराजगुरु-
वालब्रह्मचारि — जैनान्धार्य — जैनधर्मदिवाकर
—पूज्यश्री घामिलालत्रतिनिश्चितायां श्री ' मग-
वतीसूत्रम् " प्रमेयचन्द्रिकाव्याख्या
व्याख्यायाम् अष्टाविंशतितमशतके
द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥२८-२॥

સેવં ભતે ! સિ' હે ભદન્ત ! અનન્તરોપપન્નક નૈરયિક આદિકોં કે પાપકર્મ આદિ કે ઉપાર્જન સ્થાપચરણ કરને કે વિષય મેં જો આપ દેવાનુપ્રિયને કહા છે ત્હ સર્વ સર્વથા સત્ય હી છે । હમ પ્રકાર કહકર ગૌતમસ્વામીને પ્રભુશ્રી કી સ્તુતિ-વન્દના કી ઔર નમસ્કાર કિયા, વન્દના નમસ્કાર કરકે ફિર હે સંયમ ઔર તપ સે આત્મા કો લાવિત કરતે હુપ અપને સ્થાન પર ધિરાજમાન હો ગયે । સૂ० ૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘામીલાલજીમહારાજકૃત
“ભગવતીસૂત્ર” કી પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાકે અષ્ટાદસવેં શતક કા
દ્વિતીય ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥૨૮-૨॥

‘સેવં ભતે ! સેવં ભતે ! સિ’ હે ભગવન્ અનન્તરોપપન્નક નૈરયિક વિગેરે ના પાપકર્મ વિગેરે ના ઉપાર્જન સમાચરણ (ભોગવતુ) કરવાના વિષયમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું આપ્ત કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યો વંદના નમસ્કાર કરીને તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને લાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર ધિરાજમાન થયા ॥સૂ ૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘામીલાલજી મહારાજકૃત ‘ભગવતીસૂત્ર’ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના અષ્ટાદસમા શતકનો બીજો ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥૨૮-૨॥

અથ તૃતીયાદાર્થ્ય એકાદશાન્તા ઉદ્દેશકા આરમ્ભતે

અથ દ્વિતીયમુદ્દેશકં વ્યાખ્યાય ક્રમપ્રાપ્તાન્ તૃતીયાદ્વેકાદશાન્તાન્ ઉદ્દેશકાન્ નિરૂપયન્નાહ—‘એવં એણં કમેણં’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—એવં એણં કમેણં જહેવ બંધિસણ ઉદ્દેસગાણં પરિ-
વાડી તહેવ ઇહંપિ અટ્ટસુ ભંગેસુ નેયઠ્ઠા । નવરં જાણિયઠ્ઠવં જં
જસ્સ અતિથ તં તસ્સ માણિયઠ્ઠવં જાવ અચરિમુદ્દેસો । સઠ્ઠે વિ એણ
એકારસ ઉદ્દેસગા । સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ જાવ વિહરઈ । સૂ. ૧ ।
અટ્ટાવીસઈમે સણ તઈયાઈ એગારસ ઉદ્દેસગા સમત્તા ॥૨૮-૩-૧૧॥

અટ્ટાવીસઈમં કમ્મસમ્મજ્જણસયં સમત્તં ॥૨૮॥

છાયા—એવમેતેન ક્રમેણ યથૈવ બન્ધિશતકે ઉદ્દેશકાનાં પરિપાટી તથૈવેહાપિ
અટ્ટસુ મજ્ઞેષુ નેતવ્યાઃ । નવરં જ્ઞાતવ્યં યત્ત્વ યસ્પાસ્તિ તત્ત્વ તસ્ય મણિતવ્યં યાવદ-
ચરમોદ્દેશકઃ સર્વેઽપિ એતે એકાદશોદ્દેશકાઃ । તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ
યાવદ્ વિહરતિ ॥સૂ. ૧॥

અષ્ટાવિંશતિતમે શતકે તૃતીયાદ્વેકાદશ ઉદ્દેશકાઃ સમાપ્તાઃ ॥૨૮-૩-૧૧॥

અષ્ટાવિંશતિતમં કર્મમ્મર્જનશતકં સમાપ્તમ્ ॥૨૮॥

ટીકા—‘એવં એણં કમેણં’ એવમેતેન ક્રમેણ—પૂર્વપદર્શિતપ્રકારેણ ‘જહેવ
બંધિસણ ઉદ્દેસગાણં પરિવાડી’ યથૈવ બન્ધિશતકે પઢ્વિંશતિતમે શતકે ઉદ્દેશકાનાં

અઠાઈસવેં શતક કા તીસરા ઉદ્દેશક કા પ્રારંભ

દ્વિતીય ઉદ્દેશક કા વ્યાખ્યાન કર કે અબ સૂત્રકાર ક્રમ પ્રાપ્ત તૃતીય
ઉદ્દેશક સે લેકર ૧૧ વેં ઉદ્દેશક તક કે ઉદ્દેશકોં કા નિરૂપણ કરતે હૈં -

‘એવં એણં કમેણં જહેવ બંધિસણ’-ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—એવં એણં કમેણં’ પૂર્વ પ્રદર્શિત પ્રકાર સે જૈસી કિ
બન્ધિશતક મેં-૨૬ વેં શતક મેં ઉદ્દેશકોં કી-તૃતીય ચતુર્થ આદિ

ત્રીજા ઉદ્દેશનો પ્રારંભ- -

બીજા ઉદ્દેશાનું કથન કરીને હવે સૂત્રકાર કમથી આવેલા આ ત્રીજા
ઉદ્દેશાથી લઈને અગિયારમાં ઉદ્દેશા સુધીના ઉદ્દેશાઓનું કથન કરે છે,
‘એવં એણં કમેણં જહેવ બંધિસણ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—પહેલા બતાવેલ પ્રકારથી જે પ્રમાણે બંધ શતકમાં અર્થાત્
છઠ્ઠીસમા શતકમાં ઉદ્દેશાઓની યોગ્ય છે ત્રીજા અને ચોથા વિગેરે ઉદ્દેશા-

તૃતીયચતુર્થાદીનાં પરિપાટી પ્રક્રિયા કથિતા 'તહેવ' હં પિ અટ્ટસુ ભંગેસુ જેયવ્વા' તથેવ તેનૈવ રુપેણ ઇદ્ધાપિ અઘાવિંશતિતમગતકેડપિ તૃતીયાદિદેશકોક્તેષુ અષ્ટસુ ભંગેષુ પરિપાટી નેતવ્યા જ્ઞાતવ્યેતિ । પૂર્વશતકાપેક્ષયા 'નવરં જાણિયવ્વં' નવરં કેવલં વૈલક્ષણ્યં જ્ઞાતવ્યમ્ કિં તદિત્યાહ—'જં જસ્સ અત્થિ તં તસ્સ માણિયવ્વં' જાવ અચરમુદેસો' યત્ લેક્ક્યાદિ યાદશં યસ્ય જીવસ્ય નારકાદેભવતિ તદેવ તસ્ય જીવસ્ય મણિતવ્યં નાન્યયન્યસ્ય, કિયત્પર્યન્તમિત્યાહ—યાવત્ અચરમોદેશઃ—અચરમોદેશકાન્તમ્ અનન્તરોપપન્નકઃ પરમ્પરોપપન્નકાનન્તરાવગાઠપરમ્પરાવગાઠાનન્તરાહારકપરમ્પરાહારકાનન્તરપર્યાપ્તપરમ્પરપર્યાપ્તચરમપર્યન્તાનાં નવાનામુદેશકાનાં સંગ્રહો ભવતીતિ, 'સવ્વે વિ એ એકારસ ઉદેસગા' સર્વેડપિ એતે સામાન્યો-

ઉદ્દેશકોં કી-પરિપાટી-પ્રક્રિયા-કહી ગઈ છે 'તહેવ' उसी प्रकार से 'इहंपि अट्टसु भंगेसु जेयव्वा' यहां अट्टाहसवें शतक में भी तृतीयादि उद्देशकों में उक्त आठ भंगों में परिपाटी जाननी चाहिये, यहां पूर्व की अपेक्षा यदि भिन्नता है तो वह 'नवरं जाणियव्वं जं जस्स अत्थि तं तस्स माणियव्वं जाव अचरमुदेसो' इस सूत्रपाठ द्वारा प्रगट की गई है, अर्थात् जो जैसी लेक्क्यादिक जिस नारकादि जीव के हो वह वैसी लेक्क्यादिक उस नारकादि जीव को कहनी चाहिये—अन्य की अन्य को नहीं कहनी चाहिये, और ऐसा कथन यावत् अचरम उद्देशक तक करना चाहिये, यहां यावत् शब्द से—'अनन्तरोपपन्नक परमपरोपपन्नक, अनन्तरावगाढ, परमपरावगाढ, अनन्तराहारक, परमपराहारक, अनन्तर-पर्याप्त, परमपरपर्याप्त और चरम इन नव उद्देशकों का संग्रह हुआ है, 'सव्वे वि ए ए एकारस उदेसगा' सामान्य उद्देशक से लेकर अचरम

ઓની-પરિપાટી-પ્રક્રિયા કહેવામાં આવેલ છે, 'તહેવ' એજ પ્રમાણે 'इहंपि अट्टसु भंगेसु जेयव्वा' આ અઠ્યાવીસમા શતકમાં પણ ત્રીજા વિગેરે ઉદ્દેશાઓમાં ઉક્ત આઠ ભંગોમાં પ્રક્રિયા સમજવી અહિયાં પહેલાં કરતાં જો કાંઈ ફેરફાર છે, તે નવરં જાણિયવ્વં જં જસ્સ અત્થિ તં તસ્સ માણિયવ્વં જાવ અચરમુદેસો' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ કરેલ છે. અર્થાત્ જો નૈરકાદિકને જો જો લેક્ક્યા વિગેરે કહેલ હોય તેને તેજ પ્રમાણેની લેક્ક્યા વિગેરે કહેવા જોઈએ બીજાની લેક્ક્યા વિગેરે બીજાને કહેવાના નથી. અને આ પ્રમાણેનું કથન અચરમના ઉદ્દેશા સુધી કહેવું જોઈએ. અહિયાં યાવત્ શબ્દથી—'અનન્તરોપપન્નક, પરમપરોપપન્નક, અનન્તરાવગાઠ, પરમપરાવગાઠ અનન્તરાહારક, પરમપરાહારક, અનન્તર પર્યાપ્ત, પરમપરપર્યાપ્ત અને ચરમ પર્યાપ્ત આ નવ ઉદ્દેશાઓ ગ્રંથમાં કરાયા છે. 'સવ્વે વિ એ એકારસ ઉદેસગા' જીવથી લઈને ચરમ ઉદ્દેશા

દેશકત આરમ્ભાચરસપર્યન્તા એકાદશોદ્દેશકા ભવન્તિ । નનુ પ્રથમમજ્જકે સર્વે-
જીવાઃ તિર્યગ્મ્ય આગત્ય સમુત્પન્ના इति કથં સંભવેત્ આનતાદિદેવાનાં તીર્થ-
કરાદિ મનુષ્યવિશેષાનાં ચ તિર્યગ્મ્ય આગતાનામનુત્પત્તેઃ એવં દ્વિતીયતૃતીયાદિ
મજ્જકેઽષ્ટાપિ પ્રશ્નાઃ, इति ચેદત્રોચ્યતે વાહુલ્યમાશ્રિત્ય એતે મજ્જા ગ્રહીતવ્યા इति ।
'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ જાવ વિહરઈ' તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! इति
યાવદ્વિહરતિ, હે મદન્ત ! ગતપ્રકરણે યદ્દેશાનુપ્રિયેણ કથિતં તત્ સર્વમ્ એવમેવ-

ઉદ્દેશક તક હસ પ્રકાર સે યહાં સર્વંત્ર ગ્યારહ ઉદ્દેશક હો જાતે હૈં ।

શંકા-પ્રથમ ભંગ મેં જો એસા કહા ગયા હૈં કિ સમસ્ત જીવ
તિર્યગ્યોનિકોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હુએ હૈં-સો યહ કથન કૈસે
સંભવિત હો સકતા હૈં ? ક્યોં કી આનતાદિ દેવોં કી એવં તીર્થકર
આદિ વિશેષ મનુષ્યોં કી ઉત્પત્તિ તિર્યગ્ગતિ સે આયે હુએ જીવોં મેં
સે નહીં હોતી હૈં । અર્થાત્ તિર્યગ્ગતિ સે આયે હુએ જીવ આનતાદિ
દેવોં કે રૂપ સે ઓર તીર્થકરાદિ કે રૂપ સે ઉત્પન્ન નહીં હોતે હૈં ।
હસી પ્રકાર સે દ્વિતીય તૃતીયાદિ ભંગોં મેં ઓ યહ પ્રશ્ન હોતા હૈં ।

ઉત્તર-સમસ્ત જીવ તિર્યગ્યોનિકોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હુએ હૈં-
વિવક્ષિત પર્યાયરૂપ સે જન્મે હૈં-એસા જો કહા ગયા હૈં વહ વાહુલ્ય કો
આશ્રિત કરકે કહા ગયા હૈં હસલિયે વાહુલ્ય કો આશ્રિત કરકે હન
ભંગોં કો ગ્રહણ કરના ચાહિયે, 'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ જાવ
વિહરઈ' હે મદન્ત ! ગત પ્રકરણ મેં જો આપ દેશાનુપ્રિયેને કહા હૈં વહ

સુધીમાં આહ્યાં બપ્રા મળીને અગિયાર ઉદ્દેશાઓ થઈ જાય છે.

શંકા--પહેલા ભંગમાં જે એવું કહ્યું છે કે-સઘળા જીવો તિર્યગ્
યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થયા છે. તો આ કથન કેવી રીતે સંભવિત
થઈ શકે છે ? કેમ કે-આનત વિગેરે દેવો અને તીર્થંકર વિગેરે વિશેષ મનુ-
ષ્યોની ઉત્પત્તિ તિર્યગ્ગતિથી આવેલા જીવોમાંથી થતી નથી. અર્થાત્ તિર્યગ્
ગતિથી આવેલા જીવો આનત વિગેરે દેવપણાથી અને તીર્થંકર વિગેરે રૂપથી
ઉત્પન્ન થતા નથી. એજ રીતે બીજા અને ત્રીજા વિગેરે ભંગોમાં પણ આ
પ્રશ્નો સમજવા.

ઉત્તર--સઘળા જીવો તિર્યગ્ યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થયા છે.
વિલક્ષિત પર્યાય પણથી જન્મ્યા છે. એવું જે કહેલ છે, તે બહુલ પણાનો
આશ્રય કરીને આ ભંગો ગ્રહણ કરવા બોધ્યો.

'સેવં મંતે સેવં મંતે ! ત્તિ જાવ વિહરઈ' હે ભગવન્ આગલા પ્રકરણ-
માં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કરેલ છે, તે સર્વ કથન સર્વથા સત્ય છે,

सर्वथा सत्यमेवेति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा संघमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति ॥सू० १॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-

कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,

वादिमानमर्दक-श्रीशाहचलत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-

‘जैनाचार्य’ पदभूषित — कोल्हापुरराजगुरु-बाल-

ब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्य श्री

घासीलालव्रतिविरचितायां श्री “भग

वतीसूत्रस्य” प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां-

व्याख्यायां अष्टाविंशतितमशतके

तृतीयाधिकादशान्ता उद्देशकाः

समाप्ताः ॥२८-३-११॥

॥ अष्टाविंशतितमं कर्मसमर्जनशतं समाप्तम् ॥

सर्वथा सत्य ही है । ऐसा कहकर गौतमस्वामीने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया, वन्दना नमस्कार कर फिर वे संघम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० १॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजी महाराजकृत

“भगवतीसूत्र” की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके अठ्ठावीसवें शतकका तृतीय उद्देशक से लेकर ग्यारह वें उद्देशक तक नौ उद्देशक समाप्त ॥

॥ २८ वां शतक समाप्त ॥

आप देवानुप्रियनुं कथन सत्य ज छे. आ प्रमाणे कहीने गौतमस्वामीजे प्रभुश्रीने वंदना करी तेजोने नमस्कार कर्या वंदना नमस्कार करीने संघम अने तपशी पोताना आत्माने लावित करता थका तेजो पोताना स्थान पर गिराजमान थया. ॥सू. १॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराजकृत ‘भगवतीसूत्र’ नी प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याना सत्यावीसमा शतकना त्रीण उद्देशाथी अगीयारमां

उद्देशोओ सुधीना नव उद्देशोओ समाप्त ॥३-११॥

॥अठ्ठावीससुं शतक समाप्त ॥२८॥

अथैकोनत्रिंशत्तमे शतके प्रथमोद्देशकः प्रारभ्यते

पापकर्मादि वक्तव्यताऽनुगतमष्टाविंशतितमं शतकं व्याख्याय क्रमप्राप्तं तथाविधमेव एकोनत्रिंशं शतमारभते, अत्रापि च तथैव एकादशोद्देशकाः सन्ति, तेषु चाद्यस्य उद्देशकस्येदं सूत्रम्—‘जीवा णं भंते ! पावं कम्मं’ इत्यादि ।

मूलम्—जीवा णं भंते ! पावं कम्मं किं समायं पट्ठविंसु ?
 समायं निट्ठविंसु१, समायं पट्ठविंसु, विसमायं निट्ठविंसु२,
 विसमायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु३, विसमायं पट्ठविंसु विस-
 मायं निट्ठविंसु ?४, गोयमा ! अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु समायं
 निट्ठविंसु१, जाव अत्थेगइया विसमायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठ-
 विंसु४ । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ अत्थेगइया समायं पट्ठ-
 विंसु समायं निट्ठविंसु तं चेव ? गोयमा ! जीवा चउव्विहा पन्नत्ता
 तं जहा अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा१, अत्थेगइया
 समाउया विसमाउया समोववन्नगा२, अत्थेगइया विसमाउया समोवव-
 न्नगा३, अत्थेगइया विसमाउया विसमाउया समोववन्नगा४ । तत्थ णं जे
 ते समाउया समोववन्नगा ते णं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु विस-
 मायं निट्ठविंसु१ । तत्थ णं जे ते समाउया विसमाउया समोववन्नगा ते णं
 पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु विसमाइं निट्ठविंसु२ । तत्थ णं जे ते
 विसमाउया समोववन्नगा ते णं पावं कम्मं विसमायं पट्ठविंसु
 समायं निट्ठविंसु३ । तत्थ णं जे ते विसमाउया विसमाउया समोववन्नगा
 तेणं पावं कम्मं विसमायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु४, से
 तेणट्ठेणं गोयमा ! तं चेव । सलेस्सा णं भंते ! जीवा पावं कम्मं०
 एवं चेव एवं सव्वट्ठाणैसु वि जाव अणागारोवउत्ता । एए सव्वे
 वि पया एयाए वत्तव्वयाए भाणियवा । नेरइया णं भंते ! पावं
 कम्मं किं समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु ? पुच्छा, गोयमा !
 अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु—एवं जहेव जीवाणं तहेव भाणि-

यत्वं जाव अणागारोवउत्ता । एवं जाव वेमाणियाणं जस्स जं
अत्थि तं एएणं चेव कमेणं भाणियत्वं । जहा पावेण दंडओ
एएणं कमेणं अट्टसु वि कम्मपगडीसु अट्ट दंडगा भाणियत्वा
जीवादीया वेमाणियपज्जवसाणा । एसो नवदंडगसंगहिओ
पढमो उद्देसो भाणियत्तो । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥सू० १॥

एगूणतीसइमे सए पढमो उद्देसो समत्तो ॥२९-१॥

छाया—जीवाः खलु भदन्त । पापं कर्म किं समकं प्रास्थापयन् समकं
न्यस्थापयन् १, समकं प्रास्थापयन् विषमकं न्यस्थापयन् २, विषमकं प्रास्थापयन्
समकं न्यस्थापयन् ३, विषमकं प्रास्थापयन् विषमकं न्यस्थापयन् ४, गौतम !
अस्त्येकके समकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन् १, यावद् अस्त्येकके विषमकं
प्रास्थापयन् विषमकं न्यस्थापयन् ४, । तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते अस्त्ये
कके समकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन् तदेव, गौतम ! जीवाश्चतुर्विधाः
प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—अस्त्येकके समायुष्काः समोपपन्नकाः १, अस्त्येकके समा-
युष्का विषमोपपन्नकाः २, अस्त्येकके विषमायुष्काः समोपपन्नकाः ३ अस्त्येकके
विषमायुष्का विषमोपपन्नकाः ४ । तत्र खलु ये ते समायुष्काः समोपपन्नका स्ते खलु
पापं कर्म समकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन् १, तत्र खलु ये ते समायुष्का
विषमोपपन्नका स्ते खलु पापं कर्म समकं प्रास्थापयन् विषमकं न्यस्थापयन् २, तत्र
खलु ये ते विषमायुष्काः समोपपन्नका स्ते खलु पापं कर्म विषमकं प्रास्थापयन्
समकं न्यस्थापयन् तत्र खलु ये ते विषमायुष्का विषमोपपन्नका स्ते खलु पापं
कर्म विषमकं प्रास्थापयन् विषमकं न्यस्थापयन् । तत्केनार्थेन गौतम ! तदेव ।
सत्त्वेश्याः खलु भदन्त । जीवाः पापं कर्म—एवमेव, एवं सर्वस्थानेष्वपि यावदना-
कारोपयुक्ताः । एतानि सर्वाण्यपि पदानि एतया वक्तव्यतया भणितव्यानि ।
नैरयिकाः खलु भदन्त ! पापं कर्म किं समकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन्,
पृच्छा, गौतम ! अस्त्येकके समकं प्रास्थापयन् एवं यथैव जीवानां तथैव भणितव्यं
यावत् अनाकारोपयुक्ताः । एवं यावद्वैमानिकानाम् यस्य यदस्ति तद् एतेनैव क्रमेण
भणितव्यम्, यथा पापेन दण्डकः, एतेन क्रमेणाष्टास्त्रपि कर्मप्रकृतिषु अष्ट
दण्डका भणितव्या जीवादिका वैमानिकपर्यवसानाः । एषो नवदण्डकसंगृहीतः
प्रथमोद्देशो भणितव्यः । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥मू० १॥

एकोनविंशत्तमे शतके प्रथमोद्देशः समाप्तः ॥२९-१॥

ટીકા—‘જીવા ણં મંતે’ જીવાઃ સ્વલુ મદન્ત ! ‘પાવ કમ્મ’ પાપમ્-અશુભં
કર્મ ‘કિં સમાયં પટ્ટવિંસુ’ સમકમ્-વહવો જીવાઃ યુગપદિત્યર્થઃ પ્રાસ્થાપયન્-
પ્રસ્થાપિતવન્તઃ પ્રથમતયા વેદયિતુ મારબ્ધવન્તઃ કિમ્ તથા-‘સમાયં નિટ્ટવિંસુ’
સમકમેવ ન્યસ્થાપયન્-નિષ્ઠાપિતવન્તઃ નાશિતવન્તઃ પાપકર્મણો નાશમકુર્વન્
इत्यर्थः, इति प्रथमो भङ्गः १, तथा ‘समायं पट्टविंसु विसमायं निट्टविंसु २’
समकं-युगपदेव अनेके जीवाः प्रास्थापयन् प्रस्थापितवन्तः युगपदनेकेन्यस्था-
पयन्-निष्ठापितवन्त इति द्वितीयो भङ्गः २, तथा ‘विसमायं पट्टविंसु समायं निट्ट-

૨૯ ઘાં શતકકે પહલા ઉદ્દેશક

પાપકર્મ આદિ કી વત્તવ્યતા સે અનુગત ૨૮ વેં શતક કી વ્યા-
ખ્યા કરકે અવ ક્રમ પ્રાપ્ત ૨૯ ઘાં શતક પ્રારમ્ભ હોતા હૈ, યહાં પર મી
પૂર્વોક્ત જૈસે ૧૧ ઉદ્દેશક હૈં । ઇન્મૈં સે આદિ કે ઉદ્દેશક કા ‘જીવાણં
મંતે ! પાવં કમ્મં કિં સમાયં પટ્ટવિંસુ’-ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—ગૌતમસ્વામીને પ્રભુશ્રી સે એસા પૂછા હૈ—‘જીવા ણં મંતે !
પાવં કમ્મં’ હે મન્દત ! અનેક જીવ જો પાપકર્મ કો ઓગતે હૈં ઓર નષ્ટ
કરતે હૈં સો કયા વે ઉસ પાપકર્મ કો ‘કિં સમાયં પટ્ટવિંસુ’ ભોગને કા
પ્રારમ્ભ એક કાલ મૈં કરતે હૈં ઓર ‘સમાયં નિટ્ટવિંસુ’ એક હી કાલ મૈં વે
ઉસકા વિનાશ કરતે હૈં ? અથવા-વે ઉસ ‘સમાયં પટ્ટવિંસુ વિસમાયં
નિટ્ટવિંસુ ૨’ પાપકર્મ કો ઓગવે કા પ્રારમ્ભ એક કાલ મૈં કરતે હૈં ઓર

ઓગણુત્રીસમા શતકનો પ્રારંભ—

પહેલો ઉદ્દેશો.

પાપકર્મ વિગેરે ના કથનના સંબંધમાં અઠ્યાવીસમા શતકનું કથન
કરીને હવે ક્રમથી આવેલ આ ઓગણુત્રીસમા શતકનો પ્રારંભ કરવામાં આવે છે.
આ ઓગણુત્રીસમા શતકમાં પણ પહેલા કહ્યા પ્રમાણે અગીયાર ઉદ્દેશાઓ
કહ્યા છે તેમાં પહેલા ઉદ્દેશાનું પહેલું સૂત્ર નીચે પ્રમાણે છે—‘જીવા ણં મંતે
પાવં કમ્મં કિં સમાયં પટ્ટવિંસુ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને એવું પૂછ્યું છે કે—‘જીવા ણં મંતે
પાવં કમ્મં’ હે ભગવન અનેક ભવેા જેઓ પાપકર્મ ભોગવે છે, અને
તેનો ક્ષય કરે છે તો શું તે તેઓ પાપકર્મને ‘સમાયં પટ્ટવિંસુ’ ભોગવવાનો
પ્રારંભ એકજ સમયમાં કરે છે ? અને ‘સમાયં નિટ્ટવિંસુ’ એક જ સમયમાં
તેઓ તેનો વિનાશ કરે છે ? અથવા-તેઓ ‘સમાયં પટ્ટવિંસુ વિસમાયં નિટ્ટવિંસુ’
પાપકર્મને ભોગવવાનો પ્રારંભ એક સમયમાં કરે છે ? અને તેનો વિનાશ

વિંસુ' વિપમં યથા ભવતિ વિપમતયૈત્યર્થઃ પ્રસ્થાપિતવન્તઃ, સમકં નિષ્ઠાપિતવન્ત
 इति तृतीयः, तथा-‘विसमायं पट्विंसु विसमायं निट्विंसु’ विपममेव यथा
 भवति तथा प्रस्थापितवन्तः तथा विपमं विपमतयैव निष्ठापितवन्त इति चतुर्थो
 भક્कः ४, हे भदन्त ! अनेके जीवाः पापं कर्म भोक्तुमेकस्मिन्नेव काले प्रयतमाना
 भवन्ति स्म तथा सममेककाले एतादृशं कर्म विनाशयन्ति स्म किम् ? अथवा
 एकदैव सर्वे जीवाः कर्मभोगाय प्रवर्तन्ते विपमतया अन्तर्करणाय प्रवर्तन्ते,
 अथवा-विपमतया प्रारभन्ते समकमेव तत् कर्म विनाशयन्ति अथवा विपमतया
 प्रारभन्ते विपमतयैव निवर्तन्ते ? किम् ? इति चतुर्णामपि भद्धानां भाव इति प्रश्नः
 मगधानाह-‘गोयमा’ इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘अत्येगइया समायं पट्विंसु
 समायं निट्विंसु’ अस्येकके जीवाः समकमेव प्रस्थापयन् समकमेव न्यस्थापयन्
 केचन अनेके जीवाः पापं कर्म भोगाय एकदैव प्रारभन्ते तथा तादृशं कर्म

उसका विनाश भिन्न-भिन्न काल में करते हैं ? अथवा ‘विसमायं पट्विंसु, समायं निट्विंसु’ वे भिन्नकाल में उस पापकर्म का भोगना प्रारंभ करते हैं और एक काल में उसे विनिष्ट करते हैं ३
 अथवा ‘विसमायं पट्विंसु, विसमायं निट्विंसु’ भिन्न-भिन्न काल में वे उसका भोगना प्रारंभ करते हैं और भिन्न-भिन्न काल में ही उसका विनाश करते हैं ? इस प्रकार से ४ अंगों से युक्त प्रश्न गौतमस्वामीने प्रभुश्री से पूछा है, इस प्रश्न के उत्तर में प्रभुश्री गौतमस्वामीसे कहते हैं-‘गोयमा ! अत्येगइया समायं पट्विंसु समायं निट्विंसु’ हे गौतम ! कितनेक जीव ऐसे भी हैं जो पापकर्म को भोगने का प्रारंभ एक साथ करते हैं और एक ही साथ उसका विनाश करते हैं अर्थात् पापकर्म को एक ही साथ एक काल में भोगते हैं और एक ही

જુદા જુદા કાળમાં કરે છે ? ૨ અથવા ‘વિસમાયં પટ્વિંસુ સમાયં નિટ્વિંસુ’ તેઓ ભિન્ન કાળમાં તે પાપકર્મ લોગવવાનો પ્રારંભ કરે છે ? અને એક કાળમાં તેનો નાશ કરે છે ? ૩ અથવા ‘વિસમાયં પટ્વિંસુ સમાયં નિટ્વિંસુ’ તેઓ ભિન્ન કાળમાં તે પાપ કર્મને લોગવવાનો પ્રારંભ કરે છે ? અને એક કાળમાં તેનો નાશ કરે છે ? ૪ આ પ્રમાણે ચાર ભંગોવાળો પ્રશ્ન ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને પૂછ્યો છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે- ‘ગોયમા ! અત્યેગઇય સમાયં પટ્વિંસુ સમાયં નિટ્વિંસુ’ હે ગૌતમ ! કેટલાક જીવો એવા હોય છે કે-જેઓ એક સાથે પાપકર્મ લોગવવાનો પ્રારંભ કરે છે. અને તેનો વિનાશ પણ એક સાથે જ કરે છે. અર્થાત્ પાપકર્મને એક સાથે એક કાળમાં લોગવે છે. અને એક સાથે જ એક કાળમાં તેનો નાશ કરે છે,

વિનાશયાપિ યુગપદેવ પ્રવર્તમાના ભવન્તીત્યર્થઃ । ‘જાવ અત્યેગહયા વિસમાયં પટ્ટ-
વિંસુ વિસમાયં નિટ્ટવિંસુ’ યાવત્ અનેકે વિષમકં પ્રાસ્થાપયન્ વિષમકં ન્યસ્થાપયન્,
અત્ર યાવત્પદેન અસ્ત્યેકકે સમકં પ્રાસ્થાપયન્ વિષમકં ન્યસ્થાપયન્, અસ્ત્યેકકે
વિષમં પ્રાસ્થાપયન્ સમકં ન્યસ્થાપયન્ इत्यनयो द्वितीयतृतीयभङ्गयोर्ग्रहणं भवति,
एवं चत्वारोऽपि भङ्गा उत्तरे समर्थिता भगवतेति । पुनः प्रश्नयन्नाह—‘से केणट्ठेण’
इत्यादि । ‘से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुच्चइ’ तत्कैनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ‘अत्ये-
गहया समायं पट्टविंसु समायं निट्टविंसु त चेव’ समकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्था-

સાથ એક કાલમેં ઉસે નષ્ટ મી કરતે હૈં ? ‘જાવ અત્યેગહયા વિસમાયં
પટ્ટવિંસુ વિસમાયં નિટ્ટવિંસુ’ હસી રીતિ સે યાવત્ કિતનેક જીવ એસે
મી હૈં જો પાપકર્મ કો મોગને કા પ્રારમ્ભ ભિન્ન-ભિન્નકાલ મેં કરતે
હૈં ઓર ભિન્ન-ભિન્ન કાલ મેં હી ઉસકા વિનાશ કરતે હૈં । યહાં યાવત્
શબ્દ સે દ્વિતીય ઓર તૃતીય ભંગોં કા ગ્રહણ હુઆ હૈ । વે દ્વિતીય તૃતીય
ભંગ હસ પ્રકાર સે હૈં ‘અસ્ત્યેકકે જીવા સમકં પ્રાસ્થાપયન્ વિષમકં
ન્યસ્થાપયન્ ૨ અસ્ત્યેકકે વિષમકં પ્રાસ્થાપયન્ સમકં ન્યસ્થાપયન્ ૩’
દોનોં ભંગોં કા અર્થ સ્પષ્ટ હૈં । હસ પ્રકાર સે પ્રભુશ્રીને યહાં ચારોં ભંગોં
કા સમર્થન ઉત્તર વાક્ય મેં કિયા હૈ ।

‘સે કેણટ્ઠેણં મંતે ! એવં બુચ્ચઈ-અત્યેગહયા સમાયં પટ્ટવિંસુ સમાયં
નિટ્ટવિંસુ’ હે ભદન્ત ! એસા આપ કિસ કારણ સે કહતે હૈં કિ અનેક
જીવ એસે હૈં જો પાપકર્મ કો મોગને કા પ્રારમ્ભ એક સાથ એકકાલ મેં
કરતે હૈં ઓર ઉસકા અન્ત મી એક સાથ એક હી કાલ મેં કરતે હૈં ?

‘જાવ અત્યેગહયા વિસમાયં પટ્ટવિંસુ વિસમાયં નિટ્ટવિંસુ’ આજ પ્રમાણે
કેટલાક જીવો એવા પણ હોય છે, કે જેઓ જુદા-જુદા કાળમાં પાપકર્મ
લોગવવાનો પ્રારંભ કરે છે, અને જુદા-જુદા કાળમાં તેનો વિનાશ કરે છે.
અહિયાં યાવત્ શબ્દથી બીજા અને ત્રીજા એ બે ભંગ ગ્રહણ થયા છે. તે
બે ભંગો આ પ્રમાણે છે—‘અસ્ત્યેકકે જીવા સમકં પ્રાસ્થાપયન્ વિષમકં
ન્યસ્થાપયન્ ૨ અસ્ત્યેકકે વિષમકં પ્રાસ્થાપયન્ સમકં ન્યસ્થાપયન્ ૩’ આ બંને
ભંગોનો અર્થ સ્પષ્ટ છે. આ પ્રમણે પ્રભુશ્રીએ ઉત્તર વાક્યમાં અહિયાં ચારે
ભંગોનો સ્વીકાર કર્યો છે.

‘સે કેણટ્ઠેણં મંતે ! એવં બુચ્ચઈ’ અત્યેગહયા સમાયં પટ્ટવિંસુ સમાયં
નિટ્ટવિંસુ’ હે ભગવન્ આપ આ પ્રમાણે શા કારણે કહો છો ? કે અનેક જીવો
એવા હોય છે કે જેઓ પાપકર્મને લોગવવાનો પ્રારંભ એકી સાથે અને
એક કાળમાં કરે છે ? અને તેનો નાશ પણ એકી સાથે અને એક જ

પયન્ સમકં પ્રાસ્થાપયન્ વિપમકં ન્યસ્થાપયન્ વિપમકં પ્રાસ્થાપયન્ સમકં ન્ય-
સ્થાપયન્ વિપમકં પ્રાસ્થાપયન્ વિપમકં ન્યસ્થાપયન્ इत्येवान्तरप्रश्नः, भगवा-
नाह—‘गोयमा’ इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘जीवा चउव्विहा पन्नत्ता’ जीवा-
श्चतुर्विधाः—चतुष्प्रकारकाः प्रज्ञप्ताः कथिताः ‘तं जहा’ तद्यथा—‘अत्थेगइया समा-
उया समोववन्नगा’ अस्त्येकके समायुष्काः समायुष उदयापेक्षया समकालाद्यु-
ष्कोदया इत्यर्थः, समोपपन्नकाः विवक्षितायुषः क्षये समकमेव भवान्तरे उपपन्नाः
समोपपन्नकाः, येचैवंविधास्ते समकमेव प्रास्थापयन् समकमेव न्यस्थापयन् ।

तथा अनेक जीव ऐसे भी हैं जो पापकर्म को भोगनेका प्रारम्भ तो
एक काल में करते हैं और उसका अन्त भिन्न-भिन्न काल में करते
हैं २ तथा अनेक जीव ऐसे हैं जो पापकर्म को भोगने का प्रारम्भ
भिन्न-भिन्न काल में करते हैं और उसका अन्त एक काल में करते
हैं ३ तथा अनेक जीव ऐसे हैं जो पापकर्म को भोगने का प्रारम्भ भी
भिन्न-भिन्न काल में करते हैं और विनाश भी उसका भिन्न-भिन्न
काल में करते हैं ? ४ इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—“गोयमा ! जीवा
चउव्विहा पन्नत्ता’ हे गौतम ! जीव चार प्रकार के कहे गये हैं ‘तं जहा’
जैसे—‘अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा ? अत्थेगइया समाउया
विसमोववन्नगा ?’ कितनेक जीव ऐसे होते हैं कि उदयकी अपेक्षा से
जिनकी आयु समान है अर्थात् जिनकी आयुका उदय समान काल
में हुआ है और उसविवक्षित आयु के क्षय होने पर एक ही समय
में जिनका भवान्तर में उत्पाद हुआ है, ऐसे जो जीव होते हैं वे
पापकर्म को भोगने का प्रारम्भ एक साथ करते हैं और एक ही साथ

સમયમાં કરે છે ? ૨ તથા અનેક જીવો એવા હોય છે કે—પાપકર્મને ભોગ-
વવાનો પ્રારંભ જુદા-જુદા સમયમાં કરે છે ? અને તેનો અન્ત એક કાળમાં
કરે છે ? ૩ તથા અનેક જીવો એવા હોય છે કે જેઓ પાપકર્મને ભોગ-
વવાનો આરંભ જુદા-જુદા કાળમાં કરે છે ? અને તેનો વિનાશ પણ જુદા-
જુદા કાળમાં જ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘ગોયમા !
જીવા ચઉવ્વિહા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! જીવો ચાર પ્રકારના કહ્યા છે. ‘તં જહા’
તે આ પ્રમાણે છે. ‘અત્થેગઇયા સમાઉયા સમોવવન્નગા ? અત્થેગઇયા સમાઉયા
વિસમોવવન્નગા ?’ કેટલાક જીવો એવા હોય છે કે—ઉદયની અપેક્ષાથી જે
જોનું આયુષ્ય સરખું છે. અર્થાત્ જેઓના આયુષ્યનો ઉદય સમાન કાળમાં
થયો હોય છે, તે વિવક્ષિત આયુષ્યનો ક્ષય થવાથી એક જ સમયમાં ભવાન્તરમાં
જેઓનો ઉત્પાદ ઉત્પત્તિ થયેલ હોય એવા જે જીવો હોય છે. તેઓ પાપ
કર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ એકી સાથે કરે છે. અને એકી સાથે તેનો વિનાશ

‘અત્યેગહ્યા સમાડયા વિસમોવવન્નગા’ અસ્ત્યેકકે જીવાઃ સમાયુષો વિપમોપપન્નકાઃ
 ‘અત્યેગહ્યા વિસમાડયા સમોવવન્નગા’ અસ્ત્યેકકે જીવાઃ વિષમાયુષઃ સમોપપ-
 ન્નકાઃ, ‘અત્યેગહ્યા વિસમાડયા વિસમોવવન્નગા’ અસ્ત્યેકકે વિષમાયુષો વિષમો-
 પપન્નકાઃ તદેવં ચતુષ્પકારા જીવા ભવન્તિ । एतदेव स्पष्टयति—‘तत्थ णं’ इत्यादि,
 ‘तत्थ णं जे ते समाडया समोववन्नगा तेणं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु’ तत्र खलु तेषु चतुर्षु जीवेषु ये ते समायुरः समोपपन्नकाश्च ते जीवा
 खलु पापं कर्म समकमेव प्रास्थापयन् समकमेव न्यस्थापयन् इति । ननु आयुः
 कर्मै वाश्रित्यैवमुपपद्यते न तु पापं कर्माश्रित्य, तद्धि न आयुष्कं कर्मण उदयापेक्षं
 प्रस्थाप्यते निष्ठाप्यते च ? इति चेदत्रोच्यते कर्मणामुदयस्य क्षयस्य च भवा-
 पेक्षत्वात् भवस्य चायुष्कापेक्षत्वाद् आयुः कर्माश्रित्य कथनं न विरुद्धमिति । अत
 एवोक्तम् ‘तत्थ णं जे ते समाडया समोववन्नगा ते णं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु
 समायं निट्ठविंसु’ तत्र चतुर्विधजीवमध्यात् खलु ये जीवाः समायुष्काः

उसका विनाश करते हैं । ‘अत્યેગહ્યા સમાડયા વિસમોવવન્નગા’
 તથા-કિતનેક જીવ એસે હોતે હૈં જો એક સી આયુવાલે હોતે હૈં ઓર
 ભિન્ન-ભિન્ન સમય મેં પરભવ મેં ઉત્પન્ન હોતે હૈં ૨ ‘અત્યેગહ્યા વિસ-
 માડયા સમોવવન્નગા૩’ તથા-કિતનેક જીવ એસે હોતે હૈં જો વિષમ
 આયુવાલે હોતે હૈં ઓર પરભવ મેં સાથ-સાથ ઉત્પન્ન હોતે હૈં । તથા
 ‘અત્યેગહ્યા વિસમાડયા વિસમોવવન્નગા૪’ કિતનેક જીવ એસે હોતે હૈં
 કિ જિનકી આયુ પરાવર નહીં હોતી હૈ ઓર ભિન્ન ભિન્ન સમય મેં જો
 પરભવ મેં ઉત્પન્ન હુણ હોતે હૈ । હસ પ્રકાર સે જીવ ચાર પ્રકાર કે હોતે
 હૈ । હસી કથન કા સૂત્રકાર સ્પષ્ટીકરણ કરતે હુણ કહતે હૈ—‘તત્થ ણં
 જે તે સમાડયા સમોવવન્નગા તે ણં પાવં કમ્મં સમાયં પટ્ઠવિંસુ સમાયં

પણ કહે છે. ‘અત્યેગહ્યા સમાડયા વિસમોવવન્નગા’ તથા કેટલાક જીવો એવા
 હોય છે કે-જેઓ એક સરખા આયુષ્ય વાળા હોય છે. અને જુદા-જુદા
 સમયમાં પરલવમાં ઉત્પન્ન થાય છે. તથા ‘અત્યેગહ્યા વિસમાડયા સમોવ-
 વન્નગા’ તથા કેટલાક જીવો એવા હોય છે કે-જેઓ વિષય આયુષ્યવાળા
 હોય છે. પરલવમાં એકી સાથે ઉત્પન્ન થાય છે. તથા ‘અત્યેગહ્યા વિસમાડયા
 વિસમોવવન્નગા’ કેટલાક જીવો એવા હોય છે કે-જેઓનું આયુષ્ય અસખર
 હોતું નથી. અને જુદા-જુદા સમયમાં જેઓ પરલવમાં ઉત્પન્ન થયેલા હોય
 છે. આ રીતે જીવો ચાર પ્રકારના હોય છે આજ કથનનું સ્પષ્ટી કરણ કરતા
 કહે છે કે-‘તત્થ ણં જે તે સમાડયા સમોવવન્નગા તે ણં પાવ કમ્મં સમાયં પટ્ઠ-
 વિંસુ સમાયં નિટ્ઠવિંસુ’ આમાં જે જીવો સરખા સમયમાં પરલવમાં ઉત્પન્ન

સમોપપન્નકાઃ તે સમકમેવ પ્રાસ્થાપયન્ સમકમેવ ન્યસ્થાપયન્ ચેતિ ૧ ।
 ‘તત્થ ણં જે તે સમાડયા વિસમોવવન્નગા તેણં પાવં કમ્મં સમાયં પટ્ટ-
 વિંસુ વિસમાયં નિટ્ઠવિંસુ’ તત્ર ચે સ્વલુ સમાયુષો વિપમોપપન્નાઃ સમકાલાયુષ્કોદયા
 વિપમતયા પરમ્વોત્પન્નાઃ મરણકાલવૈષમ્યાત્ તે સ્વલુ સમકં પ્રાસ્થાપયન્ આયુ-
 ષ્કકર્મવિશેષોદયસંપાદ્યત્વાત્ પાપકર્મવેદનવિશેષસ્ય, વિપમકં વિપમતયા ન્ય-
 સ્થાપયન્ મરણવૈષમ્યેણ પાપકર્મવેદનવિશેષસ્ય વિપમતયા નિષ્ઠા સંભવાદિતિ
 દ્વિતીયઃ ૨ । તથા ‘તત્થ ણં જે તે વિસમાડયા સમોવવન્નગા તેણં પાવં કમ્મં વિસ-
 માયં પટ્ટવિંસુ સમાયં નિટ્ઠવિંસુ’ તત્ર સ્વલુ યે જીવા વિપમકાલાયુષ્કોદયાઃ સમ-
 કાલભવાન્તરોત્પત્તયઃ તે સ્વલુ જીવાઃ વિપમં પ્રાસ્થાપયન્ સમકં ન્યસ્થાપયન્

નિટ્ઠવિંસુ’ इनमें जो जीव समान काल में आयुषके उदयवाले होते हैं और
 समान समय में परभव में उत्पन्न हुए होते हैं ऐसे वे जीव एक ही काल
 में तो पापकर्म का भोगना प्रारम्भ करते हैं और उसका अन्त भी
 एक ही काल में—साथ—साथ करते हैं १ । ‘तत्थ णं જે તે સમાડયા વિસ-
 મોવવન્નગા તેણં પાવં કમ્મં સમાયં પટ્ટવિંસુ વિસમાયં નિટ્ઠવિંસુ’ તથા—
 જો જીવ સમાન આયુષ્કે ઉદયવાલે હોતે હૈં ઓર ભિન્ન—૨ કાલ મેં
 પરભવ મેં જન્મે હુએ હોતે હૈં—એસે વે જીવ પાપકર્મકો ભોગને કા પ્રારમ્ભ
 એક હી સાથ કરતે હૈં પર ઉસકા અન્ત ભિન્ન—૨ સમય મેં કરતે હૈં ૨ ।
 તથા—‘તત્થ ણં જે તે વિસમાડયા સમોવવન્નગા તેણં પાવં કમ્મં વિસમાયં
 પટ્ટવિંસુ સમાયં નિટ્ઠવિંસુ’ જો જીવ ભિન્ન—ભિન્ન સમય મેં આયુષ્કે
 ઉદયવાલે હોતે હૈં ઓર સાથ—સાથ મેં પરભવ મેં ઉત્પન્ન હુએ હોતે હૈં વે
 જીવ ‘પાવં કમ્મં વિસમાયં પટ્ટવિંસુ સમાયં નિટ્ઠવિંસુ’ પાપકર્મકો ભોગને

થયેલા હોય છે, એવા તે જીવો એક જ કાળમાં તો પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ
 કરે છે, અને તેનો અંત પણ એક જ કાળમાં એક સાથે કરે છે. ૧ તત્થ ણં
 જે તે સમાડયા વિસમોવવન્નગા તેણ પાવં કમ્મં સમાયં પટ્ટવિંસુ વિસમાયં
 નિટ્ઠવિંસુ’ તથા જે જીવો સમાન આયુષ્યના ઉદયવાળા હોય છે, અને જુદા
 જુદા કાળમાં પરભવમાં જન્મેલા હોય છે. એવા તે જીવો પાપકર્મ ભોગવવાનો
 પ્રારંભ એકી સાથે કરે છે, પરંતુ તેનો અંત જુદા—જુદા સમયમાં કરે છે.
 તથા ‘તત્થ ણં જે તે વિસમાડયા સમોવવન્નગા તેણ પાવં કમ્મં વિસમાયં પટ્ટ-
 વિંસુ સમાયં નિટ્ઠવિંસુ’ જે જીવો જુદા—જુદા સમયમાં આયુષ્યના ઉદયવાળા
 હોય છે, તે જીવો ‘પાવં કમ્મં વિસમાયં પટ્ટવિંસુ સમાયં નિટ્ઠવિંસુ ૪’ પાપ
 કર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ જુદા—જુદા સમયમાં કરે છે, પરંતુ તેનો અંત એકી

इति तृतीयः ३ । 'तत्थ णं जे ते विसमाउया विसमोववन्नगा' तत्र खलु ये जीवा विषमायुष्काः विषमोपपन्नकाः 'तेणं पावं' कम्मं विसमायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु' ते खलु जीवाः पापं कर्म विषमतया प्रास्थापयन् विषमतया न्यस्था

का प्रारम्भ भिन्न-भिन्न समयमें करते हैं पर उसका अन्त एक ही साथ करते हैं । 'तत्थ णं जे ते विसमाउया विसमोववन्नगा' तथा-जो जीव भिन्न-भिन्न समय में आयुष के उदयवाले होते हैं, और भिन्न-भिन्न समय में परभव में उत्पन्न हुए होते हैं 'तेणं पावं कम्मं विसमायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु' ऐसे वे जीव पापकर्म को भोगने का प्रारम्भ भिन्न-भिन्न समय में करते हैं और उसका अन्त भी भिन्न-भिन्न समय में करते हैं । यहां ऐसी शंका हो सकती है कि जो तुम ऐसा कहते हो कि उदय की अपेक्षा जिनकी आयु समान है और जो परभव में साथ-साथ उत्पन्न हुए हैं ऐसे वे जीव पापकर्म का भोगना साथ-साथ प्रारम्भ करते हैं और साथ-साथ ही उसका अन्त करते हैं-सो ऐसा यह कथन आयुर्कर्म को लेकर ही बन सकता है पापकर्म को लेकर नहीं-अतः पापकर्म का भोगना एक साथ और एक साथ उसका विनाश होना यह आयुर्कर्म के उदय की अपेक्षावाला कैसे हो सकता है ? सो इसका उत्तर इस प्रकार से है-कर्मों का उदय या क्षय अन्नापेक्ष होता है और भव आयुर्कर्म के

સાથે જ કરે છે. 'તત્થ ણં જે તે વસમાઉયા વસમોવવન્નગા' તથા જે જીવો જુદા-જુદા-સમયમાં આયુષ્યના ઉદયવાળા હોય છે, અને જુદા જુદા સમયમાં પરલવમાં ઉત્પન્ન થયેલા હોય છે. 'તે ણં પાવં' કમ્મં વસમાયં નિટ્ઠવિંસુ' એવા તે જીવો પાપકર્મને ભોગવવાનો આરંભ જુદા-જુદા સમયમાં કરે છે, અને તેનો અંત પણ જુદા જુદા સમયમાં કરે છે,

આ કથનમાં એવી શંકા થઈ શકે છે.-કેજે એવું કહેવામાં આવ્યું કે ઉદયની અપેક્ષાએ જેઓનું આયુષ્ય સમાન છે, અને જેઓ પરલવમાં એકી સાથે ઉત્પન્ન થયા છે, તે જીવો પાપકર્મ ભોગવવાનો આરંભ એક સાથે કરે છે, અને એક સાથે તેનો અંત કરે છે.—તો આ પ્રમાણેનું કથન આયુ કર્મને લઈને જ બની શકે છે પાપકર્મના સંબંધમાં બની શકતું નથી. તેથી પાપકર્મ ભોગવવાનું એક સાથે અને તેનો વિનાશ એક સાથે હોવાનું આયુકર્મના ઉદયની અપેક્ષાથી કેવી રીતે થઈ શકે છે ? તેનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે-કર્મોનો ઉદય અથવા ક્ષય ભવની અપેક્ષાથી હોય છે, અને ભવ

આધીન હોતા હૈ, હસલિયે આયુકર્મ કો આધીન કરકે એસા કથન વિરુદ્ધ નહીં પડતા હૈ। હસીલિયે એસા કહા ગયા હૈ કિ જો જીવ સમાન આયુવાલે હૈં ઓર સમોપવન્નક હૈં વે જીવ પાપકર્મ કો ભોગના એક સાથ પ્રારમ્ભ કરતે હૈં ઓર એક સાથ હી ઉસકા વિનાશ કરતે હૈં। તથા-‘તત્થ ણં જે સમાડયા વિસમોવવન્નગા તેણં પાવં કમ્મં સમાયં પટ્ટવિંસુ વિસમાયં નિટ્ટવિંસુ’ એસા જો ઢિતીય ભંગ કે વિષય મેં ઉત્તર દિયા ગયા હૈ, -ઉસકા તાત્પર્ય એસા હૈ કિ જિનજીવોં કી આયુ સમાન હૈ-સમાનકાલ મેં આયુકે ઉદયવાલે હૈં-પર જુદે-જુદે સમય મેં પરભવ મેં ઉત્પન્ન છુપ હૈં વે મરણકાલ કી વિષમતા સે પાપકર્મ કો વેદન યદ્યપિ આયુક્કર્મ કે વિશેષોદય સે સંપાદ્ય હોને કે કારણ એક સાથ કરને પર ભી ઉસકા નિષ્ઠાપન વિનાશ-ભિન્ન કાલ મેં કરતે હૈં। તથા-‘તત્થ ણં જે તે વિસમાડયા સમોવવન્નગા, તેણં પાવં કમ્મં વિસમાયં પટ્ટવિંસુ સમાયં નિટ્ટવિંસુ’ એસા જો તૃતીય ભંગ કે વિષય મેં ઉત્તર દિયા ગયા હૈ-સો ઉસકા-તાત્પર્ય એસા હૈ કિ જો જીવ વિષમકાલ મેં-ભિન્ન ભિન્ન સમય મેં આયુકે ઉદયવાલે હૈં પર પરભવ મેં એક હી સાથ ઉત્પન્ન છુપ હૈં એસે વે જીવ પાપકર્મ કો ભોગના ભિન્ન-ભિન્ન સમય મેં

આયુકર્મને આધીન હોય છે. તેથી આયુકર્મને આધીન કરવાથી આ કથન વિરુદ્ધ થતું નથી. તેથી એવું કહેવામાં આવ્યું છે કે-જે જીવો સમાન આયુષ્ય વાળા હોય છે, અને સાથે જ ઉત્પન્ન થવાવાળા હોય છે, તેવા જીવો એકી સાથે પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ કરે છે-અને એકી સાથે તેનો વિનાશ કરે છે. ૧, તથા ‘તત્થ ણં જે સમાડયા વિસમોવવન્નગા તેણં પાવં કમ્મં સમાયં પટ્ટવિંસુ વિસમાયં નિટ્ટવિંસુ’ આ પ્રમાણેનો જે બીજા ભંગના સંબંધમાં ઉત્તર આપવામાં આવ્યો છે. તેનું તાત્પર્ય એ છે કે જે જીવોનું આયુ સમાન છે. સમાનકાળમાં આયુના ઉદયવાળા છે, -પરંતુ જુદા જુદા સમયમાં પરભવમાં ઉત્પન્ન થયા છે, તેઓ મરણ કાળના વિષમ પણાથી પાપકર્મનું વેદન-જોકે આયુષ્ય કર્મના વિશેષોદયથી સંપાદિત થવાને કારણે એકી સાથે કરવાથી તેનો વિનાશ જુદા જુદા સમયમાં કરે છે. તથા ‘તત્થ ણં જે તે વિસમાડયા સમોવવન્નગા, તેણં પાવં કમ્મં વિસમાયં પટ્ટવિંસુ સમાયં નિટ્ટવિંસુ’ આ રીતે જે ત્રીજા ભંગના સંબંધમાં ઉત્તર આપ્યો છે, તેનું તાત્પર્ય એ છે કે-જે જીવો વિષમ કાળમાં એટલે કે જુદા જુદા સમયમાં આયુકર્મના ઉદયવાળા છે, પરંતુ પરભવમાં એટલે કે બીજા ભવમાં એકી સાથે જ ઉત્પન્ન થયા છે,

પયન્નુ ઇતિ ચતુર્થ ૪ । ‘સે તેણદ્દેણં ગોયમા ! તં ચેવ’ તત્ત્વેનાર્થેન ગૌતમ ! સદેવ હે ગૌતમ ! એતેન કારણેન કથયામિ યત્ત્વ કેચન જીવાઃ સ્વલુ પાપં કર્મ સમકમેવ પ્રાસ્થાપયન્નુ સમકમેવ ન્યસ્થાપયન્નુ ઇત્યાદિના, ‘સલેસ્સાણં મંતે ! જીવા પાવં કર્મમં એવં ચેવ’ સલેશ્યાઃ સ્વલુ મદન્ત ! જીવાઃ પાપં કર્મ કિં સમકં પ્રાસ્થાપયન્નુ સમકં ન્યસ્થાપયન્ અથવા સમકં પ્રાસ્થાપયન્ વિષમતયા ન્યસ્થાપયન્ અથવા વિષમતયા પ્રાસ્થાપયન્ સમકં ન્યસ્થાપયન્ અથવા વિષમતયા પ્રાસ્થાપયન્ વિષમતયા ન્યસ્થાપયન્ ઇતિ પ્રશ્નઃ, હે ગૌતમ ! કેચન સલેશ્યા જીવાઃ સમકમેવ

કરતે હેં ઓર ડસકા અન્ત સાથ-સાથ કરતે હેં । ચતુર્થ ભંગ કે વિષય મેં દિયે ગયે ઉત્તર કા તાત્પર્ય સ્પષ્ટ હૈ । ‘સે તેણદ્દેણં ગોયમા ! તં ચેવ’ હસ કારણ હે ગૌતમ ! મેંને એસા કહા હૈ કિ કિતનેક જીવ પાપકર્મ કા ભોગના સાથ સાથ પ્રારમ્ભ કરતે હેં ઓર સાથ સાથ હી ડસકા અન્ત કરતે હેં હત્યાદિ । ‘સલેસ્સાણં મંતે ! જીવા પાવં કર્મમં એવં ચેવ’ હે મદન્ત ! જો લેશ્યાવાલે જીવ હેં- વે કયા પાપકર્મ કા ભોગના સાથ-સાથ પ્રારમ્ભ કરતે હેં ઓર સાથ સાથ હી ડસકા વિનાશ કરતે હેં ? ૧ અથવા-પાપકર્મ કા ભોગના સાથ-સાથ પ્રારમ્ભ કરતે હેં ઓર વિનાશ ભિન્ન-ભિન્ન સમય મેં કરતે હેં ? ૨ અથવા-પાપકર્મ કા ભોગના ભિન્ન-ભિન્ન સમય મેં પ્રારમ્ભ કરતે હેં ઓર વિનાશ સાથ-સાથ કરતે હેં ૩ અથવા પાપકર્મ કા ભોગના હી ભિન્ન-ભિન્ન સમય મેં પ્રારમ્ભ કરતે હેં ઓર વિનાશ હી ડસકા ભિન્ન-ભિન્ન સમય મેં કરતે હેં ? ૪ એસા યહ પ્રશ્ન ગૌતમસ્વામીને પ્રમુશ્રી સે લેશ્યાવાલે જીવો

એવા તે એવા જુદા જુદા સમયે પાપકર્મને લોગવે છે. અને તેનો અંત એકી સાથે જ કરે છે. એથા ભંગના સંબંધમાં કહેલ ઉત્તરનું તાત્પર્ય સ્પષ્ટ જ છે. ‘સે તેણદ્દેણં ગોયમા ! તં ચેવ’ આ કારણથી હે ગૌતમ ! મેં એવું કહ્યું છે કે-કેટલાક એવા પાપકર્મને લોગવવાનું એક સાથે પ્રારંભ કરે છે, અને તેનો અંત પણ એકી સાથે જ કરે છે. હત્યાદિ

‘સલેસ્સાણં મંતે જીવા પાવં કર્મમં એવં ચેવ’ હે લગવન્ લેશ્યાવાળા જે એવા છે, તેઓ એક સાથે પાપકર્મ લોગવવાનો પ્રારંભ કરે છે ? અને એકી સાથે જ તેનો અંત કરે છે ? ૧ અથવા-પાપકર્મનો ઉપલોગ એકી સાથે કરે છે, અને જુદા જુદા સમયમાં તેનો વિનાશ કરે છે ? ૨ અથવા પાપકર્મનો ઉપલોગ જુદા જુદા સમયે કરે છે, અને તેનો વિનાશ એકી સાથે કરે છે ? ૩ અથવા પાપકર્મ લોગવવાનું જુદા જુદા સમયમાં કરે છે, અને તેનો વિનાશ પણ જુદા જુદા સમયે કરે છે ? આ પ્રમાણેનો પ્રશ્ન ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને

પ્રાસ્થાપયન્ સમકસ્યેવ ન્યસ્થાપયન્, તથા એકે કેચન જીવાઃ સમકં પ્રાસ્થાપયન્ વિષમતયા ન્યસ્થાપયન્ તથા કેચન સલેશ્યજીવાઃ વિષમતયા પ્રાસ્થાપયન્ સમકં ન્યસ્થાપયન્ તથા એકે કેચન સલેશ્ય જીવાઃ વિષમતયા પ્રાસ્થાપયન્ વિષમતયા ન્યસ્થાપયન્ ઇતિ ચતુર્મજ્જયોત્તરમ્ । તત્કેનાર્થેન મદન્ત ! એવમુચ્યતે સમકં પ્રાસ્થાપયન્ સલેશ્યજીવાઃ સમકં ન્યસ્થાપયન્ ઇત્યાદિ મગ્નઃ, હે ગૌતમ ! ચતુ-

કો લેકર પાપકર્મ કે ઓગને કા ઓર વિનાશ કે વિષય મેં પૂછા હૈ-સો પ્રભુ ઇસકા ઉત્તર દેતે છુએ ઉનસે કહતે હૈ-‘ગોયમા’ ! હે ગૌતમ ! કિતનેક લેશ્યાવાલે જીવ એસે બી હોતે હૈ જો પાપકર્મ કા ઓગના એક હી સાથ પ્રારમ્ભ કરતે હૈ ઓર એક સાથ ઉસકા વિનાશ કરતે હૈ ? તથા-કિતનેક જીવ એસે હોતે હૈ-જો પાપકર્મ કા ઓગના તો સાથ-સાથ પ્રારમ્ભ કરતે હૈ-પર વિનાશ ઉસકા ભિન્ન-ભિન્ન સમય મેં કરતે હૈ ? તથા-કિતનેક સલેશ્ય જીવ એસે બી હોતે હૈ જો ભિન્ન-ભિન્ન કાલ મેં પાપકર્મ કા ઓગના પ્રારમ્ભ કરતે હૈ ઓર એક હી કાલ મેં ઉસકા વિનાશ કરતે હૈ ? તથા-કિતનેક સલેશ્ય જીવ એસે બી હોતે હૈ-જો ભિન્ન-ભિન્નકાલ મેં પાપકર્મ કા ઓગના પ્રારમ્ભ કરતે હૈ ઓર ભિન્ન ભિન્ન કાલ મેં હી ઉસકા વિનાશ કરતે હૈ ૪ । ઇસ પર પુનઃ ગૌતમસ્વામી પ્રભુશ્રી સે એસા પૂછા હૈ-હે મદન્ત ! એસા આપ કિસ કારણ સે કહતે હૈ કિ કિતનેક સલેશ્ય જીવ પાપકર્મ કા ઓગના સાથ-સાથ પ્રારમ્ભ કરતે હૈ ઓર સાથ-સાથ-હી ઉસકા વિનાશ કરતે હૈ ઇત્યાદિ,

લેશ્યાવાળા જીવોને ઉદેશીને પાપકર્મ ભોગવવાના તથા તેના વિનાશના સંબંધમાં પૂછેલ છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘ગોયમા’ ! હે ગૌતમ ! કેટલાક લેશ્યાવાળા જીવો એવા પણ હોય છે કે-જેઓ એકી સાથે જ પાપકર્મને ભોગવે છે. અને તેનો વિનાશ પણ એકી સાથે જ કરે છે. ૧ કેટલાક જીવો એવા હોય છે કે જેઓ પાપકર્મ ભોગવવાનો તો એક સાથે પ્રારંભ કરે છે. પરંતુ તેનો વિનાશ જુદા જુદા સમયે કરે છે. ૨ તથા કેટલાક સલેશ્ય-લેશ્યાવાળા જીવો એવા પણ હોય છે કે-જેઓ જુદા જુદા સમયમાં પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ કરે છે અને એકી સાથે એક સમયે તેનો વિનાશ કરે છે ૩, તથા કેટલાક લેશ્યાવાળા જીવો એવા હોય છે કે જેઓ જુદા જુદા સમયમાં પાપકર્મને ભોગવવાનો પ્રારંભ કરે છે, પરંતુ જુદા જુદા કાળમાં તેનો વિનાશ કરે છે. ૪

કરીથી આ વિષયમાં ગૌતમસ્વામી પ્રભુશ્રીને પૂછે છે કે-હે ભગવન્ એવું આપ શા કારણથી કહેો છો કે કેટલાક લેશ્યાવાળા જીવો પાપકર્મ ભોગવવાનું એક સાથે કરે છે, અને તેનો અંત પણ એક સાથે જ કરે છે ? ઇત્યાદિ.

વિંધા જીવાઃ પ્રજ્ઞતાં ઇત્યાદ્યુત્તરમ્ । એવ એવ 'એવં ચૈવ' ઇતિ પ્રકરણસ્યાભિપ્રાય ઇતિ । 'એવં સવ્વદ્વાણેસુ વિ જાવ અણાગારોવુત્તા' એવં યથા સલેશ્યાપદે કથિતં લેશ્યાપદમાશ્રિત્ય યથા યથા વિચારઃ કૃત સ્તેનૈવ રૂપેણ સર્વપદેષ્વપિ કૃણ્ણલેશ્યાદિ પદેભ્ય યાવદનાકારોપયોગપર્યન્ત પદાન્યાશ્રિત્ય વિચારઃ કર્ણીયઃ, કૃણ્ણલેશ્યાઃ खलु भदन्त ! जीवाः पापं कर्म समकं न्यस्थापयन् इत्यादिरूपेण आलापका ज्ञातव्याः । 'एए सव्वे वि पया एयाए वत्तव्वयाए भाणियव्वा' एतानि लेश्या-दिनी सर्वाण्यपि पदानि एतया वक्तव्यतया भणितव्यानि । वक्तव्यता प्रकारस्तु सामान्यजीवप्रकरणवदेव चतुर्भङ्गीतया ज्ञातव्य इति । सामान्यतो जीवमाश्रित्य

इस प्रश्न के उत्तर देते हुए गौतमस्वामी से प्रभुश्री कहते हैं—हे गौतम ! जीव चार प्रकार के कहे गये हैं—ऐसा कथन जो जीवके प्रकरण में कहा जा चुका है—वैसा ही कथन यहां पर भी उत्तर के रूप में जानना चाहिये, यही अभिप्राय 'एवं चैव' इस सूत्रपाठ का है । 'एवं सव्वद्वद्वाणेषु वि जाव अणागारोवउत्ता' जैसा—जैसा कथन सलेश्य पद को आश्रित करके किया गया है वैसा—ही कथन यावत् अना-कारोपयुक्त पद तक के समस्त पदों को आश्रित करके कहना चाहिये, यहां आलापक 'कृण्णलेश्याः खलु भदन्त ! जीवाः पापं कर्म समकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन्' इत्यादि रूप में जानना चाहिये । 'एए सव्वे वि पया एयाए वत्तव्वयाए भाणियव्वा' ये लेश्यादिक समस्त ही पद इस वक्तव्यता से ही जानना चाहिये । वक्तव्यता का प्रकार तो सामान्य जीव प्रकरण के जैसा ही चतुर्भङ्गी रूप से समझना चाहिये,

આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—હે ગૌતમ ! જીવો ચાર પ્રકાર ના કહ્યા છે, એ પ્રમાણેનું કથન જીવના સંબંધમાં જીવ પ્રકરણમાં જે કહેવામાં આવી ગયું છે, એજ પ્રમાણેનું કથન અહિયાં પણ ઉત્તરરૂપે સમજવું. એજ અભિપ્રાયથી પ્રભુશ્રીએ 'એવં ચૈવ' આ પ્રમાણે સૂત્રપાઠ કહેલ છે. 'સવ્વદ્વાણેસુ વિ જાવ અણાગારોવુત્તા' જે પ્રમાણે નું કથન લેશ્યાવાળા આશ્રય કરીને કરેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન યાવત્ અનાકારોપ યોગવાળા સુધીના સઘળા પદોનો આશ્રય કરીને કહેવા જોઇએ. તેના સંબંધમાં આલાપકો આ પ્રમાણે છે— 'કૃણ્ણલેશ્યાઃ खलु भदन्त जीवाः पापं कर्म समकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन्' વિગેરે રૂપથી સમજવા જોઇએ. 'एए सव्वे वि पया एयाए वत्तव्वयाए भाणियव्वा' આ લેશ્યા વિગેરે સઘળા પદો આ કથનથી જ સમજવા જોઇએ અને કથનનો પ્રકાર સામાન્ય જીવની જેમજ ચાર ભંગાત્મક સમજવો જોઇએ.

વિચારઃ કૃતઃ, અથ જીવવિશેષમાશ્રિત્ય વિચારયન્નાહ—‘નેરહ્યા ણં’ इत्यादि, ‘નેરહ્યા ણં મંતે ! પાવં કમ્મં કિં સમાયં પઢવિંસુ સમાયં નિઢવિંસુ પુચ્છા’ નૈરયિકાઃ સ્વલુ મદન્ત ! પાપં કર્મ કિં સમકં પ્રાસ્થાપયન્ સમકં ન્યસ્થાપયન્ ? અથવા સમકં પ્રાસ્થાપયન્ વિપતયા ન્યસ્થાપયન્ ? इत्यादि सम्पूर्णमपि प्रश्न प्रकरणं पृच्छया संग्राह्यम् । भगवानाह—‘गोयमा’ इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘अत्येगइया समायं पढविंसु समायं निढविंसु’ अस्त्येकके नारकाः समकमेव

इस प्रकार सामान्य जीव को आश्रित करके विचार किया—अब जीव विशेष को आश्रित करके विचार करने के निमित्त सूत्रकार कहते हैं—‘नेरह्याणं मंते ! पावं कम्मं किं समायं पढविंसु समायं निढविंसु’ हे भदन्त ! नैरयिक क्या पापकर्म को भोगने का प्रारम्भ एक काल में—साथ-साथ करते हैं और एक ही काल में—साथ-साथ उसका अन्त करते हैं ? अथवा—पापकर्म को भोगने का प्रारम्भ एक काल में करते हैं और उसका अन्त भिन्न-भिन्न काल में करते हैं अथवा उसका भोगने का प्रारंभ भिन्न-भिन्न काल में करते हैं और अन्त एक काल में करते हैं अथवा उसका भोगने का प्रारंभ भी वे भिन्न भिन्न काल में करते हैं और उसका अन्त भी भिन्न भिन्न काल में करते हैं ? इस प्रकार से पृच्छा शब्द से गृहीत इस प्रश्न प्रकरण के कारण उत्तर रूप में प्रभुश्री कहते हैं—‘गोयमा ! हे गौतम ! ‘अत्येगइया समायं पढविंसु समायं निढविंसु’ कितनेक नारक जीव ऐसे होते हैं जो पापकर्म का भोगना एक साथ प्रारम्भ करते हैं और एक ही साथ उसका अन्त

આ રીતે સામાન્ય જીવનો આશ્રય કરીને વિચાર કરવામાં આવેલ છે.

હવે જીવ વિશેષનો આશ્રય કરીને વિચાર પ્રગટ કરવા માટે સૂત્રકાર કહે છે કે—‘નેરહ્યાણં મંતે ! પાવં કમ્મં કિં સમાયં પઢવિંસુ સમાયં નિઢવિંસુ’ હે ભગવન્ નૈરયિકો પાપકર્મનો પ્રારંભ એક કાળમાં—એક સાથે કરે છે ? અને તેનો અંત પણ એકી સાથે જ કરે છે ? અથવા—પાપકર્મને ભોગવવાનો પ્રારંભ એક કાળમાં કરે છે ? અને તેનો અંત બુદ્ધ બુદ્ધ કાળમાં કરે છે ? ૨ અથવા તેને બુદ્ધ બુદ્ધ સમયે ભોગવે છે ? અને અંત એક કાળમાં કરે છે ? ૩ અથવા તેનો ભોગ પણ બુદ્ધ બુદ્ધ સમયે કરે છે, અને અંત પણ બુદ્ધ બુદ્ધ સમયે કરે છે ? આ પ્રમાણેનો ચાર લંગાત્મક પ્રશ્ન ‘પુચ્છા’ શબ્દથી શ્રદ્ધા કરીને પૂછેલ છે, આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે ‘ગોયમા’ ! હે ગૌતમ ! ‘અત્યેગइया समायं पढविंसु समायं निढविंसु’ કેટલક જીવો એવા હોય છે કે—જેઓ આ પાપકર્મને ભોગવવાનો પ્રારંભ એક સાથે કરે છે, અને

પ્રાસ્થાપયન્ સમકમેવ ન્યસ્થાપયન્ 'એવં જહેવ જીવાણં તહેવ માણિયવ્વં જાવ અણાગારોવઉત્તા' એવં યથૈવ જીવાનાં તથૈવ મણિતવ્યં યાવદનારકારોપયુક્તાઃ, સામાન્યતો જીવપ્રકરણે યેન પ્રકારેણ કથિતં પ્રશ્નોત્તરાદિકં તેનૈવ ક્રમેણ નારક-જીવપ્રકરણેઽપિ સર્વં પ્રશ્નોત્તરાદિકં જ્ઞાતવ્યમ્, યાવદનાકારોપયુક્તપ્રકરણમ્ । સલેશ્યનારકમધિકૃત્ય ચતુર્ભંગી વક્તવ્યાઃ કૃષ્ણલેશ્યનારકમધિકૃત્ય ચતુર્ભંગી વક્તવ્યા યાવદનાકારોપયોગયુક્તનારકમધિકૃત્ય સામાન્યજીવદળકવદેવ સર્વત્ર પદેષુ ચતુર્ભંગી વક્તવ્યા । 'એવં જાવ વેમાણિયાણં' એવં યાવદ્વૈમાનિકાનામ્ એવં યથા નારકદળકે લેશ્યાદિદ્વારાણિ અનાકારોપયોગાન્તાનિ પદાન્યાશ્રિત્ય ચતુ-

કરતે હૈં । 'એવં જહેવ જીવાણં તહેવ માણિયવ્વં જાવ અણાગારોવઉત્તા' હસ પ્રકાર સે જૈસે કથન જીવ કે સમ્બન્ધ મેં કિયા ગયા હૈ-વૈસા હી સમસ્ત કથન નૈરયિકોં કે સમ્બન્ધ મેં ભી યાવત્ અનાકારોપયુક્ત નૈરયિક પદ તક સમજ્ઞના ચાહિયે । અર્થાત્-સામાન્ય જીવ કે પ્રકરણ મેં જિસ પ્રકાર સે પ્રશ્નોત્તરાદિક કહા ગયા હૈ ઉસી પ્રકાર સે નારક જીવ પ્રકરણ મેં ભી સવ પ્રશ્નોત્તર આદિક જાનના-ચાહિયે । ઔર યહ કથન યાવત્ અનાકારોપયુક્ત પ્રકરણ તક સમજ્ઞના ચાહિયે । સલેશ્ય નારક કો લેકર ચતુર્ભંગી કૃષ્ણલેશ્ય નારક કો લેકર ચતુર્ભંગી, યાવત્ અનાકારોપયુક્ત નારક કો લેકર ચતુર્ભંગી સામાન્ય જીવ દળક કે જૈસી સમસ્ત પદોં મેં કહની ચાહિયે, 'એવં જાવ વેમાણિયાણં' જિસ પ્રકાર સે નારક દળક મેં લેશ્યાદિદ્વાર સે લેકર અનાકારોપયોગ તક કે પદોં કો આશ્રિત કરકે ચતુર્ભંગી પ્રકટ કી ગઈ હૈ ઉસી પ્રકાર સે

તેનો અન્ત પણ એકી સાથે જ કરે છે. ૧. 'એવં જહેવ જીવાણં તહેવ માણિયવ્વં જાવ અણાગારોવઉત્તા' આ પ્રમાણે જે રીતે જીવના સંબંધમાં કથન કરેલ છે, એજ પ્રમાણે સઘળું કથન નૈરયિકોના સંબંધમાં પણ યાવત્ અનાકારોપયુક્ત નૈરયિક પદ સુધી સમજી લેવું. અર્થાત્ સામાન્ય જીવના પ્રકરણમાં જે પ્રમાણે પ્રશ્નોત્તર વિગેરે કહ્યા છે, એજ પ્રમાણે નારક જીવ પ્રકરણમાં પણ પ્રશ્નોત્તરો સમજી લેવા. અને આ સઘળું કથન યાવત્ અનાકારોપયોગના પ્રકરણ સુધીનું અહિયાં સમજવું. લેશ્યાવાળા નારકને લઈને ચાર ભંગો, કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નારકો ને લઈને ચાર ભંગો, યાવત્ અનાકારોપયોગવાળા નારક ને લઈને ચાર ભંગો સામાન્ય દંડકમાં કહ્યા પ્રમાણે સઘળા પદોમાં સમજવા. 'એવં જાવ વેમાણિયાણં' જે પ્રમાણે નારક ના દંડકમાં લેશ્યા વિગેરે દ્વારથી લઈને અનાકારોપયોગ સુધીના પદોનો આશ્રય કરીને ચાર ભંગો કહ્યા છે, એજ પ્રમાણે એક ઇન્દ્રિયવાળા પૃથ્વી

‘एसो नवदण्डगसंगहिओ पढमो उद्देशो भाणियव्वो’ एषः नवदण्डकसंगृहीतः प्रथमोद्देशको भणितव्य इति । ‘सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति’ तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति, हे भदन्त ! अनेके जीवाः पापकर्मणापुपभोगं तत्समाप्तिं च सहैव—एककाले एव कुर्वन्तीत्यादिकं यद् देवानुप्रियेण कथितं तत्सर्वम् एवमेव सर्वथा सत्यमेवेति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा च संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति ॥सू० १॥

इति श्री विश्वविख्यात जगद्बल्लभादिपदभूषित बालब्रह्मचारि ‘जैनाचार्य’ पदभूषित पूज्यश्री ‘घासीलाल’ प्रतिविरचितायां श्री “भगवती” सूत्रस्य प्रमेयचन्द्रिका व्याख्यायां व्याख्यायां एकोनत्रिंशत्तमे शतके प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥२९-१॥

‘एसो नव दण्डगसंगहिओ पढमो उद्देशो भाणियव्वो’ इस प्रकार से नव दण्डक सहित यह प्रथम उद्देशक कहने के योग्य हैं ।

‘सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति’ हे भदन्त ! अनेक जीव पापकर्मों का उपभोग और उनका विनाश एक काल में ही करते हैं इत्यादि विषय जो आप देवानुप्रियने कहा है—वह सब सर्वथा सत्य ही है । इस प्रकार कहकर गौतमस्वामीने प्रभुश्री को वन्दना की—नमस्कार किया, वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० १॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत “भगवतीसूत्र” की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके ‘उनतीसवें’ शतकका ॥ प्रथम उद्देशक समाप्त ॥ २९-१॥

વાળા આઠ દડકો બનાવીને તે કહેવા બેઠાં. ‘एसो नव दण्डगसंगहिओ पढमो उद्देशो भाणियव्वो’ આ પ્રમાણે નવ દડકો સહિત આ પહેલો ઉદ્દેશો કહેવો બેઠાં.

‘सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति’ હે ભગવન્ અનેક જીવો પાપકર્મનો ઉપભોગ અને તેનો ક્ષય એક કાળમાં જ કરે છે. ઇત્યાદિ વિષયમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સમગ્ર કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન આત્મા હોવાથી સર્વથા સત્ય જ છે, આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજ માન થયા ॥સૂ.૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત ‘ભગવતીસૂત્ર’ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ઓગણત્રીસમા શતકનો પહેલો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૨૯-૧॥

अथ द्वितीयोद्देशकः प्रारभ्यते-

अनेकेषां जीवानामेकस्मिन् काले कर्मभोगस्तत्परिसमाप्तिश्च भवतीति प्रथमो-
द्देशके प्रदर्शितं द्वितीये तु अनन्तरोपपन्नकानां नारकादीनां तदर्शयिष्यति तद-
नेन सम्बन्धेन आयातस्य द्वितीयोद्देशकस्येदं सूत्रम्—‘अणंतरोववन्नगाणं’ इत्यादि ।

मूलम्—अणंतरोववन्नगाणं भंते ! नेरइया पावं कम्मं किं
समायं पट्टविंसु समायं निट्टविंसु पुच्छा, गोयमा ! अत्थेगइया
समायं पट्टविंसु समायं निट्टविंसु१, अत्थेगइया समायं पट्टविंसु
विसमायं निट्टविंसु२ । से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ अत्थे-
गइया समायं पट्टविंसु तं चेव, गोयमा ! अणंतरोववन्नगा
नेरइया दुविहा पन्नत्ता तं जहा—अत्थेगइया समाउया समोव-
वन्नगा१, अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा२ । तत्थ णं
जे ते समाउया समोववन्नगा तेणं पावं कम्मं समायं पट्टविंसु
समायं निट्टविंसु१, तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा,
तेणं पावं कम्मं समायं पट्टविंसु विसमायं निट्टविंसु२ से तेण-
ट्टेणं तं चेव । सलेस्सा णं भंते ! अणंतरोववण्णगा नेरइया पावं
कम्मं एवं चेव । एवं जाव अणागारोवउत्ता । एवं असुरकुमाराणं
एवं जाव वेमाणियाणं । नवरं जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणि-
यव्वं । एवं नाणावरणिज्जेणं वि ढंडओ, एवं निरवसेसं जाव
अंतराइएणं सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥सू० १॥

एगूणतिसइसे सए वीओ उद्देशो समत्तो ॥२९—३॥

छाया—अनन्तरोपपन्नकाः खलु भदन्त ! नैरयिकाः पापं कर्म किं समकं
प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन् पृच्छा, गौतम ! अस्त्येकके समकं प्रास्थापयन्
समकं न्यस्थापयन्१, अस्त्येकके समकं प्रास्थापयन् विषमकं न्यस्थापयन् २ ।
तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते अस्त्येकके समकं प्रास्थापयन् तदेव गौतम !
अनन्तरोपपन्नका नैरयिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—अस्त्येकके समायुष्काः
समोपपन्नकाः१, अस्त्येकके समायुष्का विषमोपपन्नकाः २ । तत्र खलु ये ते

સમાયુક્તાઃ સમોપપન્નકાઃ તૈ સ્વલુ પાપં કર્મ સમકં પ્રાસ્થાપયન્, સમકં ન્ય-
સ્થાપયન્ ૧, તત્ર સ્વલુ યૈ તૈ સમાયુક્તા વિષમોપપન્નકા સ્તૈ સ્વલુ પાપં કર્મ સમકં
પ્રાસ્થાપયન્ વિષમકં ન્યસ્થાપયન્ તત્તૈ તૈનાર્થેન તદેવ । સહેશ્યાઃ સ્વલુ ભદન્ત !
અનન્તરોપપન્નકા નૈરયિકાઃ પાપં૦ એવમેવ એવં યાવદનાકારોપયુક્તાઃ એવમસુર-
કુમારાઃ । એવં યાવદ્ વૈમાનિકાઃ । નવરં યત્ત્વ યસ્યાસ્તિ તત્ત્વ તસ્ય મણિતવ્યમ્ ।
એવં જ્ઞાનાવરણીયેનાપિ દણ્ડકઃ । એવં યાવત્ નિરવશેષં યાવદન્તરાયિકેન । તદેવં
ભદન્ત ! તદેવં ભદન્ત ! ઇતિ યાવદ્વિહરતિ ॥સુ૦ ૧॥

एकोनविंशत्तमे शतके द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥२९-२॥

ટીકા—‘અણંતરોવવન્નગાણં મંતે ! નેરહ્યા’ અનન્તરોપપન્નકાઃ—પ્રથમસમયે ઉત્પ-
ત્તિમન્તઃ સ્વલુ નૈરયિકાઃ ‘પાવં કર્મં કિં સમાયં પટ્ટવિસુ સમાય નિર્ટાસુ’ પાપં કર્મ
સમકં પ્રાસ્થાપયન્—પ્રસ્થાપિતવન્તઃ સમકં—સમકાલમેવ ન્યસ્થાપયન્—નિષ્ઠાપિત-

दूसरा उद्देश का प्रारंभ

अनेक जीवों का एक काल में भी कर्मभोग होता है और कर्म से
मुक्त होते हैं इत्यादि विषय प्रथम उद्देशक में प्रकट करने में आया है—
अब इस क्रमप्राप्त द्वितीय उद्देश में अनन्तरोपपन्नक नैरयिकादिकों
के विषय में भी यही बात प्रकट की जावेगी—इसी सम्बन्ध को लेकर
सूत्रकार ने यह द्वितीय उद्देशक प्रारम्भ किया है—

‘अणंतरोववन्नगाणं भंते ! नेरइया पावं कम्मं किं समायं’—इत्यादि

ટીકાર્થ—ગૌતમસ્વામીને પ્રભુશ્રી સે એસા પૂછા હૈ કિ ‘અણંતરો-
વવન્નગાણં મંતે ! નેરહ્યા૦’ હે ભદન્ત ! જો અનન્તરોપપન્નક નૈરયિક
હૈ વે કયા એક સાથ હી પાપકર્મ કો ભોગના પ્રારમ્ભ કરતે હૈ ? અર્થાત્

બીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ —

અનેક જીવોનો એક કાળમાં કર્મભોગ થાય છે, અને કર્મથી મુક્ત
થાય છે વિગેરે વિષય પહેલા ઉદ્દેશમાં પ્રગટ કરવામાં આવ્યો છે. હવે આ
કર્મ પ્રાપ્ત બીજા ઉદ્દેશમાં અનંતરોપપન્નક નૈરયિકા વિગેરેના સંબંધમાં પણ
એજ હકીકત કહેવામાં આવે છે. એ સંબંધ ને લઈને સૂત્રકારે આ બીજા
ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ કરેલ છે — ‘અણંતરોવવન્નગાણં મંતે ! નેરહ્યા પાવં કર્મં કિં
સમાયં ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને એવું પૂછ્યું છે કે—‘અણંતરોવવન્નગાણં
મંતે નેરહ્યા’ હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક જે નૈરયિકા છે, તેઓ એક સમયમાં
એક સાથે જ પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ કરે છે ? અર્થાત્ ભોગવે છે ? અને

વન્તઃ ૧, અથવા સમકં પ્રાસ્થાપયન્-પ્રસ્થાપિતવન્તઃ વિષમકં-વિષમતયા ન્યસ્થાપયન્ નિષ્ઠાપિતવન્તઃ ૨. 'પુચ્છા' પૃચ્છા-પ્રકન, અનેન સંગ્રાહ્યપદો યથા-અથવા વિષમકં-વિષમતયા-પ્રાસ્થાપયન્ સમકં ન્યસ્થાપયન્ ૩, અથવા વિષમકં પ્રાસ્થાપયન્ વિષમકં ન્યસ્થાપયન્ ઇતિ । મગધાનાહ-‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ, ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘અત્યેગહ્યા સમાયં પટ્ટવિંસુ સમાયં નિટ્ટવિંસુ’ અસ્થેયકે અનન્તરોપપન્નકા જીવાઃ સમકં પ્રાસ્થાપયન્ સમકં ન્યસ્થાપયન્ ૧, અથવા જીવા અનન્તરોપપન્નકાઃ યુગપદેવ પ્રથમતયા પાપં કર્મં વેદગિતુમારબ્ધવન્ત સ્તથા યુગપદેવ નિષ્ઠાં નીતવન્તઃ ઇતિ પ્રથમવદ્ ૧, તથા-‘અત્યેગહ્યા સમાયં પટ્ટવિંસુ નિસમાયં નિટ્ટવિંસુ’ સમકં પ્રાસ્થાપયન્ તથા નિષમં યથા ભવતિ તથા વિષમતયા ન્યસ્થાપયન્

ભોગતે હૈં ? और एक साथ ही उसका विनाश करते हैं १। (प्रथम समय में उत्पत्तिवाले जो नैरयिक हैं वे अनन्तरोपपन्नक नैरयिक हैं) अथवा वे पापकर्म का भोगना साथ-साथ प्रारम्भ करते हैं और विनाश भिन्न-भिन्न समय में करते हैं ? अथवा-पापकर्मका भोगने का प्रारंभ भिन्न-भिन्न समय में करते हैं और विनाश एक साथ करते हैं ? ३ अथवा-पापकर्मका भोगना भी भिन्न-भिन्न समय में करते हैं और विनाश भी भिन्न-भिन्न समय में करते हैं ? ४ इसके उत्तर में प्रभुश्री उनसे कहते हैं-‘गोयमा ।’ हे गौतम । ‘अत्येगह्या समायं पट्टविंसु समायं निट्टविंसु’ कितनेक अनन्तरोपपन्नक नैरयिक ऐसे हैं जो एक साथ ही पापकर्म का भोगना प्रारंभ करते हैं और एक साथ ही उसका विनाश करते हैं १ तथा-‘अत्येगह्या समायं पट्टविंसु विषमायं निट्टविंसु’

એક સાથે જ તેનો ક્ષય કરે છે ? પ્રથમ સમયમાં ઉત્પત્તિવાળા જે નૈરયિકો છે, તે અનંતરોપપન્નક નૈરયિક કહેવાય છે. અથવા-તેનો પાપકર્મ લોગવવાનું એક સાથે કરે છે ? અથવા-પાપકર્મ લોગવવાનું એક સાથે કરે છે ? અને તેનો ક્ષય જુદા જુદા સમયમાં કરે છે ? ૨ અથવા-પાપકર્મ લોગવવાનું જુદા જુદા સમયે કરે છે ? અને તેનો વિનાશ એક સાથે કરે છે ? ૩ અથવા પાપકર્મ લોગવવાનું પણ જુદા જુદા સમયમાં કરે છે ? અને તેનો વિનાશ પણ જુદા જુદા સમયે કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે- ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘અત્યેગહ્યા સમાયં પટ્ટવિંસુ સમાયં નિટ્ટવિંસુ’ કેટલાક અનંતરોપપન્નક નૈરયિકો એવા હોય છે કે-જેઓ એક સાથે જ પાપકર્મ લોગ વવાનો પ્રારંભ કરે છે, અને તેનો ક્ષય-વિનાશ પણ એક સાથે જ કરે છે. ૧ તથા ‘અત્યેગહ્યા સમાયં પટ્ટવિંસુ વિષમાયં નિટ્ટવિંસુ’ કેટલાક અનંતરોપપન્નક

એકસમયે એવ જાયમાનત્વાત્ ભજ્જદ્વયમેવ ભવતિ । અનન્તરોપપન્નત્વેન તૃતીયચતુર્થયોર્ભજ્જયોરભાવ ઇતિ । પુનઃ પ્રશ્નયન્નાહ—‘સે કેળદ્દેણં’ ઇત્યાદિ, ‘સે કેળદ્દેણં ભંતે ! એવં વુચ્ચઈ અત્થેગહયા સમાયં પઢ્ઢવિંસુ—તં ચેવ’ તત્ત્વ કેનાર્થેન ભદન્ત ! એવમુચ્ચયતે યત્ અસ્ત્યેકકે સમકં પ્રાસ્થાપયન્ સમકમેવ વ્યસ્થાપયન્ તદેવેતિ તથા સમકં પ્રાસ્થાપયન્ વિવક્કમં વ્યસ્થાપયન્ ઇત્યવાન્તરપ્રશ્નઃ, ભગવાનાહ—‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ, ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘અણંતરોવવન્નગા નેરહયા દુવિહા પન્નત્તા’ અનન્તરોપપન્નકા નૈરયિકા દ્વિવિધાઃ—દ્વિવકારકાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ—કથિતાઃ ‘તં જઢા’ તથથા ‘સમાડયા સમોવવન્નગા’ સમાયુષ સ્તુલ્યાયુષ્કવન્તઃ અનન્તરોપપન્નકાનાં

કિતનેક અનન્તરોપપન્નક નૈરયિક એસે હૈં—જો એક સાથ તો પાપકર્મકા ભોગના પ્રારંભ કરતે હૈં પર ઉસકા વિનાશ એક સાથ નહીં કરતે—ભિન્ન—ભિન્ન સમય મેં કરતે હૈ, યહાં યે દો હી ભંગ હોતે હૈં, ક્યોંકિ અનન્તરોપપન્નક જીવોં મેં તૃતીય ઓર ચતુર્થ યે દો ભંગ નહીં હોતે હૈં ।

‘સે કેળદ્દેણં ભંતે ! એવં વુચ્ચઈ, અત્થેગહયા સમાયં પઢ્ઢવિંસુ તં ચેવ’ હે ભદન્ત એસા આપ કિસ કારણ સે કહતે હૈં કિ કિતનેક અનન્તરોપપન્નક નૈરયિક જીવ એસે હોતે હૈં કિ એક સાથ પાપકર્મ કો ભોગના પ્રારંભ કરતે હૈં ઓર એક સાથ હી ઉસકા વિનાશ કરતે હૈં ? તથા કિતનેક અનન્તરોપપન્નક નૈરયિક એસે હોતે હૈં જો એક સાથ તો પાપકર્મ કા ભોગના પ્રારંભ કરતે હૈં પર ભિન્ન ભિન્ન સમય મેં ઉસકા વિનાશ કરતે હૈં ? ઇસકે ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં—‘ગોયમા !’ અણંતરોવવન્નગા નેરહયા દુવિહા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! અનન્તરોપપન્નક

નૈરયિકો એવા હોય છે કે—જેઓ પાપકર્મ લોગવવાનો પ્રારંભ તો એક સાથે જ કરે છે, પરંતુ તેનો ક્ષય વિનાશ એક સાથે કરતા નથી. અર્થાત્ જુદા જુદા સમયે તેનો ક્ષય કરે છે. અહિયાં આ બેજ લાંગો કહ્યા છે. કેમકે—અનંતરોપપન્નક જીવોમાં ત્રીજો અને ચોથો એ બે લાંગો હોતા નથી. ’

સે કેળદ્દેણં ભંતે ! એવં વુચ્ચઈ. અત્થેગહયા સમાયં પઢ્ઢવિંસુ તં ચેવ, હે ભગવન્ આપ એવું શા કારણથી કહો છો ? કે કેટલાક અનંતરોપપન્નક નૈરયિક જીવો એવા હોય છે કે જેઓ એક સાથે પાપકર્મ લોગવવાનો પ્રારંભ કરે છે, અને એકી સાથે જ તેનો ક્ષય કરે છે ૧ તથા કેટલાક અનંતરોપપન્નક નૈરયિક જીવો એવા હોય છે કે જેઓ પાપકર્મ લોગવવાનો પ્રારંભતો એક સાથે કરે છે. પરંતુ તેનો વિનાશ જુદા જુદા સમયે કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘ગોયમા ! અણંતરોવવન્નગા નેરહયા દુવિહા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! અનંતરોપપન્નક નૈરયિક

સમ एवायुरुदयो भवति आयुषो विषम्ये अनन्तरोपपन्नत्वमेव न स्यात्, आयुः प्रथमसमयवर्तित्वा तेषां समोपपन्नकाः मरणानन्तरं परभवोत्पत्तिमाश्रित्य ते च मरणकाले भूतपूर्वगत्या अनन्तरोपपन्नकाः कथ्यन्ते इति । 'अत्येगइया समाउया विसमोववन्नगा' अस्त्येकके समायुषो विषमोपपन्नकाः विषमोपपन्नकत्वम् अत्रापि संभवति, मरणवैषम्यादिति । अनन्तरोपपन्नकेषु तृतीयचतुर्थभङ्गौ न संभवतोऽतोऽत्र तृतीयचतुर्थौ न दर्शितौ अनन्तरोपपन्नत्वादेवेति । 'तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा' तत्र तयो द्वयोरनन्तरोपपन्नकयोर्मध्ये ये अनन्तरोपपन्ननारकाः समायुषः समोपपन्नकाश्च 'तेणं पावं कम्म समायं पट्टविंसु

નૈરધિક દો પ્રકાર કે હોતે હૈં-‘તં જહા’ જૈસે કિ-‘સમાઁયા સમોવવન્નગા’ એક વે જો તુલ્ય આયુવાલે હો ઔર સમાનકાલ મેં પરભવ મેં ઉત્પન્ન હુએ હૈં ૧ તથા-દ્વિતીય વે-જો સમકાલ મેં આયુષ કે ઉદયવાલે હો ઔર પરભવ મેં ભિન્ન-ભિન્ન સમય મેં ઉદય હુએ હો ૨ અનન્તરોપપન્નક જીવોં કી આયુકા ઉદય સમાન હી હોતા હૈં । આયુકી વિષમતા મેં ઁનમેં અનન્તરોપપન્નતા હી નહીં ઁનતી હૈં । ઁ સઘ સમોપપન્નક આયુકે પ્રથમ સમયવર્તી હોતે હૈં । તથા ઁ સમોપપન્નક હસલિયે કહે ગયે હૈં કિ ઁ મરણ કે અનન્તર હી પરભવ મેં ઉત્પન્ન હો જાતે હૈં । હસલિયે ઁ મરણકાલ મેં ભૂતપૂર્વ ગતિ સે અનન્તરોપપન્નક કહલાતે હૈં । તથા દ્વિતીય ભંગ મેં મરણ કી વિષમતા સે ઁનમેં વિષમોપપન્નકતા કહી ગઈ હૈં । ઁહાં આદિ કે ઁ દો ભંગ હી સંભવિત હૈં-તૃતીય ચતુર્થ નહીં । હસલિયે વે ઁહાં પ્રકટ નહીં કિયે ગયે હૈં । ‘તત્થ ણં

ઁ પ્રકારના હોય છે, ‘તં જહા’ તે આ પ્રમાણે છે. ‘સમાઁયા સમોવવન્નગા’ એક એ કે જેઓ સમાન આયુવાળા હોય છે, અને સમાન કાળમાં પરભવમાં ઉત્પન્ન થયા હોય ૧ તથા--બીજા એ કે જેઓ સમાન કાળમાં આયુના ઉદયવાળા થયા હોય ૨ અનંતરોપપન્નક જીવોના આયુષ્યનો ઉદય સમાન જ હોય છે. આયુના વિષમપણામાં તેઓમાં અનંતરોપપન્નકપણું જ બનતું નથી. તેઓ બધા સમોપપન્નક આયુના પ્રથમ સમયમાં રહેનારા હોય છે. તથા તેઓને સમોપપન્નક એ માટે કહ્યા છે કે-તેઓ મરણ પછી જ પરભવમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. તેથી તેઓ મરણ કાળમાં ભૂતપૂર્વ ગતિથી અનંતરોપપન્નક કહેવડાવે છે. તથા બીજા ભંગમાં મરણના વિષમપણાથી તેઓમાં વિષમોપપન્નકપણું કહેવડ છે. અહિયાં પહેલો અને બીજો એ જ ભંગો જ સંભવિત કહ્યા છે. ત્રીજો અને ચોથો એ ભંગો તેઓને હોતા નથી. તેથી તે એ ભંગો અહીં કહ્યા નથી. ‘તત્થ ણં જે તે સમાઁયા સમોવવન્નગા’

સમાયં નિદ્વિંસુ' તે અનન્તરોપપન્નકાઃ સ્વલુ નારકાઃ પાપમ્-અશુભં કર્મ સમકમેવ પ્રાસ્થાપયન્ સમકમેવ ન્યસ્થાપયન્ ચેતિ । 'તત્થ ણં જે તે સમાડયા વિસમોવવન્નગા' તત્ર દ્વયોર્મધ્યે સ્વલુ યે નારકાઃ સમાયુષો વિષમોપપન્નકાઃ 'તેણં પાવં કર્મં સમાયં પદ્ધવિંસુ વિસમાયં નિદ્વિંસુ' તે સ્વલુ પાપં કર્મ સમકમેવ પ્રાસ્થાપયન્ વિષમકં-વિષમતયા ન્યસ્થાપયન્ ઇતિ 'સે તેણદ્દેણં તં ચેવ' તત્તેનાર્યેન હે ગૌતમ ! એવમુચ્યતે અસ્ત્યેકકે સમકં પ્રાસ્થાપયન્ સમકં ન્યસ્થાપયન્, અસ્ત્યે-કકે સમકં પ્રાસ્થાપયન્ વિષમકં ન્યસ્થાપયન્, ઇતિ । 'સલેસ્સા ણં મંતે ! અણં-તરોવવન્નગા નેરહ્યા પાવં' સલેહ્યાઃ સ્વલુ મદન્ત ! અનન્તરોપપન્નકા નારકાઃ સમકં પ્રાસ્થાપયન્ સમકમેવ ન્યસ્થાપયન્, અથવા સમકમેવ પ્રાસ્થાપયન્ વિષમકં જે તે સમાડયા સમોવવન્નગા' હનમેં જો અનન્તરોપપન્નનારક સમાન આયુવાલે ઓર સમોપપન્નકા હેં 'તેણં પાવં કર્મં સમાયં પદ્ધવિંસુ સમાયં નિદ્વિંસુ' વે પાપકર્મ કા ઓગના એક સાથ પ્રારમ્ભ કરતે હેં ઓર એક સાથ ડનકા વિનાશ કરતે હેં । તથા- 'તત્થ ણં જે તે સમાડયા વિસમો-વવન્નગા-તેણં પાવં કર્મં સમાયં પદ્ધવિંસુ વિસમાયં નિદ્વિંસુ' જો અનન્તરોપપન્નનારક સમાન આયુવાલે હોતે હુએ ઓ મિન્ન-મિન્ન સમય મેં પરમ્ભ મેં ઉત્પત્તિવાલે હેં-વે પાપકર્મ કો એક સાથ તો ઓગતે હેં પર ડસકા વિનાશ વે મિન્ન-મિન્ન સમય મેં કરતે હેં 'સે તેણદ્દેણં તં ચેવ' હલ્લિયે હે ગૌતમ ! મેંને એસા કહા હે કિતનેક અનન્ત-રોપપન્નકા નૈરથિક જીવ એસે હોતે હેં જો પાપકર્મ કા ઓગના સાથ-સાથ પ્રારમ્ભ કરતે હેં ઓર સાથ-સાથ-ડનકા વિનાશ કરતે હેં ઇત્યાદિ, 'સલેસ્સા ણં મંતે ! અણંતરોવવન્નગા નેરહ્યા પાવં' હે મદન્ત !

આમાં જે અનંતરોપપન્નકા નારક સમાન આયુવાળા અને સમાન કાળમાં ઉત્પન્ન થવાવાળા હોય છે, 'પાવં કર્મ સમાયં પદ્ધવિંસુ સમાયં નિદ્વિંસુ' તેઓ પાપકર્મ લોગવવાનું એક સાથે જ કરે છે, અને તેનો વિનાશ પણ એક સાથે જ કરે છે. તથા 'તત્થ ણં જે તે સમાડયા વિસમોવવન્નગા તેણં પાવં કર્મ સમાયં પદ્ધવિંસુ વિસમાયં નિદ્વિંસુ' જે અનંતરોપપન્નકા નારક સમાન આયુવાળા હોવા છતાં પણ બુદ્ધિ બુદ્ધિ સમયમાં પરસ્પરમાં ઉત્પન્ન થવાવાળા હોય છે, તેઓ એક સાથે પાપકર્મને લોગવે તો છે, પરંતુ તેનો વિનાશ બુદ્ધિ બુદ્ધિ સમયે કરે છે, 'સે તેણ દ્દેણં તં ચેવ' તેથી હે ગૌતમ ! મેં એવું કહ્યું છે કે-કેટલાક અનંતરોપપન્નકા નૈરથિક હોવા એવા હોય છે કે-જેઓ એક સાથે પાપકર્મને લોગવે છે, અને એકી સાથે તેનો વિનાશ કરે છે, ઇત્યાદિ 'સલેસ્સા ણં મંતે ! અણંતરોવવન્નગા ! નેરહ્યા પાવં' હે લગવન્ જેઓ લેહ્યાવાળા અનંતરોપપન્નકા નૈરથિક છે તેઓ પાપકર્મ લોગવવાનો પ્રારંભ

કેવન સમાયુષઃ સમોપપન્નકાઃ કેવન સમાયુષો વિષમોપપન્નકાઃ તત્ર યે તે સમાયુષઃ સમોપપન્નકા સ્તે પાપં કર્મ સમકં પ્રાસ્થાપયન્ સમકં ન્યસ્થાપયન્ તથા તત્ર ત્વહુ યે તે સમાયુષો વિષમોપપન્નકા સ્તે સમકં પ્રાસ્થાપયન્ વિષમકં ન્યસ્થાપયન્, एतेन कारणेन कथयामि यत् सलेश्यानन्तरोपपन्ननारकाः समकं

हे भदन्त ! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि जो सलेश्य अनन्तरोपपन्नक नैरयिक हैं उनमें से कितनेक सलेश्य अनन्तरोपपन्न नैरयिक पापकर्म का भोगना एक साथ प्रारम्भ करते हैं और एक साथ उसका विनाश करते हैं ? तथा—कितनेक अनन्तरोपपन्न नैरयिक पापकर्म का भोगना एक साथ तो प्रारम्भ करते हैं पर उसका विनाश वे भिन्न काल में करते हैं ? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभुश्री उनसे कहते हैं—हे गौतम ! सलेश्य अनन्तरोपपन्न नैरयिक दो प्रकार के होते हैं—कितनेक समान आयुवाले समोपपन्नक और कितनेक समान आयुवाले विषमोपपन्नक, इनमें जो प्रथम प्रकार के सलेश्य अनन्तरोपपन्न नैरयिक हैं वे पापकर्म का भोगना एक साथ प्रारंभ करते हैं और एक साथ ही उसका विनाश करते हैं, तथा द्वितीय प्रकार के जो सलेश्य अनन्तरोपपन्न नैरयिक हैं वे पापकर्म का भोगना यद्यपि एक साथ प्रारंभ करते हैं पर उसका विनाश भिन्न भिन्न काल में करते हैं । इसीलिये हे गौतम ! मैंने पूर्वोक्त रूप से ऐसा कहा है कि कितनेक सलेश्य अनन्तरोपपन्नक नैरयिक ऐसे होते हैं कि जो पापकर्म का भोगना साथ-साथ प्रारम्भ

કહે છે. કે-જે સલેશ્ય અનંતરોપપન્નક નૈરયિકો છે, તેઓ પૈકી કેટલાક લેશ્યાવાળા અનંતરોપપન્નક નૈરયિકો પાપકર્મ લોગવવાનો પ્રારંભ એક સાથે કરે છે, અને તેનો વિનાશ પણ એક સાથે જ કરે છે ? તથા કેટલાક અનંતરોપપન્નક નૈરયિકો પાપકર્મ લોગવવાનો પ્રારંભતો એક સાથે કરે છે, પરંતુ તેનો વિનાશ તેઓ જુદા જુદા સમયે કરે છે, આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી તેઓને કહે છે કે-હે ગૌતમ ! લેશ્યાવાળા અનંતરોપપન્નક નૈરયિકો બે પ્રકારના હોય છે. કેટલાક સમાન આયુષ્યવાળા સમોપપન્નક અને કેટલાક સમાન આયુષ્યવાળા વિષમોપપન્નક, આમાં જેઓ પહેલા પ્રકારના લેશ્યાવાળા અનંતરોપપન્નક નૈરયિકો હોય છે, તેઓ પાપકર્મ લોગવવાનો પ્રારંભ એક સાથે કરે છે, અને એક સાથે જ તેનો વિનાશ કરે છે. તથા બીજા પ્રકારના જેઓ લેશ્યાવાળા અનંતરોપપન્નક નૈરયિકો છે, તેઓ પાપકર્મ લોગવવાનો પ્રારંભ બેકે એક સાથે કરે છે, પરંતુ તેનો વિનાશ જુદા જુદા કાળમાં કરે છે, તે કારણથી હે ગૌતમ ! મેં પૂર્વોક્ત પ્રકારથી એવું કહ્યું છે કે-કેટલાક લેશ્યાવાળા

પાપં કર્મ પ્રાસ્થાપયન્ સમકં ન્યસ્થાપયન્ કેચન સલેશ્યાનન્તરોપપન્નનારકાઃ
 પાપં કર્મ સમકં પ્રાસ્થાપયન્ વિપમકમેવ ન્યસ્થાપયન્, एतदेव 'एवं चेव' इति
 પ્રકરણેન કથિતમિતિ । 'एवं जाव अणागारोवउत्ता' एवं लेश्यापदवदेव
 યાવદનાકારોપયુક્તાઃ, અજ યાવત્પદેન કૃષ્ણલેશ્યાપદત આરભ્ય સાકારોપયોગ-
 પદપર્યન્તાનાં ગ્રહણં ભવતિ તથા ચ કૃષ્ણપાક્ષિકાનન્તરોપપન્નકનારકાદારભ્ય
 અનાકારોપયુક્ત પર્યન્તનારકવિષયે પાપકર્મણઃ પ્રસ્થાપને નિષ્ઠાપને ચ સમાનૈવ
 રીતિ જ્ઞેયેતિભાવઃ । 'एवं असुरकुमाराणं' एवम्-नारकवदेव असुरकुमाराणामपि
 સર્વપદેષુ એવમેવ પ્રક્રિયા જ્ઞાતવ્યા । 'एवं जाव वैमाणियाणं' एवम्-असुरकुमार-
 વદેવ યાવદ્વૈમાનિકાનામ્-વૈમાનિકપર્યન્તાનામ્ 'नवरं जं जरस अतिथ तं तस्स

करते हैं और उसका विनाश भिन्न भिन्न काल में करते हैं इत्यादि,
 'एवं जाव अणागारोवउत्ता' લેશ્યાપદ કે જૈસે હી યાવત્ અનાકારો-
 પયુક્ત પદ તક ધી યહી કથન કા ક્રમ જાનના ચાહિયે, યહાં યાવત્પદ
 સે નારક યોગ્ય કૃષ્ણલેશ્યા પદ સે પ્રારમ્ભ કર સાકારોપયોગ પદ તક
 કે નૈરયિકોં કા ગ્રહણ હુઆ હૈ-તથા ચ-કૃષ્ણલેશ્ય અનન્તરોપપન્નક
 નારક સે લેકર અનાકારોપયોગયુક્ત તક કે પદ વાલે નારકોં કે વિષય
 મેં પાપકર્મ કે ભોગને મેં ઓર ઉસકે વિનાશ કરને મેં સમાન રીતિ
 જાનની ચાહિયે, 'एवं असुरकुमाराणं' નારક કી જૈસી રીતિ હી અસુર-
 કુમારોં કે સમસ્ત પદોં મેં ધી સમજની ચાહિયે, 'एवं जाव वैमाणि-
 याणं' ઓર હસી પ્રકાર કી રીતિ યાવત્ વૈમાનિકોં કે વિષય મેં પાપકર્મોં
 કે ભોગને મેં ઓર ઉસકે વિનાશ કરને મેં જાનની ચાહિયે, પરન્તુ
 હસમેં હતની વિશેષતાકા ધ્યાન રાખના ચાહિયે કિ જો લેશ્યાદિક જિસકે
 હો વહી ઉસકો કહના ચાહિયે । ઢળડકોં કી રચના ઉન-ઉન પદોં

अनंतरोपपन्नक नैरयिके एवा होय छे के जेओ पापकर्म लोगववाने प्रारंभ
 એક સાથે કરે છે, અને તેનો વિનાશ જુદા જુદા સમયમાં કરે છે. ઇત્યાદિ

'एवं जाव अणागारोवउत्ता' લેશ્યાપદના કથન પ્રમાણે જ યાવત્ અના-
 કારોપયોગવાળા પદ સુધી આ પ્રમાણે જ કથનનો ક્રમ સમજવો જોઈએ.
 અહીંયા યાવત્પદથી કૃષ્ણલેશ્યાપદથી આરભીને સાકારોપયોગ પદ
 સુધીના નૈરયિકો અકલ્પ કરાયા છે. તથા-કૃષ્ણપાક્ષિક અનન્તરોપપન્નક
 નારકોથી લઈને અનાકારોપયુક્ત સુધીના પદવાળા નારકોના, વિષયમાં
 પાપકર્મના લોગવવામાં અને તેનો વિનાશ કરવામાં સરખી રીતે સમજવા.
 'एवं असुरकुमाराणं' નારકના કથન પ્રમાણે જ અસુરકુમારોના સઘળા પદોમાં
 પણ સમજવું. 'एवं जाव वैमाणियाणं' આજ પ્રમાણેની રીત યાવત્ વૈમાનિકો
 ના સંબંધમાં પાપકર્મ લોગવવામાં અને તેનો વિનાશ કરવામાં સમજવી.

માણિયવ્વ' નવરં યત્ લેશ્યાદિકં યસ્યાસ્તિ-વિદ્યતે તદેવ તસ્ય વક્તવ્યમ્ તત્તત્
પદમાશ્રિત્યૈવ તત્ર દણ્ડકો વિધેય ઇતિ । 'એવં જાણાવરણિજ્જેગ વિ દંડઓ' એવં
પાપકર્મપ્રસ્થાપનવદેવ જ્ઞાનાવરણિયકર્મણાઽપિ દણ્ડકો યજિતવ્ય ઇતિ । 'એવં
નિરવસેસં જાવ અંતરાહયં' એવ જ્ઞાનાવરણીયદણ્ડકવદેવ યાવત્ અંતરાયિકે-
નાઽપિ નિરવશેષો દણ્ડકો યજિતવ્ય ઇતિ । સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ જાવ
વિહરહ' તદેવ ભદન્ત ! તદેવ ભદન્ત ! ઇતિ યાવદ્વિહરતિ હે ભદન્ત ! કર્મપ્રસ્થા-
પનાદિવિષયે યદેવાનુપ્રિયેણ કથિતં તત્સર્વમ્ એવમેવ-સર્વથા સત્યમેવ ઇતિ કથયિ-
ત્વા ગૌતમો ભગવન્ત વન્દતે નમસ્થતિ, ચન્દિત્વા નમસ્થિત્વા સંયમેન તપસા
આત્માનં ભાવયન્ વિહરતિ, ઇતિ ॥સૂ૦ ૧॥

ઇતિ એકોનવિંશત્તમે શતકે દ્વિતીયોદ્દેશકઃ સમાપ્તઃ ॥૨૯-૨॥

કો લગાકર વહાં કરની ચાહિયે । 'એવં જાણાવરણિજ્જેગ વિ દંડઓ'
પાપકર્મ કે પ્રસ્થાપન કે જેસા હી જ્ઞાનાવરણીય કર્મ કે સાથ મી દણ્ડક
કહના ચાહિયે, 'એવં નિરવસેસં જાવ અંતરાહયં' ઓર યહ સબ જ્ઞાના-
વરણીય કે જેસા કથન યાવત્ અંતરાય કર્મ તક કરના ચાહિયે, 'સેવં
ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ જાવ વિહરહ' હે ભદન્ત ! કર્મપ્રસ્થાપનાદિ કે
વિષય મેં જો આપ દેવાનુપ્રિયને કહા હૈ-વહ સબ કથન સર્વથા સત્ય હી
હૈ હસ પ્રકાર કહકર ગૌતમને પ્રભુ કો વન્દના કી ઓર ડન્હે નમસ્કાર
કિયા । વન્દના નમસ્કાર કર ફિર વે સંયમ ઓર તપ સે આત્માકો
ભાવિત કરતે હુએ અપને સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે ॥સૂ૦ ૧॥

દ્વિતીય ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥૨૯-૨॥

પરંતુ તેમાં એ વિશેષ પણાતું ધ્યાન રાખવું કે જે લેશ્યા વિગેરે જેને કહ્યા
હોય તેજ લેશ્યા વિગેરે તેને કહેવા લેઈએ. દંડકોની રચના તે તે પદો
લગાવીને કહી લેવી. 'એવં જાણાવરણિજ્જેગ વિ દંડઓ' પાપકર્મના કથન પ્રમાણે જ
જ્ઞાનાવરણીય કર્મની સાથે પણ દંડકો કહેવા લેઈએ. 'એવં નિરવસેસં જાવ અંત-
રાહયં' અને જ્ઞાનાવરણીય કર્મ પ્રમાણેનું કથન યાવત્ અંતરાકર્મ સુધી સમજવું.

'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ જાવ વિહરહ' હે ભગવન્ કર્મના પ્રસ્થાપન
વિગેરે વિષયમાં આપદેવાનુપ્રિયે જે કથન કયું છે. તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય
જ છે આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયના સંબંધમાં કહેલ કથન આપ હોવાથી
સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી
તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના
આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર વિરાજમાન થયા ॥સૂ. ૧॥

બીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૨૯-૨॥

तृतीयोद्देशकत आरभ्यैकादशान्ता उद्देशका आरभ्यन्ते

द्वितीयोद्देशकं निरूप्य क्रमप्राप्तान् तृतीयोद्देशकादारभ्य एकादशान्तान् उद्देशकान् निरूपयन्नाह—‘एवं’ इत्यादि ।

सूत्रम्—एवं एएणं गमएणं जञ्चेव वंधिसए उद्देसगपरिवाडी सञ्चेव इह वि भाणियवा जाव अचरिमोत्ति । अणंतर उद्देसगाणं चउण्हं वि एक्का वत्तव्वया, सैसाणं सत्तण्हं एक्का ॥सू० १॥

एगूणतीसइमे सए तइयाइ एगारस उद्देसगा समत्ता ॥२९॥३-११॥

एगूणतीसइमं कम्मपट्टवणसयं समत्तं ॥२९॥

छाया—एवमेतेन गमकेन यैव बन्धिशतके उद्देशकपरिपाटी सैवेहापि भणितव्या यावदचरम इति । अनन्तरोद्देशकानां चतुर्णामपि एका वक्तव्यता, शेषाणां सप्तानामेका ॥सू० १॥

॥ एकोनत्रिंशत्तमे शतके तृतीयत एकादशान्ता उद्देशकाः समाप्ताः ॥

॥ एकोनत्रिंशत्तमं कर्मप्रस्थापनशतकं समाप्तम् । २९॥

टीका—‘एवं’ एवम्—द्वितीयोद्देशकवदेव ‘एए णं गमए णं’ एतेन—उपरि प्रदर्शितेन गमकेन—गमकक्रमेण ‘जञ्चेव वंधिसए उद्देसगपरिवाडी’ यैव बन्धि

उद्देशक ३-११-

द्वितीय उद्देशक का निरूपण करके अब सूत्रकार क्रम प्राप्त तृतीय उद्देशक से प्रारम्भ कर ११ ग्यारहवें उद्देशक पर्यन्त के उद्देशकों का निरूपण करते हैं—‘एवं एएण गमएणं जञ्चेव वंधिसए’—इत्यादि

टीकार्थ—उपर्युक्त गमक क्रम से जो बन्धिशतक में—२६ वें शतक में—उद्देशकों—११ उद्देशकों की परिपाटी—प्रणाली—दिखलाई गई है

त्रीण उद्देशानो प्रारंभ—

त्रीण उद्देशानुं निरूपणु करीने डवे सूत्रकार कुमथी आवेल आ त्रीण उद्देशाथी प्रारंभ करीने अगीयारमा उद्देशाओ सुधीना नव उद्देशाओनुं निरूपणु करे छे—‘एवं एएण गमएण जञ्चेव वंधिसए’ इत्यादि

टीकार्थ—उपर छडेवा गमकना प्रमाणे अंधी शतकमा छेटले के—२६ छवीसमां शतकमां अगियार उद्देशाओनी परिपाटी—प्रणाली अताववामां

શતકે ષડ્વિંશતિતમે શતકે ઉદ્દેશકાનામ્ એકાદશસંખ્યકાનાં પરિપાટી-પ્રણા-
લીપદર્જિતા 'સચ્ચેત્ત્વમિદં વિ ભાણિયન્વા' સૈવ પરિપાટી હતાપિ એકોત્તરિંશતમશત-
કસ્ય તૃતીયાદ્યેકાદશાન્તોદ્દેશકેષુ ભણિતવ્યા 'જાવ અચરિમોત્તિ' યાવદ અચરમ
ઈતિ, અચરમઃ સ્વસ્તુ મદન્ત ! નારકઃ કિં સમકં પ્રાસ્થાપયન્ સમકં ન્યસ્થાપયન્
ત્યાદિ સર્વમપિ પ્રકરણં વક્તવ્યમિતિ, યાવત્પદેન પરમ્પરોપપન્ના-અનન્તરાવગાઢ-
પરમ્પરાવગાઢા-અનન્તરાહારક - પરમ્પરાહારકા - અનન્તરપર્યાપ્ત-પરમ્પરપર્યાપ્ત-
ચરમોદ્દેશકપર્યન્તાનામ્બટાનામ્બુદ્દેશકાનાં સંગ્રહોઽન્વ કરણીયઃ 'અણંતરુદ્દેશગાણં
ચત્તરં વિ એકા વક્તવ્યમ્' અનન્તરોદ્દેશકાનામ્-અનન્તરપદવિશિષ્ટાનાં ચતુર્ણામ્-
દ્વિતીય-ચતુર્થ-ષષ્ઠા-હ્રમાનામ્-ઉપપન્ના-અવગાઢા-અહારક-પર્યાપ્તોદ્દેશકાનામ-

વહી પરિપાટી હલ્લ ૨૯ વે શતક કે તૃતીય ઉદ્દેશક સે લેકર ૧૧ વેં ઉદ્દે-
શક પર્યન્ત કે ઉદ્દેશકોં મેં કહનીં ચાહિયે, અચરમ (અન્તિમ) ઉદ્દેશક
ગ્યારહવાં ઉદ્દેશક હૈ સો યહાં તક કે ઉદ્દેશકોં મેં પૂર્વોક્ત પદ્ધતિ કે
અનુસાર સ્વ કથન કરના ચાહિયે, જૈસે ફિ-હે મદન્ત ! જો નૈરયિક
અચરમ હોતે હૈં વે કયા પાપકર્મ કા ભોગના સાથ-સાથ પ્રારમ્ભ કરતે હૈં
ઔર એક સાથ હી કયા ઉસકા વિનાશ કરતે હૈં ? ત્યાદિ રૂપ સે સમસ્ત
પ્રકરણ યહાં કહના ચાહિયે, યાવત્પદ સે યહાં પરમ્પરોપપન્ન, અનન્ત-
રાવગાઢ, પરમ્પરાવગાઢ, અનન્તરાહારક, પરમ્પરાહારક અનન્તરપર્યાપ્ત,
પરમ્પરપર્યાપ્ત ઔર ચરમ હન આઠ ઉદ્દેશકોં કા સંગ્રહ કિયા ગયા હૈં ।
'અણંતરુદ્દેશગાણં ચત્તરં વિ એકા વક્તવ્યમ્' અનન્તર પદ વિશિષ્ટ
ચારોં ઉદ્દેશકોં કી દ્વિતીય ઉદ્દેશક, ચતુર્થ ઉદ્દેશક, ષષ્ઠ ઉદ્દેશક ઔર
આઠવાં ઉદ્દેશક-હજકી-તથા-ઉપપન્ન, અવગાઢ, આહારક એવં પર્યાપ્ત

આવી છે. એજ પ્રણાલી આ ૨૯ યોગણત્રીસમા શતકના ત્રીજા ઉદ્દેશાથી
લઇને અગિયારમા ઉદ્દેશાઓ સુધીના સઘળા ઉદ્દેશાઓમાં કહેવું નેઈએ
અચરમ (છેલ્લા) ઉદ્દેશા અગિયારમા ઉદ્દેશા છે તે તે અગિયારમા ઉદ્દેશા
સુધીના ઉદ્દેશાઓમાં પૂર્વોક્ત પદ્ધતિ પ્રમાણે સઘળું કથન કહેવું નેઈએ
એમ કહે-હે ભગવન્ જે નૈરયિકો અચરમ હોય છે, તેઓ એક સાથે પાપ
કર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ કરે છે ? અને એક સાથે જ તેનો ક્ષય કરે છે ?
વિગેરે પ્રકારથી સમગ્ર પ્રકરણ અહિયાં કહેવું નેઈએ અહિયાં યાવત્પદથી
પરંપરોપપન્નક, અનંતરાવગાઢ, પરંપરાવગાઢ, અનંતરાહારક, પરંપરાહારક,
અનંતરપર્યાપ્ત, પરંપરપર્યાપ્ત અને ચરમ આ આઠ ઉદ્દેશાઓનો સંગ્રહ થયો છે.
'અણંતરુદ્દેશગાણં ચત્તરં વિ એકા વક્તવ્યમ્' અનંતર પદથી શુક્ત ચારે ઉદ્દેશાઓનું
એટલે કે બીજા, ચોથા, છઠ્ઠા અને આઠમા ઉદ્દેશાઓનું તથા ઉપપન્ન, અવ

पि एका समाना वक्तव्यता भणितव्या 'सेसाणं सत्तण्हं एका' शेषाणां सप्तानां समुच्चयोद्देशकपरम्परपदविशिष्टोपपन्नाद्युद्देशकचतुष्टक-चरमाचरमाख्यां प्रथम-तृतीय-पञ्चम-सप्तम-नवम-दशमैकादशानामुद्देशकानामेका वक्तव्यता भणितव्या आलापप्रकारश्च सर्वत्र बन्धिशतकीयोद्देशकवदेव स्वयमेवोद्देशनीय इति ॥सू० १॥

इति श्री-विश्वविख्यातजगद्बलभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि - 'जैनाचार्य'
पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां "श्री भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायां एकोनत्रिंशत्तमे शतके तृतीयादारभ्यैकादशान्तर् उद्देशकाः समाप्ताः।

एकोनत्रिंशत्तमं कर्मप्रस्थानशतकं समाप्तम् ॥२९॥

इन उद्देशकों की वक्तव्यता समान है, तथा-'सेसाणं सत्तण्हं एको'
शेष मातो-प्रथम, तृतीय, पंचम, सप्तम, नवम, दशम और एकादश
इन उद्देशकों की वक्तव्यता एक सी है। यहाँ सब जगह आलापक प्रकार
बन्धि शतकीय उद्देशकों के जैसे अपने आप उत्पन्न करना चाहिये, तृतीय
उद्देशक से लेकर ११ वें तक के ९ उद्देशक का कथन समाप्त ॥सू० १॥

जैनाचार्य जैनधर्मद्विवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके उनतीसवें शतकका
तीसरा उद्देशक से ग्यारहवां पर्यन्त के नव उद्देशक समाप्त ॥२९-३-११॥

२९ वां शतक समाप्त

ગાઠ આહારક અને પર્યાપ્ત આ ઉદ્દેશાઓનું કથન સરખું જ છે, તથા 'સેસાણ
સત્તણ્હં' એકા' ગાંઠીના સાતે એટલે કે-પહેલો, ત્રીજો, પાંચમો સાતમો,
નવમો, દશમો અને અગીયારમો આ સાતે ઉદ્દેશાઓનું કથન એક સરખું
છે. અહિંયાં બધા જ ઉદ્દેશાઓમાં આલાપકનો પ્રકાર બધી શતકમાં કહેલા
ઉદ્દેશાઓ પ્રમાણે સ્વયં સમજી લેવો આ પ્રમાણે આ ત્રીજા ઉદ્દેશાથી લઈને
અગીયારમાં ઉદ્દેશા સુધીનું કથન કહેલ છે ॥સૂ० ૩-૧૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદ્વિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત "ભગવતીસૂત્ર"ની
પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ઓગણત્રીસમા શતકના ત્રીજા ઉદ્દેશા
સુધીના અગીયાર ઉદ્દેશા સુધીના નવ ઉદ્દેશા સમાપ્ત ॥૨૯-૩-૧૧॥

॥ઓગણત્રીસમું શતક સમાપ્ત॥

૧ સમુચ્ચય ઉદ્દેશક પરમ્પરપદયુક્ત ઉપપન્ન આદિ ૪ ઉદ્દેશક,
ચરમ ઓર અચરમ ઉદ્દેશક હસ પ્રકાર જે ૭ સાત ઉદ્દેશક છે।

अथ त्रिशत्तमं शतकमारभते

व्याख्यातमेकोनत्रिशत्तमं शतकम् क्रमप्राप्तं त्रिशत्तमं शतकमारभते, अस्य च पूर्वशतकेनायमभिसम्बन्धः—पूर्वशतके कर्मप्रस्थापनायाश्चित्य जीवा विचारिताः अत्र तु त्रिशत्तमे शतके कर्मबन्धादिकारणस्वरूपवस्तुवादमाश्रित्य जीवा एव विचार्यन्ते, तदनेन सम्बन्धेन आयातरयास्य त्रिशत्तमशतकस्य द्वादशोद्देशकात्मकस्येदं प्रथमोद्देशकादिसूत्रम्—‘कइ णं भंते’ इत्यादि ।

मूलम्—कइ णं भंते ! समोसरणा पन्नत्ता ? गोयमा ! चत्तारि समोसरणा पन्नत्ता, तं जहा किरियावाई^१, अकिरियावाई^२, अन्नाणिय वाई^३, वेणइयवाई^४ । जीवा णं भंते ! किं किरियावाई अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाई ? गोयमा ! जीवा वि रेयावाई वि, अकिरियावाई वि, अन्नाणियवाई वि, वेणइयवाई वि सलेस्सा णं भंते ! जीवा किं किरियावाई पुच्छा, गोयमा ! किरियावाई वि, अकिरियावाई वि, अन्नाणियवाई वि, वेणइयवाई वि^४ । एवं जाव सुक्कलेस्सा । अलेस्साणं भंते ! जीवा पुच्छा, गोयमा ! किरियावाई, नो अकिरियावाई नो अन्नाणियवाई नो वेणइयवाई । कण्हपक्खियाणं भंते ! जीवा किं किरियावाई पुच्छा, गोयमा ! नो किरियावाई अकिरियावाई अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि । सुक्ख-पक्खिया जहा सलेस्सा । सम्मादिट्ठी जहा अलेस्सा । सिच्छा-कण्हपक्खिया । सम्मासिच्छादिट्ठी णं पुच्छा, नो किरियावाई नो अकिरियावाई अन्नाणियवाई वि वाई वि । नाणी जाव केवलनाणी जहा अलेस्सा । अन्ना-वाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया । आहारसन्नोवउत्ता परिगहसन्नोवउत्ता जहा सलेस्सा । नो सन्नोवउत्ता जहा

अलेस्सा । सवेदगा जाव नपुंसगवेदगा जहा सलेस्सा । अवेदगा
जहा अलेस्सा । सकसाई जाव लोभकसाई जहा सलेस्सा ।
अकसाई जहा अलेस्सा । सजोगी जाव कायजोगी जहा सले-
स्सा । अजोगी जहा अलेस्सा । सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता
जहा सलेस्सा । नेरइयाणं भंते ! किं किरियावाई पुच्छा, गोथमा !
किरियावाई वि जाव वेणइयवाई वि । सलेस्सा णं भंते ! नेरइया
किं किरियावाई पुच्छा, एवं चेव । एवं जाव काटलेस्सा, कण्ह-
पक्खिया, किरिया विवज्जिया । एवं एएणं कमेणं जच्चेव जीवाणं
वत्तव्वया सच्चेव नेरइयाणं वत्तव्वया वि जाव अणागारोव-
उत्ता नवरं जं अत्थि तं भाणियव्वं, सेसं न भण्णइ । जहा
नेरइया, एवं जाव थणियकुमारा । पुढवीकाइयाणं भंते ! किं
किरियावाई पुच्छा, गोथमा ! नो किरियावाई अकिरियावाई
वि, अन्नाणियवाई वि, नो वेणइयवाई । एवं पुढविक्काइयाणं जं
अत्थि तत्थ सव्वत्थ वि एथाइं दो सज्झल्लाइं समोसरणाइं
जाव अणागारोवउत्ता वि । एवं जाव चउरिंदियाणं सव्वट्ठाणैसु
एथाइं चेव सज्झल्लागाइं दो समोसरणाइं । सम्मत्तनाणे हि वि
एथाणि चेव सज्झल्लागाइं दो समोसरणाइं । पंचिंदियतिरिक्ख-
जोणिया जहा जीवा नवरं जं अत्थि तं भाणियव्वं । मणुस्सा
जहा जीवा तहेव निरवसेसं । वाणमंतरजोइसिय वेमाणिया
जहा असुरकुमारा ॥सू० १॥

छाया — कति खलु भदन्त ! समयसरणानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! चत्वारि
समयसरणानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—क्रियावादी अक्रियावादी अज्ञानवादी विनयवादी
च । जीवाः खलु भदन्त ! किं क्रियावादिनोऽक्रियावादिनः अज्ञानवादिनः विन-
यिकवादिनः ? गौतम ! जीवाः क्रियावादिनोऽपि अक्रियावादिनोऽपि अज्ञानिक-

वादिनोऽपि वैतथ्यिकवादिनोऽपि । सलेश्याः खलु भदन्त ! जीवाः किं क्रिया-
वादिनः पृच्छा, गौतम । क्रियावादिनोऽपि अक्रियानादिनोऽपि अज्ञानिकवादिनो
ऽपि वैतथ्यिकवादिनोऽपि । एवं यावत् शुक्ललेश्याः । अलेश्याः खलु भदन्त !
जीवाः पृच्छा, गौतम ! क्रियावादिनः, नो अक्रियानादिनः, नो वैतथ्यिकवादिनः ।
कृष्णपाक्षिकाः खलु भदन्त ! जीवाः किं क्रियावादिनः, पृच्छा, गौतम ! नो
क्रियावादिनः, अक्रियावादिनः, अज्ञानिकवादिनोऽपि वैतथ्यिकवादिनोऽपि ।
शुक्लपाक्षिकाः यथा सलेश्याः, सम्यग्दृष्टयो यथा अलेश्याः मिथ्यादृष्टयो
यथा कृष्णपाक्षिकाः । सम्यग्मिथ्यादृष्टयः खलु पृच्छा, गौतम ! नो क्रिया-
वादिनः नो अक्रियावादिनः, अज्ञानिकवादिनोऽपि वैतथ्यिकवादिनोऽपि ।
ज्ञानिनो यावत् केवलज्ञानिनः, यथा अलेश्याः । अज्ञानिनो यावद्
विभङ्गज्ञानिनो यथा कृष्णपाक्षिकाः । आहारसंज्ञोपयुक्ता यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्ता
यथा सलेश्याः । नो संज्ञोपयुक्ता यथा अलेश्याः । सवेदका यावत् नपुंसक-
वेदकाः यथा सलेश्याः । अवेदका यथा अलेश्याः । सकषायिनो यावत् लोभ-
कषायिनो यथा सलेश्याः । अरूपादिनो यथा अलेश्याः सयोगिनो यावत् काय-
योगिनो यथा सलेश्याः । प्रयोगिनो यथा अलेश्याः, साकारोपयुक्ता अनाकारो-
पयुक्ता यथा सलेश्याः । नैरयिकाः खलु भदन्त ! किं क्रियावादिनः ? पृच्छा,
गौतम ! क्रियावादिनो यावत् वैतथ्यिकवादिनोऽपि । सलेश्याः खलु भदन्त ! नैर-
यिकाः किं क्रियावादिन एवमेव । एवं यावत् कापोल्लेश्याः । कृष्णपाक्षिकाः
क्रिया विवर्जिताः । एवमेतेन क्रमेण यैव जीवानां वक्तव्यता सैव नैरयिकाणां
वक्तव्यताऽपि यावदनाकारोपयुक्ताः । नवरं यदस्ति तद्भणितव्यम्, शेषं न
भण्यते । यथा नैरयिकाः, एवं यावत् स्तनितकुमाराः । पृथिवीकायिकाः खलु
भदन्त ! किं क्रियावादिनः पृच्छा, गौतम । नो क्रियावादिनः, अक्रियावादिनो-
ऽपि, अज्ञानिकवादिनोऽपि, नो वैतथ्यिकवादिनः । एवं पृथिवीकायिकानां यदस्ति
तत्र सर्वत्रापि एते द्वे मध्यमे समवसरणे यावत् अनाकारोपयुक्ता अपि । एवं यावत्
चतुरिन्द्रियाणाम्, सर्वस्थानेषु एते एव मध्यमे द्वे समवसरणे । सम्यग्ज्ञानिभिरपि
एते एव मध्यमे द्वे समवसरणे । पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका यथा जीवाः । नवरं यद-
स्ति तद् भणितव्यम् । मनुष्या यथा जीवा स्वयैव निरवशेषम् । वानव्यन्तरज्यो-
तिष्कवैमानिका यथा असुरकुमाराः ॥सू० १॥

टीका—‘कइ णं भंते । समोसरणा पन्नत्ता’ कति खलु भदन्त ! समवसर-
णानि प्रज्ञप्तानि अनेकप्रकारपरिणामवन्तो जीवाः समवसरन्ति कथंचित्

તુલ્યતયા તિષ્ઠન્તિ યેષુ મતેષુ દર્શનેષુ વા તાનિ સમવસરણાનિ મતાનિ દર્શનાનિ વા, તાનિ કતિ પ્રકારકાણિ ભવન્તીતિ સમવસરણવિષયકઃ પ્રશ્નઃ, ભગવાનાહ-

ત્રીસવેં શતક કા પ્રથમ ઉદ્દેશક કા પ્રારંભ

૨૯ વાં શતક વ્યાખ્યાત હો ચુકા, અવ ક્રમપ્રાપ્ત ૩૦ વાં શતક પ્રારંભ હોતા હૈ, હસ શતક કા પૂર્વ શતક કે સાથ એસા સમ્બન્ધ હૈ કિ ઉસ પૂર્વ શતક મેં કર્મપ્રસ્થાપનાદિ કો લેકર જીવોં કા વિચાર કિયા હૈ, પરન્તુ અવ હસ શતક મેં કર્મબન્ધ આદિ કે કારણભૂત વસ્તુવાદ કોં આશ્રિત કરકે ઉન જીવો કા વિચાર હોતા હૈ । હસ સમ્બન્ધ કો લેકર યહ ૩૦ ત્રીસવાં શતક કહા જા રહા હૈ । હસમેં ૧૨ વારહ ઉદ્દેશક હૈ । ‘કહ ણં મંતે । સમોસરણા પળ્લન્તા-ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ-હે ભદ્રન્ત ! સમવસરણ-કિમને પ્રકાર કે કહે ગયે હૈ । ‘અનેક પ્રકારકપરિણામવન્તો જીવા, સમવસરન્તિ કથંચિત્ તુલ્યતયા તિષ્ઠન્તિ યેષુ મતેષુ દર્શનેષુ વા તાનિ સમવસરણાનિ’ હસ વ્યુત્પત્તિ કે અનુસાર સમવસરણ શબ્દ સે યહાં મત યા દર્શન ગૃહીત હુય હૈ । કયોંકી હન મતાદિકોં મેં અનેક પ્રકાર કે પરિણામોવાલે મનુષ્ય પ્રાણી રહા કરતે

ત્રીસમા શતકનો પ્રારંભ--

“ઉદ્દેશે પહેલો”

ઓગણત્રીસમું શતક કહેવાઈ ગયું. હવે કમ પ્રાપ્ત આ ત્રીસમાશતકનો પ્રારંભ થાય છે. પૂર્વ શતકની સાથે આ શતકનો એ પ્રમાણે સંબંધ છે કે--પૂર્વ શતકમાં કર્મપ્રસ્થાપના વિગેરેને લઈને જીવોનો વિચાર કરવામાં આવ્યો છે-પરંતુ હવે આ શતકમાં કર્મ બંધના કારણભૂત વસ્તુવાદનો આશ્રય કરીને તે જીવોનો વિચાર કરવામાં આવશે, આ સંબંધથી આ ૩૦ ત્રીસમું શતક કહેવાઈ ગયું છે. આ શતકમાં બાર ઉદ્દેશાઓ છે.

‘કહ ણં મંતે ! સમોસરણા પન્નન્તા’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ--હે ભગવન્ સમવસરણ-મત કેટલા પ્રકારના કહ્યા છે ? ‘અનેક પ્રકારકપરિણામવન્તો જીવાઃ સમવસરન્તિ કથંચિત્ તુલ્યતયા તિષ્ઠન્તિ યેષુ મતેષુ દર્શનેષુ વા તાનિ સમવસરણાનિ’ આ વ્યુત્પત્તિ અનુસાર સમવસરણ શબ્દથી અહિયાં મત-અથવા દર્શન ગ્રહણ કરાયેલ છે. કેમ કે આ મત વિગેરેમાં અનેક પ્રકારના પરિણામવાળા મનુષ્ય પ્રાણી રહ્યા છે. આ રીતે ગૌતમસ્વામીએ

‘ગોયમા’ इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘चत्वारि समोसरणा पणत्ता’ चत्वारि-चतुष्प्रकारकाणि समवसरणानि प्रज्ञप्तानि-कथितानि-इति । ‘तं जहा’ तद्यथा-‘किरियावाई’ क्रियावादिनः-क्रियाचारित्रपरिपालनात्मककार्यरूपा, सा च कर्तार-मन्तरेण अनुपपद्यमाना कर्तारमाक्षिपन्ती आत्मसमवायिनीति वदन्ति एवं शीला वा ये ते क्रियावादिनः । अथवा क्रियैव प्रधानं न ज्ञानम्, नहि गुडमाधुर्यज्ञान-वान् अनुभवति रसनया गुडास्वादम् अतो न ज्ञानं प्रधानम् अपि तु क्रियैव सर्वत्र प्रधाना एतादृश क्रियावादनशीलाः क्रियावादिनः । अथवा क्रिया-जीवादिपदार्थोऽस्तीत्यादिकां वदितुं शीलं येषां ते क्रियावादिनः, ते चात्मास्तित्व प्रतिपत्ति-

है । इस प्रकार से गौतमने यह प्रश्न समवरण के सम्बन्ध में किया है । इसके उत्तर में प्रभुश्री उनसे कहते हैं-‘गोयमा ! चत्वारि समोसरणा पणत्ता’ हे गौतम ! समवसरण चार प्रकार के बहे गये हैं । ‘तं जहा’-जैसे कि-‘किरियावाई’ क्रियावादि चरित्रको पालन करने रूप जो प्रकृति है उसका नाम क्रिया है । यह क्रिया कर्ता के बिना होती नहीं है । इस-लिये कर्ता रूप आत्माकी सिद्धि इससे होती है । इस प्रकार आत्मा के अस्तित्व को माननेवाले जो हैं वे सब क्रियावादी हैं । अथवा-क्रिया ही प्रधान है, ज्ञान नहीं । कहीं गुड की केवल मधुरता का ज्ञानवाला व्यक्ति मात्र जिह्वा से गुडके आस्वाद को थोड़े ही जानता है, गुड के आस्वाद को जानने के लिये उसके खाने रूप क्रिया की आवश्यकता होती है । अतः क्रिया ही सर्वत्र प्रधान है ज्ञान नहीं । इस प्रकार से जो क्रिया की प्रधानता माननेवाले हैं वे क्रियावादी हैं । अथवा-जीवादि पदार्थों की अस्तित्व रूप क्रिया को माननेवाले जो हैं वे क्रियावादी हैं ।

સમવસરણના સંબંધમાં પ્રશ્ન કરેલ છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે-‘ગોયમા ! ચત્તારિ સમોસરણા પણત્તા’ હે ગૌતમ ! સમવસરણ ચાર પ્રકારના કહેલ છે. ‘ત જહા’ તે આ પ્રમાણે છે,--‘કિરિયા વાઈ’ ક્રિયાવાદી, ચારિત્રને પાલન કરવા રૂપ જે પ્રકૃતિ છે, તેનું નામ ક્રિયા છે. આ ક્રિયા કર્તા શિવાય થતી નથી, કોઈ ગોળના કેવળ મધુરપણના જ્ઞાન વાળો પુરૂષ જીવથી ગોળની મીઠાશનો સ્વાદ થોડો જ જાણે છે ? ગોળના સ્વાદો જાણવા માટે તેને ખાવારૂપ ક્રિયાની જરૂરત હોય છે જ તેથી ક્રિયા જ સર્વત્ર મુખ્ય છે, જ્ઞાન નહીં. આ રીતે જેઓ ક્રિયાને જ મુખ્ય માનનારા છે. તેઓ ક્રિયાવાદી કહેવાય છે. અથવા-જીવ વિગેરેના અસ્તિત્વ-વિધમાનપણની ક્રિયાને જેઓ માનનારા છે, તેઓ ક્રિયાવાદી કહેવાય છે.

લક્ષણા અશીત્યધિક્ક્રમતસંખ્યકાઃ સૂત્રકૃતાઙ્ગાદિતો જ્ઞાતવ્યાઃ તતથ્ચ ક્રિયાવાદિ-
સમ્બન્ધાત્ સમવસરણમપિ ક્રિયાવાદિ, સમવસરણ સમવસરણવતાસભેદોપચારાત્
ક્રિયાવાદિન ઇવ સમવસરણમિતિ, 'અક્રિયાવાદી' અક્રિયાવાદિનઃ ન ક્રિયા
અક્રિયા, તાં ક્રિયાયા અભાવં, ન હિ અનવસ્થિતમ્ય પરઘનિદપિ એદાર્થસ્ય ક્રિયા
ભવતિ, ક્રિયા સત્વે ચાનવસ્થિતેરેવ અભાવાદિત્યેવં વદન્તિ યે તે અક્રિયાવાદિનઃ,
તથા ચોક્તમ્— 'ક્ષણિકાઃ સર્વસંસ્કારાઃ, અસ્થિતાનાં કુતઃ ક્રિયા ।

યૂતિ ર્યેપાં ક્રિયા સૈવ, કારકં સૈવ ચોચ્યતે ॥૧॥ ઇતિ ।

અન્યે તુ અક્રિયાં 'જીવાદિપદાર્થઃ સાર્થો નાસ્તી' ત્યાદિકાં વદિતું શીલં વિદ્યતે યેપાં
તેઽક્રિયાવાદિનઃ, તે ચાત્માદિપદાર્થનાસ્તિત્ય પ્રતિપત્તિલક્ષણા ચતુરશીતિ વિકલ્પાઃ

યે સઘ ક્રિયાવાદી આત્મા કે અસ્તિત્વ કો માનનેવાળે હૈં । હનકી
સંખ્યા ૧૮૦ હૈં । હનકા સ્વરૂપ સૂત્રકૃતાઙ્ગ આદિ સે જાના જા સક્તતા હૈં ।
ક્રિયાવાદી કે સમ્બન્ધ સે સમવસરણ મી ક્રિયાવાદી કહા ગયા હૈં ।
વયોં કી સમવસરણ ઔર સમવસરણવાલોં મેં અભેદ કા યહાં ઉપચાર
ક્રિયા ગયા હૈં । અક્રિયાવાદી અનવસ્થિત કિસી મી પદાર્થ મેં ક્રિયા
નહીં હોતી હૈં । યદિ વહાં ક્રિયા કા સત્ત્વ માના જાય તો પદાર્થ મેં
અવસ્થિતિ નહીં માની જા સકતી હૈં વયોં કિ હસ સ્થિતિ મેં વહાં અન-
વસ્થિતિ કા અભાવ હો જાતા હૈં । હસ પ્રકાર સે જો કહતે હૈં વે અક્રિ-
યાવાદી હૈં—તથા કહા મી હૈં—'ક્ષણિકાઃ સર્વસંસ્કારા' ઇત્યાદિ ।

દૂસરે એસા કહતે હૈં—'જીવાદિક પદાર્થ નહીં હૈં' ઇત્યાદિ રૂપ ક્રિયા
કો જો માનતે હૈં વે અક્રિયાવાદી હૈં । યે અક્રિયાવાદી આત્માદિ પદાર્થ

આ સઘજા ક્રિયાવાદીઓ આત્માના અસ્તિત્વને માનનારા છે આ ક્રિયાવાદીઓની
સંખ્યા ૧૮૦ એકસોએસીની છે આ ક્રિયાવાદીઓનું લક્ષણ સૂત્રકૃતાઙ્ગ વિગરે
શાસ્ત્રોમાંથી સમજી લેવું. ક્રિયાવાદીના સળધથી સમવસરણ પણ ક્રિયાવાદી
કહેવામાં આવેલ છે. કેમ કે—સમવસરણ અને સમવસરણવાળાઓમાં અહિયાં
અભેદપણાનો ઉપયોગ કરવામાં આવેલ છે. આ ક્રિયાવાદી—અનવસ્થિત કોઈ-
પણ પદાર્થમાં ક્રિયા થતી નથી જો તેમાં ક્રિયાનું અસ્તિત્વપણું માનવામાં
આવે તો પદાર્થમાં અવસ્થિતિ માની શકાય નહીં કેમ કે—એ સ્થિતિમાં ત્યાં
અનવસ્થિતિનો અભાવ થઈ જાય છે. આ રીતે જોયો મહે છે, તેઓ આ
ક્રિયાવાદી છે તથા કહ્યું પણ છે—'ક્ષણિકા સર્વસંસ્કારા' ઇત્યાદિ

બીજાએ એવું કહ્યું છે કે—“જીવ વિગરે કોઈ પદાર્થ નથી” ઇત્યાદિ
પ્રકારથી જોયો ક્રિયાને માને છે. તેઓ અક્રિયાવાદી છે. આ અક્રિયાવાદીઓ

સ્થાનાન્તરાદ્ જ્ઞાતવ્યાં ઇતિ । અથવા અક્રિયાવાદિ બૌદ્ધા યે ઇત્યં કથયન્તિ ક્રિયાયા નાન્યસ્ફલં કેવલં ચિત્તશુદ્ધિરેવ ફલમિતિ તે બૌદ્ધા અક્રિયાવાદિન ઇતિ । ‘અન્નાણિયવાઈ’ અજ્ઞાનિકવાદિનઃ કુત્સિતં જ્ઞાનમજ્ઞાનમ્, તદ્ વિષ્યતે યેષાં તે અજ્ઞાનિકા ઇત્યંભૂતશ્ચ તે વાદિન ઇતિ અજ્ઞાનિકવાદિનઃ, તે ઇત્યં પ્રતિપાદયન્તિ—અજ્ઞાનમેવ શ્રેયસ્કરમ્, જ્ઞાનાદિ તીવ્રં કર્મ વધ્યતે તથા અજ્ઞાનપૂર્વકં કૃતં કર્મ ન વન્ધાય ભવતિ, તથા કસ્યાપિ પુરુષસ્ય ક્વચિદપિ વસ્તુનિ સમ્પૂર્ણરૂપેણ જ્ઞાનં ન ભવતિ પ્રમાણાનાં સમ્પૂર્ણવસ્તુ વિષયત્વાત્, ઇત્યેવમભ્યુપગમવન્તોઽજ્ઞાનિકવાદિનઃ સપ્તષ્ટિશ્ચક્રાઃ સ્થાનાન્તરાદવસેયા ઇતિ । ‘વેળિયવાઈ’ વૈનયિકવાદિનઃ વિનયેન

કે નાસ્તિત્વ કો માનતે હૈં । इनके चोराखी भेद हॆं । ये भेद ग्रन्थान्तर से जाने जा सकते हॆं । अथवा—अक्रियावादी बौद्ध हॆं—इनका ऐसा कहना है कि क्रिया का और कोई फल नहीं है केवल चित्त की शुद्धि ही क्रिया का फल है । ‘अन्नाणियवाई’ अज्ञानिकवादी—कुत्सित ज्ञान का नाम अज्ञान है, इस अज्ञानवाले जो है वे अज्ञानवादी हॆं—इनका ऐसा कहना है कि अज्ञान ही श्रेयस्कर है क्योंकि ज्ञान से तीव्र कर्म का बन्ध होता है । तथा—अज्ञानपूर्वक क्रिया गया कर्म बन्ध के लिये नहीं होता है । तथा—किसी भी पुरुष को किसी भी वस्तु का सम्पूर्ण रूप से ज्ञान नहीं होता है । प्रमाण ही सम्पूर्ण वस्तु को विषय करनेवाला होता है । इस प्रकार की मान्यतावाले जन अज्ञानवादी है । इनकी संख्या ६७ सदस्य की है । इनका स्वरूप नन्दीसूत्र की ज्ञानचन्द्रिका टीका से समझना चाहिये ।

આત્મા વિગેરે પદાર્થના અવિદ્યમાનપણાને માને છે. તેઓના ૮૪ ચોર્થાંશી ભેદો છે આ ભેદો અન્ય શાસ્ત્રોમાંથી સમજી લેવા

અથવા—અક્રિયાવાદી બૌદ્ધો છે—તેઓનું કહેવું એવું છે કે—ક્રિયાનું ખીણું કાંઈ જ ફળ નથી કેવળ ચિત્તની શુદ્ધી જ ક્રિયાનું ફળ છે ‘અન્નાણિયવાઈ’ અજ્ઞાનિકવાદી. કુત્સિત જ્ઞાનનું નામ અજ્ઞાન છે, આ અજ્ઞાન વાળા જેઓ હોય છે તેઓ અજ્ઞાનવાદી કહેવાય છે, તેઓનું કહેવું એવું છે કે—અજ્ઞાન જ કલ્યાણકારી છે. કેમકે જ્ઞાનથી તીવ્ર કર્મનો બંધ થાય છે. તથા અજ્ઞાન પૂર્વક કરવામાં આવેલ કર્મ બંધન કરનાર હોતું નથી તથા કોઈપણ પુરૂષને કોઈપણ વસ્તુનું સંપૂર્ણ જ્ઞાન હોતું નથી. પ્રમાણ જ સમગ્ર વસ્તુનો વિષય કરવાનું હોય છે, આ પ્રમાણેની માન્યતાવાળા મનુષ્યો અજ્ઞાન વાદી કહેવાય છે. તેઓની સંખ્યા ૬૭ સડસઠની છે, તેઓનું સ્વરૂપ નન્દી-સૂત્રની જ્ઞાનચન્દ્રિકા ટીકામાંથી સમજી લેવું.

ચરન્તિ, અથવા વિનય એ પ્રયોજનં એવાં તે વૈનયિકાઃ વૈનયિકાશ્ચ તે વાદિન
 इति वैनयिकवादिनः, विनयएव वा वैनयिकं, तदेव ये स्वर्गादि हेतुतया वदन्ति
 इत्येवं शीलाश्च ते वैनयिकवादिनः, ते च स्वर्गादिसाधनं विनयमेव वदन्ति विनय-
 स्यैव प्राधान्येन स्वीकुर्वाणाः अनवधृतलिङ्गाचारशास्त्रः, विनयप्रतिपत्तिलक्षणाः
 द्वात्रिंशत्प्रकारकाः स्थानान्तरात् सूत्रकृताङ्गादिभिरात् अवगन्तव्या इति ।

અજ્ઞાર્થે મરતિ ગાથા—‘અત્થિ ત્તિ કિરિયવાઈ, વયંતિ નત્થિ ત્તિઽકિરિયવાઈઓ ।

અજ્ઞાણિ ય અન્નાણં, વેણહયા વિણયં વાયંતિ’ ॥૧॥

છાયા--અસ્તીતિ ક્રિયાવાદિનો વદન્તિ, નાસ્તીત્ય ક્રિયાવાદિનઃ ।

અજ્ઞાનિકા અજ્ઞાનં, વૈનયિકા વિનયવાદમિતિ ॥૧॥

एते सर्वेऽपि यद्यप्यन्यत्र मिथ्यादृष्टयः कथिताः तथाप्यत्र क्रियावादिनः सम्यग्दृ-
 ष्टयो ग्राह्याः, क्रियावादिनो हि जीवादीनामस्तित्व स्वीकारेण सम्यग्दृष्टय एव
 स्वीकर्त्तव्या इति । ‘जीवा णं भवे ! किं किरियावाई, अकिरियावाई, अन्नाणिय-
 वाई, वेणइयवाई’ जीवाः खलु भदन्त । किं क्रियावादिनोऽक्रियावादिनोऽज्ञानि-

‘વેણઈયવાઈ’ વૈનયિકવાદી-હનકા મન્તવ્ય એસા હૈ કિ વિનય હી સ્વર્ગ
 મોક્ષ આદિકા હેતુ હૈ । એ વિનય કો હી પ્રધાન રુપ સે માનતે હૈ । હનકા
 કોઈ નિશ્ચિત આચાર, લિંગ યા શાસ્ત્ર નહીં હોતા હૈ । સિર્ફ યે તો વિનય
 કોની અવસ્થા માનતે હૈ । યે ૩૨ બત્તીસ પ્રકાર કે હોતે હૈ । હનકા સ્વરુપ
 નન્દીસૂત્રની જ્ઞાનચન્દ્રિકા ટીકા સે જાના જા સકતા હૈ । હસ વિષય
 કી ગાથા એસી હૈ—‘અત્થિ ત્તિ કિરિયવાઈ’ હત્યાદિ યે સ્વચ્છ ક્રિયાવાદી
 અક્રિયાવાદી આદિ જગ ચદ્યપિ અન્યત્ર મિથ્યાદૃષ્ટિ કહે ગયે હૈ પરન્તુ
 ફિર સી વહાં પર ક્રિયાવાદી જીવાદિ કે અસ્તિત્વ કો સમ્યક્ પ્રકાર સે
 માનનેવાલા હોને કે કારણ સમ્યગ્દૃષ્ટિ રુપ સે ગૃહીત ક્રિયા ગયા હૈ ।
 ‘જીવા ણં મતે ! કિં કિરિયાવાદી અકિરિયાવાદી અન્નાણિયવાદી

‘વેણહયવાઈ’ વૈનયિકવાદી-તેઓની માન્યતા એવી છે કે-વિનય જ
 સ્વર્ગ મોક્ષ વિગેરેનું કારણ છે. તેઓ વિનયને જ પ્રધાન માને છે. તેઓનો
 કોઈ નિશ્ચિત આચારલિંગ અથવા શાસ્ત્ર હોતું નથી કેવળ તેઓ વિનયને જ
 શ્રેયસ્કર-કલ્યાણકારક માને છે, તેઓ ૩૨ બત્તીસ પ્રકારના હોય છે.
 તેઓનું સ્વરૂપ-પ્રકાર નન્દીસૂત્રની જ્ઞાનચન્દ્રિકા ટીકામાં આપવામાં આવેલ
 છે. ત્યાંથી સમજી લેવું

‘અત્થિત્તિ કિરિયાવાઈ’ ઇત્યાદિ આ સઘળા ક્રિયાવાદીયો, અક્રિયાવાદીયો
 વિગેરેને જો કે અન્ય સ્થળે સિથ્યાદૃષ્ટિ કહેવામાં આવી છે, પરંતુ અહિંયાં ક્રિયાવાદી
 જીવ વિગેરેના અસ્તિત્વને માનવાવાળા હોવાથી સમ્યગ્દૃષ્ટિ પણાથી વર્ણવેલ છે.

‘જીવા ણં મતે ! કિરિયાવાદી અકિરિયાવાઈ અન્નાણિયવાદી, વેણહયવાદી

કવાદિનો વૈનયિકવાદિનો ચેતિ સમુચ્ચતો જીવમધિકૃત્ય પ્રશ્નઃ, મજવાનાહ-
'ગોયમા' इत्यादि । 'गोयमा' हे गौतम ! 'जीवा किरियावाई वि' जीवाः सामा-
न्यतः क्रियावादिनोऽपि भवन्ति तथा—'अकिरियावाई वि' अक्रियावादिनोऽपि
भवन्ति तथा—'अज्ञाणियवाई वि' अज्ञानिकवादिनोऽपि भवन्ति तथा—'वेणइय-
वाई वि' वैनयिकवादिनोऽपि भवन्तीत्युत्तरम् । सामान्यतो जीवाश्चतुर्विधा अपि
भवन्ति तादृश स्वभावतश्चादिति । जीवविशेषमधिकृत्य प्रश्नयन्नाह—'सलेस्सा णं'
इत्यादि । 'सलेस्सा णं भंते ! जीवा किं किरियावाई पुच्छा' सलेश्याः—कृष्णनीला-
द्यन्यतमलेश्यावन्तो जीवा किं क्रियावादिनो भवन्ति अथवा अक्रियावादिनो भवन्ति
अथवा अज्ञानिकवादिनो भवन्ति, अथवा वैनयिकवादिनो भवन्तीति प्रश्नः पृच्छया

वेणइयवादी' हे भदन्त ! जीव क्या क्रियावादी हैं ? या अक्रियावादी
है ? या अज्ञानवादी है ? या विनयवादी है ? ऐसा यह प्रश्न सामान्य
जीव को लेकर किया गया है, इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—'गोयमा !
जीवा किरियावाई वि' हे गौतम ! जीव सामान्यतः क्रियावादी भी
होते हैं । तथा 'अकिरियावाई वि' अक्रियावादी भी होते हैं 'अज्ञाणि-
यवाई वि' अज्ञानवादी भी होते हैं । 'वेणइयवाई वि' और वैनयिक-
वादी भी होते हैं । तात्पर्य कहने का यही है कि सामान्य से जीव चारों
प्रकार के भी होते हैं । क्योंकि जीव का स्वभाव ही कुछ ऐसा होता
है । जीव विशेष को लेकर प्रश्न—'सलेस्साणं भंते ! जीवा किं किरिया-
वाई पुच्छा' हे भदन्त ! कृष्ण, नील आदि लेश्याओं में से कोई
एक लेश्या वाले जीव क्या क्रियावादी होते हैं ? या अक्रियावादी
होते हैं ? या अज्ञानवादी होते हैं ? या वैनयिकवादी होते हैं ? उत्तर

હે ભગવન્ જીવ શું ક્રિયાવાદી છે ? અથવા અક્રિયાવાદી છે ? અથવા અજ્ઞાન-
વાદી છે ? અથવા વિનયવાદી છે ? આ પ્રમાણેના પ્રશ્ન સામાન્ય જીવનો આશ્રય
કરીને પૂછવામાં આવેલ છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે
છે કે—'ગોયમા ! જીવા કિરિયાવાડત્તિ' હે ગૌતમ ! જીવો સામાન્યતઃ ક્રિયાવાદી
પણ હોય છે. 'અકિરિયાવાઈ વિ' અક્રિયાવાદી પણ હોય છે. તથા—'અજ્ઞાણિયવાઈ વિ'
અજ્ઞાન વાદી પણ હોય છે. 'વેણઇયવાઈવિ' અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે.
કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે—સામાન્યથી જીવો ચારે પ્રકારના પણ હોય છે.
કેમ કે જીવનો સ્વભાવ જ કંઈક એવો હોય છે. હવે જીવ વિશેષના સંબં-
ધમાં ગૌતમસ્વામી પ્રભુશ્રીને પૂછે છે—'સલેસ્સાણં મંતે ! જીવા કિં કિરિયાવાઈ
પુચ્છા' હે ભગવન્ કૃષ્ણનીલ વિગેરે લેશ્યાઓ પૈકી કોઈ એક લેશ્યાવાળો
જીવ શું ક્રિયાવાદી હોય છે ? અથવા અક્રિયાવાદી હોય છે ? અથવા અજ્ઞાન

સંગૃહ્યતે, મગવાનાદ-‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ, ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘કિરિયાવાઈ વિ’ ક્રિયાવાદિનોડપિ ભવન્તિ સલેશ્ય જીવાઃ, તથા ‘અકિરિયાવાઈ વિ’ અક્રિયાવાદિનોડપિ ભવન્તિ, તથા-‘અન્નાણિયવાઈ વિ’ અજ્ઞાનિકવાદિનોડપિ ભવન્તિ તથા ‘વેણહ્યવાઈ વિ’ વૈનયિકવાદિનોડપિ ભવન્તિ સલેશ્યજીવાનાં તથા તથા સ્વમાવત્વાદિતિ । ‘એવ જાવ સુકલેસ્સા’ એવમ્-સલેશ્યજીવવદેવ યાવત્ કૃષ્ણલેશ્યજીવાદારમ્મ પદ્મલેશ્યજીવપર્યન્તાઃ સર્વેડપિ જીવાઃ ચતુર્વિધા અપિ ભવન્તિ તથાસ્વમાવત્વાદિતિમાવઃ । ‘અલેસ્સા ણં મંતે ! જીવા પુચ્છા’ અલેશ્યાઃ-લેશ્યારહિતા જીવાઃ સ્વલુ ભદન્ત ! ક્રિયાવાદિનોડક્રિયાવાદિનોડજ્ઞાનિકવાદિનો વૈનયિકવાદિનો ભવન્તીતિ પ્રશ્નઃ પૃચ્છયા સંગૃહ્યતે મગવાનાદ-‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ, ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘કિરિયાવાઈ’ ક્રિયાવાદિનોડલેશ્યા જીવા ભવન્તિ અલેશ્યાઃ પ્રયોગિનઃ સિદ્ધાથ્થ ભવન્તિ તેચાયોગિનઃ સિદ્ધાથ્થ ક્રિયાવાદિન એવ

મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં-‘ગોયમા ! કિરિયાવાઈ વિ, અકિરિયાવાઈ વિ અન્ના-ણિયવાઈ વિ, વેણહ્યવાઈ વિ’ હે ગૌતમ સલેશ્ય જીવ ક્રિયાવાદી મી હોતે હૈં, અક્રિયાવાદી મી હોતે હૈં, અજ્ઞાનવાદી મી હોતે હૈં ઓર વૈનયિકવાદી મી હોતે હૈં । ‘એવ જાવ સુકલેસ્સા’ સલેશ્ય જીવ કે જૈસે હી યાવત્ કૃષ્ણલેશ્ય જીવ સે લેકર શુક્લલેશ્ય જીવ તક સમસ્ત જીવ ચારો પ્રકાર કે મી હોતે હૈં । કયોકિ હન જીવો કા સ્વમાવ હી એસા હોતા હે । ‘અલેસ્સા ણં મંતે ! જીવા પુચ્છા’ હે ભદન્ત ! જો જીવ લેશ્યારહિત હે વે કયા ક્રિયાવાદી હોતે હૈં ? યા અક્રિયાવાદી હોતે હૈં ? યા અજ્ઞાનવાદી હોતે હૈં ? યા વૈનયિકવાદી હોતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં-‘ગોયમા ! કિરિયાવાઈ’ હે ગૌતમ ! અલેશ્ય જીવ ક્રિયાવાદી

વાદી હોય છે ? અથવા વૈનયિકવાદી હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-‘ગોયમા ! કિરિયાવાઈ વિ અકિરિયા વાઈવિ અન્ના-ણિયવાઈ વિ. વેણહ્યવાઈ વિ’ હે ગૌતમ ! લેશ્યાવાળા જીવો ક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે, અને વૈન-યિકવાદી પણ હોય છે. ‘એવ જાવ સુકલેસ્સા’ લેશ્યવાળા જીવના કથન પ્રમાણે જ યાવત્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા જીવથી લઈને શુક્લ લેશ્યાવાળા જીવ સુધીના સઘળા જીવો ચારે પ્રકારના પણ હોય છે કેમ કે આ જીવોનો સ્વભાવ જ એવો હોય છે ‘અલેસ્સા ણં મંતે ! જીવા પુચ્છા’ હે ભગવન્ જે જીવો લેશ્યા વિનાના હોય છે, તેઓ શું ક્રિયાવાદી હોય છે ? અથવા અક્રિયાવાદી હોય છે ? અથવા અજ્ઞાનવાદી હોય છે ? અથવા વૈનયિકવાદી હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રીને કહે છે કે-‘ગોયમા ! કિરિયાવાઈ’ હે ગૌતમ ! લેશ્યા

ક્રિયાવાદકારણીભૂત યથાવસ્થિતદ્રવ્યપર્યાયાત્મકાર્થપરિચ્છેદયુક્તત્વાત્ । અત્ર ચ્છેદ-
યાનિ સમ્યગ્દૃષ્ટિયોગ્યસ્થાનાનિ અલેશ્યત્વસમ્યગ્દર્શનજ્ઞાનિનો અસંજોપયુક્ત-
ત્વાવેદકત્વાદીનિ તાનિ સર્વાણ્યપિ ક્રિયાવાદે એવ નિશ્ચિન્નન્તે । યાનિ ચ્છેદ-
મિથ્યાદૃષ્ટિસ્થાનાનિ મિથ્યાત્વાજ્ઞાનાદીનિ તાનિ શેષ સમવસરણત્રયે નિશ્ચિન્નન્તે
'નો અકિરિયાવાઈ' અલેશ્યા જીવા અક્રિયાવાદિનો નો ભવન્તિ દ્રવ્યપર્યાયાત્મક
વસ્તુ પરિચ્છેદયુક્તત્વાદિતિ । 'નો અન્નાણિયવાઈ' નો ન વા અજ્ઞાનિકવાદિનઃ પૂર્વો-
ક્તયુક્તેરેવ । 'નો વેળહ્યવાઈ' નો ન વા વૈનયિકવાદિનો ભવન્તિ અલેશ્યા જીવા
હિતિ ! 'કળ્હપક્લિયાણં મંતે ! જીવા કિં કિરિયાવાઈ પુચ્છા' કૃષ્ણપાક્ષિકાઃ ચ્છેદ

હોતે હૈં । અયોગી ઓર સિદ્ધ યે અલેશ્ય જીવ હૈં । યે ક્રિયાવાદી હી હોતે
હૈં । કયો કી હન મેં ક્રિયાવાદ કે કારણીભૂત યથાવસ્થિત દ્રવ્ય પર્યા-
યાત્મક પદાર્થ કે પરિચ્છેદ સે યુક્તતા હૈં । યહાં સમ્યગ્દૃષ્ટિ કે યોગ્ય
અલેશ્યત્વ, સમ્યગ્દર્શન, જ્ઞાની, નો સંજોપયુક્ત ઓર અવેદકત્વ આદિ
સ્થાન હૈં—સો હન સવકા ક્રિયાવાદ મેં હી સમાવેશ હુઆ હૈં તથા—જો
મિથ્યાદૃષ્ટિ કે યોગ્ય મિથ્યાત્વ, અજ્ઞાન આદિ સ્થાન હૈં સો હનકા શેષ
સમવસરણ ત્રય મેં સમાવેશ હુઆ હૈં । 'નો અકિરિયાવાઈ' અલેશ્ય
જીવ અક્રિયાવાદી નહીં હોતે હૈં । કયોંકિ યે દ્રવ્ય પર્યાયાત્મક વસ્તુ કે
જ્ઞાન સે યુક્ત હોતે હૈં । 'નો અન્નાણિયવાઈ' હસી પ્રકાર વે અજ્ઞાનિક
વાદી બી નહીં હોતે હૈં । 'નો વેળહ્યવાઈ' વૈનયિકવાદી બી નહીં હોતે
હૈં । કયોં કી યે દ્રવ્યપર્યાયાત્મક વસ્તુકે જ્ઞાનવાલે હોતે હૈં । 'કળ્હપ
ક્લિયાણં મંતે ! જીવા કિરિયાવાઈ પુચ્છા' હે ભદન્ત ! જો કૃષ્ણપાક્ષિક

વિનાના ભવે ક્રિયાવાદી હોય છે. અયોગી અને સિદ્ધ એ અલેશ્ય ભવ છે.
એ ક્રિયાવાદી જ હોય છે કેમ કે તેઓ ક્રિયાવાદના કારણભૂત યથા
વસ્થિતદ્રવ્ય પર્યાયાર્થિક પદાર્થના પરિચ્છેદથી યુક્ત હોય છે અહિંયાં સમ્યગ્
દૃષ્ટિને યોગ્ય અલેશ્યપણામાં, સમ્યગ્દર્શનજ્ઞાની નો સંજોપયુક્ત અને અવેદકપણ
વિગેરે સ્થાનો છે તે સમજાવના ક્રિયાવાદમાં જ સમાવેશ થાય છે. તથા જે
મિથ્યાદૃષ્ટિને યોગ્ય મિથ્યાત્વ, અજ્ઞાન. વિગેરે સ્થાનો છે, તેના સમાવેશ
સમવસરણત્રયમાં થયેલ છે

'નો અકિરિયાવાઈ' લેશ્યાવિનાના ભવે અક્રિયાવાદી હોતા નથી.
કેમ કે તેઓ દ્રવ્ય પર્યાયાત્મક વસ્તુના જ્ઞાનથી યુક્ત હોય છે 'નો અન્નાણિયવાઈ'
એ જ પ્રમાણે અજ્ઞાનવાદી પણ હોતા નથી. 'નો વેળહ્યવાઈ' વૈનયિકવાદી પણ એ
પ્રમાણેના હોતા નથી. કેમ કે તેઓ દ્રવ્ય પર્યાયાત્મક વસ્તુમાં જ્ઞાનવાળા હોય છે

'કળ્હપક્લિયા ણ મંતે ! જીવા કિં કિરિયાવાઈ પુચ્છા' હે ભગવન્ જે
કૃષ્ણપાક્ષિક ભવે છે, તેઓ શું ક્રિયાવાદી હોય છે ? અક્રિયાવાદી હોય છે ?

મદન્ત ! જીવા કિં ક્રિયાવાદિનો મવન્તિ અક્રિયાવાદિનો વા મવન્તિ અજ્ઞાનિકવા-
દિનો વા મવન્તિ વૈનયિકવાદિનો વા મવન્તીતિ પ્રશ્નઃ પૃચ્છયા સંગૃહ્યતે ! મગવા-
નાહ—‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ, ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘નો કિરિયાવાઈ’ નો ક્રિયાવાદિનઃ
કૃષ્ણપાક્ષિકા મવન્તિ યથાવસ્થિતદ્રવ્યપર્યાયાત્મકવસ્તુપરિચ્છેદરહિતત્વાત્ ।
‘અકિરિયાવાઈ વિ અન્નાણિયવાઈ વિ વેણહયવાઈ વિ’ અક્રિયાવાદિનોઽપિ
મવન્તિ અજ્ઞાનિકવાદિનોઽપિ મવન્તિ તથા વૈનયિકવાદિનોઽપિ મવન્તીતિ ।
‘સુક્કપક્ષિયા જહા સલેસ્સા’ શુક્લપાક્ષિકાઃ જીવાઃ સલેશ્યજીવવદેવ ક્રિયા-
વાદિનોઽપિ અક્રિયાવાદિનોઽપિ અજ્ઞાનિકવાદિનોઽપિ વૈનયિકવાદિનોઽપિ
મવન્તીતિ ભાવઃ ‘સમ્માદિટ્ઠી જહા અલેસ્સા’ સમ્યગ્દૃષ્ટયો તથા—અલેશ્યાઃ તથૈવ
ક્રિયાવાદિનો મવન્તિ યથાવસ્થિતદ્રવ્યપર્યાયાત્મકવસ્તુપરિચ્છેદયુક્તત્વાત્ ન તુ
અક્રિયાવાદિનો મવન્તિ ન વા અજ્ઞાનિકવાદિનો, ન વા વૈનયિકવાદિનો મવન્તીતિ

જીવ હૈં વે કયા ક્રિયાવાદી હોતે હૈં ? યા અક્રિયાવાદી હોતે હૈં ? યા
અજ્ઞાનવાદી હોતે હૈં ? યા વૈનયિકવાદી હોતે હૈં ? હસકે ઉત્તર મેં પ્રમુશ્રી
કહતે હૈં—‘ગોયમા ! નો કિરિયાવાઈ’ હે ગૌતમ કૃષ્ણપાક્ષિક જીવ
ક્રિયાવાદી નહીં હોતે હૈં, કયોં કિ યે યથાવસ્થિત દ્રવ્યપર્યાયાત્મક
વસ્તુ કે વેદન સે રહિત હોતે હૈં । હસલિયે યે ‘અકિરિયાવાઈ વિ અન્ના-
ણિયવાઈ વિ વેણહયવાઈ વિ’ યે અક્રિયાવાદી મી હોતે હૈં, અજ્ઞાનવાદી
મી હૈં ઓર વૈનયિકવાદી મી હોતે હૈં, ‘સુક્કપક્ષિયા જહા સલેસ્સા’
શુક્લપાક્ષિક જીવ સલેશ્ય જીવ કે જૈસે ક્રિયાવાદિ મી હોતે હૈં,
અક્રિયાવાદી મી હોતે હૈં, અજ્ઞાનવાદી મી હોતે હૈં ઓર વૈનયિકવાદી
મી હોતે હૈં ! ‘સમ્માદિટ્ઠી જહા અલેસ્સા’ સમ્યગ્દૃષ્ટિ જીવ અલેશ્ય જીવ
કે જૈસે યથાવસ્થિત દ્રવ્યપર્યાયાત્મક વસ્તુ કે પરિચ્છેદક હોને સે
ક્રિયાવાદી હી હોતે હૈં । અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી ઓર વૈનયિકવાદી

અથવા અજ્ઞાનવાદી હોય છે ? અથવા વૈનયિકવાદી હોય છે ? આ પ્રશ્નના
ઉત્તરમાં પ્રમુશ્રી કહે છે કે—‘ગોયમા ! નો કિરિયાવાઈ’ હે ગૌતમ ! કૃષ્ણ-
પાક્ષિક જીવ ક્રિયાવાદી હોતા નથી, કેમ કે તેઓ યથાવસ્થિત દ્રવ્ય પર્યાયા-
ત્મક વસ્તુની વેદનાથી રહિત હોય છે. ‘અકિરિયાવાઈ વિ, અન્નાણિયવાઈ
વિ વેણહયવાઈ વિ’ અક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે, અને
વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. ‘સુક્કપક્ષિયા જહા સલેસ્સા’ સલેશ્ય જીવના કથન
પ્રમાણેજ શુક્લપાક્ષિકને પણ સમજી લેવા ‘સમ્માદિટ્ઠી જહા અલેસ્સા’ સમ્યગ્દૃષ્ટિ
વાળા જીવો લેશ્યાવિનાના જીવોના કથન પ્રમાણે યથાવસ્થિત દ્રવ્ય પર્યાયાત્મક
વસ્તુના પરિચ્છેદક હોવાથી ક્રિયાવાદીજ હોય છે, તેઓ અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાન
વાદી અને વૈનયિકવાદી હોતા નથી।

ભાવઃ । મિચ્છાદિદ્વી જહા કળહપક્ષિચયા' મિથ્યાદૃષ્ટયઃ કૃષ્ણપાક્ષિકવત્ નો ક્રિયાવાદિનઃ કિન્તુ અક્રિયાવાદિનોઽપિ અજ્ઞાનિકવાદિનોઽપિ વૈનયિકવાદિનોઽપિ-
ભવન્તીતિ ! 'સમ્મામિચ્છાદિદ્વી ણં પુચ્છા' સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટયો મિશ્રદૃષ્ટયઃ કિં
ક્રિયાવાદિનોઽક્રિયાવાદિનોઽજ્ઞાનિકવાદિનો વૈનયિકવાદિનો વા ભવન્તીતિ પ્રશ્નઃ
પુચ્છયા સંગૃહ્યતે, ભગવાનાહ- 'ગોયમા' દૃશ્યાદિ, 'ગોયમા' હે ગૌતમ ! 'નો કિરિ-
યાવાઈ' નો ક્રિયાવાદિનઃ નો વા અક્રિયાવાદિનો ભવન્તિ કિન્તુ 'અન્નાણિયવાઈ વિ
વેણઈયવાઈ વિ' અજ્ઞાનિકવાદિનોઽપિ ભવન્તિ વૈનયિકવાદિનોઽપિ ભવન્તિ, મિશ્ર-
દૃષ્ટયોહિ જીવાઃ સાધારણપરિણામત્વાન્નો આસ્તિકા ન વા નાસ્તિકાઃ કિન્તુ
અજ્ઞાનિકવાદિનોઽપિ વૈનયિકવાદિનોઽપિ ભવન્તીતિ ભાવઃ । 'નાણી જાવ કેવલ-
નાણી જહા અલેક્સે' જ્ઞાનિનો યાવત્કેવલજ્ઞાનિનો હિ અલેશ્યજીવવદેવ ક્રિયાવા-

નહીં હોતે હૈં । 'મિચ્છાદિદ્વી જહા કળહપક્ષિચયા' મિથ્યાદૃષ્ટિ જીવ
કૃષ્ણપાક્ષિક કે જેસે ક્રિયાવાદી નહીં હોતે હૈં । કિન્તુ વે અક્રિયાવાદી
ભી હોતે હૈં, અજ્ઞાનવાદી ભી હોતે હૈં ઓર વૈનયિકવાદી ભી હોતે હૈં ।
'સમ્મામિચ્છાદિદ્વી ણં પુચ્છા' હે ભદન્ત ! જો જીવ મિશ્રદૃષ્ટિ હોતે હૈં
વે કયા ક્રિયાવાદી હૈં ? યા અક્રિયાવાદી હોતે હૈં ? યા અજ્ઞાનવાદી
હોતે હૈં ? યા વૈનયિકવાદી હોતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈ-
'ગોયમા ! નો કિરિયાવાઈ, નો અકિરિયાવાઈ' હે ગૌતમ ! વે ન ક્રિયાવાદી
હોતે હૈં ઓર ન અક્રિયાવાદી હોતે હૈં । કિન્તુ વે 'અન્નાણિયવાઈ વિ
વેણઈયવાઈ વિ' અજ્ઞાનવાદી ભી હોતે હૈં ઓર વૈનયિકવાદી ભી હોતે હૈં ।
કયોં કી મિશ્રદૃષ્ટિ જીવ સાધારણ પરિણામવાલે હોતે હૈં ફસલિયે વે ન
આસ્તિક હોતે હૈં ઓર ન નાસ્તિક હોતે હૈં । 'નાણી જાવ કેવલનાણી
જહા અલેક્સે' જ્ઞાની જીવ યાવત્ કેવલ જ્ઞાની જીવ અલેશ્ય જીવ કે

‘મિચ્છાદિદ્વી જહા કળહપક્ષિચયા’ મિથ્યાદૃષ્ટિ જીવો કૃષ્ણપાક્ષિકના
કથન પ્રમાણે ક્રિયાવાદી હોતા નથી પરંતુ તેઓ અક્રિયાવાદી પણ હોય છે.
અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે ‘સમ્મામિચ્છા-
દિદ્વી ણં પુચ્છા’ હે ભગવન્ જે જીવો મિશ્રદૃષ્ટિવાળા હોય છે, તેઓ શું ક્રિયાવાદી
હોય છે ? અથવા અક્રિયાવાદી હોય છે ? અથવા અજ્ઞાનવાદી હોય છે ? અથવા
વૈનયિકવાદી હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે ‘ગોયમા નો
કિરિયાવાઈ નો અકિરિયાવાઈ’ હે ગૌતમ ! તેઓ ક્રિયાવાદી હોતા નથી. તથા
અક્રિયાવાદી પણ હોતા નથી ‘અન્નાણિયવાઈ વિ વેણઈયવાઈ’ તેઓ અજ્ઞાન
વાદી પણ હોય છે, અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે, કેમ કે મિશ્રદૃષ્ટિવાળા
જીવો સાધારણ પરિણામવાળા હોય છે. ‘નાણી જાવ કેવલનાણી જહા અલેક્સે’

દિનો ભવન્તિ દ્રવ્યપર્યાયાત્મકયથાવસ્થિતવસ્તુપરિચ્છેદયુક્તત્વાત્ નો અક્રિયાવાદિનો નો વા અજ્ઞાનિક્વાદિનો નો વા વૈનયિક્વાદિનો ભવન્તીતિ ભાવઃ । અત્ર યાવત્પદેન આભિનિવોધિકજ્ઞાનિ શ્રુતજ્ઞાન્યવધિજ્ઞાનિ મનઃપર્યવજ્ઞાનિનાં સંગ્રહઃ, एतेषां यथावस्थितवस्तुपरिच्छेदवत्वात् । ‘अन्नाणी जाव विभंगनाणि जहा कण्हपक्खिया’ अज्ञानिनो यावद् विभङ्गज्ञानिनो यथा कृष्णपाक्षिकाः, अत्र यावत्पदेन मत्पज्ञानि-श्रुताज्ञानिनोः संग्रहः, तन्मथाज्ञानि-मत्पज्ञानि-श्रुताज्ञानि-विभङ्गज्ञानिनः सर्वेऽपि नो क्रियावादिनो भवन्ति किन्तु अक्रियावादिनोऽज्ञानि-

जैसे क्रियावादी होते हैं, वे अक्रियावादी नहीं होते हैं, अज्ञानवादी भी नहीं होते हैं और न वैनयिकवादी होते हैं । क्योंकि ये सब द्रव्य पर्यायात्मक वस्तु के यथार्थ बोधवाले होते हैं । यहां यावत्पद से आभिनिवोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी और मनः पर्यवज्ञानी इन सबका ग्रहण हुआ है । ये सब क्रियावादी होते हैं—क्यों की इन में यथार्थ वस्तु की परिच्छेदकता का सद्भाव रहता है । ‘अन्नाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया’ ‘अज्ञानी यावत् विभङ्गज्ञानी कृष्णपाक्षिक के जैसे क्रियावादी नहीं होते हैं किन्तु ये अक्रियावादी होते हैं, अज्ञानवादी भी होते हैं और वैनयिकवादी भी होते हैं । यहां यावत्पद से मत्पज्ञानी, श्रुताज्ञानी इन दो का संग्रह हुआ है । अतः ये सब क्रियावादी नहीं होते हैं किन्तु शेष तीन समवसरणवाले होते हैं ‘आहारसन्नोवउत्ता जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता जहा सलेस्सा’ जिस

જાની જીવ યાવત્ કેવળ જ્ઞાનવાળા જીવો અદેશ્ય જીવની જેમ ક્રિયાવાદી જ હોય છે. તેઓ અક્રિયાવાદી હોતા નથી અજ્ઞાનવાદી હોતા નથી તથા વૈનયિકવાદી પણ હોતા નથી કેમ કે આ બધા દ્રવ્યપર્યાયાત્મક વસ્તુના યથાર્થ બોધવાળા હોય છે અહિયાં યાવત્પદથી આભિનિવોધિકજ્ઞાની શ્રુતજ્ઞાની અવધિજ્ઞાની અને, મનઃપર્યવજ્ઞાની આ સઘળા ગ્રહણ કરાયા છે આ બધા ક્રિયાવાદી હોય છે. કેમ કે તેઓમાં યથાર્થ વસ્તુના પરિચ્છેદક પણાનો સદ્ભાવ રહે છે. ‘અન્નાણી જાવ વિભંગનાણી જહા કણ્ઠપક્કિય્યા’ અજ્ઞાની યાવત્ વિભંગજ્ઞાની કૃષ્ણપાક્ષિકના કથન પ્રમાણે ક્રિયાવાદી હોતા નથી પરંતુ તેઓ અક્રિયાવાદી જ હોય છે, અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે. અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. અહિયાં યાવત્પદથી મતિઅજ્ઞાની અને શ્રુતઅજ્ઞાની ગ્રહણ કરયા છે. આ બધા ક્રિયાવાદી હોતા નથી, પરંતુ અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી, અને વૈનયિકવાદી હોય છે, ‘આહારસન્નોવઉત્તા જાવ પરિગ્ગહસન્નોવઉત્તા જહા

વાદિનો વૈનયિકવાદિશ્ચ ભવન્તીતિ । ‘આહારસન્નોવત્તા જાવ પરિગ્રહસન્નોવત્તા જહા સલેસ્સા’ આહારસંજોપયુક્તા યાવત્પરિગ્રહસંજોપયુક્તા યથા સલેશ્યાઃ, અત્ર યાવત્પદેન ભયસંજ્ઞા મૈથુનસંજ્ઞયોઃ સંગ્રહઃ, તથા ચૈતે સર્વેઽપિ ક્રિયાવાદિનો-ઽપિ ભવન્તિ અક્રિયાવાદિનોઽપિ ભવન્તિ અજ્ઞાનિકવાદિનોઽપિ વૈનયિકવાદિનો-ઽપિ ભવન્તિ તથાવિધવિલક્ષણપરિણામવત્ત્વાદિતિભાવઃ । ‘નોસન્નોવત્તા જહા અલેસ્સા’ નો સંજોપયુક્તા જીવા અલેશ્યજીવવદેવ કેવલં ક્રિયાવાદિન એવ ન તુ અક્રિયાવાદિનો ન વા અજ્ઞાનિકવાદિનો ન વા વૈનયિકવાદિનો ભવન્તીતિ । ‘સવેદ-ગા જાવ નપુંસગવેદગા જહા સલેસ્સા’ સવેદકા જીવા યાવત્ નપુંસગવેદકા યથા

પ્રકાર સલેશ્ય જીવ ક્રિયાવાદી બી હોતે હૈં, અક્રિયાવાદી બી હોતે હૈં, અજ્ઞાનવાદી બી હોતે હૈં ઓર વૈનયિકવાદી બી હોતે હૈં, ડહી પ્રકાર સે આહારસંજોપયુક્ત જીવ યાવત્ પરિગ્રહ સંજોપયુક્ત જીવ બી ચારો પ્રકાર કે સમવસરણવાલે હોતે હૈં । કળોં કિ હનકા પરિણામ વિલક્ષણ પ્રકાર કા હોતા હૈં । વહાં યાવત્ શબ્દ સૈ ભયસંજોપયુક્ત ઓર મૈથુન-સંજોપયુક્ત હનકા ગ્રહણ હુઆ હૈં । તથા ચ-યે સવ ક્રિયાવાદી બી હોતે હૈં અક્રિયાવાદિ બિ હોતે હૈં અજ્ઞાનવાદી બી હોતે હૈં ઓર વૈનયિકવાદી બી હોતે હૈં । ‘નો સંજોપયુક્તા જહા અલેસ્સા’ નો સંજોપયુક્ત જીવ અલેશ્ય જીવ કે જૈસે કેવલ ક્રિયાવાદી હી હોતે હૈં । અક્રિયાવાદી અજ્ઞાન-વાદી ઓર વૈનયિકવાદી નહીં હોતે હૈં । ‘સવેદગા જાવ નપુંસગવેદગા જહા સલેસ્સા’ સવેદકા જીવ યાવત્ નપુંસગવેદકા જીવ સલેશ્ય

‘સલેસ્સા’ સલેશ્ય ળવો બે પ્રમાણે ક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અક્રિયાવાદી પણ હોય છે. અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે. અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે એજ પ્રમાણે આહાર સંજોપયોગવાળા ળવો પણ યાવત્ પરિગ્રહ સંજોપયુક્ત ળવ પણ ચારે પ્રકાર ના સમવસરણવાળા હોય છે. કેમ કે તેઓનું પરિણામ વિલક્ષણ પ્રકારનું હોય છે. અહિયાં યાવત્ શબ્દથી ભયસંજોપયોગવાળા અને મૈથુનસંજોપયોગવાળા એ બે ગ્રહણ કરાયા છે. તથા આ બધા ક્રિયાવાદી પણ હોય છે અક્રિયાવાદી પણ હોય છે. અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. ‘નો સંજોપયુક્તા જહા અલેસ્સા’ નો સંજોપયુક્ત ળવો અલેશ્યાવાળા ળવના કથન પ્રમાણે કેવળ ક્રિયાવાદી જ હોય છે. અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી, અને વૈનયિકવાદી હોતા નથી ‘સવેદગા જાવ નપુંસગવેદગા જહા સલેસ્સા’ સવેદકા ળવ યાવત્ નપુંસગવેદકા ળવ

સલેશ્યાઃ યાવત્પદેન સ્ત્રીવેદકપુરુષવેદકયોઃ સંગ્રહો ભવતિ, તતથૈતે સર્વેઽપિ ક્રિયાવાદિનોઽપિ ભવન્તિ અક્રિયાવાદિનોઽપિ ભવન્તિ અજ્ઞાનિકવાદિનો વૈનયિકવાદિનશ્ચાપિ ભવન્તિ વિલક્ષણ તાદૃશ પરિણામત્ત્વાદિતિ । ‘અવેદગા જહા અલેસ્સા’ અવેદકાઃ સામાન્યતો વેદરહિતા જીવાઃ અલેશ્યજીવવદેવ કેવલં ક્રિયાવાદિનો ભવન્તિ ન તુ અક્રિયાવાદિનો નો અજ્ઞાનિકવાદિનો નો વૈનયિકવાદિનો વા ભવન્તીતિ ભાવઃ, ‘સકસાઈ જાવ લોમકસાઈ જહા સલેસ્સા’ સકપાયિનો યાવત્ લોમકપાયિનઃ સલેશ્યજીવવદેવ ક્રિયાવાદિનોઽપિ અક્રિયાવાદિનોઽપિ અજ્ઞાનિકવાદિનોઽપિ વૈનયિકવાદિનોઽપિ ભવન્તીતિ, યાવત્પદેન ક્રોધકપાયિ માનકપાયિ માયાવપાયિનાં ગ્રહણં ભવતીતિ । ‘અકસાઈ જહા અલેસ્સા’ અકપાયિનોઽલેશ્યવદેવ કેવલં ક્રિયા-

જીવોં કે જૈસે ક્રિયાવાદી બી હોતે હૈં અક્રિયાવાદી બી હોતે હૈં, અજ્ઞાનવાદી બી હોતે હૈં ઓર વૈનયિકવાદી બી હોતે હૈં । ક્યોં કિં હનકે એસે હી વિલક્ષણ પરિણામ હોતે હૈં । યહાં યાવત્પદ સે સ્ત્રી વેદક ઓર પુરુષ વેદક હનકા ગ્રહણ હુઆ હૈં । ‘અવેદગા જહા અલેસ્સા’ સામાન્ય સે વેદ રહિત જીવ અલેશ્ય જીવોં કે જૈસે કેવલ ક્રિયાવાદી હી હોતે હૈં । અક્રિયાવાદી નહીં હોતે હૈં, અજ્ઞાનવાદી નહીં હોતે હૈં ઓર વૈનયિકવાદી બી નહીં હોતે હૈં । ‘સકસાઈ જાવ લોમકસાઈ જહા સલેસ્સા’ સકપાયી જીવ યાવત્ લોમકપાયી જીવ સલેશ્ય જીવોં કે જૈસે ક્રિયાવાદી બી હોતે હૈં ઓર અક્રિયાવાદી બી હોતે હૈં, અજ્ઞાનવાદી બી હોતે હૈં ઓર વૈનયિકવાદી બી હોતે હૈં । યહાં યાવત્ પદ સે ક્રોધ કપાયી માન કપાયી ઓર માયા કપાયી જીવોં કા ગ્રહણ હુઆ હૈં । ‘અકસાઈ

લેશ્યાવાળા ઊવોના કથન પ્રમાણે ક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે, અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. કેમ કે તેઓના પરિણામો એવા વિલક્ષણ જ હોય છે. અહિયાં યાવત્પદથી સ્ત્રીવેદવાળા અને પુરુષવેદવાળાઓ ગ્રહણ કરાયા છે. ‘અવેદગા જહા અલેસ્સા’ સામાન્યથી વેદરહિત ઊવો અલેશ્ય ઊવોના કથન પ્રમાણે કેવળ ક્રિયાવાદી જ હોય છે, અક્રિયાવાદી હોતા નથી તથા અજ્ઞાનવાદી પણ હોતા નથી અને વૈનયિકવાદી પણ હોતા નથી. ‘સકસાઈ જાવ લોમકસાઈ જહા સલેસ્સા’ કપાયવાળા ઊવો યાવત્ લોમકપાયવાળા ઊવો લેશ્યાવાળા ઊવોના કથન પ્રમાણે ક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે. અને વૈનયિકવાદી પણ હોય થ. અહિયાં યાવત્ પદથી માનકપાયવાળા, માયાકપાયવાળા, અને લોભકપાયવાળા, ઊવો ગ્રહણ કરાયા છે,

વાદિનો ન તુ અક્રિયાઽજ્ઞાનિકૈવૈનયિકવાદિનો ભવન્તિ । ‘સજોગી જાવ કાયજોગી જહા સલેસ્સા’ સયોગિનો યાવત્ પદેન મનોયોગિનો વચનયોગિનઃ કાયયોગિનઃ સલેશ્યજીવવદેવ ક્રિયાવાદિનોઽપિ અક્રિયાવાદિનોઽપિ અજ્ઞાનિકવાદિનોઽપિ વૈનયિકવાદિનોઽપિ ભવન્તીતિ । ‘અજોગી જહા અલેસ્સા’ અયોગિનો યથા અલેશ્યાઃ, અલેશ્યજીવવદેવ અયોગિનઃ કેવલં ક્રિયાવાદિનો ભવન્તિ ત તુ અક્રિયાવાદિનોઽ જ્ઞાનિકવાદિનો વૈનયિકવાદિનશ્ચ । ‘સાગારોવડત્તા અનાગારોવડત્તા જહા સલેસ્સા’ સલેશ્યજીવવદેવ સાકારોપયોગયુક્તા અનાગારોપયોગયુક્તાઃ ક્રિયાવાદિનો યાવદ્ વૈનયિકવાદિનો ભવન્તીતિ । ‘નેરહ્યાણં મંતે ! કિં કિરિયાવાઈ પુચ્છા’ નૈરયિકાઃ

જહા અલેસ્સા’ અકષાયી જીવ અલેશ્ય જીવોં કે જૈસે કેવલ ક્રિયાવાદી હી હોતે હૈ અક્રિયાવાદી નહીં હોતે હૈ, અજ્ઞાનવાદી ભી નહીં હોતે ઓર ન વૈનયિકવાદી હી હોતે હૈ । ‘સજોગી જાવ કાયજોગી જહા સલેસ્સા’ સલેશ્ય જીવોં કે જૈસે સયોગી યાવત્ કાયયોગી જીવ ક્રિયાવાદી ભી હોતે હૈ, અક્રિયાવાદી ભી હોતે હૈ અજ્ઞાનવાદી ભી હોતે હૈ ઓર વૈનયિકવાદી ભી હોતે હૈ’ યહાં યાવત્પદ સે મનોયોગી, વચનયોગી કા ગ્રહણ હુઆ હૈ । ‘અજોગી જહા અલેસ્સા’ અયોગી જીવ અલેશ્ય જીવોં કે જૈસે કેવલ ક્રિયાવાદી હી હોતે હૈ । અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી ઓર વૈનયિકવાદી નહીં હોતે હૈ । ‘સાગારોવડત્તા અનાગારોવડત્તા જહા સલેસ્સા’ સલેશ્ય જીવોં કે જૈસે સાકારોપયુક્ત ઓર અનાકારોપયુક્ત જીવ ક્રિયાવાદી ભી હોતે હૈ, અક્રિયાવાદી ભી હોતે હૈ, અજ્ઞાનવાદી ભી હોતે હૈ ઓર વૈનયિકવાદી ભી હોતે હૈ । ‘નેરહ્યાણં મંતે ! કિં કિરિયાવાઈ પુચ્છા’-હે અદન્ત ! નૈરયિક જીવ કયા ક્રિયા-

‘અકસાઈ જહા અલેસ્સા’ અકષાયી જીવ લેશ્યા વિનાના જીવોના કથન પ્રમાણે કેવળ ક્રિયાવાદી જ હોય છે. અક્રિયાવાદી હોતા નથી. અજ્ઞાનવાદી પણ હોતા નથી. તથા વૈનયિકવાદી પણ હોતા નથી. ‘સજોગી જાવ કાયજોગી જહા સલેસ્સા’ લેશ્યાવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે સયોગી યાવત્પદ યોગવાળા જીવો ક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અક્રિયાવાદી પણ હોય છે અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે, અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. અહિયાં યાવત્પદથી મનોયોગવાળા, અને વચનયોગવાળાઓ, ગ્રહણ કરાયા છે. ‘અજોગી જહા અલેસ્સા’ અયોગી જીવ અલેશ્ય જીવોની જેમ કેવળ ક્રિયાવાદી જ હોય છે. અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી, અને વૈનયિકવાદી હોતા નથી. ‘સાગારોવડત્તા અનાગારોવડત્તા જહા સલેસ્સા’ લેશ્યાવાળા જીવોની જેમ સાકારોપયુક્ત અને અનાકારોપયુક્ત જીવો ક્રિયાવાદી પણ હોય છે. અક્રિયાવાદી પણ હોય છે. અને અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે. અને વૈનયિક

ખલુ મદન્ત ! કિં ક્રિયાવાદિનોઽક્રિયાવાદિનોઽજ્ઞાનિકવાદિનો વૈનયિકવાદિનો વેતિ પ્રશ્નઃ પૃચ્છયા સંગૃહ્યતે । મગવાનાહ—‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ, ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘કિરિયાવાઈ.વિ જાવ વેળહયવાઈ વિ’ ક્રિયાવાદિનોઽપિ ચારુદૈનયિકવાદિનોઽપિ મવન્તિ વિલક્ષણપરિણામચર્યાત્ અત્ર ચાવત્પદેના ક્રિયાવાદિનોઽપિ અજ્ઞાનિકવાદિનોઽપિ, ઇત્યનયોઃ સંગ્રહઃ । ‘સલેસ્સા ણં મંતે ! નેરહયા કિં કિરિયાવાઈ૦’ સલેશ્યાઃ ખલુ મદન્ત ! નૈરયિકાઃ કિં ક્રિયાવાદિનો યાવદ્ વૈનયિકવાદિન ઇતિ પ્રશ્નઃ પૃચ્છયા સંગૃહ્યતે । ઉત્તરમાહ—‘એવં—વેવ’ એવમ્—સામાન્યતો નારકદેવ સલેશ્યનારકા અપિ ક્રિયાવાદિનો યાવદ્ વૈનયિકવાદિનો મવન્તીતિ ।

વાદી હોતે હૈં ? યા અક્રિયાવાદી હોતે હૈં ? યા અજ્ઞાનવાદી હોતે હૈં ? યા વૈનયિકવાદી હોતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં—‘ગોયમા ! કિરિયાવાઈ વિ જાવ વેળહયવાઈ વિ’ હે ગૌતમ ! નૈરયિક જીવ ક્રિયાવાદી બી હોતે હૈં, અક્રિયાવાદી બી હોતે હૈં અજ્ઞાનવાદી બી હોતે હૈં ઓર વૈનયિકવાદી બી હોતે હૈં । કયોં કી હનકે હસી પ્રકાર કે વિલક્ષણ પરિણામ હોતે હૈં । ‘સલેસ્સા ણં મંતે ! નેરહયા કિં કિરિયાવાઈ૦’ હે મદન્ત ! જો નૈરયિક જીવ સલેશ્ય હોતે હૈં વે કયા ક્રિયાવાદી હોતે હૈં ? યા અક્રિયાવાદી હોતે હૈં ? યા અજ્ઞાનવાદી હોતે હૈં ? યા વૈનયિકવાદી હોતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં—‘એવં વેવ’ હે ગૌતમ ! સામાન્ય નારક કે જૈસે સલેશ્ય નારક બી ક્રિયાવાદી બી હોતે હૈં, અક્રિયાવાદી બી હોતે હૈં, અજ્ઞાનવાદી બી હોતે હૈં ઓર વૈનયિકવાદી બી

વાદી પણ હોય છે. નેરહયા ણં મંતે ! કિં કિરિયાવાઈ પુચ્છા’ હે ભગવન્ નૈરયિક ભવો શું ક્રિયાવાદી હોય છે ? અક્રિયાવાદી હોય છે ? અથવા અજ્ઞાનવાદી હોય છે ? અથવા વૈનયિકવાદી હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે ‘ગોયમા ! કિરિયાવાઈ વિ જાવ વેળહયવાઈ વિ’ હે ગૌતમ ! નૈરયિક ભવો ક્રિયાવાદી પણ હોય છે. અક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. કેમ કે તેઓને એ પ્રમાણેતુ’ વિલક્ષણ પરિણામ હોય છે. ‘સલેસ્સા ણં મંતે ! નેરહયા કિં કિરિયાવાઈ’ હે ભગવન્ જે નૈરયિક ભવો લેશ્યાવાળા હોય છે તેઓ શું ક્રિયાવાદી હોય છે ? અથવા અક્રિયાવાદી હોય અથવા અજ્ઞાનવાદી હોય છે ? અથવા વૈનયિકવાદી હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘એવં વેવ’ હે ગૌતમ ! સામાન્ય નારકના કથન પ્રમાણે લેશ્યાવાળા નારક પણ ક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે, અને

‘एवं जाव काउलेस्सा’ एवं सलेश्यनारकवदेव यावत्पदेन कृष्णनीलकापोत-
लेश्यावन्तः कृष्णलेश्यादिका नारकाः क्रियावादिनो यावद्वैनयिकवादिनो भवन्ति।
‘कण्हपक्खिया किरिया विवज्जिया’ कृष्णपाक्षिका नारकाः क्रियाविवर्जिताः
कृष्णपाक्षिका नारका न क्रियावादिनोऽपि अक्रियावादिनो यावद्वैनयिकवादिनो
भवन्तीति भावः। ‘एवं एएणं कमेणं जच्चेव जीवाणं वत्तव्वया’ एवमेतेन-उपरि
दर्शितप्रकारेण यैव जीवानां वक्तव्यता कथिता ‘सच्चेव नेरइयाणं वत्तव्वयावि’
सैव नैरयिकाणां वक्तव्यताऽपि भणितव्या क्रियत्पर्यन्तं जीववक्तव्यताऽत्र भणि-
तव्या तत्राह-‘जाव’ इत्यादि, ‘जाव अणागारोवउत्ता’ यावदनाकारोपयोगयुक्ता
एतदन्तप्रकरणं सर्वमिहापि ज्ञातव्यम् अज्ञानित आरभ्य साकारोपयोगयुक्तान्त
सम्पूर्ण प्रकरणस्य संग्रहो ज्ञातव्यइति। ‘नवरं जं अत्थि तं भाणियव्वं’ नवरं
यद् ज्ञानादिकं यस्यास्ति विद्यते तस्य तदेव भणितव्यम् ‘सेसं न भण्णइ’ शेषं न
होते है। ‘एवं जाव काउलेस्सा’ सलेश्यनारक के जैसे ही कृष्णले-
श्यावाले, नील लेश्यावाले और कापोतलेश्यावाले नैरयिक जीव क्रिया-
वादी भी होते हैं यावत् वैनयिकवादी भी होते हैं। ‘कण्हपक्खिया
किरिया विवज्जिया’ कृष्णपाक्षिक नारक क्रियावादी नहीं होते हैं-
किन्तु अक्रियावादी यावत् वैनयिकवादी होते हैं। ‘एवं एएणं कमेणं
जच्चेव जीवाणं वत्तव्वया’ इस प्रकार से ऊपर में प्रकटित किये गये
अनुसार जो जीवों की वक्तव्यता कही गई है, ‘सच्चेव नेरइयाणं
वत्तव्वया वि’ वही वक्तव्यता यहां नैरयिकों के सम्बन्ध में ‘जाव अणा-
गारोवउत्ता’ यावत् अनाकारोपयोगवाले नैरयिकों के प्रकरण तक सब
कहनी चाहिये। ‘नवरं जं अत्थि तं भाणियव्वं’ परन्तु इस वक्तव्यता
में जो जिसके हो वही उसके कहना चाहिये। ‘सेसं न भण्णइ’ और

वैनयिकवादी પણ હોય છે. ‘एवं जाव काउलेस्सा’ લેશ્યાવાળા નારકના કથન
પ્રમાણે જ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા, નીલલેશ્યાવાળા, અને કાપોત લેશ્યાવાળા, નૈરયિક
જીવો ક્રિયાવાદી પણ હોય છે, યાવત્ વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. ‘કણ્હ-
પક્કિયા કિરિયા વિવજ્જિયા’ કૃષ્ણપાક્ષિક નારક ક્રિયાવાદી હોતા નથી. પરંતુ
અક્રિયાવાદી યાવત્ વૈનયિકવાદી હોય છે. ‘एवं एएणं कमेणं जच्चेव जीवाण
वत्तव्वया’ આ પ્રમાણે ઉપર બતાવેલ પ્રકારથી જીવોના સંબંધમાં જે
કથન કહેલ છે, ‘सच्चेव नेरइयाणं वत्तव्वया वि’ એજ કથન અહિંયા નૈરયિકો
ના સંબંધમાં ‘जाव अणागारोवउत्ता’ યાવત્ અનાકારોપયોગવાળા નૈરયિકોના
પ્રકરણ પર્યન્ત સઘળું કથન કહેવું જોઈએ. ‘नवरं जं अत्थि तं भाणियव्वं’ પરંતુ
આ કથનમાં જે સ્થાન જેના સંબંધી હોય તે સ્થાન તેને કહેવા જોઈએ. ‘सेसं

મળ્યે તે યત્ તસ્ય નાસ્તિ તત્ તસ્ય ન વક્તવ્યમ્' इति । 'जहा नेरइया एवं जाव थणियकुमारा' यथा नैरयिकाणां लेश्यादि विशिष्टानामविशिष्टानां च वक्तव्यता कथिता तथैव असुरकुमारादारभ्य स्तनितकुमारपर्यन्तानां वक्तव्यता कथनीया इति भावः । 'पुढवीकाइया णं भंते ! किरियावाई पुच्छा' पृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! किं क्रियावादिनोऽक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनो वेति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'नो किरियावाई' पृथिवीकायिका जीवाः क्रियावादिनो नो भवन्ति 'अकिरियावाई वि अन्नाणियवाई वि' मिथ्यादृष्टित्वात् पृथिवीकायिका अक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनश्च भवन्ति चाग्योगाभावेन वादाभावेऽपि तद्वादयोग्य जीवपरिणामसद्भावात् 'नो वेणइयवाई' नो वैनयिकवादिन स्ते भवन्ति तेषां चाग्योगाभावेन वादाभावेऽपि

जो जिसके न हो वह उसके नहीं कहना चाहिये । 'जहा नेरइया एवं जाव थणियकुमारा' जैसा कथन नैरयिकों के सम्बन्ध में प्रकट किया गया है—वैसा ही कथन यावत् स्तनितकुमारों तक जानना चाहिये । 'पुढवीकाइयाणं भंते ! किरियावाई पुच्छा' हे भदन्त ! पृथिवीकायिक जीव क्या क्रियावादी होते हैं ? या अक्रियावादी होते हैं ? या अज्ञानवादी होते हैं ? वैनयिकवादी होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—'गोयमा ! नो किरियावाई' हे गौतम ! पृथिवीकायिक जीव क्रियावादी नहीं होते हैं 'अकिरियावाई, वि अन्नाणियवाई वि' किन्तु वे अक्रियावादी भी होते हैं और अज्ञानवादी भी होते हैं । क्योंकि ये मिथ्यादृष्टि होते हैं । यद्यपि चाग्योगी के अभाव से इनमें वादका अभाव है तथा भी तत्तद्भाव के योग्य जीव परिणाम का सद्भाव होने से इनमें इनका सद्भाव कहा गया है । 'नो वेणइयवाई' पृथिवीकायिक जीव

ન મળ્યે' જે જેને ન હોય તે તેને કહેવા ન જોઈએ. 'જહા નેરइया एवं जाव थणियकुमारा' નૈરયિકના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું કથન કર્યું છે એજ પ્રમાણેનું કથન થાવત્ સ્તનિતકુમારો સુધી સમજી લેવું. 'पुढवीकाइयाणं भंते ! किरियावाई पुच्छा' હે ભગવન્ પૃથ્વીકાયિક જીવ શું ક્રિયાવાદી હોય છે ? અથવા અક્રિયાવાદી હોય છે ? અથવા અજ્ઞાનવાદી હોય છે ? અથવા વૈનયિકવાદી હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'गोयमा ! नो किरियावाई' હે ગૌતમ ! પૃથ્વીકાયિક જીવ ક્રિયાવાદી હોતા નથી. 'अकिरियावाई वि, अन्नाणियवाई वि' પરંતુ તેઓ અક્રિયાવાદી હોય છે, અને અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે. કેમ કે—તેઓ મિથ્યાદૃષ્ટિ હોય છે, જોકે વચ્ચન યોગીના અભાવથી તેઓમાં વચ્ચન વાદનો અભાવ છે. તો પણ તે તે ભાવને યોગ્ય જીવ પરિણામનો

તત્પયોજકજીવપરિણાસસદ્ધાવાદ્વાદિનં ઇતિ કથિતમ્ । ‘એવં પુઢવીકાઈયાં જં જં અત્થિ તત્થ સવ્વત્થ વિ ઇયાઈં દો મજ્જિલ્લાઈં સમોસરણાઈં’ એવં પૃથિવીકાઈયાનાં યદસ્તિ તત્ર સર્વત્રાપિ એતે દ્વે મધ્યમે સમવસરણે, પૃથિવીકાઈયાનાં યદસ્તિ સલેશ્યાદિપદં તત્ર સર્વત્રાપિ મધ્યમમ્ ‘અક્રિયાવાદિનોડપિ અજ્ઞાનિક્વાદિનોડપિ’ ઇત્યાકારકં સમવસરણદ્વયં જ્ઞાતવ્યમ્, સલેશ્ય-કૃષ્ણલેશ્ય-નીલલેશ્ય-કાપોતલેશ્ય તેજોલેશ્ય-કૃષ્ણપાક્ષિક-સમ્યગ્દષ્ટિ-મિથ્યાદષ્ટિ-સમ્યગ્મિથ્યાદષ્ટિ-જ્ઞાન્યાભિનિબોધિકજ્ઞાનિશ્રુતજ્ઞાન્યાધિકજ્ઞાન્યજ્ઞાનિમત્યજ્ઞાનિ શ્રુતાજ્ઞાનિ વિભંજજ્ઞાન્યાહારસંજોપયુક્ત યાદત્પરિગ્રહસંજોપયુક્ત સવેદકનપુંસકવેદકસકષાયિ યાવલ્લોભકષાયિ સયોગિ-મનોયોગિ-વચનયોગિ સાકારોપયુક્તાઃ, ઇત્યાદિષુ યત્પદં સમ્ભવતિ તેષુ પદેષુ

વૈનયિકવાદી નહીં હોતે હૈં । ક્યોંકિ ઇનમૈં વિનયવાદ કે યોગ્ય પરિણામ નહીં હૈ । ‘એવં પુઢવીકાઈયાં જં જં અત્થિ તત્થ સવ્વત્થ વિ ઇયાઈં દો મજ્જિલ્લાઈં સમોસરણાઈં’ ઇસી પ્રકાર સે પૃથિવિકાઈિક જીવોં સૈં જો-જો લેશ્યાદિક પદ સંભવિત હોતે હોવેં ડન-ડન સમસ્ત પદોં મૈં યે દો હી-અક્રિયાવાદિત્વ ઓર અજ્ઞાનવાદિત્વ-સમવસરણ કહનાં ચાહિયે । ઇસ પ્રકાર સલેશ્ય કૃષ્ણલેશ્ય, નીલલેશ્ય કાપોતલેશ્ય, તેજોલેશ્ય, કૃષ્ણપાક્ષિક, શુક્લપાક્ષિક, સમ્યગ્દષ્ટિ, મિથ્યાદષ્ટિ, સમ્યગ્મિથ્યાદષ્ટિ, જ્ઞાની, આભિનિબોધિકજ્ઞાની, શ્રુતજ્ઞાની, અવધિજ્ઞાની અજ્ઞાની, મત્યજ્ઞાન, શ્રુતાજ્ઞાની, વિભંજજ્ઞાની, આહારસંજોપયુક્ત યાદત્ પરિગ્રહ સંજોપયુક્ત, સવેદક નપુંસકવેદક, સકષાયી, યાવત્ લોભકષાયી, સયોગી, મનોયોગી, વચનયોગી, સાકારોપયુક્ત, અનાકારોપયુક્ત, ઇત્યાદિ

સદ્ભાવ હોવાથી તેઓમાં વચન યોગનો સદ્ભાવ કહ્યો છે. ‘જો વેળાઈવાઈ’ પૃથ્વીકાઈિક જીવ વૈનયિકવાદી હોતા નથી. કેમ કે તેઓમાં વિનયવાદને યોગ્ય પરિણામ હોતું નથી. ‘એવં પુઢવીકાઈયાં જં જં અત્થિ તત્થ સવ્વત્થ વિ ઇયાઈં દો મજ્જિલ્લાઈં સમોસરણાઈં’ એજ પ્રમાણે પૃથ્વીકાઈિક જીવોમાં જે જે લેશ્યા વિગેરે પદો સંભવિત હોય છે, તે તે સધળા પદોમાં આ એજ અટલે કે-અક્રિયાવાદી પણ અને અજ્ઞાનવાદી પણ સમવસરણ કહેવા લેઈએ. આ રીતે લેશ્યાવાળા, કૃષ્ણલેશ્યાવાળા, નીલલેશ્યાવાળા, કાપેતલેશ્યાવાળા, તેજોલેશ્યાવાળા, કૃષ્ણપાક્ષિક, શુક્લપાક્ષિક, સમ્યગ્દષ્ટિ, મિથ્યાદષ્ટિ, સમ્યગ્મિથ્યાદષ્ટિ, જ્ઞાની, આભિનિબોધિકજ્ઞાની, શ્રુતજ્ઞાની, અધિકજ્ઞાની, અજ્ઞાની, મતિ અજ્ઞાની, શ્રુતઅજ્ઞાની, વિભંજજ્ઞાની આહારસંજોપયોગી યાવત્ પરિગ્રહસંજોપયુક્ત, સવેદક, નપુંસકવેદક, સકષાયી યાવત્ લોભકષાયી, સયોગી, મનોયોગી વચનયોગી, સાકારોપયોગવાળા, અનાકારોપ યોગવાળા વિગેરે પૈકી જે-જે

મધ્યમં સમવસરણદ્વયં જ્ઞાતવ્યમિતિ । ક્રિયત્પર્યન્તપદેષુ સમવસરણદ્વયં મધ્યમં જ્ઞાત-
વ્યમ્, તન્નાહ—‘જાવ’ ઇત્યાદિ । ‘જાવ અણાગારોવત્તા વિ’ યાવદ્ અનાકારોપયુક્તા
અપિ અનાકારોપયોગયુક્ત પૃથિવીકાયિકપર્યન્તં મધ્યમં સમવસરણદ્વયં જ્ઞાતવ્યમિતિ ।
‘एवं जाव चउरिंदियाणं’ एवं पृथिवीकायिकवदेव अप्कायिकादारभ्य चतुरिन्द्रिय-
पर्यन्तानाम् ‘सव्वट्ठाणेषु एयाइ चेव मज्झल्लाई दो समोसरणाइं’ सर्वस्थानेषु
લેશ્યાદિ સમ્મચિત્તદ્વારેષુ પતે એવ મધ્યમે દ્વે સમવસરણે જ્ઞાતવ્યે । તત્તુ દ્વીન્દ્રિય
ત્રીન્દ્રિયાદિ જીવાનાં સાસાદનમાયેન સમ્યક્ત્વં જ્ઞાનં ચેભ્યતે इति द्वीन्द्रियादि
जीवेषु क्रियावादित्वमेव युक्तं तत्स्वभावत्वात् तत्कथमुच्यते मध्यममेव समवसरण-
द्वयमेतेषामित्याशंक्याह—‘सम्मत्त’ इत्यादि, ‘सम्मत्तनाणेहि वि एयाणि चेव

પદો એ સે જો-જો પદ इनमें संभवित होते होवे उनमें से यावत्
अनाकारोप युक्त पृथिवीकायिक पद तक इन दो मध्य के समवसरणों
काही कथन करना चाहिये ।

‘एवं जाव चउरिंदियाणं’ पृथिवीकायिक के जैसे ही अप्कायिक से
छेकर चतुरिन्द्रियतक के जीवों के ‘सव्वट्ठाणेषु एयाइं चेव मज्झल्लाईं
दो समोसरणाइं’ समस्त लेश्यादिक संभवित स्थानों में ये दो ही
मध्य के समवसरण वक्तव्य हुए हैं ऐसा जानना चाहिये ।

શંકા—દ્વીન્દ્રિય, તેહન્દ્રિય જીવોં કે સાસાદન માવ સે સમ્યક્ત્વ
और ज्ञान माने गये हैं अतः इनमें क्रियावादित्व रूप समवसरणही
कहना चाहिये था, तो फिर आप इनमें मध्य के दो समवसरण ही
क्यों प्रकट कर रहे हैं ?

उत्तर—‘सम्मत्तनाणेहि वि एयाणि चेव मज्झल्लगाइं दो समो-

પદો આ પૃથ્વીકાયિકોમાં સંભવિત હોતા હોય તેમાંથી અનાકારોપયોગવાળા
पृथिवीकायिक संधी पद सुधी आ ये मध्यना समवसरणो कहेवा नेछो

‘एवं जाव चउरिंदियाणं’ पृथ्वीकायिकना कथन प्रमाणे न अप्कायिकथी
लगने आर छिन्द्रियवाणा छन सुधीना छवोने ‘सव्वट्ठाणेषु एयाइंचेव
मज्झल्लाईं दो समोसरणाइं’ सधणा लेश्यादि संभवित स्थानोभां आ ये न
छेटले के अक्रियावादी अने अज्ञनवादीपणुना ये मध्यना समवसरण कहेवा
लायक कहा छे तेम समजवुं.

શંકા—એ છ દ્વિયવાળા અને ત્રણ છ દ્વિયવાળા છવોને સાસાદન ભાવથી
सम्यक्त्व अने ज्ञान माननाમાં आवेक्ष छ नेथी तेओभां क्रियावादी इय समव
सरण न कहेवुं नेछो परंतु आप तेओभां गन्ने समवसरणो केम कहे छे ?

उत्तर—‘सम्मत्तनाणेहि वि एयाणि चेव मज्झल्लगाइं दो समोसरणाइं’ ने

મજ્જિલ્લગાઈં દો સમોસરણાઈં' સમ્યક્ત્વજ્ઞાનયોરપિ એતે એવ મધ્યમે દ્વે સમવસરણે જ્ઞાતવ્યે ક્રિયાવાદવિનયવાદૌ દિ દિશિષ્ટતરે સમ્યક્ત્વાદિપરિણામે સ્યાતાં ન તુ સાસાદનરૂપે ઇતિ ભાવઃ । યદપિ દ્વીન્દ્રિયાદિ ચતુરિન્દ્રિયાન્તેષુ સમ્યક્ત્વં જ્ઞાનં ચ વિચિત્રે તથાપિ અપર્યાપ્તાવસ્થાયામેવ તયોઃ સદ્ભાવાત્ સ્તોકકાલભાવિત્વેન વિશિષ્ટરૂપં સમ્યક્ત્વં જ્ઞાનં ચ નાસ્તિ, અતઃ મધ્યમમેવ સમવસરણદ્વયમિતિ । 'પંચિન્દિય-તિરિક્ષજોણિયા જહા જીવા' પશ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્ચોનિકા યથા જીવાઃ સામાન્યજીવ-વદેવ પશ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્ચોનિકાઃ ક્રિયાવાદિનોઽજ્ઞાનિકવાદિનો વૈનયિકવાદિનોઽપિ ભવન્તીતિ । 'નવરં જં અત્થિ તં માણિયવં' નવરં જીવાપેક્ષયા ઇદમેવ વૈલક્ષણ્યં યત્

સરણાઈં 'યદપિ ફનકે સ્વાસાદન ભાવ સે સમ્યક્ત્વ ઔર જ્ઞાન માને ગયે હૈં-પર વે બહાં અંશ રૂપ સે માને ગયે હૈં' ફસલિયે ફનકે સમ્યક્ત્વ એવં જ્ઞાન મેં બી વે દો હી મધ્ય કે સમવસરણ હોને કહે ગયે હૈં, કયોં કિ ક્રિયાવાદ ઔર વિનયવાદ વે દો વિશિષ્ટતર સમ્યક્ત્વાદિ પરિ-ણામોં કે હોને પર હોતે હૈં । સાસાદન રૂપ સમ્યક્ત્વ જ્ઞાન કે હોને પર નહીં હોતે હૈં । યદપિ દ્વીન્દ્રિય સે લેકર ચૌદ્વિન્દ્રિય તરુ કે જીવોં મેં સમ્યક્ત્વ ઔર જ્ઞાન હૈં પરન્તુ વે અપર્યાપ્ત અવસ્થા મેં હી ઉનકે સદ્ભાવ રૂપ સે માને ગયે હૈં-અતઃ ઉનમેં ફનકા સદ્ભાવ બહુત હી કમ સમયતક રહતા હૈં ફસલિયે વે વિશિષ્ટ રૂપ મેં વહાં નહીં હૈં । ફમી કારણ વહાં બીચ કે દો સમવસરણ માને ગયે હૈં । 'પંચિન્દિય-તિરિક્ષજોણિયા જહા જીવા' સામાન્ય જીવ કે જૈસે પશ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્ચો-નિક જીવ ક્રિયાવાદી બી હોતે હૈં અક્રિયાવાદી બી હોતે હૈં, અજ્ઞાન-વાદી બી હોતે હૈં ઔર વૈનયિકવાદી બી હોતે હૈં । 'નવરં જ અત્થિ

કે આ બે ઇન્દ્રિયાદિકોમાં સાસાદન લાવથી સમ્યક્ત્વ અને જ્ઞાન માનવામાં આવેલ છે, તો પણ તે અહિયાં અંશ રૂપથી માનેલા છે તેથી તેઓને સમ્યક્ત્વ અને જ્ઞાનમાં પણ આ બેજ મધ્યના સમવસરણ હોવાનું કહેલ છે. કેમકે ક્રિયાવાદ અને વિનયવાદ એ બે વિશેષ પ્રકારના સમ્યક્ત્વ વિગેરે પરિણામો હોય ત્યારે હોય છે સાસાદનરૂપ સમ્યક્ત્વજ્ઞાન હોય ત્યારે હોતા નથી. જો કે બે ઇન્દ્રિયથી લઈને ચાર ઇન્દ્રિયવાળા સુધીના જીવોમાં સમ્યક્ત્વ અને જ્ઞાન છે, પરંતુ તે અપર્યાપ્તાવસ્થામાં જ તેના સદ્ભાવ રૂપથી માનેલા છે, તેથી તેઓમાં તેના સદ્ભાવ ઘણો જ ઓછા સમય સુધી રહે છે. તેથી તેઓ વિશેષ પ્રકારથી ત્યાં હોતા નથી. એજ કારણથી ત્યાં મધ્યના બે સમવસરણો માનેલા છે

‘પંચિન્દિય તિરિક્ષજોણિયાણં જહા જીવા’ સામાન્ય જીવના કથન પ્રમાણે પશ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્ચોનિવાળા જીવો ક્રિયાવાદી પણ હોય છે. અક્રિયા-વાદી પણ હોય છે.

યદેવ હેશ્યાદિકં થોગ્યત્વાત્ સમ્ભવતિ પञ्चेन्द्रियतिर्यग्ચોનિકાનાં તદેવ હેશ્યાદિકં ભણિત્વં નાન્યદિતિ । ‘મણુસા જહા જીવા તહેવ નિરવસેસં’ મનુષ્યા યથા જીવા સ્તથૈવ નિરવશેષં જીવનદેવ સર્વાઽપિ પરિપાટી મનુષ્યેષુ વક્તવ્યેતિ । ‘વાળમંતરજોહસિયવેમાણિયા જહા અસુરકુમારા’ અસુરકુમારવદેવ વાનવ્યન્તરજ્યોતિષ્કવૈમાનિકાઃ ક્રિયાવાદિનો યાવદ્વૈનયિકવાદિનો સ્વન્તીતિ ॥મૂ૦ ૧॥

જીવનારકાદિ પञ્ચવિંશતિતમદણ્ડકૈષુ યત્ સમવસરણં યત્રાસ્તિ તત્ સમવસરણં વિભજ્ય તત્ર તત્રાક્તમ્, અથ તેષ્વેવ જીવાદિ પञ્ચવિંશતિતમદણ્ડકૈષુ આયુર્વધં નિરુપયન્નાહ-‘કિરિચાવાઈ ણં મંતે ।’ इत्यादि ।

મૂળમ્—કિરિચાવાઈ ણં મંતે ! કિં નેરહ્યાઉયં પકરેતિ તિરિક્ષજોણિયાઉયં પકરેતિ ? મણુસાઉયં પકરેતિ ? દેવાઉયં પકરેતિ ? ગોયમા ! નો નેરહ્યાઉયં પકરેતિ, નો તિરિક્ષજોણિયાઉયં પકરેતિ, મણુસાઉયંપિ પકરેતિ દેવાઉયં પિ પકરેતિ ।

તં ભાણિયવ્વ’ પરંતુ જીવ કે કથન કી અપેક્ષા इनके कथन में यही विशेषता जाननी चाहिये कि इन पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्चोनिकों को जो पद संभवित होता हो वे ही पद उनमें कहने चाहिये—अन्य पद नहीं । ‘मणुस्सा जहा जीवा तहेव निरवसेसं’ मनुष्यो’ में जीव के जैसी ही समस्त परिपाटी कहनी चाहिये, ‘वाणमंतरजोहसियवेमाणिया जहा असुरकुमारा’ असुरकुमारो’ के जैसी परिपाटी वानव्यन्तरज्योतिषिक और वैमानिक इनमें कहनी चाहिये, अर्थात् ये सब क्रियावादी भी होते हैं अक्रियावादी भी होते हैं अज्ञानवादी भी होते हैं और वैनयिकवादी भी होते हैं इत्यादि ॥१॥

‘નવર’ જ અર્થિ તં ભાણિયવ્વ’ પરંતુ જીવના કથનની અપેક્ષાથી તેઓના કથનમાં એજ વિશેષપણું છે કે—આ પંચેન્દ્રિયતિર્યગ્ચોનિકોને જે પદો સંભવિત થતા હોય એજ પદો તેઓમાં કહેવા જોઈએ. તેથી અન્ય કહેવાના નથી.

‘મણુસા જહા જીવા તહેવ નિરવસેસં’ મનુષ્યોમાં જીવના કથન પ્રમાણે જ સઘળું કથન કહેવું જોઈએ. ‘વાળમંતરજોહસિય વેમાણિયા જહા અસુરકુમારા’ અસુરકુમારોના સંબંધમાં જે પ્રમાણે કથન કહેલ છે, એજ પ્રમાણે વાનવ્યન્તર જ્યોતિષ્ક અને વૈમાનિકોના સંબંધમાં કહેવું જોઈએ. અર્થાત્ આ બધા ક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. તે સમજવું. ॥સૂ૦૧॥

जइ देवाउयं पकरेंति ? किं भवणवासिदेवाउयं पकरेंति जाव
वेमाणियदेवाउयं पकरेंति गोयमा ! नो भवणवासिदेवाउयं
पकरेंति, नो बाणसंतरदेवाउयं पकरेंति, नो जोइस्सिय देवाउयं
पकरेंति, वेमाणियदेवाउयं पकरेंति । अकिरियावाई णं भंते !
जीवा किं नेरइयाउयं पकरेंति तिरिक्ख० पुच्छा, गोयमा ! नेर-
इयाउयं पि पकरेंति जाव देवाउयं पि पकरेंति । एवं अन्नाणिय-
वाई वि वेणइयवाई वि । सलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावाई
किं नेरइयाउयं पकरेंति, पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइयाउयं पक-
रेंति एवं जहा जीवा तहेव सलेस्सा वि चडाहिं वि समोसरणेहिं
भाणियवा । कणहलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावाई किं नेर-
इयाउयं पकरेंति, पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति
नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पकरेंति नो देवा-
उयं पकरेंति । अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाई य
चत्तारि वि आउयाइं पकरेंति । एवं नीललेस्सा वि काउलेस्सा
वि । तेउलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावाई किं नेरइयाउयं
पकरेंति पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति नो तिरि-
क्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पकरेंति, देवाउयं पि पक-
रेंति । जइ देवाउयं पकरेंति तहेव । तेउलेस्सा णं भंते ! जीवा
अकिरियावाई किं नेरइयाउयं पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइयाउयं
पकरेंति मणुस्साउयं पि पकरेंति तिरिक्खजोणियाउयं पि
पकरेंति, देवाउयं पि पकरेंति । एवं अन्नाणियवाई वि वेणइय-
वाई वि जहा तेउलेस्सा, एवं पम्हलेस्सा वि सुकलेस्सा वि
नायवा । सलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावाई किं नेरइयाउयं
पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति नो तिरिक्ख० नो मणुस्स०

नो देवाउयं पकरेंति । कण्हपक्खिया णं भंते ! जीवा अकिरि-
यावाई किं नेरइयाउयं पुच्छा, गोयमा ! नेरइयाउयं पि पकरेंति ।
एवं चउठ्विहं पि । एवं अन्नाणियवाई वि, वेणइयवाई वि ।
सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा । सम्मदिट्ठी णं भंते ! जीवा किरि-
यावाई किं नेरइयाउयं पुच्छा गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति,
नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति मणुस्साउयं पकरेंति देवाउयं
पि पकरेंति । मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया । सम्मामिच्छा-
दिट्ठी भंते ! जीवा अन्नाणियवाई किं नेरइयाउयं जहा अलेस्सा ।
एवं वेणइयवाई वि । णाणी आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी
य ओहियनाणी य जहा सम्मदिट्ठी । मणपज्जवनाणी णं भंते !
पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति नो तिरिक्ख० नो
मणुस्स० देवाउयं पकरेंति । जइ देवाउयं पकरेंति किं भवण-
वासि० पुच्छा, गोयमा ! णो भवणवासिदेवाउयं पकरेंति
नो वाणमंतर० नो जोइसिय० वेसाणियदेवाउयं पकरेंति ।
केवलनाणी जहा अलेस्सा । अन्नाणी जाव विभंगनाणी जहा
कण्हपक्खिया, सन्नासु चउसु वि जहा सलेस्सा । नो सन्नोवउत्ता
जहा मणपज्जवनाणी सवेदगा जाव नपुंसगवेयगा जहा सलेस्सा ।
अवेयगा जहा अलेस्सा । सकसाई जाव लोभकसाई जहा सले-
स्सा । अकसाई जहा अलेस्सा । सजोगी जाव कायजोगी
जहा सलेस्सा । अजोगी जहा अलेस्सा । सागारोवउत्ता य
अणागारोवउत्ता य जहा सलेस्सा ॥सू० २॥

छाया—क्रियावादिनः खलु भदन्त ! जीवाः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति ?
तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति ? मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति ? देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति ?
गौतम ! नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति नो तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति मनुष्यायुष्क-
मपि प्रकुर्वन्ति देवायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति । यदि देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति किं भवनवासि-

देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति यावद्वैवमानिकदेवायुष्कं प्रकुर्वन्ति ? गौतम ! नो भवनवासि-
 देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति, नो वानव्यन्तरदेवायुष्कं प्रकुर्वन्ति नो ज्योतिष्कदेवा-
 युष्कं प्रकुर्वन्ति, वैमानिकदेवायुष्कं प्रकुर्वन्ति । अक्रियावादिनः खलु भदन्त !
 जीवाः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति तिर्यगू० पृच्छा, गौतम ! नैरयिकायुष्कमपि
 प्रकुर्वन्ति यावद्देवायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति ! एवमज्ञानिकवादिनोऽपि, वैनयिक-
 वादिनोऽपि । सलेश्याः खलु भदन्त ! जीवाः क्रियावादिनः किं नैरयिकायुष्कं
 प्रकुर्वन्ति पृच्छा, गौतम ! नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, एवं यथैव जीवा
 स्तथैव सलेश्या अपि चतुर्भिरपि समवसरणै र्भणितव्याः कृष्णलेश्याः खलु भदन्त
 जीवाः क्रियावादिनः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति पृच्छा, गौतम ! नो नैरयि-
 कायुष्कं प्रकुर्वन्ति, नो तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति
 नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति । अक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनश्च
 चत्वारि अपि आयुष्काणि प्रकुर्वन्ति, एव नीललेश्या अपि, कापोतलेश्या अपि
 तेजोलेश्याः खलु भदन्त ! जीवाः क्रियावादिनः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति
 पृच्छा, गौतम ! नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, नो तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति,
 मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति, देवायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति । यदि देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति तथैव ।
 तेजोलेश्याः खलु भदन्त ! जीवाः अक्रियावादिनः किं नैरयिकायुष्कं पृच्छा,
 गौतम ! नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, मनुष्यायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति, तिर्यग्योनिका-
 युष्कमपि प्रकुर्वन्ति, देवायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति । एवमज्ञानिकवादिनोऽपि, वैनयिक-
 वादिनोऽपि यथा तेजोलेश्याः । एवं पद्मलेश्या अपि शुक्ललेश्या अपि ज्ञातव्याः ।
 अलेश्याः खलु भदन्त ! जीवाः क्रियावादिनः किं नैरयिकायुष्कं पृच्छा, गौतम !
 नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, नो तिर्यगू० नो मनु० नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति । कृष्ण-
 पाक्षिकाः खलु भदन्त ! जीवा अक्रियावादिनः किं नैरयिकायुष्कं पृच्छा, गौतम !
 नैरयिकायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति एवं चतुर्विधमपि । एवमज्ञानिकवादिनोऽपि, वैनयिक-
 वादिनोऽपि । शुक्लपाक्षिका यथा सलेश्याः । सम्यग्दृष्टयः खलु भदन्त ! जीवाः
 क्रियावादिनः किं नैरयिकायुष्कं पृच्छा, गौतम ! नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति,
 नो तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति देवायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति ।
 मिथ्यादृष्टयो यथा कृष्णपाक्षिकाः । सम्यग्मिथ्यादृष्टयः खलु भदन्त ! जीवाः
 अज्ञानिकवादिनः किं नैरयिकायुष्कं० यथा अलेश्याः । एवं वैनयिकवादिनोऽपि ।
 ज्ञानि आभिनिबोधिकज्ञानी च श्रुतज्ञानि च अवधिज्ञानी च यथा सम्यग्दृष्टिः ।
 मनःपर्यवज्ञानिनश्च भदन्त ! पृच्छा, गौतम ! नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति नो तिर्यगू०
 नो मनुष्य० देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति । यदि देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति किं भवनवासि० पृच्छा,

ગૌતમ ! નો મવનવાસિ દેવાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ નો વાનવ્યન્તરં નો જ્યોતિષ્કં
 વૈમાનિકદેશયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ । કેવલજ્ઞાનિનો યથા અલેશ્યાઃ । અજ્ઞાનિનો યાવદ્
 વિમદ્જ્ઞાનિનો યથા કૃષ્ણપાક્ષિકાઃ । સંજ્ઞાસુ ચતસૃષ્વપિ યથા સલેશ્યાઃ । નો સંજ્ઞોપ-
 યુક્તા યથા મનઃપર્યવજ્ઞાનિનઃ । સવેદકા યાવત્ નપુંમકવેદકાઃ યથા સલેશ્યાઃ ।
 અવેદકા યથા અલેશ્યાઃ । સક્રવાયિનો યાવત્ લોમકપાયિણઃ યથા સલેશ્યાઃ । અક-
 પાયિનો યથા અલેશ્યાઃ । સયોગિનો યાવત્ કાયયોગિનો યથા સલેશ્યાઃ । અયોગિનો
 યથા અલેશ્યાઃ । સાકારોપયુક્તાશ્ચ, અનાકારોપયુક્તાશ્ચ યથા સલેશ્યાઃ ॥૬૦ ૨॥

ટીકા—‘કિરિયાવર્દે ણં મંતે ! જીવા’ ક્રિયાવાદિનઃ સ્વલુ મદન્ત ! જીવાઃ
 ‘કિં નેરહ્યાયં પકરેતિ’ કિં નૈરયિકાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ નારકમદસમ્બન્ધિ આયુ-
 વંધનાતીત્યર્થઃ અથવા ‘તિરિક્તજોણિયાયં પકરેતિ’ તિર્યગ્યોનિકસમ્બન્ધિ
 આયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ તાદૃશાયુષ્કર્મવન્ધં કુર્વન્તીતિ, અથવા—‘મણુસ્સાયં પકરેતિ’
 મનુષ્યાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ અથવા ‘દેવાયં પકરેતિ’ દેવાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ ? इति
 પ્રશ્નઃ મગવાનાહ—‘ગોયમા’ इत्यादि, ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘નો નેરહ્યાયં પક-
 રેતિ’ નો નૈરયિકાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ નારકમદસમ્બન્ધિ આયુષ્કર્મવન્ધનં કુર્વન્તી-

જીવ નારકાદિ ૨૫ દળકોં મેં જો-જો સમવસરણ જહાં-જહાં
 હે વહ-વહ સમવસરણ વહાં-વહાં વિમદ્ત કરકે પ્રકટ ક્રિયા મયા હૈ ।
 અથ ઉન્હીં જીવાદિ ૨૫ દળકોં મેં આયુ કે વન્ધ કા નિરૂપણ ક્રિયા
 જાતા હૈ ।—‘કિરિયાવર્દે ણં મંતે ! જીવા નેરહ્યાયં પકરેતિ’—

ટીકાર્થ—હે મદન્ત જો જીવ ક્રિયાવાદી હેં એ કયા નૈરયિક આયુ-
 ષ્ક કા વન્ધ કરતે હેં ? ‘તિરિક્તજોણિયાયં પકરેતિ’ તિર્યગ્ચાયાકા-
 વન્ધ કરતે હેં ? ‘મણુસ્સાયં પકરેતિ’ મનુષ્યાયુકા વન્ધ કરતે હેં ?
 ‘દેવાયં પકરેતિ’ અથવા-દેવાયુ કા વન્ધ કરતે હેં ? इसके उत्तर में
 प्रभुश्री कहते हैं—‘गोयमा । नो नेरह्यायं पकरेति’ हे गौतम । क्रिया-
 वादी जीव नैरयिक आयुका वन्ध नहीं करते है, ‘णो तिरिक्तजोणिया-

અવ નારક વિગેરે દંડકોમાં જે-જે સમવસરણ ન્યાં ન્યાં હાય છે,
 તે તે સમવસરણ ત્યાં ત્યાં જુદા જુદા પ્રગટ કરેલા છે હવે તે જીવ વિગેરે
 ૨૫ પચ્ચીસ દંડકોમાં આયુના બંધનું નિરૂપણ કરવામાં આવે છે.—
 ‘કિરિયાવર્દે ણં મંતે ! જીવા કિં નેરહ્યાયં પકરેતિ’ इत्यादि

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ જે જીવો ક્રિયાવાદી છે, તેઓ શું નૈરયિક
 આયુષ્યનો બંધ કરે છે ? ‘તિરિક્તજોણિયાયં પકરેતિ’ તિર્યગ્ચ આયુષ્યનો
 બંધ કરે છે ? ‘દેવાયં પકરેતિ’ અથવા દેવ આયુષ્યનો બંધ કરે છે ? આ
 પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘ગોયમા । નો નેરહ્યાયં પકરેતિ’ હે ગૌતમ !
 ક્રિયાવાદી જીવ નૈરયિક આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી. ‘ણો તિરિક્તજોણિયા-

ત્યર્થઃ । ‘નો તિરિક્તજોણિયાઉયં પકરેતિ’ નો-ન વા તિર્યગ્યોનિકાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ કિન્તુ ‘મણુસ્સાઉયં પકરેતિ’ મનુષ્યાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ, દેવાયુષ્કમપિ કુર્વન્તીત્યુત્તરમ્ । ‘જહ દેવાઉયં પકરેતિ’ યાદે ક્રિયાવાદિનો જીવા દેવાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ તદા ‘કિં ભવળવાસિ દેવાઉયં પકરેતિ’ જાવ વેમાણિય દેવાઉયં પકરેતિ’ કિં ભવળવાસિદેવાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ યાવત્ વૈમાનિક-દેવાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ યાવત્પદેન વાનવ્યન્તરજ્યોતિષ્કદેવયોઃ સંગ્રહઃ ઇષુ કત-મદાયુર્વન્ધં પ્રકુર્વન્તીતિ પ્રશ્નઃ । મળવાનાહ-‘ગોયમા’ इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम । ‘णो भवणवासि देवाउयं पकरेति’ नो भवनवासि देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति ‘णो वाणमंतरदेवाउयं पकरेति’ नो न वा वानव्यन्तरदेवायुष्कं प्रकुर्वन्ति ‘णो जोइसियदेवाउयं पकरेति’ नो न वा ज्योतिषिकदेवायुष्कं प्रकुर्वन्ति अपि तु ‘वेमाणियादेवाउयं पकरेति’ वैमानिकदेवायुष्कं प्रकुर्वन्ति क्रियावादिनो

ઉયં પકરેતિ’ તિર્યગ્ય આયુ કા બન્ધ નહીં કરતે હું, કિન્તુ ‘મણુસ્સાઉયં પિ પકરેતિ’ દેવાઉયં પિ પકરેતિ’ મનુષ્ય આયુકા ભી બન્ધ કરતે હું’ ઓર દેવાયુ કા ભી બન્ધ કરતે હું । ‘જહ દેવાઉયં પકરેતિ કિં ભવળ-વાસિદેવાઉયં પકરેતિ જાવ વેમાણિયદેવાઉયં પકરેતિ’ યદિ વે દેવાયુ કા બન્ધ કરતે હું તો કયા ભવળવાસી દેવોં કી આયુકા બન્ધ કરતે હું યા યાવત્ વૈમાનિક દેવોં કી આયુકા બન્ધ કરતે હું ? યહાં યાવત્ શબ્દ સે વાનવ્યન્તર ઓર જ્યોતિષિક इन दो का ग्रहण हुआ है । उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-‘गोयमा ! णो भवणवासिदेवाउयं पकरेति णो वाणमंतर देवाउयं पकरेति’ हे गौतम ! क्रियावादी जीव न भवनवासी देवों की आयुका बन्ध करते हैं न वानव्यन्तरदेवों की आयुका बन्ध करते हैं ‘णो जोइसिय देवाउयं पकरेति’ न ज्योतिषिक देवों की आयुका बन्ध करते हैं । अपितु ‘वेमाणियादेवाउयं पकरेति’ वे वैमानिक देवोंकी आयुका बन्ध

ઉયં પકરેતિ’ તિર્યગ્ય આયુને બંધ કરતા નથી. પરંતુ ‘મણુસ્સાઉયં પકરેતિ’ દેવાઉયં પકરેતિ’ મનુષ્ય આયુને બંધ કરે છે, અને દેવ આયુને બંધ કરે છે. ‘જહ દેવાઉયં પકરેતિ કિં ભવળવાસી દેવાઉયં પકરેતિ’ નો તેઓ દેવ આયુને બંધ કરે છે, તો શું તેઓ ભવળવાસી દેવોના આયુષ્યને બંધ કરે છે ? યાવત્ વૈમાનિક દેવોના આયુષ્યને બંધ કરે છે ? અહિયાં યાવત્ શબ્દથી વાનવ્યન્તર અને જ્યોતિષિક આ બન્ને ગ્રહણ કરાયા છે આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘ગોયમા ! ણો ભવળવાસિદેવાઉયં પકરેતિ ણો વાણ-મંતરદેવાઉયં પકરેતિ’ હે ગૌતમ ! ક્રિયાવાદી જીવ ભવળવાસિ દેવોની આયુ-ષ્યને બંધ કરતા નથી તથા વાનવ્યન્તર દેવોની આયુષ્યને બંધ કરતા નથી. ‘ણો જોહસિય દેવાઉયં પકરેતિ’ જ્યોતિષિક દેવોની આયુષ્યને બંધ કરતા નથી

જીવા ઇતિ । ‘અકિરિયાવાઈ ણં મંતે ! જીવા કિં નેરહયાઉયં પકરેંતિ તિરિવ્વ-
પુચ્છા’ અક્રિયાવાદિનઃ સ્વલ્પ મદન્ત ! જીવાઃ કિં નૈરયિકાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ તિર્ય-
ગ્યોનિકાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ દેવાયુષ્કં વા પ્રકુર્વન્તિ ઇતિ પ્રશ્નઃ પૃચ્છયા સંગૃહ્યતે ।
મગવાનાહ-‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ, ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘નેરહયાઉયં પિ પકરેંતિ જાવ
દેવાઉયં પિ પકરેંતિ’ નૈરયિકાયુષ્કમપિ પ્રકુર્વન્તિ યાવદ્ દેવાયુષ્કમપિ પ્રકુર્વન્તિ
અત્ર યાવત્પદેન તિર્યગ્યોનિકાયુષ્કમપિ પ્રકુર્વન્તિ મનુષ્યાયુષ્કમપિ પ્રકુર્વન્તી-
ત્યનયોઃ સંગ્રહો ભવતીતિ । ‘એવં અન્નાણિયવાઈ વિ, વેળહયવાઈ વિ’ એવમ્-અક્રિ-
યાવાદિન ઇત્થ અજ્ઞાનિકવાદિનોઽપિ વૈનયિકવાદિનોઽપિ નૈરયિકાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ,
તિર્યગ્યોનિકાયુષ્કમપિ પ્રકુર્વન્તિ મનુષ્યાયુષ્કમપિ પ્રકુર્વન્તિ ‘સલ્લેસ્સાણં મંતે !
જીવા કિરિયાવાઈ’ સલ્લેશ્ચાઃ સ્વલ્પ મદન્ત ! જીવાઃ ક્રિયાવાદિનઃ ‘કિં નેરહયાઉયં

કરતે હૈં । ‘અકિરિયાવાઈ ણં મંતે ! જીવા કિં નેરહયાઉયં પકરેંતિ તિરિ-
વ્વ-પુચ્છા’ હે મદન્ત ? અક્રિયાવાદી જીવ કયા નૈરયિક આયુકા
બન્ધ કરતે હૈં ? યા તિર્યગ્યોનિકા કી આયુકા બન્ધ કરતે હૈં ? યા મનુષ્ય
આયુકા બન્ધ કરતે હૈં ? યા દેવાયુષ્ક કા બન્ધ કરતે હૈં ? હસકે ઉત્તર
મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં-‘ગોયમા ! નેરહયાઉયં પિ પકરેંતિ’ હે ગૌતમ ! અક્રિ-
યાવાદી નૈરયિકા કી આયુકા ખી બન્ધ કરતે હૈં યાવત્ દેવાયુકા ખી
બન્ધ કરતે હૈં । યહાં યાવત્પદ સે તિર્યગ્યોનિકા કી આયુકા ખી વે
બન્ધ કરતે હૈં ઓર મનુષ્ય આયુકા ખી વે બન્ધ કરતે હૈં એસા પાઠ
ગૃહીત હુ ખા હૈ । ‘એવં અન્નાણિયવાઈ વિ વેળહયવાઈ વિ’ હસી પ્રકાર સે
અજ્ઞાનવાદી ખી ઓર વૈનયિકવાદી ખી ચારોં ગતિયોં કે આયુષ્ક કા
બન્ધ કરતે હૈં । ‘સલ્લેસ્સાણં મંતે ! જીવા કિરિયાવાઈ’ હે મદન્ત !

પરંતુ ‘વેમાણિયદેવાઉયં પકરેંતિ’ તેઓ વૈમાનિકદેવોના આયુષ્યનો બંધ કરે છે.
‘અકિરિયાવાઈ ણં મંતે ! જીવા કિં નેરહયાઉયં પકરેંતિ તિરિવ્વ-પુચ્છા’ હે ભગ-
વન્ અક્રિયાવાદી જીવ શું નૈરયિક આયુષ્યનો બંધ કરે છે ? અથવા તિર્ય-
ગ્યોનિકાના આયુષ્યનો બંધ કરે છે ? અથવા મનુષ્ય આયુષ્યનો બંધ કરે છે ?
અથવા દેવ આયુષ્યનો બંધ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-
‘ગોયમા ! નેરહયાઉયં પિ પકરેંતિ’ હે ગૌતમ અક્રિયાવાદી નૈરયિકાના આયુ-
ષ્યનો પણ બંધ કરે છે, યાવત્ દેવ આયુષ્યનો પણ બંધ કરે છે. અક્રિયા
યાવત્પદથી તેઓ તિર્યગ્યોનિકાના આયુષ્યનો પણ બંધ કરે છે. અને
મનુષ્ય આયુષ્યનો પણ તેઓ બંધ કરે છે એ પ્રમાણેનો પાઠ ગ્રહણ કરાયો છે.
‘એવં અન્નાણિયવાઈ વિ. વેળહયવાઈ વિ’ એજ પ્રમાણે અજ્ઞાનવાદી અને વૈન-
યિકવાદી પણ ચારે ગતિયોના આયુષ્યનો બંધ કરે છે. ‘સલ્લેસ્સાણં મંતે !

પકરેંતિ પુચ્છા' કિં નૈરયિકાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ તિર્યગ્યોનિકાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ મનુ-
ષ્યાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ દેવાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ ? इति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते, भगवा-
नाह—‘गोयमा’ इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘नो नेरइयाउयं एवं जहेव जीवा
तहेव सलेस्सा वि चउहि वि समोसरणेहिं भाणियव्वा’ नो नैरयिकायुष્कं एवं
यथैव जीवा स्तथैव सलेइया अपि चतुर्भिः समवसरणै र्भणितव्याः, यथा क्रिया-
वादिनो जीवाः नैरयिकायुष्कं न प्रकुर्वन्ति नो तिर्यगायुष्कं प्रकुर्वन्ति अपि तु
मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति तथा देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति. यदि देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति तदा
किं भवनपत्यादि वैमानिकान्तेषु आयुषो बन्धं कुर्वन्तीति प्रश्नः, नो भवनपत्या-
दिषु किन्तु वैमानिकेष्वेव आयुर्वन्धं कुर्वन्तीत्युत्तरम् एतदेव ‘जहेव जीवा तहेव

लेइयावाले क्रियावादी जीव क्या नैरयिक आयुका बन्ध करते हैं ?
या तिर्यग्योनिक की आयुका बन्ध करते हैं ? या मनुष्यायु का बन्ध
करते हैं ? या देवायुष्कका बन्ध करते हैं ? इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते
हैं—हे गौतम ! ‘नो नेरइयाउयं एवं जहेव जीवा तहेव सलेस्सा वि
चउहि वि समोसरणेहिं भाणियव्वा’ जिस प्रकार क्रियावादी जीव
नैरयिकायुष्क का बन्ध नहीं करते हैं तिर्यग्योनिकायुष्क का बन्ध
नहीं करते हैं, किन्तु मनुष्य आयुका बन्ध करते हैं देवायुष्क का बन्ध
करते हैं—देवायुष्क में भी वे केवल वैमानिक देवों की ही आयुका बन्ध
करते हैं भवनपत्यादिकों की आयुका बन्ध नहीं करते हैं उसी प्रकार
से सलेइय जीव भी नैरयिकायुष्क का बन्ध नहीं करते हैं इत्यादि
प्रकार से चारों समवसरणवाले सलेइय जीवों का सब कथन जीव के
जैसा ही जानना चाहिये, यही बात ‘जहेव जीवा तहेव सलेस्सा वि’

जीवा किरियावाइ’ હે ભગવન્ લેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી જીવો શું નૈરયિક આયુ
ધ્યનો બંધ કરે છે ? અથવા તિર્યગ્યોનિકોના આયુધ્યનો બંધ કરે છે ?
અથવા મનુષ્યના આયુને બંધ કરે છે ? અથવા દેવ આયુધ્યનો બંધ કરે છે ?
આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—હે ગૌતમ ! ‘નો નેરइया-
उयं एवं जहेव जीवा तहेव सलेस्सावि चउहिवि समोसरणेहिं भाणियव्वा’ જે
પ્રમાણે ક્રિયાવાદી જીવો નૈરયિક આયુધ્યનો બંધ કરતા નથી, તિર્યગ્યોનિકોના
આયુધ્યનો બંધ કરતા નથી. પરંતુ મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે, તથા દેવ આયુધ્યનો
બંધ કરે છે, દેવ આયુમાં પણ તેઓ કેવળ વૈમાનિક દેવોના જ આયુનો
બંધ કરે છે. ભવનપતિ વિગેરેના આયુધ્યનો બંધ કરતા નથી, એજ પ્રમાણે
લેશ્યાવાળા જીવ પણ નૈરયિકાયુધ્યનો બંધ કરતા નથી. વિગેરે પ્રકારનું સઘળું
કથન જીવના પ્રકરણમાં કહ્યા અનુસાર અહીંયાં સમજવું એજ વાત ‘જહેવ जीवा

સહેસ્સા વિ' इत्यनेन प्रकरणेन दर्शितमिति । 'कण्ठलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावाई किं नेरइयाउयं पकरे'ति पुच्छा' कृष्णलेश्याः खलु भदन्त ! जीवाः क्रियावादिनः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति यद्वा तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति अथवा मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति अथवा देवायुष्कं प्रकुर्वन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते । मगधानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम । 'नो नेरइयाउयं पकरे'ति' नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति क्रियावादिनः कृष्णलेश्याः जीवाः तथा 'नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरे'ति' नो न वा तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति अपि तु 'मणुस्साउयं पकरे'ति' मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति किन्तु 'नो देवाउयं पकरे'ति' नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति, कृष्णलेश्याः जीवाः क्रियावादिनो देवनारकापेक्षया

इस प्रकरण से स्पष्ट की गई है । 'कण्ठलेस्सा णं भंते ! जीवा किरिया-
वाई किं नेरइयाउयं पकरे'ति पुच्छा ?' हे भदन्त ! कृष्णलेश्यावाले
क्रियावादी जीव क्या नैरयिक आयुका बन्ध करते हैं ? या तिर्यगायु
का बन्ध करते हैं, या मनुष्य आयुका बन्ध करते हैं या देवायु का
बन्ध करते हैं ? इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—'गोयमा' हे गौतम !
'नो नेरइयाउयं पकरे'ति,' कृष्णलेश्यावाले क्रियावादी जीव नैरयिक
आयुका बन्ध नहीं करते हैं तथा—'नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरे'ति' न
वे तिर्यगायु का बन्ध करते हैं, अपितु—वे 'मणुस्साउयं पकरे'ति०' मनु-
ष्यायुका ही बन्ध करते हैं । 'नो देवाउयं पकरे'ति' देवायु का बन्ध नहीं
करते हैं । ऐसा जो यह कथन किया गया है कि कृष्णलेश्यावाले क्रिया-
वादी जीव मनुष्य आयुका ही बन्ध करते हैं सो यह देव नारकों की

તહેવ સહેસ્સા વિ' આ સૂત્રપાઠથી સ્પષ્ટ કરેલ છે. 'કણ્ઠલેસ્સા ણં ભંતે ! જીવા કિરિયા-
વાઈ કિં નેરહયાઉયં પકરે'તિ પુચ્છા' હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્રિયા-
વાદી જીવો શું નૈરયિક આયુષ્યનો બંધ કરે છે ? અથવા તિર્યગ્ય આયુષ્યનો
બંધ કરે છે ? અથવા મનુષ્ય આયુષ્યનો બંધ કરે છે ? અથવા દેવ આયુષ્યનો બંધ
કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—'ગોયમા !'
હે ગૌતમ ! 'નો નેરહયાઉયં પકરે'તિ' હે ગૌતમ ! કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી
જીવો નૈરયિકના આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી. 'નો તિરિક્કજોણિયાઉયં પક-
રે'તિ' તેઓ તિર્યગ્ય યોનીવાળાઓના આયુષ્યનો પણ બંધ કરતા નથી પરંતુ
તેઓ 'મણુસ્સાઉયં પકરે'તિ' મનુષ્ય આયુષ્યનો જ બંધ કરે છે. જો દેવાઉયં પકરે'તિ'
દેવ આયુષ્યનો તેઓ બંધ કરતા નથી આ પ્રમાણે જે આ કથન કર્યું છે, કે
'કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી જીવો મનુષ્ય આયુષ્યનો જ બંધ કરે છે. તે તે

વિજ્ઞેયા इति मनुष्यतिरथोः कृष्णादि त्रितय लेश्याकाले आयुर्वन्धाभावादिति ।
'अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाई य, चत्तारि वि आउयाई पकरेंति'
कृष्णलेश्या अक्रियावादिनः, अज्ञानिकवादिनः, वैनयिकवादिनश्च जीवाः चत्वारि
अपि आयुष्काणि नारकतिर्यग्मनुष्यदेवसम्बन्धीनि प्रकुर्वन्ति, चतुष्प्रकारकमपि
आयुष्कर्म बध्नन्तीति भावः । 'एवं नीललेस्सा वि काउलेस्सा वि' एवं कृष्ण-
लेश्यवदेव नीललेश्यावन्तः कापोतलेश्यावन्तश्च अक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनो
वैनयिकवादिनश्च जीवाः चतुष्प्रकारकमपि आयुष्कर्म बध्नन्तीति भावः । क्रिया-
वादिनो जीवास्तु केवलं मनुष्यायुष एव बन्धं कुर्वन्तीति 'तेउलेस्सा णं भंते !
जीवा किरियावाई किं नेरइयाउयं पकरेंति पुच्छा' तेजोलेश्याः खलु भदन्त !

અપેક્ષા સે કહા ગયા હૈ' કયોં કી મનુષ્ય ઔર તિર્યશ્ચ કૃષ્ણાદિ ત્રિતય
લેશ્યા કે સદ્ભાવકાલ મેં આયુકા બન્ધ નહીં કરતે હૈ' । 'અકિરિયાવાઈ
અન્નાણિયવાઈ વેણઈયવાઈય ચત્તારિ વિ આઝયાઈ પકરેંતિ' અક્રિયાવાદી,
અજ્ઞાનવાદી, વૈનયિકવાદી એ સઘ ચારોં મી આયુઓં કા બન્ધ કરતે હૈ' ।
કૃષ્ણલેશ્યાવાલે અક્રિયાવાદી જીવ 'અન્નાણિયવાઈ' અજ્ઞાનવાદી જીવ
ઔર 'વેણઈયવાઈય' વૈનયિકવાદી જીવ ચારોં આયુઓં કા બન્ધ કરતે હૈ' ।
'એવં નીલલેસ્સા વિ કાઝલેસ્સા વિ' હસી પ્રકાર નીલલેશ્યાવાલે ઔર
કાપોતલેશ્યાવાલે અક્રિયાવાદી જીવ, અજ્ઞાનિકવાદી જીવ એવં વૈનયિક-
વાદી જીવ ચારોં પ્રકાર કી આયુ કા બન્ધ કરતે હૈં । ઔર ક્રિયાવાદી
જીવ માત્ર મનુષ્યાયુ કા હી બન્ધ કરતે હૈં 'તેઝલેસ્સા ણં મંતે ! જીવા
કિરિયાવાઈ કિં નેરહ્યાઝયં પકરેંતિ પુચ્છા' હે ભદન્ત ! તેજોલેશ્યાવાલે

કથન આ દેવ નારકોની અપેક્ષાથી કહેલ છે. કેમ કે-મનુષ્ય અને તિર્યચ કૃષ્ણ
વિગેરે ત્રણ લેશ્યાના સદ્ભાવકાળમાં આયુનો બંધ કરતા નથી. 'અકિરિયા-
વાઈ અન્નાણિયવાઈ વેણઈયવાઈ ય ચત્તારિ વિ આઝયાઈ પકરેંતિ' અક્રિયાવાદી
અજ્ઞાનવાદી, વૈનયિકવાદી એ બધા ચારે પ્રકારના આયુષ્યનો બંધ કરે છે,
કૃષ્ણલેશ્યાવાળા અક્રિયાવાદી જીવ 'અન્નાણિયવાઈ' અજ્ઞાનવાદી જીવ અને
'વેણઈયવાઈય' વૈનયિકવાદી જીવ ચારે પ્રકારના આયુનો બંધ કરે છે, 'એવં
નીલલેસ્સા વિ કાઝલેસ્સા વિ' એજ પ્રમાણે નીલલેશ્યાવાળા અને કાપોતલેશ્યા
વાળા જીવો અક્રિયાવાદી જીવ, અજ્ઞાનવાદી જીવ અને વૈનયિકવાદી જીવના
કથન પ્રમાણે ચારે પ્રકારના આયુષ્યનો બંધ કરે છે. અને ક્રિયાવાદી જીવ
કેવળ મનુષ્યાયુનો જ બંધ કરે છે. 'તેઝલેસ્સા ણં મંતે ! જીવા કિરિયાવાઈ
કિં નેરહ્યાઝયં પકરેંતિ' પુચ્છા' હે ભગવન્ તેજોલેશ્યાવાળા જીવો કે જેઓ

જીવાઃ ક્રિયાવાદિનઃ કિં નૈરયિકાયુગ્મં પ્રકુર્વન્તિ અથવા તિર્યગ્યોનિકાયુગ્મં પ્રકુર્વન્તિ અથવા મનુષ્યાયુગ્મં પ્રકુર્વન્તિ યદ્વા દેવાયુગ્મં પ્રકુર્વન્તીત્યેવ પ્રકારેણ પ્રવનઃ પૃચ્છયા સંગૃહ્યતે, મગવાનાહ—‘ગોયમા’ इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘नो नेरह्याउयं पकरे’ति’ नो नैरयिकायुग્मं प्रकुर्वन्ति तेजो-
लेख्याः क्रियावादिनः ‘नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरे’ति’ नो तिर्यग्योनिकायुग્मं प्रकुर्वन्ति, किन्तु ‘मणुस्साउयं पकरे’ति’ मनुष्यायुग્मं प्रकुर्वन्ति । ‘देवाउयं पि पकरे’ति’ देवायुग્ममपि प्रकुर्वन्ति । ‘जइ देवाउयं पकरे’ति’ यदि तेजोलेख्याः क्रियावादिनो जीवा देवसम्बन्धि आयुग્मं प्रकुर्वन्ति तदा किं भवनवासि देवा-
युग્मं प्रकुर्वन्ति यावत् वैमानिकदेवायुग્मं प्रकुर्वन्तीति प्रश्नः, उत्तरमाह—‘तहेव’ तथैव यथैव क्रियावादिजीवानां देवादी आयुर्वन्धो निरूपित स्तथैव तेजोलेख्य

जीव जो की क्रियावादी है, वे क्या नैरयिकायुग્म का बन्ध करते हैं ? अथवा तिर्यग्योनिक की आयु का बन्ध करते हैं ? अथवा मनुष्य आयु का बन्ध करते हैं ? अथवा देवायु का बन्ध करते हैं ? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—‘गोयमा ! नो नेरह्याउयं पकरे’ति’ हे गौतम ! वे नैर-
यिक आयु का बन्ध नहीं करते हैं ‘नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरे’ति’ तिर्यग्योनिक आयु का बन्ध नहीं करते हैं किन्तु वे ‘मणुस्साउयं पकरे’ति, देवाउयं पि पकरे’ति’ मनुष्य आयु का बन्ध करते हैं और देवायु का भी बन्ध करते हैं । ‘जइ देवाउयं पकरे’ति’ यदि वे तेजोलेख्यावाले क्रियावादी जीव देवायु का बन्ध करते हैं तो क्या वे भवनवासि देवायु का बन्ध करते हैं ? या यावत् वैमानिक देवायु का बन्ध करते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—‘तहेव’ हे गौतम ! जिस प्रकार से क्रियावादी जीवों

ક્રિયાવાદી હોય છે. તેઓ શું નૈરયિક આયુષ્યનો બંધ કરે છે ? અથવા તિર્યગ્યોનિક આયુષ્યનો બંધ કરે છે ? અથવા મનુષ્ય આયુષ્યનો બંધ કરે છે ? કે દેવ આયુષ્યનો બંધ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—
‘ગોયમા ! નો નેરહ્યાઉયં પકરે’તિ’ હે ગૌતમ ! તેઓ નૈરયિક આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી. ‘નો તિરિક્ખજોણિયાઉયં પકરે’તિ’ તિર્યગ્યોનિક આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી. પરંતુ તેઓ ‘મણુસ્સાઉયં પકરે’તિ, દેવાઉયં પિ પકરે’તિ’ મનુષ્ય આયુષ્યનો બંધ કરે છે. અને દેવ આયુષ્યનો પણ બંધ કરે છે. ‘જઈ દેવાઉયં પકરે’તિ’ તેજોલેખ્યાવાળા જીવો દેવ આયુષ્યનો બંધ કરે છે, તો શું તેઓ ભવનવાસી દેવ આયુષ્યનો બંધ કરે છે ? અથવા યાવત્ વૈમાનિક દેવ આયુષ્યનો બંધ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘તહેવ’ હે ગૌતમ ! જે પ્રમાણે ક્રિયાવાદી જીવોને વૈમાનિક દેવ આયુષ્યનો બંધ થવાના સંબંધમાં

ક્રિયાવાદિનામપિ વક્તવ્યમ્, ભવનવાસિ વાનવ્યન્તરજ્યોતિષ્કદેવાયુષ્કં ન કુર્વન્તિ કિન્તુ વૈમાનિકદેવાયુષ્કં કુર્વન્તીતિ ભાવઃ । 'તેઝલેસ્સા ણં મંતે ! જીવા અકિરિયાવાઈ કિં નેરહ્યાઝયં પુચ્છા' તેજોલેશ્યાઃ સ્વલ્લ મદન્ત ! જીવાઃ અક્રિયાવાદિનઃ કિં નૈરયિકાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ અથવા તિર્યગ્યોનિકાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ યદ્વા મનુષ્યાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ દેવાયુષ્કં વા પ્રકુર્વન્તીતિ પ્રશ્નઃ પૃચ્છયા સંગૃહ્યતે । મગવાનાહ—'ગોયમા' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'नो नेरइयाउयं पकरे'ति' नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति तेजोलेश्या अक्रियावादिनो जीवाः किन्तु 'मणुस्सा-उयं पि पकरे'ति' मनुष्यभवसमन्धि आयुष्कमपि प्रकुर्वन्ति तथा—'तिरिक्खजो-णियाउयं पि पकरे'ति' तिर्यग्योनिकायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति तथा—'देवाउयं पि पक-

કો-વૈમાનિક દેવાયુકા બન્ધ-હોના કહા ગયા હૈ ડસી પ્રકાર-સે તેજો-લેશ્યાવાલે ક્રિયાવાદીયોં કોં ભી વૈમાનિક દેવાયુકા હી બન્ધ કહા ગયા હૈ । ભવનવાસી વાનવ્યન્તર ઓર જ્યોતિષ્ક દેવાયુ કા બન્ધ કરના નહીં કહા ગયા હૈ । 'તેઝલેસ્સા ણં મંતે ! જીવા અકિરિયાવાઈ કિં નેરહ્યાઝયં પુચ્છા' હે મદન્ત । જો તેજોલેશ્યાવાલે જીવ અક્રિયાવાદી હોતે હૈં ડસકો કયા નૈરયિક આયુકા બન્ધ હોતા હૈ ? યા તિર્યગાયુકા બન્ધ હોતા હૈ ? યા મનુષ્યાયુ કા બન્ધ હોતા હૈ ? યા દેવાયુકા બન્ધ હોતા હૈ ? ડત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં—'ગોયમા ! નો નેરહ્યાઝયં પકરે'તિ' હે ગૌતમ ! ડનકે નૈરયિક આયુકા બન્ધ નહીં હોતા હૈ, કિન્તુ— 'મણુસ્સાઝયં પિ પકરેતિ' ડનકો મનુષ્યાયુ કા ભી બન્ધ હોતા હૈ ? 'તિરિક્કજોણિયાઝયં પકરેતિ' તિર્યગાયુકા ભી બન્ધ હોતા હૈ 'દેવાઝયં પિ પકરેતિ' ઓર

કથન કરેલ છે, - એજ પ્રમાણે - તેજોલેશ્યાવાળા - ક્રિયાવાદીયોને પણ વૈમાનિક દેવ આયુનો બંધ કહેલ છે, ભવનવાસી, વાનવ્યંતર, અને જ્યોતિષ્ક દેવ આયુનો બંધ કરવાનું કહેલ નથી. 'તેઝલેસ્સા ણં મંતે ! જીવા અકિરિયાવાઈ કિં નેરહ્યાઝયં પુચ્છા' હે ભગવન્ જે તેજોલેશ્યાવાળા હોયે. અક્રિયાવાદી હોય છે, તેઓને શું નૈરયિક આયુનો બંધ હોય છે ? અથવા તિર્યગ્ય આયુનો બંધ હોય છે ? અથવા મનુષ્ય આયુનો બંધ હોય છે ? અથવા દેવ આયુષ્યનો બંધ હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'ગોયમા ! નો નેરહ્યાઝયં પકરે'તિ' તેઓને નૈરયિક આયુનો બંધ થતો નથી. પરંતુ 'મણુસ્સાઝયં પિ પકરેતિ' તેઓને મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ હોય છે. 'તિરિક્કજોણિયાઝયં પિ પકરેતિ' તિર્યગ્ય આયુનો પણ બંધ હોય છે. 'દેવાઝયં પિ પકરેતિ' અને દેવાયુનો પણ બંધ હોય છે.

રેંતિ' દેવાયુષ્કમપિ પ્રકુર્વન્તીતિ માત્રઃ । 'एवं अन्नाणियवाहं वि वेणइयवाहं वि' एवम् अक्रियावादि वदेव तेजोलेश्या अज्ञानिकवादिनोऽपि वैनयिकवादिनोऽपि नैरयिकायुष्कं न प्रकुर्वन्ति किन्तु मनुष्यतिर्यग्गो निकदेवायुष्काणि प्रकुर्वन्तीति मात્રः । 'जहा तेउलेस्सा एवं पम्हलेस्सा वि सुक्कलेस्सा वि नायव्वा' यथा—येन प्रकारेण तेजोलेश्याः क्रियावादिनोऽक्रियावादिनश्चायुष्क कर्मबन्धनविषये निरूपिता स्तथैव—तेनैव प्रकारेण पद्मलेश्याः क्रियावादिनो जीवाः पद्मलेश्या अक्रियावादिनश्च जीवा ज्ञातव्याः तत्र क्रियावादिनः पद्मलेश्याः नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति न वा तिर्यगायुष्कं प्रकुर्वन्ति किन्तु मनुष्यायुष्कं देवायुष्कं च प्रकुर्वन्ति, अक्रियावादिनः पद्मलेश्यजीवास्तु नो नैरयिकायुष्कं कुर्वन्ति, किन्तु तिर्यग्मनुष्यदेवायुष्कं कुर्वन्तीति । एवं शुक्ललेश्यजीवाः क्रियाऽक्रियाविभाग

દેવાયુષ્કા સ્ત્રી બન્ધ હોતા હૈ' એવં અન્નાણિયવાહં વિ વેણઇયવાહં વિ' અક્રિયાવાદી કે જૈસે તેજોલેશ્યાવાલે અજ્ઞાનિકવાદી સ્ત્રી ઓર વૈનયિકવાદી સ્ત્રી નૈરયિકાયુષ્કા બન્ધ નહીં કરતે હૈં । કિન્તુ વે મનુષ્યાયુ, તિર્યગાયુ ઓર દેવાયુ કા બન્ધ કરતે હૈં । 'જહા તેઉલેસ્સા એવં પમ્હલેસ્સા વિ સુક્કલેસ્સા વિ નાયવ્વા' જિસ પ્રકાર સે તેજોલેશ્યાવાલે ક્રિયાવાદી ઓર અક્રિયાવાદી આદિ આયુષ્કર્મ કે બન્ધ કે વિષય મેં નિરૂપિત કિયે ગયે હૈં ઓસી પ્રકાર સે પદ્મલેશ્યાવાલે ક્રિયાવાદિ જીવ ઓર પદ્મલેશ્યાવાલે અક્રિયાવાદી આદિ જીવ સ્ત્રી જાનના ચાહિયે તથાચ—પદ્મલેશ્યાવાલે ક્રિયાવાદી જીવ નૈરયિકાયુ ઓર દેવાયુ કા બન્ધ નહીં કરતે હૈં કિન્તુ મનુષ્યાયુ ઓર દેવાયુ કા બન્ધ કરતે હૈં । પરંતુ પદ્મલેશ્યાવાલે અક્રિયાવાદી આદિ જીવ નૈરયિકાયુ કા બન્ધ નહીં કરતે

‘एवं अन्नाणियवाहं वि वेणइयवाहं वि’ अक्रियावादीनी जेम ज तेनेलेश्यावाणा अज्ञानवादी अने वैनयिकवादी पणु नैरयिक आयुनो बंध करता नथी परंतु तेजो मनुष्य आयु, तिर्यग आयु, अने देव आयुनो बंध करे छे. ‘जहा तेउलेस्सा एवं पम्हलेस्सा वि सुक्कलेस्सा वि नायव्वा’ जे प्रमाणे तेनेलेश्यावाणा क्रियावादी अने अक्रियावादीने आयुधर्मना बंधना संबंधमां निरूपित कथां छे जेज प्रमाणे पद्मलेश्यावाणा क्रियावादी जिव अने पद्मलेश्यावाणा अक्रियावादी जिवना संबंधमां पणु समजवुं तथा पद्मलेश्यावाणा क्रियावादी जिव नैरयिक आयु अने तिर्यग आयुनो बंध करता नथी परंतु मनुष्य अथु अने देव आयुनो बंध करे छे. परंतु पद्मलेश्यावाणा अक्रियावादी जिवो नैरयिक आयुनो बंध करता नथी, परंतु तिर्यग आयुनो मनु

વિભિન્ના અપિ ક્રમશઃ પદ્મલેશ્યજીવવદેવ જ્ઞાતવ્યાઃ વિવેચનીયાશ્ચેતિ ભાવઃ ।
'અલેસ્તા ણં મંતે । જીવા કિરિયાવાઈ કિં ણેરહયા પુચ્છા' અલેશ્યાઃ સ્વલુ મદન્ત ।
જીવાઃ ક્રિયાવાદિનઃ કિં નૈરયિકાયાુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ અથવા તિર્યગ્યોનિકાયાુષ્કં પ્રકુ-
ર્વન્તિ અથવા મનુષ્યાયાુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ દેવાયાુષ્કં વા પ્રકુર્વન્તિ, ઇતિ પ્રશ્નઃ પૃચ્છ્યા
સંગૃહ્યતે, મગવાનાહ—'ગોયમા' ઇત્યાદિ, 'ગોયમા' હે ગૌતમ ! 'નો નેરહયાઽયં
પકરેતિ નો તિરિક્ષ્વા૦ નો મણુસ્સા૦ નો દેવાઽયં પકરેતિ' નો નૈરયિકાયાુષ્કં
પ્રકુર્વન્તિ અલેશ્યાઃ ક્રિયાવાદિનો જીવાઃ નો તિર્યગ્યોનિકાયાુષ્કં કુર્વન્તિ ન વા
મનુષ્યાયાુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ નો—ન વા દેવાયાુષ્કમપિ પ્રકુર્વન્તિ અલેશ્યાઃ સ્વલુ મિદ્ધા
અયોગિનશ્ચ મવન્તિ, તેષાં ચૈર્વિધેભ્ય આયુષ્કેભ્યો મધ્યાદેકમપિ આયુર્વંધકત્વં

હૈં કિન્તુ તિર્યગાયુ કા મનુષ્યાયુ કા ઓર દેવાયુ કા હી બન્ધ કરતે હૈં ।
હસી પ્રકાર સે શુક્લલેશ્યાવાલે ક્રિયાવાદિ ઓર અક્રિયાવાદી આદિ
જીવ ક્રમશઃ પદ્મલેશ્યાવાલે જીવ કે જૈસે હી વિવેચનીય હૈં । 'અલે
સ્તા ણં મંતે । જીવા કિરિયાવાઈ કિં ણેરહયા પુચ્છા' હે મદન્ત ! જો
અલેશ્ય ક્રિયાવાદી હોતે હૈં—વે કયા નૈરયિક આયુકા બન્ધ કરતે હૈં ?
યા તિર્યગાયુ કા બન્ધ કરતે હૈં ? યા મનુષ્યાયુકા બન્ધ કરતે હૈં ? યા
દેવાયુકા બન્ધ કરતે હૈં ? હસકે ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં— ગોયમા ।
નો નેરહયાઽયં પકરેતિ નો તિરિક્ષ્વા૦ નો મણુસ્સા નો દેવાઽયં પક-
રેતિ' હે ગૌતમ વે ન નારકાયુકા બન્ધ કરતે હૈં ન તિર્યગાયુકા બન્ધ
કરતે હૈં, ન મનુષ્યાયુકા બન્ધ કરતે હૈં ઓર ન દેવાયુકા બન્ધ કરતે
હૈં । કયોં કિ અલેશ્ય અયોગી ઓર સિદ્ધ હોતે હૈં । અત્ત હનમેં ચારોં
આયુઓં કે ધીચ મેં સે કિસી મી આયુકી બંધકતા નહીં હોતી હૈં ।

પ્ય આયુનો, અને દેવ આયુનોજ બંધ કરે છે. જો રીતે શુક્લ લેશ્યાવાળા
ક્રિયાવાદી અને અક્રિયાવાદી જીવો ક્રમશઃ પદ્મલેશ્યાવાળા જીવની જેમ
સમજવા. 'અલેસ્તા ણં મંતે । જીવા કિરિયાવાઈ કિં નેરહયા પુચ્છા' હે ભગવન્
જે અલેશ્ય જીવ ક્રિયાવાદી હોય છે, તેઓ શું નૈરયિક આયુનો બંધ કરે છે ?
અથવા તિર્યગ્ય આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે ?
અથવા દેવ આયુનો બંધ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—
'ગોયમા । નો નેરહયાઽયં પકરેતિ' હે ગૌતમ ! તેઓ નારકાયુનો બંધ કરતા
નથી તથા તિર્યગ્ય આયુનો પણ તેઓ બંધ કરતા નથી મનુષ્ય આયુનો
પણ તેઓ બંધ કરતા નથી. તથા દેવાયુનો પણ બંધ કરતા નથી કેમ કે—
લેશ્યા રહિત અયોગી અને સિદ્ધ જીવ હોય છે. તેથી તેઓને ચારે આયુ પૈકી
કોઈપણ આયુનું બંધકપણું આવતું નથી કેમકે તેઓ તો ભવસિદ્ધિ

ન સમ્ભવતિ સિદ્ધિગમનયોગ્યત્વાત્ ‘કળ્હપક્લિયાણં મંતે ! જીવા અકિરિયાવાઈ કિં નેરહ્યાયં પુચ્છા’ કૃષ્ણપાક્ષિકાઃ સ્વલ્લ મદન્ત ! જીવા અક્રિયાવાદિનો નૈર-
યિકાયુક્તં પ્રકુર્વન્તિ અથવા તિર્યગ્યોનિકાયુક્તં પ્રકુર્વન્તિ યદ્વા મનુષ્યાયુક્તં પ્રકુ-
ર્વન્તિ દેવાયુર્વા પ્રકુર્વન્તીતિ પ્રશ્નઃ પૃચ્છયા સંગૃહ્યતે । મગવાનાહ—‘ગોયમા’
इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘नेरह्यायं पि पकरे’ति’ नैरयिकायुक्तामपि
प्रकुर्वन्ति ‘एवं चउविहं पि’ एवं चतुर्विधमपि आयुष्प्रकुर्वन्ति नैरयिकायुक्तं
प्रकुर्वन्ति तिर्यग्योनिकायुक्तामपि प्रकुर्वन्ति मनुष्यायुक्तामपि प्रकुर्वन्ति देवायुक्त-
मपि प्रकुर्वन्ति कृष्णपाक्षिकतया सिद्धिगमनस्य तदानीमसंभवेन चातुर्गतिक-
संसारस्यैव सद्भावात् । ‘एवं अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि’ एवम् अक्रिया-

વર્ણો કિં એ તો સિદ્ધિ મેં જાને કે હી યોગ્ય હોતે હિં । ‘કળ્હપક્લિયાણં મંતે ! જીવા અકિરિયાવાઈ કિં નેરહ્યાયં પુચ્છા’ હે મદન્ત ! જો કૃષ્ણપાક્ષિક જીવ અક્રિયાવાદી હોતે હિં વે કયા નૈરયિકાયુકા બન્ધ કરતે હિં ? યા તિર્યગાયુ કા બન્ધ કરતે હિં ? યા મનુષ્યાયુકા બન્ધ કરતે હિં ? યા દેવાયુકા બન્ધ કરતે હિં ? ઉત્તર મેં પ્રશુશ્રી કરતે હિં—‘ગોયમા ! નેરહ્યાયં પિ પકરે’તિ એવં ચઉવિહં પિ’ હે ગૌતમ ! વે નૈરયિક આયુકા બી બન્ધ કરતે હિં । તિર્યગાયુકા બી બન્ધ કરતે હિં । મનુષ્ય-
આયુકા બી બન્ધ કરતે હિં ઔર દેવાયુકા બી બન્ધ કરતે હિં । હસ પ્રકાર એ ચારો આયુઓ કા બન્ધ કરતે હિં । વર્ણોકી કૃષ્ણપાક્ષિક હોને સે હનમેં સિદ્ધિગમન કી ઉસ સમય અસંભવતા રહતી હૈ અતઃહનમેં ચતુર્વિધ સંસારકા હી સદ્ભાવ પાયા જાતા હૈ । ‘એવં અન્નાણિયવાઈ વિ વેણ-

ગતિમાં જ જવાને યોગ્ય હોય છે. ‘કળ્હપક્લિયાણં મંતે ! જીવા અકિરિયાવાઈ કિં નેરહ્યાયં પુચ્છા’ હે ભગવન્ જો કૃષ્ણપાક્ષિક જીવે અક્રિયાવાદી હોય છે, તેઓશું નૈરયિક આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા તિર્યગ્ય આયુનો બંધ છે ? અથવા મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા દેવ આયુનો બંધ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રશુશ્રી કહે છે કે—‘ગોયમા ! નેરહ્યાયં પિ પકરે’તિ એવં ચઉવિહં પિ’ હે ગૌતમ ! તેઓ નૈરયિક આયુનો પણ બંધ કરે છે, તિર્યગ્ય આયુનો બંધ કરે છે, મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ કરે છે, અને દેવ આયુનો પણ બંધ કરે છે. આ રીતે તેઓ ચારે પ્રકારના આયુનો બંધ કરે છે. કેમ કે કૃષ્ણપાક્ષિક હોવાથી તેઓમાં સિદ્ધિ ગમનની યોગ્યતાનો અભાવ રહે છે. તેથી તેઓમાં ચારે પ્રકારના સંસારનો જ સદ્ભાવ રહે છે. ‘એવં અન્નાણિયવાઈ વિ

વાદિ કૃષ્ણપાક્ષિકચ્ચદેવ અજ્ઞાનિકવાદિનો વૈનયિકવાદિનશ્ચ કૃષ્ણપાક્ષિકા અપિ
જીવાઃ નારકાયુસ્થિતિર્થગ્યોનિકાયુર્મનુષ્યાયુર્દેવાયુરપિ પ્રકુર્વન્તિ, તદાનીં મોક્ષ-
ગમનયોગ્યતાયા અસાવેન ચાતુર્ગતિકસંસારસ્યૈવ જનકત્વાત્ । ‘સુક્ષ્મપક્ષિચ્ચ જહા
સલેસ્સા’ શુક્લપાક્ષિકા જીવા યથા સલેશ્યાઃ સલેશ્યજીવચ્ચદેવ શુક્લપાક્ષિકાઃ
ચતુર્વર્ષિ સમયસરણેષુ આયુર્બન્ધં પ્રકુર્વન્તીતિ ભાવઃ । ‘સમ્મદિદ્દીણં મંતે !
જીવા કિરિયાવાઈ કિં નેરહ્યાઉયં પુચ્છા’ સમ્યગ્દષ્ટયઃ સ્વલુ મદન્ત ! જીવાઃ
ક્રિયાવાદિનઃ કિં નૈરથિકાયુષ્કં કુર્વન્તિ તિર્યગ્યોનિકાયુષ્કં કુર્વન્તિ મનુષ્યા-
યુષ્કં કુર્વન્તિ દેવાયુષ્કં ચા કુર્વન્તીતિ પ્રશ્નઃ પૃચ્છયા સંગૃહ્યતે । મમવાનાહ-
‘મોયસા’ इत्यादि, ‘મોયસા’ હે ગૌતમ ! ‘નો નેરહ્યાઉયં પકરેતિ’ નો નૈરકાયુ-

હ્યવાઈ વિ’ હસી પ્રકાર સે અજ્ઞાનવાદી કૃષ્ણપાક્ષિક જીવ મી ઓર
વૈનયિકવાદી કૃષ્ણપાક્ષિક જીવ મી અક્રિયાવાદી કૃષ્ણપાક્ષિક કે
જૈસે હી નારકાયુ, તિર્યગાયુ, મનુષ્યાયુ ઓર દેવાયુ કા બન્ધ કરતે હૈં ।
ક્યોંકિ હસ સ્થિતિ મૈં હનકે મુક્તિ મૈં જાને કી યોગ્યતા નહીં હોતી
હે અતઃ હનમૈં ચતુર્વિધ સંસાર મૈં સંસરણ (પરિભ્રમણ) હોને કા હી
સદ્ભાવ પાયા જાતા હૈ. ‘સુક્ષ્મપક્ષિચ્ચ જહા સલેસ્સા’ સલેશ્ય જીવ
કે જૈસે હી ચારોં સમયસરણો મૈં શુક્લપાક્ષિક જીવ કે આયુ બન્ધ
કહના ચાહિયે । ‘સમ્મદિદ્દીણં મંતે ! જીવા કિરિયાવાઈ કિં નેર-
હ્યાઉયં પુચ્છા’ હે મદન્ત ! ક્રિયાવાદી સમ્યગ્દષ્ટિ જીવ નૈરથિક આયુ-
કા બન્ધ કરતે હૈં ? યા તિર્યગાયુકા બન્ધ કરતે હૈં ? યા મનુષ્યાયુકા
બન્ધ કરતે હૈં ? યા દેવાયુકા બન્ધ કરતે હૈં ? હસકે ઉત્તર મૈં પ્રમુશ્રી

વેણહ્યવાઈ વિ’ એજ પ્રમાણે અજ્ઞાનવાદી કૃષ્ણપાક્ષિક જીવ અને વૈનયિકવાદી કૃષ્ણ-
પાક્ષિક જીવ પણ કૃષ્ણપાક્ષિકની જેમજ નારકાયુ, તિર્યગાયુ, મનુષ્યાયુ, અને
દેવાયુનો બંધ કરે છે. કેમ કે તે સ્થિતિમાં તેઓને મુક્તિ ગમનની યોગ્યતા હોતી
નથી. તેથી તેઓમાં ચાર પ્રકારના સંસારમાં સંસરણ-પરિભ્રમણ હોવાનો સદ્ભાવ
રહે છે. ‘સુક્ષ્મપક્ષિચ્ચ જહા સલેસ્સા’ લેશ્યાવાળા જીવના કથન પ્રમાણે જ
ચારે સમયસરણોમાં શુક્લપાક્ષિક જીવને આયુ બંધ કરેલો જોઈએ.

‘સમ્મદિદ્દી ણ મંતે ! કિં કિરિયાવાઈ કિં નેરહ્યાઉયં પુચ્છા’ હે ભગવન્
ક્રિયાવાદી સમ્યગ્દષ્ટિવાળા જીવો નૈરથિક આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા
તિર્યગ આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા
દેવ આયુનો બંધ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રમુશ્રી કહે છે કે ગૌતમ !

ક્કં પ્રકુર્વન્તિ 'નો તિરિક્તજોણિયાઉયં પકરેતિ' નો તિર્યગ્યોનિકાયુક્કં પ્રકુર્વન્તિ કિન્તુ 'મણુસાઉયં પકરેતિ દેવાઉયં પિ પકરેતિ' મનુષ્યાયુક્કં પ્રકુર્વન્તિ દેવાયુક્કમપિ પ્રકુર્વન્તીતિ માવઃ । 'મિચ્છાદિટ્ટી જહા કળ્હપક્કિલયા' મિથ્યાદૃષ્ટ-યોઽક્રિયાવાદિનો જીવાઃ ક્ષણપાક્ષિકવદેવ-દેવનારકાયુરપિ કુર્વન્તિ તિર્યગ્યોનિ-કાયુરપિ કુર્વન્તિ મનુષ્યાયુરપિ કુર્વન્તિ, દેવાયુરપિ કુર્વન્તીતિ માવઃ । 'સમ્મા-મિચ્છાદિટ્ટોણં મંતે ! જીવા અજ્ઞાણિયવાઈ કિં નેરહ્યાઉયં' સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટયઃ, મિથ્રદૃષ્ટયો હિ અજ્ઞાનિકવાદિનો જીવાઃ કિં નારકાયુઃ પ્રકુર્વન્તિ યદ્વા તિર્યગ્યો-નિકાયુઃ પ્રકુર્વન્તિ દેવાયુ વાં પ્રકુર્વન્તીતિ પક્કનઃ, ઉત્તરમાહ—'જહા અલેસ્સા' યથા અલેશ્યાઃ અલેશ્યજીવવદેવ મિથ્રદૃષ્ટયોઽજ્ઞાનિકવાદિનો નો નારકાયુ નં

કહતે હૈં—હે ગૌતમ ! વે નૈરયિક આયુકા બન્ધ નહીં કરતે હૈં, તિર્યગ્ચાયુ-કા બન્ધ નહીં કરતે હૈં કિન્તુ મનુષ્યાયુકા બન્ધ કરતે હૈં ઔર દેવાયુ-કા ઓ બન્ધ કરતે હૈં । 'મિચ્છાદિટ્ટી જહા કળ્હપક્કિલયા' અક્રિયાવાદી આદિ મિથ્યાદૃષ્ટિ જીવ ક્ષણપાક્ષિક કે જૈસે નારકાયુકા ઓ બન્ધ કરતે હૈં, તિર્યગ્ચાયુકા ઓ બન્ધ કરતે હૈં, મનુષ્ય આયુકા ઓ બન્ધ કરતે હૈં ઔર દેવાયુકા ઓ બન્ધ કરતે હૈં । 'સમ્મામિચ્છાદિટ્ટી ણં મંતે ! જીવા અજ્ઞાણિયવાઈ કિં નેરહ્યાઉયં' હે મદન્ત ! અજ્ઞાનવાદી સમ્ય-ગ્મિથ્યાદૃષ્ટિ જીવ કયા નરકાયુકા બન્ધ કરતે હૈં ? યા તિર્યગ્ચાયુક્ક કા બન્ધ કરતે હૈં ? યા મનુષ્યાયુક્ક કા બન્ધ કરતે હૈં ? યા દેવાયુકા બંધ કરતે હૈં ? હસકે ઉત્તર મૈં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં 'જહા અલેસ્સા' હે ગૌતમ ! અલેશ્ય જીવોં કે જૈસે અજ્ઞાનવાદી મિથ્રદૃષ્ટિ જીવ કિસી ઓ આયુકા

તેઓ નૈરયિક આયુનો બંધ કરતા નથી તિર્યગ્ચ આયુનો પણ બંધ કરતા નથી પરંતુ મનુષ્યના આયુનો બંધ કરે છે. અને દેવ આયુનો બંધ કરે છે. 'મિચ્છાદિટ્ટી જહા કળ્હપક્કિલયા' અક્રિયાવાદી મિથ્યાદૃષ્ટિ જીવો પણ ક્ષણપાક્ષિકના કથન પ્રમાણે નારક આયુનો પણ બંધ કરે છે તિર્યગ્ચ આયુનો પણ બંધ કરે છે. મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ કરે છે. અને દેવ આયુનો પણ બંધ કરે છે. 'સમ્મામિચ્છાદિટ્ટોણં મંતે ! જીવા અજ્ઞાણિયવાઈ કિં નેરહ્યાઉયં' હે ભગવન્ અક્રિયાવાદી સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિ જીવો શું નારકાયુનો બંધ કરે છે ? અથવા તિર્યગ્ચ આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા દેવ આયુનો બંધ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—'જહા અલેસ્સા' હે ગૌતમ ! લેશ્યાવિનાના જીવોના કથન પ્રમાણે અજ્ઞાનવાદી મિથ્યાદૃષ્ટિ જીવો કાંઈ પણ આયુનો બંધ કરતા

વા તિર્યગ્યોનિકાયુ ન વા મનુષ્યાયુ ન વા દેવાયુક્કમપિ પ્રકુર્વન્તીતિ મિશ્રદષ્ટિ-
કાલે સર્વાયુષો વન્ધાભાવ એવેતિ । ‘એવં વેણદ્યવાઈ વિ’ એવં મિશ્રદષ્ટિકાજ્ઞાનિક-
વાદિન ઇવ મિશ્રદષ્ટિક્ક વૈનયિકવાદિનોડપિ ચતુર્વિધાન્યપિ આયુષિ ન વધન્તીતિ ।
ઇતઃ પરં ક્રિયાવાદિ જ્ઞાનવાદિ સૂત્રાણિ કથયતિ-જ્ઞાનિપ્રભૃતિષુ ક્રિયાવાદાતિરિક્ત-
વાદસ્ય વિરુદ્ધત્વેનાસંભવાત્ ‘જ્ઞાણી આભિણીવોહિયનાળી ય સુયનાળી ય ઓહિ-
નાળી ય જહા સમ્મદિટ્ઠી’ જ્ઞાનિન આભિનિવોધિકજ્ઞાનિનશ્ચ શ્રુતજ્ઞાનિનશ્ચ અવધિ-
જ્ઞાનિનશ્ચ યથા સમ્યગ્દષ્ટયઃ સમ્યગ્દષ્ટિવદેવ હમે જ્ઞાનિ પ્રભૃતયઃ ન નારકાયુઃ
પ્રકુર્વન્તિ ન વા તિર્યગ્યોનિકાયુક્કં પ્રકુર્વન્તિ કિન્તુ મનુષ્યાયુક્કં પ્રકુર્વન્તિ
દેવાયુક્કમપિ પ્રકુર્વન્તિ ઇતિ । ‘મળપજ્જવનાળી ણં મંતે ! પુચ્છા’ મનઃપર્યવજ્ઞાનિનશ્ચ

બંધ નહીં કરતે હૈં-ન નિરયાયુકા વે બંધ કરતે હૈં ન તિર્યગાયુકા વે
બંધ કરતે હૈં, ન મનુષ્યાયુકા વે બંધ કરતે હૈં ઓર ન દેવાયુકા વે વન્ધ
કરતે હૈં-ક્યોં કિ હસ અવસ્થા મેં કિસી મી આયુકા બંધ નહીં હોતા
હૈ । ‘એવં વેણદ્યવાઈ વિ’ અજ્ઞાનવાદી મિશ્રદષ્ટિ કે જૈસે મિશ્રદષ્ટિક
વૈનયિકવાદી મી ચારોં પ્રકાર કી આયુકા બંધ નહીં કરતા હૈ ।

અવ યહાં સે આગે સૂત્રકાર ક્રિયાવાદી જ્ઞાનવાદી કે સૂત્રોં કા
કથન કરતે હૈં-ક્યોં કી જ્ઞાની આદિકોં મેં ક્રિયાવાદ કે અતિ-
રિક્તવાદ કી વિરુદ્ધ હોને સે અસંભવતા હૈ । ‘જ્ઞાણી આભિણિ-
વોહિયનાળી ય સુયનાળી ય ઓહિનાળી ય જહા સમ્મદિટ્ઠી’
સમ્યગ્દષ્ટિ જીવ કે જૈસે જ્ઞાની, આભિનિવોધિકજ્ઞાની, શ્રુત-
જ્ઞાની, અવધિજ્ઞાની યે સબ મનુષ્યાયુ ઓર દેવાયુકા બંધ કરતે હૈ
નરકાયુ ઓર તિર્યગાયુકા બંધ નહીં કરતે હૈ । ‘મળપજ્જવનાળી ણં
મંતે ! પુચ્છા’ હે ભદન્ત ! મનઃપર્યવજ્ઞાની કયા નૈરયિક આયુકા બંધ

નથી. તેઓ નારક આયુનો બંધ કરતા નથી તિર્યગ આયુનો બંધ કરતા
નથી. મનુષ્ય આયુનો બંધ કરતા નથી. અને દેવ આયુષ્યનો પણ બંધ
કરતા નથી. કેમ કે-આ અવસ્થામાં એકપણ પ્રકારની આયુનો બંધ તેમને હોતો
નથી. ‘એવં વેણદ્યવાઈ વિ’ અજ્ઞાનવાદી મિશ્રદષ્ટિવાળાના કથન પ્રમાણે મિશ્રદષ્ટિ
વૈનયિકવાદી પણ ચારે પ્રકારના આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી.

હવે સૂત્રકાર ક્રિયાવાદી, જ્ઞાનવાદીઓના સંબંધમાં કથન કરે છે.-કેમકે
જ્ઞાની વિગેરેમાં ક્રિયાવાદ શિવાયના વાદનું વિરુદ્ધ પણ હોવાથી અસંભવપણું છે.
‘જ્ઞાણી આભિણિવોહિયનાળી ય સુયનાળી ય ઓહિનાળી ય જહા સમ્મદિટ્ઠી’
સમ્યગ્દષ્ટિવાળા જીવના કથન પ્રમાણે જ્ઞાની. આભિનિવોધિકજ્ઞાની, શ્રુતજ્ઞાની,
અવધિજ્ઞાની આ બધા મનુષ્ય આયુ અને દેવ આયુનો બંધ કરે છે. નારક
આયુ અને તિર્યગ આયુનો બંધ કરતા નથી. ‘મળપજ્જવનાળી ણં મંતે ! પુચ્છા’

સ્વલ્પ પૃચ્છા, મનઃપર્યવજ્ઞાનિનઃ સ્વલ્પ મદન્ત ! જીવાઃ કિં નારકાયુષ્કં કુર્વન્તિ તિર્યગ્યોનિકાયુષ્કં કુર્વન્તિ મનુષ્યાયુષ્કં વા કુર્વન્તિ દેવાયુષ્કં વા કુર્વન્તીતિ પૃચ્છયા સંગૃહ્યતે । મગવાનાહ—‘ગોયમા’ इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘नो नैरह्याउयं पकरे’ति’ नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति ‘नो तिरिक्ख०’ नो तिर्यग्यो-
निकायुष्कं प्रकुर्वन्ति ‘नो मणुस्स०’ नो मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति यिन्तु ‘देवा-
उयं पकरे’ति’ देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति चतुर्विधायुर्ध्यात् मनःपर्यवज्ञानिनः केवलं
देवायुरेव बध्नन्ति न तु नारकतिर्यग्योनिकमनुष्यायुषो बन्धका भवन्तीति भावः ।
‘जइ देवाउयं पकरे’ति किं भवणवासि० पुच्छा’ यदि मनःपर्यवज्ञानिनो देवायुष्कं
कुर्वन्ति तदा किं भवनवासि देवायुष्कं कुर्वन्ति वानव्यन्तरदेवायुष्कं वा कुर्वन्ति
ज्योतिष्कदेवायुष्कं प्रकुर्वन्ति वैमानिकदेवायुष्कं प्रकुर्वन्तीति प्रश्नः पृच्छया
संगृह्यते । मगवानाह—‘गोयमा’ इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘णो भवणवासि
देवाउयं पकरे’ति’ नो भवनवासिदेवसम्बन्धि आयुष्कं प्रकुर्वन्ति ‘णो वाणमंतर०’

કરતે હૈં ? યા તિર્યગાયુકા વંધ કરતે હૈં ? યા જનુષ્યાયુકા વંધ કરતે
હૈં ? યા દેવાયુકા વંધ કરતે હૈં ? હસ્કે ઉત્તર મેં પ્રશ્નશ્રી કહતે હૈં—
‘ગોયમા ! નો નૈરહ્યાઉયં પકરે’તિ નો તિરિક્કલ્લ૦, નો મણુસ્સ૦’ હે
ગૌતમ ! વે ન નૈરયિક આયુકા વંધ કરતે હૈં, નં તિર્યગાયુ વા વંધ કરતે
હૈં ઓર ન મનુષ્યાયુકા વંધ કરતે હૈં । કિન્તુ ‘દેવાઉયં પકરે’તિ’
દેવાયુકા હી વંધ કરતે હૈં । ‘જइ देवाउयं पकरे’ति, किं भवणवासि०
पुच्छा’ यदि मनःपर्यवज्ञानी देवायुका ही वंध करते हैं तो क्या वे
भवनवासी देवायुका वंध करते हैं ? या वानव्यन्तर देवायुको वंध करते
हैं ? या ज्योतिष्क देवायुका वंध करते हैं ? या वैमानिक देवायुका वंध
करते हैं ? उत्तर में प्रशुश्री कहते हैं—‘गोयमा । हे गौतम ! ‘णो भव-

‘હે ભગવન્ મનઃપર્યવજ્ઞાની શું નૈરયિક આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા
તિર્યગ્ય આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા
દેવ આયુનો બંધ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રશ્નશ્રી કહે છે—ગોયમા !
નો નૈરહ્યાઉયં પકરે’તિ નો તિરિક્કલ્લ૦ નો મણુસ્સ૦’ હે ગૌતમ ! તેઓ નૈરયિક
આયુનો બંધ કરતા નથી. તથા તિર્યગ્ય આયુનો પણ બંધ કરતા નથી
મનુષ્ય આયુનો બંધ કરતા નથી. પરંતુ ‘દેવાઉયં પકરે’તિ’ દેવ આયુનો બંધ
કરે છે. ‘जइ देवाउयं पकरे’ति, किं भवणवासि पुच्छा’ जे मन.पर्यवज्ञानी देव
आयुनो न बंध करे छे. तो शू तेजो भवनवासी देव आयुनो बंध करे छे ?
अथवा वानव्यन्तर देव आयुनो बंध करे छे ? अथवा ज्योतिष्क देव आयुनो
बंध करे छे ? अथवा वैमानिक देव आयुनो बंध करे छे ? आ प्रश्नना

નો ન વા વાનવ્યન્તરદેવ સંવન્ધિ આયુષ્કં વધનન્તિ 'નો જોહસિય૦' નો ન વા જ્યોતિષ્કદેવાયુર્વંધનાન્ત કિન્તુ 'વૈમાણિયદેવાઁ પકરે'તિ' વૈમાનિકદેવસમ્બન્ધિ આયુષો વન્ધકા મનઃપર્યવજ્ઞાનિનો ભવન્તીતિ । 'કેવલનાળી જહા અલેસ્સા' કેવલ જ્ઞાનિનો યથા અલેશ્યાઃ કેવલજ્ઞાનિનો ડલેશ્યવદ્વ્યાખ્યેયાઃ, કેવલજ્ઞાનિનાં ન કસ્યાપિ આયુષો વન્ધો ભવતિ, તેષામાયુર્વંધકારણીભૂતસ્ય મોહનીયાદેઃ કર્મ વીજસ્ય કેવલજ્ઞાનાગ્નિના દગ્ધત્વાત્ દગ્ધવીજાનાં ચાકુરોત્પત્તેરભાવાદિતિ । રાગાદિક્લેશસલિલસિક્તાયાં હિ જીવભૂમૌ કર્મવીજાનિ અંકુરાણિ પ્રસુવતે, કેવલજ્ઞાનનિદાઘતપ્તાયા મુષરપ્રાયાયાં જીવભૂમૌ તુ કર્મવીજાનિ ન સંસારાકુરં

ળવાસિદેવાઁ પકરે'તિ' વૈ ભવનવાસી દેવોં કી આયુકા વંધ નહીં કરતે હૈં 'ળો વાળમંતર' વાનવ્યન્તર દેવોં કી આયુકા વંધ નહીં કરતે હૈં 'નો જોહસિય૦' ન જ્યોતિષિક દેવોં કી આયુકા વંધ કરતે કિન્તુ- 'વૈમાણિય દેવાઁ પકરે'તિ' વૈ વૈમાનિક દેવાયુકા વંધ કરતે હૈં । 'કેવલનાળી જહા અલેસ્સા' અલેશ્ય જીવોં કે જૈસે કેવલજ્ઞાની જીવ કિસી મી આયુકા વંધ નહીં કરતે હૈં । ક્યોંકિ ડનકા આયુ કર્મ વંધ કા કારણ મૂત જો મોહનીય આદિ કર્મ હૈં વહ કેવલજ્ઞાનરૂપ અગ્નિ કે દ્વારા દગ્ધ હો જાતા હૈં । જિસ અંકુર કા વીજ દગ્ધ હો જાતા હૈં ડસસે ફિર અંકુર ઉત્પન્ન નહીં હોતા હૈં । યહ મોહનીયકર્મ કા વીજ હૈં । જવ જીવ રૂપ મૂમિ રાગાદિક્લેશ રૂપ જલ સે સિશ્ચિન હોતી રહતી હૈં તવ ડસમ્મે કર્મ વીજ રૂપ અંકુર ઉત્પન્ન હોતે રહતે હૈં । ઓર જવ વહી જીવ રૂપી મૂમિ કેવલજ્ઞાનરૂપી નિદાઘ સે તપ્તાયમાન હોતી

ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે- 'ગોયમા હે ગૌતમ ! 'ળો ભવનવાસિ દેવાઁ પકરે'તિ' તેઓ ભવનવાસી દેવોના આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી. 'ળો વાળમંતર' વાનવ્યન્તર દેવોના આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી. 'નો જોહસિય' જ્યોતિષ્ક દેવોના આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી. પરંતુ 'વૈમાણિય દેવાઁ પકરે'તિ' તેઓ વૈમાનિક દેવ આયુષ્યનો બંધ કરે છે 'કેવલનાળી જહા અલેસ્સા' લેશ્યા વિનાના જીવોના કથન પ્રમાણે કેવલજ્ઞાની જીવો કોઈપણ આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી કેમ કે તેઓનું આયુષ્ય કર્મબંધના કારણભૂત જે મોહનીય વિગેરે કર્મ છે, તે કેવલજ્ઞાનરૂપ અગ્નિદ્વારા ળળી જાય છે. જે અંકુરના બીજ ળળી જાય છે, તેનાથી અંકુર ળગતા નથી. આ મોહનીય કર્મનું બી છે. જ્યારે જીવ રૂપ મૂમિ રાગ વિગેરે કલેશ રૂપ પાણીથી સીંચાતી રહે છે, ત્યારે કર્મ બીજ રૂપ અંકુર તેમાં ઉત્પન્ન થતા રહે છે. અને જ્યારે જોજ જીવ રૂપમૂમી કેવલજ્ઞાનરૂપી તાપથી તપાયમાન થતી ળસર મૂમિના જેવી બની જાય

जनयन्तीति भावः, 'अन्नाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया' अज्ञानिनो यावद् विभङ्गज्ञानिनो यथा कृष्णपाक्षिकाः अत्र यावत्पदेन मत्तयज्ञानि-श्रुताज्ञानिनोः सग्रहः तथा चाज्ञानिनो यावद् विभङ्गज्ञानिनश्च नारकायुरपि प्रकुर्वन्ति तिर्यग्यो-निकायुरपि प्रकुर्वन्ति मनुष्यायुरपि प्रकुर्वन्ति देवायुरपि प्रकुर्वन्तीति भावः । 'सन्नासु चउसु वि जहा सल्लेस्सा' संज्ञासु चतसृष्वपि यथा सल्लेस्याः सल्लेश्यवदेव आहारादि चतुर्विधसंज्ञायुक्ता जीवा नारकायुष्कमपि कुर्वन्ति तिर्यग्योनिकायुष्क-मपि कुर्वन्ति मनुष्यायुष्कमपि कुर्वन्ति देवायुष्कमपि कुर्वन्तीति भावः 'नो सन्नो-वउत्ता जहा मणपज्जवनाणी' नो संज्ञोपयुक्ता यथा मनःपर्यवज्ञानिनः मनःपर्यव-ज्ञानिवदेव नो संज्ञोपयुक्ता जीवा न नारकायुष्कं कुर्वन्ति नो वा तिर्यग्योनिकायुष्कं

हुई ऊपर भूमिके जैसी बन जाती है तब उसमें कर्म रूपी बीज संसार रूप अंकुर को उत्पन्न नहीं कर पाते हैं । यही इस कथन का भाव है । 'अन्नाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया' यावत्पद गृहीत मत्त-ज्ञानी, श्रुताज्ञानी और विभङ्गज्ञानी कृष्णपाक्षिक के जैसे नरकायु का भी बंध करते हैं तिर्यगायु का भी बंध करते हैं मनुष्यायु का भी बंध करते हैं और देवायु का भी बंध करते हैं । 'सन्नासु चउसु वि जहा सल्लेस्सा' सल्लेश्य जीवों के जैसे चारों आहारादि संज्ञाओं से युक्त हुए जीव नैरयिक आयु का भी बंध करते हैं तिर्यगायु का भी बंध करते हैं मनुष्यायु का भी बन्ध करते हैं और देवायु का भी बन्ध करते हैं । 'नो सन्नोवउत्ता जहा मणपज्जवनाणी' नो संज्ञोपयुक्त जीव मनःपर्य-वज्ञानीके जैसे केवल एक वैमानिक देवों की ही आयु का बन्ध करते

છે, ત્યારે તેમાં કર્મરૂપી બી સંસારરૂપ અંકુરની ઉત્પત્તિ કરી શકતા નથી. એજ આ કથનનો ભાવ છે 'અન્નાણી જાવ વિભંગનાણી જહા કણ્હપક્ખિયા' યાવત્પદથી મતિ અજ્ઞાની, શ્રુતાજ્ઞાની, અને વિભંગજ્ઞાની, કૃષ્ણપાક્ષિકના કથન પ્રમાણે નરક આયુનો પણ બંધ કરે છે, તિર્યગ્ય આયુનો પણ બંધ કરે છે. મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ કરે છે, અને દેવ આયુનો પણ બંધ કરે છે. 'સન્નાસુ ચઉસુ વિ જહા સલ્લેસ્સા' લેશ્યાવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે આહાર ભય મૈથુન અને પરિગ્રહ આદિ ચારે સંજ્ઞાથી યુક્ત થયેલા જીવો નૈરયિક આયુનો પણ બંધ કરે છે, તિર્યગ્ય આયુનો પણ બંધ કરે છે, મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ કરે છે, અને દેવ આયુષ્યનો પણ બંધ કરે છે. 'નો સન્નોવઉત્તા જહા મણપજ્જવનાણી' નો સંજ્ઞોપયોગવાળા જીવો, મનઃપર્યવ જ્ઞાની, જીવના કથન પ્રમાણે કેવળ એક વૈમાનિક દેવોના આયુષ્યનો જ બંધ

કુર્વન્તિ ન વા મનુષ્યાયુષ્કં કુર્વન્તિ કિન્તુ વૈમાનિકદેવમાત્રસમ્બન્ધ્યાયુષો વન્ધં
કુર્વન્તીતિ ભાવઃ । ‘સવેદગા જાવ નપુંસગવેયગા જહા સલેસ્સા’ સવેદકા યાવત્
નપુંસકવેદકા યથા સલેશ્યાઃ સલેશ્યજીવવદેવ સવેદકાઃ પુરુષવેદકાઃ, સ્ત્રીવેદકાઃ
નપુંસકવેદકાશ્ચ નારકાયુરપિ કુર્વન્તિ તિર્યગ્યોનિકાયુરપિ કુર્વન્તિ મનુષ્યાયુરપિ
કુર્વન્તિ દેવાયુરપિ કુર્વન્તીતિ ભાવઃ । ‘અવેદગા જહા અલેસ્સા’ અવેદકાઃ સામા
ન્યતો વેદરહિતા જીવાઃ અલેશ્યજીવવદેવ ન નારકાયુષ્કં કુર્વન્તિ ન વા તિર્યગ્યો-
નિકાયુષ્કં કુર્વન્તિ ન વા મનુષ્યાયુષ્કં કુર્વન્તિ ન વા દેવાયુષ્કં વન્ધન્તીતિ
ભાવઃ । ‘સકસાઈ જાવ લોમકસાઈ જહા સલેસ્સા’ સકષાયિનો યાવત્ લોમકષા-
યિનો યથા સલેશ્યાઃ યાવત્પદેન ક્રોધમાનમાયાકષાયવર્તાં ગ્રહણં ભવતિ તથા ચ
સકષાયિણો જીવાઃ ક્રોધમાનમાયાલોમકષાયિણશ્ચ ચત્વાર્યપિ નારકતિર્યગ્મનુષ્ય-
દેવાયુષિ કુર્વન્તીતિ ભાવઃ । ‘અકસાઈ જહા અલેસ્સા’ અકષાયિનો યથા અલેશ્યાઃ

હૈં । ન નૈરયિકાયુ કા વે બન્ધ કરતે હૈં, ન તિર્યંગાયુકા વે બન્ધ કરતે
હૈં ઓર મનુષ્યાયુકા મી વે બન્ધ નહીં કરતે હૈં । ‘સવેદગા જાવ નપુંસગ-
વેદગા જહા સલેસ્સા’ સલેશ્ય જીવોં કે જૈસે સવેદક જીવ યાવત્
નપુંસકવેદક જીવ નૈરયિક આયુકા મી બન્ધ કરતે હૈં, તિર્યંગાયુકા મી
બન્ધ કરતે હૈં, મનુષ્યાયુકા મી બન્ધ કરતે હૈં ઓર દેવાયુકા મી બન્ધ
કરતે હૈં । ‘અવેદગા જહા અલેસ્સા’ અવેદક જીવ અલેશ્ય જીવોં કે જૈસે
કિસી મી આયુકા બન્ધ નહીં કરતે હૈં । ‘સકસાઈ જાવ લોમકસાઈ
જહા સલેસ્સા’ સલેશ્ય જીવોં કે જૈસે સકષાયી જીવ યાવત્ લોમ-
કષાયી જીવ ચારોં આયુઓં કા બન્ધ કરતા હૈં । યહાં યાવત્પદ સે
ક્રોધ કષાયી, માનકષાયી, ઓર માયાકષાયી’ હન તીન પદોં કા ગ્રહણ
હુઆ હૈં । ‘અકસાઈ જહા અલેસ્સા’ અલેશ્ય જીવોં કે જૈસે અકષાયી

કરે છે. તેઓ નૈરયિક આયુનો બંધ કરતા નથી. તિર્યંચ આયુનો બંધ કરતા
નથી. અને મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ કરતા નથી, ‘સવેદગા જાવ નપુંસગવેદગા’
જહા સલેસ્સા’ લેશ્યાવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે સવેદક જીવો યાવત્ નપુંસક
વેદવાળા જીવ નૈરયિક આયુનો પણ બંધ કરે છે, તિર્યંચ આયુનો પણ બંધ
કરે છે, મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ કરે છે અને દેવ આયુનો પણ બંધ
કરે છે. ‘અવેદગા જહા અલેસ્સા’ અવેદક જીવ લેશ્યા વિનાના જીવોના કથન
પ્રમાણે કોઈપણ આયુનો બંધ કરતા નથી. ‘સકસાઈ જાવ લોમકસાઈ જહા
સલેસ્સા’ લેશ્યાવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે કષાયવાળા જીવો યાવત્
ક્રોધ કષાય માનકષાય માયાકષાય અને લોભકષાયવાળા જીવો ચારે પ્રકારના
આયુષ્યનો બંધ કરે છે, અહિંયાં યાવત્પદથી ‘ક્રોધકષાયી, માનકષાયી અને

અલેશ્યજીવવદેવ કપાયરહિતા જીવાઃ ન નારકાયુષ્કં કુર્વન્તિ ન વા તિર્યગ્યોનિકાયુષ્કં કુર્વન્તિ ન વા મનુષ્યાયુષ્કં કુર્વન્તિ ન વા દેવાયુષ્કં કુર્વન્તિ इति भावः । 'सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा' सयोगिनो यावत् काययोगिनश्च यथा सलेश्याः, यावत्पदेन मनोयोगिनां वाग्योगिनां च संग्रहो भवति तथा च सामान्यतो योगवन्तो मनोयोगिनो वचोयोगिनः काययोगिनश्च सलेश्यजीववत् नारकાયुष्कमपि कुर्वन्ति तिर्यग्योनिकायुष्कमपि कुर्वन्ति मनुष्यायुष्कमपि कुर्वन्ति देवायुष्कमपि कुर्वन्तीति भावः । 'अजोगी जहा अलेस्सा' अयोगिनः सामान्यतो योगरहिताः सिद्धाः केवलिन रते अलेश्यवदेव आयुषां बन्धना न भवन्तीति । 'सागारोवउत्ता अनागारोवउत्ता य जहा सलेस्सा' साकारोपयोगयुक्ता अनाकारो-

જીવ કિસી મી આયુકા બંધ નહીં કરતે હૈં । સજોગી જાવ કાયજોગી જહા સલેસ્સા' સલેશ્ય જીવોં કે જૈસે સયોગી યાવત્ કાયયોગી જીવ ચારોં આયુષોં કા બંધ કરતે હૈં । યહાં યાવત્પદ સે મનોપયોગી ઔર વાગ્યોગી હન દો કા ગ્રહણ હુઆ હૈ । હસ પ્રકાર સામાન્ય સે યોગવાલે જીવ ઔર મનોયોગવાલે જીવ વચન યોગવાલે જીવ ઔર કાયયોગવાલે જીવ સલેશ્ય જીવોં કે જૈસે નારક આયુકા મી બંધ કરતે હૈં, તિર્યગાયુષ્ક કા મી મનુષ્યાયુષ્ક કા મી ઔર દેવાયુષ્ક કા મી બંધ કરતે હૈં । 'અજોગી જહા અલેસ્સા' સામાન્ય સે યોગ રહિત સિદ્ધ જીવ ઔર કેવલી અલેશ્ય જીવોં કે જૈસે કિસી મી આયુકા બંધ નહીં કરતે હૈં । 'સાગારોવઉત્તા અનાગારોવઉત્તા ય જહા સલેસ્સા' સલેશ્ય જીવોં કે જૈસે સાકારોપયોગયુક્ત તથા અનાકારો-

માયા કપાયવાળા આ ગણ કપાયો ગ્રહણ કરાયા છે 'અકસાઈ જહા અલેસ્સા' દેશ્યા વિનાના ભવેના કથન પ્રમાણે કપાય વિનાના ભવ કોઈ પણ આયુને બંધ કરતા નથી. 'સજોગી જાવ કાયજોગી જહા સલેસ્સા' દેશ્યાવાળા ભવેના કથન પ્રમાણે સયોગી યાવત્ કાય યોગવાળા ભવે ચારે પ્રકારના આયુને બંધ કરે છે. અહિયાં યાવત્પદથી મનોયોગવાળા અને વચનયોગવાળાઓ ગ્રહણ કરાયા છે. આ રીતે સામાન્યથી યોગવાળા ભવે અને મનોયોગવાળા ભવે વચનયોગવાળા ભવે અને કાયયોગવાળા ભવે દેશ્યાવાળા ભવેની જેમ નારક આયુષ્યને પણ બંધ કરે છે. તિર્યચ આયુષ્યને પણ બંધ કરે છે. મનુષ્ય આયુષ્યને પણ બંધ કરે છે, અને દેવ આયુષ્યને પણ બંધ કરે છે 'અજોગી જહા અલેસ્સા' સામાન્યથી યોગવિનાના સિદ્ધ ભવે અને કેવલી અલેશ્ય ભવેના કથન પ્રમાણે કોઈપણ આયુષ્યને બંધ કરતા નથી. 'સાગારોવઉત્તા અનાગારોવઉત્તા ય જહા સલેસ્સા' દેશ્યવાળા

પયોગયુક્તાશ્ચ યથા સલેશ્યાઃ સલેશ્વદેવ સાકારોપયોગયુક્તા સ્તથા અનાકારો-
પયોગયુક્તાશ્ચ નારકાયુષ્કમપિ તિર્યગ્યોનિકાયુષ્કમપિ મનુષ્યાયુષ્કમપિ દેવા-
યુષ્કમપિ કુર્વન્તીતિ ભાવઃ ॥૨૦ ૨૧॥

નારકદણ્ડકે સૂત્રાણ્યાહ—‘કિરિયાવાઈ ણં મંતે’ इत्यादि,

મૂળમ્—કિરિયાવાઈ ણં મંતે ! નેરહ્યા કિં નેરહ્યાઉયં પુચ્છા,
ગોયમા ! નો નેરહ્યાઉયં નો તિરિલ્લજોણિયાઉયં પકરેતિ મણુ-
સ્સાઉયં પકરેતિ નો દેવાઉયં પકરેતિ અકિરિયાવાઈ ણં મંતે !
નેરહ્યા પુચ્છા, ગોયમા ! નો નેરહ્યાઉયં ૦ તિરિલ્લજોણિયાઉયં
પકરેતિ મણુસ્સાઉયં પિ પકરેતિ નો દેવાઉયં પકરેતિ, । એવં અન્ના-
ણિયવાઈ વિ, વેણહ્યવાઈ વિ । સલેસ્સા ણં મંતે ! નેરહ્યા કિરિ-
યાવાઈ કિં નેરહ્યાઉયં ૦ એવં સઠ્ઠે વિ નેરહ્યા જે કિરિયાવાઈ તે
મણુસ્સાઉયં એવં પકરેતિ, જે અકિરિયાવાઈ અન્નાણિયવાઈ વેણ-
હ્યવાઈ તે સઠ્ઠઢાળેસુ વિ નો નેરહ્યાઉયં પકરેતિ, તિરિલ્લ-
જોણિયાઉયં પિ પકરેતિ, મણુસ્સાઉયં પિ પકરેતિ નો દેવાઉયં
પકરેતિ । નવરં સમ્મામિચ્છત્તે ઉવરિલ્લેહિં દોહિં વિ સમોસરણેહિં
ન કિંચિ વિ પકરેતિ જહેવ જીવપણ । એવં જાવ થણિયકુમારા
જહેવ નેરહ્યા । અકિરિયાવાઈ ણં મંતે ! પુઢવીકાહ્યા પુચ્છા,
ગોયમા ! નો નેરહ્યાઉયં પકરેતિ । તિરિલ્લજોણિયાઉયં ૦ મણુ-
સ્સાઉયં પકરેતિ, નો દેવાઉયં પકરેતિ એવં અન્નાણિયવાઈ વિ ।
સલેસ્સા ણં મંતે ! એવં જં જં પયં અરિથ પુઢવીકાહ્યા ણં
તહિં તહિં મજ્ઞિમેસુ દોસુ સમોસરણેસુ એવં સ્થેવ દુવિહં આઉયં

પયોગયુક્ત જીવ નારક આયુક્તા બી વન્ધ કરતે હૈં તિર્યગાયુષ્ક કા બી
વન્ધ કરતે હૈં, મનુષ્યાયુષ્ક કા બી વન્ધ કરતે હૈં ઓર દેવાયુષ્ક કા બી
વન્ધ કરતે હૈં ॥૨॥

જીવના કથન પ્રમાણે સાકારોપયોગવાળા અને અનાકારોપયોગવાળા જીવો
નારક આયુનો પણ બંધ કરે છે, તિર્યગ આયુષ્યનો પણ બંધ કરે છે,
મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ કરે છે અને દેવાયુનો પણ બંધ કરે છે. ॥સૂ.૨૧॥

पकरेंति । नवरं तेउलेस्साए न किंपि पकरेंति । एवं आउक्काइयाण
वि, एवं वणस्सइकाइयाण वि । तेउक्काइया वाउक्काइया
सव्वट्ठाणेसु मज्झिमेसु दोसु समोसरणेसु नो नेरइयाउयं पक-
रेंति तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति णो मणुस्साउयं णो देवाउयं
पकरेंति । बेइंदियतेइंदियचउरिंदिया णं जहा पुढवीकाइया णं
नवरं सम्मत्तनाणेसु न एकं पि आउयं पकरेंति । किरियावाई णं
भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया किं नेरइयाउयं पकरेंति पुच्छा,
गोयमा ! जहा मणपज्जवनाणी । अकिरियावाई अन्नाणियवाई
वेणइयवाई य चउव्विहं पि पकरेंति । जहा ओहिया तहा
सलेस्सा वि । कण्हलेस्सा णं भंते ! किरियावाई पंचिंदियतिरि-
क्खजोणिया किं नेरइयाउयं पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइयाउयं
पकरेंति नो तिरिक्खाउयं० नो मणुस्साउयं० नो देवाउयं पकरेंति,
अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाई चउव्विहं पि पकरेंति ।
जहा कण्हलेस्सा, एवं नीललेस्सा वि, काउलेस्सा वि । तेउ-
लेस्सा जहा सलेस्सा । नवरं अकिरियावाई अन्नाणियवाई
वेणइयवाई य नो नेरइयाउयं पकरेंति । देवाउयं पि पकरेंति ।
तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति । मणुस्साउयं पि पकरेंति ।
एवं पम्हलेस्सा वि एवं सुक्कलेस्सा वि भाणियव्वा । कण्हपक्खिया
तिहिं समोसरणेहिं चउव्विहं पि आउं पकरेंति । सुक्कपक्खिया
जहा सलेस्सा । सम्मदिट्ठी जहा मणपज्जवनाणी तहेव वेमाणि-
याउयं पकरेंति । मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया । सम्मामिच्छा-
दिट्ठी ण य एकमपि पकरेंति जहेव नेरइया । नाणी जाव
ओहियनाणी जहा सम्मदिट्ठी । अन्नाणी जाव विभंगनाणी
जहा कण्हपक्खिया । सेसा जाव अणागारोवउत्ता सव्वे जहा

सलेस्सा तहा चेव भाणियव्वा । जहा पंचिंदियतिरिक्खजोणि-
याणं वत्तव्वया भणिया एवं मणुस्साण वि भाणियव्वा ।
नवरं मणपज्जवनाणी नो सन्नोवउत्ता य जहा सम्मदिट्ठी तिरि-
क्खजोणिया तहेव भाणियव्वा । अलेस्सा केवलनाणी अवेदगा
अकसाई अजोगिय, एए न एगं पि आउयं पकरेति, जहा
ओहिया जीवा, सेसं तहेव । वाणमंतरजोइसिय वेमाणिया
जहा असुरकुमारा ॥सू० ३॥

छाया—क्रियावादिनः खलु भदन्त ! नैरयिकाः किं नैरयिकायुष्कं पृच्छां
गौतम ! नो नैरयिकायुष्कं नो तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति मनुष्यायुष्कं
प्रकुर्वन्ति नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति । अक्रियावादिनः खलु भदन्त ! नैरयिकाः पृच्छा,
गौतम ! नो नैरयिकायुष्कं० तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति मनुष्यायुष्कमपि कुर्वन्ति
नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति । एवमज्ञानिकवादिनोऽपि वैनयिकवादिनोऽपि । सलेश्याः
खलु भदन्त ! नैरयिकाः क्रियावादिनः किं नैरयिकायुष्कं० एवं सर्वेऽपि नैरयिका
ये क्रियावादिनस्ते मनुष्यायुष्कमेकं प्रकुर्वन्ति, ये अक्रियावादिनोऽज्ञानिकवा-
दिनो वैनयिकवादिन स्ते सर्वस्थानेष्वपि नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति,
तिर्यग्योनिकायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति मनुष्यायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति, नो देवायुष्कं प्रकुर्व-
न्ति । नवरं सम्यग्मिथ्यात्विनः उपरितनाभ्यां द्वाभ्यामपि समवसरणाभ्यां न
किञ्चिदपि प्रकुर्वन्ति यथैव जीवषदे । एवं यावत् स्तनितकुमारा यथैव नैरयिकाः ।
अक्रियावादिनः खलु भदन्त ! पृथिवीकायिकाः पृच्छा, गौतम ! नो नैरयिकायुष्कं
प्रकुर्वन्ति, तिर्यग्योनिकायुष्कं० मनुष्यायुष्कं० नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति । एवम-
ज्ञानिकवादिनोऽपि । सलेश्याः खलु भदन्त ! एवं यत् यत् पदमस्ति पृथिवी-
कायिकानां तत्र तत्र मध्यमयो द्वयोः समवसरणयोरेवमेव द्विविधमायुष्कं प्रकु-
र्वन्ति । नवरं तेजोलेश्यायां न किमपि प्रकुर्वन्ति । एवमध्कायिकानामपि, वन-
स्पतिकायिकानामपि । तेजस्कायिकाः वायुकायिकाः सर्वस्थानेषु मध्यमयो द्वयोः
समवसरणयो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, नो मनु-
ष्यायुष्कं नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति । द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियाणां यथा पृथिवी-
कायिकानाम् । नवरं सम्यक्त्वज्ञानेषु न एकमपि आयुष्कं प्रकुर्वन्ति । क्रिया-
वादिनः खलु भदन्त ! पञ्चान्द्रियतिर्यग्योनिकाः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति,
पृच्छा, गौतम ! यथा मनःपर्यवज्ञानिनोऽक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनो वैनयिक-

वादिनश्च चतुर्विधमपि प्रकुर्वन्ति । यथौघिका स्तथा सलेश्या अपि । कृष्णलेश्याः खलु भदन्त ! क्रियावादिनः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः किं नैरयिकायुष्कं पृच्छा, गौतम ! नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, नो तिर्यगू० नो मनुष्यायुष्कं० नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति । अक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनश्चतुर्विधमपि प्रकुर्वन्ति यथा कृष्णलेश्याः । एवं नीललेश्या अपि कापोतलेश्या अपि । तेजोलेश्या यथा सलेश्याः । नवरमक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनश्च नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति देवायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति तिर्यग्योनिकायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति मनुष्यायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति । एवं पद्मलेश्या अपि एवं भुक्लेश्या अपि भणितव्याः । कृष्णपाक्षिका त्रिभिः समवसरणे चतुर्विधमपि आयुष्कं प्रकुर्वन्ति । शुक्लपाक्षिका यथा सलेश्याः । सम्यग्दृष्टयो यथा मनःपर्यवज्ञानिनः तथैव वैमानिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति । मिथ्यादृष्टयो यथा कृष्णपाक्षिकाः । सम्यग्मिथ्यादृष्टयो न चैकमपि प्रकुर्वन्ति यथैव नैरयिकाः । ज्ञानिनो यावदवधिज्ञानिनो यथा सम्यग्दृष्टयः । अज्ञानिनो यावद्विभज्ज्ञानिनो यथा कृष्णपाक्षिकाः । शेषा यावदनाकारोपयुक्ताः सर्वे यथा सलेश्या स्तथैव भणितव्याः । यथा पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां वक्तव्यता भणिता एवं मनुष्याणामपि भणितव्या । नवरं मनःपर्यवज्ञानिनो नो संज्ञोपयुक्ताश्च यथा सम्यग्दृष्टयः तिर्यग्योनिका स्तथैव भणितव्याः । अलेश्याः केवलज्ञानिनोऽवेदका अकपायिनोऽयोगिनश्चैते नैकमपि आयुष्कं प्रकुर्वन्ति । यथा औघिका जीवाः, शेषं तथैव । वानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिका यथा असुरकुमाराः ॥सू० ३॥

टीका—‘किरियावाई णं भंते । नेरइया’ क्रियावादिनः खलु भदन्त ! नैरयिकाः ‘किं नेरइयाउयं पृच्छा’ किं नैरयिकायुष्कं नारकभवप्रयोजकमायुः प्रकुर्वन्ति अथवा तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति अथवा मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति देवायुष्कं वा प्रकुर्वन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते, भगवानाह—‘गोयमा’ इत्यादि,

नारकदण्डक सें सूत्र कथन

‘किरियावाई णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं’—इत्यादि

टीकार्थ—‘किरियावाई णं भंते ! नेरइया’ हे भदन्त ! क्रियावादी नैरयिक ‘किं नेरइयाउयं पृच्छा’ नारकभवके प्रयोजक आयुर्कर्म का बन्ध करते हैं ? या तिर्यगायुष्क का बन्ध करते हैं ? या मनुष्यायुष्कका बन्ध

नारकदण्डक संभंधी सूत्रनुं कथन—

‘किरियावाई णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं’ इत्यादि

टीकार्थ—‘किरियावाई णं भंते ! नेरइया’ हे भगवन् क्रियावादी नैरयिक श्रुत्वा ‘किं नेरइयाउयं पृच्छा’ नारक भव संभंधी आयुष्यनो षंध करे छे ? अथवा तिर्यग्य आयुष्यनो षंध करे छे ? अथवा मनुष्यना आयुष्यनो षंध करे छे ?

‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘नो नेरइयाउयं०’ नो नैव नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति ‘नो तिरिक्ख०’ नो तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति ‘मणुस्साउयं पकरे’ति’ मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति ‘नो देवाउयं पकरे’ति’ नो-नैव देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति क्रियावादिनो नारका यदेवायुर्नारकायु न प्रकुर्वन्ति तत् नारकभवस्वभावादेव यच्च तिर्यगायु न बध्नन्ति तत् क्रियावादस्वभावात्, केवलं मनुष्यायुरेव बध्नन्ति तथा स्वाभावादिति । ‘अकिरियावाई णं भंते ! नेरइया पुच्छा’ अक्रियावादिनः खलु भदन्त ! नैरयिकाः किं नारकायुः प्रकुर्वन्ति यद्वा तिर्यगायुः प्रकुर्वन्ति अथवा मनुष्यायुः प्रकुर्वन्ति यद्वा देवायुः प्रकुर्वन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते । भग-

करते हैं ? या देवायुष्क का बन्ध करते हैं ? गौतमस्वामी के इस प्रश्न के उत्तरमें प्रभुश्री कहते हैं-‘गोयमा ! नो नेरइयाउयं०, नो तिरिक्ख०’ क्रियावादी नैरयिक नैरयिक आयु का बन्ध नहीं करते हैं, तिर्यगायुष्क का बन्ध नहीं करते हैं किन्तु-‘मणुस्साउयं पकरे’ति’ मनुष्यायु का बन्ध करते हैं । ‘नो देवाउयं पकरे’ति’ देवायुका भी वे बन्ध नहीं करते हैं ! क्रियावादी नैरयिक जो नैरयिकायु का और देवायुका बन्ध नहीं करते हैं उसमें कारण नारकभव का स्वभाव ही है । तथा जो तिर्यगायुका वे बन्ध नहीं करते हैं इसमें कारण उनकी क्रियावादिता का स्वभाव है । केवल वे मनुष्यायुका ही बन्ध करते हैं-क्यों कि इस स्थिति में इसी आयु के बांधने का उनका स्वभाव हो जाता है । ‘अकिरियावाई णं भंते ! नेरइया पुच्छा’ हे भदन्त ! अक्रियावादी नैरयिक क्या नैरकायुका बन्ध करते हैं ? या तिर्यगायु का बन्ध करते हैं ? या मनुष्यायुका बन्ध करते हैं ?

अथवा देव आयुष्येनो बांध करे छे ? आ प्रश्नना उत्तरमां प्रभुश्री कहे छे के-‘गोयमा ! नो नेरइयाउयं० नो तिरिक्ख०’ क्रियावादी नैरयिके नैरयिक आयुष्येनो बांध करतां नथी तथा तिर्यग्य आयुष्येनो पणु बांध करता नथी परंतु ‘मणुस्साउयं पकरे’ति’ मनुष्य संबांधी आयुष्येनो बांध करे छे ‘नो देवाउयं पकरे’ति’ तेओ देव संबांधी आयुष्येनो पणु बांध करता नथी तेनु कारण नारक लवनो ते प्रकारनो स्वभाव ज छे, तथा जे तिर्यगायुनो तेओ बांध करता नथी तेनु कारण तेओना क्रियावादी पणुनो स्वभाव ज छे तेओ केवण मनुष्य आयुनो ज बांध करे छे, केम के-आ स्थितिमां ओज आयुष्य बांधवानो तेमनो स्वभाव थछंजय छे, ‘अकिरियावाई णं भंते ! नेरइया पुच्छा’ हे लगवन अक्रियावादी नैरयिके शुं नैरयिक आयुनो बांध करे छे ? अथवा तिर्यग्य आयुष्येनो बांध करे छे ? अथवा मनुष्य आयुष्येनो बांध करे छे ? अथवा देव आयुष्येनो बांध करे छे ? आ प्रश्नना उत्तरमां

વાનાહ-‘ગોયમા’ इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘नो नेरइयाउयं०’ नो नैरयि-
 कायुष्कम् अक्रियावादिनो नारकाः प्रकुर्वन्ति ‘तिरिक्खजोणियाउयं पकरे’ति’
 तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति ‘मणुस्साउयं पि पकरे’ति’ मनुष्यायुष्कमपि प्रकु-
 र्वन्ति ‘नो देवाउयं पकरे’ति’ नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति । ‘एवं अन्नाणियवाई वि
 वेणइयवाई वि’ एवम्-अक्रियावादि नारकवदेव अज्ञानिकवादिवैनयिकवादिनारका
 अपि न नारकदेवायुष्कं प्रकुर्वन्ति किन्तु तिर्यग्मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति इमे त्रयोऽ-
 क्रियावादिनः तिर्यग्मनुष्यायुषामेव कर्तारो भवन्ति न तु नारकदेवायुषां बन्धका
 भवन्तीति भावः । ‘सल्लेस्सा णं भंते ! नेरइया किरियावाई’ सल्लेश्याः खल्ल

या देवायुका बन्ध करते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-गोयमा । नो
 नेरइयाउयं०, हे गौतम ! अक्रियावादी नैरयिक नैरयिकायुष्क का बन्ध
 नहीं करते हैं ‘नो देवाउयं पकरे’ति’ देवायुष्क का बन्ध नहीं
 करते हैं, किन्तु ‘तिरिक्खजोणियाउयं पकरे’ति, मणुस्साउयं पि पक-
 रे’ति’ तिर्यगायुष्क का बन्ध करते हैं और मनुष्यायुष्क का भी बन्ध
 करते हैं । ‘एवं अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि’ इसी प्रकार से अज्ञा-
 निकवादी नैरयिक और वैनयिकवादी नैरयिक भी न नारकायु का
 बन्ध करते हैं और न देवायुका ही बन्ध करते हैं किन्तु ‘तिरिक्खाउयं
 पकरे’ति मणुस्साउयं पि पकरे’ति’ तिर्यगायु का बन्ध करते हैं और
 मनुष्यायु का भी बन्ध करते हैं । इस प्रकार ये अक्रियावादी, अज्ञानिक-
 वादी और वैनयिकवादी नारक तिर्यग्मनुष्य आयुका ही बन्ध करने
 वाले होते हैं, नारक देवायुका नहीं । ‘सल्लेस्सा णं भंते ! नेरइया

પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘ગોયમા ! નો નેરइयाउयं’ હે ગૌતમ ! અક્રિયાવાદી નૈરયિક
 નૈરયિકના આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી નો દેવાउयं પકરે’તિ’ દેવ સંબંધી
 આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી. પરંતુ ‘તિરિक्खजोणियाउयं પકરે’તિ મણુસ્સાउयं
 પકરે’તિ’ તિર્યગ આયુષ્યનો બંધ કરે છે, અને મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ કરે છે.
 ‘एव अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि’ એજ પ્રમાણે અજ્ઞાનવાદી નૈરયિક અને
 વૈનયિકવાદી નૈરયિકો પણ નારક આયુનો બંધ કરતા નથી અને દેવ આયુનો
 પણ બંધ કરતા નથી પરંતુ તેઓ ‘તિરिक्खाउयं પકરે’તિ મણુસ્સાउयं પિ પકરે’તિ’
 તિર્યગ આયુષ્યનો બંધ કરે છે, અને મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ કરે છે.
 આ રીતે આ અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદી નારકો તિર્યગ અને
 મનુષ્યોના આયુષ્યનો બંધ કરવાવાળા હોય છે નારક અને દેવ આયુનો
 બંધ કરવાવાળા હોતા નથી.

‘सल्लेस्साणं भंते ! नेरइया किरियावाई’ હે ભગવન્ જો નૈરયિકો લેશ્યા-

મદન્ત ! નૈરયિકાઃ ક્રિયાવાદિનઃ 'કિં નેરહ્યાયુષં' કિં નૈરયિકાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ અથવા તિર્યગ્યોનિકાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ મનુષ્યાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ દેવાયુષ્કં વા પ્રકુર્વન્તીતિ પ્રશ્નઃ । ઉત્તરમાહ—'એવં સઘ્વે વિ' इत्यादिना, 'एवं सघ्वे वि नेरह्या जे किरियावाई ते मणुस्साउयं एगं पकरेति' एवं सर्वेऽपि नैरयिका ये क्रियावादिन स्ते एकमेव मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति क्रियावादिनां सर्वेषामेव नारकाणां क्रियावादस्वभावादेकस्यैव मनुष्यायुष्कस्य बन्धो भवति, नेतरायुषः । तत्र 'जे अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणह्यवाई ते सघ्वट्टाणेषु वि नो नेरह्याउयं पकरेति' ये अक्रियावादिनो नारका अज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनश्च ते इमे प्रयः सर्वस्थानेषु लेश्यादि सर्वद्वारेष्वपि नो—नैव कथमपि नारकायुष्कं प्रकुर्वन्ति तथा स्वभावत्वात्, किन्तु 'तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेति' मणुस्साउयं पि पकरेति' तिर्यग्योनिकायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति तथा मनुष्यायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति 'नो

किरियावाई' हे मदन्त ! जो नैरयिक सलेश्य हैं और क्रियावादी हैं—वे 'किं नेरह्याउयं' क्या नैरयिकायु का बन्ध करते हैं ? अथवा तिर्यगायुका बन्ध करते हैं ? या मनुष्यायु का बन्ध करते हैं ? या देवायुका बन्ध करते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—'एवं सघ्वे वि नेरह्या जे किरियावाई ते मणुस्साउयं एगं पकरेति' इस प्रकार समस्त नैरयिक जो क्रियावादी हैं वे एक मनुष्यायु के ही बन्धक होते हैं, शेष तीन आयुओं के नहीं । क्यों कि क्रियावादिता में ऐसा ही स्वभाव होता है कि इसमें एक मनुष्यायु का ही बन्ध होता है । तथा—जो अक्रियावादी, अज्ञानवादी और वैनयिकवादी नारक हैं वे समस्त स्थानों में—लेश्यादिक समस्त द्वारों में—भी किसी प्रकार से नारकायुष्क का बन्ध

વાળા હોય છે. અને ક્રિયાવાદી હોય છે, તેઓ 'કિં નેરહ્યાયુષં' શું નૈરયિક આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા તિર્યંચ આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા દેવ આયુનો બંધ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'એવં સઘ્વે નેરહ્યા જે કિરિયાવાઈ તે મણુસ્સાઉયં એગં પકરેતિ' આ રીતે સઘળા નૈરયિકો કે જે ક્રિયાવાદી છે, તેઓ એક મનુષ્ય આયુનો બંધ કરનારા હોય છે. બાકીના ત્રણ આયુનો બંધ કરતા નથી. કેમ કે ક્રિયાવાદી પણામાં એ પ્રભાણેનો સ્વભાવ હોય છે. કે તેમાં મનુષ્ય આયુનો જ બંધ થાય છે. તથા જેઓ અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદી નારકો છે તેઓ બધા જ સ્થાનોમાં લેશ્યા વિગેરે સઘળા દ્વારોમાં પણ કોઈ પણ રીતે નારક આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી. પરંતુ તિર્યંચ આયુનો અને મનુષ્ય આયુનો જ બંધ કરે છે. દેવાયુનો પણ બંધ

‘દેવાયં પકરે’તિ’ નો નૈવ દેવસમ્બન્ધિ આયુઃકવન્ધં કુર્વન્તીતિ । ‘નવરં સમ્મા-
મિચ્છતે ઉવરિલ્લેહિં દોહિં વિ સમોસરણેહિં’ નવરં સમ્યગ્મિથ્યાત્વિનો મિશ્રદષ્ટયઃ
ઉપરિતનાશ્યામજ્ઞાનિક વૈનયિકવાદિરૂપાશ્યાં દ્વાશ્યામપિ સમવસરણાશ્યામ્ ‘ન
કિંચિ વિ પકરે’તિ’ ન કિમપિ આયુઃ પ્રકુર્વન્તિ ‘જહેવ જીવપણ’ યથૈવ જીવપદે
સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિનારકાણાં દ્વે એવાન્તિયે સમવસરણે અજ્ઞાનિકવાદિનશ્ચ વૈનયિક
વાદિનશ્ચેત્યાકારકે ભવતઃ તેષાં આયુર્વન્ધો ન ભવત્યેવ ગુણસ્થાનકસ્વભાવાદત
સ્તે ન કિમપિ આયુઃ પ્રકુર્વન્તીતિ ભાવઃ મિશ્રદષ્ટેઃ ક્રિયાવાદાક્રિયાવાદયોર-
ભાવાત્ । ‘એવં જાવ થણિયકુમારા જહા નેરહયા’ એવં યાવત્સ્તનિતકુમારા યથા
નૈરયિકાઃ નૈરયિકવદેવ અસુરકુમારાદારભ્ય સ્તનિતકુમારપર્યન્તા જીવા નારકવદેવ
સમવસરણવિષયે જ્ઞાતવ્યા ઇતિ । ‘અકિરિયાવાઈ ણં મંતે । પુઢ્ઢીકાહયા પુચ્છા’

નહીં કરતે હૈં—કિન્તુ તિર્યગાયુ કા એવં મનુષ્યાયુ કા હી વન્ધ કરતે
હૈં, દેવાયુ કા ભી વન્ધ નહીં કરતે હૈં । ‘નવરં સમ્મામિચ્છતે ઉવરિલ્લે
દોહિં વિ સમોસરણેહિં’ પરન્તુ જો સમ્યગ્મિથ્યાત્વી નારક હૈં ઓર
જો અજ્ઞાનિકવાદી એવં વૈનયિકવાદી હૈં એ કિસી ભી આયુકા વન્ધ
નહીં કરતે હૈં । ‘જહેવ જીવ પણ’ જેસા કિ જીવ પદ મેં સમ્યગ્મિથ્યા-
કે દો હી અન્તિમ સમવસરણ અજ્ઞાનવાદી ઓર વૈનયિકવાદી એ દો
સમવસરણ હોતે હૈં ઓર ઉનમેં આયુવન્ધ નહીં હોતા હૈં । કયો કી હસ
ગુણસ્થાન કા—તૃતીય ગુણસ્થાન કા—એસા હી સ્વભાવ હોતા હૈં— હસ
લિયે કિસી ભી આયુકા વન્ધ નહીં કરતે હૈં । મિશ્રદષ્ટિમેં ન ક્રિયા
વાદિતા હોતી હૈં ઓર ન અક્રિયાવાદિતા હોતી હૈં । ‘એવં જાવ થાણિય-
કુમારા જહેવ નેરહયા’ અસુરકુમાર સે લેકર સ્તનિતકુમાર તક કે
જીવ નૈરયિકોં કે જેસે હી સમવસરણ કે વિષય મેં જ્ઞાતવ્ય હૈં ।

કરતા નથી. ‘નવરં સમ્મામિચ્છતે ઉવરિલ્લે દોહિં વિ સમોસરણેહિં’ પરંતુ જેઓ
સમ્યગ્મિથ્યાવાળા નારકો છે, તેઓ તથા અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદી છે
તેઓ કોઈ પણ આયુનો બંધ કરતા નથી ‘જહેવ જીવપણ’ જે પ્રમાણે જીવ
પદમાં સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિવાળા નારકોને છેલ્લા જેજ સમવસરણ એટલે કે
અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદી આ જેજ સમવસરણ હોય છે. તેઓને આયુ
બંધ હોતો નથી. એવો જ તેમનો સ્વભાવ હોય છે, તેથી કોઈ પણ આયુનો
તેઓ બંધ કરતા નથી. કેમ કે—આ ત્રીજા ગુણ સ્થાનનો એવો જ સ્વભાવ
હોય છે. તેથી તેઓ કોઈપણ આયુનો બંધ કરતા નથી. મિશ્રદૃષ્ટિવાળાઓમાં
ક્રિયાવાદીપણું પણ હોતું નથી. તથા અક્રિયાવાદીપણું પણ હોતું નથી. ‘એવં
જાવ થણિયકુમારા જહા નેરહયા’ એક ઈન્દ્રિયવાળાથી લઈ ને સ્તનિતકુમાર સુધીના
જીવો સંબંધી નૈરયિકોના કથન પ્રમાણે જ તેઓનું સમવસરણ કહેલ છે.

अक्रियावादिनः खलु भदन्त ! पृथिवीकायिका जीवाः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति मनुष्यायुष्कं वा प्रकुर्वन्ति देवायुष्कं वा प्रकुर्वन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते । भगवानाह—‘गोयमा’ इत्यादि । ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘नो नैरइयाउयं पकरे’ति नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति अक्रियावादिनः पृथिवीकायिकाः किन्तु ‘तिरिक्खजोणियाउयं० मणुस्साउयं पकरे’ति तिर्यग्योनि-
कायुष्कं प्रकुर्वन्ति तथा मनुष्यायुष्कं च प्रकुर्वन्ति ‘नो देवाउयं पकरे’ति नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति, अक्रियावादिनां पृथिवीकायिकजीवानां द्वे एव तिर्यग्मनु-
ष्यायुषी भवतो न तु नारकदेवायुष्कौ भवत इति । ‘एवं अन्नाणियवाई वि’ एव-
मक्रियावादिनः पृथिवीकायिकवदेव अज्ञानिकवादि पृथिवीकायिका अपि नो
‘अक्रिरियावाई णं भंते ! पुढवीकाइया पुच्छा’ हे भदन्त ! अक्रियावादी
पृथिवीकायिक जीव कथा नैरयिक आयुका बन्ध करते हैं ? या तिर्यगायु
का बन्ध करते हैं ? या मनुष्यायुका बन्ध करते हैं ? या देवायुका
बन्ध करते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—‘गोयमा ! नो नैरइयाउयं
पकरे’ति हे गौतम ! अक्रियावादी पृथिवीकायिक जीव नैरयिक आयुका
बन्ध नहीं करते हैं किन्तु—तिर्यगायु का बन्ध करते हैं, मनुष्यायु का
बन्ध करते हैं, ‘नो देवाउयं पकरे’ति पर देवायुका भी वे बन्ध नहीं
करते हैं । इस प्रकार अक्रियावादी पृथिवीकायिक जीवों के तिर्यगायु
और मनुष्यायु इन दो आयुओं का ही बन्ध होता है नैरयिक और
देवायुका बन्ध नहीं होता है । ‘एवं अन्नाणियवाई वि’ अज्ञानिक-
वादी पृथिवीकायिक जीव अक्रियावादी पृथिवीकायिक जीव के जैसे ही

‘अक्रिरियावाई णं भंते ! पुढवीकाइया पुच्छा’ डेवगवन् अक्रियावादी
पृथ्वीकायिक एव शुं नैरयिक आयुष्येनो बंध करे छे ? अथवा तिर्य्य
आयुनेो बंध करे छे ? अथवा मनुष्य आयुनेो बंध करे छे ? अथवा देव
आयुनेो बंध करे छे ? आपश्चना उत्तरमां प्रभुश्री कहे छे डे—‘गोयमा ! नो
नैरइयाउयं पकरे’ति डे गौतम ! अक्रियावादी पृथ्वीकायिक एव नैरयिक आयुनेो
बंध करता नथी. परंतु तिर्य्य आयुष्येनो बंध करे छे, अने मनुष्य
आयुनेो बंध करे छे. ‘नो देवाउयं पकरे’ति परंतु तेअो देव आयुष्येनो पणु
बंध करता नथी. आ रीते अक्रियावादी पृथ्वीकायिक एवोने तिर्य्य
आयु अने मनुष्य आयु आ जे आयुनेो बंध डोय छे तेअोने
नैरयिक अने देव आयुनेो बंध डोतो नथी. ‘एवं अन्नाणियवाई वि’ अज्ञान
वादी पृथ्वीकायिक एव, अक्रियावादी पृथ्वीकायिक एवना कथन प्रमाणे ज
नारक आयु अने देव आयुनेो बंध करता नथी. परंतु तिर्य्य आयु अने

નારકાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ ન વા દેવાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ કિન્તુ તિર્યગ્યોનિકાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ તથા મનુષ્યાયુષ્કમપિ પ્રકુર્વન્તીતિ ભાવઃ । ‘સલેસ્સા ણં મંતે !’ સલેશ્યાઃ સ્તદ્ધ મદન્ત ! પૃથિવીકાયિકાઃ કિં નૈરયિકાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ તિર્યગ્યોનિકાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ મનુષ્યાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ દેવાયુષ્કં વા પ્રકુર્વન્તીતિ પ્રશ્નઃ, મગધનાહ- ‘એવં જં જં પયં અત્થિ પુઢવીકાહ્યાણં’ એવં યત્ યત્ પદં-લેશ્યાદિરૂપદ્વારં પદ-વિંશતિતમશતકગતપ્રથમોદેશકસ્થં પૃથિવીકાયિકજીવાનામ્ અસ્તિ ‘તર્હિ તર્હિ મઙ્ગિમેસુ દોસુ સમોસરણેસુ’ તત્ર તત્ર પદેષુ મધ્યમયો દ્વયોઃ અક્રિયાવાદ્યજ્ઞાનિક-વાદિરૂપયોઃ સમવસરણયોઃ ‘એવં ચેવ દુવિહં આઉયં પકરેતિ’ એવમેવ ઉપરિદર્શિત પ્રકારેણૈવ દ્વિવિધમ્-દ્વિપ્રકારમ્ આયુષ્કમ્ તિર્યગ્યોનિકસમ્બન્ધિ મનુષ્યયોનિસમ્બન્ધિ ચેતિ આયુષ્કદ્વયમેવ પ્રકુર્વન્તિ ન તુ નારકાયુષ્કં દેવાયુષ્કં વા પ્રકુર્વન્તીતિ । ‘નવરં તેડલેસ્સાએ ન કિંપિ પકરેતિ’ નવરમ્-કેવલં વિશેષ ઇતાવાનેવ યત્ તેજો-

નારકાયુ ઓર દેવાયુ કા બન્ધ નહીં કરતે હૈં કિન્તુ તિર્યગાયુ ઓર મનુષ્યાયુ કા હી બન્ધ કરતે હૈં । અર્થાત્ હન આયુઓં મેં સે હી કિસી એક આયુકા બન્ધ કરતે હૈં । ‘સલેસ્સા ણં મંતે !’ હે મદન્ત ! સલેશ્ય પૃથિવીકાયિક જીવ કયા નૈરયિક આયુકા બન્ધ કરતે હૈં ? યા તિર્યગાયુકા બન્ધ કરતે હૈં ? યા મનુષ્યઆયુકા બન્ધ કરતે હૈં ? યા દેવાયુકા બન્ધ કરતે હૈં ? હસકે ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં-‘એવં જં જં પયં અત્થિ પુઢવીકાહ્યાણં’ હે ગૌતમ ! પૃથિવીકાયિક જીવ મેં જો-જો લેશ્યાદિ રૂપ પદ સંભવિત હોં, ડન-ડન પદોં મેં વર્તમાન પૃથિવીકાયિક જીવોં કે અક્રિયાવાદી ઓર અજ્ઞાનવાદી યે દો હી સમવસરણ હોતે હૈં-સો હન દોનોં સમવસરણોં મેં પૂર્વોક્ત અનુસાર મનુષ્યાયુ ઓર તિર્ય-આયુકા બન્ધ હી ડન પૃથિવીકાયિક જીવોં કે હોતા હૈ નારકાયુષ્ક

મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે. અર્થાત્ આ બે આયુ પૈકી કોઈ એક આયુનો બંધ કરે છે. ‘સલેસ્સા ણં મંતે !’ હે ભગવન્ લેશ્યાવાળા પૃથ્વીકાયિક ભવો શું નૈરયિક આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા તિર્યંચ આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા દેવ આયુનો બંધ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-‘એવં જં જં પયં અત્થિ પુઢવી-કાહ્યાણં’ હે ગૌતમ ! પૃથ્વીકાયિક ભવોમાં લેશ્યા વિગેરે પ્રકારથી જે જે પદો સંભવિત હોય તે તે પદોમાં રહેનારા પૃથ્વીકાયિક ભવોને અક્રિયાવાદી અને અજ્ઞાનવાદી આ બેજ સમવસરણ હોય છે. તો આ બન્ને સમવસરણોમાં પડેલાં કદા પ્રમાણે મનુષ્ય આયુ અને તિર્યંચ આયુનો બંધ જ તે પૃથ્વી-કાયિક ભવોને હોય છે. તેઓ નારક આયુ અને દેવ આયુને બંધ કરતા નથી.

લેશ્યાયાં ન કિમપિ આયુર્વન્ધં પ્રકુર્વન્તિ પૃથિવીકાયિકજીવેષુ દેવોત્પત્તિત્વેન અપર્યાપ્તાવસ્થાયामેવ તેજોલેશ્યા ભવતિ, તત્સત્તાયાં નૈવાયુષો વન્ધઃ, તદ્વિગમે એવ આયુષો વન્ધસદ્ભાવાત્ । ‘એવં આઝકાહયાણ વિ વણસ્સહકાહયાણ વિ’ એવં પૃથિવીકાયિકવદેવાઽપ્કાયિકાનાં વનસ્પતિકાયિકાનાં ચ દ્વયાનામ્ અક્રિયાવાદ-જ્ઞાનિકવાદિ સમવસરણયો મધ્યે યત્ યત્ પદં ભવતિ તસ્મિન્ તસ્મિન્ પદે એવ દ્વિપકારકં તિર્યગ્યોનિકસમ્બન્ધિ મનુષ્યભવસમ્બન્ધિ ચાયુ ભવતિ એધ્વપિ પૃથિ-વીકાયિકવદેવોત્પત્તિત્વેન અપર્યાપ્તાવસ્થાયामેવ તેજોલેશ્યા ભવતિ, તેજોલેશ્યાયાં ચ નાયુષો વન્ધો ભવતીત્યાદિકં સર્વં પૃથિવીકાયિકવદેવ જ્ઞાતવ્યમિતિ ભાવઃ ।

और देवायुष्क का बन्ध नहीं होता है । ‘नवरं तेजलेस्साए न किं पि पकरेति’ परंतु तेजोलेश्या पद में वर्तमान, पृथिवीकायिक जीवों के किसी भी आयुका बन्ध नहीं होता है । पृथिवीकायिकों के अपर्याप्ता-वस्था में ही इन्द्रिय पर्याप्ति पूर्ण होने के पहिले तेजोलेश्या होती है, क्योंकि पृथिवीकायिक जीवों में देवों की उत्पत्ति हो सकने से वहां अपर्याप्तावस्था में तेजोलेश्या कही गई है । तेजोलेश्या की सत्ता में आयुका बंध नहीं होता है । तेजोलेश्या के चले जाने पर ही आयुका बंध होता है । ‘एवं आउक्काहयाण वि वणस्सहकाहयाण वि’ पृथिवीकायिक जीव के जैसे ही अपूकायिकों के वनस्पतिकायिकों के अक्रियावादी और अज्ञानिकवादी इन दो समवसरणों में जो जो पद संभवित हो उन-उन पदों में तिर्यगायु और मनुष्यायु इन दो आयुओं का ही उनके बंध होता है, अन्य आयुओं का नहीं इनमें भी पृथिवीकायिकों

‘नवरं तेजलेस्साए न किं पि पकरेति’ परंतु तेजोલેશ્યાવાળા પદમાં રહેનારા પૃથ્વીકાયિક જીવોને કોઈપણ આયુનો બંધ થતો નથી. પૃથ્વીકાયિકોને અપર્યાપ્ત અવસ્થામાં જ ઇન્દ્રિય પર્યાપ્તિ પૂરી થયા પહેલાં તેજોલેશ્યા હોય છે. કેમકે પૃથ્વી-કાયિક જીવોમાં દેવોની ઉત્પત્તિ થતી હોવાથી ત્યાં અપર્યાપ્ત અવસ્થામાં તેજો-લેશ્યા કહી છે. તેજોલેશ્યાની સત્તામાં આયુને બંધ હોતો નથી. તેજો-લેશ્યાના જવાથીજ આયુનો બંધ થાય છે. ‘એવં આઝકાહયાણ વિ વણસ્સહ કાહયાણ વિ’ લેશ્યાવાળા પૃથ્વીકાયિક જીવના કથન પ્રમાણે જ લેશ્યાવાળા અપૂકાયિકોને, લેશ્યાવાળા વનસ્પતિકાયિકોને અક્રિયાવાદી અને અજ્ઞાનવાદી આ બે સમવસરણોમાં જે જે પદો સંભવિત હોય તે તે પદોમાં તિર્યગ્ય આયુ અને મનુષ્ય આયુ આ બે આયુષ્યનો જ બંધ હોય છે. બીજા બે આયુનો બંધ હોતો નથી. તેનું કારણ પણ એજ છે કે-આમાં પણ દેવોની

અક્રિયાવાદિનોડજ્ઞાનિકવાદિનશ્ચ અપ્કાયિકવનસ્પતિકાયિકા દ્વિપકારકમેવ
આયુષ્કં વધનન્તીતિ ભાવઃ । 'તેઝકાહયા વાઝકાહયા સવ્વદ્વાણેસુ મજ્ઞિમેસુ દોસુ
સમોસરણેસુ નો નેરહયાઝયં પકરેતિ' તેજસ્કાયિકા વાયુકાયિકાશ્ચ સર્વસ્થાનેષુ
સર્વેષ્વેવ લેશ્યાદિદ્વારેષુ મધ્યમયોર્દ્વયોઃસમવસરણયોઃ અક્રિયાવાચજ્ઞાનિકવાદિ-
રૂપયોઃ નો નારકભવસમ્વન્ધિ આયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ । કિન્તુ 'તિરિક્કલજોણિયાઝયં
પકરેતિ' તિર્યગ્યોનિકાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ, 'ળો મણુસ્સાઝયં' નો મનુષ્ય સમ્વન્ધિ
આયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ 'નો દેવાઝયં પકરેતિ' નો દેવાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ તેજસ્કાયિક

કે જૈસે દેવોં કી ઉત્પત્તિ હો સકતે સે અપર્યાસાવસ્થા મૈં હી તેજો-
લેશ્યા કા સદ્ભાવ રહતા હૈ । તેજોલેશ્યા, કે સદ્ભાવ મૈં આયુકા
બંધ નહીં હોતા હૈ ઇત્યાદિ સવ કથન પૃથિવીકાયિક કે જૈસે પહાં
સમંજના ચાહિયે । અક્રિયાવાદી ઓર અજ્ઞાનિકવાદી અપ્કાયિક એવં
વનસ્પતિકાયિક જીવ દો પ્રકારકી હી આયુકા બંધ કરતે હૈં યહી કહને
કા તાત્પર્ય હૈ, 'તેઝકાહયા વાઝકાહયા સવ્વદ્વાણેસુ મજ્ઞિમેસુ દો સુ
સમોસરણેસુ નો નેરહયાઝયં પકરેતિ' તેજસ્કાયિક ઓર વાયુકાયિક
જીવ લેશ્યાવાદિક સર્વ સ્થાનોં મૈં અક્રિયાવાદી રૂપ ઓર અજ્ઞાનિક-
વાદી રૂપ સમવસરણવાલે હોતે હુએ નારક ભવ સમ્વન્ધિ આયુ કર્મ
કા બંધ નહીં કરતે હૈં કિન્તુ વે 'તિરિક્કલજોણિયાઝયં પકરેતિ' તિર્ય-
ગાયુ કા હી બંધ કરતે હૈં । 'ળો મણુસ્સાઝયં નો દેવાઝયં પકરેતિ'
મનુષ્યાયુ કા બંધ નહીં કરતે હૈં ઓર ન દેવાયુ કા બંધ કરતે હૈં ।

ઉત્પત્તી હોવાથી અપર્યાપ્ત અવસ્થામા તેજોલેશ્યાનો સદ્ભાવ હોય છે.
તેજોલેશ્યાના સદ્ભાવમાં આયુનો બંધ હોતો નથી. વિગેરે તમામ કથન
પૃથ્વીકાયિકના કથન પ્રમાણે અહિયાં સમજવું અક્રિયાવાદી અને અજ્ઞાનવાદી
અપ્કાયિક અને વનસ્પતિકાયિક એ બે પ્રકારનાં આયુષ્યનો જ બંધ કરે
છે. એજ આ કથનનું તાત્પર્ય કહ્યું છે.

'તેઝકાહયા વાઝકાહયા સવ્વદ્વાણેસુ મજ્ઞિમેસુ દોસુ સમોસરણેસુ નો
નેરહયાઝયં પકરેતિ' તેજસ્કાયિક અને વાયુકાયિક લેશ્યા વિગેરે સઘળા સ્થાનોમાં
અક્રિયાવાદીપણા અને અજ્ઞાનવાદીપણાના સમવસરણવાળા થઈને નારક
ભવ સંબંધી આયુકર્મનો બંધ કરતા નથી. તથા દેવ આયુનો પણ બંધ
કરતા નથી. પરંતુ 'તિરિક્કલજોણિયાઝયં પકરેતિ' તિર્યગ્ આયુનો જ બંધ
કરે છે. 'ળો મણુસ્સાઝયં નો દેવાઝયં પકરેતિ' મનુષ્ય આયુનો બંધ કરતા
નથી. તથા દેવ આયુનો પણ બંધ કરતા નથી. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે

વાયુકાયિકજીવાનાં સર્વત્ર પદેષુ એકપ્રકારકતિર્યગાયુષ્ણ એવ વંધનં ભવતિ નાન્યા-
યુષ્ણેતિ ભાવઃ । ‘વેદંદિયતેદંદિયચતુરિંદિયાણં જહા પુઠ્ઠવિકાઙ્કયાણં’ દ્વીન્દ્રિય-
ત્રીન્દ્રિયચતુરિન્દ્રિયજીવાનામાયુર્વંધો યથા પૃથિવીકાયિકાનાં પ્રદર્શિત સ્તથૈવ
જ્ઞાતવ્યઃ દ્વીન્દ્રિય યાવત્ ચતુરિન્દ્રિયાણાં પૃથિવીકાયિકવદેવ તિર્યગ્યોનિકાયુષ્કસ્ય
મનુષ્યભવસમ્બન્ધયાયુષ્કસ્ય ચ વંધનં ભવતિ ન તુ ઇમે નૈરયિકાયુષ્કં કુર્વન્તિ ન વા
દેવાયુષ્કમેવ કુર્વન્તીતિ ભાવઃ । ‘નવરં સમ્પત્તનાણેષુ ન એકં પિ આરયં પકરેતિ’
નવરં કેવલમેતદેવ વૈલક્ષણ્યં યત્ સમ્યક્ત્વજ્ઞાનેષુ સમ્યક્ત્વપદે જ્ઞાનપદે ચેમે દ્વીન્દ્રિય
યાવત્ ચતુરિન્દ્રિયા જીવા ન એકમપિ આયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ, દ્વીન્દ્રિયાદિ ચતુરિન્દ્રિ-
યાન્તજીવાનાં સાસ્વાદનભાવેન અપર્યાપ્તાવસ્થાયામેવ સમ્યક્ત્વં તથા જ્ઞાનં ચ ભવતિ
તત્કાલસ્યાલ્પત્વાન્ન કસ્યાપિ આયુષો વંધો મદતીતિ । ‘કિરિયાવાઈ ણં મંતે ।’

તાત્પર્ય કહને કા યહી હૈ કિ તેજસ્કાયિક ઓર વાયુકાયિક જીવોં કે
સર્વત્ર પદોં મેં એક પ્રકાર કે તિર્યગાયુ કા હી વંધ હોતા હૈ, અન્ય
આયુષોં કા નહીં । ‘વેદંદિયતેદંદિય ચતુરિંદિયાણં જહા પુઠ્ઠવિકાઙ્કયાણં’
દોઃદ્વિન્દ્રિય, તેદ્વિન્દ્રિય ચૌદ્વિન્દ્રિય જીવોં કે પૃથિવીકાયિક જીવોં કે
જૈસે તિર્યગ્યોનિક આયુષ્ક કા ઓર મનુષ્ય ભવ સમ્બન્ધયાયુષ્ક કા વંધ
હોતા હૈ । નરકાયુ કા ઓર દેવાયુ કા इनके वंध नहीं होता है ।
‘નવરં સમ્પત્તનાણેષુ ન એકં પિ આરયં પકરેતિ’ પરંતુ યહાં વિશેષતા
હતની સી હી હૈ કિ સમ્યક્ત્વ પદ મેં ઓર જ્ઞાન પદ મેં ચે દ્વીન્દ્રિય સે
લેકર ચૌદ્વિન્દ્રિય તક કે જીવ એક સી આયુકા વંધ નહીં કરતે હૈ, કયોં
કિ इनके सम्यक्त्व और ज्ञान सास्वादन भाव से अपर्याप्तावस्था में ही
होता है । अतः अपर्याप्तावस्था का काल अत्यल्प होने से किसी भी
आयुका वंध इनके अक्रियावादी और अज्ञानिकवादी रूप हालत में

તેજસ્કાયિક અને વાયુકાયિક જીવોને સઘળા પદોમાં એક પ્રકારના તિર્યગ્ય
આયુષોના બંધ હોય છે, તે શિવાયના બીજા આયુષોનો બંધ થતો
નથી. ‘વેદંદિય તેદંદિય ચતુરિંદિયાણં જહા પુઠ્ઠવિકાઙ્કયાણં’ એ ઇન્દ્રિયવાળા
ત્રણ ઇન્દ્રિયવાળા, ચાર ઇન્દ્રિયવાળા પૃથ્વીકાયિક જીવોને પૃથ્વીકાયિક
જીવોના કથન પ્રમાણે તિર્યગ્યોનિક આયુષ્યનો અને મનુષ્ય સંબંધી આયુષો
બંધ થાય છે. નારક આયુષો અને દેવ આયુષો બંધ નેઓને હોતો નથી.
‘નવરં સમ્પત્તનાણેષુ ન એકં પિ આરયં પકરેતિ’ પરંતુ આ કથનમાં વિશેષપણ
એ છે કે-સમ્યક્ત્વ પદમાં અને જ્ઞાનપદમાં આ એ ઇન્દ્રિયવાળાથી લઈને
ચારે ઇન્દ્રિયવાળા સુધીના જીવો એક પણ આયુષો બંધ કરતા નથી. કેમકે
તેઓને સમ્યક્ત્વ અને જ્ઞાન સાસ્વાદન લાવથી અપર્યાપ્ત અવસ્થામાં જ

ક્રિયાવાદિનઃ સ્વલ્પ મદન્ત ! ‘પંચિદિયતિરિક્લજોણિયા’ પચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકા
જીવાઃ ‘કિં નેરહયાઽયં પકરેંતિ પુચ્છા’ કિં નૈરયિકાયુક્તં પ્રકુર્વન્તિ અથવા તિર્ય
ગ્યોનિકાયુક્તં પ્રકુર્વન્તિ અથવા મનુષ્યાયુક્તં પ્રકુર્વન્તિ દેવાયુક્તં વા પ્રકુર્વતીતિ
પ્રશ્નઃ પૃચ્છયા સંગૃહ્યતે । મગવાનાહ-‘ગોયમા’ ક્ત્યાદિ, ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ !
‘જહા મળપજ્જવનાણી’ યથા મનઃપર્યવજ્ઞાનિનઃ મનઃપર્યવજ્ઞાનિવદેવ ક્રિયાવાદિ
પચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકાઃ ન નારકતિર્યગ્યોનિકમનુષ્યાયુક્તં પ્રકુર્વન્તિ કિન્તુ કેવલં
દેવાયુક્તમેવ પ્રકુર્વન્તીતિ ભાવઃ । ‘અકિરિયાવાઈ અન્નાણિયવાઈ વેળહયવાઈ ય
ચઽવ્વિહં પિ પકરેંતિ’ અક્રિયાવાદિનોઽજ્ઞાનિકવાદિનો વૈનયિકવાદિનશ્ચ પચ્ચે-
ન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકા નારકાયુક્તં તિર્યગ્યોનિકાયુક્તં મનુષ્યાયુક્તં દેવાયુક્તં ચતુ-

નહીં હોતા હૈ । ‘કિરિયાવાઈળં મંતે ! પંચિદિયતિરિક્લજોણિયા’
હે મદન્ત ! ક્રિયાવાદી પંચેન્દ્રિયતિર્યગ્ય જીવ ‘કિં નેરહયાઽયં પકરેંતિ
પુચ્છા’ કયા નૈરયિક આયુકા બંધ કરતે હૈં ? અથવા-તિર્યગાયુકા
બંધ કરતે હૈં ? અથવા-મનુષ્યાયુકા બંધ કરતે હૈં ? અથવા-દેવાયુક્ત
કા બંધ કરતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં-‘ગોયમા ! જહા મળપજ્જ-
વનાણી’ હે ગૌતમ ! મનઃપર્યવજ્ઞાની કે જૈસે ક્રિયાવાદી પચ્ચેન્દ્રિય
તિર્યગ્ય ન નારકાયુકા બંધ કરતે હૈં, ન તિર્યગાયુકા બંધ કરતે હૈં, ન
મનુષ્યાયુકા બંધ કરતે હૈં, કિન્તુ વે કેવલ એક દેવાયુકા હી બંધ
કરતે હૈં । ‘અકિરિયાવાઈ અન્નાણિયવાઈ વેળહયવાઈ ય ચઽવ્વિહં પિ
પકરેંતિ’ અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનિકવાદી ઓર વૈનયિકવાદી પચ્ચેન્દ્રિય
તિર્યગ્યોનિક જીવ ચારોં પ્રકાર કી આયુઓં કા બંધ કરતે હૈં । નાર-

હોય છે. તેથી અપર્યાપ્ત અવસ્થાનોકાળ અત્યંત થોડો હોવાથી તેઓને
અક્રિયાવાદી અને અજ્ઞાનવાદી પણામાં કોઈપણ આયુનો બંધ હોતો નથી.

‘કિરિયાવાઈળં મંતે ! પંચિદિયતિરિક્લજોણિયા’ હે ભગવન્ ક્રિયા-
વાદી પચ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્ય જીવ ‘કિં નેરહયાઽયં પકરેંતિ પુચ્છા’ થું તેઓ
નૈરયિક આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા
દેવ આયુનો બંધ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘ગોયમા !
જહા મળપજ્જવનાણી’ હે ગૌતમ ! મનઃપર્યવજ્ઞાનીના કથન પ્રમાણે ક્રિયાવાદી
પચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્ય નારકની આયુનો બંધ કરતા નથી. તિર્યગ્યની આયુને પણ
બંધ કરતા નથી. મનુષ્ય આયુનો બંધ કરતા નથી. પરંતુ તેઓ કેવળ એક
દેવ આયુનો જ બંધ કરે છે,

‘અકિરિયાવાઈ, અન્નાણિયવાઈ વેળહયવાઈ ય ચઽવ્વિહં પિ પકરેંતિ’ અક્રિયા-
વાદી, અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદી પચ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિવાણા જીવો આદે

વિંધમપિ આયુષ્કં પ્રકુર્વન્તીતિ ભાવઃ । ‘જહા ઓહિયા તહા સલેસ્સા વિ’ યથા ઔધિકાઃ સામાન્યતિર્યગ્યોનિકજીવા આયુષ્કં વધનન્તિ તથૈવ તેનૈવ પ્રકારેણ સલેશ્યાઃ પશ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકા અપિ આયુષ્કં વધનન્તિ, અય ભાવઃ—ક્રિયાવાદિ-પશ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકાઃ કેવલં વૈમાનિકદેવાયુષ્કમેવ વધનન્તિ, તથા શેષાઃ સમ-વસરણત્રયવન્તસ્તિર્યક્પશ્ચેન્દ્રિયા શ્રત્વાર્યપિ નરકાઘાયુષિ વધનન્તિ । ‘કળહલેસ્સા ણં મંતે ! કિરિયાવાઈ પંચેદિયતિરિક્વજોણિયા’ કૃષ્ણલેશ્યા ચલ્લ મદન્ત ! ક્રિયાવાદિનઃ પશ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકાઃ ‘કિં નેરહ્યાઝયં પુચ્છા’ કિં નૈરયિ-કાયુષ્કં કુર્વન્તિ મનુષ્યાયુષ્કં વા કુર્વન્તિ દેવાયુષ્કં વા કુર્વન્તીતિ પ્રશ્નઃ પૃચ્છ્યા સંગૃહ્યતે । મગવાનાહ—‘ગોયમા’ इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम !

કાયુ કા બી વે બંધ કરતે હૈં, તિર્યગાયુ કા બી વે બંધ કરતે હૈં, મનુષ્યાયુ કા બી વે બંધ કરતે હૈં ઓર દેવાયુ કા બી વે બંધ કરતે હૈં ‘જહા ઓહિયા તહા સલેસ્સા વિ’ જૈસે સામાન્ય તિર્યગ્યોનિક જીવ આયુષ્ક કર્મ કા બન્ધ કરતે હૈં ડસી પ્રકાર સે સલેશ્ય પશ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક જીવ બી આયુષ્ક કર્મ કા બન્ધ કરતે હૈં, અર્થાત્ ક્રિયાવાદી પશ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક માત્ર વૈમાનિક દેવાયુકા બન્ધ કરતે હૈં ઓર શેષ ત્રીન સમવસરણવાળે તિર્યચ પંચેન્દ્રિય ચારોં ગતિકા આયુ બાંધતે હૈં । ‘કળહલેસ્સા ણં મંતે ! કિરિયાવાઈ પંચેદિય-તિરિક્વજોણિયા’ હે મદન્ત ! કૃષ્ણલેશ્યાવાળે ક્રિયાવાદી જો પશ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક જીવ હૈં—વે કયા ‘નેરહ્યાઝયં’ પકરેંતિ પુચ્છા’ નૈરયિકાયુ કા બન્ધ કરતે હૈં ? યા તિર્યગાયુકા બન્ધ કરતે હૈં ? યા મનુષ્યાયુ કા બન્ધ કરતે હૈં ? યા દેવાયુ કા બન્ધ કરતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રશુશ્રી કહતે

પ્રકારના આયુષ્યનો બંધ કરે છે. તેઓ નારકોના આયુષ્યનો પણ બંધ કરે છે, તિર્યચઆયુનો પણ તેઓ બંધ કરે છે મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ કરે છે. અને દેવ આયુનો પણ બંધ કરે છે. ‘જહા ઓહિયા તહા સલેસ્સા વિ’ જે રીતે સામાન્ય જીવો આયુષ્ય કર્મનો બંધ કરે છે એજ પ્રમાણે લેશ્યાવાળા પશ્ચેન્દ્રિયતિર્યચ-યોનિ જીવો પણ નારકના આયુનો બંધ કરે છે. તેઓ તિર્યચ આયુનો બંધ કરતા નથી. પરંતુ તેઓ મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે. અને દેવ ભવના આયુષ્યનો બંધ કરે છે. ‘કળહલેસ્સા ણં મંતે ! કિરિયાવાઈ પંચેદિયતિરિક્વજોણિયા’ હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી જે પશ્ચેન્દ્રિયતિર્યચયોનિક જીવો છે. તેઓ શું ‘કિં નેરહ્યાઝયં’ પકરેંતિ પુચ્છા’ નૈરયિક આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા તિર્યચ આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા દેવ આયુનો બંધ કરે છે. ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રશુશ્રી ગૌતમ

‘નો નેરહયાયં પકરે’તિ’ નો નૈરયિકાયુક્તં પ્રકુર્વન્તિ ‘નો તિરિક્ષ્ણયં’
 નો તિર્યગ્યોનિકાયુક્તં પ્રકુર્વન્તિ ‘નો મણુસ્માયં’ નો મનુષ્યાયુક્તં પ્રકુર્વન્તિ
 ‘નો દેવાયં પકરે’તિ’ નો દેવાયુક્તં પ્રકુર્વન્તિ ‘અકિરિયાવાઈ અન્નાણિયવાઈ
 વેણહયવાઈ ચઙ્ગિવિહં પિ પકરે’તિ’ અક્રિયાવાદિનો ઽજ્ઞાનિકવાદિનો વૈનયિક-
 વાદિનશ્ચ પશ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકાઃ કૃષ્ણલેશ્યાવન્ત શ્વતુર્વિધં ચતુઃપ્રકારમપિ નાર-
 કતિર્યમનુષ્યદેવાયુક્તં પ્રકુર્વન્તીતિ ભાવઃ । ‘જહા કળહેસ્સા એવં નીલલેસ્સા
 વિ’ યથા કૃષ્ણલેશ્યાઃ પશ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકા સ્તથૈવ નીલલેશ્યા અપિ
 કાપોતિક લેશ્યા અપિ પશ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકા વક્તવ્યાઃ, તથા ચ ક્રિયાવાદિ
 પશ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકા ન નારકાયુક્તં ન તિર્યગ્યોનિકાયુક્તં ન મનુષ્યાયુક્તં ન
 હૈ—‘ગોયમા ! નો નેરહયાયં પકરે’તિ, નો તિરિક્ષ્ણાયં પકરે’તિ ‘હે
 ગૌતમ ! કૃષ્ણલેશ્યાવાલે ક્રિયાવાદી પશ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિકા ન નૈરયિક
 આયુકા બન્ધ કરતે હૈ, ન તિર્યગ્યાયુ કા બન્ધ કરતે હૈ, ‘નો મણુસ્માયં
 પકરે’તિ’ ન મનુષ્યાયુ કા બન્ધ કરતે હૈ, ‘નો દેવાયં પકરે’તિ’ ઓર ન
 દેવાયુ કા બન્ધ કરતે હૈ । ‘અકિરિયાવાઈ, અન્નાણિયવાઈ, વેણહયવાઈ,
 ચઙ્ગિવિહં પિ પકરે’તિ’ અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનિકવાદી ઓર વૈનયિકવાદી
 કૃષ્ણલેશ્યાવાલે પશ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્ય ચારો પ્રકારકી આયુ કા બન્ધ કરતે
 હૈ । ‘જહા કળહેસ્સા એવં નીલલેસ્સા વિ કાલહેસ્સા વિ’ જિસ પ્રકાર
 સે કૃષ્ણલેશ્યાવાલે પશ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્ય કહે ગરે હૈ ડસી પ્રકાર સે નીલલેશ્યા
 વાલે પશ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્ય એવં કાપોતિકલેશ્યાવાલે ધી કહને ચાહિયે અર્થાત્
 ક્રિયાવાદી પશ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્ય, ન નારકાયુક્ત કા બન્ધ કરતે હૈ, ન તિર્ય
 ગાયુક્ત કા બન્ધ કરતે હૈ, ન મનુષ્યાયુક્ત કા બન્ધ કરતે હૈ ઓર ન

‘સ્વામીને કહે છે કે—‘ગોયમા ! નો નેરહયાયં પકરે’તિ નો તિરિક્ષ્ણજોણિયાયં
 પકરે’તિ’ હે ગૌતમ ! કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી પશ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્ય એવો
 નારકાના આયુનો બંધ કરતા નથી. તથા તિર્યગ્ય આયુનો બંધ કરતા નથી
 ‘નો મણુસ્માયં પકરે’તિ’ મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ કરતા નથી. ‘નો દેવાયં
 પકરે’તિ’ તથા દેવ આયુનો પણ તેઓ બંધ કરતા નથી. ‘અકિરિયાવાઈ, અન્નાણિ-
 યવાઈ વેણહયવાઈ, ચઙ્ગિવિહં પિ પકરે’તિ’ અક્રિયાવાદી અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિક-
 વાદી કૃષ્ણલેશ્યાવાળા પશ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્ય ચારે પ્રકારના આયુનો બંધ કરે છે.
 ‘જહા કળહેસ્સા એવં નીલલેસ્સા વિ કાલહેસ્સા વિ’ જે પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા
 પશ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનું કથન કર્યું છે, એજ પ્રમાણે નીલલેશ્યાવાળા પશ્ચેન્દ્રિય
 તિર્યગ્ય અને કાપોતિકલેશ્યાવાળા પશ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્યનું કથન પણ કરવું જોઈએ
 અર્થાત્ નારકાયુનો બંધ કરતા નથી, તિર્યગ્યઆયુનો પણ બંધ કરતા નથી મનુષ્ય
 આયુનો પણ બંધ કરતા નથી. તથા દેવ આયુનો પણ બંધ કરતા નથી. કેમ કે—

દેવાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ । પચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્ચોનિકાઃ યદા સમ્યગ્દૃષ્ટ્યઃ કૃષ્ણલેશ્યાઘ-
શુભપરિણામવન્તો ભવન્તિ તદા તે પચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્ચોનિકા ન કિમપિ આયુષ્કં
પ્રકુર્વન્તિ, યદા તુ તેજોલેશ્યાદિ શુભ પરિણામવન્તો ભવન્તિ સમ્યગ્દૃષ્ટિક પચ્ચે-
ન્દ્રિયતિર્યગ્ચોનિકાઃ તદા તુ દેવાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ, તત્રાપિ ન ભવનવાસિ દેવાઘા-
યુષ્કં કિન્તુ કેવલં વૈમાનિકાયુષ્કમેવ પ્રકુર્વન્તીતિ ભાવઃ । તથા શેષા સમવસર-
ણત્રયવન્તસ્તિર્યક્પચ્ચેન્દ્રિયાશ્ચત્વાર્યપિ ત્રરકાઘાયુષિ વંધનન્તીતિ । ‘તેઝલેસ્સા જહા
સલેસ્સા’ તેજોલેશ્યા પરિણામવન્તઃ સલેશ્ય જીવવદેવ જ્ઞાતવ્યાઃ ક્રિયાવાદિ
તેજોલેશ્યાવન્તઃ પચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્ચોનિકાઃ કેવલં દેવાયુષ્કમેવ પ્રકુર્વન્તિ, શેષા
સ્રયોઽક્રિયાવાદિનોઽજ્ઞાનિકવાદિનો વૈનયિકવાદિનસ્તુ ત્રિવિધમાયુષ્કં વંધનન્તિ

દેવાયુષ્ક કા વંધ કરતે હૈં । ક્યોં કિ સમ્યગ્દૃષ્ટિ તિર્યચ્ચ જય કૃષ્ણ-
આદિ અશુભ લેશ્યા કે પરિણામવાલે હોતે હૈં તવ વે કિસી મી આયુકા
વંધ નહીં કરતે હૈં । ઓર જય ચે તેજોલેશ્યાદિ શુભ પરિણામવાલે હોતે
હૈં તવ વે સિર્ફ એક દેવાયુષ્ક કા હી વંધ કરતે હૈં । દેવાયુષ્ક કે વંધ મેં
મી વે ભવનવાસી આદિ દેવોં કી આયુષ્ક કા વંધ નહીં કરતે હૈં કિન્તુ
એક વૈમાનિક આયુષ્ક કા હી વંધ કરતે હૈં । ઓર શેષ ત્રીન સમવસરણ-
વાલે તિર્યચ્ચ પંચેન્દ્રિય ચારોં ગતિ કી આયુષ્ક બાંધતે હૈં । ‘તેઝલેસ્સા
જહા સલેસ્સા’ તેજોલેશ્યાવાલે ક્રિયાવાદી પચ્ચેન્દ્રિય તિર્યચ્ચ સલેશ્ય
જીવોં કે કથન અનુસાર કેવલ એક દેવાયુષ્ક કા હી વંધ કરતે
હૈં । બાકી કે ત્રીન અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનિકવાદી ઓર વૈનયિકવાદી
તેજોલેશ્યાવાલે પચ્ચેન્દ્રિયતિર્યચ્ચ ચારોં પ્રકાર કે આયુ કા વંધ
કરતે હૈં । ક્યોં કિ સલેશ્ય તિર્યક્પચ્ચેન્દ્રિય જીવોં કે હસી

સમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા તિર્યચ્ચ જ્યારે કૃષ્ણલેશ્યા વિગેરે અશુભ લેશ્યાના પરિણામવાળા
હોય છે, ત્યારે તેઓ કોઈ પણ આયુનો બંધ કરતા નથી અને જ્યારે તેઓ
તેજોલેશ્યા વિગેરે શુભ પરિણામવાળા હોય છે, ત્યારે તેઓ કેવળ એક દેવ આયુ-
બંધનો જ બંધ કરે છે. દેવાયુબંધના બંધમાં પણ તેઓ ભવનવાસી વિગેરે દેવોના
આયુનો બંધ કરતા નથી. પરંતુ એક વૈમાનિક દેવના આયુબંધનો જ બંધ કરે છે,
અને બાકીના ત્રણ સમવસરણવાળા તિર્યચ્ચ પંચેન્દ્રિય ત્યારે ગતિની આયુનો બંધ
કરે છે. ‘તેઝલેસ્સા જહા સલેસ્સા’ તેજોલેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી પચ્ચેન્દ્રિયતિર્યચ્ચ સલેશ્ય
જીવોના કથન પ્રમાણે કેવળ એક દેવઆયુનો જ બંધ કરે છે, બાકીના અક્રિયાવાદી,
અજ્ઞાનવાદી, અને વૈનયિકવાદી તેજોલેશ્ય વાળા પંચેન્દ્રિય તિર્યચ્ચ ત્યારે પ્રકા-
રના આયુબંધનો બંધ કરે છે. કેમ કે-લેશ્યાવાળા જીવોને આજ રીતનું પરિણામ

સંલેશ્યાનાં તિર્યક્પૃષ્ઠેન્દ્રિયાણામેવં વિધસ્વરૂપતયોક્તત્વાદિતિ । ‘નવરં’ અકિરિયા-
વાઈ અન્નાણિયવાઈ વેળહયવાઈ ય ણો ણેરહયાઉયં પકરેતિ’ નવરં કેવલમેતદેવ
વૈલક્ષણ્યં યત્ અક્રિયાવાદિનોઽજ્ઞાનિકવાદિનો વૈનયિકવાદિનશ્ચ ન નૈરયિકાયુષ્કં
પ્રકુર્વન્તિ કિન્તુ ‘દેવાઉયંપિ પકરેતિ’ દેવાયુષ્કમપિ પ્રકુર્વન્તિ, ‘તિરિક્લજોણિ-
યાઉયં પિ પકરેતિ’ તિર્યગ્યોનિકાયુષ્કમપિ પ્રકુર્વન્તિ । ‘મણુસ્સાઉયંપિ પકરેતિ’
મણુષ્યાયુષ્કમપિ પ્રકુર્વન્તિ ‘एवं पम्हलेस्सा वि एवं सुक्कलेस्सा वि
भाणियव्वा’ एवमुપरोक्तक्रमेण पद्मलेश्यापरिणामवन्तः, एवं शुक्कलेश्या-
परिणामवन्तोऽपि भणितव्याः—कथयितव्याः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका इति, एव-
मिमे चापि यदा क्रियावादिनः तदा केवलं देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति, यदा अक्रिया-
वादिनोऽज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनश्च भवन्ति तदा त्रिविधमपि आयुष्कं

પ્રકાર કે પરિણામ હોતે હૈં એસા પરિણે કહા ગયા હૈ । ‘નવરં અકિ-
રિયાવાઈ, અન્નાણિયવાઈ, વેળહયવાઈ ય ણો ણેરહયાઉયં પકરેતિ’
કિન્તુ અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનિકવાદી ઔર વૈનયિકવાદી પૃષ્ઠેન્દ્રિય તિર્યશ્ચ
નૈરયિક આયુ કા બન્ધ નહીં કરતે હૈં । વે તો ‘દેવાઉયં પિ પકરેતિ’
દેવાયુ કા ભી બન્ધ કરતે હૈં । ‘તિરિક્લજોણિયાઉયં પકરેતિ’ તિર્યગાયુ
કા ભી બન્ધ કરતે હૈં । ‘મણુસ્સાઉયં પકરેતિ’ મણુષ્ય આયુકા ભી
બંધ કરતે હૈં । ‘एवं पम्हलेस्सा वि एवं सुक्कलेस्सा वि भाणियव्वा’ હસી
પ્રકાર સે પદ્મલેશ્યા પરિણામવાલે પૃષ્ઠેન્દ્રિયતિર્યશ્ચ ઔર શુક્લલેશ્યા કે
પરિણામવાલે પૃષ્ઠેન્દ્રિયતિર્યશ્ચ ભી જાનના ચાહિયે, યે જિસ સમય
ક્રિયાવાદી હોતે હૈં તય કેવલ દેવાયુ કા હી બન્ધ કરતે હૈં ઔર જય યે
અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનિકવાદી ઔર વૈનયિકવાદી હોતે હૈં તય તીનો
પ્રકાર કી આયુકા બન્ધ કરતે હૈં । પર નારકાયુકા બન્ધ નહીં કરતે હૈં

હોય છે, તે પ્રમાણે પહેલા કહેલ જ છે. ‘નવરં’ અકિરિયાવાઈ, અન્નાણિયવાઈ વેળ-
હયવાઈ ણો ણેરહયાઉયં પકરેતિ’ પરંતુ અક્રિયાવાદી અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદી
પૃષ્ઠેન્દ્રિય તિર્યશ્ચ નૈરયિક આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી તેઓ તો ‘દેવાઉયં’ પિ
પકરેતિ’ દેવઆયુનો બંધ કરે છે, ‘તિરિક્લજોણિયાઉયં’ પિ પકરેતિ’ તિર્યગ્યઆયુનો
પણ બંધ કરે છે. ‘મણુસ્સાઉયં’ પિ પકરેતિ’ મણુષ્ય આયુનો પણ બંધ કરે છે.

‘एवं पम्हलेस्सा वि एवं सुक्कलेस्सा वि भाणियव्वा’ એજ પ્રમાણે પદ્મ
લેશ્યાના પરિણામવાળા પૃષ્ઠેન્દ્રિય તિર્યશ્ચ અને શુક્લ લેશ્યાના પરિણામવાળા
પૃષ્ઠેન્દ્રિય તિર્યગ્યના સંબંધમાં પણ સમજવું. તેઓ જ્યારે ક્રિયાવાદી હોય છે,
ત્યારે કેવળ દેવ આયુનો જ બંધ કરે છે. અને જ્યારે તેઓ અક્રિયાવાદી,
અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદી હોય છે, ત્યારે તેઓ ત્રણે પ્રકારના આયુનો

નારકાતિરિક્તં પ્રકુર્વન્તીતિ । ‘કળ્પપક્ષિયા તિર્હિં સમોસરણેહિં’ કૃષ્ણપાક્ષિકાં
જીવાઃ પશ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકાઃ ત્રિભિઃ સમવસરણૈઃ અક્રિયાવાચજ્ઞાનિકવાદિ
વૈનયિકવાદિભિઃ પશ્ચૈઃ ‘ચડવ્વિહંપિ આડયં પકરેતિ’ ચતુર્વિધમપિ નારકદેવ
તિર્યગ્મનુષ્યાયુષ્કં કુર્વન્તીતિ । ‘સુકપક્ષિયા જહા સલેસ્સા’ સમવસરણત્રયવન્તઃ
શુક્લપાક્ષિકા યથા સલેશ્વરાઃ સલેશ્વરતિર્યક્પશ્ચેન્દ્રિયજીવવદેવ શુક્લપાક્ષિકા
અપિ પશ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકા આયુશ્વતુષ્કં કુર્વન્તિ તથા ક્રિયાવાદિ શુક્લપાક્ષિક
તિર્યક્ પશ્ચેન્દ્રિયાઃ કેવલં વૈમાનિકદેવાયુષ્કમેવ વધનન્તિ ‘સમ્મદિદ્વી જહા મળ-
પજ્જવનાણી તહેવ વૈમાણિયાડયં પકરેતિ’ સમ્યગ્દૃષ્ટયઃ પશ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકા
જીવાઃ મનઃપર્યવજ્ઞાનિવદેવ કેવલં વૈમાનિકાયુષ્કમેવ પ્રકુર્વન્તીતિ । ‘મિચ્છાદિદ્વી
જહા કળ્પપક્ષિયા’ મિથ્યાદૃષ્ટયો યથા કૃષ્ણપાક્ષિકાઃ કૃષ્ણપાક્ષિકજીવવદેવ
મિથ્યાદૃષ્ટિ જીવા અપિ અક્રિયાવાચજ્ઞાનિકવાદિ વૈનયિકવાદિભિઃ ત્રિભિઃ સમવ-

‘કળ્પપક્ષિયા તિર્હિં સમોસરણેહિં’ કૃષ્ણપાક્ષિક પશ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક
જીવ અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી ઓર વૈનયિકવાદી હી હોતે હૈં ઓર
હસ સમય ‘ચડવ્વિહં પિ આડયં પકરેતિ’ વે ચારોં પ્રકાર કી આયુકા
બન્ધ કરતે હૈં । ‘સુકપક્ષિયા જહા સલેસ્સા’ ત્રીજ સમવસરણવાલે
શુક્લપાક્ષિક પશ્ચેન્દ્રિયતિર્યચ સલેશ્વર તિર્યચપંચેન્દ્રિય જીવોં કે જૈસે
દેવ તિર્યચ મનુષ્ય ઓર નારક ચારોં આયુઓં કા બન્ધ કરતે હૈં, ઓર
ક્રિયાવાદી શુક્લપાક્ષિક તિર્યચ પંચેન્દ્રિય જીવ માત્ર વૈમાનિક દેવાયુ
કા બન્ધ કરતે હૈં । ‘સમ્મદિદ્વી જહા મળપજ્જવનાણી તહેવ વૈમાણિયા
ડયં પકરેતિ’ સમ્યગ્દૃષ્ટિ પશ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક જીવ મનઃ પર્યવજ્ઞાની
કે જૈસે કેવલ એક વૈમાનિક આયુકા બન્ધ કરતે હૈં । ‘મિચ્છાદિદ્વી
જહા કળ્પપક્ષિયા’ મિથ્યાદૃષ્ટિ જીવ કૃષ્ણપાક્ષિક જીવોં કે જૈસે

બંધ કરે છે, પરંતુ નારકના આયુનો બંધ કરતા નથી ‘કળ્પપક્ષિયા
તિર્હિં સમોસરણેહિં’ કૃષ્ણપાક્ષિક પશ્ચેન્દ્રિય તિર્યચ્યોનિક એ બધારે
અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદી હોય છે, ત્યારે ‘ચડવ્વિહં પિ આડયં
પકરેતિ’ તેઓ ચાર પ્રકારના આયુનો બંધ કરે છે. ‘સુકપક્ષિયા જહા
સલેસ્સા’ શુક્લપાક્ષિક પશ્ચેન્દ્રિય તિર્યચ લેશ્યાવાળા એવોના કથન પ્રમાણે
દેવ, તિર્યચ, અને મનુષ્ય આ ત્રણ પ્રકારના આયુષ્યનો બંધ કરે છે નૈરયિક
આયુનો બંધ કરતા નથી ‘સમ્મદિદ્વી જહા મળપજ્જવનાણી તહેવ વૈમાણિયાડયં
પકરેતિ’ સમ્યગ્દૃષ્ટિ પશ્ચેન્દ્રિય તિર્યચ્યોનિક એવો, મનઃપર્યવજ્ઞાનવાળા
એવોના કથન પ્રમાણે કેવળ એક વૈમાનિક આયુનો બંધ કરે છે, ‘મિચ્છા
દિદ્વી જહા કળ્પપક્ષિયા’ મિથ્યાદૃષ્ટિવાળા એવોના કથન પ્રમાણે કૃષ્ણપાક્ષિક

સરણે દેવનારકતિર્યગ્મનુષ્યાયુષ્કં ચતુર્વિધમપિ પ્રકુર્વન્તીતિ । ‘સમ્મામિચ્છાદિદ્વી
 ણ ય એકં પિ પકરેતિ જહેવ નેરહયા’ સમ્પગ્મિથ્યાદૃષ્ટયો ન ચૈકમપિ આયુષ્કં
 પ્રકુર્વન્તિ યથૈવ નૈરયિકાઃ મિથ્યાદૃષ્ટિનારકવદેવ એપામપિ આયુષ્કવન્ધો ન
 અવત્તીત્યર્થઃ । ‘નાણી જાવ ઓહિનાણી સમ્માદિદ્વી’ જ્ઞાનિનો યાવત્ અવધિજ્ઞાનિ
 નો યથા સમ્પગ્દૃષ્ટયઃ સમ્પગ્દૃષ્ટિવદેવ જ્ઞાનિનો મત્યાદિજ્ઞાનિનોઽવધિજ્ઞાનિનશ્ચ
 કેવલં વૈમાનિકદેવાયુષ્કમેવ પ્રકુર્વન્તિ ન તુ નારકતિર્યગ્મનુષ્યાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તીતિ ।
 ‘અન્નાણી જાવ વિભંગનાણી જહા કળ્હપક્કિલયા’ અજ્ઞાનિનો યાવદ્વિમજ્જજ્ઞાનિનો
 યથા કૃષ્ણપાક્ષિકાઃ યાવત્પદેન મત્યજ્ઞાનિ શ્રુતાજ્ઞાનિનોઃ સંગ્રહઃ તથા ચાજ્ઞાનિ-
 મત્યજ્ઞાનિ-શ્રુતાજ્ઞાનિ-વિમજ્જજ્ઞાનિનશ્ચ કૃષ્ણપાક્ષિકવદેવ ત્રિમિઃ સમવસરણૈરક્રિ-
 યાવાદ્દજ્ઞાનિકવાદિ-વૈનયિકવાદિરૂપૈ શ્વતુર્વિધમપિ આયુષ્કં પ્રકુર્વન્તીતિ । ‘સેસા

પચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્ અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી ઓર વૈનયિકવાદી અવસ્થા
 મેં ચારોં પ્રકાર કી આયુષ્કા વન્ધ કરતે હેં । ‘સમ્મામિચ્છાદિદ્વી ણ ય
 એકંપિ પકરેતિ જહેવ નેરહયા’ સમ્પગ્ મિથ્યાદૃષ્ટિ મિથ્યદૃષ્ટિ-જીવ
 નારક કે જેસે એક મી આયુષ્ક કર્મ કા વન્ધ નહીં કરતા હેં । ‘નાણી-
 જાવ ઓહિનાણી જહા સમ્માદિદ્વી’ જ્ઞાની યાવત્ અવધિજ્ઞાની સમ્પગ્દૃષ્ટિ
 કે જેસે કેવલ એક વૈમાનિક દેવાયુષ્ક કા હી વન્ધ કરતે હેં ।
 નારક તિર્યગ્ એવં મનુષ્ય આયુષોં કા વન્ધ નહીં કરતે હેં । ‘અન્નાણી
 જાવ વિભંગનાણી જહા કળ્હપક્કિલયા’ અજ્ઞાની યાવત્ વિભંગજ્ઞાની કૃષ્ણ
 પાક્ષિક કે જેસે અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી, ઓર વૈનયિકવાદી અવ-
 સ્થા મેં ચારોં પ્રકાર કી આયુષ્કા વન્ધ કરતે હેં । યહાં યાવત્ શબ્દ સે
 મત્યજ્ઞાની ઓર શ્રુતાજ્ઞાની હન દોકા ગ્રહણ હુઆ હૈ । ‘સેસા જાવ અણા-

પચ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્ અક્રિયાવાદી અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદી અવસ્થામાં ચારે
 પ્રકારના આયુષ્યનો બંધ કરે છે, ‘સમ્મામિચ્છાદિદ્વી ણ ય એકં પિ પકરેતિ’
 જહેવ નેરહયા’ સમ્પગ્ મિથ્યાદૃષ્ટિવાળા નારકોના કથન પ્રમાણે મિથ્યદૃષ્ટિવાળા એક
 પણ આયુષ્ય કર્મનો બંધ કરતા નથી. ‘નાણી જાવ ઓહિનાણી જહા સમ્માદિદ્વી’
 જ્ઞાની યાવત્ અવધિજ્ઞાની સમ્પગ્દૃષ્ટિવાળા જીવના કથન પ્રમાણે, કેવળ
 એક દેવ આયુષ્યનો જ બંધ કરે છે. નારક, તિર્યગ્ અને મનુષ્ય સંબંધી
 આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી.

‘અન્નાણિ જાવ વિભંગનાણી જહા કળ્હપક્કિલયા’ અજ્ઞાની યાવત્
 વિભંગજ્ઞાનવાળા કૃષ્ણપાક્ષિકના કથન પ્રમાણે અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી, અને
 વૈનયિકવાદી અવસ્થામાં ચારે પ્રકારની આયુષ્યનો બંધ કરે છે. અહિયાં યાવત્
 પદથી મતિઅજ્ઞાની અને શ્રુતઅજ્ઞાની આ બે ગ્રહણ કરાયા છે.

જાવ અણાગારોવત્તા સવ્વે જહા સલેસ્સા તહેવ માણિયવ્વા' શેષાઃ યાવદનાકારો પયુક્તાઃ અનાકારોપયુક્તપદપર્યન્તાઃ સર્વેઽપિ યથા સલેશ્યા સ્તથૈવ મણિતવ્યાઃ, તથાચેમે સર્વેઽપિ આયુર્બન્ધવિષયે સલેશ્યવદેવ તથાહિ યે ક્રિયાવાદિનસ્તે તુ કેવલં વૈમાનિકાયુષ્કં વધનન્તિ, શેષાઃ સમવસરણત્રયવન્તો જીવાશ્ચતુર્વિધમપિ આયુષ્કં કુર્વન્તિ, 'જહા પંચિંદિયતિરિક્ષજોણિયાણં વત્તવ્વયા મણિયા એવં મણુસ્સા વિ માણિયવ્વા' યથા પચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્ગ્યોનિકાનાં વત્તવ્વયાઽનુપદમેવ મણિતા એવં મનુષ્યાણામપિ વત્તવ્વયા મણિતવ્યા, ક્રિયાવાદિ પ્રથમસમવસરણે કેવલં દેવાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ, અક્રિયાવાદીત્યાદિ સમવસરણત્રયે તુ ચતુર્વિધમપિ આયુષ્પ્રકુર્વન્તીતિ । પચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્ગ્યેષ્યા યદ્વૈવલક્ષણં તદર્શયન્નાહ—'ળવરં' ઇત્યાદિ, 'ળવરં મળપજ્જવનાણી નો સન્નોવત્તા ય જહા સમ્પદિટ્ઠીતિરિક્ષજોણિયા તહેવ માણિ-

ગારોવત્તા સવ્વે જહા સલેસ્સા તહેવ માણિયવ્વા' બાકી કે સમસ્ત જીવ અનાકારોપયુક્ત પદ તક કે સલેશ્ય જીવોં કે જૈસે ચારોં પ્રકાર કી આયુક્તા બન્ધ કરતે હૈં । 'જહા પંચિંદિયા તિરિક્ષજોણિયાણં વત્તવ્વયા મણિયા એવં મણુસ્સાણં વિ માણિયવ્વા' જિસ પ્રકાર સે પચ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્ગ્યોનિકોં કી યહ વત્તવ્વયા કહી ગઈ હૈં ડસી પ્રકાર સે મનુષ્યોંકી ભી વત્તવ્વયા કહની ચાહિયે, તથા ચ-ક્રિયાવાદી મનુષ્ય કેવલ વૈમાનિક દેવાયુક્તા હી બન્ધ કરતે હૈં, તથા-અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનિકવાદી ઓર વૈનયિકવાદી મનુષ્ય ચારોં પ્રકાર કી આયુક્તા બન્ધ કરતે હૈં । પરંતુ પચ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્ગ્યોનિકોં કી અપેક્ષા જો હસ મનુષ્ય સમ્બન્ધી પ્રકરણમેં વિશેષતા હૈ-વહ એસી હૈ કિ-'ળવરં મળપજ્જવનાણી

‘સેસા જાવ અણાગારોવત્તા સવ્વે જહા સલેસ્સા તહેવ માણિયવ્વા’ બાકીના સધળા જીવો અનાકારોપયોગ પદ સુધીના લેશ્યાવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે ચારે પ્રકારના આયુષ્યને બંધ કરે છે, અહિયાં યાવત્પદથી સંશોધ-યોગવાળાથી લઈને સાકારોપયોગ સુધીના જીવો ગ્રહણ કરાયા છે.

‘જહા પચિંદિયતિરિક્ષજોણિયાણં વત્તવ્વયા મણિયા એવં મણુસ્સા વિ માણિયવ્વા’ જે પ્રમાણે પચ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્ગ્યોનિકોના સબંધમાં આ કથન કરેલ છે. એજ પ્રમાણે મનુષ્યોના સંબંધમાં પણ સમજવું એટલે કે-ક્રિયાવાદી મનુષ્ય કેવળ દેવ આયુને જ બંધ કરે છે, તથા અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિક-વાદી, મનુષ્ય ચારે પ્રકારના આયુને બંધ કરે છે. પરંતુ પચ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્ગ્યોનિકોની અપેક્ષાથી આ મનુષ્ય પ્રકરણમાં જે વિશેષપણું છે, તે એ કીતે છે કે-‘ળવરં મળપજ્જવનાણી નોસન્નોવત્તા ય જહા સમ્પદિટ્ઠી, તિરિક્ષ-

યત્વા' નવરં કેવલં મનઃપર્યવજ્ઞાનિનઃ નો સંજ્ઞોપયુક્તાશ્ચ મનુષ્યા યથા સમ્યગ્દૃષ્ટિ
તિર્યગ્યોનિકા સ્તથૈવ ભણિતવ્યાઃ એકં દેવાયુષ્કમેવ કુર્વન્તીત્યર્થઃ । 'અલેસ્સા
કેવલનાળી અવેદગા અકસાઈ અજોગીય' અલેશ્યાઃ સામાન્યતો લેશ્યારહિતાઃ
કેવલજ્ઞાનિનઃ અવેદકા અકપાયિનોડયોગિનશ્ચ 'એ ન એગં પિ આડયં પકરે'તિ'
એતે અલેશ્યાદિકાઃ સર્વેડપિ ન એકમપિ આયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ । 'જહા ઓહિયા
જીવા સેસં તહેવ' યથા ઔધિકા જીવાઃ કથિતાઃ શેપમ્-કથિતવ્યતિરિક્તં તથૈવ
સામાન્યતો જીવપ્રકરણમતિપાદિતમેવ જ્ઞાતવ્યમિતિ । 'વાળમંતરજોહસિયવેમા-
ણિયા જહા અસુરકુમારા' વાનવ્યન્તરજ્યોતિષ્કવૈમાનિકા અસુરકુમારવદેવ ક્રિયા-
વાદિનઃ કેવલં મનુષ્યાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ, અક્રિયાવાદિ વાનવ્યન્તરજ્યોતિષ્કવૈમા-
નિકા સ્ત્રય સ્તિર્યાગાયુષ્કં મનુષ્યાયુષ્કં ચ પ્રકુર્વન્તીતિ ભાવઃ ॥૫૦ ૩॥

નો સન્નોવડતા ય જહા સમ્મદિટ્ટી, તિરિક્કલજોણિયા તહેવ માણિયત્વા'
મનઃપર્યવજ્ઞાની ઔર નો સંજ્ઞોપયુક્ત મનુષ્ય સમ્યગ્દૃષ્ટિ તિર્યગ્યોનિકો
કે જૈસે કેવલ વૈમાનિક દેવાયુકા હી બન્ધ કરતે હૈં । 'અલેસ્સા કેવલ-
નાળી અવેદગા અકસાઈ અજોગીય' સામાન્યતઃ લેશ્યારહિત, કેવલજ્ઞાની,
અવેદક ઔર અકપાયી એવં અયોગી 'એ ન એગં પિ આડયં પકરે'તિ' એ
એક ભી આયુકર્મકા બન્ધ નહીં કરતે હૈં । 'જહા ઓહિયા જીવા સેસં તહેવ'
જિસ પ્રકાર સે ઔધિક જીવ હૈં ડસી પ્રકાર સે સામાન્યતઃ જીવ પ્રકરણ
મેં પ્રતિપાદિત શેપ કથન જાનના ચાહિયે, 'વાળમંતરજોહસિય વેમા-
ણિયા જહા અસુરકુમારા' વાનવ્યન્તર, જ્યોતિષિક એવં વૈમાનિક
ક્રિયાવાદી અવસ્થા મેં અસુરકુમારોં કે જૈસે કેવલ એક મનુષ્યાયુ
કા હી બન્ધ કરતે હૈં । તથા-અક્રિયાવાદી આદિ વાનવ્યન્તરજ્યોતિષિક
એવં વૈમાનિક એ ત્રીન તિર્યાગાયુ ઔર મનુષ્યાયુ કા બન્ધ કરતે હૈં । ૩॥

જોણિયા તહેવ માણિયત્વા' મન.પર્યવજ્ઞાનવાળા અને નો સંજ્ઞોપયુક્ત મનુષ્ય
સમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા તિર્યગ્ય યોનિકોના કથન પ્રમાણે કેવળ એક દેવ આયુનો જ
બંધ કરે છે. 'અલેસ્સા કેવલનાળી અવેદગા અકસાઈ અયોગીય' સામાન્ય
લેશ્યાવિનાના, કેવળજ્ઞાની, અવેદક અને કપાય વિનાના અને અયોગી 'એ ન
એગં પિ આડયં પકરે'તિ' આ બધા એક પણ આયુકર્મનો બંધ કરતા નથી.
'જહા ઓહિયા જીવા સેસં તહેવ' જે પ્રમાણે ઔધિક જીવના સબંધમાં કથન
કર્યું છે. એજ પ્રમાણે સામાન્ય રીતે જીવ પ્રકરણમાં પ્રતિપાદન કરેલ બાકીનું
કથન સમજવું. 'વાળમંતરજોહસિયવેમાણિયા જહા અસુરકુમારા' વાનવ્યન્તર,
જ્યોતિષિક અને વૈમાનિક ક્રિયાવાદી અવસ્થામાં અસુરકુમારોના કથન પ્રમાણે કેવળ
એક મનુષ્ય આયુનો જ બંધ કરે છે. તથા અક્રિયાવાદી, વાનવ્યન્તર, જ્યોતિષિક
અને વૈમાનિક આ ત્રણે તિર્યગ્ય આયુ અને મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે ॥સૂ.૩॥

मूलम्—किरियावाई णं भंते ! जीवा किं भवसिद्धिया
 अभवसिद्धिया ? गोयमा ! भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया ।
 अकिरियावाई णं भंते ! जीवा किं भवसिद्धिया पुच्छा गोयमा !
 भवसिद्धिया वि अभवसिद्धिया वि । एव अन्नाणियवाई वि वेण-
 इयवाई वि । सलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावाई किं भवसिद्धिया
 पुच्छा, गोयमा ! भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया । सलेस्सा णं
 भंते ! जीवा अकिरियावाई ? किं भवसिद्धिया पुच्छा गोयमा !
 भवसिद्धिया वि अभवसिद्धिया वि । एवं अन्नाणियवाई वि वेण-
 इयवाई वि जहा सलेस्सा । एवं जाव सुकलेस्सा । अलेस्सा णं
 भंते ! जीवा किरियावाई किं भवसिद्धिया पुच्छा गोयमा ! भव-
 सिद्धिया नो अभवसिद्धिया । एवं एएणं अभिलावेणं कणह-
 पक्खिया तिसु वि समोसरणेसु भयणाए । सुक्कपक्खिया चउसु
 वि समोसरणेसु भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया । सम्मदिट्ठी
 जहा अलेस्सा । मिच्छादिट्ठी जहा कणहपक्खिया । सम्मा-
 मिच्छादिट्ठी दोसु वि समोसरणेसु जहा अलेस्सा । नाणी जाव
 केवलनाणी भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया । अन्नाणी जाव
 विभंगनाणी जहा कणहपक्खिया । सन्नासु चउसु वि जहा
 सलेस्सा, नो सन्नोवउत्ता जहा सम्मदिट्ठी, सवेयगा जाव नपुं-
 सगवेयगा जहा सलेस्सा । अवेदगा जहा सम्मदिट्ठी, सकसाई
 जाव लोभकसाई जहा सलेस्सा अकसाई जहा सम्मदिट्ठी-
 सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा, अजोगी जहा सम्म-
 दिट्ठी, सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता जहा सलेस्सा । एवं नेर-
 इया वि भाणियव्वा । नवरं नायव्वं जं अत्थि । एवं असुर-
 कुमारा वि जाव थणियकुमारा पुढवीकाइया सव्वट्ठाणेसु वि

मज्झिम्मेसु दोसु वि समोसरणेसु भवसिद्धिया वि अभवसिद्धिया वि । एवं जाव वणस्सइकाइया वेइंदियतेइंदियचउरिंदिया एवं चेव । नवरं सम्मत्ते ओहियनाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे एएसु चेव दोसु मज्झिम्मेसु समोसरणेसु भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया । सैसं तं चेव पंछिंदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया नवरं नायव्वं जं अत्थि । मणुस्सा जहा ओहिया जीवा, वाणमंतरजोइसिय वेसाणिया जहा असुरकुमारा । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥सू० ४॥

तीसइमे सए पढसो उदेसो समत्तो ॥३०-१॥

छाया—क्रियावादिनः खलु भदन्त ! जीवाः किं भवसिद्धिका अभवसिद्धिकाः ? गौतम ! भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिकाः । अक्रियावादिनः खलु भदन्त ! जीवाः किं भवसिद्धिकाः पृच्छा, गौतम ! भवसिद्धिका अपि अभवसिद्धिका अपि । एवमज्ञानिकवादिनोऽपि वैनयिकवादिनोऽपि । सलेश्याः खलु भदन्त ! जीवाः क्रियावादिनः किं भवसिद्धिका पृच्छा, गौतम ! भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिकाः । सलेश्याः खलु भदन्त ! जीवा अक्रियावादिनः किं भवसिद्धिका पृच्छा, गौतम ! भवसिद्धिका अपि अभवसिद्धिका अपि । एवमज्ञानिकवादिनोऽपि वैनयिकवादिनोऽपि यथा सलेश्याः । एवं यावत् शुक्ललेश्याः । अलेश्याः खलु भदन्त ! जीवाः क्रियावादिनः किं भवसिद्धिकाः पृच्छा, गौतम ! भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिकाः । एवमेतेनाभिलापेन कृष्णपाक्षिका त्रिष्वपि समवसरणेषु भजनया । शुक्लपाक्षिका चतुर्ष्वपि समवसरणेषु भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिकाः । सम्यग्दृष्टयो यथा अलेश्याः । मिथ्यादृष्टयो यथा कृष्णपाक्षिकाः । सम्यग्मिथ्यादृष्टयो द्वयोरपि समवसरणयो र्यथा अलेश्याः । ज्ञानिनो यावत् केवलज्ञानिनो भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिकाः । अज्ञानिनो यावद्विमङ्गज्ञानिनो यथा कृष्णपाक्षिकाः । संज्ञासु चतसृष्वपि यथा सलेश्याः । नो संज्ञोपयुक्ता यथा सम्यग्दृष्टयः । सवेदका यावत् ऋपुंषकवेदका यथा सलेश्याः । अवेदका यथा सम्यग्दृष्टयः, सकृपायिनो वावल्लोभकृपायिनो यथा सलेश्याः । अकृपायिनो यथा सम्यग्दृष्टयः । सयोगिनो यावत् काययोगिनो यथा सलेश्याः । अयोगिनो यथा सम्यग्दृष्टयः । साकारोपयुक्ता अनाकारोपयुक्ताः यथा सलेश्याः । एवं नैरयिका अपि भणितव्याः, नवरं ज्ञातव्यं यदस्ति । एवमसुरकुमारा अपि यावत् स्तनितकुमाराः । पृथिवीकायिकाः

તર્વસ્થાનેષ્વપિ મધ્યમયો દ્વયોરપિ સમવસરણયો ભવસિદ્ધિકા અપિ અભવસિદ્ધિકા
અપિ । एवं यावद् वनस्पतिकायिकाः । द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रिया एवमेव
नवरं सम्यक्त्वे औघिकज्ञाने आभिनिबोधिकज्ञाने श्रुतज्ञाने एतयोरेव द्वयोर्मध्य-
मयोः समवसरणयो भवसिद्विका नो अभवसिद्विकाः । शेषं तदेव । पञ्चेन्द्रिय-
तिर्यग्योनिका यथा नैरयिकाः, नवरं ज्ञातव्यं यदस्ति । मनुष्या यथा औघिका
जीवाः । वानव्यन्तरज्योतिष्कवैभानिका यथा असुरकुमाराः । तदेवं भदन्त ।
तदेवं भदन्त ! इति ॥सू० ४॥

ત્રિંશતમે શતકે પ્રથમોદ્દેશકઃ સમાપ્તઃ ॥૩૦-૧॥

ટીકા—‘કિરિયાવાઈ ણં મંતે ! જીવા’ ક્રિયાવાદિનઃ સ્વલુ ભદન્ત ! જીવાઃ
‘કિં ભવસિદ્ધિયા અભવસિદ્ધિયા’ કિં ભવસિદ્ધિકાઃ તસ્મિન્નેવ ભવે સિદ્ધિગમન-
યોગ્યા અથવા અભવસિદ્ધિકા ભવન્તીતિ પ્રશ્નઃ, મગવાનાહ—‘ગોયમા’ इत्यादि,
‘ગોયમા’ हे गौतम ! ‘ભવસિદ્ધિયા નો અભવસિદ્ધિયા’ ભવસિદ્ધિકાઃ ક્રિયાવા-
દિનો ભવન્તિ નો—ન તુ અભવસિદ્ધિકા ભવન્તિ ચે તે ક્રિયાવાદિનસ્તે તસ્મિન્નેવ
ભવે મોક્ષમાસાદયન્તિ ન તુ અભવસિદ્ધિકા ભવન્તીતિ ઉત્તરમ્ । ‘અકિરિયાવાઈ
ણં મંતે ! જીવા’ અક્રિયાવાદિનઃ સ્વલુ ભદન્ત ! જીવાઃ ‘કિં ભવસિદ્ધિયા પુચ્છા’

‘કિરિયાવાઈ ણં મંતે ! જીવા કિં ભવસિદ્ધિયા અભવસિદ્ધિયા’—હ૦

ટીકાર્થ—‘કિરિયાવાઈ ણં મંતે ! જીવા કિં ભવસિદ્ધિયા અભવસિદ્ધિયા’
हे भदन्त ! क्रियावादी जीव कया भवसिद्धिः होते हैं ? या अभव-
सिद्धिः होते हैं ? जिन में उसी भव में सिद्धिगति में जाने की क्षमता
है वे भवसिद्धिः और इन से विपरीत जो हैं वे अभवसिद्धिः हैं ।
उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—‘गोयमा ! भवसिद्धिः नो अभवसिद्धिः’
हे गौतम ! क्रियावादी जीव भवसिद्धिः होते हैं अभवसिद्धिः नहीं
होते हैं । ‘अकिरियावाई णं मंते । जीवा किं भवसिद्धिः पृच्छा’ हे

‘કિરિયાવાઈ ણં મંતે ! જીવા કિં ભવસિદ્ધિયા અભવસિદ્ધિયા’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—‘કિરિયાવાઈ ણં મંતે જીવા કિં ભવસિદ્ધિયા અભવસિદ્ધિયા’ હે ભગ-
વન્ ક્રિયાવાદી જીવે શું ભવસિદ્ધિ કહેય છે ? કે અભવસિદ્ધિ કહેય છે ?
જેઓ જેજ ભવમા સિદ્ધિ ગતિમાં જવાના હોય તે ભવસિદ્ધિ કહેવાય છે તે
શિવાયના અભવસિદ્ધિ કહેવાય છે આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—
‘ગોયમા ! ભવસિદ્ધિયા નો અભવસિદ્ધિયા’ હે ગૌતમ ! ક્રિયાવાદી જીવ ભવસિદ્ધિ
કહેય છે અભવસિદ્ધિ કહેતા નથી.

‘અકિરિયાવાઈ ણં મંતે ! જીવા કિં ભવસિદ્ધિયા અભવસિદ્ધિયા પુચ્છા’ હે
ભગવન્ જે જીવે અક્રિયાવાદી છે, તેઓ ભવસિદ્ધિ કહેય છે ? કે અભવસિદ્ધિ

કિં ભવસિદ્ધિકા અભવસિદ્ધિકા વા ભવન્તીતિ પ્રશ્નઃ પૃચ્છયા સંગ્રહ્યતે । મગવા-
નાહ—‘ગોયમા’ इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘भवसिद्धिया वि अभवसिद्धिया
वि’ अक्रियावादिनो ‘भवसिद्धिका अपि अभवसिद्धिका अपि भवन्तीति । ‘एवं
अन्नाणियवाइ वि वेणइयवाइ वि’ एवम् अक्रियावादिवदेव अज्ञानिकवादिनोऽपि
वैनयिकवादिनोऽपि भवसिद्धिका अपि भवन्ति अभवसिद्धिका अपि भवन्तीति भावः ।
‘सलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावाइ’ सलेइयाः खलु भदन्त ! जीवाः क्रियावा-
दिनः, ‘किं भवसिद्धिया पुच्छा,’ किं भवसिद्धिका अभवसिद्धिका वेति प्रश्नः,
पृच्छया संग्रह्यते ! मगवानाह—‘गोयमा’ इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘भवसि-
द्धिया नो अभवसिद्धिया’ भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिका भवन्ति सलेइयाः क्रिया
वादिनो जीवा इति । ‘सलेस्सा णं भंते ! जीवा अकिरियावाइ किं भवसिद्धिया अभ-

भवन्त ! जो अक्रियावादी जीव हैं वे क्या भवसिद्धिक होते हैं या
अभवसिद्धिक होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं ‘गोयमा ! भवसि-
द्धिया वि अभवसिद्धिया वि’ हे गौतम ! अक्रियावादि जीव भवसिद्धिक
भी होते हैं और अभवसिद्धिक भी होते हैं । ‘एवं अन्नाणियवाइ
वि वेणइयवाइ वि’ इसी प्रकार से अज्ञानिकवादी भी भवसिद्धिक
और अभवसिद्धिक दोनों प्रकारके होते हैं इसी प्रकार के वैनयिकवादी
भी होते हैं । ‘सलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावाइ’ हे भदन्त ! सलेइय
क्रियावादी जीव क्या भवसिद्धिक होते हैं ? या अभवसिद्धिक
होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—‘गोयमा ! भवसिद्धिया नो
अभवसिद्धिया’ हे गौतम ! भवसिद्धिक होते हैं अभवसिद्धिक नहीं
होते हैं । ‘सलेस्सा णं भंते ! जीवा अकिरियावाइ किं भवसिद्धिया
पुच्छा’ हे भदन्त ! अक्रियावादी सलेइय जीव क्या भवसिद्धिक

હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘ગોયમા ! ભવસિદ્ધિયા વિ અભવ
સિદ્ધિયા વિ’ હે ગૌતમ અક્રિયાવાદી એવ ભવસિદ્ધિ પણ હોય છે, અને અભવ-
સિદ્ધિક પણ હોય છે. ‘एवं अन्नाणियवाइ वि, वेणइयवाइ वि’ આજ પ્રમાણે
અજ્ઞાનવાદી પણ ભવસિદ્ધિક અને અભવસિદ્ધિક બન્ને પ્રકારના હોય છે. વૈન-
યિકવાદી પણ એજ પ્રમાણે બન્ને પ્રકારના હોય છે. ‘सलेस्सा णं भंते ! जीवा
किरियावाइ’ હે ભગવન્ દેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી એવો શું ભવસિદ્ધિક હોય છે ?
કે અભવસિદ્ધિક હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘गोयमा !
भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया’ હે ગૌતમ ! દેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી એવો ભવ-
સિદ્ધિક હોય છે, અભવસિદ્ધિક હોતા નથી. ‘सलेस्सा णं भंते ! जीवा अकिरिवाइ
किं भवसिद्धिया पुच्छा’ હે ભગવન્ અક્રિયાવાદી દેશ્યાવાળા એવો શું ભવસિદ્ધિક
હોય છે ? કે અભવસિદ્ધિક હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે

વસિદ્ધિયા' પુચ્છા સલેશ્યાઃ સ્વલ્પ ભદન્ત ! અક્રિયાવાદિનો જીવા કિં ભવસિદ્ધિકા અભવસિદ્ધિકા ભવન્તીતિ પ્રશ્નઃ પૃચ્છ્યા સંગૃહ્યતે । મગવાનાહ—'ગોયમા' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'भवसिद्धिया वि अभवसिद्धिया वि' सलेश्याः अक्रियावादिनो जीवाः भवसिद्धिका अपि भवन्ति अभवसिद्धिका वा भवन्तीति । 'एवं अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि' एवं सलेश्याऽ क्रियावादि जीवदेव अज्ञानिकवादिनोऽपि वैयर्थिकवादिनोऽपि भवसिद्धिका अपि भवन्ति अभवसिद्धिका अपि भवन्ति । 'एवं जाव सुक्कलेश्सा' यथा सलेश्याः क्रियावादिनोऽक्रियावादिनश्च कथिता स्तथैव यावत् शुक्ललेश्याः, अत्र यावत्पदेन कृष्णनीलकापोततेजः पद्मलेश्यानां संग्रहो भवतीति तथाच कृष्णलेश्यात् आरभ्य शुक्ललेश्यापर्यन्ताः क्रियावादिनो जीवा भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिका भवन्ति तथा अक्रियावादिनः कृष्णलेश्यात् आरभ्य शुक्ललेश्यान्ताः सर्वेऽपि जीवा भवसिद्धिकाश्च भवन्ति अभवसिद्धिकाश्चापि भवन्तीति भावः । 'अलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावाई किं भवसिद्धिया प्पुच्छा' अलेश्याः सामान्यतो लेशधारहिताः स्वल्प भदन्त ! जीवाः क्रियावादिनः किं भवसि-

होते हैं या अभवसिद्धिक होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं— 'गोयमा ! भवसिद्धिया वि अभवसिद्धिया वि' हे गौतम ! अक्रियावादी सलेश्य जीव भवसिद्धिक भी होते हैं और अभवसिद्धिक भी होते हैं । 'एवं अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि' इसी प्रकार से अज्ञानवादी जीव भी और वैयर्थिकवादी जीव भी भवसिद्धिक और अभवसिद्धिक दोनों प्रकार के होते हैं । 'एवं जाव सुक्कलेश्सा' कृष्णलेश्या से लेकर शुक्ललेश्यावाले क्रियावादी जीव भवसिद्धिक ही होते हैं अभवसिद्धिक नहीं होते हैं । और कृष्णलेश्या से लेकर शुक्ललेश्या तक के अक्रियावादी आदि जीव भवसिद्धिक और अभवसिद्धिक दोनों प्रकार के

કે- 'ગોયમા ! ભવસિદ્ધિયા વિ અભવસિદ્ધિયા વિ' હે ગૌતમ ! અક્રિયાવાદી લેશ્યા-વાળા જીવો ભવસિદ્ધિક પણ હોય છે અને અભવસિદ્ધિક પણ હોય છે. 'એવં અન્નાણિયવાઈ વિ વેણઇયવાઈ વિ' આજ પ્રમાણે અજ્ઞાનવાદી જીવ અને વૈનયિકવાદી જીવ પણ ભવસિદ્ધિક અને અભવસિદ્ધિક એમ બંને પ્રકારના હોય છે. 'એવં જાવ સુક્કલેશ્સા' કૃષ્ણલેશ્યાથી લઈને શુકલ લેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી જીવ ભવસિદ્ધિક જ હોય છે. અભવસિદ્ધિક હોતા નથી. તથા કૃષ્ણલેશ્યાથી લઈને શુકલ લેશ્યા સુધીના અક્રિયાવાદી જીવ ભવસિદ્ધિક અને અભવસિદ્ધિક બંને પ્રકારના હોય છે. 'અલેસ્સા ણં મંતે ! જીવા કિરિયાવાઈ કિં ભવસિદ્ધિયા પુચ્છા' હે ભગવન્ ક્રિયાવાદી અલેશ્ય જીવો શું ભવસિદ્ધિક હોય છે ? અથવા

દ્વિકા ભવન્તિ અભવસિદ્ધિકા વા ભવન્તીતિ પ્રશ્નઃ પૃચ્છયા સંગ્રહતે । મંગલાનાહ
 ‘ગોયમા’ इत्यादि, गोयमा’ हे गौतम ! ‘भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया’ अलेश्याः
 क्रियावादिनो जीवाः भवसिद्धिका एव भवन्ति न तु अभवसिद्धिका भवन्तीत्युत्तरम् ।
 ‘एव एएणं अभिलावेणं कण्हपक्खिया तिसु वि समोसरणेसु भयणाए’ एवमनेन
 अभिलापेन पूर्वोदितप्रकारेण कृष्णपाक्षिका जीवा स्त्रिष्वपि द्वितीयतृतीयचतुर्थेषु
 अक्रियावाद्यज्ञानिकवादी-वैनयिकवादी रूपेषु समवसरणेषु भजनया-विकल्पेने
 ति भवसिद्धिका अपि अभवसिद्धिका अपि ज्ञातव्या इति । ‘सुकपक्खिया चउसु
 वि समोसरणेसु भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया’ शुक्लपाक्षिका जीवाः चतुर्वपि
 प्रथमद्वितीयतृतीयचतुर्थेषु समवसरणेषु क्रियावाद्यक्रियावाद्यज्ञानिवादि वैनयिक-
 वादि रूपेषु भवसिद्धिका एव भवन्ति, नो-न तु कथमपि अभवसिद्धिका
 भवन्तीति । ‘सम्मदिट्ठी जहा अलेस्सा, सम्यग्दृष्टयो जीवा यथा अलेश्यजीवाः

होते हैं । ‘अलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावाई किं भवसिद्धिया पुच्छा’ हे
 भदन्त ! क्रियावादि अलेश्य जीव क्या भवसिद्धिक होते हैं या अभव-
 सिद्धिक होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-‘गोयमा ! भवसिद्धिया,
 नो अभवसिद्धिया’ हे गौतम ! अलेश्य क्रियावादी जीव भवसिद्धिक ही
 होते हैं अभवसिद्धिक नहीं होते हैं । ‘एवं एएणं अभिलावेणं कण्ह-
 पक्खिया तिसु वि समोसरणेसु भयणाए’ इस प्रकार अभिलापद्वारा
 कृष्णपाक्षिक जीव अक्रियावादी अज्ञानिकवादी और वैनयिकवादी
 रूप तीनों समवसरणों में भवसिद्धिक भी होते हैं और अभवसिद्धिक
 भी होते हैं । ‘सुकपक्खिया चउसु वि समवसरणेसु भवसिद्धिया
 नो अभवसिद्धिया’ शुक्लपाक्षिक चारों समवसरणों में भवसिद्धिक
 ही होते हैं अभवसिद्धिक नहीं होते हैं ‘सम्मदिट्ठी जहा अलेस्सा’

અભવસિદ્ધિક હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-
 ‘ગોયમા ! ભવસિદ્ધિયા નો અભવસિદ્ધિયા’ હે ગૌતમ ! લેશ્યા વિનાના ક્રિયાવાદી
 જીવો ભવસિદ્ધિક જ હોય છે. અભવસિદ્ધિક હોતા નથી ‘એવં’ એણં અભિલા-
 વેણં કણ્હપક્કિલ્લયા તિસુ વિ સમોસરણેસુ ભયણાએ’ આ પ્રમાણે આ અભિલાપથી
 કૃષ્ણપાક્ષિક જીવો અક્રિયાવાદી અજ્ઞાનવાદી, અને વૈનયિકવાદી અવસ્થાઓમાં
 ભવસિદ્ધિક જ હોય છે. અભવસિદ્ધિક હોતા નથી. ‘સુક્કપક્કિલ્લયા ચઉસુ વિ
 સમોસરણેસુ ભવસિદ્ધિયા’ શુક્લપાક્ષિક જીવ ચારે સમવસરણોમાં ભવસિદ્ધિક
 હોય છે અભવસિદ્ધિક હોતા નથી ‘સમ્માદિટ્ઠી જહા અલેસ્સા’ અલેશ્ય જીવોના
 સંબંધમાં જે પ્રમાણે કથન કરવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે સમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા

કથિતા સ્તથૈવ ભવસિદ્ધિકા એવ ન તુ અભવસિદ્ધિકા ભવન્તીતિ । ‘મિચ્છાદિદ્વી જહા કળ્હપક્લિયા’ મિથ્યાદૃષ્ટ્યો યથા કૃષ્ણપાક્ષિકાઃ કૃષ્ણપાક્ષિકવદેવ મિથ્યા દૃષ્ટ્યોઽ ક્રિયાવાદીત્યાદિ સમવસરણત્રયે વિકલ્પેન ભવસિદ્ધિકા અભવસિદ્ધિકા અપિ ભવન્તીતિ જ્ઞાતવ્યમ્ । ‘સમ્મામિચ્છાદિદ્વી દો સુ વિ સમોસરણેસુ જહા અલેસ્સા’ સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટ્યો મિથ્યદૃષ્ટ્યઃ દ્વયોરપિ તૃતીયચતુર્થયોરજ્ઞાનિકવાદિ વૈનયિકવાદિ સમવસરણયોરલેશ્યવદેવ ભવસિદ્ધિકા ભવન્તીતિ જ્ઞાતવ્યમ્ । ‘જાણી જાવ કેવલજાણી ભવસિદ્ધિયા નો અભવસિદ્ધિયા’ જ્ઞાનિનો યાવત્કેવલજ્ઞાનિનથ ભવસિદ્ધિકાઃ, અત્ર યાત્પદેન મતિશ્રુતાવધિમનઃપર્યવજ્ઞાનિનાં સંગ્રહો ભવતિ તથા ચ જ્ઞાનિત ગારમ્ભ્ય કેવલજ્ઞાનિપર્યવતાઃ સર્વેઽપિ ભવસિદ્ધિકા એવ ભવન્તિ ન તુ

જિસ પ્રકાર સે અલેશ્ય જીવ કહે ગયે હૈં ઉસી પ્રકાર સે સમ્યગ્દૃષ્ટિ જીવ બી ભવસિદ્ધિક હી હોતે હૈં અભવસિદ્ધિક નહીં હોતે હૈં । ‘મિચ્છાદિદ્વી જહા કળ્હપક્લિયા’ મિથ્યાદૃષ્ટિ જીવ બી કૃષ્ણપાક્ષિકોં કે જૈસે અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનિકવાદી ઓર વૈનયિકવાદી અવસ્થા મેં ભવસિદ્ધિક બી હોતે હૈં ઓર અભવસિદ્ધિક બી હોતે હૈં । ‘સમ્મામિચ્છાદિદ્વી દોસુ વિ સમોસરણેસુ જહા અલેસ્સા’ અલેશ્ય જીવોં કે જૈસે મિથ્યદૃષ્ટિ જીવ દો સમવસરણ અવસ્થા મેં-અજ્ઞાનિકવાદી ઓર વૈનયિકવાદી સ્થિતિ મેં-ભવસિદ્ધિક હોતે હૈં એસા જાનનાં ચાહિયે ‘જાણી જાવ કેવલજાણી ભવસિદ્ધિયા નો અભવસિદ્ધિયા’ જ્ઞાની યાવત્ કેવલ જ્ઞાની જીવ ભવસિદ્ધિક હી હોતે હૈં, અભવસિદ્ધિક નહીં હોતે હૈં । યહાં યાવત્ પદ સે મતિજ્ઞાની શ્રુતજ્ઞાની અવધિજ્ઞાની ઓર મનઃપર્યવજ્ઞાની-

જીવો પશુ ભવસિદ્ધિક જ હોય છે. અભવસિદ્ધિક હોતા નથી. ‘મિચ્છાદિદ્વી જહા કળ્હપક્લિયા’ મિથ્યાદૃષ્ટિવાળા જીવ કૃષ્ણપાક્ષિક જીવના કથન પ્રમાણે અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી, અને વૈનયિકવાદી અવસ્થામાં ભવસિદ્ધિક પશુ હોય છે. અને અભવસિદ્ધિક પશુ હોય છે. ‘સમ્મામિચ્છાદિદ્વી દોસુ વિ સમોસરણેસુ જહા અલેસ્સા’ લેશ્યા વિનાના જીવોના કથન પ્રમાણે મિથ્યદૃષ્ટિવાળા જીવો જે સમવસરણની અવસ્થામાં-એટલે કે અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદીપણી અવસ્થામાં ભવસિદ્ધિક હોય છે તેમ સમજવું.

‘જાણી જાવ કેવલજાણી ભવસિદ્ધિયા નો અભવસિદ્ધિયા’ જ્ઞાની યાવત્ કેવલજ્ઞાની જીવો ભવસિદ્ધિક જ હોય છે. અભવસિદ્ધિક હોતા નથી અહિયાં યાવત્પદથી મતિજ્ઞાનવાળા શ્રુતજ્ઞાનવાળા અવધિજ્ઞાનવાળા અને મનઃપર્યવજ્ઞાન

અમવસિદ્ધિકા ઇતિ ભાવઃ । ‘અન્નાણી જાવ વિમંગનાણી જહા કળ્હપક્ષિચ્યા’ અજ્ઞાનિનો યાવદ્વિમંગ્જાનિનો યથા કૃષ્ણપાક્ષિકાઃ, અત્ર યાવત્પદેન મત્યજ્ઞાનિ શ્રુતાજ્ઞાનિનઃ સંગ્રહો ભવતિ તથાચાજ્ઞાનિત આરભ્ય વિમંગ્જાનિપર્યન્તાઃ સર્વેઽપિ કૃષ્ણપાક્ષિકવદેવ અક્રિયાવાદિત આરભ્ય સમવસરણત્રયેષુ ભવસિદ્ધિકા અપિ અમવસિદ્ધિકા અપીતિ । ‘સન્નાસુ ચડસુ વિ જહા સલેસ્સા’ સંજ્ઞાસુ આહારાદિ પરિગ્રહાન્તાસુ ચતસૃષ્વપિ યથા સલેશ્યાઃ સલેશ્યવદેવ ચતુર્વપિ આહારાદિ સંજ્ઞાવત્સુ ક્રિયાવાદિનઃ ભવસિદ્ધિકાઃ ન તુ અમવસિદ્ધિકા અક્રિયાવાદિન સ્ત્રિષુ સમવસરણેષુ ભવસિદ્ધિકા અપિ અમવસિદ્ધિકા અપીતિ । ‘નો સન્નોવડત્તા જહા સમ્મદિટ્ઠી’ નો સંજ્ઞોપયુક્તા જીવા યથા સમ્યગ્દૃષ્ટયઃ સમ્યગ્દૃષ્ટિવદેવ ક્રિયાવાદિનો

હવકા ગ્રહણ હુઆ હૈ । તથાચ-જ્ઞાની સે લેકર કેવલજ્ઞાની તક સબ જીવ ભવસિદ્ધિક હી હોતે હૈં અમવસિદ્ધિક નહીં હોતે હૈં । ‘અન્નાણી જાવ વિમંગનાણી જહા કળ્હપક્ષિચ્યા’ યાવત્પદ ગ્રહીત મત્યજ્ઞાની, શ્રુતાજ્ઞાની તથા અજ્ઞાની એવં વિમંગજ્ઞાની યે સબ કૃષ્ણપાક્ષિક કે જેસે અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનિકવાદી એવં વૈનયિકવાદી કી હાલત મેં ભવસિદ્ધિક ભી હોતે હૈં ઓર અમવસિદ્ધિક ભી હોતે હૈં । ‘સન્નાસુ ચડસુ વિ જહા સલેસ્સા’ આહાર સંજ્ઞા સે લેકર પરિગ્રહ સંજ્ઞા તક કી ચાર સંજ્ઞાઓં મેં ભી સલેશ્ય જીવોં કે જેસે જીવ ક્રિયાવાદી અવસ્થા મેં ભવસિદ્ધિક હી હોતે હૈં અમવસિદ્ધિક નહીં હોતે । તથા અક્રિયાવાદી એવં અજ્ઞાનવાદી તથા વૈનયિકવાદી અવસ્થા મેં યે સબ ભવસિદ્ધિક ભી હોતે હૈં ઓર અમવસિદ્ધિક ભી હોતે હૈં । ‘નો સન્નોવડત્તા જહા

વાળા જીવો ગ્રહણ કરાયા છે. તથા જ્ઞાનીથી લઇને કેવળજ્ઞાની સુધીના સઘળા જીવો ભવસિદ્ધિક જ હોય છે, અભવસિદ્ધિક હોતા નથી. ‘અન્નાણી જાવ વિમંગનાણી જાવ કળ્હપક્ષિચ્યા’ અહિયાં સૂત્રમાં આવેલ અજ્ઞાની યાવત્પદથી મતિઅજ્ઞાનવાળા શ્રુતઅજ્ઞાનવાળા તથા વિભંગજ્ઞાની એ બધા કૃષ્ણપાક્ષિક જીવના કથન પ્રમાણે અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદી-પણામાં ભવસિદ્ધિક હોય છે, અભવસિદ્ધિક હોતા નથી.

‘સન્નાસુ ચડસુ વિ જહા સલેસ્સા’ આહાર સંજ્ઞાથી લઇને પરિગ્રહ સંજ્ઞા સુધીની ચારે સંજ્ઞાઓમાં લેશ્યાવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે જીવ ક્રિયાવાદી પણામાં ભવસિદ્ધિક જ હોય છે, અભવસિદ્ધિક હોતા નથી. તથા અક્રિયાવાદી અને અજ્ઞાનવાદી તથા વૈનયિકવાદી અવસ્થામાં આ બધા ભવસિદ્ધિક પણ હોય છે. અને અભવસિદ્ધિક પણ હોય છે. ‘નો સન્નોવડત્તા જહા સમ્મદિટ્ઠી’

નો સંજોપયુક્તા જીવા ભવસિદ્ધિકા નો અભવસિદ્ધિકા ભવન્તીતિ ભાવઃ । ‘સવેદગા જાવ નપુંસગવેદગા જહા સલેસ્સા’ સવેદકા યાવત્ નપુંસકવેદકાઃ યથા સલેશ્યાઃ યત્ર યાવત્પદેન સ્ત્રીપુરુષવેદકયોઃ સંગ્રહઃ તથા ચ સવેદકાદારમ્ય નપુંસકવેદ-
કાન્તાઃ સર્વેઽપિ સલેશ્યવદેવ ક્રિયાવાદિનો ભવસિદ્ધિકા નો અભવસિદ્ધિકાઃ,
અક્રિયાવાદિ પ્રભૃતયસ્તુ ભવસિદ્ધિકા અપિ અભવસિદ્ધિકા અપિ ભવન્તીતિ ભાવઃ ।
‘અવેયગા જહા સમ્મદિટ્ટી’ અવેદકા યથા સમ્યગ્દૃષ્ટયઃ સમ્યગ્દૃષ્ટિવદેવ સામા-
ન્યતો વેદરઠિતાઃ ક્રિયાવાદિનો ભવસિદ્ધિકા નો અભવસિદ્ધિકા ભવન્તીતિ ।
‘સકસાઈ જાવ લોભકસાઈ જહા સલેસ્સા’ સકષાયિનો યાવત્ લોભકષાયિનો

સમ્મદિટ્ટિ’ નો સંજોપયુક્ત જીવ સમ્યગ્દૃષ્ટિ કે જૈસે ક્રિયાવાદી અવ-
સ્થા હોને સે ભવસિદ્ધિકા હોતે હૈં, અભવસિદ્ધિકા નહીં હોતે હૈં ।
‘સવેદગા જાવ નપુંસગવેદગા જહા સલેસ્સા’ સવેદકા સે લેકર નપુંસક
વેદ તક સમસ્ત જીવ સલેશ્ય જીવોં કે જૈસે ક્રિયાવાદી અવસ્થા મેં
ભવસિદ્ધિકા હોતે હૈં અભવસિદ્ધિકા નહીં હોતે હૈં । યહાં યાવત્પદ સે
સ્ત્રી વેદકોં ઓર પુરુષવેદકોં કા ગ્રહણ હુઆ હૈં । તથા અક્રિયાવાદી
અજ્ઞાનિકવાદી ઓર વૈનયિકવાદી અવસ્થા મેં યે સબ ભવસિદ્ધિકા મી
હોતે હૈં ઓર અભવસિદ્ધિકા મી હોતે હૈં । ‘અવેયગા જહા સમ્મદિટ્ટી’
અવેદકા સમ્યગ્દૃષ્ટિ કે જૈસે હી ક્રિયાવાદી હોને સે ભવસિદ્ધિકા હોતે હૈં
અભવસિદ્ધિકા નહીં હોતે હૈં । ‘સકસાઈ જાવ લોભકસાઈ જહા સલેસ્સા’
સકષાયી યાવત્ લોભકષાયી જીવ સલેશ્ય જીવોં કે જૈસે હી ક્રિયાવાદી
અવસ્થા મેં ભવસિદ્ધિકા હોતે હૈં અભવસિદ્ધિકા નહીં હોતે હૈં । યહાં

નો સંજોપયોગવાળા જીવો સમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે ક્રિયાવાદી
અવસ્થામાં ભવસિદ્ધિકા હોય છે. અભવસિદ્ધિકા હોતા નથી ‘સવેદગા જાવ નપુંસગ-
વેદગા જહા સલેસ્સા’ વેદવાળા સવેદકા જીવોથી લઈને નપુંસકવેદ સુધીના સઘળા
જીવો લેશ્યાવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે ક્રિયાવાદી અવસ્થામાં ભવસિદ્ધિકા હોય છે
અભવસિદ્ધિકા હોતા નથી. અહિયાં યાવત્પદથી સ્ત્રીવેદવાળા અને પુરુષવેદવાળા
ગ્રંથો કરાયા છે તથા અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી, અને વૈનયિકવાદી અવસ્થામાં
આ બધા ભવસિદ્ધિકા પણ હોય છે, અને અભવસિદ્ધિકા પણ હોય છે ‘અવેયગા
જાવ સમ્મદિટ્ટિ’ એવેદકા જીવ સમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે ક્રિયાવાદી
અવસ્થામાં ભવસિદ્ધિકા હોય છે. અભવસિદ્ધિકા હોતા નથી ‘સકસાઈ
જાવ લોભકસાઈ જહા સલેસ્સા’ સકષાયી યાવત્ લોભકષાયવાળા જીવો લેશ્યા-
વાળા જીવોના કથન પ્રમાણે ક્રિયાવાદી અવસ્થામાં ભવસિદ્ધિકા હોય છે.

યથા સલેશ્યાઃ ચાવત્પદેન ક્રોધમાનમાયાકષાયિનાં સંગ્રહઃ તથાચૈત્તે સર્વેઽપિ સલેશ્યવદેવ ક્રિયાવાદિનો ભવસિદ્ધિકા નો અભવસિદ્ધિકા અક્રિયાદિ સમવસરણ-અયત્નન્ટરતુ ભવસિદ્ધિકા અપિ અભવસિદ્ધિકા અપિ ભવન્તીતિ । ‘અકસાઈ જહા સમ્મદિટ્ઠી’ અકષાયિનો યથા સમ્યગ્દૃષ્ટયઃ સમ્યગ્દૃષ્ટિવદેવ ભવસિદ્ધિકા નો અભવસિદ્ધિકા ભવન્તીતિ ભાવઃ । ‘સજોગી જાવ કાયજોગી જહા સલેસ્સા’ સયોગિનો યાવત્ કાયયોગિનશ્ચ યથા સલેશ્યાઃ, ચાવત્પદેન મનોયોગિનો વચોયોગિનશ્ચ સંગ્રહઃ તથા ચ સયોગિત આરમ્ભ્ય કાયયોગિપર્યન્તાઃ સર્વેઽપિ સલેશ્યવદેવ ક્રિયાવાદિનો ભવસિદ્ધિકા નો અભવસિદ્ધિકા અક્રિયાવાદિ પ્રમૃત્ય સ્વયેઽપિ ભવસિદ્ધિકા અપિ અભવસિદ્ધિકા અપિ ભવન્તીતિ ભાવઃ । ‘અજોગી જહા સમ્મદિટ્ઠી’ અયોગિનો યથા સમ્યગ્દૃષ્ટયઃ સમ્યગ્દૃષ્ટિ વદ અયોગિનો ભવસિદ્ધિકા

યાવત્ શબ્દ સે ક્રોધ, માન, માયા કષાયવાલોં કા ગ્રહણ હુઆ હૈ । તથા-અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનિકવાદી એવં વૈનયિકવાદી અવસ્થા મેં ચે સવ ભવસિદ્ધિક હી હોતે હૈ, અભવસિદ્ધિક નહીં હોતે હૈ । ‘અક-સાઈ જહા સમ્મદિટ્ઠી’ અકષાયવાલે જીવ સમ્યગ્દૃષ્ટિ જીવોં કે જૈસે ભવસિદ્ધિક હી હોતે હૈ અભવસિદ્ધિક નહીં હોતે હૈ । ‘મજોગી જાવ કાયજોગી જહા સલેસ્સા’ સયોગી યાવત્ કાયયોગી સલેશ્ય જીવોં કે જૈસે ક્રિયાવાદી અવસ્થા મેં ભવસિદ્ધિક હી હોતે હૈ અભવસિદ્ધિક નહીં હોતે હૈ । યહાં યાવત્પદ સે ‘મનોયોગી ઓર વચોયોગી’ દ્વનકા ગ્રહણ હુઆ હૈ । તથા ચે સયોગી સે લેકર યાવત્ કાયયોગી તક કે સમસ્ત જીવ અક્રિયાવાદી અવસ્થા મેં અજ્ઞાનિકવાદી અવસ્થા મેં ભવ-સિદ્ધિક હી હોતે હૈ ઓર અભવસિદ્ધિક હી હોતે હૈ । ‘અજોગી જહા

અભવસિદ્ધિક હોતા નથી. અહિયાં યાવત્પદથી ક્રોધ, માન, માયા, એ કષાયો વાળાઓ ગ્રહણ કરાયા છે. તથા ક્રિય વદી, અજ્ઞાનવદી, અને વૈનયિકવાદી અવસ્થામાં આ બધા ભવસિદ્ધિક જ હોય છે. અભવસિદ્ધિક હોતા નથી ‘અકસાઈ જહા સમ્મદિટ્ઠી’ અકષાયવાળા જીવો સમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે ભવસિદ્ધિક જ હોય છે. અભવસિદ્ધિક હોતા નથી ‘મજોગી કાયજોગી જહા સલેસ્સા’ સયોગી યાવત્કાયયોગવાળા સલેશ્ય જીવોના કથન પ્રમાણે ક્રિયાવદી અવસ્થામાં ભવસિદ્ધિક જ હોય છે અભવસિદ્ધિક હોતા નથી અહિયાં યાવત્પદથી મનોયોગવાળા, અને વચન યોગવાળા ગ્રહણ કરાયા છે. તથા આ સયોગીથી લઇને કાયયોગવાળા સુધીના સઘળા જીવો અક્રિયાવાદી અવસ્થામાં અજ્ઞાનવાદી અવસ્થામાં અને વૈનયિકવાદી અવસ્થામાં ભવસિદ્ધિક પણ હોય છે, અને અભવસિદ્ધિક પણ હોય છે.

एव न तु अभवसिद्धिका भवन्तीति भावः । 'सागारोवउत्ता अनागारोवउत्ता जहा सलेस्सा' साकारोपयुक्ता स्वथा अनाकारोपयुक्ता जीवाः सलेश्य जीववदेव क्रियावादिनो भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिकाः, अक्रियावादी प्रभृतयस्त्रयोऽपि भवसिद्धिका अपि अभवसिद्धिका अपि भवन्तीति भावः । 'एवं नेरइया वि भाणियव्वा' एवं सामान्यतो जीववदेव नैरयिका अपि जीवा लेइयादिभि द्वारै भवसिद्धिकाऽभवसिद्धिकादिरूपेण भणितव्याः । 'नवरं नायव्वं जं अत्थि' नवरं केवलं सामान्य जीवप्रकरणापेक्षया इदं वैलक्षण्यं यत् यत् लेइयादिकं द्वारजातं नारकस्य विद्यते तदेव द्वारजातमाश्रित्य भवसिद्धिकत्वादि विचारणीयमिति । 'एवं असुरकुमारा वि जाव थणियकुमारा' एवं नारकदण्डकवदेव असुरकुमारादारभ्य स्तनितकुमारसम्मदिट्ठी' सम्यग्दृष्टि जीवों के जैसे अयोगी जीव भवसिद्धिक होते हैं अभवसिद्धिक नहीं होते हैं । 'सागारोवउत्ता अनागारोवउत्ता जहा सलेस्सा' 'साकारोपयुक्त तथा अनाकारोपयुक्त जीव सलेश्य जीवों के जैसे क्रियावादी अवस्था में भवसिद्धिक होते हैं अभवसिद्धिक नहीं होते हैं । तथा ये ही अक्रियावादी, अज्ञानिकवादि और वैनयिकवादी अवस्था में भवसिद्धिक भी होते हैं और अभवसिद्धिक भी होते हैं । 'एवं नेरइया वि भाणियव्वा' सामान्य जीव के जैसे ही नैरयिक भी लेइयादि द्वारों को लेकर भवसिद्धिक और अभवसिद्धिक रूप से कहना चाहिये । 'नवरं नायव्वं जं अत्थि' परन्तु सामान्य जीव प्रकरण की अपेक्षा से विशेषता केवल इतनी सी ही है कि जो लेइयादिक द्वार नारक के हो उसी द्वार को लेकर भवसिद्धिक आदिका विचार करना चाहिये 'एवं असुरकुमारा वि जाव थणियकुमारा' नारक दण्डक के जैसे ही

'अजोगी जहा सम्मदिट्ठी' સમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા જીવના કથન પ્રમાણે અયોગી જીવો ભવસિદ્ધિક જ હોય છે. અભવસિદ્ધિક હોતા નથી 'સાગારોવઉત્તા અનાગારોવઉત્તા જહા સલેસ્સો' સાકારોપયોગવાળા અને અનાકારોપયોગવાળા જીવો લેશ્યાવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે ક્રિયાવાદી અવસ્થામાં ભવસિદ્ધિક જ હોય છે, અભવસિદ્ધિક હોતા નથી તથા આ ક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદી અવસ્થામાં ભવસિદ્ધિક પણ હોય છે, અને અભવસિદ્ધિક પણ હોય છે. 'એવં નેરઇયા વિ ભાણિયવ્વા' સામાન્ય જીવના કથન પ્રમાણે નૈરયિકો પણ લેશ્યા વિગેરે દ્વારોને લઈને ભવસિદ્ધિક અને અભવસિદ્ધિક જ હોય છે. તેમ સમજવું 'નવરં નાયવ્વં જં અત્થિ' પરંતુ સામાન્ય જીવ પ્રકરણની અપેક્ષાથી કેવળ એજ વિશેષપણ છે કે-નારકના જે લેશ્યા વિગેરે દ્વારો હોય એજ દ્વારોને લઈને ભવસિદ્ધિક વિગેરેનો વિચાર કરવો જોઈએ, 'એવં અસુરકુમારા

પર્યન્તાઃ સર્વેઽપિ ક્રિયાવાદક્રિયાવાદિપ્રશ્રુતિસમવસરણેષુ ભવસિદ્ધિકત્વાદિ
રૂપેણ પ્રરૂપીયા ઇતિ । જીવનારકદેવદણ્ડકાન્ વિવિચ્ય એકેન્દ્રિયાદિ દણ્ડકાન્
વિવેચયન્નાહ—‘પૃથ્વીકાઙ્યા સન્વદ્વાણેસુ વિ મજ્જિલ્લેસુ દોસુ વિ સમોસરણેસુ
‘ભવસિદ્ધિયા વિ અભવસિદ્ધિયા વિ’ પૃથ્વીકાયિકા જીવાઃ સર્વસ્થાનેષુ મધ્યમયો
રક્રિયાવાદજ્ઞાનિકવાદિરૂપયોઃ સમવસરણયો ભવસિદ્ધિકા અપિ ભવન્તિ અભવ-
સિદ્ધિકા અપિ ભવન્તીતિ । ‘એવં જાવ વણસ્સહકાઙ્યા’ એવં પૃથ્વીકાયિકવદેષ
યાવત્ વનસ્પતિકાયિકા અપિ માધ્યમિકસમવસરણદ્વયે ભવસિદ્ધિકા અપિ અભ-
વસિદ્ધિકા અપિ ભવન્તિ, અત્ર યાવત્પદેનાપ્કાયિકતેજસ્કાયિકવાયુકાયિકાનાં
સંગ્રહો ભવતીતિ । ‘વેહંદિયત્તેહંદિયચત્તરિંદિયા એવં ચેવ’ દ્વીન્દ્રિયત્રીન્દ્રિય-

અસુરકુમાર સે લેકર સ્તનિતકુમાર તક સય હી ક્રિયાવાદી, અક્રિયા-
વાદી આદિ અવસ્થાઓં મેં ભવસિદ્ધિક આદિ રૂપ સે સમજના ચાહિયે- ।

હસ પ્રકાર જીવ નારક ઓર દેવ દણ્ડકોં છી વિવેચના કરકે અબ
સૂત્રકાર એકેન્દ્રિય આદિક દણ્ડકોં છી વિવેચના કરતે હેં—‘પૃથ્વીકાઙ્યા
સન્વદ્વાણેસુ વિ મજ્જિલ્લેસુ દોસુ વિ સમોસરણેસુ ભવસિદ્ધિયા વિ
અભવસિદ્ધિયા વિ ‘પૃથ્વીકાયિક જીવ સમસ્ત સ્થાનોં મેં અક્રિયાવાદી
ઓર અજ્ઞાનવાદી રૂપ દો સમવસરણોં મેં ભવસિદ્ધિક ભી હોતે હેં
ઓર અભવસિદ્ધિક ભી હોતે હેં । ‘એવં જાવ વણસ્સહકાઙ્યા’ પૃથ્વી
કાયિક કે જૈસે હી યાવત્ વનસ્પતિકાયિક ભી માધ્યમિક દો સમ-
વસરણોં મેં ભવસિદ્ધિક ભી હોતે હેં ઓર અભવસિદ્ધિક ભી હોતે હેં ।
જહાં યાવત્ પદ સે ‘અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક ઓર વાયુકાયિક’ હનકા
સંગ્રહ હયા છે । ‘વેહંદિય, તેહંદિય ચત્તરિંદિયા એવં ચેવ’ દ્વીન્દ્રિય,

વિ જાવ યણિયકુમારા’ નારક દંડકના કથન પ્રમાણે જ અસુરકુમારોથી
લગને સ્તનિતકુમાર સુત્રીના સધળા ક્રિયાવદી, અક્રિયાવદી વિગેરે
અવસ્થાઓમાં ભવસિદ્ધિક વિગેરે પણથી સમજવા.

આ પ્રમાણે જીવ, નારક, અને દેવ દંડકોનું વિવેચન કરીને હવે
સૂત્રકાર એક ઇન્દ્રિય વિગેરે દંડકોનું વિવેચન કરે છે — ‘પૃથ્વીકાઙ્યા સન્વ-
દ્વાણેસુ વિ મજ્જિલ્લેસુ દોસુ વિ સમોસરણેસુ ભવસિદ્ધિયા વિ અભવસિદ્ધિયા વિ’
પૃથ્વીકાયિક જીવો સધળા સ્થાનોમાં અક્રિયાવદી અને અજ્ઞાનવાદી રૂપ બે
સમવસરણોમાં ભવસિદ્ધિક પણ હોય છે, અને અભવસિદ્ધિક પણ હોય છે.
અહિયાં યાવત્પદથી અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક અને વાયુકાયિક એ પદોનો સંગ્રહ
થયો છે ‘વેહંદિય, તેહંદિય ચત્તરિંદિયા એવં ચેવ’ બે ઇન્દ્રિયાળા, ત્રણ ઇન્દ્રિય-
વાળા અને ચાર ઇન્દ્રિયાળા જીવો પણ પૃથ્વીકાયિક વિગેરેના કથન પ્રમાણે

ચતુરિન્દ્રિયજીવા અપિ એવમેવ-પૃથિવ્યાદિદેવ જ્ઞાતવ્યાઃ । ‘નવર’ સંમત્તે ઓહિયનાળે આભિણિબોહિયનાળે સુચનાળે’ નવરં કેવલં સમ્યક્ત્વે ઔધિકજ્ઞાને આભિણિબોધિકજ્ઞાને શ્રુતજ્ઞાને ચ ‘એસુ ચેવ’ એતેષુ એવસમ્યક્ત્વૌધિક જ્ઞાનાદિ દ્વારેષુ ‘દોસુ મજ્ઞિમેસુ સમોસરણેસુ ભવસિદ્ધિયા નો અભવસિદ્ધિયા’ દ્વયોર્મધ્યમયો-રક્રિયાવાદજ્ઞાનિકવાદિનો ભવસિદ્ધિકા એવ દ્વીન્દ્રિયાદારભ્ય ચતુરિન્દ્રિયાન્તા ભવન્તિ ન તુ અભવસિદ્ધિકા ભવન્તીતિ । ‘સેસં તં ચેવ’ શેષ-મતિજ્ઞાનાદિપુ યદ્વૈ-લક્ષ્યં કથિતં તદતિરિક્તં સર્વં પૂર્વવદેવ જ્ઞાતવ્યમિતિ । ‘પંચિન્દિયતિરિક્તજોણિયા જહા નેરહ્યા’ પચ્ચેન્દ્રિયતિરિગ્યોનિકા યથા નૈરયિકાઃ નૈરયિકે સામાન્ય

તેહન્દ્રિય ઔર ચૌહન્દ્રિય જીવ મી પૃથિવીકાયિક આદિકોં કે જેસે હી જાનનાં ચાહિયે, અર્થાત્ યે સર્વ અક્રિયાવાદી ઔર અજ્ઞાનવાદી અવસ્થાવાલે હોને કે કારણ ભવસિદ્ધિક મી હોતે હૈં ઔર અભવસિદ્ધિક મી હોતે હૈં । ‘નવર’ સમ્મત્તે ઓહિયનાળે આભિણિબોહિયનાળે સુચનાળે’ કેવલ સમ્યક્ત્વ મેં, ઔધિક જ્ઞાન મેં, આભિણિબોધિકજ્ઞાન મેં ઔર શ્રુતજ્ઞાન મેં ‘એસુ ચેવ’ અર્થાત્ હન્હી સમ્યક્ત્વ, ઔધિકજ્ઞાન આદિ દ્વારોં મેં ‘દોસુ મજ્ઞિમેસુ સમોસરણેસુ ભવસિદ્ધિયા, નો અભવસિદ્ધિયા’ અક્રિયાવાદિતા એવં અજ્ઞાનિકવાદિતા કો લેકર યે દ્વીન્દ્રિયાદિક ભવસિદ્ધિક હી હોતે હૈં, અભવસિદ્ધિક નહીં હોતે હૈં । એસા સમજના ચાહિયે । ‘સેસં તં ચેવ’ હસ પ્રકાર મતિજ્ઞાન આદિ મેં જો વૈલક્ષણ્ય કહા ગયા હૈં સો ઉસકે સિવાય ઔર સર્વ કથન પૂર્વ કે જેસા હી હૈં । ‘પંચિન્દિયતિરિક્તજોણિયા જહા નેરહ્યા’ નૈરયિક પ્રકરણ મેં સામાન્ય

સમજવા. અર્થાત્ એ બધા અક્રિયાવાદી, અને અજ્ઞાનવાદી અવસ્થાવાળા હોવાથી ભવસિદ્ધિક પણ હોય છે અને અભવસિદ્ધિક પણ હોય છે. ‘નવર’ સમ્મત્તે ઓહિયનાળે આભિણિબોહિયનાળે સુચનાળે’ કેવળ સમ્યક્ત્વમાં ઔધિક-જ્ઞાનમાં અભિણિબોધિકજ્ઞાનમાં અને શ્રુતજ્ઞાનમાં ‘એસુ ચેવ’ અથવા આ સમ્યક્ત્વ અને ઔધિકજ્ઞાન વિગેરે દ્વારોમાં ‘દોસુ મજ્ઞિમેસુ સમોસરણેસુ ભવસિદ્ધિયા નો અભવસિદ્ધિયા’ અક્રિયાવાદીપણા અને અજ્ઞાનવાદીપણાને લઈને આ દ્વીન્દ્રિય વિગેરે ભવસિદ્ધિક જ હોય છે, અભવસિદ્ધિક હોતા નથી તેમ સમજવું.

‘સેસં તં ચેવ’ આ રીતે મતિજ્ઞાન વિગેરેમાં જે જુદાપણું કહ્યું છે, તે કથન શિવાય બાકીનું તમામ કથન પડેલા કહ્યા પ્રમાણે જ છે.

‘પંચિન્દિયતિરિક્તજોણિયા જહા નેરહ્યા’ નારકોના પ્રકરણમાં સામાન્ય જીવનો અતિદેશ-ભલામણ કરેલ છે તેથી સમાન્ય જીવના કથન પ્રમાણે

જીવસ્થાતિદેશઃ કૃતોઽતઃ સામાન્યજીવવદેવ પચ્ચેન્દ્રિયતિરથામપિ વ્યવસ્થા જ્ઞાતવ્યેતિ । ‘નવરં નાયવ્વં જં અત્થિ’ નવરં જ્ઞાતવ્યં યદસ્તિ પચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્ગો- નિકાનાં યદ્યત્ પદજાતં વિદ્યતે તત્ર તત્રૈવ ભવસિદ્ધિકત્વાદિકમવગન્તવ્યમિતિ । ‘મણુસ્સા જહા ઓહિયા જીવા’ મણુબ્બા યથા ઔઘિકા જીવાઃ સામાન્યજીવ- પ્રકરણવદેવ મણુબ્બપ્રકરણમપિ જ્ઞાતવ્યમિતિ ‘વાળમંતરજોહસિયવેમાણિયા જહા અસુરકુમારા’ વાનવ્યન્તરજ્યોતિષ્કવૈમાનિકા અસુરકુમારવદેવ જ્ઞાતવ્યાઃ । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ, હે મદન્ત સમવસરણચતુષ્ટયવિષયે યદેવાનુપ્રિયેણ કથિતં તત્ એવમેવ-સર્વથા સત્યમેવેતિ

જીવ કા અતિદેશ ક્રિયા ગયા હૈ-હસલિયે સામાન્ય જીવ કે જૈસી હી વ્યવસ્થા પચ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્ગો કી જાનનીં ચાહિયે ‘નવરં નાયવ્વં જં અત્થિ’ પરન્તુ પચ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્ગો કે જો-જો પદ હોં વહી-વહી પદ ભવસિદ્ધિક આદિકા કથન કરના ચાહિયે, ‘મણુસ્સા જહા ઓહિયા જીવા’ સામાન્ય જીવ કે પ્રકરણ કે જૈસા હી મણુબ્બ કા પ્રકરણ જાનના ચાહિયે । ‘વાળમંતરજોહસિયવેમાણિયા જહા અસુરકુમારા’ વાનવ્યન્તર જ્યો- તિષિક ઔર વૈમાનિકોં કો અસુરકુમારોં કે જૈસા જાનના ચાહિયે ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે મદન્ત ! સમવસરણ ચતુષ્ટય કે વિષય મેં જો આપ દેવાનુપ્રિયને કહા હૈ વહ સર્વથા સત્ય હી હૈરહસ પ્રકાર

પચ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્ગોનાં કથન સમજવું. ‘નવરં નાયવ્વં જં અત્થિ’ પરંતુ પચ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્ગોમાં જે પદો કહ્યા હોય તેજ પદ ભવસિદ્ધિક વિગેરેના કથનમાં સમજવું. ‘મણુસ્સા જહા ઓહિયા જીવા’ સામાન્ય જીવના પ્રકરણમાં કહ્યા પ્રમાણે જ મણુબ્બના સંબંધમાં સમજવું. ‘વાળમંતરજોહસિય વેમાણિયા જહા અસુરકુમારા’ વાનવ્યન્તર જ્યોતિષ્ક અને વૈમાનિકોના સંબંધનું કથન અસુરકુમારોના પ્રકરણ પ્રમાણે સમજવું.

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ આરે પ્રકારના સમવસરણના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે. તે સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ

कथित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा
आत्मानं भावयन् विहरतीति ॥ सू० ४ ॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्बल्लभ-प्रसिद्धवाक-पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक-श्रीशाहच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित—कोल्हापुरराजगुरु-वाल-
ब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्य श्री
घासीलालव्रतिनिरचितायां श्री “भग
वतीसूत्रस्य” प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां-
व्याख्यायां त्रिंशत्तमेशतके प्रथमो-
द्देशकः समाप्तः ॥३०॥१॥

कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया, वन्दना
नमस्कार कर फिर वे तप और संयम से आत्मा को भावित करते
हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥४॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजी महाराजकृत
“भगवतीसूत्र” की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके तीसरे शतकका
॥ प्रथम उद्देशक स्यात् ॥ ३०-१॥

सयम अने तपथी पोताना आत्माने भावित करता थका पोताना
स्थान पर विराजमान थया ॥सू०४॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजी महाराजकृत “भगवतीसूत्र”नी
प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याना त्रीसमा शतकने पडेलो उद्देशो समाप्त ॥३०-१॥



॥ अथ द्वितीयोद्देशकः प्रारभ्यते ॥

प्रथमोद्देशकं निरूप्य क्रमप्राप्तं द्वितीयोद्देशकं निरूपयन्नाह 'अणंतरोववन्न-
गाणं' इत्यादि ।

मूलम्—अणंतरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया किं किरियावाई
पुच्छा, गोयमा ! किरियावाई वि जाव वेणइयवाई वि । सले-
स्सा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं किरियावाई०
एवं चेव एवं जहेव पढमुद्देसे नेरइयाणं वत्तववया तहेव इह वि
भाणियव्वा । नवरं जं जस्स अत्थि अणंतरोववन्नगाणं नेरइ-
याणं तं तस्स भाणियव्वं । एवं सव्व जीवाणं जाव वेमाणियाणं ।
नवरं अणंतरोववन्नगाणं जं जहिं अत्थि तं तहिं भाणियव्वं ।
किरियावाई णं भंते ! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं
पकरेंति, पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्ख-
जोणियउयं नो मणुस्साउयं नो देवाउयं पकरेंति । एवं अकिरि-
यावाई वि वेणइयवाई वि अन्नाणियवाई वि । सलेस्सा णं भंते !
किरियावाई अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं पुच्छा,
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति जाव नो देवाउयं पकरेंति ।
एवं जाव वेमाणिया । एवं सव्वट्ठाणेषु वि अणंतरोववन्नगा
नेरइया न किंचि वि आउयं पकरेंति जाव अणागारोवउत्तत्ति ।
एवं जाव वेमाणिया । नवरं जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणि-
यव्वं । किरियावाई णं भंते ! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं
भवसिद्धिया अभवसिद्धिया ? गोयमा ! भवसिद्धिया नो अभ-
वसिद्धिया । अकिरियावाई णं पुच्छा, गोयमा ! भवसिद्धिया
वि अभवसिद्धिया वि, एवं अन्नाणियवाई वि, वेणइयवाई वि ।
सलेस्सा णं भंते ! किरियावाई अणंतरोववन्नगा नेरइया किं

भवसिद्धिया अभवसिद्धिया ? गोयमा ! भवसिद्धिया नो अभ-
वसिद्धिया । एवं एणं अभिलावेणं जहेव ओहिण उद्देसण
नेरइयाणं वत्तव्वया भणिया तहेव इहवि भाणियव्वा जाव
अणागारोवउत्त त्ति । एवं जाव वेमाणियाणं, नवरं जं जस्स
अत्थि तं तस्स भाणियव्वं । इमं से लक्खणं जे किरियावाई
सुक्कपक्खिया सम्मामिच्छादिट्ठी य एण सव्वे भवसिद्धिया नो
अभवसिद्धिया सेसा सव्वे भवसिद्धिया वि अभवसिद्धिया वि ।
सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ते ॥सू.१॥

तीसइमे सण बीओ उद्देसो समत्तो ॥३०-२॥

छाया—अनन्तरोपपन्नकाः खलु भदन्त ! नैरयिकाः किं क्रियावादिनः पृच्छा,
गौतम ! क्रियावादिनोऽपि यावद्वैमानिकवादिनोऽपि । सलेश्याः खलु 'भदन्त !
अनन्तरोपपन्नका नैरयिकाः किं क्रियावादिनः', एवमेव एवं यथैव प्रथमोद्देशके नैर-
यिकाणां वक्तव्यता तथैवेहापि भणितव्या, नवरं यद्यस्यास्ति अनन्तरोपपन्नकानां
नैरयिकाणां तत्तस्य भणितव्यम् । एव सर्वजीवानां यावद्वैमानिकानाम् । नवरम-
नन्तरोपपन्नकानां यद् यत्रास्ति तत्तत्र भणितव्यम् । क्रियावादिनः खलु भदन्त !
अनन्तरोपपन्नका नैरयिकाः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति०१ पृच्छा, गौतम ! नो
नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, नो तिर्यगायुष्कं नो मनुष्यायुष्कं नो देवायुष्कं
प्रकुर्वन्ति । एव मक्रियावादिनोऽपि अज्ञानिकवादिनोऽपि वैनयिकवादिनोऽपि ।
सलेश्याः खलु भदन्त ! क्रियावादिनः अनन्तरोपपन्नका नैरयिकाः किं नैरयिका-
युष्कं ? पृच्छा, गौतम ! नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति यावत् नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति ।
एवं यावद्वैमानिकाः एवं सर्वस्थानेष्वपि अनन्तरोपपन्नका नैरयिका न किञ्चिदपि
आयुष्कं प्रकुर्वन्ति यावदनाकारोपयुक्ता इति एवं यावद्वैमानिकाः, नवरं यद्
यस्यास्ति तत् तस्य भणितव्यम् । क्रियावादिनः खलु भदन्त ! अनन्तरोपपन्नका
नैरयिकाः किं भवसिद्धिका अभसिद्धिकाः ? गौतम ! भवसिद्धिका नो
अभवसिद्धिका । अक्रियावादिनः खलु पृच्छा, गौतम ! भवसिद्धिका अपि अभव-
सिद्धिका अपि, एवमज्ञानिकवादिनोऽपि, वैनयिकवादिनोऽपि । सलेश्याः
खलु भदन्त ! क्रियावादिनोऽनन्तरोपपन्नकाः नैरयिकाः किं भवसिद्धिका अभव-
सिद्धिकाः ? गौतम ! भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिकाः । एव मेतेन अभिलापेन
यथैवोद्देशके उद्देशके नैरयिकाणां वक्तव्यता भणिता तथैवेहापि भणितव्या याव-
दनाकारोपयुक्ता इति । एवं यावद्वैमानिकानाम् नवरं यद् यस्यास्ति तत्तस्य

મણિતંત્ર્યમ્ । इदं तस्य लक्षणम्—ये क्रियावादिनः शुक्लपाक्षिकाः सम्पग्मिभ्या-
दृष्टिका एते सर्वे भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिकाः, सेवा सर्वे भवसिद्धिका अपि
अभवसिद्धिका अपि । तदेवं भदन्त ! तदेव भदन्त ! इति ॥ सू० १

ત્રિશત્તમે શતકે દ્વિતીયોદ્દેશકઃ સમાપ્તઃ ॥૩૦-૨॥

ટીકા—‘અણંતરોવવન્નગાળં મંતે ! નેરહયા’ અનન્તરોપપન્નકાઃ—પ્રથમસમયે
સમુત્પન્નાઃ યે તે અનન્તરોપપન્નકાઃ સ્વલુ ભદન્ત ! નૈરયિકાઃ ‘કિં કિરિયાવાઈ
પુચ્છા’ કિં ક્રિયાવાદિનો ભવન્તિ ? અક્રિયાવાદિનો વા ભવન્તિ ? અજ્ઞાનિક-
વાદિનો વા ભવન્તિ ? વૈનયિકવાદિનો વા ભવન્તીતિ પ્રશ્નઃ પૃચ્છયા સંગૃહ્યતે ।
મગધનાહ—‘ગોયમા’ इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘किरियावाई वि
जाव वेणइयवाई वि’ क्रियावादिनोऽपि भवन्ति अनन्तरोपपन्नका नैरयिका
यावत् वैनयिकवादिनोऽपि भवन्ति यावत्पदेन अक्रियावादिनामज्ञानिक-
वादिनां च संग्रहो भवतीति । ‘सलेहसा णं मंते ! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं

પ્રથમ ઉદ્દેશક કા નિરૂપણ કરકે અથ સૂત્રકાર ક્રમ પ્રાપ્ત દ્વિતીય
ઉદ્દેશકો નિરૂપણ કરતે હૈ—‘અણંતરોવવન્નગાળં મંતે ! નેરહયા’—इत्यादि

ટીકાર્થ—‘અણંતરોવવન્નગાળં મંતે ! નેરહયા’ હે ભદન્ત ! અન-
ન્તરોપપન્ન નૈરયિક કયા ‘કિરિયાવાઈ પુચ્છા’ ક્રિયાવાદી હોતે હૈ ?
યા અક્રિયાવાદી હોતે હૈ ? યા અજ્ઞાનિકવાદી હોતે હૈ ? યા વૈનયિક-
વાદી હોતે હૈ ? ઉત્તર મેં પ્રશુશ્રી કહતે હૈ—‘ગોયમા ! કિરિ-
યાવાઈ વિ જાવ વેણइयवाई वि’ હે ગૌતમ ! અનન્તરોપપન્નક—પ્રથમ
સમયોત્પન્ન—નૈરયિક ક્રિયાવાદી બી હોતે હૈ, અક્રિયાવાદી બી
હોતે હૈ અજ્ઞાનિકવાદી બી હોતે હૈ ઓર વૈનયિકવાદી બી હોતે હૈ ।
યહાં યાવત્પદ સે હન્દી અક્રિયાવાદી ઓર અજ્ઞાનિકવાદી પદોં કા

ખીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારભ—

પહેલા ઉદ્દેશાનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર ક્રમથી આવેલ આ ખીજા
ઉદ્દેશાનું નિરૂપણ કરે છે.—અણતરોવવન્નગાળં મંતે ! નેરહયા’ इत्यादि

ટીકાર્થ—‘અણંતરોવવન્નગાળં મંતે ! નેરહયા’ હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક
નૈરયિક ‘કિરિયાવાઈ પુચ્છા’ શું ક્રિયાવાદી હોય છે ? અથવા અક્રિયાવાદી
હોય છે ? અથવા અજ્ઞાનવાદી હોય છે ? અથવા વૈનયિકવાદી હોય છે ? આ
પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રશુશ્રી કહે છે કે—ગોયમા ! કિરિયાવાઈ વિ જાવ વેણइयवाई वि’
હે ગૌતમ ! અનંતરોપપન્નક નૈરયિક અર્થાત્ પહેલા સમયમા ઉત્પન્ન થયેલ
નારક ક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અને અક્રિયાવાદી પણ હોય છે, તથા અજ્ઞાન
વાદી પણ હોય છે. અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. અહિયાં યાવત્પદથી

કિરિયાવાઈ૦' સલેશ્યાઃ સ્વલુ ભદન્ત ! નૈરયિકાઃ કિં ક્રિયાવાદિનોઽક્રિયા-
વાદિનોઽજ્ઞાનિકવાદિનો વા વૈનયિકવાદિનો વા ભવન્તીત્યાદિ ક્રમેણ પ્રશ્નઃ,
ઉત્તરમાહ 'એવં ચેવ' પૂર્વોક્તપ્રકારેણૈવ હે ગૌતમ ! સલેશ્યા અનન્તરોપપન્નનારકાઃ
ક્રિયાવાદિનો ભવન્તિ યાવદ્ વૈનયિકવાદિનોઽપિ ભવન્તિ એતદેવ દર્શયન્નાહ 'એવં-
જહેવ' ઇત્યાદિ, 'એવં જહેવ પદ્મુદેસણ નૈરહ્યાણં વક્તવ્યયા તહેવ ઇહવિ માણિયવ્વા'
એવં યથૈવ ત્રિશત્તમશતકીય પ્રથમોદ્દેશકે નૈરયિકાણાં વક્તવ્યતા કથિતા તથૈવ
તેનૈવ પ્રકારેણ ઇદાપિ અનન્તરોપપન્નકનારકપ્રકરણેઽપિ સર્વાપિ વક્તવ્યતા માણિ-
તવ્યા । 'નવરં જં જસ્સ અત્થિ અનંતરોવવન્નગાણં નૈરહ્યાણં તં તસ્સ માણિયવ્વ'
'નવરં કેસલં પ્રથમોદ્દેશકાપેક્ષયા ઇદમેવ વૈલક્ષણ્યં યત્ત્વં યસ્ય જીવસ્ય યત્ત્વં
લેશ્યાદિકમનાકારોપયુક્તાન્તં પદજાતં વિદ્યતે તસ્ય તદેવ ભણિતવ્યમ્ । 'એવં સવ્વ-
જીવાણં જાવ વેમાણિયાણં' એવમેવ પ્રથમોદ્દેશકવદેવ સર્વજીવાનામ્ અસુરકુમા-
ગ્રહણ હુઆ હૈ । 'સલેસ્યા ણં ભંતે ! અણંતરોવવન્નગા નૈરહ્યા કિં
કિરિયાવાઈ૦' હે ભદન્ત ! સલેશ્ય અનન્તરોપપન્ન નૈરયિક કયા ક્રિ-
યાવાદી હોતે હૈં ? યા અક્રિયાવાદી હોતે હૈં ? યા વૈનયિકવાદી હોતે હૈં ?
યા અજ્ઞાનિકવાદી હોતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં—'ગોયમા ! એવં
ચેવ૦' હૈં ગૌતમ ! સલેશ્ય અનન્તરોપપન્નક નૈરયિક કી વક્તવ્યતા
જેસી ૩૦ વે શતક કે પ્રથમ ઉદ્દેશક મેં કહી ગઈ હૈં ઉસી પ્રકાર સે
યહાં પર મી વહી સવ વક્તવ્યતા કહની ચાહિયે, 'નવરં જં જસ્સ અત્થિ
અણંતરોવવન્નગાણં નૈરહ્યાણં તં તસ્સ માણિયવ્વ' પરન્તુ અનન્તરો-
પપન્નક નૈરયિકોં મેં જિનકે જો લેશ્યાદિક પદ અનાકારોપયુક્ત
પદ પર્યન્ત સંભવિત હૈં ઉનકો વહી પદ કહને ચાહિયે યહી હસ કથનમેં
પ્રથમ ઉદ્દેશક કી અપેક્ષા સે યહાં ભિન્નતા હૈં ! 'એવં સવ્વજીવાણં

અક્રિયાવાદી અને અજ્ઞાનવાદી એ બે શબ્દો કરેલ છે. 'સલેસ્યા ણં ભંતે ! અણંત-
રોવવન્નગા નૈરહ્યા કિં કિરિયાવાઈ' હે ભગવન્ લેશ્યાવાળા અનંતરોપપન્નક
નૈરયિક શું ક્રિયાવાદી હોય છે ? અથવા અક્રિયાવાદી હોય છે ? અથવા અજ્ઞાનવાદી
હોય છે ? અથવા વૈનયિકવાદી હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે
કે—'ગોયમા ! એવં ચેવ' હે ગૌતમ ! અનંતરોપપન્નક નૈરયિકના સંબંધમાં જે
પ્રમાણેનું કથન ૩૦ ત્રીસમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશમાં કહેવામાં આવેલ છે,
એજ પ્રમાણેનું કથન અહીંયાં પણ કહેવું જોઈએ 'નવરં જં જસ્સ અત્થિ અણંત-
રોવવન્નગાણં નૈરહ્યાણં તં તસ્સ માણિયવ્વ' પરંતુ અનંતરોપપન્નક નૈરયિકમાં
જેઓને જે લેશ્યા વિગેરે પદો અનાકારોપયોગ પદ સુધી થતા હોય તેઓના
સંબંધમાં એજ પદ કહેવા જોઈએ. આજ પહેલા ઉદ્દેશના કથન કરતાં

રાદારમ્ય વૈમાનિકપર્યન્તાનાં વક્તવ્યતા પઠનીયા આલાપપ્રકારસ્તુ સ્વયમેવ સર્વ-
ગ્રોહનીય इति। 'नवर' अणंतरोववन्नगाणं जं जहिं अत्थि तं तहिं भाणियच्चं'
नवरपन्नन्तरोपपन्नकानां यद् यत्रास्ति लेश्यादिकं तत् लेश्यादिकं तत्र वक्तव्यम्।
'किरियावाई णं भंते ! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं पकरे'ति ? पुच्छा'
'क्रियावादिनः खलु भदन्त ! नैरयिकाः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति अथवा तिर्यग्यो-
'निकायुष्कं प्रकुर्वन्ति यद्वा मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति देवायुष्कं वा प्रकुर्वन्तीति प्रश्नः
पृच्छया संशुध्यते। भगवानाह 'गोयमा' इत्यादि। 'गोयमा' हे गौतम ! 'नो नेरइ-
याउयं पकरे'ति' अनन्तरोपपन्नकाः नैरयिकाः नैरयिकसंबन्धि आयुष्कं न कुर्वन्ति

'जाव वेमाणियाणं' इसी प्रकार से प्रथम उद्देशक की वक्तव्यता जैसी-
असुरकुमार से लेकर वैमानिक तक के सम्स्त जीवों की वक्तव्यता
कहनी चाहिये, इस सम्बन्ध में आलाप प्रकार अपने आप सर्वत्र
कल्पित करना चाहिये, 'नवर' अणंतरोववन्नगाणं जं जहिं अत्थि तं
तहिं भाणियच्चं' परन्तु अनन्तरोपपन्नकों के जहां पर जो लेश्यादिक
पद हों वे वहां पर कहना चाहिये, 'किरियावाई णं भंते ! अणंतरो-
ववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं पकरे'ति पुच्छा' हे भदन्त ! क्रिया-
वादी अनन्तरोपपन्न नैरयिक क्या नैरयिक आयुका बन्ध करते हैं ?
या तिर्यगायु का बन्ध करते हैं ? या मनुष्यायु का बन्ध करते हैं ? या
देवायुका बन्ध करते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं—'गोयमा ! नो नेर-
इयाउयं पकरे'ति, नो तिरिक्खाउयं पकरे'ति, णो मणुस्साउयं,
णो देवाउयं' हे गौतम ! क्रियावादी अनन्तरोपपन्न नैरयिक न नैरयिक
आयुका बन्ध करते हैं न तिर्यगायुका बन्ध करते हैं न मनुष्यायुका बन्ध

અડિયાં ભિન્ન પણું છે 'એવ સવ્વજીમાણં જાવ વેમાણિયાણં' આજ પ્રમાણે
પહેલા ઉદ્દેશમાં કહેલ નારક જીવેના કથન પ્રમાણે પૃથ્વીકાયિકાથી લઈને
વૈમાનિક સુધીના સઘળા જીવોના સંબંધમાં કહેવું જોઈએ આ સંબંધમાં
આલાપ પ્રકાર સ્વયં જનાવીને સમજી લેવા 'નવર' અણંતરોવવન્નગાણં જં
જહિં અત્થિ ત તહિં ભાણિયચ્ચં' પરંતુ અનંતરોપપન્નક નૈરયિકોના સંબંધમાં
જ્યાં જે લેશ્યા સંબંધી પદ હોય તે પદ ત્યાં કહેવા જોઈએ 'કિરિયાવાઈ ણં મંતે !
અણંતરોવવન્નગા નેરइया किं नेरइयाउयं पकरे'ति पुच्छा' હે ભગવન્ ક્રિયાવાદી
અનંતરોપપન્નક નૈરયિક શું નૈરયિક આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા તિર્યગ્ય
આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા દેવ
આયુનો બંધ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—ગોયમા ! નો
નેરइयाउयं पकरे'ति નો તિરિક્खजोणियउयं पकरे'ति, णो मणुस्साउयं, णो देवाउयं

तथा 'नो तिरिक्खजोणिपाउयं पकरेति' नो तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, 'णो मणुस्साउय पकरेति' नो-नैव मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति 'णो देहाउयं पकरेति' नो-न वा देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति अनन्तरोपपन्नकालत्वेन तत्समये कस्यापि आयुषो बन्धाभावात् । 'एवं अकिरियावाई वि अण्णाणियवाई वि वेणइयवाई वि' एवं क्रियावध अनन्तरोपपन्नक नारकवदेव अक्रियावाद्यज्ञानिकवादि वैनयिकवादि नारका अपि न नारकायुष्कं कुर्वन्ति न वा तिर्यग्योनिकायुष्कं कुर्वन्ति न वा मनुष्यायुष्कं, न वा देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति इति भावः, हेतुरनन्तरोपपन्नत्वमेव एवमग्रेऽपि । 'सल्लेस्सा णं भंते । किरियावाई अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं पुच्छा' सल्लेस्साः खल्ल भदन्त । क्रियावादिनोऽनन्तरोपपन्नका नैरयिकाः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति अथवा तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, मनुष्यायुष्कं वा प्रकुर्वन्ति, देवायुष्कं वा

करते हैं और न देवायु का बन्ध करते हैं । क्योंकि अनन्तरोत्पत्तिका काल अत्यल्प होता है इसलिये उस समय में किसी भी आयु का बन्ध नहीं होता है । 'एवं अकिरियावाई वि अण्णाणियवाई वि वेणइयवाई वि' इसी प्रकार से अक्रियावादी, अज्ञानिकवादी और वैनयिकवादी अनन्तरोपपन्न नैरयिक भी न नारकायुष्क का बन्ध करते हैं न तिर्यगायुष्क का बन्ध करते हैं, न मनुष्यायुष्क का बन्ध करते हैं और न देवायुष्क का बन्ध करते हैं । इसमें कारण अनन्तरोत्पत्ति के काल की अत्यल्पता है । इसी प्रकार से आगे भी जानना चाहिये, 'सल्लेस्सा णं । भंते । किरियावाई अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं पुच्छा' हे भदन्त । सल्लेस्स क्रियावादी अनन्तरोपपन्न नैरयिक क्या नैरयिक आयुष्क का बन्ध करते हैं ? या तिर्यगायुष्क

पकरेति' हे गौतम । क्रियावादी अनन्तरोपपन्नक, नैरयिक आयुषो बंध करता नहीं, तिर्यग्य आयुषो बंध करता नहीं मनुष्य आयुषो बंध करता नहीं, देव आयुषो पणु बंध करता नहीं केम - के अनन्तर उत्पत्तिनो काण अत्यंत अल्प होय छे तेथी ते समये कोधपणु आयुषो बंध होता नहीं 'एवं अकिरियावाई वि वेणइयवाई वि अण्णाणियवाई वि' अण्ण प्रमाणे अक्रियावादी, वैनयिकवादी, अज्ञानवादी, अनन्तरोपपन्नः नैरयिक पणु नारकनी आयुषो बंध करता नहीं, तिर्यग्य आयुषो बंध करता नहीं मनुष्य आयुषो बंध करता नहीं तथा देव आयुषो बंध करता नहीं कारण के अनन्तरोत्पत्तिनो काण अत्यंत अल्प होय छे, आण्ण प्रमाणे आगण पणु समञ्जसु ।

'सल्लेस्सा ण भंते । किरियावाई अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं पुच्छा' हे भगवन् देश्यावाणा क्रियावादी अनन्तरोपपन्नक नैरयिक शुं नैरयिक आयुष्यनो बंध करे छे ? अथवा मनुष्य आयुषो बंध करे छे ? अथवा

પ્રકુર્વન્તિ इति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते । भगवानाह—‘गोयमा’ इत्यादि, गोयमा’ हे गौतम ! ‘नो नेरइयाउयं पकरे’ति जाव नो देवाउयं पकरे’ति’ नो नैरयिका-युष्कं प्रकुर्वन्ति यावत् नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति यावत् पदेन नो तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति न वा मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्तीत्यनयोः संग्रहो भवति, तथा च चतुर्ध्वपि आयुष्केषु एकविधमपि आयुष्कं न प्रकुर्वन्तीति भावः । ‘एवं जाव वेमाणिया’ एवमनन्तरोपपन्नक क्रियावादि नारकवदेव असुरकुमारादारभ्य वैमानिकान्ताः सर्वेऽपि जीवा नैकविधमपि आयुष्कं बन्धन्तीति भावः । फलत एतदेव दर्शयति—‘एवं सव्वट्ठाणे वि’ इत्यादि । ‘एवं सव्वट्ठाणेषु वि अणंतरोववन्नगा नेरइया न किंचिवि आउयं पकरे’ति जाव अणागारोवउत्त त्ति’ एवमनन्तरोपपन्नसलेश्यवदेव सर्वस्थानेष्वपि कृष्णादिलेश्याद्वारेष्वपि अनन्तरोपपन्नका नैरयिका न किमपि एकविधमपि आयुष्कं प्रकुर्वन्ति अनन्तरोपपन्नकानाम् एक प्रकारकस्यापि आयुषो बन्धनं न भवतीति । सर्वस्थानेषु एकमपि आयुर्न भवतीत्युक्तं तत् कियत्पर्यन्तं

का बन्ध करते हैं ? या मनुष्यायुष्क का बन्ध करते हैं ? या देवायुष्क का बन्ध करते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—‘गोयमा । नो नेरइया-उयं पकरे’ति, जाव नो देवाउयं पकरे’ति’ हे गौतम ! सलेश्य क्रियावादी अनन्तरोपपन्न नैरयिक न नैरयिक आयुष्क का बन्ध करते हैं, न तिर्यगायुष्क का बन्ध करते हैं, न मनुष्यायुष्क का बन्ध करते हैं और न देवायुष्क का बन्ध करते हैं । ‘एवं जाव वेमाणिया’ इसी प्रकार से अनन्तरोपपन्न क्रियावादी नैरयिक के जैसे असुरकुमार से लेकर वैमानिक तक के सब ही जीव किसी भी आयुका बन्ध नहीं करते हैं । यही बात—‘एवं सव्वट्ठाणेषु वि’ इस सूत्रपाठ द्वारा प्रकट की गई है । अर्थात्—अनन्तरोपपन्न सलेश्य नैरयिक के जैसे ही समस्त स्थानों में भी—कृष्णलेश्यादि द्वारों में भी—अनन्तरोपपन्न नैरयिक किसी भी आयुका बन्ध नहीं करते हैं । ऐसा यह कथन ‘जाव अणा-

तिर्य’ય આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા દેવ આયુષ્યનો બંધ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—‘ગોયમા । નો નેરइयाउयं पकरे’ति जाव नो देवाउयं पकरे’ति’ હે ગૌતમ ! લેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી અનંતરો-પપન્નક નૈરયિક, નૈરયિકોના આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી, તિર્ય’ય આયુનો બંધ કરતા નથી. મનુષ્ય આયુનો બંધ કરતા નથી. અને દેવ આયુષ્યનો પણ બંધ કરતા નથી. ‘एवं जाव वेमाणिया’ અનંતરોપપન્નક ક્રિયાવાદી નૈરયિકના કથન પ્રમાણે એક ઈન્દ્રિયવાળાથી લઈને વૈમાનિક સુધીના જીવો કોઈપણ આયુનો બંધ કરતા નથી- એજ વાત ‘एवं सव्वट्ठाणे वि’ આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ કરેલ છે. અર્થાત્ અનંતરોપપન્નક લેશ્યાવાળા નૈરયિક જીવો કોઈપણ આયુનો બંધ

સ્થાનં ગ્રાહ્યં તગ્રાહ-‘જાવ અનાગારોવડત્તિ’ યાવત્ અનાકારોપયુક્ત ઇતિ કૃષ્ણલેશ્યા દારમ્ય અનાકારોપયોગાન્તદ્વારેષુ એકવિધસ્યાપિ આયુષો બન્ધનં ન ભવતીતિ ભાવઃ । ‘એવં જાવ વેમાણિયા’ એવ યાવદ્વૈમાનિકાઃ ન કેવલ મનન્તરોપપન્નક્રિયાવાદિનારકાણામેવ આયુર્વન્ધો ન ભવતિ કિન્તુ અસુર કુમારાદારમ્ય વૈમાનિકાન્તાનન્તરોપપન્નકાનાં સર્વેષામેવ જીવાનામેકસ્યાપિ આયુષો બન્ધો ન ભવતિ એતદેવ દર્શિતમ્, ‘એવં જાવ વેમાણિયા’ ઇતિ પ્રકરણેનેતિ । ‘નવરં જં જસસ અત્થિ તં તસસ માણિયવ્વ’ નવરમ્ અસુરકુમારા દારમ્ય વૈમાનિકાન્તાજીવેષુ અનન્તરોપપન્નકેષુ એતદેવ વૈલક્ષણ્યં યત્ત્વ યસ્ય જીવસ્ય યત્ત્વસ્થાનં લેશ્યાદિકં વિદ્યતે તસ્ય જીવસ્ય તસ્મિન્નેવ સ્થાને આયુષો બન્ધામાવો

ગારોવડત્તિ’ અનાકારોપયુક્ત દ્વાર તક જાનના ચાહિયે, અર્થાત્ કૃષ્ણલેશ્યા સે લેકર અનાકારોપયુક્ત દ્વાર તક અનન્તરોપપન્ન નૈરયિક કિસી મી આયુકા બન્ધ નહીં કરતે હૈ । ‘એવં જાવ વેમાણિયા’ કેવલ અનન્તરોપપન્ન ક્રિયાવાદી નૈરયિક હી કિસી મી આયુકા બન્ધ નહીં કરતે હૈ એસી બાત નહીં હૈ કિન્તુ અસુરકુમાર સે લેકર વૈમાનિક તક કે જિતને મી અનન્તરોપપન્ન જીવ હૈં ડન સવ કે મી કિસી મી આયુકા બન્ધ નહીં હોતા હૈ । યહી બાત સૂત્રકારને ‘એવં જાવ વેમાણિયા’ હસ પ્રકરણ દ્વારા પ્રકટ કી ગઈ હૈ । ‘નવરં જં જસસ અત્થિ તં તસસ માણિ-યવ્વ’ પરન્તુ ડન અનન્તરોપપન્ન અસુરકુમાર સે લેકર અનન્તરો-પપન્ન વૈમાનિકાન્ત જીવોં મેં યહી વિશેષતા હૈ કિ જિસ જીવ કે જો

કરતા નથી આ પ્રમાણેનું કથન ‘જાવ અનાગારોવડત્તિ’ અનાકારોપયોગ દ્વાર સુધી સમજવું. અર્થાત્ કૃષ્ણલેશ્યાથી લઈને અનાકારોપ યોગદ્વાર સુધી અનંતરોપપન્નક નૈરયિક કોઈપણ આયુનો બંધ કરતા નથી.

‘એવં જાવ વેમાણિયા’ કેવળ અનંતરોપપન્નક ક્રિયાવાદી નૈરયિક જ કોઈપણ આયુનો બંધ કરતા નથી. એવી વાત નથી, પરંતુ એક ધંદ્રિયવાળાથી લઈને વૈમાનિક સુધીના બેટલા અનંતરોપપન્નક જીવો છે, તે સઘળા ને પણ કોઈપણ આયુનો બંધ થતો નથી. એજ વાત સૂત્રકારે ‘એવં જાવ વેમાણિયા’ આ સૂત્ર દ્વારા પ્રગટ કરેલ છે. ‘નવરં જં જસસ અત્થિ તં તસસ માણિયવ્વ’ પરંતુ આ અનંતરોપપન્નક એક ધંદ્રિયવાળાથી લઈને અનંતરોપપન્નક વૈમાનિક સુધીના જીવોમાં એજ વિશેષ પાણું છે કે-જે જીવને જે લેશ્યા વિગેરે સ્થાનો થતા હોય એજ સ્થાનમાં તેઓને આયુના બંધનો અભાવ કહેવો

વક્તવ્ય ઇતિ । ‘કિરિયાવાઈ ણં મંતે ! અણંતરોવવન્નગા નેરહ્યા કિં ભવ-
સિદ્ધિયા અભવસિદ્ધિયા’ ક્રિયાવાદિનઃ સ્વલ્લ મદન્ત ! અનન્તરોપપન્નકા
નૈરયિકાઃ કિં ભવસિદ્ધિકા અભવસિદ્ધિકા વા ભવન્તીતિ પ્રશ્નઃ, મગધાનાહ-‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ, ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘ભવસિદ્ધિયા
નો અભવસિદ્ધિયા’ ક્રિયાવાદિનોડનન્તરોપપન્નકા નૈરયિકા ભવસિદ્ધિકા
એવ ભવન્તિ ન તુ અભવસિદ્ધિકા ભવન્તીતિ ભાવઃ । ‘અકિરિયાવાઈ ણં પુચ્છા’
અક્રિયાવાદિનઃ સ્વલ્લ પૃચ્છા, હે મદન્ત ! અક્રિયાવાદિનોડનન્તરોપપન્નકા નૈર-
યિકાઃ કિં ભવસિદ્ધિકા અભવસિદ્ધિકા વા ભવન્તીતિ પ્રશ્નઃ પૃચ્છયા સંગૃહ્યતે ।
મગધાનાહ-‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ, ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘ભવસિદ્ધિયા વિ અભવ-
સિદ્ધિયા વિ’ ભવસિદ્ધિકા અપિ ભવન્તિ અભવસિદ્ધિકા અપિ ભવન્તિ અક્રિયા-
વાદિનોડનન્તરોપપન્નકા નારકા ઇતિ । ‘એવં અન્નાણિયવાઈ વિ વેણહ્યવાઈ વિ’

લેહ્યાદિક સ્થાન સમ્ભવિત્ત્વે હો ડસી સ્થાન મેં ડસકે આયુકે વન્ન કા
અભાવ કહના ચાહિયે, ‘કિરિયાવાઈ ણં મંતે ! અણંતરોવવન્નગા નેરહ્યા
કિં ભવસિદ્ધિયા અભવસિદ્ધિયા’ હે મદન્ત ! ક્રિયાવાદી અનન્તરોપપન્ન
નૈરયિક કયા ભવસિદ્ધિક હોતે હૈ યા અભવસિદ્ધિક હોતે હૈં ? ડત્તર મેં
પ્રમુશ્રી કહતે હૈ-‘ગોયમા ! ભવસિદ્ધિયા નો અભવસિદ્ધિયા’ હે ગૌતમ !
ક્રિયાવાદી અનન્તરોપપન્નક નૈરયિક ભવસિદ્ધિક હોતે હૈં અભવસિ-
દ્ધિક નહીં હોતે હૈં । ‘અકિરિયાવાઈ ણં પુચ્છા ।’ હે મદન્ત ! અક્રિયાવાદી
અનન્તરોપપન્ન નૈરયિક કયા ભવસિદ્ધિક હોતે હૈં ? યા અભવસિદ્ધિક
હોતે હૈં ? ડત્તર મેં પ્રમુશ્રી કહતે હૈં-‘ગોયમા ! ભવસિદ્ધિયા વિ અભવ-
સિદ્ધિયા વિ’ હે ગૌતમ અક્રિયાવાદી અનન્તરોપપન્ન નૈરયિક ભવસિદ્ધિક
મી હોતે હૈં ઓર અભવસિદ્ધિક મી હોતે હૈં । ‘એવં અન્નાણિયવાઈ

નેહ્ય એ. ‘કિરિયાવાઈ ણં મંતે ! અણંતરોવવન્નગા નેરહ્યા કિં ભવસિદ્ધિયા અભવ-
સિદ્ધિયા’ હે ભગવન્ ક્રિયાવાદી અનંતરોપપન્નક નૈરયિક શું ભવસિદ્ધિક
હોય છે ? અથવા અભવસિદ્ધિક હોય છે ? આ પ્રશ્નના ડત્તરમાં પ્રમુશ્રી
કહે છે કે-‘ગોયમા ! ભવસિદ્ધિયા નો અભવસિદ્ધિયા’ હે ગૌતમ ! ક્રિયાવાદી
અનંતરોપપન્નક નૈરયિક ભવસિદ્ધિક હોય છે, અભવસિદ્ધિક હોતા નથી

‘અકિરિયાવાઈ ણં પુચ્છા’ હે ભગવન્ અક્રિયાવાદી અનંતરોપપન્નક
નૈરયિક શું ભવસિદ્ધિક હોય છે ? અથવા અભવસિદ્ધિક હોય છે. આ પ્રશ્નના
ડત્તરમાં પ્રમુશ્રી કહે છે કે-‘ગોયમા ! ભવસિદ્ધિયા વિ અભવસિદ્ધિયા વિ’ હે
ગૌતમ ! અક્રિયાવાદી અનંતરોપપન્નક નૈરયિક ભવસિદ્ધિક યલ્લ હોય છે, અને
અભવસિદ્ધિક યલ્લ હોય છે. ‘એવં અન્નાણિયવાઈ વિ, વેણહ્યવાઈ વિ’ અક્રિયા

एवमक्रियावाद्यनन्तरोपपन्नक नारकवदेव अज्ञानिवाद्यनन्तरोपपन्नका अपि ज्ञातव्याः
तथा वैनयिकवादिनोऽपि ज्ञातव्या इति । भवसिद्धिका अपि अभवसिद्धिका
अपीति । ‘सलेस्सा णं भंते ! किरियावाई अणंतरोववन्नगा नेरइया किं भव-
सिद्धिया अभवसिद्धिया’ सलेइयाः खलु भदन्त ! क्रियावादिनोऽनन्तरोपपन्नका
नैरयिकाः किं भवसिद्धिका भवन्ति अथवा अभवसिद्धिका भवन्तीति प्रश्नः,
भगवानाह—‘गोयमा’ इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘भवसिद्धिया नो अभव-
सिद्धिया’ भवसिद्धिका भवन्ति सलेइयाः क्रियावादिनोऽनन्तरोपपन्नका नो
अभवसिद्धिका भवन्ति इति । ‘एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिण उद्देसए
नेरइयाणं वत्तव्वया भणिया तद्देव इह वि भाणियव्वा’ एवमेतेन अभिलापेन
यथैवास्य शतकस्य औधिके प्रथमे उद्देशके नैरयिकजीवानां वक्तव्यता कृष्ण-

वि वेणइयवाई वि’ अक्रियावादी अनन्तरोपपन्न नैरयिक के जैसे । ही
अज्ञानवादी अनन्तरोपपन्न नैरयिक और वैनयिकवादी नैरयिक भी
जानना चाहिये, अर्थात् ये भवद्विक भी होते हैं और अभवसिद्धिक
भी होते हैं । ‘सलेस्सा णं भंते ! किरियावाई अणंतरोववन्नगा नेरइया
किं भवसिद्धिया अभवसिद्धिया’ हे भदन्त ! सलेइय क्रियावादी
अनन्तरोपपन्नक नैरयिक क्या भवसिद्धिक होते हैं या अभवसिद्धिक
होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—‘गोयमा ! भवसिद्धिया नो
अभवसिद्धिया’ हे गौतम ! सलेइय क्रियावादी अनन्तरोपपन्नक
नैरयिक भवसिद्धिक होते हैं अभवसिद्धिक नहीं होते हैं । ‘एवं
एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिण उद्देसए नेरइयाणं वत्तव्वया भणिया,
तद्देव इहवि भाणियव्वा’ इस प्रकार के अभिलाप से जैसी इस शतक के
औधिक-प्रथम उद्देशक में नैरयिक जीवों की वक्तव्यता कृष्णलेइया-

वादी अनन्तरोपपन्नक नैरयिकता कथन પ્રમાણે જ અજ્ઞાનવાદી અનન્તરોપપન્નક
નૈરયિક અને વૈનયિકવાદી અનન્તરોપપન્નક નૈરયિકનું કથન પણ સસજવું અર્થાત્
આ બધા ભવસિદ્ધિક પણ હોય છે, અને અભવસિદ્ધિક પણ હોય છે ‘સલેસ્સા
ણ મંતે ! કિરિયાઈ અણંતરોવવન્નગા નેરइया किं भवसिद्धिया अभवसिद्धिया’ હે
ભગવન્ લેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી અનન્તરોપપન્નક નૈરયિક શું ભવસિદ્ધિક હોય
છે ? અથવા અભવસિદ્ધિક હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—
‘ગોયમા ! ભવસિદ્ધિયા નો અભવસિદ્ધિયા’ હે ગૌતમ ! લેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી
અનન્તરોપપન્નક નૈરયિક ભવસિદ્ધિક હોય છે અભવસિદ્ધિક હોતા નથી.

‘एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिण उद्देसए नेरइयाण वत्तव्वया भणिया
तद्देव इहवि भाणियव्वा’ આ રીતે આ અભિલાપથી આ શતકના ઔધિક-

લેશ્યાદિ દ્વારેષુ મણિતા-કથિતા, તથા-इहापि द्वितीयोद्देशके कृष्णलेऽया आदि
 द्वारेषु वक्तव्यता मणितव्या, कियत्पर्यन्त प्रथमोद्देशकवक्तव्यता मणितव्या
 तत्राह-‘जाव’ इत्यादि, ‘जाव अणागारोवउत्तत्ति’ यावदनाकारोपयुक्ता इति
 कृष्णलेऽयादित आरभ्य अनाकारोपयुक्ता नारकाः किं भवसिद्धिका अभव-
 सिद्धिकाः, एतत्पर्यन्तमिति तत्र ज्ञानाज्ञानदृष्टिवेदादिकं सर्वमेव द्वारजातं वक्त-
 व्यमिति । ‘एवं जाव वेमाणियाणं’ एवं यावद्वैमानिकानाम् असुरकुमारादारभ्य
 वैमानिकान्तेषु सर्वत्रापि लेश्यादिद्वारेषु आलापको ज्ञातव्य इति । ‘णवरं जं जस्स
 अत्थि तं तस्स भाणियव्वं’ नवरं यस्य जीवस्य यादृशं पदजातं विद्यते तस्य

વાળે આદિ દ્વારોં મેં કહી ગઈ છે. ઉસી પ્રકાર સે યહાં પર મી
 દ્વિતીય ઉદ્દેશક મેં મી-કૃષ્ણલેશ્યાવાળે આદિ દ્વારોં મેં કહની ચાહિયે
 ‘જાવ અણાગારોવઉત્તત્તિ’ ઓર એસી યહ વક્તવ્યતા અનાકારોપયુક્ત
 પદ તક કહની ચાહિયે, તાત્પર્ય એસા છે કે-કૃષ્ણલેશ્યાવાળે નૈરયિક
 સે લેકર અનાકારોપયુક્ત પદ તક કે જિતને મી અનન્તરોપપન્નક
 નૈરયિક હૈ-વેકયા ભવસિદ્ધિક હોતે હૈં ? યા અભવસિદ્ધિક હોતે હૈં ?
 તો એસે પ્રશ્ન કે ઉત્તર મેં પ્રથમ ઉદ્દેશક ગત વક્તવ્યતા યહાં કહની
 ચાહિયે, હસમેં જ્ઞાનદ્વાર અજ્ઞાનદ્વાર દૃષ્ટિદ્વાર, વેદદ્વાર, આદિ સબ દ્વાર
 વક્તવ્ય હૈ । ‘એવં જાવ વેમાણિયાણં’ હસ પ્રકાર અસુરકુમાર સે લેકર
 વૈમાનિક તક કે જીવોં મેં સર્વત્ર લેશ્યાદિક દ્વારોંમેં આલાપક જાનના
 ચાહિયે ‘ણવરં જં જસ્સ અત્થિ તં તસ્સ ભાણિયવ્વં’ પરન્તુ જિસ-જિસ

પડેલા ઉદ્દેશામાં કૃષ્ણલેશ્યાવાળાનો અંતર્ભાવ કરીને નૈરયિક જીવોતુ કથન
 કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ એટલે કે-આ બીજા ઉદ્દેશામાં
 પણ કૃષ્ણલેશ્યાવાળાનો અંતર્ભાવ કરીને કહેવું જોઈ એ

‘જાવ અણાગારોવઉત્તત્તિ’ અને એ પ્રમાણેનું આ કથન અનાકારોપ-
 યોગવાળાના પદ સુધી કહેવું જોઈ એ કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-કૃષ્ણ-
 લેશ્યાવાળા નૈરયિકથી લઈને અનાકારોપયોગ પદ સુધી એટલા અનંતરોપ-
 પન્નક નૈરયિકો છે તેઓ શું ભવસિદ્ધિક હોય છે ? કે અભવસિદ્ધિક હોય છે ?
 આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-આ સંબંધમાં પડેલા ઉદ્દેશામાં કહ્યા
 પ્રમાણેનું કથન કહેવું જોઈ એ તેમાં જ્ઞાનદ્વાર, દૃષ્ટિદ્વાર, વેદદ્વાર,
 વિગેરે સઘળા દ્વારો કહેવા જોઈ એ. ‘એવં જાવ વેમાણિયા’ આજ
 પ્રમાણે એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોથી લઈને વૈમાનિક સુધીના જીવોમાં
 બધેજ લેશ્યા વિગેરે દ્વારોમાં આલાપકો સમજવા. ‘ણવરં જ અત્થિ તં

જીવસ્ય તાદૃશં તાદૃશમેવ પદજાતમન્તર્ભાવ્ય આલાપકં વિધાય વક્તવ્યતા મણિત
વ્યેતિ इदमेव वैलक्षण्यं ज्ञातव्यमिति । ‘इमं से लक्षणं’ इदं तस्य भव्यत्वस्य
लक्षणम् ‘जे किरियावाई सुकपक्खिया सम्मामिच्छादिट्ठी य एए सव्वे भवसि-
द्धिया’ ये क्रियावादिनः शुक्लपाक्षिकाः सम्यग्मिथ्यादृष्टय एते सर्वेऽपि भव-
सिद्धिकाः ‘नो अभवसिद्धिया’ नो अभवसिद्धिकाः, ‘सेसा सव्वे भवसिद्धिया
वि अभवसिद्धिया वि’ शेषाः—क्रियावादि शुक्लपाक्षिका सम्यग्मिथ्यादृष्टि
व्यतिरिक्ताः शेषाः सर्वे कृष्णपाक्षिकादयः भवसिद्धिका अपि भवन्ति अभव
सिद्धिका अपि भवन्ति । भव्यत्वरयेदं लक्षणम् यत् क्रियावादिनः
शुक्लपाक्षिकाः सम्यग्मिथ्यादृष्टयश्च भव्या एव भवन्ति नाभव्याः शेषाश्च
भव्या अभव्या अपि भवन्ति सम्यग्दृष्टि ज्ञान्यवेदका कषायायोगिना भव्यत्वं

जीव के जैसा-२ पद है उस-२ जीव के वैसे-२ ही पद का अन्तर्भाव
करके आलापक बनाकर वक्तव्यता कहनी चाहिये यही यहां विशेषता
है । ‘इमं से लक्षणं’ यह उस अव्यक्त का लक्षण है । ‘जे किरियावाई
सुकपक्खिया सम्मामिच्छादिट्ठी एए सव्वे भवसिद्धिया नो अभव-
सिद्धिया’ जो क्रियावादी शुक्लपाक्षिक सम्यग्मिथ्यादृष्टि हैं ये सब ही
भवसिद्धिक होते हैं अभवसिद्धिक नहीं होते हैं । ‘सेसा सव्वे भवसि-
द्धिया वि, अभवसिद्धिया वि’ क्रियावादी शुक्लपाक्षिक सम्यग्मिथ्या-
दृष्टि से भिन्न और जो सब कृष्णपाक्षिक आदि हैं वे भवसिद्धिक भी
होते हैं और अभवसिद्धिक भी होते हैं । अव्यक्तका यह लक्षण है कि
क्रियावादी शुक्लपाक्षिक सम्यग्मिथ्यादृष्टि भव्य ही होते हैं अभव्य
नहीं । इन से अतिरिक्त और सब जीव भव्य भी होते हैं और अभव्य

તસ્ય માણિયવ્વ’ પરતુ જેને જે પ્રમાણે પદો કહ્યા હોય તે જીવને તે તે પ્રમા-
ણેના પદોને અંતર્ભાવ કરીને આલાપકો બનાવીને કથન કરી લેવું જોઈ એ
એજ અહિયાં વિશેષ પણું છે. ‘इमं से लक्षणं’ આ એ ભવ્યત્વનું લક્ષણ છે
‘जे किरियावाई सुकपक्खिया सम्मामिच्छादिट्ठी’ જે ક્રિયાવાદી શુક્લપાક્ષિક
સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિ છે, એ સઘળા ભવસિદ્ધિક હોય છે ‘नो अभवसिद्धिया’ અભવ-
સિદ્ધિક હોતા નથી. ‘सेसा सव्वे भवसिद्धिया वि अभवसिद्धिया वि’
ક્રિયાવાદી શુક્લપાક્ષિક સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિથી જૂદા બીજા જે કૃષ્ણપાક્ષિક
વિગેરે છે, તે ભવસિદ્ધિક પણ હોય છે, અને અભવસિદ્ધિક
પણ હોય છે. ભવ્યત્વનું આ લક્ષણ કહેલ છે, કે-ક્રિયાવાદી શુક્લપાક્ષિક
સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિ ભવ્ય જ હોય છે, અભવ્ય હોતાં નથી. તેના શિવાય બીજા

મસિદ્ધમેવ અતો નોક્તમિતિ । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ, હે મદન્ત ! અનન્તરોપપન્નકનારકાદીનાં ક્રિયાવાદ્યાદિવિષયે યત્ કથિતં દેવાનુપ્રિયેણ તત્ સર્વથૈવ સત્યમિતિ કથયિત્વા ગૌતમો મગવન્તં વન્દતે નમ- સ્યતિ વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા સંયમેન તપસા આત્માનં માવયન્ વિહરતીતિ ॥સૂ૦ ૨॥

ઇતિ શ્રી-વિશ્વવિખ્યાતજગદ્વલ્લભાદિપદભૂષિતવાલ્મજીચારિ - ‘જૈનાચાર્ય’ પૂજ્યશ્રી-ઘાસીલાલવ્રતિવિરચિતાયાં “શ્રી મગવતીસૂત્રસ્ય” પ્રમેયચન્દ્રિકાખ્યાયાં વ્યાખ્યાયાં ત્રિશત્તમે શતકે દ્વિતીયોદ્દેશકઃ સમાપ્તઃ ॥૩૦-૨॥

મી હોતે હૈં । સમ્યગ્દષ્ટિજ્ઞાની, અવેદક અકષાય ઓર અયોગી યે તો મઘ્ય રૂપ સે પ્રસિદ્ધ હી હૈં । અતઃ યે યહાં નહીં કહે ગયે હૈં ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે મદન્ત અનન્તરોપપન્નક નારકાદિકોં કી ક્રિયાવાદી તાદિ કે વિષય મેં જો આપ દેવાનુપ્રિયને કહા હૈ વહ સર્વથા સત્ય હી હૈ ૨ હસ પ્રકાર કહકર ગૌતમસ્વામીને પ્રભુશ્રી કો વન્દના કી ઓર નમસ્કાર કિયા । વન્દના નમસ્કાર કરકે ફિર વે સંયમ ઓર તપસે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુએ અપને સ્થાન પર બિરાજમાન હો ગયે ॥સૂ૦ ૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજીમહારાજકૃત “મગવતીસૂત્ર” કી પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાકે ત્રીસવેં શતકકા દ્વિતીય ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥૩૦-૨॥

જીવો ભગ્ય હોય છે, અને અભગ્ય પણ હોય છે સમ્યગ્દષ્ટિજ્ઞાની, અવેદક અકષાય અને અયોગી આ બધા તો ભગ્યપણાથી પ્રસિદ્ધ જ છે. તેથી અહિયાં કહ્યા નથી.

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક નારક વિગેરેના ક્રિયાવાદી પણાના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સત્ય છે, હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું આ સંબંધનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ॥સૂ૦ ૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત ‘મગવતીસૂત્ર’ ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ત્રીસમા શતકનો બીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૦-૨॥



અથ તૃતીયોદ્દેશકઃ પ્રારમ્ભયતે

દ્વિતીયોદ્દેશકં નિરૂપ્ય ક્રમપ્રાપ્તં તૃતીયં નિરૂપયન્નાહ—‘પરંપરોવવન્નગા’ इत्यादि ।

મૂલમ્—પરંપરોવવન્નગા ણં મંતે ! નેરઙ્ગયા કિરિયાવાર્દ૦ એવં જહેવ ઓહિઓ ઉદેસઓ તહેવ પરંપરોવવન્નણસુ વિ નેરઙ્ગયાઙ્ગઓ તહેવ નિરવસેસં માણિયઢવં તહેવ તિયદંડગસંગહિઓ । સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ જાવ વિહરઙ્ગ ॥સૂ૦૧॥

તીસઙ્ગમે સણ તર્દઓ ઉદેસો સમત્તો ॥૩૦—૩॥

છાયા—પરમ્પરોપપન્નકાઃ खलु भदन्त ! नैरयिकाः क्रियावादिनः० एवं यथैवौ-
ધિક ઉદેશકસ્તથૈવ પરમ્પરોપપન્નકેષુ નૈરયિકાદિક સ્તથૈવ નિરવશેષં મણિતઠ્યમ્,
તથૈવ ત્રિદણ્ડકસંગૃહીતઃ । તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! इति यावद्विहरति ॥સૂ૦ ૧॥

ત્રિંશત્તમે શતકે તૃતીયોદ્દેશકઃ સમાપ્તઃ

ટીકા—‘પરંપરોવવન્નગાણં મંતે ! નેરઙ્ગયા કિં કિરિયાવાર્દ૦’ પરમ્પરોપપન્નકાઃ
खलु भदन्त ! नैरयिकाः किं क्रियावादिनोऽक्रियावादिनो वा अज्ञानिकवादिनो
વૈનયિકવાદિનો વા મવન્તીતિ પ્રશ્નઃ, મગવાનાહ—‘જહેવ’ इत्यादि, ‘एवं जहेव
ઓહિઓ ઉદેસઓ’ एवं यथैवौધિક ઉદેશકઃ ‘તહેવ પરંપરોવવન્નણસુ વિ’ તથૈવ પર-

તીસરે ઉદ્દેશો કા પ્રારંભ

દ્વિતીય ઉદ્દેશક કા નિરૂપણ કરકે અવ ક્રમપ્રાપ્ત તૃતીય ઉદ્દેશક
કા નિરૂપણ કિયા જાતા હૈ—‘પરંપરોવવન્નગાણં મંતે !’ इत्यादि

ટીકાર્થ—પરંપરોવવન્નગાણં મંતે ! નેરઙ્ગયા કિરિયાવાર્દ૦ ‘હે મદન્ત
જો નૈરયિક પરમ્પરોપપન્નક હૈ—દ્વિતીયાદિ સમયોપપન્નક હૈ—વે કયા
ક્રિયાવાદી હોતે હૈ ? યા અક્રિયાવાદી હોતે હૈ ? યા અજ્ઞાનિકવાદી હોતે
હૈ ? યા વૈનયિકવાદી હોતે હૈ ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—‘जहेव ओहियो

ત્રીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

બીજા ઉદ્દેશાનું નિરૂપણ કરીને હવે કમળી આવેલ આ ત્રીજા ઉદ્દે-
શાનું નિરૂપણ કરવામા આવે છે.—‘પરંપરોવવન્નગાણં મંતે !’ इत्यादि

ટીકાર્થ—‘પરંપરોવવન્નગાણં મંતે ! નેરઙ્ગયા કિરિયાવાર્દ૦’ હે ભગવન્ જો
નૈરયિક પરંપરોપપન્નક હોય છે, બીજા વિગેરે સમયમાં ઉત્પન્ન થવાવાળા હોય છે.
તેઓ શું ક્રિયાવાદી હોય છે ? અથવા અક્રિયાવાદી હોય છે ? અથવા અજ્ઞાનવાદી
હોય છે ? અથવા વૈનયિકવાદી હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—
‘जहेव ओहियो उदेसओ तहेव परंपरोववन्नणसु वि’ હે ગૌતમ ! ઔધિક ઉદ્દેશામાં

પરોપપન્નકેષુ અપિ 'નેરઙ્યાહો તદેવ નિરવસેસં શાણિયવ્વ' નૈરયિકાદિકો વૈમાનિકાન્ત સ્તથૈવ નિરવશેષં ચથા સ્યાત્ તથા મણિતવ્યઃ, હે ગૌતમ ! પરમ્પરોપપન્નકા નૈરયિકાઃ ક્રિયાવાદિનોઽપિ ભવન્તિ, અક્રિયાવાદિનોઽપિ ભવન્તિ અજ્ઞાનિકવાદિનોઽપિ ભવન્તિ વૈનયિકવાદિનોઽપિ ભવન્તીતિ । સલેશ્યાઃ સ્વલુ મદન્ત ! પરમ્પરોપપન્નનારકાઃ કિં ક્રિયાવાદિનો યાવત્ વૈનયિકવાદિનો ભવન્તીતિ પ્રશ્નઃ, હે ગૌતમ ! સલેશ્યાઃ પરમ્પરોપપન્નકા નૈરયિકાઃ ક્રિયાવાદિનોઽપિ ભવન્તિ યાવત્ વૈનયિકવાદિનોઽપિ મદન્તોત્પુત્તરમ્ એવં યાવચ્છુલ્લલેશ્યાઃ પરમ્પરોપપન્નકાઃ ઇત્યાદિકં સર્વં પ્રથમોદેશકવદેવ ઇહાપિ પઠનીયમ્ એતદમિપ્રાયેણ કથિતં નિરવશેષં મણિતવ્યમિતિ । 'તદેવ તિદંડગસંગહિઓ' તથૈવ પ્રથમોદેશકવદેવ

ઉદ્દેસઓ તદેવ પરંપરોપપન્નકેસુ વિ' હે ગૌતમ ! જેણા ઔધિક ઉદ્દેશક મેં કહ્યાં ગયા હૈં उसी प्रकार से परंपरोपपन्नकों के सम्बन्ध में भी 'नेरङ्ग्याहो तदेव निरवसेसं शानियव्वं' नैरयिक से लेकर वैमानिक तक का समस्त कथन यहां पर करना चाहिये—तथा च—परमपरोपपन्नक नैरयिक क्रियावादी भी होते हैं, अक्रियावादी भी होते हैं, अज्ञानिकवादी भी होते हैं और वैनयिकवादी भी होते हैं । इसी प्रकार से 'हे मदन्त ! जो सलेश्य परमपरोपपन्नक नैरयिक हैं' वे क्या क्रियावादी यावत् वैनयिकवादी होते हैं ? इस प्रश्न के उत्तर में भी 'हे गौतम ! सलेश्य परमपरोपपन्नक नैरयिक क्रियावादी भी होते हैं' और यावत् वैनयिकवादी भी होते हैं' ऐसा उत्तर यहां समझना चाहिये इत्यादि समस्त कथन प्रथम उद्देशक के जैसे यहां कहना चाहिये इसी अभिप्रायसे 'निरवसेसं शानियव्वं'

જે પ્રમાણેનું કથન કર્યું છે, એજ પ્રમાણે પરંપરોપપન્નક નૈરયિકોના સંબંધમાં પણ 'નેરઙ્યાહો તદેવ નિરવસેસં શાણિયવ્વં' નૈરયિકથી લઇને વૈમાનિક સુધીનું સઘળું કથન અહિંયાં સમજી લેવું તે આ પ્રમાણે છે.—પરંપરોપપન્નક નૈરયિક ક્રિયાવાદી પણ હોય છે. અક્રિયાવાદી પણ હોય છે અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે, અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. એજ પ્રમાણે હે ભગવન્ જે લેશ્યાવાળા પરંપરોપપન્નક નૈરયિકો છે, તેઓ શું ક્રિયાવાદી હોય છે ? યાવત્ વૈનયિકવાદી હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પણ હે ગૌતમ લેશ્યાવાળા પરંપરોપપન્નક નૈરયિક ક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અને યાવત્ વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. આ પ્રમાણે સમજવું. એજ પ્રમાણે યાવત્ શુદ્ધ લેશ્યાવાળા પરંપરોપપન્નક નૈરયિકો પણ ક્રિયાવાદી હોય છે. અને યાવત્ વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. આ પ્રમાણેનું સઘળું કથન પડેલા ઉદ્દેશમાં કહ્યા પ્રમાણે અહિંયાં સમજવું. આજ અભિપ્રાયથી 'નિરવસેસં શાણિયવ્વં' આ પ્રમાણેનો સૂત્રપાઠ કહેલ છે.

ત્રિદણ્ડકસંગૃહીતઃ દણ્ડકૃત્રયમિત્થં ભવતિ-નૈરયિકાદિ પદેષુ ક્રિયાવાચ્યાદિ-
પ્રરૂપણા દણ્ડકઃ પ્રથમઃ, આયુર્વન્ધદણ્ડકો દ્વિતીયો ભવ્યાભવ્યદણ્ડકશ્ચ તૃતીય
ઇતિ । ‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ જાવ વિહરઈ’ તદેવં ભદન્ત ! તદેવં ભદન્ત !
ઇતિ યાવદ્વિહરતિ, હે ભદન્ત ! પરમ્પરોપપન્નનારકાદીનાં ક્રિયાવાચ્યાદિવિષયે યદ્
દેવાનુપ્રિયેણ કથિતં તત્સર્વમ્ એવમેવ-સર્વથા સત્યમેવ ઇતિ કથયિત્વા ગૌતમો
ભગવન્તં વન્દતે નમસ્યતિ વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા ચ સંયમેન તપસા આત્માનં
ભાવયન્ વિહરતીતિ ॥સૂ૦ ૧॥

ઇતિ શ્રી વિશ્વવિખ્યાત જગદ્વલ્લભાદિપદભૂષિત વાલ્મીકીવારિ ‘જૈનાચાર્ય’ પદભૂષિત
પૂજ્યશ્રી ‘ઘાસીલાલ’ વ્રતિચિરચિતાયાં શ્રી “ભગવતી” સૂત્રસ્ય પ્રમેયચન્દ્રિકા
રૂપાયાં વ્યાખ્યાયાં ત્રિંશત્તમે શતકે તૃતીયોદ્દેશકઃ સમાપ્તઃ ॥૩૦-૩॥

એસા પાઠ કહા ગયા હૈ । ‘તદેવં તિ દંડગસંગહિઓ’ પ્રથમ ઉદ્દેશક જિસ
પ્રકાર સે ત્રિદણ્ડક સહિત કહા ગયા હૈ ડસી પ્રકાર યહ ઉદ્દેશક ભી
ત્રિદણ્ડક સહિત હૈ । વે ત્રિદણ્ડક ઇસ પ્રકાર સે હૈ-ક્રિયાવાદી આદિકા
પ્રરૂપક પ્રથમ દણ્ડક, આયુર્વન્ધ કા પ્રરૂપક દ્વિતીયદણ્ડક ઓર ભવ્યા-
‘ભવ્યત્વ પ્રરૂપક તૃતીય દણ્ડક, સેવં ! ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ જાવ
વિહરઈ’ હે ભદન્ત ! પરમ્પરોપપન્નક નૈરયિક આદિ કી ક્રિયાવાદિતા
આદિ કે વિષય મેં જો આપ દેવાનુપ્રિયને જો કહા હૈ વહ સ્વ સત્ય હૈ ૨
હસ પ્રકાર કહકર ગૌતમસ્વામીને પ્રભુશ્રી કો વન્દના કી ઓર ઉન્હે
નમસ્કાર કિયા વન્દના નમસ્કાર કર ફિર વે તપ એવં સંયમ સે આત્મા
કો ભાવિત કરતે હુએ અપને સ્થાન પર ચિરાજમાન હો ગયે ॥સૂ૦ ૧॥

તૃતીય ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥ ૩૦-૩ ॥

‘તદેવં તિદંડગસંગહિઓ’ પહેલા ઉદ્દેશમાં જે પ્રમાણે ત્રણ દંડકો કહેવામાં
આવ્યા છે, એજ પ્રમાણેના-ક્રિયાવાદી વિગેરેના નિરૂપણ સંબંધી પહેલો
દંડક, આયુર્વન્ધના નિરૂપણ સંબંધમાં બીજો દંડક અને અભવ્ય તથા
અભવ્યાત્મકતા નિરૂપણના સંબંધમાં ત્રીજો દંડક સમજવો.

‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ જાવ વિહરઈ’ હે ભગવન્ પરંપરોપપન્નક
નૈરયિક વિગેરેના ક્રિયાવાદી પણ આદિના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે
કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સત્ય છે હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયત્વ કથન
સર્વથા સત્ય છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને
નમસ્કર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તપ અને સયમથી પોતાના
આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર ચિરાજમાન થયા ॥સૂ૦ ૧॥

॥ત્રીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥ ૩૦-૩॥

अथ चतुर्थाधिकादशान्ता उद्देशकाः प्रारभ्यन्ते

तृतीयोद्देशकं निरूप्य क्रममाप्तान् चतुर्थाधिकादशान्तान् उद्देशकान् निरूपय-
न्नाह—‘एवं एएणं कमेणं’ इत्यादि ।

मूळम्—एवं एएणं कमेणं जच्चेव वंधिसए उद्देसगाणं परिवाडी
सच्चेव इहंपि जाव अचरिमो उद्देसो नवरं अणंतरा चत्तारि वि
एकगमगा, परंपरा चत्तारि वि एकं गमएणं, एवं चरिमा वि
अचरिमा वि एवं चेव । नवरं अलेस्सो केवली अजोगी न
भण्णइ । सेसं तहेव, सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति ॥सू० १॥

एएवि एक्कारस वि उद्देसगा ॥४-११॥

तीसइसं समवसरणसयं समत्तं

छाया—एवमेतेन क्रमेण यैव वन्धिशतके उद्देशकानां परिपाटी सैव इहापि
यावदचरम उद्देशकः । नवरमनन्तराश्चत्वारोऽपि एकगमकाः परम्पराश्चत्वारोऽपि
एकगमकेन, एवं चरमा अपि, अचरमा अपि एवमेव । नवरम् अलेश्यः केवली
अयोगी न भण्यते शेषं तथैव । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥सू० १॥

एते एकादशापि उद्देशकाः । ४-११॥

त्रिंशत्तमं समवसरणशतं समाप्तम् ॥३०॥

टीका—‘एवं एएणं कमेणं जच्चेव वंधिसए उद्देसगाणं परिवाडी’ एवमेतेन
क्रमेण यैव वन्धिशतके पद्मविंशतितमे शतके उद्देशकानां प्रथमोद्देशकादारभ्यैका-
दशोद्देशकान्तानां परिपाटी प्रकाररूपा कथिता ‘सच्चेव इहंपि जाव अचरिमो

चौथा उद्देशाका प्रारभ -

‘एवं एएणं कमेणं जच्चेव वंधिसए उद्देसगाणं’-इत्यादि

टीकार्थ—‘एवं एएणं कमेणं जच्चेव वंधिसए उद्देसगाणं परिवाडी
‘इस प्रकार इस क्रम से जो वन्धि शतक में छाहस २६ वे शतक में
उद्देशकों की-प्रथम उद्देशक से लेकर ग्यारह वे उद्देशक तक के उद्देशको

॥चौथा उद्देशानो आरभ--

‘एवं एएणं कमेणं जच्चेव वंधिसए उद्देसगाणं’ इत्यादि

टीकार्थ—‘एवं एएणं कमेणं जच्चेव वंधिसए उद्देसगाण परिवाडी’ आ
शीते कुमथी अधी शतकमां ओटले के छ०वीसमा शतकमा उद्देशाओ-ओटले
के पडेला उद्देशाथी दधने अगियारमां उद्देशा सुधीना उद्देशाओना कुन कडेल छे,

उद्देशो' सैव इहापि उद्देशकानां परिपाटी वक्तव्या यावद् अचरमोद्देश इति प्रथमो-
द्देशकादारभ्य अचरमनामकैकादशोद्देशकपर्यन्तं सर्वं वक्तव्यमित्यर्थः, उद्देशानां
परिपाटी यथा-औघिकोद्देशको जीवनारकादीनां प्रथमः १, ततः-अनन्तरोपप-
न्नकः २, परम्परोपपन्नकः ३, अनन्तरावगाढः ४, परम्परावगाढः ५ अनन्तराहारक ६
परम्पराहारकः ७, अनन्तरपर्याप्तकः ८, परम्परपर्याप्तकः ९, चरमः १० अचरमश्च
११, इति । बन्धिशतका दत्रविशेष एतावानेव-यत् तत्र बन्धपदविशिष्टा उद्देशकाः,
अत्र तु क्रियावाद्यादि पदविशिष्टा उद्देशका वक्तव्या इति । नवरं केवलम् अन-
न्तराः-अनन्तरोपपन्नादिकाश्चत्वारोऽपि एकगमकाः-सदृशालापकाः अनन्तरोपप-

की परिपाटी कही गई है 'सच्चेव इहं पि जाव अचरिमो उद्देशो' वही
परिपाटी यहां पर भी उद्देशकों की 'जाव अचरिमो उद्देशो' यावत्
अचरम उद्देशक तक जाननी चाहिये, जीव नारक आदिकों का जो
प्रथम उद्देशक है वह औघिक उद्देशक है ? १ अनन्तरोपपन्नक नारका-
दिकों का द्वितीय उद्देशक २ परम्परोपपन्नक नारकादिकों का तृतीय उद्दे-
शक हैं ६ अनन्तरावगाढ नामका चतुर्थ उद्देशक है, परम्परावगाढ
नामका पांचवां उद्देशक है, अनन्तराहारक नामका छठा उद्देशक हैं
परम्पराहारक नामका सातवां उद्देशक है, अनन्तरपर्याप्त नामका आठवां
उद्देशक है परम्परपर्याप्त नाम का नौवा उद्देशक है चरम नामका
दसवां उद्देशक है और अचरम नाम का ग्यारहवां उद्देशक है । बन्धि-
शतक से यहां पर इतनी ही विशेषना हैं कि यहां क्रियावादी आदि पद
विशिष्ट उद्देशक वक्तव्य हुए हैं और बन्धिशतकमें बन्धि पद विशिष्ट

'सच्चेव इहं पि जाव अचरिमो उद्देशो' उद्देशाभिनो भोज कभ 'जाव अचरिमो उद्देशो'
यावत् अचरम उद्देशा सुधी समज्जुं भव नारक विगेरेना संभंधमां ने पडेसे।
उद्देशो छे, ते औघिक उद्देशो छे. १ अनन्तरोपपन्नक भव नारक विगेरे
संभंधी भान्ने उद्देशो छे. २ परंपरोपपन्नक भव नारक विगेरेना संभंधमां
त्रान्ने उद्देशो कह्यो छे. ३ अनन्तरावगाढ नामनो बोथो उद्देशो कह्यो छे. ४
परंपरावगाढ नामनो पांचमो उद्देशो कह्यो छे ५ अनन्तराहारक नामनो
छट्टो उद्देशो कह्यो छे. ६ परंपराहारक नामनो सातमो उद्देशो कह्यो छे. ७
अनन्तरपर्याप्त नामनो आठमो उद्देशो कह्यो छे. ८ परंपरपर्याप्त नामनो
नवमो उद्देशो कह्यो छे. ९ चरम नामनो दसमो उद्देशो कहेल छे. अने
अचरम नामनो अजियारमो उद्देशो कह्यो छे

अधिशतक करतां अहियां भोज विशेषपणुं छे के-अहियां क्रियावादी
विगेरे पह विशिष्ट-पदोथी युक्त उद्देशो कहेवो भेधभे अने अधिशतकमां

નકા જીવનારકાદયઃ, इति द्वितीयः२, अनन्तरावगाढाः जीवनागकादय इति चतुर्थः४ । अनन्तराहारका जीव नारकादयः, इति षष्ठः६, अनन्तरपर्याप्ता जीव नारकादयः इत्यष्टमः८ । एवं क्रमेण चत्वारोऽनन्तरोद्देशका वक्तव्याः । ‘परंपरा चत्वारि वि एकगमणं’ परम्पराः परम्परोपपन्नकादयश्चत्वारोऽपि उद्देशकाः एक गमकेन-सदृशालापकेन वक्तव्याः परम्परोपपन्नका जीवनारकादय इति तृतीयो-द्देशकः । परम्परानगाढा जीवनारकादय इति पञ्चमोद्देशकः । परम्पराहारका जीव नारकादय इति सप्तमः, परम्परपर्याप्तका जीवनारकादय इति नवमः, इत्येवं क्रमेण चत्वारः परम्परका उद्देशकाः सर्वेऽपि एकरूपेण नेयाः । ‘एवं चरिमा वि’ एवं चरमोद्देशकः चरमाः खलु भदन्त ! नैरयिकाः क्रियावादिन एवं क्रमेण दशमोद्देशको ज्ञातव्यः । ‘अचरिमा वि एवं चेन्न’ अचरमा नारकादयः क्रियावा-दिनः किमित्यादिरूपेण एकादशोद्देशको नेयः । तदिन्ध गेकादशाऽपि उद्देशकाः

उद्देशक वक्तव्य हुए हैं । अनन्तर शब्द घटित चारों उद्देशक एक गमक हैं-सदृश आलापनाले हैं । अनन्तर शब्द घटित चार उद्देशक द्वितीय उद्देशक, चतुर्थ उद्देशक, छठा उद्देशक और आठवां उद्देशक-हैं । परम्पर शब्द घटित चारों उद्देशक एक गमक हैं-परम्पर शब्द घटित तृतीय उद्देशक, पंचम उद्देशक, सप्तम उद्देशक और नौवां उद्देशक ये चार उद्देशक हैं । इसी प्रकार ले चरम और अचरम पद-विशिष्ट उद्देशकों के सम्बन्ध में भी जानना चाहिये । यहां समस्त उद्देशकों में क्रियावादी अक्रियावादी आदि पदों को जोड़कर आलापक प्रथम उद्देशक से लेकर ग्यारहवें उद्देशक तक के ११ ग्यारा उद्देशकों में कहना चाहिये । हम

અંધ પદવાળા ઉદ્દેશાઓ કહેવા નોંધએ. અનંતરશબ્દથી યુક્ત ચારે ઉદ્દેશાઓ એક ગમકવાળા છે. અર્થાત્ સમાન આલાપકોવાળા છે. અનંતર શબ્દથી યુક્ત ચાર ઉદ્દેશાઓ-બીજે ઉદ્દેશે, ત્રીજે ઉદ્દેશે છઠો ઉદ્દેશે અને આઠમે ઉદ્દેશે, આ ચાર ઉદ્દેશાઓ છે. પરંપર શબ્દથી યુક્ત ચારે ઉદ્દેશાઓનો એક ગમ છે. તે આ પ્રમાણે છે.-ત્રીજે ઉદ્દેશે, પાંચમે ઉદ્દેશે, સાતમે ઉદ્દેશે અને નવમે ઉદ્દેશે છે આજ પ્રમાણે ચરમ અને અચરમ પદથી યુક્ત ઉદ્દેશાઓના સંબંધમાં પણ સમજવું. અહિયાં સઘળા ઉદ્દેશાઓમાં ક્રિયાવાદી અક્રિયાવાદી, વિગેરે પદોને નોંટીને આલાપકો આ પ્રમાણે કહેવા નોંધએ-જેમકે-હે ભગવન્ ચરમ અથવા અચરમ નૈરયિકો વિગેરે શું ક્રિયાવાદી હોય છે? અથવા અક્રિયાવાદી હોય છે? અથવા અજ્ઞાનવાદી હોય છે? અથવા વૈનયિકવાદી હોય છે? આ પ્રકારથી અહિયાં પહેલા ઉદ્દેશાથી લઈને અગિયારમા ઉદ્દેશા સુધીના અગિયાર ઉદ્દેશાઓ કહેવા નોંધએ આ રીતે

संक्षेपविस्ताराभ्याम्हि पूर्वप्रकारेण षड्विंशतितमबन्धिशतकोक्तेन वक्तव्याः ।
'णवरं अलेस्सो केवली अजोगी न भन्नइ' नवरं केवलम् अलेश्यो जीवः केवली
अयोगी चैते कुत्रापि उद्देशके नो यणितव्या स्तेषामचरमत्वाभावेन प्रश्नानर्ह
त्वात् तत्प्रश्नोत्तरयोरप्रयोजनत्वाच्चेति । 'सेसं तं चेव' शेषम्—कथितजीवा-
तिरिक्तं सर्वमपि वस्तु बन्धिशतकवदेव ज्ञातव्यम् । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति'
तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति, हे भदन्त ! जीवादीनां क्रियावाद्यादिविषये
यद् देवानुप्रियेण कथितं तत्सर्वम् एवमेव सर्वथा सत्यमेव, इति कथयित्वा गौतमो

प्रकार छाईस २६ वे' बन्धिशतक में जिस प्रकार उद्देशकों के कहने का
कहा जा चुका है उसी प्रकार यहां भी संक्षेप और विस्तार से कहना
चाहिये, यहां पर भी बन्धिशतक के जैसे अचरम उद्देशक में अलेश्यों
के सम्बन्ध में केवलियों के सम्बन्ध में, अयोगियों के सम्बन्ध में
कोई प्रश्न उत्पन्न नहीं करना चाहिये क्योंकि वे अचरम नहीं
होते हैं अतः ये सब प्रश्न यहां नहीं उठते हैं । 'सेसं तं चेव'
बाकी का और सब कथन बन्धिशतक के ही जैसा है । 'सेवं भंते ! सेवं
भंते ! त्ति' हे भदन्त ! जीवादिकों की क्रियावादिता आदिके विषयमें
जो आप देवानुप्रियेने कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है २ इस
प्रकार कह कर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया,

२६ छ०वीसमां भंधी शतकमां उद्देशाणो कडेवाना संभंधमां जे प्रकार कडेवे
छे, जेज प्रमाणेने प्रकार अहियां पणु संक्षेपथी अने विस्तारथी 'कडेवे'
जेछये. अहियां लेश्याना संभंधमां केवलियोना संभंधमां, अयोगीना
संभंधमां कांछपणु प्रश्न करवे न जेछये. केम के-कृतकृत्य होवाथी आ
भधा प्रश्नो तेजोना संभंधमां उपस्थित थता नथी. 'सेसं तं चेव' भाकीनु'
भीणु तमाम कथन भंधी शतकना कथन प्रमाणे ज छे तेम समजवु.

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' छे लगवन् जव विगेरेना क्रियावादि पणु
विगेरेना संभंधमां आप देवानुप्रिये जे कथन कथुं छे, ते सर्वथा सत्य छे.
छे लगवन् ! आप देवानुप्रियनु' कथन सर्वथा सत्य ज छे, आ प्रमाणे कहीने
गौतमस्वामीजे प्रभुश्रीने वंदना करी तेजोने नमस्कार कया. वंदना नमस्कार
करीने ते पछी संयम अने तपशी पोताना आत्माने लावित करता

भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति । 'ए एकारस वि उद्देशगा' एते एकादशापि उद्देशकाः सन्तीति ॥सू०१॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-

ककितलकितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,

वादिमानमर्दक-श्रीशाहच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-

'जैनाचार्य' पदभूषित —कोल्हापुरराजगुरु-बाल-

ब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्य श्री

घासीलालव्रतिविरचितायां श्री "भग

वतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकारूपायां-

व्याख्यायां त्रिंशत्तमे शतके चतुर्थी-

देशकः समाप्तः ॥३०-४॥

इति त्रिंशत्तमं समवसरणशतं समाप्तम् ॥३०॥

वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थानपर विराजमान हो गये 'ए ए एकारस उद्देशगा' इस प्रकार से ११ उद्देशक पर्यन्त के उद्देशकों समजलेने चाहिए ॥सू०१॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजी महाराजकृत

"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके तीसरे शतकका

॥ चौथा उद्देशक समाप्त ॥ ३०-१॥

॥३० वां शतक समाप्त ॥

थका पोताना स्थानपर विराजमान थया. 'ए ए एकारस उद्देशगा' आ रीते अजियार उद्देशाओ कद्या छे. ॥सू०१॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलाल महाराजकृत "भगवतीसूत्र"नी

प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याना तीसरा शतकने चौथा उद्देशो समाप्त ॥३०-४॥

॥ तीसरा शतक समाप्त ॥३०-४॥



अथ एकत्रिंशत्तमशतकम्

अथ प्रथमोद्देशकः प्रारभ्यते

त्रिंशत्तमशतकान्ते चत्वारि समवसरणानि कथितानीति चतुष्टयसाधर्म्यात् चतुर्थमवक्तव्यतानुगतमष्टाविंशत्युद्देशकयुक्तमेकत्रिंशत्तमं शतमारभते, तदनेन सम्बन्धेनायातस्यैकत्रिंशत्तमशतकस्य प्रथमोद्देशकगतमिदमादिमं सूत्रम्—‘रायगिहे जाव’ इ.

मूलम्—रायगिहे जाव एवं वयासी—कइ णं भंते ! खुड्डा जुम्मा पन्नत्ता ? गोयमा ! चत्तारि खुड्डा जुम्मा पन्नत्ता तं जहा कडजुम्मे१, तेओए२, दावरजुम्मे३, कलिओगे४ । से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ चत्तारि खुड्डा जुम्मा पन्नत्ता तं जहा कडजुम्मे जाव कलिओगे ? गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए से तं खुड्डाग कडजुम्मे१, जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे त्ति पज्जवसिए से तं खुड्डागतेओगे२, जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए से तं खुड्डागदावरजुम्मे३, जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए से तं खुड्डाग कलिओगे४, से तेणट्टेणं जाव कलिओगे । खुड्डाग कडजुम्मे नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति किं नेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिक्ख० पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति । एवं नेरइयाणं उववाओ जहा वक्कंतीए तहा भाणियव्वो । तेणं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! चत्तारि वा, अट्ठ वा, बारस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा उववज्जंति । तेणं भंते ! जीवा कहां उववज्जंति ? गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे अज्झवसाण० एवं जहा पंचवीसइमे सए अट्ठम उद्देसए नेरइयाणं वत्तव्वया तहेव इह वि भाणियव्वो जाव आयप्पयोगेणं उववज्जंति, नो परप्पयोगेणं उववज्जंति । रयणप्पभापुढवी खुड्डाग कडजुम्म नेरइया णं भंते ! कओ उवव-

ટીકા—‘રાયગિહે જાવ એવં વયાસી’ રાજગૃહે યાવદેવમવાદીત્ યાવત્પદેન ભગવતઃ સમાગમનમશૂત્ પરિષન્નિર્ગતા, ભગવતા ધર્મોપદેશઃ કૃતઃ પરિ-
પત્તિગતા, તતો ગૌતમો ભગવન્તં વન્દતે નમસ્યતિ વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા પયુ-
પાસીનઃ પ્રાક્તલિપુટો ગૌતમઃ, એતદન્તપ્રકરણસ્ય સંગ્રહો ભવતિ । કિમવાદીત્ ?
તત્રાહ—‘કહ ણં’ ઇત્યાદિ, ‘કહ ણં મંતે ! સુહા જુમ્મા પન્નત્તા’ કતિ સલ્લ મદન્ત ।
હુદ્રા યુગ્માઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ ? તે ચ મહાન્તોઽપિ ભવન્ત્યતઃ સુલ્લકશવ્દેન વિશેષિતાઃ
તત્ર ચત્વારોઽષ્ટૌ દ્વાદશેત્યાદિ સંખ્યાવાન્ રાશિઃ સુલ્લકઃ કૃતયુગ્મોઽભિધીયતે ।
પ્રથમ ઉદ્દેશક કા યહ આદિ સૂત્ર હૈ— ‘રાયગિહે જાવ એવં વયાસી’—
ઈત્યાદિ સૂત્ર ॥૧॥

ટીકાર્થ—‘રાયગિહે જાવ એવં વયાસી’ રાજગૃહ નગર મેં યાવત્ ઇસ
પ્રકાર સે પૂછા યહાં યાવત્પદ સે એસા પ્રકરણ ગૃહીત હુઆ હૈ—ભગવાન્
મહાવોરસ્વામી યહાં પર પધારે, પરિષદા ધર્મોપદેશ સુનને કે લિયે
અપને—અપને સ્થાન સે અનેકે પાસ આઈ, ભગવાન્ ને ધર્મોપદેશ દિયા,
ધર્મોપદેશ સુનકર સભા વિસર્જિત હો ગઈ, તવ ગૌતમ ને ભગવાન્ કો
વન્દના કી નમસ્કાર કિયા, વન્દના નમસ્કાર કરકે ફિર ગૌતમસ્વામીને
પ્રભુશ્રી કી પયુપાસના કરતે હુએ દોનોં હાથ જોડકર એસા પૂછા—કયા
પૂછા ? સો પ્રકટ કિયા જાતા હૈ—‘કહ ણં મંતે ! સુહા જુમ્મા પન્નત્તા’
હે મદન્ત ! હુદ્રયુગ્મ કિતને કહે ગયે હૈ ? યે વડે મી હોતે હૈ । ઇસલિયે
યહાં સુલ્લક શવ્દ સે ઇન્હે વિશેષિત કિયા ગયા હૈ । ઇસ પ્રકાર જો લઘુ
સંખ્યાવાલી રાશિ વિશેષ હૈ વહ હુદ્રકૃતયુગ્મ હૈ । ચાર, આઠ, બારહ

શકતનેા સૂત્રકાર પ્રારભ કરે છે.—‘રાયગિહે જાવ એવં વયાસી’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—‘રાયગિહે જાવ એવં વયાસી’ રાજગૃહ નગરમા ભગવાન્
મહાવીરસ્વામીનું સમવસરણ થયું પરિષદ ભગવાનને વદના કરવા નગરની
બહાર નીકળી ભગવાનની સમીપે આવી, ભગવાને તેઓને ધર્મોપદેશના સાંભળાવી
ધર્મોપદેશના સાંભળીને પરિષદાએ પ્રભુશ્રીને વદના કરી નમસ્કાર કર્યા. વદના
નમસ્કાર કરીને પરિષદા પોતપોતાના સ્થાને પાછી ગઈ તે પછી ગૌતમસ્વામીએ
ભગવાનને વદના કરી નમસ્કાર કર્યા વદના નમસ્કાર કરીને પ્રભુશ્રીની પયુ-
પાના કરતાં થકા ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને આ પ્રમાણે પૂછ્યું—‘કહ ણં મંતે ! સુહા
જુમ્મા પન્નત્તા’ હે ભગવાન્ હુદ્રયુગ્મ કેટલા કહેલ છે ? સમરાશીને યુગ્મ
કહેવામાં આવે છે, અને તે મોટા પણ હોય છે. તેથી અહિયાં હુદ્લક
શબ્દથી નેને કહેલ છે. આ રીતે જે લઘુ સંખ્યાવાળી રાશી વિશેષ હોય તે
હુદ્રયુગ્મ છે ચાર, આઠ, બાર, વિગેરે સંખ્યાવાળી રાશી હુદ્લકકૃતયુગ્મ છે.

મગવાનાહ-‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ, ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘ચત્તારિ સુહા જુમ્મા પન્નત્તા’ ચત્તારઃ સુદા યુગ્માઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ ‘તં જહા’ તથથા ‘કહજુમ્મે’ કૃતયુગ્મ નામકો રાશિવિશેષઃ । ‘તેયો’ ય્યોજઃ ‘દાવરજુમ્મે’ દ્વાપરયુગ્મઃ ‘કલિયો’ કલયોજઃ । ‘સે કેળદ્દેણં મંતે ! એવં વુચ્ચહ’ તત્કેનાર્થેન મદન્ત ! એવમુચ્ચતે ‘ચત્તારિ સુહા જુમ્મા પન્નત્તા’ ચત્તારઃ સુદા યુગ્માઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ ‘તં જહા’ તથથા ‘કહજુમ્મે જાવ કલિયોગે’ કૃતયુગ્મો યાવત્ કલયોજઃ, અત્ર યાવત્પદેન ય્યોજ દ્વાપરયુગ્મયોઃ સંગ્રહઃ, મગવાનાહ-‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ, ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘જે ણં રાસી ચડકકણં અવહારેણં અવહીરમાણે ચડપ્પજ્જવસિ’ યઃ સ્વલ્પ રાશિઃ સમુદાયઃ ચતુષ્કેણાપહારેણ ચતુઃસંખ્યયા વિમજ્જમાનઃ ચતુઃપર્યવસિતઃ ચતુરવ-શિષ્ઠો ભવેત્ ‘સે તં સુહાગકહજુમ્મે’ સ એપઃ સુલ્લકકૃતયુગ્મઃ ‘જે ણં રાસી ચડકકેણ અવહારેણં અવહીરમાણે તિ પ્પજ્જવસિ’ સેતં સુહાગ

આદિ સંખ્યાવાલી રાશિ સુલ્લક કૃતયુગ્મ હૈ । ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈ-‘ગોયમા ! ચત્તારિ સુહા જુમ્મા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! સુદ્રયુગ્મ-રાશિ ચાર પ્રકાર કી કહી ગઈ હૈ-‘તં જહા’ જૈસે-કહજુમ્મે’ ‘કૃત-યુગ્મ’ ‘તેયો’ ય્યોજ ‘દાવરજુમ્મે’ દ્વાપરયુગ્મ, ‘કલિયો’ ઓર કલયોજ, ‘સે કેળદ્દેણં મંતે ! એવં વુચ્ચહ ચત્તારિ સુહા જુમ્મા પન્નત્તા’ હે મદન્ત ! એસા આપ કિસ કારણ સે કહતે હૈ કિ સુદ્રયુગ્મ ચાર પ્રકાર કે કહે ગયે હૈ ? ઓર વે એસે આપને ચતલાયે હૈ-કૃતયુગ્મ યાવત્ કલયોજ । યહાં યાવત્ પદ સે ય્યોજ ઓર દ્વાપરયુગ્મ કા ગ્રહણ હુઆ હૈ । ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈ-‘ગોયમા ! જે ણં રાસી ચડકકણં અવ-હારેણં અવહીરમાણે ચડપ્પજ્જવસિ’ હે ગૌતમ ! જિમરાશિ મેં સે ચાર ચાર કા અપહાર કરતે-કરતે અન્ત મેં ચાર ચચે રહે એસી વહ સંખ્યા સુદ્ર કૃતયુગ્મ કહી ગઈ હૈ ।

આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘ગોયમા ! ચત્તારિ સુહા જુમ્મા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! સુદ્રયુગ્મરાશી ચાર પ્રકારની કહેલ છે, ‘તં જહા’ તે આ પ્રમાણે છે.-‘કહજુમ્મે’ કૃતયુગ્મ ‘તેયો’ ય્યોજ ‘દાવરજુમ્મે’ દ્વાપરયુગ્મ ‘કલિયો’ અને કલયોજ ‘સે કેળદ્દેણં મંતે ! એવં વુચ્ચહ ચત્તારિ સુહા જુમ્મા પન્નત્તા’ હે ભગવન્ આપ એવું શા કારણથી કહેલ છે કે-સુદ્રયુગ્મ ચાર પ્રકારના કહેલ છે ? અને તે કૃતયુગ્મ ય્યોજ દ્વાપર અને યાવત્ કલયોજ સુધી આપે કહેલા પ્રમાણે ના કહેલા છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘ગોયમા ! જે ણં રાસી ચડકકણં અવહારેણં અવહીરમાણે ચડપ્પજ્જવસિ’ હે ગૌતમ ! જે રાશીમાં ચાર ચારના અપહાર કરતાં કરતા છેવટે ચાર બચે એવી સંખ્યાને સુદ્રકૃતયુગ્મ કહેવામાં આવેલ છે.

તેઓ' યઃ સ્વલુ રાશિઃ ચતુષ્કેણ અપહારેણ અપહ્રિયમાણસ્તિ પર્યવસિતો
 ભવેત્ સ એષ ક્ષુલ્લક યોજઃ । 'જે નં રાસી ચતુષ્કેણ અવહારેણ અવહીરમાણે
 દુપજ્જવસિ' યઃ સ્વલુ રાશિઃ ચતુષ્કેણાપહારેણાપહ્રિયમાણો દ્વિપર્યવસિતો ભવેત્
 'સેત્તં સુદ્ધાગદાવરજુમ્મે' સ એષ ક્ષુલ્લકદ્વાપરયુગ્મઃ 'જે નં રાસી ચતુષ્કેણ અવ-
 હારેણ અવહીરમાણે દુપજ્જવસિ' સેત્તં સુદ્ધાગ કલિઓગે' યઃ સ્વલુ રાશિઃ
 ચતુષ્કેણાપહારેણ અપહ્રિયમાણ એક પર્યવસિતો ભવેત્ સ એષ ક્ષુલ્લક કલ્યોજઃ
 'સે તેણદ્દેણં જાવ કલિઓગે' તત્તેનાયેન ગૌતમ ! એવમુચ્યતે ચત્તવારઃ ક્ષુલ્લક
 યુગ્માઃ, તથા-કૃતયુગ્મયોજો દ્વાપરયુગ્મઃ કલ્યોજ ઇતિ । 'સુદ્ધાગ કલ્પયુગ્મ
 નેરહયાણં મંતે' ક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મનૈરયિકાઃ સ્વલુ મદન્ત ! 'કઓ ઉવવજ્જન્તિ'

‘જે નં રાસી ચતુષ્કેણ અવહારેણ અવહીરમાણે તિપજ્જવસિ' સેત્તં
 સુદ્ધાગતેઓ' જિસ સંખ્યા મેં સે ચાર-ચાર કા અપહાર કરતે-૨
 અંત મેં ત્રીન બચેં એસી વહ સંખ્યા ક્ષુલ્લક યોજ કહી ગઈ હૈ । ‘જે નં
 રાસી ચતુષ્કેણ અવહારેણ અવહીરમાણે દુપજ્જવસિ' સેત્તં સુદ્ધાગ
 દાવરજુમ્મે' જિસ સંખ્યા મેં સે ચાર-ચાર કા અપહાર કરતે-કરતે અન્ત
 મેં દો બચે રહે એસી વહ સંખ્યા ક્ષુલ્લક દ્વાપરયુગ્મ હૈ । ‘જે નં રાસી
 ચતુષ્કેણ અવહારેણ અવહીરમાણે દુપજ્જવસિ' સેત્તં સુદ્ધાગકલિ-
 ઓગે' તથા જિસ સંખ્યા મેં સે ચાર-૨ કા અપહાર કરતે ૨ અન્ત મેં એક
 બચારહે એસા વહ સંખ્યા ક્ષુદ્ર કલ્યોજ હૈ । ‘સે તેણદ્દેણં જાવ કલિ
 ઓગે' હસ કારણ હે ગૌતમ ! મેંને એસા કહા હૈ કિ ક્ષુલ્લક યુગ્મ
 કૃતયુગ્મ સે લેકર કલ્યોજ તક કે ભેદ સે ચાર પ્રકારકા હોતા હૈ ।

‘જે નં રાસી ચતુષ્કેણ અવહારેણ અવહીરમાણે તિ પજ્જવસિ' સેત્તં સુદ્ધાગતેઓ'
 જે સંખ્યામાં ચાર ચારનો અપહાર કરતાં (બહાર કરતાં કરતાં) છેવટે ત્રણ
 બચે એવી સંખ્યાને ક્ષુલ્લક યોજ કહેલ છે ‘જે નં રાસી ચતુષ્કેણ અવહારેણ
 અવહીરમાણે દુપજ્જવસિ' સેત્તં સુદ્ધાગદાવરજુમ્મે' જે સંખ્યામાંથી ચાર-ચાર ઓછા
 કરતાં કરતાં અન્તમાં બે બચે તેવી સંખ્યાને ક્ષુલ્લકદ્વાપર યુગ્મ કહે છે. ‘જે નં
 રાસી ચતુષ્કેણ અવહારેણ અવહીરમાણે દુપજ્જવસિ' સેત્તં સુદ્ધાગકલિઓગે' તથા
 જે સંખ્યામાંથી ચાર ચારનો અપહાર કરતાં કરતાં અન્તમાં એક બચે એવી
 તે સંખ્યાને ક્ષુદ્રકલ્યોજ કહેવાય છે. ‘સે તેણદ્દેણં જાવ કલિઓગે' તે કારણથી
 હે ગૌતમ ! મેં એવું કહ્યું છે કે-ક્ષુલ્લકયુગ્મ, કૃતયુગ્મથી લઈને કલ્યોજ
 સુધીના બેઠથી ચાર પ્રકારનો હોય છે.

कृतः—कस्मात्स्थानविशेषादागत्य नरकावासे उत्पद्यन्ते 'किं नेरइएहिंतो उवव-
ज्जंति तिरिक्खजोणिएहिंतो पुच्छा' किं नैरयिकेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते किं वा तिर्य-
ग्योनिकेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते मनुष्येभ्यो वा आगत्योत्पद्यन्ते देवेभ्यो वा आग-
त्योत्पद्यन्ते इति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा'
हे गौतम ! 'नो नेरइएहिंतो उववज्जंति' नो नैरयिकेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते क्षुल्लक-
कृतयुग्मनैरयिकाः 'एवं नेरइयाणं उववाओ जहा वक्कंतीए तहा भाणियव्वो'
एवं नैरयिकाणामुपपातो यथा व्युत्क्रान्तौ प्रज्ञापनायाः पष्ठे षडे कथित स्तथैव
इहापि भणितव्यः प्रज्ञापनायाः षष्ठपदे अर्थात् एवं प्रतिपादितम्—नारका न
नैरयिकेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते न वा देवेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते किन्तु पञ्चेन्द्रिय-

'खुड्डाग कडजुम्मनेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' हे भदन्त !
क्षुद्र कृतयुग्मराशि प्रमाण नैरयिक कहां से—किस स्थान विशेष से—
आकर के उत्पन्न होते हैं—नरकावासमें से जन्म लेते हैं—'किं नेरइएहिंतो
उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो पुच्छा' क्या नैरयिकों में से आकर
के जन्म लेते हैं ? या तिर्यग्योनिकों में से आकर के जन्म लेते हैं ? या
मनुष्यों में से आकर के जन्म लेते हैं ? या देवों में से आकर के जन्म
लेते हैं ? उत्तरमें प्रभुश्री कहते हैं—'गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति'
क्षुद्र कृतयुग्मराशि प्रमाण नैरयिक नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न
नहीं होते हैं 'एवं नेरइयाणं उववाओ जहा वक्कंतीए तहा भाणिय-
व्वो' इस प्रकार से नैरयिकों के उत्पाद जैसा प्रज्ञापना के छठे पद रूप
व्युत्क्रान्ति पदमें कहा गया है वैसा ही यहां पर कहना चाहिये—तथाच-
नारक न नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं, न देवों में से

'खुड्डागकडजुम्मनेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' हे भदन्त ! क्षुद्रकृत
युग्मराशिवाणा नैरयिको कयांथी ओट्ठे डे कया स्थान विशेषथी आवीने
उत्पन्न थाय छे ? 'किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणि पुच्छा' शु'
नैरयिकोमांथी आवीने जन्म ले छे ? अथवा तिर्य'ग्य योनिकोमांथी आवीने
जन्म ले छे ? अथवा मनुष्योमांथी आवीने जन्म ले छे ? अथवा देवोमांथी
आवीने जन्म ले छे ? आ प्रश्नना उत्तरमां प्रभुश्री फेडे छे डे—'गोयमा ! नो
नेरइएहिंतो ! उववज्जंति' क्षुद्रकृतयुग्मराशी प्रमाण नैरयिको, नैरयिकोमांथी
आवीने उत्पन्न थता नथी 'एवं नेरइयाणं उववाओ जहा वक्कंतीए तहा भाणि-
यव्वो' आ प्रमाणे नैरयिकोना उत्पाद जे प्रमाणे प्रज्ञापना सूत्रना छठ्ठां
व्युत्क्रान्तिपदमां छेडेअ छे, ओअ प्रमाणे अडियां छेडेवे। ओअ अर्थात् नारक
नैरयिकोमांथी आवीने उत्पन्न थता नथी, तथा देवोमांथी आवीने पणु

તિર્યગ્યોનિકેભ્ય આગત્યોત્પચન્તે નારકાઃ, તથા ગર્ભજમનુષ્યેભ્ય આગત્યોત્પચન્તે નારકા इति । ‘તેણં મંતે ! જીવા એગસમણ કેવહયા ઉવવજ્જંતિ’ તે સ્વલુ મદન્ત ! ક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મનારક જીવા એકસમયેન-એકસ્મિન્ સમયે इत्यर्थः કિયન્તઃ-કિયત્સંખ્યકા ઉત્પચન્તે ? इति પ્રશ્નઃ પરિમાણવિષયકઃ, મગવાનાહ-‘ગોયમા’ इत्यादि, ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘ચત્તારિ વા, અદ્દ વા, વારસ વા, સંખેજ્જા વા, અસંખેજ્જા વા ઉવવજ્જંતિ’ ચત્તાર સ્તાદશા નારકા એકસમયેન ઉત્પચન્તે, અષ્ઠી વા, દ્વાદશ વા, પોડશ વા, સંખ્યાતા વા, અસંખ્યાતા વા તાદશા નારકાઃ એકસમયેન સમુત્પચન્તે इति । ‘તેણં મંતે ! જીવા કહં ઉવવજ્જંતિ’ તે સ્વલુ ક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મનારકજીવા નારકાવાસે કથં કેન પ્રકારેણ ઉત્પચન્તે ? इति પ્રશ્નઃ, મગવાનાહ-‘ગોયમા’ इत्यादि, ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘સે જહા નામણ પવણ પવમાણે’ સ યથા નામકઃ પ્લવકઃ-કૂર્દકઃ ઉચ્છલ્લનશીલઃ કોડપિ

આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં, કિન્તુ પચ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિકોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં તથા-ગર્ભજ મનુષ્યોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ‘તે ણં મંતે ! જીવા એગ સમણં કેવહયા ઉવવજ્જંતિ’ હે મદન્ત ! ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ પ્રમાણ નારક એક સમય મેં કિતને ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રશ્નશ્રી કહતે હૈં-‘ગોયમા ! ચત્તારિ વા, અદ્દ વા, વારસ વા સોલસ વા, સંખેજ્જા વા, અસંખેજ્જા વા ઉવવજ્જંતિ’ હે ગૌતમ ! ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ પ્રમાણ નારક એક સમય મેં ચાર યા આઠ યા વારહ યા સોલહ યા સંખ્યાત યા અસંખ્યાત ઉત્પન્ન હોતે હૈં । ‘તેણં મંતે ! જીવા કહં ઉવવજ્જંતિ’ હે મદન્ત ! વે ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ પ્રમાણ નૈરયિક જીવ નારકાવાસ મેં કિસ પ્રકાર સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રશ્નશ્રી કહતે હૈં-‘ગોયમા ! સે જહા નામણ પવણ પવમાણે’ જૈસે કોઈ કૂદનેવાલા વ્યક્તિ કૂદતા

ઉત્પન્ન થતા નથી. પરંતુ પચ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્ય યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે. તથા ગર્ભજ મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે. ‘તે ણં મંતે ! જીવા એગસમણં કેવહયા ઉવવજ્જંતિ’ હે ભગવન્ ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ પ્રમાણવાળા નારક એક સમયમાં કેટલા ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રશ્નશ્રી કહે છે કે-‘ચત્તારિ વા અદ્દ વા વારસ વા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા ઉવવજ્જંતિ’ હે ગૌતમ ! ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ પ્રમાણ નારક એક સમયમાં ચાર અથવા આઠ અથવા બાર અથવા સોળ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત ઉત્પન્ન થાય છે. ‘તે ણં મંતે જીવા કહં ઉવવજ્જંતિ’ હે ભગવન્ તે ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ પ્રમાણ નૈરયિક ૭ । નારકાવાસમાં કઈ રીતે ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રશ્નશ્રી કહે છે કે-‘ગોયમા ! સે જહા નામણ પવણ પવમાણે’ જેમ કેઈ કૂદવાવાળો પુરૂષ કૂદતો

તે સ્વલુ મદન્ત ! નારકા જીવાઃ કથં પરમવાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ ? ગૌતમ ! અધ્યવસા યયોગનિર્વર્તિતેન કરણોપાયેન, એવં સ્વલુ તે નારકાઃ પરમવાયુષ્કં પ્રકુર્વન્તિ । તેષાં નારકાણાં સ્વલુ મદન્ત ! કથં ગતિઃ પ્રવર્ત્તે ? ગૌતમ ! આયુઃક્ષયેણ ભવ-ક્ષયેણ સ્થિતિક્ષયેણ એવં સ્વલુ તેષાં નારકાણાં ગતિઃ પ્રવર્ત્તે । તે સ્વલુ નારકજીવાઃ કિમાત્મદ્વર્ચા સમુત્પદ્યન્તે પરદ્વર્ચા વા સમુત્પદ્યન્તે ? ગૌતમ ! આત્મદ્વર્ચા સમુત્પદ્યન્તે નો પરદ્વર્ચા સમુત્પદ્યન્તે । તે સ્વલુ મદન્ત ! નારકાઃ કિમાત્મકર્મણા સમુત્પદ્યન્તે પરકર્મણા વા સમુત્પદ્યન્તે ? ગૌતમ ! આત્મકર્મણા સમુત્પદ્યન્તે નો પરકર્મણા સમુત્પદ્યન્તે । તે સ્વલુ મદન્ત ! નારકાઃ કિમાત્મપ્રયોગેન ઉત્પદ્યન્તે ? પરપ્રયોગેન ઉત્પ-

શીઘ્ર ગતિકા વિષય હોતા હૈ । હે મદન્ત ! નારક જીવ પરમવીય આયુ-ષ્કં કા વન્ધ કૈસે કરતે હૈ ? ગૌતમ ! અધ્યવસાય યોગ સે નિવર્તિત કરણોપાય સે વે નારક પરમવ કી આયુષ્ય કા વન્ધ કાતે હૈ । અર્થાત્ હિંસાદિ અશુભ પરિણામ સે નારક આયુષ્ય કા વન્ધ કરતે હૈ । હે મદન્ત ! ઉન નારકોં કી ગતિ કિસ કારણ સે હોતી હૈ ? હે ગૌતમ ! ઉન નારક જીવોં કી ગતિ આયુ કે ક્ષયસે, ભવ કે ક્ષય સે ઓર સ્થિતિ કે ક્ષય સે હોતી હૈ । વે નારક જીવ કયા આત્મદ્વિ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈ ? યા પરદ્વિ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈ । હે ગૌતમ ! વે નારક જીવ આત્મદ્વિ (આત્મ શક્તિ) સે ઉત્પન્ન હોતે હૈ પરદ્વિ સે ઉત્પન્ન નહીં હોતે હૈ । હે મદન્ત ! વે નારક કયા આત્મકર્મ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈ ? યા પરકર્મ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈ ? ગૌતમ વે નારક આત્મકર્મ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈ, પરકર્મ સે ઉત્પન્ન નહીં હોતે હૈ । હે મદન્ત ! વે નારક કયા આત્મપ્રયોગ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈ ? યા પરપ્રયોગ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈ ? હે

તેઓની શીઘ્રગતિનો વિષય એવો જ હોય છે હે ભગવન્ નારક જીવ પરમવના આયુષ્યનો બંધ કેવી રીતે કરે છે ? હે ગૌતમ ! અધ્યવસાય યોગથી નિવર્તિત કરવાના ઉપાયથી તે નારકો પરમવ આયુષ્યનો બંધ કરે છે. અર્થાત્ હિંસા વિગેરે અર્થાત્ પ્રાણાતિપાત વિગેરે અશુભ પરિણામથી નારક આયુનો બંધ કરે છે. હે ભગવન્ તે નારકોની ગતિ કયા કારણથી થાય છે ? હે ગૌતમ ! તે નારક જીવોની ગતિ આયુનો ક્ષયથવાથી લવનો ક્ષય થવાથી અને સ્થિતિનો ક્ષય થવાથી થાય છે. તે નારક જીવો આત્મકદ્વિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા અન્યની કદ્વિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ ! તે નારક જીવો આત્મકદ્વિ (આત્મ શક્તિ)થી ઉત્પન્ન થાય છે. અન્યની શક્તિથી ઉત્પન્ન થતા નથી હે ભગવન્ તે નારકો શું આત્મકર્મથી ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા પરકર્મથી ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ ! તે નારકો આત્મકર્મથી ઉત્પન્ન થાય છે, પર કર્મથી ઉત્પન્ન થતા નથી. હે ભગવન્ તે નારકો શું આત્મપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે ?

ઘન્ટે ? ગૌતમ ! આત્મપ્રયોગેણોત્પચન્તે નો પરપ્રયોગેણ ઉત્પચન્તે । इत्यादिकं सर्वं पञ्चविंशति शतकीयाष्टमोद्देशके नैरयिकाणां यथा वक्तव्यता तथैव इहऽपि नारकाणां वक्तव्यता ज्ञातव्या एतदाशयेनाह—‘एवं जहा’ इत्यादि, ‘एवं जहा पंचवीसहस्रे स ए नेरइयाणं वक्तव्यता तथैव इह वि भाणियन्वा जाव आयप्पओगेण उववज्जंति णो परप्पओगेण उववज्जंति’ एवं यथा पञ्चविंशतितमे शते अष्टमोद्देशके नैरयिकाणां वक्तव्यता तथैवेहापि भणितव्या क्रियत्पर्यन्तं पञ्चविंशतिशतकीयाष्टमोद्देशकस्य नारकवक्तव्यता इहाभ्येतव्या तत्राह—‘जाव’ इत्यादि । यावदात्मप्रयोगेणोत्पचन्तે નો પરપ્રયોગેણોત્પચન્તે, एतत्पर्यन्तं पूर्वं वक्तव्यता वक्तव्येति । सामान्यतः क्षुल्लक-कृतयुग्मप्रमाणकनारकाणामुत्पातादिकं प्रदर्श्य विशेषतः भुद्रकृतयुग्मादि नार-काणां वक्तव्यतां दर्शयन् प्राह—‘रयणप्पभा’ इत्यादि, ‘रयणप्पभा पुढवी खुड्ढाग कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति’ रत्नप्रभापृथिवी क्षुल्लककृतयुग्म-

ગૌતમ ! वे नारक आत्मप्रयोग से उत्पन्न होते हैं परप्रयोग से उत्पन्न नहीं होते हैं । इत्यादि सर्व कथन २५ वें शतक के आठवें उद्देशक में नैरयिकों के सम्बन्ध में जिस प्रकार कहा गया है सो वही मंत्र यहां पर भी कहना चाहिये । इसीलिये सूत्रकार ने ‘एवं जहा पंचवीसहस्रे स ए नेरइ-याणं वक्तव्यता तथैव इह वि भाणियन्वा जाव आयप्पओगेण उववज्जंति णो परप्पओगेण उववज्जंति’ ऐसा सूत्रपाठ कहा है । इस प्रकार सामा-न्यतः क्षुल्लक कृतयुग्म प्रमाणवाले नारकों का उत्पाद आदि प्रकार कह कर अब विशेषतः भुद्र कृतयुग्मादि प्रमाणवाले नारकों की वक्तव्यता को दिखाने के निमित्त सूत्रकार कहते हैं—इसमें गौतम ने प्रभुश्री से ऐसा पूछा है—‘रयणप्पभा पुढवी खुड्ढाग कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति’ हे अदन्त ! भुद्र कृतयुग्मराशि प्रमाणवाले रत्नप्रभा

કે પર પ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ ! તે નારકો આત્મ પ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે, પરપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થતા નથી વિગેરે તમામ કથન પચ્ચીસમા શતકના આઠમા ઉદ્દેશમાં નૈરયિકોના સળધમાં કહેવામાં આવેલ છે તો તે સળ્ળ કથન અહિયાં પણ સમજી લેવું. તેથી સૂત્રકારે ‘एवं जहा पंचवीसहस्रे स ए नेरइयाणं वक्तव्यता तथैव इह वि भाणियन्वा जाव आयप्प-ओगेण उववज्जंति णो परप्पओगेण उववज्जंति’ એ પ્રમાણે સૂત્રપાઠ કહેલ છે. આ રીતે સામાન્યતઃ ક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મ પ્રમાણવાળા નારકોના ઉત્પાદ વિગેરે પ્રગટ કરીને હવે વિશેષરૂપે ભુદ્રયુગ્મ વિગેરે પ્રમાણવાળા નારકોનું કથન કરવા માટે સૂત્રકાર કહે છે.—આમાં ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને એવું પૂછ્યું છે કે—‘रयणप्पभा पुढवी खुड्ढागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति’

નારકાઃ સ્વલ્પ ભદન્ત ! કુતઃ-કસ્માત્સ્થાનવિશેષાદાગત્ય રત્નપ્રભાપૃથિવ્યાં સમુ-
ત્પન્નન્તે ? इति प्रश्नः, મગવાનાહ-‘एवं जहा’ इत्यादि, ‘एवं जहा ओहिय नेर-
इयाणं वत्तव्वया सच्चेव रयणप्पभाए वि भाणियव्वा’ एवं यथा ઔઘિકનારકાણાં
વક્તવ્યતા કથિતા સૈવ સર્વાપિ વક્તવ્યતા इहापि रत्नप्रभा पृथिवीनारकाणामपि
મણિતવ્યા, કિયત્પર્યન્તમૌઘિકનારકીયા વક્તવ્યતા મણિતવ્યા તત્રાહ-‘जाव’
इत्यादि, ‘जाव नो परप्पओगेण उववज्जंति’ यावत् नो परप्रयोगेणोत्पद्यन्ते एत-
त्पर्यन्तम् तथाहि-रत्नप्रभा क्षुल्लक कृतयुग्मनारकाः स्वल्प भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते

પૃથિવી કે નૈરયિક કહાં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈ ? અર્થાત્ રત્નપ્રભા
પૃથિવી મેં કિસ સ્થાન સે આકરકે જીવ નારકની પર્યાપ સે ઉત્પન્ન
હોતા હૈ ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈ-‘एवं जहा ओहिय नेरइयाणं
वत्तव्वया सच्चेव रयणप्पभाए पुढवीए वि भाणियव्वा’ હે ગૌતમ !
જૈસી સામાન્ય નૈરયિકોં કે સમ્બન્ધ મેં વક્તવ્યતા કહી ગઈ હૈ વહી
વક્તવ્યતા રત્નપ્રભા પૃથિવી કે નૈરયિકોં કે સમ્બન્ધ મેં બી કહની
ચાહિયે । ઓર યહી વક્તવ્યતા ‘जाव नो परप्पओगेण उववज्जंति’
યાવત્ વે પરપ્રયોગ સે ઉત્પન્ન નહીં હોતે હૈ ‘यहां तक के प्रकरण तक
कहनी चाहिये । અર્થાત્-‘रत्नप्रभा पृथिवी के क्षुल्लक कृतयुग्मराशि
प्रमाण नारक हे भदन्त । किस स्थान से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या
नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? या तिर्यग्योनिकों में से
आकर के उत्पन्न होते हैं ? या मनुष्यों में से या देवों में से आकर उत्पन्न

હે ભગવન્ ક્ષુદ્ર કૃતયુગ્મ રાશી પ્રમાણવાળી આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના નારકો
ક્યાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અર્થાત્ રત્નપ્રભા પૃથ્વીમાં જ્યાં કયા સ્થાનથી
આવીને નારકની પર્યાયથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી
કહે છે કે-‘एवं जहा ओहिय नेरइयाणं वत्तव्वया सच्चेव रयणप्पभाए पुढवीए
वि भाणियव्वा’ હે ગૌતમ ! સામાન્ય નૈરયિકોના સંબંધમાં જે પ્રમાણે કથન કર-
વામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણેનું કથન રત્નપ્રભા પૃથ્વીના નારકોના સંબંધમાં
પણ કહેવું જોઈએ અને એજ કથન ‘जाव नो परप्पओगेण उववज्जंति’ યાવત્
તેઓ પરપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થતા નથી. આ કથન સુધીનું તે પ્રકરણ કહેવું
જોઈએ. અર્થાત્ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મરાશિ પ્રમાણ નારક હે
ભગવન્ કયા સ્થાનથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી
આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યગ્ય યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન
થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી

કિં નૈરયિકેભ્યં ઇત્યાદિ પ્રશ્નઃ, ગૌતમ ! નો નૈરયિકેભ્યં ઉત્પદ્યન્તે કિન્તુ પચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકેભ્યં આગત્ય સમુત્પદ્યન્તે તથા ગર્ભજ મનુષ્યેભ્યં આગત્યોત્પદ્યન્તે । તે સ્વલુ રત્નપ્રમાનારકાઃ કથમુત્પદ્યન્તે, ગૌતમ ! સ યથાનામકઃ કશ્ચિત્પુરુષઃ પ્લવકઃ પ્લવમાનઃ અધ્યવસાયયોગનિર્વર્તિતેન કરણોપાયેન પૂર્વભવં પરિત્યજ્ય અગ્નિમયે ઉત્પદ્યન્તે । તેષાં નારકાણાં કથં શીઘ્રા ગતિઃ કથં શીઘ્રો ગતિવિષયઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ? ગૌતમ ! સ યથાનામકઃ કશ્ચિત્પુરુષઃ તરુણો બલવાન્ યાવત્ ત્રિમયેન વા વિગ્રહેણોત્પદ્યન્તે તેષાં સ્વલુ જીવાનાં તથા શીઘ્રા ગતિર્ભવતિ તથા શીઘ્રોગતિ

હોતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં—હે ગૌતમ ! વે ન નૈરયિકોં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ઓર ન દેવોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં. કિન્તુ પચ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિકોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ઓર ગર્ભજ મનુષ્યોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં । હે અદન્ત ! વે રત્નપ્રમા નારક કિસ પ્રકાર સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? હે ગૌતમ ! જિસ પ્રકાર કોઈ પ્લવક પુરુષ કૂદતા—૨ અપને પૂર્વ કે સ્થાન કો છોડકર આગે કે સ્થાન પર પહૂંચ જાતા હૈ, હસી પ્રકાર સે નારક બી અપને પૂર્વ ભવકો છોડકર અપને અધ્યવસાય રૂપ કારણ કે વશ સે આગામી નારક ભવકો પ્રાપ્ત કરતે હૈં । હે અદન્ત ! ઉન નારક જીવોંકી શીઘ્ર ગતિ કેવી હોતી હૈ ? ઓર કેસા ઉસ શીઘ્રગતિ કા વિષય—હોતા હૈ ? હે ગૌતમ ! જૈસે કોઈ તરુણ બલવાન પુરુષ જૈસે કિં ચૌદહવેં શતક કે પ્રથમ ઉદ્દેશક મેં

આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુશ્રી કહે છે કે—હે ગૌતમ ! તે નારકો નૈરયિકોંમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થતા નથી. કિંતુ દેવોંમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે. અને પચ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિકોંમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે તથા ગર્ભજ મનુષ્યોંમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે. હે ભગવન્ તે રત્નપ્રમા પૃથ્વીના નારકો કઈ રીતે ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ ! જે પ્રમાણે કોઈ કૂદનારો પુરુષ કૂદતો કૂદતો પોતાના પહેલાના સ્થાનને છોડીને આગળના સ્થાન પર પહોંચી જાય છે. એજ પ્રમાણે નારકો પણ પોતાના પૂર્વ ભવને છોડીને પોતાના અધ્યવસાય રૂપ કારણ વશત્ આગામી નારક ભવને પ્રાપ્ત કરે છે. હે ભગવન્ તે નારક જીવોંની શીઘ્રગતિ કેવી હોય છે ? અને તે શીઘ્ર ગતિનો વિષય—સમય હોય છે ? હે ગૌતમ ! જેમ કોઈ તરુણ બલવાન પુરુષ જેમ કે ચૌદમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશમાં કહેવામાં આવેલ છે, તે પ્રમાણે એ નારક ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી આં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. આ રીતની તેઓની શીઘ્રગતિ હોય છે. અને તે

વિષયશ્ચ કથિતઃ । તે खलु भदन्त ! नारकाः कथं परमत्रायुष्कं कुर्वन्ति ? गौतम !
 अध्यवसाययोगनिर्वर्तितेन करणोपायेन एवं खलु रत्नप्रभापृथिवी नारकाः
 परमत्रायुष्कं कुर्वन्ति । तेषां क्षुल्लककृतयुग्मरत्नप्रभानारकजीवानां कथं गतिः
 प्रवर्त्तते ? गौतम ! आयुक्षयेण भवक्षयेण स्थितिक्षयेण एवं खलु तेषां गतिः
 प्रवर्त्तते । ते रत्नप्रभानारकाः आत्मद्वर्चा उत्पद्यन्ते परद्वर्चा वोत्पद्यन्ते ?
 गौतम ! आत्मद्वर्चा उत्पद्यन्ते नो परद्वर्चा समुत्पद्यन्ते । ते खलु रत्नप्रभा
 नारकाः किमात्मकर्मणा समुत्पद्यन्ते परकर्मणा वा समुत्पद्यन्ते ? गौतम ! आत्म
 कर्मणैव समुत्पद्यन्ते नो परकर्मणा । ते खलु भदन्त ! रत्नप्रभानारकाः किमा

કહા મગા હૈ ઉસકે અનુમાર વે નારક તીન સમયકાલી ત્રિપ્રહ ગતિ સે
 વહાં ઉત્પન્ન હો જાતે હૈં । હસ પ્રકાર કી ડનકી શીઘ્રગતિ હોતી હૈ ઓર
 ઉસ શીઘ્રગતિ કા એસા વિષય હોતા હૈ । હે ભદન્ત ! વે નારક પરમત્ર
 આયુકા વન્ધ કૈસે કરતે હૈ ? હે ગૌતમ ! અધ્યવસાય યોગ સે નિર્વર્તિત
 કરણોપાય સે પરમત્ર કી આયુ કા વન્ધ કરતે હૈં અર્થાત્ પ્રાણાતિપાત
 રૂપ અશુભ કર્મ સે નારક આયુકા વન્ધ કરતે હૈં । હે ભદન્ત ! ક્ષુલ્લક
 કૃતયુગ્મરાશિ પ્રમાણરૂપ રત્નપ્રભા નારક જીવોં કી ગતિ કિસ કારણ
 સે હોતી હૈ ? ગૌતમ ! આયુ કે ક્ષય સે ભવ કે ક્ષય સે ઓર સ્થિતિ કે
 ક્ષય સે ડનકી ગતિ હોતી હૈ, હે ભદન્ત ! વે રત્નપ્રભા કે નૈરયિક આત્મદ્વિ
 સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? યા પરદ્વિ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? હે ગૌતમ ! વે
 આત્મદ્વિ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં, પરદ્વિ સે નહીં । હે ભદન્ત ! વે રત્નપ્રભા
 કે નૈરયિક કર્મ આત્મકર્મ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં યા પરકર્મ સે ઉત્પન્ન હોતે
 હૈં ? હે ગૌતમ ! વે રત્નપ્રભા કે નૈરયિક આત્મકર્મ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં,

શીઘ્રગતિનો એવો વિષય હોય છે. હે ભગવન્ તે નારકો પરભવના આયુષ્યનો
 બંધ કેવી રીતે કરે છે ? હે ગૌતમ ! અધ્યવસાયયોગથી નિવર્તિત કારણના ઉપાયથી
 પરભવના આયુષ્યનો બંધ કરે છે. અર્થાત્ પ્રાણાતિપાત વિગેરે અશુભ
 કર્મથી નારક આયુનો બંધ કરે છે. હે ભગવન્ ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મરાશી પ્રમાણ
 રૂપ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના નારક જીવોની ગતિ કયા કારણથી થાય છે ? હે ગૌતમ !
 આયુના ક્ષયથી ભવના ક્ષયથી અને સ્થિતિના ક્ષયથી તેઓની ગતિ થાય છે.
 હે ભગવન્ તે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિકો આત્મકદ્વિથી ઉત્પન્ન થાય છે ?
 અથવા પરનીકદ્વિથી ઉત્પન્ન થાય છે, હે ગૌતમ ! તેઓ આત્મકદ્વિથી ઉત્પન્ન
 થાય છે પરકદ્વિથી ઉત્પન્ન થાતા નથી. હે ભગવન્ તે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના
 નૈરયિકો શું આત્મ કર્મથી ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા પરના કર્મથી ઉત્પન્ન
 થાય છે ? હે ગૌતમ ! તેઓ આત્મકર્મથી ઉત્પન્ન થાય છે, પરકર્મથી નહીં.

ત્તમપ્રયોગેણ ઉત્પદ્યન્તે પરપ્રયોગેણ વા સમુત્પદ્યન્તે ? ગૌતમ ! આત્મપ્રયોગેણૈવોત્પ-
દ્યન્તે, એતત્પર્યન્તમૌધિકનારકપ્રકરણં રત્નપ્રમા પૃથિવીનારકપ્રકરણે મણિતવ્ય
મિતિ । ‘એવં સકરપ્પમાણ વિ જાવ અહે સત્તમાણ’ એવં રત્નપ્રમાવદેવ શર્કરાપ્રમા-
યામપિ યાવત્ અધઃસપ્તમ્યાં નારકપૃથિવ્યામ્ ‘એવં ઉવવામ્મો જહા વવકંતીણ’
એવ મુપપાતો વર્ણનીયો યથા વ્યુત્ક્રાન્તૌ પ્રજ્ઞાપનાયાઃ પઠ્ઠપદે ઉપપાતો નારકાણા
મુપપાદિત ઇતિ । ‘અસન્ની સ્વલ્લ પદમં દોચ્ચં વ સરીસવા તદ્વ્ય પક્ખી ગાહાણ
ઉવવાણ્યવા’ અસંજી સ્વલ્લ પ્રથમાં દ્વિતીયાં ચ સરીસવાઃ તૃતીયાં પક્ષિણઃ (યાન્તિ)
ઇત્યાદિ ગાથાભ્યામ્ ઉપપાતયિતવ્યાઃ અસંજિનાં પ્રથમનરકે ઉપપાતો ભવતિ
પર કમે સે નહીં । હૈ ગૌતમ ! વે રત્નપ્રમા કે નૈરધિક કયા આત્મ-
પ્રયોગ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? યા પર પ્રયોગ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? હૈ ગૌતમ !
વે રત્નપ્રમા કે નૈરધિક આત્મપ્રયોગ સે હી ઉત્પન્ન હોતે હૈં પરપ્રયોગ સે
નહીં । ‘યહાં તક કા યહ સ્વ પ્રકરણ જો કિ ઔધિક નારક કે પ્રકરણ
મેં કહા ગયા હૈ યહાં રત્નપ્રમા પૃથિવી કે નારક કે પ્રકરણ મેં કહના
ચાહીયે । ‘એવં સકરપ્પમાણ વિ જાવ અહે સત્તમાણ’ હસી પ્રકાર કી
વક્તવ્યતા દ્વિતીય શર્કરા પૃથિવી સે લેકર અધઃસપ્તમી પૃથિવી કે નારકો
કે ઉત્પાદ કે સમ્બન્ધ મેં ભી કહની ચાહીયે, અર્થાત્ પ્રજ્ઞાપના કે વ્યુ-
ત્ક્રાન્તિ નામક છટે પદ મેં જૈસા નારકોં કે ઉત્પાદ કા વર્ણન કિયા ગયા
હૈ વૈસા હી વર્ણન યહાં પર ભી કરના ચાહીયે, ‘અસન્ની સ્વલ્લ પદમં દોચ્ચં
વ સરીસવા તદ્વ્ય પક્ખી’ ગાહાણ ઉવવાણ્યવા’ ઇત્યાદિ ગાથા દ્વારા યહ
વહાં પર પ્રકટ કિયા હૈ કિ અસંજી જીવોં કા પ્રથમ નરક તક ઉપપાત

હે ભગવન તે રત્નપ્રમાપૃથ્વી ના નારકો શું આત્મ પ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય
છે ? કે પરપ્રયોગથી જ ઉત્પન્ન થાય છે ? હૈ ગૌતમ ! રત્નપ્રમા પૃથ્વીના
નારકો આત્મપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે. પરપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થતા નથી.
આટલા સુધીનું આ તમામ પ્રકરણ કે જે ઔધિક નારકના પ્રકરણમાં
કહેવામાં આવેલ છે, તે આ રત્નપ્રમા પૃથ્વીના નારકના પ્રકરણમાં કહેલું
જોઈએ. ‘એવં સકરપ્પમાણ વિ જાવ અહે સત્તમાણ’ આજ પ્રમાણેનું કથન
બીજી શર્કરા પૃથ્વીથી લઈને અધઃસપ્તમી પૃથ્વીના નારકના ઉત્પાદના સંબંધમાં
પણ કહેલું જોઈએ. અર્થાત્ પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના વ્યુત્ક્રાન્તિ પદમાં એટલે કે છઠ્ઠા
પદમાં નારકના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું વર્ણન કરવામાં આવેલ છે, એજ
પ્રમાણેનું વર્ણન અહિયાં પણ કરવું જોઈએ ‘અસન્ની સ્વલ્લ પદમં દોચ્ચં
સરીસવા તદ્વ્ય-પક્ખીગાહાણ ઉવવાણ્યવા’ વિગેરે ગાથાદ્વારા ત્યાં આ કથન
પ્રગટ કરવામાં આવેલ છે. —કે—અસંજી જીવોના પહેલાં નરકમાં ઉત્પાત હોય

સર્પાદીના મુપપાતો દ્વિતીયનરકે ભવતિ પક્ષિણામુપપાત ત્વૃતીય નરકે ભવતીત્યાદિ
ગાથાદ્યવર્ણિત ક્રમેણ સસમનારકપર્યન્તં તત્તજ્જીવાનામુપપાતો દર્શનીયઃ તથાદિ-

‘અસંજી સ્વલુ પદમં દોઢ્વં વ સરીસવા તદય પક્ષી,

સીંહા જંતિ ચતુર્થિ, ઉરગા પુન પંચમિ પુઢવિ ॥૧॥

છટ્ઠિ ચ હૃથિયાઓ, મચ્છા મણુયા ય સત્તમિ પુઢવિ ।

एसो परमोवाओ, वोद्धव्वो नरग पुढवीणं ॥२॥ इति

છાયા—અસંજી સ્વલુ પ્રથમાં, દ્વિતીયાં ચ સરીસૃપા તૃતીયાં પક્ષિણઃ ।

सिंहा यान्ति चतुर्थी, उरगाः पुनः पञ्चमी पृथिवीम् ॥१॥

पठ्ठी च स्त्रियः, मत्स्या मनुजाश्च सप्तमी पृथिवीम् ।

एष परमोपपातो वोद्धव्वो नरकपृथिवीनाम् ॥२॥ इति ।

‘સેસં તં ચેવ’ શેષમ્-ઉપપાતાદિ વ્યતિરિક્તં સર્વં તદેવ ઔધિકનારકમકરણે

હોતા હૈ । સરીસૃપોં કા અર્થાત્ ભુજપરિસર્પોંકા ઉપપાત દ્વિતીય નરક તક
હોતા હૈ ઓર પક્ષિયોં કા ઉપપાત તૃતીય નરક તક હોના હૈ, સો યહી
ઉત્પાદ કા વર્ણન સસમ નરક પર્યન્ત કે જીવોં કા યહાં પર મી દિઠ્ઠાના
ચાહિયે, જૈસે-અસંજી જીવ પ્રથમ પૃથિવી તક હી જાતે હૈં સરીસૃપ
અર્થાત્ ભુજપરિસર્પ દૂસરી પૃથિવી તક જાતે હૈં, પક્ષી તીસરી પૃથિવી
તક જાતે હૈં, સિંહ ચોથી તક જાતે હૈં ઉરગ-સર્પ પાંચમી પૃથિવી તક
જાતે હૈ, સ્ત્રિયાં છઠી પૃથિવી તક જાતી હૈ, ઓર મત્સ્ય તથા મનુષ્ય
સાતમી તક જાતે હૈ યહ ઉત્કૃષ્ટ ઉપપાત કહા ગયા હૈ જઘન્યસે
તો અપની મર્યાદિત પૃથિવી સે નીચે કી પૃથિવીમેં મી જા સકતે હૈં ॥૨॥
યહ પ્રજ્ઞાપના કે વ્યુત્ક્રાન્તિ પદ કી દો ગાથાઓં કા ભાવ હૈ । ‘સેસં

છે. સર્પ વિગેરેનો ઉત્પાત ખીલુ નરકમાં થાય છે. અને પક્ષિઓનો ઉત્પાત
ત્રીજા નરકમાં થાય છે. તે આ પ્રમાણેના ઉત્પાતનું વર્ણન સાતમાનારક સુધીના
ભવોના સંબંધમાં કહેવામાં આવેલ છે, તે અહિયાં પણ સમજી લેવું.
જેમકે-અસંજી ભવ પહેલી પૃથ્વી પર્યન્ત જ જાય છે. સરિસૃપ અર્થાત્
ભુજપરિસર્પ ખીલુ પૃથ્વી પર્યન્ત જાય છે. પક્ષિયો ત્રીજી પૃથ્વી પર્યન્ત
જાય છે. સિંહ ચોથી પૃથ્વી સુધી જાય છે. ઉરગ-સર્પ પાંચમી પૃથ્વી
પર્યન્ત જાય છે, સ્ત્રિયો છઠ્ઠી પૃથ્વી પર્યન્ત જાય છે અને માછલા અને
મનુષ્યો સાતમી પૃથ્વી સુધી જાય છે. આ ઉત્કૃષ્ટ ઉપપાત કહેલ છે. જઘ
ન્યથી તે પોતાની મર્યાદિત પૃથ્વીથી નીચેની પૃથ્વીમાં પણ જઈ શકે છે.
આ પ્રજ્ઞાપનાની બે ગાથાનો અર્થ છે ‘સેસં તદેવ’ આ ઉપપાત વિગેરે વર્ણન

યત્ કથિતં તદેવ સર્વં શર્કરાપ્રભાત આરભ્ય સપ્તમી પૃથિવી નારકેષુ વક્તવ્યમિતિ રત્નપ્રભાદિગત ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મનારકાણામુત્પાદાદિકં દર્શયન્ માહ—‘સુહૃદાગ તેઓગ નેરહ્યા’ इत्यादि ।

‘સુહૃદાગ તેઓગ નેરહ્યાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ ક્ષુલ્લક ંયોજ નૈર-યિકાઃ સ્વલ્પ ભદન્ત ! કુતઃ—કસ્માન્સ્થાનવિશેષાદાગત્ય નરકાવાસે સમુત્પદ્યન્તે इति પ્રશ્નઃ, મગવાનાહ—‘ઉવવાઓ’ इत्यादि, ‘ઉવવાઓ જહા વક્કંતીણ’ ઉપપાતો યથા વ્યુત્ક્રાન્તૌ પ્રજ્ઞાપનાયાઃ ષષ્ઠે પદે યથા નારકાણામુપપાતઃ કથિત સ્તેનૈવ રૂપેણાત્રાપિ ઉપપાતો ન નૈરયિકાદિભ્ય ઉત્પદ્યન્તે કિન્તુ પશ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકે-ભ્યો ગર્ભજમનુષ્યેભ્યશ્વાગત્ય સમુત્પદ્યન્તે એવં વર્ણનીયઃ । ‘તે ણં મંતે ! જીવા એગસમણં કેવહ્યા ઉવવજ્જંતિ’ તે સ્વલ્પ ભદન્ત ! ક્ષુલ્લકંયોજ નારકજીવા એકસમયેન એકસ્મિન્ સવયે કિયત્સંલ્લયાઃ સમુત્પદ્યન્તે ? इति પ્રશ્નઃ, મગવાનાહ તદેવ’ इस उपपातादि वर्णन के अतिरिक्त और सब वर्णन औघिक नारक प्रकरण में जैसा कहा गया है वही सब वर्णन शर्कराप्रभा से लेकर सप्तमी पृथिवी के नारकों तक में कहना चाहिये ।

‘સુહૃદાગ તેઓગ નેરહ્યાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ હે ભદન્ત ! ક્ષુલ્લક ંયોજરાશિ પ્રમાણ નૈરયિક નરકાવાસમેં કહાં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈ ? હસકે ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈ—‘ઉવવાઓ જહા વક્કંતીણ’ હે ગૌતમ ! પ્રજ્ઞાપના કે છઠ્ઠે વ્યુત્ક્રાંતિ પદ મેં જૈસા નારકોં કા ઉપપાત કહા ગયા હૈ વૈસા હી વહ યહાં પર ભી કહના ચાહિયે, અર્થાત્ વે નૈર-યિક આદિકોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન નહીં હોતે હૈ પશ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકોં મેં સે ઓર ગર્ભજ મનુષ્યોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈ એસા વર્ણન યહાં પર કરના ચાહિયે । ‘તે ણં મંતે ! જીવા એગસમણં કેવહ્યા ઉવવ-

शिवायतुं भीषु सधणु वल्लुन औघिक नारकना प्रकरणमां ने प्रमाणे कहेवामां आवेल छे. ते तमाम वल्लुन शर्कराप्रभा पृथ्वीयी लधने सातमी तमतमा पृथ्वीना नारकोना सषधमां कहेपुं जेधं ओ.

સુહૃદાગતેયોગ નેરહ્યાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ હે ભગવન્ ક્ષુલ્લક ંયોજ રાશિપ્રમાણવાળા નૈરયિકો નરકાવાસમાં કયાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘ઉવવાઓ જહા વક્કંતીણ’ હે ગૌતમ ! પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમાં છઠ્ઠા વ્યુત્ક્રાંતિ પદમાં નારકોના ઉત્પાદ જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ કહેવો જોઈ એ. અર્થાત્ તે નૈરયિકો વિગેરે માંથી આવીને ઉત્પન્ન થતા નથી. પરંતુ પશ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકોમાંથી અને શર્કરા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, એ પ્રમાણેનું વલ્લુન અહિયાં

‘ગોયમા’ इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘तिन्नि वा, सत्त वा, एकारस वा’ त्रयो वा, सप्त वा, एकादश वा, ‘पन्नरस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा उववज्जंति’ पञ्चदश वा, संख्याता वा, असंख्याता वा, क्षुल्लकत्रयोजनारका एकदा समुत्पद्यन्ते इति । ‘सेसं जहा कडजुम्मस्स’ शेषं—परिणामातिरिक्तं सर्वं कुत आगत्योत्पद्यन्ते कथमुत्पद्यन्ते कथं शीघ्रा गतिः आत्मप्रयोगेण वा परप्रयोगेण वा उत्पद्यन्ते, इत्यादिकं सर्वं यथा कृतयुग्मनारकस्य कथितं तथैवेहापि ज्ञातव्यम्, आलापप्रकारश्च सर्वत्र स्वयमेवोहनीयः । ‘एवं जाव अहे सत्तमाए’ एवं यावदधः सप्तम्या मवगन्तव्यम् । येन रूपेण औघिकक्षुल्लकत्रयोजनारकस्य कथितं तेनैव

‘ज्जंति’ हे भदन्त ! क्षुल्लक ३ योजराशि प्रमाणवाले वे नारक एक समय में वहां कितने उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—‘गोयमा ! तिन्नि वा सत्त वा एकारस वा उववज्जंति’ हे गौतम ! वे नारक वहां एक समय में तीन या सात या ११ ग्यारह ‘पन्नरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति’ या पन्द्रह या संख्यात या असंख्यात तक उत्पन्न होते हैं ? ‘सेसं जहा कडजुम्मस्स’ इस परिमाण कथन से अतिरिक्त और सब—कहां से आकर के उत्पन्न होते हैं ? कैसे उत्पन्न होते हैं ? उनकी शीघ्र गति कैसी होती है ? कैसी उनकी शीघ्रगति का विषय होता है ? वे वहां आत्मप्रयोग से उत्पन्न होते हैं या पर प्रयोग से उत्पन्न होते हैं इत्यादि सब जैसा कृतयुग्मराशि प्रमाण नारकों के विषय में कहा गया है वैसा ही वह सब कथन यहां पर भी करना

કરતું જોઈએ ‘તેણં મંતે ! જીવા ! એગસમર્ણં કેવદ્વયા ઉવવજ્જતિ’ હે ભગવન્ ક્ષુલ્લક ત્રયેજ્જરાશિ પ્રમાણવાળા તે નારકો એક સમયમાં ત્યાં કેટલા ઉત્પન્ન થાય છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘ગોચમા ! તિન્નિ વા સત્તવા એકારસ વા ઉવવજ્જંતિ’ હે ગૌતમ ! તે નારકો ત્યાં એક સમયમાં ત્રણ અથવા સાત અથવા અગિયાર ‘પન્નરસ વા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા ઉવવજ્જંતિ’ અથવા પંદર અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત સુધીના ઉત્પન્ન થાય છે. ‘સેસં જહા કડજુમ્મસ્સ’ આ પરિણામ કથન શિવાયનું બીજું તમામ કથન—એટલે—કે “કયાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? કેવી રીતે ઉત્પન્ન થાય છે ? તેઓનું શીઘ્ર ગમન કેવું હોય છે ? તેઓના શીઘ્ર ગમનનો વિષય કેવો હોય છે ? તેઓ ત્યાં આત્મ પ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા પરપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે ? વિગેરે સઘળું કથન જે પ્રમાણે કૃતયુગ્મરાશિ પ્રમાણ નારકોના સંબંધમાં કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું તમામ કથન અહીંયાં પણ કહેવું જોઈએ આ સંબંધમાં આલાપનો પ્રકાર સ્વયં બનાવીને કહેવો જોઈએ. ‘एवं जाव अहे सत्तमाए’ જે પ્રમાણે ઔઘિક ક્ષુલ્લક ત્રયેજ્જરાશિ પ્રમાણ નૈરયિકોના સંબંધમાં કહેવામાં

રૂપેણ રત્નપ્રમા ક્ષુલ્લકઞ્ચોજનારકાદારમ્ય સપ્તમીપૃથિવી ક્ષુલ્લકઞ્ચોજનારક વિષયેऽપિ સર્વમવગન્તવ્યમિતિ । આલાપાદિકશ્ચ સર્વત્ર સ્વયમેવોદનીય ઇતિ । ‘શુદ્ધાગ દાવરજુમ્મનૈરહયાણં મંતે । કઓ ઉવવજ્જતિ’ ક્ષુલ્લકદ્વાપરયુગ્મ નૈર- યિકાઃ ક્ષલુ મદન્ત । કુતઃ-કસ્માત્ સ્થાનવિશેષાદાગત્ય નારકાવાસે સમુત્પ- ચન્તે ? ઇતિ પ્રશ્નઃ, મત્વાનાહ-‘એવં જહેવ’ ઇત્યાદિ, ‘એવં જહેવ શુદ્ધાગકલ- જુમ્મે’ એવં યથૈવ ક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મઃ ક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મનારકાણામુત્પાદાદિકં યેન પ્રકારેણ પૂર્વં પ્રતિપાદિતં તેનૈવ પ્રકારેણ સંક્ષેપવિસ્તરાભ્યામિદાપિ સર્વમવગન્ત- વ્યમ્ । ‘નવરં પરિમાણં દો વા, છ વા, દસ વા, ચોદસ વા, સંઘેજ્જા વા, અસં- ઘેજ્જા વા, નવરં પરિમાણં દ્વી વા ષઢ વા, દશ વા, ચતુર્દશ વા સંઘ્યેયા વા,

ચાહિયે, આલાપપ્રકાર હસ સમ્બન્ધ મેં અપને આપ ઉદ્ભાવિત કરના ચાહીયે, ‘એવં જાવ અહે સત્તમા’ જેણ રૂપસે ઔધિક ક્ષુલ્લક ઞ્ચોજરાશિ પ્રમાણ નૈરયિકાં કે સમ્બન્ધ મેં કહા ગયા હૈં ઉસી રૂપ સે રત્નપ્રમા ક્ષુલ્લક ઞ્ચોજરાશી પ્રમાણ નૈરયિકોં સે લેકર સપ્તમી પૃથિવી કે ક્ષુલ્લક ઞ્ચોજરાશિ પ્રમાણવાલે નૈરયિકોં કે વિષય મેં મી સબ કથન કરના ચાહીયે । તથા હસ સમ્બન્ધ મેં આલાપાદિક સર્વત્ર અપને આપ ઉદ્ભાવિત કરના ચાહીયે ।

શુદ્ધાગ દાવરજુમ્મનૈરહયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જતિ’ હે મદન્ત ! જો નૈરયિક ક્ષુલ્લકદ્વાપર યુગ્મરાશિ પ્રમાણ હૈં વે નરકાવાસ મેં કહાં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? હસકે ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં-‘એવં જહેવ શુદ્ધાગ કલજુમ્મે’ હે ગૌતમ ! જેણ કથન ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ રાશિ પ્રમાણવાલે નૈરયિકોં કે ઉત્પાદાદિકે સમ્બન્ધ મેં કહા ગયા હૈં વૈસા હી વહ સમસ્ત કથન સંક્ષેપ ઔર વિસ્તાર સે યહાં પર મી

આવેલ છે એજ પ્રમાણે રત્નપ્રમાના ક્ષુલ્લક ઞ્ચોજરાશિ પ્રમાણવાળા નૈરયિકોથી લઈને સાતમી પૃથ્વીના ક્ષુલ્લક ઞ્ચોજરાશિ પ્રમાણવાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં પણ સઘળું કથન કહેવું જોઈએ. તથા આ વિષયમાં આલાપ વિગેરે બધે જ સ્વયં બનાવીને સમજાવેલું જોઈએ.

‘શુદ્ધાગ દાવરજુમ્મનૈરહયા ણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જતિ’ હે ભગવન્તે નૈરયિકો ક્ષુલ્લકદ્વાપરયુગ્મપ્રમાણવાળા છે, તેઓ નરકાવાસમાં કયાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘એવં જહેવ શુદ્ધાગ કલજુમ્મે’ હે ગૌતમ ! ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મરાશી પ્રમાણવાળા નૈરયિકોના ઉત્પાદ વિગેરેના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણેનું તે કથન સંક્ષેપ અને વિસ્તારથી અહિંયા પણ કહેવું જોઈએ. ‘નવરં પરિમાણં દો વા છ વા ચોદસ વા સંઘેજ્જા વા અસંઘેજ્જા વા’ તે કથન કરતાં આ કથનમાં

અસંખ્યેયા વા' શુલ્લક કૃતયુગ્મપ્રકરણાત્ વૈલક્ષણ્યં કેવલ પરિમાણવિષયે તત્પ્રદર્શિતમેવ, અન્યત્સર્વમ્ ઉત્પાદાદિકં કૃતયુગ્મપ્રકરણાદેવાવસેયમિતિ । 'સેસં તં ચેવ જાવ અહે સત્તમાઈ' શેપમ્-પરિમાણાતિરિક્તં તદેવ યદેવોત્પાદાદિકં શુલ્લકકૃતયુગ્મપ્રકરણે કથિતં તદેવ ઇદાપિ શુલ્લકદ્વાપરયુગ્મપ્રકરણેઽપિ । કૃતયુગ્મપ્રકરણં ક્રિયત્પર્યન્તદિહ જ્ઞાતવ્યં તગ્રાહ—'જાવ' ઇત્યાદિ, 'જાવ અહે સત્તમાઈ' યાવદધઃસપ્તમ્યાં રત્નપ્રભા શુલ્લકદ્વાપરયુગ્માદારભ્ય અધઃસપ્તમી પૃથિવી પર્યન્તં શુલ્લક દ્વાપરયુગ્મનારકવિષયે સર્વં જ્ઞાતવ્યમિતિ । 'સુદ્ધાગ કલિઓગ નેરહ્યાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ' શુલ્લકકલયોજનૈરયિકાઃ સ્વલુ ભદન્ત ! કૃતઃ—

કહના ચાહિયે । 'નવરં પરિમાણં દો વા છ વા દસ વા ચૌદસ વા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા' હવ કથન સે હસ કથન મેં યદિ કોઈ વિશેષતા હૈ તો વહ પરિમાણ કો લેકર હી હૈ અતઃ યહાં પર નૈરયિકોં કા ઉત્પાદ પરિમાણ દો યા છહ યા દશ યા ચૌદહ યા સંખ્યાત યા અસંખ્યાત હૈ । વાકી કા ઔર મ્મવ શુલ્લકદ્વાપર યુગ્મરાશિ પ્રમાણવાલે નૈરયિકોં કા કથન શુલ્લક કૃતયુગ્મરાશિ પ્રમાણવાલે નૈરયિકોં કે જૈસા હી હૈ । અતઃ વહ ઉનકે પ્રકરણ સે હી જાનના ચાહિયે । ઇસલીએ સૂત્રકાર ને હસ સમ્બન્ધમેં 'સેસં તં ચેવ જાવ અહે સત્તમાઈ' એસા સૂત્ર પાઠ કહા હૈ । ઇસલિએ કૃતયુગ્મ પ્રકરણ રત્નપ્રભા કે શુલ્લક દ્વાપરયુગ્મ રાશિ પ્રમાણવાલે નૈરયિકોં સે લેકર અધઃસપ્તમી પૃથિવી તક કે શુલ્લક દ્વાપરયુગ્મરાશિ પ્રમાણવાલે નૈરયિકોં મેં કહના ચાહિયે ।

'સુદ્ધાગ કલિઓગ નેરહ્યાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ' હે ભદન્ત ! જો નૈરયિક શુલ્લક કલયોજરાશિ પ્રમાણવાલે હૈં વેં કહાં સે આકર કે

ને કંઈ વિશેષપણુ હોય તો તે પરિણામના સંબંધમાં જ વિશેષપણુ છે. તેથી અહિયાં નૈરયિકોના ઉત્પાદ, પરિણામ બે અથવા છ અથવા દસ અથવા ચૌદ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત છે. બાકીનું બીજુ તમામ કથન શુલ્લક દ્વાપરયુગ્મરાશિ પ્રમાણવાળા નૈરયિકોની જેમ જ છે તેથી તે સઘળું કથન તેના એટલે-શુલ્લકદ્વાપર યુગ્મરાશિ પ્રમાણવાળા નૈરયિકોના પ્રકરણમાંથી બહારી હોવું. તેથી સૂત્રકારે આ વિષયમાં 'સેસ તં ચેવ જાવ અહેસત્તમાઈ' આ પ્રમાણે સૂત્રપાઠ કહેલ છે. તેથી કૃતયુગ્મ પ્રકરણ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના શુલ્લક દ્વાપર-યુગ્મ રાશિ પ્રમાણવાળા નૈરયિકથી લઈને અધઃસપ્તમી પૃથ્વી સુધીના શુલ્લકદ્વાપર યુગ્મરાશિ પ્રમાણવાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં કહેવું જોઈએ

'સુદ્ધાગ કલિઓગ નેરહ્યાણ મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ' હે ભગવન્ જે નૈર-યિકો શુલ્લક કલ્યોજરાશી પ્રમાણવાળા છે, તેઓ કયાંથી આવીને નરકાવાસમાં

કસ્માત્ સ્થાનવિશેષાદાગત્ય નરકાવાસે સમુત્પચન્તે ? इति प्रश्नः, भगवानाह—
'एवं जहेव' इत्यादि, 'एवं जहेव खुड्डागकडजुम्मे' एवं यथैव क्षुल्लककृत-
युग्मप्रकरणे नारकाणामुत्पत्तिर्दર્शिता तथैव इहापि क्षुल्लककल्योज नारकाणां न
नैरयिकेभ्य उत्पत्तिः किन्तु पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्यः तथा गर्भजमनुष्येभ्यश्चा-
गत्येह समुत्पत्तिर्भवतीति । 'नवरं परिमाणं एको वा, पंच वा, नव वा, तेरस
वा संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा उववज्जंति' नवरम् केवलं परिमाणं कृतयुग्म
नारकाद्विलक्षणं तदिदम् एको वा, पञ्च वा, नव वा, त्रयोदश वा, संख्याता वा,

नरकावास में उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—'एवं जहेव
खुड्डाग कडजुम्मे' हे गौतम ! जैसा कथन क्षुल्लक कृतयुग्म प्रकरण
में नारकों के उत्पाद के विषय में किया गया है उसी प्रकार
से वह प्रकरण इस क्षुल्लक कल्योज नारकों के प्रकरण से
उत्पाद के विषय में भी कहना चाहिये । इस प्रकार क्षुल्लक
कल्योज नारक नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न नहीं होते हैं और न
देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं किन्तु वे पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिकों
में से आकर के नरकावास में उत्पन्न होते हैं, और गर्भज मनुष्यों में
से आकर के वहाँ उत्पन्न होते हैं । 'नवरं परिमाणं एको वा पंच वा
नव वा तेरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति' यहां
पर कृतयुग्म नारकों के प्रकरण से यदि कोई विशेषना है तो वह परि-
माण की अपेक्षा से ही है, अतः यहां पर क्षुल्लक कल्योज नारकों का
प्रमाण एक समय में उत्पत्ति का एक अथवा पांच अथवा नौ अथवा

ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'एवं जहेव खुड्डाग-
कडजुम्मे' हे गौतम ! क्षુલ્લક કૃતયુગ્મ પ્રમાણવાળા નારકોના સંબંધમાં જે
પ્રમાણેનું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણે તે પ્રકરણ આ ક્ષુલ્લક
કલ્યોજ નારક સંબંધી પ્રકરણ તેમના ઇત્પાદના સંબંધમાં પણ કહેવું જોઈએ.
આ રીતે ક્ષુલ્લક કલ્યોજ નારક નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થતા નથી તેમ
દેવોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થતા નથી. પરંતુ તેઓ પાંચેન્દ્રિય તિર્યંચ
યોનિકોમાંથી આવીને નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે, અને ગર્ભજ મનુષ્યોમાંથી
આવીને નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે

'नवरं परिमाणं एको वा पंचवा नव वा तेरसवा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा
उववज्जंति' અહિયાં આ કૃતયુગ્મ નારકોના પ્રકરણમાં જે કોઈ વિશેષપણ
છે, તે તે પરિણામના સંબંધમાં જ છે, તેથી અહિયાં ક્ષુલ્લક કલ્યોજ
નારકોની ઉત્પત્તિનું પ્રમાણ એક સમયમાં એક અથવા પાંચ અથવા નવ અથવા

અસંખ્યાતા ચા, સમુત્પન્નંતે । ‘સેસં તં ચેવ’ શેષમ્-પરિમાણાતિરિક્તમુત્પાદાદિકં
 સર્વં તદેવ ક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મનારકમ્પરુણકથિતમેવેતિ । ‘एवं जाव अहे सत्तमाए’
 एवं यावद् रत्नप्रभा क्षुल्लककल्योजनारकादारभ्य अधःसप्तम्यां क्षुल्लककल्योज
 पर्यन्तनारकाणाम् इयमेव व्यवस्था ज्ञातव्या । ‘सेवं भंते ! सेवं भंते !
 त्ति जाव विहरइ’ तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति यावद्विहरति, हे भदन्त !
 क्षुल्लकકૃતયુગ્માદિ નારકાદીનામુત્પાદાદિવિષયે યદ્ દેવાનુપ્રિયેણ કથિતં
 તત્સર્વમ્ एवमेव सर्वथा सत्यमेव इति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति
 वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति ॥૫૦ ૧॥

एकत्रिंशत्तमे श्लोके प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥३१-१॥

તેરહ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત તક હોતા હૈ । ‘સેસં તં ચેવ’
 હસ પરિમાણ કે અતિરિક્ત ઓર સબ ઉત્પાદ આદિ કા કથન જૈસા
 ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારકોં કે પ્રકરણ મેં કિયા ગયા હૈ-વૈસા હી યહાં પર
 ખી કરના ચાહિયે । ‘एवं जाव अहे सत्तमाए’ હસ પ્રકાર રત્નપ્રભા કે
 ક્ષુલ્લક કલ્યોજ નારકોં સે લેકર અધઃસપ્તમી પૃથિવી કેક્ષુલ્લક કલ્યોજ
 નારકોં કે સમ્બન્ધ મેં ખી યહી વ્યવસ્થા જાનની ચાહિયે, ‘सेवं भंते !
 सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ’ હે ભદન્ત ! ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારકોં કે
 ઉત્પાદ આદિ કે વિષય મેં જો આપ દેવાનુપ્રિયને કહા હૈ વહ સર્વથા સત્ય
 હી હૈ ૨ હસ પ્રકાર કહકર ગૌતમ ને પ્રભુશ્રી કો વન્દના કી ઓર ઉન્હે
 નમસ્કાર કિયા, વન્દના નમસ્કાર કર ફિર વે સંયમ ઓર તપ સે આત્મા
 કો ભાવિત કરતે હુએ અપને સ્થાનપર વિરાજમાન હો ગયે ॥૫૦ ૧॥

प्रथम उद्देशक समाप्त-३१-१

હસ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત સુધી હોય છે. ‘સેસં તં ચેવ’ આ
 પરિણામના કથન શિવાય બાકીનું ઉત્પાદ વિગેરે સઘળું કથન ક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મ
 નારકોના પ્રકરણમાં જ પ્રમાણે કહ્યું છે તે પ્રમાણે અહિયા પણ સમજવું.

‘एवं जाव अहे सत्तमाए’ આ રીતે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ક્ષુલ્લક કલ્યોજ
 નારકોથી લઈ ને અધઃસપ્તમી પૃથ્વીના ક્ષુલ્લક કલ્યોજ નારકોના સંબંધમાં
 પણ આજ કથન સમજવું

‘सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ’ હે ભગવન્ ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ
 વિગેરે નારકોના ઉત્પાદ વિગેરે વિષયમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કયું છે,
 તે સર્વથા સત્ય છે. આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે
 કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના
 નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને
 ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥૫૦૧॥

॥૫૬લેલો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૧-૧॥

अथ द्वितीयोद्देशकः प्रारभ्यते

प्रथमे उद्देशके सामान्यतः क्षुल्लक कृतयुग्मादिनारकाणामुत्पातादिः कथितः, द्वितीयेतु कृष्णलेश्याश्रय उत्पादादि र्वक्तव्यः, तदनेन सम्बन्धेनायातस्य द्वितीयोद्देशकस्येदं सूत्रम्—‘कण्ठलेस्स०’ इत्यादि ।

मूलम्—कण्ठलेस्स खुड्ढाग कडजुम्म नेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति, एवं चेव जहा ओहिंय गमो जाव नो परप्पयोगेण उववज्जंति । नवरं उववाओ जहा वक्कंतीए धूमप्पभा पुढवी नेरइयाणं सेसं तं चेव । धूमप्पभा पुढवी कण्ठलेस्स खुड्ढाग-कडजुम्म नेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति एवं चेव निरवसेसं । एवं तमाए वि, अहे सत्तमाए वि । नवरं उववाओ सव्वत्थ जहा वक्कंतीए । कण्ठलेस्स खुड्ढाग तेओग नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति ? एवं चेव नवरं तिन्नि वा, सत्त वा, एक्का-रस वा, पन्नरस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, सेसं तं चेव । एवं जाव अहे सत्तमाए । कण्ठलेस्स खुड्ढाग दावरजुम्म नेर-इयाणं भंते ! कओ उववज्जंति एवं चेव । नवरं दो वा, छ वा, दस वा, चोदस वा सेसं तं चेव । धूमप्पभाए वि जाव अहे सत्तमाए । कण्ठलेस्स खुड्ढाग कलिओग नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति । एवं चेव नवरं एक्को वा, पंच वा, नव वा, तेरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा सेसं तं चेव । एवं धूमप्पभाए वि तमाए वि अहे सत्तमाए वि, सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥सू. १॥

छाया—कृष्णलेश क्षुल्लककृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? एवमेव यथा औघिको गमो यावत् नो परप्रयोगेणोत्पद्यन्ते । नवरमुत्पातो यथा व्युत्क्रान्तौ धूमप्रभा पृथिवी नैरयिकाणाम् । शेषं तदेव । धूमप्रभा पृथिवी कृष्णलेश्य क्षुल्लक कृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते एवमेव निरवशेषम् । एवं तमायामपि अधःसप्टम्यामपि । नवरमुत्पातः सर्वत्र यथा व्युत्क्रान्तौ । कृष्णलेश्य क्षुल्लक त्र्योज नैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? एवमेव नवरं त्रयो वा, सप्त वा, एकादश वा, पञ्चदश वा, संख्येया वा, असंख्येया वा, शेषं

તદેવ । एवं यावदधः सप्तम्यामपि । कृष्णलेश्यक्षुल्लकद्रापरयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते, एवमेव नवरं द्वौ वा, पञ्च वा, दश वा, चतुर्दश वा, शेषं तदेव धूमप्रमायामपि यावदधःसप्तम्याम् । कृष्णलेश्य क्षुल्लककल्पोज नैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? एवमेव । नवरम् एको वा, पञ्च वा, नव वा, त्रयोदश वा, संख्येया वा, असंख्येया वा । शेषं तदेव । एवं 'धूमप्रमा-
यामपि तयायामपि अधःसप्तम्यामपि । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥ सू० १ ॥

एकत्रिंशत्तमे श्लोके द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥ ३१-२ ॥

ટીકા—દ્વિતીયસ્તુ ઉદ્દેશકઃ કૃષ્ણલેશ્યાશ્રયઃ સા ચ કૃષ્ણલેશ્યા પાંચમી પઠી સપ્તમીષ્વેવ પૃથિવીષુ ભવતીતિ કૃત્વા સામાન્યદણ્ડકઃ તથા પાંચમીપઠી સપ્તમી પૃથિ-
વ્યાશ્રિતં દણ્ડકત્રયં ચાત્ર ભવતીતિ, અતઃ કૃષ્ણલેશ્યાશ્રય એવાત્ર વિચારોડ્વધીયતે ।

दूसरे उद्देशका प्रारंभ

પ્રથમ ઉદ્દેશક મેં સામાન્યતઃ ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મરાશિવાલે નારકો
કા ઉત્પાદ આદિ કહા ગયા હૈ । અવ હસ દ્વિતીય ઉદ્દેશક મેં કૃષ્ણ
લેશ્યા કે આશ્રય સે उनका उत्पातादि कहना है सो इसी अभिप्राय
से इस द्वितीय उद्देशक को प्रारंभ सूत्रकार करते हैं—

‘कणहलेस्स खुड्ढागकडजुम्मनेरइयाणं भंते !’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—યહ દ્વિતીય ઉદ્દેશક કૃષ્ણલેશ્યાવાલે ક્ષુદ્ર કૃતયુગ્મરાશિ
પ્રમાણ નૈરયિકો સે સમ્બન્ધિત હૈ । કૃષ્ણલેશ્યા પાંચવી છટ્ટી ઓર
સાતવી પૃથિવીયોં મેં હી હોતી હૈ । હસલિયે એક સામાન્ય દણ્ડક હૈ
તથા પાંચવી છટ્ટી ઓર સાતવી પૃથિવીયોં કે આશ્રિત ત્રિન દણ્ડક યહાં
હૈ । અતઃ કૃષ્ણલેશ્યા કે આશ્રયવાલા હી વિચાર મહાં પ્રદર્શિત
કિયા જાતા હૈ—

એકત્રીસમા શ્લોકના બીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

પહેલા ઉદ્દેશામાં સામાન્યતઃ ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ વિગેરે રાશિવાળા નારકોના
ઉત્પાદ વિગેરેના સંબંધમાં કથન કરેલ છે. હવે આ બીજા ઉદ્દેશામાં કૃષ્ણ
લેશ્યાના આશ્રયથી તેઓના ઉત્પાદ વિગેરેના સંબંધમાં કથન કરવામાં આવશે
એજ અભિપ્રાયથી સૂત્રકાર આ બીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ કરે છે.—

‘कणहलेस्स खुड्ढागकडजुम्मनेरइया णं भंते !’ इत्यादि

ટીકાર્થ—આ બીજા ઉદ્દેશો કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુદ્ર કૃતયુગ્મ રાશિ પ્રમાણ
વાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં કહેલ છે. કૃષ્ણલેશ્યાના આશ્રયવાળી પાંચમી
છટ્ટી અને સાતમી પૃથ્વીઓના ત્રણ દંડકો અહિયાં કહ્યા છે. જેથી કૃષ્ણલેશ્યાના
આશ્રયવાળા જ વિચાર અહિયાં પ્રગટ કરવામાં આવે છે.—

‘કળહલેસ્સ સુહડાગકડજુમ્મનેરહ્યા ણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ કૃષ્ણ-
લેશ્ય ક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મનૈરયિકાઃ સ્વલુ મદન્ત ! કુતઃ કસ્માત્ સ્થાનવિશેષાદાગત્ય
નારકાવાસે ઉત્પદ્યન્તે ? इति प्रश्नः, उत्तरमाह—‘एवं चेव’ इत्यादि, ‘एवं चेव
जहा ओहिओ गमो’ एवमेव यथा औघिको गमः औघिकगमवत् एतच्छतकीय
प्रथमोद्देशकक्षुल्लककृतयुग्ननारकसूत्रवदेव कृष्णलेश्यक्षुल्लक नारकस्यापि उत्पा-
दादिकं वक्तव्यम्, तथाहि—न नारकेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते कृष्णलेश्यक्षुल्लक
कृतयुग्ननारकाः किन्तु तिर्यग्योनिकेभ्य आगत्य गर्भज मनुष्येभ्यश्चागत्योत्पद्यन्ते
इति । तेषां स्वलु मदन्त ! जीवानां कथं शीघ्रा गतिः कथं शीघ्रो गतिविषयः प्रज्ञ-

‘કળહલેસ્સ સુહડાગ કડજુમ્મ નેરહ્યાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’
હે મદન્ત ! ક્ષુદ્ર કૃતયુગ્મરાશિ પ્રમાણ કૃષ્ણલેશ્યાવાલે નૈરયિક કહાં
સે આકર કે નરકાવાસ મેં ઉત્પન્ન હોતે હેં ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હેં—
‘એવં ચેવ જહા ઓહિઓ ગમો’ હે ગૌતમ ! જેસા વિચાર હસ શતક કે
પ્રથમ ઉદ્દેશક મેં ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારક કે સૂત્ર મેં ક્રિયા ગયા હૈવૈસા
હી વિચાર કૃષ્ણલેશ્યાવાલે ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારક કે ઉત્પાદ આદિ
કા મી કરના ચાહિયે । જેસે—કૃષ્ણલેશ્યાવાલે ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારક
નૈરયિકો મેં સે આકર કે નરકાવાસ મેં ઉત્પન્ન નહીં હોતે હેં । ઓર ન
‘દેવો’ મેંસે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હેં કિન્તુ વે પચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકો મેં
સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હેં ઓર ગર્ભજ મનુષ્યો મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન
હોતે હેં । હે મદન્ત ! ડન નારક જીવો’ કી ગતિ કેસી તીવ્ર હોતી હૈ ?
ઓર કેસા ડસ તીવ્ર ગતિ કા વિષય હોતા હૈ ? હે ગૌતમ ! જેસે કોઈ

‘કળહલેસ્સ સુહડાગકડજુમ્મનેરહ્યા ણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ હે
ભગવન્ ક્ષુદ્ર કૃતયુગ્મ રાશી પ્રમાણ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નૈરયિકો કયાંથી આવીને
ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—
‘એવં ચેવ જહા ઓહિઓ ગમો’ હે ગૌતમ ! આ શતકના પહેલા ઉદ્દેશમાં જે
પ્રમાણેના વિચાર ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારકના સૂત્રમાં કરવામાં આવ્યો છે, એજ
પ્રમાણેના વિચાર કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારકના ઉત્પાદ વિગેરના
સંબંધમાં પણ કહેવા જોઈએ. જેમ કે—કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારક
નૈરયિકોમાંથી આવીને નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થતા નથી. તથા દેવોમાંથી આવીને
પણ તેઓ ઉત્પન્ન થતા નથી. પરંતુ તેઓ પચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્ય યોનિકોમાંથી
આવીને ઉત્પન્ન થાય છે. તથા ગર્ભજ મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે.
હે ભગવન્ તે નારક જીવોની ગતિ કેવી તીવ્ર હોય છે ? અને તે તીવ્ર ગતિનો

પ્તઃ ? ગૌતમ ! યથા કશ્ચિત્ તરુણો વલગ્ન પુરુષો યાત્ત્વ ત્રિપ્તમયકેન વિગ્રહેણ સમુત્પદ્યન્તે તેષાં ત્વલુ જીવાનાં તથા શીઘ્રા ગતિઃ તથા શીઘ્રો ગતિવિષયઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ તે જીવાઃ કથં પરમવાયુષ્કં કુર્વન્તિ ગૌતમ ! અધ્યવસાયયોગનિર્વર્તિતેન કરણોપાયેન एवं ત્વલુ પરમવાયુષ્કં કુર્વન્તિ, इति । તેષાં જીવાનાં કથં ગતિઃ પ્રવર્તતે ગૌતમ ! આયુઃક્ષયેણ મરણ્યેણ સ્થિતિક્ષયેણ ગતિઃ પ્રવર્તતે इति । તે જીવાઃ કિમાત્મદ્વર્ચા સમુત્પદ્યન્તે પરદ્વર્ચા વા સમુત્પદ્યન્તે ? ગૌતમ ! આત્મદ્વર્ચૈવ સમુત્પદ્યન્તે ન પરદ્વર્ચા સમુત્પદ્યન્તે । હે ભદ્રન્ત ! તે જીવા આત્મકર્મણા સમુત્પદ્યન્તે પરકર્મણા વા સમુત્પદ્યન્તે ? ગૌતમ ! આત્મકર્મણૈવ સમુત્પદ્યન્તે ન પરકર્મણા સમુત્પ-

દ્યન્તે વલગ્ન પુરુષ જૈસા કિ ચૌદહવેં શતક્ર કે પ્રથમ ઉદ્દેશક મેં કહા ગયા હૈં ઉસકે અનુસાર વે નારક ત્રીન સમયવાલી વિગ્રહગતિ સે વહાં નરકાવાસ મેં ઉત્પન્ન હો જાતે હૈં એસી ઉનકી તીવ્ર ગતિ હોતી હૈં ઓર ઉસ તીવ્ર ગતિ કા એસા વિષય હોના હૈં । હે ભદ્રન્ત ! વે નારક પરમવ કી આયુ કા બન્ધ કૈસે કરતે હૈં ? હે ગૌતમ અધ્યવસાયયોગ સે નિર્વર્તિત કરણોપાય સે વે નારક પરમવ કી આયુ કા બન્ધ કરતે હૈં । હે ભદ્રન્ત ! ઉન નારક જીવોં કી ગતિ કિસ કારણ સે હોતી હૈં ? હે ગૌતમ ! ઉનકી ગતિ આયુ કે ક્ષય સે અથ કે ક્ષય સે ઓર સ્થિતિ કે ક્ષય સે હોતી હૈં । હે ભદ્રન્ત ! વે જીવ કયા આત્મદ્વિસે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? યા પરદ્વિસે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? હે ગૌતમ ! વે આત્મદ્વિ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં પરદ્વિ સે નહીં હે ભદ્રન્ત ! વે જીવ કયા આત્મ કર્મ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં યા પરકર્મ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? હે ગૌતમ ! વે નારક જીવ આત્મકર્મ સે હી ઉત્પન્ન હોતે હૈં પર-

વિષય કેવો હોય છે ? હે ગૌતમ જેમ કોઈ બાલક પુરુષ જેમ કે-ચૌદમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશમાં કથન કરવામાં આવેલ છે તે અનુસાર તેવા નારકો ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ત્યાં નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે એવી તીવ્ર ગતિ તેમની હોય છે અને એ તીવ્રગતિનો એવો વિષય હોય છે. હે ભગવન્ તે નારકો પરભવના આયુષ્યનો બંધ કેવી રીતે કરે છે ? હે ગૌતમ ! અધ્યવસાય યોગથી નિર્વર્તિત કરણના ઉપાયથી નારકો પરભવના આયુષ્યનો બંધ કરે છે હે ભગવન્ તે નારક જીવોની ગતિ કયા કારણથી હોય છે ? હે ગૌતમ ! તેઓની ગતિ આયુના ક્ષયથી ભવના ક્ષયથી અને સ્થિતિના ક્ષયથી થાય છે. હે ભગવન્ તે જીવો શું આત્મક્રદ્ધિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા પરક્રદ્ધિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ ! તેઓ આત્મક્રદ્ધિથી ઉત્પન્ન થાય છે. પરક્રદ્ધિથી ઉત્પન્ન થતા નથી. હે ભગવન્ તે જીવો આત્મકર્મથી ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા પરકર્મથી ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ તે નારક જીવો પોતાના કર્મથી જ ઉત્પન્ન થાય છે. પર

ઘન્ટે । હે મદન્ત ! તે જીવા આત્મપ્રયોગેણ સમુત્પદ્યન્તે પરપ્રયોગેણ વા સમુત્પદ્યન્તે ? ગૌતમ ! આત્મપ્રયોગેણ સમુત્પદ્યન્તે ન પરપ્રયોગેણ સમુત્પદ્યન્તે । एतदाशयेनैवाह—‘जाव नो परप्पओगेणं उववज्जंति’ इति । ‘नवरं उववाओ जहा वक्कंतीए धूमप्पभा पुढवी नेरइयाणं’ नवरम्—केवलमुत्पातो यथा व्युत्क्रान्तौ प्रज्ञापनायाः षष्ठपदे येन रूपेणोपपातः कथित स्तेनैवरूपेणोपपातो धूमप्रभा पृथिवी नैरयिकोणां ज्ञातव्यः, एतदेवौघिकगमापेक्षया वैलक्षण्यम् अन्यत्सर्वमौघिकगमवदेवेति भावः । अत्र कृष्णलेश्यायाः प्रकरणम्, सा च धूमप्रभायां भवतीति, तत्र संज्ञि-

કર્મ સે નહીં ! હે મદન્ત ! હે નારક જીવ કયા આત્મપ્રયોગ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? યા પરપ્રયોગ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? હે ગૌતમ ! હે જીવ આત્મ પ્રયોગ સે હી ઉત્પન્ન હોતે હૈં પરપ્રયોગ સે નહીં । યહાં તક કા યહ સવ પ્રકરણ જો કિ ઔધિક નારક કે પ્રકરણ મેં કહા ગયા હૈં યહાં પર મી વહી પ્રકરણ કહના ચાહિયે, હસી આશય કો લેકર સૂત્રકાર ને ‘જાવ નો પરપ્પઓગેણં ઉવવજ્જંતિ’ એસા સૂત્રપાઠ કહા હૈં । પરન્તુ ઔધિક નારક પ્રકરણ કી અપેક્ષા હસ પ્રકરણ મેં જો વિશેષતા હૈં વહ એક ઉત્પાદ પરિમાણ મેં હૈં—યહી વાત—‘નવરં ઉવવાઓ જહા વક્કંતીએ ધૂમપ્પમા પુઢવી નેરહયાણં’ હસ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કી ગઈ હૈં । અર્થાત્ પ્રજ્ઞાપના સૂત્ર કે દેઢે વ્યુત્ક્રાન્તિ પદ મેં જિસ રૂપ સે ધૂમપ્રમા પૃથિવી નૈરયિકોં કા ઉત્પાત કહા ગયા હૈં ડસી રૂપ સે વહ ઉત્પાદ યહાં પર મી કૃષ્ણ-લેશ્યાવાલે નૈરયિકોં કા કહના ચાહિયે, વાહી કા ઔર સવ કથન ઔધિક ગમ કે જૈસા હી હૈં । યહાં કૃષ્ણલેશ્યા કા પ્રકરણ હૈં । યહ કૃષ્ણલેશ્યા

કર્મથી નહીં હે લાગવન તે નારક જીવે શુ આત્મ પ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા પરપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ ! તે જીવ આત્મપ્રયોગથી જ ઉત્પન્ન થાય છે, પરપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થતા નથી આ કથન સુધીનું આ સઘળું પ્રકરણ કે જે ઔધિક નારકના પ્રકરણમાં કહેલ છે, તેજ પ્રકરણ અહિયાં પણ સમજવું. આજ અસિપ્રાયથી સૂત્રકાર ‘જાવ નો પરપ્પઓગેણ ઉવવજ્જંતિ’ આ પ્રમાણેનો સૂત્રપાઠ કહ્યો છે. પરંતુ ઔધિક નારક પ્રકરણનો કથન કરતાં આ પ્રકરણમાં જે વિશેષણ છે, તે એક ઉત્પાદ અને પરિણામમા જ છે. એજ વાત ‘નવરં ઉવવાઓ જહા વક્કંતીએ ધૂમપ્પમા પુઢવી નેરહયાણં’ આજ સૂત્ર-પાઠદ્વારા પ્રગટ કરેલ છે. અર્થાત્ પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના છઠ્ઠા વ્યુત્ક્રાન્તિ પદમાં જે પ્રમાણે ઉત્પાદના સંબંધમાં કથન કરેલ છે. તેજ પ્રમાણેનો તે ઉત્પાદ અહિયાં પણ ધૂમપ્રમા પૃથ્વીના નૈરયિકોના સંબંધમાં કહેવો જોઈએ. બાકીનું બીજું સઘળું કથન ઔધિક ગમના કથન પ્રમાણે છે અહિયાં કૃષ્ણલેશ્યાનું પ્રકરણ

સરીસૃપપક્ષિર્લિહાન વિદ્યાય તદિતરે એવં સમુપચતે, અતઃ સૃજ્યે જે જીવા ઉત્પ-
 ઘન્તે તેષામેવોત્પાદઃ પઠનીયં ઇતિ । ‘સેસં તં ચેવ’ શેષમ્-ઉપપાતવ્યતિરિક્તં સર્વં
 તદેવ ઔઘિકગમ્બદેવેતિ ભાવઃ । ‘ધૂમપ્પમા પુઢવી કળહલેસ્સ खुड्डाग कडजुम्म
 नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति’ ધૂમપ્પમા પૃથિવીકૃણ્ણલેશ્યક્ષુલ્લકક કૃત-
 યુગ્મનૈરયિકાઃ खलु भदन्त ! कुतः कस्मात् स्थानविशेषादागत्य समुत्पद्यन्ते ? इति
 પ્રશ્નઃ । ઉત્તરમાહ-‘એવં ચેવ’ ઇત્યાદિ, ‘એવં ચેવ નિરવસેસં’ એવમેત્ર-ઔઘિકગમ-
 વદેવ નિરવશેષં જ્ઞાતવ્યમ્ ઇતિ । ‘એવં તમાણ વિ અહે સત્તમાણ વિ’ એવં ધૂમપ્પમા
 પૃથિવી સમ્બન્ધિ કૃણ્ણલેશ્ય ક્ષુલ્લકનારકવિપયે યથા કથિતં તથૈવ તમારુપ-
 પ્પઠ નારકપૃથિવીસમ્બન્ધિ નારકવિપયેઽપિ, એવં પૂર્વવદેવ અધઃ સપ્તમ્યામિતિ,

ધૂમપ્રમા આદિ મેં હોતી હૈ, યહાં અસંજી, સરીસૃપ, પક્ષી એવં સિંહ
 હનકા ઉત્પાદ હોતા નહીં હૈ અતઃ હન્હે છોડકર વાકી કે જીવ યહાં
 ઉત્પન્ન હોતે હૈ । હસલીએ જો જીવ યહાં ઉત્પન્ન હોતે હૈં ડનકા હી
 યહાં ઉત્પાદ કહના ચાહિયે, ‘સેસં તં ચેવ’ હસ પ્રકાર ઉત્પાદ કે સિવાય
 ઔર સવ કથન ઔઘિક ગમ કે જૈસા હી યહાં પર જાનના ચાહિયે,
 હસીલીએ ધૂમપ્પમા પુઢવી કળહલેસ્સ खुड्डाग कडजुम्म नेरइयाणं भंते !
 કઓ ઉવવજ્જંતિ ‘હસ પ્રશ્ન કા ઉત્તર પ્રમુશ્રી ને ‘એવં ચેવ નિરવસેસં’
 હસ સૂત્રપાઠ દ્વારા દિયા હૈ । ‘એવં તમાણ વિ અહે સત્તમાણ વિ’ હસી
 પ્રકાર કા કથન તમઃપ્રમા મેં ઔ ઔર અધઃસસમી પૃથિવી કે નારકોં
 કે સમ્બન્ધ મેં ઔ જાનના ચાહિયે, પરંતુ પ્રજ્ઞાપના કે ઘટે
 વ્યુત્ક્રાન્તિ પદ મેં જૈસા યહાં નારકોં કા ઉત્પાદ કહા હૈ વહાં વૈસા હી

છે. આ કૃણ્ણલેશ્યા ધૂમપ્રભામાં હોય છે. અહિયાં અસંજી, સરીસૃપ,
 (સપ) પક્ષી અને સિંહ આટલાનેા ઉત્પાદ થતો નથી. તેથી
 ‘આટલાને છોડીને બાકીના બધા અહિયાં ઉત્પન્ન થાય છે. તેથી જે બધા
 અહિયાં ઉત્પન્ન થાય છે તેઓનેા ઉત્પાદજ અહિયાં કહેવો બેઠએ ‘સેસં તં
 ચેવ’ આ રીતે ઉત્પાદના કથન શિવાય બાકીનુ સઘળું કથન ઔઘિક ગમના
 કથન પ્રમાણેજ અહિયાં સમજવું તેથી. ‘ધૂમપ્પમા પુઢવી કળહલેસ્સ खुड्डाग-
 कडजुम्मनेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति’ આ પ્રમાણે પ્રશ્ન કરેલ છે. આ
 પ્રશ્નના ઉત્તરમાં ‘એવં ચેવ નિરવસેસં’ આ પ્રમાણે પ્રભુશ્રીએ કહેલ છે. ‘એવં તમાણ
 વિ અહે સત્તમાણ વિ’ આજ પ્રમાણેતું કથન તમઃપ્રભાથી લઈને અધઃસપ્તમી
 પૃથ્વી સુધીના નારકોના સંબંધમાં પણ સમજવું. પરંતુ પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમાં છઠા
 વ્યુત્ક્રાન્તિ પદમાં જે પ્રમાણે જ્યાં નારકોનેા ઉત્પાત કહ્યો છે, ત્યાં એજ
 પ્રમાણેનેા ઉત્પાત કહેવો બેઠએ.

સપ્તમનારક પૃથિવી સમ્બન્ધિ નારકેડપિ સર્વં પૂર્વવદેવ જ્ઞાતવ્યમિતિ । ‘નવરં’ ઉવ-
 વાઓ સવ્વત્થ જહા વ્વકંતીએ’ નવરં વૈલક્ષણ્યં કેવલમુપપાતો યથા ઘ્યુત્ક્રાન્તો
 મજ્ઞાપનાયાઃ ષષ્ઠપદે કથિત સ્તથૈવ જ્ઞાતવ્યં ઇતિ । ‘કૃષ્ણલેસ્સ સુહુડાગ તેઓગ
 નેરહ્યાણં મંતે ! કથો ઉવવજ્જંતિ’ કૃષ્ણલેશ્ય ક્ષુલ્લકચ્ચોજનૈરયિકાઃ સ્વલ્લ મદન્ત !
 કુતઃ કસ્માત્ સ્થાનવિશેષાદાગત્ય નરકાવાસે સમુત્પચ્ચન્તે ? ઇતિ પ્રશ્નઃ । ઉત્તર-
 માહ-‘એવં ચેવ’ એવમેવ એવં-યથા પૂર્વપ્રકરણે ઉપપાતાદિઃ કથિત સ્તથૈવ ઇદાપિ
 જ્ઞાતવ્યઃ । કેવલં પરિમાણવિષયે વૈલક્ષણ્યં વિચિતે તદ્દર્શયતિ-‘નવરં’ ઇત્યાદિ,
 ‘નવરં તિન્નિ વા, સત્ત વા, એકારસ વા, પન્નરસ વા, સંખેજ્જા વા, અસંખેજ્જા વા’
 નવરં ત્રયો વા, સપ્ત વા, એકાદશ વા, પચ્ચદશ વા, સંખ્યાતા વા, અસંખ્યાતા વા
 તે જીવા એકસમયેન સમુત્પચ્ચન્તે નરકાવાસે ‘સેસં તં ચેવ’ શેષં પરિમાણાતિરિક્તં
 સર્વં તદેવ ઔઘિકપ્રકરણકથિતમેવ । ‘એવં જાવ અહે સત્તમાએ વિ’ એવં યાવદ્
 ઉત્પાદ કહના ચાહીયે, ‘કૃષ્ણલેસ્સ સુહુડાગ તેઓગ નેરહ્યાણં મંતે !’
 હે મદન્ત ! કૃષ્ણલેશ્યાવાલે ક્ષુદ્ર ચ્ચોજ્જરાશિ પ્રમાણ નૈરયિક કહાં સે
 આકર કે નરકાવાસ મેં ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રસુશ્રી
 કહતે હૈં-‘એવં ચેવ’ હે ગૌતમ ! પૂર્વ પ્રકરણ મેં જૈસા કથન ઉત્પાત
 આદિ કે સમ્બન્ધ મેં ક્રિયા ગયા હૈં ઉસી પ્રકાર કા કથન યહાં પર મી
 જાનના ચાહીયે । પરન્તુ ‘નવરં તિન્નિ વા સત્ત વા એકારસ વા પન્ન-
 રસવા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જાવા’ યહાં ત્રીન અથવા સાત યા ૧૧ યા
 ૧૫ યા સંખ્યાત યા અસંખ્યાત નૈરયિક ઉત્પન્ન હોતે હૈં ‘સેસં તં ચેવ’
 હસ પ્રકાર પરિમાણ સે અતિરિક્ત ઓર સર્વ કથન ઔઘિક પ્રકરણ મેં
 જૈસા કહા ગયા હૈં વૈસા હી જાનના ચાહીયે । ‘એવં જાવ અહે સત્તમાએ
 વિ’ ઓર એસા હી સર્વ કથન યાવત્ સાતવી પૃથિવી તક જાનના ચાહીયે,

‘કૃષ્ણલેસ્સ સુહુડાગ તેઓગ નેરહ્યા ણં મંતે । ડે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા
 ક્ષુદ્રચ્ચોજ્જરાશિ પ્રમાણે નૈરયિકો કયાંથી આવીને નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે ?
 આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘એવં ચેવ’ હે ગૌતમ ! આગલા
 પ્રકરણમાં ઉત્પાદ વિગેરેના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું કથન કરવામાં આવ્યું છે,
 એજ રીતનું કથન અહિયાં પણ સમજવું. પરંતુ ‘નવરં તિન્નિ વા સત્ત વા એકાર-
 સ વા પન્નરસ વા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા’ અહિયાં ત્રણ અથવા સાત અથવા
 અગિયાર અથવા પંદર અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત નૈરયિકો ઉત્પન્ન
 થાય છે. ‘સેસં તં ચેવ’ આ પરિણામ દ્વાર શિવાય આકીતું સઘળું કથન
 ઔઘિક પ્રકરણમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણ સમજવું. ‘એવં
 જાવ અહે સત્તમાએ વિ’ અને આજ પ્રમાણેનું સઘળું કથન યાવત્ સાતમી

અથઃ સપ્તમ્યામપિ સામાન્યતઃ કૃષ્ણલેશ્યશ્ચુલ્લકઽયોજનારકાણામુપપાતઃ પરિ-
માણશ્ચ સામાન્યતો દર્શિત રતથૈવ ધૂમપ્રમા પૃથિવીતમાપૃથિવ્યધઃસપ્તમી પૃથિ-
ક્ષીણુ વિદ્યમાનાનાં કૃષ્ણલેશ્યશ્ચુલ્લકઽયોજનારકાણામપિ ઉપપાતપરિમાણાદિકં
સર્વમપિ જ્ઞાતવ્યમિતિ ભાવઃ । ‘કળહલેસ્સ સુહુડાગદાવરજુમ્મનેરહયાણં મંતે !
કઓ ઉવવજ્જંતિ’ કૃષ્ણલેશ્યશ્ચુલ્લકદ્વાપરયુગ્મનૈરયિકાઃ સ્વલ્પ મદન્ત ! કુતઃ—
કસ્માત્ સ્થાનવિજોપાદાગત્ય નરકાવાસે સમુત્પદ્યન્તે ? इति उत्पादादिविषयकः
પ્રશ્નઃ, મગવાનાહ—‘एवं चेव’ एवं कृतयुग्ननारकादीना मुपपातादिविषये औघिक
પ્રકરણે યત્ કથિતં તદેવ સર્વમ્ इहापि अनुमन्धेयमिति । ‘नवरं दो वा, छ वा,
दस वा, चौदस वा सेसं तं चेव’ नवरं केवलम् परिमाणे वैलक्षण्यं पूर्वप्रकरण-

अर्थात् कृष्णलेश्यावाले क्षुल्लक योज नारको का उत्पाद और परिमाण
जैसा सामान्य से प्रकट किया गया है उसी प्रकार से धूमप्रमा पृथिवी
तमःप्रमापृथिवी और सातवीं अधःसप्तमी इनमें विद्यमान कृष्णलेश्यावाले
क्षुल्लकयोजनारको का भी उपपात परिमाण आदि सब जानना चाहिये ।

‘कणहलेस्स सुहूडाग दावरजुम्म नेरहयाणं मंते ! कओ उववज्जंति’
हे भदन्त ! कृष्णलेश्यावाले क्षुદ્રદ્વાपरयुग्म प्रमाण नैरयिक किम् स्थान
से आकर के नरकावास में उत्पन्न होते हैं ? ऐसा यह प्रश्न उत्पाद-दि
विषयक है । उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—‘एवं चेव’ हे गौतम ! जैसा कृत
युग्म नारकादिकों के उत्पाद आदि के विषय में औघिक प्रकरण में
कहा गया है वही सब यहां पर भी कहना चाहिये । ‘नवरं दो वा, छ
वा, दसवा चौदसवा सेसं तं चेव’ परन्तु पूर्व प्रकरण की अपेक्षा परि-

પૃથ્વી સુધી સમજવું. અર્થાત્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક યોજ નારકોના ઉત્પાદ અને
પરિણામ જેમ સામાન્ય રીતે કહેલ છે એજ પ્રમાણે ધૂમપ્રમા પૃથ્વી, તમઃપ્રમા
પૃથ્વી, અને સાતમી તમઃતમા પૃથ્વીમાં રહેનારા કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક યોજ
નારકોના સંબંધમાં પણ ઉપપાત, પરિણામ વિગેરે સંબંધી કથન સમજવું.

‘कणहलेस्स सुहूडागदावरजुम्मनेरहया ण मंते ! कओ उववज्जंति’ હે
મગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુદ્રદ્વાપર યુગ્મ પ્રમાણ નૈરયિકો કયા સ્થાનમાંથી
આવીને નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રમાણેના ઉત્પાદ વિગેરેના
સંબંધમાં ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને પ્રશ્ન કર્યો છે આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં
પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—‘एवं चेव’ હે ગૌતમ ! કૃતયુગ્મ નારક
વિગેરેના ઉત્પાદ વિગેરે વિષયમાં ઔઘિક પ્રકરણમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં
આવેલ છે, એ સઘળું કથન અહિયાં પણ કહેવું જોઈએ. ‘नवरं दो वा छ वा
चौदसवा सेसं तं चेव’ પરન્તુ પહેલાના પ્રકરણની અપેક્ષાથી પરિણામમાં એ

‘પ્રપાતાદિઃ કથિત રતેનૈવરૂપેણ કૃષ્ણલેશ્યશુલ્લકકલ્પયોજ પ્રમાણયુક્તનારકો-
 નામપિ ઉપપાતાદિકો જ્ઞાતવ્યઃ । કિન્તુ શુલ્લકકૃતયુગ્મનારકાપેક્ષયા યદ્દૈલક્ષ્યં
 તાદૃશ કલ્પયોજપ્રમાણકનારકસ્ય વિદ્યતે તદ્દર્શયતિ-‘નવરં’ इत्यादिना, ‘नवरं
 एको वा, पंच वा, नव वा, तेरस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा’ नवरं केवल
 ऐको वा एञ्च वा, नव वा, त्रयोदश वा, संख्याता वा, असंख्याता वा नारका
 एकसमये नरकावासे समुत्पद्यन्ते ‘सेसं तं चेव’ शेषं परिमाणातिरिक्तं सर्वमपि
 तदेव-कृतयुग્मનારકવદેવ જ્ઞાતવ્યમિતિ । ‘एवं धूमपभाए वि तमाए वि अहे
 सत्तमाए वि’ एवं सामान्यतः कृष्णलेश्य शुल्लककल्योजनारकाणां यथा उप-
 पातादिः कथित रतेनैव रूपेण धूमप्रभायां पञ्चमनारकपृथिव्यामपि कृष्णलेश्य

કૃતયુગ્મ નારકોં કા ઉત્પાત આદિ કહા ગયા હૈ વૈસા હી કૃષ્ણલેશ્યા
 ચાલે શુલ્લક કલ્પોજ પ્રમાણ યુક્ત નારકોં કા બી ઉપપાત આદિ જાનના
 ચાહિયે । કિન્તુ શુલ્લક કૃતયુગ્મ નારકોં કી અપેક્ષા જો શુલ્લક કલ્પોજ
 પ્રમાણ યુક્ત નારકોં મેં અન્તર હૈ વહ ‘નવરં’ એકોવા પંચ વા નવ વા
 તેરસ વા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા’ હસ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કિયા
 ગયા હૈ, તથાચ વહાં વે નારક એક સમય મેં એક અથવા પાંચ, યા નૌ
 યા તેરહ યા સંખ્યાત યા અસંખ્યાત ઉત્પન્ન હોતે હૈ । ‘સેસં તં ચેવ’
 પરિમાણ સે અતિરિક્ત ઓર સ્વ કથન કૃતયુગ્મ નારકોં કે જૈસા હી
 જાનના ચાહિયે । ‘एवं धूमपभाए वि तमाए वि अहे सत्तमाए वि’
 સામાન્ય સે કૃષ્ણલેશ્યાચાલે શુલ્લક કલ્પોજ પ્રમાણયુક્ત નારકોં કે જૈસા
 ઉપપાત આદિ કહા ગયા હૈ ઊસી રૂપ સે પંચમનારક પૃથિવી જો ધૂમપ્રભા

કહે છે કે-‘एवं चेव’ હે ગૌતમ ! કૃષ્ણલેશ્યાવાળા શુલ્લક કૃતયુગ્મ નારકોંના
 સંબંધમાં જે પ્રમાણે ઉત્પાદ વિગેરેનું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણેનું
 કથન કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કલ્પોજ પ્રમાણવાળા નારકોંના સંબંધમાં પણ
 ઉપપાત વિગેરે સંબંધી કથન સમજવું.

‘परतु शुल्लक कृतयुग्म नारके करतां शुल्लक कल्पोज प्रमाणवाणा नारकेना
 कथनमां जे इक्षार छे, ते ‘नवरं’ एको वा पंच वा नव वा तेरसवा सखेज्जा
 वा असंखेज्जा वा’ आ सूत्रपाठथी प्रगट करेत्त छे. तथा त्यां ते नारके ओक
 समयमां ओक अथवा पांच अथवा नव अथवा तेर अथवा संख्यात अथवा
 असंख्यात उत्पन्न थाय छे. ‘सेसं तं चेव’ परिणाम द्वारथी अन्य आकीनुं
 सधणुं कथन कृतयुग्म नारकेना कथन प्रमाणे समजवुं. ‘एवं धूमपभाए वि
 तमाए वि अहे सत्तमाए वि’ सामान्य कृष्णलेश्यावाणा शुल्लक कल्पोज प्रमाणवाणा
 नारकेना उपाद विगैरेना संबंधमां जे प्रमाणेनुं कथन तेमना उपपात विगैरे

ક્ષુલ્લકકલ્પયોજપ્રમાણકનારકાણામપિ ઉપપાદ્યપરિમાણાદિઃ જ્ઞાતવ્યઃ । એવમેવ
ક્રમેણ તમાયાં પ્થનારકપૃથિવ્યામપિ નારકાણામુપપાતાદિ જ્ઞાતવ્યઃ તથૈવ
અધઃસપ્તમ્યાં સપ્તમનારકપૃથિવ્યામપિ ઉપપાતાદિર્વર્ણનીયો નારકાણામિતિ ।
યદ્યપિ પરિમાણે સંખ્યાતા અસંખ્યાતા ઇતિ કથિતં તથાપિ કૃતયુગ્મપ્રક-
રણે સંખ્યાતા અપિ ચતુરવશિષ્ટા એવ, ત્રયોજે અવશિષ્ટા એવ દ્વયવશિષ્ટા એકા
વશિષ્ટા એવ સંખ્યાતાઃ અસંખ્યાતાશ્ચેતિ । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ તદેવં
મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ હે મદન્ત ! કૃષ્ણલેશ્ય ક્ષુલ્લકકૃતયુગ્માદિ નારકા
ણામુપપાતાદિવિષયે યદ્ દેવાનુપ્રિયેણ કથિતં તદસ્થિલમપિ એવમેવ સર્વથા સત્ય-

હૈ ઉસમેં મી કૃષ્ણલેશ્યાચાલે ક્ષુલ્લક કલ્પયોજ પ્રમાણયુક્ત નારકોં કા
મી ઉપપાત એવં પરિમાણ આદિ કહના ચાહિથે । હસી ક્રત સે દઠવી
તમા નામ કી પૃથિવિ મેં મી નારકોં કા ઉપપાત આદિ જાનના ચાહિથે ।
ઔર હસી પ્રકાર સાતવી અધઃસપ્તમી તમસ્તમા નારક પૃથિવી મેં મી
નારકોં કા ઉપપાત આદિ જાનના ચાહિથે । યદ્યપિ પરિમાણ મેં સંખ્યાત
ઔર અસંખ્યાત એસા કહા ગયા હૈ તો મી કૃતયુગ્મ પ્રકરણ મેં સં-
ખ્યાત અસંખ્યાત મી ચતુર વિશિષ્ટ હી હોતે હૈં ઔર ત્રયોજ મેં લે ત્રીન
અવશિષ્ટવાલે હી દ્વાપરયુગ્મ મેં લે દો અવશિષ્ટવાલે હી ઔર કલ્પયોજ
મેં લે એક અવશિષ્ટવાલે હી સંખ્યાત એવં અસંખ્યાત હોતે હૈં । ‘સેવં
મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે મદન્ત ! કૃષ્ણલેશ્ય યુક્ત ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ
રાશિવાલે નારકોં કે ઉત્પાત આદિ કે વિષય મેં જો આપ દેવાનુપ્રિયે

સંબંધી કહેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન પાંચમી નારક પૃથ્વી કે જે ધૂમપ્રભા
છે, તેમાં પણ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક કલ્પયોજ પ્રમાણવાળા નારકોના ઉપપાત
પરિણામ વિગેરે સંબંધી કરવું જોઈએ. આજ કંમથી છઠી તમા
નામની નારક પૃથ્વીમાં પણ નારકોના ઉપપાત વિગેરે સમજવો. અને આજ
પ્રમાણે સાતમી અધઃસપ્તમી તમસ્તમા નારક પૃથ્વીમાં પણ નારકોના ઉપપાત
વિગેરેના સંબંધમાં કથન સમજવું. જે કે પરિણામમાં સંખ્યાત અને અસં-
ખ્યાત એ પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, તો પણ કૃતયુગ્મ પ્રકરણમાં સંખ્યાત
અને અસંખ્યાત પણ ચાર વિશિષ્ટજ હોય છે. અને ત્રયોજરાશિમાં ત્રણ
શેષવાળા, દ્વાપરયુગ્મમાં બે શેષવાળા, અને કલ્પયોજમાં એક શેષવાળા જ
સંખ્યાત અને અસંખ્યાત હોય છે.

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ
વિગેરે રાશિવાળા નારકોના ઉત્પાદ વિગેરે વિષયના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે

યેવેતિ કથયિત્વા ગૌતમો મગવન્તં વન્દતે નમસ્યતિ, વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા સંયમેન તપસા આત્માનં ભાવયન્ વિહરતીતિ ॥સૂ૦ ૧।

॥ ઇતિ શ્રી વિશ્વવિખ્યાત-જગદ્વલ્લભ-પ્રસિદ્ધવાચક-પશ્ચદશભાષા-
કલિતલલિતકલાપાલાપકપ્રવિશુદ્ધગદ્યપદ્યનૈકગ્રન્થનિર્માપક,
વાદિમાનમર્દક-શ્રીશાહ્ચત્રપતિ કોલ્હાપુરરાજપદ્મ-
‘જૈનાચાર્ય’ પદ્મભૂષિત — કોલ્હાપુરરાજગુરુ-બાલ-
બ્રહ્મચારિ-જૈનાચાર્ય-જૈનધર્મદિવાકર-પૂજ્ય શ્રી
ઘાસીલાલવ્રતિવિરચિતાયાં શ્રી “મગ
વતીસૂત્રસ્ય” પ્રમેયચન્દ્રિકાવ્યાખ્યા-
વ્યાખ્યાયાં એકત્રિંશત્તમે શતકે
દ્વિતીયોદ્દેશકઃ સમાપ્તઃ ॥૩૧-૨॥

કહા હૈ વહ સ્વ સર્વથા સત્ય હી હૈ । હસ પ્રકાર કહકર ગૌતમ ને
મગવાન કો વન્દના કી ઔર નમસ્કાર કિયા, વન્દના નમસ્કાર કર
ફિર વે સંયમ ઔર તપ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુએ અપને
સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે ॥સૂ૦ ૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજીમહારાજકૃત
“મગવતીસૂત્ર” કી પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાકે એકતીસવે શતકકા
॥ દ્વિતીય ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥

જે કથન કરેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આપ દેવાનુપ્રિયનું
તે કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને
વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરી તે પછી તેઓ સંયમ
અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થયા પોતાના સ્થાન પર
બિરાજ માન થયા. ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત “મગવતીસૂત્ર”ની
પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના એકત્રીસમા શતકનો બીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૧-૨॥



અથ તૃતીયોદેશકઃ પ્રારમ્ભયતૈ

કૃષ્ણલેશ્યાશ્રિતં દ્વિતીયોદેશકં વ્યાખ્યાય ક્રમપ્રાપ્તં નીલલેશ્યાશ્રયં તૃતીય-
મુદેશકમારમ્ભતે, તદનેન સમ્બન્ધેનાયાતસ્ય તૃતીયોદેશકસ્યેદં સૂત્રમ્—‘નીલલેસ્સ
खुड्ढागकडजुम्म’ इत्यादि ।

મૂલમ્—નીલલેસ્સ खुड्ढागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ
उववज्जंति एवं जहेव कणहलेस्सखुड्ढागकडजुम्मा । नवरं
उववाओ जो वालुयप्पभाए, सेसं तं चेव । वालुयप्पभा पुढवी
नीललेस्सखुड्ढागकडजुम्मनेरइया एवं चेव । एवं पंकप्पभाए
वि । एवं धूमप्पभाए वि । एवं चउसु वि जुम्मेसु । नवरं परि-
माणं जाणियव्वं । परिमाणं जहा कणहलेस्स उद्देसए, सेसं तहेव ।
सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति ॥सू० १॥

एकत्तीसइमे सए तइओ उद्देसो समत्तो ॥३१-३॥

છાયા--નીલલેશ્યશ્ચુલ્લકકૃતયુગ્મનૈરયિકાઃ खलु भदन्त ! कुत उत्प-
द्यन्ते ? एवं ययैव कृष्णलेश्यक्षुल्लककृतयुग्माः । नवरमुपपातो यो वालुका-
प्रभायाम्, शेषं तदेव । वालुकाप्रभापृथिवीनीललेश्यक्षुल्लककृतयुग્मनૈरयિકા
एवमेव । एवं पङ्कपभायामपि, एवं धूमपभायामपि, एवं चतुर्ण्यपि युग्मेषु, नवरं
परिमाणं ज्ञातव्यम्, परिमाणं यथा कृष्णलेश्योદેશકે, શેષં તદેવ । તદેવં
भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥सू० १॥

इति एकत्रिंशत्तमे शतके तृतीयोदेशकः समाप्तः ॥३१-३॥

ટીકા--તૃતીયોદેશકમ્તુ નીલલેશ્યાશ્રયકઃ નીલલેશ્યા ચ તૃતીયચતુર્યપચ્ચ-

शतक ३१ उद्देशक ३--

કૃષ્ણલેશ્યાશ્રિત દ્વિતીય ઉદેશક કી વ્યાખ્યા કરકે અથ ક્રમ પ્રાપ્ત
નીલલેશ્યાશ્રિત તૃતીય ઉદેશક પ્રારમ્ભ કિયા જાતા હૈ, હસકા યહ
પ્રથમ સૂત્ર હૈ ‘નીલલેસ્સ खुड्ढाग कडजुम्म’ इत्यादि

ટીકાર્થ--યહ તૃતીય ઉદેશક નીલલેશ્યાશ્રયવાલા હૈ । નીલલેશ્યા

એકત્રીસમા શતકના ત્રીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારભ--

કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ત્રીજા ઉદ્દેશાનું કથન કરીને હવે કમથી આવેલ આ નીલ-
લેશ્યા યુક્ત ત્રીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ કરવામાં આવે છે. ‘નીલલેશ્યા
खड्ढाग कडजुम्म’ इत्यादि

ટીકાર્થ--આ ત્રીજા ઉદ્દેશો નીલલેશ્યા યુક્ત છે. નીલલેશ્યા ત્રીજા ચોથી

મીઘ્વેવ નારકપૃથિવીષુ ભવતીત્યતોઽન્ સામાન્યદ્વંડકઃ તથા તૃતીયચતુર્થપંચમી પૃથિવીદ્વંડકો ભવતીતિ 'નીલલેસસખુદ્ધાગકઢજુમ્મનેરહ્યા ણં મંતે !' નીલલેશ્યધુલ્લકકૃતયુગ્મનૈરયિકાઃ સ્વલુ ભદન્ત ! 'કઓ ઉવવજ્જંતિ' કુતઃ-કસ્માત્ સ્થાનવિશેષાદાગત્યોત્પન્નન્તે ? इति પ્રશ્નઃ, ભગવાનાહ- 'એવં જહેવ' ઇત્યાદિ, 'એવં જહેવ કળ્હલેસસખુદ્ધાગકઢજુમ્મા' એવં યથૈવ કૃણ્ણલેશ્યધુલ્લકકૃતયુગ્માઃ યથા દ્વિતીયોદેશકે કૃણ્ણલેશ્ય ધુલ્લક કૃતયુગ્મપ્રમાણકજીવાનામુત્પાદઃ કથિત સ્તેનૈવ રૂપેઽ નીલલેશ્યધુલ્લકકૃતયુગ્મપ્રમાણકજીવાનામુપપાતાદિ વક્તવ્ય ઇતિ । 'નવરં' ઉવવાઓ જહા વાલુયપ્પમાણ' નવરં કેવલમુપપાતો યથા વાલુકાપ્રમાયામ્, અન્ન સ્વલુ નીલલેશ્યા પ્રક્રાન્તા સા ચ નીલલેશ્યા વાલુ-

તૃતીય ચતુર્થ ઔર પંચમી નારક પૃથિવી મેં હી હોતી હૈ । ઇસલિયે યહાં એક સામાન્ય દ્વંડક હૈ । તથા તૃતીય ચતુર્થ ઔર પંચમી પૃથિવી કે આશ્રિત ત્રીન દ્વંડક હૈ ।

'નીલલેસસ સ્ખુદ્ધાગ કઢજુમ્મ નેરહ્યા ણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ' હે ભદન્ત ! નીલલેશ્યાવાલે ધુલ્લક કૃતયુગ્મરાશિ સંપન્ન નૈરયિક કિસ સ્થાન વિશેષ સે આકર કે નરકાવાસ મેં ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રશુશ્રી કહતે હૈં- 'એવં જહેવ કળ્હલેસસ સ્ખુદ્ધાગ કઢજુમ્મ' હે ગૌતમ ! જિસ પ્રકાર સે દ્વિતીય ઉદેશક મેં કૃણ્ણલેશ્યાવાલે ધુલ્લક કૃતયુગ્મ પ્રમાણ સંપન્ન જીવોં કા ઉત્પાત આદિ વક્તવ્ય હુઆ હૈં ઉસી પ્રકાર સે યહાં નીલલેશ્યાવાલે ધુલ્લક કૃતયુગ્મ પ્રમાણ યુક્ત જીવોં કા ઉત્પાત આદિ ભી વક્તવ્ય હુઆ હૈં । 'નવર ઉવવાઓ જહા વાલુયપ્પમાણ' પરન્તુ વિશેષ યહ હૈં કિ વાલુકાપ્રમા મેં જૈસા ઉપપાત કહા ગયા હૈં વૈસા હી ઉપપાત યહાં પર કહના ચાહિયે, યહાં નીલલેશ્યા પ્રક્રાન્ત હૈં । યહ

અને પાંચમી નારક પૃથ્વીમાં હોય છે. તેથી અહિયાં એક સામાન્ય દ્વંડક કહેલ છે. તથા ત્રીજી, ચોથી અને પાંચમી પૃથ્વી સંબંધી ત્રણ દ્વંડકો કહ્યા છે.

'નીલલેસસખુદ્ધાગકઢજુમ્મનેરહ્યા ણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ' હે ભગવન્ નીલલેશ્યા ધુલ્લક કૃતયુગ્મ રાશીવાળા નૈરયિકો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રશુશ્રી કહે છે કે- 'એવં જહેવ કળ્હલેસસખુદ્ધાગકઢજુમ્મ' હે ગૌતમ ! જે પ્રમાણે બીજા ઉદેશમાં કૃણ્ણલેશ્યાવાળા ધુલ્લક કૃતયુગ્મ પ્રમાણવાળા જીવોના ઉત્પાદના સંબંધમાં કથન કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં નીલલેશ્યાવાળા ધુલ્લક કૃતયુગ્મ પ્રમાણવાળા જીવોના ઉત્પાદ વિગેરે સંબંધમાં કહી લેવું. 'નવરં' ઉવવાઓ જહા વાલુયપ્પમાણ' પરંતુ અહિયાં વિશેષપણું એ છે કે-વાલુકાપ્રમા પૃથ્વીમાં જે પ્રમાણેનો ઉપપાત કહ્યો છે, એજ પ્રમાણેનો ઉપપાત અહિયાં પણ સમજવો.

કાપ્રમાયાં નારકપૃથિવ્યાં ભવતીતિ તન્ન વાલુકાપ્રમાયાં ચે જીવા ઉત્પન્નન્તે તેષા
મેવાત્ર ઉત્પાદો વક્તવ્ય રતે જીવા અસંજી સરીસૃપવર્જિતા ભવન્તીતિ । કૃષ્ણ-
લેશ્ય ક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મજીવાનાં વ્યુત્ક્રાન્ત્યા વ્યુત્ક્રાન્તિપદં પ્રજ્ઞાપનાયાઃ પૃથ્ઠં
પદમ્, તસ્યાનુસારેણોપપાતઃ કથિત ર્હ તુ વાલુકાપ્રમાયામિવોપપાતઃ કથિત
પતદેવોભયો વૈલક્ષણ્યં ભવતીતિ । ‘સેસં તં ચેવ’ શેષમુપપાતાતિરિક્તં સર્વં પરિ-
માણાદિકં તદેવ કૃષ્ણલેશ્યક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મજીવવદેવ જ્ઞાતવ્યમિતિ । ‘વાલુય-
પ્પમાપુઢવી નીલલેસસ સુહ્રાગ કઢજુમ્મનેરહ્યા એવં ચેવ’ વાલુકાપ્રમાપૃથિવી
નીલલેશ્યક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મનૈરયિકા એવમેવ વાલુકાપ્રમાશ્રિત નીલલેશ્ય કૃતયુગ્મ-
નારકાણામપિ વક્તવ્યતા ઔધિકનીલલેશ્યકૃતયુગ્મનારકવદેવ જ્ઞાતવ્યાઃ ।
‘એવં પંકપ્પમાણ વિ ધૂમપ્પમાણ વિ’ એવમેવ યથા વાલુકાપ્રમાશ્રિત નીલલેશ્ય

નીલલેશ્યા તૃતીય નારકપૃથિવી વાલુકા આદિ મેં હોતી હૈ ફસલિયે
વાલુકાપ્રમા મેં જો જીવ ઉત્પન્ન હોતે હૈં । ઉનકા હી યહાં ઉત્પાદ
કહના ચાહિયે યહાં અસંજી ઔર સરીસૃપ યે જીવ ઉત્પન્ન નહીં
હોતે હૈં ફનકે સિવાય બાકી કે જીવ ઉત્પન્ન હોતે હૈં । કૃષ્ણ-
લેશ્યાવાલે ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મરાશિ સંપન્ન જીવોં કા પ્રજ્ઞાપના કે
છઠા વ્યુત્ક્રાન્તિ પદ મેં ધૂમપ્રમા પૃથિવી કે કથન અનુસાર ઉત્પાન
કહા ગયા હૈ । પરન્તુ યહાં વાલુકાપ્રમા કે અનુસાર ઉપપાત કહા
ગયા હૈ । યહી દોનોં મેં વિલક્ષણતા હૈ । ‘સેસ’ તં ચેવ’ ઉપપાત સે
અતિરિક્ત ઔર સર્વ પરિમાણ આદિ કા કથન કૃષ્ણલેશ્યાવાલે ક્ષુલ્લક
કૃતયુગ્મ જીવોં કે જૈસા હી હૈ । ‘વાલુયપ્પમાપુઢવી નીલલેસસ સુહ્રાગકઢ-
જુમ્મ નેરહ્યા એવં ચેવ’ વાલુકા પ્રમાશ્રિત નીલલેશ્યાવાલે કૃતયુગ્મ રાશિ

અહિયાં નીલલેશ્યાપદ યુક્ત તે કથન કહેવાતુ છે. આ નીલલેશ્યા ત્રીજી નારક
પૃથ્વીવાલુકા પ્રભામાં હોય છે. તેથી વાલુકાપ્રભામાં જે જીવો ઉત્પન્ન થાય છે,
તેઓના જે ઉત્પાત અહિયાં કહેવો જોઈએ. અહિયાં અસંજી, સરીસૃપ
(સર્પ) અને સિહ આ જીવો ઉત્પન્ન થતા નથી. આમના શિનાય બાકીના
જીવો ઉત્પન્ન થાય છે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મવાળા જીવોના ઉત્પાદ
પ્રજ્ઞાપના સત્રના છઠા વ્યુત્ક્રાન્તિ પદમાં રહ્યો છે પરંતુ અહિયાં વાલુકાપ્રભામાં
કહ્યા પ્રમાણે ઉપપાત કહેવ છે આજ તે કથન કરતાં આ કથનમાં વિશેષ
પણ છે. ‘સેસ’ તં ચેવ’ ઉપપાતના કથન શિવાય બાકીના પરિણામ વિગેરે
સંબંધી કથન કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ જીવોના કથન પ્રમાણે જ છે,
‘વાલુયપ્પમા પુઢવી નીલલેસસ સુહ્રાગકઢજુમ્મનેરહ્યા એવં ચેવ’ વાલુકાપ્રભા
યુક્ત નીલલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મરાશી પ્રમાણે યુક્ત નારકોના કથન પણ કૃષ્ણ
લેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ રાશીપ્રમાણવાળા નારકોના કથન પ્રમાણે જ છે. ‘એવં પંક

શુલ્લકકૃતયુગ્મનારકસ્ય વક્તવ્યતા તથૈવ પદ્મપ્રભા નારકપૃથિવ્યા ધૂમપ્રભા પૃથિ-
વ્યાશ્રિતનારકાણામપિ વક્તવ્યતા જ્ઞાતવ્યા । ‘एवं चउसु वि जुम्भेसु’ एवम्
શુલ્લકકૃતયુગ્મવદેવ ચતુર્થપિ યુગ્મેષુ કૃતયુગ્મઝ્યોજદ્વાપરયુગ્મકલ્પોજરૂપેષ્વપિ
નીલલેશ્યનારકાણાં ચાલુકાપ્રભા પદ્મપ્રભા ધૂમપ્રભા તૃતીયચતુર્થપચ્ચમી પૃથિવ્યા-
શ્રિતાનાં વક્તવ્યતા જ્ઞાતવ્યા । ‘नवरं परिमाणं जाणियच्चं’ नवरं केवलं परिमाणं
ચિન્ત્યમિન્નરૂપેણ તત્તત્ યુગ્મે જ્ઞાતવ્યં ચતુરષ્ટદ્વાદશ પ્રભૃતિ શુલ્લક કૃતયુગ્માદિ
રૂપરૂપં જ્ઞાતવ્યમિત્યર્થઃ । परिमाणं तत्तदयुगं ज्ञातव्यमिति तत्र केन रूपेण ज्ञात-
व्यम्, तत्राह-‘परिमाणं’ इति, ‘परिमाणं जहा कण्ठलेस्स उद्देसए’ परिमाणं यथा

પ્રમાણ યુક્ત નારકોં કીં બી વક્તવ્યતા ઔચિક નીલલેશ્યાવાલે કૃતયુગ્મ
રાશિ પ્રમાણયુક્ત નારકોં કે જેસી હી હૈ । ‘एवं पंकप्राभाए वि धूमप्राभाए
वि’ જેસી ચાલુકાપ્રભાશ્રિત નીલલેશ્ય શુલ્લક કૃતયુગ્મવાલે નારક કી
વક્તવ્યતા હૈ વૈસી હી વક્તવ્યતા પદ્મપ્રભા નારક પૃથિવી કે ઔર
ધૂમપ્રભા પૃથિવી કે નારકોં કીં બી હૈ । ‘एवं चउसु वि जुम्भेसु’ શુલ્લક
કૃતયુગ્મ કે જેસા હી ચારોં યુગ્મોં મેં-કૃતયુગ્મ, ઝ્યોજ, દ્વાપર ઔર
કલ્પોજ-इन युगमों में भी चालुकाप्रभा, पद्मप्रभा, धूमप्रभा इन तीन
પૃથિવિયોં કે આશ્રિત હુए નીલલેશ્યાવાલે નારક જીવોં કી વક્તવ્યતા
જાનની ચાહિએ । ‘नवरं परिमाणं जाणियच्चं’ પરન્તુ ઉસ-उस युगम
મેં પરિમાણ ભિન્ન-भिन्न रूप से जानना चाहिये । और वह परिमाण
ચાર, આઠ, વારહ આદિ શુલ્લક કૃતયુગ્માદિ રૂપ હોતા હૈ એસા સમ-
જના ચાહિએ, હસી વાત કો ‘परिमाणं जहा कण्ठलेस्स उद्देसए’ इस
સૂત્રપાઠ દ્વારા સ્પષ્ટ કિયા ગયા હૈ અર્થાત્-કૃષ્ણલેશ્યોદ્દેશક મેં જેસા

‘प्राभाए वि धूमप्राभाए वि’ चालुकाप्रभा युक्त नीललेश्यावाणा शुल्लक कृतयुग्म
નારકોતુ’ કથન જે પ્રમાણે કહેલ છે, એજ પ્રમાણેતુ’ કથન પંકપ્રભા નારક
પૃથ્વીના અને ધૂમપ્રભા નારક પૃથ્વીના નારકોના સંબંધમાં પણ કહેલ છે.
‘एवं चउसु वि जुम्भेसु’ શુલ્લક કૃતયુગ્મના કથન પ્રમાણે જ ત્રે યુગ્મોમાં પણ
એટલે કે-કૃતયુગ્મ, ઝ્યોજદ્વાપર અને કલ્પોજ આ યુગ્મોમાં પણ ચાલુકાપ્રભા
પંકપ્રભા, ધૂમપ્રભા, આ ત્રણ પૃથ્વીયોના આશ્રયવાળા નીલલેશ્યાવાળા નારક
હોતો’ કથન સમજવું.

‘नवरं परिमाणं जाणियच्चं’ પરન્તુ તે તે યુગ્મોમાં પરિણામ અલગ-
અલગ હોવાતું સમજવું અને તે પરિણામ ચાર, આઠ, બાર વિગેરે શુલ્લક
કૃતયુગ્મ વિગેરે પણાવાળું હોય છે. તેમ સમજવું આ વાત ‘परिमाणं जहा
कण्ठलेस्स उद्देसए’ આ સૂત્રદ્વારા સમજાવેલ છે. અર્થાત્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ઉદે-

કૃષ્ણલેશ્યોદેશકે કથિતં તથૈવ જ્ઞાતવ્યમ્, તથાહિ-ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મનારકાણાં પરિ-
માણં ચત્વારો વા, અષ્ટૌ વા, દ્વાદશ વા, ષોડશ વા, સંખ્યાતા વા, અસંખ્યાતા વા,
સમુત્પન્નંતે । ંયોજનીલલેશ્યનારકાસ્ત્રયો વા, સપ્ત વા, એકાદશ વા, પચ્ચદશ વા,
સંખ્યાતા વા અસંખ્યાતા વા જાયન્તે એક સમયે । દ્વાપરયુગ્મ નીલલેશ્યનારકાઃ
દ્વૌ વા, ષડ્ વા, દશ વા, ચતુર્દશ વા, સંખ્યાતા વા, અસંખ્યાતા વા એકસમયેન જાય-
ન્તે । કલ્પોજ નીલલેશ્યનારકા એકો વા, પચ્ચ વા, ત્રયો વા, દશ વા, સંખ્યાતા
વા, અસંખ્યાતા વા જાયન્તે એકસમયે । एवं क्रमेण कृष्णलेश्योदेशके प्रोक्तप्रकारेण
परिमाणं ज्ञातं भवतीति । ‘सेसं तदेव’ शेषं परिमाणातिरिक्तं सर्वमुपपातादिकं

પરિમાણ કહ્યા ગયા હૈ વૈસા હી જાનના ચાહિયે-જૈસે-ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ
નારકોં કા પરિમાણ ચાર અથવા આઠ અથવા બારહ અથવા સોલહ
અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત હૈ-એક સમય મેં યે નારક રતની
સંખ્યા મેં વહાં ઉત્પન્ન હોતે હૈ । ંયોજ નીલલેશ્ય નારક ત્રીન અથવા સાત
અથવા ગ્યારહ અથવા પન્દરહ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત એક
સમય મેં ઉત્પન્ન હોતે હૈ । દ્વાપરયુગ્મ નીલલેશ્યાવાલે નારક દો અથવા
છહ અથવા દશ અથવા ચૌદહ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત એક
સમય મેં ઉત્પન્ન હોતે હૈ । કલ્પોજ નીલલેશ્ય નારક એક અથવા પાંચ
અથવા નૌ અથવા તેરહ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત એક સમય
મેં ઉત્પન્ન હોતે હૈ । इस प्रकार से कृष्णलेश्योदेशके में कहे गये अनुसार
परिमाण जाना जाता है । ‘सेसं तदेव’ परिमाण से अतिरिक्त और

શ માં જે પ્રમાણે પરિણામ કહેલ છે, એજ પ્રમાણેનુ પરિણામ અહિયાં
સમજવું. જેમ કે-ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારકોનું પરિણામ ચાર અથવા આઠ
અથવા બાર અથવા સોળ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત છે.-એક
સમયમાં આ નારકો આટલી સંખ્યામાં ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે. ંયોજ નીલલેશ્યા
નારક ત્રણ અથવા સાત અથવા અગિયાર અથવા પંદર અથવા સંખ્યાત
અથવા અસંખ્યાત એક સમયમાં ઉત્પન્ન થાય છે. દ્વાપરયુગ્મ નીલલેશ્યાવાળા
નારકો બે અથવા છ અથવા દસ અથવા ચૌદ અથવા સંખ્યાત અથવા અ
સંખ્યાત એક સમયમાં ઉત્પન્ન થાય છે. કલ્પોજ નીલલેશ્યાવાળા નારકો એક
અથવા પાંચ અથવા નવ અથવા તેર અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત
એક સમયમાં ઉત્પન્ન થાય છે. એ રીતે કૃષ્ણલેશ્યા ઉદેશમાં કહ્યા પ્રમાણે
પરિણામ સમજવું જોઈએ. ‘સેસં તદેવ’ પરિણામ શિવાય બાકીનું ઉત્પાદ
સંબંધી કથન પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે જ છે. તેમ સમજવું.

પૂર્વવદેવ જ્ઞાતવ્યમિતિ । ‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ હે મદન્ત ! નીલલેશ્ય ક્ષુલ્લકકૃતયુગ્માદિ નારકવિષયે યદ્ દેવાનુપ્રિયેણ કથિતં તત્સર્વં સર્વથૈવ સત્યમિતિ કથયિત્વા ગૌતમો મગવન્તં વન્દતે નમસ્યતિ વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા સંયમેન તપસા આત્માનં ભાવયન્ વિહરતિ ॥સૂ૦ ૧॥

इति श्री-विश्वविख्यातजगद्बलभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि - ‘जैनाचार्य’
पूज्यश्री-घासीलालब्रतिविरचितायां “श्री भगवतीसूत्रस्य” प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायां एकत्रिंशत्तमे शतके तृतीयोद्देशकः समाप्तः ॥३१-३॥

સવ ઉત્પાદ આદિ પૂર્વોક્ત જૈસે હી જાનના ચાહિયે ‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ હે મદન્ત ! નીલલેશ્ય ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્માદિ નારકોં કે વિષય જે જો આપ દેવાનુપ્રિય ને કહા હૈં વહ સવ સર્વથા સત્ય હી હૈં । એસા કહ ફર ગૌતમસ્વામીને પ્રભુશ્રી કો વન્દના કી ઓર નમસ્કાર કિયા, વન્દના નમસ્કાર કર ફિર વે સંયમ ઓર તપ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુએ અપને સ્થાન પર ચિરાજમાન હો ગયે । ॥સૂ૦ ૧॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
“भगवतीसूत्र” की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके तीसवें शतकका
तृतीय उद्देशक समाप्त ॥३१-३॥

‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ નીલલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ વિગેરે નારકોના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કયું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે, હે ભગવન્ આપનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વદના કરી અને નમસ્કાર કર્યા વદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. સૂ૦ ૧॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराजकृत ‘भगवतीसूत्र’ नी
प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याना अकत्रीसभा शतकने त्रीने उद्देशो समाप्त ॥३०-२॥



અથ ચતુર્થોદ્દેશકઃ પ્રારંભ્યતે

તૃતીયાદેશકં નિરૂપ્ય ક્રમપ્રાપ્તં ચતુર્થોદ્દેશકં કાપોતલેશ્યાશ્રયં નિરૂપયતિ તસ્યેદં સૂત્રમ્—‘કાઉલેસ્સ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—કાઉલેસ્સ ચુડ્ડાગ કડજુમ્મનેરહયા ણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ એવં જહેવ કળહલેસ્સચુડ્ડાગકડજુમ્મં નવરં ઉવવાઓ જો રયણપ્પમાણ, સેસં તં ચેવ । રયણપ્પમા પુઢવી કાઉલેસ્સ ચુડ્ડાગ કડજુમ્મનેરહયા ણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ એવં ચેવ એવં સક્કરપ્પમાણ વિ એવં વાલુયપ્પમાણ વિ, એવં ચઉસુ વિ જુમ્મેસુ । નવરં પરિમાણં જાણિયઠ્ઠં પરિમાણં જહા કળહલેસ્સ ઉદ્દેસણ સેસં તં ચેવ । સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ ॥સૂ૦ ૧॥

એકતીસદ્દમે સણ ચઉત્થો ઉદ્દેસો સમત્તો ॥૩૧-૪॥

છાયા—કાપોતલેશ્યક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મનૈરયિકાઃ સ્વલ્પ મદન્ત ! કુત ઉત્પદ્યન્તે એવં યથૈવ કૃષ્ણલેશ્યક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મં નવરમુપપાતો યો રત્નપ્રમાયામ્, શેષં તદેવ । રત્નપ્રમાપૃથિવી કાપોતલેશ્યક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મનૈરયિકાઃ સ્વલ્પ મદન્ત ! કુત ઉત્પદ્યન્તે ? એવમેવ । એવં શર્કરાપ્રમાયામપિ એવં વાલુકાપ્રમાયામપિ એવં ચતુર્ષ્વપિ યુગ્મેષુ । નવરં પરિમાણં જ્ઞાતવ્યમ્, પરિમાણં યથા કૃષ્ણલેશ્યોદ્દેશકે શેષં તદેવ । તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ ॥મૂ૦ ૧॥

એકત્રિશતમે શતકે ચતુર્થોદ્દેશકઃ સમાપ્તઃ ॥૩૧-૪॥ -

ટીકા—અયં ચતુર્થોદ્દેશકઃ કાપોતલેશ્યાશ્રયઃ સા ચ કાપોતલેશ્યા પ્રથમ-દ્વિતીયતૃતીયરત્નપ્રમાશર્કરાપ્રમા વાલુકાપ્રમાપૃથિવીષ્વેવ ભવતીતિ કૃત્વાઽત્ર સામાન્યદણ્ડકો રત્નપ્રમાદિદણ્ડકત્રયં ચ ભવતીતિ । સમ્પ્રતિ અક્ષરાર્થં વિવૃણોમિ ‘કાઉલેસ્સ ચુડ્ડાગ કડજુમ્મનેરહયા ણં મંતે ! કઓર્હિતો ઉવવજ્જંતિ’ કાપોત-

શતક ૩૧ ઉદ્દેશક ૪--

તૃતીય ઉદ્દેશક કા નિરૂપણ કરકે અથ ક્રમ પ્રાપ્ત ચતુર્થ ઉદ્દેશક કા જો કિ કાપોતલેશ્યા કે આશ્રિત હૈ નિરૂપણ કિયા જાતા હૈ ।

‘કાઉલેસ્સ ચુડ્ડાગ કડજુમ્મ નેરહયા ણં મંતે !’ ઇત્યાદિ

ચોથા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ--

ત્રીજા ઉદ્દેશાનું નિરૂપણ કરીને હવે કમથી આવેલ આ ચોથા ઉદ્દેશાનું કે જે કાપોતલેશ્યા યુક્ત છે. તેનું નિરૂપણ કરવામાં આવે છે.—કાઉલેસ્સચુડ્ડાગ-કડજુમ્મનેરહયા ણં મંતે !’ ઇત્યાદિ

લેશ્યધુલ્લકકૃતયુગ્મનૈરયિકાઃ સ્વલુ મદન્ત ! કુતઃ-કરમાત્ સ્થાનવિશેષાદાગત્ય ઉત્પદ્યન્તે ? इति प्रश्नः, भगवानाह-‘एवं जहेव’ इत्यादि, ‘एवं जहेव कण्ठलेस्स खुड्ढाग कडजुम्म०’ एवं यथैव कृष्णलेश्यावाले कृतयुगमनैरयिकवदेव इहापि परिणामादि ज्ञातव्यः तथाहि-कापोतलेश्यावाले धुल्लककृतयुगमनैरयिकः कुत उत्पद्यन्ते ?

ટીકાર્થ-યહ ચતુર્થ ઉદ્દેશક કાપોતલેશ્યા કે આશ્રિત છે । યહ કાપોતલેશ્યા પ્રથમ, દ્વિતીય તૃતીય નારકો મેં હોતી છે । પ્રથમ નરક કા નામ રત્નપ્રભા છે । દ્વિતીય નરક કા નામ શર્કરા પ્રભા છે । તૃતીય નરક કા નામ વાલુકાપ્રભા છે । હસ પ્રકાર યહાં એક સામાન્ય દણ્ડક છે ઓર રત્નપ્રભાદિ સમ્બન્ધી ત્રીન દણ્ડક છે ‘કાઉલેસ્સ સુહ્ડાગ કડજુમ્મ નેરહ્યાણં મંતે ! કઓહિંતો ઉવવજ્જતિ’ છે મદન્ત ! કાપોતલેશ્યાવાલે ધુલ્લક કૃતયુગ્મરાશિ પ્રમિત નૈરયિક કિસ સ્થાન વિશેષ સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે છે ? ઉત્તર મેં પ્રમુશ્રી કહતે છે ‘એવં જહેવ કણ્ઠલેસ્સ સુહ્ડાગ કડજુમ્મ૦’ છે ગૌતમ ! જૈસા કૃષ્ણલેશ્યાવાલે ક્ષુદ્ર કૃતયુગ્મ નૈરયિકોં કે સમ્બન્ધ મેં કહા ગયા છે વૈસા હી યહાં પર કહના ચાહિયે । અર્થાત્ જવ ગૌતમસ્વામી ને પ્રમુશ્રી સે એસા પ્રછા-હે મદન્ત ! કાપોતલેશ્યાવાલે ધુલ્લક નૈરયિક કહાં સે ઉત્પન્ન હોતે છે ? તો ઉત્તર મેં પ્રમુશ્રી ને ઉનસે એસા કહા-કિ હે ગૌતમ ! કાપોત લેશ્યાવાલે ધુલ્લકનૈરયિક નૈરયિકોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન નહીં હોતે છે । દેવોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન નહીં હોતે છે કિન્તુ પચ્ચેન્દ્રિય-

ટીકાર્થ-આ ચોથો ઉદ્દેશો કાપોત લેશ્યા યુક્ત કહેલ છે. આ કાપોત-લેશ્યા પહેલા, બીજા, અને ત્રીજા નારકોમાં જ હોય છે. પહેલા નરકનું નામ રત્નપ્રભા છે. બીજા નરકનું નામ શર્કરા પ્રભા છે ત્રીજા નરકનું નામ વાલુકાપ્રભા છે. આ રીતે અહિયાં એક સામાન્ય દંડક કહેલ છે, અને રત્ન પ્રભા વિગેરે સંબંધમાં ત્રણ દંડકો કહ્યા છે. ‘કાઉલેસ્સસુહ્ડાગકડજુમ્મ-નેરહ્યા ણમંતે ! કઓહિંતો ઉવવજ્જતિ’ હે ભગવન્ કાપોત લેશ્યાવાળા કુદ્દલક કૃતયુગ્મરાશિ યુક્ત નૈરયિક કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રમુશ્રી કહે છે કે-‘એવં જહેવ કણ્ઠલેસ્સસુહ્ડાગકડ-જુમ્મ૦’ હે ગૌતમ ! કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કુદ્દલક કૃતયુગ્મ નૈરયિકોના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું કથન કરેલ છે, એજ પ્રમાણેનું સઘણું કથન અહિયાં સમજવું. અર્થાત્ ગૌતમસ્વામીએ જ્યારે એવું પૂછ્યું કે-હે ભગવન્ કાપોતલેશ્યાવાળા કુદ્દલક નૈરયિકો કયાથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રમુશ્રી તેઓને કહે છે કે-હે ગૌતમ ! કાપોત લેશ્યાવાળા કુદ્દલક નૈરયિક નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થતા નથી. દેવોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થતા નથી. પરંતુ

હે ગૌતમ ! યથાનામકઃ કશ્ચિત્ પ્લવકઃ પ્લવમાનોઽધ્યવસાયનિર્વર્તિતેન કર્ણો-
પાયેન સ્વસ્થાનં પરિત્યજ્ય આગમિસ્થાનાન્તરં પ્રતિપદ્યતૈ એવમેવ જીવોઽધ્યવસાય-
યોગનિર્વર્તિતૈન કર્ણોપાયેન પૂર્વકાલિકમ્ભવં પરિત્યજ્ય ભવાન્તરમાસાદયતિ ।
હે ભદ્રન્ત ! તેષાં જીવાનાં કથં શીઘ્રા ગતિર્ભવતિ કથં શીઘ્રશ્ચ ગતિવિષયઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ
હે ગૌતમ ! યથાનામકઃ કશ્ચિત્ દરુણો વલવાન યાવત્ ત્રિસપ્તયકેન વિગ્રહેણોત્પ-
દ્યન્તે તથા શીઘ્રા ગતિર્ભવતિ તથા શીઘ્રશ્ચ ગતિવિષયઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ । તે જીવા ભદ્ર-
ન્ત ! કથં પરમત્રાયુષ્કં પ્રકુર્શન્તિ ગૌતમ ! અધ્યવસાયયોગનિર્વર્તિતેન કર્ણો-

તિર્ગમ્યોનિકોં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ઓર ગર્ભત મનુષ્યોં
મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં । હે ભદ્રન્ત ! વે વહાં કિસ પ્રકાર
સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? હે ગૌતમ ! જિસ પ્રકાર કોઈ કૂદનેવાલા
વ્યક્તિ કૂરતા કૂદતા પૂર્વ કે સ્થાન કો છોડકર આગે કે સ્થાન પર
પહુન્ચ જાતા હૈં ડહી પ્રકાર સે નૈરયિક ભી પૂર્વવર્તીં ભવ કો છોડકર
અધ્યવસાય રૂપ કારણ કે વશ સે આગે કે ભવ કો પ્રાપ્ત કરલેતે હૈં । હે
ભદ્રન્ત ! ડન જીવોં કી શીઘ્ર ગતિ કૈસી હોતી હૈં ? ઓર ડસ શીઘ્રગતિ
કા વિષય કૈસા હોતા હૈં ? જૈસે કોઈ તરુણ વચાન પુરુષ ચૌદશ્વે
શતક મેં પ્રથમ ઉદ્દેશક મેં કહે ગયે અનુસાર હો, તો જૈસા વહાં કહા
ગયા હૈં ડસકે અનુસાર વે નૈરયિક ત્રીન સમયવાલી વિગ્રહગતિ સે વહાં
નરકાવાસ મેં ઉત્પન્ન હોતે હૈં । હસ પ્રકાર કી ડનકી શીઘ્ર ગતિ હોતી હૈં
ઓર એસા હી ડનકી શીઘ્ર ગતિ કા વિષય હોતા હૈં । હે ભદ્રન્ત ! વે
નારક પરમવ કી આયુ કા બન્ધ કૈસે કરતે હૈં ? હે ગૌતમ ! અધ્યવસાય

પચેન્દ્રિય તિર્યચ્યેનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે તથા ગર્ભ જે
મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે. હે ભગવન્ તેઓ ત્યાં કઈ રીતે આવીને
ઉત્પન્ન થાય છે ? આના ઉત્તરમાં હે ગૌતમ ! જે પ્રમાણે કોઈ કૂદવાવાળો
પુરુષ કૂદતો કૂદતો પહેલાના સ્થાનને છોડીને આગળના સ્થાન પર પહોંચી જાય
છે, એજ પ્રમાણે નૈરયિકો પણ પહેલાના ભવને છોડીને અધ્યવસાયરૂપ કારણને
વશ થઈને આગળના સ્થાન પર પહોંચી જાય છે. હે કર્ણ નિધાન ભગવન્ તે
જીવોનું શીઘ્રગમન કેવા પ્રકારનું હોય છે ? અને તે શીઘ્ર ગમનનો વિષય કેવો
હોય છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-હે ગૌતમ ! જેમ કોઈ તરુણ બળવાન
પુરુષ ચૌદમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશમાં કહ્યા પ્રમાણે તે નૈરયિકો ત્રણ સમય-
વાળી વિગ્રહ ગતિથી ત્યાં નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે. આ રીતની તેઓની
શીઘ્રગતિ હોય છે. અને તેઓના શીઘ્ર ગમનનો વિષય પણ એજ પ્રમાણેનો
હોય છે. હે ભગવન્ તે નારકો પરભવના આયુષ્યનો બંધ કેવી રીતે કરે છે ?

પાયેન એવં સ્વલ્લુ તે જીવાઃ પરમવાયુર્જ્ઞં પ્રકુર્વાન્તિ । હે મદન્ત ! તેષાં જીવાનાં કાપોતલેશ્યાશ્રયાણાં કથં ગતિર્ભવતિ ગૌતમ ! આયુઃક્ષયેણ મૃત્યુક્ષયેણ સ્થિતિ-ક્ષયેણ એવં ગતિર્ભવતિ । હે મદન્ત ! તે જીવાઃ કાપોતલેશ્યાશ્રયા કિમ્ આત્મ-ઋદ્ધ્યોત્પદ્યન્તે પરઋદ્ધ્યા વા ઉત્પદ્યન્તે ? હે ગૌતમ ! આત્મઋદ્ધ્યા સમુત્પદ્યન્તે નો પરઋદ્ધ્યા, હે મદન્ત ! તે કાપોતલેશ્યા જીવાઃ કિમાત્મકર્મણા ઉત્પદ્યન્તે પરકર્મણા વા ? હે ગૌતમ ! આત્મકર્મણા જાયન્તે નો પરકર્મણા । હે મદન્ત ! કાપોતલેશ્યા જીવાઃ કિમાત્મપ્રયોગેણોત્પદ્યન્તે પરપ્રયોગે વા હે ગૌતમ ! આત્મ-

યોગ સે નિર્વર્તિત કરણોપાય સે વે નારક પરમવ કી આયુકા વન્ધ કરતે હિં । હે મદન્ત ! કાપોતલેશ્યાવાલે उन जीवों की गति कैसी होती है ? गौतम ! आयु के क्षय से, मृत्यु के क्षय से और स्थिति के क्षय से होती है । हे मदन्त ! कपोतलेश्याश्रयवाले वे जीव क्या आत्मऋद्धि से उत्पन्न होते हैं ? या परऋद्धि से उत्पन्न होते हैं ? हे गौतम ! वे जीव वहाँ से आत्मऋद्धि से उत्पन्न होते हैं, परऋद्धि से उत्पन्न नहीं होते हैं । हे मदन्त ! वे कपोतलेश्यावाले जीव क्या आत्मकर्म से उत्पन्न होते हैं ? या परकर्म से उत्पन्न होते हैं ? हे गौतम ! वे जीव आत्मकर्म से ही उत्पन्न होते हैं परकर्म से उत्पन्न नहीं होते हैं । हे मदन्त ! वे कपोतलेश्यावाले जीव क्या आत्मप्रयोग से उत्पन्न होते हैं ? या परप्रयोग से उत्पन्न होते हैं ? हे गौतम ! वे जीव आत्मप्रयोग से ही उत्पन्न होते हैं परप्रयोग

હે ગૌતમ ! અધ્યવસાય યોગથી નિર્વર્તિત કરવાના ઉપાયથી તે નારકો પર ભવના આયુષ્યનો બંધ કરે છે હે ભગવન્ કાપોતલેશ્યાવાળા તે જીવોની ગતિ કેવી હોય છે ? હે ગૌતમ ! આયુષ્યના ક્ષયથી ભવના ક્ષયથી અને સ્થિતિના ક્ષયથી તેઓની ગતિ થાય છે. હે ભગવન્ કાપોતલેશ્યાના આશ્રય વાળા તે જીવો શું આત્મઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? કે પરઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થાય છે. હે ગૌતમ ! તે જીવો ત્યાં આત્મઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થાય છે. પરઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થતા નથી. હે ભગવન્ તે કાપોતલેશ્યાવાળા જીવો આત્મકર્મથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા પરકર્મથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ ! તે જીવો આત્મકર્મથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે. પરકર્મથી ઉત્પન્ન થતા નથી. હે ભગવન્ તે કાપોતલેશ્યાવાળા જીવો શું આત્મ પ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા પર પ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ ! તે જીવો આત્મપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે, પરપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થતા નથી. વિગેરે પ્રકારથી કૃષ્ણ લેશ્યાના સંબંધમાં કહેલ સઘળું કથન અહિયાં કહેવું જોઈએ.

પયોગેણોત્પદ્યન્તે નો પરપ્રયોગેણોત્યાદિકં સર્વં કૃષ્ણલેશ્યપ્રકરણોદિતમિદં જ્ઞાત-
વ્યમ્ इति । ‘નવરં ઉવવાઓ રચણપ્પમાણ’ નવરં કેવલં પૂર્વાપેક્ષયા વૈલક્ષણ્યમિદં
યત્ કાપોતલેશ્ય જીવાનામુપપાતો યથા રત્નપ્રમાયાં કથિતઃ તથૈવ સામાન્યદણ્ડકે
ઉપપાતો વર્ણનીય इति । ‘સેસં તં ચેવ’ શેષમુપપાતાતિરિક્તં સર્વં પરિમાણાદિકં
તદેવ કૃષ્ણલેશ્યનારકીય દ્વિતીયોદ્દેશકવદેવ જ્ઞાતવ્યમિતિ । સામાન્યદણ્ડકઃ
કાપોતલેશ્યજીવાનામિતિ । ‘રચણપ્પમાણુદ્ધવીકાઉલેસ્સ સુહ્દાગકહ્હજુમ્મ નેરહયા ણં
મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ રત્નપ્રમાપૃથિવી કાપોતલેશ્યધુલ્લક કૃતયુગ્મનૈરયિકાઃ
સ્વલ્લ ભદન્ત ! કુતઃ-કસ્માત્ સ્થાનવિશેષાદાગત્ય રત્નપ્રમાયામુત્પદ્યન્તે ? इति
પ્રશ્નઃ, ભગવાનાહ-‘एवं’ इत्यादि, ‘एवं चैव’ एवमेव यथैव सामान्यदण्डके
કાપોતલેશ્યનારકજીવાનામુત્પત્તિઃ કથિત્વા તથૈવ રત્નપ્રમાપથમનારકાશ્રિત કાપો-

સે નહીં । इत्यादि सब यह कृष्णलेश्योदित प्रकरण यहां कहना
चाहिये ‘नवरं’ उववाओ रचणप्पमाए’ परन्तु पूर्व की अपेक्षा से यही
वैलक्षण्य है कि कपोतलेश्यावालों का उपपात जैसा रत्नप्रभा में कहा
गया है वैसा ही सामान्य दण्डक में उपपात कहना चाहिये । ‘सेसं’ तं
‘चैव’ उपपात से अतिरिक्त और सब परिमाण आदिक कृष्णलेश्य
नारक के द्वितीय उद्देशक के जैसे ही जानना चाहिये । ऐसा यह
सामान्य दण्डक कपोतलेश्यावाले जीवों का है । ‘रत्नप्रभा पुढवीकाउ-
लेस्स सुह्दाग कहजुम्म नेरहयाणं मंते कओ उववज्जति’ हे
भदन्त ! कपोतलेश्यावाले क्षुद्रकृतयुग्मराशि प्रमित रत्नप्रभा
के नैरयिक किस स्थान विशेष से आकर के रचणप्पमा रूप नरकावास
में उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-‘एवं चैव’ हे गौतम !
सामान्यदण्डक में कपोतलेश्यावाले नारक जीवों का जैसा उपपात कहा

‘नवर उववाओ रचणप्पमाए’ परन्तु पહેલાના કરતાં અહિં એજ વિલ-
ક્ષણ્યપણુ છે કે-કાપોતલેશ્યાવાળાઓનો ઉપપાત જે પ્રમાણે રત્નપ્રભામાં કહે-
વામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનો ઉપપાત સામાન્ય દંડકમાં કહેવો જોઈએ.
‘સેસ તં ચેવ’ ઉપપાતના કથન શિવાય બાકીનું પરિણામ વિગેરે કથન
કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નારકના બીજા ઉદ્દેશમાં કહ્યા પ્રમાણે સમજવું એ પ્રમાણે આ
સામાન્ય દંડક કાપોતલેશ્યાનાં સંબંધમાં કહેલ છે.

‘રચણપ્રમા પુઢવી કાઉલેસ્સ સુહ્દાગકહજુમ્મ નેરહયાણં મંતે ! કઓ
ઉવવજ્જંતિ’ હે ભગવન્ કાપોતલેશ્યાવાળા, ક્ષુદ્ર કૃતયુગ્મ રાશિથી યુક્ત રત્ન
પ્રભાના નૈરયિકો કયા સ્થાન વિશેષમાંથી આવીને રત્નપ્રભા રૂપ નરકાવાસમાં
ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘एवं चैव’ હે

હલેશ્યજીવાનામપિ ઉપપાતો જ્ઞાતવ્યઃ, ન નૈરયિકાદારગત્ય ઉત્પદ્યન્તે કિન્તુ પૃષ્ઠેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકૈશ્ય આગત્ય સમુત્પદ્યન્તે રત્નપ્રમાયાં કાપોતલેશ્યાશ્રયા નારકાઃ, તથા ગર્ભજમનુષ્યેશ્યઆગત્યોત્પદ્યન્તે નો દેવેશ્ય આગત્ય કાપોતલેશ્યાઃ રત્નપ્રમાયાસુત્પદ્યન્તે इत्यादિકं सर्वं सामान्यदण्डकवदेव રત્નપ્રમા દંડકેऽપિ જ્ઞાતવ્યમિતિ 'एवं सक्करप्पभाएवि' एवं રત્નપ્રમાયદેવ શર્કરાપ્રમાયામપિ દ્વિતીયનારકપૃથિવ્યાં કાપોતલેશ્ય નારકજીવાનામુપપાતાદિ જ્ઞાતવ્યઃ 'एवं बालुयप्पभाए वि' एवं રત્નપ્રમાદંડકવદેવ બાલુકાપ્રમાયામપિ તૃતીયનારકપૃથિવ્યાં કાપોતલેશ્યાશ્રયજીવાનામુપપાતાદિ જ્ઞાતવ્યઃ । 'एवं चउसु वि जुम्मेसु' एवं ચતુર્થપિ કૃતયુગ્મઞ્ચોજ-

ગયા હૈ उसी प्रकार से वह प्रथम नारकाश्रित कापोतलेश्य जीवों का भी जानना चाहिये, तथा च-वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न नहीं होते हैं और न देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं किन्तु पृष्ठेन्द्रिय तिर्यग्ये.निकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं और गर्भज मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं । इस प्रकार का यह कथन जैसा कि सामान्य दण्डक में कापोतलेश्याश्रित नारक जीवों के सम्वन्ध में कहा गया है वैसा ही सब कथन इनका रत्नप्रभा दण्डक में भी कहना चाहिये, 'एवं सक्करप्पभाए वि एवं बालुयप्पभाए वि' रत्नप्रभा दण्डक के कथन जैसा कथन शर्कराप्रभा दण्डक में और बालुकाप्रभा दण्डक में भी उन कापोतलेश्य नारक जीवों के उत्पाद आदि का जानना चाहिये ।

'एवं चउसु वि जुम्मेसु' इसी प्रकार से कृतयुग्म, ञ्चो ज द्वापरयुग्म और कल्योज रूप चारों युग्मों में भी उत्पात आदि समझना चाहिये

ગૌતમ । સામાન્ય દંડકમાં કાપોતલેશ્યાવાળા નારક જીવોના ઉપપાત જે રીતે કહેલ છે, એજ પ્રમાણે પ્રથમ નરકોવાળા કાપોતલેશ્યાવાળા જીવોના ઉપપાત પણ સમજવો. તથા તેઓ નૈરયિકે.માંથી આવીને ઉત્પન્ન થતા નથી. તથા દેવોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થતા નથી પરંતુ પૃષ્ઠેન્દ્રિય તિર્ય'ગ્ય યોનિકો માંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે અને ગર્ભજ મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે. આ પ્રમાણેનું આ કથન જે રીતે સામાન્ય દંડકમાં કાપોતલેશ્યાવાળા નારક જીવોના સંબંધમાં કહેલ છે. એજ પ્રમાણે તે સઘળું કથન આ રત્નપ્રભા દંડકમાં પણ કહેવું જોઈએ. 'एवं सक्करप्पभाए वि' રત્નપ્રભા દંડકના કથન પ્રમાણેનું કથન શર્કરા પ્રભા દંડકમાં પણ તે લેશ્યાવાળા નારક જીવોના ઉપપાત વિગેરેના સંબંધમાં સમજવું.

'एवं चउसु वि जुम्मेसु' આજ પ્રમાણે કૃતયુગ્મ ઞ્ચોજદ્વાપર યુગ્મ, અને કલ્યોજ રૂપ ચારે યુગ્મોમાં પણ ઉપપાત વિગેરે સમજવા. 'नवर'

દ્વાપરયુગ્મકલ્પોજરૂપેષુ યુગ્મેષ્વપિ ઉપપાતાદિ જ્ઞાતવ્યઃ । ‘નવરં પરિમાણં જા-
ણિયવ્વં’ નવરં કેવલં તત્ત્વ યુગ્મેષુ વિશિષ્ટપરિમાણં ચતુરષ્ટ દ્વાદશમ્ભૂતિ ક્ષુલ્લક
કૃતયુગ્માદિ સ્વરૂપં જ્ઞાતવ્યમ્ ! કેન રૂપેણ ચતુરષ્ટાદિકં પરિમાણં જ્ઞાતવ્યં તત્રાદ-
‘પરિમાણં’ इत्यादि, ‘પરિમાણં જહા કળહલેસ્સ ઉદેસણ, પરિમાણં યથા કૃષ્ણલેશ્યો-
દેશકે કથિતં તથૈવ ઇદાપિ વિવિચ્ય જ્ઞાતવ્યમિતિ, તથાહિ કૃતયુગ્મકાપોતલેશ્યસ્ય
ચત્વારોઽઠ્ઠૌ વા, દ્વાદશ વા, પોહશ વા, સંખ્યાતા વા, અસંખ્યાતા વા. ત્રયોજકા-
પોતલેશ્યસ્ય ત્રયો વા, સપ્ત વા, એકાદશ વા, પચ્ચદશ વા, સંખ્યાતા વા, અસં-
ખ્યાતા વા, દ્વાપરયુગ્મકાપોતલેશ્યસ્ય દ્વૌ વા, ષડ્ વા, દશ વા, ચતુર્દશ વા,
કલ્પોજ કાપોતલેશ્યસ્ય તુ એકો વા, પચ્ચ વા, નવ વા, ત્રયોદશ વા, સંખ્યાતા

‘નવરં પરિમાણં જાણિયવ્વં’ પરન્તુ ડન-ડન યુગ્મોં મેં ચાર, આઠ,
દ્વાદશ, આદિ ક્ષુલ્લકકૃતયુગ્માદિરૂપ વિશિષ્ટ પરિમાણપૂર્વોક્ત જૈસા
હી જાનનાં ચાહિયે, યહી બાન-‘પરિમાણં જહા કળહલેસ્સ ઉદેસણ’ હસ
સૂત્ર દ્વારા પુષ્ટ કી ગઈ હૈ । કિસ રૂપ સે યહ ચાર આઠ આદિ રૂપ પરિ-
માણ જાનનાં ચાહિયે ? તો હસકે લિયે ‘પરિમાણં જહા કળહલેસ્સ ઉદે-
સણ’ એહા કહા ગયા હૈ કિ કૃષ્ણલેશ્યા ઉદેશક મેં જો પરિમાણ કહા
ગયા હૈ વહ યહાં પર મી ભિન્ન-ભિન્ન રૂપ સે જાનનાં ચાહિયે । જૈસે-
કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત કાપોતલેશ્યાવાલે નારક જીવ એક સમય
મેં ચાર, આઠ, બારહ, સોલહ, સંખ્યાત યા અસંખ્યાત ઉત્પન્ન હોતે હૈ
ત્રયોજરાશિ પ્રમિત કાપોતલેશ્યાવાલે નારક જીવ ત્રીન, સાત, ગ્યારહ,
પન્દરહ, સંખ્યાત યા અસંખ્યાત એક સાથ ઉત્પન્ન હોતે હૈ । દ્વાપરયુગ્મ
રાશિ પ્રમિત કાપોતલેશ્યાવાલે નારક જીવ એક સાથ દો, છહ, દશ

પરિમાણ જાણિયવ્વં’ પરંતુ તે તે યુગ્મામાં ચાર, આઠ, બાર, વિગેરે ક્ષુલ્લક
કૃતયુગ્મ વિગેરે રૂપ વિશેષ પરિણામ પડેલાં કહ્યા પ્રમાણે જ સમજવું એજ
વાત-‘પરિમાણ જહા કળહલેસ્સ ઉદેસણ’ આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પુષ્ટ કરવામાં
આવેલ છે ક્ષી રીતે આ ચાર, આઠ, વિગેરે પ્રકારનું પરિણામ સમજવું,
? તો આ સંબંધના ‘પરિમાણં જહા કળહલેસ્સ ઉદેસણ’ આ સૂત્રપાઠ કહેલ છે.
આ સૂત્રપાઠથી એ કહ્યું છે કે-કૃષ્ણલેશ્યાના ઉદેશમાં જે પરિમાણ કહેવામાં
આવેલ છે, તે અહિયાં પણ જુદા જુદા પ્રકારથી સમજવું જેમ કે-કૃતયુગ્મ
રાશિયુક્ત કાપોતલેશ્યાવાળા નારક જીવો એક સમયમાં ચાર, આઠ, બાર,
સોળ સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત ઉત્પન્ન થાય છે ત્રયોજરાશિ પ્રમિત કાપોત
લેશ્યાવાળા નારક જીવો ત્રણ, સાત, અગીયાર, પંદર સંખ્યાત અથવા અ
સંખ્યાત એક સાથે ઉત્પન્ન થાય છે. દ્વાપર યુગ્મરાશિ પ્રમાણ કાપોતલેશ્યા

દા, અસંખ્યાતા વેતિ । ‘સૈસં તં ચેવ, શેષં પરિમાણાતિરિક્તં સર્વં’ તદેવ સામાન્ય-
દંડકપરિપઠિતમેવ જ્ઞાતવ્યમિતિ । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ તદેવં મદન્ત !
તદેવં મદન્ત ! इति, हे मदन्त ! कापोतलेश्याजीवानां चतुर्ष्वपि दंडकेषु येन
રૂપેણ ઉપપાતાદિકં દેવાનુપ્રિયેણ કથિતં તત્ સર્વમ્ एवमेव-सर्वथा सत्यमेव इति
કથયિત્વા ગૌતમો યગવન્તં વન્દત્તે નમસ્યતિ, વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા સંયમેન તપસા
આત્માને ભાવયન્ વિહરતીતિ ॥સૂ. ૧॥

इति एकत्रिंशत्तमे शतके चतुर्थोद्देशकः समाप्तः ॥ ३१-४ ॥

ચૌદહ, સંખ્યાત યા અસંખ્યાત ઉત્પન્ન હોતે હૈં । કલ્પોજ રાશિપ્રમાણ
કાપોતલેશ્યાવાલે નારક જીવ એક, પાંચ, નવ, તેરહ, સંખ્યાત અથવા
અસંખ્યાત એક સાથે ઉત્પન્ન હોતે હૈં । ‘સૈસં તં ચેવ’ પરિમાણ સે
અતિરિક્ત ઓર સ્વ કથન સામાન્ય દણ્ડક કે જૈસા હી કહા ગયા
જાનના ચાહિયે, ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે મદન્ત ! કાપોત-
લેશ્યાવાલે જીવોં કે ચારો દણ્ડકોં મેં જિસરૂપ સે ઉપપાત આદિ ત આપ-
દેવાનુપ્રિય ને કહા હૈ વહ સ્વ સર્વથા સત્ય હી હૈં । હસ પ્રકાર કહકર
ગૌતમ ને પ્રભુશ્રી કો વન્દના કી ઓર નમસ્કાર કિયા, વન્દના, નમ-
સ્કાર કર ફિર વે સંયમ ઓર તપ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુણ
અપને સ્થાન પર બિરાજમાન હો ગયે ॥સૂ. ૧॥

॥ ચતુર્થ ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥ -૩૧-૪ ॥

વાળા નારક જીવો એકી સાથે જો, છ, દસ અને ચૌદ સંખ્યાત અથવા અ-
સંખ્યાત ઉત્પન્ન થાય છે કેલ્પોજ રાશિ પ્રમાણ કાપોતલેશ્યાવાળા નારક
જીવો એક, પાંચ, નવ, તેર સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત એક સાથે ઉત્પન્ન
થાય છે. ‘સૈસં તં ચેવ’ પરિણામ શિવાયનું બાકીનું સઘળું કથન સામાન્ય
દંડકમાં કહ્યા પ્રમાણે જ કહ્યું છે, તેમ સમજવું.

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ કાપોતલેશ્યાવાળા જીવોના ચારે
દંડકોમાં જે પ્રમાણે ઉપપાત વિગેરે આપ દેવાનુપ્રિયે કહેલ છે, તે સઘળું કથન
સર્વથા સત્ય જ છે હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે.
આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર
કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના
આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ. ૧॥

॥ ચોથો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥ ૩૧-૪॥

अथ पञ्चमोद्देशकः प्रारभ्यते ॥

मूलम्—भवसिद्धिय खुड्डाग कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति ? किं नेरइय० ? एवं जहेव ओहिओ गमओ तहेव निरवसेसं जाव नो परप्पओगेणं उववज्जंति । रयणप्पभापुढवी भवसिद्धिय खुड्डाग कडजुम्मनेरइया णं भंते !० एवं चेव निरवसेसं एवं जाव अहे सत्तमाए । एवं भवसिद्धिय खुड्डाग तेओग नेरइया वि, एवं जाव कलिओग त्ति नवरं परिमाणं जाणियच्चं, परिमाणं पुव्वभणियं जहा पढमुद्देसए । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति । १।

छाया—भवसिद्धिक क्षुल्लककृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यः, एवं यथैवौधिको गमक स्तथैव निरवशेषं यावन्नो परप्रयोगेणोत्पद्यन्ते । रत्नप्रभा पृथिवीभवसिद्धिकक्षुल्लककृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! एवमेव निरवशेषम् एवं यावदधः सप्तम्याम् । एवं भवसिद्धिकक्षुल्लकत्रयोजनैरयिका अपि, एवं यावत्कल्योज इति, नवरं परिमाणं ज्ञातव्यं परिमाणं पूर्वभणितं यथा प्रथमोद्देशके । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति । सू० १॥

टीका—‘भवसिद्धिय खुड्डाग कडजुम्मनेरइयाणं भंते’ भवसिद्धिक क्षुल्लककृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! ‘कओ उववज्जंति किं नेरइय०’ कुतः—कस्मात् स्थानविशेषादागत्योत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य आगत्य उत्पद्यन्ते तिर्यग्योनिकेभ्यो वा आगत्य नरकावासे समुत्पद्यन्ते मनुष्येभ्यो वा आगत्य समुत्पद्यन्ते देवेभ्यो वा

शतक ३१ उद्देशक-५

‘भवसिद्धिय खुड्डागकडजुम्म नेरइयाणं भंते !’ इत्यादि

टीकार्थ—‘भवसिद्धिय खुड्डागकडजुम्म नेरइयाणं भंते !’ हे भदन्त ! भवसिद्धिक क्षुल्लककृतयुग्म नैरयिक ‘कओहिंतो उववज्जंति’ किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अर्थात् जो भवसिद्धिक नैरयिक क्षुद्र कृतयुग्मराशि प्रमित हैं वे कहाँ से आकर के नरकावास में उत्पन्न

॥पांचमा उद्देशाने प्रारंभ—

‘भवसिद्धिय खुड्डागकडजुम्मनेरइयाणं भंते !’ इत्यादि

टीकार्थ—‘भवसिद्धिय खुड्डागकडजुम्मनेरइयाणं भंते !’ हे भगवन् भवसिद्धिक क्षुद्र कृतयुग्म नैरयिक ‘कओहिंतो उववज्जंति’ क्या स्थान विशेषથી आवीने उत्पन्न थाय छे ? अर्थात् जे भवसिद्धिक नैरयिक क्षुद्र कृतयुग्मराशि प्रमाण छे, तेओ कहाँથી आवीने नरकावासमां उत्पन्न थाय छे ? आ प्रश्नता उत्तरमां

આગત્યોત્પદ્યન્તે ! इति प्रश्नः, भगवानाह—‘एवं जहेव’ इत्यादि, ‘एवं जहेव ओहिओ गमओ तहेव निरवसेस जाव नो परप्पयोगेण उव्वज्जंति’ एवं यथैव औधिओ समकस्तथैव निरवशेषं यावन्नो परमयोगेणोत्पद्यन्ते औधिकप्रकरणे यथोत्पादादिकं कथितं तथैव इहापि ज्ञातव्यम्, तथाहि-कुत्र उत्पद्यन्ते इति प्रश्नस्य न नैरयिकेभ्य आगत्य उत्पद्यन्ते न वा देवेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते किन्तु पञ्चेन्द्रियतिर्यग्गोणिकेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते तथा गर्भजमनुष्येभ्य आगत्य समुत्पद्यन्ते, इत्युत्तरम् । ते खलु भवसिद्धिकाः क्षुल्लककृतयुग्मनारकाः भदन्त ! एकसमये कियन्त उत्पद्यन्ते ! गौतम ! चत्वारो वा, अष्ट वा, द्वादश वा, षोडश वा, संख्याता वा, असंख्याता वा एकसमये जायन्ते । ते खलु भदन्त ! भवसिद्धिकक्षुल्लककृत-

होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—‘एवं जहेव निरवसेसं जाव नो परप्पयोगेण उव्वज्जंति’ हे गौतम ! औधिक प्रकरण में जैसा-जिस रीति से उत्पाद आदि का कथन किया है उसी रीति से वह सब यहां पर भी जानना चाहिये, जैसे-यह प्रश्न किया गया है कि भव सिद्धिक कृतयुग्म नैरयिक कहां से आकर के उत्पन्न होते हैं ? तो वहां ऐसा उत्तर में कहना चाहिये कि वे न नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं और न देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? किन्तु पञ्चेन्द्रिय-तिर्यग्गोणिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं और गर्भज मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं । हे भदन्त ! ये क्षुल्लक कृतयुग्मराशि प्रमित भवसिद्धिक नैरयिक एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं—? हे गौतम ! एक समय में वे चार, या आठ, या बारह, या सोलह या

પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—‘एवं जहेव ओहिओ गमओ तहेव निरवसेस जाव परप्पयोगेण उव्वज्जंति’ હે ગૌતમ ! ઔધિકના પ્રકરણમાં જે પ્રમાણે ઉત્પદ વિગેરે સંખ્યાથી કથન કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે તે સ્વર્ગ કથન અહિયાં પણ સસંખ્ય જેમ કે-જ્યારે એવો પ્રશ્ન પૂછવામાં આવ્યો કે-ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ નૈરયિક કયાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? તો તેનો ઉત્તર એવો છે કે-તેઓ નૈરયિકોનાથી આવીને ઉત્પન્ન થતા નથી તથા દેવોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થતા નથી. પરંતુ પંચેન્દ્રિય તિર્યગ્ગોણિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે. તથા ગર્ભજ મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે. હે ભગવન્ આ ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મરાશિ પ્રમાણવાળા ભવસિદ્ધિક નૈરયિકો એક સમયમાં કેટલા ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ ! એક સમયમાં તેઓ ચાર, અથવા આઠ અથવા બાર અથવા સોળ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત ઉત્પન્ન થાય છે. હે ભગવન્ આ ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મરાશિ પ્રમાણવાળા ભવસિદ્ધિક નૈરયિકો કેવી રીતે

યુગ્મનારકાઃ કથમુત્પદ્યન્તે ? હે ગૌતમ ! સ યથાનામકઃ કથિન્ પ્લવમાનોઽધ-
વસાયનિર્વર્તિતેન કરણોપાયેન અપ્યતિ કાલે પૂર્વસ્થાનં પરિત્યાગ્રેતનં સ્થાનમુપ-
સપદ્ય વિહરતિ, એમ ત્રેમ્ એ નારકાઃ પ્લવકા ઇવાધ્યવસાયનિર્વર્તિતેન કરણો-
પાયેન પૂર્વમ્વં પરિત્યજ્ય ભવાન્તર માસાદયન્તિ તેષાં સ્વલુ ભવસિદ્ધિક ક્ષુલ્લક-
કૃતયુગ્મનારકજીવાનાં કથં શીઘ્રા ગતિઃ કથં શીઘ્રો ગતિવિષયઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ હે ગૌતમ !
સ યથાનામકઃ કથિત્પુરુષઃ તરુગો વલવાન્ યાવત્ ત્રિસમયેન વા વિગ્રહેણોત્પદ્યન્તે
તેષાં સ્વલુ જીવાનાં તથા શીઘ્રા ગતિઃ તથા શીઘ્રો ગતિવિષયઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ । તે સ્વલુ
ભવસિદ્ધિક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મનારકજીવાઃ કથં પરમવાયુષ્કં કુર્વન્તીતિ । હે

સંસ્થાન યા અસંસ્થાત ઉત્પન્ન હોતે હૈં । હે ભદન્ત ! યે ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ-
રાશિપ્રમિન ભવસિદ્ધિક નૈરધિક કૈસે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? હે ગૌતમ !
જૈસે કોઈ પ્લવક કૂદતા-કૂદતા અધ્યવસાય વિશેષ સે નિર્વર્તિત
કરણોપાય સે આગામી કાલ સે પૂર્વ સ્થાન કો છોડકર આગે
કે સ્થાન કો પ્રાપ્ત કરતા હૈ, ઇતી પ્રકાર સે યે નારક પ્લવક કે જૈસે
હી અધ્યવસાય સે નિર્વર્તિત કરણોપાય દ્વારા પૂર્વ ભવ કો છોડકર પર
ભવ કો-ભવાન્તર કો પ્રાપ્ત કર લેતે હૈં । હે ગૌતમ ! ભવસિદ્ધિક
ક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મ નારક જીવોં કી કૈસી શીઘ્ર ગતિ હોતી હૈ ? ઓર ઇસ
શીઘ્ર ગતિ કા વિષય કૈસા હોતા હૈ ? હે ગૌતમ ! જૈસે કોઈ તરુગ વલવાન્
પુરુષ ચૌદહવે શતરુ મેં પ્રથમ ઉદ્દેશ રુ મેં કહે ગયે અનુસાર હો તો જૈસા
વહાં કહા ગયા હૈં ડાકે બાફિક વે નૈરધિક ત્રીન સમય વાલી વિગ્રહ
ગતિ સે વહાં નરકાવાસમાં મેં ઉત્પન્ન હોતે હૈં । ઇમ પ્રકાર કી ડાકી
શીઘ્ર ગતિ હોતી હૈ ઓર એસા હી ડાકી શીઘ્ર ગતિ કા વિષય હોના

ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ ! જેમ કોઈ કૂદવાવાળે -કૂદતો કૂદતો અધ્યવસાય
વિશેષથી નિર્વર્તિત કરણના ઉપાયથી આગામી કાળમાં પૂર્વ સ્થાનને છોડીને
આગળના સ્થાનને પ્રાપ્ત કરે છે એજ રીતે આ નારક કૂદવાવાળાની જેમજ
અધ્યવસાય વિશેષથી નિર્વર્તિત કરણોપાયદ્વારા પૂર્વ ભવને છોડીને પરભવને
ભવાન્તર અર્થાત્ બીજા ભવને પ્રાપ્ત કરી લે છે હે ભગવન્ ભવસિદ્ધિક
ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારક જીવોની શીઘ્ર ગતિ કેવી હોય છે ? અને તે શીઘ્ર ગતિનો
વિષય કેવો હોય છે ? હે ગૌતમ ! જેમ કોઈ તરુજી બલવાન પુરુષ ચૌદમા
શતકના પહેલા ઉદ્દેશમાં કહ્યા પ્રમાણે હોય તો ત્યાં જે પ્રમાણે કહેવામાં
આવ્યું છે, તે પ્રમાણે તે નારકો ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ત્યાં નારકા-
વાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે આ રીતની શીઘ્રગતિ હોય છે અને એજ પ્રમાણે
તેઓના શીઘ્ર ગમનનો વિષય હોય છે.

ગૌતમ ! અધ્યવસાયયોગનિર્વર્તિતેન કારણોપાયેન એવં સ્વલુ તે જીવાઃ પરમવા-
યુષ્કં કુર્વન્તીતિ । તેવાં સ્વલુ મદન્ત । જીવાનાં કથં ગતિઃ પ્રવર્તતે ગૌતમ ! આયુઃ
ક્ષયેણ ભવક્ષયેણ સ્થિતિક્ષયેણ એવં સ્વલુ ગતિઃ પ્રવર્તતે ઇતિ । તે સ્વલુ ભવસિદ્ધિક
શુલ્લકકૃતયુગ્મનારક જીવાઃ કિમ્ આત્મકૃદ્વચા ઉત્પદ્યન્તે પરકૃદ્વચાનોત્પદ્યન્તે
ઈતિ, હે ગૌતમ ! આત્મકૃદ્વચા સમુત્પદ્યન્તે ન પરકૃદ્વચા સમુત્પદ્યન્તે । તે સ્વલુ
ભવસિદ્ધિકશુલ્લકકૃતયુગ્મનારકજીવાઃ કિમાત્મકર્મણા ઉત્પદ્યન્તે પર કર્મણા વા
ઉત્પદ્યન્તે હે ગૌતમ ! આત્મકર્મણૈવ ઉત્પદ્યન્તે ન પરકર્મણોત્પદ્યન્તે । તે સ્વલુ ભવ-
સિદ્ધિકશુલ્લકકૃતયુગ્મનારકજીવાઃ મદન્ત ! આત્મપ્રયોગેણ ઉત્પદ્યન્તે પરપ્રયોગેણ

હૈ । હે મદન્ત ! વે ભવસિદ્ધિક શુલ્લક કૃતયુગ્મ નારક જીવ પરભવ
કી આયુ કા બન્ધ કૈસે કરતે હૈં ? હે ગૌતમ ! અધ્યવસાય યોગ
સે નિર્વર્તિત કારણોપાય સે વે પરભવ કી આયુ કા બન્ધ કરતે હૈં । હે
મદન્ત ! ડન જીવોં કી ગતિ કૈસી હોતી ? હે ગૌતમ ! આયુ કે ક્ષય સે
ભવ કે ક્ષય સે ઓર સ્થિતિ કે ક્ષય સે હોતી હૈં । હે મદન્ત ! વે ભવ-
સિદ્ધિક શુલ્લક કૃતયુગ્મ નારક જીવ કયા આત્મદ્વિ સે ઉત્પન્ન હોતે
હૈં યા પરદ્વિ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? હે ગૌતમ ! વે આત્મદ્વિ સે હી
ઉત્પન્ન હોતે હૈં પરદ્વિ સે ઉત્પન્ન નહીં હોતે હૈં હે મદન્ત ! ભવસિદ્ધિક
શુલ્લક કૃતયુગ્મ નારક જીવ કયા આત્મ કર્મ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં યા
પરકર્મ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? હે ગૌતમ ! વે આત્મ કર્મ સે હી ઉત્પન્ન
હોતે હૈં પરકર્મ સે ઉત્પન્ન નહીં હોતે હૈં । હે મદન્ત ! વે ભવસિદ્ધિક
શુલ્લક કૃતયુગ્મ નારક જીવ કયા આત્મ પ્રયોગ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં યા

હે ભગવન્ તે ભવસિદ્ધિક શુલ્લક કૃતયુગ્મ નારક જીવ પરભવની
આયુષ્યનો બંધ કેવી રીતે કરે છે ? હે ગૌતમ ! અધ્યવસાય યોગથી નિર્વર્તિત
કારણોપાયથી તેઓ પરભવના આયુષ્યનો બંધ કરે છે. હે ભગવન્ તે જીવોની
ગતિ કેવી રીતે હોય છે ? હે ગૌતમ ! આયુના ક્ષયથી ભવના ક્ષયથી અને
સ્થિતિના ક્ષયથી તેઓની ગતિ થાય છે. હે ભગવન્ તે ભવસિદ્ધિક શુલ્લક
કૃતયુગ્મ નારક જીવો શું આત્મકૃદ્વિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા પરકૃદ્વિથી
ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ ! તેઓ આત્મકૃદ્વિથી જ ઉત્પન્ન થાય છે પરકૃદ્વિથી
ઉત્પન્ન થતા નથી. હે ભગવન્ તે ભવસિદ્ધિક શુલ્લક કૃતયુગ્મ નારક જીવો
આત્મકર્મથી ઉત્પન્ન થાય છે ? કે પર કર્મથી ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ !
તેઓ આત્મ કર્મથી જ ઉત્પન્ન થાય છે. પરકર્મથી ઉત્પન્ન થતા નથી. હે
ભગવન્ તે ભવસિદ્ધિક શુલ્લક કૃતયુગ્મ નારક જીવો શું આત્મ પ્રયોગી ઉત્પન્ન

वा, उत्पद्यन्ते ? गौतम ! आत्मप्रयोगेणोत्पद्यन्ते, एतदन्ते सर्वं यावत्पदेन संगृहीतं भवतीति । 'रयणप्पभापुढवी भवसिद्धिय खुड्डागकडजुम्म नेरइयाणं भंते' रत्नप्रभा पृथिवी भवसिद्धिकक्षुल्लककृतयुग्मनैरिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य स्तिर्यग्यो मनुष्येभ्यो देवेभ्योचेति प्रश्नः, उत्तर माह—'एवं चेव' इत्यादि, 'एवं 'चेव निरवसेसं' एवमेव—औघिकगमवदेव निरवशेषम् औघियगवदेव सर्वं' यावत् नो परप्रयोगेणोत्पद्यन्ते ज्ञातव्यमिति । 'एवं जाव अहे सत्तमाए' एवं यावदधः सप्तम्याम्, यावत्पदेन शर्कराप्रभात् आरभ्य तमान्तपृथिव्याः संग्रहः, तथा च

पर प्रयोग से उत्पन्न होते हैं ? गौतम वे आत्म प्रयोग से ही उत्पन्न होते हैं पर प्रयोग से उत्पन्न नहीं होते हैं । यहां तक यह सब यहां यावत् पद से गृहीत हुआ है । 'रयणप्पभा पुढवी भवसिद्धिय खुड्डाग कडजुम्म नेरइयाणं भंते !' हे भदन्त ! रत्नप्रभा पृथिवी के क्षुद्रकृत-युग्म राज्ञिप्रमित भवसिद्धिक नैरयिक कहां से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या नैरयिको से आकर के उत्पन्न होते हैं ? या तिर्यग्योनिकां में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? या मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? या देवों में आकर उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—'एवं चेव निरवसेसं' हे गौतम ! जैसा सामान्य गम कहा गया है वैसा ही यहां वह सम्पूर्ण रूप से यावत् वे परप्रयोग से उत्पन्न नहीं होते हैं यहां तक कहना चाहिये । 'एवं जाव अहे सत्तमाए' इसी प्रकार का कथन अधः सप्तमी पृथिवी तक समझना चाहिये, यहां यावत् पद से शर्कराप्रभा

थाय छे ? के परप्रयोगथी उत्पन्न थाय छे ? हे गौतम ! तेओ आत्म प्रयोगथी उत्पन्न थाय छे. परप्रयोगथी उत्पन्न थता नथी आ अडिं सुधीनुं सधणुं कथन अडियां यावत् पढथी थडणु इदेव छे,

'रयणप्पभा पुढवी भवसिद्धिय खुड्डाग कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! हे भगवन् रत्नप्रभा पृथ्वीना क्षुद्र कृतयुग्मराशि प्रमाणुपाणा भवसिद्धिक नैरयिके कथांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? शु तेओ नैरयिकेमांथी आवीने त्यां उत्पन्न थाय छे ? अथवा तिर्य्य योनिकेमांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा मनुष्येमांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा देवेमांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? आ अश्चना उत्तरमां प्रभुश्री कहे छे के—'एवं चेव निरवसेसं' हे गौतम ! सामान्यगम जे प्रमाणे कहेव छे, ओज प्रमाणे ते अडियां संपूर्ण पणु यावत् तेओ परप्रयोगथी उत्पन्न थता नथी आत्मप्रयोगथी उत्पन्न थाय छे. आ कथन सुधीनुं सधणु कथन कहेवु जेधओ.

'एव जाव अहे सत्तमाए' आज प्रमाणेनुं कथन अधःसप्तमी पृथ्वी सुधी समणवुं. अडियां यावत्पढथी शर्कराप्रभाथी लधने तमःप्रभापृथ्वी नामनी

મથા રત્નપ્રભા પૃથિવ્યાશ્રિત નારકાણામુત્પાદાદિઃ કથિતઃ તથૈવ શર્કરાપ્રભાઅધઃ
સપ્તમીપૃથિવી પર્યન્તાશ્રિત ભવસિદ્ધિક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મનારકાણામપિ ઉત્પાદાદિ-
જ્ઞાતવ્યં ઇતિ । ‘એવં ભવસિદ્ધિક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મનારકાણામપિ ઉત્પાદાદિ-
જ્ઞાતવ્યં ઇતિ । ‘એવં જાવ કલિઓગત્તિ’ એવં યાવત્ કલયોજ ઇતિ ભવસિદ્ધિક્ષુલ્લક-
કૃતયુગ્મનારકાણામપિ ઉત્પાદાદિ જ્ઞાતવ્યં ઇતિ । ‘એવં જાવ કલિઓગત્તિ’ એવં યાવત્ કલયોજ ઇતિ ભવસિદ્ધિક્ષુલ્લક-
કૃતયુગ્મનારકાણામપિ ઉત્પાદાદિ જ્ઞાતવ્યં ઇતિ । ‘નવરં પરિમાણં જાણિયન્વં’ નવરં

સે લેકર તમા પૃથિવી નામ કી ૬ઠી તક કી પૃથિવિયોં કો ગ્રહણ હુઆ
હૈ । તથા જ-જૈસા કથન રત્ન પ્રભા પૃથિવી કે આશ્રિત નારકોં કે ઉત્પા-
દાદિ કે સમ્બન્ધ સે કિયા ગયા હૈ વૈસા હી કથન શર્કરાપ્રભા સે લેકર
અધઃસપ્તમી પૃથિવીયોં કે આશ્રિત ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ રાશિ પ્રમાણ ભવ-
સિદ્ધિક નૈરયિકોં કે ઉત્પાદ આદિ કે સમ્બન્ધ સે બી કહનાં ચાહિયે ।
‘એવં ભવસિદ્ધિક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નૈરયિકોં કે ઉત્પાદ આદિ કે સમ્બન્ધ સે બી કહનાં ચાહિયે ।
‘એવં જાવ કલિઓગત્તિ’ એવં યાવત્ કલયોજ ઇતિ ભવસિદ્ધિક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ
રાશિપ્રમાણ ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોં કે જૈસા હી કૃદ્ર યોજ રાશિપ્રમાણ
ભવસિદ્ધિક બી જાનનાં ચાહિયે, અર્થાત્ ઉનકે ઉત્પાદાદિ જૈસા હી
इनका भी उत्पादादि कहना चाहिये । ‘એવં જાવ કલિઓગત્તિ’ ઓર
એસા હી ઉત્પાદાદિ કા કથન યાવત્ કૃદ્રકલયોજ રાશિપ્રમાણ ભવસિદ્ધિક
નૈરયિકોં મેં બી કરનાં ચાહિયે, યહાં યાવત્ શબ્દ સે કૃદ્ર દ્વાપર યુગ્મ
રાશિપ્રમાણ ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોં કા ગ્રહણ હુઆ હૈ । ‘નવરં પરિ-

છઠી પૃથ્વી સુધીની પૃથ્વીયો ગ્રહણ કરાઈ છે. તથા—જે પ્રમાણે રત્નપ્રભા
પૃથ્વીને આશ્રય કરીને નારકોના ઉત્પાદ વિગેરેના સંબંધમાં કથન કરવામાં
આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન શર્કરાપ્રભાથી લઈને અધઃસપ્તમી પૃથ્વી
સુધીની પૃથ્વીયોમાં રહેલા ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ ભવસિદ્ધિક નૈરયિકો-
ના ઉત્પાદ વિગેરેના વિષયમાં પણ કહેવું જોઈ એ. ‘એવં ભવસિદ્ધિક્ષુલ્લક
કૃતયુગ્મ નૈરયિકોના કથન પ્રમાણે જ કૃદ્ર યોજ રાશિપ્રમાણ ભવસિદ્ધિક
નૈરયિકોનું કથન પણ સમજવું અર્થાત્ તેઓના ઉત્પાદ વિગેરે પ્રમાણે જ આમના ઉત્પાદ વિગેરે પણ સમજવા
‘એવં જાવ કલિઓગત્તિ’ અને આ પ્રમાણેનું જ ઉત્પાદ વિગેરે સંબંધી કથન
યાવત્ કૃદ્ર કલયોજ રાશિપ્રમાણ ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના સંબંધમાં પણ કહેવું
જોઈ એ. અહિયાં યાવત્ શબ્દથી કૃદ્ર દ્વાપર યુગ્મરાશિપ્રમાણ ભવસિદ્ધિક
નૈરયિકો ગ્રહણ થયેલ છે. ‘નવરં પરિમાણં જાણિયન્વં’ પરંતુ બધે જ લિખ્ત-લિખ્ત

કેવલં સર્વત્ર પરિમાણં ભિન્ન ભિન્ન રૂપેણ જ્ઞાતવ્યમ્ । ‘પરિમાણં યુગ્વ મણિયં જહા-
પદમુદ્દેસણ’ પરિમાણં પૂર્વમ્ભણિતમેવ જ્ઞાતવ્યમ્ યથા એતચ્છતકીય મથમોદ્દેશકે
કથિતમ્ ચત્વારો વા, અઠ્ઠૌ વા, ઇત્યાદિ કૃતયુગ્મસ્ય । ત્રયો વા, સપ્ત વા, ઇત્યાદિ
ત્રયોજસ્ય । દ્વૌ વા, ષડ્ વા ઇત્યાદિ દ્વાપરયુગ્મસ્ય । એકો વા, પચ્ચ વા ઇત્યાદિ
કલ્પોજસ્યેતિ । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત !
ઈતિ હે મદન્ત ! ભવસિદ્ધિક ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્માદિ નારકાણાં સામાન્યાનાં રત્નપ્રમા-
ણાશ્રિતાનાં ચ ઉત્પાદપરિમાણાદિકં યથા દેવાનુમિયેણ કથિતં તત્સર્વં સર્વથૈવ

માણં જાણિયઘ્વં’ પરન્તુ સર્વત્ર પરિમાણ ભિન્ન-ભિન્ન રૂપ સે જાનના
ચાહિયે, જૈસા કિ હસ શતક કે મથમ ઉદ્દેશક મેં કહા ગયા હૈ-કિ
કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત નૈરયિકો’ કા પરિમાણ એક સમય કે ઉત્પાદ કા
ચાર આઠ આદિ રૂપ હૈ, ત્રયોજ રાશિપ્રમિત નૈરયિકો’ કા પરિમાણ એક
સમય કે ઉત્પાદ કા ત્રીન અથવા સાત આદિ રૂપ હૈ । દ્વાપરયુગ્મરાશિ
પ્રમિત નૈરયિકો’ કા પરિમાણં દો, છઠ્ઠ આદિ કલ્પોજ રાશિપ્રમિત
નૈરયિકો’ કા પરિમાણ એક પાંચ આદિ રૂપ હૈ । ‘સેવં મંતે ! સેવં
મંતે ! ત્તિ’ હે મદન્ત ! ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્માદિ રાશિપ્રમિત ભવસિદ્ધિક
નૈરયિકો’ કે ઉત્પાદાદિ કે સમ્બન્ધ મેં જો સામાન્ય રૂપ સે તથા રત્ન
પ્રમાદિ આશ્રિત ઇન્હોં નૈરયિકો’ કે ઉત્પાદાદિ કે સમ્બન્ધ મેં જો વિશેષ

પણાથી સમજવું. જેમ કે-આ શતકના પહેલા ઉદ્દેશમાં કહ્યું છે કે-કૃતયુગ્મ
રાશિપ્રમાણુ નૈરયિકોનું પરિણામ (એક સમયના ઉત્પાદનું) ચાર, આઠ, વિગેરે
રૂપ છે. ત્રયોજ રાશિપ્રમાણુવાળા નૈરયિકોનું પરિમાણુ એક સમયના ઉત્પાદનું-
ત્રણ અથવા સાત વિગેરે રૂપ છે. દ્વાપર યુગ્મ રાશિ પ્રમાણુ નૈરયિકોનું
પરિમાણુ-બે-આઠ વિગેરે રૂપ છે. તેમ સમજી લેવું.

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણુ
વાળા ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના ઉત્પાદ વિગેરેના સંબંધમાં સામાન્ય રૂપથી અને
વિશેષ રૂપથી આપદેવાનુમિયે જે કથન કર્યું છે. તે સઘળું કથન સર્વથા

सत्यमिति कथयित्वा गौतमो भवन्तं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा च संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति ॥ सू० १ ॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक-श्रीशाहच्छत्रपति कोल्हापुरराजमदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित—कोल्हापुरराजगुरु-वाल-
ब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्य श्री
घासीलालव्रतिविरचितायां श्री “भग
वतीसूत्रस्य” प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां-
व्याख्यायां एकत्रिंशत्तमे शतके
पञ्चमोद्देशकः समाप्तः ॥३१-५॥

रूप से आप देवानुप्रियने कथन किया है वह सब सर्वथा सत्य ही है, ऐसा कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० १॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
“भगवतीसूत्र” की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके एकतीसरे शतकका
पंचम उद्देशक समाप्त ॥३१-५॥

सत्य ७ छे. २ आ प्रभाणे कहीने गौतमस्वामीणे प्रभुश्रीने वंदना करी नम
स्कार कर्या वंदन नमस्कार करीने तेणे संयम अने तपशी पोताना आत्माने
भावित करता थका पोताना स्थान पर विराजमान थया. ॥सू० १॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजी महाराजकृत “भगवतीसूत्र”नी
प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याना एकत्रीसमा शतकने पांचमे उद्देशा समाप्त ॥३१-५॥



अथ षष्ठोद्देशकादारभ्य अष्टाविंशतिरुद्देशकाः प्रारभ्यन्ते ॥

मूलम्—कणहलेस्स भवसिद्धि य खुड्ढागकडजुम्मनेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति एवं तहेव ओहिओ कणहलेस्स उद्देसओ तहेव निरवसेसं, चउसु वि जुम्मेसु भाणियव्वो जाव अहे सत्तम पुढवी कणहलेस्स खुड्ढागकलिओगनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति तहेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३१-६॥

‘नीललेस्स भवसिद्धिया चउसु वि जुम्मेसु तहेव भाणियव्वा, जहा ओहिए नीललेस्स उद्देसए । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥३१-७॥

‘काउलेस्स भवसिद्धिया चउसु वि जुम्मेसु तहेव उववाएयव्वा, जहेव ओहिए काउलेस्स उद्देसए । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ’ ॥३१-८॥

‘जहा भवसिद्धिएहिं चत्तारि उद्देसया भणिया, एवं अभवसिद्धिएहिं वि चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा । जाव काउलेस्स उद्देसओ त्ति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति’ ॥३१-९-१२॥

एवं सम्मदिट्ठीहिं वि लेस्सा संजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगां कायव्वा, नवरं सम्मदिट्ठी पढमवितिएसु वि दोसु वि उद्देसए सु अहे सत्तमा पुढवीए न उववाएयव्वा, सेसं तं चेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३१-१३-१६॥

मिच्छादिट्ठीहिं वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, जहा भवसिद्धियाणं सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३१-१७-२०॥

एवं कणहपक्खिएहिं वि लेस्सा संजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा जहेव भवसिद्धिएहिं सेवं भंते ! सेवं भंते त्ति ॥३१-२१-२४॥

सुकपक्खिएहि एवं चेव चत्तारि उद्देशगा भाणियव्वा जाव
वालुयप्पभापुढवि काउलेस्स सुकपक्खियखुड्ढागकलिओग नेर-
इयाणं कओ उववज्जंति, तद्देव जाव नो परप्पओगेणं उववज्जंति ।
सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति सव्वे वि एए अट्ठावीसं उद्देशगा ॥३१-२८॥

एकतीसइमं उववायसयं समन्तं ॥३१॥

छाया-कृष्णलेश्यभवसिद्धिक क्षुल्लककृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत
उत्पद्यन्ते ? एवम् यथैव, औधिकः कृष्णलेश्योद्देशकस्तथैव-निरवशेषं चतुर्ष्वपि
युग्मेषु भणितव्यः यावदधः सप्तमपृथिवी कृष्णलेश्यक्षुल्लक कल्योजनैरयिकाः
खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते तथैव, तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥३१॥६॥

नीललेश्यभवसिद्धिकाश्चतुर्ष्वपि युग्मेषु तथैव भणितव्याः यथा-औधिक
नीललेश्योद्देशके । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति यावद्विहरति ॥३१॥७॥
कापोतलेश्य भवसिद्धिकाश्चतुर्ष्वपि युग्मेषु तथैव उपपातयितव्याः यथैव औधिके
कापोतलेश्योद्देशके । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त इति यावद्विहरति ॥३१॥८॥

यथा भवसिद्धिकैश्चत्वार उद्देशका भणिताः एवम् अभवसिद्धिकैरपि चत्वार
उद्देशका भणितव्याः यावत्कापोतलेश्योद्देशक इति । तदेवं भवन्त ! तदेवं
भदन्त ! इति ॥३१॥९-१२॥

एवं सम्यग्दृष्टिभिरपि लेश्यासंयुक्तैश्चत्वार उद्देशकाः कर्तव्याः नवरं
सम्यग्दृष्टिः प्रथम द्वितीययोरपि द्वयोरपि उद्देशकयोरधः सप्तमपृथिव्यां न उप-
पातयितव्यः शेषं तदेवं, तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥३१॥१३-१६॥

मिथ्यादृष्टिभिरपि चत्वार उद्देशकाः कर्तव्याः यथा भवसिद्धिकानाम् ।
तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥३१॥१७-२०॥

एवं कृष्णपाक्षिकैरपि लेश्यासंयुक्तैश्चत्वार उद्देशकाः कर्तव्याः यथैव-
भवसिद्धिकैः । तदेवं भवन्त ! तदेवं भवन्त ! इति ॥३१॥२१-२४॥

शुक्लपाक्षिकैः-एवमेव चत्वार उद्देशका भणितव्याः यावद् बालुकाप्रभा
पृथिवीकापोतलेश्य पाक्षिक क्षुल्लक-कल्योजनैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत
उत्पद्यन्ते, तथैव-यावद् नो परप्रयोगेणोत्पद्यन्ते । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त !
इति । सर्वेऽपि एतेऽष्टाविंशतिरुद्देशकाः ॥३१-२५ २८॥

एकत्रिंशत्तममुपपातशतं समाप्तम् ॥३१॥

टीका-‘कण्हलेस्स भवसिद्धिक खुड्ढाग कडुजुम्मनेइयाणं भंते’ कृष्ण-
लेश्यभवसिद्धिकक्षुल्लक कृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! ‘कओ उववज्जंति’ कुत

ઉત્પન્નન્તે, કિં નૈરયિકેભ્ય સ્તિર્યગ્યોનિકેભ્યો મનુષ્યેભ્યો દેવેભ્યો વા આગત્યોત્પ-
ન્નન્તે ઇતિ પ્રશ્નઃ, મગવાનાહ-‘एवं जहा’ इत्यादि । ‘एवं जहेव ओहिओ कण्हलेस्स
उदेसओ तहेव निरसेसं चउसु वि जुम्मेसु भाणियव्वो, एवं यथैव औधिकः कृष्ण
लेश्योदेशकः तथैव निरवशेषं चतुर्वैपि युग्मेषु कृतयुग्म ऽयोज द्वापर कल्योज-
युग्मेषु भणितव्यः । कियत्पर्यन्त मौधिकगमवक्तव्यता ? तत्राह-‘जाव’ इत्यादि ।
‘जाव अहे सत्तम पुढवी कण्हलेस्स खुड्डागकलिओगनेरइयाणं भन्ते ! कओ
उव्वज्जंति’ यावदधःसप्तमपृथिवी कृष्णलेश्य क्षुल्लक कल्योजनैरयिकाः खलु

શતક ૩૧ ઉદ્દેશક ૬-૨૮ તક

‘કણ્હલેસ્સ ભવસિદ્ધિય્સુ ખુડ્ડાગકલ્હજુમ્મ નેરહયાણં મંતે !’ ઇત્યાદિ
ટીકાર્થઃ-હે ભદન્ત ! કૃષ્ણલેશ્યાવાલે ભવસિદ્ધિક્ષુદ્ર કૃતયુગ્મ
પ્રમાણ પ્રમિત નૈરયિક ‘કઓ ઉવવજ્જંતિ’ કિસ સ્થાન વિશેષ સે આક-
રકે નરકાવાસ મેં ઉત્પન્ન હોતે હેં ? કયા નૈરયિકોં મેં સે આકરકે વે
વહાં ઉત્પન્ન હોતે હેં ? યા તિર્યગ્યોનિકોં મેં સે આકરકે વે વહાં
ઉત્પન્ન હોતે હેં ? યા મનુષ્યો મેં સે આકર વહાં ઉત્પન્ન હોતે હેં ?
યા દેવોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હેં ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હેં-
‘एवं जहेव ओहिओ कण्हलेस्स उदेसओ तहेव निरवसेसं चउसु वि
जुम्मेसु भाणियव्वो’ હે ગૌતમ ! ઔધિક કૃષ્ણલેશ્યા કે ઉદ્દેશક મેં
જિસ પ્રકાર સે કહા ગયા હૈં ઊસી પ્રકાર સે ચારોં યુગ્મોં મેં ભી કહના
ચાહિયે, વે ચાર યુગ્મ-કૃતયુગ્મ, ઝયોજ, દ્વાપર ઓર કલ્યોજ-યે હેં । યહ
ઔધિક ગમ વક્તવ્યતા યાવત્, અધઃસપ્તમી નારકપૃથિવી કે કૃષ્ણલેશ્ય

છઠ્ઠા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

‘કણ્હલેસ્સ ભવસિદ્ધિય્સુ ખુડ્ડાગ કલ્હજુમ્મ નેરહયાણં મંતે !’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થઃ-હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક્ષુદ્રકૃતયુગ્મ પ્રમિત નૈરયિક
‘કઓ ઉવવજ્જંતિ’ કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થયા છે ?
શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યગ્યોમાંથી આવીને
ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા
દેવોમાંથી આવીને ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમ
સ્વામીને કહે છે કે-‘एवं जहेव ओहिओ कण्हलेस्स उदेसओ तहेव निरवसेसं
चउसु वि जुम्मेसु भाणियव्वो’ હે ગૌતમ ! ઔધિક કૃષ્ણલેશ્યાના ઉદ્દેશામાં જે
પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે ચારે યુગ્મોમાં કહેવું. જોઈએ. તે
ચાર યુગ્મો તે કૃતયુગ્મ યોજ દ્વાપર અને કલ્યોજ એ પ્રમાણે છે. ઔધિક
ગમ સંબંધી કથન યાવત્ અધઃસપ્તમી નારક પૃથ્વીના કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક

મદન્ત ! કુત ઉત્પચન્તે, કિં નૈરયિકેભ્યસ્તિર્યગ્મ્યો મનુષ્યેભ્યો દેવેભ્યો વા, ઇત્યાદિ પ્રશ્નઃ ? યાવત્પદેન ધૂમપ્રમાતમઃ પૃથિવ્યાશ્રિતનારકાણાં સંગ્રહો ભવતીતિ પ્રશ્નઃ ? તદેવ' તથૈવ-ઔધિકપ્રકરણવદેવ સર્વગુત્તરં જ્ઞાતવ્યમ્ । 'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ' તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ હે મદન્ત ! યદ્ દેવાનુપ્રિયેણ કથિતમ્, સત્સર્વં સત્યમેવેતિ કથયિત્વા ગૌતમો મંગવન્તં નમસ્કૃત્ય યાવદ્વિહરતીતિ ।

પષ્ઠાદેશકઃ સમાપ્તઃ ॥૩૧॥૬॥

શુલ્લક કલ્પોજ પ્રમિત નૈરયિક વહાં કહ્યાં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હેં ? કયા નૈરયિકોં મેં સે આકર કે વહાં ઉત્પન્ન હોતે હેં ? યા તિર્યગ્ચોનિકોં મેં સે આકર કે વે વહાં ઉત્પન્ન હોતે હેં ? યા મનુષ્યોં મેં સે આકર વે વહાં ઉત્પન્ન હોતે હેં ? યા દેવોં મેં સે આકર કે વહાં ઉત્પન્ન હોતે હેં ? ઇત્યાદિ કહનાં ચાહિયે । 'તદેવ' હે ગૌતમ ! વે વહાં પચ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્ચોનિકોં મેં સે આકર કે મી ઉત્પન્ન હોતે હેં ઓર ગર્ભજ મનુષ્યોં મેં સે આકર કે મી ઉત્પન્ન હોતે હેં । ઇસ પ્રકાર ઔધિક પ્રકરણ કે જૈસા હી યહાં સબ ઉત્તર જાનનાં ચાહિયે, યહાં યાવત્પદ સે ધૂમપ્રમા ઓર તમઃ પ્રમાઃ પૃથિવી મેં રહે હુણ નૈરયિકોં કા સંગ્રહ હુઆ હૈ । 'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ' હે મદન્ત ! જો આપ દેવાનુપ્રિયને યહ કહાં હેં વહ સબ સત્ય હી હૈ । એસા કહકર ગૌતમ ને મંગવાન કો વન્દનાં કી ઓર નમસ્કાર કિયા, વન્દનાં નમસ્કાર કર ફિર વે સંયમ ઓર તપ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુણં અપને સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે ।

॥ પષ્ઠાદેશક સમાપ્ત ॥ ૩૧-૬॥

કલ્પોજ પ્રમિત નૈરયિક ત્યાં કયાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શુ' નૈરયિકોં માંથી આવીને ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યગ્ચોમાંથી આવીને ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોં માંથી આવીને ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ કથન સુધી કહેવું જોઈએ. 'તદેવ' હે ગૌતમ ! તેઓ ત્યાં પચ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્ચોનિકોં માંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, અને ગર્ભજ મનુષ્યોમાંથી પણ આવીને ઉત્પન્ન થાય છે. આ રીતે ઔધિક પ્રકરણમાં કહ્યા પ્રમાણે અહિયાં તમામ ઉત્તરો સમજવા અહિયાં યાવત્પદથી રત્નપ્રભા પૃથ્વી વિગેરેમાં રહેલા નૈરયિકોં ગ્રહણ કરાયા છે. સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કરેલ છે, તે સઘળું કથન સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ ભગવાનને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તેઓ તપ અને સંયમથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ.૦૧॥

॥છઠ્ઠો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૧-૬॥

‘નીલલેસ્સભવસિદ્ધિયા ચત્તસુ વિ જુમ્મેસુ તદેવ માણિયવ્વા, જહેવ ઓહિયે નીલલેસોદેસણ’ નીલલેશ્યભવસિદ્ધિકા નારકાઃ ચતુર્ષ્વપિ-કૃતયુગ્મ ઝયોજ દ્વાપર-યુગ્મ કલ્પયોજાત્મકયુગ્મેષુ તથૈવ મણિતવ્વા, યથા ઔધિકનીલલેશ્યોદેશકે મણિતાઃ । એતસ્મિન્નેવ શતકે તૃતીયોદેશકે નીલલેશ્યામધિકૃત્ય યુગ્મ ચતુષ્ટયેષુ નારકાણામુત્પાતાદિર્યથા પ્રતિપાદિત સ્તેનૈવ રૂપેણ નીલલેશ્ય ભવસિદ્ધિક નાર-કાણાં ચતુર્ષ્વપિ યુગ્મેષુ તથૈવ વક્તવ્યતા વિજ્ઞેયા, સેવં મંતે । સેવં મંતે । ત્તિ જાવ વિહરહ’ તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ યાવદ્વિહરતિ ॥મૂ૦ ૧॥

इति सप्तमोद्देशकः समाप्तः ॥३१-७॥

‘નીલલેસ્સ ભવસિદ્ધિયા ચત્તસુ વિ જુમ્મેસુ-તદેવ માણિયવ્વા’-હ. ટીકાર્થ-નીલલેશ્યાવાળે ભવસિદ્ધિક નૈરયિક ચારોં યુગ્મોં મેં ઔધિક નીલલેશ્યોદેશક મેં કહે અનુસાર કહનાં ચાહિયે । તાત્પર્ય કહને કા યહ હૈ કિ હસી શતક મેં તૃતીય ઉદેશક મેં નીલલેશ્યા કો અધિકૃત કરકે કૃતયુગ્મ, ઝયોજ, દ્વાપરયુગ્મ ઓર કલ્પયોજ હન ચાર યુગ્મોં મેં નારક જીવોં કા ઉત્પાત આદિ જૈસા કહા ગયા હૈ ડસી રૂપ સે નીલ લેશ્યાવાળે ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોં કી વક્તવ્યતા મી ચારોં હી યુગ્મોં મેં કહની ચાહિયે । સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ જાવ વિહરહ’ હે મદન્ત ! આપકા યહ કથન સર્વથા સત્ય હી હૈ ૨ । યહ કહકર ગૌતમને પ્રભુશ્રી કો વન્દના કી ઓર નમસ્કાર કિયા । વન્દના નમસ્કાર કર વે સંયમ ઓર તપસે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુએ અપને સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે ।

॥ सप्तम उद्देशक समाप्त ॥ ३१-७ ॥

सातमा उद्देशानो प्रारंभ—

‘નીલલેસ્સ ભવસિદ્ધિય ચત્તસુ વિ જુમ્મેસુ તદેવ માણિયવ્વા’ ઇત્યાદિ ટીકાર્થ—નીલલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક નૈરયિકો આરે યુગ્મોમાં ઔધિક નીલલેશ્યાના ઉદેશમાં કહ્યા પ્રમાણે કહેવું જોઈએ

આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે-આ એકત્રીસમા શતકના ત્રીજા ઉદેશમાં નીલલેશ્યાના અધિકારથી કૃતયુગ્મ, ઝયોજ, દ્વાપરયુગ્મ અને કલ્પયોજ યુગ્મોમાં નારક જીવોના ઉત્પાદ વિગેરે સંબંધી જે પ્રમાણે કથન કરવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે નીલલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના સંબંધમાં આરે યુગ્મોમાં કથન કરવું જોઈએ.

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ જાવ વિહરહ’ હે ભગવન્ આપતું આ વિષય સંબંધનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપતું કથન સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તપ અને સંયમથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥सातमो उद्देशो समाप्त ॥३१-७॥

‘કાઉલેસ્સ મવસિદ્ધિયા ચઉસુ જુમ્મેસુ’ કાપોતલેશ્યા મવસિદ્ધિકા નારકા-
શ્વતુર્ધ્વપિ કૃતયુગ્મ-ઞ્યોજ-દ્વાપરયુગ્મેષુ । ‘તદેવ ઉવવાણ્યવ્વા જહેવ ઓહિણ
કાઉલેસ્સોદેસણ’ તથૈવ તેનૈવ રુપેણ ઉપપાતયિતવ્યાઃ યથૈવ-ઔધિકે કાપોતલેશ્યો
દેશકે ઉપપાતિતાઃ । એતચ્છતકીય ચતુર્થોદેશકે કાપોતલેશ્યાશ્રિત નારકાણાં
યુગ્મ ચતુષ્ટયમધિકૃત્ય યથા-યથા ઉત્પાદપરિમાણાદિકઃ કથિતઃ તત્સર્વ મિહાપિ
અનુસન્ધેય ઇતિ । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! તિ જાવ વિહરઈ’ તદેવં મદન્ત !
તદેવં મદન્ત ! ઇતિ યાવદ્વિહરતિ । ઇત્યષ્ટમ ઉદ્દેશકઃ સમાપ્તઃ ॥૮॥

ઇતિ શ્રી-વિશ્વવિખ્યાતજગદ્વલ્લભાદિપદભૂષિતવાલ્મજીચારિ - ‘જૈનાચાર્ય’
પૂજ્યશ્રી-ધાસીલાલવ્રતિવિરચિતાયાં “શ્રી મગવતીસૂત્રસ્ય” પ્રમેયચન્દ્રિકાશ્યાયાં
વ્યાખ્યાયાં એકત્રિંશત્તમે શતકે અષ્ટમોદ્દેશકઃ સમાપ્તઃ ॥૩૧-૮॥

આઠવેં ઉદ્દેશોકા પ્રારંભ

‘કાઉલેસ્સ મવસિદ્ધિયા ચઉસુ જુમ્મેસુ’ કાપોતલેશ્યાવાલે મવ-
સિદ્ધિક નૈરયિકોં કા ચારોં યુગ્મોં મેં ‘તદેવ ઉવવાણ્યવ્વા જહેવ
ઓહિણ કાઉલેસ્સોદેસણ’ ઔધિક કાપોતલેશ્યા ઉદ્દેશક મેં કહે ગયે
અનુસાર ઉપપાત આદિ કા કથન કરના ચોહિયે । તાત્પર્ય કહેને કા
યહ હૈ કિ હસ શતક કે ચતુર્થ ઉદ્દેશક મેં કાપોતલેશ્યા કો આશ્રિત
કરકે નારકોં કા કૃતયુગ્માદિ ચારોં યુગ્મોં મેં જિસ-જિસ પ્રકાર સે
ઉત્પાદ પરિમાણ આદિ કા કથન કિયા ગયા હૈ વહી સબ કથન યહાં
પર મી લગાના ચોહિયે સેવં મંતે । ‘સેવં મંતે ! તિ જાવ વિહરઈ’

આઠમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

‘કાઉલેસ્સ મવસિદ્ધિયા ચઉસુ જુમ્મેસુ’ કાપોત લેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક
નૈરયિકોનું ચારે યુગ્મોમાં ‘તદેવ ઉવવાણ્યવ્વા જહેવ ઓહિણ કાઉલેસ્સો-
દેસણ’ ઔધિક કાપોત લેશ્યાવાળા ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે ઉપપાત વિગેરે
સંબંધી કથન કહેવું જોઈએ કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે—આ એકત્રીસમા
શતકના ચોથા ઉદ્દેશામાં કાપોતલેશ્યાનો આશ્રય કરીને નારકોનું કૃતયુગ્મ
વિગેરે ચારે યુગ્મોમાં જે-જે રીતે ઉત્પાદ, પરિમાણ વિગેરેના સંબંધમાં
કથન કરવામાં આવ્યું છે, એજ સઘળું કથન અહિંયાં પણ કહેવું જોઈએ.

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! તિ જાવ વિહરઈ’ હે ભગવન્ આપદેવાનુપ્રિયે કહેલ

हे भदन्त ! आप देवानुप्रिय के द्वारा कहा गया यह सब विषय सर्वथा सत्य ही है । इस प्रकार कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार करके तप एवं संयम से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० १॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
“भगवतीसूत्र” की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके एकतीसरे शतकका

॥ अष्टम उद्देशक समाप्त ॥ ३१-८॥

આ તમામ વિષય સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજ માન થયા. ॥સૂ. ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્ર' ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના એકત્રીસમા શતકનો આઠમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૧-૮॥



અથ નવમોદેશકાદારમ્ય દ્વાદશાન્તા ઉદેશકાઃ

‘જહા ભવસિદ્ધિર્દિં ચત્તારિઉદેપયા મણિયા’ યથા ભવસિદ્ધિકૈર્ભવસિદ્ધિકાન્ નારકાનાશ્રિત્ય યથા ચત્તવાર ઉદેશકાઃ કથિતાઃ । ‘એવં અભવસિદ્ધિર્દિં વિ ચત્તારિ ઉદેસા મણિયવ્વા’ એવમ્ અભવસિદ્ધિકૈરવિ-અભવસિદ્ધિકા નાશ્રિત્યાપિ ચત્તવાર ઉદેશકા મણિતવ્યાઃ’ ક્રિયસ્પર્યન્તં તન્નાહ-‘જાવ’ ઇત્યાદિ । ‘જાવ-કાઉલેસ્સા ઉદેસોત્તિ’ યાવત્કાપોતલેશ્યોદેશક ઇતિ, યાવત્પદેન પ્રથમસ્ય સામાન્યનૈરયિકાણાં કૃષ્ણલેશ્યનીલલેશ્યનૈરયિકાણાં સંગ્રહો ભવતીતિ । ‘સેવં મંતે ! સેવં

નવ વેં ઉદેશક સે ચારહ પર્યન્ત કે ઉદેશોકા કથન

‘જહા ભવસિદ્ધિર્દિં ચત્તારિ ઉદેસયા મણિયા’ જિસ પ્રકાર ભવસિદ્ધિક નારકોં કો આશ્રિત કરકે ચાર ઉદેશક કહે ગયે હૈં ‘એવં અભવસિદ્ધિર્દિં વિ ચત્તારિ ઉદેસગા મણિયવ્વા’ હસી પ્રકાર અભવસિદ્ધિક નૈરયિકોં કો આશ્રિત કરકે મી ચાર ઉદેશક કહના ચાહિયે-યાવત્કાપોતલેશ્યા ઉદેશક તક । યહાં યાવત્પદ સે સામાન્ય નૈરયિકોં કા કૃષ્ણલેશ્યાવાલે નૈરયિકોં કા એવં નીલલેશ્યાવાલે નૈરયિકોં કા ગ્રહણ હુઆ હૈ । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે મદન્ત ! જૈસા આપ દેવાનુપ્રિયને યહ વિષય કહા હૈ વહ સર્વથા સત્ય હી હૈ ૨ । એસા

॥નવમા ઉદેશાથી બારમા સુધીના ઉદેશાઓનો પ્રારંભ—

‘જહા ભવસિદ્ધિર્દિં ચત્તારિ ઉદેસયા મણિયા’ જે પ્રમાણે ભવસિદ્ધિક નારકોને ઉદેશીને ચાર ઉદેશાઓ કહેવામાં આવેલા છે, ‘એવં અભવસિદ્ધિર્દિં વિ ચત્તારિ ઉદેસગા મણિયવ્વા’ એજ પ્રમાણે અભવસિદ્ધિક નૈરયિકોને ઉદેશીને પણ ચાર ઉદેશાઓ કહેવા ભેદ છે. યાવત્કાપોતલેશ્યા ઉદેશક પર્યન્ત કહેવું ભેદ છે. અહિયાં યાવત્પદથી આ એકત્રીસમા શતકના સામાન્ય ઉદેશાના કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નૈરયિકો અને નીલલેશ્યાવાળા નૈરયિકો ગ્રહણ કરાયા છે.

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ જે ભગવન્ આપદેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે કહ્યું છે, તે સર્વથા સત્ય જ છે. જે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે, આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓ

प्रमेयचन्द्रिका टीका श० ३१ उ० ९-१२ सू० १ लेश्यायुक्तं नै. उपपातादिकम् २१६

भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥ नवम दशमैकादश द्वादशो
द्देशकाः समाप्ताः ॥९-१०-११-१२॥

इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यानैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित — कोल्हापुरराजगुरु-
बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य — जैनधर्मदिवाकर
पूज्य श्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री
“भगवतीसूत्रस्य” प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायाम् एकत्रिंशत्तमशतकस्य
नवमोद्देशका दारभ्य द्वादशान्ता
उद्देशकाः समाप्ताः ॥९-१२॥

कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना
नमस्कार कर फिर वे संघम और तप से आत्मा को भावित करते हुए
अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० १॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
“भगवतीसूत्र” की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके इकतीसवें शतक का
नववें उद्देशक ९-से लेकर १२ तक समाप्त ॥९-१२॥

ने नमस्कार कर्या वंदना नमस्कार करीने तेजो संघम अने तपथी पोताना
आरमाने भावित करता थका पोताना स्थान पर गिराज मान थया. ॥सू० १॥
जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजी महाराजकृत “भगवतीसूत्र”नी
प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याना अेकत्रीसमा शतकेना नवमा उद्देशाथी आर उद्देशा
सुधीना उद्देशाजो समाप्त ॥३१-६-१२॥



ત્રયોદશાદારમ્ય ષોડશાન્તા ઉદ્દેશકાઃ

‘एवं सम्मदिट्ठि वि लेस्सासंजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा’ एवं भवसिद्धिकनारकवदेव सम्यग्दृष्टिभिरपि नारकैः कृष्ण-नील कापोतलेश्या-संयुक्तैः चत्वार उद्देशकाः कर्तव्याः । सम्यग्दृष्टिकक्षुल्लककृतयुग्मनारकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? कृष्णलेश्य सम्यग्दृष्टि क्षुल्लककृतयुग्मनारकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते २, नीललेश्य सम्यग्दृष्टि नारकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ३, कापोतलेश्य सम्यग्दृष्टिनारकाः कुत उत्पद्यन्ते ४,

તેરહવેં ઉદ્દેશક સે સોલહવેં પર્યન્ત કે ઉદ્દેશક કા કથન

‘एवं सम्मदिट्ठी वि लेस्सा संजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा’

भवसिद्धिक, एवं अभवसिद्धिक नारक के जैसे कृष्ण, नील कापोतलेश्या संयुक्त सम्यग्दृष्टि नारकों को लेकर भी चार उद्देशक कहना चाहिये—जैसे हे भदन्त ! क्षुल्लक कृतयुग्म राशिप्रमित सम्यग्दृष्टिक नारक किस स्थान विशेष से आकर के नरकावास में उत्पन्न होते हैं ? इत्यादि हे भदन्त ! कृष्णलेश्यावाले क्षुल्लककृतयुग्म राशिप्रमित सम्यग्दृष्टि नारक किस स्थान विशेष से आकर के नरकावास में उत्पन्न होते हैं ? २ । इत्यादि नीललेश्यावाले क्षुल्लककृतयुग्म राशिप्रमित सम्यग्दृष्टिक नारक हे भदन्त । किस स्थान विशेष से आकर के नरकावास में उत्पन्न होते हैं ? इत्यादि ३ कापोतलेश्यावाले क्षुल्लक कृतयुग्म राशिप्रमित सम्यग्दृष्टि नारक हे भदन्त । किस स्थान विशेष से आकर के नरकावास में उत्पन्न होते हैं ? इत्यादि ४ इस क्रम से ये चार उद्देशक जानना चाहिये । ‘नवर’ सम्मदिट्ठि पढमवीतिएसु वि दोसु वि उद्देमएसु

તેરમા ઉદ્દેશાથી સોળમા સુધીના ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

‘एवं सम्मदिट्ठिहिं वि लेस्सासंजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा’ इत्यादि

टीકાર્થ—ભવસિદ્ધિક નારકોના કથન પ્રમાણે કૃષ્ણ નીલ, કાપોતલેશ્યાવાળા સમ્યગ્દૃષ્ટિ નારકોને ઉદ્દેશીને ચાર ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ, જેમ કે—૧ લગવન કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મરાશિ પ્રમિત સમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા નારકો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? ૨ નીલલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત સમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા નારકો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને નારકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? ૩ કાપોતલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિતસમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા નારકો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? ૪ આ કેમથી ચાર ઉદ્દેશાઓ સમજી લેવા. ‘નવર’ સમ્મદિટ્ઠિ પઢમવીતિપસુ ઘોસુ

एवं क्रमेण चत्वार उद्देशकाः ज्ञातव्याः । 'नवरं सम्मदिद्वीपदमवितिपसु वि दोसु वि उद्देसएसु' नवरं केवलं सम्यग्दृष्टिनारकः, प्रथमद्वितीययोरपि द्वयो-
रपि उद्देशकयोः । 'अहे सत्तमा पुढवीए न उववाएयव्वो' अधः सप्तमी पृथिव्यां
सप्तमनरकभूमौ न उपपातयितव्यः, प्रथमद्वितीयोद्देशके सम्यग्दृष्टिनारकः सप्तम-
नारकभूमौ न उपपातयितव्यः । कापोतलेश्याश्रयः प्रथम-द्वितीय तृतीयनरकेषु
गच्छति नान्यत्र, नीललेश्यः तृतीय चतुर्थ-पञ्चमनरके गच्छति नान्यत्र, कृष्ण
लेश्यः-पञ्चम-षष्ठ सप्तमनरकेषु गच्छति नान्यत्र, किन्तु कृष्णलेश्यः-सम्यग्दृष्टिः
सप्तमे न गच्छति पञ्चम षष्ठ नरकेषु गच्छत्येवेति भगवता कथितम् । कृष्णलेश्य-
स्य सप्तम्यां गमनसंभवेन सम्यग्दृष्टिप्रभावात् तन्निषेधो युक्त एव नील कापो

अहे सत्तमा पुढवीए न उववाएयव्वो' परन्तु प्रथम और द्वितीय उद्देशक
में सम्यग्दृष्टि नारक का अधःसप्तमी पृथिवी में उत्पाद नहीं होने के
कारण उसका वहां उत्पाद नहीं कहना चाहिये तात्पर्य इस कथन का
ऐसा है कि कापोतलेश्यावाला सम्यग्दृष्टि नारक प्रथम तृतीय, चतुर्थ
और पंचम इन नरकों में जाता है अन्य नरकों में नहीं जाता है
नीललेश्यावाला सम्यग्दृष्टि नारक तृतीय चतुर्थ और पंचम इन
नरकों में जाता है । अन्यत्र नहीं जाता है कृष्णलेश्यावाला नारक
यद्यपि पञ्चम, षष्ठ और सप्तम इन नरकों में जाता है अन्यत्र नहीं
जाता है किन्तु कृष्णलेश्यावाला सम्यग्दृष्टि नारक सप्तम नरक में नहीं
जाता पंचम और षष्ठ नरक में तो जाता ही है ऐसा भगवान ने कहा
है । कृष्णलेश्यावाले का सप्तम नरक में गमन संभव है परन्तु सम्य-
ग्दर्शन के प्रभाव से वहां जाने का निषेध किया गया है सो यह कथन

ઉદ્દેસેસુ અહે સત્તમા પુઢવીએ ન ઉવવાએયવ્વો' પરંતુ પહેલા અને બીજા
ઉદ્દેશમાં સમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા નારકનો અધઃસપ્તમી પૃથ્વીમાં ઉત્પાત ન થવાના
કારણે ત્યાં તેનો ઉત્પાત કહેવો ન લેખ્યો. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-કાપોતિક
લેશ્યાવાળા સમ્યગ્દૃષ્ટિ નારક પહેલા બીજા અને ત્રીજા નરકોમાં જાય છે. તે
શિવાય ના બીજા નરકોમાં જતા નથી. નીલલેશ્યાવાળા સમ્યગ્દૃષ્ટિ નારક ત્રીજા,
ચોથા, અને પાંચમા નરકોમાં જાય છે. તે શિવાય અન્યત્ર જતા નથી કૃષ્ણ-
લેશ્યાવાળા નારકો જો કે-પાંચમા, છઠ્ઠા અને સાતમા નરકોમાં જાય છે,
અન્યત્રજતા નથી. પરંતુ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા સમ્યગ્દૃષ્ટિ નારક સાતમા નરકમાં
જતા નથી. પહેલા અને છઠ્ઠા નરકમાં તો જાય જ છે. તે પ્રમાણે ભગવાને કહ્યું
છે. કૃષ્ણલેશ્યાવાળાનું સાતમા નરકમાં ગમન સંભવિત છે. પરંતુ સમ્ય-
ગ્દર્શનના પ્રભાવથી ત્યાં જવાનો નિષેધ કરેલ છે, તો આ કથન યોગ્ય જ છે.

તયોસ્તુ તત્ર સપ્તમ્યાં પ્રાપ્તિરેવ નાસ્તિ, અતો ન તન્નિષેધઃ કૃત્ત ઇતિ એતદેવ વૈલક્ષ-
ણ્યમ્ 'સેસં તં ચેવ' શેષમ્-કથિતવ્યતિરિક્તમ્ અન્યત્સર્વં પૂર્વવદેવ જ્ઞાતવ્યમિતિ ।
'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ યાવદ્વિહરતિ ।

ઇતિ શ્રી - વિશ્વવિરુપાતજગદ્બલ્લભાદિપદમૂષિતવાલબ્રહ્મચારિ - 'જૈનાચાર્ય'
પૂજ્યશ્રી-ઘાસીલાલત્રિવિરચિતાયાં "શ્રી મગવતીસૂત્રસ્ય" પ્રમેયચન્દ્રિકાખ્યાયાં
વ્યાખ્યાયાં એકત્રિશત્તમે શતકે ત્રયોદશોદેશકાદારમ્બ ષોડશોદેશકાન્તા
ઉદેશકાઃ સમાપ્તાઃ ॥૩૧।૩૧।૧૬॥

યુક્ત હી હૈ । નીલ ઓર કાપોતલેશ્યાવાલોં કી તો વહાં પ્રાપ્તિ હી નહીં
હૈ । હસલિયેં વહાં હસકા નિષેધ નહીં કિયા ગયા હૈ । 'સેસં તં ચેવ'
હસ મિન્નતા કે અતિરિક્ત ઓર સવ કથન પૂર્વોક્ત જૈસા હી હૈ । 'સેવં
મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' હે મદન્ન ! જૈસા આપ દેવાનુપ્રિયને કહા હૈ વહ
સવ કથન સત્ય હી હૈ ૨ એસા કહકર ગૌતમસ્વામીને પ્રભુશ્રી કો વન્દના
કી ઓર નમસ્કાર કિયા, વન્દના નમસ્કાર કર ફિર વે સંયમ ઓર તપ
સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુએ અપને સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે ।

॥ શતક ૩૧ ઉદેશક ૧૩ સે ૧૬ તક સમાપ્ત ॥ ૩૧-૧૩-૧૬ ॥

નીલ અને કાપોતિક લેશ્યાવાળાઓની તો અહિયાં પ્રાપ્તિ જ થતી નથી.
તેથી તેમને નિષેધ નથી. 'સેસં તં ચેવ' આ ઉપર કહેલ લિન્ન પછા શિવાય
બાકીનું તમામ કથન પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે જ છે. તેમ સમજવું.

'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' હે લગવન્ આપદેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણે
આ વિષયમાં કથન કર્યું છે. તે સમજી કથન સર્વથા સત્ય જ છે, હે લગવન્
આપદેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ
પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી
તેઓ સંયમ અને તપથી આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર
બિરાજ માન થયા. ॥સૂ.૦૧॥

એકત્રીસમા શતકમા તેરમા ઉદેશાથી સોળમા ઉદેશા
સુધીના આર ઉદેશાઓ સમાપ્ત ॥૧૩-૧૬॥

‘मिच्छादिद्विहिं वि चत्तारि उद्देशगा कायव्वा, जहा, भवसिद्धियाणं, मिथ्या-
दृष्टिभिरपि लेश्यासंयुक्तैश्चत्वार उद्देशकाः सामान्योद्देशकाः कृष्ण-नील कापोत-
लेश्याश्रयाः त एते चत्वार उद्देशकाः कर्त्तव्याः यथा भवसिद्धिकानां चत्वारः
कथिता इति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति, तद्देवं भदन्त ! तद्देवं भदन्त ! इति
सप्तदशा-ऽष्टादशै-कोनविंशति विंशत्युद्देशकाः समाप्ताः ३१।१७।२०

‘मिच्छादिद्विहिं वि चत्तारि उद्देशगा कायव्वा जहा भवसिद्धियाणं’
लेश्या संयुक्त मिथ्यादृष्टि नारकों के भी चार उद्देशक भवसिद्धिक
नारकों के जैसे कहना चाहिये, एक सामान्य उद्देशक कृष्णलेश्याश्रय
द्वितीय उद्देशक २ नीललेश्याश्रय तृतीय उद्देशक ३ और कापोतलेश्या
श्रय चतुर्थ उद्देशक ४ ‘सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति’ हे भदन्त आप
देवानुप्रिय के द्वारा कहा गया यह सब कथन सर्वथा सत्य ही है २ इस
प्रकार कह कर गौतमस्वामीने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार
किया, वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को
भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० १॥

॥ शतक ३१ उद्देशक १७ से २० तक समाप्त ॥ ३१-१७-२० ॥

सत्तरभा उद्देशाथी वीसभा सुधीना उद्देशाओने प्रारंभ—

‘मिच्छादिद्विहिं वि चत्तारि उद्देशगा कायव्वा जहा भवसिद्धियाणं’ इत्यदि
टीका—लेश्यावाणा मिथ्यादृष्टिवाणा नारकोमां पणु भवसिद्धिक नारकोना
कथन प्रमाणे आरे उद्देशाओ कडेवा लेछो ओक सामान्य उद्देशक १ कृष्ण
लेश्यावाणा संभंधी भोजे उद्देशो २ नीललेश्या संभंधी त्रीजे उद्देशो ३ अने
कापोतलेश्या संभंधी ओथो उद्देशो. ४ आ आर उद्देशाओ समणु लेवा.

‘सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति’ हे लगवन् आपदेवानुप्रिये ने कहेल आ
तमाभ आ कथन सर्वथा सत्य न छे. हे लगवन् आपदेवानुप्रिये कहेल आ
विषयनुं सधणुं कथन सर्वथा सत्य न छे आ प्रमाणे कहीने गौतमस्वामीओ
प्रभुश्रीने वंदना करी नमस्कार कर्या वंदना नमस्कार करीने ते पछी तेओ सयम
अने तपथी पोताना आत्माने भावित करता थका पोताना स्थान पर
भिराजमान थया, ॥सू० १॥

सत्तरभा उद्देशाथी वीसभा उद्देशा सुधीना आर उद्देशाओ समाप्त ॥ ३१-१७-२० ॥

અથ એકોનવિંશતિદારમ્ય ચત્વિંશતિત્યુદ્દેશકાઃ પ્રારમ્યન્તે ॥

‘एवं कण्ठपक्विएहि वि लेस्सासंजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा’ एवं भवसिद्धिकादिवदेव कृष्णपाक्षिकं नारकैरपि लेख्यायुक्तेः कृष्ण-नील-कापोतयुक्तश्चत्वार उद्देशकाः कर्त्तव्याः परिपठनीयाः, सामान्योद्देशकः प्रथमः कृष्णलेख्याश्रितो द्वितीयः नीललेख्याश्रयश्चतुर्थ, एते चत्वार उद्देशकाः पठनीयाः ? इत्याह-‘जदेव भवसिद्धिएहि यथैव भवसिद्धिकं भवद्विकनारकाश्रितलेख्याश्रिताश्चत्वार उद्देशकाः द्वापि-तथैव चत्वारो ज्ञातव्या इति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति, तदेव भदन्त ! तदेव भदन्त ! इति ॥ २१-२२-२३-२४ उद्देशकाः समाप्ताः ॥

एकवीसवें उद्देशक से चौबीसवें पर्यन्त के उद्देशक का कथन

‘एवं कण्ठपक्विएहि वि लेस्सासंजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा’ टीकार्थ-भवसिद्धिक आदि नारकों के जैसे कृष्ण, नील, कापोत लेख्या युक्त कृष्णपाक्षिक नारकों के भी चार उद्देशक कहना चाहिये । इनमें एक पहला सामान्य उद्देशक है कृष्णलेख्याश्रित द्वितीय उद्देशक है । नीललेख्याश्रित तृतीय उद्देशक है । और कापोतलेख्याश्रित चतुर्थ उद्देशक है । ‘सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति’ हे भदन्त ! जैसा आप देवानुप्रिय ने कहा है वह सर्वथा सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतमस्वामी ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥ सू० १॥

॥ शतक ३१ उद्देशक २१ से २४ तक समाप्त ॥

એકવીસમા ઉદ્દેશાથી ચોવીસમા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ-

‘एवं कण्ठपक्विएहि वि लेस्सा संजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा’ ઇત્યાદિ ટીકાર્થ-ભવસિદ્ધિક વિગેરે નારકોના કથન પ્રમાણે કૃષ્ણ, નીલ, કાપોત, લેશ્યાવાળા કૃષ્ણપાક્ષિક નારકોના સંબંધમાં પણ ચાર ઉદ્દેશાઓ સમજી લેવા. તેમાં એક સામાન્ય પહેલો ઉદ્દેશો. ૧ કૃષ્ણલેશ્યા સંબંધી બીજો ઉદ્દેશો કહ્યો છે. નીલલેશ્યા સંબંધી ત્રીજો ઉદ્દેશો કહ્યો છે.

‘सेवं भंते ! सेवं ! भंते ! त्ति’ હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણેનું કથન કર્યું છે, તે સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજ માન થયા. ૧ સૂ૦ ૧॥

એકવીસમા ઉદ્દેશાથી ૨૪ ચોવીસમા ઉદ્દેશા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત

॥ ૩૧-૨૧ થી ૨૪॥

‘સુકપક્ષિખર્દિ, एवं चेव चत्तारि उद्देशगा भाणियन्वा’ शुक्लपाक्षिकैः एव-
मेव चत्वार उद्देशका भणितव्याः, शुक्लपक्षिकक्षुल्लककृतयुग्मनारकाः खलु
भदन्त ? कुत उत्पद्यन्ते, एवं क्रमेण—प्रथम उद्देशकः शुक्लपाक्षिककृष्णलेश्य
क्षुल्लककृतयुग्मादि नारकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते २ इति द्वितीयोद्देशकः २
नीललेश्य शुक्लपाक्षिक क्षुल्लककृतयुग्मादिनारकाः खलु भदन्त ! कुत उत्प-
द्यन्ते ? इति तृतीयोद्देशकः ३ कापोतलेश्य शुक्लपाक्षिकक्षुल्लककृतयुग्मादि
नारकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? इति चतुर्थोद्देशकः ४ एवं क्रमेण चत्वार
उद्देशका संपद्यन्ते । कियत्पर्यन्तं वक्तव्या उद्देशकास्तत्राह—‘जाव’ इत्यादि ।

‘સુકપક્ષિખર્દિ एवं चेव चत्तारि उद्देशगा भाणियन्वा’ इसी प्रकार
से शुक्लपाक्षिक नारकों के भी चार उद्देशक कहना चाहिये,—जैसे—
क्षुल्लककृतयुग्मादि राशिप्रमित शुक्लपाक्षिक नारक हे भदन्त ! किस
स्थान विशेष से आकर के नरकावास में उत्पन्न होते हैं ? ऐसा यह
प्रथम उद्देशक है क्षुल्लक कृतयुग्मादि राशिप्रमित कृष्णलेश्यावाले
शुक्लपाक्षिक नैरयिक हे भदन्त ! किस स्थान से आकर के नरकावास
में उत्पन्न होते हैं ? ऐसा यह द्वितीय उद्देशक है । क्षुल्लककृतयुग्मादि
राशि प्रमित नीललेश्यावाले शुक्लपाक्षिक नैरयिक हे भदन्त ! किस
स्थान विशेष से आकर के नरकावास में उत्पन्न होते हैं ? ऐसा यह
तृतीय उद्देशक है । क्षुल्लक कृतयुग्मादि राशिप्रमित कापोतलेश्यावाले
शुक्लपाक्षिक नैरयिक हे भदन्त ! किस स्थान विशेष से आकर के नरका-

પરચીસમાથી અઠયાવીસ સુધીના ઉદ્દેશાઓનો પ્રારભ—

‘સુકપક્ષિખર્દિ एवं चेव चत्तारि उद्देशगा भाणियन्वा’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—એજ પ્રમાણે શુક્લપાક્ષિક નારકોના સબંધમાં પણ ચાર
ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ જેમ કે—શુક્લક કૃતયુગ્મ આદિ રાશિપ્રમિત શુક્લ
પાક્ષિક નારક કે ભગવન્ કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન
થાય છે ? આ પ્રમાણેનો આ પહેલો ઉદ્દેશો છે ૧

શુક્લક કૃતયુગ્મ આદિ રાશિપ્રમિત કૃષ્ણલેશ્યાવાળા શુક્લ પાક્ષિક નૈરયિકો
કે ભગવન્ કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? એ
પ્રમાણેનો આ બીજો ઉદ્દેશો છે ૨

શુક્લકકૃતયુગ્મ આદિરાશિ પ્રમિત લેશ્યાવાળા શુક્લપાક્ષિક કે ભગવન્
કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને નરકવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? એ પ્રમાણેનો
ત્રીજો ઉદ્દેશો કહ્યો છે ૩

શુક્લક કૃતયુગ્મ વિગેરે રાશિપ્રમિત કાપોતલેશ્યાવાળા શુક્લપાક્ષિક નૈરયિકો
મં ૨૧

‘જાવ વાલુયપ્પમા પુઢવી કાઉલેસ્સ સુક્કપક્કિલ્લયલ્લુહાગ કલ્લિઓગનેરહ્યાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ યાવદ્ વાલુકાપ્રમા પૃથિવી કાપોતલેશ્ય શુક્લપાક્ષિક ક્ષુલ્લક કલ્લયોજનારકાઃ કુત ઉત્પદ્યન્તે યાવત્પદેન રત્નપ્રમા-શર્કરપ્રમાપૃથિવી સમ્બન્ધિકાપોતલેશ્યનારકાણાં તથા કાપોતલેશ્યાનાં કૃતયુગ્મ ટ્રયોજ-દ્વાપરયુગ્મ-ઘટ્ટિતાનાં શુક્લપક્ષિયનારકાણાં ગ્રહણં ભવતિ । પૂર્વોદેશક કથિતોત્પાદપ્રકારાઃ સંપ્રહીતવ્યાઃ યાવત્-નો પરપ્રયોગેણ ઉત્પદ્યન્તે એતત્પર્યન્તમ્, એતદાશયેનૈવ કથિતમ્ ।

‘તદેવ જાવ નો પરપ્રયોગેણ ઉવવજ્જંતિ’ તથૈવ યાવત્ નો પરપ્રયોગેણોત્પદ્યન્તે, પૂર્વોક્તં સર્વમિદાઽનુસન્ધેયમ્ । સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ તદેવં મદન્ત । મદન્ત ! ઇતિ યાવદ્વિહરતિ ॥

વાસ મેં ઉત્પન્ન હોતે હૈં ૪ એસા યહ ચતુર્થ ઉદ્દેશક હૈ । યે ચારોં ઉદ્દેશક ‘જાવ વાલુયપ્પમા પુઢવી કાઉલેસ્સ સુક્કપક્કિલ્લયલ્લુહાગ કલ્લિઓગ નેરહ્યાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ હસ સૂત્રપાઠ તક કહના ચાહિયે । હસકા તાત્પર્ય યહ હૈ કિં-હે મદન્ત ! યાવત્ વાલુકાપ્રમાગત ક્ષુલ્લક કલ્લયોજ રાશિપ્રમિત કાપોતલેશ્યાવાલે શુક્લપાક્ષિક નારક કહાં સે આકર કે નરકાવાસ મેં ઉત્પન્ન હોતે હૈ ? યહાં યાવત્પદ સે રત્નપ્રમા એવં શર્કરા પ્રમાપૃથિવી સમ્બન્ધી કાપોતલેશ્યાવાલે નારકોં કા તથા કૃતયુગ્મ ટ્રયોજ, એવં દ્વાપરયુગ્મ રાશિપ્રમિત કાપોતલેશ્યાવાલે શુક્લપાક્ષિક નારકોં કા ગ્રહણ હુઆ હૈ । હસકે ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં-હે ગૌતમ ! ‘તદેવ જાવ નો પરપ્રયોગેણ ઉવવજ્જંતિ’ પૂર્વ કે જૈસા ઉત્તર જાનના ચાહિયે । યાવત્

હે ભગવન કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને નરકવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે. આ પ્રમાણેના આ ચોથા ઉદ્દેશો કહ્યો છે. ૪

આ ચારે ઉદ્દેશાઓ ‘જાવ વાલુયપ્પમા પુઢવી કાઉલેસ્સ સુક્કપક્કિલ્લયલ્લુહાગ કલ્લિઓગ નેરહ્યાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ આ સૂત્રપાઠ સુધી કહેવું જોઈએ.

આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે-હે ભગવન યાવત્ વાલુકાપ્રમા પર્યન્તના ક્ષુલ્લક કલ્લયોજ રાશિપ્રમિત કાપોતલેશ્યાવાળા શુક્લપાક્ષિક નારકો કયાંથી આવીને નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? અહિયાં યાવત્પદથી રત્નપ્રમા અને અને શર્કરાપ્રમા પૃથ્વીના નારકો તથા કૃતયુગ્મ ટ્રયોજ અને દ્વાપરયુગ્મ રાશિ પ્રમિત કૃષ્ણ નીલલેશ્યાવાળા શુક્લપાક્ષિક નારકો અહિં કરાયા છે.

આ ઉપર પૂછેલ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે હે ગૌતમ ! ‘તદેવ જાવ નો પરપ્રયોગેણ ઉવવજ્જંતિ’ પહેલાં કહ્યાં પ્રમાણે અહિયાં ઉત્તર અંતર્યામી યાવત્ તેઓ પરપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થતા નથી.

‘સર્વે વિ ઇષ અઢાવીસં ઉદેસગા’ સર્વેઽપિ એતે ઉપર્યુક્તા અષ્ટાવિંશતિ-
રુદેશકા ભવન્તીતિ ઇત્યેકત્રિંશત્તમે શતકે-૨૮ ઉદેશકાઃ સમાપ્તાઃ ॥

॥ ઇતિ શ્રી વિશ્વવિખ્યાત-જગદ્વલ્લભ-પ્રસિદ્ધવાચક-પશ્ચદશભાષા-
કલિતકલિત કલાપાલાપકપ્રવિશુદ્ધગદ્યપદ્યનૈકગ્રન્થનિર્માપક,
વાદિમાનમર્દક-શ્રીશાહુચ્છત્રપતિ કોલ્હાપુરરાજપદત્ત-
‘જૈનાચાર્ય’ પદભૂષિત—કોલ્હાપુરરાજગુરુ-
વાલબ્રહ્મચારિ — જૈનાચાર્ય — જૈનધર્મદિવાકર
—પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલવ્રતિવિરચિતાયાં શ્રી “ભગ-
વતીસૂત્રસ્ય ” પ્રમેયચન્દ્રિકાખ્યાયાં
વ્યાખ્યાયામ્ અષ્ટાવિંશત્યુદેશાત્મક-
મેકત્રિંશત્તમુપપાતશતં સમાપ્તમ્ ॥

વે પર પ્રવોગ સે ઉત્પન્ન નહીં હોતે હિં । ‘સેવ’ મંતે । સેવ’ મંતે । ત્તિ’ હે
મદન્ત ! જૈસા આપને કહા હિં વહ સવ કથન સર્વથા સત્ય હી હૈ ૨ । હસ
પ્રકાર કહકર ગૌતમ સ્વામી ને પ્રભુશ્રી કો વન્દના કી ઓર નમસ્કાર
કિયા, વન્દના નમસ્કાર કર ફિર વે સંયમ ઓર તપ સે આત્મા કો
ભાવિત કરતે હુએ અપને સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે । ‘સર્વે વિ ઇષ
અઢાવીસં ઉદેસગા’ હસ પ્રકાર સે યે સવ ૨૮ ઉદેશક સમાપ્ત હો જાતે હિં ।
જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજીમહારાજકૃત
“ભગવતીસૂત્ર” કી પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાકે અઠાઈસ ઉદેશક સહિત
॥ ૩૧ વાં શતક સમાપ્ત ॥

‘સેવ’ મંતે । સેવ’ મંતે । ત્તિ’ હે ભગવન આપદેવાનુપ્રિયે જે કથન કયું
છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે હે ભગવન આપદેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા
સત્ય છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમ-
સ્કાર કર્યા. વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના
આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. સૂ૦૧॥
‘સર્વે વિ ઇષ અઢાવીસં ઉદેસગા’ આ રીતે બધા મળીને અઠ્યાવીસ
ઉદેશાઓ થાય છે.

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર શ્રી પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત ‘ભગવતીસૂત્ર’ની
પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના એકત્રીસમા શતકના પચ્ચીસમા ઉદેશાથી
અઠ્યાવીસમા ઉદેશાઓનું કથન સમાપ્ત ॥૩૧-૨૫ થી ૨૮॥
॥એકત્રીસમું શતક સમાપ્ત ॥૩૧॥

॥ अथ द्वात्रिंशत्तमं शतकम् ॥

(१ २८ उद्देशकाः)

एकत्रिंशमे शतके नारकादि जीवानामुत्पादादिः कथितः, द्वात्रिंशत्तमे तु शतके नारकादि जीवानामेव उद्वर्तना कथ्यते इत्येवं सम्बन्धेन आयातस्याऽष्टाविंशत्युद्देशकं प्रमाणस्येदमादिमं सूत्रम्—

‘खुड्ढागकडजुम्मनेरइयाणं भंते’ इत्यादि ।

मूलम्—खुड्ढागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! अणंतरं उव्वट्ठित्ता कहिं गच्छंति, कहिं उव्वज्जंति किं नेरइएसु उव्वज्जंति तिरिक्खजोणिएसु उव्वज्जंति उव्वट्ठणा जहा वक्कंतीए ।

ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उव्वट्ठंति ? गोयमा ! चत्तारि वा, अट्ठ वा, बारस वा, सोलस वा, संखेज्जा—असंखेज्जा वा उव्वट्ठंति । ते णं भंते ! जीवा कहां उव्वट्ठंति, गोयमा ! से जहानामए पवए एवं तहेव ।

एवं सो चेव गमओ जाव आयप्पयोगेणं उव्वट्ठंति नो परप्पयोगेणं उव्वट्ठंति । रयणप्पभापुढवि खुड्ढागकडजुम्मं एवं रयणप्पभाए वि एवं जाव अहे सत्तमाए । एवं खुड्ढागतेओग खुड्ढागदावरजुम्म खुड्ढागकलिओगा ।

नवरं परिमाणं जाणियव्वं सेसं तं चेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

कण्हलेस्स कडजुम्म नेरइया एवं एएणं कमेणं जहेव उव्वायसए अट्ठावीसं उद्देसगा भणिया तहेव उव्वट्ठणा सए वि अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा ।

नवरं उव्वट्ठंति त्ति अभिलावो भाणियव्वो सेसं तं चेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥३—१—२८॥

वत्तीसइमं उव्वट्ठणा सयं समत्तं ॥३२॥

छाया-क्षुल्लककृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! अनन्तरम् उद्धर्त्य कुत्र गच्छन्ति कुत्रोत्पद्यन्ते, किं नैरयिकेषु उत्पद्यन्ते तिर्यग्योनिकेषु, उत्पद्यन्ते, उद्धर्तना यथा व्युत्क्रान्तौ । ते खलु भदन्त ! जीवा एक समयेन कियन्त उद्धर्तन्ते ? गौतम ! चत्वारो वा, अष्टौ वा, द्वादश वा, षोडश वा, संख्याता वा, असंख्याता वा, उद्धर्तन्ते । ते खलु भदन्त ! जीवाः कथमुद्धर्तन्ते, गौतम ! स यथानामकः प्लवकः, एवं तथैव, एवं स एव गमको यावद्-आत्मप्रयोगेण-उद्धर्तन्ते, नो परप्रयोगेण उद्धर्तन्ते । एवं रत्नप्रसापृथिवीक्षुल्लककृतयुग्म, एवं रत्नप्रभायामपि एवं यावदधः सप्तम्याम् । एवं क्षुल्लक-त्रयोज-क्षुल्लकद्वापरयुग्म-क्षुल्लककल्योजाः । नवरं परिमाणं ज्ञातव्यम्, शेषं तदेव । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥ सू० १ ॥

द्वात्रिंशत्तमशतके प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥ ३२ ॥ १ ॥

कृष्णलेश्य-कृतयुग्म-नैरयिकाः, एवमेतेन क्रमेण यथैव उपपातशतेऽष्टाविंशतिरुद्देशका भणिता स्तथैव-उद्धर्तनाशतेऽपि अष्टाविंशति रुद्देशका भणितव्या निरवशेषाः । नवरम् उद्धर्तन्ते इत्यभिलाषो भणितव्यः, शेषं तदेव । तदेवं भदन्त । तदेवं भदन्त । इति यावद्विहरति ॥ 'द्वात्रिंशत्तममुद्धर्तनाशतं समाप्तम् ॥ ३२ ॥

टीका-‘खुड्डागकडजुम्म नेरइयाणं भंते ! क्षुल्लककृतयुग्म राशिरूपनैरयिकाः खलु भदन्त । ‘अणंतरं उव्वट्ठिता कर्हि गच्छन्ति’ अनन्तरम्-नारकभवसमाप्ती

--शतक ३२ उद्देशक १-२८-

३१ वें शतक में नारक जीवों का उत्पाद आदि कहा अब इस ३२ वें शतक में उन्ही कृतयुग्मादि राशिप्रमित नैरयिकों की उद्धर्तना कहनी है, सो इसी सम्बन्ध को लेकर इस शतक का प्रारम्भ हुआ है । इसमें २८ उद्देशक हैं । ‘खुड्डाग कडजुम्म नेरइयाणं भंते !’ इत्यादि

टीकार्थ-‘खुड्डागकडजुम्म नेरइयाणं भंते !’ हे भदन्त ! क्षुल्लककृतयुग्मराशिप्रमित नैरयिक नारक अबकी समाप्ति होते ही नारकभव में से

अत्रिसमा शतकनो प्ररंल-उद्देशो पडेवो-

अत्रिसमा शतकमां नारक विगेरे लोवोना उत्पाद विगेरेनुं कथन कश्वामां आण्युं छे. डवे आ अत्रिसमा शतकमां अण कृतयुग्म विगेरे राशि वाणा नैरयिकोनी उद्धर्तना कडेवामां आवशे. अ संलधने लधने आ शतक नो प्रारंल कश्वामां आण्ये छे. आ शतकमां अठ्यावीस उद्देशाअो छे.

‘खुड्डाग कडजुम्म नेरइयाणं भंते !’ इत्यादि

टीकार्थ-‘खुड्डाग कडजुम्मनेरइयाणं भंते !’ हे भगवन क्षुल्लक कृत युग्म राशिप्रमित नैरयिक, नारक लवनी समाप्ती यतां न नारक लवनी

સત્યામ્ અન્તરરહિતમ્ ઉદ્વર્ત્ય-નિઃમૃત્ય 'કદિ ગચ્છન્તિ' કુત્ર ગચ્છન્તિ 'કદિ ઉવવજ્જન્તિ' કુત્રોત્પદ્યન્તે ? હે મદન્ત ! इमे नारकभवसमाप्तौ अनन्तरम्-अन्तर-रहितं कस्मिन् भवे गच्छन्ति, कुत्र चोत्पद्यन्ते-किं नेरइएसु उववज्जन्ति तिरिक्ख-जोणिएसु उववज्जन्ति' किं नैरयिकेषु उत्पद्यन्ते ? अथवा-तिर्यग्गोनिकेपूत्पद्यन्ते इति प्रश्नः, उत्तरमाह-'उव्वट्टणा' इत्यादि' 'उव्वट्टणा जहा वक्कंतीए' उद्वर्तना यथा व्युत्क्रान्तौ, प्रज्ञापनायाः पण्टपदे यथा-उद्वर्तना कथिता, तथैव इहापि नारकाणामुद्वर्तना ज्ञातव्या । अर्थतः सा चैवम्—

नरगाओ उव्वट्टा, गव्मे पज्जत्तऽसंखजीवीसु' इति ।

नरकात् उद्बृत्ता गर्भे पर्याप्ता संख्याजीविषु, इतिच्छाया ।

अयं भावः—ते नारका नरकान्निर्गत्य पर्याप्तसंख्यातवर्षायुष्क मनुष्येषु त्पद्यन्ते, तथा-तिर्यग्गोनिकेपूत्पद्यन्ते इति । 'ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं

निकल करके कहाँ पर जाते हैं ? कहाँ उत्पन्न होते हैं ? तात्पर्य यह है कि नारक नरक पर्याय से निकलते ही उसी समय किस भव में जाते हैं और कहाँ उत्पन्न होते हैं ? 'किं नेरइएसु उववज्जन्ति' क्या नैरयिकों में उत्पन्न होते हैं ? या 'तिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति' तिर्यग्गोनिकों में उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—'उव्वट्टणा जहा वक्कंतीए' हे गौतम ! प्रज्ञापना के दठे पद में जिस प्रकार से उद्वर्तना कही गई है, उसी प्रकार से यहां पर भी नारकों की उद्वर्तना कहनी चाहिये, वह इस प्रकार से है—

'नरगाओ उव्वट्टा गव्मे पज्जत्तऽसंखजीवीसु' तात्पर्य ऐसा है—वे नारक नरक से निकल करके पर्याप्त संख्यात वर्ष की आयुवाले मनुष्यों में और तिर्यग्गोनिकों में उत्पन्न होते हैं । 'ते णं भंते ! जीवा एग-

નીકળીને કયાં જાય છે ? અર્થાત્ કયાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે-નારક, નારક પર્યાયથી નીકળીને એ વળતે કયા ભવમાં જાય છે ? અને કયાં ઉત્પન્ન થાય છે ? 'કિં નેરइएसु उववज्जन्ति' શું તેઓ નૈરયિકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા 'તિરિक्खजोणिएसु उववज्जन्ति' તિર્યગ્ગોનિકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમીને કહે છે કે—'उव्वट्टणा जहा वक्कंतीए' हे गौतम ! प्रज्ञापना सूत्रना छठा व्युत्क्रांति पदमां ने प्रमाणे उद्वर्तना संबंधी कथन कहेवाમાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં નારકોની પણ ઉદ્વર્તના કહેવી જોઈએ. તે કથન આ પ્રમાણે છે -

'नरगाओ उव्वट्टा गव्मे पज्जत्तऽसंखजीवीसु' આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે—તે નારકો નરકથી નીકળીને પર્યાપ્તક સંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળા મનુષ્યોમાં અને તિર્યગ્ગોનિકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે. 'ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं

કેવહ્યા ઉવ્વટ્ઠંતિ' તે સ્વલુ નારકા મદન્ત ! એકસમયેન એકસ્મિન્ સમયે હત્યર્થા કિયત્સંખ્યકા ઉદ્વર્તન્તે इति પ્રશ્નઃ । મગવાનાહ 'ગોયમા, હત્યાદિ । ગોયમા' હે ગૌતમ ! 'ચત્તારિ વા, અટ્ટ વા, વારસ વા, સોલસ વા, સંખેજ્ઞા વા અસંખેજ્ઞા વા, ઉવ્વટ્ઠંતિ' ક્ષુલ્લક-કૃતયુગ્મ-નારકા અત્વારો વા, અઘ્ટૌ વા, દ્વાદશ વા, પોઢશ વા, સંખ્યાતા વા અસંખ્યાતા વા, એકસમયે ઉદ્વર્તન્તે इति । 'તે ણં મંતે ! જીવા કહં ઉવ્વટ્ઠંતિ' તે સ્વલુ મદન્ત ! ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ-નારકા જીવાઃ કથં કેન પ્રકારેણ ઉદ્વર્તન્તે इति પ્રશ્નઃ । મગવાનાહ-'ગોયમા' હે ગૌતમ ! 'સે જહાનામણ પવણ એવં તહેવ' સ યથાનામકઃ પલ્લવઃ, એવં તથૈવ-પૂર્વોક્તવદેવ 'એવં સો ચેવ ગમમ્મો જાવ-આયણ્ણમોગેણ ઉવ્વટ્ઠંતિ' એવં સ એવ ગમકો યાવદ્ આત્મપ્રયોગેણ ઉદ્વર્તન્તે નો પરપ્રયોગેણોત્પદ્યન્તે । અયં માવઃ ક્ષુલ્લક-કૃતયુગ્મ-નારકાઃ કથમુદ્વર્તન્તે इति

સમણં કેવહ્યા ઉવ્વજ્ઞંતિ' હે મદન્ત ! વે જીવ એક સમય મેં કિતને ઉત્પન્ન હોતે હૈં અર્થાત્ વે જીવ નરક સે એક સમય મેં કિતને નિકલતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રમુશ્રી કહતે હૈં-'ગોયમા ! ચત્તારિ વા અટ્ટ વા, વારસ વા, સોલસ વા સંખેજ્ઞા વા અસંખેજ્ઞા વા ઉવ્વટ્ઠંતિ' હે ગૌતમ ! ચાર અથવા આઠ અથવા વારસ અથવા સોલસ અથવા સંખ્યાત યા અસંખ્યાત નારક જીવ એક સમય મેં વહાં સે નિકલતે હૈં ।

'તેણં મંતે ! જીવા કહં ઉવ્વટ્ઠંતિ' હે મદન્ત ! ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત નારક જીવ કિસ પ્રકાર સે ઉદ્વર્તના કરતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રમુશ્રી કહતે હૈં-'ગોયમા ! સે જહાનામણ પવણ એવં તહેવ' હે ગૌતમ ! જૈસે કોઈ કૂડનેવાલા મનુષ્ય જૈસાકિ પચ્ચીસ વેં શતક કે આઠવેં ઉદ્દેશક મેં કહા ગયા હૈં ઉસી કે અનુમાર વહાં ગમ્મક કહના ચાહિયે, અર્થાત્ ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારક કિસ પ્રકાર સે ઉદ્વર્તના કરતે હૈં ? તો

કેવહ્યા ઉવ્વજ્ઞંતિ' હે ભગવન્ તે જીવો એક સમયમાં કેટલા ઉત્પન્ન થાય છે ? અર્થાત્ એક સમયમાં નરકવાસમાંથી કેટલા નીકળે છે ? ઉત્તરમાં પ્રમુશ્રી કહે છે કે-'ગોયમા ! ચત્તારિ વા, અટ્ટ વા, વારસ વા, સોલસ વા, સંખેજ્ઞા વા, અસંખેજ્ઞા વા ઉવ્વટ્ઠંતિ' હે ગૌતમ ! ચાર અથવા આઠ અથવા બાર અથવા સોળ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત નારક જીવ એક સમયમાં ત્યાંથી નીકળે છે.

'તેણં મંતે જીવા કહં ઉવ્વટ્ઠંતિ' હે ભગવન્ તે ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ રાશિ પ્રમિત નારક જીવો કઈ રીતે ઉદ્વર્તના કરે છે ? ઉત્તરમાં પ્રમુશ્રી કહે છે કે-'ગોયમા ! સે જહા નામણ પવણ એવં તહેવ' હે ગૌતમ ! જેમ કોઈ કૂડવાવાળો પુરૂષ જેમ કે પચ્ચીસમાં શતકના આઠમાં ઉદ્દેશમાં કહેવામાં આવેલ છે-એજ પ્રમાણેના ગમકો અહિયાં કહેવા બોધાએ અર્થાત્ ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ

પદ્મનસ્ય પ્રતિવચનાવપરે પશ્ચવિંશતિશતકશ્યાઽઘ્ટમોદ્દેશકસ્ય ભાવ હ્રદાનુકરણીયઃ
અર્થદ્વારેણ સ એવ ઉદ્દેશક હ્રદ પઠનીયઃ । ‘રચણપ્પમાપુઢવિ સુહ્રાગકહ્’ રત્નપ્રમા
પૃથિવી ક્ષુલ્લક-કૃતયુગ્મ પ્રમાણકા નારકાસ્તત ઉદ્વર્ચ્ય કુત્ર ચચ્છન્તિ કુત્રોત્પદ્યન્તે
કિં નૈરયિકેષુ ઉત્પદ્યન્તે તિર્યગ્યોનિકેષુ ચોત્પદ્યન્તે इत्यादि ક્રમેણ પદ્મનઃ ।

ઉત્તરમાહ-‘એવં’ इत्यादि । ‘એવં રચણપ્પમાએવિ’ એવં સામાન્યતઃ ક્ષુલ્લક-
કૃતયુગ્મનારકાણામ્ યથોદ્વર્તના કથિતા, તથૈવ-રત્નપ્રમા પૃથિવી નારકજીવાના-
મપિ ઉદ્વર્તના વક્તવ્યા । ‘એવં જાવ અહે સત્તમાએ’ એવં યાવદ્વચઃ સપ્તમ્યામ્,
યથા-રત્નપ્રમા પ્રથમનારકપૃથિવી સમ્બન્ધિનારકાણામુદ્વર્તના કથિતા

હસ પ્રદ્મન કે ઉત્તર મેં પચ્ચીસ વેં શતક કે આઠવેં ઉદ્દેશકકા ભાવ
યહાં વક્તવ્ય હૈ વહી ઉદ્દેશક યહાં પઠનીય હૈ । ‘રચણપ્પમા પુઢવી
સુહ્રાગ કહ્’ હૈ અદન્ત ! રત્નપ્રમા પૃથિવી કે ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ પ્રમા-
ણક નારક વહાં સે ઉદ્વર્તના કરકે કઠાં જાતે હિં ઓર કઠાં ઉત્પન્ન
હોતે હિં ? વ્યા વે નૈરયિકોં સે નૈરયિકોં મેં ઉત્પન્ન હોતે હિં યા તિર્યગ્યો-
નિકોં મેં ઉત્પન્ન હોતે હિં ? इत्यादि ઉસર મેં પ્રશ્નશ્રી કહતે હિં-હે ગૌતમ ।
‘એવં રચણપ્પમાએ વિ’ જિસ પ્રકાર કી ઉદ્વર્તના સામાન્ય ક્ષુલ્લક કૃત
યુગ્મ નારકોં કી કહી ગઈ હૈ ડસી પ્રકાર કી ઉદ્વર્તના રત્નપ્રમા પૃથિવી
કે નારક જીવોં કી મો કહની ત્રાહિયે । ‘એવં જાવ અહે સત્તમાએ’
જૈસી ઉદ્વર્તના રત્નપ્રમા નામકી પ્રથમ પૃથિવી કે નારકોં કી કહી ગઈ
હૈ વૈસી હી ઉદ્વર્તના શર્કાપ્રમા નામ કી દ્વિતીય પૃથિવી ક્ષુલ્લક કૃત
યુગ્મ રાશિપ્રમાણક નારકોં સે લેકર અધઃસપ્તમી પૃથિવી કે ક્ષુલ્લક

નારક કઈ રીતે ઉદ્વર્તના કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પચ્ચીસમાં શતકના
આઠમા ઉદ્દેશાનુ કથન અહિયાં કહેવું જોઈએ. તેમ સમજવું

‘રચણપ્પમા પુઢવી સુહ્રાગ કહ્’ હે ભગવન્ રત્નપ્રમા પૃથ્વીના ક્ષુલ્લક
કૃતયુગ્મ પ્રમાણવાળા નારકો ત્યાંથી ઉદ્વર્તના કરીને ક્યાં જાય છે ?
અને ક્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? શું ? તેઓ નૈરયિકોમાંથી નીકળીને
નૈરયિકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યંચ યોનિકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ?
આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રશ્નશ્રી કહે છે કે-હે ગૌતમ ! ‘એવં રચણપ્પમાએ વિ’ જે
પ્રમાણેની ઉદ્વર્તના સામાન્ય ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારકો વિષે કહેવામાં આવેલ
છે, એજ પ્રમાણેની ઉદ્વર્તના રત્નપ્રમા પૃથ્વીના નારક જીવોની પણ કહેવી
જોઈએ એવં જાવ અહે સત્તમાએ’ રત્નપ્રમા પૃથ્વીના નારકોની ઉદ્વર્તના જે
પ્રમાણે કહી છે, એજ પ્રમાણેની ઉદ્વર્તના શર્કા પ્રમા નામની બીજી પૃથ્વીના
ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ રાશિ પ્રમાણ નારક જીવોથી લઈને અધઃસપ્તમી પૃથ્વીના

તેનૈવ રુપેણ શર્કરાપમા દ્વિતીય નારકપૃથિવી સમ્બન્ધિ ક્ષુલ્લક-કૃતયુગ્મ-રાશિ-
પ્રમાણકનારકાદારમ્યાધઃસપ્તમી નારક પૃથિવી સમ્બન્ધિ ક્ષુલ્લક-કૃતયુગ્મ-
રાશિપ્રમાણક નારકજીવપર્યન્તજીવાનામપિ-ઉદ્વર્તના વક્તવ્યા પ્રકારશ્ચ પૂર્વપદ-
શિત એવ ગ્રાહ્યઃ । ‘એવં’ સુહૃદાગતેઓગ સુહૃદાગદાવરજુમ્મ સુહૃદાગ કલિઓગા’
એવં ક્ષુલ્લકત્રયોજ ક્ષુલ્લક દ્વાપરયુગ્મ, ક્ષુલ્લક કલ્યોજરાશિ પ્રમાણા અપિ જીવા
જ્ઞાતવ્યાઃ । ‘નવરં’ પરિમાણં જાણિયવ્વં’ નવરં કેવલં પરિમાણં ભિન્ન ભિન્ન રુપેણ
ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્માદિનારકાણાં જ્ઞાતવ્યમ્ ।

તથાહિ-ક્ષુલ્લક-કૃતયુગ્મનારકાણાં પરિમાણમ્-ચત્વારો વા, અષ્ટૌ વા, દ્વા-
દશવા-પોડશ વા, સંખ્યાતા વા, અસંખ્યાતા વેતિ કથિતમ્, તથા ક્ષુલ્લક-
ત્રયોજનારકાણાં ત્રયો વા, સપ્ત વા, એકાદશ વા, દ્વૈશ્વદશ વા, સંખ્યાતા વા,
અસંખ્યાતા વા, इत्येवं क्रमेण वक्तव्यम् । एवं-ક્ષુલ્લક-દ્વાપરયુગ્મનારકાણામ્,

કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ નારક જીવોં તક કીં ખીં કહનીં ચાહિયે । હસ
સમ્બન્ધ મેં પ્રકાર પૂર્વ પદ મેં દિશ્વા હી દિયા ગયા હૈ । ‘એવં’ સુહૃદાગ
તેઓગ સુહૃદાગ દાવરજુમ્મ સુહૃદાગ કલિઓગા’ હસી પ્રકાર સે
ક્ષુલ્લક ત્રયોજ, ક્ષુલ્લક દ્વાપરયુગ્મ ઓર ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ
જીવોં કે સમ્બન્ધ મેં ખીં જાનના ચાહિયે, ‘નવરં’ પરિમાણં જાણિયવ્વં’
પરંતુ ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્માદિ નારકોં કા પરિમાણ ભિન્ન-૨ રૂપ સે જાનના
ચાહિયે । જૈસે-ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારકોં કા પરિમાણ ચાર, આઠ, બારહ
સોલહ, સંખ્યાત યા અસંખ્યાત કહા ગયા હૈ । ક્ષુલ્લક ત્રયોજ નારકોં
કા પરિમાણ ત્રીન, સાત, ગ્યારહ, પન્દ્રહ સંખ્યાત યા અસંખ્યાત કહા
ગયા હૈ । ક્ષુલ્લક દ્વાપરયુગ્મ નારકોં કા પરિમાણ દો, છહ, દશ, ચૌદહ,

ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ રાશિ પ્રમાણ નારક જીવો સુધીની કહેવી જોઈએ આ સંબં-
ધમાં પહેલા બતાવેલા પ્રકાર પ્રમાણેનો પ્રકાર સમજવો.

‘એવં’ સુહૃદાગ તેઓગ સુહૃદાગદાવરજુમ્મસુહૃદાગ કલિઓગા’ આજ
પ્રમાણે ક્ષુલ્લક ત્રયોજ, ક્ષુલ્લકદ્વાપરયુગ્મ અને ક્ષુલ્લક કલ્યોજરાશિપ્રમાણ
જીવોના સંબંધમાં પણ સમજવું. ‘નવરં’ પરિમાણ જાણિયવ્વં’ પરંતુ ક્ષુલ્લક
કૃતયુગ્મ વિગેરે નારકોનું પરિમાણ જુદા જુદા પ્રકારનું સમજવું જેમ કે-
ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારકોનું પરિમાણ ચાર, આઠ, બાર, સાત, સંખ્યાત
અથવા અસંખ્યાત કહેલ છે. ક્ષુલ્લક ત્રયોજ નારકોનું પરિમાણ ત્રણ, સાત,
અગિયાર પંદર, સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત કહેલ છે. ક્ષુલ્લકદ્વાપરયુગ્મ

દ્વી વા, ષટ્ વા, દશ વા, ચતુર્દશ વા, સંખ્યાતા વા, અસંખ્યાતા વા, ક્ષુલ્લક-
કલ્પોજનારકાણામ્ એકો વા, પશ્ચ વા નવ વા, ત્રયોદશ વા, સંખ્યાતા વા, અસં-
ખ્યાતા વા, इत्येवं क्रमेण वक्तव्यम् । 'नवरं परिमाणं जाणियच्च' इत्यस्यायमेव
भावो मूलसूत्रे इति । 'सेसं तं चेव' शेषं परिमाणातिरिक्तं सर्वं कृतयुग्मनारक
वदेव ज्ञातव्यम् ।

રત્નપ્રભા પૃથિવી સમ્બન્ધિ ડ્યોજ-દ્વાપરયુગ્મ કલ્પોજ નારકવદેવ શર્કરા-
પ્રમાત આરમ્ભ્યાઽધઃ સપ્તમી પૃથિવી સમ્બન્ધિ ડ્યોજ-દ્વાપરયુગ્મ-કલ્પોજનાર-
કાણા મપિ એવમેવ પરિમાણે વૈલક્ષણ્યમ્, તદન્યત્સર્વં રત્નપ્રભા પ્રથમનારક પૃથિવી

સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત કહા ગયા હૈ । ક્ષુલ્લક કલ્પોજ નારકોં કા
પરિમાણ એક, પાંચ, નૌ, તેરહ સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત કહા ગયા
હૈ । સો હસ ક્રમ સે હનકા પરિણામ કહના ચાહિયે, હસ પ્રકાર સે
'નવર' પરિમાણં જાણિયચ્ચં' હસ સૂત્ર કા યહી ભાવ મૂલસૂત્ર મેં પ્રદ-
શિત કિયા હૈ । 'સેસં તં ચેવ' પરિમાણ સે અતિરિક્ત ઓર સબ કથન
કૃતયુગ્મ નારક કે જૈસા હી જાનના ચાહિયે । રત્નપ્રભા પૃથિવી સમ્બ-
ન્ધી ડ્યોજ, દ્વાપર યુગ્મ ઓર કલ્પોજ રાશિપ્રમિત નારકોં કે જૈસા હી
શર્કરાપ્રભા સે લેકર અધઃસપ્તમી પૃથિવી સમ્બન્ધી નારકોં કે ભી
પરિમાણ મેં હસી પ્રકાર સે વૈલક્ષણ્ય જાનના ચાહિયે । હસકે સિવાય
ઓર સબ કથન રત્નપ્રભા પ્રથમ નારક પૃથિવી કે જૈસા હી જાનના
ચાહિયે, 'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' હે અદન્ત ! જૈસા યહ વિષય

નારકોનું પરિમાણ એ, છ, દસ, ચૌદ સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત કહેલ છે.
ક્ષુલ્લક કલ્પોજ નારકોનું પરિમાણ એક, પાંચ નવ, તેર સંખ્યાત અથવા
અસંખ્યાત કહેલ છે. તે આ ક્રમથી આમનું. પરિમાણ કહેવું જોઈએ.
'નવર' પરિમાણં જાણિયચ્ચં' આ સૂત્રનો આજલાવ મૂલસૂત્રમાં બતાવેલ છે.

'સેસં તં ચેવ' પરિમાણ શિવાયનું બીજું સઘળું કથન કૃતયુગ્મ નારકના
કથન પ્રમાણે જ સમજવું. રત્નપ્રભા પૃથ્વી સંબંધી ડ્યોજ, દ્વાપરયુગ્મ, અને
કલ્પોજ રાશિપ્રમિત નારકોના પરિમાણમાં પણ આજ પ્રમાણેનું વૈલક્ષણ્ય
સમજવું. આ શિવાય બાકીનું સઘળું કથન રત્નપ્રભા પૃથ્વીની પહેલી નારક
પૃથ્વી સંબંધી ડ્યોજ વિગેરેના કથન પ્રમાણે કહેલ છે.

'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ આ વિષયના સંબંધમાં આપ
દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણે કહ્યું છે, તે સઘળું કથન એજ પ્રમાણે છે, હે ભગવન્

तदेव सर्वभगन्तव्यमिति । 'सेवं' भन्ते ! सेवं' भन्ते ! तदेवं' भदन्त ! तदेवं' भदन्त ! इति पूर्ववत् ॥ सू० १ ॥

इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यानैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित — कोल्हापुरराजगुरु-
बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य — जैनधर्मदिवाकर
पूज्य श्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री
“भगवतीसूत्रस्य” प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायाम् द्वात्रिंशत्तमशतकस्य
प्रथमोद्देशक समाप्ताः ॥ ३२-१ ॥

आप देवानुप्रिय ने कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है ऐसा कहकर
गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया, वन्दना नम-
स्कार कर के फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते
हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥ सू० १ ॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
: “भगवतीसूत्र” की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके बत्तीसवें शतक का
प्रथम उद्देशक समाप्त ॥ ३२-१ ॥

आप देवानुप्रियनुं कथन सर्वथा सत्य न छे. आ प्रभाषे कहीने गौतस्वामांछे
प्रभुश्रीने वंदना करी तेन्नाने नमस्कार कर्था वंदना नमस्कार करीने ते पछी
तेन्ना संयम अने तपथी पोताना आत्माने भावित करता थका पोताना स्थान
विराजमान थया. ॥ सू० १ ॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराजकृत 'भगवतीसूत्र' नी
प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याना अत्तीसमा शतकने पड़ेले। उद्देशो समाप्त ॥ ३२-१ ॥



અથ દ્વિતીયોદ્દેશકઃ પ્રારભ્યતે

‘કળ્હલેસ્સ કડ્ડુમ્મ નેરહયા’ કૃળ્ળલેશ્ય કૃતયુગ્મનૈરયિકાઃ સ્વલ્લ મદન્ત ! અનન્તરેષુદ્વર્ત્ય કુત્ર ગચ્છન્તિ, કુત્રોત્પચન્તે, કિં નૈરયિકેપૂત્પચન્તે તિર્યગ્યોનિકેષુ વોત્પચન્તે ? इत्यादि रूपेण प्रश्नः ? उत्तरमाह—‘एवं’ इत्यादिना, ‘एवं एएणं कमेणं जहेव उववायसए अट्टावीसं उद्देसगा भणिया, तद्देव-उव्वट्टणासए वि अट्टावीसं उद्देसगा भाणियव्वा निरससेसा’ एवमेतेन क्रमेण यथैव उपपातशतके अष्टाविंशतिरुद्देशका भणिता स्वथैवोद्धर्तना शतकेऽपि-अष्टाविंशतिरुद्देशका भणितव्या निरवशेषाः ।

તત્ર કૃતયુગ્મનારકસ્ય પ્રથમઉદ્ધર્તનોદ્દેશકઃ ૧, કૃળ્ળલેશ્યકૃતયુગ્મસ્ય દ્વિતીયોદ્દેશકઃ ૨, નીલલેશ્યકૃતયુગ્મસ્ય તૃતીયોદ્દેશકઃ ૩, કાપોતલેશ્યકૃતયુગ્મસ્ય

શતક ૩૨ ઉદ્દેશક ૨-૨૮

ટીકાર્થ—‘કળ્હલેસ્સ કડ્ડુમ્મ નેરહયા’ હે મદન્ત ! કૃળ્ળલેશ્યાવાલે કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત નૈરયિક નારક ભવ કી સમાપ્તિ હોતે હી નરક ભવ સે નિકલ કર કહાં જાતે હૈં ? ઓર કહાં ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? વ્યા નૈરયિકોં મેં ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? વ્યા તિર્યગ્યોનિકોં મેં ઉત્પન્ન હોતે હૈં इत्यादि उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—‘एवं एएणं कमेणं जहेव उववायसए अट्टावीसं उद्देसगा भणिया तद्देव उव्वट्टणासए वि अट्टावीसं उद्देसगा भाणियव्वा निरससेसा’ इस प्रकार इस क्रम से जैसे उपपात शतक में २८ उद्देशक कहे गये हैं उसी प्रकार से उद्धर्तना शतक में भी २८ उद्देशक कहना चाहिये, इनमें—कृतयुग्मादि नारक का प्रथम उद्धर्तनोद्देशक है ? कृष्णलेश्यावाले कृतयुग्मादि नारक का द्वितीयोद्देशक है, नील

બીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

‘કળ્હલેસ્સકડ્ડુમ્મ નેરહયા’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મરાશિ પ્રમિત નૈરયિક, નારક ભવની સમાપ્તિ થતા નરકભવથી નીકળીને ક્યાં જાય છે ? અને ક્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? શુ’ નૈરયિકોમાંથી ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યગ્યોનિકોમાંથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘एवं एएणं जहेव उववायसए अट्टावीसं उद्देसगा भणिया तद्देव उव्वट्टणासए वि अट्टावीસં उद्देसगा भाणियव्वा निरससेसा’ આ રીતે આ ક્રમથી ઉપપાત શતકમાં જે પ્રમાણે અઠ્યાવીસ ઉદ્દેશાઓ કહેવામાં આવ્યા છે એજ પ્રમાણે આ ઉદ્ધર્તના શતકમાં પણ અઠ્યાવીસ ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ. આમાં કૃતયુગ્મ નારકનો પહેલો ઉદ્ધર્તના ઉદ્દેશો કહ્યો છે. કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ નારક સંબંધી બીજો ઉદ્દેશો કહ્યો છે, નીલલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ નારક સંબંધી ત્રીજો

ચતુર્થોદ્દેશકઃ ૪, તદેવં લેશ્યાશ્રિતાશ્ચત્વાર ઉદ્દેશકાઃ ૪, एवं भवसिद्धिकनारकस्य चत्वार उद्देशकाः निर्विशेषणस्य लेश्यात्रयविशेषणमहितस्य च ८, एवमेव-चत्वार उद्देशका अभवसिद्धिकस्य १२, सम्यग्दृष्टेलेश्यासंयुक्तस्य चत्वार उद्देशकाः १६, एवमेव-मिथ्यादृष्टेलेश्यायुतस्य चत्वार उद्देशकाः २४, एवं शुक्लपाक्षिकस्यापि चत्वार उद्देशका भवन्ति २८, तदेवं सर्वसङ्कुलनया-एकत्रिंशत्तमोपपातशतकवत् द्वात्रिंशत्तमोद्धर्तनाशतकेऽपि अष्टाविंशतिरुद्देशका भवन्तीति, 'नवरं उच्छ्रुतिं अभिलाषो भाणियन्त्रो' नवरं-केवलं विशेष एतावानेव, यत् उपपातकशतके

લેશ્યાવાલે કૃતયુગ્માદિ નારકકા તૃતીય ઉદ્દેશક હૈ । કાપોતલેશ્યાવાલે કૃતયુગ્માદિ નારક કા ચતુર્થોદ્દેશક હૈ । હસ પ્રકાર સે યે લેશ્યાશ્રિત ચાર ઉદ્દેશક હૈ । હસી પ્રકાર સે અભવસિદ્ધિક નારક કે ચાર ઉદ્દેશક હૈ । इनमें पहिला उद्देशक सामान्य भवसिद्धिक नारक का है और तीन उद्देशक कृष्णनील, कापोतलेश्यात्रय विशेषण विशिष्ट भवसिद्धिक नारक के हैं । इसी प्रकार से चार उद्देशक अभवसिद्धिक नारक के हैं १२ लेश्या संयुक्त सम्यग्दृष्टि नारक के चार उद्देशक हैं । १६ लेश्यावाले मिथ्यादृष्टि नारक के चार उद्देशक हैं कृष्णपाक्षिक नारक के चार उद्देशक हैं और शुक्लपाक्षिक नारक के भी चार उद्देशक हैं सब मिलकर इस प्रकार से ये २८ उद्देशक हैं । जिस प्रकार से ३१ वे' उपपात शतक में २८ उद्देशक हैं उसी प्रकार से इस ३२ वे' उद्धर्तना शतक में भी २८ उद्देशक हैं । अन्तर केवल दोनों में इतना साही है कि उपपात शतक में जैसे उपपात पद जोड़कर अभिलाष कहा जाता है उसी प्रकार यहाँ उप-

ઉદ્દેશો કહ્યો છે. કાપોતલેશ્યવાળા કૃતયુગ્મનારક સંબંધી ચોથો ઉદ્દેશો કહેલ આ રીતે લેશ્યાસંબંધી ચાર ઉદ્દેશો કહ્યા છે. એજ પ્રમાણે ભવસિદ્ધિક નારક સંબંધી ચાર હંડકો કહ્યા છે તેમાં પહેલો હંડક સામાન્ય ભવસિદ્ધિક નારક સંબંધી છે. અને ત્રણ હંડકો કૃષ્ણ, નીલ, કાપોત, એ ત્રણ લેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક નારકોના છે. એજ પ્રમાણે ચાર ઉદ્દેશો. અભવસિદ્ધિક નારક સંબંધી કહ્યા છે. ૧૨ તથા લેશ્યા યુક્ત સમ્યક્ દૃષ્ટિવાળા નારક સંબંધી ચાર ઉદ્દેશો કહ્યા છે. ૧૬ લેશ્યાવાળા મિથ્યા દૃષ્ટિવાળા નારક સંબંધી ચાર ઉદ્દેશો કહ્યા છે કૃષ્ણપાક્ષિક નારક સંબંધી ચાર ઉદ્દેશો કહ્યા છે, અને શુક્લપાક્ષિક સંબંધી પણ ચાર ઉદ્દેશો કહેલા છે જે પ્રમાણે ૩૧ એકત્રીસમા ઉપપાત-શતકમાં અકયાવીસ ઉદ્દેશો છે, એજ પ્રમાણે અ, બત્રીસમા ઉદ્દર્તના શતકમાં પણ અકયાવીસ ઉદ્દેશો છે આ બન્નેમાં અતરકેવળ એમ્લુ' જ છે કે-ઉપપાત શતકમાં જેમ ઉપપાત પદ ભેડીને અભિલાષ કહેવામાં આવે છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં

ઉત્પચન્તે इति यत्र कथ्यते, तत्र-तत्र सर्वत्रैव उद्धर्तन्ते इत्येवमभिलापः करणीयः एतावदेव द्वयोः शतकयो वैलक्षण्यम्, 'सेसं तं चेव' शेषम्-उद्धर्तन्ते इति विशेषणादतिरिक्तं सर्वं तदेव उपपातशतकवदेव ज्ञातव्यम् ।

‘सेवं भંતે ! सेवं भंતે ! त्ति जाव-विहरइ’ तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति यावद्विहरति इति पूर्ववत् ॥२८॥

इति श्री - विश्वविख्यातजगद्गुरुललाभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि - ‘जैनाचार्य’ पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां “श्री भगवतीसूत्रस्य” प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां द्वात्रिंशत्तमे-उद्धर्तनाशतके द्वितीयोद्देशकादारभ्याऽष्टाविंशति पर्यन्ता उद्देशकाः समाप्ताः ॥२-२८॥

द्वात्रिंशत्तममुद्धर्तना शतकं समाप्तम् ॥३२॥

પાત કે સ્થાન મેં ઉદ્ધર્તના શબ્દ જોડકર અભિલાપ કહના ચાહિયે, ‘સેસં તં ચેવ’ બાકી ઓર સ્વય કથન ઉપપાત શતક કે જૈસા હી હૈં । ‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ જાવ વિહરइ’ હે ભદન્ત ! જૈસા આપ દેવાનુ પ્રિય ને યહ વિષય કહા હૈ વહ સ્વય સર્વથા સત્ય હી હૈ ૨ હસ પ્રકાર કહકર ગૌતમને પ્રભુશ્રી કો વન્દના કી ઓર નમસ્કાર ક્રિયા, વન્દના નમસ્કાર કર ફિર વે સંઘસ ઓર તપ સૈ આત્મા કો ભાવિત કરતે હુપ અપને સ્થાન પર બિરાજમાન હો ગયે ।

॥ ૨ સે લેકર ૨૮ ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥

॥ ૩૨ થાં શતક સમાપ્ત ॥

ઉપપાતના સ્થાને ઉદ્ધર્તના પદ મૂકીને અભિલાપો કહેવા જોઈએ. ‘સેસ તં ચેવ’ બાકીનું બીજું તમામ કથન ઉપપાત શતકમાં કહ્યા પ્રમાણેનું જ છે.

‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ જાવ વિહરइ’ હે ભગવન્ આપદેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે પ્રમાણે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપદેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા. વદના નમસ્કાર કરીને તે બધી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ.૦૨॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત “ભગવતીસૂત્ર”ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના બત્રીસમા શતકના બીજા ઉદ્દેશાથી અઠ્યાવીસમા

ઉદ્દેશા સુધીના ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૩૨-૨થી ૨૮॥

॥બત્રીસમું શતક સમાપ્ત॥

अथ त्रयस्त्रिंशत्तमं शतकमारभते—

द्वात्रिंशत्तमे—उद्धर्तनाशतके नारकाणामुद्धर्तना कथिता, उद्धृताश्च नारकाः एकेन्द्रियादिषु नोत्पद्यन्ते, केच ते, एकेन्द्रिया यत्र नारका नोत्पद्यन्ते ? इत्यस्यां शङ्कायामेकेन्द्रियाः प्ररूपयितव्याः भवन्ति, तेषु च तावद् एकेन्द्रियाः प्रथमतः प्ररूपणीयाः, इत्येकेन्द्रियप्ररूपणापरकं त्रयस्त्रिंशत्तमं शतकं द्वादशाऽवन्तरशतोपेतं व्याख्यातुमारभते, तस्य चेदं सूत्रम्—कइविहाणं भंते !' इत्यादि ।

मूळम्—कइविहा णं भंते ! एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा !
पंचविहा एगिंदिया पन्नत्ता तं जहा—पुढविकाइया जाव वण-
स्सइकाइया । पुढवीकाइया णं भंते ! कइविहा पन्नत्ता ? गोयमा !
दुविहा पन्नत्ता तं जहा—सुहुमपुढविकाइया य बायरपुढवि-
काइया य । सुहुमपुढवीकाइया णं भंते ! कइविहा पन्नत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता तं जहा—पज्जत्तसुहुमपुढवीकाइया य
अपज्जत्त सुहुमपुढविकाइया य । बायरपुढविकाइया णं भंते !
कइविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! एवं चेव । एवं आउकाइया वि
चउक्कएणं भेएणं भाणियत्वा एवं जाव वणस्सइकाइया । अप-
ज्जत्तसुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइकम्मपगडीओ पन्नत्ताओ ?
गोयमा ! अट्टकम्मपगडीओ पन्नत्ताओ तं जहा—नाणावरणिज्जं
जाव अंतराइयं । पज्जत्तसुहुमपुढवीकाइया णं भंते ! कइ कम्म-
पगडीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! अट्टकम्मपगडीओ पन्नत्ताओ
तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं । अपज्जत्त बायर-
पुढविकाइयाणं भंते ! कइकम्मपगडीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा !
एवं चेव ८ । पज्जत्तबायरपुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपग-
डीओ एवं चेव ८ । एवं एएणं कसेणं जाव-बायरवणस्सइ-
काइयाणं पज्जत्तगाणं त्ति । अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाणं भंते !
कइकम्मपगडीओ बंधंति ? गोयमा ! सत्तविहबंधगा वि अट्ट-

विह बंधगा वि । सत्त बंधमाणा आउयवज्जाओ सत्त कम्म-
पगडीओ बंधंति । अह्म बंधमाणा पडिपुन्नाओ अट्ट कम्मपग-
डीओ बंधंति । पज्जत्तसुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्म-
एवं चेव सव्वे जाव पज्जत्तसुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्म-
पगडीओ बंधंति एवं चेव । अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइया णं भंते !
कइकम्मपगडीओ वेदेति ? गोयमा ! चोदस कम्मपगडीओ
वेदेति ? तं जहा-नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं सोइंदिय-
वज्झं चकिंखदियवज्झं घाणिंदियवज्झं जिब्भदियवज्झं इत्थिय-
वेदवज्झं पुरिसवेदवज्झं, एवं अउक्खएणं भेएणं जाव-पज्जत्त-
वायरवणस्सइकाइयाणं भंते ! कइकम्मपगडीओ वेदेति ? गोयमा !
एवं चेव चोदस कम्मपगडीओ वेदेति । सेवं भंते ! सेवं
भंते ! त्ति ॥ सू. १ ॥

छाया-कतिविधाः खलु भदन्त ! एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पञ्चविधा
एकेन्द्रियाः तद्यथा-पृथिवीकायिका यावद्वनस्पतिकायिकाः । पृथिवीकायिकाः
खलु भदन्त ! कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-सूक्ष्म-
पृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! द्विविधाः
प्रज्ञप्ताः तद्यथा पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च, अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च,
वादरपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! एवमेव,
एवम् अप्कायिका अपि चतुष्केण भेदेन भणितव्याः, एवं यावद्वनस्पतिकायिकाः
अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां भदन्त ! कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः ?
गौतम ! सप्त विधवन्धका अपि अष्टविधवन्धका अपि । सप्तवधन्त-आयुर्वर्जाः
सप्त कर्मप्रकृतीर्वधन्ति, अष्टवधन्तः परिपूर्णा अष्ट प्रकृतीर्वधन्ति !

पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! कति कर्म० एवमेव, एवं सर्वे-
यावत्, पर्याप्तवादरवनस्पतिकायिकाः खलु भदन्त । कति कर्म प्रकृतीर्वधन्ति ?
एवमेव । अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त । कति प्रकृतिर्वेदयन्ति
गौतम । चतुर्दशकर्म प्रकृतीर्वेदयन्ति, तद्यथा-ज्ञानावरणीयं यावदन्तरायिकं श्रोत्रे-
न्द्रियवध्यम् चक्षुरिन्द्रियवध्यम्-घ्राणेन्द्रियवध्यम्, जिह्वेन्द्रियवध्यम्, स्त्रीवेदवध्यम्,
पुरुषवेदवध्यम् । एवं चतुष्केन भेदेन यावत्पर्याप्तवादर-वनस्पतिकायिकाः

સ્વલ્લ ભદન્ત । કતિ કર્મપ્રકૃતીર્વેદયન્તિ । ગૌતમ ! એવમેવ ચતુર્દશ કર્મપ્રકૃતીર્વેદ-
યન્તિ-તદેવં ભદન્ત । તદેવં ભદન્ત । ઇતિ ॥૩૩॥૧

ટીકા-‘કહ્વિહા ણં મંતે ! એગિંદિયા પન્નત્તા’ કતિવિધાઃ સ્વલ્લ ભદન્ત ।
એકેન્દ્રિયાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ ? હે ભદન્ત એકેન્દ્રિયજીવાનાં કિયન્તો ભેદા ભવન્તીતિ
પ્રશ્નઃ ? મગવાનાહ-‘ગોયમા !’ ઇત્યાદિ, ગોયમા ! હે ગૌતમ ! ‘પંચવિહા એગિ-
દિયા પન્નત્તા’ પશ્ચવિધાઃ-પશ્ચપ્રકારા એકેન્દ્રિયજીવાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ-કથિતાઃ । તત્ર
પ્રકારભેદમેવ દર્શયતિ-‘તં જહા’ ઇત્યાદિ, ‘તં જહા’ તથથા-‘પુઠવિક્કાહયા જાવ

॥ શાંતક ૩૩ ઉદ્દેશક ૧—

૩૨ વેં શાંતક મેં નારકોં કી ઉદ્ધર્તના કે સમ્બન્ધ મેં કથન કિયા
ગયા હૈ । નારક સે ઉદ્ધૃત્ત હુએ નારક એકેન્દ્રિયાદિકોં મેં ઉત્પન્ન નહોં
હોતે હૈં । અતઃ વે એકેન્દ્રિયાદિક કૌન હૈં કિ જિન મેં નારકોં કી
ઉત્પત્તિ નહોં હોતી હૈં હસ શંકા કી ઉપસ્થિતિ મેં એકેન્દ્રિયાદિક
પ્રરૂપણ કે વિષય ભૂત બન જાતે હૈં । સો સ્વસે પહિલે એકેન્દ્રિય જીવોં
કી પ્રરૂપણા કરનેવાલા યહ ૩૩ વાં શાંતક કિ જો ૧૧ ઉદ્દેશકોં
વાલા હૈં વ્યાખ્યા યુક્ત કિયા જાતે હૈં ।

‘કહ્વિહા ણં મંતે ! એગિંદિયા પન્નત્તા’-ઇત્યાદિ સૂત્ર-૧-

ટીકાર્થ-‘કહ્વિહા ણં મંતે ! એગિંદિયા પન્નત્તા’ હે ભદન્ત !
એકેન્દ્રિય જીવ કિતને પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં ? ‘ગોયમા ! પંચવિહા
એગિંદિયા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! એકેન્દ્રિય જીવ પાંચ પ્રકાર કે કહે ગયે
હૈં । ‘તં જહા’ જૈસા-પુઠવિક્કાહયા જાવ વણસસહ્કાહયા’ પૃથિવીકાયિક

તેત્રીસમા શતકનેા પ્રારંભ—પહેલો ઉદ્દેશો

બત્રીસમા ઉદ્ધર્તના શતકમાં નારકોની ઉદ્ધર્તના સંબંધમાં કથન કરવામાં
આવેલ છે, નરકથી નીકળેલા નારક એકેન્દ્રિય વિગેરેમાં ઉત્પન્ન થતા નથી.
તેથી તે એક ઇન્દ્રિયવાળાઓ કયા છે ? કે જેમાં નારકોની ઉત્પત્તિ થતી
નથી. આ શંકાના સમાધાન માટે એક ઇન્દ્રિય વિગેરેની પ્રરૂપણા કરવાની
જરૂર લાગે છે, તેથી સૌથી પહેલાં ઇન્દ્રિયવાળા જીવોની પ્રરૂપણા કરવાવાળા આ
તેત્રીસમા શતકનેા કે જે અગિયાર ઉદ્દેશોવાળું છે તેનું કથન કરવામાં આવે છે.—

‘કહ્વિહાણં મંતે ! એગિંદિયા પન્નત્તા’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-‘કહ્વિહાણં મંતે ! એગિંદિયા પન્નત્તા’ હે ભગવન્ એક ઇન્દ્રિયવાળા
જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી
કહે છે કે-‘ગોયમા ! પંચવિહા એગિંદિયા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! એક ઇન્દ્રિયવાળા
જીવો પાંચ પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. ‘તં જહા’ તે આ પ્રમાણે છે.—

વળસસકાહ્યા, પૃથિવીકાયિકા યાવદ્ વનસ્પતિકાયિકાઃ । અત્ર યાવત્પદેન અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક વાયુકાયિકાનાં સંગ્રહો ભવતિ ।

તથા ચ-પૃથિવ્યાદિવનસ્પત્યન્ત મેદેન પશ્ચ પ્રકારા એકેન્દ્રિયજીવા ભવન્તિ, એતેષાં સ્પર્શનેન્દ્રિયમાત્રં ભવતિ, રસનાદીન્દ્રિયાણામભાવાત્ । યદ્યપિ-મન ઇન્દ્રિય-કાયાનાં સર્વજીવસાધારણ્યાત્ સર્વાણ્યપિ ઇન્દ્રિયાણિ સામાન્યજીવાનાં સન્તિ, તથાપિ-એકેન્દ્રિયજીવેષુ સ્પર્શનેન્દ્રિયાતિરિક્તેન્દ્રિયાણામનુક્રમત્વાદ્ એકેન્દ્રિય સંજ્ઞા ભવતીતિ ।

‘પુઢવિક્કાહ્યા ણં મંતે । કહ્વિહા પન્નત્તા’ પૃથિવીકાયિકાઃ સ્વલુ ભદન્ત । કતિવિધાઃ-કતિપ્રકારકાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ-કથિતા ઇતિ મશ્નઃ મગવાનાહ-‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ ‘ગોયમા !’ હે ગૌતમ ! ‘દુવિહા પન્નત્તા’ પૃથિવીકાયિકા દ્વિવિધાઃ-દ્વિપ્રકારકાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ-કથિતા ઇત્યુત્તરમ્ । તત્ર પ્રકારમેદમેવ દર્શયતિ-‘તં જહા’

સે લેકર વનસ્પતિકાયિક તક અર્થાત્-પૃથિવીકાયિક, અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક, ઔર વનસ્પતિકાયિક इन पांच प्रकार के एकेन्द्रिय जीवों को केवल एक स्पर्शन इन्द्रिय ही होती है, शेष कर्ण, चक्षु, रसना, घ्राण, ये इन्द्रियां नहीं होती हैं । यद्यपि मन, इन्द्रिय और काय ये सब, जीवों के होते हैं क्योंकि ये सर्व जीव साधारण हैं अतः सब इन्द्रिया सामान्य जीव में हैं फिर भी एकेन्द्रिय जीवों में स्पर्शन इन्द्रिय के अतिरिक्त और सब इन्द्रियां होती नहीं हैं इस कारण उनकी एकेन्द्रिय संज्ञा होती है ।

‘પુઢવિક્કાહ્યા ણં મંતે ! કહ્વિહા પન્નત્તા’ હે ભદન્ત ! પૃથિવી-કાયિક જીવ કિતને પ્રકાર કે કહે ગયે હો ? ‘ગોયમા ! હે ગૌતમ ! ‘દુવિહા પન્નત્તા’ પૃથિવીકાયિક જીવ દો પ્રકાર કે કહે ગયે હો ! ‘તં જહા’

‘પુઢવિક્કાહ્યા જાવ વળસસકાહ્યા’ પૃથ્વી કાયિકથી- લઈને વનસ્પતિકાયિક સુધી અર્થાત્ પૃથ્વીકાયિક, અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક. અને વનસ્પતિ કાયિક, આ પાંચે પ્રકારના એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોને કેવળ એક સ્પર્શન ઇન્દ્રિય જ હોય છે બાકીની કાન, નાક, આંખ રસના (જાણ) આ ઇન્દ્રિયો હોતી નથી. જો કે મન ઇન્દ્રિય અને શરીર સઘળા જીવોને હોય છે. કેમ કે તે સર્વ જીવ સાધારણ હોય છે. તેથી આ ઇન્દ્રિયો બધાને હોય છે તો પણ એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોમાં સ્પર્શન ઇન્દ્રિય શિવાય બીજી કોઈપણ ઇન્દ્રિયો હોતી નથી. તેથી તેઓની ‘એક ઇન્દ્રિય એવી સંજ્ઞા છે

‘પુઢવિક્કાહ્યાણં મંતે ! કહ્વિહા પન્નત્તા’ હે ભગવન્ પૃથ્વીકાયિક જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘ગોયમા ! હે ગૌતમ ! ‘દુવિહા પન્નત્તા’ પૃથ્વીકાયિક જીવો બે પ્રકારના કહેવા છે. ‘તં જહા’

इत्यादि । 'तं जहा' तद्यथा—'सुहुमपुढवीकाइया य वायरपुढवीकाइया य' सूक्ष्म-
पृथिवीकायिकाश्च वादरपृथिवीकायिकाश्च । तत्र—'सुहुमपुढवीकाइया णं भंते !
कइविहा पणत्ता' सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त । कतिविधाः—कतिप्रकारका
भवन्तीति प्रश्नः । भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि । 'गोयमा' हे गौतम ! 'दुविहा
पन्नत्ता' सूक्ष्मपृथिवीकायिका द्विविधाः—द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः—कथिताः प्रकार-
मेव दर्शयति—'तं जहा' इत्यादि । तं जहा' तद्यथा—'पज्जत्त सुहुमपुढवीकाइया—
अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइया य' पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकाश्च तथा—अपर्याप्त सूक्ष्म-
पृथिवीकायिकाश्च तथा—पर्याप्ताऽपर्याप्तभेदेन सूक्ष्मपृथिवीकायिका जीवा द्विविधा
भवन्तीत्युत्तरम् 'वायरपुढवीकाइया णं भंते ! कइविहा पन्नत्ता' वादर पृथिवी-
कायिकाः खलु भदन्त ! कतिविधाः प्रज्ञप्ता ? इति प्रश्नः । भगवानाह—'गोयमा'
इत्यादि 'गोयमा !' हे गौतम ! 'एवंचेव' एवमेव सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवस्य
यथा—पर्याप्ताऽपर्याप्तभेदेन द्वैविध्यं कथितम्, तथैव—वादरपृथिवीकायिक

जैसे—'सुहुम पुढवीकाइया य वायर पुढवीकाइया य' सूक्ष्म पृथिवी-
कायिक और वादरपृथिवीकायिक 'सुहुमपुढवीकायिया णं भंते !
कइविहा पन्नत्ता' इनमें से सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव हे भदन्त !
कितने प्रकार के कहे गये हैं ? 'गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता' हे
गौतम ! सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं । 'तं जहा'
जैसे—'पज्जत्त सुहुमपुढवीकाइया य अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइया य'
पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक और अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक । 'वायर
पुढवीकाइयाणं भंते ! कइविहा पणत्ता' हे भदन्त ! वादरपृथिवी-
कायिक जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—
'गोयमा ? एवंचेव' सूक्ष्म पृथिवीकायिक के जैसे वादर पृथिवीकायिक

તે આ પ્રમાણે છે.—'સુહુમપુઢવીકાઈયા ય વાયરપુઢવીકાઈયા ય' સૂક્ષ્મ પૃથ્વી
કાયિક અને વાદર પૃથ્વી કાયિક 'સુહુમપુઢવીકાઈયાણં ભંતે ! કહિવિહા પન્નત્તા'
તેમાં સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ હે ભગવન્ કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા
છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'ગોયમા ! દુવિહા પન્નત્તા' હે ગૌતમ ! સૂક્ષ્મ
પૃથ્વીકાયિક જીવો બે પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. 'તં જહા' તે આ પ્રમાણે
છે. 'પજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાઈયા ય અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાઈયા ય' પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વી
કાયિક અને અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક 'વાયર પુઢવીકાઈયાણં ભંતે ! કહિવિહા
પણત્તા' હે ભગવન્ વાદર પૃથ્વીકાયિક જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા
છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—'ગોયમા ! એવંચેવ'
હે ગૌતમ ! સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકના કથન પ્રમાણે વાદર પૃથ્વીકાયિક જીવ પણ પર્યાપ્ત અને

જીવાનામપિ પર્યાપ્તાઽપર્યાપ્તભેદેન દ્વૈવિધ્યં જ્ઞાતવ્યમિતિ । ‘એવં આલ્કાહ્યા વિ ચત્વક્રુણં મેણં માણિયન્વા’ એવં-પૃથિવીકાયિકવદેવ, અપ્કાયિકા અપિ ચતુષ્કેગ મેદેન મણિતવ્યા । સૂક્ષ્મવાદરપર્યાપ્તાઽપર્યાપ્તભેદાત્ ‘એવં જાવ-વણસ્સહકાહ્યા’ એવં યાવદ વનસ્પતિકાયિકાઃ, અત્ર યાવત્પદેન તેજસ્કાયિક-વાયુકાયિકયોઃ સંગ્રહો મવતિ । તથા ચ-પૃથિવ્ય-પ્કાયિકયયોર્યથા ચત્વારો મેદાઃ કથિતાઃ તથૈવ-તેજસ્કાયિકાદારમ્બ વનસ્પતિકાયિકાન્તૈકેન્દ્રિયજીવાનામપિ સૂક્ષ્મવાદરપર્યાપ્તાપર્યાપ્તાત્મકાશ્ચત્વારો મેદા જ્ઞાતવ્યા ઇતિ । અથ કર્મપ્રકૃતિવિષયકં સૂત્રમાહ-‘અપજ્જત્ત’ ઇત્યાદિ, ‘અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહ્યાણં મંતે’ અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાનાં મદન્ત ! ‘કહ્ કમ્મપગહીઓ પન્નત્તાઓ’ કતિ કર્મપ્રકૃતયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ ? મગવાનાહ-‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ ।

મી પર્યાપ્ત ઓર અપર્યાપ્ત કે મેદ સે દો પ્રકાર કા કહા ગયા હૈ । ‘એવં આલ્કાહ્યા વિ ચત્વક્રુણં મેણં માણિયન્વા’ પૃથિવીકાયિક કે જૈસે અપ્કાયિક મી સૂક્ષ્મ, વાદર, પર્યાપ્તક ઓર અપર્યાપ્તક કે મેદ સે ચાર પ્રકાર કે કહે ગયે જાનના ચાહિયે । ‘એવં જાવ વણસ્સહકાહ્યા’ હસી પ્રકાર સે યાવત્ વનસ્પતિકાયિક મી સૂક્ષ્મ, વાદર, પર્યાપ્ત ઓર અપર્યાપ્ત કે મેદ સે ચાર પ્રકાર કે કહે ગયે જાનના ચાહિયે યાવત્પદ સે તેજસ્કાયિક ઓર વાયુકાયિક હન દો કા ગ્રહણ હુઆ હૈ । તથા ચ પૃથિવીકાયિક કે જિસ પ્રકાર સે ચાર મેદ કહે હૈં ઉસી પ્રકાર સે તેજસ્કાયિક સે લેકર વનસ્પતિકાયિકાન્ત એકેન્દ્રિય કે મી ચાર ચાર મેદ હૈં એસા જાનના ચાહિયે ।

‘અપજ્જત્ત સુહુમ પુઢવી કાહ્યાણં મંતે ! કહ્ કમ્મ પગહીઓ પન્ન-ત્તાઓ’ હૈ મદન્ત ! અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવોં કે કિતની

અપર્યાપ્તના લેદથી બે પ્રકારના કહ્યા છે. ‘એવં આલ્કાહ્યા વિ ચત્વક્રુણં મેણં માણિયન્વા’ પૃથ્વીકાયિકના કથન પ્રમાણે અપ્કાયિક પણ સૂક્ષ્મ, બાદર, પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્તના લેદથી ચાર પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે. તેમ સમજવું. ‘એવં જાવ વણસ્સહકાહ્યા’ આજ પ્રમાણે યાવત્ વનસ્પતિકાયિક પણ સૂક્ષ્મ બાદર પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્તના લેદથી ચાર પ્રકારના કહ્યા છે. તેમ સમજવું. અહિયાં યાવત્પદથી તેજસ્કાયિક અને વાયુકાયિક એ બે ગ્રહણ કરાયા છે. તે આ પ્રમાણે-પૃથ્વીકાયિકના ચાર લેદો બે રીતે બતાવ્યા છે. એજ પ્રમાણે તેજસ્કાયિકથી લઇને વનસ્પતિકાયિક સુધીના એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવના પણ ચાર લેદ સમજવા.

‘અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહ્યાણં મંતે ! કહ્ કમ્મપગહીઓ પન્નત્તાઓ’ હે મગવન્ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોને કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયો કહેવામાં

‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘અદ્વ કમ્મપગડીઓ પન્નત્તાઓ’ અષ્ટકર્મપ્રકૃતયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ-
કથિતાઃ । પ્રકારભેદમેવ દર્શયતિ-‘તં જહા’ इत्यादि । ‘ત જહા’ તથથા-‘નાણા-
વરણિજ્જં જાવ-અંતરાઈયં’ જ્ઞાનાવરણીયં યાવત્ આન્તરાયિકમ્ । અત્ર યાવત્પદેન
દર્શનાવરણીયવેદનીય-મોહનીયાયુ-નામ-ગોત્રાણાં સપ્રહો ભવતિ । તથા ચ-
જ્ઞાનાવરણીયાદારમ્યાન્તરાયિકપર્યન્તા અષ્ટૌ કર્મપ્રકૃતયોઽપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવી-
કાયિકાનાં ભવન્તીત્યુત્તરમિતિ । ‘પજ્જત્તસુહુમપુઢવીકાઈયા ણં મંતે ! કહ કમ્મપગ-
ડીઓ પન્નત્તાઓ’ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાનાં સ્વલ્પ ભદન્ત ! કતિ સંખ્યકોઃ
કર્મપ્રકૃતયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ-કથિતા इति પ્રશ્નઃ, ભગવાનાહ-‘ગોયમા’ इत्यादि,
‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘અદ્વ કમ્મપગડીઓ’ અષ્ટ કર્મપ્રકૃતયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ एतेषामષ્ટौ
કર્મપ્રકૃતયો ભવન્તીત્યુત્તરમ્ । પ્રકારભેદમેવ દર્શયતિ-‘તં જહા’ इत्यादि । ‘તં જહા’
તથથા-‘નાણાવરણિજ્જં જાવ અંતરાઈયં’ જ્ઞાનાવરણીયં યાવત્પદેન દર્શનાવરણીય

કર્મપ્રકૃતિયાં કહી ગઈ છે ? ‘ગોયમા । અદ્વ કમ્મપગડીઓ પન્નત્તાઓ’
હે ગૌતમ ! उनके आठ कर्मप्रकृतियां कही गई हैं । ‘તં જહા’ જો હસ
પ્રકાર સે છે ‘નાણાવરણિજ્જં જાવ અંતરાઈયં’ જ્ઞાનાવરણીય યાવત્ અન્ત-
રાયિક યહાં યાવત્પદ સે દર્શનાવરણીય વેદનીય મોહનીય આયુ નામ
ઑર ગોત્ર इन कर्मप्रकृतियों का ग्रहण हुआ है । ‘પજ્જત્ત સુહુમપુઢવી-
કાઈયાણં મંતે ! કહ કમ્મપગડીઓ પન્નત્તાઓ’ હે ભદન્ત ! પર્યાપ્ત
સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવો કે કિતની કર્મપ્રકૃતિયે કહી ગઈ છે ?
ઉત્તર મેં ભગવાન કહતે છે ‘ગોયમા ! હે ગૌતમ ! ‘અદ્વ કમ્મપગડીઓ
પન્નત્તાઓ’ આઠ કર્મપ્રકૃતિયાં કહી ગઈ છે । ‘તં જહા’ વે હસ પ્રકાર છે-
‘નાણાવરણિજ્જં જાવ અંતરાઈયં’ જ્ઞાનાવરણીયસે લેકર અન્તરાય
કર્મ કી આઠી કર્મપ્રકૃતિયાં કહી ગઈ છે । जैसे-ज्ञानावरणीय,

આવેલ છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘અદ્વ કમ્મપગડીઓ પન્નત્તાઓ’ હે
ગૌતમ ! તેઓને આઠ કર્મ પ્રકૃતિયો કહી છે ‘તં જહા’ તે આ પ્રમાણે છે.
‘નાણાવરણિજ્જં જાવ અંતરાઈયં’ જ્ઞાનાવરણીય યાવત્ અન્તરાય અહિયાં
યાવત્પદથી દર્શનાવરણીય, મોહનીય, વેદનીય, નામ, ગોત્ર, અને આયુ આ
કર્મ પ્રકૃતિયો ગ્રહણ કરવામાં આવી છે,

‘પજ્જત્તસુહુમપુઢવીકાઈયા ણં મંતે ! કહ કમ્મપગડીઓ પન્નત્તાઓ’ હે
ભગવન્ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોને કેટલી કર્મપ્રકૃતિયો કહેવામાં
આવેલ છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘ગોયમા ! હે ગૌતમ ! ‘અદ્વ કમ્મ-
પગડીઓ પન્નત્તાઓ’ આઠ કર્મપ્રકૃતિયો કહેવામાં આવેલ છે. તે આ પ્રમાણે
છે.-‘નાણાવરણિજ્જં જાવ અંતરાઈયં’ જ્ઞાનાવરણીયથી લઈને અન્તરાયકર્મ સુધીની

વેદનીય, મોહનીયાયુ નામગોત્રાણાં ગ્રહણં ભવતિ । ‘અપજ્જત વાયરપુઢવીકાશ્યાણં મંતે ! કહ કમ્મપગહીઓ પન્નત્તાઓ’ અપર્યાપ્તવાદરપૃથિવીકાયિકજીવાનાં મદન્ત ! કતિ કર્મપ્રકૃતયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ કથિતાં હિતિ પ્રશ્નઃ, મગવાનાહ-‘ગોયમા’ હ્યાદિ । ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘એવં ચેવ’ એવમ્-યથા અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકજીવાનામઠ્ઠી જ્ઞાનાવરણીયાદારભ્યાન્તરાયપર્યન્તાઃ કર્મપ્રકૃતયઃ કથિતાં સ્તથૈવ અપર્યાપ્તવાદરપૃથિવીકાયિકજીવાનામપિ જ્ઞાનાવરણીયાદિકાઃ અઠ્ઠી કર્મ પ્રકૃતયો જ્ઞાતવ્યાં હિતિ । ‘પજ્જતવાયરપુઢવીકાશ્યાણં મંતે ! કહ કમ્મ પગહીઓ’ પર્યાપ્ત વાદરપૃથિવીકાયિકજીવાનાં મદન્ત ! કતિ કર્મપ્રકૃતયઃ પ્રજ્ઞપ્તાં હિતિ પ્રશ્નઃ, મગવાનાહ-‘એવં ચેવ’ એવમેવ, એવમ્-યથા-અપર્યાપ્ત વાદર પૃથિવીકાયિકાનામ્, જ્ઞાનાવરણીયાદિકા અઠ્ઠી કર્મપ્રકૃતયો ભવન્તિ, તથૈવ-પર્યાપ્ત વાદરપૃથિવીકાયિકજીવાનામપિ જ્ઞાનાવરણીયાદિકા અઠ્ઠી કર્મપ્રકૃતયો

દર્શનાવરણીય, વેદનીય, મોહનીય, આયુ, નામ ગોત્ર ઓર અન્તરાય ‘અપજ્જત વાદર પુઢવીકાશ્યાણં મંતે ! કહ કમ્મપગહીઓ પન્નત્તાઓ’ હે મદન્ત ! અપર્યાપ્ત વાદર પૃથિવીકાયિક જીવોં કે કિતની કર્મપ્રકૃતિયાં કહી ગઈ હૈં ? ‘ગોયમા ! એવં ચેવ’ હે ગૌતમ ! અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવોં કે જૈસે અપર્યાપ્ત વાદર પૃથિવીકાયિક જીવોં કે મી જ્ઞાનાવરણીય આદિ આઠ કર્મપ્રકૃતિયાં કહી ગઈ હૈં । ‘પજ્જત વાયર પુઢવીકાશ્યાણં મંતે ! કહ કમ્મપગહીઓ’ હે મદન્ત ! પર્યાપ્ત વાદર પૃથિવીકાયિક જીવોં કે કિતની કર્મપ્રકૃતિયાં કહી ગઈ હૈં ? ‘ગોયમા ! ‘એવં ચેવ’ અપર્યાપ્ત વાદરપૃથિવીકાયિક જીવોં કે મી જ્ઞાનાવરણીયાદિક આઠ કર્મપ્રકૃતિયાં કહી ગઈ હૈં । ‘એવં એણં કમેણં

આઠે કર્મપ્રકૃતિયો કહેવામાં આવેલ છે, જેમ કે-જ્ઞાનાવરણીય દર્શનાવરણીય, વેદનીય, મોહનીય, આયુ નામ, ગોત્ર અને અન્તરાય.

‘અપજ્જત વાયરપુઢવીકાશ્યાણં મંતે ! કહ કમ્મપગહીઓ પન્નત્તાઓ’ હે ભગવન્ અપર્યાપ્ત વાદર પૃથ્વીકાયિક જીવોંને કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયો કહેવામાં આવી છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘ગોયમા ! એવં ચેવ’ હે ગૌતમ ! અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોંના કથન પ્રમાણે અપર્યાપ્ત વાદર પૃથ્વીકાયિક જીવોંને પણ જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે આઠ કર્મ પ્રકૃતિયો કહેવામાં આવી છે.

‘પજ્જત વાયર પુઢવીકાશ્યાણં મંતે ! કહ કમ્મપગહીઓ પન્નત્તાઓ’ હે ભગવન્ પર્યાપ્ત વાદર પૃથિવીકાયિક જીવોંને કેટલી કર્મપ્રકૃતિયો કહેવામાં આવેલ છે. ‘ગોયમા ! એવં ચેવ’ પર્યાપ્ત વાદર પૃથિવીકાયિક જીવોંને પણ જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે આઠ કર્મપ્રકૃતિયો કહેવામાં આવેલ છે.

ભવન્તીતિ જ્ઞાતવ્યમ્ । ‘એવં એણં કમેણં જાવ-વાયરવણસ્સહકાહયાણં પજ્જત્તગાણં તિ’ એવમ્-એતેન ક્રમેણ પૃથિવીકાયિકપ્રકરણકથિતપ્રકારેણ યાવદ્ વાદરવન-સ્પતિકાયિકાનાં પર્યાપ્તકાનામિતિ । અત્ર યાવત્પદેન અપર્યાપ્ત પર્યાપ્ત ભેદ યુક્ત સૂક્ષ્મવાદરાડ્પકાયિકાનામ્ અપર્યાપ્તપર્યાપ્તભેદયુક્તસૂક્ષ્મવાદરતેજસ્કાયિકાનામ્ અપર્યાપ્તપર્યાપ્ત ભેદમિત્ર સૂક્ષ્મવાદરવાયુકાયિકાનામ્ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવનસ્પતિકા-યિકાનાં ચ સંગ્રહો ભવતિ । પર્યાપ્તવાદરવનસ્પતિકાયિકાઃ સૂત્રે એવ ગૃહીતાઃ ।

અથ કર્મપ્રકૃતિવન્ધવિષયે સૂત્રમાહ-‘અપજ્જત્ત’ ઇત્યાદિ । ‘અપજ્જત્ત સુહુમ-પુઠ્ઠવીકાહયાણં ભંતે !’ અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકજીવાઃ સ્વલ્લુ ભદન્ત ! ‘કહ-કમ્મપગડીઓ વંધંતિ’ કતિ પ્રકારકાઃ કર્મ પ્રકૃતી વંધનન્તિ । કિયત્સસ્યકાનાં કર્મપ્રકૃતિનાં વન્ધકા ઇમે ભવન્તીતિ પ્રશ્નઃ । ભગવાનાહ-‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ, ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘સત્તવિહવંધગાવિ અદ્ધવિહવંધગાવિ’ સત્તવિધ-સપ્તપ્રકારક કર્મપ્રકૃતીનાં વન્ધકા અપિ-અપર્યાપ્ત-સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકજીવા ભવન્તિ । તથા-ડ્પટ્પ્રકારક કર્મપ્રકૃતીનાં વન્ધકા અપીમે ભવન્તીતિ ।

જાવ વાયર વણસ્સહકાહયાણં પજ્જત્તગાણં તિ’ હસી ક્રમ સે યાવત્ પર્યાપ્ત વાદર વનસ્પતિકાયિક તક જાનના ચાહિયે । યહાં યાવત્ શબ્દ સે અપર્યાપ્ત પર્યાપ્ત ભેદ યુક્ત સૂક્ષ્મ વાદર અપ્કાયિકોં કા, અપર્યાપ્ત પર્યાપ્ત ભેદ યુક્ત સૂક્ષ્મ વાદર તેજસ્કાયિકોં કા અપર્યાપ્ત પર્યાપ્તભેદ યુક્ત સૂક્ષ્મ વાદર વાયુકાયિકોં કા ઓર અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવનસ્પતિ-કાયિકોં કા સંગ્રહ હુઆ હૈ । પર્યાપ્ત વાદર વનસ્પતિકાયિકોં સૂત્ર મેં હી આ ગયા હૈ ।

અવઝાઠ કર્મપ્રકૃતિયો કે વન્ધ કે વિષય મેં સૂત્ર કહેતે હૈ-‘અપજ્જત્ત’ ઇત્યાદિ ‘અપજ્જત્ત સુહુમપુઠ્ઠવીકાહયાણં ભંતે ! કહ કમ્મપગડીઓ વંધંતિ’ હૈ ભદન્ત ! અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવ કિતની કર્મપ્રકૃતિયોં કા વન્ધ કરતે હૈ ? ‘ગોયમા ! સત્તવિહ વંધગા વિ અદ્ધવિહવંધગા વિ’

‘એવં એણં કમેણં જાવ વાયરવણસ્સહકાહયાણં પજ્જત્તગાણં તિ’ આજ કમથી યાવત્ શબ્દથી પર્યાપ્તક વાદર વનસ્પતિકાયિકના કથન સુધી સમજવું. અહિયાં યાવત્ શબ્દથી પર્યાપ્ત, અપર્યાપ્ત, ભેદ યુક્ત સૂક્ષ્મ વાદર અપ્કાયિકને અપર્યાપ્તપર્યાપ્તક ભેદ યુક્ત સૂક્ષ્મ વાદર તેજસ્કાયિકને અપર્યાપ્તપર્યાપ્ત ભેદવાળા સૂક્ષ્મ વાદર વાયુકાયિકને અને અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિકને સંગ્રહ થયો છે. પર્યાપ્ત વાદર વનસ્પતિકાયિકાનું કથન તો સૂત્રમાં જ કર્યું છે

‘અપજ્જત્તસુહુમપુઠ્ઠવીકાહયાણં ભંતે ! કહ કમ્મપગડીઓ વંધંતિ’ હે ભગવન્ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયોના બંધ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘ગોયમા ! સત્તવિહવંધગા વિ

તત્ર-‘સત્ત્વંધમાણા આઠવજ્જાઓ સત્ત્વ કમ્મપગડીઓ વંધંતિ’ સપ્તપ્રકારકર્મ પ્રકૃતી વંધનન્ત આયુક્કર્માતિરિક્તાઃ સપ્ત જ્ઞાનાવરણીયાદિકાઃ કર્મપ્રકૃતિ-વંધનન્તિ ! ‘અદ્વ વંધમાણા પહિપુન્નાઓ અદ્વ કમ્મપગડીઓ વંધંતિ’ અષ્ટકર્મપ્રકૃતી વંધનન્તઃ પરિપૂર્ણાઃ સમસ્તા અપિ અષ્ટાપિ કર્મપ્રકૃતી વંધનન્તિ । સર્વાસામપિ કર્મ પ્રકૃતીનાં વંધનં કુર્વન્તીતિ ભાવઃ । ‘પજ્જત્ત સુહુમ પુઢવિક્કાહયાણં મંતે !’ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકજીવાઃ સ્વલુ ભદન્ત ! ‘કતિ કર્મપ્રકૃતી વંધનન્તીતિ પ્રશ્નઃ,

હે ગૌતમ ! અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ સાત કર્મ પ્રકૃતિયોં કા ખી વન્ધ કરતે હૈં ઓર આઠ કર્મપ્રકૃતિયોં કા ખી વન્ધ કરતે હૈં ‘સત્ત્વ વંધમાણા આઠવજ્જાઓ સત્ત્વ કમ્મપગડીઓ વંધંતિ’ જબ વે સાત કર્મ પ્રકૃતિયોં કા વન્ધ કરતે હૈં તબ આયુક્કર્મ કે સિવાય વે સાત કર્મ પ્રકૃતિયોં કા-જ્ઞાનાવરણીય, દર્શનાવરણીય, વેદનીય, મોહનીય, નામ, ગોત્ર, ઓર અન્તરાય હનકા-વન્ધ કરતે હૈં ‘અદ્વ વંધમાણા પહિપુન્નાઓ અદ્વ કમ્મપગડીઓ વંધંતિ’ ઓર જબ વે આઠ કર્મપ્રકૃતિયોં કા વન્ધ કરતે હૈં તો પૂરી કી પૂરી આઠોં કર્મપ્રકૃતિયોં કા વન્ધ કરતે હૈં ।

‘પજ્જત્ત સુહુમ પુઢવિક્કાહયાણં મંતે ! કહ્ કમ્મં’ હે ભદન્ત ! પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ કિતની કર્મપ્રકૃતિયોં કા વન્ધ કરતે હૈં ? ‘ગોયમા ! એવં ચેવ’ હે ગૌતમ ! અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક ખી સાત પ્રકાર કી કર્મ પ્રકૃતિયોં કે ખી વન્ધક હોતે હૈં ઓર આઠ પ્રકાર કી

અદ્વિદ્ વંધગાવિ’ હે ગૌતમ ! અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક ૭૪ સાતકર્મ પ્રકૃતિયોનો પણ બંધ કરે છે, અને આઠ કર્મ પ્રકૃતિયોનો પણ બંધ કરે છે.

‘સત્ત્વંધમાણા આઠવજ્જાઓ સત્ત્વકમ્મપગડીઓ વંધંતિ’ જ્યારે તેઓ સાત કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે, ત્યારે તેઓ આયુક્કર્મને છોડીને એટલે કે-જ્ઞાનાવરણીય, દર્શનાવરણીય, વેદનીય, મોહનીય, નામ, ગોત્ર, અને અન્તરાય આ સાતકર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે. ‘અદ્વવંધમાણા પહિપુન્નાઓ અદ્વ કમ્મ પગડીઓ વંધંતિ’ અને જ્યારે તેઓ આઠ કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે, ત્યારે પૂરેપૂરી આઠ કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે.

‘પજ્જત્ત સુહુમ પુઢવિક્કાહયાણં મંતે ! કહ્ કમ્મં’ હે ભગવન્ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક ૭૪ કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘ગોયમા ! એવં ચેવ’ હે ગૌતમ ! અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક ૭૪ની જમ જ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક પણ સાત પ્રકારની કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે, અને આઠ કર્મ પ્રકૃતિયોનો પણ બંધ કરે છે. જ્યારે તે સાત

મગવાનાહ—‘એવંચેવ’ એવંચેવ—અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકવદેવ પર્યાપ્તસૂક્ષ્મ-
પૃથિવીકાયિકા અપિ સપ્તવિધવન્ધકા અપિ, અષ્ટવિધવન્ધકા અપિ । તત્ર સપ્ત-
વન્ધનન્તઃ આયુર્વર્જા જ્ઞાનાવરણીયાદિકાઃ સપ્ત કર્મપ્રકૃતીર્વન્ધનન્તિ, અષ્ટ-
વન્ધનન્તઃ પરિપૂર્ણા અષ્ટ કર્મપ્રકૃતીર્વન્ધનન્તીતિ । ‘એવં સઘ્વે જાવ-પજ્જત્ત-
વાયરવણસ્સહ કાહયાણં મંતે ! કહ કમ્મપગડીઓ વંધંતિ એવંચેવ’ એવં
સર્વે યાવત્ પર્યાપ્તવાદર વનસ્પતિકાયિકાઃ સ્વલુ ભદન્ત ! કતિ કર્મપ્રકૃતીર્વન્ધનન્તિ
એવમેવ—પૂર્વોક્તવદેવ પ્રશ્નોત્તરાણિ જ્ઞાતવ્યાનિ અત્ર યાવત્પદેનાપર્યાપ્ત સૂક્ષ્માપ્કા-
યિક, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્માપ્કાયિકાપર્યાપ્તવાદરાપ્કાયિક, પર્યાપ્તવાદરાપ્કાયિ-
કાપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિક પર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિકાપર્યાપ્તસૂક્ષ્મવાયુ-
કાયિક પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાયિક અપર્યાપ્તવાદરવનસ્પતિકાયિકાનાં

કર્મપ્રકૃતિયો’ કે બી વન્ધક હોતે હૈં । સાત કર્મપ્રકૃતિયો’ કે વન્ધક હોને
પર વે આયુ કર્મ કો છોડકર શેષ જ્ઞાનાવરણીયાદિ સાત કર્મપ્રકૃતિયો’
કો વન્ધ કરતે હૈં । ઓર આઠ કર્મપ્રકૃતિયો’ કે વન્ધક હોને પર વે
પરિપૂર્ણ આઠ કર્મપ્રકૃતિયો’ કો વન્ધ કરતે હૈં । ‘એવં સઘ્વે જાવ પજ્જત્ત
વાયરવણસ્સહકાહયાણં મંતે ! કહ કમ્મપગડીઓ વંધંતિ, એવં ચેવ’
હસી પ્રકાર સમસ્ત યાવત્ પર્યાપ્ત વાદર વનસ્પતિકાયિક હે
ભદન્ત ! કિતની કર્મપ્રકૃતિયો’ કો વન્ધ કરતે હૈં ? હે ગૌતમ !
હસ સમ્બન્ધ મેં પૂર્વોક્ત જૈસા હી ઉત્તર જાનના ચાહિયે, યહાં યાવત્પદ
સે ‘અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક, અપર્યાપ્ત
વાદર અપ્કાયિક, પર્યાપ્ત વાદર અપ્કાયિક, અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક,
પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક, અપર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિક, પર્યાપ્તક
વાદર તેજસ્કાયિક અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વાયુકાયિક, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વાયુ-

કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે, ત્યારે તે આયુ કર્મને છોડીને બાકીની જ્ઞાના-
વરણીય જિગેરે સાત કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે, અને જ્યારે આઠ કર્મ
પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે, ત્યારે તેઓ પૂરેપૂરી અઠે આઠ કર્મ પ્રકૃતિયોનો
બંધ કરે છે. ‘એવં સઘ્વે જાવ પજ્જત્તવાયરવણસ્સહકાહયાણં મંતે ! કહ
કમ્મપગડીઓ વંધંતિ એવં ચેવ’ આજ પ્રમાણે સમજાના યાવત્ પર્યાપ્ત વાદર
વનસ્પતિકાયિક હે ભગવન્ કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે ? હે ગૌતમ !
આ સંબંધમાં પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે જ પ્રશ્ન અને ઉત્તર સમજવા.
અહિયાં યાવત્પદથી અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક
અપર્યાપ્ત વાદર અપ્કાયિક, પર્યાપ્ત વાદર અપ્કાયિક, અપર્યાપ્ત, સૂક્ષ્મ
તેજસ્કાયિક, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક અપર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિક
પર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિક, અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વાયુકાયિક પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વાયુ

સંગ્રહો ભવતિ । તથા ચ-અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્માઽપ્કાયિકાદારભ્યાઽપર્યાપ્તવાદર
 વનસ્પતિજીવપર્યાપ્તતાનાં કર્મવન્ધવિષયે પૃથિવીકાયિકવદેવ વ્યવસ્થા જ્ઞાતવ્યા
 આલાપપ્રકારસ્તુ સ્વયમૂહનીયઃ, એતદગ્રેતન પર્યાપ્તવાદરવનસ્પતિકાયિકસૂત્રં સૂત્ર-
 કારઃ સ્વયમેવાહ-‘પજ્જત્ત વાયરવણસ્સહકાહયા ણં’ इत्यादि, ‘पज्जत्तवायर-
 वणस्सहकाहया णं भन्ते ! कइ कम्मपगडीओ बंधन्ति’ पर्याप्तवादरवनस्पतिका-
 यिकाः खलु भदन्त ! कति कर्मप्रकृती बर्धनन्ति ? उत्तरमाह-‘एवं चेव’ एवमेव
 पर्याप्त वादरपृथिवीकાયिकवदेव कर्मप्रकृतिवन्धनविषये व्यवस्था ज्ञातव्येति ।

अथ कर्मप्रकृतिवेदनविषये माह-‘अपज्जत्त०’ इत्यादि । ‘अपज्जत्त सुहुमपुढवि-

કાયિક, અપર્યાપ્ત વાદર વાયુકાયિક, પર્યાપ્ત વાદર વાયુકાયિક, અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક ઓર અપર્યાપ્ત વાદર વનસ્પતિકાયિક ‘इन सब के प्रश्नोत्तरोका ग्रहण हुआ है । जैसे अपर्याप्त सूक्ष्म अप्कायिक से लेकर अपर्याप्त वादर वनस्पतिकायिक तक के जीवों के कर्मवन्ध के विषय में पृथिवीकायिक के जैसी ही व्यवस्था जाननी चाहिये । इस सम्बन्ध में आलाप प्रकार स्वयं ही उद्भावित करना चाहिये ।

પર્યાપ્ત વાદર વનસ્પતિકાયિક કે વિષય મેં સૂત્રકાર સ્વયં સૂત્ર કહતે હેં ‘पज्जत्त’ इत्यादि ‘पज्जत्त वायरवणस्सहकाहयाणं भन्ते ! कइ कम्मपगडीओ बंधन्ति’ हे भदन्त ! पर्याप्त वादर वनस्पतिकायिक जीव कितनी कर्मप्रकृतियों का बन्ध करते हैं ? ‘एवं चेव’ हे गौतम ! इस सम्बन्ध में पर्याप्त वादर पृथिवीकायिक के जैसे ही कर्मप्रकृति के बन्ध के विषय में व्यवस्था जाननी चाहिये ।

‘अपज्जत्त सुहुम पुढविककाहयाणं भन्ते !’ हे भदन्त ! अपर्याप्त

કાયિક, અપર્યાપ્ત, વાદર, વાયુકાયિક, પર્યાપ્ત વાદર વાયુકાયિક, અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક, અને અપર્યાપ્ત વાદર વનસ્પતિકાયિક આ સઘળા ગ્રહણ કરાયા છે. તથા અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિકથી લઈને અપર્યાપ્ત વાદર વનસ્પતિકાયિક સુધીના જીવોના કર્મ બંધના સંબંધમાં પૃથિવીકાયિકના કથન પ્રમાણે આલાપનો પ્રકાર સ્વયં બનાવીને સમજાવેલો. પર્યાપ્ત વાદર વનસ્પતિકાયિકના સંબંધમાં સૂત્રકાર નીચેના સૂત્રપાઠ કહે છે. ‘पज्जत्तवायरवणस्सहकाहयाणं भन्ते ! कइ कम्मपगडीओ बंधन्ति’ હે ભગવન પર્યાપ્ત વાદર વનસ્પતિકાયિક જીવ કેટલી કર્મ પ્રકૃતિઓનો બંધ કરે છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘एवं चेव’ હે ગૌતમ ! આ સંબંધમાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકના કથન પ્રમાણે જ કર્મ પ્રકૃતિના સંબંધમાં કથન સમજવું.

‘अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाहयाणं भन्ते’ હે ભગવન અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વી

વઠાઈયાણં મંતે' અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકજીવાઃ સ્વલુ મદન્ત ! 'કહ કમ્મ પગડીઓ વેદેતિ' કતિ કર્મપ્રકૃતી વેદયન્તીતિ વેદનવિષયઃ પ્રશ્નઃ । મગવાનાહ- 'ગોયમા' ઇત્યાદિ । 'ગોયમા !' હે ગૌતમ ! 'ચોદસ કમ્મપગડીઓ વેદેતિ' ચતુર્દશ કર્મપ્રકૃતી વેદયન્તિ, અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક જીવા ઇતિ । પ્રકારભેદમેવે દર્શયતિ- 'તં જહા' ઇત્યાદિ । 'તં જહા' તથથા-નાનાવરણિજ્જં જાવ-અંતરાહયં' જ્ઞાનાવરણીયં યાવદ્ આન્તરાયિકમ્ । યાવત્પદેન=દર્શનાવરણીય વેદનીય. મોહનીય આયુ=નામ=ગોત્રાણાં સંગ્રહો ભવતિ ૮ । તથાચેમા જ્ઞાનાવરણીયાદિકા અષ્ટકર્મ- પ્રકૃતયઃ ૮ । તથા- 'સોઈંદિયવજ્જ' ઓન્દ્રિય વધ્યમ્, ઓન્દ્રિય વધ્યં હનનીયં-

સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકજીવ 'કહ કમ્મપગડીઓ વેદેતિ' કિતની કર્મપ્રકૃતિયોં કા વેદન કરતે હૈં ? 'ગોયમા ! ચોદસકમ્મ પગડીઓ વેદેતિ' હે ગૌતમ ! અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવ ૧૪ કર્મપ્રકૃતિયોં કા વેદન કરતે હૈં । 'તં જહા' જો હસ પ્રકાર સે હૈં- 'નાનાવરણિજ્જં જાવ અંતરાહયં' જ્ઞાનાવરણીય સે લેકર અન્તરાય તક યહાં યાવત્ પદ સે દર્શનાવરણીય વેદનીય મોહનીય, આયુ, નામ, ઓર ગોત્ર હનકા ગ્રહણ હુઆ હૈ ।

હસ પ્રકાર હન જ્ઞાનાવરણીયાદિક આઠ કર્મપ્રકૃતિયોં કા વે વેદન કરતે હૈં તથા 'સોઈંદિયવજ્જ' ઓન્દ્રિય વધ્ય ઓન્દ્રિય, વધ્ય હનન કરને યોગ્ય જિસ કર્મ કે હો વહ ઓન્દ્રિય વધ્ય કર્મ કહલાતા હૈ જિસ કે ઉદય સે જીવ કો ઓન્દ્રિયકો પ્રાપ્તિ ન હો સકે ઉસ કર્મ કા નામ ઓન્દ્રિય વધ્ય કર્મ હૈ ઉસ ઓન્દ્રિય વધ્ય કર્મ કા વેદન કરતે હૈં, હસી પ્રકાર આગે ભી સમજ્જ લેના

કાયિક જીવો. 'કહ કમ્મપગડીઓ વેદેતિ' કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયોં વેદન કરે છે ? 'ગોયમા ! ચોદસકમ્મપગડીઓ વેદેતિ' હે ગૌતમ ! અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વી કાયિક જીવ ચોદ ૧૪ કર્મપ્રકૃતિયોં વેદન કરે છે

'તં જહા' તે આ પ્રમાણે છે- 'નાનાવરણિજ્જં જાવ અંતરાહયં' જ્ઞાનાવરણીયથી લઇને અન્તરાય સુધી અહિયાં યાવત્ પદથી દર્શનાવરણીય, મોહનીય, વેદનીય, નામ, ગોત્ર, અને આયુ આ કર્મ પ્રકૃતિયોં ગ્રહણ થઈ છે. આ રીતે આ જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે આઠ કર્મ પ્રકૃતિયોં તેઓ વેદન કરે છે. તથા 'સોઈંદિયવજ્જ' ઓન્દ્રિય વધ્ય-ઓન્દ્રિયનું હનન કરવા યોગ્ય જે કર્મ હોય છે તે ઓન્દ્રિય વધ્ય કર્મ કહેવાય છે. જે કર્મના ઉદયથી ઓન્દ્રિયની પ્રાપ્તિ ન થઈ શકે તે કર્મનું નામ ઓન્દ્રિય વધ્ય કર્મ છે. જે ઓન્દ્રિય વધ્ય કર્મનું વેદન કરે છે તેમ સમજવું આ ઓન્દ્રિય વધ્ય કર્મ મતિ જ્ઞાનાવરણ વિશેષ રૂપ હોય છે. 'ચક્કિલ્લ દિયવજ્જ' તથા ચક્કિલ્લ દિયવધ્ય

હનનયોગ્યં यस્ય કર્મણ સ્તત્ । યદુદયાત્ જીવસ્ય શ્રોત્રેન્દ્રિયં ન લભ્યતે તત્કર્મ શ્રોત્રેન્દ્રિય વધ્યં કથ્યતે—એવં સર્વેત્ર વોધ્યમ્, एतन्मतिज्ञानावरणविशेष इत्यर्थः, एवम्—‘चक्षुर्द्विष्यवज्જ’ ચક્ષુરિન્દ્રિયવધ્યમ્, ચક્ષુરિન્દ્રિય હનનીયં તત્—દર્શનાવરણા વિશેષઃ ૧૦ । ‘ઘાણિદિયવજ્જ’ ગ્રાણેન્દ્રિય વધ્યમ્, ગ્રાણેન્દ્રિય હનનીયમ્ ૧૧ । ‘જિર્ભિદિયવજ્જ’ જિહ્વેન્દ્રિય વધ્યમ્ જિહ્વેન્દ્રિય હનનીયં ૧૨ । સ્પર્શનેન્દ્રિય વધ્યન્તુ તેષામપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાનાં નાસ્તિ, યતઃ સ્પર્શનેન્દ્રિયવધ્યત્વ-સ્વીકારે—એકેન્દ્રિયત્વહાનિપસજ્જસ્યાદિતિ । ‘ઈન્થિવેયવજ્જ’ સ્ત્રીવેદવધ્યમ્, યદુદયાત્ સ્ત્રીવેદો ન લભ્યતે તત્ સ્ત્રીવેદહનનીયં કર્મ ૧૩ । ‘પુરિસવેદવજ્જ’ પુરુષવેદવધ્યમ્, યદુદયાત્ પુરુષવેદો ન લભ્યતે, તત્કર્મપુરુષવેદહનનીયમ્ ૧૪ । નપુંસકવધ્યન્તુ એકેન્દ્રિયાણાં નાસ્તિ—નપુંસકવેદવૃત્તિત્વાદિતિ । એવમેતાશ્વતુ-ર્દશકર્મપદ્ધતયો ભવન્તિ ।

ચાહિયે યહ શ્રોત્રેન્દ્રિય કર્મ મતિજ્ઞાનાવરણ વિશેષ રૂપ હોતા હૈ । ‘ચક્ષુર્દિયવજ્જ’ તથા ચક્ષુ હન્દ્રિય વધ્યકર્મકા વે વેદન કરતે હૈ । યહ ચક્ષુરિન્દ્રિય વધ્યકર્મ દર્શનાવરણીયકર્મ વિશેષ રૂપ હોતા હૈ । ‘ઘાણિદિયવજ્જ’ તથા ગ્રાણેન્દ્રિય વધ્યકર્મ કા વે વેદન કરતે હૈ । ‘જિર્ભિદિયવજ્જ’ જિહ્વેન્દ્રિય વધ્યકર્મ કા વેદન કરતે હૈ । સ્પર્શનેન્દ્રિય વધ્યકર્મ કા વેદન ઊન અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકોં કે નહી હૈ, કયોં કિ હનકે યદિ સ્પર્શનેન્દ્રિય વધ્યકર્મ કા વેદન સ્વીકાર કિયા જાય તો હનમેં એકેન્દ્રિયતા કી હાનિ કા પ્રસંગ પ્રાપ્ત હોગા । ‘ઈન્થિવેદવજ્જ’ હસી પ્રકાર સે યે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવ સ્ત્રીવેદ વધ્યકર્મ કા ભી વેદન કરતે હૈ । જિસ કે ઉદય સે સ્ત્રી વેદ પ્રાપ્ત ન હો વહ સ્ત્રી વેદ વધ્યકર્મ હૈ । ‘પુરિસવેદવજ્જ’ પુરુષ વેદ વધ્ય કર્મ કા વેદન કરતે હૈ—જિસ કે ઉદય સે પુરુષ વેદ પ્રાપ્ત ન હો સકે વહ પુરુષ વેદ વધ્યકર્મ હૈ,

કર્મનું વેદન કરે છે. આ ચક્ષુ ઇન્દ્રિયાવરણ કર્મ દર્શનાવરણ વિશેષ રૂપ હોય છે. ‘ઘાણિદિયવજ્જ’ તથા ગ્રાણેન્દ્રિયાવધ્ય કર્મનું વેદન કરે છે. જિર્ભિ-દિયવજ્જ’ જિહ્વેન્દ્રિયવધ્ય કર્મનું વેદન કરે છે. તે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકોને સ્પર્શેન્દ્રિયવધ્ય કર્મનું વેદન હોતું નથી. કેમ કે તેઓને ભે સ્પર્શનેન્દ્રિયવધ્ય કર્મનું વેદન સ્વીકારવામાં આવે તો તેઓમાં એકેન્દ્રિય પણીની હાનીનો પ્રસંગ ઉપસ્થિત થશે ‘ઈન્થિવેયવજ્જ’ આજ પ્રમાણે આ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક ભવે સ્ત્રીવેદવધ્ય કર્મનું પણ વેદન કરે છે. જેના ઉદયથી સ્ત્રીવેદ પ્રાપ્ત ન થાય તે સ્ત્રીવેદવધ્ય કર્મ કહેવાય છે. ‘પુરિસવેદવજ્જ’ પુરુષ વેદવધ્ય કર્મનું વેદન કરે છે. જેના ઉદયથી પુરુષવેદ પ્રાપ્ત ન

કિં ચતુર્દશ કર્મપ્રકૃતીનાં વેદનં કેવલપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાનામેવ
ભવતી ત્યાશક્કાયમાહ—‘એવં ચરુક્ષણં’ ઇત્યાદિ । ‘એવં ચરુક્ષણં ભેદેણ જાવ-
પજ્જત વાયરવણસ્સહકાઈયાણં ભંતે ! કહ કમ્મપગડીઓ વેદેતિ’ ગોયમા । ‘એવં
ચેવ, ચોદસકમ્મપગડીઓ વેદેતિ’ એવં ચતુષ્કેણ ભેદેન પર્યાપ્તાપર્યાપ્તભેદ
મિત્રસૂક્ષ્મવાદરભેદેન યાવત્ પર્યાપ્તવાદરવનસ્પતિકાયિકાઃ સ્વલ્લ ભદન્ત-
કતિ કર્મ પ્રકૃતીર્વેદયન્તિ ? ગૌતમ ! એવમેવ-અપર્યાપ્ત પૃથિવીકાયિકવેદ-

હનકે નપુંસક વધ્યકર્મ નહીં હૈ, કયોં કિ એકેન્દ્રિયોં મેં નપુંસક વેદ
વૃત્તિતા હોતી હૈ । હસ પ્રકાર સે યે ચૌદહ ૧૪ કર્મ પ્રકૃતિયાં હૈ જિન્હે
યે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવ વેદન કરતે હૈ । હન ચૌદહ કર્મ
પ્રકૃતિયોં કા વેદન હન્હી અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકોં કે હોતા હો
સો વાત નહીં હૈ કિન્તુ હન ચૌદહ કર્મ પ્રકૃતિયોં કા વેદન ‘એવં ચરુ-
ક્ષણં ભેદેણ જાવ પજ્જત વાયર વણસ્સહકાઈયાણં ભંતે ! કહકમ્મ
પગડીઓ વેદેતિ’ સૂક્ષ્મ, વાદર, પર્યાપ્ત ઓર અપર્યાપ્ત હન ભેદ વાલે
સમસ્ત એકેન્દ્રિય જીવ હોતે હૈ, હસલિયે સૂત્રકારને યહાં એસા કહા હૈ
યહ ચૌદહ પ્રકૃતિયોં કા વેદન પર્યાપ્ત વાદર વનસ્પતિકાયિક તક જાનના
ચાહિયે । ગૌતમસ્વામી ને હસી વાત કો પ્રભુશ્રી સે હસ રૂપ મેં યાવત્ પૂછા
હૈ કિ હે ભદન્ત ! પર્યાપ્ત વાદર વનસ્પતિકાયિક જીવ કિતની કર્મપ્રકૃ-
તિયોં કા વેદન કરતે હૈ ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈ—‘ગોયમા ! એવં
ચેવ ચોદસ કમ્મપગડીઓ વેદેતિ’ હે ગૌતમ ! અપર્યાપ્ત પૃથિવીકાયિક

થઈ શકે તે પુરૂષ વેદવધ્ય કર્મ કહેવાય છે. તેઓને નપુંસકવેદવધ્ય
કર્મ હોતું નથી કેમ કે—એકેન્દ્રિયોમાં નપુંસકવેદપણુ હોય છે. આ રીતે
આ ચૌદ ૧૪ કર્મ પ્રકૃતિઓ કહી છે જેનું આ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક
જીવ વેદન કરે છે. આ ચૌદ કર્મ પ્રકૃતિઓનું વેદન આ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ
પૃથ્વીકાયિકોને જ હોય છે, એ વાત નથી પરંતુ આ ૧૪ ચૌદકર્મ પ્રકૃતિ
ઓનું વેદન ‘એવં ચરુક્ષણં ભેદેણ જાવ પજ્જત વાયરવણસ્સહકાઈયાણં ભંતે !
કહ કમ્મ પગડીઓ વેદેતિ’ સૂક્ષ્મ, બાદર, પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત આ લેહો
સઘળા એકેન્દ્રિયોને હોય છે. તેથી સૂત્રકારે અહિયાં એવું કહ્યું છે કે—આ
ચૌદ પ્રકૃતિઓનું વેદન પર્યાપ્ત બાદર વનસ્પતિકાય સુધી સમજવું. ગૌતમ
સ્વામીએ એજ વાત પ્રભુશ્રીને એ રીતે પૂછેલ છે કે—હે ભગવન્ પર્યાપ્ત
બાદરવનસ્પતિ કાયિક જીવ કેટલી કર્મ પ્રકૃતિઓનું વેદન કરે છે ? આ પ્રશ્નના
ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘ગોયમા ! એવં ચેવ ચોદસકમ્મપગડીઓ વેદેતિ’
હે ગૌતમ ! અપર્યાપ્ત પૃથ્વીકાયિક જીવોના કથન પ્રમાણે જ તેઓ યાવત્

ચતુર્દશ કર્મપ્રકૃતીર્વેદયન્તિ । યાવત્પદેન, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાદારભ્ય
અપર્યાપ્ત, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવાદરભેદમિત્રાપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક-વાયુકાયિક
પર્યાપ્તાપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાયિકાઃ અપર્યાપ્તાપર્યાપ્તવાદરવનસ્પતિકાયિકાન્ત
જીવાનાં સંગ્રહો જ્ઞાતવ્યાઃ । પર્યાપ્ત વાદરવનસ્પતિકાયિક સૂત્રંતુ પૂર્વમુક્તમેવ,
એતે સર્વે એકેન્દ્રિયાચતુર્દશ કર્મપ્રકૃતીનાં વેદકા ભવન્તીતિ ભાવઃ । આલાપ-
પ્રકારાશ્ચ સ્વયમેવોદ્ધતીયા ઇતિ ।

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ હેમદન્ત !

જીવો કે જૈસે હી વે યાવત્ વનસ્પતિકાયિક જીવ ૧૪ કર્મપ્રકૃતિયો
કા હી વેદન કરતે હૈં । યહાં યાવત્પદ સે પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક
સે લેકર અપર્યાપ્ત પર્યાપ્ત, સૂક્ષ્મ, વાદર, ભેદ વાલે અપ્કાયિક, તેજ-
સ્કાયિક, વાયુકાયિક અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક ઓર અપર્યાપ્ત
વાદર વનસ્પતિકાયિક તેજસ્કાયિક હન સવ જીવોં કા ગ્રહણ હુમા હૈ ।
પર્યાપ્ત વાદર વનસ્પતિકાયિક સૂત્ર તો પહિલે કહ હી દિયા હૈ । હસ
પ્રકાર યે સવ એકેન્દ્રિય જીવ સૂક્ષ્મ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપર્યાપ્ત, વાદર અપ-
ર્યાપ્ત અપ્કાયિક જીવ, હસી પ્રકાર સે સૂક્ષ્મ પર્યાપ્ત આદિ ભેદ વાલે
તેજસ્કાયિક જીવ વાયુકાયિક જીવ ઓર વનસ્પતિકાયિક જીવ-પૂર્વોક્ત
૧૪ કર્મપ્રકૃતિયોં કે વેદકા હોતે હૈ । હસ સમ્યગ્ધ મેં આલાપ પ્રકાર
સ્વયં હી ઉદ્ભાવિત કરના ચાહિયે ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે
મદન્ત ! જૈસા આપ દેવાનુપ્રિયને એકેન્દ્રિય જીવોં કે કર્મપ્રકૃતિયોં કે

‘વાદર વનસ્પતિ કાયિક એવ ઓદ ૧૪ કર્મપ્રકૃતિયોનું જ વેદન કરે છે.
અહિયાં યાવત્પદથી પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકથી લઈને અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ
વાદર લેકરાળા અપ્કાયિક તેજસ્કાયિક વાયુકાયિક તથા અપર્યાપ્તક વાદર વન-
સ્પતિકાયિક આ સઘળા એવો ગ્રહણ કરાયા છે પર્યાપ્ત વાદર વનસ્પતિ
કાયિક સૂત્રતો પહેલાં કહેવામાં આવી ગયું છે. આ રીતે આ સઘળા એક
ઇન્દ્રિયાળા એવો સૂક્ષ્મ પર્યાપ્ત, સૂક્ષ્મ અપર્યાપ્ત, વાદર પર્યાપ્ત વાદર
અપર્યાપ્ત, અપ્કાયિક એવ આજ રીતે સૂક્ષ્મ પર્યાપ્તક વિગેરે લેદવાળા તેજસ્કા-
યિક એવો, વાયુકાયિક એવો અને વનસ્પતિકાયિક એવો ઉપર કહેલ ૧૪ ઓદકર્મ
પ્રકૃતિયોનું વેદન કરે છે. આ સંબંધમાં આલાપકો સ્વયં બનાવીને સમજી લેવા.

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે એક ઇન્દ્રિય
એવોને કર્મ પ્રકૃતિયોના બંધ સંબંધમાં અને તેના વેદનના સંબંધમાં

एकेन्द्रियाणां कर्मप्रकृति बन्धनवेदनविषये यत्कथितम्-तत्सर्वं सत्यमितिकथयित्वा
गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसाऽऽत्मानं
भावयन् विहरतीति ॥सू० ॥३३।१।

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्बल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक-श्रीशाहच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित — कोल्हापुरराजगुरु-बाल-
ब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्य श्री
घासीलालव्रतिविरचितायां श्री "भग
वतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां-
व्याख्यायां त्रयस्त्रिंशत्तमं शतके
प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥३३-१॥

बन्धन एवं उनके वेदन के विषय में जो कहा है वह सब सत्य ही है ।
इस प्रकार कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और उन्हें
नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से
आत्माको भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
“भगवतीसूत्र” की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके तेतीसवें शतकका
प्रथम उद्देशक समाप्त ॥३३-१॥

જે કથન કયું છે. તે સઘળું કથન સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું
કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના
કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના
આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ० ૧॥
જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત “ભગવતીસૂત્ર”ની
પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના તેત્રીસમા શતકનો પહેલો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૩-૧॥

अथ द्वितीयोद्देशक मारभ्यते

मूलम्—कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता । तं जहा—पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया । अणंतरोववन्नगा णं भंते ! पुढवीकाइया कइविहा पन्नत्ता गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता तं जहा—सुहुमपुढवीकाइया य वायरपुढविकाइया य । एवं दुपएणं भेएणं जाव वणस्सइकाइया । अणंतरोववन्नग सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइकम्मपगडीओ पन्नत्ताओ, गोयमा ? अट्ट कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव—अंतराइयं । अणंतरोववन्नग वायरपुढवीकाइया णं भंते ! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ । गोयमा ? अट्ट कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं । एवं जाव अणंतरोववन्नग वायरवणस्सइकाइयाणं ति । अणंतरोववन्नग सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइकम्म पगडीओ बंधंति ? गोयमा ! आउवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ बंधंति । एवं जाव अणंतरोववन्नग वायरवणस्सइकाइय ति । अणंतरोववन्नग सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइकम्म पगडीओ वेदेति ? गोयमा ! षडदस कम्मपगडीओ वेदेति तं जहा—नाणावरणिज्जं तहेव जाव पुंसवेदवज्जं । एवं जाव अणंतरोववन्नग वायरवणस्सइकाइयं ति । सेवं भंते सेवं भंते ! ति ॥सू० २॥

छायाः—कतिविधाः खलु भदन्त ! अनन्तरोपपन्नका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पञ्चविधा अनन्तरोपपन्नका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा पृथिवीकायिका यावद्वनस्पतिकायिकाः । अनन्तरोपपन्नकाः खलु भदन्त ! पृथिवीकायिका कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—सूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च, वादरपृथिवीकायिकाश्च । एवं द्विपदेन भेदेन यावद्वनस्पतिकायिकाः अनन्तरोपपन्नकसूक्ष्मपृथिवीकायिकानां भदन्त ! कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अष्ट कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा—ज्ञानावरणीयं यावदन्तरायिकम् । अनन्तरोप-

જકવાદરપૃથિવીકાયિકાનાં ભદન્ત । કતિ કર્મપ્રકૃતયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ ? ગૌતમ !
અષ્ટ કર્મપ્રકૃતયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ । તચથા-જ્ઞાનાવરણીયં યાવદાન્તરાયિકમ્ । એવં યાવ-
દનન્તરોપપન્નકસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાઃ સ્વલ્પ ભદન્ત ! કતિ કર્મપ્રકૃતીર્વેદ્યન્તિ ?
ગૌતમ । આયુર્વર્જાઃ સપ્તકર્મ પ્રકૃતીર્વેદ્યન્તિ, એવં યાવદનન્તરોપપન્નકવાદરવનસ્પ-
તિકાયિકા ઇતિ । અનન્તરોપપન્નકસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાઃ સ્વલ્પ ભદન્ત ! કતિ-
કર્મપ્રકૃતીર્વેદ્યન્તિ ? ગૌતમ । ચતુર્દશ કર્મપ્રકૃતીર્વેદ્યન્તિ । તચથા-જ્ઞાનાવર-
ણીયમ્ તથૈવ-યાવત્ પુરુષવેદવધ્યમ્ ! એવં-યાવદનન્તરોપપન્નક વાદરવનસ્પતિકા-
યિકા ઇતિ । તદેવં ભદન્ત ! તદેવં ભદન્ત ! ઇતિ ॥સુ૦ ૨॥

ટીકા—‘કહ્વિહા ણં મંતે ! અનન્તરોવવન્નગા એગિંદિયા પન્નત્તા’ કતિવિધાઃ
કતિપ્રકારકાઃ સ્વલ્પ ભદન્ત ! ‘અનંતરોવવન્નગા એગિંદિયા પન્નત્તા’ અનન્તરો-
પપન્નકાઃ, અનન્તરમ્ યે ઉત્પત્તેઃ પ્રથમસમયે એવ વર્તન્તે તે અનન્તરોપપ-
ન્નકાઃ, એકતમયોપપન્નકા ઇત્યર્થઃ । પ્તાદશા એકેન્દ્રિયાઃ કતિવિધાઃ
પ્રજ્ઞપ્તાઃ-કથિતાઃ ? ઇતિ પ્રશ્નઃ । મગવાનાહ-‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ, ‘ગોયમા’ હે
ગૌતમ ! ‘પંચવિહા અનંતરોવવન્નગા એગિંદિયા પન્નત્તા’ પશ્ચવિધાઃ-પશ્ચપ્રકારકા
અનન્તરોપપન્નકા એકેન્દ્રિયાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ કથિતાઃ । ‘તં જહા’ તથથા-‘પુઢવીકાઈયા-

॥ શતક ૩૩ ઉદ્દેશક દ્વિતીય ॥

‘કહ્વિહા ણં મંતે ! અનંતરોવવન્નગા એગિંદિયા પન્નત્તા ?

ટીકાર્થ-‘કહ્વિહા ણં મંતે ! અનંતરોવવન્નગા એગિંદિયા પન્નત્તા’ હે
ભદન્ત ! અનન્તરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવ કિતને પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં ?
જો ઉત્પત્તિ કે પ્રથમ સમય મેં રહતે હૈં વે અનન્તરોપપન્નક કહે ગયે હૈં ।
અર્થાત્ જિન્હે ઉત્પન્ન હુએ એક સમય હી હુઆ હૈં વે હી અનન્તરોપપન્નક
હૈં । ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં-‘ગોયમા પંચવિહા અનંતરોવવન્નગા
એગિંદિયા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! અનન્તરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવ પાંચ

॥ બીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

‘કહ્વિહા ણં મંતે ! અનંતરોવવન્નગા એગિંદિયા પન્નત્તા’ ઇત્યાદિ.

ટીકાર્થ—‘કહ્વિહા ણં મંતે ! અનંતરોવવન્નગા એગિંદિયા પન્નત્તા’ હે
મગવન્ અનન્તરોપપન્નક એકેન્દ્રિય એવ કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ?
જેમની ઉત્પત્તિ પ્રથમ સમયમાં જ છે, તેઓને અનન્તરોપપન્નક કહેવામાં આવે
છે. અર્થાત્ એક સમયમાં જ જે એવો ઉત્પન્ન થાય છે, -એકી સાથે જેઓ
ઉત્પન્ન થાય છે, એ જ, અનન્તરોપપન્નક છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી
કહે છે કે-‘ગોયમા । પંચવિહા અનંતરોવવન્નગા એગિંદિયા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ !
અનન્તરોપપન્નક એકેન્દ્રિય એવો પાંચ પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે, ‘તં જહા’

જાવ-વણસ્સહકાઈયા' પૃથિવીકાયિકા યાવદ્વનસ્પતિકાયિકાઃ । યાવત્પદેન
અપ્કાયિક-તેજસ્કાયિક-વાયુકાયિકાનાં સંગ્રહો મવતિ । 'અણંતરોવવન્નગા ણં
મંતે ! પુઢવિકાઈયા કહ્વિહા પન્નત્તા' અનન્તરોપપન્નકાઃ સ્વલ્લ મદન્ત । પૃથિવી-
કાયિકા એકેન્દ્રિયાઃ કતિવિધાઃ-કતિ મકારકાઃ મજ્જન્તા ? इति મગ્નઃ ।
મગવાનાહ-'ગોયમા' ક્ત્યાદિ । 'ગોયમા' હે ગૌતમ । 'દુવિહા પન્નત્તા' દ્વિવિધા
મજ્જન્તાઃ, અનન્તરોપપન્નક પૃથિવીકાયિકાઃ એકેન્દ્રિયાઃ । 'તં જહા' તચયા-
'સુહુમ પુઢવીકાઈયા ય-વાયરપુઢવીકાઈયા ય' સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાશ્ચ બાદરપૃથિવી-
કાયિકાશ્ચ 'એવં દુપ્પણં મેણં જાવ-વણસ્સહકાઈયા' એવ દ્વિપદેન મેદેન યાવત્,
યાવત્પદેન અપ્કાયિકાઃ, તેજસ્કાયિકાઃ, વાયુકાયિકાઃ, વનસ્પતિકાયિકા અપિ

પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં । 'તં જહા' જો હસ પ્રકાર સે હૈં-'પુઢવીકાઈયા
જાવ વણસ્સહકાઈયા' પૃથિવીકાયિક યાવત્ વનસ્પતિકાયિક । યહાં
યાવત્ પદ સે 'અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક ઓર વાયુકાયિક' હન જીવો
કા ગ્રહણ કિયા ગયા હૈ । 'અણંતરોવવન્નગા ણં મંતે ! પુઢવીકાઈયા
કહ્વિહા પન્નત્તા' હે મદન્ત ! અણંતરોપપન્નક પૃથિવીકાયિક જીવ
કિતને પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં ? 'ગોયમા ! દુવિહા પન્નત્તા' હે ગૌતમ ।
અનન્તરોપપન્નક પૃથિવીકાયિક જીવ દો પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં । 'તં
જહા' જૈસા-'સુહુમ પુઢવિકાઈયા ય' સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવ ઓર
બાદરપૃથિવીકાયિક જીવ 'એવં દુપ્પણં મેણં જાવ વણસ્સહકાઈયા'
હસી પ્રકાર સે યાવત્ વનસ્પતિકાયિક જીવો તક કે દો દો મેદ કહના
ચાહિયે-અર્થાત્ અનન્તરોપપન્નક, અપ્કાયિક તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક

તે આ પ્રમાણે છે-'પુઢવિકાઈયા જાવ વણસ્સહકાઈયા' પૃથ્વીકાયિક યાવત્ અપ્-
કાયિક તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક, અને વનસ્પતિકાયિક 'અણંતરોવવન્નગા ણં મંતે !
પુઢવિકાઈયા કહ્વિહા પન્નત્તા' હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક પૃથ્વીકાયિક જીવો
કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે
કે-'ગોયમા ! દુવિહા પન્નત્તા' હે ગૌતમ ! અનંતરોપપન્નક પૃથ્વીકાયિક જીવો
બે પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. 'તં જહા' તે આ પ્રમાણે છે-'સુહુમ પુઢવી
કાઈયા ય વાયરપુઢવીકાઈયા ય' સૂક્ષ્મ પૃથ્વી કાયિક જીવ અને બાદર પૃથ્વી
કાયિક જીવ 'એવં દુપ્પણ મેણં જાવ વણસ્સહકાઈયા' એજ પ્રમાણે યાવત્
વનસ્પતિકાયિક જીવો સુધીના બે ભેદો કહેવા જોઈએ. અર્થાત્ અનંતરો-
પપન્નક અપ્કાયિક તેજસ્કાયિક વાયુકાયિક, અને વનસ્પતિકાયિકના સૂક્ષ્મ
અને બાદર એ બેજ ભેદો હોય છે. કેમ કે જે અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિય

મરૂપણીયાઃ, અનન્તરોપપન્નકૈકેન્દ્રિયાણામ્ પર્યાપ્તકાઽપર્યાપ્તકભેદયોરભાવેન ચતુર્વિધભેદાઽસમ્ભવાત્ દ્વિપદેન સૂક્ષ્મવાદરભેદેનેતિ કથિતમ્ । સામાન્યતઃ એકેન્દ્રિયાઃ પ્રત્યેકં ચતુષ્પ્રકારકા ભવન્તિ, સૂક્ષ્માશ્ચ-વાદરાશ્ચ, સૂક્ષ્મા અપિ દ્વિવિધાઃ-પર્યાપ્તકાશ્ચાઽપર્યાપ્તકાશ્ચ તથા-પર્યાપ્તકવાદરાઃ-અપર્યાપ્તકવાદરાશ્ચ । પરન્તુ-અનન્તરોપપન્નકાનાં પર્યાપ્તત્વાઽપર્યાપ્તત્વભેદો નાસ્તિ । અતોઽત્ર દ્વિપદેન-દ્વિપ્રકારકેણ ભેદેનેતિ કથિતમ્ । ‘અંતરોવવન્નગસુહુમપુઢવીકાઙ્યા ણં મંતે !’ અનન્તરોપપન્નક સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાનાં ભદન્ત ! ‘કઙ્કમ્મ પગડીઓ પન્નત્તાઓ’ કતિ પ્રકારકાઃ કર્મપ્રકૃતયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ કથિતા ? इति प्रश्नः । મગવાનાહ-‘ગોયમા’ इत्यादि ।

और वनस्पतिकायिक के सूक्ष्म वादर ये दो दो भेद होते हैं, क्यों कि जो अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीव होते हैं उनमें पर्याप्त और अपर्याप्त ऐसे दो भेद नहीं होते हैं । इसलिये इनके प्रत्येक के जैसे चार भेद पहिले बताये गये हैं वैसा ये चार भेद इनमें नहीं होते हैं । सामान्य एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म और वादर के भेद से दो प्रकार के कहे गये हैं, इनमें सूक्ष्म जीव भी पर्याप्त और अपर्याप्त के भेद से दो प्रकार के और वादर जीव भी पर्याप्त और अपर्याप्त के भेद से दो प्रकार के बतलाये गये हैं । परन्तु अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीवों के पर्याप्त और अपर्याप्त ऐसे दो भेद नहीं होते हैं । इसी अभिप्राय को प्रकट करने के लिये ‘एवं दुपएणं भेएणं’ ऐसा सूत्रपाठ सूत्रकारने कहा है । ‘अंजंतरोववन्नग सुहूम पुढवीकाइयाणं मंते !’ हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नक सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवों के ‘कङ्कम्म पगडीओ पन्नत्ताओ’ कितनी कर्म प्रकृतियां कही गई हैं ? उत्तर में

‘એવો હોય છે તેઓમાં પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત એ બે ભેદો હોતા નથી. તેથી પ્રત્યેકના ચાર ભેદો પહેલા બતાવ્યા છે, એ પ્રમાણેના ચાર ભેદો આમનામાં હોતા નથી. સામાન્ય એકેન્દ્રિય એવ સૂક્ષ્મ અને બાદરના ભેદથી બે પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે. આમાં સૂક્ષ્મ એવ પણ પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્તના ભેદથી બે પ્રકારના કહેલા છે પરંતુ અનન્તરોપપન્નક એક ઈન્દ્રિય વાળા એવાના પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત એવા બે ભેદો હોતા નથી. આજ અભિપ્રાય બતાવવા માટે ‘एवं दुपएणं भेएणं’ આ પ્રમાણેનો સૂત્રપાઠ સૂત્રકારે કહ્યો છે. ‘अंजंतरोववन्नग सुहूम पुढवीकाइयाणं मंते !’ હે ભગવન્ અનન્તરોપપન્નક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક એવાને ‘कङ्कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ’ કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયો કહેવામાં આવી છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં ગૌતમસ્વામીને પ્રભુશ્રી કહે છે કે-

‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘અદ્દ કમ્મપગડીઓ પન્નત્તાઓ’ અદ્દેતિ-અદ્દપ્રકારકાઃ કર્મપ્રકૃતયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ કથિતાઃ । ‘તં જહા’ તથથા-‘નાણાવરણિજ્જં જાવ-અંતરાહયં’ જ્ઞાનાવરણીયં યાવદાન્તરાયિકમ્, યાવત્પદેન દર્શનાવરણીય-વેદનીય-મોહનીય-નામ-ગોત્રાણાં પ્ણાં કર્મપ્રકૃતીનાં ગ્રહણં ભવતિ । ‘અણંતરોવવન્નગવાયર પુઢવીકા-હયાણં ભંતે !’ અનન્તરોપપન્નક વાદરપૃથિવીકાયિકજીવાનાં ભદન્ત ! ‘કહ કમ્મ પગડીઓ પન્નત્તાઓ’ કતિ કર્મપ્રકૃતયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ ? इति प्रश्नः ? । મગવાનાહ-‘ગોયમા’ इत्यादि । ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘અદ્દ કમ્મપગડીઓ પન્નત્તાઓ’ અદ્દ કર્મ પ્રકૃતયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ ‘તં જહા’ તથથા-‘નાણાવરણિજ્જં જાવ-અંતરાહયં’ જ્ઞાનાવરણીયં યાવદાન્તરાયિકમ્ । યાવત્પદેન દર્શનાવરણીય-વેદનીય-મોહનીય-આયુ-નામ-ગોત્રાણાં-સંગ્રહો ભવતીતિ । ‘एवं जाव-अणंतरोववन्नगवायरवणस्सइकाइयाणंति’

પ્રભુશ્રી કહતે હૈં-‘ગોયમા ! અદ્દ કમ્મપગડીઓ પન્નત્તાઓ’ હે ગૌતમ ! ઉનકે આઠ કર્મ પ્રકૃતિયાં કહી ગઈ હૈં ? ‘તં જહા’ જો હસ પ્રકાર સે હૈં-‘નાણાવરણિજ્જં જાવ અંતરાહયં’ જ્ઞાનાવરણીય યાવત્ અન્તરાયિક યહાં યાવત્ પદ સે ૨ ‘દર્શનાવરણીય વેદનીય ૩ મોહનીય ૪ આયુ ૫ નામ ૬ ઓર ગોત્ર ૭’ હન છ કર્મ પ્રકૃતિયો કા ગ્રહણ હુઆ હૈ । ‘अणंत-रोववन्नगवायर पुढवीकाइयाणं भंते । हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नक वादर पृथिवीकायिक जीवों के ‘कह कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ’ कितनी कर्म प्रकृतियां कही गई हैं ? ‘गोयमा ! हे गौतम ! ‘अद्व कम्मपगडीओ’ आठ कर्म प्रकृतियां कही गई हैं । ‘तं जहा’ जैसे ‘नाणावरणिज्जं जाव अंतराहयं’ ज्ञानावरणीय यावत् अन्तरायिक यहाँ पर भी यावत् पद से ‘दर्शनावरणीय २ वेदनीय ३ मोहनीय ४ आयु ५ नाम, ६ और गोत्र ७’ इन छह कर्म प्रकृतियों का ग्रहण हुआ है । ‘एवं जाव अणं-

‘ગોયમા ! અદ્દ કમ્મપગડીઓ પન્નત્તાઓ’ હે ગૌતમ તેઓને આઠ કર્મ પ્રકૃતિયો કહેવામાં આવેલ છે. ‘તં જહા’ તે આ પ્રમાણે છે.-

‘નાણાવરણિજ્જં જાવ અંતરાહયં’ જ્ઞાનાવરણીય યાવત્ અંતરાય યાવત્ પદથી દર્શના વરણીય, મોહનીય, વેદનીય, નામ, ગોત્ર, અને આયુષ્ય આ છ કર્મપ્રકૃતિયો ગ્રહણ કરાઈ છે. ‘अणंतरोववन्नग वायर पुढवीकाइयाणं भंते !’ હે ભુગવન અનંતરોપપન્નક વાદર પૃથ્વીકાયિક જીવોને ‘કહ કમ્મપગડીઓ પન્નત્તાઓ’ કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયો કહેવામાં આવી છે ! ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘ગોયમા ! હે ગૌતમ ! ‘अद्वकम्मपगडीओ पन्नत्ताओ’ आठ कर्म प्रकृतियो कहेवाभां आवेल છે. ‘तं जहा’ તે આ પ્રમાણે છે ‘નાણાવરણિજ્જં જાવ અંતરાહયં’ જ્ઞાનાવરણીય યાવત્ દર્શનાવરણીય, મોહનીય, વેદનીય, નામ-ગોત્ર અને આયુ

एवं यावत्-अनन्तरोपपन्नक बादरवनस्पति कायिकानामिति । अत्र यावत्पदेन अनन्तरोपपन्नकसूक्ष्मबादराऽपकायिकानाम् अनन्तरोपपन्नकसूक्ष्मबादरतेजस्कायिकानाम् अनन्तरोपपन्नकसूक्ष्मबादरवायुकायिकानां संग्रहो भवति, 'अणंतरोववन्नग सुहुम पुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ वंधंति' अनन्तरोपपन्नक सूक्ष्म-पृथिवी कायिकैकेन्द्रियजीवाः खलु भदन्त ! कति कर्मप्रकृतिर्वध्नन्ति ? भगवानाह- 'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'अउवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ वंधंति आयुष्कवर्जाः सप्त कर्मप्रकृतिः ज्ञानावरणीय-दर्शनावरणीय-वेदनीय-मोहनीय-नाम-गोत्राऽन्तरायरूपा बध्नन्ति उत्पत्तेः प्रथमसमये आयुष्कर्मणो बन्धाभावात्

તરોવવન્નગા ઘાયરવણસ્સહકાઈયાણં ત્તિ' હસી પ્રકાર કા કથન યાવત્ અનન્તરોપપન્નક બાદર વનસ્પતિકાયિકોં તક કે જીવોં કે જાનના ચાહિયે, યહાં યાવત્પદ સે 'અનન્તરોપપન્નક સૂક્ષ્મ બાદર અપ્કાયિક, અનન્તરોપપન્નક સૂક્ષ્મબાદરતેજસ્કાયિક, અનન્તરોપપન્નક સૂક્ષ્મ બાદર વાયુકાયિક ઓર સૂક્ષ્મ બાદરવનસ્પતિકાયિક इन सब का ग्रहण हुआ है । 'अणंतरोववन्नग सुहुम पुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ वंधंति' हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नक सूक्ष्मपृथिवीकायिकों को कितनी 'कर्म' प्रकृतियों का बन्ध होता है ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं- 'गोयमा ! आउवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ वंधंति' हे गौतम ! अनन्तरोप-पन्नक सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय जीव आयुर्कर्म को छोड़कर शेष सात कर्मप्रकृतियों का बन्ध करते हैं । अर्थात् ज्ञानावरणीय, दर्शना-वरणीय, वेदनीय, मोहनीय, नाम गोत्र और अन्तराय इन सात कर्म

આ આઠ કર્મ પ્રકૃતિયો હોય છે. 'એવ જાવ અણંતરોવવન્નગા ઘાયરવણસ્સહ-કાઈયાણ ત્તિ' આજ પ્રમાણેનું કથન યાવત્ અનંતરોપપન્નક બાદર વનસ્પતિ-કાયિક સુધીના જીવોના સંબંધમાં પણસમજવું. અહિયાં યાવત્પદથી અનંતરો-પપન્નક સૂક્ષ્મબાદર અપ્કાયિક અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મ બાદરતેજસ્કાયિક, અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મ બાદરવાયુકાયિક, અને સૂક્ષ્મબાદરવનસ્પતિકાયિક આ બધા ગ્રહણ કરાયા છે. 'અણંતરોવવન્નગસુહુમપુઢવીકાઈયા ણં ભંતે ! કइ કમ્મપગડીઓ વંધંતિ' હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકોં કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયોના બંધ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે- 'ગોયમા ! આઉવજ્જાઓ સત્ત કમ્મપગડીઓ વંધંતિ' હે ગૌતમ ! અનંતરોપપન્નકસૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક એકેન્દ્રિય જીવો આયુર્કર્મને છોડીને બાકીની સાત કર્મપ્રકૃતિયોના બંધ કરે છે, અર્થાત્ જ્ઞાનાવરણીય દર્શનાવરણીય, વેદનીય, મોહનીય, નામ, ગોત્ર અને અંતરાય આ સાત કર્મપ્રકૃતિયોના તેઓ

તત્કાલે તદ્ વન્ધનં ન ભવતિ । અપિતુ-અવશિષ્ટાનાં સપ્તાનામેવ પ્રકૃતીનાં વન્ધનં
 ભવતિ । एवं जाव अणंतरोववन्नगवायरवणस्सइकाइयत्ति' एवम् अनन्तरोपप-
 न्नकसूक्ष्मपृथिवीकायिकवदेव यावद्-अनन्तरोपपन्नक वादरवनस्पतिकायिका
 अपि आयुष्कवर्जाः सप्तैव कर्मप्रकृतीर्वन्धन्तीति । अत्र यावत्पदेन, अनन्त-
 रोपपन्नकवादरपृथिवीकायिकाऽनन्तरोपपन्नकसूक्ष्मवादराऽपिकायिकाऽनन्तरोपपन्नक-
 सूक्ष्मवादरतेजस्कायिकाऽनन्तरोपपन्नकसूक्ष्मवादरवायुकायिकाऽनन्तरोपपन्नकसूक्ष्म-
 वनस्पतिकायिकाः संगृह्यन्ते । 'अणंतरोववन्नगसुहुमपुढवीकाइया णं भंते । 'अन-
 न्तरोपपन्नकसूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त । 'कइ कम्मपगडीओ वेदेति, कति

પ્રકૃતિયોં કા વે વન્ધ કરતે હૈં । આયુકર્મ કા યે વન્ધ હસલિયે નહીં
 કરતે હૈં કિં હનકે ઉત્પત્તિ કે પ્રથમ સમય મેં આયુકર્મ કા વન્ધ
 નહીં હોતા હૈં હસલિયે ઉસ કાલ મેં ઉનકે આયુકા વન્ધ નહીં
 હોતા હૈં । અતઃ અવશિષ્ટ સ્નાન કર્મપ્રકૃતિયોં કા હીં ડનકો વન્ધ હોના
 કહા ગયા હૈં । 'एवं जाव अणंतरोववन्नग वायरवणस्सइकाइयत्ति'
 અનન્તરોપપન્નક સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક કે જૈસે હીં યાવત્ અનન્તરોપપન્નક
 વાદર વનસ્પતિકાયિક જીવોં કે ખીં આયુકર્મ કો છોડકર રોષ સાત
 કર્મ પ્રકૃતિયોં કા હીં વન્ધ હોતા હૈં એસા જાનના ચાહિયે । યહાં યાવત્
 પદ સે 'અનન્તરોપપન્નક વાદર પૃથિવીકાયિક, અનન્તરોપપન્નક સૂક્ષ્મ
 एवं वादर तेजस्कायिक, अन्तरोपपन्नक सूक्ष्म वादरवायुकायिक और
 અનન્તરોપપન્નક સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક' ડન સ્વકા ગ્રહણ હુઆ હૈં ।
 'अणंतरोववन्नग सुहुम पुढवीकाइया णं भंते ! कइ कम्मपगडीओ
 वेदेति' હે ભદન્ત ! અનન્તરોપપન્નક સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવ કિતની

બંધ કરે છે. તેઓ આયુકર્મનો બંધ એટલા માટે કરતા નથી કે-તેઓને
 આયુકર્મનો બંધ પહેલેથી જ થઈ ગય છે તેથી તે અવસ્થામાં તેઓને આયુ-
 કર્મનો બંધ હોતો નથી, તેથી બાકીની સાતકર્મ પ્રકૃતિયોનો જ બંધ આમને
 હોય છે 'एवं जाव अणंतरोववण्णगवायरवणस्सइकाइयत्ति' અનંતરોપપન્નક
 સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવની જેમજ યાવત્ અનંતરોપપન્નક વાદર વનસ્પતિ
 કાયિક જીવોને પણ આયુકર્મને છોડીને બાકીની સાતકર્મ પ્રકૃતિયોનો જ
 બંધ હોય છે, તેમ સમજવું. અહિયાં યાવત્પદથી "અનંતરોપપન્નક વાદર
 પૃથ્વીકાયિક અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મ અને વાદર પૃથ્વીકાયિક, અનંતરોપપન્નક
 સૂક્ષ્મ વાદર વાયુકાયિક અને અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક આ
 બધા ગ્રહણ કરાયા છે. 'अणंतरोववन्नग सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइ
 कम्मपगडीओ वेदेति' હે ભગવન અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ

કર્મપ્રકૃતી વેદયન્તિ ? इति प्रकृतीनां वेदनविषयकः प्रश्नः । अगवानाह—‘गोयमा’ इत्यादि ‘गोयमा’ हे गौतम । चउदस कम्मपगडीओ वेदे’ति’ चतुर्दश प्रकारिकाः कर्मप्रकृती वેદयन्ति । ‘तं जहा’ तद्यथा—‘नाणावरणिज्जं’ ज्ञानावरणीयम्, ‘तहेव जाव’ पुरिसवेयवज्ज’ तथैव यावत्पुरुषवेदबध्यम् । ज्ञानावरणीयादारभ्याऽन्तराय पर्यन्तमष्ट ८, तथा श्रोत्रेन्द्रियबध्यं—चक्षुरिन्द्रियबध्यं—घ्राणेन्द्रियबध्यं—जिह्वेन्द्रिय बध्यं—स्त्रीवेदबध्यं—पुरुषवेदबध्यम् । (६) १४ एतेषा मनन्तरोपपन्नसूक्ष्मपृथिवी कायिकानां चतुर्दश कर्मप्रकृतीनां वेदनं भवति । येन कर्मणा स्पर्शनेन्द्रियस्य लासो न भवति तादृशं स्पर्शनेन्द्रियबध्यं कर्म—एकेन्द्रियाणां न भवति । तथात्वे च—एकेन्द्रियत्वस्यैव व्याघातप्रसङ्गात् । तथा—नपुंसकबध्यकर्माऽपि नास्ति नपुंसकवेद-मात्रस्यैव—एकेन्द्रिये सत्त्वात् । ‘एवं जाव अगंतरोववत्तग वायर—वणस्सइकाइयति’

કર્મ પ્રકૃતિયોંકા વેદન કરતે હૈ ? ‘ગોયમા ! ચઉદસ કમ્મપગડીઓ વેદે’તિ’ હે ગૌતમ ! અનન્તરોપપન્નક સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવ ચૌદહ કર્મ પ્રકૃતિયોં કા વેદન કરતે હૈ । ‘તં જહા’ વે ચૌદહ કર્મપ્રકૃતિયોં યે હૈ—‘નાનાવરણિજ્જં’ જ્ઞાનાવરણીય ૧, ‘તહેવ જાવ પુરિસવેયવજ્જં’ તથૈવ યાવત્ પુરુષ વેદ બધ્ય યહાં યાવત્ શબ્દ સે યહ સમજાયા ગયા હૈ કિં જ્ઞાનાવરણીય કર્મ સે લેકર અન્તરાય પર્યન્ત આઠ પ્રકૃતિયાં તથા શ્રોત્રેન્દ્રિય બધ્ય ૯ ચક્ષુરિન્દ્રિય બધ્ય ૧૦ ઘ્રાણેન્દ્રિય બધ્ય ૧૧ જિહ્વેન્દ્રિય બધ્ય ૧૨, સ્ત્રીવેદ બધ્ય ૧૩, ઔર પુરુષવેદ બધ્ય ૧૪, એકેન્દ્રિય જીવ કે સ્પર્શનેન્દ્રિય બધ્ય કર્મ નહીં હોતા હૈ, યદિ હસ બધ્ય કર્મકા ઉનકે ઉદય જ્ઞાના જાવે તો ઉનમેં એકેન્દ્રિયત્વકા સદ્ભાવ નહીં થન સકતા તથા નપુંસકવેદ બધ્ય કર્મ મી હનકે નહીં હોના હૈ । ‘એવં જાવ અગંત-

કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયોંનું વેદન કરે છે ? ‘ગોયમા ! ચઉદસ કમ્મપગડીઓ વેદે’તિ’ હે ગૌતમ ! અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ ચૌદ કર્મપ્રકૃતિયોંનું વેદન કરે છે. ‘તં જહા’ તે ચૌદકર્મ પ્રકૃતિયો આ પ્રમાણે છે—‘નાનાવરણિજ્જં’ જ્ઞાનાવરણીય ‘તહેવ જાવ પુરિસવેયવજ્જં’ તથૈવ યાવત્ પુરુષ વેદને છોડીને અહિયાં યાવત્પદ્ધતી એ સમજાવ્યું છે કે—જ્ઞાનાવરણીય કર્મથી લઈને અંતરાય સુધીની આઠ કર્મ પ્રકૃતિયો તથા શ્રોત્રેન્દ્રિયાવરણ ચક્ષુ ઇન્દ્રિયાવરણ ૧૦ ઘ્રાણેન્દ્રિયાવરણ ૧૧ જિહ્વેન્દ્રિયાવરણ ૧૨ સ્ત્રીવેદાવરણ ૧૩ અને પુરુષ વેદાવરણ ૧૪ એકેન્દ્રિય જીવને સ્પર્શનેન્દ્રિયાવરણ કર્મ હોતું નથી કેમ કે—જો આ આવરણ તેઓમાં માનવામાં આવે તો તેઓમાં એકેન્દ્રિય પણાનો સદ્ભાવ જ બની શકે નહીં તથા નપુંસક વેદાવરણ પણ તેઓમાં હોતું નથી. કેમ કે—એકેન્દ્રિયોમાં નપુંસકવેદ માત્રનો જ સદ્ભાવ રહે છે.

एवं यावद्-अनन्तरोपपन्नक वनस्पतिकायिका अपीति । अत्र यावत्पदेन अनन्तरो-
पपन्नकवादरपृथिवीकायिकाऽनन्तरोपपन्नकसूक्ष्माकायिकैकेन्द्रियादारभ्याऽनन्तरो-
पपन्नकसूक्ष्मवनस्पतिकायिकैकेन्द्रियान्तजीवानां ग्रहणं भवति । एते सर्वेऽपि एके-
न्द्रिया ज्ञानावरणीयादि पूर्व प्रदर्शित चतुर्दशकर्मप्रकृतीनां वेदका भवन्तीति भावः ।

‘सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति’ तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति हे भदन्त

રોવવન્નગા વાયરવળસ્સહકાદ્યત્તિ’ હસી પ્રકાર સે યાવત્ અનન્તરો-
પપન્નક વાદર વનસ્પતિકાયિક જીવ ખી હન્હીં ૧૪ કર્મ પ્રકૃતિયોં કા
વેદન કરતે હેં એસા જાનના ચાહિયે, યહાં યાવત્ પદસે અનન્તરોપપન્નક
વાદર પૃથિવીકાયિક ‘અનન્તરોપપન્નક સૂક્ષ્મ અપ્કાયિકૈકેન્દ્રિય સે લેકર
અનન્તરોપપન્નક સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાયિકૈકેન્દ્રિય પર્યન્ત કે જીવોં’ કા ગ્રહણ
હુઆ હૈ યે સવ ખી એકેન્દ્રિય જીવ જ્ઞાનાવરણીયાદિ પૂર્વ પ્રદર્શિત
‘ચૌદહ કર્મપ્રકૃતિયોં’ કે વેદક હોતે હેં । ‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે !’ હે
ભદન્ત ! અનન્તરોપપન્નક વિશેષણ વિશિષ્ટ એસે સૂક્ષ્મ વાદર ભેદવાળે
પૃથિવીકાયિક સે લેકર વનસ્પતિકાયિક એકેન્દ્રિય જીવોં કે કર્મપ્રકૃતિયોં
કે સત્ત્વ, વન્ધ એવં વેદન કે વિષય મેં જો આપ દેવાનુપ્રિયને કહા હૈ વહ

‘एव’ नाव अणंतरोववन्नग वायरवणस्सहकद्वयत्ति’ એજ પ્રમાણે
યાવત્ અનંતરોપપન્નક વાદર વનસ્પતિકાયિક જીવ પણ આજ ચૌદકર્મ
પ્રકૃતિયોં વેદન કરે છે. તેમ સમજ લેવું જોઈએ. અહિયાં યાવત્પદથી અનંતરો-
પપન્નક સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક એકેન્દ્રિયથી લઈને અનંતરોપપન્નક વાદરવાયુકાયિક
એકેન્દ્રિયસુધીના જીવો ગ્રહણ કરાયા છે. એ બધા એકધંદ્રિયવાળા જીવો જ્ઞાના-
વરણીય વિગેરે પહેલા કહેલ ૧૪ ચૌદકર્મ પ્રકૃતિયોના વેદક હોય છે.
તેમ સમજવું.

‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક વિશેષણવાળા
એવા સૂક્ષ્મ અને વાદર ભેદવાળા પૃથ્વીકાયિકથી લઈને વનસ્પતિકાયિક એક
ધન્દ્રિય જીવોના કર્મ પ્રકૃતિના સત્ત્વ, બંધન અને વેદનના સંબંધમાં આપ
દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્

अनन्तरोपपन्नकसूक्ष्मवादरभेदभिन्नानां पृथिव्यादि वनस्पतिकायिकान्तानामेके-
न्द्रियजीवानां कर्मप्रकृतिसत्त्वबन्धनवेदनविषये यद् देवानुप्रियेण कथितम्, तत्सर्वम्
एवमेवेति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा
संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन् विहरतीति ॥३३-१॥

इति श्री विश्वविख्यात-जगद्बल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यानैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपति कोल्हापुरराजमदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित — कोल्हापुरराजगुरु-
बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य — जैनधर्मदिवाकर
पूज्य श्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री
“भगवतीसूत्र” प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायाम् त्रयस्त्रिंशत्तमशतकस्य
द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥३३-२॥

सब सर्वथा सत्य ही है २। ऐसा कहकर गौतमस्वामीने प्रभुश्री को वन्दना
की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर वे संयम और तप
से आत्माको भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
“भगवतीसूत्र” की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके तैत्तिरीयसंवे शतक का
दूसरा उद्देशक समाप्त ॥३३-२॥

आप देवानुप्रियनु कथन सर्वथा सत्य જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ
પ્રભુશ્રી ને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી
તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના
સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ.૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત ‘ભગવતીસૂત્ર’ ની
પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના તૈત્તીરીયશતકનો બીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૩-૨॥



मूलम्—कइविहा णं भंते ! परंपरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता ?
 गोयमा ! पंचविहा परंपरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता तं जहा—
 पुढवीकाइया एवं चउक्कओ भेओ जहा ओहि उद्देसए । परंपरो-
 ववन्नग अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइया णं भंते ! कइ कम्मपग-
 डीओ पन्नत्ताओ एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहि उद्देसए
 तहेव निरवसेसं भाणियत्वं जाव चउद्दस वेदोति । सेवं भंते !
 सेवं भंते ! त्ति ॥३३-३॥

अणंतरोवगाढा जहा अणंतरोववन्नगा ॥३४-४॥

परंपरोवगाढा जहा परंपरोववन्नगा ॥३३-५॥

परंपराहारगा जहा अणंतरोववन्नगा ॥३३-६॥

परंपराहारगा जहा परंपरोववन्नगा ॥३३-७॥

अणंतरपज्जत्तगा जहा—अणंतरोववन्नगा ॥३३-८॥

परंपरपज्जत्तगा जहा परंपरोववन्नगा ॥३३-९॥

चरिमा वि जहा—परंपरोववन्नगा तहेव ॥३३-१०॥

एवं अचरिमा वि ॥३३-११॥

एवं एए एगारस उद्देसगा । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति-
 जाव विहरइ ॥३३-१२॥

पढमं एगिंदियत्तयं समत्तं ॥

छाया—कतिविधाः खलु भदन्त ! परम्परोपपन्नका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः ?
 गौतम ! पञ्चविधाः परम्परोपपन्नका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा—पृथिवीका-
 यिकाः, एवं चतुष्को भेदो यथा—औधिकोद्देशकः । परम्परोपपन्नकोऽपर्याप्तं सूक्ष्म-
 पृथिवीकायिकानां भदन्त ! कति कर्ममकृतयः प्रज्ञप्ताः । एवमेतेनाऽभिलापेन
 यथा—औधिकोद्देशके तथैव—निरवशेषं भणितव्यम्, यावच्चतुर्दश वेदयन्ति । तदेवं
 भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥३३॥३

अनन्तरावगाढाः यथा परम्परोपपन्नकाः ॥३३॥४॥ परम्परावगाढाः यथा—
 परम्परोपपन्नकाः ॥३३॥५॥ अनन्तराहारका यथा—अनन्तरोपपन्नकाः ॥३३॥६॥

પરમ્પરાહારકા યથા પરમ્પરોપપન્નકાઃ ॥૩૩:૭ અનન્તરપર્યાપ્તકાઃ યથા અનન્ત-
રોપપન્નકાઃ ॥૩૩:૮॥ પરમ્પરપર્યાપ્તકાઃ યથા-પરમ્પરોપપન્નકાઃ ॥૩૩:૯॥
ચરમા અપિ યથા-પરમ્પરોપપન્નકાઃ તથૈવ ॥૩૩:૧૦॥ એવમ્-અચરમા અપિ
॥૩૩:૧૧॥ એવમેતે-एकादशोद्देशकाः । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति
यावद् विहरति ॥૩૩:૧૧॥

ત્રયસ્ત્રિંશત્ શતકસ્ય પ્રથમષ્ઠેકેન્દ્રિયશતકં સમાપ્તમ્ ॥

ટીકા-‘કહ્વિહા ણં મંતે !’ કતિવિધાઃ-કિયન્તઃ સ્વલુ ભદન્ત ! ‘પરંપરો-
વવન્નગા એગિંદિયા પન્નત્તા’ પરમ્પરોપપન્નકા એકેન્દ્રિયા જીવાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ
કથિતા इति પ્રશ્નઃ । भगवानाह-‘गोयमा’ इत्यादि । ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘पंच-
विहा परंपरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता’ पञ्चविधाः-एवमकारकाः परंपरोपप-
न्नकाः एकेन्द्रियजीवाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः के ते पञ्च तत्राह-‘तं जहा’ इत्यादि
‘तं जहा’ तद्यथा-‘पृथ्वीकाइया एवं चउक्कओ भेओ जहा ओहिउद्देसए’ पृथिवी-
कायिका एवं चतुष्को भेदः यथा-औधिके सामान्ये एतस्यैव शतकस्य प्रथमोद्देशके ।

—શતક ૩૩ ઉદ્દેશ તૃતીય

ટીકાર્થ-‘કહ્વિહા ણં મંતે ! પરંપરોવવન્નગા એગિંદિયા પન્નત્તા’ હે ભદન્ત !
પરમ્પરોપપન્નક એકેન્દ્રિયજીવ કિતને કહે ગયે હૈં ? ‘ગોયમા ! પંચવિહા પરં-
પરોવવન્નગા એગિંદિયા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! પરમ્પરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવ
પાંચ પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં । ‘તં જહા’ વે હસ પ્રકાર સે હૈં-‘પૃથ્વી કાઈયા
એવં ચઉક્કઓ ભેઓ જહા ઓહિઉદ્દેસએ’ પૃથ્વીકાયિક, અપ્કાયિક,
તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક ઓર વનસ્પતિકાયિક હન સબ કે ચાર-ચાર
ભેદ હોતે હૈં । જૈલા કિ ઔધિક ઉદ્દેશક સે કહા ગયા હૈં । અર્થાત્
પૃથ્વીકાયિક સૂક્ષ્મ ઓર બાદર કે ભેદ સે સૂલ સે દો પ્રકાર કે કહે હૈં,

॥ત્રીજા ઉદ્દેશાનેા પ્રારંભ—

‘કહ્વિહા ણ મંતે ! પરંપરોવવન્નગા એગિંદિયા પન્નત્તા’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ પરંપરોપપન્નક એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો કેટલા
કહેવામાં આવ્યા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘ગોયમા ! પંચવિહા
પરંપરોવવન્નગા એગિંદિયા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! પરંપરોપપન્નક એક ઇન્દ્રિય-
વાળા જીવો પાંચપ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. ‘તં જહા’ તે આ પ્રમાણે
છે.-‘પૃથ્વીકાઈયા એવં ચઉક્કઓ ભેઓ જહા ઓહિ ઉદ્દેસએ’ પૃથ્વીકાયિક,
અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક અને વનસ્પતિકાયિક આ બધાના ચાર
ચાર ભેદો હોય છે. તે જે પ્રમાણે ઔધિક ઉદ્દેશમાં કહ્યા છે, તે પ્રમાણે સમજવા.
એટલે કે-પૃથ્વીકાયિક સૂક્ષ્મ અને બાદરના ભેદથી બે પ્રકારના છે. સૂક્ષ્મમાં

પૃથિવીકાયિકા યાવદ્ વનસ્પતિકાયિકાઃ । પૃથિવ્યપ્તેજોવાયુવનસ્પતિકાયિક-
 મેદાદ્ એકેન્દ્રિયા પञ्ચ પ્રકારકા ભવન્તિ । ચતુષ્કો મેદાદ્ એતિ પૃથિવીકાયાદારમ્ય
 વનસ્પતિકાયપયજ્ઞાનાં પञ્ચાનાં ચત્ત્વારો મેદાદ્ યથા-સૂક્ષ્મા, વાદરાઃ, અપ-
 ર્યાપ્તકાઃ પર્યાપ્તકાથેતિ, ચતુર્મેદમિન્ના પञ્ચવિધા અપ્યેકેન્દ્રિયા ઔધિકોદેશવત્
 પઠનીયાઃ ‘પરંપરોવવન્નગ અપજ્જત્ત સુહુમ પુઢવીકાહયાણં મંતે !’ પરમ્પરોપપન્ન-
 કાઽપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકજીવાનાં મદન્ત ! ‘કહ્ કમ્મપગહીઓ પન્નત્તાઓ’
 કતિ કર્મમક્રુતયઃ પ્રજ્ઞપ્તા એતિ પ્રશ્નઃ । મગવાનાહ-‘એવં એણં’ એત્યાદિ । ‘એવં એ-
 ણં અમિલાવેણં જહા ઓહિએ ઉદેસએ તદેવ નિરવસેસં માણિયવ્વં’ એવમેતેન
 ઉપરિ પ્રદર્શિતામિલાપેન, યથા-ઔધિકે, એતત્ શતકીય પ્રથમોદેશકે કથિતમ્,
 તથૈવ નિરવશેષં સર્વમપિ મણિતવ્યમ્ ।

ક્રિયત્વર્થન્તમૌધિકોદેશક એહ પઠનીયસ્તત્રાહ-‘જાવ ચઉદસવેદેતિ’ યાવત્-

સૂક્ષ્મ કે મી પર્યાપ્ત ઓર અપર્યાપ્ત એસે દો મેદાદ્ હૈં તથા વાદર કે મી
 પર્યાપ્ત ઓર અપર્યાપ્ત દો મેદાદ્ હૈં । એસ પ્રકાર સે પાંચો પ્રકાર કે એક-
 ન્દ્રિય જીવ ચાર-ચાર મેદાદ્ વાલે હોતે હૈં ।

‘પરંપરોવવન્નગ અપજ્જત્ત સુહુમ પુઢવીકાહયાણં મંતે ! કહ્ કમ્મપગ-
 હીઓ પન્નત્તાઓ’ હે મદન્ત ! પરમ્પરોપપન્નક અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથિવીકા-
 યિક કે કિતની કર્મ પ્રકૃતિયાં કહી ગઈ હૈં ? ‘એવં એણં અમિલાવેણં
 જહા ઓહિએ ઉદેસએ તદેવ નિરવસેસં માણિયવ્વં’ હે ગૌતમ ! એસ અમિ-
 લાપ દ્વારા જૈસા ઔધિક ઉદેશક મેં-એસી શતક કે પ્રથમ ઉદેશક મેં
 કહા ગયા હૈં વૈસા હી કથન યહાં પર કરના ચાહિયે ઓર વહ કથન
 ‘જાવ ચઉદસ વેદેતિ’ યાવત્ વે ૧૪ કર્મ પ્રકૃતિયોં કા વેદન કરતે હૈં

પણુ પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત એવા લેદો હોય છે. તથા વાદરમાં પણુ પર્યાપ્ત
 અને અપર્યાપ્ત એવા બે લેદો થાય છે. આ રીતે પાંચે પ્રકારના એક ઇન્દ્રિય
 વાળા જીવો ચાર-ચાર પ્રકારના લેદવાળા હોય છે.

‘પરંપરોવવન્નગ અપજ્જત્ત સુહુમ પુઢવીકાહયાણં મંતે ! કહ્ કમ્મપગહીઓ
 પન્નત્તાઓ’ હે ભગવન્ પરંપરોપપન્નક અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકોને કેટલી
 કર્મ પ્રકૃતિયો કહી છે ? ‘એવં એણં અમિલાવેણં જહા ઓહિએ ઉદેસએ તદેવ
 નિરવસેસં માણિયવ્વં’ હે ગૌતમ ! આ અમિલાપ દ્વારા ઔધિક ઉદેશમાં-
 એટલે કે આ શતકના પહેલા ઉદેશમાં કહેલ છે, એજ પ્રમાણેનું
 સમણું કથન અહિયાં કહી લેવું. અને તે કથન યાવત્ ‘જાવ ચઉદસ
 વેદેતિ’ તેઓ ઔદકર્મ પ્રકૃતિયોનું વેદન કરે છે. આ કથન સુધી કહેવું જોઈએ.

ચતુર્દશ કર્મપ્રકૃતી વૈદ્યન્તિ, એતત્પર્યન્ત સૌધિકોદેશકઙ્કદ્દ ઇઠનીયઃ । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ, હે મદન્ત ! પરમ્પરોપપન્નકૈ કેન્દ્રિયવિષયે યદેવાનુપ્રિયેણ કથિતં તત્સર્વં સર્વથૈવ સન્યમિતિ કથયિત્વા ગૌતમો મગવન્તં વન્દતે નમસ્યતિ, વન્દિત્વા નમસ્યિત્શ ચ સંયમેન તપસા આત્માનં ભાવયન્ વિહરતીતિ ॥

ત્રયત્તિશત્તમે શતે પ્રથમે—એકેન્દ્રિયશતે એકાદશોદેશકયુતે

તૃતીયોદેશકઃ સમાપ્તઃ ૩૩।૩।

‘અણંતરોવગાઠા જહા—અણંતરોવવન્નગા’ અનન્તરાવગાઠા એકેન્દ્રિયજીવાઃ

યહાં તક કહના ચાહિયે । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે મદન્ત ! જૈસા આપ દેવાનુપ્રિયને પરમ્પરોપપન્નક એકેન્દ્રિય કે વિષય મેં યહાં કહા હૈ વહ સબ સર્વથા સત્ય હૈ । હસ પ્રકાર કહકર ગૌતમ ને પ્રભુશ્રી કો વન્દના કી ઓર નમસ્કાર કિયા । વન્દના નમસ્કાર કર ફિર વે સંયમ ઓર તપ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુએ અપને સ્થાન પર બિરાજમાન હો ગયે ॥સૂ૦૧॥

તેતીસવેં શતક્રકા તૃતીય ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥૩૩-૩॥

‘અણંતરોવગાઠા જહા અણંતરોવવન્નગા’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—અનન્તરાવગાઠ એકેન્દ્રિય જીવોં કે સમ્બન્ધ મેં કથન જૈમા અન્તરોપપન્નક એકેન્દ્રિયોં કે સમ્બન્ધ મેં કિયા ગયા હૈ વૈસા હી હૈ । પ્રથમ સમય વે અવગાઠ હુએ જીવ હી અનન્તરાવગાઠ કહે ગયે હૈં । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે મદન્ત ! જૈસા યહ કથન આપ દેવાનુપ્રિયને

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન આપ દેવાનુપ્રિયે પરંપરોપપન્નક એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવના સંબંધમાં જે કથન કહેલ છે, તે સંબંધ કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન આપ દેવાનુપ્રિયનું સંબંધ કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાનપર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥ત્રીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૩-૩॥

ચોથા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

‘અણંતરોવગાઠા જહા અણંતરોવવન્નગા’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—અનંતરાવગાઠ એક ઇન્દ્રિય જીવોના બંધન કથન અનંતરોપ-પન્નક એકેન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં કહેવામાં આવેલ કથન પ્રમાણે જ છે. પહેલા સમયમાં અવગાઠ થયેલા જીવ જ અનંતરાવગાઠ કહેવાય છે.

યથા—અનન્તરોપપન્નકાઃ કથિતાસ્તથૈવ—જેવા અનન્તરાવગાઠા એકેન્દ્રિયાઃ । મથમ-સમયાવગાઠા અનન્તરાવગાઠાઃ કથ્યતે । તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ । ૩૩-૪।

‘પરંપરોવગાઠા જહા—પરંપરોવવન્નગા’ પરમ્પરાવગાઠાઃ યથા—પરમ્પરોપપન્નકાઃ । પરમ્પરોપપન્નકવદેવ—પરમ્પરાવગાઠૈકેન્દ્રિયાણામપિ વક્તવ્યતા જ્ઞાતવ્યા । અત્ર સર્વાપિ વક્તવ્યતા પરમ્પરોપપન્નકૈકેન્દ્રિયપ્રકરણવદેવ જ્ઞાતવ્યેતિ સંક્ષેપઃ ॥ ઇતિ પશ્ચમોદેશકઃ ॥૩૩૫।

‘અણંતરાહારગા જહા—અણંતરોવવન્નગા’ અનન્તરાહારકાઃ એકેન્દ્રિયજીવાઃ અનન્તરોપપન્નકૈકેન્દ્રિયવદેવ જ્ઞાતવ્યાઃ ॥૩૩૬। ઇતિ પઠ્યોદેશકઃ ॥

ક્રિયા છે વહ સચ સર્વથા સત્ય હી છે એલા કહકર ગૌતમને પ્રભુશ્રી-કો વન્દના કી ઓર નમસ્કાર ક્રિયા । વન્દના નમસ્કાર કર ફિર બે સંયમ ઓર તપ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુએ અપને સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે ।

તેતીસવે જ્ઞાતક કા ચતુર્થ ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥૩૩-૪॥

‘પરંપરોવગાઠા જહા પરંપરોવવન્નગા’ પરંપરાવગાઠ એકેન્દ્રિયોં કી વક્તવ્યતા પરમ્પરોપપન્નક એકેન્દ્રિયોં કે જૈસી હી છે ।

॥ ૩૩ વે જ્ઞાતક કા પંચમ ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥

તથા ‘અણંતરાહારગા જહા અણંતરોવવન્નગા’ અનન્તરોપપન્નક એકે-

‘સેવં મતે । સેવં મતે તિ’ છે ભગવન આપદેવાનુપ્રિયે આ અનંતરાવ-ગાઠ જીવના સળધમાં બે પ્રમાણેનું કથન કર્યું છે, તે સળધું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પશ્ચી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાનપર બિરાજ માન થયા. ॥સૂ.૦૧॥

॥ચોથો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૩-૪॥

પાંચમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

‘પરંપરોવગાઠા જહા પરંપરોવવન્નગા’ ઇત્યાદિ

ટીકા.ર્થ—પરંપરાવગાઠ એકેન્દ્રિય જીવોનું કથન પરંપરોપપન્નક એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના કથનપ્રમાણે સમજવું.

॥પાંચમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૩-૫॥

છઠ્ઠા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

‘અણંતરાહારગા જહા અણંતરોવવન્નગા’ ઇત્યાદિ

ટીકા.ર્થ—અનંતરોપપન્નક એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવના કથન પ્રમાણે અનંતરા-

‘परंपराहारगा जहा-परंपरोववन्नगा’ परम्पराहारका यथा-परम्परोपपन्नका एकेन्द्रिया स्तथैव ज्ञातव्याः । परम्परोपपन्नकैकेन्द्रियमकरणवदेव, ज्ञातव्यमिति भावः । ३३।७॥ इतिसप्तमोद्देशकः ॥

‘अणंतरपञ्जत्तगा जहा-अणंतरोववन्नगा’ अनन्तरपर्याप्तकैकेन्द्रियजीवा अनन्तरोपपन्नकैकेन्द्रियवदेव पृथिव्यादि यावद् वनस्पतिपर्यन्तपञ्चभेदभिन्ना तथा-सूक्ष्मवादरभेदभिन्ना ज्ञातव्याः ॥३३८ अष्टमोद्देशकः समाप्तः ॥

‘परंपरपञ्जत्तगा जहा-परंपरोववन्नगा’ परम्पर पर्याप्तका एकेन्द्रिया परम्परोपपन्नकैकेन्द्रियवदेव पृथिव्यादि वनस्पत्यन्त पञ्चभेदभिन्नाः, तथा सूक्ष्मवादरन्द्रियों के जैसी वक्तव्यता अन्नराहारक एकेन्द्रिय जीवों की है ऐसा जानना चाहिये ॥ ३३ वे शतक का षष्ठ उद्देशक समाप्त ॥

‘परंपराहारगा जहा परंपरोववन्नगा’ परम्परोपपन्नक एकेन्द्रियों के जैसी वक्तव्यता परम्पराहारक एकेन्द्रिय जीवों की है ।

३३ वे शतक का सप्तम उद्देशक समाप्त ॥

‘अणंतरपञ्जत्तगा जहा अणंतरोववन्नगा’ अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रियों के जैसी वक्तव्यता अन्तरपर्याप्तक एकेन्द्रिय जीवों की है ।

॥ ३३ वे शतक का अष्टम उद्देशक समाप्त ॥

‘परंपरपञ्जत्तगा जहा परंपरोववन्नगा’ परंपरपर्याप्तक पृथिवी

हारक ओक ईन्द्रियवाणा लुवोनुं कथन समञ्जसुं. ॥सू०१॥

॥छठे उद्देशे समाप्त ॥३३-६॥

सातमा उद्देशानो आरंभ—

‘परंपराहारगा जहा परंपरोववन्नगा’ इत्यादि

टीकाथ—परंपरोपपन्नक ओक ईन्द्रियवाणा लुवोना कथन प्रमाणे परंपराहारक ओक ईन्द्रियवाणा लुवोनुं कथन समञ्जसुं. ॥सू०१॥

॥सातमे उद्देशे समाप्त ३३-७॥

आठमा उद्देशानो आरंभ—

‘अणंतरपञ्जत्तगा जहा अणंतरोववन्नगा’ इत्यादि

टीकाथ—अनंतरोपपन्नक ओक ईन्द्रियवाणा लुवोना कथन प्रमाणे अनंतरपर्याप्तक ओक ईन्द्रिय लुवोनुं कथन समञ्जसुं ॥सू०१॥

॥आठमे उद्देशे समाप्त ॥३३-८॥

नवमा उद्देशानो आरंभ—

‘परंपरपञ्जत्तगा जहा परंपरोववन्नगा’ इत्यादि

टीकाथ—परंपरपर्याप्तक पृथ्वीकायिक ओक ईन्द्रियवाणा लुवना कथनथी

ભેદમિન્ના શ્વતુર્દશ કર્મપ્રકૃતિવેદનાન્તં સર્વં પરમ્પરોપપન્નકમ્પરણવદેવ જ્ઞાત-
વ્યમ્ હતિ । ૩૩।૧। નવમોદેશકઃ સમાપ્તઃ ॥

‘ચરિમા વિ જહા-પરંપરોવવન્નગા’ ચરમા અપિ એકેન્દ્રિયજીવાઃ પરમ્પરોપ-
ન્નકવદેવ પ્રથમં પૃથિવ્યાદિવનસ્પત્યન્તપશ્ચમેદાઃ, તતઃ પ્રત્યેકં પૃથિવ્યાદયઃ સૂક્ષ્મ
ચાદરભેદમિન્નાઃ સર્વે પરમ્પરોપપન્નકમ્પરણવદેવ જ્ઞાતવ્યા હતિ ॥૩૩।૧૦॥

દશમોદેશકઃ સમાપ્તઃ ॥

કાચિક એકેન્દ્રિય જીવ સે લેકર પરમ્પરપર્યાપ્તક વનસ્પતિકાચિક
એકેન્દ્રિય તક પાંચ ભેદવાલે યે પરમ્પરપર્યાપ્તક એકેન્દ્રિય જીવ સૂક્ષ્મ
ચાદર કે ભેદસે પ્રત્યેક દો ૨ પ્રકારકે હોતે હૈં ઓર યે સવ કથન પરમ્પ-
રોપપન્નક એકેન્દ્રિય પ્રકરણ કે જૈસા હી જાનના ચાહિયે ।

૩૩ વેં શતક કા નવમ ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥

‘ચરિમા વિ જહા પરંપરોવવન્નગા’ ચરમ એકેન્દ્રિય જીવ મી પરમ્પ-
રોપપન્નકો’ કે જૈસે પૃથિવીકાચિક આદિ કે ભેદ સે વનસ્પતિકાચિક
તક પાંચ ભેદ વાલે હૈં । ઓર પ્રત્યેક પૃથિવીકાચિક આદિ જીવ સૂક્ષ્મ
ચાદર કે ભેદસે યુક્ત હૈં । તથા યે સવ ૧૪ કર્મ પ્રકૃતિયો’ કા વેદન કરતે
હૈં હસ પ્રકાર કા સવ કથન પરમ્પરોપપન્નક એકેન્દ્રિય કે પ્રકરણ કે જૈસા
હી સમજ્ઞના ચાહિયે । ॥ ૩૩ વેં શતક કા દશવાં ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥

લઈને પરંપરપર્યાપ્તક વનસ્પતિકાચિક એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવના કથન સુધી
પાંચ લેદોવાળા આ પરંપરપર્યાપ્તક એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો સૂક્ષ્મ અને
બાદરના લેદથી દરેકના બળે પ્રકાર હોય છે, અને આ બધાં ૧૪ ચૌદકર્મ
પ્રકૃતિયોનું વેદન કરે છે એ પ્રમાણેના આ કથન સુધીની સઘળું કથન પરંપ-
રોપપન્નક એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવના પ્રકરણના કથન પ્રમાણે જ સમજવું. ॥સૂ૦૧॥

॥નવમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૩-૬॥

॥દસમા ઉદ્દેશાનો આરંભ—

‘ચરિમા વિ જહા પરંપરોવવન્નગા’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—ચરમ એકેન્દ્રિયવાળા જીવો પણ પરંપરોપપન્નક જીવોના કથન
પ્રમાણે પૃથ્વીકાચિક વિગેરેના લેદથી વનસ્પતિકાચિક જીવના કથન સુધી પાંચ
લેદ યુક્ત કદા છે. અને દરેક પૃથ્વીકાચિક જીવો સૂક્ષ્મ બાદર લેદવાળા કદા
છે. તથા આ બધા ૧૪ ચૌદકર્મ પ્રકૃતિયોનું વેદન કરે છે. આ પ્રમાણેનું
સઘળું કથન પરંપરોપપન્નક એક ઇન્દ્રિય જીવના પ્રકરણમાં કદા પ્રમાણે જ
સમજવું. ॥સૂ૦૧॥

॥દસમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૩-૧૦॥

‘એવં અચરિમાપિ’ એવં પરમ્પરોપપન્નક પૃથિવ્યાદ્યેકેન્દ્રિયવંદેઃ અચરમપૃથિ-
વ્યાદ્યેકેન્દ્રિયજીવાં અપિ જ્ઞાતવ્યા હિતિ ॥૩૩॥૧૧॥

‘એવં એ એકારસ ઉદ્દેસગા’ એવમુપર્યુક્ત પ્રદર્શિતક્રમેણ—એકેન્દ્રિયજીવાનાર્થે
કાદશ સામાન્ય એકેન્દ્રિયજીવાનાં પ્રથમ ઔધિકોદ્દેશકઃ ૧, અનન્તરોપપન્નકાનાં
મેકેન્દ્રિયાણાં દ્વિતીયોદ્દેશકઃ ૨॥ પરમ્પરોપપન્નકાનાં તૃતીયોદ્દેશકઃ ૩॥, અનન્ત-
રાવગાદાનાં ચતુર્થઃ ૪, પરમ્પરાવગાદાનાં પશ્ચમોદ્દેશકઃ ૫, અનન્તરાહારકાણામે

જ્ઞાતક ૩૩ ઉદ્દેશક ૧૧—

‘એવં અચરિમા વિ’ પરમ્પરોપપન્નક પૃથિવ્યાદિ એકેન્દ્રિય જીવોં કે
જેસા હી અચરમ પૃથિવી આદિ એકેન્દ્રિય જીવોં કા કથન જ્ઞાનજ્ઞા
વાહિયે ।
॥ ૩૩ વેં જ્ઞાતક કા ૧૧ વાં ઉદ્દેશક સમાસ ॥

‘એવં એ એકારસ ઉદ્દેસગા’ હસ પ્રકાર ઉપર્યુક્ત પ્રદર્શિત ક્રમ કે
અનુસાર એકેન્દ્રિય જીવોં કે ૧૧ ઉદ્દેશક હૈં—હનસેં પ્રથમ ઉદ્દેશક સામા-
ન્ય રુપ સે એકેન્દ્રિય જીવોં કા હૈં । અનન્તરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવોં કા
દ્વિતીય ઉદ્દેશક હૈ । પરમ્પરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવોં કા તૃતીય ઉદ્દેશક
હૈ । અનન્તરાવગાદ એકેન્દ્રિય જીવોં કા ચતુર્થ ઉદ્દેશક હૈ । પરમ્પરાવગાદ

॥અગિયારમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

‘એવં અચરિમા વિ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—પરંપરોપપન્નક પૃથ્વીકાયિક એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના
કથન પ્રમાણે જ અચરમ પૃથ્વીકાયિક વિગેરે એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોનું કથન
સંમજ્જુ ॥સુ૦૧॥

॥અગિયારમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૩ ૧૧

બારમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

‘એવં એ એકારસ ઉદ્દેસગા’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—આ રીતે ઉપર બતાવેલ કેમ પ્રમાણે એક ઇન્દ્રિયાળા જીવોના
સંબંધમાં અગિયાર ૧૧ ઉદ્દેશાઓ કહ્યા છે. તેમાં પહેલો ઉદ્દેશો સામાન્ય
પણાથી એક ઇન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં કહેલ છે. ૧ અનંતરોપપન્નક એક
ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં બીજો ઉદ્દેશો કહેલ છે. ૨ પરંપરોપપન્નક
એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં ત્રીજો ઉદ્દેશો કહેલ છે. ૩ અનંતરાવ
ગાદ એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં ચોથો ઉદ્દેશો કહેલ છે ૪ પરંપ-
રાવગાદ એકેન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં પાંચમો ઉદ્દેશો કહેલ છે. ૫

કેન્દ્રિયાણાં પૃષ્ઠોદ્દેશકઃ ૬। પરમ્પરાહારકાણાં સપ્તમોદ્દેશકઃ ૭। અનન્તરપર્યાપ્ત-
કાના મધ્યમોદ્દેશકઃ ૮। પરમ્પરપર્યાપ્તકાનામેકેન્દ્રિયાણાં નવમોદ્દેશકઃ ૯। ચરમૈ-
કેન્દ્રિયાણાં દશમોદ્દેશકઃ ૧૦ અચરમૈકેન્દ્રિયાણામેકાદશોદ્દેશકઃ ॥૧૧॥ તદેવમેતે
સદ્ગુણનયા-एकादशोद्देशका भवन्तीति ॥

‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ જાવ વિહરઈ’ તદેવં ભદન્ત ! તદેવં ભદન્ત ! ઇતિ
યાવદ્ વિહરતિ । હે ભદન્ત ! અનન્તરાવગાઢકેન્દ્રિયાદારમ્પ્યાઽચરમૈકેન્દ્રિયપર્યન્ત-
જીવાનાં વિષયે યદ્ દેવાનુપ્રિયેણ કથિતમ્, તત્સર્વં સર્વથૈવ સત્યમ્, ઇતિ કથયિત્વા
ગૌતમો મગવન્તં વન્દતે નમસ્યતિ વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા સંયમેન તપસા આત્માનં
ભાવયન્ વિહરતીતિ । ઇતિ ત્રયસ્ત્રિંશત્તમે શતકે પ્રથમમેકેન્દ્રિયશતં સમાપ્તમ્ ।

इति श्री-विश्वविख्यातजगद्बलभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि - ‘जैनाचार्य’

पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां “श्री भगवतीसूत्रस्य” प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां

व्याख्यायां त्रयस्त्रिंशत्तमे शतके एकादशोद्देशकः समाप्तः ॥३३-११॥

એકેન્દ્રિય જીવોં का पांचवा उद्देशक है, अनन्तराहारक एकेन्द्रिय जीवों
का षठा उद्देशक है । परम्पराहारक एकेन्द्रिय जीवों का सातवा उद्दे-
शक हैं । अनन्तर पर्याप्तक एकेन्द्रिय जीवों का आठवां उद्देशक है ।
परम्पर पर्याप्तक एकेन्द्रिय जीवों का नौवां उद्देशक है । चरम एकेन्द्रिय
जीवों का १० वां उद्देशक है । तथा-अचरम एकेन्द्रिय जीवों का ११
वां उद्देशक है । इस प्रकार से ये ११ उद्देशक एकेन्द्रिय जीवों के सम्ब-
न्ध में इस प्रथम एकेन्द्रिय शतक में है । ‘सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति’
हैं भदन्त ! अनन्तरावगाढ एकेन्द्रिय से लेकर अचरम एकेन्द्रिय पर्यन्त

અનંતરાહારક એક ઇન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં છઠ્ઠો ઉદ્દેશો કહેલ છે. ૬
પરંપરાહારક એક ઇન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં સાતમો ઉદ્દેશો કહેલ છે. ૭
અનંતર પર્યાપ્ત એક ઇન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં આઠમો ઉદ્દેશો કહેલ છે. ૮
પરંપરપર્યાપ્તક એક ઇન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં નવમો ઉદ્દેશો કહેલ છે. ૯
ચરમ એક ઇન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં ૧૦ દસમો ઉદ્દેશો કહેલ છે. ૧૦
તથા અચરમ એક ઇન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં અગિયારમો ઉદ્દેશો કહેલ છે.
૧૧ આ રીતે આ અગિયાર ઉદ્દેશોઓ એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં
આ પહેલાં એકેન્દ્રિય શતકમાં કહેલ છે.

‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ અનંતરાવગાઢ એકેન્દ્રિયવાળા
જીવોથી લઈને અચરમ એકેન્દ્રિય સુધીના જીવોના સંબંધમાં આપ દેવાનુ-

के जीवों के विषय में जो आप देवानुप्रियने कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को बन्दना और नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भाविन करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत “भगवतीसूत्र” की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके तेतीसवे शतक का अग्यारहवां उद्देशक समाप्त ॥३३—११॥

॥ प्रथम एकेन्द्रिय शतक समाप्त ॥

પ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આ વિષયમાં આપ દેવાનુપ્રિયે કહેલ સઘળું સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમ-સ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા. વંદના નમસ્કાર કરીને તે યહી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર વિરાજમાન થયા. ॥સૂ.૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત “ભગવતીસૂત્ર”ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના તેત્રીસમા શતકનો અગિયારમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૩-૧૧॥

॥પહેલું એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત ॥



अथ द्वितीयमेकेन्द्रियशतम्

अथ त्रयस्त्रिंशत्तमे शते प्रथमशतं व्याख्याय क्रमप्राप्तं द्वितीय शतमारभते, तस्येदं सूत्रम् 'कइविहा णं भंते' इत्यादि ।

मूलम्—कइविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता । तं जहा—पुढवीकाइया जाव—वणस्सइकाइया । कण्हलेस्सा णं भंते ! पुढवीकाइया कइविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता । तं जहा—सुहुमपुढवीकाइया य बायरपुढवीकाइया य । कण्हलेस्सा णं भंते ! सुहुमपुढवीकाइया कइविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! एवं एएणं अभिलावेणं चउक्क भेओ जहेव ओहि उद्देसए जाव वणस्सइकाइय त्ति ।

कण्हलेस्सा अप्रज्जत्तसुहुमपुढवीकाइया णं भंते ! कइकम्मपगडीओ पन्नत्ताओ ? एवं चेव एएणं अभिलावेणं जहेव—ओहि उद्देसए तहेव पन्नत्ताओ तहेव वेदेति सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति

कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नग कण्हलेस्स एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया । एवं एएणं अभिलावेणं तहेव दुपयो भेओ जाव वणस्सइकाइय त्ति । अणंतरोववन्नग कण्हलेस्स सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइकम्मपगडीओ पन्नत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहा—ओहिओ अणंतरोववन्नगाणं उद्देसओ तहेव जाव वेदेति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

कइविहा णं भंते ! परंपरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा परंपरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता । तं जहा—पुढवीकाइया० एवं एएणं अभिलावेणं तहेव चउक्कओ भेओ जाव वणस्सइकाइयत्ति ।

परंपरोववण्णग कण्हलेस्स अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयाणं भन्ते ! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ परंपरोववण्णग उद्देसओ तहेव जाव वेदोति । एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहि एगिंदियसए एक्कारस उद्देसगा भणिया तहेव कण्हलेस्ससए वि भाणियव्वा जाव अचरिमकण्हलेस्सा एगिंदिया ॥सू० १॥

विड्यं एगिंदियसयं समत्तं

छाया--कतिविधाः खलु भदन्त ! कृष्णलेश्या एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पञ्चविधाः कृष्णलेश्या एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-पृथिवीकायिकाः यावद् वनस्पतिकायिका, कृष्णलेश्याः खलु भदन्त ! पृथिवीकायिकाः कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-सूक्ष्म पृथिवीकायिकाश्च वादरपृथिवीकायिकाश्च ।

कृष्णलेश्याः खलु भदन्त ! सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! एवमेतेनाऽभिलापेन चतुष्क भेदो यथैव-औघिकोद्देशके यावद् वनस्पतिकायिका इति ।

कृष्णलेश्यापर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकानां भदन्त ! कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः ? एवमेव एतेनाभिलापेन यथैव-औघिकोद्देशके तथैव प्रज्ञप्ताः । तथैव बध्नन्ति, तथैव वेदयन्ति । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ।

कतिविधाः खलु भदन्त ! अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्यैकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पञ्चविधा अनन्तरोपपन्नका कृष्णलेश्या एकेन्द्रियाः, एवमेतेन अभिलापेन तथैव-द्विपदो भेदः, यावद् वनस्पतिकायिका इति । अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्य सूक्ष्म पृथिवीकायिकानां भदन्त । कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः ? एवमेतेनाऽभिलापेन यथा औघिकोऽनन्तरोपपन्नकानाम्, उद्देशकस्तथैव यावद्वेदयन्ति । तदेवं भदन्त । तदेवं भदन्त । इति ।

कतिविधाः खलु भदन्त ! परम्परोपपन्नकाः कृष्णलेश्या एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पञ्चविधाः परम्परोपपन्नकाः कृष्णलेश्या एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-पृथिवीकायिकाः, एवमेतेनाऽभिलापेन, तथैव-चतुष्कभेदो यावद् वनस्पतिकायिका इति ।

परम्परोपपन्नक कृष्णलेश्या पर्याप्तक सुहुमपृथिवीकायिकानां भदन्त । कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः ? एवमेतेनाऽभिलापेन यथैव औघिकः परम्परोपपन्नको-

દેશક સ્તથૈવ-યાવદ્ વેદયન્તિ । એવમેતેનાઽપિલાપેન યથૈવ-ઔધિકૈકેન્દ્રિયશતે
 એકાદશ ઉદેશકા મણિતા સ્તથૈવ-કૃષ્ણલેશ્યશતેઽપિ મણિતવ્યાઃ જાવ અચરમ
 કૃષ્ણલેશ્યા એકેન્દ્રિયાઃ ॥મુ૦ ૧॥

इति द्वितीयमेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥

ટીકા-‘કઙ્ઘિહા ણં મંતે । કળહલેસ્સા ઇગિંદિયા પળ્લન્તા’ કતિવિધાઃ કતિ
 પ્રકારકાઃ સ્વલુ મદન્ત ! કૃષ્ણલેશ્યા એકેન્દ્રિયજીવાઃ મજ્ઞતાઃ-કથિતાઃ इति
 મજ્ઞનઃ । મગધનાહ-‘ગોયમા’ इत्यादि । ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘પંચવિહા કળ્હ-
 લેસ્સા ઇગિંદિયા પળ્લન્તા’ પશ્ચવિધાઃ પશ્ચપ્રકારકાઃ કૃષ્ણલેશ્યા એકેન્દ્રિયજીવાઃ
 મજ્ઞતા-કથિતાઃ । ‘તં જહા’ તથથા-‘પુઢવીકાહ્યા જાવ-વળસ્સહકાહ્યા’
 પૃથિવીકાયિકાઃ કૃષ્ણલેશ્યા એકેન્દ્રિયજીવા યાવદ્ વનરપતિકાયિકાઃ કૃષ્ણલેશ્યા
 એકેન્દ્રિયજીવાઃ । અત્ર યાવત્પદેનાપ્કાયિક-તેજસ્કાયિક-વાયુકાયિકાનાં સંગ્રહો
 મર્વાતિ । તથા ચ-પૃથિવ્યપ્તેજો વાયુવનસ્પતિભેદેન કૃષ્ણલેશ્યૈકેન્દ્રિયજીવા,
 પશ્ચપ્રકારકા મર્વાન્તિ इति ।

૩૩ વે શતક મેં પ્રથમ એકેન્દ્રિય શતક વ્યાખ્યાત કરકે અચ ક્રમ
 પ્રાપ્ત દ્વિતીય શતક પ્રારંભ કિયા જાતા હૈ-

‘કઙ્ઘિહાણં મંતે ! કળહલેસ્સા ઇગિંદિયા પળ્લન્તા’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ-‘કઙ્ઘિહા ણં મંતે ! કળહલેસ્સા ઇગિંદિયા પળ્લન્તા’ હે મદન્ત !
 કૃષ્ણલેશ્યાવાલે એકેન્દ્રિય જીવ કિતને પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં ? ઉત્તર
 મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં-‘પંચવિહા કળ્હલેસ્સા ઇગિંદિયા પળ્લન્તા’ હે ગૌતમ !
 કૃષ્ણલેશ્યાવાલે એકેન્દ્રિય જીવ પાંચ પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં । ‘તં જહા’
 જો હસ પ્રકાર સે હૈ-‘પુઢવીકાહ્યા જાવ વળસ્સહકાહ્યા’ પૃથિવીકાયિક
 યાવત્ વનસ્પતિકાયિક, યહાં યાવત્ શબ્દ સે ‘અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક
 ઔર વાયુકાયિક’ હન જીવો’ કા ગ્રહણ હુઆ હૈ । હસ પ્રકાર પૃથિવી-

બીજા એકેન્દ્રિય શતકનો પ્રારંભ--

તેત્રીસમા શતકમાં પહેલા એકેન્દ્રિય શતકનું કથન કરીને હવે સૂત્રકાર
 ક્રમથી આવેલા આ બીજા એકેન્દ્રિય શતકનો પ્રારંભ કરે છે -‘કઙ્ઘિહાણં
 મંતે ! કળહલેસ્સા ઇગિંદિયા પળ્લન્તા’ इत्यादि

ટીકાર્થ-‘કઙ્ઘિહાણં મંતે ! કળહલેસ્સા ઇગિંદિયા પળ્લન્તા’ હે ભગવન્
 કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. આ
 પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-‘ગોયમા ! પંચવિહા કળ્હ-
 લેસ્સા ઇગિંદિયા પળ્લન્તા’ હે ગૌતમ ! કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય જીવો પાંચ
 પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. ‘તં જહા’ તે આ પ્રમાણે છે ‘પુઢવીકાહ્યા જાવ
 વળસ્સહકાહ્યા’ પૃથ્વીકાયિક, વાયુકાયિક, યાવત્ અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક,

‘કળહલેસ્સા ણં મંતે ! પુઢવીકાહયા કહ્વિહા પળ્લત્તા’ કૃષ્ણલેશ્યાઃ સ્વલુ મદન્ત ! પૃથિવીકાયાિકાઃ કતિવિધાઃ—કતિપ્રકારકા મંવન્તીતિ પ્રશ્નઃ ? મગવાનાહ—‘ગોયમા !’ ઇત્યાદિ । ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘દુવિહા પળ્લત્તા’ કૃષ્ણલેશ્યા, પૃથિવીકાયાિકા એકેન્દ્રિયજીવાઃ દ્વિવિધાઃ—દ્વિપ્રકારકા મવન્તિ । પ્રકારભેદમેવ દર્શયતિ—‘તં જહા’ ઇત્યાદિ । ‘તં જહા’ તથથા—‘સુહુમપુઢવીકાહયા ય—વાયરપુઢવીકાહયા ય’ સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયાિકાશ્ચ કૃષ્ણલેશ્યા એકેન્દ્રિયાઃ વાદરપૃથિવીકાયાિકાશ્ચ ।

‘કળહલેસ્સા ણં મંતે ! સુહુમપુઢવીકાહયા કહ્વિહા પળ્લત્તા’ કૃષ્ણલેશ્યાઃ સ્વલુ મદન્ત ! સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયાિકા એકેન્દ્રિયજીવાઃ કતિવિધાઃ—કતિપ્રકારકાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ ? ઇતિ પ્રશ્નઃ । મગવાનાહ—‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘એવં એણં અભિલાવેણં ચઙ્ગકઞ્ચો મેઓ જહેવ—ઓહિયે જાવ વળસ્સહકાહયત્તિ’ એવમુપરિકાયાિક, અપ્કાયાિક ઓર વનસ્પતિકાયાિક કે મેદ સે કૃષ્ણલેશ્યાવાલે એકેન્દ્રિય પાંચ પ્રકાર કે હોતે હૈં ।

‘કળહલેસ્સા ણં મંતે ! પુઢવીકાહયા કહ્વિહા પળ્લત્તા’ હે મદન્ત ! કૃષ્ણલેશ્યાવાલે પૃથિવીકાયાિક જીવ કિતને પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં—‘ગોયમા ! દુવિહા પળ્લત્તા’ હે ગૌતમ ! કૃષ્ણલેશ્યાવાલે પૃથિવીકાયાિક એકેન્દ્રિય જીવ દો પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં । ‘તં જહા’ જૈસે ‘સુહુમપુઢવીકાહયા વાદરપુઢવીકાહયા’ સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયાિક ઓર વાદર પૃથિવીકાયાિક ‘કળહલેસ્સા ણં મંતે ! સુહુમપુઢવીકાહયા કહ્વિહા પળ્લત્તા’ હે મદન્ત ! કૃષ્ણલેશ્યાવાલે સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયાિક જીવ કિતને પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં ? ‘ગોયમા ! એવં એણં અભિલાવેણં ચઙ્ગકઞ્ચો મેઓ જહેવ ઓહિયસે જાવ વળસ્સહકાહયત્તિ’ હે ગૌતમ ! હસ ઉપર મેં પ્રદર્શિત પ્રકારવાલે અભિલાપ

વાયુકાયાિક અને વનસ્પતિકાયાિકના ભેદથી કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય એવો પાંચ પ્રકારના હોય છે.

‘કળહલેસ્સા ણં મંતે ! પુઢવીકાહયા કહ્વિહા પળ્લત્તા’ હે ભગવન કૃષ્ણલેશ્યાવાળા પૃથ્વીકાયાિક એવો કેટલા પ્રકારના કહેલા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—‘ગોયમા ! દુવિહા પળ્લત્તા’ હે ગૌતમ ! કૃષ્ણલેશ્યાવાળા પૃથ્વીકાયાિક એકેન્દ્રિય એવો બે પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. ‘તં જહા’ તે આ પ્રમાણે છે. ‘સુહુમપુઢવીકાહયા વાદરપુઢવીકાહયા’ સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયાિક અને વાદરપૃથ્વીકાયાિક ‘કળહલેસ્સા ણં મંતે ! સુહુમ પુઢવીકાહયા કહ્વિહા પળ્લત્તા’ હે ભગવન કૃષ્ણલેશ્યાવાળા સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયાિક એવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘ગોયમા ! એવં એણં અભિલાવેણં ચઙ્ગકઞ્ચો મેઓ જહેવ ઓહિયસે જાવ વળસ્સહકાહયત્તિ’

દર્શિતમકારેણ અમિલાપેન ચતુષ્કો મેદઃ યથૈવ-ઔધિકોદેશકે કથિત સ્તથૈવાઽ-
પ્રાપિ વક્તવ્યઃ । યાવદ્વનસ્પતિકાચિકા ઇતિ । કૃષ્ણલેશ્ય પૃથિવીકાચિકૈકેન્દ્રિયા-
દારમ્ય કૃષ્ણલેશ્ય વનસ્પતિકાચિકૈકેન્દ્રિયાન્તાઃ સૂક્ષ્મ-વાદરાઽપર્યાપ્તક-પર્યા-
પ્તકરૂપ ચતુષ્ટયમેદવન્તો વિજ્ઞેયા ઇતિ ।

‘કળહલેસ્સ અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહયા ણં મંતે ! કહ કમ્મપગહીઓ
પન્નત્તાઓ’ કૃષ્ણલેશ્યાપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાચિકાનાં મદન્ત ! કતિ સંખ્યકાઃ
કર્મપ્રકૃતયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ ? ઇતિ પ્રશ્નઃ, ઉત્તરમાહ-‘એવંચેવ’ ઇત્યાદિ । ‘એવંચેવ-એણં
અમિલાવેણં જહેવ-ઓહિઉદેસણ તહેવ પન્નત્તાઓ’ એવમેવ એતેનાઽમિલાપમકારેણ
યથૈવ ઔધિકોદેશકે પ્રથમોદેશકે કથિતાઃ-અહીં કર્મપ્રકૃતય સ્તથૈવેદાપિ અઢ્ઠી

સે ઔધિક ઉદેશ મેં કહે ગયે અલુસાર સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાચિક જીવ યાવત્
સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાચ તક સચ એકેન્દ્રિય જીવ સૂક્ષ્મ વાદર અપર્યાપ્તક
ઔર પર્યાપ્તક કે મેદ સે ચાર-ચાર પ્રકાર કે જાનના ચાહિયે, અર્થાત્
કૃષ્ણલેશ્યાવાલે પૃથિવીકાચિક એકેન્દ્રિય સે લેકર કૃષ્ણલેશ્યાવાલે વન-
સ્પતિકાચિક એકેન્દ્રિય જીવ તક પૂર્વોક્ત સૂક્ષ્મ વાદર અપર્યાપ્તક
પર્યાપ્તક રૂપ સે ચાર-ચાર પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં ।

‘કળહલેસ્સ અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહયા ણં મંતે ! કહ કમ્મ-
પગહીઓ પન્નત્તાઓ’-હે મદન્ત ! કૃષ્ણલેશ્યાવાલે અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ
પૃથિવીકાચિક જીવોં કે કિનની કર્મપ્રકૃતિયાં કહી મર્હ હૈં ? ઉત્તર મેં
પ્રભુશ્રી કહતે હૈં-‘એવં એણં અમિલાવેણં જહેવ ઓહિ ઉદેસણ તહેવ
પન્નત્તાઓ’ હે ગૌતમ ! હસ અમિલાપ સે જિસ પ્રકાર ઔધિક ઉદેશક
મેં પ્રથમ ઉદેશક મેં આઠ કર્મ પ્રકૃતિયોંં કા સત્ત્વ કહા ગયા હૈં ઉસી

હે ગૌતમ ! આ ઉપર બતાવેલા પ્રકારવાળા અમિલાપેથી ઔધિક ઉદેશમાં
કહ્યા પ્રમાણે સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાચિક જીવો યાવત્ સૂક્ષ્મ વનસ્પતિ કાચ સુધિના
સઘળા એકધન્દ્રિયવાળા જીવો સૂક્ષ્મ વાદર અપર્યાપ્તક અને પર્યાપ્તકનાલેદથી
ચાર-ચાર પ્રકારના સમજવા. અર્થાત્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા પૃથ્વીકાચિક એકધન્દ્રિયથી
લઈને અપ્કાચિક, વાયુકાચિક, અને વનસ્પતિકાચિક એકધન્દ્રિયવાળા જીવો
પૂર્વોક્ત પ્રકારથી ચાર-ચાર પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે.

‘કળહલેસ્સ અપજ્જત્ત સુહુમ પુઢવીકાહયા ણં મંતે ! કહ કમ્મપગહીઓ
પન્નત્તાઓ’ હે ભગવન કૃષ્ણલેશ્યાવાળા અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાચિક જીવોને
કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયો કહેવામાં આવી છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે
છે કે-‘એવં એણં અમિલાવેણં જહેવ ઓહિ ઉદેસણ તહેવ પન્નત્તાઓ’ હે ગૌતમ !

જ્ઞાનાવરણીયાદિકાઃ કર્મપ્રકૃતયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, 'તદેવ વંધંતિ, તદેવ-વેદે'તિ' તથૈવ-
ઔધિકપ્રથમોદેશકવદેવ, કર્મપ્રકૃતી વંધનન્તિ, તથૈવ-વેદયન્તિ। વન્ધનસૂત્રે સપ્તવિધ
વન્ધકા વા, અષ્ટવિધવન્ધકા વા, સપ્તવિધ વન્ધકાઃ આયુર્વર્જસપ્તકર્મપ્રકૃતિ વન્ધકા
અષ્ટવિધવન્ધકાઃ પરિપૂર્ણાષ્ટવિધકર્મપ્રકૃતિ વન્ધકા ભવન્તિ। વેદનસૂત્રે જ્ઞાનાવરણી-
યાઘટકર્મપ્રકૃતયઃ, તથા શ્રોત્રેન્દ્રિયવધ્યાદિકાઃ સ્પર્શેન્દ્રિયવધ્યવર્જાશ્ચત્સાઃ, તથા-
નપુંસક વેદવધ્યવર્જે વેદદ્વયંબ, एवं चतुर्दशकर्मप्रकृतीनां वेदका भवन्ति इति भावः।

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! इति । हे भदन्त !

પ્રકાર સે યહાં પર મી આઠ કર્મ પ્રકૃતિયોં કા સત્ત્વ જાનનાં ચાહિયે,
'તદેવ વંધંતિ, તદેવ વેદે'તિ' તથા વન્ધન સૂત્ર મેં જૈસા કહા ગયા હૈ કિ
યે જીવ જબ સાત કર્મપ્રકૃતિયોં કે વન્ધક હોતે હૈં તચ આયુકર્મ કો
છોડકર શેષ સાત કર્મપ્રકૃતિયોં કો બાંધતે હૈં ઔર જબ આઠ કર્મપ્રકૃ-
તિયોં કે વન્ધક હોતે હૈં-તચ યે પૂરે કે પૂરે આઠ કર્મોં કો બાંધતે હૈં
તથા ૨ હસી પ્રકાર સે યે ઉનકા વેદન મી કરતે હૈં। હસ વેદન મેં યે
જ્ઞાનાવરણાદિક આઠ કર્મપ્રકૃતિયોં કા, શ્રોત્રેન્દ્રિ વધ્ય ચક્ષુરિન્દ્રિય
વધ્ય ઘ્રાણેન્દ્રિય વધ્ય જિહ્વેન્દ્રિય વધ્ય સ્ત્રીવેદ વધ્ય પુરુષવેદ વધ્ય હન
ચૌદહ કર્મપ્રકૃતિયોં કા વેદન કરતે હૈં। સ્પર્શનેન્દ્રિય વધ્ય કા વેદન
હનકો નહીં હોતા હૈ, ક્યોંકિ હનકો તો સ્પર્શનેન્દ્રિય કા ઉદય હોતા હૈ।
તથા નપુંમક વેદવાલે હોને સે હનકે ઉસકે વધ્ય કા મી અભાવ રહતા

આ અભિલાપથી ઔધિક ઉદેશામાં જે પ્રમાણે પહેલા ઉદેશામાં આઠ કર્મ
પ્રકૃતિયો હોવાના સંબંધમાં કથન કર્યું છે. એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ આઠ--
કર્મ પ્રકૃતિયોનું વિધમાન પણ સમજવું.

‘તદેવ વંધંતિ’ તદેવ વેદે’તિ’ તથા વન્ધ સૂત્રમાં જે પ્રમાણે કથન કર
વામાં આવ્યું છે કે-આ જીવો જ્યારે સાતકર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે,
ત્યારે તે આયુકર્મને છોડીને બાકીની સાતકર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે. અને
જ્યારે આઠકર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે, ત્યારે તેઓ પુરેપૂરી આઠકર્મ પ્રકૃતિયોનો
બંધ કરે છે. એજ પ્રમાણે તેઓનું વેદન પણ કરે છે. આ વેદનમાં તેઓ
જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે આઠ કર્મપ્રકૃતિયોનું શ્રોત્રેન્દ્રિયાવરણનું ચક્ષુ ઇન્દ્રિયાવરણનું,
ઘ્રાણેન્દ્રિયાવરણનું, જીહ્વા ઇન્દ્રિયાવરણનું સ્ત્રીવેદાવરણનું, પુરુષવેદ વરણનું
આ રીતે આ ચૌદકર્મ પ્રકૃતિયોનું વેદન કરે છે. તેઓને સ્પર્શનેન્દ્રિયાવરણનું
વેદન હોતું નથી કેમ કે-તેઓને તો સ્પર્શનેન્દ્રિયનો ઉદય હોય છે; તથા
નપુંસક વેદવાળા હોવાથી તેઓના આવરણનો અભાવ રહે છે.

કૃષ્ણલેશ્યૈકેન્દ્રિયજીવવિષયે ભવતા યદ્યત્ કથિતમ્, તત્સર્વં સર્વથૈવ સત્યમિતિ કથયિત્વા ગૌતમો મગધન્તં વન્દતે—નમસ્યતિ, વન્દિત્વા—નમસ્યિત્વા ચ સંયમેન-તપસાઽઽત્માનં ભાવયન્ વિહરતિ ॥સૂ૦ ૧॥

અયસ્ત્રિંશત્તમ શતકીય દ્વિતીયશતકે પ્રથમ ઔષિકોદ્દેશકઃ સમાપ્તઃ ॥૩૩૨॥૧॥

ત્રયસ્ત્રિંશત્તમશતકસ્ય દ્વિતીયઽવાન્તરશતકસ્ય દ્વિતીયરુદ્દેશકો વ્યાખ્યાયતે—
ટીકા—‘કહ્વિહા ણં મંતે ! અણંતરોવવન્નગા કણ્હલેસ્સ ઇગિંદિયા પન્નત્તા’ કતિ-વિધાઃ કતિ પ્રકારકાઃ સ્વલ્લ મદન્ત ! અનન્તરોપપન્નકાઃ યેપા મુત્પત્તી પ્રથમસમયો જાતસ્તે કૃષ્ણલેશ્યા એકેન્દ્રિયજીવાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ—કથિતા ? इति પ્રશ્નઃ । મગવા-નાહ—‘ગોયમા’ इत्यादि । ‘ગોયમા’ हे गौतम । ‘पंचविहा अणंतरोववन्नगा कण्ह-

हे । ‘सेव’ मंते ! सेव’ मंते ! त्ति’ हे मदन्त ! कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रिय जीव के विषय में आप देवानुप्रिय ने जो कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है । इस प्रकार कहकर गौतमस्वामी ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया, वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये । ॥ ३३ वे’ शतक के द्वितीय अन्तर शतक का प्रथम उद्देशक समाप्त ॥
अब द्वितीय अवान्तर शतक का द्वितीय उद्देशक की व्याख्या की जाती है
‘कह्विहा णं मंते ! अणंतरोववन्नगा’—इत्यादि ।

ટીકાર્થ—‘કહ્વિહા ણં મંતે ! અણંતરોવવન્નગા કણ્હલેસ્સ ઇગિંદિયા પન્નત્તા’ हे मदन्त ! अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रिय जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं ? जिन्हे उत्पन्न हुए प्रथम समय हुआ है वे

‘सेव’ मंते ! सेव’ मंते ! त्ति’ हे भगवन् कृष्णलेश्यावाणा ऐक्यन्द्रियवाणा एवના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપદેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

બીજા એકેન્દ્રિય શતકનો પહેલો ઉદ્દેશો સમાપ્ત

બીજા અવાન્તર શતકનો પ્રારંભ—

‘કહ્વિહાણં મંતે ! અણંતરોવવન્નગા’ इत्यादि

ટીકાર્થ—‘કહ્વિહાણં મંતે ! અણંતરોવવન્નગા કણ્હલેસ્સ ઇગિંદિયા પન્નત્તા’ હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાણા એકેન્દ્રિયજીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? પહેલા સમયમાં જેઓની ઉત્પત્તિ થાય છે. એવા જીવો

લેસ્સા ઈર્ગિદિયા પન્નતા' પંચવિધાઃ-પંચપ્રકારકાઃ પૃથિવીકાયિકાદિવનસ્પતિ
કાયિકાન્તા અનન્તરોપપન્નકાઃ કૃષ્ણલેશ્યા એકેન્દ્રિયાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ-કથિતાઃ । 'એવં
એણં અભિલાવેણં તદેવ-દુપઓ મેઓ જાવ-વણસ્સહ કાઙ્યત્તિ' એવમેતેનાઽમિલા-
પેન-ઉક્તપ્રકારેણ-તથૈવ-પ્રથમોદેશકવદેશ દ્વિપદો મેદઃ, સૂક્ષ્મચાદરરૂપો મેદો
વર્ણનીયો યાવદ્-વનસ્પતિકાયિકા ઇતિ ।

અનન્તરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યપૃથિવીકાયિકત આરમ્ભ્યાઽનન્તરોપપન્નકકૃષ્ણ-
લેશ્ય વનસ્પતિકાયિકાન્તૈકેન્દ્રિયજીવેષુ સૂક્ષ્મ-ચાદરમેદેન દ્વિપદો મેદો જ્ઞાત-
વ્યઃ । અત્ર ચતુર્મેદો ન દર્શિતઃ, અનન્તરોપપન્નકાનામ્-એકસમયમાત્રવૃત્તિત્વેન
પર્યાપ્તાપર્યાપ્તકમેદાઽમાવેન ચતુષ્પ્રકારકત્વસ્યાઽસમ્ભવાત્ ઇતિ ।

‘અંતરોચ્ચન્નગકણ્હેસ્સસુહુમપુઢવીકાઙ્યાણં મત્તે । કહ્ કમ્મપગહીઓ
પન્નત્તાઓ’ અનન્તરોપપન્નકકૃષ્ણલેશ્યસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાનાં મદન્ત ! કતિ

અનન્તરોપપન્નક હૈ । ‘ગોયસા । પંચવિહા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! અનન્તરોપપન્નક
કૃષ્ણલેશ્યાવાલે એકેન્દ્રિય જીવ પાંચ પ્રકાર કે કહે ગયે હૈ । યે પૃથિવી-
કાયિક સે લેકર વનસ્પતિકાયિક તક હોતે હૈ । ‘એવં એણં અભિલા-
વેણં તદેવ દુપઓ મેઓ, જાવ વણસ્સહકાઙ્યત્તિ’ હસ અભિલાપ દ્વારા
પ્રથમોદેશક કે જૈસે અનન્તરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાલે એકેન્દ્રિય જીવ
પૃથિવીકાયિક સે લેકર વનસ્પતિકાયિક તક કે એકેન્દ્રિય જીવ-સૂક્ષ્મ
ઔર ચાદર કે મેદ સે દો પદવાલે-દો મેદવાલે કહના ચાહિયે, યહાં
અપર્યાપ્ત ઔર પર્યાપ્ત મેદ નહીં હોતા હૈ । ક્યોં કિ યહાં અનન્તરોપ-
પન્નકકા કાલ એક સમય માત્ર કા હૈ, હસલિયે હન મેં ચતુષ્પ્રકારતા સંભ-
વિત નહીં હૈ । ‘અંતરોચ્ચન્નગ કણ્હેસ્સ સુહુમપુઢવીકાઙ્યાણં મત્તે ।
કહ્ કમ્મપગહીઓ પન્નત્તાઓ’ હે મદન્ત ! અનન્તરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યા

અનંતરોપપન્નક કહેવાય છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને
કહે છે કે-‘ગોયસા ! પંચવિહા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણ-
લેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય એવો પાંચ પ્રકારના કહેવામાં આવ્યો છે. તે પૃથ્વી
કાયિકથી લઈને વનસ્પતિકાયિક સુધીના પાંચ પ્રકાર સમજવા. ‘એવં એણં
અભિલાવેણં તદેવ દુપઓ મેઓ જાવ વણસ્સહકાઙ્યત્તિ’ આ અભિલાપ પ્રમાણે
પહેલા ઉદ્દેશમાં કહ્યા પ્રમાણે અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય એવો
પૃથ્વીકાયિકથી લઈને વનસ્પતિકાયિક સુધીના એકેન્દ્રિય એવો સૂક્ષ્મ અને
ચાદરના લેહથી એ પ્રકારના એટલે કે એ લેહવાળા સમજવા. આમાં અપર્યાપ્ત
અને પર્યાપ્ત એ બે લેહો હોતા નથી. કેમ કે આંહયાં અનંતરોપપન્નક પશુના
કાળ એક સમયમાત્રનો કહ્યો છે. તેથી તેઓમાં ચાર પ્રકારપણું સંભવતું નથી.

કર્મપ્રકૃતયઃ પ્રજ્ઞપ્તા इति प्रश्नः । भगवानाह—‘एवं एएणं’ इत्यादि । ‘एवं एएणं अभिलावेणं जहा—ओहिओ अणंतरोववन्नगाणं उद्देसओ तद्देव जाव—वेदेति’ एव-मेतेन अभिलापेन यथा—औघिहोऽनन्तरोपपन्नकानामुद्देशकः तथैव—तेनैव रूपेण इहापि सर्वं ज्ञातव्यम् यावद्वेदयन्ति । एतच्छतकीयप्रथमशतवदेवात्र द्वितीयशते-ऽपि—अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्य सूक्ष्मपृथिवीकाकैकेन्द्रियाणां कर्मप्रकृति विषये ज्ञातव्यम् । ‘सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति’ तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति । हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नककृष्णलेश्यैकेन्द्रियपृथिवीकायिकादिविषये यद् देवानु-

વાલે સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકોં કે કિતની કર્મપ્રકૃતિયોં કા સત્ત્વ કહા ગયા હૈ ? ‘એવં એણં આમિલાવેણં જહા ઓહિઓ અણંતરોવવન્નગાણં ઉદ્દેસઓ તદ્દેવ જાવ વેદે’તિ’ હે ગૌતમ ! હસ પ્રકાર સે હસ અમિલાપ દ્વારા યે અનન્તરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાલે સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક એકેન્દ્રિય જૈસા કિ પ્રથમ શતક મેં કહા ગયા હૈ ઉસ કે અનુસાર આઠ કર્મ પ્રકૃતિયોં કે સત્ત્વ વાલે હોતે હૈ ઉસકે અનુસાર આઠ કર્મપ્રકૃતિયોં કે યે વન્ધક હોતે હૈ । સાત કર્મપ્રકૃતિયોં કી વંધકતા મેં આયુકર્મ કા વન્ધ વે નહીં કરતે હૈં કયોં કિ ઉત્પત્તિ કે પ્રથમ સમય મેં આયુકર્મ કા વન્ધ નહીં હોતા હૈ અતઃ યે આઠ કર્મપ્રકૃતિયોં કે વંધક નહીં હોતે હૈં । વેદન યે ૧૪ કર્મપ્રકૃતિયોં કા કરતે હૈં । ‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ હે ભદન્ત ! અનન્તરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાલે એકેન્દ્રિય પૃથિવીકાયિકાદિ

‘અણંતરોવવણ્ણગ કણ્હલેસસ સુહુમ પુઢવીકાહ્યાણં ભંતે ! કહ કર્મપગડીઓ પન્નત્તાઓ’ હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાણા સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોને કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયો હોવાનું કહ્યું છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે ‘એવં એણં અમિલાવેણ જહા ઓહિઓ અણંતરોવવન્નગાણં ઉદ્દેસઓ તદ્દેવ જાવ વેદે’તિ’ હે ગૌતમ ! આ પ્રમાણે આ અમિલાપ દ્વારા આ અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાણા સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક એકેન્દ્રિયના સંબંધમાં જે પ્રમાણે પહેલા શતકમાં કહેવામાં આવેલ છે, તે પ્રમાણે આઠ કર્મ પ્રકૃતિયોના સત્ત્વવાળા હોય છે તથા તે સાત કર્મપ્રકૃતિયોનો બંધ કરવાવાળા હોય છે. સાત કર્મ પ્રકૃતિયોના બંધક પણામાં તેઓ આયુકર્મનો બંધ કરતા નથી. કેમ કે તેઓને આયુકર્મનો બંધ પહેલેથી જ થઈ ગય છે. તેથી તેઓ આઠ કર્મપ્રકૃતિયોનો બંધ કરતા નથી અને તેઓ ચૌદકર્મ પ્રકૃતિયોનું વેદન કરે છે. તેમ સમજવું.

‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યા-વાણા એકેન્દ્રિય પૃથ્વીકાયિક વિગેરેના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન

પ્રિયેણ કથિતમ્ તત્સર્વં તથૈવ સત્યમિતિ કથયિત્વા ભગવાન્ ગૌતમો ભગવન્તં વન્દતે
નમસ્યતિ, વન્દિત્વા-નમસ્યિત્વા સંયમેન તપસાઽઽત્માનં ભાવયન્ વિહરતિ॥સૂ૦૧॥
इति द्वितीयेऽवान्तरशतके द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥३३॥२॥२॥

‘કહ્વિહા ણં મંતે ! પરંપરોવવન્નગા કળહલેસ્સા ઇગિંદિયા પન્નત્તા’ કતિ-
વિધા:-કતિ પ્રકારકાઃ સ્વલુ મદન્ત ! પરમ્પરોપપન્નકાઃ કૃષ્ણલેશ્યા એકેન્દ્રિય
જીવાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ-કથિતા इति પ્રશ્નઃ । ભગવાનાહ-‘ગોયમા’ इत्यादि । ગોયમા !
हे गौतम ! ‘પંચવિહા પરંપરોવવન્નગા કળહલેસ્સા ઇગિંદિયા પન્નત્તા’ પશ્ચવિધા:-
पञ्चप्रकारकाः परम्परोपपन्नकाः कृष्णलेश्या एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः । પ્ર-
કે વિષય મેં જાં આપ દેવાનુપ્રિય ને કહા હૈ વહ સવ સર્વથા સત્ય હી
હે ૨ । એસા કહકર ભગવાન્ ગૌતમ ને પ્રસુશ્રી કો વન્દના કી ઓર
નમસ્કાર કિયા વન્દના નમસ્કાર કર ફિર વે સંયમ ઓર તપ સે આત્મા
કો ભાવિત કરતે હુએ અપને સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે ॥સૂ૦૧॥
॥૩૩ વે’ શતક કે દ્વિતીય અવાન્તર શતક કા દ્વિતીય ઉદ્દેશક સમાપ્ત॥

-દ્વિતીય એકેન્દ્રિય શતક કા તૃતીયાદિ ઉદ્દેશક-

‘કહ્વિહા ણં મંતે ! પરંપરોવવન્નગા કળહલેસ્સા ઇગિંદિયા પન્નત્તા’
હે મદન્ત ! પરમ્પરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળે એકેન્દ્રિય જીવ કિતને પ્રકાર
કે કહે ગયે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રસુશ્રી કહતે હૈં-‘ગોયમા ! પંચવિહા પરંપ-
રોવવન્નગા કળહલેસ્સા ઇગિંદિયા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! પરંપરોપપન્નક
કૃષ્ણલેશ્યાવાળે એકેન્દ્રિય જીવ પાંચ પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં । ‘તં જહા’

કથુ’ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું આ
વિષય સંબંધનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમ-
સ્વામીએ પ્રસુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને
તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના
સ્થાનપર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

બીજા અવાન્તર શતકનો બીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૩-૨-૨ા

બીજા એકેન્દ્રિય શતકનો ત્રીજા વિગેરે ઉદ્દેશો

‘કહ્વિહાં ણં મંતે ! પરંપરોવવન્નગા કળહલેસ્સા ઇગિંદિયા પન્નત્તા’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ પરંપરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય જીવો

કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રસુશ્રી કહે છે

કે-‘ગોયમા ! પંચવિહા પરંપરોવવન્નગા કળહલેસ્સા ઇગિંદિયા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ !

પરંપરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય જીવો પાંચ પ્રકારના કહેવામાં

રણમેદમેવ વર્ણયતિ—‘તં જહા’ इत्यादि । ‘તં જહા’ તથા—‘પુઢવીકાહ્યા, એવં એણં અમિલાવેણં તહેવ-ચઝક્રઓ મેઓ જાવ વણસસહકાહ્યત્તિ’ પૃથિવીકાયિક એવમેતેનાઽમિલાપેન તથૈવ એતચ્છકીય પ્રથમશતકવદેવ ચતુષ્કઃ—ચતુષ્કારકઃ સૂક્ષ્મવાદરાઽપર્યાપ્તાપર્યાપ્તરૂપો મેદો વક્તવ્યઃ યાવદ્ વનસ્પતિકાયિકા ઇતિ ।

‘પરંપરોવવન્નગ કળ્લેસસ અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહ્યા ણં મંતે !’ પરમ્પરોપપન્નક કળ્લેસ્યાઽપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાનાં મદન્ત ! ‘કહ કમ્મપગડીઓ પન્નતાઓ’ કતિ—કતિ પ્રકારકાઃ કર્મપ્રકૃતયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ ? ઇતિ પ્રશ્નઃ । મગવાનાહ—‘એવં એણં’ इत्यादि । ‘એવં એણં અમિલાવેણં જહેવ ઓહિઓ પરંપરોવવન્નગ ઉદેસઓ તહેવ જાવ વેદેતિ’ એવમ્ એતેનાઽમિલાપેન યથૈવૌધિકઃ સામાન્ય-

જૈસે—‘પુઢવીકાહ્યા—એવં એણં અમિલાવેણં તહેવ ચઝક્રઓ મેઓ જાવ વણસસહકાહ્યત્તિ’ પૃથિવીકાયિક હસ પ્રકાર સે હસ અમિલાપ દ્વારા હસી શતક કે પ્રથમ શતક મેં કહે ગયે અનુસાર હન પરંપરોપપન્નક કૃણ્ણલેશ્યાવાલે એકેન્દ્રિય પૃથિવીકાયિક સે લેકર વનસ્પતિકાયિક તક કે જીવોં કે ૪-૪મેદ સૂક્ષ્મ, વાદર અપર્યાપ્તક ઓર પર્યાપ્તક રૂપ સે કહના ચાહિયે ।

‘પરંપરોવવન્નગ કળ્લેસસ અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહ્યા ણં મંતે ! કહ કમ્મપગડીઓ પન્નતાઓ’ હે મદન્ત ! પરમ્પરોપપન્નક કૃણ્ણલેશ્યાવાલે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકોં કે કિતની કર્મપ્રકૃતિયોં કા સત્ત્વ કહા ગયા હૈ ? ‘એવં એણં અમિલાવેણં જહેવ ઓહિઓ પરંપરોવવન્નગ ઉદેસઓ તહેવ જાવ વેદેતિ’ હે ગૌતમ । હસ અમિલાપ દ્વારા જૈસા

આવ્યા છે. ‘ત જહા’ તે આ પ્રમાણે છે—‘પુઢવીકાહ્યા—એવં એણં અમિલાવેણં તહેવ ચઝક્રઓ મેઓ જાવ વણસસહકાહ્યત્તિ’ પૃથ્વીકાયિક આ પ્રમાણે આ અભિપ્રાય દ્વારા એકેન્દ્રિય શતકના પહેલા શતકમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે તે પ્રમાણે આ પરંપરોપપન્નક કૃણ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય પૃથ્વીકાયિકોથી લઈને વનસ્પતિકાયિક સુધીના જીવોના ૪-૪ ચાર-ચાર ભેદો સૂક્ષ્મ, બાહર, અપર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત એ રીતે થાય તે તેમ સમજવું.

‘પરંપરોવવન્નગ કળ્લેસસ અપજ્જત્ત સુહુમ પુઢવીકાહ્યા ણં મંતે ! કહ કમ્મપગડીઓ પન્નતાઓ’ હે ભગવન્ પરંપરોપપન્નક કૃણ્ણલેશ્યાવાળા અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકોને કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયો હોવાનું કહેલ છે ? ‘એવં એણં અમિલાવેણ જહેવ ઓહિઓ પરંપરોપવન્નગ ઉદેસઓ તહેવ જાવ વેદેતિ’ હે ગૌતમ ! આ અભિપ્રાય દ્વારા સામાન્ય રૂપથી પહેલો ઉદ્દેશો જે પ્રમાણે કહેવામાં

રૂપઃ પ્રથમોદ્દેશકઃ કથિત સ્તથૈવ-તેનૈવ પ્રકારેણ હ્રદાપિ જ્ઞાતવ્યો યાવદ્ વેદ્ય યન્તિ ઇતિ । અત્ર યાવત્પદેન-તેષાં જીવાના મષ્ટકર્મપ્રકૃતયો ભવન્તિ, તે ચ સપ્ત અષ્ટી વા વધનન્તિ, ચતુર્દશ ચ વેદ્યન્તીતિ સંગ્રહો વાચ્યઃ । ‘એવં એણં અભિલાષેણં જહેવ ઓહિએ એગિંદિયસએ એકારસ ઉદેસગા મળિયા તહેવ કળહેસસ એ વિ માળિયવ્વા જાવ અચરિમ કળહેસસા એગિંદિયા’ એવમ્-એતેન અભિલાષેન યથૈવ ઔષિકે એકેન્દ્રિયશતે એકાદશોદ્દેશકા મળિતા સ્તથૈવ કૃષ્ણલેશ્યશતેऽપિ એકાદશોદ્દેશકા મળિતવ્યા યાવદ્ અચરમ કૃષ્ણલેશ્યા એકેન્દ્રિયાઃ ।

ઔષિકકૃષ્ણલેશ્યેકેન્દ્રિયાનન્તરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યેકેન્દ્રિયરૂપોદ્દેશદ્વયવદેવ

સામાન્ય રૂપ પ્રથમ ઉદ્દેશક કહા ગયા હૈં उसी प्रकार से यहाँ यावत् वेदन सूत्र तक जानना चाहिये, यहाँ यावत् पद से इस कथन का संग्रह हुआ है कि-‘उन जीवों में आठ कर्मप्रकृतियां होती हैं, वे सात या आठ कर्मप्रकृतियों का बन्ध करते हैं । १४ चौदह कर्मप्रकृतियों का वेदन करते हैं । ‘एवं एणं अभिलाषेणं जहेव ओहिए एगिंदियसए एकारस उदेसगा मणिया तहेव कणहेसस ए वि माणियव्वा जाव अचरिम कणहेससा एगिंदिया’ इस प्रकार इस अभिलाष द्वारा जैसे सामान्य रूप एकेन्द्रिय शतक में ११ उद्देशक कहे गये हैं उसी प्रकार से कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रिय शतक में ११ उद्देशक कहना चाहिये, जैसे सामान्य रूप कृष्णलेश्यावालों का एक सामान्य उद्देशक, अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्यावालों का द्वितीय उद्देशक है, इसी प्रकार से परंपरोपपन्नक कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रियों का तृतीय उद्देशक

આવ્યો છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ યાવત્ વેદન સૂત્ર સુધીનું કથન સમજી લેવું. અહિયાં યાવત્પદથી નીચે પ્રમાણેના કથનનો સંગ્રહ થયો છે, જેમકે-તે જીવોને આઠ કર્મપ્રકૃતિઓ હોય છે તેઓ સાત અથવા આઠ કર્મ પ્રકૃતિઓનો બંધ કરે છે તથા ચૌદ કર્મપ્રકૃતિઓનું વેદન કરે છે. ‘એવં એણ અભિલાષેણં જહેવ ઓહિએ એગિંદિયસએ એકારસ ઉદેસગા મળિયા તહેવ કળહેસસએ વિ માળિયવ્વા જાવ અચરિમ કળહેસસા એગિંદિયા’ આ અભિલાષ દ્વારા સામાન્ય રૂપ એકેન્દ્રિય શતકમાં જે પ્રમાણે અગિયાર ૧૧ ઉદ્દેશાઓ કહેવામાં આવ્યા છે. એજ પ્રમાણેના અગિયાર ઉદ્દેશાઓ આ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા શતકમાં પણ અચરમ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિયના કથન સુધીના ૧૧ ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ. જેમ કે-સામાન્ય કૃષ્ણલેશ્યાવાળાનો એક સામાન્ય ઉદ્દેશો. ૧ અને અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળાનો બીજો ઉદ્દેશો છે એજ પ્રમાણે પરંપરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિયોના સંબંધમાં ત્રીજો ઉદ્દેશો કહ્યો છે.

પરમ્પરોપપન્નકઃ ૩, અનન્તરાવગાઢઃ ૪, પરમ્પરાવગાઢઃ ૫, અનન્તરાહારકઃ ૬, પરમ્પરાહારકઃ ૭, અનન્તરપર્યાપ્તકઃ ૮, પરમ્પરપર્યાપ્તકઃ ૯, ચરમઃ ૧૦, અચરમઃ ૧૧, इत्येते एकादशोद्देशकाः यदितव्या इति भावः ॥ ૩૦ ॥

इति श्री - विश्वविख्यातजगद्गुरुभादिपदभूषितवालब्रह्मचारि - 'जैनाचार्य'

पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां "श्री भगवतीसूत्ररय" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां

व्याख्यायां त्रयस्त्रिंशत्तमे एकाशोद्देशक समाप्तः ॥ ૩૩-૧१ ॥

इति द्वितीयमेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥ ૩૩-૨ ॥

है । अनन्तरावगाढ कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रियों का चतुर्थ उद्देशक हैं । परम्परावगाढ कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रिय का पांचवा उद्देशक है । अनन्तराहारक कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रियों का छठा उद्देशक है परम्पराहारक कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रियों का ७ वां उद्देशक है । अन्तर पर्याप्तक कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रियों का ८ वां उद्देशक है । परम्परपर्याप्तक कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रियों का ९ वां उद्देशक है । चरम कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रियों का १० वां उद्देशक है और अचरम कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रियों का ११ उद्देशक है । इस प्रकार से ये ११ उद्देशक यहां जानना चाहिये ।

जैनाचार्य जैनधर्मद्विवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत

"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके तृतीयसे शतक का ग्यारहवां उद्देशक समाप्त ॥ ૩૩-॥

॥ ૩૩ वे शतक का द्वितीय एकेन्द्रिय शतक समाप्त ॥

અનન્તરાવગાઢ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિયો સંબંધી ચોથો ઉદ્દેશો કહ્યો છે. ૪ પરંપરાવગાઢ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિયો સંબંધી પાંચમો ઉદ્દેશો કહ્યો છે. ૫ અનન્તરાહારક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય સંબંધી છઠ્ઠો ઉદ્દેશો કહ્યો છે. ૬ પરંપરાહારક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય સંબંધી સાતમો ઉદ્દેશો કહ્યો છે. ૭ અનન્તર પર્યાપ્તક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિયોના સંબંધમાં આઠમો ઉદ્દેશો કહ્યો છે. ૮ પરંપરપર્યાપ્તક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય સંબંધી નવમો ઉદ્દેશો કહ્યો છે. ૯ ચરમ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય સંબંધી દસમો ઉદ્દેશો કહ્યો છે. અને અચરમ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં અગિયારમો ઉદ્દેશો કહ્યો છે. આ રીતે આ ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશોમાં અહીંયાં સમાજવા. ॥ ૨૦૧ ॥ જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદ્વિવાકર શ્રી પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્ર'ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ત્રીસમા શતકનો અગિયારમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥ ૩૩ ૧૧ ॥

॥ બીજું એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત ॥

તૃતીયચતુર્થશતે આરમ્ભયતે-

મૂળમ્-જહા કળહલેસ્સેહિં મળિયં એવં નીલલેસ્સેહિં વિ સમં
માળિયવ્વં સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ ॥૩૩-૩॥

એવં કાઝલેસ્સેહિં વિ સયં માળિયવ્વં । નવરં કાઝલેસ્સે
ત્તિ અમિલાવો માળિયવ્વો ॥૩૩-૪॥

છાયા-પથા કુળ્લેશ્યે મળિતમ્ એવં નીલલેશ્યૈરપિ શતં મળિતવ્યમ્,
તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ ॥૩૩-૩॥

એવં કાપોતલેશ્યૈરપિ શતં મળિતવ્યમ્ । નવરં કાપોતલેશ્ય ઇત્યમિલાપો
મળિતવ્ય ઇતિ ॥૩૩-૪॥

ટીકા-‘જહા કળહલેસ્સેહિં મળિયં’ યથા-યેન પ્રકારેણ કુળ્લેશ્યૈ મળિતં
શતમ્, ‘એવં નીલલેસ્સેહિં વિ સયં માળિયવ્વં’ એવમ્-અનેનૈવ પ્રકારેણ નીલ-
લેશ્યૈરપિ શતં મળિતવ્યં વિવેચનીયમ્ ॥૩૩-૩॥

-તૃતીય ચતુર્થ શતક કા આરમ્ભ-

‘જહા કળહલેસ્સેહિં મળિયં એવં નીલલેસ્સેહિં સમં વિ માળિયવ્વં’
જૈસા કુળ્લેશ્યાવાલોં કે સમ્બન્ધ મેં શતક કહા ગયા હૈં ડસી પ્રકાર સે
નીલલેશ્યાવાલોં કે સમ્બન્ધ મેં મી શતક કહનાં ચાહિયે ‘સેવં મંતે !
સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે મદન્ત ! આપ દેવાનુપ્રિય ને જૈસા યહ કહા હૈં વહ
સબ સર્વથા સત્ય હી હૈં ૨ એસા કહકર ગૌતમ ને પ્રમુશ્રી કો વન્દના
કી ઓર નમસ્કાર ક્રિયા વન્દના નમસ્કાર કર ફિર વે સંયમ ઓર તપ
સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુએ અપને સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે ।

॥ ૩૩ વેં શતક કા તૃતીય અવાન્તર શતક સમાપ્ત ॥

ત્રીજા-ચેથા એકેન્દ્રિય શતકનો આરંભ--

‘જહા કળહલેસ્સેહિં મળિયં એવં નીલલેસ્સેહિં વિ સમં માળિયવ્વં’
કુળ્લેશ્યાવાળાં હવેનાં સંબંધમાં જે પ્રમાણે અગિયાર ઉદ્દેશાત્મક શતક
કહેલ છે. એજ પ્રમાણે નીલલેશ્યાવાળાં હવેનાં સંબંધમાં પણ ૧૧ અગિયાર
ઉદ્દેશાવાળું શતક કહેવું જોઈએ.

સેવં મંતે ! સેવ મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણેનું
કથન આ વિષયમાં કહ્યું છે, તે સઘળું કથન સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ
દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ
પ્રમુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કર્યા પછી તેઓ
સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાનપર
વિરાજમાન થયા. ॥સૂ.૦૧॥

ત્રીજું અવાન્તર શતક સમાપ્ત

‘एवं काउलेस्सेहि वि सयं भाणियव्वं’ एवम्-कृष्णलेश्यशतकवदेव कापोत-
लेश्यैरपि शतं भणितव्यम् । ‘नवरं काउलेस्से त्ति भाणियव्वो’ नवरं (कापोत-
लेश्यः) इत्यभिलाषो भणितव्यः । पूर्वशते यत्र कृष्णनीलपदे निवेश्याऽऽलापकः
कृतं स्तत्र स्थाने (कापोतः) इतिपदं निवेश्य आलापका भणितव्याः । अन्यत्सर्वं
पूर्वं वदेव ज्ञातव्यमिति ॥३३-४॥

अयस्त्रिंशच्छतके एकेन्द्रियाणां तृतीयमेकेन्द्रियशतं चतुर्थमेकेन्द्रियशतं च
समाप्तम् ॥३३-३-४॥

पञ्चमशतकः प्रारभ्यते

मूलम्-कड़विहा णं भंते ! एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा !
‘पंचविहा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता तं जहा-पुढवीकाइया
जाव वणस्सइकाइया भेओ चउक्कओ जाव वणस्सइकाइय त्ति ।
भवसिद्धिय अपजत्त सुहुमपुढवीकाइया णं भंते ! कड़ कम्म-
पगडीओ पन्नत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमि-
ल्लगं एगिंदियसयं तहेव भवसिद्धियसयं पि भाणियव्वं ।

‘एवं काउलेस्सेहि वि सयं भाणियव्वं-नवरं ‘काउलेस्से’ त्ति
अभिलाषो भाणियव्वो’ कृष्णलेश्यावालों के शतक के जैसा ही शतक
कापोतलेश्यावालों के सम्बन्ध में भी कहना चाहिये, परन्तु पूर्व शतक
में जहां ‘कृष्ण’ और ‘नील’ पद को विशेषित करके आलापक किया
गया है-वहां ‘कापोत’ ऐसा पद रखकर आलापक कहना चाहिये, बाकी
का और सब कथन पहिले के जैसा ही जानना चाहिये,

॥ ३३ वे शतक का चतुर्थ अवान्तर शतक समाप्त ॥

‘एवं काउलेस्सेहि वि सयं भाणियव्वं नवरं ‘कण्डलेस्से वि अभिलाषो
भाणियव्वो’ कृष्णलेश्यावाणा एवेना शतकना कथन प्रमाणे न कापोतलेश्यावाणा
एवेना संभंधमां पणु कडेवुं नेधेये परंतु पडेलाना शतकमां न्यां न्यां
‘कृष्ण’ अने ‘नील’ पदथी कथन करवामां आन्थुं छे, त्यां त्यां ‘कापोत’ अने
प्रमाणेतुं पढ राभीने आलापके कडेवा नेधेये ते शिवायतुं वीथुं सधणुं
कथन पडेलाना कथन प्रमाणे न समजवुं.

अथुं अवान्तर शतक समाप्त

ઉદેસગપરિવાડી તહેવ જાવ તહેવ અચરિમો ત્તિ । સેવં મંતે !
સેવં મંતે ! ત્તિ ॥સૂ૦૧॥

પંચમં ઇર્ગિદિયસયં સમત્તં ॥૩૩-૫॥

છાયા—કતિવિધાઃ સ્વલુ મદન્ત । ભવસિદ્ધિકા એકેન્દ્રિયાઃ પ્રજ્ઞતાઃ ।
ગૌતમ ! પંચવિધા ભવસિદ્ધિકા એકેન્દ્રિયાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તદ્વથા—પૃથિવીકાયિકા
યાવદ્ વનસ્પતિકાયિકાઃ, મેદશ્ચતુષ્કો યાવદ્ વનસ્પતિકાયિકા ઇતિ । ભવસિદ્ધિ-
કાઽપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાનાં મદન્ત ! કતિ કર્મમકૃતયઃ પ્રજ્ઞતાઃ ? એવમેતે-
નાઽમિલાપેન યથૈવ પ્રથમમેકેન્દ્રિયશતં તથૈવ ભવસિદ્ધિકશતમપિ મણિતવ્યમ્ ।
ઉદ્દેશકપરિપાટી તથૈવ યાવદ્ અચરમ ઇતિ । તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ।-ઇતિ ।

પશ્ચમમેકેન્દ્રિયશતં સમાપ્તમ્ ॥૩૩-૫॥

ટીકા—‘કહ્વિહા ણં મંતે । ભવસિદ્ધિયા ઇર્ગિદિયા પજ્ઞતા’ કતિવિધાઃ—
કતિપ્રકારાઃ સ્વલુ મદન્ત ! ભવસિદ્ધિકાઃ—સિદ્ધિગમનયોગ્યાઃ ભવક્રમેણ યે સે
ભવસિદ્ધિકા એતાદૃશા એકેન્દ્રિયજીવાઃ કતિ પ્રકારકા મવન્તીતિ પ્રશ્નઃ । મગ-
ધાનાહ—‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ । ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘પંચવિહા’ પંચપ્રકારકાઃ
‘ભવસિદ્ધિયા ઇર્ગિદિયા પજ્ઞતા’ ભવસિદ્ધિકા એકેન્દ્રિય જીવાઃ પ્રજ્ઞતાઃ—કથિતાઃ,
‘તં જહા’ તદ્વથા—‘પૃથ્વીકાઈયા જાવ વણસ્સઈકાઈયા’ પૃથિવીકાયિકા યાવદ્

‘કહ્વિહા ણં મંતે । ભવસિદ્ધિયા ઇર્ગિદિયા પજ્ઞતા’ હે મદન્ત !
ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય કિતને પ્રકાર કે કહે ગયે હૈ ? જો એકેન્દ્રિય ભવ
ક્રમ સે સિદ્ધિ ગમન યોગ્ય હોતે હૈ—વે એકેન્દ્રિય ભવસિદ્ધિક કહે ગયે
હૈ । ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈ—‘ગોયમા ! પંચવિહા ભવસિદ્ધિયા ઇર્ગિ-
દિયા પજ્ઞતા’ હે ગૌતમ ! ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવ પાંચ પ્રકાર કે
કહે ગયે હૈ । ‘તં જહા’ જો હસ પ્રકાર સે હૈ ‘પૃથ્વીકાઈયા જાવ વણસ્સઈ

પાંચમાં અવાન્તર શતકનેા પ્રારંભ—

‘કહ્વિહા ણ મંતે । ભવસિદ્ધિયા ઇર્ગિદિયા પજ્ઞતા’ હે ભગવન્ ભવસિદ્ધિક
એકેન્દ્રિય એવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? જે એકેન્દ્રિય એવો
ભવક્રમથી સિદ્ધિ ગમનને યોગ્ય હોય છે, તે એકેન્દ્રિયો ભવસિદ્ધિક કહ્યા છે,
આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—‘ગોયમા ! પંચવિહા
ભવસિદ્ધિયા ઇર્ગિદિયા પજ્ઞતા’ હે ગૌતમ ! ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય એવો પાંચ
પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે, ‘તં જહા’ જે આ પ્રમાણે છે, ‘પૃથ્વીકાઈયા

વનસ્પતિકાયિકાઃ, યાવત્પદેન અપ્કાયિકાઃ, તેજસ્કાયિકાઃ, વાયુકાયિકાઃ, એતેષાં સંગ્રહો ભવતિ । તથા ચ પૃથિવ્યપ્તેજોવાયુવનસ્પતિભેદેન ભવસિદ્ધિકા એકેન્દ્રિયજીવાઃ પશ્ચપ્રકારકા ભવન્તીતિ । ‘મેઓ ચઝકઓ જાવ વળસસહકાઈયત્તિ’ ભેદશ્વતુષ્કો યાવદ્વનસ્પતિકાયિકાઈતિ । યથા—ઔઘિકે પ્રથમશતે એતેષાં મવાન્તરશ્વતુઃ પ્રકારકો ભેદઃ સૂક્ષ્મવાદરાઽપર્યાપ્તપર્યાપ્તરૂપઃ કથિત સ્તથૈવ ભવસિદ્ધિકા પશ્ચમશતેઽપિ વક્તવ્યઃ, ‘ભવસિદ્ધિય અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાઈયા ણં મંતે ! કહ્ કમ્મપગડીઓ પન્નત્તાઓ’ ભવસિદ્ધિકાઽપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકજીવાનાં સ્વલ્લ ભદન્ત ! કતિ કર્મપ્રકૃતયો ભવન્તિ ? ઇતિ પ્રશ્નઃ । ઉત્તરમાહ—‘એવં એણં’ ઇત્યાદિ, ‘એવં એણં અભિલાવેણં જહેવ પઢમિલ્લગં એગિંદિયસયં તદેવ ભવસિદ્ધિય

કાઈયા’ પૃથિવીકાયિક યાવત્ વનસ્પતિકાયિક, યહાં યાવત્ પદ સે ‘અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક’ इनका ग्रहण हुआ है । तथा च—पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, और वन-स्पतिकायिक के भेद से भवसिद्धिक एकैन्द्रिय जीव पांच प्रकार के होते हैं । ‘मेओ चઝકઓ જાવ વળસસહકાઈયત્તિ’ जिस प्रकार से औघिक प्रथम शतक में इनके चार भेद—सूक्ष्म, वादर, अपर्याप्त, पर्याप्त रूप से कहा है भेद भवसिद्धिक पश्चम शतक में भी कहना चाहिये ।

‘ભવસિદ્ધિય અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાઈયા ણં મંતે ! કહ્ કમ્મ પગડીઓ પન્નત્તાઓ’ હે ભદન્ત ! ભવસિદ્ધિક અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મપૃથિવી-કાયિક જીવોં કે કિતની કર્મપ્રકૃતિયોં કા સત્ત્વ કહા ગયા હૈ ? ‘એવં એણં અભિલાવેણં જહેવ પઢમિલ્લગં એગિંદિયસયં તદેવ

જાવ વળસસહ કાઈયા’ પૃથ્વીકાયિક યાવત્ વનસ્પતિકાયિક અહિયાં યાવત્પદ્ધતી અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક, અને વનસ્પતિકાયિક ગ્રહણ કરાયા છે. તથા પૃથ્વીકાયિક, અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક વાયુકાયિક અને વનસ્પતિ કાયિકના લેદ્ધી ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવો પાંચ પ્રકારના હોય છે.

‘મેઓ ચઝકઓ જાવ વળસસહકાઈયત્તિ’ જે પ્રમાણે ઔઘિક—પહેલા શતકમાં તેઓના ચાર લેદો એટલે કે—સૂક્ષ્મ, વાદર, અપર્યાપ્તક અને પર્યાપ્તક એ પ્રમાણેના ચાર લેદો કહ્યા છે, તેજ પ્રમાણે એ ચાર લેદો આ ભવસિદ્ધિક પાંચમા શતકમાં પણ કહેવા જોઈએ. ‘ભવસિદ્ધિય અપજ્જત્ત પુઢવીકાઈયાણ મંતે ! કહ્ કમ્મપગડીઓ પન્નત્તાઓ’ હે ભગવન ભવસિદ્ધિક અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવોને કેટલી કર્મપ્રકૃતિયો હોય છે ? ‘એવં એણં અભિલાવેણં જહેવ પઢમિલ્લગં એગિંદિયસયં તદેવ ભવસિદ્ધિયસયં પિ માણિયવ્થ’

સયં પિ આણિયવ્વં' એવમ્-અનેન પ્રકારેણ એતેનામિલાપેન યથૈવ પ્રથમમેકેન્દ્રિય-
શતં તથૈવ ભવસિદ્ધિકશતમપિ સર્વં મણિતવ્યમ્ । પ્રથમમેવ ઔઘિકં શતવિ-
હાસપિ અનુસન્ધેયમ્ ।

‘ઉદેસક પરિવાડી તદેવ જાવ અચરિમોત્તિ’ ઉદેશકાનાં પરિવાડી વ્યવસ્થા-
સપિ તથૈવ યથા પ્રથમશતે કથિતા યાવત્ અચરમ્ ઇતિ, સા ચ ઔઘિકાનન્તરો-
પપન્નક પરમ્પરોપપન્નકાનન્તરાવગાઢ-પરમ્પરાવગાઢા-નન્તરાહારક પરમ્પરાહારકા
નન્તરપર્યાપ્તક-પરમ્પરપર્યાપ્તક-ચરમાસચરમેત્યેકાદશસંખ્યારૂપા વિજ્ઞેયેતિ

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ । હે
મદન્ત ! ભવસિદ્ધિકેકેન્દ્રિયાણાં વિષયે યદ્ દેવાનુપ્રિયેણ કથિતં તત્સર્વમ્ સર્વથૈવ
ભવસિદ્ધિમસયં પિ આણિયવ્વં' હસ પ્રકાર સે હસ અભિલાપ દ્વારા
જેસા પ્રથમ એકેન્દ્રિય શતક કહા ગયા હૈ વૈસા હી ભવસિદ્ધિક શતક
મી પૂરા કહના ચાહિયે । તથા ‘ઉદેસક પરિવાડી તદેવ જાવ અચરિ-
મોત્તિ’ ઉદેશકો કી વ્યવસ્થા મી યહાં પ્રથમ શતક કે જેસી અચરમ
ઉદેશક તક કહની ચાહિયે, હસ વ્યવસ્થા મેં પહિલા ઔઘિક ઉદેશક
હૈ, દ્વિતીય અનન્તરોપપન્નક ઉદેશક હૈ, તૃતીય પરમ્પરોપપન્નક ઉદેશક
હૈ, ચતુર્થ અનન્તરાવગાઢ ઉદેશક હૈ પાંચવાં પરંપરાવગાઢ ઉદેશક હૈ,
છઠા અનન્તરાહારક ઉદેશક હૈ । સાતવાં પરંપરાહારક ઉદેશક હૈ
૮ વાં અનન્તરપર્યાપ્તક ઉદેશક હૈ, ૯ વાં પરંપરપર્યાપ્તક ઉદેશક હૈ ।
૧૦ વાં ચરમ ઉદેશક હૈ । ૧૧ વાં અચરમ ઉદેશક હૈ । એસા જાનના

આ રીતે આ અભિલાપ દ્વારા જે રીતે પહેલું એકેન્દ્રિય શતક કહેવામાં
આવ્યું છે, એજ પ્રમાણે આ ભવસિદ્ધિકશ-ક પણ પૂરેપૂરું કહેવું જોઈએ.
‘ઉદેસક પરિવાડી તદેવ જાવ અચરિમોત્તિ’ ઉદેશકોની વ્યવસ્થા-ક્રમ પણ
અહિયાં પહેલા શતકમાં કહ્યા પ્રમાણે અચરમ ઉદેશક સુધી સમજ લેવી.
આ ક્રમથી પહેલો ઔઘિક ઉદેશક કહેલ છે. ૧ બીજો અનન્તરોપપન્નક નામનો
ઉદેશક છે ૨ ત્રીજો પરંપરોપપન્નક ઉદેશક છે. ચોથો અનન્તરાવગાઢ નામનો
ઉદેશક કહેલો છે. પાંચમો પરંપરાવગાઢ નામનો ઉદેશક કહેલ છે. છઠો અનન્ત-
રાહારક નામનો ઉદેશક કહેલો છે. સાતમો પરંપરાહારક નામનો ઉદેશક
કહેલો છે આઠમો અનન્તરપર્યાપ્તક નામનો ઉદેશક કહેલો છે. નવમો પરંપર
પર્યાપ્તક નામનો ઉદેશક કહેલો છે. દસમો ચરમ નામનો ઉદેશક કહેલો છે.
અને અગિયારમો અચરમ નામનો ઉદેશક કહેલ છે તેમ સમજવું.

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોના
સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા

सत्यमिति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति ॥सू० १॥

इति त्रयस्त्रिंशत्तमे शतके पञ्चममेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥३३-५॥

मूलम्—कइविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता । तं जहा—पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया । कण्हलेस्स भवसिद्धिय पुढवीकाइया णं भंते ! कइविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता तं जहा—सुहुमपुढवीकाइया य बायरपुढवीकाइया य । कण्हलेस्स भवसिद्धिय सुहुमपुढवीकाइया णं भंते ! कइविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य एवं बायरा वि । एवं एएणं अभिलावेणं तहेव चउक्कओ भेओ भाणियव्वो । कण्हलेस्स भवसिद्धिय अपज्जत्तग सुहुमपुढवीकाइया णं भंते ! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ । एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिउद्देल्लए तहेव जाव वेदंति । कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा जाव वणस्सइकाइया । अणंतरोव-

चाहिपे 'सेव' भंते ! सेव' भंते ! स्ति हे भदन्त ! भवसिद्धिक एकेन्द्रियो के विषय में जो आप देवानुप्रिय ने कहा हैं वह सब सर्वथा सत्य ही है । ऐसा कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना जलस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

॥ ३३वें शतक के पांचवा अवान्तर शतक समाप्त ॥

सत्य ७ छे. डे भगवन् आप देवानुप्रियनुं कथन सर्वथा सत्य ७ छे. आ प्रमाणे उद्दिने गौतमस्वामीने प्रभुश्रीने वंदना करी तेओने नमस्कार कया वंदना नमस्कार करीने ते पछी संयम अने तपशी पोताना आत्माने भावित करता थका पोताना स्थान पर विराजमान थका ॥सू०१॥

॥पांचम अवान्तर शतक समाप्त ॥ ३३-५

वन्नगा कण्ठलेस्त भवसिद्धिं पुढविक्काइयाणं भंते ! कइविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता तं जहा—सुहुमपुढवीकाइ-
याय बायरपुढवीकाइयाय । एवं दुपओ भेओ । अणंतरोवव-
न्नग कण्ठलेस्त भवसिद्धिं सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइ
कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव
ओहिओ अणंतरोववन्नग उद्देसओ तहेव जाव वेदेति । एवं
एएणं अभिलावेणं एक्कारस त्रि उद्देसगा तहेव भाणियत्वा
जहा ओहियसए जाव अचरिमो त्ति सू० १॥

छट्ठं एगिंदियसयं समत्तं ॥३३-६॥

छाया—कतिविधाः खलु भदन्त ! कृष्णलेश्या भवसिद्धिका एकेन्द्रिया
प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पञ्चविधाः कृष्णलेश्या भवसिद्धिका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः ।
तद्यथा पृथिवीकायिका यावद्वनस्पतिकायिकाः । कृष्णलेश्यभवसिद्धिकपृथिवी-
कायिकाः खलु भदन्त ! कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! द्विविधाः प्रज्ञप्ताः ।
तद्यथा—सूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च वादरपृथिवीकायिकाश्च । कृष्णलेश्य भव
सिद्धिकसूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम !
द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—पर्याप्तकाश्चापर्याप्तकाश्च । एवं वादरा अपि । एवम्—
एतेनाऽभिलापेन तथैव चतुष्को भेदो भणितव्यः ।

कृष्णलेश्यभवसिद्धिकाऽपर्याप्तसूक्ष्म पृथिवीकायिकानां भदन्त ! कति कर्म-
प्रकृतयः प्रज्ञप्ताः । एवमेतेन अभिलापेन यथैवौघिकोद्देशके तथैव यावद् वेदयन्ति ।
कतिविधाः खलु भदन्त ! अनन्तरोपपन्नकाः कृष्णलेश्या भवसिद्धिका एकेन्द्रियाः
प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पञ्चविधा अनन्तरोपपन्नकाः यावद्वनस्पतिकायिकाः । अन-
न्तरोपपन्नक कृष्णलेश्य भवसिद्धिकपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! कतिविधाः
प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—सूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च वादरपृथिवी-
कायिकाश्च एवं द्विपदो भेदः अनन्तरोपपन्नककृष्णलेश्यभवसिद्धिकसूक्ष्मपृथिवी-
कायिकानां भदन्त ! कतिकर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः । एवमेतेनाऽभिलापेन यथैव औघि-
कोऽनन्तरोपपन्नकोद्देशः तथैव यावद्वेदयन्ति । एवमेतेनाऽभिलापेन एकादशाऽपि-
उद्देशकास्तथैव भणितव्याः, यथा—औघिकशते यावदचरम इति ॥३३६॥

॥ पष्ठमेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥

ટીકા-‘કહ્વિહા ણં મંતે ! કળ્હલેસ્સા મવસિદ્ધિયા એગિંદિયા પન્નત્તા’ કતિવિધા?—કતિપ્રકારકાઃ સ્વલુ મદન્ત ! કુળ્લલેશ્યા મવસિદ્ધિકા એકેન્દ્રિય જીવાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ—કથિતાઃ ? હિતિ પ્રશ્નઃ । મગધાનાહ—‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ, ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘પંચવિહા કળ્હલેસ્સા મવસિદ્ધિયા એગિંદિયા પન્નત્તા’ પચ્ચવિધાઃ—પચ્ચપ્રકારકાઃ કુળ્લલેશ્યાવન્તો મવસિદ્ધિકા એકેન્દ્રિયજીવાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ—કથિતા ઇત્યુત્તરમ્ । પ્રકારભેદમેવ દર્શયતિ । ‘તં જહા’ તદ્યથા—‘પુઢવીકાહ્યા જાવ વળ-સ્સહ્કાહ્યા’ પૃથિવીકાયિકા યાવહ્ વનસ્પતિકાયિકાઃ । તથાચ કુળ્લલેશ્ય મવ-સિદ્ધિક પૃથિવીકાયિક-કુળ્લલેશ્યમવસિદ્ધિકાપ્કાયિક કુળ્લલેશ્યમવસિદ્ધિક તેજસ્કાયિક-કુળ્લલેશ્યમવસિદ્ધિક વાયુકાયિક-કુળ્લલેશ્યમવસિદ્ધિકવનસ્પતિ-કાયિકભેદાત્ એકેન્દ્રિયાઃ પચ્ચપ્રકારકા મવન્તીતિ ।

—છઠ્ઠા અવાન્તર શતક—

‘કહ્વિહા ણં મંતે ! કળ્હલેસ્સા મવસિદ્ધિયા એગિંદિયા પળ્લત્તા ?’ હે મદન્ત ! કુળ્લલેશ્યાવાલે મવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવ કિતને પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં ? ઉત્તર મૈં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં—‘ગોયમા ! પંચવિહા કળ્હ-લેસ્સા મવસિદ્ધિયા એગિંદિયા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! કુળ્લલેશ્યાવાલે મવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવ પાંચ પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં । ‘તં જહા’ જૈસે—પુઢવીકાહ્યા જાવ વળસ્સહ્કાહ્યા’ પૃથિવીકાયિક યાવત્ વનસ્પતિ કાયિક, તથા ચ—કુળ્લલેશ્ય મવસિદ્ધિક પૃથિવીકાયિક ૧, કુળ્લલેશ્ય મવસિદ્ધિક અપ્કાયિક ૨, કુળ્લલેશ્ય મવસિદ્ધિક તેજસ્કાયિક ૩, કુળ્લલેશ્ય મવસિદ્ધિક વાયુકાયિક ઓર કુળ્લલેશ્ય મવસિદ્ધિક વનસ્પતિકાયિક કે ભેદ સે એકેન્દ્રિય પાંચ પ્રકાર કે હોતે હૈં ।

‘છઠ્ઠા અવાન્તર શતકનો પ્રારંભ—

‘કહ્વિહા ણં મંતે ! કળ્હલેસ્સા મવસિદ્ધિયા એગિંદિયા પળ્લત્તા’ હે ભગવન્ કુળ્લલેશ્યાવાળા મવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવ કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘ગોયમા ! પંચવિહા કળ્હલેસ્સા મવસિદ્ધિયા એગિંદિયા પળ્લત્તા’ હે ગૌતમ ! કુળ્લલેશ્યાવાળા મવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવો પાંચ પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. ‘તજહા’ તે આ પ્રમાણે છે. ‘પુઢવીકાહ્યા જાવ વળસ્સહ્કાહ્યા’ પૃથ્વીકાયિકથી લઈને યાવત્ વનસ્પતિ કાયિક સુધિના સમજવા. એટલે કે કુળ્લલેશ્યાવાળા મવસિદ્ધિક પૃથ્વીકાયિક ૧ કુળ્લલેશ્યાવાળા મવસિદ્ધિક અપ્કાયિક ૨ કુળ્લલેશ્યાવાળા મવસિદ્ધિક તેજસ્કાયિક, ૩ કુળ્લલેશ્યાવાળા મવસિદ્ધિક વાયુકાયિક ૪ અને કુળ્લલેશ્યાવાળા મવસિદ્ધિક વનસ્પતિકાયિક ૫ આ પ્રમાણેના લેહથી એકેન્દ્રિયો પાંચ પ્રકારના

‘કળહલેસ ભવસિદ્ધિય પુઢવીકાઈયા ણં મંતે ! કઈવિહા પન્નત્તા’ કળહલેસ્ય ભવસિદ્ધિક પૃથ્વીકાઈયાઃ સ્વલુ મદન્ત ! કતિવિધાઃ-કતિપ્રકારકાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ ? મગવાનાહ-‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ ‘ગોયમા !’ હે ગૌતમ ! ‘દુવિહા પન્નત્તા’ દ્વિવિધાઃ-દ્વિપ્રકારકાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ ‘તં જહા’ તથા-‘સુહુમપુઢવીકાઈયા સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાઈયાશ્ચ વાદરપૃથ્વીકાઈયાશ્ચ ।

‘કળહલેસ ભવસિદ્ધિય સુહુમપુઢવીકાઈયા ણં મંતે ! કઈવિહા પન્નત્તા’ કળહલેસ્ય ભવસિદ્ધિક સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાઈયાઃ સ્વલુ મદન્ત ! કતિવિધાઃ-કતિપ્રકારકાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ-કથિતા ઇતિ પ્રશ્નઃ । મગવાનાહ-‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ । ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘દુવિહા પન્નત્તા’ દ્વિવિધાઃ-દ્વિપ્રકારકાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ । પ્રકારભેદમેવ દર્શયતિ-‘તં જહા’ ઇત્યાદિ ‘તં જહા’ તથા-‘પજ્જત્તગાય અપજ્જત્તગાય’ પર્યાપ્તકાશ્ચાપર્યાપ્તકાશ્ચ ।

‘કળહલેસ ભવસિદ્ધિય પુઢવીકાઈયા ણં મંતે ! કઈવિહા પન્નત્તા’ હે મદન્ત ! કળહલેસ્યાવાલે ભવસિદ્ધિક પૃથ્વીકાઈયાઃ કિત્તને પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં ? ‘ગોયમા દુવિહા પન્નત્તા’,-તં જહા-સુહુમપુઢવીકાઈયા ચ વાયર પુઢવીકાઈયા ચ’ હે ગૌતમ ! દો પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં । જૈસે સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાઈયાઃ ઓર વાદરપૃથ્વીકાઈયાઃ ! ‘કળહલેસ ભવસિદ્ધિય સુહુમપુઢવીકાઈયા ણં મંતે ! કઈવિહા પન્નત્તા’ હે મદન્ત ! કળહલેસ્ય ભવસિદ્ધિક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાઈયાઃ કિત્તને પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં ? ‘ગોયમા ! દુવિહા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! કળહલેસ્યાવાલે ભવસિદ્ધિક પૃથ્વીકાઈયાઃ દો પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં । ‘તં જહા’-જૈસે ‘પજ્જત્તગાય ચ, અપજ્જત્તગાય ચ’ પર્યાપ્તક ઓર અપર્યાપ્તક ‘એવં વાયરા વિ’ કળહલેસ્યાવાલે ભવસિદ્ધિક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાઈયાઃ કે જૈસે હી કળહલેસ્યાવાલે ભવ-

હોય છે. ‘કળહલેસ પુઢવીકાઈયા ણં મંતે ! કઈવિહા પન્નત્તા’ હે ભગવન્ કળહલેસ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક પૃથ્વીકાઈયાઃ સ્વલુ કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? ‘ગોયમા ! દુવિહા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! કળહલેસ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક પૃથ્વીકાઈયાઃ સ્વલુ બે પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ‘તં જહા’ તે આ પ્રમાણે છે. ‘સુહુમપુઢવીકાઈયા વાયરપુઢવીકાઈયા ચ’ સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાઈયાઃ અને વાદર પૃથ્વીકાઈયાઃ ‘કળહલેસ ભવસિદ્ધિય સુહુમપુઢવીકાઈયા ણં મંતે ! કઈવિહા પન્નત્તા’ હે ભગવન્ કળહલેસ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાઈયાઃ કેટલા પ્રકારના કહેવા છે ? ‘ગોયમા ! દુવિહા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! કળહલેસ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક પૃથ્વીકાઈયાઃ બે પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. ‘તં જહા’ તે બે પ્રકાર આ પ્રમાણે છે. ‘પજ્જત્તગાય અપજ્જત્તગાય ચ’ પર્યાપ્તક અને અપર્યાપ્તક ‘એવં વાયરા વિ’ કળહલેસ્યા-

‘एवं वायरा वि’ एवं कृष्णलेश्य भवसिद्धिक सूक्ष्मपृथिवीकायिकवदेव’ कृष्णलेश्य भवसिद्धिक वादरपृथिवीकायिका अपि पर्याप्तकापर्याप्तकभेदेन द्विविधा भवन्ति। ‘एएणं अभिलावेणं तहेव चउक्कओ भेदो भाणियव्वो’ एतेन उपरि दर्शितेन अभिलावेण प्रकारेण तथैव यथैव औघिकैकेन्द्रियप्रकरणे चतुष्को भेदो वर्णितः पृथिव्यादि वस्त्विकायिकान्तानां तथैव-तेनैव प्रकारेण कृष्णलेश्यभवसिद्धिकप्रकरणे पृथिव्याद्येकेन्द्रियाणां चतुष्प्रकारको भेदो भणितव्यो वर्णयितव्यः सूक्ष्मवादर-पर्याप्ताऽपर्याप्तरूपः ।

‘कणहलेस्स भवसिद्धिय अपज्जत्तगसुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइकम्मपगडीओ पन्नत्ताओ’ कृष्णलेश्यभवसिद्धिकाऽपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकानां भदन्त । कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ता ? भगवानाह-‘एवं एएणं’ इत्यादि । ‘एवं एएणं अभिला-

सिद्धिक वादर पृथिवीकायिक भी पर्याप्तक और अपर्याप्तक के भेद से दो प्रकार के होते हैं । ‘एवं एएणं अभिलावेणं तहेव चउक्कओ भेओ भाणियव्वो’ जिस प्रकार से पृथिव्यादि से लेकर वनस्पतिकायिकान्त जीवों के चार भेद कहे गये हैं उसी प्रकार से कृष्णलेश्य भवसिद्धिक के इस प्रकरण में पृथिव्यादि एकेन्द्रियों के चार-चार भेद वर्णित करना चाहिये । तात्पर्य यह है कि सूक्ष्म, बादर, पर्याप्तक और अपर्याप्त रूप से समस्त कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीव चार-चार प्रकार के होते हैं । ‘कणहलेस्स भवसिद्धिय अपज्जत्त सुहुमपुढवी काइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ पणत्ताओ’ हे भदन्त ! कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक अपर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवों के कितनी कर्मप्रकृतियां कही गई हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-‘एवं एएणं’

લેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવોના કથન પ્રમાણે જ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક બાદર પૃથ્વીકાયિક સંબંધી કથન પણ પર્યાપ્તક અને અપર્યાપ્તક નો લેહથી એ પ્રકારનું સમજવું. ‘એવં એણં’ અભિલાવેણં તહેવ ચચક્કઓ ભેઓ ભાણિયવ્વો’ જે પ્રમાણે પૃથ્વીકાયિક વિગેરેથી લઈને વનસ્પતિકાયિક સુધીના જીવોના સંબંધમાં ચાર ભેદો કહેવામાં આવ્યા છે. એજ પ્રમાણેના ચાર ભેદો કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિકના આ પ્રકરણમાં પૃથ્વીકાયિક વિગેરે એકેન્દ્રિયોનું પણ વર્ણન કરી લેવું. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-સૂક્ષ્મ, બાદર, પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્તકના લેહથી સઘળા કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવો ચાર-ચાર પ્રકારના હોય છે.

‘કણહલેસ્સ ભવસિદ્ધિય અપજ્જત્તગ સુહુમપુઢવીકાઈયાણં મંતે ! કહ કમ્મ પગડીઓ પન્નત્તાઓ’ હે ભગવન કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ

વેળં જહેવ ઓહિઉદેસણ તહેવ જાવ વેદેંતિ' એવમેતેન-ઉપરિ પ્રદર્શિતેન અમિલા-
પેન પ્રકારેન તથૈવ ઔધિકે પ્રથમે એકેન્દ્રિયાંદેશકે કથિતં તથૈવ-તેનૈવ પ્રકારેન
ઈહાપિ ભવસિદ્ધિકપ્રકરણેઽપિ સર્વં વક્તવ્યમ્ । કિયત્પર્યન્તમૌધિકપ્રકરણં વક્ત-
વ્યમ્ ? તન્નાહ-‘જાવ’ ઇત્યાદિ । ‘જાવ વેદેંતિ’ યાવદ્ વેદયન્તિ, કતિ કર્મપ્રકૃ-
તયો ભવન્તીતિ પ્રશ્નાદારભ્ય ચતુર્દશકર્મપ્રકૃતી વેદયન્તિ. એતત્પર્યન્તં વક્તવ્યમ્ ।
તથાહિ-કૃષ્ણલેશ્ય ભવસિદ્ધિકાપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાદારભ્ય કૃષ્ણલેશ્ય
ભવસિદ્ધિકપર્યાપ્તકવાદરવનસ્પતિકાયિકાન્તા અપિ એકેન્દ્રિયજીવા શ્વતુર્દશ કર્મ-
પ્રકૃતીનાં વેદકાભવન્તીતિ યાવત્પદગ્રહ્યમ્ ઔધિક પ્રકરણમિતિ ।

અમિલાવેળં જહેવ ઓહિયઉદેસણ તહેવ જાવ વેદેંતિ' હે ગૌતમ !
જિસ પ્રકાર સે હસ અમિલાપ દ્વારા જૈસા કથન ઔધિક ઉદેશક મેં-
પ્રથમ એકેન્દ્રિય ઉદેશક મેં-કહા ગયા હૈ, ડસી પ્રકાર સે યહાં હસ
ભવસિદ્ધિક પ્રકરણ મેં ભી વહી સવ કથન કહના ચાહિયે, ઓર વહ
સવ પ્રકરણ ગત કથન વેદન સૂત્ર તક કા યહાં કહના ચાહિયે, તાત્પર્ય
હસ કથન કા એસા હૈ કિ કૃષ્ણલેશ્યાવાલે ભવસિદ્ધિક અપર્યાપ્તક-સૂક્ષ્મ
પૃથિવીકાયિક જીવોં કે કિતની કર્મપ્રકૃતિયાં હોતી હૈ ? હમ પ્રશ્ન
સે લેકર ચૌદહ કર્મ પ્રકૃતિયોંકા વે વેદન કરતે હૈં યહાં તક કા સવ
કથન યહાં પર વહાં કા ઉપો કા ત્યોં કરના ચાહિયે, તથા હસી પ્રકાર
કા કથન કૃષ્ણલેશ્યાવાલે ભવસિદ્ધિક પર્યાપ્તક વાદર વનસ્પતિકાયિક
તક કે સમસ્ત એકેન્દ્રિય જીવ ૧૪ કર્મ પ્રકૃતિયોં કા વેદન કરતે હૈં ।

પૃથ્વીકાયિક જીવોને કેટલી કર્મપ્રકૃતિયો હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી
કહે છે કે-‘એવં યણં અમિલાવેળં જહેવ ઓહિય ઉદેસણ તહેવ જાવ વેદેંતિ’
હે ગૌતમ ! જે પ્રમાણે આ અમિલાપ દ્વારા ઔધિક ઉદેશમાં એટલે કે પહેલા
એકેન્દ્રિય ઉદેશમાં કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં આ ભવસિદ્ધિક
પ્રકરણમાં પણ તે સઘળું કથન સમજી લેવું. અને તે પ્રકરણમાં કહેવામાં આવેલ
સઘળું કથન વેદનસૂત્ર સુધીનું અહિયાં કહેવું જોઈએ. આ કથનનું તાત્પર્ય એ
છે કે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોને કેટલી
કર્મપ્રકૃતિયો હોય છે ? આ પ્રશ્નથી લઈને ૧૪ ચૌદ કર્મપ્રકૃતિયોનું વેદન કરે
છે. આ કથન સુધીનું તે પ્રકરણનું કથન જેમનું તેમ અહિયાં સમજી લેવું.
જોઈએ તથા આજ પ્રમાણેનું કથન કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક પર્યાપ્તક
વાદર વનસ્પતિકાયિક સુધીના સઘળા એકેન્દ્રિય જીવો ચૌદકર્મ પ્રકૃતિયોનું
વેદન કરે છે આ પ્રમાણેનું આ સઘળું કથન ઔધિક પ્રકરણ અહિયાં યાવત્
શબ્દથી ગ્રહણ કરવામાં આવ્યું છે. તેમ સમજવું.

‘કહિવિહા ણં મંતે ! અણંતરોવવન્નગા કણ્હલેસ્સા ભવસિદ્ધિયા એગિદિયા પન્નત્તા’
 કતિવિધાઃ—કતિપ્રકારકાઃ સ્વલુ ભદન્ત ! અનન્તરોપપન્નકાઃ કૃષ્ણલેશ્યા ભવસિ-
 દ્ધિકા એકેન્દ્રિયાઃ મજ્ઞપ્તાઃ—કથિતાઃ ? इति प्रश्नः । भगवान्नाह—‘गोयमा’ इत्यादि
 ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘पंचविहा अणंतरोववन्नगा’ पञ्चविधाः—पंचप्रकारकाः अनन्त-
 रोपपन्नकाः कृष्णलेश्य भवसिद्धिका एकेन्द्रियाः मज्झप्ताः ‘जाव’ यावत्, यावत्प-
 देन पृथिवीकायिका अप्कायिका स्तेजस्कायिका वायुकायिका वनस्पतिकायिका
 इति पञ्चभेदवन्तो भवन्तीति । ‘अणंतरोववन्नग कण्हलेस्स भवसिद्धिय पुढवीकाइया
 णं मंते ! कहविहा पन्नत्ता ?’ अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्य भवसिद्धिक पृथिवी-
 कायिकाः स्वलु भदन्त ! कतिविधाः मज्झप्ताः ? ‘गोयमा !’ हे गौतम ! ‘दुविहा
 पन्नत्ता’ द्विविधाः मज्झप्ताः । ‘तंजहा’ तच्चथा—‘सुहुमपुढवीकाइया वादरपुढवीका-

इस प्रकार સમસ્ત યહ ઔદિક પ્રકરણ યહાં યાવત્ શબ્દ સે ગૃહીત હુઆ હૈ ।

‘કહિવિહા ણં મંતે ! અણંતરોવવન્નગા કણ્હલેસ્સા ભવસિદ્ધિયા એગિદિયા પન્નત્તા’ હે ભદન્ત ! અનન્તરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાલે ભવ-
 સિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવ કિતને પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં ? ‘ગોયમા ! પંચ-
 વિહા અણંતરોવવન્નગાં જાવ વણસ્સહકાઈયા’ હે ગૌતમ ! અનન્તરોપપ-
 ન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાલે ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવ યાવત્ વનસ્પતિકાયિક
 તક પાંચ પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં । તથા ચ—યે એકેન્દ્રિય જીવ પૃથિવીકાયિક
 અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક ઔર વનસ્પતિકાયિક કે ભેદ સે
 પાંચ પ્રકાર કે હોતે હૈં । ‘અણંતરોવવન્નગ કણ્હલેસ્સ ભવસિદ્ધિય
 પુઢવીકાઈયા ણં મંતે ! કહિવિહા પણ્ણત્તા’ હે ભદન્ત ! અનન્તરોપપન્નક
 કૃષ્ણલેશ્યાવાલે ભવસિદ્ધિક પૃથિવીકાયિક જીવ કિતને પ્રકાર કે કહે
 ગયે હૈં ? ‘ગોયમા ! દુવિહા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! યે દો પ્રકાર કે કહે

‘કહિવિહા ણ મંતે ! અણંતરોવવન્નગા કણ્હલેસ્સા ભવસિદ્ધિયા એગિદિયા પણ્ણત્તા’
 હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવો કેટલા
 પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? ‘ગોયમા ! પંચવિહા અણંતરોવવન્નગા જાવ વણ-
 સ્સહકાઈયા’ હે ગૌતમ ! અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય
 જીવો યાવત્ વનસ્પતિકાયિક સુધી પાંચ પ્રકારના કહેલા છે. તે આ પ્રમાણે
 સમજવા. પૃથ્વીકાયિક, અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક અને વનસ્પતિ-
 કાયિકના ભેદથી પાંચ પ્રકારના સમજવા. ‘અણતરોવવણ્ણગ કણ્હલેસ્સ ભવસિદ્ધિય
 પુઢવીકાઈયાણં મંતે ! કહિવિહા પણ્ણત્તા’ હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા
 ભવસિદ્ધિક પૃથ્વીકાયિક જીવો કેટલા પ્રકારના કહેલા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં
 પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીન કહે છે કે—‘ગોયમા ! દુવિહા પણ્ણત્તા’ હે ગૌતમ ! આ

‘આ ય’ ‘સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકાશ્ચ વાદરપૃથ્વીકાયિકાશ્ચ । એવમ્ અનન્તરોપપન્નકાઃ કૃષ્ણલેશ્યા ભવસિદ્ધિકા અપ્કાયિકાઃ સૂક્ષ્માશ્ચ ભવન્તિ, વાદરાશ્ચ ભવન્તિ । એવં તેજસ્કાયિકા અપિ સૂક્ષ્માશ્ચ વાદરાશ્ચ, એવં વાયુકાયિકા અપિ સૂક્ષ્માશ્ચ વાદરાશ્ચ એવમેવ વનસ્પતિકાયિકા અપિ સૂક્ષ્મા ભવન્તિ વાદરાશ્ચ ભવન્તિ ’એવં દુપઓ મેઓ’ એવં દ્વિપદો મેદો ભવતિ । પર્યાપ્તત્વાડર્યાપ્તત્વમેદેન ચાતુર્વિધ્યં ન ભવતિ, અનન્તરોપપન્નકત્વા દેવેતિ । અનન્તરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્ય ભવસિદ્ધિક પૃથ્વીકાયિકાદારભ્ય અનન્તરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્ય ભવસિદ્ધિક વનસ્પતિકાયિકાન્તેષુ સર્વેષુ દ્વિપદો મેદોડવગન્તવ્ય ઇતિ ।

‘અનન્તરોપવવન્નગ કળહલેસ્સ ભવસિદ્ધિય સુહુમપુઢવીકાદ્યા ણં મંતે । કદ ગયે હેં । ‘તં જહા’ જૈસે-સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક ઓર વાદર પૃથ્વીકાયિક હસી પ્રકાર સે અનન્તરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાલે ભવસિદ્ધિક અપ્કાયિક જીવ મી સૂક્ષ્મ ઓર વાદર કે મેદ સે દો પ્રકાર કે હોતે હેં । તેજસ્કાયિક વાયુકાયિક ઓર વનસ્પતિકાયિક જીવ મી હસી પ્રકાર સે સૂક્ષ્મ ઓર વાદર કે મેદ સે દો-દો પ્રકાર કે હોતે હેં । યે સબ પર્યાપ્ત ઓર અપર્યાપ્તક મેદ વાલે નહીં હોતે હેં-અતઃ યે સબ ૪-૪ મેદ વાલે નહીં કહે ગયે હેં । ક્યોંકિ અનન્તરોપપન્નક જીવો મેં યે મેદ નહીં હોતે હેં । હસ પ્રકાર અનન્તરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્ય ભવસિદ્ધિક વનસ્પતિકાયિક સે લેકર અનન્તરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્ય ભવસિદ્ધિક વનસ્પતિકાયિકાન્ત-સબ એકેન્દ્રિય જીવો મેં દો હી મેદ હોતે હેં ।

‘અનન્તરોવવવન્નગ કળહલેસ્સ ભવસિદ્ધિય સુહુમપુઢવીકાદ્યા ણં અનન્તરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક ઓવો મે પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. ‘તં જહા’ તે આ પ્રમાણે છે-સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક અને વાદર પૃથ્વીકાયિક આ રીતે અનન્તરોપપન્નક, કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક અપ્કાયિક ઓવ પણ સૂક્ષ્મ અને વાદરના લેશ્યો મે પ્રકારના હોય છે તેજસ્કાયિક વાયુકાયિક અને વનસ્પતિકાયિક ઓવો પણ આજ પ્રમાણે સૂક્ષ્મ અને વાદરના લેશ્યો બન્ને પ્રકારના હોય છે. આ બધા પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્તના લેશ્યાવાળા હોતા નથી. તેથી આ બધા ૪-૪ ચાર-ચાર લેશ્યાવાળા કહ્યા નથી. કારણ કે-અનન્તરોપ પપન્નક ઓવે માં આ લેશ્યો હોતા નથી આ રીતે અનન્તરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક પૃથ્વીકાયિકથી લઈને અનન્તરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક વનસ્પતિકાયિક સુધીના બધા એકેન્દ્રિય ઓવોમાં એજ લેશ્યો હોય છે.

‘અનન્તરોવવવન્નગ કળહલેસ્સ ભવસિદ્ધિય સુહુમ પુઢવીકાદ્યા ણં મંતે । કદ

કર્મપગડીઓ પન્નત્તાઓ' અનન્તરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યભવસિદ્ધિકસૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયાિકાનાં મદન્ત કનિ કર્મપ્રકૃતયઃ પ્રજ્ઞતાઃ ? इति प्रश्नः । મગવાનાહ-
'एवं एएणं' इत्यादि, 'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहियो अनन्तरोववन्नग-
उद्देसओ तहेव जाव वेदे'ति' एवमेतेन अभिलापेन यथैवाधिकोऽनन्तरोपपन्नको-
देशकः कथित स्तथैवाऽत्रापि वर्णयितव्यो यावद्वेदयन्ति । કર્મપ્રકૃતીનાં સત્તા,
બન્ધનં વેદનં ચ ઔધિકાઽનન્તરોપપન્નકોદેશક કથિતમેવ વેદિતવ્યમ્ इति भावः

'एवं एएणं अभिलावेणं एकारसवि उद्देसगा तहेव भाणियव्वा, जहा ओहिय
सए जाव अचरमेत्ति' एवमेतेन अभिलापेन एकादशाऽपि उद्देशका स्तथैव भणित-
व्या यथा औधिकशते यावत् अचरम इति । एवम् उपरिदर्शितप्रकारेण परंपरोप-

भन्ते ! कहकर म पगडीओ पन्नत्ताओ' हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नक कृष्ण-
लेश्य भवसिद्धिक सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय जीवों के कितनी कर्म
प्रकृतियां कही गई है ? 'गोयमा ! एवं एएणं अभिलावेणं जहेव
ओहिओ अणंतरोववन्नग उद्देसओ तहेव जाव वेदे'ति' हे गौतम !
इस सम्बन्ध में जैसा इस अभिलाप द्वारा औधिक उद्देशक-सामान्य
रूप से अनन्तरोपपन्नक उद्देशक कहा गया है-उसी प्रकार से यहां पर
भी यावत् वेदन सूत्र तक सब कथन करना चाहिये । अर्थात् कर्मप्रकृ-
तियों की सत्ता, उनका बन्धन और वेदन जैसा औधिक अनन्तरोपपन्नक
उद्देशक में कहा गया है वही सब यहां पर भी समझना चाहिये ।

'एवं एएणं अभिलावेणं एकारस वि उद्देसगा तहेव भाणियव्वा'
जहा ओहिय सए जाव अचरिमोत्ति' इस प्रकार अभिलाप द्वारा ११
उद्देशक उसी प्रकार से कहना चाहिये जैसे कि वे औधिक शतक में

કર્મપગડીઓ પગ્ગત્તાઓ' હે ભગવન અનન્તરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક
સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક એકેન્દ્રિય જીવોને કેટલી કર્મપ્રકૃતિઓ કહેવામાં આવેલ છે ?
'गोयमा ! एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ अणंतरोववण्णग उद्देसओ तहेव
जाव वेदे'ति' हे गौतम ! आ सण्धमां ने प्रमाणे आ अभिलाप द्वारा
औधिक उद्देशाभां अटले के सामान्य रूपથી अनन्तरोपपन्नक उद्देशो कहेल छे.
ऐज प्रमाणे अडियां पणु यावत् 'वेदन सूत्र सुधी सधणुं कथन कहेवु' जेध अ.
'अर्थात् कर्म प्रकृतियोनी सत्ता, तेमनुं णधन अने तेमनुं वेदन ने रीते औधिक
उद्देशाभां कडेवाभां आवेल छे, ओ सधणु कथन अडियां पणु समणु देवु'.

'एवं एएणं अभिलावेणं एकारसवि उद्देसगा तहेव भाणियव्वा' जहा
ओहियसए जाव अचरिमोत्ति' આ પ્રમાણે આ અભિલાપ દ્વારા અગિયાર ઉદ્દે-
શાઓ પહેલા કહ્યા પ્રમાણે જ સમણ લેવા. એટલે જે પ્રમાણે ઔધિક

પન્નક કૃષ્ણલેશ્ય ભવસિદ્ધિક સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાદિકા અચરમ ભવસિદ્ધિક સૂક્ષ્મ-
પૃથિવીકાયિકાન્તા એકાદશોદેશકા ઔધિકોદેશકવદેવ મણિતવ્યા: ॥

હિતિ પૃથમેકેન્દ્રિયશતં સમાપ્તમ્ ॥ ૩૩૬ ॥

અથ સપ્તમમષ્ટમં ચ શતમ્ ॥

મૂલમ્—જહા કળહલેસ્સ ભવસિદ્ધિર્દિ સયં મણિયં એવં
નીલલેસ્સ ભવસિદ્ધિર્દિ વિ સયં મણિયવ્વં ॥સૂ૦ ૧॥

સત્તમં ઇન્દ્રિયસયં સમત્તં ॥૩૩-૭॥

છાયા—યથા કૃષ્ણલેશ્યભવસિદ્ધિકૈઃ શતં મણિતમ્, નીલલેશ્ય ભવસિદ્ધિ
કૈરપિ શતં મણિતવ્યમ્ ॥ સપ્તમમેકેન્દ્રિયશતં સમાપ્તમ્ ॥૩૩૭॥

એવં કાપોતલેશ્ય ભવસિદ્ધિકૈરપિ શતમ્ ॥ અષ્ટમમેકેન્દ્રિયશતં સમાપ્તમ્ ॥

ટીકા—‘જહા કળહલેસ્સભવસિદ્ધિર્દિ સયં મણિયં’ યથા—યેન પ્રકારેણ કૃષ્ણ-
લેશ્યભવસિદ્ધિકૈઃ શતં મણિતમ્ । કૃષ્ણલેશ્યભવસિદ્ધિકસ્ય શતં કથિતમ્ ‘એવં
નીલલેસ્સભવસિદ્ધિર્દિ વિ સયં મણિયવ્વં’ એવમેવ નીલલેશ્યભવસિદ્ધિકૈરપિ

યાવત્ અચરમ ઉદેશક તક કહે ગયે હૈં । ડસી પ્રકાર સે પરમ્પરોપપન્નક
કૃષ્ણલેશ્યાવાલે ભવસિદ્ધિક સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક આદિ સે લેકર
અચરમ ભવસિદ્ધિક સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક તક કે ૧૧ ઉદેશક ઔધિક
ઉદેશક કે જૈસે કહના યાહિયે ।

॥ ૬ઠા એકેન્દ્રિક શતક સમાપ્ત ॥

— ૭ વાં ૮ વાં શતક —

‘જહા કળહલેસ્સ ભવસિદ્ધિર્દિ સયં મણિયં’

જિસ પ્રકાર સે કૃષ્ણલેશ્ય ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવોં કે સમ્બ-
ન્ધ મેં શતક કહા ગયા હૈ ‘એવં નીલલેસ્સભવસિદ્ધિર્દિ વિ સયં
મણિયવ્વં’ હસી પ્રકાર સે નીલલેશ્ય ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોં કે સમ્બ-

શતકમાં યાવત્ અચરમ ઉદેશા સુધી કહ્યા છે, એજ પ્રમાણે પરંપરાપપન્નક
કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક સુધીના અગિયાર ૧૧ ઉદેશાઓ
ઔધિક ઉદેશામાં કહ્યા પ્રમાણેના સમજવા ॥સૂ૦૧॥

॥ છઠું એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત ॥

॥સાતમા એકેન્દ્રિય શતક નો પ્રારંભ—

‘જહા કળહલેસ્સ ભવસિદ્ધિર્દિ સયં મણિયં’

જે પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં
શતક કહેવામાં આવેલ છે. ‘એવં નીલલેસ્સ ભવસિદ્ધિર્દિ વિ સયં મણિયવ્વં’

શતં મણિતવ્યમ્ । યથા કૃષ્ણલેશ્યભવસિદ્ધિક્સ્ય એકાદશોદેશકાત્મકશતમધીતં તથૈવ નીલલેશ્યભવસિદ્ધિક્સ્યાપિ એકાદશોદેશકયુક્તં શતમધ્યેતવ્યમ્ । આલાપ- પ્રકારસ્તુ પૂર્વવદેવોહનીયઃ નવરં કૃષ્ણલેશ્યભવસિદ્ધિક્સ્યાને 'નીલલેશ્ય ભવસિ- દ્ધિક્ હતિ પદં નિવેશ્ય શતં મણિતવ્યમ્ ॥

॥હતિ સમ્પન્નએકેન્દ્રિયશતં સમાપ્તમ્ ॥૩૩।૭।

एवं काउलेस्स भवसिद्धिर्एहिं वि सयं ॥सू० १॥

अट्टमं एर्णिदियसयं समत्तं ॥३३-८॥

ન્ધ મેં મી શતક કહના ચાહિયે, તાત્પર્ય યહી હૈ કિ જૈસા કૃષ્ણલેશ્ય, ભવસિદ્ધિક્ષ કા ૧૧ ઉદ્દેશાત્મક શતક કહા જયા હૈ વૈસા હી નીલલેશ્ય ભવસિદ્ધિક્ષ કા મી ૧૧ ઉદ્દેશકોં સે યુક્ત શતક કહના ચાહિયે । હસ સમ્બન્ધ મેં આલાપક પ્રકાર પૂર્વ કે જૈસા હી ઉદ્ધાવિત કરના ચાહિયે, પરન્તુ આલાપક પ્રકાર મેં કેવલ કૃષ્ણલેશ્ય ભવસિદ્ધિક્ષ કે સ્થાન મેં નીલલેશ્ય ભવસિદ્ધિક્ષ એસા પદ નિવેશિત કરકે શતક કહના ચાહિયે ।

॥ ૭ વાં એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત ॥

‘एवं काउलेस्स भवसिद्धिर्एहिं वि सयं’

‘इसी प्रकार कापोतलेश्यावाले भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीवों का भी आठवां शतक बनाना चाहिये ।

એજ પ્રમાણે નીલલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક્ષ એકેન્દ્રિયોના સંબંધમાં પણ શતક સમજવું. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-એ પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક્ષ જીવોના સંબંધમાં અગિયાર ઉદ્દેશાત્મક શતક કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું નીલલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક્ષના સંબંધમાં પણ અગિયાર ઉદ્દેશા યુક્ત શતક કહેવું જોઈએ. આ સંબંધમાં આલાપકનો પ્રકાર પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે જ બનાવીને કહી લેવો. આલાપના પ્રકારમાં કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક્ષના સ્થાને નીલલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક્ષ એ પ્રમાણેનું પદ મૂકીને શતક સમજવું. એજ તેમાં અને આ કથનમાં ભિન્નપણું સમજવું. ॥સૂ૦૧॥

॥સાતમું એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત॥

॥આઠમા એકેન્દ્રિય શતકનો પ્રારંભ—

‘एवं काउलेस्स भवसिद्धिर्एहिं वि सयं’ ઇત્યાદિ

આજ પ્રમાણે કાપોતલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક્ષ એકેન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં

પણ આઠમું શતક સમજવું.

‘एवं काउलेस्त भवसिद्धिर्हि वि सयं’ एवमेव कापोतलेस्त भवसिद्धिकै-
न्द्रियजीवाना मपि शतमष्टमं निर्मातव्यम् । नीललेस्तभवसिद्धिकप्रकरणमपि
एकादशोद्देशात्मकं ज्ञातव्यम्, आलापप्रकाराः स्वयमेवोहनीया इति ॥सू०

अष्टममेकેન્દ્રિયશતં સમાપ્તમ્ ॥ ૩૩-૮॥

॥ અથ નવમં શતમ્ ॥

મૂલમ્—કઙ્કવિહાણં ભંતે ! અભવસિદ્ધિયા ઇર્ગિંદિયા પન્નત્તા ?
ગોયમા ! પંચવિહા અભવસિદ્ધિયા ઇર્ગિંદિયા પન્નત્તા, તં જહા—
પુઢવીકાઙ્કયા જાવ વણસ્સઙ્કાઙ્કયા । એવં જહેવ ભવસિદ્ધિય
સયં મીણયં તહેવ અભવસિદ્ધિયસયં વિ માણિયવ્વં । નવરં નવ
ઉદેસગા ચરમઅચરમોદેસગવજ્ઞા સેસં તહેવ ॥સૂ૦ ૧॥

નવમં ઇર્ગિંદિય સયં સમત્તં ॥૩૩-૯॥

છાયા—કતિવિધાઃ સ્વલ્ભ મદન્ત ! અભવસિદ્ધિકા એકેન્દ્રિયાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ ?
ગૌતમ ! પંચવિધા અભવસિદ્ધિકા એકેન્દ્રિયાઃ પ્રજ્ઞપ્તા, તદ્યથા—પૃથિવીકાયિકા
યાવદ્વનસ્પતિકાયિકાઃ । એવં તથૈવ ભવસિદ્ધિકશતં મણિતં તથૈવાભવસિદ્ધિક-
શતમપિ મણિતવ્યમ્ । નવરં નવોદેશકાશ્ચરમાચરનોદેશકવર્જાઃ, શેષં તથૈવ’ ॥મૂ.
નવમમેકેન્દ્રિયશતં સમાપ્તમ્ ॥૩૩-૧૦॥

જૈસા નીલલેસ્ત ભવસિદ્ધિક પ્રકરણ ૧૧ ઉદ્દેશાત્મક હૈ વૈસા હી
કાપોતલેસ્ત ભવસિદ્ધિક પ્રકરણ મી ૧૧ ઉદ્દેશાત્મક હૈ હસ સમ્બન્ધ
મેં આલાપ પ્રકાર અપને આપ ઉદ્ભાવિત કરના ચાહિયે ।

॥ ૩૩ વેં શતક કા આઠવાં એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત ॥

---નૌવાં શતક---

‘કઙ્કવિહા ણં ભંતે ! અભવસિદ્ધિયા ઇર્ગિંદિયા પન્નત્તા’ હસ્યાદિ

અર્થાત્—જે પ્રમ ભુ નીલલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક ભવેનું અગિયાર ઉદ્દેશા-
ત્મક પ્રકરણ કહ્યું છે. એજ પ્રમાણે અગિયાર ઉદ્દેશાઓવાળું કાપોતલેશ્યાવાળા
ભવસિદ્ધિક ભવેનું પણ પ્રકરણ સમજવું. આ સંબંધમાં આલાપકને પ્રકાર
સ્વયં બનાવીને સમજ લેવો ॥સૂ૦ ૧॥

॥આઠમું એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત॥

॥નવમા એકેન્દ્રિય શતકને પ્રારંભ—

‘કઙ્કવિહા ણં ભંતે ! અભવસિદ્ધિયા ઇર્ગિંદિયા પન્નત્તા’ ઇત્યાદિ

ટીકા—‘કહિહા ણં મંત્રે ! અભવસિદ્ધિયા ઇન્દિયા પન્નત્તા’ કતિવિધાઃ
 સ્વહુ મદન્ત ! અભવસિદ્ધિકા એકેન્દ્રિયાઃ પ્રજ્ઞાતાઃ—કથિતાઃ ? ‘ગોયમા’ પંચ-
 વિહા અભવસિદ્ધિયા ઇન્દિયા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! અભવસિદ્ધિકા એકેન્દ્રિયાઃ
 પંચવિધાઃ પ્રજ્ઞાતા’, ‘તં જહા’ તથા—‘પૃથ્વીકાઢ્યા જાવ વણસ્સઢ્કાઢ્યા’ પૃથ્વી-
 કાયિકા યાવદ્દનસ્પતિકાયિકાઃ અન્ન યાવત્પદેન અપ્પાયિકા સ્તેજસ્કાયિકા
 વાયુકાયિકા એતેષાં સંગ્રહો યવતિ । તથા ચ પૃથ્વીકાયિકાઽપ્પાયિકતેજ-
 સ્કાયિકવાયુકાયિકચનસ્પતિકાયિકભેદાત્ પચ્ચવકારકા અભવસિદ્ધિકૈકેન્દ્રિયા
 યવન્તિ । ‘એવં જહેવ મવસિદ્ધિયસયં મણિયં એવં અભવસિદ્ધિયસયં વિ માણિયવ્વં’
 એવં યથૈવ મવસિદ્ધિકશતં મણિતં તથૈવ અભવસિદ્ધિકશતમપિ મણિતવ્યમ્ ।
 કિન્તુ મવસિદ્ધિકશતાપેક્ષયા યદ્ વૈલક્ષણ્યં તદિદ્ દર્શયન્નાહ—‘નવરં’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—હે મદન્ત ! એકેન્દ્રિય અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવ કિતને
 પ્રકાર કે કહે ગયે છે ? ‘ગોયમા ! પંચવિહા અભવસિદ્ધિયા ઇન્દિયા
 ‘પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવ પાંચ પ્રકાર કે કહે ગયે
 છે । ‘તં જહા’ વે યે છે—‘પૃથ્વીકાઢ્યા જાવ વણસ્સઢ્કાઢ્યા’ પૃથ્વીકાયિક
 યાવત્ વનસ્પતિકાયિક, યહાં યાવત્ પદ સે ‘અપ્પાયિક, તેજસ્કાયિક
 ઓર વાયુકાયિક ઇનકા ગ્રહણ કિયા ગયા છે તથા—ચ પૃથ્વીકાયિક
 અપ્પાયિક, તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક, ઓર વનસ્પતિકાયિક કે ભેદ
 સે અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવ પાંચ પ્રકાર કે હોતે છે । ‘એવં જહેવ’
 મવસિદ્ધિય સયં મણિયં એવં અભવસિદ્ધિયસયં વિ માણિયવ્વં’
 જેસા મવસિદ્ધિક શતક કહા ગયા છે ડસી પ્રકાર સે અભવસિદ્ધિક
 શતક થી કહના યાહિયે કિન્તુ ડસકી અપેક્ષા જો ઇસ શતક મેં મિત્રતા

ટીકાર્થ—હે લગવન્ અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવો કેટલા પ્રકારના
 કેહેવામાં આવ્યા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કેહે છે કે—‘ગોયમા ! પંચવિહા
 અભવસિદ્ધિયા ઇન્દિયા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિ જીવ પાંચ
 પ્રકારના કેહેવામાં આવ્યા છે. ‘તં જહા’ તે આ પ્રમાણે છે. ‘પૃથ્વીકાઢ્યા જાવ
 વણસ્સઢ્કાઢ્યા’ પૃથ્વીકાયિક યાવત્ વનસ્પતિકાયિક યાવત્પદથી અપ્પાયિક તેજ-
 સ્કાયિક વાયુકાયિક અને વનસ્પતિકાયિકનું ગ્રહણ થયેલ છે. એટલે કે—
 પૃથ્વીકાયિક અપ્પાયિક, તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક અને વનસ્પતિકાયિકના લેહથી
 અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવો પાંચ પ્રકારના હોય છે ‘એવં જહેવ મવસિદ્ધિય સયં’
 મણિયં અભવસિદ્ધિયસયં વિ માણિયવ્વં’ અભવસિદ્ધિક શતકમાં જે પ્રમાણે કેહેવામાં
 આવેલ છે, તેજ પ્રમાણે અભવસિદ્ધિક શતક પણ સમજી લેવું. પરંતુ તે

‘નવરં નવ ઉદેસગા ચરમ અચરમ ઉદેસગવજ્જા’ નવરં નવઉદેશકાચરમાચરમો-
દેશકવર્ગાઃ ચરમાચરમદશમેકાદશોદેશકરહિતાઃ ઔઘિકા મત્રસિદ્ધિકોડનન્ત-
રોપપન્નક પરમ્પરોપપન્નકાડનન્તરાવગાઠ પરમ્પરાવગાઠાનન્તરાહારક પરમ્પરાહાર-
કાડનન્તરપર્યાપ્ત પરમ્પરપર્યાપ્તહાનૈવોદેશકાઃ અમત્રસિદ્ધિકશતે પઠનીયાઃ ।
ચરમાચરમોદેશકૌ તુ રહ ન સંભવતઃ । અમત્રસિદ્ધિકસ્વભાવત્વાદેવેતિ ॥

॥નવમમેકેન્દ્રિયશતં સમાપ્તમ્ ॥૩૩।૯॥

અથ દશમમેકાદશં દ્વાદશં ચ શતમ્ ।

મૂલમ્—એવં કણ્હલેસ્સ અમત્રસિદ્ધિયસયં પિ

દસમં ઈર્ગિંદિયસયં સમત્તં ॥૩૩—૧૦॥

નીલલેસ્સ અમત્રસિદ્ધિય ઈર્ગિંદિહિ વિ સયં ॥૩૩—૧૧॥

હૈ વહ ‘નવરં નવ ઉદેસગા ચરમ અચરમ ઉદેસગવજ્જા’ રસ સૂત્રપાઠ
દ્વારા પ્રકટ કી ગઈ હૈ । યહાં ચરમ ઉદેશક ઔર અચરમ ઉદેશક યે દો
ઉદેશકોં કો છોડકર બાકી કે નૌ ઉદેશક હોતે હૈ । રનમેં ઈક ઔઘિક
અમત્રસિદ્ધિક ઉદેશક ૧ અનન્તરોપપન્નક દ્વિતીય ઉદેશક ૨ પરમ્પરોપ-
પપન્નક તૃતીય ઉદેશક ૩ અનન્તરાવગાઠ ચતુર્થ ઉદેશક ૪ પરમ્પરાવ
ગાઠ પાંચવાં ઉદેશક ૫ અનન્તરાહારક ઢઠા ઉદેશક પરમ્પરાહારક
સાતવાં ઉદેશક ૭, અનન્તર પર્યાપ્તક ૮ વાં ઉદેશક ઔર પરમ્પરપર્યાપ્તક
૯ વાં ઉદેશક હૈ, યે નૌ હી ઉદેશક રસ અમત્રસિદ્ધિક શતક મેં પઠનીય
હૈ । અમત્રસિદ્ધિક સ્વભાવ હોને કે કારણ યહાં ચરમ ઔર અચરમ
યે દો ઉદેશક સંભવિત નહીં હૈ । ૯ વાં ઈકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત ॥

કથન કરતાં આ શતકમાં જુદાપણું છે, તે ‘નવરં નવ ઉદેસગા ચરમ અચરમ
ઉદેસગવજ્જા’ આ સૂત્ર પાઠદ્વારા પ્રકટ કરેલ છે અહિયાં ચરમ ઉદેશે અને
અચરમ ઉદેશે આ બે ઉદેશાને છોડીને બાકીના નવ ઉદેશાઓ થાય છે. આમાં
એક ઔઘિક અભવસિદ્ધિક ઉદેશે ૧ અનન્તરોપપન્નક સંબંધી બીજો ઉદેશે
૨ પરંપરોપપન્નક સંબંધી ત્રીજો ઉદેશે ૪ અનન્તરાવગાઠ સંબંધી ચોથો
ઉદેશે ૪ પરંપરાવગાઠ સંબંધી પાંચમો ઉદેશે ૫ અનન્તરાહારક સંબંધી છઠો
ઉદેશે ૬ પરંપરાહારક સંબંધી સાતમો ઉદેશે ૭ અનન્તરપર્યાપ્તક સંબંધી
આઠમો ઉદેશે ૮ અર્થે પર પર પર્યાપ્તક સંબંધી નવમો ઉદેશે ૯ આ નવ જ
ઉદેશાઓ આ અભવસિદ્ધિક શતકમાં કહેના બોધએ અભવસિદ્ધિક સ્વભાવ
હોવાથી અહિયાં ચરમ અને અચરમ એ બે ઉદેશાઓ સંભવતા નથી ॥સૂ.૦૧॥

॥નવમું એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્તા॥

काउलेस्स अभवसिद्धियसयं ॥३३-१२॥

एवं चत्तारि वि अभवसिद्धिय सयाणि णव णव उद्देस-
गाणि भवंति । एयाणि वारस एगिंदियसयाणि भवंति ॥३१-१२॥

तेत्तीमइमं सयं समत्तं ॥३३॥

छाया-एवं कृष्णलेश्याभवसिद्धिकैकेन्द्रियशतमपि ॥३३।१०॥

नीललेश्याऽभवसिद्धिकैकेन्द्रियैरपि शतम् ॥३३।११॥

कापोतलेश्याऽभवसिद्धिकशतम् ॥३३।१२॥

एवं चत्वार्यपि अभवसिद्धिकशतानि नवनवांद्देशकानि भवन्ति ।

एवम् एतानि द्वादश एकेन्द्रियशतानि भवन्ति ॥३३।१०-११-१२॥

॥ त्रयस्त्रिंशत्तमं शतं समाप्तम् ॥ ३३ ॥

टीका-‘एवं कण्हलेस्स अभवसिद्धियसयं’ एवम्-औघिकाऽभवसिद्धिक-
शतमिव कृष्णलेश्याऽभवसिद्धिकैकेन्द्रियशतमपि ज्ञातव्यम् ॥३३।३०॥

दशममेकेन्द्रियशतं समाप्तम् । १०॥

‘नीललेस्स अभवसिद्धिय एगिंदिएहिं वि सयं’ एवं कृष्णलेश्याभवसिद्धिकैके-
न्द्रियशतमिव नीललेश्याभवसिद्धिकैकेन्द्रियैरपि शतं ज्ञातव्यम् ॥३३।११॥

- ॥ १० वां १२ वां एकेन्द्रिय शतक - ॥

‘एवं कण्हलेस्स अभवसिद्धिय एगिंदियसयं’ पि - ३३-१०

औघिक अभवसिद्धिक शतक के जैसा ही कृष्णलेश्य अभवसिद्धिक-
एकेन्द्रिय शतक भी है, ऐसा जानना चाहिये, ‘नीललेस्स अभवसिद्धिय
एगिंदिएहिं वि सयं’ कृष्णलेश्य अभवसिद्धिक एकेन्द्रिय शतक के
जैसा ही नीललेश्य अभवसिद्धिक एकेन्द्रिय शतक है । ३३-११॥

अगियारमा ओकेन्द्रिय शतकनो प्रारंभ—

‘एवं कण्हलेस्स अभवसिद्धिय सयं पि’ ध्यादि

टीकार्थ—औघिक अलवसिद्धिक शतकमां क्हा प्रमाणे न कृष्णलेश्यावाणा
अलवसिद्धिक ओकेन्द्रियेणुं शतक पणु ओन प्रमाणे छे तेम समजवुं,

‘नीललेस्स अभवसिद्धिय एगिंदिएहिं वि सयं’ कृष्णलेश्य अलवसिद्धिक
ओकेन्द्रिय शतकना कथन प्रमाणे न नीललेश्यावाणा अलवसिद्धिक ओकेन्द्रियणुं
शतक समजवुं. ॥सू०१॥

अगियारमुं ओकेन्द्रिय शतक समाप्त

‘કાઉલેસ્સ અભવસિદ્ધિયસયં’ એવમેવ નીલલેશ્યાભવસિદ્ધિકશતમિવ કાપોત-
લેશ્યાભવસિદ્ધિકશતમપિ જ્ઞાતવ્યમ્ ॥૧૨॥

‘એવં ચત્તારિ વિ અભવસિદ્ધિયસયાણિ’ એવમ્-ઉપરિદર્શિત-ક્રમેણ ચત્વા-
ર્યપિ ઔધિકાભવસિદ્ધિક-કૃષ્ણ-નીલ-કાપોતલેશ્યાકાભવસિદ્ધિકરૂપાણિ અ-
ભવસિદ્ધિકાનાં શતાનિ ‘ળવળવઉદેસગા ભવંતિ’ નવનવોદેશકાનિ-નવનવોદેશકા-
ત્મકાનિ ઔધિકાભવસિદ્ધિકોદેશમાશ્રિત્ય અનન્તરોપપન્નકપરમ્પરોપપન્નકાનન્ત-
રાવગાઠ પરમ્પરાવગાઠાનન્તરાહારક પરમ્પરાહારકાનન્તરપર્યાપ્તક પરમ્પરપર્યાપ્તક
રૂપાણિ ભવન્તિ । અભવસિદ્ધિસ્વભાવાત્, ચરમાચરમરૂપૌ દશમૈકાદશંદેશૌ ન ભવત

‘કાઉલેસ્સ અભવસિદ્ધિય સયં’-નીલલેશ્ય અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય
શતક કે જેણા કાપોતલેશ્ય અભવસિદ્ધિક શતક હૈ ॥ ૩૩-૧૨॥-

‘એવં ચત્તારિ વિ અભવસિદ્ધિય સયાણિ’ હસ પ્રકાર ચાર શતક
અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય શતક હૈ ? દૂસરા કૃષ્ણલેશ્ય અભવસિદ્ધિક
એકેન્દ્રિય શતક હૈ ૨ તીસરા નીલલેશ્ય અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય શતક
હૈ ૩ ચૌથા કાપોતલેશ્ય અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય શતક હૈ ૪ હન શતકો
મેં ‘ળવ ળવ ઉદેસગા ભવંતિ’ પ્રત્યેક શતક મેં ૧-૧ ઉદેશક હૈ । ઔધિક
કો આશ્રિત કરકે અર્થાત્ હસ કો લેકર અનન્તરોપપન્નક, પરમ્પરોપપન્નક
અનન્તરાવગાઠ, પરમ્પરાવગાઠ અનન્તરાહારક પરમ્પરાહારક, અનન્તર-
પર્યાપ્તક ઔર પરમ્પર પર્યાપ્તક યે ઔર નૌ ઉદેશક હોતે હૈ । અભવ-

‘કાઉલેસ્સ અભવસિદ્ધિયસયં’

નીલલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય શતકના કૃ ન પ્રમાણે કાપોતલેશ્યાવાળા
અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોનુ શતક પચ્ચ સમઋણુ. ॥૩૩-૧૨॥

‘એવં ચત્તારિ વિ અભવસિદ્ધિયા સયાણિ’ આ પ્રમાણે ચાર શતકો
અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં કહેવામાં આવ્યા છે. તેમાં
એક સામાન્ય પણાથી અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય શતક કહેલ છે. કૃષ્ણ-
લેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય અભવસિદ્ધિક જીવ સંબંધી ત્રીજુ શતક કહ્યું છે. ૨
નીલલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય સંબંધી ત્રીજુ શતક કહેલ છે ૩
કાપોતલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય સંબંધી ચેથું શતક કહેલ છે. ૪
આ દરેક શતકોમાં ‘ળવ ળવ ઉદેસગા ભવંતિ’ નવ નવ ઉદેશાઓ કહેવામાં
આવ્યા છે ઔધિક ભવસિદ્ધિક ઉદેશાનો અશ્રય કરીને અનન્તરોપપન્નક
પરંપરોપપન્નક. અનન્તરાવગાઠ પરંપરાવગાઠ, અનન્તરાહારક, પરંપરાહારક
અનન્તર પર્યાપ્તક, અને પરંપર પર્યાપ્તક, આ પ્રમાણેના તે ઉદેશાઓ કહ્યા છે.
અભવસિદ્ધિક સ્વભાવવાળા હોવાથી આ એકેન્દ્રિયોને અરમ અને અચરમ

इति । ‘एवं एयाणि बारस एगिंदियसयाणि भवंति’ एवमुपरिपरिदर्शितक्रमेण एतानि पूर्वोक्तानि द्वादशैकेन्द्रियशतानि भवन्ति ।

सामान्यत एकेन्द्रियाणां प्रथमं शतम् ? । कृष्णलेश्य नीललेश्य कापोतलेश्यानां त्रय इति मिलित्वा चत्वारि ४, तथा औधिकभवसिद्धिकेकेन्द्रियैः कृष्णलेश्य नीललेश्य कापोतलेश्यै स्त्रीणि शतानि ८ । तथा अभवसिद्धिकानामपि चत्वारि औधिक कृष्णनील कापोतरूपाणि इति सर्वं सङ्कलनया द्वादशशतानि भवन्ति । अष्टसु शतेषु प्रत्येकस्मिन् एकादश एकादशोद्देशकाः, अभवसिद्धिकानां चतुर्णां तु

સિદ્ધિ સ્વભાવવાળે હોને સે इन एकेन्द्रियों के चरम और अचरम रूप १० वां और ११ वां ऐसे ये दो उद्देशक नहीं कहे गये हैं । ‘एवं एयाणि बारस एगिंदियसयाणि भवंति’ इस प्रकार से एकेन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में १२ एकेन्द्रिय शतक होते हैं—

સામાન્ય રૂપ સે એકેન્દ્રિયોં કા પ્રથમ શતક એવં કૃષ્ણલેશ્યાવાળે, નીલલેશ્યાવાળે, કાપોતલેશ્યાવાળે એકેન્દ્રિયોં કે ત્રીન શતક-મિલકર ચાર શતક હોતે હૈં—તથા—ચ—ઔધિક ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોં કો લેકર કૃષ્ણલેશ્યાવાળે, નીલલેશ્યાવાળે ઔર કાપોતલેશ્યાવાળે ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોં કે ૩ શતક-મિલકર આઠ શતક હોતે હૈં । તથા અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોં કે ભી ચાર શતક હૈં—એક ઔધિક ઔર ત્રીન કૃષ્ણ, નીલ, કાપોતલેશ્યાઓ કો લેકર સઘ મિલકર ૧૨ શતક હોતે હૈ । इनमें

૩૫ ૧૦ હસમો અને ૧૧ અગિયારમો એ બે ઉદ્દેશાઓ કહેવામાં આવેલ નથી.

‘एवं एयाणि बारस एगिंदिया सयाणि भवंति’ આ પ્રમાણે એકેન્દ્રિય વાળા જીવોના સંબંધમાં ૧૨ બાર એકેન્દ્રિય શતકો કહેવા છે.

સામાન્ય પણાથી એકેન્દ્રિયોના ‘પહેલું’ શતક અને કૃષ્ણલેશ્યાવાળા, નીલ લેશ્યાવાળા, કાપોતલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિયોના ત્રણ શતકો મળીને ચાર શતકો થાય છે. તથા ઔધિક ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોને લઈને કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નીલ-લેશ્યાવાળા અને કાપોતલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિકના ત્રણ શતકો મળીને આઠ શતકો થાય છે. તથા અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોના સંબંધમાં પણ ચાર શતકો કહેવામાં આવેલા છે. તે આ રીતે સમજવા—એક ઔધિક સંબંધી અને કૃષ્ણલેશ્યાયુક્ત, નીલલેશ્યા યુક્ત અને કાપોતલેશ્યા યુક્ત એમ ત્રણ શતકો થાય છે, બધા મળીને બાર શતકો થાય છે આમાં આઠ શતકોમાં દરેક શતકોમાં ૧૧-૧૧ અગિયાર અગિયાર ઉદ્દેશાઓ થાય છે, ચાર અભવ

નવનવૈવોદેશકાશ્ચરમાચરમવર્જિતા ઇતિ । તદેવોદેશકાનાં સર્વસંકલનયા ચતુર્-
વિંશત્યધિકશતમુદેશકાનાં ભવતીતિ ॥

ઇતિ શ્રી વિશ્વવિખ્યાત-જગદ્વલ્લભ-પ્રસિદ્ધવાચક-પંચદશભાષા-
કલિતલલિતકલાપાલાપકપ્રવિશુદ્ધગદ્યપદ્યાનૈકગ્રન્થનિર્માપક,
વાદિમાનમર્દક-શ્રીશાહુચ્છત્રપતિ કોલહાપુરરાજપ્રદત્ત-
'જૈનાચાર્ય' પદભૂષિત — કોલહાપુરરાજગુરુ-
વાલબ્રહ્મચારિ-જૈનાચાર્ય - જૈનધર્મદિવાંકર
પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલવ્રતિવિરચિતાયાં શ્રી
“ભગવતીસૂત્રસ્ય” પ્રમેયચન્દ્રિકાલ્યાયાં
વ્યાખ્યાયામ્ ત્રયસ્ત્રિંશત્તમશતકસ્ય
દશમમેકાદશ દ્વાદશશતાનિ
સમાપ્તાનિ ॥૧૦-૧૧-૧૨॥
સમાપ્તં ચ ત્રયસ્ત્રિંશત્તમં શતકમ્ ।

આઠ શતકોં મેં પ્રત્યેક શતક મેં ૧૧-૧૧ ઉદ્દેશક હૈં । ચાર અભવ-
સિદ્ધિ કોં કે નૌ-નૌ ઉદ્દેશક હૈં । યહાં અચરમ ઉદ્દેશક છૂટ જાતે હૈં ।
હસ સમસ્ત ઉદ્દેશકોં કી સંખ્યા ૧૨૪ હોતી હૈ । ૧૧ વાં ૧૨ વાં એકે-
ન્દ્રિય શતક સમાપ્ત ॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાંકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજીમહારાજકૃત
“ભગવતીસૂત્ર”ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાકે તેત્રીસવેં શતક કા
દસવાં ચારહવાં ઓર ચારહવાં અવાન્તરશતક સમાપ્ત । ૩૩-૧૦-૧૨।
॥ પ્રથમ એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત ॥

॥ ૩૩ વાં શતક સમાપ્ત ॥

સિદ્ધિકોના નવ-નવ ઉદ્દેશાઓ થાય છે. તેમાં ચરમ ઉદ્દેશક અને અચરમ
ઉદ્દેશક એ બે ઉદ્દેશાઓ છોડી દેવામાં આવેલ છે. આ રીતે આ બધા ઉદ્દેશા-
ઓની કુલ સંખ્યા ૧૨૪ એસોને ચોવીસની થાય છે. ॥સૂ.૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાંકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત “ભગવતીસૂત્ર”ની
પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના તેત્રીસમા શતકના દસ અગીયાર અને બારમું

અવાન્તર શતક સમાપ્ત ॥૩૩-૧૦-૧૨॥

॥એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત॥

॥તેત્રીસમું શતક સમાપ્ત॥

अथ चतुस्त्रिंशत्तमं शतकम् ।

अथस्त्रिंशत्तमे शतके एकेन्द्रियजीवानां निरूपणं कृतम्, चतुस्त्रिंशत्तमेऽपि शतके एकेन्द्रियजीवा एव विग्रहगत्यादि प्रकारान्तरेण निरूप्यन्ते । तदनेन सम्बन्धेनायातस्य चतुस्त्रिंशच्छतकस्य द्वादश शतोपेतस्य इदमादिर्षं सूत्रम्—‘कइविहाणं भंते !’ इत्यादि ।

मूलम्—कइविहा णं भंते ! एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा एगिंदिया पन्नत्ता । तं जहा—पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया । एवं एएणं चेव चउक्कएणं भेएणं भाणियव्वं जाव वणस्सइकाइया । अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते ! कइसमएण विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा । से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ, एगसमइएण वा दुसमइएण वा जाव उववज्जेज्जा, एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पन्नत्ताओ, तं जहा उज्जुयायया सेढी १, एगओ वंका २, दुहओ वंका ३, एगयओ खहा ४, दुहओ खहा ५, चक्कवाला ६, अद्धचक्कवाला ७, उज्जुयायताए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा । एगयओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा । दुहओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा । से तेणट्टेणं गोयमा ! जाव उववज्जेज्जा । अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइएणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते पज्जत्तसुहुमपुढवी-

काइत्ताए उववजित्तए से णं भंते ! कइ समइएणं विग्गहेणं उववजेज्जा ? गौयमा ! एगसमइएण वा सेसं तं चेव, जाव से तेणहेणं जाव विग्गहेणं उववजेज्जा । एवं अपज्जत्तसुहुमपुढवी-काइओ पुरत्थिमिल्ले चरिमंते, समोहणावेत्ता पञ्चत्थिमिल्ले चरिमंते बादरपुढवीकाइएसु अपज्जत्तएसु उववाएयव्वो ताहे तेसु चेव पज्जत्तएसु ४ । एवं आउक्काइएसु चत्तारि आलावगा सुहुमोहिं अप्पज्जत्तएहिं१, ताहे पज्जत्तएहिं बायरेहिं२, अपज्जत्तएहिं३, ताहे पज्जत्तएहिं उववायव्वो ४ । एवं चेव सुहुम-तेउकाइएहिं वि अपज्जत्तएहिं१, ताहे पज्जत्तएहिं उववायव्वो२ । अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइएणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए मणुस्स-खेत्ते अपज्जत्तवायरतेउकाइयत्ताए उववजित्तए से णं भंते ! कइ समइएणं विग्गहेणं उववजेज्जा ? सेसं तं चेव । पज्जत्तवायर-तेउक्काइयत्ताए उववाएयव्वो ४ वाउक्काइएसु सुहुमवायरेसु जहा आउक्काइएसु उववाइओ तहा उववाएयव्वो ४ । एवं वणस्सइ-काइएसु वि ॥२०॥सू० १॥

छाया-कतिविधाः खलु भदन्त ! एकेन्द्रियाः प्राप्ताः ? गौतम ! पञ्चविधा एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-पृथिवीकायिका यावद्वनस्पतिकायिकाः । एवमेतेनैव चतुष्केण भेदेन भणितव्याः, यावद्वनस्पतिकायिकाः । अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! एतस्याः रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः, समवहत्य यो बध्य एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पश्चिमे चरमान्ते अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया उपपत्तुम्, स खलु भदन्त ! कति सामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत ? गौतम ! एकसामयिकेन वा, द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, विग्रहेणोत्पद्येत । तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते एकसामयिकेन वा, द्विसामयिकेन वा यावत् उत्पद्येत ? एवं खलु गौतम ! मया सप्त श्रेणयः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-क्रज्वायता श्रेणिः, १ एकतो वक्रा, २ द्विधातो वक्रा, ३ एकतः खा, ४ द्विधातः खा, ५

ચક્રવાલાદિ અદ્વચક્રવાલા ૭ કુડચાયતયા શ્રેણ્યા ઉત્પદ્યમાનઃ એક સામયિકેન વિગ્ર-
હેણોત્પદ્યેત । એકતો ચક્રયા શ્રેણ્યોત્પદ્યમાનઃ દ્વિસામયિકેન વિગ્રહેણોત્પદ્યેત । દ્વિધાતો
ચક્રયા શ્રેણ્યોત્પદ્યમાનઃ ત્રિસામયિકેન વિગ્રહેણોત્પદ્યેત, તત્તેનાર્થેન ગૌતમ । યાવદ્
ઉત્પદ્યેત । અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાઃ સ્વલ્લ ભદન્ત ! એતસ્યાઃ રત્નપ્રભાયાઃ
પૃથિવ્યાઃ પૌરસ્ત્યે ચરમાન્તે સમવહતઃ, સમવહત્ય યો મવ્યઃ એતસ્યા રત્નપ્રભાયાઃ
પૃથિવ્યાઃ પાશ્ચાત્યે ચરમાન્તે પર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકતયા ઉત્પત્તુમ્, સ સ્વલ્લ
ભદન્ત ! કતિ સામયિકેન વિગ્રહેણ ઉત્પદ્યેત ? ગૌતમ ! એકસામયિકેન વા શેષં
તદેવ, યાવત્તત્તેનાર્થેન યાવદ્ વિગ્રહેણોત્પદ્યેત । એવમ્ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકઃ
પૌરસ્ત્યે ચરમાન્તે સમવધાત્ય પાશ્ચાત્યે ચરમાન્તે વાદરપૃથિવીકાયિકેષુ અપર્યાપ્ત
કેષુ ઉપપાતયિતવ્યઃ, તદા તેષ્વેવ પર્યાપ્તકેષુ ૪, એવમ્ અપ્કાયિકેષુ
ચત્તાર આલાપકાઃ સૂક્ષ્મૈરપર્યાપ્તકૈઃ, તદા પર્યાપ્તકૈ વાદરે અપર્યાપ્તકૈઃ
તદા પર્યાપ્તકૈઃ ઉપપાતયિતવ્યઃ । એવમેવ સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિકૈરપિ અપર્યાપ્તકઃ તદા
પર્યાપ્તકૈરુપપાતયિતવ્યઃ અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકઃ સ્વલ્લ ભદન્ત ! એતસ્યા
રત્નપ્રભાયાઃ પૃથિવ્યાઃ પૌરસ્ત્યે ચરમાન્તે સમવહતઃ, સમવહત્ય યો મવ્યો મનુષ્ય-
ક્ષેત્રે અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકતયા ઉત્પત્તું, સ સ્વલ્લ ભદન્ત ! કતિ સામયિકેન,
વિગ્રહેણોત્પદ્યેત, શેષ તદેવ । એવં પર્યાપ્તવાદર તેજસ્કાયિકતયા ઉપપાતયિતવ્યઃ
વાયુકાયિકેષુ સૂક્ષ્મવાદરેષુ યથા અપ્કાયિકેષુ ઉપપાતિત સ્તથા ઉપપાતયિતવ્યઃ,
એવં વનસ્પતિકાયિકેષ્વપિ ॥૨૦॥સુ૦-૧

ટીકા-‘કઙ્ગિહા ણં મંતે ! ઇગિંદિયા પણ્ણત્તા’ કતિવિધાઃ-કતિપ્રકારકા

૩૪ વાં શતક

૩૩ વેં શતક મેં એકેન્દ્રિય જીવોં કા નિરૂપણ કિયા અવ હસ ૩૪
વેં શતક મેં બી ડન્હી એકેન્દ્રિય જીવોં કા નિરૂપણ વિગ્રહ ગતિ આદિ
રૂપ પ્રકારાન્તર સે કિયા જાવેગા । હસી કારણ હસ ૩૪ વેં શતક કા
કથન જો કિ ૧૨ શતકોં વાલા હૈ સૂત્રકાર કરતે હૈ-‘કઙ્ગિહા ણં મંતે !
ઇગિંદિયા પણ્ણત્તા’ ઇત્યાદિ ।

॥ચોત્રીસમા શતક નો પ્રારભ—પહેલો ઉદ્દેશો

તેત્રીસમા શતકમાં એકેન્દ્રિયોનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું છે, હવે આ
૩૪ ચોત્રીસમા શતકમાં પણ એ એકેન્દ્રિય જીવોનું જ વિગ્રહ ગતિ વિગેરે
પ્રકારાન્તરથી નિરૂપણ કરવામાં આવશે, એ કારણથી આ ૩૪ ચોત્રીસમા શતકનું
કથન સૂત્રકાર કરે છે.—આ શતક બાર શતકોવાળું છે—‘કઙ્ગિહા ણં મંતે !
ઇગિંદિયા પણ્ણત્તા’ ઇત્યાદિ.

ખલુ મદન્ત ! એકેન્દ્રિયાઃ પ્રજ્ઞતાઃ કથિતાઃ ? । મગવાનાદ-‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ । ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ? ‘પંચવિદ્યા ઇન્દિયા પન્નત્તા’ પશ્ચવિદ્યાઃ-પશ્ચપ્રકારકા એકેન્દ્રિયાઃ પ્રજ્ઞતાઃ-કથિતાઃ, ‘તં જહા’ તત્તથા-‘પુઢવીકાઈયા જાવ વળસ્સઈ કાઈયા’ પૃથિવીકાયિકા યાવદ્વનસ્પતિકાયિકાઃ, અત્ર યાવત્પદેન અપ્કાયિકતેજ-સ્કાયિક વાયુકાયિક વનસ્પતિકાયિક ભેદાત્પશ્ચપ્રકારકા એકેન્દ્રિયા ભવન્તીતિ । ‘એવં એણં ચેવ ચરુક્કણં મેણં માણિયવ્વા જાવ વળસ્સઈકાઈયા’ એવમ્ એતેનૈવ ચતુષ્કેણ ભેદેન મણિતવ્વા યાવદ્વનસ્પતિકાયિકાઃ અત્રાપિ યાવત્પદેન પૃથિવીકા-યિકાપ્કાયિકતેજસ્કાયિકવાયુકાયિકાનાં સમ્રહઃ સૂક્ષ્માઃ પૃથિવીકાયિકાશ્ચ વાદરાઃ પૃથિવીકાયિકાશ્ચેત્યેવં દ્વૌ ભેદૌ । તતઃ અપર્યાપ્તકાઃ સૂક્ષ્માઃ પૃથિવી-કાયિકાચ્ચ, પર્યાપ્તકાઃ સૂક્ષ્માઃ પૃથિવીકાયિકાશ્ચ, અપર્યાપ્તકા વાદરપૃથિવી-

ટીકાર્થ-‘કઈવિદ્યા ણં મતે ! ઇન્દિયા પન્નત્તા’ હે મદન્ત ! એકેન્દ્રિય જીવ કિતને પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં ? ‘ગોયમા ! પંચવિદ્યા ઇન્દિ-દિયા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! એકેન્દ્રિય જીવ પાંચ પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં ‘તં જહા’ જૈસે-‘પુઢવીકાઈયા જાવ વળસ્સઈકાઈયા’ પૃથિવીકાયિક યાવત્ વનસ્પતિકાયિક યહાં યાવત્ શબ્દ સે અપ્કાયિક તેજસ્કાયિક ઓર વાયુકાયિક इन એકેન્દ્રિય જીવોં કા ગ્રહણ હુઆ હૈ ‘એવં એણં ચેવ ચરુક્કણં મેણં માણિયવ્વા જાવ વળસ્સઈ કાઈયા’ હસ પ્રકાર પૃથિવી કાયિક સે લેકર વનસ્પતિકાયિક તક કે એકેન્દ્રિય જીવોં કે ચાર-ચાર ભેદ કહ લેના ચાહિયે જૈસે-સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક ૧ વાદરપૃથિવીકાયિક ૨ સૂક્ષ્મપૃથિવી કે દો ભેદ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક ઓર પર્યા-પ્તક સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક વાદર પૃથિવીકાયિક કે મી દો ભેદ-વાદર

ટીકાર્થ-‘કઈવિદ્યા ણં મતે ! ઇન્દિયા પન્નત્તા’ હે ભગવન્ એકેન્દ્રિય જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? ‘કઈવિદ્યા’ ઇત્યાદિ પ્રકરણુ ત્રસનાડીને લક્ષ્ય કરીને સમજવું જોઈએ. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘ગોયમા પંચવિદ્યા ઇન્દિયા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! એકેન્દ્રિય જીવો પાંચ પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. ‘તં જહા’ તે આ પ્રમાણે છે. ‘પુઢવીકાઈયા જાવ વળસ્સઈકાઈયા’ પૃથ્વીકાયિક અને વનસ્પતિ કાયિક ‘એવં એણં ચેવ ચરુક્ક-ણં માણિયવ્વા જાવ વળસ્સઈકાઈયા’ આ રીતે પૃથ્વીકાયિકથી લઈને વન-સ્પતિકાય સુધીના એકેન્દ્રિય જીવોના ચાર-ચાર ભેદો સમજવા જેમ કે-સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક ૧ વાદર પૃથ્વીકાયિક ૨ સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકના અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક અને પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક એ પ્રમાણે બે ભેદો તથા વાદર પૃથ્વીકાયિકના પણ-વાદર અપર્યાપ્તક પૃથ્વીકાયિક અને વાદર પર્યાપ્તક

કાયિકાઃ, પર્યાપ્તા વાદરપૃથિવીકાયિકા इत्येवमेकस्य पृथिवीकायिकस्य चत्वारो भेदा भवन्ति । एवमेव अप्कायिकादारभ्य वनस्पतिकायिकान्तानामपि चतुष्को भेदः करणीय इति । ‘अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइएणं भंते !’ अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! ‘इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए’ एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या, ‘पुरत्थिमिल्ले चरिमंते’ पौरस्त्ये चरमान्ते, पूर्वदिशाया अन्तिमे भागे, ‘समवहए’ समवहतः, मारणान्तिकसमुद्घातं प्राप्तः । ‘समोहणित्ता’ समवहत्य, —मारणान्तिकसमुद्घातं कृत्वा मृत्वेत्यर्थः, ‘जे भविए’ यो भव्यः—योग्यः, ‘इमीसे रयणप्पभाए, पुढवीए’ एतस्या, रत्नप्रभायाः पृथिव्याः, ‘पंचत्थिमिल्ले चरिमंते’ पाश्चात्ये—चरमांते, पश्चिमदिशाया अन्तिमे भागे इत्यर्थः ‘अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए’ अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकतया उत्पत्तुम् अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकजीवरूपेण उत्पत्तुम्, योग्य इति पूर्वेण सम्बंधः,

अपर्याप्तक पृथिवीकायिक और वादर पर्याप्तक पृथिवीकायिक इस प्रकार से पृथिवीकायिक जीवों के चार भेद होते हैं । इसी तरह से अप्कायिक से लेकर वनस्पतिकायिक तक के जीवों के भी चार २ भेद कर लेना चाहिये ।

‘अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते !’ हे भदन्त ! कोई अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव ‘इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए’ इस रत्नप्रभा-पृथिवी के ‘पुरत्थिमिल्ले चरिमंते’ जो कि पूर्वदिशा के अन्तिम भाग में ‘समवहए’ मारणान्तिकसमुद्घात को प्राप्त हुआ है और ‘समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए’ मारणान्तिक समुद्घात करके वह इस रत्नप्रभा पृथिवी के ‘पंचत्थिमिल्ले चरिमंते’ पश्चिमदिशा के अन्तिम भाग में ‘अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए’ अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न होने के योग्य है ‘से णं भंते ! कइ

પૃથ્વીકાયિક આ રીતે પૃથ્વીકાયિક જીવોના ૪ ચાર ભેદો થાય છે. એજ પ્રમાણે અપ્કાયિકથી લઈને વનસ્પતિકાયિક સુધીના જીવોના પણ ચાર-ચાર ભેદો સમજવા જોઈએ.

‘અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવિકાઈયણં ભંતે !’ હે ભગવન્ કૈઈ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવો ‘इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए’ આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ‘पुरत्थिमिल्ले चरिमंते !’ કે જે પૂર્વદિશાના અંતિમ ભાગમાં ‘समवहए’ મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત પ્રાપ્ત કરે છે અને ‘समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए’ મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને તે આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ‘पंचत्थिमिल्ले’ પશ્ચિમ દિશાના અંતિમ ભાગમાં ‘अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जेज्जा’ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકપણુથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય છે. ‘से णं भंते !

‘સે જાં મંતે !’ સં સ્વલ્પ મદન્ત ! યોડપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકો જીવઃ રત્નપ્ર-
માયાઃ પૂર્વાન્તે ભાગે મારણાન્તિકસમુદ્ઘાતેન મૃત્વા તસ્યા એવ પશ્ચિમદિગ્વિભાગે
ઉત્પત્તિ યોગ્યો વિદ્યતે સં જીવઃ, ‘કઙ્કસમહણં વિગ્રહેણ ઉવવજ્જેજ્જા’ કતિસામ-
યિકેન વિગ્રહેણ ઉત્પદ્યેત । મરણોત્પત્ત્યોર્મધ્યે ક્રિયાન્ સમયા મવન્તીત્યર્થઃ । ‘મગ-
વાનાહ-‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ, ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ । ‘એગસમહણ વા, દુસમહણ
વા, તિસમહણ વા વિગ્રહેણ ઉવવજ્જેજ્જા’ એકસામયિકેન વા, દ્વિસામયિકેન
વા, ત્રિસામયિકેન વા વિગ્રહેણ ઉત્પદ્યેત । વિગ્રહે વક્રગતો ચ તસ્ય સદ્ભાવાત્
ગતિરેવ વિગ્રહઃ વિશિષ્ટો વા ગ્રહઃ-વિશિષ્ટસ્થાનપ્રાપ્તિ રૂપા ગતિઃ વિગ્રહ સ્તેન,
અથવા વિગ્રહો વિલમ્બસ્તેન વિગ્રહેણ, વિગ્રહયેવ વિશિષ્ટ-એકસામયિકેન એકઃ
એક એવ સમયો વિદ્યતે યત્રાસૌ એકસામયિક સ્તેન એકસામયિકેન વિગ્રહેણેત્યર્થઃ
એવં દ્વૌ સમયો વિદ્યતે યત્રાસૌ દ્વિસામયિક સ્તેન ત્રયઃ સમયા વિદ્યન્તે યત્રા સ્તૈ
ત્રિસામયિક સ્તેનેત્યર્થઃ । પુનઃ પ્રશ્નયન્નાહ-‘સે કેળદ્દેજ્જા’ ઇત્યાદિ । ‘સે કેળદ્દેજ્જા

સમહણં વિગ્રહેણ ઉવવજ્જેજ્જા’ વહ જીવ કિતને સમય કી વિગ્રહ
ગતિ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ? હસ પ્રશ્ન કા તાત્પર્ય એસા હૈ કિ કોઈ સૂક્ષ્મ
અપર્યાપ્તક પૃથિવીકાયિક જીવ જો કિ રત્નપ્રમા પૃથિવી કે પૂર્વદિશા
કે અન્તિમ ભાગ મેં સ્થિત હૈ । અવ વહ વહાં સે મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત
કરકે યદિ પશ્ચિમ દિશા કે અન્તિમ ભાગ મેં ડસી પૃથિવી કે ઉત્પન્ન
હોને કે યોગ્ય હૈ તો વહ કિતને સમય વાલે વિગ્રહ સે વહાં ઉત્પન્ન હોગા ?
અર્થાત્ મરણ ઓર ઉત્પત્તિ કે વીચ મેં ડસે કિતના સમય લગેગા ? ઉત્તર
મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈ-‘ગોયમા । એગસમહણ વા દુસમહણ વા’ તિસમ-
હણ વા વિગ્રહેણ ઉવવજ્જેજ્જા’ હે ગૌતમ ! વહ એક સમયવાલે વિગ્રહ
સે મી વહાં ઉત્પન્ન હો સકતા હૈ, દો સમય વાલે વિગ્રહ સે મી વહાં
ઉત્પન્ન હો સકતા હૈ ઓર ત્રી સમય વાલે વિગ્રહ સે મી વહ વહાં

કઙ્કસમહણ વિગ્રહેણ ઉવવજ્જેજ્જા’ તે એવ કેટલા સમયની વિગ્રહ ગતિથી
ત્યા ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નનું તાત્પર્ય એવું છે કે-કોઈ સૂક્ષ્મ
અપર્યાપ્તક પૃથ્વીકાયિક એવ કે જે રત્નપ્રમા પૃથ્વીના પૂર્વદિશાના
છેલ્લા ભાગમાં રહેલ છે હવે તે ત્યાંથી મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત
કરીને જે પશ્ચિમદિશાના છેલ્લા ભાગમાં એજ પૃથ્વીમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય
હોય છે તો તે કેટલા સમયવાળા વિગ્રહથી ત્યાં ઉત્પન્ન થશે ? અર્થાત્ મરણ
અને ઉત્પત્તિમાં તેને કેટલો સમય લાગશે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે
કહે છે કે-‘ગોયમા । એગસમહણ વા, દુસમહણ વા, તિસમહણ વા વિગ્રહેણ
ઉવવજ્જેજ્જા’ હે ગૌતમ । તે એક સમયવાળા વિગ્રહથી પણ ત્યાં ઉત્પન્ન

મંતે ! એવં વુચ્ચહ' તત્કેનાથેન હે ભદન્ત ! એવમુચ્યતે, 'એગસમહાણવા, દુસમ-
હાણ વા જાવ ઉવવજ્જેજ્જા' એકસામયિકેન દ્વિસામયિકેન ત્રિસામયિકેનવા વિગ્ર-
હેણોત્પથ્થેત । અત્ર યાવત્પદેન 'ત્રિસામહાણવા વિગ્રહેણં' હત્યસ્ય સંગ્રહઃ, હત્યવા-
ન્તર પ્રશ્નઃ । ભગવાનાહ—'એવં' इत्यादि । 'એવં' સ્વલ્પ ગોચમા ! મએ સત્ત સેઢીઓ
પન્નત્તાઓ' એવં સ્વલ્પ હે ગૌતમ ! મયા સપ્ત શ્રેણયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ । એતત્પ્રકરણં લોક-
નાડી પ્રસ્તીર્યમાવનીયમ્ । શ્રેણીના મતિ સૂક્ષ્મતયા દુર્વિજ્ઞેયત્વાત્ અસર્વજ્ઞેન જન્મ-
મરણયોશ્ચ જ્ઞાનુમતિદુષ્કરત્વાત્ એતાદૃશ્ય શ્રેણી જન્મ મરણં ચ પ્રતિપાદતા ભગવતા
સ્વસ્મિન્ કેવલિત્વં સૂચયાં બભૂવ 'મએ' इति वदता । सप्त श्रेणीरेव विभागशोदर्श-

उत्पन्न हो सकता है । "से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चह एगसमहाण वा
दुसमहाण वा जाव उववज्जेज्जा' हे भदन्त ! ऐसा आप किस कारण
से कहते हैं कि वह एक समय वाले विग्रह से अथवा दो समय वाले
विग्रह से अथवा तीन समयवाले विग्रह से वहां उत्पन्न हो सकता है ?
ऐसा यह अवान्तर प्रश्न है । उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—'एवं सल्लु गोयमा
मए सत्तसेढीओ पन्नत्ताओ' हे गौतम ! मैंने सात श्रेणियां कही हैं ।
यह प्रकरण लोकनाडी को प्रस्तुत करके अर्थात् लोकनाडी का आकार
(नकशा) बना करके समझना चाहिये । श्रेणियां अति सूक्ष्म हैं इससे
उनको जानना बहुत ही कठीन है । वे दुर्विज्ञेय हैं असर्वज्ञ जीव जन्म
और मरण को जान नहीं सकता है । अतः ऐसी श्रेणियों को एवं
जन्म मरण को प्रतिपादन करने वाले भगवान् ने अपने में केवलित्व का
सर्वज्ञत्वका सूचन 'मया' इस पद द्वारा किया है वे सात श्रेणियां इस

થઈ શકે છે એ સમયવાળા વિગ્રહથી પણ ત્યાં ઉત્પન્ન થઈ શકે છે.
અને ત્રણ સમયવાળા વિગ્રહથી પણ ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે. 'સે કેણટ્ટેણં'
મંતે ! એવં વુચ્ચહ એગસમહાણવા' જાવ ઉવવજ્જેજ્જા' હે ભગવન્
આપ એવું શા કારણથી કહેો છો ? કે તે એક સમયવાળા વિગ્રહથી ત્યાં
ઉત્પન્ન થઈ શકે છે. અથવા એ સમયવાળા વિગ્રહથી અથવા ત્રણ સમયવાળા
વિગ્રહથી પણ ત્યાં ઉત્પન્ન થઈ શકે છે ? આ રીતના આ અવાન્તર પ્રશ્નના
ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—'ગોચમા ! મએ સત્ત સેઢીઓ પન્નત્તાઓ'
હે ગૌતમ ! મેં સાત શ્રેણીયો કહી છે. શ્રેણીયો અત્યંત સૂક્ષ્મ છે. તેથી તેને
સમજવું ઘણું કઠણ છે કારણ કે તે દુર્વિજ્ઞેય છે. અસર્વજ્ઞ જીવ જન્મ અને
મરણ ને જાણી શકતા નથી. તેથી એવી શ્રેણીયોને અને જન્મમરણનું પ્રતિ-
પાદન કરવાવાળા ભગવાને પોતાનામાં કેવલિપણાનું—સર્વજ્ઞપણાનું સૂચન 'મએ'
એ પદ દ્વારા કર્યું છે. તે સાત શ્રેણીયો આ પ્રમાણે છે.—'ઉજ્જુયાયયા સેઢી'

યન્નાહ-‘તં જહા’ इत्यादि, ‘तं जहा’ तथा-‘उज्जुयायया सेढी’ ऋज्वायता
 શ્રેણિ: सरला लम्बायमाना या श्रेणि: सा ऋज्वायता श्रेणि: ‘सेढी’ ति शब्द: सर्व-
 अपि अन्वेतव्य: ‘एगयओ वंका’ एकतो वक्रा एकत: कुट्टिछेत्यर्थ: ‘दुहओ वंका’
 द्विधात उभयतो वक्नेति तृतीया श्रेणि रिति३। ‘एगयओ खहा’ एकत: खा-एकस्मिन्
 भागे व्रस नामकनाडी रहिताकाशवती श्रेणि:४ दुहओ खा’ द्विधात उभयत: खा-
 उभय पार्श्वयो खसनाडी रहिताकाशवती श्रेणि: ५, ‘चक्रवाला’ चक्रवाला, मण्ड-
 लाकारसमाना ६, ‘अर्द्ध चक्रवाला’ अर्द्धचक्रवाला-अर्द्धमण्डलाकारेत्यर्थ: ७।
 ता एता: सप्तश्रेणयो भवन्तीति। अथ यदर्धमियं श्रेणिर्दशिता तत्कार्यं दर्शयति-

प्रकार से हैं-‘उज्जुयाययासेढी’ ऋज्वायता श्रेणि-जो सीधी लम्बी
 श्रेणि है वह ऋज्वायता श्रेणी है। श्रेणि यह शब्द सर्वत्र लगा लेना
 चाहिए-‘एगयओ वंका’ एक तरफ जो श्रेणि वक्र होती है वह एकतो
 वक्रा श्रेणी है। ‘दुहओ वंका’ द्विधावक्र श्रेणी जो-श्रेणी दोनों तरफ
 वक्र होती है वह द्विधा वक्र श्रेणी है। ‘एगयओ खहा’ एक तरफ जो
 श्रेणि व्रस नाडी से रहित होती है और केवल आकाशवाली होती
 है ऐसी वह एकत: खा श्रेणी हैं। ‘दुहओ खा’ दोनों तरफ जो श्रेणि
 व्रस नाडी से रहित होती है और केवल आकाशवाली होती है वह
 द्विधा खा श्रेणि है। ‘चक्रवाला’ जो श्रेणि मण्डलाकारवाली होती
 है वह चक्रवाला श्रेणि है। जो श्रेणि उर्द्धमण्डलाकारवाली होती है
 वह श्रेणि अर्द्ध मण्डलाकार वाली होती है, वह श्रेणी अर्द्ध
 चक्रवाला हैं। इस प्रकार से श्रेणियां सात होती हैं। ‘उज्जु आययाए
 सेढीए उववज्जमाणे एगसमएणं विगगहेणं उववज्जेज्जा’ जो पृथिवी-
 कायिक जीव ऋज्वायत श्रेणि से उत्पन्न होता हैं वह एक समय वाले

ઋજ્વાયતા શ્રેણી કે જે સીધી લાંબી શ્રેણી છે શ્રેણિઆ શબ્દ બધે જ લગાડી
 લેવો જોઈએ ‘एगयओ वंका’ એક તરફ જે શ્રેણી વાંકી થાય છે. ‘दुहओ वंका’
 द्विधावक्र શ્રેણી કે જે શ્રેણી બંને તરફથી વાંકી હોય છે, તે દ્વિધાવક્ર શ્રેણી
 કહેવાય છે. ‘एगयओ खहा’ એક તરફ જે શ્રેણી વ્રસનાડી વિનાની હોય છે,
 અને કેવળ આકાશવાળી હોય છે, એની તે એકત: ખા શ્રેણી છે. ‘दुहओखा’
 બંને તરફથી જે શ્રેણી વ્રસનાડી રહિત હોય છે અને કેવળ આકાશવાળી
 હોય છે. તે દ્વિધા ખા શ્રેણી કહેવાય છે ‘चक्रवाला’ જે શ્રેણી મંડલાકાર
 વાળી હોય છે, તે ચક્રવાલા શ્રેણી કહેવાય છે જે શ્રેણી અર્ધ મંડલાકારવાળી
 હોય છે, તે અર્ધ ચક્રવાલા શ્રેણી કહેવાય છે. આ રીતે સાત શ્રેણીયો થાય
 છે. ‘उज्जु आययाए सेढीए उववज्जमाणे एगसमएणं विगगहेणं उववज्जेज्जा’

‘ઉજ્જુ ખાયયા’ ઇત્યાદિ, ‘ઉજ્જુ આયયા સેઢી’ ઉવવજ્જમાણે દસમણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ ઋજ્વાયતયા શ્રેણ્યા ઉત્પદ્યમાનો જીવ એક સામયિકેન વિગ્ગહેણ ઉત્પદ્યેત્ । યદા મરણ સ્થાનાપેક્ષયા ઉત્પત્તિસ્થાનં સમશ્રેણ્યાં ભવતિ, તદા ઋજ્વાયતા શ્રેણિ ભવતિ । તથા ઋજ્વાયત શ્રેણ્યા ગચ્છતો જીવસ્ય એક સામયિકી ગતિ ભવતીતિ યાવઃ । ‘એગઓ વંકા’ સેઢી’ ઉવવજ્જમાણે દસમણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ એકતો વક્રયા શ્રેણ્યા ઉત્પદ્યમાનો જીવો દ્વિસામયિકેન વિગ્ગહેણ ઉત્પદ્યેત્ । યદા તુ મરણસ્થાનાપેક્ષયા સમુત્પત્તિ સ્થાનમેકપતરે વિશ્રેણ્યાં વર્તેતે તદા એકતો વક્રા ગતિઃ સ્પાત્, તત્ર ચ સમયદ્વયેન ગતિ ભવતિ ઇતિ યાવ । ‘દુહઓ વંકા’ સેઢી’ ઉવવજ્જમાણે તિ સમણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા, દ્વિધાતો વક્રયા શ્રેણ્યા ઉત્પદ્યમાનો જીવ સ્ત્રિસામયિકેન વિગ્ગહેણ ઉત્પદ્યેત્ । યદા તુ મરણ

વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ—તાત્પર્ય હસકા એસા હૈ કિ જબ મરણ સ્થાન કી અપેક્ષા ઉત્પત્તિ સ્થાન સમશ્રેણિ મેં હોતા હૈ તબ ઋજ્વાયત શ્રેણિ હોતી હૈ । હસ ઋજ્વાયત શ્રેણિ સે ગમન કરતા હુઆ જીવ એક સમય કી ગતિ ચાલા હોતા હૈ । ‘એગઓ વંકા’ સેઢી’ ઉવવજ્જમાણે દસમણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ ઝીર જબ જીવ એક તો વક્ર શ્રેણિ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ તબ વહ દો સમય ચાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ । તાત્પર્ય યહ હૈ કિ જબ મરણસ્થાન સે સમુત્પત્તિ સ્થાન એક પ્રતર મેં વિશ્રેણી મેં હોતી હૈ તબ એકતો વક્રાગતિ હોતી હૈ । હસ શ્રેણિ મેં સમય દ્વય સે ગતિ હોતી હૈ । ‘દુહઓ વંકા’ સેઢી’ ઉવવજ્જમાણે તિસમણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ જીવ જબ દ્વિધાવક્ર શ્રેણિ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ તબ

જે પૃથ્વીક ચિક્ર ળવ ઋજ્વાયત શ્રેણીથી ઉત્પન્ન થાય છે તે એક સમયવાળા વિશ્રુથી ઉત્પન્ન થાય છે.

કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે—જ્યારે મરણ સ્થાનની અપેક્ષાથી ઉત્પત્તિ સ્થાન સમ શ્રેણીમાં હોય છે, ત્યારે ઋજ્વાયત શ્રેણી કહેવાય છે. આ ઋજ્વાયત શ્રેણીથી જતો એવો ળવ એક સમયની ગતિવાળો હોય છે. ‘એગઓ વંકા’ સેઢી’ ઉવવજ્જમાણે દસમણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ અને જ્યારે ળવ એકતો વક્રશ્રેણીથી ઉત્પન્ન થાય છે, ત્યારે તે બે સમયવાળા વિશ્રુથી ઉત્પન્ન થાય છે. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે—જ્યારે મરણ સ્થાનમાં ઉત્પન્ન થતી એક પ્રતરમાં વિશ્રેણીમાં હોય છે ત્યારે એકતો વક્રા ગતિ થાય છે. આ શ્રેણીમાં બે સમયથી ગતિ થાય છે. ‘દુહઓ વંકા’ સેઢી’ ઉવવજ્જમાણે તિસમણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ ળવ જ્યારે દ્વિધાવક્રશ્રેણીથી ઉત્પન્ન થાય છે,

સ્થાનાત્સમુત્પત્તિ સ્થાનમ્ અધસ્તને ઉપરિતને વા પ્રતરે વિશ્રેણ્યાં ભવેત્ તદા દ્વિ-
વંક્રાશ્રેણિઃ સ્યાત્, તત્ર ચ સમયત્રયેન સમુત્પત્તિસ્થાનસ્ય પ્રાપ્તિર્ભવેદિતિ ભાવઃ ।

‘સે તેણદ્વેણં ગોયમા ! જાવ ઉવવજ્જેજ્જા’ તત્તેનાર્યેન હે ગૌતમ ! યાવદ્ ઉત્પ-
દ્યેત । અત્ર યાવત્પદેન એવમુચ્યતે, એકસામયિકેન વા, દ્વિસામયિકેન વા,
ત્રિસામયિકેન વા, વિગ્રહેણોત્પન્નસ્ય પ્રકરણસ્ય સંગ્રહો ભવતિ । ‘અપ્પજ્જત્ત સુહુમ
પુઢવીકાહયા ણં મંતે !’ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાઃ સ્વલ્પ ભદન્ત ! ‘હમીસે
રયણપ્પમાણ પુઢવીણ’ એતસ્થા : રત્નપ્રમાયાઃ પૃથિવ્યાઃ, ‘પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે
સમોહણ’ પૌરસ્ત્યે ચરમાન્તે સમવહતઃ મરણાન્તિકસમુદ્ઘાતેન સમવહનનં કૃતવાન્
મૃત ઇત્યર્થઃ । ‘સમોહણિત્તા જે મવિણ હમીસે રયણપ્પમાણ પુઢવીણ’ સમવહત્ય

વહ ત્રીન સમયવાલે વિગ્રહ સે વહાં ઉત્પન્ન હોતા હૈ । તાત્પર્ય યહ હૈ
કિ જવ મરણ સ્થાન સે સમુત્પત્તિ સ્થાન નીચે કે અથવા ઉપર કે પ્રતર
મેં વિશ્રેણી મેં હોતા હૈ તવ દ્વિવક્રા શ્રેણી હોતી હૈ । વહાં ત્રીન સમય મેં
સમુત્પત્તિ સ્થાન કી પ્રાપ્તિ હોતી હૈ । ‘સે તેણદ્વેણં ગોયમા ! જાવ ઉવવ-
જ્જેજ્જા’ હસ કારણ હે ગૌતમ ! મૈંને પૈસા કહા હૈ કિ વહ એક સમય
વાલે દો સમય વાલે અથવા ત્રીન સમય વાલે વિગ્રહ સે વહ ઉત્પન્ન
હો સકતા હૈ ।

‘અપ્પજ્જત્ત સુહુમ પુઢવીકાહયા ણં મંતે !’ હે ભદન્ત ! કોઈ અપ-
ર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવ હમીસે રયણપ્પમાણ પુઢવીણ’ હસ
રત્નપ્રમા પૃથિવી કે ‘પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે’ પૂર્વદિશા કે અન્તિમ ભાગમેં
‘સમોહણ’ મરા ‘સમોહણિત્તા’ ઓર મરકર વહ ‘જે મવિણ હમીસે રય-

ત્યારે તે ત્રણ સમયવાળા વિગ્રહ (શરીર)થી ઉત્પન્ન થાય છે. કહેવાનું
તાત્પર્ય એ છે કે—ત્યારે મરણ સ્થાનથી ઉત્પત્તિસ્થાન નીચેના અથવા
ઉપરના પ્રતરમાં વિશ્રેણીમાં હોય છે. ત્યારે ‘દ્વિધાતોવક્રા’ શ્રેણી થાય છે ત્યાં
ત્રણ સમયમાં ઉત્પત્તિ સ્થાનની પ્રાપ્તિ થાય છે. ‘સે તેણદ્વેણં ગોયમા !
જાવ ઉવવજ્જેજ્જા’ તે કારણથી હે ગૌતમ ! મેં એવું કહ્યું છે કે—તે એક સમયવાળા
બે સમયવાળા અથવા ત્રણ સમયવાળા વિગ્રહ-શરીરથી ઉત્પન્ન થઈ શકે છે.

‘અપ્પજ્જત્ત સુહુમ પુઢવીકાહયાણં મંતે !’ હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્ત
સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક એવ ‘હમીસે રયણપ્પમાણ પુઢવીણ’ આ રત્નપ્રમા પૃથ્વીના
‘પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે’ પૂર્વ દિશાના અન્તિમ ભાગમાં ‘સમોહણ’ મરણ પામે
‘સમોહણિત્તા’ અને મરણ પામીને ‘જે મવિણ હમીસે રયણપ્પમાણ પુઢવીણ પચ્ચ-

મારણાન્તિક સમુદ્ધાતં કૃત્વા યો મગ્યઃ—યોગ્યઃ એતસ્યા રત્નપ્રમાણાઃ, પૃથિવ્યાઃ
 ‘પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે’ પાશ્ચાત્યે ચરમાન્તે, ‘પહ્જત્ત સુહુમ પુઢવીકાઈયત્તાણ
 ઉવવજ્જિત્તણ’ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકતયા ઉત્પત્તુમ્, ‘સે ણં મંતે ! કહસમહ-
 ણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ સં સ્વલુ મદન્ત ! જીવઃ—કતિ સામયિકેન વિગ્ગહેણો-
 ત્પથેતેતિ પ્રશ્નઃ । મગવાનાહ—‘ગોયમા’ इत्यादि । ‘गौयमा’ हे गौतम ! ‘एगसम
 हएण वा, सेसं तंचेव’ एकसामयिकेन वा शेषं तदेव प्रतिवचनावसरे पूर्वप्रकरण-
 मेव अत्राध्येतव्यम् । हे गौतम ! एकसामयिकेन वा विग्रहेण, द्विसामयिकेन वा
 विग्रहेण, त्रिसामयिकेन वा, विग्रहेण उत्पद्येत । कियत्पर्यन्तं पूर्वप्रकरणम् इह
 ज्ञातव्यं तत्राह—‘जाव’ इत्यादि । जाव से तेणट्ठेणं’ यावत्तत्तेनार्थेन, अयमाश्रयः
 द्विसामयिकेन वेत्पारभ्य ‘से केणट्ठेणं’ इत्यादि प्रश्नस्तदुत्तरं चात्र पूर्ववद्वाच्यम् ।
 ‘से तेणट्ठेणं जाव विगगहेणं उववज्जेज्जा’ यावत् हे गौतम ! तत्तेनार्थेन एवमुच्यते—
 एकसामयिकेन वा, द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, विग्रहेण उत्पद्येत इति २ ।

જાવપાશ્ચાણ પુઢવીણ પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે પહ્જત્તસુહુમ પુઢવિકાઈય-
 ત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ’ इस्ती रत्नप्रभा पृथिवी के पश्चिमदिशा के अन्तिम
 भाग में पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न होने के योग्य
 हुआ तो ‘से णं मंते ! कहसमहएणं विगगहेणं उववज्जेज्जा’ हे भदन्त !
 वह कितने समय वाले विग्रह से वहां उत्पन्न होता है ? उत्तर में
 प्रभुश्री कहते हैं—‘गौयमा ! एगसमहएण वा सेसं तं चेव’ हे गौतम !
 वह वही एक समयवाले विग्रह से अथवा दो समय वाले विग्रह से
 अथवा तीन समय वाले विग्रह से उत्पन्न होता है । ‘जाव से तेणट्ठेणं
 जाव विगगहेणं उववज्जेज्जा’ ऐसा यह सब कथन वहां तक कर लेना
 चाहिये कि जहाँ गौतमस्वामी के पूछने पर प्रभुश्री ने गौतमस्वामी से
 ऐसा कहा है कि हे गौतम ! मैंने इस कारण से ऐसा कहा है कि वह

ત્થિમિલ્લે ચરિમંતે પહ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાઈયત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ’ આ રત્નપ્રભા
 પૃથ્વીના પશ્ચિમ દિશાના છેલ્લા ભાગમાં પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક પણુથી
 ઉત્પન્ન થવાને થે જ્ય હોય તો—‘સે ણં મંતે ! કહસમહણ વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’
 હે ભગવન્ તે કેટલા સમયવાળા વિગ્રહ (શરીર)થી ત્યાં ઉત્પન્ન થય છે ?
 આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—ગોયમા । એગસમણ વા સેસં તં ‘ચેવ’
 હે ગૌતમ ! તે ત્યાં એક સમયવાળા વિગ્રહ (શરીર)થી અથવા બે સમયવાળા
 વિગ્રહથી ઉત્પન્ન થાય છે ‘જાવ સે તેણટ્ઠેણ જાવ વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ આ
 પ્રમાણેનું તે સઘળું કથન ત્યાં સુધી કહેવું જોઈએ જ્યાં સુધી ગૌતમસ્વામીના
 પ્રશ્નવાળી પ્રભુશ્રી એ ગૌતમસ્વામીને એવું કહ્યું છે કે—હે ગૌતમ ! મેં

‘એવં અપજ્જત્ત સુહુમ પુઢવીકાઙ્ગો પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહણાવેત્તા પન્નચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે વાયરપુઢવીકાઙ્ગસુ અપજ્જત્તેસુ ઉવ્વાપ્પવ્વો’ એવં યથા-અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકસ્ય રત્નપ્રમાપૃથિવ્યાઃ પૂર્વમાગાત્ સમવહનનાનન્તરં રત્નપ્રમાપૃથિવ્યાઃ પશ્ચિમભાગે પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવી કાયિકેષુ ઉપપાતો દર્શિત સ્તથૈવ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકઃ તં પૌરસ્ત્યે ચરમાન્તે સમવધાત્ય-તસ્ય સમુદ્ધાતં કરિયિત્વા પાશ્ચાત્યે ચરમાન્તે વાદરપૃથિવીકાયિકેષુ અપર્યાપ્તકેષુ ઉપપાતયિતવ્યઃ । અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકઃ સ્વલુ મદન્ત ! અસ્યા રત્નપ્રમાયાઃ પૃથિવ્યાઃ પૂર્વ-ચરમ ભાગે સમવહતઃ સમવહત્ય યઃ સ્વલુ રત્નપ્રમાયાઃ પશ્ચિમે ભાગે અપર્યાપ્ત વાદર

એક સમયવાલે દો સમયવાલે અથવા ત્રીણ સમય વાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ।૨

‘એવં અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવિકાઙ્ગો પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહણા-વેત્તા પન્નચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે વાયરપુઢવીકાઙ્ગેસુ અપજ્જત્તેસુ ઉવ્વા-પ્પવ્વો’ જૈસા અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક કા રત્નપ્રમા પૃથિવી કે પૂર્વ ભાગ સે સમુદ્ધાત હોને કે અનન્તર રત્નપ્રમા પૃથિવી કે પશ્ચિમ ભાગ મેં પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકોં મેં ઉપપાત દિલાયા હૈ ઉત્તી પ્રકાર સે-વૈસા હી-અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકકા પૂર્વદિશા કે ચર-માન્ત મેં સમુદ્ધાત કરવા કર પશ્ચિમદિશા કે ચરમાન્ત મેં અપર્યાપ્ત વાદર પૃથિવીકાયિકોં મેં ઉત્પાદ દિલ્લાના ચાહ્યે । હસ સમ્બન્ધ મેં આલાપ પ્રકાર એસા હૈ-હે મદન્ત ! કોઈ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક જીવ રત્નપ્રમા પૃથિવી કે પૂર્વ ચરમ ભાગ મેં મરા ઓર ઘરકર વહ રત્ન-પ્રમાપૃથિવી કે પશ્ચિમ ભાગ મેં અપર્યાપ્ત વાદર પૃથિવીકાયિકોં મેં ઉત્પન્ન

તે કારણથી એવું કહ્યું છે કે-તે એક સમયવાળા, બે સમયવાળા અથવા ત્રણ સમયવાળા વિગ્રહ (શરીર)થી ઉત્પન્ન થાય છે.

‘એવં અપજ્જત્ત સુહુમ પુઢવિકાઙ્ગો પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહણાવેત્તા પન્નચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે ! વાયરપુઢવિકાઙ્ગેસુ અપજ્જત્તેસુ ઉવ્વાપ્પવ્વો’ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વિકાયિકનો રત્નપ્રભા પૃથ્વિના પૂર્વ ભાગથી સમુદ્ધાત થયા પછી રત્નપ્રભા પૃથ્વિના પશ્ચિમ ભાગમાં પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકોના ઉપપાત બે પ્રમાણે બતાવ્યો છે, એજ પ્રમાણે અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વિકાયિક નો પૂર્વ દિશાના ચરમાન્તમાં સમુદ્ધાત કરાવીને પશ્ચિમ દિશાના ચરમાન્તમાં અપર્યાપ્તક વાદર પૃથ્વિકાયિકોના ઉત્પાદ બતાવેલો જોઈએ. આ સબધમાં આલાપનો પ્રકાર આ પ્રમાણે નો છે-હે ભગવન કોઈ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મપૃથ્વી કાયિક જીવ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમ ભાગમાં મરણ પામે અને મરણ

પૃથિવીકાયિકેષુ સમુત્પત્તુ યોગ્યઃ સ સ્વલુ ભદન્ત ! કિયત્સામયિકેન વિગ્રહે-
જોત્પદ્યતે ? હે ગૌતમ ! યદિ ઋજ્વાયતયા શ્રેણ્યા ઉત્પદ્યતે, તદા એકસામયિક-
વિગ્રહેણ, એકતો વક્રયા જાયમાનો દ્વિસામયિકેન વિગ્રહેણ, દ્વિધાતો વક્રયા જાય-
માનસ્ત્રિસામયિકેન વિગ્રહેણ જાયતે ઇત્યાદિકં પૂર્વવદેવ સર્વજ્ઞાતવ્યમિતિ ૩ ।

તાહે તેસુ એવ પજ્જત્તણ્ણુ ૧ તદા તેણ્ણેવ પર્યાપ્તકેષુ ઉપપાતો વક્તવ્યઃ ।

તથાહિ—હે ભદન્ત ! અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકઃ રત્નપ્રભાયાઃ પશ્ચિમે-
ચરમાન્તે પર્યાપ્તવાદર પૃથિવીકાયિકતયા ઉત્પત્તિયોગ્યો ભવેત્ । સ સ્વલુ કિય-
ત્સામયિકેન વિગ્રહેણ ઉત્પદ્યેત ? હે ગૌતમ ! એકસામયિકેન વા દ્વિસામયિકેન વા,
ત્રિસામયિકેન વા, વિગ્રહેણ ઉત્પદ્યેત ઇત્યાદિકં સર્વ પૂર્વવદેવ જ્ઞાતવ્યમિતિ ૪ ।

હોને કે યોગ્ય હુઆ તો હે ભદન્ત ! વહ વહાં કિતને સમય વાલે વિગ્રહ
સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ? ગૌતમ ! યદિ વહ ઋજ્વાયત શ્રેણિ સે વહાં ઉત્પન્ન
હોતા હૈ તો એક સમય વાલે વિગ્રહ સે, એકતો વક્રા શ્રેણિ સે યદિ
ઉત્પન્ન હોતા હૈ તો દો સમયવાલે વિગ્રહ સે ઓર યદિ વહ વહાં દ્વિધા
તો વક્રા શ્રેણિ સે ઉત્પન્ન હુઆ હૈ તો વહ ત્રીન સમય વાલે વિગ્રહ સે
ઉત્પન્ન હોતા હૈ ઇત્યાદિ સવ કથન પૂર્વોક્ત જૈસા હી જાનનાં ચાહિયે ૩ ।

‘તાહે તેસુ એવ પજ્જત્તણ્ણુ’ હે ભદન્ત ! કોઈ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ
પૃથિવીકાયિક જીવ રત્નપ્રભાપૃથિવી કે પૂર્વચરમ ભાગ મેં મરા ઓર મર
કર વહ રત્નપ્રભા પૃથિવી કે પશ્ચિમ ચરમભાગ મેં પર્યાપ્ત વાદર પૃથિવી-
કાયિકોં મેં ઉત્પન્ન હોંને કે યોગ્ય હુઆ તો હે ભદન્ત ! વહ કિતને
સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ? હે ગૌતમ ! વહ વહાં એક

પામીને તે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના છેલ્લા ભાગમાં અપર્યાપ્ત વાદર પૃથિવિકાયિક-
કોમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયો હોય તો હે ભગવન્ તે ત્યાં કેટલા સમય
વાળા વિગ્રહ (શરીર) થી ઉત્પન્ન થાય છે આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે
છે કે હે ગૌતમ ! જો તે ઋજ્વાયત શ્રેણીથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે, તો એક
સમયવાળા વિગ્રહથી (શરીર)થી, એકતોવક્રા શ્રેણીથી ઉત્પન્ન થાય છે. તો
તે ત્રણ સમયવાળા વિગ્રહથી ઉત્પન્ન થાય છે. વિગેરે પ્રકારનું સઘળું કથન
પહેલાં કહ્યાં પ્રમાણે જ સમજી લેવું. ૩

‘તાહે તેસુ એવ પજ્જત્તણ્ણુ’ હે ભગવન્ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથિવિકાયિક
જીવ રત્નપ્રભાપૃથ્વીના પૂર્વચરમ ભાગમાં મરણ પામે અને મરીને તે રત્નપ્રભા
પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમભાગમાં પર્યાપ્ત વાદર પૃથિવિકાયિકોમાં ઉત્પન્ન થવાને
યોગ્ય થતા હોય તો હે ભગવન્ તે કેટલા સમયવાળા વિગ્રહથી ઉત્પન્ન થાય

‘એવં આઝ્કાઙ્ણસુ ચત્તારિ આલાવગા-સુહુમેહિં અપજ્જત્તર્હિં ૧, તાહે પજ્જત્તર્હિં ૨, વાયરેહિં અપજ્જત્તર્હિં ૩, તાહે પજ્જત્તર્હિં ઉવ્વાય્વો ૪, એવં પૃથિવી કાયવદેવ અપ્પાયિકેષુ ચત્તાર આલાપકાઃ, સૂક્ષ્મૈરપર્યાપ્તકૈઃ ૧, તદા પર્યાપ્તકૈઃ ૨, વાદરૈઃ અપર્યાપ્તકૈઃ ૩, તદા પર્યાપ્તકૈઃ ૪, ઉપપાતયિત્વ્યઃ । હે ભદન્ત ! અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકઃ અસ્યા રત્નપ્રભાયાઃ પૃથિવ્યાઃ પૂર્વચરમાન્તે સમવહતઃ સમવહત્ય રત્નપ્રભાયાઃ પશ્ચિમે ચરમાન્તે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્માપ્કાયિકતયા સમુત્પત્તિ-યોગ્યઃ સ કિયત્સામયિકેન વિગ્રહેણોત્પદ્યેત ?’ ઇતિ પ્રશ્નં કૃત્વા હે ગૌતમ ! એક સામયિકેન યાવત્ ત્રિસામયિકેન વિગ્રહેણોત્પદ્યેત । ઇત્યાદ્યુત્તરં પૂર્વવદેવેતિ પ્રથમ

સમય વાલે વિગ્રહ સે અથવા દો સમય વાલે વિગ્રહ સે અથવા ત્રીણ સમય વાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ । ઇત્યાદિ સર્વ કથન પૂર્વ કે જૈસા હી જાનના ચાહિયે । ૪॥

‘એવં આઝ્કાઙ્ણસુ ચત્તારિ આલાવગા સુહુમેહિં અપજ્જત્તર્હિં ૧ તાહે પજ્જત્તર્હિં ૨ વાયરેહિં અપજ્જત્તર્હિં ૩ તાહે પજ્જત્તર્હિં ઉવ્વા-ય્વો ૪’ ઇસી પ્રકાર સે અપ્કાયિકોં કે ચાર આલાપક કહલેના ચાહિયે । જૈસે-હે ભદન્ત ! કોઈ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવ ઇસ રત્ન-પ્રભા પૃથિવી કે પૂર્વ ચરમાન્ત મેં મરા ઓર મરકર વહ રત્નપ્રભા પૃથિવી કે પશ્ચિમ ચરમાન્ત મેં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિકરૂપ સે ઉત્પત્તિ કે યોગ્ય હુઆ તો હે ભદન્ત ! વહ વહાં કિતને સમય વાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ? હે ગૌતમ ! વહ વહાં એક સમયવાલે વિગ્રહ સે બી ઉત્પન્ન હોતા હૈ, દો સમયવાલે વિગ્રહ સે બી ઉત્પન્ન હોતા હૈ ઓર

છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-હે ગૌતમ ! તે ત્યાં એક સમયવાળા વિગ્રહથી ઉત્પન્ન થાય છે, અથવા બે સમયવાળા વિગ્રહથી અથવા ત્રણ સમયવાળા વિગ્રહથી ઉત્પન્ન થાય છે વિગેરે સંબંધે કથન પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે જ સમજવું ॥ ૪॥

‘એવં આઝ્કાઙ્ણસુ ચત્તારિ આલાવગા સુહુમેહિં અપજ્જત્તર્હિં ઉવ્વાય્વો ૪’ આજ પ્રમાણે અપ્કાયિકોના સળધમાં ચાર આલાપકો કહેવા બેઠે એ બેમ કે-હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક જીવ આ રત્નપ્રભા પૃથિવીના પૂર્વ ચરમાન્ત ભાગમાં મરણ પામે અને મરણ પામીને તે રત્નપ્રભા પૃથિવીના પશ્ચિમ ચરમાન્ત ભાગમાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થવો હોય તો હે ભગવન્ તે ત્યાં કેટલા સમયવાળા વિગ્રહથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-હે ગૌતમ ! તે ત્યાં એક સમયવાળા વિગ્રહથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે. બે સમયવાળા વિગ્રહથી

આલોપકઃ ૧, હે ભદન્ત ! અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકઃ રત્નપ્રમા પૂર્વચરમાન્તે સમવહત્ય રત્નપ્રમા પશ્ચિમચરમાન્તે પર્યાપ્ત સૂક્ષ્માપ્કાયિકતયા ઉત્પત્તિ યોગ્યઃ સ કિયત્સામાયિકવિગ્રહેણ ઉત્પદ્યેત ૧, ગૌતમ ! એકસામાયિકેન વા યાદત્ ત્રિસા-મયિકેન વિગ્રહેણ ઉત્પદ્યેત ૨, હે ભદન્ત ! અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકો રત્નપ્રમા પૂર્વચરમાન્તે સમવહત્ય રત્નપ્રમા પશ્ચિમ ચરમાન્તે અપર્યાપ્તવાદરાપ્કાયિકતયા ઉત્પત્તિયોગ્યઃ સ કિયત્સામાયિકેન વિગ્રહેણોત્પદ્યેત ? ઉત્તરમ્ એવમેવેતિ તૃતીય આલોપકઃ ૩, હે ભદન્ત ! અપર્યાપ્ત

ત્રીન સમય વાલે વિગ્રહ સે બી હોતા હૈં હત્યાદિ રૂપ સે પ્રદ્નન ઓર ઉત્તર પૂર્વોક્ત અનુસાર જાનના ચાહિયે એસા યહ પ્રથમ આલોપક હૈં । હે ભદન્ત ! કોઈ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવ રત્નપ્રમા કે પૂર્વ ચરમાન્ત મેં મરા ઓર રત્નપ્રમા કે હી પશ્ચિમ ચરમાન્ત મેં પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક રૂપ સે ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હુઆ તો હે ભદન્ત ! વહ વહાં કિતને સમય વાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈં ? હે ગૌતમ ! વહ વહાં એક સમય વાલે વિગ્રહ સે બી ઉત્પન્ન હોતા હૈં દો સમય વાલે વિગ્રહ સે બી ઉત્પન્ન હોતા હૈં । ત્રીન સમય વાલે વિગ્રહ સે બી ઉત્પન્ન હોતા હૈં ઓર ચાર સમય વાલે વિગ્રહ સે બી ઉત્પન્ન હોતા હૈં એસા યહ દ્વિતીય આ-લોપક હૈં ૨ । હે ભદન્ત ! કોઈ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવ રત્નપ્રમા પૃથિવી કે પશ્ચિમ ચરમાન્ત મેં વાદર અપર્યાપ્ત રૂપ સે ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હુઆ તો હે ભદન્ત ! વહ વહાં કિતને સમય કે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોગા ? ગૌતમ હસ વિષય મેં ઉત્તર જૈસા ડપર કહા ગયા હૈં

પણુ ઉત્પન્ન થાય છે, અને ત્રણ સમયવાળા વિગ્રહથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, ઇત્યાદિ પ્રકારથી પ્રશ્ન અને ઉત્તર પહેલાં કહ્યાં પ્રમાણે સમજવા. એ પ્રમાણેનો આ પહેલો આલોપક કહ્યો છે.

હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક જીવ રત્નપ્રમા પૃથિવીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મરણ પામે અને રત્નપ્રમા પૃથિવીના જ પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિકપણથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય બન્યો હોય તો હે ભગવન્ તે ત્યાં એક સમયવાળા વિગ્રહથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, બે સમયવાળા વિગ્રહથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, એજ પ્રમાણેનો આ બીજો આલોપક કહેલ છે. ૨.

હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક જીવ રત્નપ્રમા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મરણ પામે અને મરણ પામીને તે રત્નપ્રમા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં વાદર અપર્યાપ્ત રૂપથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયો હોય તો હે ભગવન્ તે ત્યાં કેટલા સમયના વિગ્રહથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં

સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકઃ રત્નપ્રભા પૂર્વચરમાન્તે સમવહત્ય રત્નપ્રભા ચરમાન્તે પર્યાપ્ત
વાદરાપ્કાયિકતયા ઉત્પત્તિ યોગ્યો વિદ્યતે સ ક્રિયત્સામયિકેન વિગ્રહેણ સમુત્પ-
દ્યેત इति પ્રશ્નસ્યોત્તરં પૂર્વવદેવેતિ ચતુર્થ આલાપકઃ ૪, તદેવં ચત્વાર આલાપકા
અપ્કાયિકેષુ સમુત્પદ્યમાનસ્ય ભવન્તીતિ । ‘एवं चेव सुहुमतेउकाइएहि वि अपज्ज-
त्तएहि ताहे पज्जत्तएहि उववाएयव्वो’ એવમેવ સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિકૈરપિ અપર્યાપ્તકૈ
સ્તદેવ પર્યાપ્તકૈ રૂપપાતયિતઃ ।

તથાહિ-અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકઃ સ્વલુ ભદન્ત ! રત્નપ્રભાપૂર્વચર-
માન્તે સમવહત્ય રત્નપ્રભાયાઃ પશ્ચિમચરમાન્તે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક-
વૈસા હી હૈ । એસા યહ તૃતીય આલાપક હૈ । હે ભદન્ત ! કોઈ અપર્યાપ્તક
સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવ રત્નપ્રભા પૃથિવી કે પૂર્વ ચરમાન્ત મેં મરા
ઔર વહ રત્નપ્રભા પૃથિવી કે પશ્ચિમ ચરમાન્ત મેં પર્યાપ્ત વાદર અપ્કા-
યિક રૂપ સે ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હુઆ તો વહાં પર વહ કિતને સમય;
વાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ? હે ગૌતમ ! હસ સમ્બન્ધ મેં ભી ઉત્તર
ઝાર મેં કહે ગયે અનુસાર હી જાનના ચાહિયે । હસ પ્રકાર સે યહ
ચતુર્થ આલાપક હૈ । યહી વાત ‘સુહુમેહિં અપજ્જત્તएहि’ આદિ સૂત્રપાઠ
દ્વારા પ્રકટ કી ગઈ હૈ । ‘एवचेव सुहुमतेउकाइएहि वि अपज्जत्तएहि’
તાહે પજ્જત્તएहि ઉવવાएयव्वો’ હસી પ્રકાર સે સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિક અપર્યાપ્ત
ઔર પર્યાપ્ત મેં ઉપગોષ કહના ચાહિયે । જૈસે-હે ભદન્ત ! કોઈ અપર્યાપ્તક

પ્રભુશ્રી કહે છે કે-ગૌતમ ! આ સંબંધ નો ઉત્તર ઉપર કહ્યો છે તેજ પ્રમાણે
છે તેમ સમજવું એ રીતે આ ત્રીજો આલાપક કહેલ છે. ૩

હે ભગવન્ કાઈ અપર્યાપ્તક અપ્કાયિક જીવ રત્નપ્રભાપૃથ્વીના પૂર્વ
ચરમાન્તમાં મરણુપામે અને મરીને તે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં
પર્યાપ્તબાદર અપ્કાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય બન્યો હોય તો તે ત્યાં
કેટલા સમયવાળા વિગ્રહથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરનાં પ્રભુશ્રી
કહે છે કે-હે ગૌતમ ! આ સંબંધમાં પણ ઉત્તર ઉપર કહ્યા પ્રમાણે જ
સમજવો, આ રીતે આ ચોથો આલાપક કહેલ છે ૪ એજ વાત ‘સુહુમેહિં
અપજ્જત્તएहि’ વિગેરે સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ કરેલ છે

‘एवं चेव सुहुम तेउ काइएहि वि अपज्जत्तएहि ताहे पज्जत्तएहि उववाएयव्वो’
એજ પ્રમાણે સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક અપર્યાપ્ત અને પર્યાપ્તમાં કહેવા બોધ્યે.
એટલે કે-અપર્યાપ્ત અને પર્યાપ્તના ભેદને લઈને સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિકનું કથન
કરવું બોધ્યે અપ્કાયિકના કથન પ્રમાણે જ આ તેજસ્કાયિકના કથનમાં પણ
ચાર આલાપકો થાય છે. જેમ કે-હે ભગવન્ કાઈ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક

તયા સમુત્પત્તિયોગ્યો વિચતે સ કિયત્ સામયિકવિગ્રહેણ ઉત્પચતે ત્યાદિ
ક્રમેણ પૂર્વોદિત પ્રશ્નોત્તરાશ્યાં પ્રથમ આલાપકઃ ૧, સ એવ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ તેજ-
સ્કાયિકેષુ સમુત્પત્તિયોગ્યઃ इत्यादि क्रमेण द्वितीय आलापकः ज्ञ तव्यः । अप-
ज्जत्त सुहुम पुढवीकाइएणं भंते !' अपर्याप्तसूक्ष्म पृथिवीकायिकः खलु भदन्त !
'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' एतस्या रत्नप्रभायाः

સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવ રત્નપ્રભા કે પૂર્વ ચરમાન્ત મેં મરા ઓર મર
કર વહ રત્નપ્રભાપૃથિવી કે પશ્ચિમ ચરમાન્ત મેં સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક કે
અપર્યાપ્ત રૂપ સે ઉત્પત્તિ કે યોગ્ય હુઆ તો વહ હે ભદન્ત ! કિતને સમય
વાલે વિગ્રહ સે વહાં ઉત્પન્ન હોતા હૈં ? इत्यादि क्रम से पूर्व में कहे गये
प्रश्न और उत्तरों को लेकर यहाँ प्रथम आलापक कह लेना चाहिये ।
हे भदन्त ! कोई अपर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव रत्नप्रभा के
पूर्व चरमान्त में मरा और मरकर वह रत्नप्रभापृथिवी के पश्चिम चर-
मान्त में पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिकों में उत्पन्न होने के योग्य हुआ तो
वह वहाँ कितने समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है इत्यादि क्रम से
द्वितीय आलापक होता है यहाँ जो बादर अपर्याप्त और बादर पर्याप्त
में उत्पन्न होने के सम्बन्ध में इसके जो दो भंग नहीं कहे गये हैं उसका
कारण वहाँ बादर तेजस्कायिकों का अभाव है । 'अपज्जत्त सुहुम पुढवी
काइएणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते
समोहए' हे भदन्त ! कोई अपर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव इस

જીવ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મરે અને મરીને તે રત્નપ્રભા
પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં એજ રૂપથી ઉત્પત્તિને યોગ્ય થયેલ હોય તો તે
હે ભગવન્ કેટલા સમયવાળા વિગ્રહથી ઉત્પન્ન થાય છે ? વિગેરે ક્રમથી પહેલા
કહેલા પ્રશ્નો અને ઉત્તરો લઈને અહિયાં પહેલો આલાપક કહેવો જોઈએ.

હે ભગવન્ કેઈ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક જીવો રત્નપ્રભા પૃથ્વીના
પૂર્વચરમાન્તમાં મરણપામે અને મરીને તે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમચરમાન્તમાં
પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિકમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય બન્યો હોય તો તે હે ભગવન્
કેટલા સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? વિગેરે ક્રમથી બીજો આલાપકો
સમજવો. અહિયાં જે બાદર અપર્યાપ્ત અને બાદર પર્યાપ્તમાં ઉત્પન્ન થવાના
સમ્બન્ધમાં તેના જે ભાંગો કહ્યા નથી. તેનું કારણ એ છે કે-ત્યાં બાદર તેજસ્કા-
યિકોનો અભાવ છે 'અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાઈણં મંતે ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए
पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' હે ભગવન્ કેઈ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવ

પૃથિવ્યાઃ પૌરુષ્યે ચરમાન્તે સમવહતો મારણાન્તિકસમુદ્વાતેન મૃત્ત્વમ્ ઇત્યર્થઃ ।
'સમોહણિતા જે ભવિષ્ય મણુસસેત્તે' સમવહત્ય-મૃત્ત્વા, યો મવ્યો યોગ્યઃ મનુષ્ય
ક્ષેત્રે, 'અપજ્જત વાયરતેઝ્જાહ્યત્તાણ ઉવ્વજ્જિત્તણ' અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિક
તયા ઉત્પત્તું યોગ્ય ઇતિ પૂર્વેણ સમ્બન્ધઃ 'સે ણં મંતે ! કહ્સમ્મણ્ણં વિગ્ગહેણં ઉવ્વ-
જ્જેજ્જા' સ સ્વલુ ભદન્ત ! કતિ સામયિકેન વિગ્ગહેણોત્પદ્યતેતિ પ્રશ્નઃ । ઉત્તરમાહ-
'સેસં તં ચેવ' શેષં તદેવ પૃથિવીકાયિકાપ્કાયિકૈષુ ઉત્પત્તિવિષયે ચતુત્તરિતં તદેવ,
એકસામયિકેન વા, દ્વિસામયિકેન વા, ત્રિસામયિકેન વા, વિગ્ગહેણોત્પદ્યેત્ત ઇત્યા-
દિકં સર્વં પૂર્વવદેવેતિ । એવં 'પજ્જત વાયરતેઝ્જાહ્યત્તાણ ઉવ્વણાયન્વો' એવમ્

રત્નપ્રભાપૃથિવી કે પૂર્વ ચરમાન્ત મેં મરા 'સમોહણિતા જે ભવિષ્ય મણુસસ-
સેત્તે અપજ્જત વાયર તેઝ્જાહ્યત્તાણ ઉવ્વજ્જિત્તણ' ઔર મરકર ઘર
મનુષ્ય ક્ષેત્ર મેં અપર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિક રૂપ સે ઉત્પન્ન હોને કે
યોગ્ય હુઆ 'સે ણં મંતે ! કહ્સમ્મણ્ણં વિગ્ગહેણં ઉવ્વજ્જેજ્જા' તો હે
ભદન્ત ! વહ વહાં કિતને સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ? હે
ગૌતમ ! 'સેસં તં ચેવ' પૃથિવીકાયિકો મેં ઉત્પત્તિ હોને કે વિષય મેં જો
ઉત્તર દિવા ગયા હૈ વહી ઉત્તર યહાં પર મી સમજના વાહિયે અર્થાત્
વહવહાં એક સમયવાલે વિગ્રહ સે મી ઉત્પન્ન હોતા હૈ દો સમય-વાલે
વિગ્રહ સે મી ઉત્પન્ન હોતા હૈ ઔર તોન સમયવાલે વિગ્રહ સે મી ઉત્પન્ન
હોતા હૈ । 'એવં પજ્જત વાયરતેઝ્જાહ્યત્તાણ ઉવ્વણાયન્વો' હસી પ્રકાર
સે યહાં એસા મી કહ લેના વાહિયે કિ હે ભદન્ત ! કોઈ અપર્યાપ્તક
સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવ હસ રત્નપ્રભાપૃથિવી કે પૂર્વ ચરમાન્ત મેં મરા

આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વચરમાન્તમાં મરણપામે અને 'સમોહણિતા જે ભવિષ્ય
મણુસસેત્તે અપજ્જત વાયરતેઝ્જાહ્યત્તાણ ઉવ્વજ્જિત્તણ' અને મરીને તે મનુષ્ય-
ક્ષેત્રમાં અપર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિકપણથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયેલ હોય
તો 'સે ણં મંતે ! કહ્ સમ્મણ્ણં વિગ્ગહેણં ઉવ્વજ્જેજ્જા' તો હે ભગવન્ તે ત્યાં
કેટલા સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી
કહે છે કે-હે ગૌતમ ! 'સેસં તં ચેવ' પૃથ્વીકાયિકોમાં ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં
બે પ્રમાણેના ઉત્તર દહયો છે, તેજ પ્રમાણેના ઉત્તર અહિયાં પણ સમજવો.
અર્થાત્ તે ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, બે સમય
વાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, અને ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી
પણ ઉત્પન્ન થાય છે, 'એવં પજ્જત વાયરતેઝ્જાહ્યત્તાણ ઉવ્વણાયન્વો' એજ પ્રમાણે
અહિયાં એવું પણ કહેવું બોધ્યો કે-હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ
પૃથ્વીકાયિક જીવ આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વચરમાન્તમાં મરણ પામેલ હોય

પૂર્વદર્શિતક્રમેણ પર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકતયા ઉપપાતયિતવ્યઃ, યથા-અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકજીવસ્ય, અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકેષુ ઉપપાતો દર્શિત-સ્તથૈવ પર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકેઽપિ ઉપપાતો વર્ણનીયઃ, इति ४ 'વાઝકાઙ્ગ સુહુમવાયરેસુ જહા આઝકાઙ્ગસુ ઓવવાઙ્ગો તહા ઓવવાઙ્ગવ્વો' પૃથિવીકાયિકઃ સૂક્ષ્મ વાદરપર્યાપ્તાપર્યાપ્તકેષુ યથા અપ્કાયિકેષુ ઉપપાતિતઃ તથા ઉપપાતયિ-તવ્યઃ ४ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વાયુકાયિકેષુ ૧, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવાયુકાયિકેષુ ૨. અપર્યાપ્ત

और मरकर वह मनुष्यक्षेत्रमें पर्याप्त वादर तेजस्कायिकरूप से उत्पन्न होने के योग्य हुआ तो हैं भदन्त ! वह वहां कितने समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है ? हे गौतम ! जैसा कथन ऊपर किया गया है वैसाही कथन यहां पर भी जानना चाहिये अर्थात् वह वहां एक समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है दो समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है और तीन समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है । इस प्रकार से ये ४ आलाप तेजस्कायिकों की उत्पत्ति के विषय में हो जाते हैं । "वाउकाङ्ग सुहुमवायरेसु जहा आउक्काङ्गसु उववाङ्गो तहा उववाएयव्वो" हे भदन्त ! कोई अपर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव इस रत्नप्रभा पृथिवी के पूर्व चरमान्त में मरा और मर कर वह इसी रत्नप्रभापृथिवी के पश्चिम चरमान्त में सूक्ष्म अपर्याप्त वायुकायिकों में उत्पत्ति के योग्य हुआ तो हे भदन्त ! वह वहां कितने समय वाले

અને મરીને તે મનુષ્ય ક્ષેત્રમાં પર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિકરૂપથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય બનેલ હોય તો હે ભગવન્ તે ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-હે ગૌતમ ! ઉપર જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન અહિયાં પણ સમજવું. અર્થાત્—તે ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, બે સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે અને ત્રણ સમય વાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, આ પ્રમાણેના આ ચાર આલાપકો તેજસ્કાયિકોની ઉત્પત્તિના સંબંધમાં થઈ જાય છે

‘વાઝકાઙ્ગ સુહુમવાયરેસુ જહા આઝકાઙ્ગસુ ઓવવાઙ્ગો તહા ઓવવાઙ્ગવ્વો’ હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ વાયુકાયિક જીવ આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મરણ પામે અને મરીને તે આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમચરમાન્તમાં સૂક્ષ્મ અપર્યાપ્તક વાયુકાયિકોમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય બનેલ હોય તો હે ભગવન્ તે ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-હે

વાદરવાયુકાયિકેષુ ૩. પર્યાપ્ત વાદરવાયુકાયિકેષુ ૪ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વાયુકાયિકસ્યોપપાતં વદતા ચત્વાર આલાપકા જ્ઞાતવ્યાં હતિ । ‘એવં વળસસદ્કાદૃશસુ વિ

વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ? હે ગૌતમ ! વહ વહાં જૈસા ઝપર મેં ઉત્તર રૂપ મેં કહા ગયા હૈ વૈસા હી યહાં પર જાનના ચાહિયે । એસા યહ પ્રથમ આલાપક હૈ । હસી પ્રકાર સે-‘હે ભદન્ત ! કોઈ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવી કાયિક જીવ હસ રત્નપ્રભા પૃથિવી કે પૂર્વ ચરમાન્ત મેં મરા ઓર મર કર વહ ડસી રત્નપ્રભા પૃથિવી કે પશ્ચિમ ચરમાન્ત મેં સૂક્ષ્મ પર્યાપ્ત વાયુકાયિકોં મેં ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હુઆ તો હે ભદન્ત ! વહ વહાં કિતને સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ?’ હસ પ્રશ્ન કે ઉત્તર મેં બી યહી પૂર્વોક્ત રૂપ સે સમાધાન હે ગૌતમ ! જાનના ચાહિયે । હસી પ્રકાર સે-‘હે ભદન્ત ! કોઈ સૂક્ષ્મ અપર્યાપ્ત પૃથિવીકાયિક જીવ હસ રત્નપ્રભા પૃથિવી કે પૂર્વ ચરમાન્ત મેં મરા ઓર મરકર વહ ડસી રત્નપ્રભા પૃથિવી કે પશ્ચિમ ચરમાન્ત મેં અપર્યાપ્ત વાદરવાયુકાયિકોં મેં ઉત્પન્ન કે યોગ્ય હુઆ તો હે ભદન્ત ! વહ વહાં કિતને સમય વાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ?’ હસ પ્રશ્ન કે ઉત્તર મેં બી હે ગૌતમ ! વહી પૂર્વોક્ત રૂપ સે સમાધાન જાનના ચાહિયે હસી પ્રકાર સે-‘હે ભદન્ત ! કોઈ સૂક્ષ્મ અપર્યાપ્ત પૃથિવીકાયિક જીવ હસ રત્નપ્રભા પૃથિવી કે પૂર્વ

કે-હે ગૌતમ ! જે પ્રમાણે ઉપર ઉત્તર વાક્ય રૂપે કહેલ છે, તે પ્રમાણે તે ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે. તેમ સમજવું. આ પ્રમાણેના આ પહેલા આલાપક કહેલ છે આજ પ્રમાણે હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ વાયુકાયિક જીવ આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મરે અને મરીને તે એજ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં સૂક્ષ્મ પર્યાપ્ત વાયુકાયિકોમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય બન્યો હોય તો હે ભગવન્ તે ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે હે ગૌતમ ! આ પૂર્વોક્ત કથન સમાધાન રૂપથી ઉત્તર રૂપે સમજવું.

એજ પ્રમાણે હે ભગવન્ કોઈ સૂક્ષ્મ અપર્યાપ્તક વાયુકાયિક જીવ આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મરણ પામે અને મરણ પછી આજ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં અપર્યાપ્તક વાદર વાયુકાયિકોમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયેલ હોય ? તો હે ભગવાન તે ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પણ હે ગૌતમ ! પહેલા કહેલ તે ઉત્તર સમાધાન રૂપે સમજવો. હે ભગવન્ કોઈ સૂક્ષ્મ અપર્યાપ્તક વાયુ-

૨૦, એવમ્ અપ્કાયિકવદેવ વનસ્પતિકાયિકેષુ અપર્યાપ્તકસૂક્ષ્મેષુ પર્યાપ્તકસૂક્ષ્મેષુ
'અપર્યાપ્તવાદરેષુ પર્યાપ્તવાદરેષુ ચાપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકસ્યોપપાતો
વક્તવ્યઃ ૪, પ્રકારસ્તુ પૂર્વવદેવેતિ ભાવઃ ॥સુ૦૧॥

ચરમાન્ત મેં મરા ઔર મરકર વહ ઉસી રત્નપ્રમા પૃથિવી કે પશ્ચિમ
ચરમાન્ત મેં પર્યાપ્ત વાદરવાયુકાયિકોં મેં ઉત્પત્તિ કે યોગ્ય હુઆ તો
'હે ભદન્ત ! વહ વહાં કિતને સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ?'
'હે ગૌતમ ! હસ પ્રશ્ન કે ઉત્તર મેં મી યહી પૂર્વોક્ત રૂપ સે સમાધાન
જાનના ચાહિયે । હસ પ્રકાર સે યહાં યે ચાર આલાપક હોતે હૈં । "એવં
વળસલહકાહ્વસુ વિ' ૨૦-અપ્કાયિક કે જૈસે હી વનસ્પતિકાયિકોં
મેં મી અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક કા ઉપપાત કહના ચાહિયે । જૈસે-
હૈ ભદન્ત ! કોઈ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવ હસ રત્નપ્રમા
પૃથિવી કે પૂર્વચરમાન્ત મેં મરા ઔર મરકર વહ ઉસી રત્નપ્રમા પૃથિવી-
કે પશ્ચિમ ચરમાન્ત મેં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાયિકોં મેં ઉત્પત્તિ કે
યોગ્ય હુઆ તો હે ભદન્ત ! વહ વહાં કિતને સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન
હોતા હૈ ? હે ગૌતમ ! હસ પ્રશ્ન કે ઉત્તર મેં વહી પૂર્વોક્ત સમાધાન
જાનના ચાહિયે । એલા યહ પ્રથમ આલાપક હૈ । હસી પ્રકાર સે પર્યાપ્ત
સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિકોં મેં ઉત્પન્ન હોને કે સમ્બન્ધ મેં અપર્યાપ્ત વાદર

કાયિક જીવ આ રત્નપ્રમા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમા મરણુપામે અને પછી
તે જોજ રત્નપ્રમા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં પર્યાપ્ત વાદર વાયુકાયિકોમાં
ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયેલ હોય તો હે ભગવન્ તે ત્યાં કેટલા સમયવાળી
વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે હે
ગૌતમ ! આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પણ આ પૂર્વોક્ત રૂપથી સમાધાન સમજવું.

આ રીતે અહિયાં આ ચાર આલાપકો થાય છે 'એવં વળસલહકાહ્વસુ વિ'
૨ અપ્કાયિકના કથન પ્રમાણે વનસ્પતિકાયિકોમાં પણ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ વન-
સ્પતિકાયિકનો ઉપપાત કહેવો જોઈએ. જેમ કે-હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્તક
સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક જીવ આ રત્નપ્રમા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મરણુપામે
અને મરીને તે આજ રત્નપ્રમા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ
વનસ્પતિ કાયિકોમાં ઉત્પત્તિને યોગ્ય થયેલ હોય તો હે ભગવન્ તે ત્યાં
કેટલા સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી
કહે છે કે-હે ગૌતમ ! આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પહેલા કહ્યા પ્રમાણેનું સમાધાન
સમજવું. આ રીતે આ આ પહેલો આલાપક કહેલ છે. આજ પ્રમાણે પર્યા

मूलम्—पञ्जत्त सुहुमपुढवीकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्प-
भाए पुढवीए, एवं पञ्जत्त सुहुमपुढवीकाइओ वि पुरत्थिमिल्ले
चरिमंते समोहणावित्ता, एएणं चेव कमेणं एएसु चेव वीससु
ठाणेषु उव्वाएयव्वो जाव बायरवणस्सइकाइएसु पञ्जत्तएसु
वि ४० । एवं अपञ्जत्त बायरपुढवीकाइओ वि ६० । एवं पञ्जत्त-
बायरपुढवीकाइओ वि ८० । एवं आउकाइओ वि चउसु वि
गमएसु पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, एयाए चेव वत्तव्वया
एएसु वीसइ ठाणेषु उव्वाएयव्वो १६० । सुहुम तेउकाइओ वि
अपञ्जत्तओ पञ्जत्तओ य एएसु चेव वीसइ ठाणेषु उव्वाएयव्वो ।
अपञ्जत्त बायरतेउकाइए णं भंते ! मणुस्सखेत्ते समोहए समो-
हणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पञ्चत्थिमिल्ले
चरिमंते अपञ्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उव्वज्जित्तए से णं
भंते ! कइ समइएणं विग्गहेणं उव्वज्जजेज्जा, सेसं तहेव जाव
से तेणट्ठेणं । एवं पुढवीकाइएसु चउविहेसु वि उव्वाएयव्वो ।
एवं आउकाइएसु चउविहेसु वि । तेउकाइएसु सुहुमेसु अप-
ञ्जत्तएसु पञ्जत्तएसु य एवं चेव उव्वाएयव्वो । अपञ्जत्त
बायरतेउकाइए णं भंते ! मणुस्सखेत्ते समोहए समोहणित्ता जे
भविए मणुस्सखेत्ते अपञ्जत्त बायरतेउकाइयत्ताए उव्वज्जित्तए
से णं भंते ! कइ सासइएणं० सेसं तं चेव । एवं पञ्जत्तबायर-

वनस्पतिकारिणो ये उत्पन्न होने के सम्बन्ध में और पर्याप्त बादर
वनस्पतिकारिणो में उत्पन्न होने के सम्बन्ध से भी इसके तीन आला-
पक जानने चाहिये । सू० १॥

पुनः सूक्ष्म वनस्पतिकारिणोऽपि उत्पन्न भवन्ति स य धर्मा अपर्याप्तक आदर वन-
स्पतिकारिणोऽपि उत्पन्न भवन्ति स य धर्मा अने पर्याप्तक आदर वनस्पति कारि-
णोऽपि उत्पन्न भवन्ति स य धर्मा पण आना उन्नय आलापको समञ्ज देवा । सू. १॥

તેઝકાઠ્ઠાઈયત્તાણ વિ ઉવવાણ્યવો । વાઝકાઠ્ઠાઈયત્તાણ ય વળસસઠ્ઠા
કાઠ્ઠાઈયત્તાણ ય જહા પુઢવીકાઠ્ઠાઈયસુ તહેવ ચઝકાઠ્ઠાઈયં મેણં ઉવ-
વાણ્યવો । એવં પઝજત્તવાયરતેઝકાઠ્ઠાઈઓ વિ સમયખેત્તે સમો-
હણાવેત્તા ણેસુ ચેવ વીસઠ્ઠા ઠાણેસુ ઉવવાણ્યવો જહેવ અપ-
ઝજત્તઓ ઉવવાઈઓ, એવં સઠ્ઠવત્થ વિ વાયરતેઝકાઠ્ઠાઈયા અપ-
ઝજત્તગા ય પઝજત્તગા ય સમયખેત્તે ઉવવાણ્યવો સમોહણાવેય-
ઠ્ઠા વિ ૨૪૦ । વાઝકાઠ્ઠાઈયા વળસસઠ્ઠાઈકાઠ્ઠાઈયા ય જહા પુઢવી-
કાઠ્ઠાઈયા તહેવ ચઝકાઠ્ઠાઈયં મેણં ઉવવાણ્યવો જાવ પઝજત્તા ૪૦૦ ।
વાયરવળસસઠ્ઠાઈકાઠ્ઠાઈયં મંતે ! ઇમીસે રયગપ્પમાણ પુઢવીણ પુર-
તિથિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહણ સમોહણિત્તા જે મવિણ ઇમીસે
રયગપ્પમાણ પુઢવીણ પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે ! પઝજત્તવાયર-
વળસસઠ્ઠાઈકાઠ્ઠાઈયત્તાણ ઉવવઝિજ્જત્તણ સે ણં મંતે ! કઠ્ઠ સમઠ્ઠાઈયં,
સેસં તહેવ જાવ સે તેણટ્ટેણં ૦ । અપઝજત્ત સુહુમપુઢવીકાઠ્ઠાઈયં
મંતે ! ઇમીસે રયગપ્પમાણ પુઢવીણ પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે
સમોહણ સમોહણિત્તા જે મવિણ ઇમીસે રયગપ્પમાણ પુઢવીણ
પુરતિથિમિલ્લે ચરિમંતે અપઝજત્ત સુહુમપુઢવીકાઠ્ઠાઈયત્તાણ ઉવવ-
ઝિજ્જત્તણ સે ણં મંતે ! કઠ્ઠ સમઠ્ઠાઈયં સેસં તહેવ નિરવસેસં । એવં
જહેવ પુરતિથિમિલ્લે ચરિમંતે સઠ્ઠવપ્પણેસુ વિ સમોહયા પચ્ચત્થિ-
મિલ્લે ચરિમંતે સમયખેત્તે ય ઉવવાઈયા જે ય સમયખેત્તે સમો-
હયા પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમયખેત્તે ય ઉવવાઈયા, એવં
ણેણં ચેવ કમેણં પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમયખેત્તે ય સમો-
હયા પુરતિથિમિલ્લે ચરિમંતે સમયખેત્તે ય ઉવવાણ્યવો તેણેવ
ગમણ ણં એવં ણેણં ગમણ ણં દાહિણિલ્લે ચરિમંતે સમોહયાણં

उत्तरिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाओ एवं च्वेव उत्तरिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य समोहया दाहिणिल्ले चरिमंते समय-
खेत्ते य उववाएयट्वा तेणेव गमएणां ॥सू० २।

छाया—पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! एतस्या रत्नप्रभायाः-
पृथिव्याः एवं पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकोऽपि पौरस्त्ये चरमान्ते समवघात्य एतेनैव
क्रमेण एतेष्वेव विंशतिस्थानेषु उपपातयितव्यः, यावद्वादरवनस्पतिकायिकेषु
पर्याप्तकेष्वपि ४०, एवमपर्याप्त वादरपृथिवी-कायिकोऽपि ६०, एवं पर्याप्तवादर
पृथिवी-कायिकोऽपि ८०, एवम् अण्कायिकोऽपि चतुष्वपि शमकेषु पौरस्त्ये चर-
मान्ते समवहतः एतया एव वक्तव्यतया एतेष्वेव विंशतिस्थानेषु उपपातयितव्यः ।
१६०, सूक्ष्मतेजस्कायिकोऽपि अपर्याप्तकः पर्याप्तकश्च एतेष्वेव विंशतिस्थानेषु
उपपातयितव्यः । अपर्याप्तवादरतेजस्कायिकः खलु भदन्त ! मनुष्यक्षेत्रे समवहतः
समवहत्य यो भव्यः एतस्याः रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पाश्चात्ये चरमान्ते अपर्याप्त
सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया उत्पत्तुं स खलु भदन्त कतिसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत'
शेषं तथैव यावत्तत्तेनार्थे० । एवं पृथिवीकायिकेषु चतुर्विधेष्वपि उपपातयितव्यः ।
एवमण्कायिकेषु चतुर्विधेष्वपि । तेजस्कायिकेषु सूक्ष्मेषु अपर्याप्तकेषु पर्याप्त-
केषु च एवमेव उपपातयितव्यः । अपर्याप्तवादरतेजस्कायिकः खलु भदन्त !
मनुष्यक्षेत्रे समवहतः समवहत्य यो भव्यो मनुष्यक्षेत्रे अपर्याप्त वादरतेजस्कायिक-
तया उत्पत्तुं स खलु भदन्त ! कति सामयिकेन० शेषं तदेव । एवं पर्याप्त वादर
तेजस्कायिकतयाऽपि उपपातयितव्यः । वायुकायिकतया च यथा पृथिवीकायिकेषु
तथैव चतुष्केन भेदेन उपपातयितव्यः । एवं पर्याप्त वादरतेजस्कायिकोऽपि समय
क्षेत्रसमवघात्य एतेष्वेव विंशतिस्थानेषु उपपातयितव्यः यथैव अपर्याप्तक उप-
पातितः एवं सार्वत्रापि वादरतेजस्कायिकाः अपर्याप्तकाश्च पर्याप्तकाश्च समयक्षेत्र
उपपातयितव्याः समयघातयितव्या अपि २४० ॥

वायुकायिका वनस्पतिकायिकाश्च यथा पृथिवीकायिकाः तथैव चतुष्केन भे-
देनोपपातयितव्याः, यावत् पर्याप्ताः ४००, वादरवनस्पतिकायिकः खलु
भदन्त ! एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः समवहत्य
यो भव्य एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पाश्चात्ये चरमान्ते पर्याप्त वादरवनस्पति
कायिकतया उत्पत्तुं स खलु भदन्त ! कति सामयिकेन० शेषं तथैव यावत् तत्तेना-
र्थेन, अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! एतस्या रत्नप्रभायापृथिव्याः
पाश्चात्ये चरमान्ते समवहतः समवहत्य यो भव्यः एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः
पौरस्त्ये चरमान्ते अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया उत्पत्तुं स खलु भदन्त ! कति

सामयिकेन, शेषं तथैव निरवशेषम् । एवं यथैव पौरस्त्ये चरमान्ते सर्वपदेष्वापि समवहताः पाश्चात्ये चरमान्ते समयक्षेत्रे चोपपातिताः, ये च समयक्षेत्रे समवहताः पाश्चात्ये चरमान्ते समयक्षेत्रे चोपपातिताः, एवमेतेनैव क्रमेण पाश्चात्ये चरमान्ते समयक्षेत्रे च समवहताः पौरस्त्ये चरमान्ते समयक्षेत्रे चोपपातयितव्याः तेनैव गमकेन । एवमेतेन गमकेन दाक्षिणात्ये चरमान्ते समवहतानाम् औत्तरे चरमान्ते समयक्षेत्रे चोपपातः, एवमेव चौत्तरे चरमान्ते समयक्षेत्रे च समवहताः दाक्षिणात्ये चरमान्ते समयक्षेत्रे चोपपातयितव्या स्तेनैव गमकेन । सू० २॥

टीका—‘पञ्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते’ पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त । ‘इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए’ एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पूर्वं चरमान्ते समवहतः समवहत्य एतस्या एव रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पश्चिमे चरमान्ते पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकतया समुत्पत्तियोग्यो विद्यते स खलु भदन्त । कति सामयिकेन द्विपहेनोत्पद्येत इत्यादिक सर्वं प्रश्न वाक्यं पूर्ववदेव अत्रापि वक्तव्यम् । उत्तरमाह—‘एवं’ इत्यादि ।

‘पञ्जत्त सुहुमपुढवीकाइए णं भंते । इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए’ इ०

टीकार्थ—‘पञ्जत्त सुहुम पुढवीकाइए णं भंते !’ हे भदन्त ! कोई पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव ‘इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए’ इस रत्नप्रभापृथिवी के पूर्व चरमान्त (पूर्व भाग के अन्त में) मरा और मर कर वह इसी रत्नप्रभा पृथिवी के पश्चिम चरमान्त (पश्चिम भाग के अन्तिम) में अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक रूप से उत्पत्ति के योग्य हुआ तो हे भदन्त ! वह वहां कितने समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है ? इत्यादि प्रश्नवाक्य पूर्व के जैसा वहां कहना चाहिये अब उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—‘एवं पञ्जत्तसुहुमपुढवीकाइओ वि पुरत्थिमिल्ले चरि-

‘पञ्जत्त सुहुमपुढवीकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए’ इत्यादि

टीकार्थ—‘पञ्जत्त सुहुमपुढवी काइए णं भंते !’ हे भगवन् केई पर्याप्तक सूक्ष्म पृथ्वीकायिक एवं ‘इमीसे रयणप्पभाएभाए पुढवीए’ आ रत्नप्रभा पृथ्वीना पूर्वचरमान्तमा—पूर्वलागना अन्तमां भरणुयामे अने मरीने ते आ रत्नप्रभा पृथ्वीना पश्चिम चरमान्तमां—पश्चिम लागना अन्तमां पर्याप्तक सूक्ष्मपृथ्वी कायिक पण्णाथी उत्पन्न थराने योग्य जनेल होय तो हे भगवन् त्यां केटला समयराणी विग्रहगतिथी उत्पन्न थाय छे ? विगेशे तमाभ प्रश्नवाक्यो पड़ेलां कहां प्रमाणेना अडियां समजवा आना उत्तरमां प्रभुश्री कहे छे के ‘एवं’ पञ्जत्त सुहुमपुढवीकाइओ वि पुरत्थिमिल्ले चरिंते समोहणावेत्ता एएण’

‘एवं पञ्जत्तसुहुमपुढवीकाहओ वि पुगत्थिमिल्ले चरिंते समोहणावेत्ता एएणं चेव कमेणं एएसु चेव बीसइसु ठाणेसु उववाएयव्वो’ एवम् अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकवद्देव पર્थाप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकोऽपि ज्ञातव्यः, तं रत्नप्रभायाः पौरस्त्ये चरमान्ते समवघात्य मारणान्तिकममुद्घातं कारयित्वा एतेनैव अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकोक्तेनैव क्रमेण-प्रकारेण एतेष्वेव विंशतौ स्थानेषु तानि विंशतिस्थानानि यथा-पृथिव्यादयः पञ्च ते सूक्ष्म वादरभेदाददग, तेषां प्रत्येकं पर्याप्तकापर्याप्तकभेदकरणा ते विंशति भवन्ति, इति विंशतिः स्थानानि, तथाहि-पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकस्य अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः, पर्याप्त सूक्ष्म मते समोहणावेत्ता एएणं चेव क्रमेणं एएसु चेव बीसइसु ठाणेसु उववाएयव्वो’ हे गौतम । अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक के जैसे ही पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक को भी जानना चाहिये । अर्थात्-इस पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक का रत्नप्रभापृथिवी के पूर्व चरमान्त में मारणान्तिक समुद्घात कराकर इसी अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक के सम्बन्ध में कथित प्रकार के अनुसार इन्हीं पूर्वोक्त बीस स्थानों में-पृथिव्यादि पांचो के सूक्ष्म वादर पर्याप्त अपर्याप्त रूप स्थानों में-यावत् वादर वनस्पतिकायिक के पर्याप्तक तक उसे उत्पन्न कराना चाहिये । कहने का भाव ऐसा है-पृथिवीकायिक से लेकर वनस्पतिकायिक तक एकेन्द्रिय जीव के ५ भेद होते हैं । ये पांचो ही सूक्ष्म और वादर के भेद से १० भेदवाले होने से बीस भेद हो जाते हैं । पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकों के इन २० स्थानों में इस प्रकार से उत्पन्न करना चाहिये । हे भदन्त ! कोई पर्याप्तक सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव इस रत्नप्रभापृथिवी

‘चेव कमेणं एएसु चेव बीसइसु ठाणेसु उववाएयव्वो’ हे गौतम ! अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिकની જેમજ પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક પણ સમજવા અર્થાત્ આ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મારણ-ન્ટિક સમુદ્ઘાત કરીને-આ પ્રકરણમાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકના સંબંધમાં કહેલા પ્રકારથી આ પૂર્વોક્ત સંસ્થાનોમાં-પૃથિવી વિગેરે પાંચેના સૂક્ષ્મ, બાદર, પર્યાપ્ત અપર્યાપ્ત ૩૫ સ્થાનમાં-આવત્ બાદર વનસ્પતિકાય સુધી એકેન્દ્રિય જીવના પાંચ લેદો થાય છે, આ પાંચેના સૂક્ષ્મ અને બાદર લેદથી ૧૦ લેદો થઈ જાય છે, આ દસ લેદોના પણ દરેકના પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્તક એવા લેદો થવાથી ૨૦ વીસ લેદો થઈ જાય છે પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકોના આ ૨૦ વીસ સ્થાનોમાં આ પ્રમાણેની ઉત્પત્તિ કહેની જોઈએ

પૃથિવીકાયિકઃ, અપર્યાપ્ત વાદર પૃથિવીકાયિકઃ પર્યાપ્તવાદરપૃથિકાયિકઃ एवं
 પૃથિવીકાયિકસ્ય ચત્વારો ભેદાઃ ૪, અપર્યાપ્તસૂક્ષ્માપ્કાયિકઃ પર્યાપ્તસૂક્ષ્માપ્કા
 યિકઃ,અપર્યાપ્ત વાદરાપ્કાયિકઃ, પર્યાપ્તવાદરાપ્કાયિકઃ, એતે ચત્વારોઽપ્કાયિકસ્ય
 ભેદાઃ ૮. અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મતેજસ્કાયિકઃ, પર્યાપ્તસૂક્ષ્મતેજસ્કાયિકઃ,અપર્યાપ્ત વાદર
 તેજસ્કાયિકઃ પર્યાપ્તવાદરતેજસ્કાયિકઃ ૪. એતે ચત્વારસ્તેજસ્કાયિકસ્ય ભેદાઃ,
 ૧૨, અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મવાયુકાયિકઃ, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવાયુકાયિકઃ ૨, અપર્યાપ્તવાદર
 વાયુકાયિકઃ ૩, પર્યાપ્ત વાદરવાયુકાયિકઃ ૪, એતે ચત્વારો ભેદા વાયુકાયિકસ્ય
 ૧૬, અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિકઃ, ૧ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિકઃ, ૨,

કે પૂર્વ ચરમાન્ત મેં મારણાન્તિક સમુદ્વાત કરકે મરા ઓર મરકર વહ
 ડસી રત્નપ્રભા પૃથિવી કે પશ્ચિમ ચરમાન્ત મેં અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથિવી
 કાયિક મેં ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હુઆ તો હે ભદન્ત ! વહ વહાં કિતને
 સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ? હસ પ્રશ્ન કે ઉત્તર મેં 'હે
 ગૌતમ ! વહ વહાં એક સમયવાલે વિગ્રહ સે મી ઉત્પન્ન હોતા હૈ, દો
 સમયવાલે વિગ્રહ સે મી ઉત્પન્ન હોતા હૈ ઓર ત્રી સમયવાલે વિગ્રહ સે
 મી ઉત્પન્ન હોતા હૈ' એસા હી પૂર્વોક્ત સમાધાન જાનના ચાહિયે । એસા
 યહ પ્રથમ આલાપક હૈ । હસી પ્રકાર સે હસ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવી
 કાયિક કો પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક મેં ઉત્પન્ન કરાને કે સમ્બન્ધ
 મેં મી આલાપક કહ લેના ચાહિયે । યહ દ્વિતીય આલાપક હૈ । હસી
 પ્રકાર સે હસ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક કો અપર્યાપ્ત વાદર પૃથિવી
 કાયિક મેં ઉત્પન્ન કરાને કે સમ્બન્ધ મેં મી તૃતીય આલાપક કહ લેના

હે ભગવન્ કેઇ પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક છવ આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના
 પૂર્વ ચરમાન્તમાં મારણાન્તિક સમુદ્વાત કરી પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં અપર્યાપ્તક
 સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય બનેલ હોય તો હે ભગવન્ તે ત્યાં
 કેટલા સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી
 કહે છે કે—હે ગૌતમ ! તે ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન
 થાય છે, બે સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, અને ત્રણ સમય
 વાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે. આ પ્રમ ભ્રેનું પહેલા કહેલ સમા-
 ધાન સમજવું. આ પહેલા આલાપક કહેલ છે. ૧ આજ પ્રમાણે આ અપર્યાપ્તક
 સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકને પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકમાં ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં
 પણ આલાપકે કહેવા જોઈએ. આ રીતે આ બીજો આલાપક કહેલ છે. ૨ આજ
 રીતે અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકને અપર્યાપ્તક વાદર પૃથ્વીકાયિકમાં ઉત્પન્ન
 કરાવવાના સંબંધમાં પણ ત્રીજો આલાપક કહેવો એજ પ્રમાણે આ અપર્યાપ્તક

અર્ચાપ્તવાદરવનસ્પતિકાચિકઃ ૩, પર્યાપ્તવાદરવનસ્પતિકાચિકઃ ૪ એતે ચત્વારો ભેદા વનસ્પતિકાચિકસ્ય ૨૦, એતેષુ ત્રિંશતિસ્થાનેષુ ઉપપાતયિતવ્ય-
ઉપપાતઃ કરણીયઃ । કિયત્પર્યન્તમુપપાતયિતવ્ય રતત્રાહ-‘જાવ’ ઇત્યાદિ । ‘જાવ

ચાહિયે । હસી પ્રકાર હસ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાચિક કો પર્યાપ્ત વાદર પૃથિવીકાચિક મેં ઉત્પન્ન કરાને કે સમ્બન્ધ મેં મી આલાપક કહ લેના ચાહિયે । યહ ચતુર્થ આલાપક હૈ । હસ પ્રકાર યે પૃથિવીકાચિકકે ૪ ભેદ હૈ । હસી પ્રકાર સે અપ્કાચિક કે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાચિક પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાચિક અપર્યાપ્ત વાદર અપ્કાચિક ઓર પર્યાપ્ત વાદર અપ્કા-
ચિક યે ચાર ભેદ હોતે હૈ । હસી પ્રકાર સે તેજસ્કાચિક અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ તેજસ્કાચિક પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ તેજસ્કાચિક અપર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાચિક ઓર પર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાચિક યે ચાર ભેદ હોતે હૈ । હસી પ્રકાર સે વાયુ-
કાચિક કે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવાયુકાચિક પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવાયુકાચિક અપર્યાપ્ત વાદર વાયુકાચિક પર્યાપ્ત વાદર વાયુકાચિક યે ૪ ચાર ભેદ હોતે હૈ । હસી પ્રકાર સે વનસ્પતિકાચિક કે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાચિક પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાચિક અપર્યાપ્ત વાદર વનસ્પતિકાચિક પર્યાપ્ત વાદર વન-
સ્પતિકાચિક યે ૪ ચાર ભેદ હોતે હૈ । સો હન ૨૦ સ્થાનો મેં પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાચિક કો ઉત્પન્ન કરાના ચાહિયે । યહી વાત યહાં યાવ-

સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાચિકને પર્યાપ્ત બાદર પૃથ્વીકાચિકમાં ઉત્પન્ન કરાવવાના સંબંધમાં
પણુ આલાપક કહેવો જોઈએ. આ ચોથો આલાપક કહેલ છે આ રીતે
પૃથ્વીકાચિકોમાં ચાર લેહો કહેલા છે. સૂક્ષ્મ અને બાદર

આજ પ્રમાણે અપ્કાચિકમાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાચિક, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ
અપ્કાચિક, અપર્યાપ્ત બાદર અપ્કાચિક, અને પર્યાપ્ત બાદર અપ્કાચિકના
ચાર લેહો થાય છે. આજ પ્રમાણે તેજસ્કાચિકમાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ તેજસ્કાચિક
પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ તેજસ્કાચિક અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાચિક પર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કા-
ચિક આ પ્રમાણેના ચાર લેહો થાય છે. આજ પ્રમાણે વાયુકાચિકોમાં અપર્યાપ્ત
સૂક્ષ્મ વાયુકાચિક, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વાયુકાચિક, અપર્યાપ્ત બાદર વાયુકાચિક અને
પર્યાપ્ત બાદર વાયુકાચિકના લેહથી ૪ ચાર લેહો સમજવા. આજ પ્રમાણે
વનસ્પતિકાચિકોમાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાચિક, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિ-
કાચિક અપર્યાપ્ત બાદર વનસ્પતિકાચિક, પર્યાપ્ત બાદર વનસ્પતિકાચિક એ
રીતના ૪ ચાર લેહો થાય છે. તો આ ૨૦ વીસ સ્થાનોમાં પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ

વાયરવળસ્સદ્ધકાદ્દસુ પઞ્જત્તસુ વિ' યાવત્ પર્યાપ્ત વનસ્પતિકાયિકેષ્વપિ, યાવત્ પદેન અર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકત આરભ્ય અપર્યાપ્તવાદરવનસ્પતિ-કાયિકાન્તસ્ય ગ્રહણં ભવતિ । તથા ચ આલાયપ્રકારઃ, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકા-યિકઃ સ્વલુ ભદન્ત ! એતસ્યા રત્નપ્રમાયાઃ પૃથિવ્યાઃ પૂર્વે ચરમાન્તે સમવહતઃ સમ-વહત્ય એતસ્યા એવ રત્નપ્રમાયાઃ પશ્ચિમે ચરમાન્તે અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક-તયા સમુત્પત્તિયોગ્યો વિદ્યતે સ સ્વલુ ભદન્ત । કતિ સામયિકેન વિગ્રહેણ ઉત્પદ્યતે । હે ગૌતમ ! એકસામયિકેન વા, દ્વિસામયિકેન વા, ત્રિસામયિકેન વા, વિગ્રહેણો-ત્પદ્યત, તત્ત્વેનાર્થેન ભદન્ત ! એવમુચ્યતે, એકસામયિકેનેત્યાદિ । ગૌતમ ! મંયા સપ્ત શ્રેણયઃ ઋજ્વાયતાદિકાઃ મજ્જપ્તાઃ । તત્ર પ્રથમ શ્રેણ્યા ઉત્પત્તિમાસાદયન્ એકસામયિકેન દ્વિતીયયા ગચ્છન્ દ્વિસામયિકેન વિગ્રહેણ, તૃતીયયા ગચ્છન્

ત્વદ્ સે પ્રકટ કી ગઈ હૈ । અબ ગૌતમપ્રભુ સે એસા પૂછતે હૈ-હે ભદન્ત । એસા આપ કિસ કારણ સે કહતે હૈ કિ એકસમયવાલે વિગ્રહ સે યાવત્ ત્રીન સમયવાલે વિગ્રહ સે વહ વહાં ઉત્પન્ન હોતા હૈ ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈ-હે ગૌતમ ! મૈને સ્નાન શ્રેણિયાં કહી હૈ-ઉત્તર મેં એક ઋજ્વાયત શ્રેણિ હૈ દૂસરી એકતોચક્રાશ્રેણિ હૈ । ત્રીસરી દ્વિધાવક્રા શ્રેણિ હૈ ચૌથી એકતઃ સ્વા શ્રેણિ હૈ । પાંચવીં દ્વિધાત્વા શ્રેણિ હૈ છઠી ચક્રવાલ શ્રેણિ હૈ ઓર સાતવીં અર્ધચક્રવાલ શ્રેણિ હૈ । इनमें जो जीव प्रथम श्रेणि से उत्पत्ति स्थान में जाता है वह वहां एक समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है द्वितीय श्रेणि से जो जीव उत्पत्तिस्थान में जाता है वह दो समय वाले विग्रह से वहां उत्पन्न होता है । तथा-तृतीय श्रेणी से जो उत्पत्ति स्थान में जाता है वह तीन समयवाले विग्रह से वहां उत्पन्न

પૃથ્વીકાયિકની ઉત્પત્તિ કહેવી જોડશે. આ સમગ્ર કથન અહિયાં યાવત્ પદ્ધતી પ્રગટ કરવામાં આવેલ છે.

હવે ગૌતમસ્વામી પ્રભુશ્રીને એવું પૂછે છે કે-હે ભગવન્ આપ એવું કયા કારણથી કહે છે કે-એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી યાવત્ ત્રણ સમય વાળી વિગ્રહગતિથી તે ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-હે ગૌતમ ! મેં સાત શ્રેણીયો કહેલ છે. તેમાં એક ઋજ્વાયત શ્રેણી છે. ૧ બીજી એકતો વક્રા શ્રેણી છે ૨ ત્રીજી દ્વિધાનો વક્રા શ્રેણી કહી છે. ૩ ચોથી એકતઃ આ શ્રેણી છે. ૪ પાંચમી દ્વિધાતોઆ શ્રેણી કહેલ છે. ૫ છઠી ચક્રવાલ શ્રેણી કહેલ છે. ૬ અને સાતમી અર્ધ ચક્રવાલ શ્રેણી છે. ૭ તેમાં જે છવ પહેલી શ્રેણીથી ઉત્પત્તિ સ્થાનમાં જાય છે, તે ત્યાં એક સ્થાનવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. બીજી શ્રેણીમાં જે છવ ઉત્પત્તિ સ્થાનમાં જાય છે, તે બે સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન

ત્રિસામયિકેન વિગ્રહેણ ઉત્પદ્યન્તે । તત્તેનાર્થેન એવ મુચ્યતે, એક સામયિકેનેત્યાદિકં સર્વમ્ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકવદેવ જ્ઞાતવ્યમ્ । એવં પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકસ્ય પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકત આરભ્ય પર્યાપ્ત વાદરવનસ્પતિકાયિકાન્તેષુ ઉપપાતાલાપકાઃ સ્વયમેવ ઝહનીયાઃ । એવમેવ અગ્રેઽપિ સર્વત્રાલાપ પ્રકારઃ સ્વયમેવોહનીય इति તદેવ માદિતથત્વાર્શિશદ્ગમકા અમવન્ ૪૦ ।

‘એવં અપજ્જત વાયરપુઢવીકાહોવિ’ એવમ્ અપર્યાપ્ત વાદરપૃથિવીકાયિકોઽપિ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકવદેવ, અપર્યાપ્ત વાદરપૃથિવીકાયિકોઽપિ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીતઆરભ્ય પર્યાપ્ત વાદરવનસ્પતિકાયિકાન્તેષુ સર્વોપપા-

હોતા હૈં હસ કારણ હે ગૌતમ ! મૈંને એસા કહા હૈં કિ વહ વહાં એક સમયવાલે વિગ્રહ સે બી ઉત્પન્ન હો જાતા હૈં દો સમયવાલે વિગ્રહ સે બી ઉત્પન્ન હો જાતા હૈં ઓર ત્રી સમયવાલે વિગ્રહ સે બી ઉત્પન્ન હો જાતા હૈં । હસ પ્રકાર યહાં સબ કથન સૂક્ષ્મ અપર્યાપ્તક પૃથિવીકાયિક કે જેના હી જાનના ચાહિયે । પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક કે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક સે લેકર પર્યાપ્ત વાદરવનસ્પતિકાયિક તક મૈં ઉપપાત હોને કે સમ્બન્ધ મૈં આલાપક અપને આપ ઉદ્માવિત કર લેને ચાહિયે । હસ પ્રકાર સે મિલકર સબ ગમક ૪૦ હો જાતે હૈં । ‘એવ અપજ્જત વાદરપુઢવીકાહોવિ’ હસી પ્રકાર સે અપર્યાપ્ત વાદરપૃથિવીકાયિક કો બી પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક કે જેસે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક સે લેકર પર્યાપ્ત વાદરવનસ્પતિકાયિકતક કે

થાય છે તથા-ત્રીણ શ્રેણીથી જે છવ ઉત્પત્તિ સ્થાનમાં બન્ય છે, તે ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે. તે કારણથી હે ગૌતમ ! ‘મેં એવું’ કહેલ છે કે-તે ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, જે સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, અને ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે આ પ્રમાણે અહિંયાં સઘળું કથન સૂક્ષ્મ અપર્યાપ્તઃ પૃથ્વીકાયિક ॥ કથન પ્રમાણે સમજવું તથા અપર્યાપ્તઃ સૂક્ષ્મ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકથી લઈને પર્યાપ્ત આદર વનસ્પતિકાય સુધીમાં ઉપપાત થવાના સંબંધમાં આલાપકો સ્વયં બનાવીને સમજાવેલા. આ રીતે બંધા રૂળીને કુલ ૪૦ ગાળીસ ગમે થઈ બન્ય છે ‘એવં અપજ્જત વાદર પુઢવીકાહોવિ’ એજ પ્રમાણે અપર્યાપ્ત આદર પૃથ્વીકાયિક પણ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકતા કથન પ્રમાણે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકથી લઈને પર્યાપ્ત આદર વનસ્પતિકાય સુધીના સઘળા જીવોમાં ઉત્પત્તિ સમજવી. આ સંબંધમાં

तयितव्यः । उपपातप्रकारश्च पूर्ववदेव सर्वत्र स्वयमेवोद्गनीय इति । ६०, 'एवं पञ्ज-
त्तवायुर पुढवीकाइओ वि । ८० एवम् अपर्याप्त वादरपृथिवीकायिकवदेव
पर्याप्त वादरपृथिवीकायिकोऽपि विंशति स्थानेषु अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकत
आरभ्य पर्याप्त वादरवनस्पतिकायिकायिकान्तेषु अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक-
वदेव उपपातयितव्य इति । ८०, 'एवं आउक्काइओ वि चउसु वि गमएसु पुरत्थि-
मिल्ले चरिमंते समोहए' एवं पृथिवीकायिकवदेव अप्कायिकोऽपि चतुर्व्वपि गम-
केषु, अपर्याप्त सूक्ष्म, पर्याप्त सूक्ष्मापर्याप्त वादर पर्याप्त वादर रूपेषु रत्नप्रभायाः
पृथिव्याः पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः, 'एयाए चेव वत्तव्वयाएएसु चेव वीसइट्ठा-
णेषु उववाएयव्वो' एतयैव वक्तव्यतया एतेष्वेव विंशति स्थानेषु अपर्याप्त सूक्ष्म
पृथिवीकायिकत आरभ्य पर्याप्त वादरवनस्पतिकायिकान्त रूपेषु उपपातयितव्यः,

समस्त जीवों में उत्पन्न कर लेना चाहिये । इस सम्बन्ध में उपपात
सम्बन्धी आलापक प्रकार अपने आप उद्भावित कर लेना चाहिये ६०,
'एवं पञ्जत्त वायरपुढवीकाइओ वि' ८० इसी प्रकार से अपर्याप्त वादर
पृथिवीकायिक के जैसे ही पर्याप्त वादर पृथिवीकायिक भी २०
स्थानों में अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक से लेकर पर्याप्त वादरवनस्पति
कायिकतक के जीवों में उत्पन्न करा लेना चाहिये ८० । 'एवं आउक्का-
इओ वि चउसु वि गमएसु पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' इसी प्रकार
अप्कायिक जीव भी अपर्याप्त सूक्ष्म पर्याप्त सूक्ष्म, अपर्याप्त वादर
और पर्याप्त वादर रूप चारों गमकों को आश्रित करके रत्नप्रभापृथिवी
के पूर्व चरमान्त में समुद्घात पूर्वक 'एयाए चेव वत्तव्वयाए एसु चेव
वीसइट्ठाणेषु उववाएयव्वो' इसी वक्तव्यता द्वारा ऊपर में प्रदर्शित
बीस स्थानों में उत्पन्न कराना चाहिये । तात्पर्य कहनेका यही है कि

उपपात विधेना आलापकेना प्रकार स्वयं जननीने समञ्ज देवे। 'एवं' पञ्जत्त
वायर पुढवीकाइओ वि' आ अपर्याप्त वादर पृथिवीकायिकना कथन प्रमाणे न
पर्याप्त वादर पृथिवीकायिक पण २० वीसे स्थानेमां अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकथी
लधने पर्याप्त वादर वनस्पतिकायिक सुधीना जेवामां उत्पन्न थयाना संबंधमां
कथन समञ्ज देवुं. ८० 'एवं' आउक्काइयो वि चउसु वि गमएसु पुरत्थिमिल्ले
चरमते । समोहए' आ न प्रमाणे अप्कायिक जेव पण अपर्याप्त सूक्ष्म. पर्याप्त
सूक्ष्म, अपर्याप्त वादर. अने पर्याप्त वादर इय चारे जमेने आश्रय करीने
रत्नप्रभा पृथ्वीना पूर्वचरमान्तमां समुद्घात पूर्वक 'एयाए चेव वत्तव्वयाए
एसु चेव वीसइ ट्ठाणेषु उववाएयव्वो' आ कथन प्रमाणे उपर जनावेला बीस
स्थानेमां उत्पत्ति कडेवी लेधये कडेवानुं तात्पर्य अे छे के-पृथ्वीकायिकना

પૃથિવીકાચિકવદેવ અપ્કાચિકસ્યાપિ વક્તવ્યતા મણિતવ્યેતિ । અપ્કાચિકસ્ય સૂક્ષ્મ વાદરપર્યાપ્તાપર્યાપ્ત ભેદભિન્નસ્ય ચતુષ્કસ્ય પૃથિવીકાચિકાદિવનસ્પતિકાચિકાન્ત વિંશતિસ્થાનેષુ ઉપપાતકરણેન અગ્રીતિર્મેદા ભવન્તિ । અગ્રીત્ય રીતિ ભેદ ભિન્ન પૃથિવીકાચિકાઽપ્કાચિકયોઃ સંમેલનાત્ પષ્ટ્યાધિકશતભેદા ભવન્તિ ૧૬૦ ।

‘સુહુમતેઽકાઙ્ગો વિ અપજ્જત્તઓ પજ્જત્તઓ ય એસુ ચેવ વીસઠ્ઠાણેસુ ઉવવાપ્યવ્વો’ સૂક્ષ્મતેજસ્કાચિકોઽપિ અપર્યાપ્તકઃ પર્યાપ્તકઃ, એતેષ્વેવ વિંશતિ સ્થાનેષુ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાચિકત આરભ્ય પર્યાપ્ત વાદર વનસ્પતિકાચિકાન્તેષુ ઉપપાતયિતવ્યઃ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મતેજસ્કાચિક પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મતેજસ્કાચિકયોરપિ વિંશતિસ્થાનેષુ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાચિકવદેવ રત્નપ્રભાયામુપપાતો વર્ણનીય इति तदेवं चत्वारिंशद् ભેદા ભવન્તિ ૪૦ (૨૦૦)

પૃથિવીકાચિક કી જૈસી હી વક્તવ્યતા અપ્કાચિક જીવ કી હૈ । इस प्रकार सूक्ष्मवाटर पर्याप्त और अपर्याप्त भेद विशिष्ट होने से चार प्रकार के अप्काचिक जीव के पृथिवीकाचिक से लेकर वनस्पतिकाचिक तक के २० स्थानों में उत्पाद कराने के कथन से ८० भेद हो जाते हैं । ८०-८० भेद युक्त हुए पृथिवीकाचिक और अप्काचिक के सम्मेलन से १६० भेद हो जाते हैं ।

‘સુહુમતેઽકાઙ્ગો વિ અપજ્જત્તઓ પજ્જત્તઓ ય એસુ ચેવ વીસઠ્ઠાણેસુ ઉવવાપ્યવ્વો’ અપર્યાપ્ત પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મતેજસ્કાચિક મી હન્હોં વીસ સ્થાનોં મેં અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મપૃથિવીકાચિક સે લેકર પર્યાપ્ત વાદર વનસ્પતિકાચિક તક કે જીવોં મેં-ઉત્પાદયિતવ્ય હૈ । અતઃ હન દોનોં પ્રકાર કે તેજસ્કાચિક જીવોં કા અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાચિક કે જસા ૨૦ સ્થાનોં મેં રત્નપ્રભાપૃથિવી મેં ઉપપાત વર્ણિત કર લેના ચાહિયે ।

કથન પ્રમાણેનું જ કથન અપકાચિક જીવનું છે. આ રીતે સૂક્ષ્મ વાદર, પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત લેદવાળા હોવાથી ચાર પ્રકારના અપ્કાચિક જીવોના પૃથિવીકાચિકોથી લઈને વનસ્પતિકાચી સુધીના ૨૦ વીસ સ્થાનોમા ઉત્પાત થવાના કથનથી ૮૦ એંસી લેદો થઈ જાય છે ૮૦-૮૦ એંસી એંસી લેદવાળા પૃથ્વીકાચિકને મેળવવાથી કુલ ૧૬૦ એકસોસાઠક લેદો થઈ જાય છે.

‘સુહુમ તેઽકાઙ્ગો વિ અપજ્જત્તઓ ય એસુ ચેવ વીસઠ્ઠાણેસુ ઉવવાપ્યવ્વો’ અપર્યાપ્ત, પર્યાપ્તક, સૂક્ષ્મ તેજસ્કાચિક પણ આજ વીસ સ્થાનોમા અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાચિકથી લઈને પર્યાપ્તક વાદર વનસ્પતિકાચિક સુધીના જીવોમા ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં કહેવું જોઈએ. તેથી આ બંને પ્રકારના તેજસ્કાચિક જીવોના અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાચિકોની જેમ ૨૦ વીસે સ્થાનોમાં રત્નપ્રભા પૃથ્વીમાં ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં કહેવું જોઈએ. આ રીતે

વાદરતેજસ્કાયિકાનાં મનુષ્યક્ષેત્રાદન્યત્રાગમ્મવાત્ સૂક્ષ્મપર્યાપ્નાપર્ણાપ્ત-
યોરેવ દ્વૌ ભેદૌ કથિતૌ । વાદરપર્યાપ્તાપર્ણાપ્તયો રતેજસ્કાયિકયો દ્વૌ મજ્ઞૌ
મનુષ્યક્ષેત્રમ્ અધિકૃત્યાગ્રિમસૂત્રે કથયિષ્યેતે इति । તદેવાહ—‘અપજ્જત્ત વાયરતેજ-
કાહણં મંતે ।’ અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકઃ સ્વલુ ભદન્ત । ‘મણુસસ સ્વેત્તે સમોદ્દ’
મનુષ્યક્ષેત્રે સમવહત્, ‘સમોદ્દણિત્તા જે ભવિણ્ હમીસે રયણપ્પમાણ પુઢવીણ’
સમહત્ય યો મવ્ય એતસ્યા રત્નપ્રમાયાઃ પૃથિવ્યાઃ, ‘પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે
અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહયત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ’ પાશ્ચાત્યે—પશ્ચિમે ચરમાન્તે અપ-
ર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકનયા પૃથિવીકાયિકરૂપેણેત્યર્થઃ ઉત્પત્તુમ્ ‘સે ણં
મંતે ! કહસમહણં વિગ્ગહેણ ઉવવજ્જેજ્જા’ સ સ્વલુ ભદન્ત ! કતિ સામયિકેન

इस प्रकार से यहां ४० चालीस भेद होते हैं । ४० । वादरतेजस्कायिकों
का मनुष्यक्षेत्र से बाहर संभव नहीं है वहीं पर इनका सद्भाव है
इसलिये यहां उनके सूक्ष्म पर्याप्त और सूक्ष्म अपर्याप्त ऐसे दो ही
भेद कहे हैं । बाकी के इनके वादर पर्याप्त और वादर अपर्याप्त से
दो भङ्ग मनुष्य क्षेत्र को अधिकृत करके सूत्रकार आगे के सूत्र में कह
रहे हैं—‘अपज्जत्त वायर तेजकाहणं मंते !’ हे भदन्न ! कोई अपर्याप्त
वादरतेजस्कायिक मनुष्य क्षेत्र में मारणान्तिक समुद्घात करके मरा
‘और समोद्दणित्ता’ मरकर ‘जे भविण्’ हमीसे रयणप्पमाए पुढवीए
पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्त सुहूमपुढवी काहयत्ताए उववज्जित्तए’
इस रत्नप्रभा पृथिवी के पूर्व चरमान्न में अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक
रूप से उत्पन्न होने के योग्य हुआ ‘से णं मंते ! कहसमहणं विगगहेण
उववज्जेज्जा’ तो हे भदन्त ! वह वहां कितने समयवाले विग्रह से

અહિયાં ૪૦ ચાલીસ ભેદો થાય છે વાદર તેજસ્કાયિકોના મનુષ્યક્ષેત્રની
બહાર સંભવ હોતા નથી. મનુષ્ય ક્ષેત્રમાં જ તે ઝોના સદ્ભાવ છે, તેથી
અહિયાં તેઓ ના સૂક્ષ્મ અપર્યાપ્ત અને સૂક્ષ્મ પર્યાપ્ત એવા બે જ ભેદો કહ્યા
છે. બાકીના તેઓના વાદર પર્યાપ્ત અને વાદર અપર્યાપ્ત એ રીતે બે
ભંગો. મનુષ્ય ક્ષેત્રને અધિકૃત કરીને સૂત્રકાર આગળના સૂત્રમાં કહેશે.
‘અપજ્જત્ત વાયર તેજકાહણં મંતે !’ હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિક
મનુષ્યક્ષેત્રમાં મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને મરણપામે અને મરીને તે
‘હમીસે રયઅપ્પમાણ પુઢવીણ પચ્ચાત્થિમિલ્લે ચરિમંતે અપજ્જત્ત સુહુમ પુઢવી
કાહયત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ ભવિણ્’ આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વચરમાન્તમાં અપર્યાપ્ત
સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક પશુપાત્રી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયો હોય ‘સે ણં મંતે ! કહ
સમહણં વિગગહેણ ઉવવજ્જેજ્જા’ તો હે ભગવાન્ તે ત્યાં કેટલા સમયવાળી

વિગ્રહેણોત્પદેત ? इति प्रश्नः, उत्तरमाह—‘सेसं’ इत्यादि, ‘सेसं तद्देव जाव से तेणट्ठेणं’ शेषम् -प्रश्नातिरिक्तमुत्तरं तदेव समुत्पद्यमानस्य पृथिवीकायिकस्य यत् कथितं तदेव यावत् तत्तेनार्थेन०, हे गौतम ! एकसामयिकेन वा, यावत् त्रिसाम-यिकेन वा, विग्राहेण उत्पद्येत, तत् तेनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते, एकसामयिकेन वा, यावत् त्रिसामयिकेनेत्यादि । हे गौतम ! मया खलु सप्तश्रेणयः कथिताः, इत्यादिकं सर्वमिहानुसन्धेय मिति । ‘एवं पुढवीकाइएसु चउव्विहेसु उववाएयव्वो’ एवम्—प्रदर्शितक्रमेण पृथिवीकायिकेषु चतुर्विधेष्वपि सूक्ष्मवादरपर्याप्तापर्याप्त भेदभिन्नेषु अपर्याप्त बादरतेजस्कायिकस्य उपपातो वर्णनीयः वर्णनप्रकारस्तु स्वयमेवोद्घोषनीयः ।

‘एवं आउकाइएसु चउव्विहेसु वि’ एवं यथा चतुर्विध पृथिवीकायिकेषु उत्पन्न होता है ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—‘सेसं तद्देव जाव से तेणट्ठेणं’ हे गौतम ! वह वहां पर एक समयवाले विग्रह से अथवा दो समयवाले विग्रह से अथवा तीन समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है ऐसा यहाँ पर सब उत्तर रूप कथन पूर्ववत् समझ लेना चाहिये । हे भदन्त ! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं ! हे गौतम ! मैंने सात श्रेणि कही हैं । यहाँ पर भी उत्तर रूप में सब कथन पूर्वके जैसा ही लगा लेना चाहिये । ‘एवं पुढवीकाइएसु चउव्विहेसु उववाएयव्वो’ इस प्रकार प्रकट किये गये क्रम से अपर्याप्त बादरतेजस्कायिकके उत्पादका सूक्ष्मवादर पर्याप्त अपर्याप्त भेद विशिष्ट पृथिवीकायिकों में उपपात कर लेना चाहिये, तथा इस सम्बन्ध में वर्णन करनेका प्रकार—अपने आप उद्भावित कर लेना चाहिये । ‘एवं आउकाइएसु चउव्विहेसु वि’ जिस रीति से

વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘સેસં’ તદ્દેવ જાવ સે તેણટ્ઠેણં’ હે ગૌતમ ! ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી અથવા બે સમયવાળી વિગ્રહગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. આ પ્રમાણે અહિયાં સઘળું ઉત્તર વાક્ય રૂપ કથન સમજી લેવું. હે ભગવન્ આપ એવું શા કારણથી કહો છો ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં હે ગૌતમ ! મેં સાત શ્રેણીયો કહી છે, વિગેરે સઘળું કથન અહિયાં પણ ઉત્તર રૂપે પહેલાં કહ્યા પ્રમાણેનું કથન સમજી લેવું ‘एवं पुढवीकाइएसु चउव्विहेसु उववाएयव्वो’ આ રીતે ઉપર પ્રગટ કરવામાં આવેલા ક્રમથી અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકોના ઉત્પાદન-સૂક્ષ્મ, બાદર, પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત ભેદવાળા પૃથ્વીકાયિકોનું વર્ણન સમજી લેવું. તથા આ વિષયનું વર્ણન કરવાની રીત સ્વયં સમજી લેવી. ‘एवं आउकाइएसु चउव्विहेसु वि’ જે રીતથી આર પ્રકારના

અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકસ્યોપપાતો દર્શિત સ્તથૈવ અપ્કાયિકેષુ ચતુર્વિધેષુ અપર્યાપ્તાદિ ભેદમિન્નેષુ અપર્યાપ્તવાદરતેજસ્કાયિકસ્યોપપાતોઽપિ વર્ણયિતવ્યઃ ઇતિ । 'તેઽકાઙ્કાસુ સુહુમેસુ અપજ્જત્તેસુ પજ્જત્તેસુ ય એવં ચેવ ઉવવાણ્યવ્વો' સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિકેષુ અપર્યાપ્તકેષુ પર્યાપ્તકેષુ ચ એવમેવ પૂર્વમ્દર્શિતક્રમેનૈવ ઉપપાતયિતવ્યઃ । અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકસ્યાપર્યાપ્તસૂક્ષ્મતેજસ્કાયિકેષુ તથા પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિકેષુ પૂર્વોક્તરૂપેણૈવોપપાતો વર્ણનીય ઇતિ ભાવઃ । 'અપજ્જત્તવાયરતેઽકાઙ્કાણં મંતે ! મણુસ્સલ્લેસે સમોહણ' અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકઃ સ્વલુ મદન્ત ! મનુષ્યક્ષેત્રે સમવહતઃ 'સમોહણિત્તા જે મિલિય મણુસ્સલ્લેસે અપજ્જત્ત વાયરતેઽકાઙ્કાણં ઉવવજ્જિત્તણ' સમવહત્ય મારણાન્તિકસમુદ્ધાતં

ચતુર્વિધ પૃથિવીકાયિકોં મેં અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિક કા ઉપપાત દિશ્વાયા ગયા હૈ ડસી રીતિ સે અપર્યાપ્તાદિ ભેદવાલે ચતુર્વિધ અપ્કાયિકોં મેં અપર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિક કે ઉત્પાદકા વર્ણન કર લેના ચાહિયે । 'તેઽકાઙ્કાસુ સુહુમેસુ અપજ્જત્તેસુ ય એવંચેવ ઉવવાણ્યવ્વો' હસી પ્રકાર સે અપર્યાપ્તક ઓર પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિકોં મેં મી વાદર અપર્યાપ્ત તેજસ્કાયિક કે ઉત્પાદકા વર્ણન કર લેના ચાહિયે । અર્થાત્ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિકોં મેં એવં પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિકોં મેં પૂર્વ મેં દિશ્વાય ગય ક્રમકે અનુસાર વાદર અપર્યાપ્ત તેજસ્કાયિકકે ઉત્પાદકા કથન કર લેના ચાહિયે ।

'અપજ્જત્ત વાયરતેઽકાઙ્કાણં મંતે ! મણુસ્સલ્લેસે સમોહણ' હે મદન્ત ! કોઈ અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિક જીવ મનુષ્ય ક્ષેત્ર મેં સરા 'સમોહણિત્તા

પૃથ્વીકાયિકોમાં અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકોના ઉપપાત બતાવવામાં આવેલ છે' એજ પ્રમાણે અપર્યાપ્ત વિગેરે લેહવાળા ચાર પ્રકારના અપ્કાયિકોમાં અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકના ઉત્પાદનું વર્ણન સમજી લેવું. 'તેઽકાઙ્કાસુ સુહુમેસુ અપજ્જત્તેસુ પજ્જત્તેસુ ય એવં ચેવ ઉવવાણ્યવ્વો' આજ પ્રમાણે અપર્યાપ્ત અને પર્યાપ્ત તેજસ્કાયિકોમાં પણ બાદર અપર્યાપ્ત તેજસ્કાયિકના ઉત્પાદનું વર્ણન કરી લેવું. અર્થાત્ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિકોમાં અને પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિકોમાં તથા અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકોમાં અને પર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકોમાં પહેલાં બતાવેલા ક્રમ પ્રમાણે બાદર અપર્યાપ્ત તેજસ્કાયિકના ઉત્પાદનું કથન કરી લેવું જોઈએ.

'અપજ્જત્ત વાયરતેઽકાઙ્કાણં મંતે ! મણુસ્સલ્લેસે સમોહણ' હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિક જીવ મનુષ્ય ક્ષેત્રમાં મરણ પામે 'સમોહણિત્તા જે

કૃત્વા યો મળ્યો મનુષ્યક્ષેત્રે અપર્યાપ્તવાદરતેજસ્કાયિકતયા-તેજસ્કાયિકરૂપેણો-
ત્યત્તુમ્-સે ણં મંતે ! કહ સમહણં' સ સ્વલુ મદન્ત ! કતિસામયિકેન વિગ્રહેણ
ઉત્પદ્યતેતિ પ્રશ્નઃ । ઉત્તરમાહ-‘સેસં’ ઇત્યાદિ । ‘સેસં તં ચેવ’ શેષં પ્રશ્નવ્ય-
તિરિક્તમ્ ઉત્તરં સર્વમપિ તદેવ અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકપ્રકરણકથિતમેવ ।
‘એવં પઞ્જત્ત વાયરતેઝકાહ્યત્તાણ વિ ઉવવાણ્યવ્વો’ એવં પર્યાપ્તવાદરતેજસ્કાયિ-
કતયાઽપિ ઉપપાતયિતવ્યાઃ । યથા અપર્યાપ્તવાદરતેજસ્કાયિકસ્ય મનુષ્યક્ષેત્રે
સમવહતસ્યાપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકરૂપેણ ઉપપાતો દર્શિત સ્તથૈવાપર્યાપ્ત-
વાદરતેજસ્કાયિકસ્ય મનુષ્યક્ષેત્રસમવહતસ્ય પર્યાપ્તવાદરતેજસ્કાયિકરૂપેણા-
ઽપિ ઉપપાતો વક્તવ્યઃ પ્રક્રિયા પૂર્વવદેવોદ્ધનીયેતિ ભાવઃ । ‘વાઝકાહ્યત્તાણ ય

‘જે મવિણ મણુસસેલે અપઞ્જત્ત વાયરતેઝકાહ્યત્તાણ ઉવવઞ્જિત્તણ’
ઔર મરકર વહ મનુષ્ય ક્ષેત્ર મેં હી અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિક રૂપ સે
ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હુઆ તો ‘સે ણં મંતે ! કહ સમહણં’ હે મદન્ત !
વહ કિતને સમયવાલે વિગ્રહ સે વહાં ઉત્પન્ન હોતા હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી
ગૌતમસ્વામી સે કહતે હૈં-‘સેસં તંચેવ’ હે ગૌતમ ! હસ સમ્બન્ધ મેં
ઉત્તર રૂપ સ્વ કથન અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક કે પ્રકરણ મેં કહે
અનુસાર હી સમજના ચાહિણ । ‘એવં પઞ્જત્તવાયર તેઝકાહ્યત્તાણ વિ
ઉવવાણ્યવ્વો’ જિસ પ્રકાર સે મનુષ્યક્ષેત્ર મેં સમવહત અપર્યાપ્ત વાદર-
તેજસ્કાયિકતા અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિક રૂપ સે મનુષ્યક્ષેત્ર મેં ઉપ-
પાત દિશાયા હૈ, ઊસી પ્રકાર સે મનુષ્યક્ષેત્ર મેં સમવહત અપર્યાપ્ત વાદર-
તેજસ્કાયિકતા પર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિક રૂપ સે બી ઉપપાત કહ લેના
ચાહિયે । હસ સમ્બન્ધ મેં પ્રક્રિયા પૂર્વ કે જૈસી હી ઉદ્ભાવિત કર લેની

મવિણ મણુસસેલે અપઞ્જત્ત વાયર તેઝકાહ્યત્તાણ ઉવવઞ્જિત્તણ’ અને મરીને તે
મનુષ્ય ક્ષેત્રમાં જ અપર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિકપણથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયો
હોય તો ‘સે ણં મંતે ! કહ સમહણં.’ હે ભગવન્ તે કેટલા સમયવાળી વિગ્રહ
ગતિથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે- ‘સેસં
તં ચેવ’ હે ગૌતમ ! આ સમ્બન્ધમાં ઉપપાત રૂપ સઘણું કથન અપર્યાપ્ત
સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકના પ્રકરણમાં કહ્યા પ્રમાણે જ સમજવું.

‘એવં પઞ્જત્ત વાયરતેઝકાહ્યત્તાણ વિ ઉવવાણ્યવ્વો’ જે પ્રમાણે મનુષ્ય
ક્ષેત્રમાં સમવહત અપર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિકને ઉપપાત અપર્યાપ્ત વાદર
તેજસ્કાયિકપણથી બતાવેલ છે, એજ પ્રમાણે મનુષ્ય ક્ષેત્રમાં સમવહત
અપર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિકને ઉપપાત-પર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિક પણથી

વળસ્સહકાઈયત્તાપ્પ ય જહા પુઢવીકાઈપ્પસુ તહેવ ચઝક્કણં મેણં ઉવવાપ્પવ્વો' વાયુકાયિકતયા ચ વનસ્પતિકાયિકતયા ચ યથા-પૃથિવીકાયિકેપુ તથેવ મેદ ચતુષ્ટયેન સૂક્ષ્મ વાદરતેજસ્કાયિકરય યથા પૃથિવીકાયિકેપુ ઉપપાતઃ કથિત-સ્તથા-સૂક્ષ્મ વાદર પર્યાપ્તાપર્યાપ્તક ચતુષ્ક્રમેદેન વાયુકાયિકરૂપેણ વનસ્પતિ-કાયિકરૂપેણ ઉપપાતો વર્ણનીય इति । 'एव पञ्जत्त वायरतेउकाइओ वि समय-खेत्ते समोहणावेत्ता एएसु चेव वीसइठाणेसु उववाएयव्वो' एवमपर्याप्तवादरतेज-સ્કાયિકવદેવ પર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકોઽપિ વિજ્ઞેયઃ, તે સમયક્ષેત્રે સમવધાત્ય એતેષ્વેવ વિંશતિસ્થાનેષુ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકત આરમ્ભ્ય પર્યાપ્ત વાદર વનસ્પતિકાયિકાન્તેષુ વિંશતિસ્થાનેષુ ઉપપાતયિતવ્યઃ, ઉપપાતમકારસ્તુ પૂર્વદર્શિત-ક્રમેણૈવ જ્ઞાતવ્ય इति । क इव ? इत्याह- 'जहेव अपञ्जत्तओ उववाइओ' यथैव,

चाहिये । 'वाउकाइयत्ताए य वणस्सइकाइयत्ताए य जहा पुढवीकाइएसु तहेव चउक्कणं मेणं उववाएयव्वो' अपर्याप्त वादरतेजस्कायिकका जैसा-पृथिवीकायिकों में उपपात कहा है उसी प्रकार से इसके उपपात का वर्णन सूक्ष्म वादर पर्याप्त और अपर्याप्त भेदोवाले वायुकायिकों में और वनस्पतिकायिकों में भी कर लेना चाहिये । 'एवं पञ्जत्तवायरतेउ-काइओ वि समयखेत्ते समोहणावेत्ता एएसु चेव वीसइठाणेसु उव-वाएयव्वो' अपर्याप्त वादरतेजस्कायिक के जैसा ही पर्याप्त वादरतेज-स्कायिकका भी कथन जानना चाहिये । अर्थात् समयक्षेत्र में उसका मारणान्तिक समुद्घात से मरण करवाकर इन्हीं बीस स्थानों में-अप-र्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक से लेकर पर्याप्त वादरवनस्पतिकायिक तक के जीवों में-उसका उत्पात करवाना चाहिये ! उत्पात करवाने की रीति पहिले प्रकट ही की जा चुकी है । 'जहेव अपञ्जत्तओ उववाइओ'

પણ સમજ લેવો. આ સંબંધમાં આલાપનો પ્રકાર પહેલા કહ્યા પ્રમાણે જ સમજ લેવો. 'વાઝકાઈયત્તાપ્પ ય વળસ્સહકાઈયત્તાપ્પ ય જહા પુઢવીકાઈપ્પસુ તહેવ ચઝક્કણં મેણં ઉવવાપ્પવ્વો' અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકનો ઉપપાત જે પ્રમાણે પૃથિવીકાયિકોમાં કહેલ છે. એજ પ્રમાણે તેના ઉપપાતનું વર્ણન સૂક્ષ્મ વાદર પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત ભેદોવાળા વાયુકાયિકોમાં અને વનસ્પતિ કાયિકોમાં પણ કરી લેવું.

'एव' पञ्जत्त वायरतेउकाइओ वि समयखेत्ते समोहणावेत्ता' एएसु चेव वीसइठाणेसु उववाएयव्वो' अपर्याप्त वादर तेजस्कायिकोनी जेम ज पर्याप्त वादर तेजस्कायिकतुं कथन પણ સમજવું. અર્થાત્ સમય ક્ષેત્રમાં તેમને મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી મરણ કરાવીને આ વીસ સ્થાનોમાં-અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકોથી લઈને પર્યાપ્ત વાદર વનસ્પતિકાયિક સુધીના જીવોમાં-તેઓના ઉપપાત કહેવો એમજે ઉત્પાત કરવાની રીત પહેલા જ બતાવવામાં આવેલ છે. તે પ્રમાણે

અપર્યાપ્તક ઉપપાતિતઃ, યથા-અવ્યહિત પૂર્વમ્ અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકસ્ય ઉપપાતો વર્ણિત સ્તદ્વાત્ પર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકસ્યાઽપિ ઉપપાતો દર્શનીય ઇતિ માત્રઃ । એવં સર્વતથ વિ વાયરતેજકાયિકા અપજ્જત્તગા ય પજ્જત્તગા ય સમયસ્થેત્તે ઉવવાણ્યવા સમોહણાવેયવા વિ' ।૨૪૦। એવં યથૈવ અપર્યાપ્તક વાદરતેજસ્કાયિક ઉપપાતિતઃ 'અપજ્જત્તવાયરતેજકાઈણં મંતે !' ઇત્યાદિ સૂત્રેણ, એવમેવ સર્વત્રાપિ વિંશતિસ્થાનેષ્વપિ વાદરતેજસ્કાયિકા અપર્યાપ્તકાશ્ચ પર્યાપ્તકાશ્ચ સમયક્ષેત્રે ઉપપાતયિતવ્યાઃ સમવધાતયિતવ્યા અપિ । એવમપર્યાપ્ત પર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિ-

અર્થાત્ જિસ પ્રકાર સે અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિક કે ઉત્પાતકા અમી અમી વર્ણન કિયા ગયા હૈ ઉસી પ્રકાર સે પર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિક કે ઉપપાત કા મી દર્શન કર લેના ચાહિયે યહી હસ કથનકા સારાંશ હૈ । 'એવં સર્વતથ વિ વાયરતેજકાઈયા અપજ્જત્તગાય પજ્જત્તગાય સમયસ્થેત્તે ઉવવાણ્યવા સમોહણાવેયવા વિ' જિસ પ્રકાર 'અપજ્જત્ત વાયરતેજ કાઈણં મંતે !' ઇત્યાદિ સૂત્ર દ્વારા અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિક કે ઉત્પાતકા કથન કિયા ગયા હૈ, હસી પ્રકાર સે સર્વત્ર ૨૦ સ્થાનો મેં મી અપર્યાપ્તક ઓર પર્યાપ્તક વાદરતેજસ્કાયિક જીવોં કે સમયક્ષેત્રકો મનુષ્યક્ષેત્ર કો આશ્રિત કરકે ઉત્પાતકા કથન કર લેના ચાહિયે । અર્થાત્ ઉન્હેં વહાં ઉત્પન્ન બોલના ચાહિયે । ઓર વહીં પર ઉનકા મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત સે મરણ બોલના ચાહિયે । હસ પ્રકાર અપર્યાપ્ત ઓર પર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિક જીવોંકા મનુષ્યક્ષેત્ર મેં હી સમુદ્ઘાત ઓર

સમજવી 'જહેવ અપજ્જત્તઓ ઉવવાઈઓ' અર્થાત્ જે પ્રમાણે અપર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિકના ઉત્પાતનું વર્ણન હમણાં જ ઉપર કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે પર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિકના ઉત્પાતનું વર્ણન પણ સમજવું. એજ આ કથનનો સારાંશ કહેલ છે. 'એવ સર્વતથ વિ વાયર તેજકાઈયા અપજ્જત્ત ગાય પજ્જત્તગાય સમયસ્થેત્તે ઉવવાણ્યવા સમોહણાવેયવા વિ' જે પ્રમાણે 'અપજ્જત્ત વાયરતેજકાઈણં મંતે !' ઇત્યાદિ સૂત્ર દ્વારા અપર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિકના ઉત્પાતનું કથન કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે સઘળે ઠેકાણે-એટલે કે વીસે સ્થાનોમાં પણ અપર્યાપ્તક અને પર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિક જીવોના સમય ક્ષેત્ર-મનુષ્ય ક્ષેત્રનો આશ્રય કરીને ઉત્પાતનું કથન કહેવું જોઈએ. અર્થાત્ તેમની ઉત્પત્તિ ત્યાં કહેવી જોઈએ. અને ત્યાંજ તેઓ નુ મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી મરણ કહેવું જોઈએ આ રીતે અપર્યાપ્ત અને પર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિકોના સમુદ્ઘાત અને ઉત્પત્તિ મનુષ્ય ક્ષેત્રમાં જ કંમથી વીસે

કાનાં મનુષ્યક્ષેત્રે સમુદ્ધાતઃ મનુષ્યક્ષેત્રે એવોપપાતો યથાક્રમં વિંશતિસ્થાનેષુ વર્ણનીય इति । વર્ણનપ્રકારસ્તુ પૂર્વપદર્શિત એવ જ્ઞાતવ્યઃ । ૨૪૦॥

‘વચ્ચકાઙ્યા વળસસકાઙ્યા ય જહા પુઢવીકાઙ્યા તહેવ ચચ્ચકણં મેદેણં ઉવવાણ્ણ’ વાયુકાયિકા વનસ્પતિકાયિકાશ્ચ યથા પૃથિકાયિકા સ્તથૈવ ચતુષ્કેન મેદેન સૂક્ષ્મવાદરપર્યાપ્તાવર્યાપ્તમેદેન ઉપપાતયિતવ્યાઃ । વાયુકાયિકોઽપિ ચ દ્વિવિધઃ, સૂક્ષ્મો વાદરશ્ચ । સૂક્ષ્મોઽપિ અપર્યાપ્ત પર્યાપ્ત મેદેન દ્વિવિધ સ્તથા વાદરોઽપિ અપર્યાપ્ત પર્યાપ્ત મેદેન દ્વિવિધ સ્તદેવં ચતુર્વિધા વાયુકાયિકાઃ । તેષાં ચતુષ્કેન મેદેન વાયુકાયવનસ્પતિકાયયોઃ સર્વત્ર સમ્મવાત્ પૃથિવીકાયિકવદેવ ઉપપાતો વર્ણનીયઃ । (૨૨૦) એવમેવ વનસ્પતિકાયિકાનામપિ ચતુષ્કેન મેદેન પૃથિવીકાયિકવદેવ ઉપપાતો વક્તવ્યઃ । ૧૪૦૦ । કિયત્પર્યન્તં ચતુર્મેદમિન્નયોઃ વાયુ-વનસ્પતિકાયિકયો રૂપપાતો વર્ણનીય સ્તત્રાહ-‘જાવ’ ઇત્યાદિ, જાવ પજ્જત

ઉપપાત યથાક્રમ વીલ સ્થાનોં મેં વર્ણિત કરના ચાહિયે અન્યત્ર નહીં । વર્ણન કરનેકા પ્રકાર પૂર્વ મેં દિશ્વા હી દિયા ગયા હૈ ૨૪૦ ।

‘વચ્ચકાઙ્યા વળસસકાઙ્યા ય જહા પુઢવીકાઙ્યા તહેવ ચચ્ચકણં મેદેણં ઉવવાણ્ણ’ પૃથિવીકાયિક કે જૈસા વાયુકાયિક કા ઓર વનસ્પતિકાયિકકા અપને અપને મેદો કે સાથ સર્વત્ર ઉપપાદ કહના ચાહિયે । વાયુકાયિક બી સૂક્ષ્મ ઓર વાદર કે મેદ સે દો પ્રકાર કા હોતા હૈ હનમેં સૂક્ષ્મ વાયુકાયિક બી અપર્યાપ્ત ઓર પર્યાપ્ત કે મેદ સે દો પ્રકાર કા કહા ગયા હૈં તથા વાદરવાયુકાયિક બી અપર્યાપ્ત ઓર પર્યાપ્તક મેદ સે દો પ્રકાર કા કહા ગયા હૈં । હસ પ્રકાર ચાર પ્રકાર કે વાયુકાયિકે ઓર ચાર પ્રકાર કે વનસ્પતિકાયિક સર્વત્ર સંભવિત હોને સે પૃથિવીકાયિક કે જૈસે હનકે ઉપપાદ કા વર્ણન કર લેના ચાહિયે

સ્થાને માં વર્ણન કહેવુ જોઈએ બીજે નહીં. વર્ણન કરવાને પ્રકાર પહેલાં ઉપર બતાવવામા આવી ગયેલ છે. તે મુજબ સમજવો. ૨૪૦)

‘વાચ્ચકાઙ્યા વળસસકાઙ્યા ય જહા પુઢવીકાઙ્યા તહેવ ચચ્ચકણં મેદેણં ઉવવાણ્ણ’ પૃથિવીકાયિકના કથન પ્રમાણે વાયુકાયિકનું અને વનસ્પતિકાયિકનું કથન લેદો સાથે સ્વયં બતાવીને સઘળા સ્થાનોમાં ઉપપાત સમજવો. વાયુકાયિક પણ સૂક્ષ્મ અને બદરના લેદથી બે પ્રકારના થાય છે. સૂક્ષ્મવાયુકાયિકે પણ અપર્યાપ્ત અને પર્યાપ્તના લેદથી બે પ્રકારના કહેલ છે તથા વાદર વાયુકાયિક પણ અપર્યાપ્ત અને પર્યાપ્તના લેદથી બે પ્રકારના કહેલ છે. આ રીતે ચાર પ્રકારના વાયુકાયિક અને ચાર પ્રકારના વનસ્પતિકાયિકનું બધે સંભવિત પણ હોવાથી પૃથ્વીકાયિકની જેમ તેમના ઉપપાતનું વર્ણન

वायरवणस्सइकाइएणं भंते !' यावत्पर्याप्त वादरवनस्पतिकायिकः खलु भदन्त !
अत्र यावत्पदेन पर्याप्त सूक्ष्मवायुकायिकस्यापर्याप्त वादरवायुकायिकस्य, पर्याप्त-
वादरवायुकायिकस्य, अपर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिकस्य, पर्याप्त सूक्ष्मवनस्पति-
कायिकस्य, अपर्याप्त वादरवनस्पतिकायिकस्य च संग्रहो भवति । एतादृशः
पूर्वोक्तचतुर्भेदमिन्नो वनस्पतिकायिकः, 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए' एतस्या
रत्नप्रभायाः पृथिव्याः 'पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' पौरस्त्ये पूर्वस्मिन् चर-
मान्ते समग्रहतः, 'समोहणित्ता' समग्रहत्य मरणान्तिकतमुद्घातं कृत्वा, 'जे
भविण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए' यो भव्य एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः,
पञ्चत्थिमिल्ले चरिमंते पञ्जत्त वायरवणस्सइकाइएत्ताए उव्वज्जित्तए' एतस्या-
पश्चिमे चरिमान्ते पर्याप्त वादरवनस्पतिकायिकतयोत्पत्तुम् । 'से णं भंते ! कइ-
समइएणं' स खलु भदन्त ! कति सामयिकेन विग्रहेणोत्पद्यतेति मदनः ।

४००, 'जाव पञ्जत्त वायरवणस्सइकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए
पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' यावत् हे भदन्त ! कोई पर्याप्त
वादरवनस्पतिकायिक इस रत्नप्रभा पृथिवी के पूर्व चरमान्त में मरा
और 'समोहणित्ता जे भविण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पञ्चत्थि-
मिल्ले चरिमंते पञ्जत्त वायरवणस्सइकाइएत्ताए उव्वज्जित्तए' मरकर
वह इसी रत्नप्रभा के पश्चिम चरमान्त में वादर पर्याप्त वनस्पतिका-
यिक रूप से उत्पन्न होने के योग्य हुआ 'से णं भंते ! कइसमइएणं०' 'तो
हे भदन्त ! वह कितने समयवाले विग्रह से वहां उत्पन्न होता है ? यहां
यावत् शब्द से सूक्ष्म पर्याप्त वायुकायिक का अपर्याप्त वादरवायुकायिक

करी देवु' ने० अ० ४०० 'जाव पञ्जत्त वायर वणस्सइकाइएण भंते ! इमीसे
रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते ! समोहए' यावत् हे भगवन् के०
पर्याप्त वनस्पतिकायिक आ रत्नप्रभा पृथ्वीना पूर्व चरमान्तमां मरणपाये
अने 'समोहणित्ता जे भविण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पञ्चत्थिमिल्ले चरिमंते !
पञ्जत्त वायरवणस्सइकाइएत्ताए उव्वज्जित्तए' मरीने ते आ रत्नप्रभा
पृथ्वीना पश्चिम चरमान्तमां आदर पर्याप्त वनस्पतिकायिक पण्ठाथी उत्पन्न
थवाने योग्य थये होय तो 'से णं भंते ! कइसमइएण' हे भगवन् ते के०
समयवाणी विग्रह गतिथी त्यां उत्पन्न थाय छे ? अइया यावत् शब्दथी सूक्ष्म
पर्याप्त वायुकायिकनुं, अपर्याप्त आदर वायुकायिकनुं, पर्याप्त आदर वायु-
कायिकनुं, अपर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिकनुं, पर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिक यिकेनुं
अने अपर्याप्त आदर वनस्पतिकायिकनुं अइछ थयेत छे आ प्रश्नना उत्तरमां
प्रभुश्री ठे छे के- 'सेस' तहेव जाव से वेणट्ठणं हे गौतम ! ने प्रभाण्णे अपर्याप्त

ઉત્તરયતિ — ‘સેમં’ इत्यादिना, ‘सेमं तदेव जाव से तेणट्ठेणं’ शेषं तथैव यथा अपर्याप्तं सूक्ष्मपृथिवीकायिकोपपातावसरे उत्तरे कथितं तथैव इहापि यावत्तत्तेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते, इत्यादि प्रकरणान्तं सर्वमपि उत्तरादिकं ज्ञातव्यम् । यावत् पदेन सम्पूर्णस्यापि उत्तरवाक्यस्य संग्रहो भवति ।

‘दक्षिण चरमान्ते उपपातं वर्णयितुमाह—अपज्जत्तसुहुम’ इत्यादि । ‘अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइएणं भंते !’ अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! ‘इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए’ एतस्याः रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पाश्चात्ये—पश्चिमे चरमान्ते समवहतः ‘समोहणित्ता जे भविए’ समव-

का अपर्याप्त सूक्ष्म વનસ્પતિકાયિકા, એવં અપર્યાપ્ત વાદરવનસ્પતિકાયિકા કા સંગ્રહ હુઆ છે । इस प्रकार प्रकृत के उत्तर में प्रभुश्री गौतम स्वामी से कहते हैं—‘सेसं तदेव जाव से तेणट्ठेणं’ हे गौतम ! जैसा अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक के उपपात के अवसर में उत्तररूप में कहा गया है उसी प्रकार से यहां पर भी ‘यावत् हे गौतम ! मैंने इस कारण से ऐसा कहा है’ इस प्रकरण तक कह लेना चाहिये । यहां यावत् पद से सम्पूर्ण उत्तर वाक्य का संग्रह हुआ है ।

અવ સૂત્રકાર પૂર્વ દક્ષિણ ચરમાન્ત મેં ઉપપાત કા વર્ણન કરતે હેં—હસમેં ગૌતમસ્વામીને પ્રભુશ્રી સે એસા પૂછા હૈ—‘અપજ્જત્ત સુહુમ પુઢવીકાઈયાણં ભંતે !’ હે ભદન્ત ! કોઈ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક જીવ ‘ઈમીસે રયણપ્પભાએ પુઢવીએ પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહએ’ હસ રત્નપ્રમાપૃથિવી કે પશ્ચિમ ચરમાન્ત મેં મારણાન્તિક સમુદ્ધાત સે મરા ‘સમોહણિત્તા જે ભવિએ હમીસે રયણપ્પભાએ પુઢવીએ પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે

સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકના ઉપપાતના સંબંધમાં ઉત્તર રૂપથી કથન કરેલ છે, તેજ રીતે આ પ્રકરણમાં પણ યાવત્ હે ગૌતમ ! મેં આકારણથી એવું કહ્યું છે કે—આ પ્રકરણ પર્યાન્ત સમગ્ર લેવું અહિયાં યાવત્ પદથી આ સમગ્ર ઉત્તર વાક્ય ગ્રહણ કરાયું છે.

હવે સૂત્રકાર દક્ષિણ ચરમાન્તમાં ઉપપાતનું વર્ણન કરે છે આમાં ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને એવું પૂછ્યું છે કે—‘અપજ્જત્ત સુહુમ પુઢવીકાઈયાણં ભંતે !’ હે ભગવન્ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ કોઈ પૃથ્વીકાયિક જીવ ‘ઈમીસે રયણપ્પભાએ પુઢવીએ પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે ! સમોહએ’ આ રત્નહલા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં મારણાન્તિક સમુદ્ધાતથી મરણપામે અને ‘સમોહણિત્તા જે ભવિએ

इत्य-मारणान्तिक समुद्धातं कृत्वा यो भव्यः 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए' एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः, 'पुरत्थिमिल्ले चरिमते' पौरस्त्ये-पूर्वे चरमान्ते, 'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिक-तया अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकरूपेणोत्पत्तुम्, 'से णं भंते ! कहसमइएणं' स खलु भदन्त ! कति सामयिकेन विग्रहणोत्पद्यतेति प्रश्नः । उत्तरमाह-सेसं तहेव' इत्यादि । 'सेसं तहेव निरवसेसं' शेषम्-एतदतिरिक्तं निरवशेषं प्रश्न वाक्यमुत्तरवाक्यं च तथैव-सर्वत्र समुद्धातेषु सर्वत्र उपपातेषु यथैव प्रश्नोत्तर प्रकरणं कथितं तेनैव रूपेण निरवशेषम् इहापि अध्येतव्यम् । एकसामयिकेन यावत् त्रिसामयिकेन वा विग्रहेणोत्पद्यत 'से केणट्टेणं' इत्यादिकं पूर्वसूत्रपठितमेव

'अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' और भरकर वह उसी रत्नप्रभापृथिवी के पूर्व चरमान्त में अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न होने के योग्य हुआ 'से णं भंते ! कहसमइएणं०' तो हे भदन्त ! वह वहां कितने समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है ? उत्तर में प्रभुश्री गौतमस्वामी से कहते हैं-'सेसं तहेव निरवसेस' हे गौतम ! इस सम्बन्ध में जैसा कि पूर्व में सर्वत्र समुद्धातों में और उपपातों में प्रश्नोत्तर प्रकरण कहा गया है वैसा ही यहां पर भी वही सब कथन कह लेना चाहिये । अर्थात् वह वहां एक समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है अथवा दो समयवाले विग्रह से अथवा तीन समयवाले विग्रहसे उत्पन्न होता है । 'से केणट्टेणं' इत्यादि सूत्र से प्रश्न और 'से तेणट्टेण०' इत्यादि सूत्र से उत्तर जैसा पहिले कहा जा चुका है वह सब यहां पर वहां से आकर्षित कर कह लेना चाहिये । यही बात-सेसं तहेव निरवसेसं'

इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते । सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' भरણ પામીને તે એજ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ચરમન્તમાં સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય બનેલ હોય 'સે ણં ભંતે ! કહ સમઇણં' તો હે ભગવન્ તે ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'સેસં તહેવ નિરવસેસ' હે ગૌતમ ! આ સંબંધમાં જે પ્રમાણે મેં પહેલા બધે સ્થળે સમુદ્ધાતોમાં અને ઉપપાતોમાં પ્રશ્નોત્તર રૂપથી પ્રકરણ કહ્યું છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ તે સઘળું કથન કહી લેવું. નોંધએ. અર્થાત્ તે ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે અથવા બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. 'સે કેણટ્ટેણ' ઇત્યાદિ સૂત્રથી પ્રશ્ન અને 'સે તેણટ્ટેણ' ઇત્યાદિ સૂત્રથી ઉત્તર જે પ્રમાણે પહેલાં કહેલ છે. એજ પ્રમાણે તે તમામ ઉત્તર અહીયાં કહી લેવો. એજ વાત 'સેસં તહેવ નિરવસેસ' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા અહિયાં સૂત્રકારે

જ્ઞાતવ્યમિતિભાવઃ । ‘एवं जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते सव्वपदेसु वि समोहया’ एवं यथैव पौरस्त्ये चरमान्ते सर्वपदेष्वपि अपर्याप्त पर्याप्तादि भेदमिन्नपृथिव्यादि वनस्पतिकायिकान्तं विंशति स्थानेषु समग्रताः ‘पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाइया’ पाश्चात्ये चरमान्ते पृथिव्यप् वायुवनस्पतिकायिकाः समयक्षेत्रे-चापर्याप्तवादरपर्याप्तवादस्तेजस्कायिका उपपातिताः । ‘जे य समयखेत्ते समोहया ये च समयक्षेत्रे समग्रताः सन्तः’, ‘पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाइया’ पाश्चात्ये चरमान्ते पृथिव्यादयश्चत्वारः, समयक्षेत्रे च वादर-तेजस्कायिका उपपातिताः । ‘एवं एएणं चेव कमेणं’ एवमेतेनैव क्रमेण, ‘पच्चत्थि-मिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य समोहया पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य

इस सूत्रपाठ द्वारा यहां समझाई गई है । ‘एवं जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते सव्वपदेसु वि समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाइया’ तथा इस सूत्र पाठ द्वारा सूत्रकार ऐसा समझा रहे हैं कि जैसा पूर्वचरमान्त में अपर्याप्त पर्याप्त आदि भेद विंशति पृथिवी आदि से लेकर वनस्पतिकायिक तक के २० स्थानोंवाले जीवोंका मार-णान्तिक समुद्घात करके मरण कहा गया है और मरण करके जैसा उनका पाश्चात्य चरमान्त के पृथिवी अप् वायु और वनस्पतिकायिकों में उपपात कहा गया है तथा अपर्याप्त वादर और पर्याप्त वादर तेजस्का-यिकों का समयक्षेत्र में उत्पाद कहा गया है तथा ‘जे य समयखेत्ते समो-हया पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाइया’ जो जीव वादर अपर्याप्त तेजस्कायिक, वादर पर्याप्त तेजस्कायिक-समयक्षेत्र में मारणा-न्तिक समुद्घात करके पाश्चात्य चरमान्त में-रत्नप्रभा पृथिवी के पश्चिम-चरमान्त में एवं समयक्षेत्र में उत्पन्न हुए कहे गये हैं । ‘एवं

સમગ્રાવેલ છે. ‘एवं जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते सव्वपदेसु वि समोहया पच्च-त्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाइया’ तथा આ સૂત્રપાઠ દ્વારા સૂત્રકાર એવું સમજાવે છે કે-જેમ પૂર્વ ચરમાન્તમાં અપર્યાપ્ત પર્યાપ્ત વિગેરે ભેદવાળા પૃથ્વીકાય વિગેરેથી લઈને વનસ્પતિકાય સુધીના ૨૦ વીસ સ્થાનોમાં મારણા ન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને એવોનું મરણ કહેવામાં આવેલ છે, અને મરણ કહીને જે રીતે તેઓનું-એટલે કે પૃથ્વી, અપ્, વાયુ, અને વનસ્પતિકાયિકોમાં-એટલે કે પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં ઉપપાત કહેલ છે, તથા ‘जे य समयखेत्ते समोहया पच्चत्थि-मिल्ले चरिमंते ! समयखेत्ते य उववाइया’ જે એવ બાદર અપર્યાપ્તક તેજસ્કાયિક, બાદર પર્યાપ્ત તેજસ્કાયિક સમય ક્ષેત્રમાં મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં-રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં અને સમય ક્ષેત્રમાં થયેલા

ઉવવાણ્યવા તેણે ગમણ' પાશ્ચાત્યે ચરમાન્તે સમયક્ષેત્રે ચ સમવહતાઃ પૌરસ્ત્યે ચરમાન્તે સમયક્ષેત્રે ચ ઉપપાતયિતવ્યા સ્તેનૈવ ગમકેન-તેન પૂર્વોક્તનૈવ પ્રકારેણેતિ । 'એવં એણં ગમણં દાહિણિલ્લે ચરિમંતે સમોહયાણં ઉત્તરિલ્લે ચરિમંતે સમયક્ષેત્રે ચ ઉવવાઓ' એવમેતેન ગમકેન દાક્ષિણાત્યે ચરમાન્તે દક્ષિણ ચરમાન્તે સમવહતાનામ્ ઔત્તરે ચરમાન્તે સમયક્ષેત્રે ચ ઉપપાતો વર્ણનીય 'એવં ચેવ ઉત્તરિલ્લે ચરિમંતે સમયક્ષેત્રે ચ સમોહયા' એવમેવૌત્તરે ચરમાન્તે સમયક્ષેત્રે ચ સમવહતાઃ 'દાહિણિલ્લે ચરિમંતે સમયક્ષેત્રે ચ ઉવવાણ્યવા તેણેવ ગમણં' દાક્ષિ-

એણં ચેવ કમેણં પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમયક્ષેત્રે સમોહયા પુરત્થિ મિલ્લે ચરિમંતે સમયક્ષેત્રે ચ ઉવવાણ્યવા' હસી પ્રકાર હસી ક્રમ સે પશ્ચિમ ચરમાન્ત મેં ઔર સમયક્ષેત્ર મેં ઉનકા મારણાન્તિક સમુદ્ધાત સે મરણ કહનાં ચાહિયે ઔર મરણ કહકર ઉનકા પૂર્વચરમાન્ત મેં એવં સમયક્ષેત્ર મેં ઉત્પાદ કહનાં ચાહિયે । 'એવં એણં ગમણં દાહિણિલ્લે ચરિમંતે સમોહયાણં ઉત્તરિલ્લે ચરિમંતે સમયક્ષેત્રે ચ ઉવવાઓ 'તથા' હસી પ્રકાર હસી ક્રમ સે હન જીવોંકા દક્ષિણ ચરમાન્ત મેં મારણાન્તિક સમુદ્ધાત સે મરણ કહકર ઉનકા ઉત્તર ચરમાન્ત મેં ઔર સમયક્ષેત્ર મેં ઉત્પાદ કા વર્ણન કરનાં ચાહિયે । 'એવં ચેવ ઉત્તરિલ્લે ચરિમંતે સમયક્ષેત્રે ચ સમોહયા દાહિણિલ્લે ચરિમંતે સમયક્ષેત્રે ચ ઉવવાણ્યવા તેણેવ ગમણં' તથા હસી પ્રકાર સે હસી ક્રમ સે ઉત્તર ચરમાન્ત મેં ઔર સમયક્ષેત્ર મેં ઉનકા મારણાન્તિક સમુદ્ધાત કહકર દક્ષિણ કે

'એવં એણ ચેવ કમેણ પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે ! સમયક્ષેત્રે સમોહયા પુરત્થિ-મિલ્લે ચરિમંતે ! સમયક્ષેત્રે ચ ઉવવાણ્યવા' એજ રીતે આ કમથી પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં અને સમય ક્ષેત્રમાં તેમનું મારણાન્તિક સમુદ્ધાતથી મરણ કહેવું નોંધાયે અને મરણ કહીને પૂર્વચરમાન્તમાં અને સમય ક્ષેત્રમાં તેઓનો ઉત્પાત કહેવો નોંધાયે. 'એવં એણં ગમેણં' દાહિણિલ્લે સમોહયાણં ઉત્તરિલ્લે ચરિમંતે સમયક્ષેત્રે ચ ઉવવાઓ' તથા આજ પ્રમાણે આજ કમથી આ જીવેનુ દક્ષિણ ચરમાન્તમાં મારણાન્તિક સમુદ્ધાતથી મરણ કહીને તેઓનું ઉત્તર ચરમાન્તમાં અને સમય ક્ષેત્રમાં ઉત્પાદનું વર્ણન કરવું નોંધાયે. 'એવં ચેવ ઉત્તરિલ્લે ચરિમંતે સમયક્ષેત્રે ચ સમોહયા દાહિણિલ્લે ચરિમંતે સમયક્ષેત્રે ચ ઉવવાણ્યવા તેણેવ ગમણં' તથા આજ પ્રમાણે આજ કમથી ઉત્તરમાં ચરમાન્તમાં અને સમય ક્ષેત્રમાં તેઓનો મારણાન્તિક સમુદ્ધાત કહીને દક્ષિણના

ળાત્યે ચરમાન્તે સમયક્ષેત્રે ચોપપાતયિતવ્યાઃ તેનૈવ પૂર્વપદર્શિતેનૈવ ગમકેન પ્રકારે-
 નેતિ । અયં ભાવઃ યથા-રત્નપ્રભા પૂર્વચરમાન્તે સમવહતરથ રત્નપ્રભાપશ્ચિમ
 ચરમાન્તે ઉપપાતો વર્ણિતઃ, એવં રત્નપ્રભા પશ્ચિમચરમાન્તે સમવહતરથ રત્નપ્રભા
 પૂર્વચરમાન્તે સમયક્ષેત્રે ચોપપાતો વર્ણયિતવ્યઃ, તથા રત્નપ્રભાયા દક્ષિણચરમાન્તે
 સમયક્ષેત્રે ચ સમવહતરથ રત્નપ્રભા ઉત્તરચરમાન્તે સમયક્ષેત્રે ચ સમવહતરથ
 રત્નપ્રભાયા ઉત્તરચરમાન્તે સમયક્ષેત્રે ચોપપાતો વર્ણયિતવ્યઃ, તથૈવ રત્નપ્રભાયા
 ઉત્તરચરમાન્તે સમયક્ષેત્રે ચ સમવહતરથ રત્નપ્રભા દક્ષિણચરમાન્તે ચોપપાતો વર્ણ-
 નીયઃ । આલાપકપ્રકારઃ સ્વયમેવ ઝહનીયઃ ॥

॥ ઇતિ રત્નપ્રભાશ્રિતોપપાતપ્રકારમ્પરણાત્મકં દ્વિતીયં સૂત્રમ્ ॥

ચરમાન્ત મેં ઓર સમયક્ષેત્ર મેં ડનકે ઉત્પાદકા કથન ડસી પ્રકાર કે
 ગમકસે કરના ડાહિયે । તાત્પર્ય ઘટ્ટ હૈ-જૈસા રત્નપ્રભા ચરમાન્ત પૃથિવી
 કે પૂર્વ ચરમાન્ત મેં સમવહત પૃથિવ્યાદિકાયાિક જીવ કા રત્નપ્રભા
 પૃથિવી કે પશ્ચિમ ચરમાન્ત મેં ઉપપાત વર્ણિત હુઆ હૈ વૈસા હી રત્નપ્રભા
 પૃથિવી કે પશ્ચિમ ચરમાન્ત મેં સમવહત પૃથિવ્યાદિકાયાિક જીવકા
 રત્નપ્રભાપૃથિવી કે પૂર્વચરમાન્ત મેં ઓર સમયક્ષેત્ર મેં ઉપપાદ વર્ણિત
 કર લેના ડાહિયે । તથા રત્નપ્રભા કે દક્ષિણ ચરમાન્ત મેં ઓર સમય-
 ક્ષેત્ર મેં સમવહત હુઅ ડસ જીવ કે ઉત્પાદકા વર્ણન રત્નપ્રભાપૃથિકે
 ઉત્તર ચરમાન્ત મેં ઓર સમયક્ષેત્ર મેં કર લેના ડાહિયે । હસી પ્રકાર સે
 રત્નપ્રભા પૃથિવી કે ઉત્તર ચરમાન્ત મેં એવં મનુષ્યક્ષેત્ર મેં સમવહત હુઅ

ચરમાન્તમાં અને સમય ક્ષેત્રમાં તેઓના ઉત્પાદનું કથન કરવું જોઈએ. કહે-
 વાનું તાત્પર્ય એ છે કે-જે રીતે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં જે
 પ્રમાણે સમુદ્ધાત કહેલા પૃથ્વીકાયિક વિગેરે જીવનો રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમ
 ચરમાન્તમાં ઉપપાતનું વર્ણન કર્યું છે, એજ પ્રમાણે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના
 પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં સમુદ્ધાત કરેલ પૃથ્વીકાયિક વિગેરે જીવોનો રત્નપ્રભા
 પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં અને સમય ક્ષેત્રમાં સમુદ્ધાત કહેલ જીવના
 ઉત્પાદનું વર્ણન કરી લેવું જોઈએ. તથા રત્નપ્રભા પૃથ્વીના દક્ષિણ ચરમાન્તમાં
 અને સમય ક્ષેત્રમાં સમુદ્ધાત કરેલ તે જીવના ઉત્પાદનું વર્ણન
 રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ઉત્તર ચરમાન્તમાં અને સમયક્ષેત્રમાં કરી
 લેવું જોઈએ. એજ પ્રમાણે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ઉત્તર ચરમાન્તમાં અને

અત્ર રત્નપ્રભા પ્રકરણે પૃથિવ્યાદ્યેકૈકસ્મિન્ જીવસ્થાને વિંશતિ વિંશતિ ગમક સદ્માવેન પૂર્વાન્તગમાનાં ચત્વારિ શતાનિ ૪૦૦, એવં પશ્ચિમાન્ત દક્ષિણાન્તોત્ત રાન્તગમાનાં પ્રત્યેકં ચત્વારિ ચત્વારિશતાનીતિ સમીલ્ય સર્વે ષોડશશત સંખ્યકાઃ ૧૬૦૦ ગમા ભવન્તીતિ ॥સૂ-૨॥

इति रत्नप्रभापृथिव्याश्रितोपपातप्रकारप्रवरगात्मकं द्वितीयं सूत्रम् ॥२॥

જીવોંકે ઉત્પાદ કા વર્ણન રત્નપ્રભા પૃથિવી કે દક્ષિણ ચરમાત મેં ઓર સમયક્ષેત્ર મેં કર લેનાં ચાહિયે । આલાપ પ્રકાર હસ સમ્બન્ધ મેં અપને આપ ઉત્પન્ન કર લેનાં ચાહિયે । હસ પ્રકાર રત્નપ્રભાશ્રિત ઉપપાત કે પ્રકાર કા યહ પ્રકરણ રૂપ દ્વિતીય સૂત્ર સમાપ્ત હુઆ । હસ રત્નપ્રભા પ્રકરણ મેં પૃથિવી આદિ એક એક જીવ સ્થાન મેં વીસ ૨ ગમકોંકા સદ્માવ હૈ હસલે પૂર્વાન્ત ગમકોંકી સંખ્યા ૪૦૦ હોતી હૈ । હસી પ્રકાર સે પશ્ચિમાન્ત, દક્ષિણાન્ત ઓર ઉત્તરાન્ત ગમકોંકી પ્રત્યેકકી ૪૦૦-૪૦૦ કી સંખ્યા હોતી હૈ । હસ પ્રકાર ચારોં દિશાઓં કે ગમક ૧૬૦૦ હોતે હૈ । ॥સૂ. ૨॥

મનુષ્ય ક્ષેત્રમાં સમુદ્ધાત કરેલા જીવના ઉત્પાતનું વર્ણન રત્નપ્રભા પૃથ્વીના દક્ષિણ ચરમાન્તમાં અને સમય ક્ષેત્રમાં કરી લેવું. આ રીતે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના આશ્રયવાળા ઉપપાતના પ્રકારોનું આ પ્રકરણ ૩૫ બીજું સૂત્ર સમાપ્ત થયું. આ રત્નપ્રભાના પ્રકરણમાં પૃથ્વી વિગેરે એક એક જીવ સ્થાનમાં વીસ વીસ ગમકોનો સદ્માવ કહેલ છે એથી પૂર્વાન્તના ગમોની સંખ્યા ૪૦૦ ચારસો થાય છે એજ રીતે પશ્ચિમાન્ત, દક્ષિણાન્ત અને ઉત્તરાન્ત, ગમોની દરેકની સંખ્યા ૪૦૦-૪૦૦ ચારસો, ચારસોની થાય છે. આ રીતે આરે દિશાઓના થઈને કુલ ગમકો ૧૬૦૦ સોળસો થાય છે. ॥સૂ.૨॥



રત્નમમાપૃથિવ્યાશ્રિતાના મેકેન્દ્રિય જીવાનાં સંચાતોપપાત્તપ્રકારં સંપ્રદર્શ્ય
શર્કરાનમાશ્રિતૈકેન્દ્રિયજીવાનાં સમુદ્ધાતોપપાતં પ્રદર્શયન્નાદ-અપજ્જત્ત' इत्यादि ।

મૂલપ્-અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાઢ્ણં મંતે ! સક્કરપ્પમાણ
પુઢવીણ પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહણ, સમોહણિત્તા જે મવિણ
સક્કરપ્પમાણ પુઢવીણ પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે અપજ્જત્ત સુહુમ-
પુઢવીકાઢ્ણિત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ । એવં જહેવ રયણપ્પમાણ જાવ
સે તેણટ્ટેણં એવં ણેણં કમેણં જાવ પજ્જત્તણસુ સુહુમતેઁ-
કાઢ્ણસુ । અપજ્જત્તસુહુમપુઢવીકાઢ્ણ ણં મંતે ! સક્કરપ્પમાણ
પુઢવીણ પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહણ સમોહણિત્તા જે મવિણ
સમયસેત્તે અપજ્જત્તવાયરતેઁકાઢ્ણિત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ, સે ણં મંતે !
કઢ્ણ સમઢ્ણં પુચ્છા, ગોયમા ! દુસમઢ્ણણ વા, તિ સમઢ્ણણ
વા વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જિજ્જા । સે કેણટ્ટેણં એવં સ્વલુ ગોયમા !
મણ સત્ત સેઢીઓ પન્નત્તાઓ તં જહા, ઉજ્જુયાયયા જાવ
અઘ્ઘચક્કવાલા । ણમઓ વંકાણ સેઢીણ ઉવવજ્જમાણે, દુસમ-
ઢ્ણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા, દુહઓ વંકાણ સેઢીણ ઉવવ-
જ્જમાણે તિસમઢ્ણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા, સે તેણટ્ટેણં
એવં પજ્જત્તણસુ વિ વાયરતેઁકાઢ્ણસુ, સેત્તં જહા રયણપ્પમાણ ।
જે વિ વાયરતેઁકાઢ્ણિત્તા અપજ્જત્તગા ય પજ્જત્તગા ય સમયસેત્તે
સમોહણિત્તા દોઘાણ પુઢવીણ પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે પુઢવી-
કાઢ્ણસુ ચઠવિવહેસુ આઠકાઢ્ણસુ ચઠવિવહેસુ, તેઁકાઢ્ણસુ
દુવિવહેસુ, વાઠકાઢ્ણસુ ચઠવિવહેસુ, વળ્લમ્મઢ્ણકાઢ્ણસુ ચઠવિવહેસુ
ઉવવજ્જંતિ તે વિ એવં ચેવ દુસમઢ્ણણ વા, તિસમઢ્ણણ વા વિગ્ગ-
હેણં ઉવવાણ્યઠ્ઠા । વાયરતેઁકાઢ્ણિત્તા અપજ્જત્તગા ય પજ્જત્તગા

जाहे तेसु जेव उववज्जंति, ताहे जहेव रयणप्पभाए तहेव एग-
समइय दुसमइय तिसमइय विग्गहा भाणियव्वा, सेसं जहेव
रयणप्पभाए तहेव निरवसेसं । जहा सद्धरप्पभाए वत्तव्वया
भाणिया एवं जाव अहे सत्तमाए वि भाणियव्वा ॥सू० ३॥

छाया—अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! शर्कराप्रभायाः पृथि-
व्याः पौरस्त्ये चरमान्ते समग्रहतः समग्रहत्य यो भव्यः शर्कराप्रभायाः पृथिव्याः
पाश्चात्ये चरमान्ते अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतयोपपत्तुम्, एवं यथैव रत्न-
प्रभायां यावत् तत्तेनार्थेन० । एवम्—एतेन कथेन यावत् पर्याप्तकेषु सूक्ष्मतेज-
स्कायिकेषु । अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! शर्कराप्रभायाः पृथि-
व्याः पौरस्त्ये चरमान्ते समग्रहतः समग्रहत्य यो भव्यः समयक्षेत्रे अपर्याप्तवादर-
तेजस्कायिकतया उत्पत्तुम्, स खलु भदन्त ! कति सामयिकेन पृच्छा, गौतम !
द्वि सामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, विग्रहेणोत्पद्येत, तत्केनार्थेन, एवं खलु
गौतम ! मया सप्तश्रेणयः प्रज्ञप्ताः तद्यथा ऋज्वायता यानदर्द्धचक्रनाला एकतो
वक्रया श्रेण्या उपपद्यमान त्रिसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत, द्विधातो वक्रया
श्रेण्या उपपद्यमान त्रिसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत, तत्तेनार्थेन० । एवं पर्या-
प्तकेष्वपि वादरतेजस्कायिकेषु शेषं यथा रत्नप्रभायाम् । येऽपि वादर-
तेजस्कायिका अपर्याप्तकाश्च पर्याप्तकाश्च समयक्षेत्रे समग्रहत्य द्वितीयायाः पृथि-
व्याः पाश्चात्ये चरमान्ते पृथिवीकायिकेषु चतुर्विधेषु, अप्तायिकेषु, चतुर्विधेषु,
तेजस्कायिकेषु द्विविधेषु, वायुनायिकेषु, चतुर्विधेषु, दनस्पतिकायिकेषु चतु-
र्विधेषु उत्पद्यन्ते तेऽपि एवमेव, त्रिसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, विग्रहेण
उपपातयितव्याः । वादरतेजस्कायिकाः अपर्याप्तकाश्च पर्याप्तकाश्च यदा तेष्वे-
वोत्पद्यन्ते तदा यथैव रत्नप्रभायां तथैव एकसामयिक द्विसामयिक-त्रिसामयिक
विग्रहा भणितव्याः । शेषं यथैव रत्नप्रभायां तथैव निरवशेषम् । यथा शर्करा
प्रभाया वक्तव्यता भणिताः, एवं यावद्धः सप्तम्या अपि भणितव्याः ॥सू० ३॥

रत्नप्रभापृथिवी के आश्रित एकेन्द्रिय जीवों के समुद्घात और
उपपात के प्रकार को प्रकट करके अब शर्कराप्रभाश्रित एकेन्द्रिय जीवों
के समुद्घात और उपपात के प्रकार को सूत्रकार प्रकट करते हैं—

रत्नप्रभा पृथ्वीना आश्रयवाणा ऐकेन्द्रिय जिवाना सघात अने उपपात
ना प्रकारने प्रकट करीने छवे सूत्रकार शर्कराप्रभा पृथ्वीना आश्रयवाणा
ऐकेन्द्रिय जिवाना समुद्घातो अने उपपातना प्रकारे प्रकट करे छे,—

ટીકા—‘અપજ્જતસુહુમપુઢવીકાદ્દાણં મંતે’ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકઃ સ્વલુ મદન્ત ! ‘સકરપ્પમાણ પુઢવીઈ’ શર્કરાપ્રમાયાઃ દ્વિતીયનારકપૃથિવ્યાઃ, ‘પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોદ્દાણં’ પૌરસ્ત્યે પૂર્વસ્થિત ચરમાન્તે સમવહતો મારણાન્તિકમમુદ્ધાતં કૃત્વધાન્ । ‘સમોદ્દાણિત્તા જે મવિણ’ સમવહત્ય મારણાન્તિક સમુદ્ધાતં કૃત્વા યો મવ્યઃ યોગ્યઃ ‘સકરપ્પમાણ પુઢવીઈ’ શર્કરાપ્રમાયા દ્વિતીય-પૃથિવ્યાઃ, ‘પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે’ પાશ્ચાત્યે-પશ્ચિમે ચરમાન્તે, ‘અપજ્જત સુહુમપુઢવીકાદ્દાણં ઉવવજ્જિત્તણં’ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક જીવરૂપેણોત્પત્તુમ્, સ સ્વલુ મદન્ત ! એકસામયિકેન વા, વિગ્રહેણ યાવત્ત ત્રિસામયિકેન વિગ્રહેણ

‘અપજ્જત સુહુમપુઢવીકાદ્દાણં મંતે ! સકરપ્પમાણ પુઢવીઈ’ ઇત્યાદિ ટીકાર્થ—‘અપજ્જત સુહુમપુઢવીકાદ્દાણં મંતે !’ હે મદન્ત ! જિસ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક જીવને ‘સકરપ્પમાણ પુઢવીઈ પુરત્થિ-મિલ્લે ચરિમંતે સમોદ્દાણં’ ‘શર્કરાપ્રમા પૃથિવીકે પૂર્વચરમાન્ત પૂર્વભાગકે અન્ત મેં મારણાન્તિક સમુદ્ધાત સે મરણ કિયા ‘સમોદ્દાણિત્તા જે મવિણ સકરપ્પમાણ પુઢવીઈ પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે અપજ્જત સુહુમ પુઢવીકાદ્દાણં ઉવવજ્જિત્તણં’ ઔર મરકર વહ શર્કરાપ્રમાપૃથિવી કે પશ્ચિમ ચરમાન્ત ‘પશ્ચિમ ભાગ કે અન્ત’ મેં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક રૂપ સે ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હુમાં તો હે મદન્ત એલા વહ જીવ વહાં કિતને સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ? કયા એક સમયવાલે વિગ્રહ સે વહ વહાં ઉત્પન્ન હોતા હૈ ? અથવા દો સમયવાલે વિગ્રહ સે વહ વહાં ઉત્પન્ન હોતા હૈ ? અથવા ત્રીન સમયવાલે વિગ્રહ સે વહ વહાં

‘અપજ્જત સુહુમ પુઢવીકાદ્દાણં મંતે ! સકરપ્પમાણ પુઢવીઈ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—‘અપજ્જત સુહુમ પુઢવીકાદ્દાણં મંતે !’ હે ભગવન્ ને અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવે ‘સકરપ્પમાણ પુઢવીઈ પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે ! સમોદ્દાણં’ શર્કરાપ્રમા પૃથ્વીના પૂર્વચરમાન્ત (પૂર્વભાગના અન્ત)માં મારણાન્તિક સમુદ્ધાત કરીને મરણપામે અને ‘સમોદ્દાણિત્તા જે મવિણ સકરપ્પમાણ પુઢવીઈ પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે અપજ્જત સુહુમ પુઢવીકાદ્દાણં ઉવવજ્જિત્તણં’ અને મરણપામીને તે શર્કરાપ્રમા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્ત પશ્ચિભાગના અન્તમાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયેલ હોય તો હે ભગવન્ એવો તે જીવ ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તે એક સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી તે ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા ત્રણ સમય વાળી વિગ્રહ ગતિથી તે ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રબુશ્રી

ઉત્પદ્યેતેતિ પ્રશ્નઃ । ઉત્તરમાહ—‘એવં જહેવ’ ઇત્યાદિ, ‘એવં જહેવ રચણપ્પમાણ જાવ સે તેણદ્દેણં’ એવં યથૈવ રત્નપ્રમાયાં તથૈવ શર્કરાપ્રમાયામપિ વાચ્યમ્, યાંવત્ તેજનાથેન હે ગૌતમ ! એસુચ્યતે એકસામયિકેન વા, દ્વિસામયિકેન વા, ત્રિસામ-
યિકેન વા, વિગ્રહેણ ઉત્પદ્યેત ઇતિ પ્રચ્યન્તઃ પાઠોઽન્ન વાચ્યઃ । ‘એવં એણં કમેણં જાવ પજ્જત્તસુહુમતેઽકાઈણસુ’ એવમેતેન ઉપર્યુક્ત પ્રકારેણ યાવત્ પર્યાપ્તસૂક્ષ્મ-
તેજસ્કાયિકેષુ અન્ન યાવત્પદેન પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાઽપર્યાપ્ત વાદર
પૃથિવીકાયિક પર્યાપ્ત વાદરપૃથિવીકાયિકાઽપર્યાપ્ત સૂક્ષ્માપ્કાયિક-પર્યાપ્ત-
સૂક્ષ્માપ્કાયિકાઽપર્યાપ્તવાદરાઽપ્કાયિક-પર્યાપ્તવાદરાપ્કાયિકાઽપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ
તેજસ્કાયિકાનાં સંગ્રહો ભવતિ । તથા ચ-અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિ-

ઉત્પન્ન હોતા હૈ ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામી સે તહસે હૈ—‘એવં જહેવ રચણપ્પમાણ જાવ સે તેણદ્દેણં’ હે ગૌતમ ! જેણા રત્નપ્રમાપૃથિવી મેં કહા ગયા હૈ વૈણા હી શર્કરાપ્રમાપૃથિવી મેં શી યાવત્ હે ગૌતમ ! મૈને એણા કહા હૈ કિ વહ વહાં એક સમયવાલે વિગ્રહ સે શી ઉત્પન્ન હોતા હૈ દો સમયવાલે વિગ્રહ સે શી ઉત્પન્ન હોતા હૈ ઓર ત્રી સમયવાલે વિગ્રહ સે શી ઉત્પન્ન હોતા હૈ, યહાં તકકે પ્રકરણકા કથન કરના વાહિયે । ‘એવં એણં કમેણં જાવ પજ્જત્ત સુહુમ તેઽકા-
ઈણસુ’ હીસી ક્રમ સે યાવત્ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક તક મેં જાનના વાહિયે । યહાં યાવત્પદ સે ‘પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક અપર્યાપ્ત
વાદરપૃથિવીકાયિક, પર્યાપ્ત વાદરપૃથિવીકાયિક, અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક, અપર્યાપ્ત વાદરઅપ્કાયિક, પર્યાપ્ત વાદર અપ્કાયિક એવં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક’ હન સવકા ગ્રહણ

ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—‘એવં જહેવ રચણપ્પમાણ જાવ સે તેણદ્દેણં’ હે ગૌતમ-
રત્નપ્રમા પૃથ્વીના પ્રકરણમાં જે પ્રમાણેનું કથન કરવામાં આવેલ છે. એજ
પ્રમાણેનું કથન શર્કરાપ્રમા પૃથ્વીના સંબંધમાં પણ યાવત્—હે ગૌતમ ! મેં
એવું કહ્યું છે કે—તે ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે.
જે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, અને ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ
ગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે. આ કથન સુધીનું સઘળું પ્રકરણ કહેલું બોધ્યું.
‘એવં એણં કમેણ જાવ પજ્જત્તસુહુમતેઽકાઈણસુ’ આજ ક્રમથી યાવત્ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ-
તેજસ્કાયિક સુધીમાં સમજવું અહિયાં યાવત્પદથી પર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક,
અપર્યાપ્ત બાદરપૃથ્વીકાયિક, પર્યાપ્તબાદરપૃથ્વીકાયિક, અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કા-
યિક પર્યાપ્તસૂક્ષ્મ અપ્કાયિક, અપર્યાપ્ત બાદર અપ્કાયિક પર્યાપ્ત બાદરઅપ્કાયિક
અને અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિક આ સઘળા ગ્રહણ કરાયા છે. તથા—અપ-

कस्य शर्कराप्रभा पूर्वचरमान्ते समवहत्य शर्कराप्रभा पश्चिमचरमान्ते सम-
 त्पद्यमानस्य अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकादारभ्य यावत् पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्का-
 यिकेषु उत्पत्तिं वदन् एष एव क्रमो ज्ञातव्य इति । अथ एतदेव समयक्षेत्रमाश्रि-
 त्वाह—‘अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइए णं भंते’ अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु
 भदन्त ! ‘सक्करप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए’ शर्करा-
 प्रभाया द्वितीय पृथिव्याः पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः, मारणान्तिकसमुद्घातं
 कृतवान् ‘समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्तवायरतेउकाइयत्ताए उव्व-
 ज्जित्तए’ समवहत्य मारणान्तिकसमुद्घातं कृत्वा यो भव्यः समयक्षेत्रे अपर्या-
 प्तवादरतेजस्कायिकतया—अपर्याप्तवादरतेजस्कायिकरूपेण उत्पत्तुम्, ‘से णं
 भंते ! कइ समइएणं पुच्छा’ स खलु भदन्त ! कति सामयिकेन विग्रहेण उत्प-

हुभा है । तथा च—अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकका शर्कराप्रभा पृथिवी
 के पूर्वचरमान्त में मारणान्तिक समुद्घात द्वारा मरण कहकर जैसा
 उसका शर्कराप्रभापृथिवी के पश्चिम चरमान्त में अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवी
 कायिक रूप से उत्पाद एक अथवा दो अथवा तीन समयवाले विग्रह
 द्वारा कहा गया है—सो इसी प्रकार से इसकी उत्पत्ति पर्याप्त सूक्ष्म
 तेजस्कायिकों तक में कह लेनी चाहिये । ‘अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइ-
 एणं भंते !’ हे भदन्त ! जिस अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवने
 ‘सक्करप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए’ शर्कराप्रभा
 पृथिवी के पूर्व चरमान्त में मारणान्तिक समुद्घात से मरण किया
 ‘समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्त वायर तेउकाइयत्ताए’
 और मरकर वह समयक्षेत्र अढाई द्वीप समुद्र में अपर्याप्त वादरतेज-
 स्कायिक रूप से उत्पत्ति के योग्य हुआ तो ‘से णं भंते ! कइसमइएणं

र्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिकेतुं शर्कराप्रभा पृथ्वीना पूर्वचरमान्तमा मारणान्तिक
 समुद्घातद्वारा मरण करीने के रीते तेओने। शर्कराप्रभा पृथ्वीना पश्चिम-
 चरमान्तमा अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिकपण्णाथी उत्पाद ओक अथवा जे
 अथवा त्रय समयवाणी विग्रह गतिथी कहेल छे, तो ओज प्रभावे तेओनी
 उत्पत्ति पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिके सुधीमां कहेवी ओधओ ‘अपज्जत्तसुहुम-
 पुढवीकाइएण भंते !’ छे लगवन् के अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक ओवे
 ‘सक्करप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए’ शर्कराप्रभा पृथ्वीना
 पूर्वचरमान्तमा मारणान्तिक समुद्घातथी मरण पाओ। ‘समोहणित्ता जे
 भविए समयखेत्ते अपज्जत्तवायरतेउकाइयत्ताए उव्वज्जित्तए’ अने मरीने समय
 क्षेत्र (अढी द्वीप)मां अपर्याप्त वादरतेजस्कायिकपण्णाथी उत्पन्न थवाने योग्य

ધેત ? इति पृच्छा-प्रश्नः समुत्पद्यते । भगवानाह-‘गोयमा’ इत्यादि । ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘दुसमइएण वा, तिसमइएण वा, विग्गहेण उव्वज्जेज्जा’ द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा विग्रहेण उत्पद्येत् इत्युत्तरम् । इह शर्करामभा पृथिवी पूर्वचरमान्ताद् मनुष्यक्षेत्रे समुत्पद्यमानस्य बादरतेजस्कायिकस्य समश्रेणि नास्तीति, ‘दुसमइए णं’ इत्यादि कथितम् । एकसामयिकेनेति न कथितम् । समश्रेण्यां गच्छत एव एकसामयिक विग्रहसम्भवो भवति, विशेष्या गच्छन्तस्तु द्वयादिसामयिक विग्रह यथाक्रमं भवतीति भावः, ‘से केणट्ठेणं’ तत्केनार्थेन भदन्त ! एवं मुच्यते द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, विग्रहेणोत्पद्येत ? इति पुनः प्रश्नः । भगवानाह-‘एवं खलु’ इत्यादि । ‘एवं खलु गोयमा !’ एवं खलु हे गौतम !

પુછ્યા ‘હે ભદન્ત ! વહુ વહાં કિતને સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ?’ इसके सम्बन्ध में प्रभुश्री उत्तर रूप से कहते हैं-‘गोयमा ! दुस-मइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उव्वज्जेज्जा’ ‘हे गौतम ! वह वहां दो समयवाले विग्रह से अथवा तीन समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है । तात्पर्य इस कथन का ऐसा है कि शर्करा पृथिवी के पूर्व चरमान्त से मनुष्यक्षेत्र में उत्पन्न होनेवाले बादरतेजस्कायिक जीव का वह उत्पत्ति स्थान समश्रेणि में नहीं पड़ता है । एक समयवाला विग्रह समश्रेणिवाले उत्पत्ति स्थान में जानेवाले जीवका होता है । विशेषि से जानेवाले जीव को दो आदि समयका ही विग्रह होता है । ‘से केणट्ठेणं भंते !’ हे भदन्त ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि वह वहां दो समयवाले विग्रह से अथवा तीन समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है ? ऊत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-‘एवं खलु गोयमा ! मए-

બનેલ હોય, ‘સે ણં ભંતે ! કહ સમણં પુછ્યા’ હે ભગવન્ તે ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘ગોયમા ! દુસમઇએણં વા, તિસમઇએણં વા વિગ્ગહેણં ઉવ્વજ્જેજ્જા’ હે ગૌતમ ! તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. કહેવાનું ‘તાત્પર્ય’ એ છે કે-શર્કરાપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વચરમાન્તથી મનુષ્યક્ષેત્રમાં ઉત્પન્ન થવાવાળા બાદરતેજસ્કાયિક જીવનું તે ઉત્પત્તિસ્થાન સમશ્રેણીમાં પડતું નથી. એક સમયવાળો વિગ્રહ સમશ્રેણીવાળા ઉત્પત્તિસ્થાનમાં જવાવાળા જીવનો હોય છે. વિશ્રેણીથી જવાવાળા જીવને બે વિગેરે સમયની જ વિગ્રહ ગતિ હોય છે.

‘સે કેણટ્ઠેણં ભંતે !’ હે ભગવન્ આપ એવું શા કારણથી કહો છો કે-તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘એવં કલુ

‘મए सत्त सेढीओ पणत्ताओ’ मया-महावीरेण सप्तश्रेणयः प्रज्ञप्ताः, ‘तं जहा’ तद्यथा-‘उज्जुयायया जाव अद्धचक्कवाला’ ऋज्वायता यावद् अर्द्धचक्रवाला, अत्र-यावत्पदेन एकतो वक्रा, द्विधातो वक्रा, एकतः खा, द्विधातः खा, चक्रवाळा इत्यन्तश्रेणीनां संग्रहो भवति, तत्र-‘एकओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा’ एकतो वक्रया द्वितीय श्रेण्या उत्पद्यमानो द्विसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत इति । ‘से तेणहेणं’ तत्तेनार्थेन गौतम । एवमुच्यते, द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, विग्रहेण समुत्पद्येतेति । ‘एवं पज्जत्तएसु

सत्त सेढीओ पणत्ताओ ‘हे गौतम ! मैंने सात श्रेणियां कही हैं ‘तं जहा’ जैसे-‘उज्जुयायया जाव अद्धचक्कवाला’ ऋज्वायता यावत् अर्धचक्रवाला यहां यावत्पद से-एकतो वक्रा, द्विधातो वक्रा, एकतः खा, द्विधातः खा, और चक्रवाला’ इन अवशिष्ट श्रेणियों का ग्रहण हुआ है । इन में से जो जीव ‘एकओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा’ उत्पत्तिस्थान में एकतो वक्रा श्रेणि से उत्पन्न होता है वह वहां दो समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है । यहां समश्रेणि नहीं है । इसलिए प्रथमश्रेणि से गमन का अभाव रहता है । ‘दुहओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएण विग्गहेणं उववज्जेज्जा’ जो जीव उत्पत्तिस्थान में द्विधातो वक्रा श्रेणि से जाकर उत्पन्न होता है वह वहां तीन समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है ? ‘से तेणहेणं’ इस कारण हे गौतम ! मैंने पूर्वोक्तरूप से ऐसा कहा है कि वह वहां दो समयवाले विग्रह से अथवा तीन समयवाले विग्रह से उत्पन्न

गोयમા ! મए સત્ત સેઢીઓ પળત્તાઓ’ હે ગૌતમ ! મેં સાત શ્રેણીયો કહેલ છે. ‘તં જહા’ તે આ પ્રમાણે છે-‘ઉજ્જુયાયયા જાવ અદ્ધચક્કવાલા’ ઋજ્વાયતા યાવત્ અર્ધચક્રવાલા અહિયાં યાવત્પદથી એકતોવક્રા, દ્વિધાતોવક્રા, એકતઃ ! ખા, દ્વિધાતઃ ! ખા અને ચક્રવાલા આ બાકીની શ્રેણીયો ગ્રહણ કરાઈ છે. આમાંથી જે શુવ ‘એકઓ વંકાએ સેઢીએ ઉવવજ્જમાણે દુસમઇએણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ ઉત્પત્તિસ્થાનમાં એકતોવક્રા શ્રેણીથી ઉત્પન્ન થાય છે. તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. અહિયાં સમશ્રેણી હોતી નથી. એથી પહેલી શ્રેણીથી ગમનને અભાવ રહે છે. ‘દુહઓ વંકાએ સેઢીએ ઉવવજ્જમાણે તિસમઇએણ વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ જે શુવ ઉત્પત્તિસ્થાનમાં દ્વિધાતોવક્રા શ્રેણીથી જન્મને ઉત્પન્ન થાય છે, તે ત્યાં ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. ‘સે તેણહેણં’ તે કારણથી હે ગૌતમ ! મેં પહેલાં કદા પ્રમાણે એવું કહેલ છે કે-તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી

વિ વાયરતેઝકાહૃણુ' એવમ્ પર્યાપ્તવાદરતેજસ્કાયિકેષુ યથા-અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકસ્ય દ્વિસામયિકેન વા ત્રિસામયિકેન વા વિગ્રહેણોત્પાદઃ કથિતો ન તુ એકસામયિકેન તથૈવ પર્યાપ્તેષુ અપિ વાદરતેજસ્કાયિકેષુ શર્કરાપ્રમા પૂર્વ-ચરમાન્તાત્ શર્કરાપ્રમાપશ્ચિમચરમાન્તે આગત્ય સમુત્પત્તું યોગ્યસ્ય અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકસ્ય દ્વિસામયિકેન વા ત્રિસામયિકેન વા વિગ્રહેણ સમુત્પાદો જ્ઞાત-વ્ય ઇતિ । 'સેસં જહા-રયણપ્પમાણ' શેષમ્ વાયુકાયિકાદિસમ્બન્ધે યથા-યેન પ્રકારેણ રત્નપ્રમાયાં કથિતં તથૈવ અત્રાપિ જ્ઞાતવ્યમ્ ઇતિ । 'જે વિ વાયરતેઝ-કાહ્યા અપજ્જત્તગાય' યેઽપિ વાદરતેજસ્કાયિકા અપર્યાપ્તકાશ્ચ પર્યાપ્તકાશ્ચ, 'સમયખેત્તે સમોહણિત્તા દોઠ્ઠાણ પુઢવીણ પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે' સમયક્ષેત્રે

હોતા હૈ । 'એવં પજ્જત્તણ્ણુ વિ વાયરતેઝકાહૃણુ' જિસ પ્રકાર અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકોં મેં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક કા દો સમયવાલે વિગ્રહ સે અથવા ત્રીનસમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પાદ કહા ગયા હૈ-એક સમયવાલે વિગ્રહ સે નહીં ઊસી પ્રકાર સે પર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિકોં મેં શર્કરાપ્રમા કે પૂર્વ ચરમાન્ત સે સમયક્ષેત્ર મેં આકરકે ઉત્પત્તિ કે યોગ્ય હુણ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક કા દો સમયવાલે વિગ્રહ સે અથવા ત્રીન સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પાદ જાનના ચાહિયે 'સેસં જહા રયણપ્પમાણ' જિસ પ્રકાર સે શેષ વાયુકાયિક આદિ કે સંબંધ મેં જૈસા રત્નપ્રમા મેં કહા ગયા હૈ ઊસી પ્રકાર સે યહાં પર ઓ જાનના ચાહિયે 'જે વિ વાયરતેઝકાહ્યા અપજ્જત્તગાય પજ્જત્તગાય સમયખેત્તે સમોહણિત્તા દોઠ્ઠાણ પુઢવીણ પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે' ઔર જો પર્યા-

અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. 'એવં પજ્જત્તણ્ણુ વિ વાયરતેઝકાહૃણુ' જે રીતે અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકોમાં અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિકની જે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પત્તિ કહેલ છે.-એક સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી નહીં એજ રીતે પર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકોમાં શર્કરાપ્રમાપૃથ્વીના પૂર્વચરમાન્તથી શર્કરાપ્રમાના પશ્ચિમચરમાન્તમા આવીને ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયેલા અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકોનો ઉત્પાત જે સમયવાળી વિગ્રહગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી સમજવો. 'સેસં જહા રયણપ્પમાણ' જે રીતે અવાન્તર પ્રશ્નોત્તરે વિગેરે રત્નપ્રમાના પ્રકરણમા કહ્યા છે, એજ રીતે અહિંયાં પણ સમજવા. 'જે વિ વાયર અપજ્જત્તગાય સમયખેત્તે સમોહણિત્તા દોઠ્ઠાણ પુઢવીણ પચ્ચત્થિ-મિલ્લે ચરિમંતે' પર્યાપ્તક અને અપર્યાપ્તક વાદર તેજસ્કાયિક જે એવ સમય

મનુષ્યક્ષેત્રે इत्यर्थः समग्रदृश्य मारणान्तिकसमुद्घातं कृत्वा मृत्वेत्यर्थः, द्वितीयायाः य पृथिव्याः शर्कराप्रभाया इत्यर्थः, पाश्चात्ये चरमान्ते 'पृथ्वीकाइएसु चउव्विहेसु' पृथिवीकायिकेषु चतुर्विधेषु अपर्याप्त सूक्ष्म, पर्याप्त सूक्ष्माऽपर्याप्त वादर-पर्याप्तवादर पृथिवीकायिकरूपेषु, तथा—'आउक्काइएसु चउव्विहेसु' अप्कायिकेषु अपर्याप्तादि चतुर्विधेषु तथा 'तेउक्काइएसु दुविहेसु' तेजस्कायिकेषु द्विविधेषु अपर्याप्त सूक्ष्म भेदभिन्नेषु, तथा—'वाउक्काइएसु चउव्विहेसु' वायुकायिकेषु चतुर्विधेषु तथा—'वणस्सइक्काइएसु चउव्विहेसु' वनस्पतिकायिकेषु चतुर्विधेषु 'उव्वज्जंति' उत्पद्यन्ते, अपर्याप्तकपर्याप्तकाः वादरतेजस्कायिका एषु अधिकरणेषु समुत्पत्तिं लभन्ते, 'तेवि एवं चेव दुवमइएण वा, तिसमइएण वा विग्रहेण उववाएयव्वा' तेऽप एवमेव द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा विग्रहेण

સક ઓર અપર્યાપ્તક વાદરતેજસ્કાયિક જીવ સમક્ષેત્ર મેં—મનુષ્યક્ષેત્ર મેં મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત સે મરણ કરકે શર્કરાપ્રભા કે પાશ્ચાત્ય ચરમાન્ત મેં ચારો પ્રકારકે—અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ, અપર્યાપ્ત વાદર ઓર પર્યાપ્ત વાદર—પૃથિવીકાયિકો મેં તથા 'આઉક્કાઇએસુ ચઉવ્વિહેસુ' અપર્યાપ્તકાદિ ચારો ભેદવાલે અપ્કાયિકો મેં 'તેઉક્કાઇએસુ દુવિહેસુ' તથા—અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ એવં પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ દો ભેદ વાલે તેજસ્કાયિકો મેં તથા—'વાઉક્કાઇએસુ ચઉવ્વિહેસુ' ચારો પ્રકારકે વાયુકાયિકો મેં તથા—'વણસ્સહ્કાઇએસુ ચઉવ્વિહેસુ' ચારો પ્રકારકે વનસ્પતિકાયિકો મેં 'ઉવ્વજ્જંતિ' ઉત્પન્ન હોતે હિ, વે ફલી પ્રકાર સે વહાં દો સમયવાલે વિગ્રહ સે અથવા ત્રીજ સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતે હિ 'તે વિ એવં ચેવ' જિસ પ્રકાર અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકકા અપર્યાપ્ત

ક્ષેત્રમા, મનુષ્યક્ષેત્રમા મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી મરણ પામીને શર્કરાપ્રમાના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં ચારે પ્રકારના—એટલે કે—પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ, અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મ, અપર્યાપ્ત વાદર પર્યાપ્ત વાદર—પૃથ્વીકાયિકોમાં તથા 'આઉક્કાઇએસુ ચઉવ્વિહેસુ' અપર્યાપ્ત વિગેરે ચારે ભેદવાળા અપ્કાયિકોમાં 'તેઉક્કાઇએસુ દુવિહેસુ' તથા અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અને પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ બે ભેદવાળા તેજસ્કાયિકોમાં તથા 'વાઉક્કાઇએસુ ચઉવ્વિહેસુ' ચારે પ્રકારના વાયુકાયિકોમાં તથા 'વણસ્સહ્કાઇએસુ ચઉવ્વિહેસુ' ચારે પ્રકારના વનસ્પતિકાયિકોમાં 'ઉવ્વજ્જંતિ' ઉત્પન્ન થાય છે. એજ પ્રમાણે તેઓ ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. 'તે વિ એવં ચેવ' બે પ્રમાણે અપર્યાપ્ત-સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકનો અપર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિકમાં બે વગેરે સમયવાળી

વિપ્રશ્નરૂપા ઉપપાતયિતવ્યાઃ, યથા અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકસ્ય અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકે દ્વ્યાદિસામયિકવિગ્રહેણોત્પાદઃ કથિતસ્તથૈવ અપર્યાપ્ત પર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકાનામપિ સમયક્ષેત્રે સમવહતાનાં શર્કરાપ્રમાયાઃ પશ્ચિમચરમાન્ત સ્થિત પૃથિવ્યાદિવનસ્પતિકાયિકાન્તેષુ દ્વિત્રિસામયિકવિગ્રહેણૈવ ઉપપાતો વર્ણયિતવ્ય इति भादः । ‘वायरतेउक्काइया अपज्जत्तगाय पज्जत्तगाय’ वादरतेजस्कायिका अपर्याप्तकाश्च पर्याप्तकाश्च, ‘जाहे तेसु चेव उववज्जंति’ यदा तेष्वेव पूर्वोक्त विशेषणविशिष्टेषु पृथिव्यादिवनस्पतिकायिकान्तेषु उत्पद्यन्ते । ‘ताहे जहेव रयणप्पभाए’ तदा यथैव रत्नप्रभायासू, ‘तहेव एगसमइय-दुसमइय-तिसमइय विग्गहा भाणियव्वा’ तथैव-रत्नप्रभावदेव एकसामयिक-

વાદરતેજસ્કાયિકા જે દો આદિ સમયવાળે વિગ્રહ સે ઉત્પાદ પ્રવટ કિયા ગયા હૈ, ડસી પ્રકાર સે અપર્યાપ્ત પર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકોંકા મી જો કિ સમયક્ષેત્ર મેં સમવહત હુએ હૈં ઓર શર્કરાપ્રમા કે પશ્ચિમ ચરમાન્ત કે પર્યન્ત મેં ઉત્પાદ દો સમય વાલે અથવા ત્રીન સમયવાલે વિગ્રહ સે વર્ણિત કર લેના ચાહિયે । ‘વાયરતેઉકકાઈયા અપજ્જત્તગા ય પજ્જત્તગા ચ જાહે તેસુ ચેવ ઉવવજ્જંતિ’ અપર્યાપ્તક એવં પર્યાપ્તક વાદરતેજસ્કાયિક જીવ જબ ઉન્હીં પૂર્વોક્ત વિશેષણ વિશિષ્ટ પૃથિવી કાયિક સે લેકર વનસ્પતિ કાયિક તક કે જીવોં મેં ઉત્પન્ન હોતે હૈં ‘તાહે જહેવ રયણપ્પભાએ તહેવ એગસમહય દુસમહય તિસમહય વિગ્ગહા મ્હાણિયવ્વા’ તવ જૈસા રત્નપ્રમા કે સમ્બન્ધ મેં કહા ગયા હૈ વૈસા ઇન કે સમ્બન્ધ મેં એક સમયવાલો દોસમયવાલે અથવા ત્રીનસમયવાલે

વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પત્તિના સંબંધમાં કથન કરવામાં આવ્યું છે એજ પ્રમાણે અપર્યાપ્ત પર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિકોના પણ જેમકે સમયક્ષેત્રમાં સમુદ્ધાત કરેલ છે. અને શર્કરાપ્રમાના પશ્ચિમ ચરમાન્તના પર્યન્તના ઉત્પાદનું વર્ણન બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી કરી લેવું ‘વાયર તેજ્જકાઈયા અપજ્જત્તગા ચ પજ્જત્તગા ચ જાહે તેસુ ચેવ ઉવવજ્જંતિ’ અપર્યાપ્તક અને પર્યાપ્તક વાદર તેજસ્કાયિક જીવ જ્યારે આજ પહેલા કહેલ વિશેષણથી યુક્ત પૃથ્વીકાયિક વિગેરેથી લઇને વનસ્પતિકાયિક સુધીના જીવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ‘તાહે જહેવ રયણપ્પભાએ તહેવ એગસમહય દુસમહય તિસમહય વિગ્ગહા મ્હાણિયવ્વા’ ત્યારે રત્નપ્રમા પૃથ્વીના સંબંધમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે એજ પ્રમાણેનું કથન અપર્યાપ્ત પર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકોના સંબંધમાં એક સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ

દ્વિસામયિક-ત્રિસામયિક, વિગ્રહા મણિતવ્યાઃ, 'સેસં જહેવ રયણપ્પમાણ તહેવ નિરવસેસં' શેષમ્-અત્રાન્તરમ્પ્રજ્ઞોત્તરાદિકં 'તત્કેનાર્થેન મદન્ત ! એવમુચ્યતે, તત્કેનાર્થેન ગૌતમ ! એવમુચ્યતે' इत्यादिकं यथैव रत्नप्रभायां कथितं तथैव निरव-
શેषमिहापि मणितव्यमिति । 'जहा सकरप्पमाए वत्तव्वया एवं जाव अहे सत्त-
माए वि भाणियव्वा' यथा-शर्कराप्रभा द्वितीयनारकपृथिव्या वक्तव्यता मणिता-
कथिता, तथैव-तेनैव रूपेण यावद्धः सप्तम्या स्तगरतमाया अपि पृथिव्या
वक्तव्यता मणितव्या, सर्वत्रालापप्रकारः स्वयमेवोक्तनीय इति ॥३॥

પૂર્વે શર્કરામ્ભાત આરમ્ભ્યાધઃ સપ્તમીપૃથિવીપર્યન્તમુપપાતઃ 'પ્રદર્શિતઃ,
સામ્પતં સામાન્યેન અવઃક્ષેત્ર મૂર્ધ્વક્ષેત્ર વાશ્રિત્યાદ- 'અપજ્જત્ત'ં' इत्यादि ।

મૂળમ્-અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાઙ્કણં મંતે ! અહોલોચચેત્ત-
નાલીણ વાહિરિલ્લે ચેત્તે સમોહણ । સમોહણિત્તા જે મવિણ
ઉહુલોચચેત્તનાલીણ વાહિરિલ્લે ચેત્તે અપજ્જત્તસુહુમપુઢવીકાઙ્ક-

વિગ્રહ એ એ ઉત્પન્ન होते हैं ऐसा कह लेना चाहिये । 'सेसं जहेव रयण-
प्पमाए तहेव निरवसेसं' बाकी का और सब प्रज्ञोत्तरादि रूप कथन
'हे मदन्त ! ऐसा आप किस कारण कहते हैं ? हे गौतम ! मैंने सात
श्रेणियों कही हैं' इत्यादि रूप प्रज्ञ और उत्तररूप कथन सब जैसा रत्न
प्रभापृथिवी के प्रकरण में कहा जा चुका है वैसा ही यहां द्वितीय
शर्कराप्रभापृथिवी की वक्तव्यता में कह लेना चाहिये 'जहा सकरप्प-
माए वत्तव्वया मणिया, एवं जाव अहे सत्तमाए वि भाणियव्वा' जैसी
यह द्वितीय शर्कराप्रभा पृथिवी की वक्तव्यता कही गई है इसी प्रकार
की वक्तव्यता यावत् अवः सप्तमी पृथिवी तक कह लेनी चाहिए । इस
सम्बन्ध में आलापक प्रकार अपने आप उत्पन्न कर लेना चाहिये ॥सू०३॥

ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. તેમ કહેવું બેઈએ. 'સેસં' જહેવ રયણપ્પમાણ તહેવ
નિરવસેસં' બાકીનું બીજું સમગ્રું પ્રજ્ઞોત્તરાદિ રૂપ કથન 'હે ભગવન્ આપ
એ પ્રમાણે શા કારણથી કહે છે ? હે ગૌતમ ! મેં સાત શ્રેણીઓ કહી છે.'
વિગેરે પ્રકારથી પ્રશ્ન અને ઉત્તરરૂપ કથન-જે રીતે રત્નપ્રભા પ્રથ્વીના પ્રક
રણમાં કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિંયાં આ બીજી શર્કરાપ્રભા
પૃથ્વીના કથનમાં કહી લેવું. 'જહા સક્કરપ્પમાણ વત્તવ્વયા મણિયા, એવં જાવ
અહે સત્તમાણ વિ ભાણિયવ્વા' આ બીજી શર્કરાપ્રભાપૃથ્વીનું કથન જે પ્રમાણે
કયું છે, એજ પ્રમાણેનું કથન યાવત્ અવઃસપ્તમી પૃથ્વીના કથન સુધી
સમગ્ર લેવું. આ વિષયમાં આલાપકો સ્વયં બતાવીને કરી લેવા. ॥સૂ૦ ૩॥

યત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ સે ણં મંતે ! કહ્ સમહણં વિગ્ગહેણં ઉવ-
વજ્જેજ્જા ૧ । ગોયમા ! તિસમહણ વા, ચઉસમહણ વા વિગ્ગ-
હેણં ઉવવજ્જેજ્જા । સે કેણદ્દેણં મંતે ! એવં વુચ્ચહિ તિસમહણં
વા ચઉસમહણં વા વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા ? ગોયમા ! અપ-
જ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહણં અહોલોચચેત્તનાલીણ બાહિરિલ્લે ચેત્તે
સમોહણ સમોહણિત્તા જે મવિણ ઉહ્લોચચેત્તનાલીણ બાહિરિલ્લે
ચેત્તે અપજ્જત્તસુહુમપુઢવીકાહણં ણગપયરંસિ અણુસેઢીણ
ઉવવજ્જિત્તણ, સે ણં તિસમહણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા । જે
મવિણ વિસેઢીણ ઉવવજ્જિત્તણ સે ણં ચઉસમહણં વિગ્ગહેણં
ઉવવજ્જેજ્જા, સે તેણદ્દેણં જાવ ઉવવજ્જેજ્જા । એવં પજ્જત્તસુહુમ-
પુઢવીકાહણં વિ, એવં જાવ પજ્જત્તસુહુમતેઉકાહણં । સૂ. ૪।

હાયા—અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકઃ સ્વલુ મદન્ત ! અધોલોકક્ષેત્રનાડયા
વાહ્યે ક્ષેત્રે સમવહતઃ સમવહત્ય યો મવ્યઃ ઉર્ધ્વલોકક્ષેત્રનાડયા વાહ્યે ક્ષેત્રે અપર્યાપ્ત
સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકતયા ઉત્પત્ત્યુ, સ સ્વલુ મદન્ત ! કતિ સામયિકેન વિગ્રહેણ
ઉત્પદ્યેત ? ગૌતમ ! ત્રિસામયિકેન વા, ચતુઃસામયિકેન વા વિગ્રહેણોત્પદ્યેત ।
તત્કેનાર્થેન સ્વલુ મદન્ત ! એવમુચ્યતે ત્રિસામયિકેન વા, ચતુઃસામયિકેન વા,
વિગ્રહેણ ઉત્પદ્યેત ? । ગૌતમ ! અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકઃ સ્વલુ અધોલોકક્ષેત્ર
નાડયા વાહ્યે ક્ષેત્રે સમવહતઃ સમવહત્ય યો મવ્યઃ ઉર્ધ્વલોકક્ષેત્રનાડયા વાહ્યે ક્ષેત્રે
અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકતયા એકમતરે અનુશ્રેણા ઉત્પત્તું સ સ્વલુ ત્રિસામયિકેન
વિગ્રહેણ ઉપપદ્યત । યો મવ્યો વિશ્રેણ્યા ઉત્પત્તું સ સ્વલુ ચતુઃસામયિકેન વિગ્રહેણો-
ત્પદ્યેત, તત્કેનાર્થેન યાવદુત્પદ્યેત, એવં પર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકતયા અપિ ।
એવં યાવત્ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિકતયા ॥૪॥

હસ પ્રકાર શર્કરામમા સે લેકર અધઃસપ્તમી પૃથિવી તક ઉપપાત
'ઉત્પન્ન હોના' દિશ્વાયા હૈ । અવ સૂત્રકાર સામાન્ય રૂપસે અધઃક્ષેત્ર
ઔર ઉર્ધ્વક્ષેત્રકો આશ્રિત કરકે હસી ઉપપાત કા કથન કરતે હૈ—

આ ઉપર કહ્યા પ્રમાણે શર્કરાપ્રભાથી લઈને અધઃસપ્તમી પૃથ્વી સુધી
ઉપપાત (ઉત્પત્તિ) બતાવવામાં આવેલ છે. હવે સૂત્રકાર સામાન્યરૂપથી અધઃ
ક્ષેત્ર અને ઉર્ધ્વક્ષેત્રનો આશ્રય કરીને આ ઉપપાતનું કથન કરે છે.

ટીકા—‘અપજ્જત સુહુમપુઢવીકાઈય ણં મંતે !’ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવી-કાયિકઃ સ્વલુ ભદન્ત ! ‘અહોલોચચેત્તનાલીય વાહિરિલ્લે ચેત્તે સમોહણ’ અધોલોકક્ષેત્રનાડયાઃ અધોલોકરૂપે ક્ષેત્રે યા નાડી-ત્રસનાડી, તસ્યાઃ વાહ્યે ક્ષેત્રે સમવહતો મારણાન્તિકસમુદ્ધાતં કૃતવાન્ ‘સમોહણિત્તા’ સમવહત્ય મારણાન્તિક-સમુદ્ધાતં કૃત્વા, ‘જે ભવિય ઉદ્ધલોચચેત્તનાલીય વાહિરિલ્લે ચેત્તે’ યો ભવ્યઃ, ઊર્ધ્વલોકક્ષેત્રનાડી ત્રસનાડી સા ઊર્ધ્વલોક ક્ષેત્રનાડી તસ્યા ઊર્ધ્વલોકક્ષેત્રત્રસનાડયાઃ વાહ્યે ક્ષેત્રે ‘અપજ્જત સુહુમપુઢવીકાઈયત્તાય ઉવવજ્જિત્તય’ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકતયા તાદૃશપૃથિવીકાયિકરૂપેણોત્પત્તુમ્ ‘સે ણં મંતે ! કહસમઈણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ સ સ્વલુ કતિસામ-યિકેન વિગ્ગહેણ ઉત્પચતેતિ પ્રશ્નઃ । મગવાનાહ—‘ગોયમા’ इत्यादि ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘तिसमइएण वा, चउसमइएण वा, विगगहेणं उववज्जेज्जा’ तिसामयिकेन ‘पज्जत्त सुहूमपुढवीकाइए णं मंते !’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—હે ભદન્ત ! જિસ અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક જીવને ‘અહો લોચચેત્તનાલીય વાહિરિલ્લે ચેત્તે સમોહણ’ અધોલોકસ્થિત ત્રસનાડી સે વાહ્યક્ષેત્ર મેં સ્થાવરનાડી મેં મારણાન્તિક સમુદ્ધાત સે મરણ કિયા હૈ ઓર ‘સમોહણિત્તા’ મારણાન્તિક સમુદ્ધાત કરકે ‘જે ભવિય ઉદ્ધલોચ ચેત્તનાલીય વાહિરિલ્લે ચેત્તે અપજ્જત સુહુમપુઢવીકાઈયત્તાય ઉવવજ્જિ-ત્તય’ ઊર્ધ્વલોક મેં સ્થિત ત્રસનાલી કે વાહર કે ક્ષેત્ર મેં—‘સ્થાવરનાલી અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક રૂપસે ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હુઆ હૈ ‘સે ણં મંતે ! કહસમઈણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ તો હે ભદન્ત ! એસા વહ જીવ કિતને સમયવાલે વિગ્રહ સે વહાં ઉત્પન્ન હોતા હૈ ? હસ પ્રશ્ન કે ઉત્તર મેં પ્રભુ શ્રી ગૌતમસ્વામી સે કહતે હૈ—‘ગોયમા ! તિસમઈણ-

‘અપજ્જતસુહુમપુઢવીકાઈય ણં મંતે !’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ જે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક એવે ‘અહોલોચ-ચેત્તનાલીય વાહિરિલ્લે ચેત્તે સમોહણ’ આ અધોલોકમાં રહેલી ત્રસ નાડીથી બહારના ક્ષેત્રમાં મારણાન્તિક સમુદ્ધાતથી મરણ કરેલ છે, અને ‘સમોહણિત્તા’ મારણાન્તિક સમુદ્ધાત કરીને ‘જે ભવિય ઉદ્ધલોચચેત્તનાલીય વાહિરિલ્લે ચેત્તે અપજ્જત સુહુમપુઢવીકાઈયત્તાય ઉવવજ્જિત્તય’ ઉર્ધ્વલોકમાં રહેલ ત્રસ નાડીના બહારના પ્રદેશમાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકપણથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય બનેલ છે, ‘સે ણં મંતે ! કહ સમઈણં વિગ્ગહેણ ઉવવજ્જેજ્જા’ તો હે ભગવન્ એવો તે એવ કેટલા સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘ગોયમા ! તિસમઈણ ચउसमइएण वा

વા, ચતુઃસામયિકેન વા વિગ્રહેણોત્પદ્યેત, ઊર્ધ્વલોકનાડયા વાહ્યે ક્ષેત્રે ઇતિ । ‘સે કેળદ્વેણં મંતે ! એવં બુચ્ચ, તિસમહણ વા, ચડસમહણ વા, વિગ્રહેણં ઉવવ જ્જેજ્જા’ તત્કેનાર્યેન મદન્ત ! એવમુચ્યતે, ત્રિપામયિકેન વા, ચતુઃસામયિકેન વા, વિગ્રહેણોત્પદ્યેત ઇતિ અવાન્તરપ્રશ્નઃ મગવાનાહ-ગોયમા’ ઇત્યાદિ, ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહણં અહોલોચચેત્તનાલીએ વાહિરિલ્લે ચેત્તે-સમોહણ’ અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકઃ સ્વલુ અધો લોકક્ષેત્રનાડયા વાહ્યે ક્ષેત્રે સમ-વહતો મારણાન્તિકસમુદ્ધાતં કૃતવાન્, ‘સમોહણિત્તા જે મવિએ ઉહ્લોચચેત્તના-લીએ વાહિરિલ્લે ચેત્તે’ સમવહત્ય મારણાન્તિકસમુદ્ધાતં કૃત્વા યો મવ્યઃ-યોગ્ય ઊર્ધ્વલોકક્ષેત્રનાડયા, વાહ્યે ક્ષેત્રે, ‘અપજ્જત્ત સુહુમ પુઢવીકાહયત્તાએ’ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકતયા ‘એગપયરંમિ અણુસેઢીએ ઉવવજ્જિત્તએ’ એકપતરે અનુશ્રેણ્યા

વા ચડસમહણ વા વિગ્રહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ હે ગૌતમ ! વહ વહાં તીન સમયવાલે વિગ્રહસે અથવા ચારસમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ । ‘તત્કેનાર્યેન મદન્ત ! એવમુચ્યતે’ હે મદન્ત ! એસા આપ કિસ કારણ સે કહતે હૈં કિ વહ વહાં તીન સમયવાલે વિગ્રહ સે અથવા ચાર સમયવાલે વિગ્રહસે ઉત્પન્ન હોતા હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રશ્નશ્રી કહતે હૈં-‘ગોયમા ! અપ-જ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહણં અહોલોચ ચેત્તનાલીએ વાહિરિલ્લે ચેત્તે સમોહણ’ હે ગૌતમ ! જો અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક જીવ અધોલોક સ્થિત ત્રસનાડી કે વાહિરી ક્ષેત્ર મેં મારણાન્તિક સમુદ્ધાત કરકે મરા હૈં ઓર મરણ કરકે ‘જે મવિએ ઉહ્લોચ ચેત્તનાલીએ વાહિરિલ્લે ચેત્તે’ જો ઊર્ધ્વલોક સ્થિત ક્ષેત્રનાડી કે વાહરકે ક્ષેત્ર મેં ‘અપજ્જત્ત સુહુમ પુઢવીકાહયત્તાએ’ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક રૂપ સે ‘એગપયરંમિ

વિગ્રહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ તો હે ગૌતમ ! એવો તે જીવ ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ચાર સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. ‘તત્કેના-ર્યેન મદન્ત ! એવમુચ્યતે’ હે ભગવન્ આપ એવું શા કારણથી કહેા છો કે-તે ત્યાં ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ચાર સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે । આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રશ્નશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહેા છે કે-‘ગોયમા ! અપજ્જત્તસુહુમપુઢવીકાહણં અહોલોચચેત્તનાલીએ વાહિરિલ્લેચેત્તે સમોહણ’ હે ગૌતમ ! જે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક જીવ અધોલોકમાં વર્ત-માન ત્રસ નાડીના બહારના ક્ષેત્રમાં મારણાન્તિક સમુદ્ધાત કરીને મરણ પામેલ છે. અને મરણ પામીને ‘જે મવિએ ઉહ્લોચચેત્તનાલીએ વાહિરિલ્લે ચેત્તે’ જે ઉર્ધ્વલોકમાં રહેલ ક્ષેત્રનાડીના બહારના પ્રદેશમાં ‘અપજ્જત્તસુહુમપુઢવી-કાહયત્તાએ’ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયપણથી ‘એગપયરંમિ અણુસેઢીએ ઉવવ-

ગત્વા ઉત્પત્તુમ્ 'સે ણં તિસમહણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા' સંખલુ ત્રિસામયિકેન વિગ્ગહેણોત્પદ્ધેત, અયં ભાવઃ—અધોલોકક્ષેત્રત્રસનાડયા વહિઃ પૂર્વાદિદિશિ સ્મૃત્વા, એકેન સમયેન નાડી મધ્યે પ્રવિષ્ટઃ દ્વિતીયે સમયે ઊર્ધ્વં ગત સ્તતઃ એક પ્રતરે પૂર્વસ્યાં દિશિ પશ્ચિમાયાં વા, દિશિ યદા ઉત્પત્તિર્ભવતિ તદા અનુશ્રેણ્યાં ગત્વા તૃતીયસમયે ઉત્પદ્ધતે इति । 'જે ભવિં વિસેઢીં ઉવવજ્જિત્તં સે ણં ચડસમહણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા' યો મન્થો વિશ્રેણ્યામ્ ઉત્પત્તુમ્, સંખલુ ચતુઃસામયિકેન વિગ્ગહેણોત્પદ્ધેત । અયં ભાવઃ—યદા ત્રસનાડયાઃ વહિર્વાયવ્યાદિવિદિશિ મૃતઃ તદા એકસમયેન પશ્ચિમાયા મુત્તરસ્યાં વા, દિશિ ગતો ભવતિ દ્વિતીયેન ત્રસનાડયાઃ

અણુસેઢીં ઉવવજ્જિત્તં' એકપ્રતર મેં અનુશ્રેણી સે જાકરકે ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય છે 'સે ણં તિસમહણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા' વહ ત્રીજા સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોના છે । તાત્પર્ય હસકા યહ છે કિ—અધો લોક ક્ષેત્રમેં ત્રસનાડી કે બાહર પૂર્વાદિદિશા મેં મરકર જીવ એકસમય મેં ત્રસનાડી કે મધ્ય મેં પ્રવિષ્ટ હોતા છે । દૂસરે સમય મેં વહ ઊર્ધ્વ-ગમન કરતા છે । હસકે બાદ જય વહ એકપ્રતર મેં પૂર્વદિશા મેં અથવા પશ્ચિમદિશા મેં ઉત્પન્ન હોતા છે તય વહ સમશ્રેણિ મેં જાકર તૃતીય સમય મેં વહાં ઉત્પન્ન હોતા છે । 'જે ભવિં વિસેઢીં ઉવવજ્જિત્તં સે ણં ચડસમહણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા' ઓર જય વહ વિશ્રેણિ મેં ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય છે તય વહ વહાં ચારસમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા છે । તાત્પર્ય યહ છે કિ જય જીવ ત્રસનાડી કે બાહર વાયવ્ય આદિ વિદિશાઓ મેં ભરતા છે તય વહ એક સમય મેં પશ્ચિમદિશા મેં

જિજ્ઞાસુ' એક પ્રતરમાં અનુશ્રેણીથી જઈને ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય હોય છે. 'સે ણં તિસમહણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા' તે ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે—અધોલોક ક્ષેત્રમાં ત્રસ નાડીની બહાર પૂર્વદિશામાં મરકરે જીવ એક સમયમાં ત્રસનાડીની મધ્યમાં પ્રવેશ કરે છે. બીજા સમયમાં ઊર્ધ્વગમન કરે છે તે પછી જ્યારે તે એક પ્રતરમાં પૂર્વદિશામાં અથવા પશ્ચિમદિશામાં ઉત્પન્ન થાય છે, ત્યારે તે સમ-શ્રેણીમાં જઈને ત્રીજા સમયમાં ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે. 'જે ભવિં વિસેઢીં ઉવવજ્જિત્તં સે ણં ચડસમહણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા' અને જ્યારે તે વિ-શ્રેણીમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય હોય ત્યારે તે ત્યાં ચરમ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. તાત્પર્ય કહેવાનું એ છે કે—જ્યારે જીવ ત્રસ નાડીની બહાર વાયવ્ય વિગેરે વિદિશામાં ભરે છે, ત્યારે તે એક સમયમાં પશ્ચિમ

પ્રવિષ્ટો ભવતિ, તૃતીયસમયે ઊર્ધ્વ ગતઃ ચતુર્થસમયે અનુશ્રેણ્યાં ગત્વા પૂર્વાદિદિશિ ઉત્પદ્યેત્ત ઇતિ । ‘સે તેજદ્વેગં જાવ ઉવવજ્જેજ્જા’ તત્તેનાથેન ગૌતમ ! એવમુચ્યતે ત્રિસામયિકેન વા, ચતુઃ સામયિકેન વા, વિગ્રહેણ ઉત્પદ્યેત્ત ઇતિ, ‘એવં પજ્જત્તસુહુમ પુઢવી કાઠ્યત્તાણ વિ’ એવં યથા અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયાધિકસ્ય અધોલોચક્ષેત્રનાડયા વાહ્યદેશે સમવહતસ્ય ઊર્ધ્વલોકક્ષેત્રનાડયા વાહ્યે દેશે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિકાયાધિકતયોત્પાદો દર્શિતઃ તથૈવ તસ્યૈવ તથાવિધસ્ય પર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયાધિકતયા સમુત્પચ્ચમાનસ્ય ત્રિસામયિકેન વા, ચતુઃસામયિકેન વા વિગ્રહેણ ઉત્પાદો જ્ઞાતવ્યઃ । ‘એવં જાવ પજ્જત્ત સુહુમ તેઽકાઠ્યત્તાણ’ એવં યાવત્ પર્યાપ્ત

અથવા ઉત્તરદિશા મેં જાતા હૈં ઓર દૂસરે સમય મેં ત્રસનાડી મેં પ્રવિષ્ટ હોતા હૈં ઓર તૃતીય સમય મેં વહ ઉર્ધ્વ ગમન કરતા હૈં ઓર ચોથે સમય મેં વહ અનુશ્રેણિ મેં જાકરકે પૂર્વાદિ દિશા મેં ઉત્પન્ન હો જાતા હૈં । ‘સે તેજદ્વેગં જાવ ઉવવજ્જેજ્જા’ હસલિય, હે ગૌતમ ! મૈંને એસા કહો હૈં કિ વહ ત્રીનસમયવાલે અથવા ચાર સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈં । ‘એવં પજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાઠ્યત્તાણ વિ’ જિસ પ્રકાર સે અધોલોક ક્ષેત્ર સ્થિત ત્રસનાડી કે બાહિર કે પ્રદેશ મેં મારણાન્તિક સમુદવાત કરકે ઘરે હુણ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયાધિક જીવ કા ઊર્ધ્વલોક ક્ષેત્રસ્થિત ત્રસનાડી કે વાહ્ય પ્રદેશ મેં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયાધિક રૂપ સે ઉત્પાદ પ્રકટ કિયા ગયા હૈં ઊસી પ્રકાર સે પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયાધિક રૂપસે ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હુણ ઊસકા ત્રીનસમયવાલે વિગ્રહ સે અથવા ચારસમયવાલે વિગ્રહસે ઉત્પાદ બહના ચાહિયે । ‘એવં

દિશામા અથવા ઉત્તર દિશામા જાય છે, અને ત્રીજા સમયમાં ત્રસ નાડીમાં પ્રવેશ કરે છે. અને ત્રીજા સમયમાં ઉર્ધ્વગમન કરે છે અને ચોથા સમયમાં તે વિશ્રેણીમાં જઈને પૂર્વદિશામાં ઉપન્ન થઈ જાય છે ‘સે તેજદ્વેગં જાવ ઉવવજ્જેજ્જા’ તે કારણથી હે ગૌતમ ! મેં એવું કહેલ છે કે-તે ત્રણ સમય વાળી અથવા ચાર સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ‘એવં પજ્જત્ત-સુહુમપુઢવીકાઠ્યત્તાણ વિ’ જે પ્રમાણે અધોલોક ક્ષેત્રમાં રહેલ ત્રસ નાડીના બહારના પ્રદેશોમાં મારણાન્તિક સમુદ્વાત કરીને મરણ પામેલા અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયાધિક જીવનો ઉર્ધ્વક્ષેત્રમાં રહેલા ત્રસ નાડીની બહારના પ્રદેશોમાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયાધિકપણથી ઉપપાત બતાવેલ છે એજ પ્રમાણે પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયાધિકપણથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયેલા તેઓનો ઉત્પાદ ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ચાર સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી કહેવો જોઈએ. ‘એવં જાવ પજ્જત્તસુહુમતેઽકાઠ્યત્તાણ’ આજ

સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિકતયા, અત્ર યાવત્પદેન અપર્યાપ્ત વાદરપૃથિવીકાયિકતયા, પર્યાપ્ત વાદરપૃથિવીકાયિકતયા, અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્માપ્કાયિકતયા, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્માપ્કાયિકતયા, અપર્યાપ્તવાદરાપ્કાયિકતયા, પર્યાપ્ત વાદરાપ્કાયિકતયા, અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિકતયા, એતદન્તાનાં ગ્રહણં ભવતિ । તથા ચ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકસ્યાધોલોકક્ષેત્રનાડયા વાહ્યે દેશે સમગ્રહતસ્ય ઊર્ધ્વલોકનાડયા વાહ્યે ક્ષેત્રે અપર્યાપ્ત વાદરપૃથિવીકાયિકતયા, इत्यत आरभ्य पर्याप्त सूक्ष्मतेजस्कायिकतया इत्यन्तरूपेण उत्पद्यमानस्य उत्पादप्रकारः पूर्ववदेव ज्ञातव्यः । आलापप्रकारः प्रत्येकस्मिन् पदे विविच्य स्वयमेवोहनीयः ॥४॥

જાવ પડજત સુદૃઢ તેજકાહ્યત્તા' इसी प्रकार से जब वह यावत् पर्याप्त सूक्ष्मतेजस्कायिक रूपसे उत्पन्न होने के योग्य होता है तब भी वह वहाँ तीन समयवाले विग्रह से अथवा चार समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है ऐसा जानना चाहिये । यहां यावत् पद से 'जब वह अपर्याप्त वादरपृथिवीकायिक रूपसे, पर्याप्त वादरपृथिवीकायिक रूपसे, पर्याप्त सूक्ष्म अप्कायिक रूपसे और अपर्याप्त सूक्ष्मतेजस्कायिक रूपसे उत्पन्न होने के योग्य होता है' ऐसा पाठ ग्रहण किया गया है । तथा च 'जो अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक जो कि अधोलोक स्थित ब्रसनाड़ी के बाह्य प्रदेश में समग्रहत हुआ है और ऊर्ध्वलोकस्थित ब्रसनाड़ी के बाह्यप्रदेश में अपर्याप्त वादरपृथिवीकायिक रूपसे उत्पन्न होने के योग्य हुआ है' यहां से लेकर 'पर्याप्त सूक्ष्मतेजस्कायिक रूपसे उत्पन्न होने के योग्य हुआ है' यहां तक को उसका उत्पाद प्रकार पूर्व के जैसे ही जानना चाहिये । तथा इस सम्बन्ध में आलाप प्रकार प्रत्येक पद में अलग अलग अपने आप उद्भावित कर लेना चाहिये ॥४॥

પ્રમાણે જ્યારે તે યાવત્ અપર્યાપ્ત વાદર પૃથ્વીકાયિકપણાથી, પર્યાપ્ત વાદર પૃથ્વીકાયિકપણાથી અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિકપણાથી પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિકપણાથી અને અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિકપણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થાય છે. એ રીતનો પાઠ ગ્રહણ થયેલ છે. તથા જે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક કે જે અધોલોક ક્ષેત્રમાં રહેલ બ્રસ નાડીના બહારના પ્રદેશોમાં સમુદ્ધાત કરે છે, અને ઉર્ધ્વલોકમાં રહેલ બ્રસ નાડીના બહારના પ્રદેશમાં અપર્યાપ્ત વાદર પૃથ્વીકાયિકપણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયા છે. આ કથનથી લઈને 'પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિકપણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયા છે, આ કથન સુધીના તેના ઉત્પાદનો પ્રકાર પહેલાની જેમજ સમજવો. તથા આ સંબંધમાં આલાપનો પ્રકાર દરેક પદમાં જુદો જુદો સ્વયં બનાવીને કહી દેવો જોઈએ. ॥સુ. ૪॥

मूलम्—अपञ्जत्त सुहुमपुढवीकाइए णं भंते ! अहोलोग जाव समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपञ्जत्तवायरतेउ- काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइ समइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? गोयमा ! दुसमइएणं वा, तिसमइएणं वा विग्ग- हेणं उववज्जेज्जा । से केणट्ठेणं० एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पणत्ताओ । तं जहा उज्जुयायया जाव अद्धचक्कवाला । एगओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा । दुहओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएणं वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा ! से तेणट्ठेणं । एवं पज्जत्तएसु वि वायरतेउकाइएसु वि उववाएयव्वो । वाउकाइयवणस्सइकाइ- यत्ताए चउक्कएणं भेदेणं जहा आउकाइयत्ताए तहेव उववाए- यव्वो २० । एवं जहा अपञ्जत्तसुहुमपुढवीकाइयस्स गमो भणियो एवं पञ्जत्त सुहुमपुढवीकाइयस्स वि भाणियव्वो, जहेव वीसाए ठाणैसु उववाएयव्वो ४० । अहोलोयखेत्त- नालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए समोहणित्ता, एवं वायरपुढवी- काइयस्स वि अपञ्जत्तगस्स य पञ्जत्तगस्स य भाणियव्वं८० । एवं आउकाइस्स वि चउविहस्स वि भाणियव्वं १६० । सुहुमतेउ- काइस्स दुविहस्स वि एवं चेव २०० । अपञ्जत्त वायरतेउकाइ- एणं भंते ! समयखेत्ते समोहए समोहणित्ता जे भविए उड्डलोग- खेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपञ्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइ समइएणं विग्गहेणं उववज्जे- ज्जा ? गोयमा ! दुसमइएणं वा, तिसमइएणं वा, चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा । से केणट्ठेणं० । अट्ठो जहेव रयण- प्पभाए तहेव सत्त सेढीओ, एवं जाव अपञ्जत्तवायरतेउकाइ-

एणं भंते ! समयखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ड-
 लोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते पज्जत्तसुहुमतेउकाइयत्ताए
 उववज्जित्तए, से णं भंते ! सैसं तं चेव । अपज्जत्त वायरतेउ-
 काइए णं भंते ! समयखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए
 समयखेत्ते, अपज्जत्त वायरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं
 भंते ! कइ समइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ?। गोयमा ! एग-
 समइएण वा, दुसमइएण वा, तिसमइएण वा, विग्गहेणं उव-
 वज्जेज्जा, से केणट्ठेणं० । अट्ठो जहेव रयणप्पभाए तहेव सत्त
 सेढीओ, एवं पज्जत्त वायरतेउकाइयत्ताए वि । वाउकाइएसु
 वणस्सइकाइएसु थ जहा पुढवीकाइएसु उववाइओ तहेव चउ-
 क्कएणं भेदेणं उववायव्वो । एवं पज्जत्त वायरतेउकाइओ वि
 एएसु चेव ठाणेसु उववाएयव्वो । वाउकाइय वणस्सइकाइ-
 याणं जहेव पुढवीकाइयत्ते उववाओ तहेव भाणियव्वो ॥ अप-
 ज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते ! उड्डलोगखेत्तनालीए बाहिरि-
 ल्लेखेत्ते समोहए समोहणित्ता जे भविए अहे लोगखेत्तनालीए
 बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए
 से णं भंते ! कइ समइएणं । एवं उड्डलोयखेत्तनालीए बाहिरि-
 ल्ले खेत्ते समोहयाणं अहोलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते उव-
 वज्जयाणं सो चेव गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव वायर-
 वणस्सइकाइओ पज्जत्तओ वायरवणस्सइकाइयएसु पज्जत्त-
 एसु उववाइओ ॥सू० ५॥

छाया--अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकादिकः खलु भदन्त अधोलोक० यावत्
 समवहत्य यो भव्यः समयक्षेत्रे अपर्याप्त वादरतेजस्कायिकतया उत्पत्तुम्, स खलु

भदन्त ! कतिसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत ? गौतम ! द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, विग्रहेणोत्पद्येत । तत्केनार्थेन ? एवं खलु गौतम ! मया सप्तश्रेणयः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—शुब्बायता १ यावद् अर्द्धचक्रवाला ७ । एकतो वक्रया श्रेण्या उत्पद्यमानो द्विसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत, द्विधातो वक्रया श्रेण्या उत्पद्यमानं त्रिसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत, तत्केनार्थेन० । एवं पर्याप्तकेऽपि वादरतेजस्कायिकेऽपि उपपातयितव्यः । वायुकायिकवनस्पतिकायिकतया चतुष्केन भेदेन, यथा—अपकायिकतया तथैव उपपातयितव्यः । २० एवं यथा अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकस्य गमको भणितः एवं पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकस्यापि भणितव्यः । तथैव विंशति स्थानेषु उपपातयितव्यः ४० । अधोलोकक्षेत्रनाडया बाह्ये क्षेत्रे समवहतः समवहत्य, एवं वादरपृथिवीकायिकस्यापि अपर्याप्तकस्य पर्याप्तकस्य च भणितव्यम् ८० । एवमपकायिकस्य चतुर्विधस्यापि भणितव्यम् १६० । सूक्ष्मतेजस्कायिकस्य द्विविधस्यापि एवमेव २०० । अपर्याप्तवादरतेजस्कायिकः खलु भदन्त ! समयक्षेत्रे समवहतः समवहत्य यो भव्यः ऊर्ध्वलोकक्षेत्रनाडया बाह्ये क्षेत्रे अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया उपपत्तुं स खलु भदन्त ! कतिसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत ? गौतम ! द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, चतुःसामयिकेन वा विग्रहेणोत्पद्येत । तत्केनार्थेन० । अर्थो यथैव रत्नप्रभायां तथैव सप्तश्रेणयः एवं यावदपर्याप्त वादरतेजस्कायिकः खलु भदन्त ! समयक्षेत्रे समवहतः समवहत्य यो भव्यः ऊर्ध्वलोकक्षेत्रनाडया बाह्ये क्षेत्रे पर्याप्त सूक्ष्मतेजस्कायिकतया उपपत्तुं स खलु भदन्त ! शेषं तदेव । अपर्याप्त वादरतेजस्कायिकः खलु भदन्त ! समयक्षेत्रे समवहतः समवहत्य यो भव्यः समयक्षेत्रे अपर्याप्त वादरतेजस्कायिकतया उपपत्तुं स खलु भदन्त ! कति सामयिकेन विग्रहोत्पद्येत ? गौतम ! एकसामयिकेन वा, द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, विग्रहेणोत्पद्येत तत्केनार्थेन० । अर्थो यथैव रत्नप्रभायां तथैव सप्तश्रेणयः । एवं पर्याप्तवादरतेजस्कायिकतयाऽपि । वायुकायिकेषु वनस्पतिकायिकेषु च यथा पृथिवीकायिकेषु उपपातितस्तथैव चतुष्केन भेदेन उपपातयितव्यः । एवं पर्याप्तवादरतेजस्कायिकोऽपि एष्वेव स्थानेषु उपपातयितव्यः । वायुकायिक—वनस्पतिकायिकानां यथैव पृथिवीकायिकत्वे उपपातस्तथैव भणितव्यः । अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! ऊर्ध्वलोकक्षेत्रनाडया बाह्ये क्षेत्रे समवहतः समवहत्य यो भव्यः अधोलोकक्षेत्रनाडया बाह्ये क्षेत्रे अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया उपपत्तुम्, स खलु भदन्त ! कति सामयिकेन. एवम् ऊर्ध्वलोक क्षेत्रनाडया बाह्ये क्षेत्रे समवहतानाम् अधोलोकक्षेत्रनाडया बाह्ये क्षेत्रे उत्पद्यमानानां स एव गमको निरवशेषो भणितव्यो यावद् वनस्पतिकायिकः पर्याप्तको वादरवनस्पतिकायिकेषु पर्याप्तकेषु उपपातितः ॥सू० ५॥

टीका—‘अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते ।’ अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! ‘अहोलोग जाव समोहणित्ता’ अधोलोक, यावत् समवहत्य, अत्र यावत्पदेन ‘क्षेत्रनाडया बाह्ये क्षेत्रे समवहतः’ इत्यस्य ग्रहणं भवति । ‘जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्तवायरतेउकाइयत्ताए’ यो भव्यः समयक्षेत्रे अपर्याप्तवादरतेजस्कायिकतया, तादृशतेजस्कायिकरूपेणोपपत्तुम् । ‘से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा’ स खलु भदन्त ! कतिसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येतेति प्रश्नः । भगवानाह—‘गोयमा’ इत्यादि । ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘दुसमइएणं वा, तिसमइएणं वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा’ द्विसामयिकेन वा, तिसामयिकेन वा विग्रहेण समुत्पद्येत, ‘सेकेणट्टेणं’

‘अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइएणं भंते । अहोलोग जाव समोहणित्ता’ इत्यादि ॥५॥

टीकार्थ—‘अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइए णं भंते ! हे भदन्त ! जो अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक ‘अहोलोग जाव समोहणित्ता’ अधोलोक स्थित ब्रसनाडी के बाहरीक्षेत्र में मरण समुद्घात करके ‘जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्तवायरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए’ समयक्षेत्रमें मनुष्यक्षेत्रमें अपर्याप्त बादरतेजस्कायिक रूपसे उत्पन्न होने के योग्य हुआ है ‘से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा’ ऐसा वह अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव वहां कितने समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—‘गोयमा ! दुसमइएणं वा तिसमइएणं वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा’ हे गौतम ! वह अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव जो कि अधोलोकस्थित ब्रसनाडी के बाहरीक्षेत्र में मरणसमुद्घात

‘अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइएणं भंते ! अहोलोग जाव समोहणित्ता’ इत्यादि

टीकार्थ—अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते ! अहोलोग जाव समोहणित्ता’ हे भगवन ने अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक ‘अहोलोग जाव समोहणित्ता’ अधोलोकभां रडेदा ब्रसनाडीना अहारना क्षेत्रभां भरणसमुद्घात करीने ‘जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्तवायरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए’ समयक्षेत्रभां—मनुष्यक्षेत्रभां अपर्याप्त आदरतेजस्कायिकपणुथी उत्पन्न थवाने योग्य थयेद डाय ‘से णं भंते ! कइ समइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा’ अवे। ते अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक एव त्यां डेटदा समयवाणी विग्रह गतिथी उत्पन्न थाय छे ? आ प्रश्नना उत्तरभां प्रभुश्री गौतमस्वामीने कडे छे के—‘गोयमा ! दुसमइएणं वा, तिसमइएणं वा, विग्गहेणं उववज्जेज्जा’ हे गौतम ! ते अपर्याप्तक सूक्ष्म पृथ्वीकायिक एव के ने अधोलोकभां रडेदा ब्रसनाडीना अहारना क्षेत्रभां

તત્કેનાથેન ભદન્ત ! એવમુચ્યતે, યદ્ દ્વિસામયિકેન વા ત્રિસામયિકેન વા વિગ્રહેણોત્પદ્યેતેતિ અવાન્તરપ્રશ્નઃ । મગવાનાહ—‘એવં સ્વલુ’ ઇત્યાદિ । ‘એવં સ્વલુ ગોયમા ! મણ સત્તસેદીઓ પન્નત્તાઓ’ એવં સ્વલુ હે ગૌતમ ! મયા સપ્તશ્રેણયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, ‘તં જહા’ તચ્ચયા—‘ઉજ્જુઆયયા જાવ અદ્ધચક્કવાલા’ ઋજ્ઞવાયતા યાવદ્ અદ્ધચક્કવાલા, અત્ર યાવત્પદેન એકતો વક્રા, દ્વિધાતો વક્રા, એકતઃ સ્વા, દ્વિધાતઃ સ્વા ચક્કવાલા ઇત્યેતાસાં શ્રેણીનાં સંગ્રહો ભવતીતિ । તત્ર ‘એકઓ વંકાણ સેદીણ ઉવવજ્જમાણે દુસમહણં વિગ્રહેણં ઉવજ્જેજ્જા’ એકતોવક્રયા શ્રેણ્યા સમુત્પદ્યમાનોઽપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકો દ્વિસામયિકેન વિગ્રહેણ સમુત્પદ્યેત, દુહઓ વંકાણ

કરકે સમયક્ષેત્ર મેં અપર્યાપ્ત બાદરતેજસ્કાયિક રૂપસે ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હુઆ હૈં વહાં દો સમયવાલે વિગ્રહ સે અથવા ત્રીન સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈં । ‘સે કેળદ્દેણં’ હે ભદન્ત ! એસા આપ કિસ કારણ સે કહતે હૈં કિ વહ વહાં દો સમયવાલે વિગ્રહસે અથવા ત્રીન સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈં ? હસ અવાન્તર પ્રશ્ન કે ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામી સે કહતે હૈં—‘એવં સ્વલુ ગોયમા ! મણ સત્તસેદીઓ પન્ન-ત્તાઓ’ હે ગૌતમ ! મૈને સાત શ્રેણિયાં કહી હૈં—‘તં જહા’ જો હસ પ્રકાર સે હૈં—‘ઉજ્જુઆયયા જાવ અદ્ધચક્કવાલા’ ઋજ્ઞવાયતા, યાવત્ અદ્ધચક્કવાલા’ યહાં યાવત્પદસે ‘એકતો વક્રા દ્વિધાતો વક્રા એકતઃ સ્વા, દ્વિધાતઃ સ્વા ચક્કવાલા’ હન અવશિષ્ટ શ્રેણિયોં કા ગ્રહણ હુઆ હૈં । હનમેં જો ‘એકઓ વંકાણ સેદીણ ઉવવજ્જમાણે દુસમહણં વિગ્રહેણં ઉવજ્જેજ્જા’ એકતઃ વક્રા શ્રેણિસે ગમન કરતા હુઆ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક

મરણુસમુદ્ધાત કરીને સમયક્ષેત્રમાં અપર્યાપ્ત બાદરતેજસ્કાયિકપણથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયેલ હોય તો તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ‘સે કેળદ્દેણં’ હે ભગવન આપ એવું શા કારણથી કહે છે કે—તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ અવાન્તર પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘એવં સ્વલુ ગોયમા ! મણ સત્ત સેદીઓ પન્નત્તાઓ’ હે ગૌતમ ! મેં સાત શ્રેણીયો કહેલ છે. ‘તં જહા’ તે આ પ્રમાણે છે. ‘ઉજ્જુઆયયા જાવ અદ્ધચક્કવાલા’ ઋજ્ઞવાયતા, એકતો વક્રા, દ્વિધાતો વક્રા, એકતઃ આ, દ્વિધાતઃ આ, ચક્કવાલા અને અર્ધચક્કવાલા. આ શ્રેણિ-યોમાં બે ‘એકઓ વંકાણ સેદીણ ઉવવજ્જમાણે દુસમહણં વિગ્રહેણં ઉવજ્જેજ્જા’ એકતઃ વક્રા શ્રેણીથી ગમન કરીને અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક છવ ઉત્પત્તિ

‘સેઢીં ઉવવજ્જમાણે તિસમહણં વિગ્ગહેણં ઉવવ્વજ્જેજ્જા’ દ્વિધાતો વક્રયા શ્રેણ્યા સમુત્પદ્યમાનઃ ત્રિસામયિકેન વિગ્રહેણ સમુત્પદ્યેતેતિ । ‘સે તેણદ્દેણં’ તત્તેનાર્થેન હે ગૌતમ ! એવમુચ્યતે—ત્રિસામયિકેન વા ત્રિસામયિકેન વા વિગ્રહેણ ઉત્પદ્યેતેતિ । ‘એવં પજ્જત્તણ્ણુ વાયરતેઉકાહણ્ણુ વિ ઉવવાણ્ણવ્વો’ એવં યથા—અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિ-
વીકાયિકસ્ય અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકેષુ ઉપપાતો વર્ણિતસ્તથૈવ પર્યાપ્તકેષ્વપિ વાદરતેજસ્કાયિકેષુ ઉપપાતો વર્ણનીયઃ પ્રકારસ્તુ સ્વયમેવોદ્ધનીય, ઇતિ । ‘વાઉકાહ્ય વણસ્સહકાહ્યત્તાણ્ણ ચઉક્કણ્ણં ભેદેણં જહા આઉક્કાહ્યત્તાણ્ણ તહેવ ઉવવાણ્ણવ્વો’ વાયુકાયિકતયા વનસ્પતિકાયિકતયા ચ ચતુષ્કેન ભેદેન યથા અપ્કાયિકતયા તથૈવ

જીવ ઉત્પત્તિ સ્થાન મેં સમયક્ષેત્ર મેં વાદરતેજસ્કાયિક રૂપસે ઉત્પન્ન હોતા હૈ વહ વહાં દો સમયવાલે વિગ્રહસે ઉત્પન્ન હોતા હૈ । ‘દુહઓ વંકાણ્ણ સેઢીં ઉવવજ્જમાણે તિસમહણં વિગ્ગહેણં ઉવવ્વજ્જેજ્જા’ ઓર જવ વહ દ્વિધાતઃ વક્રાશ્રેણિ સે ગમન કરતા હુઆ વહાં ઉત્પન્ન હોતા હૈ તથ વહ વહાં ત્રીનસમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ । ‘સે તેણદ્દેણં’ હસી કારણ હે ગૌતમ ! મેને એસા કહા હૈ કિ વહ વહાં દો સમયવાલે અથવા ત્રીન સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ । ‘એવં પજ્જત્તણ્ણુ વાયરતે-
ઉકાહણ્ણુ વિ ઉવવાણ્ણવ્વો’ હસી રીતિ કે અનુસાર અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવકે ઉત્પાદકા વર્ણન પર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકો મેં ભી કર લેના ચાહિયે તથા આલાપ પ્રકાર હસ સંસ્બન્ધ મેં અપને આપ ઉદ્ભાવિત કર લેના ચાહિયે । ‘વાઉક્કાહ્યવણસ્સહકાહ્યત્તાણ્ણ ચઉ-
ક્કણ્ણં ભેદેણં જહા આઉક્કાહ્યત્તાણ્ણ તહેવ ઉવવાણ્ણવ્વો’ હસ અપર્યાપ્ત

સ્થાનમાં—સમયક્ષેત્રમાં વાદરતેજસ્કાયિકપણુથી ઉત્પન્ન થાય છે. તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. ‘દુહઓ વંકાણ્ણ સેઢીં ઉવવજ્જમાણે તિસમહણં વિગ્ગહેણં ઉવવ્વજ્જેજ્જા’ અને બ્યારે દ્વિધાતો વક્રા શ્રેણીથી ગમન કરીને ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે, ત્યારે તે ત્યાં ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. ‘સે તેણદ્દેણં’ આ કારણથી હે ગૌતમ ! મેં એવું કહ્યું છે કે—તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. ‘એવં પજ્જત્તણ્ણુ વાયરતેઉકાહણ્ણુ વિ ઉવવાણ્ણવ્વો’ આજ રીતે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવના ઉત્પાતનું વર્ણન પર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકોમાં પણ કરી લેવું. તથા તેના આલાપનો પ્રકાર આ વિષયમાં સ્વયં બતાવીને સમજી લેવો. ભેદ એ. ‘વાઉક્કાહ્યવણસ્સહકાહ્યત્તાણ્ણ ચઉક્કણ્ણં ભેદેણં જહા આઉક્કાહ્યત્તાણ્ણ તહેવ ઉવવાણ્ણવ્વો’ આ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ

ઉપપાતયિતવ્યઃ ૨૦ । અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકસ્ય અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવાયુકાયિકે, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવાયુકાયિકે, અપર્યાપ્તવાદરવાયુકાયિકે, પર્યાપ્ત વાદરવાયુકાયિકે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિકે, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાયિકે, અપર્યાપ્ત વાદરવનસ્પતિકાયિકે પર્યાપ્ત વાદરવનસ્પતિકાયિકે અત્રૈવ પ્રદર્શિતઃ અપ્રકાયિક-વદેવ ઉપપાતો વર્ણનીયઃ, ઉપપાત પ્રકારસ્તુ સ્વયમેવોદ્ધનીય इति । ૨૦ 'एवं जहा अपञ्जत्तसुहुमपुढवीकाइयस्स गमओ भणिओ' 'एवं यथा-पूर्वोक्तप्रकारेण अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकस्य तमको मणितः-कथितः, 'एवं पञ्जत्तसुहुमपुढवीकाइयस्स वि भाणियव्वो' एवम् अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकवदेव पर्याप्त सૂक्ष्म पृथिवी-कायिकस्यापि तमको मणितव्यः, तथाहि-पर्याप्त सૂक्ष्म पृथिवीकायिकः खलु

સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકકા ફક્તી રીતિ કે અનુસાર' અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવાયુકાયિક મેં પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવાયુકાયિક મેં, અપર્યાપ્ત વાદરવાયુકાયિક મેં પર્યાપ્તવાદરવાયુકાયિક મેં, અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક મેં, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક મેં, અપર્યાપ્ત વાદરવનસ્પતિકાયિક મેં ઓર પર્યાપ્ત વાદરવનસ્પતિકાયિક મેં' ઇન જીવોં મેં અપ્રકાયિકકે જૈસા હી ઉત્પાદ વર્ણિત કર લેના ચાહિયે । તથા ઇસ સમ્બન્ધ મેં ઉપપાદ કા પ્રકાર અપને આપ ઉદ્ભાવિત કર લેના ચાહિયે । ૨૦ 'एवं जहा अपञ्जत्त सुहुमपुढवीकाइयस्स गमओ भणिओ' ઇસ પ્રકાર જૈસા ઉત્પાદ પ્રકાર યહ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક કા કહા ગયા હૈ, 'एवं पञ्जत्त सुहुमपुढवीकाइयस्स वि भाणियव्वो' ડસી પ્રકાર સે પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકકા બી ઉત્પાદ પ્રકાર કર લેના ચાહિયે ।

‘પૃથ્વિકાયિકનુ’ આજ પ્રમાણે ‘અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મ વાયુકાયિકોમાં, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વાયુકાયિકોમાં, અપર્યાપ્ત બાદર વાયુકાયિકોમાં પર્યાપ્ત બાદર વાયુકાયિકોમાં, અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિકોમાં, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિકોમાં અપર્યાપ્ત બાદર વનસ્પતિકાયિકોમાં અને પર્યાપ્ત બાદર વનસ્પતિકાયિકોમાં, અપ્રકાયિક જીવોના ઉત્પાદના કથન પ્રમાણેનું’ વર્ણન કરી લેવું. તથા આ સંબંધમાં ઉત્પાત-ઉત્પત્તિનો પ્રકાર સ્વયં ઉદ્ભાવિત કરી સમજી લેવો. ૨૦, ‘एवं जहा अपञ्जत्तसुहुमपुढवीकाइयस्स गमओ भणिओ’ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકના ઉત્પાદનો પ્રકાર જે રીતે કહેલ છે, ‘एवं पञ्जत्तसुहुमपुढवीकाइयस्स वि भाणियव्वो’ એજ પ્રમાણે પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકનો ઉત્પાદ

મદન્ત ! અધોલોક ક્ષેત્રનાડયા બાહ્યે ક્ષેત્રે સમવહતઃ સમવહત્ય ઉર્ધ્વલોક ક્ષેત્ર-
નાડયા વહિઃ ક્ષેત્રે યો મન્યઃ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકતયા સમુત્પત્તુમિત્યાદિ
ક્રમેણ આલાપમકારો વર્ણનીય इति । ‘તહેવ વીસાણ ઠાણેસુ ઉપવાણ્યન્ત્રો’ તથૈવ
વિંશતિ સ્થાનેષૂપપાતયિતવ્યઃ ૪૦ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકસ્ય યથા વિંશતિ
સ્થાનેષૂપપાતઃ કથિતસ્તથૈવ તેનૈવ રૂપેણ વિંશતિસ્થાનેષુ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવી-
કાયિકાદારમ્ પર્યાપ્ત વાદરવનસ્પતિકાયિકાન્તેષુ અપર્યાપ્ત પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવાદર-
પૃથિવીકાયિકેષુ તથા હાદશાન્તેજો વાયુવનસ્પતિકાયિકેષુ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવી-
કાયિકસ્યોપપાતો વક્તવ્ય इति ॥૪૦॥

જેસે હે મદન્ત ! ‘જો પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક જીવ અધોલોક
સ્થિત ત્રસનાડી કે બાહરી ક્ષેત્રમેં મરણ સમુદ્ઘાત કરકે ઝર્ધ્વલોક
ક્ષેત્રનાલી ‘ત્રસનાડી’ કે બાહરી ક્ષેત્રમેં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક
રૂપસે ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હૈ વહ વહાં કિતને સમયવાલે વિગ્રહ
સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ? इत्यादि ક્રમ સે યહાં આલાપ પ્રકાર વક્તવ્ય
હૈ । ‘તહેવ વીસાણ ઠાણેસુ ઉપવાણ્યન્ત્રો’ હસી પ્રકાર સે હસ પર્યાપ્ત
સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક જીવકા ઉત્પાદ વીસ સ્થાનોમેં કહ લેના
ચાહિયે । અર્થાત્ જિસ પ્રકાર સે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકકા
વીસ સ્થાનોમેં ઉત્પાદ કહા ગયા હૈ । હસી પ્રકાર સે હસ પર્યાપ્ત
સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક જીવકા ખી અપર્યાપ્ત પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવાદર અપ્ર-
કાયિકોમેં તેજસ્કાયિકોમેં વાયુકાયિકોમેં ઓર વનસ્પતિકાયિકોમેં
મેં હન વીસ સ્થાનોમેં ઉત્પાદ કહ લેના ચાહિયે । ૪૦॥

પણ કરી લેવો. જેમવ-હે લગવન્ ‘જે પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ
અધોલોકમાં રહેલ ત્રસ નાડીના બહારના ક્ષેત્રમાં અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વી-
કાયિકપણથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયેલ હોય તો તે ત્યાં કેટલા સમયવાળી
વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ?’ વિગેરે કમથી અહિયાં આલાપના પ્રકારે
કહી લેવો. ‘તહેવ વીસાણ ઠાણેસુ ઉપવાણ્યન્ત્રો’ આજ પ્રમાણે આ પર્યાપ્ત
સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવનો ઉત્પાદ વીસે સ્થાનોમાં સમજી લેવો. અર્થાત્ જે
પ્રમાણે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવનો વીસ સ્થાનોમાં ઉત્પાદનો
પ્રકાર બતાવેલ છે, એજ પ્રમાણે આ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવનો
પણ અપર્યાપ્ત, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ બાદર પૃથ્વીકાયિકોમાં તથા અપર્યાપ્ત, પર્યાપ્ત
સૂક્ષ્મ બાદર અખ્કાયિકોમાં તેજસ્કાયિકોમાં અને વનસ્પતિકાયિકોમાં વીસે
સ્થાનોમાં ઉત્પાદ સમજવો. ૪૦।

‘અહોલોચચેત્તનાલીં વાહિરિલ્લે ચેત્તે સમોહણ સમોહણિત્તા’ અધોલોકક્ષેત્ર-
નાડયા વાહયે ક્ષેત્રે સમવહતઃ સમવહત્યેત્યાદિ પ્રશ્નઃ, ઉત્તરમાહ-‘एवं’ इत्यादि।
‘एवं वायर पुढवीकाडयस्स वि अपज्जत्तगस्स वज्जत्तगस्स य भाणियव्वं’ एवं
पर્યાप्त सूक्ष्मपૃથિવીકાયિકવદેવ વાદરપૃથિવીકાયિકસ્યાऽપર્યાપ્તકસ્ય પર્યાપ્ત-
કસ્ય ચ મણિતવ્યમ્ । એવમેવ પર્યાપ્ત વાદરપૃથિવીકાયિકસ્યાપિ ત્રિંશતિસ્થાનેપુ

‘અહોલોચચેત્તનાલીં વાહિરિલ્લે ચેત્તે સમોહણ સમોહણિત્તા’
અધોલોકસ્થિત વ્રસનાલી કે વાહરી ક્ષેત્રમેં મરણ સમુદ્ઘાત ક્રિયા ઓર
મરણસમુદ્ઘાત કર ઇત્યાદિ પ્રશ્ન રૂપલે યહાં પર કથન પર્યાપ્ત ઓર
અપર્યાપ્તવાદરપૃથિવીકાયિક જીવ કે સમ્બન્ધ મેં બી કહ લેના ચાહિયે
ઓર ઉત્તર રૂપમેં સ્વ કથન જૈસા પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક કે
સમ્બન્ધ મેં ક્રિયા જા ચુકા ઈ વૈસા હી વહ સ્વ કથન યહાં બી કહ લેના
ચાહિયે । તાત્પર્ય ઇસ કથન કા કેવલ એસા હી ઈ કિ હે ભદન્ત ! જિસ
અપર્યાપ્ત અથવા પર્યાપ્ત વાદરપૃથિવીકાયિક જીવ ને અધોલોકસ્થિત
વ્રસનાલી કે વાહરીક્ષેત્ર મેં મરણ સમુદ્ઘાત ક્રિયા હૈ ઓર મરણ
સમુદ્ઘાતકર વહ ઝર્વલોકસ્થિત વ્રસનાડી કે વાહરી પ્રદેશ મેં અપર્યાપ્ત
અથવા પર્યાપ્તપૃથિવીકાયિક રૂપ લે ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હુઆ હૈ
તો હે ભદન્ત ! વહ વહાં કિતને સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા
હૈ ? એસા યહ પ્રશ્ન હૈ ઓર હે ગૌતમ ! ઇસ સમ્બન્ધ મેં પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ
પૃથિવીકાયિકકે સમ્બન્ધ મેં જૈસા કહા હૈ વૈસા હી જાનના ચાહિયે

‘અહોલોચચેત્તનાલીં વાહિરિલ્લે ચેત્તે સમોહણ સમોહણિત્તા’ અધોલોકમાં
રહેલ વ્રસ નાડીના બહારના ક્ષેત્રમાં મરણ સમુદ્ઘાત કરે, અને મરણ સમુ-
દ્ઘાત કરીને વિગેરે પ્રશ્ન રૂપનું કથન આહિયાં પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત બાદર
પૃથ્વીકાયિક જીવના સંબંધમાં કહેવું જોઈએ અને ઉત્તરરૂપે સઘળું કથન
પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકના સંબંધમાં જે રીતે કરવામાં આવ્યું છે, એજ
પ્રમાણે તે સઘળું કથન આહિયાં પણ સમજી લેવું. આ કથનનું તાત્પર્ય એ
છે કે-હે ભગવન જે અપર્યાપ્ત અથવા પર્યાપ્ત બાદર પૃથ્વીકાયિક જીવે અધો-
લોકમાં રહેલ વ્રસનાડીના બહારના ક્ષેત્રમાં મરણસમુદ્ઘાત કર્યો હોય અને
મરણસમુદ્ઘાત કરીને ઊર્ધ્વલોકમાં રહેલ વ્રસ નાડીના બહારના પ્રદેશમાં
અપર્યાપ્ત અથવા પર્યાપ્ત પૃથ્વીકાયિકપણથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય બનેલ હોય,
તો હે ભગવન તે ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ?
આ રીતનો આહિં પ્રશ્ન કરેલ છે અને હે ગૌતમ આ સંબંધમાં પર્યાપ્ત
સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકના સંબંધમાં જે પ્રમાણે આ વિષયમાં કહેવામાં આવેલ

ઉપપાતો વક્તવ્ય इति ૮૦ । ‘एवं आउकाइयस्स चउव्विहस्स वि भाणियच्चं’ एवं चतुर्विधस्य पृथिवीकायिकस्याधोलोकस्य नाड्या बाह्ये क्षेत्रे समवहतस्य ऊर्ध्व-
 लोकनाड्या बाह्ये क्षेत्रे समुत्पद्यमानस्य यथा—विंशतिस्थानेषूपपातो वर्णित स्तेनैव
 रूपेण अप्कायिकस्य चतुर्विधस्य अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्म वादरभेदभिन्नस्यापि
 विंशति-स्थानेषूपपातो वर्णनीय इति भावः १६० । ‘सुहुमतेउकाइयस्स दुवि-
 हस्स वि एवं चेव’ सूक्ष्मतेजस्कायिकस्य द्विविधस्यापर्याप्तपर्याप्तकस्य च
 यह उत्तर रूप कथन है । इस प्रकार से अपर्याप्तक बादरपृथिवीकायिकों
 को २० स्थानों में उत्पादयुक्त करने से और पर्याप्तक पृथिवीकायिकों
 के भी २० स्थानों में उत्पादित करने से ८० गमक हो जाते हैं । ‘एवं
 आउकाइयस्स चउव्विहस्स वि भाणियच्चं’ जिस प्रकार से अधोलोक
 स्थित त्रसनाड़ी के बाह्यप्रदेश में सारणान्तिक समुद्धत करके ऊर्ध्व
 लोकस्थित त्रसनाड़ी के बाहिरी प्रदेशमें उत्पन्न हुए पृथिवीकायिकका
 उत्पाद बीस स्थानों में कहा गया है, उसी प्रकार से अपर्याप्त पर्याप्त
 सूक्ष्म और बादर भेदवाले अप्कायिकका भी २० स्थानों में उपपात
 वर्णित कर लेना चाहिये । इस प्रकार से चारों प्रकारके अप्कायिकों के
 ८० गमक हो जाते हैं । पहिले के ८० और ये ८० आपस में जोड़ देने
 से १६० गमक होते हैं ।

‘सुहुमतेउकाइयस्स दुविहस्स वि एवं चेव’ इसी प्रकार से अपर्याप्त
 और पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिक का भी पृथिवीकायिक के जैसे २०
 स्थानों में उपपात कहलेना चाहिये । इस प्रकार से ४० गमक और

છે, એજ પ્રમાણેનુ કથન અહિયાં પણ સમજવું. આ પ્રમણે પ્રભુએ ઉત્તર
 કહેલ છે આ રીતે અપર્યાપ્તક બાદર પૃથ્વિકાયિકોના વીસ સ્થાનમાં ઉત્પાત-
 ઉત્પત્તિ કહેવાથી અને પર્યાપ્ત પૃથ્વિકાયિકોના પણ ૨૦ સ્થાનોમાં ઉત્પત્તિ
 કહેવાથી ૮૦ એંસી ગમકો થઈ જાય છે ‘एवं आउकाइयस्स चउव्विहस्स वि
 भाणियच्चं’ જે પ્રમણે અધોલોકમાં રહેલ ત્રસ નાડીના બહારના પ્રદેશમાં
 મારણાન્તિક સમુદ્ધાત કરીને ઉર્ધ્વલોક સ્થિત ત્રસનાડીના બહારના પ્રદેશમાં
 ઉત્પન્ન થયેલા પૃથ્વીકાયિકોના ઉત્પાદ વીસે સ્થાનોમાં કહેવામાં આવેલ છે,
 એજ પ્રમાણે અપર્યાપ્ત, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અને બાદર ભેદવાળા અપ્કાયિકોના
 પણ વીસે સ્થાનોમાં ઉપપાતનું વર્ણન કરી લેવું જોઈએ આ રીતે ચારે
 પ્રકારના અપ્કાયિકોના ૮૦ એંસી ગમકો થઈ જાય છે. પહેલાં કહેલ ૮૦ એંસીને
 આ અપ્કાયિકોમાં મેળવવાથી ૧૬૦ એકસો સાઠઠ ગમકો (લેદો) થાય છે.

‘सुहुम तेउकाइयस्स दुविहस्स वि एवं चेव’ હે ગૌતમ ! આજ પ્રમાણે
 અપર્યાપ્તક અને પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિકોના પણ ઉપપાત પૃથ્વીકાયિકોના

પૃથિવ્યાદિકાચિક્રવદેવ ત્રિંશતિ સ્થાનેપૂર્વપાતો વર્ણનીય इति ૨૦૦ । ‘અપજ્જતે વાયરતેવકાદ્દણં મંતે ! સમયસ્થેત્તે સમોદ્દણં’ અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકઃ સ્વલુ મદન્ત ! સમયક્ષેત્રે સમવહતઃ, ‘સમોદ્દણિત્તા જે મિવિણ ઉદ્દલોચ સ્વેત્તનાલીણ વાહિરિલ્લે સ્થેત્તે’ સમવહત્ય સારણાન્તિકસમુદ્ધવાતં કૃત્વા યો મન્ય ઝર્ધ્વલોક-ક્ષેત્રનાડયા વાહયે ક્ષેત્રે, ‘અપજ્જતસુહુમપુઢવીકાદ્દયત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણં’ અપર્યાપ્ત-સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાચિક્રતયા-તથાવિધ પૃથિવીકાચિક્રરૂપેણ સમુત્પત્તુમ્ ‘સે ણં મંતે ! કહસમદ્દણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ સ સ્વલુ મદન્ત ! કતિસામયિકેન વિગ્રહેણ સમુત્પદ્ધેત્ત इति પ્રશ્નઃ, મગવાનાહ-‘ગોયમા’ इत्यादि । ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘દુસમદ્દણ વા, તિસમદ્દણ વા, ચડસમદ્દણ વા વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ ત્રિસામયિકેન વા, ત્રિસામયિકેન વા, ચતુઃસામયિકેન વા વિગ્રહેણ ઉત્પદ્ધેત્તેત્યુત્તરમ્ ।

મિલ્લાને સે ૨૦૦ ગમક હો જાતે હૈં । ‘અપજ્જતવાયર તેવકાદ્દણં મંતે ! સમયસ્થેત્તે ! સમોદ્દણં’ હે મદન્ત ! કોઈ અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિક જીવ સમયક્ષેત્ર મેં સમવહત હુઆ । ‘સમોદ્દણિત્તા જે મિવિણ ઉદ્દલોચ સ્વેત્તનાલીણ વાહિરિલ્લે સ્થેત્તે અપજ્જત સુહુમપુઢવીકાદ્દયત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણં’ ઔર સમવહત હોકર વહ ઝર્ધ્વલોક ક્ષેત્ર સ્થિત ત્રસનાડી કે વાહિરી પ્રદેશ મેં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાચિક રૂપ સે ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હુઆ હો ‘સે ણં મંતે ! કહસમદ્દણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ હે મદન્ત ! એસા વહ જીવ કિતને સમયવાલે વિગ્રહ સે વહાં ઉત્પન્ન હોતા હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં-‘ગોયમા ! દુસમદ્દણ વા, તિસમદ્દણ વા ચડસમદ્દણ વા વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ હે ગૌતમ ! વહ વહાં દો સમયવાલે વિગ્રહ સે અથવા ત્રીન સમયવાલે

કથન પ્રમાણે ૨૦ વીસે સ્થાનોમાં કહેવો જોઈએ. આ રીતે આ ૪૦ ગમકો મેળવવાથી ૨૦૦ એસો ગમકો થઈ જાય છે ‘અપજ્જત વાયરતેવકાદ્દણં મંતે ! સમયસ્થેત્તે સમોદ્દણં’ હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિક જીવ સમય ક્ષેત્રમાં સમુદ્ધવાત કરે ‘સમોદ્દણિત્તા’ સમુદ્ધવાત કરીને ‘જે મિવિણ ઉદ્દલોચસ્વેત્તનાલીણ વાહિરિલ્લે સ્થેત્તે અપજ્જત સુહુમપુઢવીકાદ્દયત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણં’ ઝર્ધ્વલોક ક્ષેત્રમાં રહેલ ત્રસનાડીના બહારના પ્રદેશમાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાચિકપણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયેલ હોય તો ‘સે ણ મંતે ! કહ સમદ્દણ વિગ્ગહેણ ઉવવજ્જેજ્જા’ હે ભગવન્ એવો તે જીવ કેટલા સમયની વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે- ‘ગોયમા’ દુસમદ્દણ વા તિસમદ્દણ વા ચડસમદ્દણ વા વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ હે ગૌતમ ! તે ત્યાં જ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી

પુનઃ પ્રશ્નયન્નાહ—‘સે કેળદ્દેળં’ ઇત્યાદિ । ‘સે કેળદ્દેળં’ તત્કેનાર્થેન ભદન્ત ! એવમ્ ઉચ્યતે દ્વિસામયિકેન વા, ત્રિસામયિકેન વા, ચતુઃસામયિકેન વા સમુત્પન્નેતિ । ‘અદ્દો જહેવ’ ઇત્યાદિ । ‘અદ્દો જહેવ રયણપ્પમાણ તહેવ સત્ત સેઢીઓ’ અર્થો हेतुः कारणं यथैव येनैव प्रकारेण रत्नप्रभायां कथितं स्तथैव सप्त श्रेणिरूपो वक्तव्यः । यथा रत्नप्रभायां श्रेणि विभज्य द्विसामयिकादि विग्रहस्य समर्थनं तथैव इहापि श्रेणिविभागपूर्वकमेव उत्तरं मिति । कियत्पर्यन्तं रत्नप्रभाप्रकरणं वक्तव्यं तत्राह—‘जाव’ इत्यादि । ‘एवं जाव’ एवं यावत्, अत्र यावत्पदेन सप्तश्रेणय ऋज्वायता यावदर्द्धचक्रवाला । तत्र एकतो वक्रया गच्छन्, द्विसामयिकेन वा,

વિગ્રહ સે અથવા ચાર સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ । ‘સે કેળ-દ્દેળં મંતે’ હે ભદન્ત ! એસા આપ કિસ કારણ સે કહતે હૈં કિ વહ વહાં દો સમયવાલે વિગ્રહસે યાવત્ ચાર સમયવાલે વિગ્રહસે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં—‘અદ્દો જહેવ રયણપ્પમાણ તહેવ સત્ત-સેઢીઓ’ હે ગૌતમ ! જૈસા કારણ રત્નપ્રભાપૃથિવી મેં કહા ગયા હૈ વૈસા હી કારણ સસશ્રેણિ રૂપ યહાં પર ભી કહ લેના ચાહિયે । અર્થાત્ જિસ પ્રકાર સે રત્નપ્રભા મેં શ્રેણિકા વિભાગ કરકે દ્વિસામ-યિક આદિ વિગ્રહકા સમર્થન કિયા ગયા હૈ ઉસી પ્રકાર સે યહાં પર ભી શ્રેણિ કે વિભાગ પૂર્વક હી ઉત્તર કહ લેના ચાહિયે । યહ રત્નપ્રભા પ્રકરણ યહાં યાવત્ શબ્દસે વહાં તક કા લિયા ગયા હૈ કિ જહાં પર પ્રભુશ્રીને ઉત્તર રૂપમેં એસા કહા, હૈ કિ હે ગૌતમ ! મૈને ઋજ્વાયતા યાવત્ અર્દ્ધચક્રવાલા હસ પ્રકાર સે સાત શ્રેણિયાં કહી

વિગ્રહ ગતિથી અથવા ચાર સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. ‘સે કેળદ્દેળં મંતે !’ હે ભગવન આપ એવું શા કારણથી કહે છે કે—ત્યાં જે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી યાવત્ ચાર સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—‘અદ્દો જહેવ રયણપ્પમાણ તહેવ સત્ત સેઢીઓ’ હે ગૌતમ ! રત્નપ્રભા પૃથ્વીના કથનમાં જે પ્રમાણેનું કારણ કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણેનું સાત શ્રેણી રૂપ કથન અહિયાં પણ સમજવું અર્થાત્ જે પ્રમાણે રત્નપ્રભા પૃથ્વીમાં શ્રેણીના વિભાગ કરીને જે સમય વિગેરે વિગ્રહ ગતિનું સમર્થન કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ શ્રેણીના વિભાગપૂર્વક જ ઉત્તર સમજવો. આ રત્નપ્રભા પ્રકરણ અહિયાં યાવત્ શબ્દથી ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે. તે રત્નપ્રભા પ્રકરણ ત્યાં સુધીનું ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે કે—ત્યાં પ્રભુશ્રીએ ઉત્તર રૂપથી એવું કહેલ છે કે—હે ગૌતમ ! મેં ઋજ્વાયતા યાવત્ અર્ધચક્ર

દ્વિધાતો વક્રયા ગચ્છન્, ત્રિસામયિકેન વિગ્રહેણોત્પદ્યેત વિશ્રેણ્યા મુત્પદ્યમાનશ્ચતુઃ
સામયિકેન વિગ્રહેણોત્પદ્યેત, તત્તેનાર્થેન ગૌતમ ! એવમુચ્યતે દ્વિસામયિકેનવા,
ત્રિસામયિકેન વા, ચતુઃસામયિકેન વા વિગ્રહેણ સમુત્પદ્યેત, એવમ્ પૃથિવીકાચિ-
કેષુ ચતુર્વિધેષુ ઉપગાતયિતવ્યઃ અપ્કાયિકેષુ ચતુર્વિધેષુ, તથા અપર્યાપ્તેષુ સૂક્ષ્મ
તેજસ્કાયિકેષુ ચોપપાતયિતવ્ય એતદન્તસ્ય ગ્રહણં ભવતીતિ ભાવઃ 'અપજ્જત્ત
વાયરતેઉકાદ્દણં મંતે ! સમયચેત્તે સમોદ્દણ સમોદ્દણિત્તા જે મવિણ' અપર્યાપ્ત

હૈં । उनमें से एकतो वक्रा श्रेणिसे जाता हुआ जो जीव उत्पत्ति
स्थान में उत्पन्न होता है वह वहाँ दो समयवाले विग्रहसे उत्पन्न होता
है । द्विधातो वक्रा श्रेणिसे जाता हुआ जो जीव उत्पत्ति स्थान में
उत्पन्न होता है वह तीन समयवाले विग्रहसे वहाँ उत्पन्न होता है
और जो जीव विश्रेणि में उत्पन्न होता है वह चार समयवाले विग्रह
से वहाँ उत्पन्न होता है । 'तत्तेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते' इसलिये
हे गौतम ! मैंने ऐसा कहा है कि वह वहाँ दो समयवाले विग्रहसे
उत्पन्न होता है । तीनसमयवाले विग्रहसे उत्पन्न होता है अथवा चार
समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है । इसी प्रकार से उसे चारों प्रकार
के पृथिवीकायिक जीवों में उत्पादित कर लेना चाहिये । चारों प्रकारके
अप्कायिकों में उत्पादित कर लेना चाहिये और अपर्याप्तक सूक्ष्म
तेजस्कायिकों में उत्पादित कर लेना चाहिये ।

‘અપજ્જત્ત વાયર તેઉકાદ્દણં મંતે ! સમયચેત્તે સમોદ્દણ સમોદ્દ-

વાલા આ રીતે સાત શ્રેણીથી કહેલ છે. તેમાંથી એકતો વક્રા શ્રેણીથી જઈને
જે જીવ ઉત્પત્તિસ્થાનમાં ઉત્પન્ન થાય છે, તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ
ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે, અને દ્વિધાતો વક્રા શ્રેણીથી જનારો જીવ ઉત્પત્તિ
સ્થાનમાં ઉત્પન્ન થાય તે ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય
છે, અને જે જીવ વિશ્રેણીથી ઉત્પન્ન થાય છે, તે ચાર સમયવાળી વિગ્રહ
ગતિથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે. 'તત્તેનાર્થેન ગૌતમ ! એવમુચ્યતે' એ કારણથી
હે ગૌતમ ! મેં એવું કહેલ છે કે-તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી
ઉત્પન્ન થાય છે, ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. ચાર
સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. આ પ્રમાણે તે ચારે પ્રકારના
પૃથ્વીકાયિકોમાં ઉત્પન્ન થવા સંબંધી કથન કહેવું જોઈએ. અને અપર્યાપ્તક,
પર્યાપ્તક તેજસ્કાયિકોમાં ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં કહેવું જોઈએ.

‘અપજ્જત્તવાયરતેઉકાદ્દણં મંતે ! સમયચેત્તે સમોદ્દણ સમોદ્દણિત્તા’ હે ભગવન્,

વાદરતેજસ્કાયિકઃ સ્વલુ મદન્ત ! સમયક્ષેત્રે સમવહતો-મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતં કૃતવાન્, સમવહત્ય-મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતં કૃત્વા યો મન્યઃ, 'ઉદ્ઘ્લોચલેક્ષનાલી૯ વાહિરિલ્લે લેક્ષે' ઊર્ધ્વલોક ક્ષેત્રનાડ્યા વાહ્યે ક્ષેત્રે' 'પજ્જત્ત સુહુમ તેઝકાહ્યત્તા૯ ઉવવજ્જિત્ત૯' પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિકતયા તદ્દૂપેણોપપત્તુમ્, 'સે ણં મંતે ! સ સ્વલુ મદન્ત ! કતિસામયિકેન વિગ્રહેણ ઉત્પદ્ધેતેતિ પ્રશ્નઃ । ઉત્તરમાહ-'સેસં' ઇત્યાદિ । 'સેસં તં ચેવ' શેષમુત્તર મત્ર સર્વં દ્વિસામયિકેવ વા' ત્રિસામયિકેન વા, ચતુઃસામયિકેન વા વિગ્રહેણ ઉત્પદ્ધેતેત્યાદિકં સર્વં પૂર્વવદેવેતિ જ્ઞાતવ્યમિતિ । 'અપજ્જત્ત વાયર તેઝકાહ્યણં મંતે ! સમયલેક્ષે સમોહ૯' અપર્યાપ્ત વાદરતેજ-

ણિત્તા' 'હે મદન્ત ! જો અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિક સમયક્ષેત્રમે' મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત સે મરણ કરતા હૈં ઔર મરણકરકે 'જે ઉદ્ઘ્લોચલેક્ષનાલી૯ વાહિરિલ્લે લેક્ષે પજ્જત્ત સુહુમતેઝકાહ્યત્તા૯ ઉવવજ્જિત્ત૯ મવિ૯' જો ઊર્ધ્વલોક સ્થિત ત્રસનાડી કે વાહરી ક્ષેત્રમેં પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક રૂપસે ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હોતા હૈં તો 'સે ણં મંતે ! 'હે મદન્ત ! એલા વહ જીવ કિતને સમયવાલે વિગ્રહ સે વહાં ઉત્પન્ન હોતા હૈં ? ઉત્તરમેં પ્રશુશ્રીં કહતે હૈં-'સેસં તં ચેવ' 'હે ગૌતમ ! ઇસ સમ્બન્ધ મેં ઉત્તર યહાં 'વહ વહાં દો સમયવાલે વિગ્રહ સે મી ઉત્પન્ન હોતા હૈં, ત્રીન સમયવાલે વિગ્રહ સે મી ઉત્પન્ન હોતા હૈં તથા ચાર સમયવાલે વિગ્રહ સે મી ઉત્પન્ન હોતા હૈં' 'ઇત્યાદિ રૂપસે પૂર્વોક્ત જૈસા હી જાનના ચાહિયે ।

'અપજ્જત્ત વાયર તેઝકાહ્યણં મંતે ! સમયલેક્ષે સમોહ૯' 'હે

જે અપર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિક સમયક્ષેત્રમાં મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી મરણ પામે છે, અને મરણ પામીને 'જે ઉદ્ઘ્લોચલેક્ષનાલી૯ વાહિરિલ્લે લેક્ષે પજ્જત્તસુહુમ-તેઝકાહ્યત્તા૯ ઉવવજ્જિત્ત૯ મવિ૯' જે ઊર્ધ્વલોકમાં રહેલા ત્રસનાડીના પ્રદેશમાં પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિકપણથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય હોય છે, 'સે ણં મંતે !' હે ભગવન્ જોવા તે જીવ કેટલા સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રશુશ્રી કહે છે કે-'સેસં તં ચેવ' હે ગૌતમ ! આ સંબંધમાં ઉત્તર અહિયાં 'તે ત્યાં જે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, તથા ચાર સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, વિગેરે પ્રકારથી પહેલા કદા પ્રમાણે જ સમજવો.

'અપજ્જત્તવાયરતેઝકાહ્યણં મંતે ! સમયલેક્ષે સમોહ૯' હે ભગવન્ જે

સ્કાયિકઃ સ્વલ્લ મદન્ત ! સમયક્ષેત્રે સમવહતો-મારણાન્તિકસમુદ્ધાતં કૃતવાન, 'સમોદ્દાનિત્તા જે મવિષ સમયસ્થેત્તે અપજ્જત્ત વાયરતેઽકાઢયાત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ' સમવહત્ય-મારણાન્તિક સમુદ્ધાતં કૃત્વા યો મન્યોઽપર્યાપ્તવાદરતેજસ્કાયિક-તયા સમુત્પત્તુમ્ । 'સે ણં મંતે ! કઃ સમસૂણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા' સ સ્વલ્લ મદન્ત ! અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકઃ કતિ સામયિકેન વિગ્રહેણ સમુત્પદ્યેત્તેતિ પ્રશ્નઃ । મગવાનાહ-'ગોયમા' ઇત્યાદિ । 'ગોયમા' હે ગૌતમ ! 'એગસમસૂણ વા, દુસમસૂણ વા, તિસમસૂણ વા, વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા' એકસામયિકેન વા, દ્વિસામયિકેન વા, ત્રિસામયિકેન વા વિગ્રહેણ ઉત્પદ્યેત્ત્યુત્તરમ્ । પુનઃ પ્રશ્નયતિ 'સે કેણદ્દેણ' તત્કેનાર્થેન, ઉત્તરમાહ-'અદ્દો જહેવ' ઇત્યાદિ । 'અદ્દો જહેવ રયણપ્પ-

મદન્ત ! જો અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિક જીવ સમયક્ષેત્ર મેં સમવહત હોતા હૈ-મારણાન્તિક સમુદ્ધાત કરતા હૈ-ઔર 'સમોદ્દાનિત્તા જે મવિષ સમયસ્થેત્તે અપજ્જત્ત વાયરતેઽકાઢયાત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ' 'મારણાન્તિક સમુદ્ધાત કરકે જો સમુદ્ધાત મેં અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિક રૂપસે ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હોતા હૈ 'સે ણં મંતે ! કઃ સમસૂણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા' 'એસા વહ જીવ હે મદન્ત ! વહાં કિત્તને સમયવાલે વિગ્રહસે ઉત્પન્ન હોના હૈ । ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈ-'ગોયમા । એગ-સમસૂણ વા દુસમસૂણ વા, તિસમસૂણ વા વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા' હે ગૌતમ ! વહ વહાં એક સમયવાલે વિગ્રહસે, અથવા દો સમયવાલે વિગ્રહ સે અથવા ત્રીન સમયવાલે વિગ્રહસે ઉત્પન્ન હોના હૈ । 'સે કેણદ્દેણ' હે મદન્ત ! એસા આપ કિસ કારણ સે કહતે હૈ કિ વહ અપર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિક જીવ સમયક્ષેત્ર મેં મારણાન્તિક સમુદ્ધાત કરકે વહાં

અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિક એવ સમયક્ષેત્રમાં સમવહત થાય છે. અર્થાત્ મારણા-ન્તિક સમુદ્ધાત કરે છે, અને 'સમોદ્દાનિત્તા જે મવિષ સમયસ્થેત્તે અપજ્જત્તવાયર-તેઽકાઢયાત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ' મારણાન્તિક સમુદ્ધાત કરીને જે મનુષ્યક્ષેત્રમાં અપ-ર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિકપણથી ઉત્પન્ન થવ ને યોગ્ય હોય છે, 'સે ણં મંતે ! કઃ સમસૂણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા' એવો તે એવ હે ભગવન્ કહેલા સમય-વાળી વિગ્રહ ગતિથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'ગોયમા । એગસમસૂણ વા દુસમસૂણ વા તિસમસૂણ વા વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા' હે ગૌતમ ! એવો તે એવ ત્યા એક સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. 'સે કેણદ્દેણં' હે ભગવન્ આપ એવું શા કારણથી કહેો છે ? કે તે અપર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિક એવ સમયક્ષેત્રમાં મારણાન્તિક

માણ તહેવ સત્તસેઢીઓ' અર્થો હેતુઃ યથૈવ રત્નપ્રભાયાં તથૈવ સપ્તશ્રેણિરૂપો વિજ્ઞેયઃ ।

‘એવં પઞ્ચત્ત વાયરતેઝ્ઝકાઈયત્તાણ વિ’ એવમ્ અપર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિક-તયા સમુત્પદ્યમાનસ્ય યથૈવ વક્તવ્યતા મણિતા તથૈવ પર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિક-તયા સમુત્પદ્યમાનસ્યાપિ વક્તવ્યતા મણિતવ્યેતિ ભાવઃ ‘વાઝ્ઝકાઈણ્ણ વણસ્સઙ્કાઈણ્ણ ય જહા પુઢ્ઢવીકાઈણ્ણ ઉવવાઈઓ તહેવ ચઝઙ્કણં મેદેણં ઉવવાણ્ણવ્વો’ વાયુકાયિકેષુ વનસ્પતિકાયિકેષુ ચ યથા—યેન પ્રકારેણ પૃથિવીકાયિકેષુ ચતુર્વિધેષુ ઉપપાતિતઃ—ઉપપાતો દર્શિત સ્તથૈવ—તેનૈવ રૂપેણ ચતુષ્કેન મેદેન અપર્યાપ્ત

પર અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિક રૂપસે એક સમયવાલે વિગ્રહસે, અથવા દો સમયવાલે વિગ્રહ સે અથવા ત્રીન સમયવાલે વિગ્રહસે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ? ઉત્તરમેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈ—‘અઢો જહેવ રચણપ્પમાણ તહેવ સત્ત-સેઢીઓ’ હે ગૌતમ ! જેસા રત્નપ્રભા પ્રકરણ મેં હસ સમ્બન્ધ મેં મેરે દ્વારા સાત શ્રેણિયોં કા પ્રતિપાદન રૂપ કારણ બનલાયા ગયા હૈ વહી કારણ ઘઠાં પર ઓ સ્ખલ્લ લેના ચાહિયે ।

‘એવં પઞ્ચત્ત વાયરતેઝ્ઝકાઈયત્તાણ વિ’ જેસી વક્તવ્યતા અપર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિક રૂપ સે ઉત્પન્ન હોનેવાલે જીવકે સંબંધ મેં કહી ગઈ હૈ ઊસી પ્રકાર કી વક્તવ્યતા પર્યાપ્ત તેજસ્કાયિક રૂપ સે ઉત્પન્ન હોને વાલે જીવ ક્કે વિષય મેં ઓ કહ લેની ચાહિયે । ‘વાઝ્ઝકાઈણ્ણ વણસ્સઙ્કાઈણ્ણ ય જહા પુઢ્ઢવીકાઈણ્ણ ઉવવાઈઓ તહેવ ચઝઙ્કણં મેદેણં

સમુદ્ધાત કીને ત્યાં જ અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકપણુથી એક સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી, અથવા બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમય-વાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘અઢો જહેવ રચણપ્પમાણ તહેવ સત્ત સેઢીઓ’ હે ગૌતમ ! રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પ્રકરણમાં જે રીતનુ આ સંબંધમાં મેં કથન કર્યું છે કે—સાત શ્રેણી હોય છે, વિગેરે પ્રતિપાદન રૂપ કારણ બતાવ્યું છે, તેજ કારણ અહિયાં પણ સમજ લેવું જોઈએ.

‘એવં પઞ્ચત્તવાયરતેઝ્ઝકાઈયત્તાણ વિ’ જે પ્રમાણેનું કથન અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકપણુથી ઉત્પન્ન થનારા જીવના સંબંધમાં કહ્યું છે, એજ પ્રમાણેનું કથન પર્યાપ્ત તેજસ્કાયિકપણુથી ઉત્પન્ન થવાવાળા જીવના સંબંધમાં પણ સમજવું. ‘વાઝ્ઝકાઈણ્ણ વણસ્સઙ્કાઈણ્ણ ય જહા પુઢ્ઢવીકાઈણ્ણ ઉવવાઈઓ તહેવ ચઝઙ્કણં મેદેણં ઉવવાણ્ણવ્વો’ જે પ્રમાણે ચાર પ્રકારના પૃથ્વીકાયિક જીવોમાં

પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વાદર ભેદેનોપપાતયિતવ્યઃ । ચતુષ્પ્રકારકેષુ વાયુકાયિકેષુ તથા-
ચતુષ્પ્રકારકેષુ વનસ્પતિકાયિકેષ્વપિ અપર્યાપ્ત વાદરતેજસ્કાયિકસ્યોપપાતો
વર્ણનીય इति । ‘एवं पञ्जत्त वायरतेउकाइओ वि एएसु चेव ठाणेसु उववाएयव्वो’
एवम् अपर्याप्त वादरतेजस्कायिकस्य वायुवनस्पतिकायिकेषु उपपातो दर्शित
स्तेनैव रूपेण पर्याप्त वादरतेजस्कायिकस्यापि प्रत्येकं चतुर्विधेषु पृथिव्यप्रतेजो-
वायुवनस्पतिकायिकेषूपपातो वर्णनीय इति । ‘वाउकाइय-वणस्सइकाइयाणं जहेव
पुढवीकायत्ते उववाओ तहेव भाणियव्वो’ वायुकायिक वनस्पतिकायिकानां चतु-
र्विधानाम् यथैव पृथिवीकायिकतया-पृथिवीकायिकरूपेणोपपातः कथित स्तथै-
वैषाम् अत्रापि उपपातो भणितव्यः, आलापप्रकारश्च स्वयमेशोदनीयः । पूर्वमधो-

‘उववाएयव्वો’ ‘जिस प्रकारसे चतुर्विध पृथिवीकायिकों में अपर्याप्त
वादरतेजस्कायिक का उपपात दिखाया गया है । उसी प्रकार से चतु-
र्विध वायुकायिकों में और चतुर्विध वनस्पतिकायिकों में भी उसका-
अपर्याप्त वादरतेजस्कायिकका-उपपात कह लेना चाहिये ।

‘एवं पञ्जत्त वायरतेउकाइओ वि एएसु चेव ठाणेसु उववाएयव्वो’
इसी रीति के अनुसार पर्याप्त वादरतेजस्कायिक का भी चतुर्विध
पृथिवीकायिकोंमें, चतुर्विध अप્कायिकोंमें, चतुर्विध तेजस्कायिकोंमें,
चतुर्विध वायुकायिकों में और चतुर्विध वनस्पतिकायिकों में उपपात
कह लेना चाहिये । ‘वाउकाइयवणस्सइकाइयाणं जहेव पुढवीकाइयत्ते
उववाओ तहेव भाणियव्वो’ चतुर्विधवायुकायिकों का और चतुर्विध
वनस्पतिकायिकों का जैसा पृथिवीकायिकों में उपपात कहा गया है
उसी प्रकार से इनका यहां पर भी उपपात कह लेना चाहिये । इस

અપર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિકનો ઉપપાત કહ્યો છે એજ પ્રમાણે ચાર પ્રકારના
વાયુકાયિકોમાં અને ચાર પ્રકારના વનસ્પતિકાયિકોમાં પણ તેનો અપર્યાપ્ત
વાદર તેજસ્કાયિકનો ઉપપાત કહેવો જોઈએ

‘एवं पञ्जत्तवायरतेउक्काइयो वि एसु चेव ठाणेसु उववाएयव्वो’ આજ
પ્રમાણે પર્યાપ્ત વાદર તેજસ્કાયિકોનો પણ ચાર પ્રકારના પૃથ્વીકાયિકોમાં
ચાર પ્રકારના અપ્કાયિકોમાં ચાર પ્રકારના તેજસ્કાયિકોમાં ચાર પ્રકાર વાયુ
કાયિકોમાં અને ચાર પ્રકારના વનસ્પતિકાયિકોમાં ઉપપાત કહેવો જોઈએ
‘વાઉક્કાઇય વણસ્સइकाइयाणं जहेव पुढवीकाइयत्ते उववाओ तहेव भाणियव्वो’
ચાર પ્રકારના વાયુકાયિકોનો અને ચાર વનસ્પતિકાયિકોનો ઉપપાત પૃથ્વી-

લોકક્ષેત્રનાડી વાહ્યક્ષેત્રે સમુદ્ધતાનામૂર્ધ્વલોકક્ષેત્રનાડી વાહ્યક્ષેત્રે સમુપ્તિસૂનાં પૃથિવ્યાદીનામુપપાતો વર્ણિતઃ, સામ્પત્ત્યમૂર્ધ્વલોકક્ષેત્રનાડી વાહ્યક્ષેત્રે સમુપ્તિસૂનાં પૃથિવ્યાદીના મુપપાતઃ પૂર્વવદેવ મવતીતિ પ્રદર્શયતે—‘અપજ્જત’ इत्यादि। ‘अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइएणं भंते !’ अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! ‘उड्डलोय-खेत्तनालीए बाहिरिल्लेखेत्ते समोहर’ ऊर्ध्वलोकक्षेत्रनाडया बाह्ये क्षेत्रे समवहतो-मारणान्तिकसमुद्धात कृतवान्. ‘समोहणित्ता जे भविए अहेलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए’ सम्प्रवहत्य-मार-

સમ્બન્ધ મેં આલાપ પ્રકાર સ્થયં ઉદ્ભાવિત કર લેનાં ચાહિયે । જિસ પ્રકાર સે અધોલોક ક્ષેત્રસ્થિત ત્રસનાડી કે બાહિરી ક્ષેત્રમેં સમવહત હુએ પૃથિવ્યાદિ જીવોં કા જો કિ ઉર્ધ્વલોક સ્થિત ત્રસનાડી કે બાહ્ય પ્રદેશ મેં ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હૈં । ઉત્પાદ કહા ગયા હૈં उसी પ્રકાર સે ઉર્ધ્વલોક સ્થિત ત્રસનાડી કે વાહ્ય ક્ષેત્ર મેં સમવહત હુએ જીવોં કા જો કિ અધોલોક સ્થિત ત્રસનાડી કે બાહિરી પ્રદેશ મેં ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હૈં ઉત્પાદ હૈં यह प्रकट किया जाता है—

‘અપજ્જત સુહુમપુઢવીકાઈણં મંતે ! ઉડ્ડલોય ચેત્તનાલીએ વાહિરિલ્લે ચેત્તે સમોહર’ હે મદન્ત ! કોઈ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવ ઉર્ધ્વલોકસ્થિત ત્રસનાડી કે વાહિરી પ્રદેશ મેં મારણાન્તિક સમુદ્ધાત કરકે મરા ઔર મરકર ‘જે મવિએ અહેલોય ચેત્તનાલીએ વાહિરિલ્લે ચેત્તે અપજ્જત સુહુમપુઢવીકાઈયત્તાએ ઉવવજ્જિત્તએ’ વહ

કાયિકોમા જે પ્રમાણે કહેલ છે, એજ રીતથી તેઓના ઉપપાત અહિયાં પણ કહી દેવો. આ વિષયમાં આલાપકોનો પ્રકાર સ્થયં સમજી લેવો.

જે પ્રમાણે અધોલોક ક્ષેત્રમાં રહેલ ત્રસનાડીના બહારના ક્ષેત્રમાં સમુદ્ધાત કરેલ પૃથ્વીકાયિક વિગેરે જીવોના કે જે ઉર્ધ્વલોકમાં રહેલ ત્રસનાડીના બાહ્ય પ્રદેશમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય છે, તેઓના સંબંધમાં ઉત્પાદ કહેલ છે, એજ પ્રમાણે ઉર્ધ્વલોકમાં રહેલ ત્રસનાડીના બહારના ક્ષેત્રમાં સમુદ્ધાત કરેલ કે જે નીચેના લોકમાં રહેલ ત્રસનાડીના બહારના પ્રદેશમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય છે, તેઓના ઉત્પાત થાય છે. તેમ કહેવામાં આવેલ છે. ‘અપજ્જતસુહુમપુઢવીકાઈણ મંતે ! ઉડ્ડલોયચેત્તનાલીએ વાહિરિલ્લે ચેત્તે સમોહર’ હે ભગવન કોઈ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ ઉર્ધ્વલોકમાં રહેલ ત્રસનાડીના બહારના પ્રદેશમાં મારણાન્તિક સમુદ્ધાત કરીને મરણ પામે, અને મરણ પામીને ‘જે મવિએ અહોલોયચેત્તનાલીએ વાહિરિલ્લે ચેત્તે અપજ્જતસુહુમપુઢવીકાઈયત્તાએ ઉવ-

ગાન્તિકસમુદ્ધાતં કૃત્વા યો અવ્યઃ યોગ્યઃ, અધોલોકક્ષેત્રનાડયા વાહ્યે ક્ષેત્રે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકતયા તાદૃશ પૃથિવીકાયિક સ્વરૂપેણોત્પત્તુમ્-સમુત્પત્તિમ્ આસાદયિતુમ્, 'સે ણં મંતે ! કહ્ સમહૃણં' સ ચલ્લ મદન્ત ! કતિ સામયિકેન વિગ્રહેણ સમુત્પચ્ચતેતિ પ્રશ્નઃ । અસ્યોત્તરમતિદેશેનાહ-'એવં' ઇતિ । એવં-યથા-અધોલોકક્ષેત્રનાડી વાહ્યક્ષેત્રે-સમવહતાના મૂર્ધ્વલોકક્ષેત્રનાડી વાહ્યક્ષેત્રે સમુત્પિત્સુનાં વિષયે ઉપપાતો વર્ણિત સ્તથૈવ-'ઊર્ધ્વલોચચેત્તનાલીએ વાહિરિલ્લે ચેત્તે સમોદયાણં' ઊર્ધ્વલોકક્ષેત્રનાડયા વાહ્યે ક્ષેત્રે સમવહતાનાં પૃથિવ્યાગ્રેકેન્દ્રિયાણામ્, 'અહેલોચ ચેત્તનાલીએ વાહિરિલ્લે ચેત્તે ઉચ્ચવજ્જમાણાણં' અધોલોકક્ષેત્રનાડયા વાહ્યે ક્ષેત્રે સમુત્પચ્ચમાનાનામપિ 'સો ચેવ ગમઓ નિરવસેસો માણિયવ્વો' સ એવ-પૂર્વોક્ત એવ અધોલોકક્ષેત્રનાડયાઃ વહિઃ ક્ષેત્રાદ્ ઊર્ધ્વલોક ક્ષેત્રનાડી વહિઃ ક્ષેત્રસમુત્પિત્સુ સદૃશ એવ ગમકો નિરવશેષઃ-સમગ્રો મણિતવ્યઃ । ક્રિયત્પર્યન્તં પૂર્વમકરણમિદ્ધ મણિતવ્યમ્, તત્રાહ 'જાવ' ઇત્યાદિ । 'જાવ વાયરવણસ્સિકાઈયાઓ પવ્વજત્તઓ વાયર-

અધોલોકસ્થિત ત્રસનાડી કે વાહિરી પ્રદેશ મેં ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હુઆ-તો 'સે ણં મંતે ! કહ્ સમહૃણં' હે મદન્ત ! એસા વહ જીવે વહાં કિતને સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ? અતિદેશ સે ઉત્તર દેતે હુએ પ્રભુશ્રી ગૌતમ સે કહતે હૈં 'એવં' 'હે ગૌતમ ! જિસ રીતિ સે અધોલોકસ્થિત ત્રસનાડી કે વાહ્ય પ્રદેશમેં સમવહત હુએ પૃથિવ્યાદિ એકેન્દ્રિય જીવોંકે ઊર્ધ્વલોકસ્થિત ત્રસનાડી કે વાહ્યપ્રદેશ કે વિષય મેં ઉપપાતકા-ઉત્પાદકા કથન કિયા ગયા હૈં ઉસી રીતિસે ઊર્ધ્વલોકસ્થિત ત્રસનાડી કે વાહ્યપ્રદેશ મેં સમવહત હુએ પૃથિવ્યાદિ એકેન્દ્રિય જીવોં કે અધોલોકસ્થિત ત્રસનાડી કે વાહ્યપ્રદેશ મેં ઉત્પાદકા કથન હૈં એસા જાનના ચાહિયે । યહી વાત 'સો ચેવ ગમઓ નિરવસેસો માણિયવ્વો' હસ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રદર્શિત કી ગઈ હૈં । ઓર યહ સઘ પૂર્વ

વજ્જિત્તણ' તે અધોલોકમાં રહેલ ત્રસનાડીના બહારના પ્રદેશમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયો હોય તો 'સે ણં મંતે ! કહ્ સમહૃણં' હે ભગવન્ એવો તે જીવ કેટલા સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર અતિદેશ (ભલામણ)થી આપતાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'એવં' હે ગૌતમ ! જે રીતે અધોલોકમાં રહેલ ત્રસનાડીના બહારના પ્રદેશમાં સમુદ્ધાત કરેલ પૃથ્વીકાયિક વિગ્રહે એકેન્દ્રિય જીવોને ઊર્ધ્વલોકમાં રહેલ ત્રસનાડીના બહારના પ્રદેશના વિષયમાં ઉપપાતનું કથન કહેલ છે. તેજ પ્રમાણે આમના ઉત્પાદનું કથન પણ છે. તેમ સમજવું આજ વાત 'સો ચેવ ગમઓ નિરવસેસો માણિયવ્વો' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા બતાવવામાં આવેલ છે અને આ સઘનું પહેલાનું

વળસ્સહકાદૈસુ પજ્જત્તેસુ ઉવવાહો' યાવદ્ વાદરવનસ્પતિકાચિકઃ પર્યાપ્તકો
વાદર વનસ્પતિકાચિકેષુ પર્યાપ્તકેષૂપપાતિતઃ । અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાચિ-
ક્ત આરભ્ય પર્યાપ્ત વાદરવનસ્પતિક એકેન્દ્રિયજીવાઃ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવી
કાચિકતઃ આરભ્ય પર્યાપ્ત વાદરવનસ્પતિકાચિકાન્તેષુ એકેન્દ્રિયેષુ ઉપપાતિત
સ્તથૈવ વિજ્ઞેયઃ । સર્વત્રાલાપપ્રકારઃ સ્વયમેવોદ્ધનીયઃ ॥સૂ૦ ૫॥

અથ—લોકસ્ય પૌરસ્ત્યાદિ ચરમાન્ત વિષયઃ સમુદ્ઘાતોપપાતઃ પ્રદર્શ્યતે—
'અપજ્જત્ત' इत्यादि ।

મૂલમ્—અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાદૈણં મંતે ! લોગસ્સ પુર-
ત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહણ, સમોહણિત્તા જે મવિણ લોગસ્સ
પુરત્થિમિલ્લે ચેવ ચરિમંતે, અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાદૈયત્તાણ
ઉવવજ્જિત્તણ, સે ણં મંતે ! કહ્ સમદૈણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જે-
જ્જા ? ગોયમા ! ઇગસમદૈણ વા, દુસમદૈણ વા, તિસમદૈણ
વા, ચત્તસમદૈણ વા વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા । સે કેણદ્દેણં મંતે !
एवं बुच्चइ एगसमदइण व जाव उववज्जेज्जा ?, एवं खलु

પ્રકરણ યહાં પર 'જાવ' બાયરવળસ્સહકાદૈઓ પજ્જત્તઓ બાયરવળસ્સહ-
કાદૈસુ પજ્જત્તેસુ ઉવવાહો' ઇસ સૂત્રપાઠ તક ડ્યોંકા ટ્યોં કહના
ચાહિયે । તાત્પર્ય કહને કા યહ હૈ કિ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાચિક જીવ
જૈસે પહિલે પર્યાપ્ત વાદરવનસ્પતિકાચિક તક કે એકેન્દ્રિય જીવોંમે
ઉત્પાદિત બતલાયે ગયે હૈં વૈસે હી યહાં પર ઇન્હેં ઉત્પાદિત બતલના
ચાહિયે । ઇસ સમ્બન્ધ મેં સર્વત્ર આલાપ પ્રકાર સ્વયં હી ઉદ્ભાવિત
કર લેના ચાહિયે ॥ ૫॥

પ્રકરણ અહિયાં 'જાવ બાયરવળસ્સહકાદૈઓ પજ્જત્તઓ બાયરવળસ્સહકાદૈસુ પજ્જ-
તેસુ ઉવવાહો' આ સૂત્રપાઠના કથન સુધી જેમનું તેમ કહી લેવું જોઈએ.

કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે—અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાચિક જીવ જે
દીતે પહેલાં પર્યાપ્ત વાદર વનસ્પતિકાચિક સુધીના એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોમાં
ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં કથન કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં
પણ તેઓના ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં કથન કરવું જોઈએ. આ વિષયમાં
આકાષકોનો પ્રકાર સ્વયં બતાવીને સમજાવેલો છે. ॥સૂ૦ ૫॥

गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पन्नत्ताओ तं जहा-उज्जुआययां
जाव अद्धचक्कवाला । उज्जुआययाए सेढीए उववज्जमाणे
एगसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा । एगओ वंकाए सेढीए
उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा । दुहओ
वंकाए सेढीए उववज्जमाणे जे भविए एगपयरंमि अणुसेढीए
उववज्जित्तए से णं तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा, जे
भविए विसेढीए उववज्जित्तए, से णं चउसमइएणं विग्गहेणं
उववज्जेज्जा, से तेणट्टेणं जाव उववज्जेज्जा । एवं अपज्जत्त
सुहुमपुढवीकाइओ लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते ! समोहए,
समोहणित्ता लोगस्स पुरत्थिमिल्ले च्वेव चरिमंते अपज्जत्तएसु
पज्जत्तएसु य सुहुमपुढवीकाइएसु२, सुहुमआउकाइएसु अप-
ज्जत्तएसु पज्जत्तएसु४, सुहुमतेउकाइएसु अपज्जत्तएसु पज्ज-
त्तएसु य ६, सुहुमवाउकाइएसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु ८,
बायरवाउकाइएसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु१०, सुहुमवणस्सइकाइ-
एसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य ११, बारससु वि ठाणैसु एएणं
च्वेव कमेणं भाणियव्वो । १२। सुहुमपुढवीकाइओ पज्जत्तओ एवं
च्वेव निरवसेसो बारससु वि ठाणैसु उववाएयव्वो १४। एवं एएणं
गमएणं जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइ-
एसु पज्जत्तएसु च्वेव भाणियव्वो । अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइएणं
भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे
भविए लोगस्स दाहिणिल्ले चरिमंते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइय-
त्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइ समइएणं विग्गहेणं उव-
वज्जेज्जा ? गोयमा ! दुसमइएणं वा तिसमइएणं वा चउसमइ-
एणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा । से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ १।

एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पन्नत्ताओ तं जहा-
उज्जुआयया जाव अद्धचक्कवाला । एगओ वंकाए सेढीए उव-
वज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा । दुहओ वंकाए
सेढीए उववज्जमाणे जे भविए एगपयरंमि अणुसेढीए उवव-
ज्जित्तए, से णं तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा । जे भविए
विसेढीए उववज्जित्तए से णं चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जे-
ज्जा । से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं एएणं गमएणं पुरत्थिमिल्ले
चरिमंते समोहए दाहिणिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो जाव
सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्ताओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्त-
एसु चेव । सव्वेसिं दुसमइओ, तिसमइओ, चउसमइओ विग्गहो
भाणियव्वो । अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते ! लोगस्स
पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स
पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइयत्ताए उवव-
ज्जित्तए, से णं भंते ! कइ ससमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! एग ससमइएण वा, दुससमइएण वा, तिससमइएण वा,
चउससमइएण वा, विग्गहेणं उववज्जेज्जा । से केणट्टेणं० । एवं
जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहया पुरत्थिमिल्ले चेव चरि-
मंते उववाइया, तहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहया पच्च-
त्थिमिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो सव्वे । अपज्जत्त सुहुमपुढवी-
काइएणं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए समो-
हणित्ता जे भविए लोगस्स उत्तरिल्ले चरिमंते अपज्जत्तसुहुम-
पुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए । से णं भंते ! एवं जहा पुरत्थि-
मिल्ले चरिमंते समोहओ दाहिणिल्ले चरिमंते उववाइओ तथा
पुरत्थिमिल्ले समोहओ उत्तरिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो ॥सू०६॥

छाया—अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! लोकस्य पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः समवहत्य यो भव्यो लोकस्य पौरस्त्ये एव चरमान्ते अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया उत्पत्तुम्, स खलु भदन्त ! कतिसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्यते ? गौतम ! एकसामयिकेन वा, द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, चतुःसामयिकेन वा, विग्रहेणोत्पद्यते, तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते, एकसामयिकेन वा यावत् उत्पद्येत । एवं खलु गौतम ! मया सप्तश्रेणयः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—ऋज्वायता यावदूर्ध्वचक्रवाला । ७। ऋज्वायतया श्रेण्या उत्पद्यमान एक-सामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत । एकतो वक्रया श्रेण्या उत्पद्यमानो द्विसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत, द्विधातो वक्रया श्रेण्या उत्पद्यमानो यो भव्य एकप्रतरे अनुश्रेण्याम् उत्पत्तुम्, स खलु त्रिसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत । यो भव्यो विश्रेण्यामुत्पत्तुं स खलु चतुःसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत, तत्केनार्थेन यावदुत्पद्येत । एवमपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिको लोकस्य पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः समवहत्य लोकस्य पौरस्त्ये एव चरमान्ते अपर्याप्तकेषु पर्याप्तकेषु च सूक्ष्म पृथिवीकायिकेषु, सूक्ष्माकायिकेषु अपर्याप्तकेषु पर्याप्तकेषु च, वादरवायुकायिकेषु अपर्याप्तकेषु पर्याप्तकेषु च सूक्ष्म वनस्पतिकायिकेषु अपर्याप्तकेषु पर्याप्तकेषु च, द्वादशस्वपि स्थानेषु एतेनैव क्रमेण भणितव्यः १२ । सूक्ष्म पृथिवीकायिकः पर्याप्तक एवमेव निरवशेषो द्वादशस्वपि स्थानेषु उपपातयितव्यः १४ । एवमेतेन गमकेन यावत् सूक्ष्मवनस्पति कायिकः पर्याप्तकः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकेषु पर्याप्तकेष्वेव भणितव्यः । अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! लोकस्य पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः समव-हत्य यो भव्यो लोकस्य दक्षिणात्ये चरमान्ते, अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकेषु उपपत्तुम्, स खलु भदन्त ! कतिसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत । गौतम ! द्वि साम-यिकेन त्रिसामयिकेन चतुःसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत । तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते, एवं खलु गौतम ! मया सप्तश्रेणयः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—ऋज्वायता यावत् अर्धचक्रवाला ७ । एकतो वक्रया श्रेण्या उत्पद्यमानो द्विसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत । द्विधातो वक्रया श्रेण्या उत्पद्यमानो यो भव्य एकप्रतरे अनुश्रेण्यां मुत्पत्तुम्, स खलु त्रिसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत, यो भव्यो विश्रेण्या मुत्पत्तुम्, स खलु चतुःसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत, तत्केनार्थेन गौतम ! एवमेतेन गमकेन पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः दक्षिणात्ये चरमान्ते उपपातयितव्यो यावत् सूक्ष्म वनस्पतिकायिकः पर्याप्तकः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकेषु पर्याप्तकेष्वेव । सर्वेषां द्विसा-मयिकः, त्रिसामयिकः, चतुःसामयिको विग्रहो भणितव्यः । अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! लोकस्य पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः समवहत्य यो भव्यो लोकस्य पाश्चात्ये चरमान्ते अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकतयोत्पत्तुं

સંઘ મદન્ત ! કતિસામયિકેન વિગ્રહેણોત્પદ્યેત । ગૌતમ ! એકસામયિકેન વા, દ્વિસામયિકેન વા, ત્રિસામયિકેન વા, ચતુઃસામયિકેન વા વિગ્રહેણોત્પદ્યેત । તત્કેનાર્થેન એવમ્ । યથૈવ પૌરસ્ત્યે એવ ચરમાન્તે સમવહતાઃ પૌરસ્ત્યે એવ ચરમાન્તે ઉપપાતિતા સ્તથૈવ પૌરસ્ત્યે ચરમાન્તે સમવહતાઃ પાશ્ચાત્યે ચરમાન્તે ઉપપાતયિતવ્યાઃ સર્વે । અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકઃ સંઘ મદન્ત ! લોકસ્ય પૌરસ્ત્યે ચરમાન્તે સમવહતઃ સમવવહત્ય યો મન્યો લોકસ્ય ઔત્તરે ચરમાન્તે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકતયોત્પત્તુમ્, સંઘ મદન્ત ! એવં યથા પૌરસ્ત્યે ચરમાન્તે સમવહતો દાક્ષિણાત્યે ચરમાન્તે ઉપપાતિતઃ તથા-પૌરસ્ત્યે ચરમાન્તે સમવહત ઔત્તરે ચરમાન્તે ઉપપાતયિતવ્યઃ ॥મૂ. ૬॥

‘ટીકા:—‘અપજ્જત્તસુહુમપુઢવીકાહણં મંતે !’ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકઃ સંઘ મદન્ત ! ‘લોગસ્સ પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહણં’ લોકસ્ય પૌરસ્ત્યે પૂર્વદિક્ સંબન્ધિનિ ચરમાન્તે સમવહતો-મારણાન્તિકસમુદ્ધાતં કૃત્વાન્, ‘સમોહણિત્તા જે મવિણ લોગસ્સ પુરત્થિમિલ્લે ચેવ ચરિમંતે’ સમવહત્ય-મારણાન્તિક સમુદ્ધાતં કૃત્વા યો મન્યો લોકસ્ય પૌરસ્ત્યે એવ ચરમાન્તે, ‘અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહયત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ’ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકતયા ઉત્પત્તુમ્ ‘સે ણં

અવ લોકકે પૂર્વાદિ ચરમ ભાગ વિશેષકા ઉપપાત દિશ્વલાયા જાયગા । ‘અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહણં મંતે !’ इत्यादि

ટીકાર્થ-‘અપજ્જત્તસુહુમપુઢવીકાહણં મંતે !’ જિસ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવને ‘લોગસ્સ પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહણં’ લોક કે પૂર્વદિક્ સંબંધિ ચરમાન્ત મેં મારણાન્તિક સમુદ્ધાત કિયા હૈ-‘સમોહણિત્તા જે મવિણ લોગસ્સ પુરત્થિમિલ્લે ચેવ ચરિમંતે અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહયત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ’ ઔર મરણ કરકે વહ લોક કે પૂર્વ દિશા કે હી અન્તિમ ભાગ મેં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક રૂપસે ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હુઆ હૈ ‘સે ણં

હવે લોકના પૂર્વ વિગેરે ચરમાન્ત ભાગ વિશેષને ઉપપાત બતાવવામાં આવે છે. ‘અપજ્જત્તસુહુમપુઢવીકાહણં મંતે !’ इत्यादि

ટીકાર્થ-‘અપજ્જત્તસુહુમપુઢવીકાહણં મંતે !’ જે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવ ‘લોગસ્સ પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહણં’ લોકના પૂર્વ દિશા સંબંધી ચરમાન્તમાં મારણાન્તિક સમુદ્ધાત મરીને મરેલ હોય ‘સમોહણિત્તા જે મવિણ લોગસ્સ પુરત્થિમિલ્લે ચેવ ચરિમંતે અપજ્જત્તસુહુમપુઢવીકાહયત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ’ અને મરણ પામીને તે લોકના પશ્ચિમના અન્તભાગમાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક પણ્થી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય હોય છે,

મંતે ! કહસમહણં વિગ્રહેણં ઉવવજ્જેજ્જા' સંવલ્લ મદન્ત ! કતિ સામયિકેન વિગ્રહેણ ગત્યા સમુત્પદ્યેતિતિ પ્રશ્નઃ । મગવાનાહ-‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ । ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘અગસમહણ વા, દુસમહણ વા, તિસમહણ વા, ચતુસમહણ વા, વિગ્રહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ એકસામયિકેન વા, દ્વિસામયિકેન વા, ત્રિસામયિકેન વા, ચતુઃસામયિકેનવા વિગ્રહેણ ગત્યા સમુત્પદ્યેતિતિત્યુત્તરમ્ । પુનઃ પ્રશ્નયન્નાહ-‘સે કેણદ્દેણં મંતે એવં વુચ્ચહિ અગસમહણ વા જાવ ઉવવજ્જેજ્જા’ તત્કેનાર્થેન મદન્ત ! એવમુચ્યતે એકસામયિકેન વા યાવત્ ઉત્પદ્યેતિતિ । અત્ર યાત્પદેન દ્વિસામયિકેન વા, ત્રિસામયિકેન વા, ચતુઃસામયિકેન વા, એતેષાં ગ્રહણં મત્તીતિ ?

મંતે ! કહસમહણં વિગ્રહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ ‘તો હે મદન્ત ! એસા વહ જીવ વહાં કિતને સમય વાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈ-‘ગોયમા ! અગસમહણ વા દુસમહણ વા તિસમહણ વા ચતુસમહણ વા વિગ્રહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ હે ગૌતમ ! વહ વહાં એકસમયવાલે વિગ્રહ સે મી ઉત્પન્ન હોતા હૈ, દો સમયવાલે વિગ્રહ સે મી ઉત્પન્ન હોતા હૈ, ત્રીસમયવાલે વિગ્રહ સે મી ઉત્પન્ન હોતા હૈ ઓર ચાર સમયવાલે વિગ્રહ સે મી ઉત્પન્ન હોતા હૈ । ‘સે કેણદ્દેણં મંતે ! એવં વુચ્ચહિ અગસમહણ વા જાવ ઉવવજ્જેજ્જા’ હે મદન્ત ! એસા આપ કિસ કારણ સે કહતે હૈ કિ વહ વહાં એકસમયવાલે વિગ્રહ સે મી ઉત્પન્ન હોતા હૈ યાવત્ ચાર સમયવાલે વિગ્રહ સે મી ઉત્પન્ન હોતા હૈ ? યહાં યાત્પદ સે ‘દ્વિસામયિકેન વા, ત્રિસામયિકેન વા ચતુઃસામયિકેન વા’ હસ પાઠકા ગ્રહણ

‘સે જ’ મતે ! કહસમહણ વિગ્રહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ તો હે ભગવન્ એવો તે જીવ કેટલા સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-‘ગોયમા ! અગસમહણ વા દુસમહણ વા તિસમહણ વા ચતુસમહણ વા વિગ્રહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ હે ગૌતમ ! ત્યાં તે એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે અને ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે ‘સે કેણદ્દેણં’ મતે ! એવ વુચ્ચહિ અગસમહણ વા જાવ ઉવવજ્જેજ્જા’ હે ભગવન્ આપ એવું શા કારણથી કહેા છો કે તે ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. યાવત્ ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે અહિયાં યાવત્ શબ્દથી ‘દ્વિસામયિકેન વા, ત્રિસામયિકેન વા, ચતુઃસામયિકેન વા’ આ પાઠ ગ્રહણ કરાયો છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી

મગવાનાહ-‘એવં’ इत्यादि । ‘एवं खलु हे गौतम ! ‘मए सत्तसेढीओ पन्नत्ताओ’ मया सप्त श्रेणयः प्रज्ञप्ताः, तं जहा’ तद्यथा-‘उज्जुभायया जाव अद्धचक्कवाला’ ऋज्वायता यावदद्धचक्रवाला, अत्र यावत्पदेन-एकतो वक्रा, द्विधातो वक्रा, एकतः खा, द्विधातः खा चक्रवालानां श्रेणीनां संग्रहो भवति । तत्र-‘उज्जुभाययाए सेढीए उववज्जमाणे एगसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा’ ऋज्वायतया सरलया लम्बायमानया च श्रेण्या समुत्पद्यमानो जीव एकसामयिकेन विग्रहेण समुत्पद्येत, तथा-‘एगओ वंकाए सेढीए दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा’ एकतो वक्रया कुटिलया श्रेण्या समुत्पद्यमानो जीवो द्विसामयिकेन विग्रहेण गत्या समुत्पद्येत । तथा-‘दुहओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे’ द्विधातो वक्रया श्रेण्या समुत्पद्यमानो जीवः

हुआ है । उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-‘एवं खलु गोयमा ! मए सत्त-सेढीओ पन्नत्ताओ’ ‘हे गौतम ! मैंने सात श्रेणियां कही हैं-‘तं जहा’ जो इस प्रकार से हैं-‘उज्जुभायया जाव अद्धचक्कवाला’ ‘ऋज्वायता यावत् अद्धचक्रवाला यहां यावत्पद से ‘एकतो वक्रा द्विधातो वक्रा, एकतः खा द्विधातःखा और चक्रवाला’ ‘इन अवशिष्ट श्रेणियों का ग्रहण हुआ है । इनमें जो ‘उज्जुभाययाए सेढीए उववज्जमाणे एग-समइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा’ ‘जो जीव अपने उत्पत्तिस्थान में ऋज्वायता श्रेणी से गमन करता हुआ उत्पन्न होता है वह वहाँ एक समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है ‘एगओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा’ तथा जो जीव एकतो वक्रा श्रेणि से गमन करता हुआ अपने उत्पत्ति स्थान में उत्पन्न होता है वह वहाँ दो समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है । तथा-‘दुहओ वंकाए

गौतमस्वाभीने કહે છે કે-‘એવં’ खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पणत्ताओ’ કે ગૌતમ ! મેં સાત શ્રેણીઓ કહેલ છે. ‘તં જહા’ તે આ પ્રમાણે છે. ‘उज्जु भायया जाव अद्ध चक्कवाला’ ऋज्वायत यावत् अर्द्धचक्रवाला अर्द्धियां यावत्पदથી એકતો વક્રા, દ્વિધાતો વક્રા, એકતઃ ખા, દ્વિધાતો ખા, અને ચક્રવાલા આ બાકીની શ્રેણીયો ગ્રહણ કરવામાં આવી છે. આ શ્રેણીયોમાં જે ‘उज्जु-भाययाए सेढीए उववज्जमाणे एगसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा’ જે એવ પોતાની ઉત્પત્તિ સ્થાનમાં ઋજ્વાયતા શ્રેણીથી ગમન કરીને ઉત્પન્ન થાય છે, તે ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. ‘एगओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा’ तथा જે એવ એકતો વક્રા શ્રેણીથી ગમન કરીને પોતાના ઉત્પત્તિ સ્થાનમાં ઉત્પન્ન થાય છે, તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પત્તિ સ્થાનમાં ઉત્પન્ન થાય છે. तथा ‘दुहओ वंकाए

‘જે ભવિષ્ય એગપયરંભિ અણુસેદીં ઉવવજ્જિત્તણ્ણ’ યો ભવ્ય એકમતરે અણુશ્રેણિમાશ્રિત્ય સમુત્પત્તુમ્, ‘સે ણં તિસમહણ્ણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ સ ચત્તુર્થ જીવ ત્રિસામયિકેન વિગ્રહેણ સમુત્પદ્યેત, ‘જે ભવિષ્ય વિસેદીં ઉવવજ્જિત્તણ્ણ સે ણં ચત્તસમહણ્ણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ યો ભવ્યો વિશ્રેણિ-વિશ્રેણિમાશ્રિત્ય વિશ્રેણ્યામિત્યર્થઃ, ઉત્પત્તુમ્, સ ચત્તુર્થ સામયિકેન વિગ્રહેણ મત્યા સમુત્પદ્યેત્ત ઇતિ । ‘સે તેણદ્દેણં જાવ ઉવવજ્જેજ્જા’ તત્તેનાર્થેન ગૌતમ ! એવ મુચ્યતે એકસામયિકેન વા, દ્વિસામયિકેન વા, ત્રિસામયિકેન વા, ચત્તુર્થ સામયિકેન વિગ્રહેણોત્પદ્યેત્ત ઇતિ । ‘એવં અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાઈઓ લોગસસ પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહણ્ણ’ એવં પૂર્વોક્ત

સેદીં ઉવવજ્જમાણે જે ભવિષ્ય એગપયરંભિ અણુસેદિં ઉવવજ્જિત્તણ્ણ સે ણં તિસમહણ્ણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ જો જીવ દ્વિધાતો વક્કા શ્રેણિ સે ગમન કરતા હુઆ એક પ્રતર મેં સમશ્રેણિ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ તો વહ ત્રીન સમયવાલે વિગ્રહ સે વહાં ઉત્પન્ન હોતા હૈ । ઓર ‘જે ભવિષ્ય વિસેદીં ઉવવજ્જિત્તણ્ણ સે ણં ચત્તસમહણ્ણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ જો વિશ્રેણિ મેં ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હૈ વહ વહાં ચાર સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ । ‘સે તેણદ્દેણં જાવ ઉવવજ્જેજ્જા’ હસ કારણ હે ગૌતમ ! મેંને એસા કહા હૈ કિ વહ વહાં એકસમયવાલે વિગ્રહ સે બી ઉત્પન્ન હોતા હૈ દો સમયવાલે વિગ્રહ સે બી ઉત્પન્ન હોતા હૈ, ત્રીન સમયવાલે વિગ્રહ સે બી ઉત્પન્ન હોતા હૈ ઓર ચાર સમયવાલે વિગ્રહ સે બી ઉત્પન્ન હોતા હૈ । ‘એવં અપજ્જત્ત સુહુમ પુઢવીકાઈઓ લોગસસ પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહણ્ણ’ હસી પૂર્વોક્ત ક્રમ કે અનુસાર કોઈ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ લોક કે પૂર્વ ચરમાન્ત મેં

વંકાણ સેદીં ઉવવજ્જમાણે જે ભવિષ્ય એગપયરંભિ અણુસેદિં ઉવવજ્જિત્તણ્ણ સે ણં તિસમહણ્ણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ જે એવ દ્વિધાતો વક્કા શ્રેણીથી ગમન કરતો થકો એક સમયમાં સમ શ્રેણીથી ઉત્પન્ન થાય છે. તો તે ત્રણ સમય વાળી વિગ્રહગતિથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે અને ‘જે ભવિષ્ય વિસેદિં ઉવવજ્જિત્તણ્ણ સે ણં ચત્તસમહણ્ણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ જે વિશ્રેણીમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય છે, તે ત્યાં ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. ‘સે તેણદ્દેણં જાવ ઉવવજ્જેજ્જા’ આ કારણથી હે ગૌતમ ! મેં એવું કહેલ છે કે-તે ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે. ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે અને ચાર સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે. ‘એવં અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાઈઓ લોગસસ પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહણ્ણ’

ક્રમેણૈવાપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકઃ લોકસ્ય પૌરસ્ત્યે ચરમાન્તે સમવહતો મારણા-
ન્તિકસમુદ્ઘાતં કૃતવાન્ । ‘સમોદ્દગિત્તા લોગસ્સ પુરત્થિમિલ્લે ચેવ ચરિમંતે’
સમવહત્ય-મારણન્તિકસમુદ્ઘાતં કૃત્વા લોકસ્ય પૌરસ્ત્યે એવ ચરમાન્તે । ‘અપજ્જત્ત-
ણ્ણુ પજ્જત્તણ્ણુ ય સુહુમપુઢવીકાહણ્ણુ’ અપર્યાપ્તકેષુ પર્યાપ્તકેષુ ચ સૂક્ષ્મપૃથિવી-
કાયિકેષુ અપર્યાપ્ત પર્યાપ્ત મેદદ્વયમિન્નેપુ પૃથિવીકાયિકેષુ इत्यर्थः तथा-‘સુહુમ-
આઝકાહણ્ણુ અપજ્જત્તણ્ણુ પજ્જત્તણ્ણુ’ સૂક્ષ્માઽપ્કાયિકેષુ અપર્યાપ્તપર્યાપ્તમેદત્યુ-
ક્તેષુ તથા-‘સુહુમતેઝકાહણ્ણુ અપજ્જત્તણ્ણુ પજ્જત્તણ્ણુ ય’ અપર્યાપ્તકેષુ પર્યાપ્તકેષુ
ચ સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિકેષુ, તથા-‘સુહુમવાઝકાહણ્ણુ અપજ્જત્તણ્ણુ પજ્જત્તણ્ણુ ય’
અપર્યાપ્તકેષુ પર્યાપ્તકેષુ ચ સૂક્ષ્મવાયુકાયિકેષુ, તથા-‘વાયરવાઝકાહણ્ણુ અપજ્જત્ત-
ણ્ણુ પજ્જત્તણ્ણુ ય’ અપર્યાપ્તકેષુ પર્યાપ્તકેષુ ચ વાદરવાયુકાયિકેષુ, તથા-‘સુહુમ-
વણસ્સહકાહણ્ણુ અપજ્જત્તણ્ણુ પજ્જત્તણ્ણુ ય’ અપર્યાપ્તકેષુ પર્યાપ્તકેષુ ચ સૂક્ષ્મવન-

સમવહત હુઆ ઓર ‘સમોદ્દગિત્તા લોગસ્સ પુરત્થિમિલ્લે ચેવ
ચરિમંતે’ સમવહત હોકર લોક કે પૂર્વ હી ચરમાન્ત મેં ‘અપજ્જત્તણ્ણુ
પજ્જત્તણ્ણુ સુહુમપુઢવીકાહણ્ણુ’ અપર્યાપ્ત એવં પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવી
કાયિકોં મેં તથા ‘સુહુમ આઝકાહણ્ણુ અપજ્જત્તણ્ણુ પજ્જત્તણ્ણુ’
અપર્યાપ્ત એવં પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ અપ્કાયિકોં મેં તથા ‘સુહુમ તેઝકાહણ્ણુ
અપજ્જત્તણ્ણુ પજ્જત્તણ્ણુ ય’ અપર્યાપ્ત એવં પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મતેજસ્કા-
યિકોં મેં, તથા-‘સુહુમ વાઝકાહણ્ણુ અપજ્જત્તણ્ણુ પજ્જત્તણ્ણુ ય’
અપર્યાપ્ત એવં પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવાયુકાયિકોં મેં તથા-‘વાયરવાઝકાહણ્ણુ
અપજ્જત્તણ્ણુ પજ્જત્તણ્ણુ ય’ અપર્યાપ્ત એવં પર્યાપ્ત વાદરવાયુકાયિકોં
મેં તથા-‘સુહુમવણસ્સહકાહણ્ણુ અપજ્જત્તણ્ણુ પજ્જણ્ણુ ય’ અપર્યા-

આ પહેલાં કહેલ ક્રમથી કોઈ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક એવ લોકના
પૂર્વ ચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત કરીને અને ‘સમોદ્દગિત્તા લોગસ્સ પુરત્થિમિલ્લે
ચેવ ચરિમંતે !’ સમુદ્ઘાત કરીને લોકના પૂર્વ ચરમાન્તમાં જ ‘અપજ્જત્તણ્ણુ
પજ્જત્તણ્ણુ સુહુમપુઢવીકાહણ્ણુ’ અપર્યાપ્તક અને પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકોંમાં
તથા ‘સુહુમઆઝકાહણ્ણુ અપજ્જત્તણ્ણુ પજ્જત્તણ્ણુ’ અપર્યાપ્તક અને પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ
અપ્કાયિકોંમાં તથા ‘સુહુમ તેઝકાહણ્ણુ અપજ્જત્તણ્ણુ પજ્જત્તણ્ણુ ય’ અપર્યાપ્તક
અને પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિકોંમાં તથા-‘સુહુમ વાઝકાહણ્ણુ અપજ્જત્તણ્ણુ
પજ્જત્તણ્ણુ ય’ અપર્યાપ્તક અને પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ વાયુકાયિકોંમાં તથા ‘વાયર-
વાઝકાહણ્ણુ અપજ્જત્તણ્ણુ પજ્જત્તણ્ણુ’ અપર્યાપ્તક અને પર્યાપ્તક વાદર વાયુકાયિકોંમાં
તથા-‘સુહુમ વણસ્સહકાહણ્ણુ અપજ્જત્તણ્ણુ પજ્જત્તણ્ણુ’ અપર્યાપ્તક અને પર્યાપ્તક

स्पतिकायिकेषु, 'वारससु वि ठाणेसु एएणं चेव कमेणं भाणियव्वो' द्वादशस्वपि स्थानेषु अपर्याप्त पर्याप्त विशेषणविशिष्टेषु—सूक्ष्मपृथिवीकायिक २, सूक्ष्माष्कायिक ४, सूक्ष्मतेजस्कायिक ६, सूक्ष्मवायुकायिक ८, वादरवायुकायिक १० सूक्ष्म वनस्पतिकायिक १२ रूपेषु, एतेनैव क्रमेण अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकस्य उपपातो भणितव्यः । १२।

ननु लोकस्य चरमान्तीय जीवानामुपपातो द्वादशैव स्थानानि कथं कथितानि, इतः पूर्वसूत्रे विंशति स्थानेषु उपपातस्य वर्णनादिति चे दुच्यते—इहलोक चरमान्तभागे वादराः पृथिवीकायिकाष्कायिकतेजस्कायिकवनस्पतिकायिकाः न सन्ति, सूक्ष्मस्तु पञ्चावि जीवाः सन्ति, वादरवायुकायिकाश्च, तत्र सन्तीति

पुनरु एवं पर्याप्तक सूक्ष्मवनस्पतिकायिकों में 'वारससु वि ठाणेसु एएणं चेव कमेणं भाणियव्वो' इस क्रम से कथित इन १२ स्थानों में उत्पन्न होने के योग्य हुआ इस रूपसे इसका इन १२ स्थानों में उत्पाद कहना चाहिये और इसी क्रमसे 'सुहुमपुढवीकाइओ पज्जत्तओ एवं चेव' इसी प्रकार से पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकका भी इन १२ स्थानों में उत्पाद कहना चाहिये।

शंका—लोकके चरमान्तीय जीवों के उपपात में यहाँ १२ स्थान क्यों कहे हैं? क्योंकि इससे पहिले सूत्र में २० स्थानों में उपपात का वर्णन सूत्रकार ने किया है।

उत्तर—लोकके चरमान्त भाग में वादरपृथिवीकायिक, वादर अष्कायिक, वादरतेजस्कायिक और वादरवनस्पतिकायिक जीव नहीं हैं। सूक्ष्मपृथिवीकायिक सूक्ष्मअष्कायिक, सूक्ष्मतेजस्कायिक, सूक्ष्मवनस्पतिकायिक और सूक्ष्मवायुकायिक एवं वादरवायुकायिक

सूक्ष्म वनस्पति कायिकों में 'वारससु वि ठाणेसु एएणं चेव कमेणं भाणियव्वो' आ केम प्रमाणे कडेवाभां आवेता आ १२ आरे स्थानोभां उत्पन्नथवाने येअथ थयेत आ इपथी तेओतुं आ आरे स्थानोभां उत्पादतुं कथनं करवुं नेधओ. अने आओ केम प्रमाणे 'सुहुमपुढवीकाइओ पज्जत्तओ एवं चेव' पर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवीकायिकने उपपात पणु आ आर स्थानोभां कडेवे नेधओ.

शंका—दोऊना चरमान्तना ओवेना उपपातमां १२ आर स्थानो केम कथा छे? केम के—आनाथी पडेलांना सूत्रोमां तो २० वीस स्थानोमां उपपाततुं पणुन सूत्रकारे करेला छे.

उत्तर—दोऊना चरमान्त भागमां आदर पृथ्वीकायिक, आदर अष्कायिक, आदर तेजस्कायिक अने आदर वनस्पतिकायिक ओव होता नथी. सूक्ष्म पृथ्वीकायिक, सूक्ष्म अष्कायिक, सूक्ष्म तेजस्कायिक, सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अने

પર્યાપ્તાપર્યાપ્ત ભેદેન દ્વાદશ સ્થાનસ્યૈવ સૂત્રકૃતાઽનુસરણં કૃતમિતિ । इह च लोकस्य पूर्वचरमान्तात् पूर्वचरमान्ते समुत्थमानस्य एकसामयादिका चतुःसमयान्ता गतिः संभवति अनुश्रेणि विश्रेणी संभावात् । पुनः दक्षिण चरमान्ते पूर्वचरमान्तात् समुत्पद्यमानस्य तु द्वयादि चतुःसामयिक्येव गतिस्तत्रानुश्रेणोरभावात् । एवमन्यत्रापि विश्रेणी गमने द्वयादि चतुःसामयिक्येव गति भवतीति भावः ।

‘સુહુમપુઢવીકાઙ્ઠો પજ્જત્તઓ એવં ચેવ’ સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકઃ પર્યાપ્તકઃ એવમેવ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકવદેવ અયં પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકોઽપિ

યે હી જીવ વહાં હૈં । इसलिये सूत्रकार ने पर्याप्त और अपर्याप्त के भेद से इन १२ स्थानोंका ही यहां अनुसरण किया है । यहां लोकके पूर्वचरमान्त से पूर्वचरमान्त में उत्पन्न हुए जीवकी एक समयवाली और यावत् चारसमयवाली गति हो सकती है क्योंकि यहां अनुश्रेणि रूपसे जाकर भी उत्पन्न होता है और विश्रेणि में भी उत्पन्न होता है तथा दक्षिण चरमान्त में पूर्वचरमान्त से उत्पन्न होने वाले जीवकी गति दोसमय से लेकर चार समयतककी होती है । क्योंकि यहां उत्पत्ति स्थान सीधमें नहीं होने के कारण ऋज्वायता श्रेणि का अभाव है । इसलिये एकसमयवाली गति यहां नहीं कही है । इसी प्रकार से अन्यत्र भी विश्रेणि स्थित स्थान में उत्पन्न होने वाले के गमन में दोसमयवाली गतिसे लेकर चारसमयवाली ही गति होती है ऐसा जानना चाहिये ।

‘સુહુમપુઢવીકાઙ્ઠો પજ્જત્તઓ એવં ચેવ’ इत्यादि पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक भी इसी प्रकार से—अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकके जैसे

સૂક્ષ્મ વાયુકાયિક તથા બાહર વાયુકાયિક આટલા જ જીવો ત્યાં હોય છે. તેથી સૂત્રકારે પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્તના ભેદથી આ ૧૨ બાર સ્થાનોનું જ અહિયાં કથન કર્યું છે. અહિયાં લોકના પૂર્વચરમાન્તથી પૂર્વચરમાન્તમાં ઉત્પન્ન થનારા જીવની એક સમયવાળી અને યાવત્ ચાર સમયવાળી ગતિ પણ હોય છે કેમ કે અહિયાં અનુશ્રેણી ગતિ પણ હોય છે, અને વિશ્રેણી ગતિ પણ હોય છે. તથા દક્ષિણ ચરમાન્તમાં પૂર્વ ચરમાન્તથી ઉત્પન્ન થવાવાળા જીવની ગતિ બે સમયથી લઈને ચાર સમય સુધીની હોય છે. કેમ કે અહિયાં અનુશ્રેણી ગતિનો અભાવ કહેલ છે. તેથી એક સમયવાળી ગતિ અહિયાં કહી નથી. એજ પ્રમાણે બીજે પણ વિશ્રેણી ગમનમાં બે સમયવાળી ગતિથી લઈને ચાર સમયવાળી જ ગતિ હોય છે- તેમ સમજવું જોઈએ.

‘સુહુમપુઢવીકાઙ્ઠો પજ્જત્તઓ એવં ચેવ’ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક પણ આજ પ્રમાણે. એટલે કે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકની જેમજ બારે

‘निरवसेसो’ निरवशेषः—सम्पूर्णः ‘वारससु वि ठाणेसु’ द्वादशस्वपि स्थानेषु पूर्व प्रदर्शितेषु ‘उववप्यव्वो’ उपपातयितव्यः—उपपातः करणीयः, तथाहि—पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकेषु २, अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्माण्कायिकेषु ४, अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्मतेजस्कायिकेषु अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्मवायुकायिकेषु ८, अपर्याप्त पर्याप्त वादरवायुकायिकेषु १०, अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिकेषु १२ इत्येवं द्वादशस्वपि स्थानेषु उपपातयितव्यः पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकस्य एतेषु द्वादश स्थानेषु उपपातः कर्तव्य इति भावः (१२) २४ ।

एयं—पूर्वोक्तगमानुसारेण अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकवदेव अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्माण्कायिकस्य अपर्याप्त पर्याप्त विशेषण विशिष्टेषु सूक्ष्मपृथिवीकायिकाण्कायिक तेजस्कायिक सूक्ष्मवायुकायिक वादरवायुकायिक सूक्ष्मवनस्पतिकायिक रूपेषु द्वादशसु स्थानेषु उपपातः कथनीयः ३६ । एवं शेषतेज-

१२ स्थानों में—अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकों में २, अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्म अण्कायिकों में ४, अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्मतेजस्कायिकों में ६, अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्मवायुकायिकों में ८ अपर्याप्त पर्याप्त वादरवायुकायिकों में १० और अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिकों में १२—उत्पादित करा लेना चाहिये । अर्थात् इस प्रकार इन १२ स्थानों में पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकके उत्पादका कथन कर लेना चाहिये इसी प्रकार—पूर्वोक्तगमके अनुसार अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक के जैसा ही अपर्याप्त पर्याप्त अण्कायिकका भी अपर्याप्त पर्याप्त विशेषण वाले सूक्ष्मपृथिवीकायिक, अण्कायिक, तेजस्कायिक, सूक्ष्मवायुकायिक वादरवायुकायिक और सूक्ष्मवनस्पतिकायिक इन १२ स्थानों में उत्पाद

स्थानोभां—अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिकोभां २ अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्म अण्कायिकोभां ४ अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिकोभां ६ अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्म वायुकायिकोभां ८ अपर्याप्त पर्याप्त वादर वायुकायिकोभां १० अने अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोभां १२ उत्पन्न यवाना संबन्धमां कथन करी लेवुं. ओटले के गारे स्थानोभां उपर यताव्या प्रमाणे पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकना उत्पातनुं कथन करी लेवुं. कडेवानुं तात्पर्य ओ छे के—आ पडेलां कडेला गमके प्रमाणे अपर्याप्त, पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक कथन प्रमाणे ७ अपर्याप्त, पर्याप्त सूक्ष्म अण्कायिकोनु ४ अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिक ६ अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्म वायुकायिक ८, वायुकायिक १० अने सूक्ष्म वनस्पतिकायिक १२ आ गारे स्थानोभां ।

સ્કાયિક વાયુકાયિક વનસ્પતિકાયિક વિષયેડાં વિજ્ઞેયમ્ । તત્ર અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મા
પ્કાયિકસ્ય દ્વાદશસ્થાનવિશિષ્ટા દ્વાદશગમાઃ ૧૨, एवं पर्याप्त सूक्ष्माप्लाधिक-
स्यापि द्वादशगमा भवन्तीति अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्माप्लाधिकमधिकृत्य चतु-
र्विंशतिर्गमा वाच्या २४ एवमेव सूक्ष्मतेजस्कायिकस्य चतुर्विंशतिः २४ सूक्ष्म-
वायुकायिकस्य वादरवायुकायिकस्य २४, सूक्ष्मवनस्पतिकायिकस्य २४ प्रत्येकं च
चतुर्विंशतिगमभावेन सर्वे विंशत्यधिकशतसंख्यका गमा जायन्ते १२० ततः
सूक्ष्मपृथिवीकायिकस्य चतुर्विंशतिगमसम्मेलने चतुश्चत्वारिंशदधिकशतं (१४४)
पञ्चानां स्थावराणां गमा भवन्तीति उपपातप्रकारः स्वयमेव ऊहनीय इति ।

કરા લેના ચાહિયે ૩૬ હસી પ્રકાર સે શેષ તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક
ઔર वनस्पतिकायिक के विषय में भी जानना चाहिये । इस प्रकार
अपर्याप्त सूक्ष्म अप्लाधिक के द्वादश स्थान सम्बन्धी १२ गम होते
हैं । पर्याप्त सूक्ष्म अप्लाधिक के भी १२ स्थान सम्बन्धी १२ गम होते
हैं । दोनों प्रकारके अप्लाधिकों के इस रीति से २४ गम हो जाते
हैं । इसी रीति के अनुसार सूक्ष्मतेजस्कायिकके भी २४ गम होते
हैं । सूक्ष्मवायुकायिक के भी २४ गम होते हैं । वादरवायुकायिक के
भी २४ गम होते हैं । सूक्ष्मवनस्पतिकायिक के भी २४ गम होते हैं ।
कुल गम मिलकर १२० गम हो जाते हैं । सूक्ष्मपृथिवीकायिक के २४
गम इन में मिलाने से पांच स्थावरोके १४४ गम होते हैं । इनके
सम्बन्ध में उपपात प्रकार अपने आप उद्भावित कर लेना चाहिये ।

થવાના સંબંધમા કથન કરી લેવું ૩૬ આજ પ્રમાણે બાકીના તેજસ્કાયિક,
વાયુકાયિક અને વનસ્પતિકાયિકના સંબંધમાં પણ સમજી લેવું. આ રીતે
અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્લાયિકોના બાર ૧૨ સ્થાનો સંબંધી બાર ગમકો થાય છે.
પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્લાયિકના પણ ૧૨ બાર સ્થાન સંબંધી ૧૨ બાર ગમો
થાય છે. બંને પ્રકારના અપ્લાયિકોના આ રીતે પ્રમાણે ૨૪ ચોવીસ ગમકો
થઈ જાય છે. આજ રીતે પ્રમાણે સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિકના પણ ૨૪ ચોવીસ
ગમકો થઈ જાય છે. અને સૂક્ષ્મ વનસ્પતિ કાયિકના પણ ૨૪ ચોવીસ ગમકો
થાય છે આ બધા ગમો મળીને કુલ ૯૬ છન્નુ ગમકો થઈ જાય છે. સૂક્ષ્મ
પૃથ્વીકાયિકના ૨૪ ચોવીસ ગમો આમાં મેળવવાથી પાંચ સ્થાનોના ૧૨૦
એકસોવીસ ગમો થાય છે આમાં પૃથ્વીકાયિકના ૨૪ ચોવીસ ગમો મેળવવાથી
પાંચ સ્થાનકોના ૧૪૪ એકસો ચુંભાળીસ ગમો થઈ જાય છે. આમના
સંબંધમાં ઉપપાતનો પ્રકાર સ્વયં બનાવી લેવો.

‘અપજ્જત્તસુહુમપુઢવીકાઈણ ણં મંતે !’ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયાિકઃ સ્વલ્પ ભદન્ત ! ‘લોગસ્સ પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહણ’ લોકસ્ય પૌરસ્ત્યે ચરમાન્તે સમવહતઃ—મારણાન્તિકસમુદ્ધાતં કૃતવાન, ‘સમોહણિત્તા જે ભવિણ લોગસ્સ દાહિણિલ્લે ચરિમંતે’ સમવહત્ય—મારણાન્તિકસમુદ્ધાતં કૃત્વા યો ભવ્યો લોકસ્ય દાક્ષિણાત્યે—દક્ષિણે ચરમાન્તે ‘અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાઈણસુ ઉદવજ્જિત્તણ’ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયાિકેપૂ.પત્તુમ્, ‘સે ણં મંતે ! કહસમહણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ સ સ્વલ્પ ભદન્ત ! કિયસ્સામયિકેન વિગ્ગહેણોત્પચ્ચેત ? इति प्रश्नः । भगवानाह—‘गोयमा’ इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम ! दुसमहण वा, तिसमहण वा, चउसमहण वा, विगगहेणं उववज्जेज्जा’ द्विसामयिकेन विगगहेण वा, त्रिसामयिकेन वा, चतुः सामयिकेन वा, विगगहेण उत्पच्येतेत्युत्तरम् । पुनः प्रश्न-

‘અપજ્જત્તસુહુમપુઢવીકાઈણ ણં મંતે !’ હે ભદન્ત કોઈ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયાિક જીવ ‘લોગસ્સ પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહણ’ લોક કે પૂર્વ કે ચરમાન્ત મેં મરા ‘સમોહણિત્તા જે ભવિણ લોગસ્સ દાહિણિલ્લે ચરિમંતે અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાઈણત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ’ ઔર મરકર વહ લોકકે દક્ષિણ ચરમાન્ત મેં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વી કાયાિક રૂપસે ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હૈ તો ‘સે ણં મંતે ! કહસમહણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ હે ભદન્ત ! એસા વહ જીવ વહાં કિનને સમય વાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ? ઉત્તર મેં પ્રમુશ્રી કહતે હૈ—‘ગોયમા ! દુસમહણ વા તિસમહણ વા ચઉસમહણ વા વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ હે ગૌતમ ! વહ વહાં દો સમયવાલે વિગ્રહ સે ભી ઉત્પન્ન હોતા હૈ, ત્રીસમયવાલે વિગ્રહ સે ભી ઉત્પન્ન હોતા હૈ ઔર ચારસમયવાલે

‘અપજ્જત્તસુહુમપુઢવીકાઈણ મંતે !’ હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વી-કાયાિક શુબ ‘લોગસ્સ પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહણ’ લોકના પૂર્વના ચરમાન્તમાં મરણ પામે અને ‘સમોહણિત્તા જે ભવિણ લોગસ્સ દાહિણિલ્લે ચરિમંતે અપજ્જત્ત-સુહુમપુઢવીકાઈણત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ’ અને મરણ પામીને લોકના દક્ષિણ ચરમાન્તમાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયાિક પણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય હોય તો ‘સે ણં મંતે ! કહસમહણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ હે ભગવન્ એવા તે શુબ ત્યાં કેટલા સમયવાળા વિગ્રહથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—‘ગોયમા ! દુસમહણ વા તિસમહણ વા ચઉસમહણ વા વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ હે ગૌતમ ! તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે અને ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, ‘સે કેળદ્દેણં મંતે !’ એવં વુચ્ચઈ’ હે ભગવન્

યન્નાહ—‘સે કેળદ્દેળં મંતે ! એવં વુચ્ચહ’ તત્કેનાથેન મદન્ત ! એવમુચ્ચતે, દ્વિસા-
મયિકેન વા, યાવત્ ચતુઃસામયિકેન વિગ્રહેણ ઉત્પદ્ધેતેતિ પ્રશ્નઃ । મગવાનાહ—
‘એવં’ ઇત્યાદિ, ‘એવં—સ્વલ્લુ ગોયમા’ એવં સ્વલ્લુ હે ગૌતમ ! ‘મએ સત્તસેઢીઓ’
પન્નત્તાઓ’ મયા સપ્તસંખ્યકાઃ શ્રેણયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ કથિતાઃ । ‘તં જહા’ તચ્ચથા—
‘ઉજ્જુભાયયા જાવ અદ્ધચક્કવાલા’ ઋજ્ઞવાયતા યાવદ્ધચક્કવાલા, અત્ર યાવત્પદેન
એકતો વક્રા, દ્વિધાતો વક્રા, એકતઃ સ્વા, દ્વિધાતઃ સ્વા ચક્કવાલાનાં પશ્ચાનાં શ્રેણીનાં
ગ્રહણં ભવતીતિ । તત્ર સપ્તશ્રેણીષુ મધ્યે ‘એકઓ વંકાએ સેઢીએ ઉવવજ્જમાણે
દુસમહણં વિગ્રહેણ ઉવવજ્જેજ્જા’ એકતો વક્રયા શ્રેણ્યા મરણસ્થાનાત્ ઉત્પત્તિ
સ્થાનં ગચ્છન્ દ્વિસામયિકેન વિગ્રહેણ ઉપપદ્ધેતેતિ । ‘દુહઓ વંકાએ સેઢીએ ઉવવજ્જ-

વિગ્રહ સે ઓ ઉત્પન્ન હોતા હૈ । ‘સે કેળદ્દેળં મંતે ! એવં વુચ્ચહ’ હે
મદન્ત ! એવા આપ કિસ કારણ સે કહતે હૈં કિ વહાં દો સમયવાલે
અથવા ત્રીન સમયવાલે અથવા ચાર સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન
હોતા હૈ ? ‘એવં સ્વલ્લુ ગોયમા ! મએ સત્તસેઢીઓ પન્નત્તાઓ’ ઉત્તર મેં
પ્રભુશ્રી કહતે હૈં—હે ગૌતમ ! મૈંને સાત શ્રેણિયાં કહી હૈં । ‘તં જહા’ જો
હસ પ્રકાર સે હૈં—‘ઉજ્જુભાયયા જાવ અદ્ધચક્કવાલા’ એક ઋજ્ઞવાયતા
યાવત્ સાતવીં અદ્ધચક્કવાલા યહાં યાવત્ શબ્દ સે ‘એકતો વક્રા,
દ્વિધાતો વક્રા, એકતઃ સ્વા દ્વિધાતઃ સ્વા ઓર ચક્કવાલા હન પાંચ શ્રેણિયોં
કા ગ્રહણ હુઆ હૈ । હન સાત શ્રેણિયોંમેં સે જો ‘એકઓ વંકાએ સેઢીએ
ઉવવજ્જમાણે દુસમહણં વિગ્રહેણ ઉવવજ્જેજ્જા’ એકતો વક્રા
શ્રેણિ સે ગમન કરતા હુઆ ઉત્પત્તિ સ્થાન મેં ઉત્પન્ન હોતા હૈ
એસા વહ જીવ વહાં દો સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ । ‘દુહઓ
વંકાએ સેઢીએ ઉવવજ્જમાણે જે ભવિએ એગપયરંમિ અણુસેઢીએ ઉવવજ્જિત્તે’

આપ એવું શા કારણથી કહે છે કે—તે ત્યાં બે સમયવાળી ૧ અથવા ત્રણ
સમયવાળી અથવા ચાર સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? ‘એવં
સ્વલ્લુ ગોયમા ! મએ સત્તસેઢીઓ પન્નત્તાઓ’ આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—
ગૌતમ ! મેં સાત શ્રેણીયો કહી છે. ‘તં જહા’ તે આ પ્રમાણે છે. ઉજ્જુઆયયા જાવ
અદ્ધચક્કવાલા’ એક ઋજ્ઞવાયત યાવત્ સાતમી અર્ધ ચક્રવાલા યાવત્ શબ્દથી
“એકતો વક્રા દ્વિધાતો વક્રા, એકતઃ આ દ્વિધાતો આ અને ચક્રવાલા આ પાંચ
શ્રેણીયો ગ્રહણ કરાઈ છે આ સાત શ્રેણીયોમાંથી ‘એકઓ વંકાએ અણુસેઢીએ ઉવવ
જ્જમાણે દુસમહણં વિગ્રહેણ ઉવવજ્જેજ્જા’ એકતો વક્રા શ્રેણીથી ગમન કરતો
ઉત્પત્તિ સ્થાનમાં ઉત્પન્ન થાય છે. એવો તે જ ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી
ઉત્પન્ન થાય છે. ‘દુહઓ વંકાએ સેઢીએ ઉવવજ્જમાણે જે ભવિએ એગપયરંમિ અણુસેઢીએ

માળે જે ભવિષ્ય એવમયરંમિ અણુસેઢીએ ઉવવજ્જિત્તએ' દ્વિધાતો વક્રયા શ્રેણ્યા ઉત્પદ્યમાનો યો ભવ્ય એકપ્રતરે અણુશ્રેણ્યા ઉપપત્તુમ્, 'સે ણં તિસમ્મહણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા' સંઘ ચતુઃસામયિકેન વિગ્રહેણ સમુત્પદ્યેત, 'સે ણં મંતે ! ભવિષ્ય વિસેઢીએ ઉવવજ્જિત્તએ સે ણં ચતુસમ્મહણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા' યઃ સંઘ ભવ્યો વિશ્રેણ્યાં સમુત્પત્તુ સંઘ ચતુઃસામયિકેન વિગ્રહેણ સમુત્પદ્યેત, ન તુ એકસામયિકેન વિગ્રહેણ ગચ્છતિ, દિગ્ગન્તાત્-દિગ્ગન્તે ગમનાત્ 'સે તેણદ્દેણં ગોયમા !' તત્તેનાથેન ગૌતમ ! એવમુચ્યતે, દ્વિસામયિકેન વા, ત્રિસામયિકેન વા, ચતુઃસામયિકેન વા વિગ્રહેણ ઉત્પદ્યેત્ત્વમ્મહિ, 'એવં એણં ગમેણં' એવમ્ એતેન ગમકેન, 'પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહઓ' લોકસ્ય પૌરસ્ત્યે ચરમાન્તે સમવહતઃ, 'દાહિણિલ્લે ચરિમંતે ઉવવાપ્યવ્વો' દક્ષિણાત્યે-દક્ષિણે-ચરમાન્તે ઉપપાતયિતવ્યઃ ।

તથા જો દ્વિધાતો વક્રા શ્રેણિએ ગમન કરતા હુઆ ઉત્પત્તિ સ્થાન મેં ઉત્પન્ન હોતા હૈ એસા વહ જીન વહાં યદિ એક પ્રતર મેં 'સમશ્રેણિ મેં' ઉત્પન્ન હોતા હૈ તબ તો 'સે ણં તિસમ્મહણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા' વહ વહાં તોન સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ 'સે ણં મંતે ભવિષ્ય વિસેઢીએ ઉવવજ્જિત્તએ સે ણં ચતુસમ્મહણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા' ઔર યદિ વહ વિશ્રેણિ કાલે ઉત્પત્તિ સ્થાન મેં ઉત્પન્ન હોતા હૈ તો વહ વહાં ચાર સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ । એક સમયવાલે વિગ્રહસે નહીં । કયોંકિ એક દિગ્ગન્ત સે દૂસરે દિગ્ગન્ત મેં ઉસકા ગમન હોતા હૈ । 'સે તેણદ્દેણં ગોયમા !' હસ કારણ હે ગૌતમ ! મેંને એસા કહા હૈ કિ વહ વહાં દો સમયવાલે અથવા તોન સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ । 'એવં એણં ગમેણં પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહઓ દાહિણિલ્લે ચરિમંતે ઉવવાપ્યવ્વો' હસ પ્રકાર હસી ગમકે અનુસાર લોકકે પૂર્વકે ચરમાન્ત

ઉવવજ્જિત્તએ' તથા જે દ્વિધાતો વક્રા શ્રેણીથી ગમન કરતો થકો ઉત્પત્તિ સ્થાનમાં ઉત્પન્ન થાય છે, એવો તે જીવ ત્યાં જો એક પ્રતરમાં સમશ્રેણીમાં ઉત્પન્ન થાય તો તે ત્યાં ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. સે ણં મંતે ! ભવિષ્ય વિસેઢીએ ઉવવજ્જિત્તએ સે ણં ચતુસમ્મહણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા' અને જો તે વિશ્રેણીથી જતો થકો ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે, તો તે ત્યાં ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી નહીં કેમ કે એક દિગ્ગન્તમાં તેનું ગમન થાય છે. 'સે તેણદ્દેણં ગોયમા !' તે કારણથી હે ગૌતમ ! મેં એવું કહેલ છે કે-ત્યાં જો સમયવાળી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. 'એવં એણં ગમેણં પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે ! સમોહઓ દાહિણિલ્લે ચરિમંતે ઉવવાપ્યવ્વો' આ ગમકો પ્રમાણે લોકના પૂર્વ ચરમાન્તમાં

કિયત્પર્યન્તાનામુપપાતો વ્યક્તવ્યસ્તત્રાહ—‘જાવ સુહુમવળસ્સઙ્કાદ્ઓ પજ્જત્તઓ, સુહુમવળસ્સઙ્કાદ્દસુ પજ્જત્તદસુ ચેવ’ યાવત્ સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાચિકઃ પર્યાપ્તકઃ સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાચિકેષુ પર્યાપ્તકેષ્વેવ, યાવત્ પદેન પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાચિકત આરમ્ભ્યાપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાચિકાન્તાઃ સંગૃહ્યન્તે । તથા ચ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ-પૃથિવીકાચિકત આરમ્ભ્ય અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાચિકાન્તાનામુપપાતઃ, અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાચિકત આરમ્ભ્ય પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાચિકાન્તેષુ દ્વાદશ સ્થાનેષુ વર્ણનીય ઇતિ । તત્ર—‘સન્વેસિં દુસમદ્ઓ તિસમદ્ઓ ચડસમદ્ઓ વિગ્ગહો માણિ-યવ્વો’ સર્વેષાં પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવ્યાદિ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાચિકાન્તાનાં

મેં સમવહત હુણ જીવ કો દક્ષિણ ચરમાન્ત મેં ઉત્પાદિત કર લેના ચાહિયે ‘જાવ સુહુમવળસ્સઙ્કાદ્ઓ પજ્જત્તઓ સુહુમ વળસ્સઙ્કાદ્દસુ પજ્જત્તદસુ’ ઓર યહ ઉત્પાદ કથન યાવત્ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વન-સ્પતિકાચિક જીવ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાચિકોં મેં ઉત્પન્ન હોતા હૈ, યહાં તક કહના ચાહિયે । યહાં યાવત્પદ સે પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાચિક સે લેકર અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાચિક તકકા સય કથન ગ્રહીત હુઆ હૈ । તથા ચ—પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાચિક સે લેકર અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાચિક તકકે જીવોં કા ઉપપાદ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવી-કાચિક સે લેકર પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાચિક તકકે જીવોં મેં ૧૨ સ્થાનોં મેં વર્ણિત કર લેના ચાહિયે । ઇનમેં ‘સન્વેસિં દુસમદ્ઓ તિસ-મદ્ઓ, ચડસમદ્ઓ વિગ્ગહો માણિયવ્વો’ સચકા દો સમયવાલે અથવા ત્રીનસમયવાલે અથવા ચારસમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પાદ હોતા

સમુદ્ધાત કરેલ જીવને દક્ષિણ ચરમાન્તમાં ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં કથન કરી લેવું જોઈએ. ‘જાવ સુહુમ વળસ્સઙ્કાદ્ઓ પજ્જત્તઓ સુહુમવળસ્સઙ્કાદ્દસુ પજ્જત્તદસુ’ અને આ ઉત્પાદ સંબંધી કથન પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાચિક જીવો પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાચિકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે. “આ કથન સુધીનું કહેવું જોઈએ. અહિંયાં યાવત્પદથી પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાચિકથી લઈને અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાચિક સુધીનું સઘળું કથન ગ્રહણ થયેલ છે. તથા પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાચિકથી લઈને અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાચિક સુધીના જીવોના સંબંધમાં ૧૨ આદે સ્થાનોમાં વર્ણન કરી લેવું જોઈએ. તેઓમાં ‘સન્વેસિં દુસમદ્ઓ તિસમદ્ઓ ચડસમદ્ઓ વિગ્ગહો માણિયવ્વો’ સઘળાને ઉત્પાદ બે સમયવાળી વિગ્રહગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી

વિગ્રહસ્તુ દ્વિસામયિકો વા, ત્રિસામયિકો વા, ચતુઃસામયિકો વા, મણિતુલ્યો ન તુ એકસામયિકઃ દિગન્તાદ્ દિગન્તે ગમનાદિતિ ॥

‘અપજ્જત સુહુમપુઢવીકાઈણ ણં મંતે ! લોગસ્સ પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહણ’ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકઃ સ્વલુ ભદન્ત ! લોકસ્ય પૌરસ્ત્યે પૂર્વસ્મિન્ ચરમાન્તે સમવહતો-મારણાન્તિકસમુદ્ઘાતં કૃતવાન, ‘સમોહણિત્તા જે મવિણ લોગસ્સ પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે અપજ્જત સુહુમપુઢવીકાઈયત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ’ સમવહત્ય-મારણાન્તિકસમુદ્ઘાતં કૃત્વા યો મવ્યો લોકસ્ય પાશ્ચાત્યે-પશ્ચિમે ચરમાન્તે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકતયા સમુત્પત્તુમ્, ‘સે ણં મંતે ! કહસમઈણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ સ સ્વલુ ભદન્ત ! કતિસામયિકેન વિગ્ગહેણ સમુત્પદ્ધેતેતિ મશ્નઃ । મગવાનાહ-‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ । ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘એગસમઈણ વા, હૈ એસા કથન કરના ચાહિયે । એકસમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પાદ હોતા હૈ એસા નહીં કહના ચાહિયે ક્યોંકિ ઇનકા એક દિગન્ત સે દૂસરે દિગન્ત મેં ગમન હોતા હૈ ।

‘અપજ્જત સુહુમપુઢવીકાઈણ ણં મંતે ! લોગસ્સ પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહણ’ હે ભદન્ત ! કોઈ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવ લોકકે પૂર્વચરમાન્ત મેં મરણ સમુદ્ઘાત સે મરા ઓર ‘સમોહણિત્તા જે મવિણ લોગસ્સ પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે અપજ્જત સુહુમપુઢવીકાઈયત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ’ ‘મરણ સમુદ્ઘાત કર વહ લોકકે પાશ્ચાત્ય ચરમાન્ત મેં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક રૂપસે ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હુઆ ‘સે ણં મંતે ! કહ સમઈણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ હે ભદન્ત ! એસા વહ જીવ કિતને સમયવાલે વિગ્રહ સે વહાં ઉત્પન્ન હોતા હૈ ઉત્તર મેં પ્રમુશ્રી

અથવા ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિથી થાય છે. આ પ્રમાણેનું કથન કહેવું જોઈએ. એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પાદ થાય છે. તેમ કહેવું નહીં. કેમ કે-તેઓનું એક દિશાથી બીજી દિશામાં ગમન થાય છે. ‘અપજ્જત સુહુમ પુઢવીકાઈણ’ મંતે ! લોગસ્સ પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહણ’ હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ લોકના પૂર્વચરમાન્તમાં મરણ સમુદ્ઘાત કરીને મરણ પામે. અને ‘સમોહણિત્તા જે મવિણ લોગસ્સ પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિ મંતે ! અપજ્જત સુહુમપુઢવીકાઈયત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ’ મરણ સમુદ્ઘાત કરીને તે લોકના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક પશુથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય હોય તે ‘સે ણં મંતે ! કહસમઈણં વિગ્ગહેણં ઉવવજ્જેજ્જા’ હે ભગવન્ એવો તે જીવ કેટલા સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ?

દુસમઙ્ગણ વા, તિસમઙ્ગણ વા, ચતુસમઙ્ગણ વા વિગ્રહેણં ઉવવજ્જેજ્જા' એકસામ-
યિકેન વા, દ્વિસામયિકેન વા, ત્રિસામયિકેન વા ચતુઃસામયિકેન વા વિગ્રહેણ સમુ-
ત્પદ્ધેત્ત ઇત્યુત્તરમ્ । 'સે કેળદ્ધેણં' તત્તકેનાર્યેન ભદન્ત ! એવમુચ્ચયતે, એકસામયિકેન
યાવત્ ચતુઃસામયિકેન વા વિગ્રહેણોત્પદ્ધેતેતિ પ્રશ્નઃ । ઉત્તરમાહ—'એવં' ઇતિ, યાવ-
ત્તત્તેનાર્યેન એવમુચ્ચયતે ઇત્યેતત્પર્યન્તમિતિ । 'એવં જહેવ પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહયા
પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે ઉવવાહયા' એવમ્—અનેનૈવ પ્રકારેણ યથૈવ—યેનૈવ રૂપેણ પૌર-
સ્ત્યે ચરમાન્તે સમવહતાઃ પૌરસ્ત્યે એવ ચરમાન્તે ઉપપાતિતાઃ, 'તદેવ પુરત્થિમિલ્લે
ચરિમંતે સમોહયા પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે ઉવવાણ્યવા સવ્વે' તથૈવ તંનૈવ રૂપેણ

કહતે હૈ—'ગોયમા । એકસમઙ્ગણ વા દુસમઙ્ગણ વા તિસમઙ્ગણ વા
ચતુસમઙ્ગણ વા વિગ્રહેણં ઉવવજ્જેજ્જા' હે ગૌતમ ! વહ વહાં એક-
સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ અથવા દો સમયવાલે વિગ્રહ
સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ અથવા ત્રીસ સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન
હોતા હૈ, અથવા ચાર સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ।
'સે કેળદ્ધેણં મંતે ! 'હે ભદન્ત ! એસા આપ ફિલ્લ કારણસે કહતો હૈ કિ
વહ વહાં એકસમયવાલે વિગ્રહસે યાવત્ ચારસમયવાલે વિગ્રહસે ઉત્પન્ન
હોતા હૈ ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈ—'એવં જહેવ પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે
સમોહયા પુરત્થિમિલ્લે ચેવ ચરિમંતે ઉવવાહયા' હે ગૌતમ ! જિસ
પ્રકાર સે પૌરસ્ત્ય ચરમાન્ત મેં સમવહત હુણ જીવ પૌરસ્ત્ય ચરમાન્ત
મેં હી ઉત્પાદિત કિયે ગયે હૈ 'તદેવ પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહયા
પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે ઉવવાણ્યવા' ઉસી પ્રકાર સે પૌરસ્ત્ય ચરમાન્ત

આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'ગોયમા । એકસમઙ્ગણ વા દુસમઙ્ગણ
વા તિસમઙ્ગણ વા, ચતુસમઙ્ગણ વા વિગ્રહેણં ઉવવજ્જેજ્જા' હે ગૌતમ !
તે ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે, બે સમયવાળી વિગ્રહ
ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે, અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય
છે, અથવા ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે, 'સે કેળદ્ધેણં મંતે
હે ભગવન્ આપ એવું શા કારણથી કહે છે કે—તે ત્યાં એક સમયવાળી
વિગ્રહગતિથી યાવત્ ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ
પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—'એવં જહેવ પુરત્થિમિલ્લે
ચરિમંતે સમોહયા પુરત્થિમિલ્લે ચેવ ચરિમંતે ઉવવાહયા' હે ગૌતમ ! બે પ્રમાણે
પૂર્વ અરમાન્તમાં સમુદ્ધાત કરેલ એવ પૂર્વ અરમાન્તમાં જ ઉત્પન્ન થવાના
સૂબંધમાં કથન કર્યું છે, 'તદેવ પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે ! સમોહયા પચ્ચત્થિમિલ્લે
ચરિમંતે ઉવવાણ્યવા' એજ પ્રમાણે પૂર્વ અરમાન્તમાં સમુદ્ધાત કરેલ એવોનો

પૌરસ્ત્યે-પૂર્વસ્મિન્ ચરમાન્તે સમવહતાઃ પાશ્ચાત્યે-પશ્ચિમે ચરમાન્તે ઉપપાતયિ-
તવ્યાઃ સર્વે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકત આરભ્ય પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાયિક-
કાન્તા ઇતિ । ‘અપજ્જત સુહુમપુઢવીકાઈણ ણં મંતે !’ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકઃ
સ્વલ્લ મદન્ત ! ‘લોગસ્સ પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહણ’ લોકસ્ય પૌરસ્ત્યે પૂર્વ-
ચરમાન્તે સમવહતો મારણાન્તિકસમુદ્ધાતં કૃતવાન્ । ‘સમોહણિત્તા જે મવિણ
લોગસ્સ ઉત્તરિલ્લે ચરિમંતે અપજ્જત સુહુમપુઢવીકાઈયત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ સે ણં
મંતે !’ સમવહત્ય યો મવ્યો લોકસ્યોત્તરે ચરમાન્તે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક-
કતયા સમુત્પત્તુમ્, સ સ્વલ્લ મદન્ત ! કિયત્સામયિકેન વિગ્રહેણોત્પદ્ધેતેતિ પ્રશ્નઃ ।
ઉત્તરમાહ-‘એવં જહેવ’ ઇત્યાદિ । ‘એવં જહા પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહઓ’ એવં

મેં સમવહત હુએ જીવોં કો પશ્ચિમ ચરમાન્ત મેં ઉત્પાદિત કર લેના
ચાહિયે । અર્થાત્ સમસ્ત અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક સે લેકર પર્યાપ્ત
સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાયિક તકકે એકેન્દ્રિય જીવોં વા પૂર્વોક્ત જીવોં કે જેસા
હી ઉત્પાદ પૂર્વચરમાન્ત સે પશ્ચિમ ચરમાન્ત મેં કર લેના ચાહિયે ।

‘અપજ્જત સુહુમપુઢવીકાઈણ ણં મંતે !’ હે મદન્ત ! જો અપર્યાપ્ત
સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવ ‘લોગસ્સ પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહણ
સમોહણિત્તાં અપજ્જત સુહુમપુઢવીકાઈયત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ સે ણં
મંતે !’ લોકકે પૂર્વચરમાન્ત મેં મારણાન્તિકસમુદ્ધાત કરકે મરા ઓર
મરકર વહ લોકકે ઉત્તર ચરમાન્ત મેં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક
રૂપસે ઉત્પન્ન હોને કે પ્રોગ્ય હુઆ તો હે મદન્ત ! એસા વહ જીવ
વહાં કિતને સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હેં ? ઉત્તર મેં પ્રશ્ન
કહતે હેં-‘એવં જહા પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહઓ દાહિણિલ્લે ચરિ-

ઉત્પાદ પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં કથન કહી લેવું
જોઈએ. અર્થાત્ સઘળા અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકથી લઈને પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ
વનસ્પતિકાયિક સુધીના એકેન્દ્રિય જીવોના પહેલા કહેલ જીવોની જેમ જ પૂર્વ-
ચરમાન્તથી પશ્ચિમચરમાન્તમાં ઉત્પાદ કહી લેવો.

જવજ્જત સુહુમપુઢવીકાઈણ મંતે !’ હે ભગવન્ જે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક
જીવ ‘લોગસ્સ પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહણ સમોહણિત્તાં અપજ્જત સુહુમપુઢવી-
કાઈયત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ સે ણં મંતે !’ લોકના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મારણાન્તિક
સમુદ્ધાત કરીને મરણ પામે અને મરણ પામીને તે લોકના ઉત્તર ચરમાન્તમાં
અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થવાને પ્રોગ્ય હોય તો હે ભગવન્
એવો તે જીવ ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ
પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘એવં જહા પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે ! સમોહઓ

યથા પૌરસ્ત્યે ચરમાન્તે સમવહતઃ, 'દાહિણિલ્લે ચરિમંતે ઉવવાઈઓ' દાક્ષિણાત્યે ચરમાન્તે ઉપપાતિતઃ, 'તદ્વા પુરત્થિમિલ્લે સમોહઓ ઉત્તરિલ્લે ચરિમંતે ઉવવાઈઓ' તથા-પૌરસ્ત્યે સમવહતઃ ઉત્તરે ચરમાન્તે ઉપપાતયિતવ્યઃ । યથા પૂર્વદિશિ સમવહતસ્ય દક્ષિણસ્યાં દિશિ મમુદ્ધપાતો વર્ણિત સ્તથૈવ પૂર્વદિશિ સમવહતસ્ય ઉત્તરદિશિ અપિ સમુત્પાદો વર્ણયિતવ્યઃ સૂ૦ ॥૬॥

મૂલમ્-અપજ્જત્તસુહુમપુઢવીકાઈણ ણં મંતે ! લોગસ્સ દાહિણિલ્લે ચરિમંતે સમોહણ સમોહણિત્તા જે મવિણ લોગસ્સ દાહિણિલ્લે ચેવ ચરિમંતે અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાઈયત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ । એવં જહા પુરત્થિમિલ્લે સમોહઓ પુરત્થિમિલ્લે ચેવ ઉવવાઈઓ તહેવ દાહિણિલ્લે સમોહણ દાહિણિલ્લે ચેવ ઉવવાઈઓ । તહેવ નિરવસેસં જાવ સુહુમવળસ્સઙ્કાઈઓ પજ્જત્તઓ સુહુમવળસ્સઙ્કાઈણસુ ચેવ પજ્જત્તણસુ દાહિણિલ્લે ચરિમંતે ઉવવાઈઓ, એવં દાહિણિલ્લે સમોહઓ પચ્ચત્થિમિલ્લે ઉવવાઈઓ । નવરં દુસમઙ્કય તિસમઙ્કય-ચઉસમઙ્કય વિગ્ગહો, સેસં તહેવ । દાહિણિલ્લે

મંતે ઉવવાઈઓ તદ્વા પુરત્થિમિલ્લે સમોહઓ ઉત્તરિલ્લે ચરિમંતે ઉવવાઈઓ' હે ગૌતમ ! જિસ પ્રકાર સે લોકકે પૂર્વચરમાન્ત મેં સમવહત હુણે જીવ કે દક્ષિણ ચરમાન્ત મેં ઉત્પાદ કે વિષય મેં કહા ગયા હૈ, ઉસી પ્રકારસે લોકકે પૂર્વચરમાન્ત મેં સમવહત હુણે જીવકે ઉત્તર ચરમાન્ત મેં ઉત્પાદ કે સમ્બન્ધ મેં બી કહ લેના ચાહિયે । તાત્પર્ય કહને કા યહી હૈ કિ પૂર્વદિશા મેં સમવહત હુણે જીવકા દક્ષિણ દિશા મેં જૈસા ઉત્પાદ વર્ણિત હુઆ હૈ ઉસી પ્રકાર સે પૂર્વદિશા મેં સમવહત હુણે જીવકા ઉત્તર દિશા મેં બી ઉત્પાદ વર્ણિત કર લેના ચાહિયે ॥સૂ૦ ॥૬॥

દાહિણિલ્લે ચરિમંતે ઉવવાઈઓ તદ્વા પુરત્થિમિલ્લે સમોહઓ ઉત્તરિલ્લે ચરિમંતે ઉવવાઈઓ' હે ગૌતમ ! જે પ્રમાણે લોકના પૂર્વ ચરમાન્તમાં સમુદ્ધાત કરેલ જીવના દક્ષિણ ચરમાન્તમાં ઉપપાત થવાના સંબંધમાં કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે લોકના પૂર્વ ચરમાન્તમાં સમુદ્ધાત કરેલ જીવના ઉત્તર ચરમાન્તમાં ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં પણ કહેવું જોઈએ. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-પૂર્વ દિશામાં સમુદ્ધાત કરેલ જીવનો ઉપપાત ઉત્તર દિશામાં પણ થઈ શકે છે એવો જોઈએ. ॥સૂ૦ ૬॥

समोहओ उत्तरिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो जहेव सट्टाणे तहेव ।
 एगसमइय-दुसमइय-तिसमइय-चउसमइय विग्गहो । पुर-
 तिथिमिल्ले जहा पच्चत्थिमिल्ले तहेव दुसमइय-तिसमइय चउसम-
 इय विग्गहो । पच्चत्थिमिल्ले य चरिमंते समोहयाणं पच्चत्थि-
 मिल्ले चेव उववज्जमाणाणं जहा सट्टाणे उत्तरिल्ले उववज्जमाणाणं
 एगसमइओ विग्गहो नत्थि सेसं तहेव । पुरत्थिमिल्ले जहा सट्टाणे,
 दाहिणिल्ले एगसमइओ विग्गहो नत्थि । सेसं तं चेव उत्तरिल्ले
 समोहयाणं उत्तरिल्ले चेव उववज्जमाणाणं जहेव सट्टाणे । उत्त-
 रिल्ले समोहयाणं पुरत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एवं चेव नवरं
 एगसमइओ विग्गहो नत्थि । उत्तरिल्ले समोहयाणं दाहिणिल्ले
 उववज्जमाणाणं जहा सट्टाणे । उत्तरिल्ले समोहयाणं पच्चत्थि-
 मिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमइओ विग्गहो नत्थि । सेसं तहेव
 जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु
 पज्जत्तएसु चेव ॥सू०७॥

छायाः—अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त । लोकस्य दाक्षिणात्ये चर-
 मान्ते समवहतः, समवहत्य यो भव्यो लोकस्य दाक्षिणात्ये एव चरमान्ते अपर्याप्त
 सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया उपपत्तुम् । एवं यथा पौरस्त्ये समवहतः, पौरस्त्ये एवो-
 पपातित स्तथैव दाक्षिणात्ये समवहतो दाक्षिणात्ये एव उपपातयितव्यः । तथैव
 निरवशेषं यावत्सूक्ष्मवनस्पतिकायिकः पर्याप्तकः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकेणैव पर्या-
 प्तकेषु दाक्षिणात्ये चरमान्ते उपपातितः । एवं दाक्षिणात्ये समवहतः पाश्चात्ये
 चरमान्ते उपपातयितव्यः । नवरं द्विसामयिकः त्रिसामयिकः चतुःसामयिक
 विग्रहः । शेषं तथैव । दक्षिणात्ये समवहतः औत्तरे चरमान्ते उपपातयितव्या यथैव
 स्वस्थाने तथैव । एक सामयिक—द्विसामयिक—त्रिसामयिक—चतुःसामयिक विग्रहः ।
 पौरस्त्ये यथा—पाश्चात्ये तथैव—द्विसामयिक—त्रिसामयिक—चतुःसामयिक विग्रहः ।
 पाश्चात्ये च चरमान्ते समवहतानां पाश्चात्ये एवोपपद्यमानानां यथास्वस्थाने, औत्तरे
 उत्पद्यमानानामेकसामयिको विग्रहो नास्ति शेषं तथैव । पौरस्त्ये यथा स्वस्थाने
 दाक्षिणात्ये एकसामयिको विग्रहो नास्ति शेषं तदेव । औत्तरे समवहताना

મોત્તરે ઉત્પન્નમાનાનાં તથૈવ સ્વસ્થાને । ઔત્તરે સમવહતાનાં પૌરસ્ત્યે ઉત્પન્નમાનાનામ્ એવમેવ । નચરમ્ એકસામયિકો વિગ્રહો નાસ્તિ । ઔત્તરે સમવહતાનાં દાક્ષિણાત્યે ઉત્પન્નમાનાનાં યથા સ્વસ્થાને । ઔત્તરે સમવહતાનાં પાશ્ચાત્યે ઉત્પન્નમાનાનામેકસામયિકો વિગ્રહો નાસ્તિ, શેષં તથૈવ યાવત્ સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાયિકઃ પર્યાપ્તકઃ સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાયિકેષુ પર્યાપ્તકેષ્વેવ ॥૪૭॥

ટીકા—‘અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહણં મંતે !’ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકઃ સ્વલ્પ મદન્ત ! ‘લોગસ્સ દાહિણિલ્લે ચરિમંતે સમોહણ’ લોકસ્ય દાક્ષિણાત્યે દક્ષિણે ચરમાન્તે—માન્તભાગે સમવહતો—મારણાન્તિકસમુદ્ધાતં કૃતવાન્ । ‘સમોહણિતા જે મહિણે લોગસ્સ દાહિણિલ્લે ચેવ ચરિમંતે’ સમવહત્ય—મારણાન્તિક સમુદ્ધાતં કૃત્વા ચો મવ્યો લોકસ્ય દક્ષિણે એવ ચરમાન્તે ‘અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહણત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ’ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકતયા તાદશપૃથિવીકાયિકરૂપેણ સમુત્પત્તુમ્, સ સ્વલ્પ મદન્ત ! કૃતિસામયિકેન વિગ્રહેણ સમુત્પદ્યેતેતિ પૂર્વવદેવ પ્રશ્નઃ । મગવાન્ પૂર્વાતિદેશેનાહ—‘એવં જહા’ ઇત્યાદિ । ‘એવં જહા પુર-

‘અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહણં મંતે ! લોગસ્સ દાહિણિલ્લે’ ઇત્યાદિ સુ૦ ॥૬૧॥

ટીકાર્થ—‘અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહણં મંતે !’ હે મદન્ત ! જો અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક જીવ ‘લોગસ્સ દાહિણિલ્લે ચરિમંતે સમોહણ’ લોક કે દક્ષિણ ચરમાન્ત મેં સમવહત હુમા હૈ ઓર ‘સમોહણિતા’ સમવહત હોકર વહ ‘જે મહિણે લોગસ્સ દાહિણિલ્લે ચેવ ચરિમંતે અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહણત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ’ લોકકે દક્ષિણ ચરમાન્ત મેં હી અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક રૂપસે ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હુઆ હૈ તો ‘સે ણં મંતે !’ હે મદન્ત ! વહ વહાં કિતને સમયવાલે વિગ્રહસે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ? હસકા પૂર્વાતિદેશ સે ઉત્તર દેતે હુણ પ્રમુશ્રી કહતે હૈ—‘એવં જહા

‘અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહણં મંતે ! લોગસ્સ દાહિણિલ્લે’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—‘અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહણં મંતે !’ હે ભગવન્ જે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક એવ ‘લોગસ્સ દાહિણિલ્લે ચરિમંતે સમોહણ’ લોકના દક્ષિણ ચરમાન્તમાં સમુદ્ધાત કરે છે. અને “સમોહણિતા” સમુદ્ધાત કરીને ‘મહિણે લોગસ્સ દાહિણિલ્લે પવ ચરિમંતે અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહણત્તાણ ઉવવજ્જિત્તણ’ લોકના દક્ષિણ ચરમાન્તમાં જ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય અનેક હોય ‘સે ણં મંતે’ હે ભગવન્ તે ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર પહેલા કહેલ તેના અનિદેશ

તિથિમિલ્લે સમોદ્ધઓ પુરતિથિમિલ્લે ચેવ ઉવવાદ્ધઓ' એવં યથા-યેન પ્રકારેણ પૌરસ્ત્યે પૂર્વચરમાન્તે સમવહતો-મૃતઃ પૌરસ્ત્યે-પૂર્વે એવ ચરમાન્તે ઉપપાતિતઃ, 'તદેવં દાહિણિલ્લે સમોદ્ધ દાહિણિલ્લે ચેવ ઉવવાપ્યવ્વો' યથૈવ દક્ષિણે ચરમાન્તે સમવહતઃ દક્ષિણે એવ ચરમાન્તે ઉપપાતયિતવ્યઃ, પૂર્વચરમાન્તે મૃતાનાં પૂર્વે એવ ચરમાન્તે સમુત્પચમાનાનાં યેન પ્રકારેણ ઉપપાતઃ કથિત રતથા તેનૈવ રૂપેણ દક્ષિણે ચરમાન્તે સમવહતાનાં તત્રૈવોત્પચમાનાના મુપપાત પ્રકારસ્તુલ્યતયૈવ વર્ણનીયઃ । 'તદેવં નિરવસેસં' તથૈવ નિરવસેષ સર્વમપિ અણિતવ્યમ્, પ્રકારસ્તુ દર્શિત એવ । કિયત્પર્યન્તં પૂર્વચરમાન્તપ્રકરણમ્ । હહ અણિતવ્યં તત્રાદ્-જાવ' ઇત્યાદિ । 'જાવ સુહુમવણસ્સદ્ધિકાદ્ધઓ પજ્જત્તઓ સુહુમવણસ્સદ્ધિકાદ્ધણસુ ચેવ પજ્જત્તણસુ દાહિણિલ્લે

પુરતિથિમિલ્લે સમોદ્ધઓ પુરતિથિમિલ્લે ચેવ ઉવવાદ્ધઓ' 'હે ગૌતમ । જિસ પ્રકાર સે પૂર્વચરમાન્ત મેં સમવહત હુઆ જીવ પૂર્વ હી ચરમાન્ત મેં ઉત્પાદિત પ્રકટ કિથા ગયા હૈ 'તદેવં દાહિણિલ્લે સમોદ્ધ દાહિણિલ્લે ચેવ ઉવવાપ્યવ્વો' ઉસી પ્રકાર સે દક્ષિણ ચરમાન્ત મેં સમવહત હુએ જીવકા દક્ષિણ ચરમાન્ત મેં હી ઉત્પાદ કહ લેના ચાહિયે । તાત્પર્ય યહી હૈ કિ પૂર્વચરમાન્ત મેં મૃતોંકા પૂર્વહી ચરમાન્ત મેં જિસ પ્રકાર સે ઉપપાત કહા ગયા હૈ ઉસી પ્રકાર સે દક્ષિણ ચરમાન્ત મેં સમવહત હુએ જીવોંકા દક્ષિણ ચરમાન્ત મેં ઉપપાત પ્રકટ કરના ચાહિયે । ઇસ સમ્બન્ધ મેં જો ઉપપાત પ્રકાર હૈ વહ સ્ષ એકસા હૈ । હમી લિયે' તદેવં નિરવસેસં' ઇસ સૂત્રપાઠ દ્વારા સૂત્રકારને 'સ્ષ કથન વૈમાહી હૈ' એસા કહા હૈ । પૂર્વચરમાન્ત પ્રકરણ યહાં કહાં તક કહને કે યોગ્ય કહા ગયા હૈ ? યહ વાત 'જાવ સુહુમવણસ્સદ્ધિકાદ્ધઓ પજ્જત્તઓ સુહુમવણસ્સદ્ધિકાદ્ધણસુ ચેવ પજ્જત્ત-

બલામણુ આપતા પ્રભુશ્રી કહે છે કે-એવ જહા પુરતિથિમિલ્લે સમોદ્ધઓ પુરતિથિમિલ્લે ચેવ ઉવવાદ્ધઓ' હે ગૌતમ । જે પ્રમાણે પૂર્વ ચરમાન્તમાં સમુદ્ધાત કરેલ એવ પૂર્વચરમાન્તમાં જ ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં કથન કરવામાં આવેલ છે. 'તદેવં દાહિણિલ્લે સમોદ્ધ દાહિણિલ્લે ચેવ ઉવવાપ્યવ્વો' એજ પ્રમાણે દક્ષિણ ચરમાન્તમાં સમુદ્ધાત કરેલ એવનો ઉત્પાત દક્ષિણ ચરમાન્તમાંજ કહેવો જોઈએ. આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે પૂર્વ ચરમાન્તમાં મરણ પામેલાનો ઉપપાત પૂર્વ ચરમાન્તમાં જ જે રીતે કહેલ છે એજ રીતે દક્ષિણ ચરમાન્તમાં સમુદ્ધાત કરેલ એવોનો ઉપપાત દક્ષિણ ચરમાન્તમાં કહેવો જોઈએ. આ સંબંધમાં ઉપપાતનો જે પ્રકાર છે, તે એક સરખોજ છે. તેથી 'તદેવં નિરવસેસં' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા સૂત્રકારે "સઘળું કથન એમ જે છે એમ કહેલ છે, પૂર્વ ચરમાન્ત પ્રકરણ અહીંયાં કયાં સુધી કહેવું જોઈએ" એ વાત-જાવ સુહુમ વણસ્સદ્ધિકાદ્ધઓ પજ્જત્તઓ સુદ્ધમ

ચરિમંતે ઉવવાહઓ' યાવત્ સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાયિકઃ પર્યાપ્તકઃ સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાયિકેષુ પર્યાપ્તકેષ્વેવ દક્ષિણે ચરિમાન્તે ઉપપાતિતઃ। પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકત આરભ્ય પર્યાપ્તવનસ્પતિકાયિકાન્તાઃ સર્વેઽપિ એકેન્દ્રિયા અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકત આરભ્ય પર્યાપ્ત વનસ્પતિકાયિકાન્તેષુ દક્ષિણે લોકચરમાન્તે સમવહતાનાં દક્ષિણે એવ લોકચરમાન્તે એકસામયિકાદિ યાવત્ ચતુઃસામયિકાદિ વિગ્રહેણોપપાતિતાઃ 'એવં દાહિણિલ્લે સમોહઓ પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે ઉવવાણ્યવ્વો' એવં યથા દક્ષિણે સમવહતસ્ય દક્ષિણે એવ ચરિમાન્તે ઉપપાતો વર્ણિત એવમેવ લોકસ્ય દક્ષિણે ચરમાન્તે સમવહતસ્ય લોકસ્ય પશ્ચિમે ચરમાન્તે ઉપપાતો-

એસુ દાહિણિલ્લે ચરિમંતે ઉવવાહઓ' સૂત્રકાર ને હસ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કી હૈ-હસકે દ્વારા અન્હોને યહ સમજાયા હૈ કિ જિસ પ્રકાર સે યાવત્ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાયિક જીવ પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાયિક રૂપસે દક્ષિણ ચરમાન્ત મેં હી ઉપપાતિત પ્રકટ કિયા ગયા હૈ। અર્થાત્ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક સે લેકર પર્યાપ્તવનસ્પતિકાયિકાન્ત સમસ્ત એકેન્દ્રિય જીવ, અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક સે લેકર પર્યાપ્તસૂક્ષ્મવનસ્પતિકાયિકાન્તોં મેં લોકકે દક્ષિણ ચરમાન્તમેં અનકે સમવહત હોને પર લોકકે દક્ષિણ ચરમાન્ત મેં હી જિસ રૂપસે એકસમયવાલે વિગ્રહ સે દો સમયવાલે વિગ્રહ સે ત્રીસમયવાલે વિગ્રહ સે ઓર ચાર સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉપપાદિત પ્રકટ કિયે ગયે હૈ 'એવં દાહિણિલ્લે સમોહઓ પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે ઉવવાણ્યવ્વો' હમી પ્રકાર સે લોકકે દક્ષિણ ચરમાન્ત મેં સમવહત હુએ જીવ કા પશ્ચિમ

વળસહકાઇપસુ એવ પજ્જતપસુ દાહિણિલ્લે ચરિમંતે। ઉવવાહઓ' સૂત્રકારે આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ કરેલ છે. આ કથનથી તેઓએ એ સમજાવ્યું છે કે જે પ્રમાણે યાવત્ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક એવ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક પશુથી દક્ષિણ ચરમાન્તમાં જ ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં કથન કર્યું છે. અર્થાત્ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વિકાયિકથી લઈને પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક સુધીના સઘળા એકેન્દ્રિયવાળા જીવો, અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વિકાયિકથી લઈને પર્યાપ્ત વનસ્પતિ કાયિકોમાં લોકના દક્ષિણ ચરમાન્તમાં તેઓના સમઘાત કરવાથી લોકના દક્ષિણ ચરમાન્તમાં જ જે રૂપથી-એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી, એ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી અને ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં કથન કરવામાં આવેલ છે. 'એવં દાહિણિલ્લે સમોહઓ પચ્ચત્થિમિલ્લે ! ચરિમંતે ઉવવાણ્યવ્વો' એજ પ્રમાણે લોકના દક્ષિણ ચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત કરેલ જીવનો ઉપપાત પશ્ચિમ

ડપિ વક્તવ્ય ઇતિ । પરન્તુ પૂર્વાપેક્ષયા યદ્ વૈલક્ષણ્યં તદ્દર્શયતિ ‘નવરં’
 ઇત્યાદિ ‘નવરં દુસમહય-તિસમહય-ચડસમહય વિગ્રહો’ નવરમ્-કેવલં વૈલક્ષણ્ય
 મિદમેવ યત્ દ્વિસામયિક-ત્રિસામયિક-ચતુઃસામયિકો વિગ્રહો વર્ણનીયો ન તુ
 એકસામયિકો વિગ્રહોઽત્ર સમ્ભવતિ । ‘સેસં તહેવ’ શેપં નવરમિત્યાદિના યત્કથિતં
 તદતિરિક્તં સર્વમુત્પાતપ્રકારાદિકં પૂર્વવદેવ તત્ર નાસ્તિ કિમપિ વૈલક્ષણ્યમિતિ ।
 ‘દાહિણિલ્લે સમોહઓ ઉત્તરિલ્લે ચરિમંતે ઉવવાણ્યવ્વો જહેવ સઢાણે’ દક્ષિણે લોક-
 ચરમાન્તે સમવહતઃ ઉત્તરચરમાન્તે ઉપપાતયિતવ્યઃ, યથૈવ સ્વસ્થાને । સ્વસ્થાને ઇતિ
 યત્ર ચરમાન્તે સમવહત સ્તત્રૈવ ચરમાન્તે ઉપપાતો ભવતિ, તથાવિધે સ્વસ્થાને ઇતિ ।
 ચરમાન્ત મેં મ્હી ઉપપાત કહ લેના ચાહિયે । પરન્તુ પૂર્વ કે પ્રકરણ કી
 અપેક્ષા જો હસ પ્રકરણ મેં અન્તર હૈ વહ ‘નવરં દુસમહય ય તિસમહય
 ચડસમહય વિગ્રહો’ હસ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કિયા ગયા હૈ અર્થાત્ હસ
 પ્રકરણ મેં કેવલ એક સમયવાલા વિગ્રહ નહીં કહના ચાહિયે । કિન્તુ દો
 સમયવાલા ત્રીન સમયવાલા ઓર ચારસમયવાલા વિગ્રહ કહના ચાહિયે ।
 એકસમયવાલા વિગ્રહ યહાં સંભવિત નહીં હો સકને સે વક્તવ્ય નહીં
 કહા ગયા હૈ । ‘સેસં તહેવ’ હસકે અતિરિક્ત ઓર સઘ ઉપપાતોદિ
 સમ્બન્ધી કથન ઓર ઉપપાત પૂર્વોદિત જૈલા હી હૈ । ડસમેં કોઈ અન્તર
 નહીં । ‘દાહિણિલ્લે સમોહઓ ઉત્તરિલ્લે ચરિમંતે ઉવવાણ્યવ્વો જહેવ
 સઢાણે’ સ્વસ્થાન કે જૈલા દક્ષિણ ચરમાન્ત મેં મરણ ઓર ઉત્તર ચરમા
 ન્તમેં ઉપપાત કહના ચાહિયે । જિસ ચરમાન્ત મેં સમવહત ‘સમુદ્ઘાત’
 હુઆ જીવ ડસી ચરમાન્ત મેં જો ઉત્પન્ન હોતા હૈ વહ સ્વસ્થાન હૈ-

ચરમાન્તમાં પણ કહેવો જોઈએ પરંતુ પહેલાના કથનની અપેક્ષાએ આ
 પ્રકરણમાં જે અંતર-દેશકાર છે, તે ‘નવરં દુસમહય તિસમહય ચડસમહય
 વિગ્રહો’ આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ કરવામાં આવેલ છે. અર્થાત્ આ પ્રકરણમાં
 કેવળ એક સમયવાળી વિગ્રહગતિ કહેવી ન જોઈએ પરંતુ જે સમય, ત્રણ
 સમય અને ચાર સમયની વિગ્રહગતિ કહેવી જોઈએ. એક સમયવાળી
 વિગ્રહગતિ અહિયાં સંભવિત ન થઈ શકવાથી તેનું કથન કહ્યું નથી. ‘સેસં
 તહેવ’ આ કથન શિવાય ઉપપાત વિગેરે સઘણું કથન અને ઉપપાતનો પ્રકાર
 પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે જ છે તેમાં કોઈ જ દેશકાર કહેલ નથી. ‘દાહિણિલ્લે સમો
 હઓ ઉત્તરિલ્લે ચરિમંતે ઉવવાણ્યવ્વો જહેવ સઢાણે’ સ્વસ્થાનના કથન પ્રમાણે
 દક્ષિણ ચરમાન્તમાં મરણ અને ઉત્તર ચરમાન્તમાં ઉપપાત કહેવો જોઈએ. જે
 ચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત કરેલ છવ જોજ ચરમાન્તમાં જે ઉત્પન્ન થાય છે, તે
 સ્વસ્થાન કહેવાય છે. જેમ કે લોકના પૂર્વ ચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત કરેલ છવ

તહા-‘તહેવ એગસમઇય-દુસમઇય-તિસમઇય-ચડસમઇય વિગ્ગહો’ તથેવ પૂર્વોક્ત-
 દેવ એકસામયિક-દ્વિસામયિક-ત્રિસામયિક-ચત્તુઃસામયિકો વિગ્ગહો ભવતીતિ ।
 ‘પુરત્થિમિલ્લે જહા પચ્ચત્થિમિલ્લે તહેવ દુસમઇય-તિસમઇય-ચડસમઇય વિગ્ગહો’
 દક્ષિણે લોકચરમાન્તે સમવહત્ત્વ પૌરસ્ત્યે ચરમાન્તે ઉપપાતસ્તુ યથા-દક્ષિણે
 સમવહત્ત્વ પશ્ચિમે કથિત સ્તથેવ દ્વિસામયિક-ત્રિસામયિકો વિગ્ગહો વર્ણયિતવ્યઃ,
 ઉપપાતપ્રકારઃ સમગ્રોઽપિ સ્વયમેવોદનીયઃ, ‘પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોદયાણં
 પચ્ચત્થિમિલ્લે ચેવ ઉવવજ્જમાણાણં જહા સદ્ધાણે’ પશ્ચિમે ચરમાન્તે સમવહતાનાં
 જૈસે લોકકે પૂર્વ ચરમાન્ત મેં સમવહત દુઆ જીવ જથ લોકકે હી
 પૂર્વચરમાન્ત મેં ઉત્પન્ન હોતા હૈ તો યહ સ્વસ્થાન ઉત્પાત હૈ । સ્વસ્થાન
 મેં ઉત્પન્ન દુએ જીવકો વહાં ઉત્પન્ન હોને મેં એકસમયવાલા વિગ્ગહ ભી
 હોતા હૈ દોસમયવાલા વિગ્ગહ ભી હોતા હૈ, ત્રીન સમયવાલા
 વિગ્ગહ ભી હોતા હૈ ઓર ચારસમયવાલા વિગ્ગહ ભી હોતા હૈ ।
 હસી પ્રકાર સે દક્ષિણ ચરમાન્ત મેં સમવહત દુએ જીવ ઉત્તર ચર-
 માન્ત મેં ઉત્પન્ન હોને પર વહો પર ભી ઉસે એસે હી સમયવાલા
 વિગ્ગહ હોતા હૈ । ‘પુરત્થિમિલ્લે જહા પચ્ચત્થિમિલ્લે તહેવ દુસમઇય
 તિસમઇય ચડસમઇય વિગ્ગહો’ પશ્ચિમ ચરમાન્ત કે જૈસા પૂર્વચરમાન્ત
 મેં દો સમયવાલા, ત્રીનસમયવાલા ઓર ચારસમયવાલા વિગ્ગહ હોતા
 હૈ । હસ સમ્બન્ધ મેં ઉપપાત પ્રકાર સ્પૂર્ણરૂપસે અપને આપ ઉદ્ભા-
 વિત કર લેના ચાહિયે । ‘પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોદયાણં પચ્ચત્થિ-
 મિલ્લે ચેવ ઉવવજ્જમાણાણં જહા સદ્ધાણે’ પશ્ચિમ ચરમાન્ત મેં સમુદ્ધાત

જ્યારે લોકના પૂર્વચરમાન્તમાં જ ઉત્પન્ન થાય છે, તો તે સ્વાસ્થાનમાં
 ઉત્પાદ કહેવાય છે. સ્વસ્થાનમાં ઉત્પન્ન થયેલા જીવને ત્યાં ઉત્પન્ન થવામાં
 એક સમયવાળી વિગ્ગહગતિ પણ હોય છે, બે સમયવાળી વિગ્ગહગતિ
 પણ હોય છે, ત્રણ સમયવાળી વિગ્ગહગતિ પણ હોય છે. અને ચાર સમયવાળી
 વિગ્ગહગતિ પણ હોય છે. એજ રીતે દક્ષિણ ચરમાન્તમાં સમુદ્ધાત કરેલ જીવને
 ઉત્તર ચરમાન્તમાં ઉત્પન્ન થાય ત્યારે પણ તેને આ પ્રમાણેના સમયવાળી વિગ્ગહ-
 ગતિ હોય છે. ‘પુરત્થિમિલ્લે જહા પચ્ચત્થિમિલ્લે તહેવ દુસમઇય તિસમઇય
 ચડસમઇય વિગ્ગહો’ પશ્ચિમ ચરમાન્તના કથન પ્રમાણે પૂર્વ ચરમાન્તમાં
 બે સમયવાળી ત્રણ સમયવાળી અને ચાર સમયવાળી વિગ્ગહગતિ હોય છે. આ
 વિષય સંબંધી ઉપપાતનો પ્રકાર સંપૂર્ણપણાથી સ્વયં જાનાવી સમજ લેવો જોઈએ.
 ‘પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોદયાણં પચ્ચત્થિમિલ્લે ચેવ ઉવવજ્જમાણાણં જહા
 સદ્ધાણે’ પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં સમુદ્ધાત કરીને પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં જ ઉત્પન્ન

પશ્ચિમે એવ ચરમાન્તે ઉત્પદ્યમાનાનાં યથા સ્વસ્થાને ઉપપાતઃ કથિત સ્તથૈવ
 એકસામયિક વિગ્રહાદારમ્બ યાવત્ ચતુઃસામયિકો વિગ્રહો વ્યાવર્ણનીય ઇતિ ।
 ‘ઉત્તરિલ્લે ઉવવજ્જમાણાણં એગસમહો વિગ્ગહો નત્થિ સેસં તહેવ’ પશ્ચિમે સમ-
 વહતાના મુત્તરે લોકચરમાન્તે સમુત્પદ્યમાનાનામેકસામયિકો વિગ્રહો નાસ્તિ-
 ન ભવતિ, દ્વિ ત્રિ ચતુઃસામયિકવિગ્રહાસ્તુ સન્ત્યેવ, શેષમ્-ઉપપાતપ્રકારાદિકં
 સર્વં તુ પૂર્વવદેવ જ્ઞાતવ્યમિતિ । ‘પુરત્થિમિલ્લે જહા સદ્દાણે’ પાશ્ચાત્યે સમવહ-
 તાનાં પૌરસ્ત્યે પૂર્વચરમાન્તવિષયે ઉત્પદ્યમાનાનાં યથા-સ્વસ્થાને સમુદ્ધાતો-
 પપાતયોરેક સ્થાનરૂપે કથિતં તથૈવ ઇદાપિ સર્વં જ્ઞાતવ્યમિતિ । ‘દાદિણિલ્લે

કરકે પશ્ચિમ હી ચરમાન્ત મેં ઉત્પન્ન હુએ પૃથિવીકાયિક આદિ જીવોં કે
 સમ્બન્ધ મેં જૈસા ઉપપાત સ્વસ્થાન મેં કહા ગયા હૈં ઉસી પ્રકાર સે વહ
 વહાં એક સમયવાલા યાવત્ ચાર સમયવાલા હોતા હૈં એસા કહ લેના
 ચાહિયે । ‘ઉત્તરિલ્લે ઉવવજ્જમાણાણં એગસમહો વિગ્ગહો નત્થિ-સેસં
 તહેવ’ પશ્ચિમદિશા સે સમવહત હુએ જીવોં કે ઉત્તર ચરમાન્ત મેં
 ઉપપાત હોને પર વહાં ઉનકે ઉપપાત મેં એકસમયવાલા વિગ્રહ નહીં
 હોતા હૈં કિન્તુ દો સમયવાલા યાવત્ ચાર સમયવાલા વિગ્રહ હોતા હૈં ।
 બાકીકા ઔર સબ ઉપપાત પ્રકાર આદિ કા કથન પૂર્વોક્ત જૈસા હી હૈં ।
 ‘પુરત્થિમિલ્લે જહા સદ્દાણે’ પશ્ચિમ ચરમાન્ત મેં સમવહત હુએ જીવોં કે
 પૂર્વચરમાન્ત મેં ઉત્પન્ન હોને પર વહાં સ્વસ્થાન કે ઉત્પાદ કે જૈસા
 ઉત્પાદ કહના ચાહિયે । અર્થાત્ વે જીવ વહાં એકસમયવાલે વિગ્રહ સે
 બી ઉત્પન્ન હોતે હૈં દો સમયવાલે વિગ્રહ સે બી ઉત્પન્ન હોતે હૈં ત્રીસમ-

થયેલા પૃથ્વીકાયિક વિગેરે જીવોના સમ્બન્ધમાં સ્વસ્થાનમાં જે રીતે ઉપપાત
 કહેલા છે, એજ રીતે તે ત્યાં એક સમયવાળો યાવત્ ચાર સમયવાળો હોય
 છે, તેમ સમજવું. ‘ઉત્તરિલ્લે ઉવવજ્જમાણાણં એગસમહો વિગ્ગહો નત્થિ સેસં
 તહેવ’ પશ્ચિમ દિશામાં સમુદ્ધાત કરેલા જીવોના ઉપપાત ઉત્તર ચરમાન્તમાં
 થાય ત્યારે ત્યાં તેના ઉપપાતમાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિ હોતી નથી. પરંતુ
 જે સમયવાળી યાવત્ ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિ હોય છે. બાકીનું ઉપપાત
 વિગેરે સઘળું કથન પહેલાં કહ્યા પ્રમાણેનું જ છે. ‘પુરત્થિમિલ્લે જહા સદ્દાણે’
 પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં સમુદ્ધાત કરેલા જીવો પૂર્વ ચરમાન્તમાં ઉત્પન્ન થાય
 ત્યારે ત્યાં સ્વસ્થાનના ઉત્પાદના કથન પ્રમાણે ઉપપાદ કહેવો જોઈએ. અર્થાત્
 તે જીવો ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, જે સમય
 વાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ

एगसमइओ विगहो नत्थि सेसं तं-चेव' पाश्चात्थे समवहतानां दक्षिणचरमान्ते उत्पद्यमानानाम् एकसामयिका विग्रहो नास्ति शेष मन्यत्सर्वं पूर्ववदेवेति ।

‘उत्तरिल्ले समोदयाणं उत्तरिल्ले चेव उववज्जमाणाणं जहेव सट्ठाणे’ उत्तरे चरमान्ते समवहताना मुत्तरे एव चरमान्ते समुत्पद्यमानानां यथैव स्वस्थाने एकसामयिकादारभ्य यावत् चतुःसामायको विग्रहो वर्णनीयः । ‘उत्तरिल्ले समोदयाणं पुरत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एवं चेव’ उत्तरचरमान्ते समवहतानां पौरस्त्ये पूर्वचरमान्ते समुत्पद्यमानाना मेवमेव । उत्तरे समवहताना मुत्तरे एव समुत्पद्यमानानां यथा कथितं तथैव ज्ञातव्यम् । ‘नवरं एगसमइओ विगहो यवाले विग्रह से भी उत्पन्न होते हैं और चारसमयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होते हैं । ‘दाहिणिल्ले एगसमइओ विगहो नत्थि सेसं तं चेव’ पश्चिम चरमान्त में समवहत जीवों के दक्षिण चरमान्त में उत्पन्न होने पर एक समयवाला विग्रह नहीं होता है । इसके अतिरिक्त और सब कथन पूर्वके जैसा ही है ।

‘उत्तरिल्ले समोदयाणं उत्तरिल्ले चेव उववज्जमाणाणं जहेव सट्ठाणे’ लोकके उत्तर चरमान्त में समवहत हुए जीवोंका उत्तर चरमान्त में ही उत्पन्न होने के सम्बन्ध में एक समय से लेकर यावत् चारसमयतक का विग्रह होता है । ऐसा जानना चाहिये । ‘उत्तरिल्ले समोदयाणं पुरत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एवं चेव’ उत्तर चरमान्त में समवहत हुए जीवों का पूर्वदिशा में उपपात होने के सम्बन्ध में भी दो समय से लेकर चारसमय तकका विग्रह होता है । यहाँ एक-

ઉત્પન્ન થાય છે, ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે. ‘દાહિણિલ્લે એગસમઇઓ વિગહો નત્થિ સેસં તં ચેવ’ પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં સમુદ્ધાત કરેલ જીવ દક્ષિણ ચરમાન્તમાં ઉત્પન્ન થાય ત્યારે એક સમયવાળી વિગ્રહગતિ હોતી નથી. આ શિવાય સમગ્રું કથન પહેલા કહ્યા પ્રમાણે છે. તેમ સમજવું.

‘उत्तरिल्ले समोदयाणं उत्तरिल्ले चेव उववज्जमाणाणं जहेव सट्ठाणे’ લોકના ઉત્તર ચરમાન્તમાં સમુદ્ધાત કરેલ જીવોના ઉત્તર ચરમાન્તમાં ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં એક સમયથી લઈને યાવત્ ચાર સમય સુધીની વિગ્રહગતિથી હોય છે. ‘उत्तरिल्ले समोदयाणं पुरत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एवं चेव’ ઉત્તર ચરમાન્તમાં સમુદ્ધાત કરેલ જીવોના ઉપપાત પૂર્વદિશામાં થવાના સંબંધમાં પણ બે સમયથી લઈને ચાર સમય સુધી વિગ્રહગતિ હોય છે. અહિયાં એક સમયની વિગ્રહગતિ હોતી નથી. એજ વાત ‘नवरं एगसमइओ विगहो नत्थि’ આ સૂત્રપાઠદ્વારા પ્રગટ કરવામાં આવેલ છે.

નત્થિ' નવરં કેવલ્લમ્ એકસામયિકો વિગ્રહો નાસ્તિ-ન વક્તવ્યઃ કિન્તુ દ્વયાદિ સામયિક એવ વિગ્રહો વક્તવ્ય ઇતિ । 'ઉત્તરિલ્લે સમોદયાણં દાહિણિલ્લે ઉવવજ્જમાણાણં જહા સટ્ટાણે' ઉત્તરે ચરમાન્તે સમવહતાનાં દક્ષિણે ચરમાન્તે સમુપધમાનાનાં યથા સ્વસ્થાને એકસામયિકાદારમ્બ્ય ચતુસામયિકો વિગ્રહો વક્તવ્ય ઇતિ । 'ઉત્તરિલ્લે સમોદયાણં પચ્ચત્થિમિલ્લે ઉવવજ્જમાણાણં એગસમહો વિગ્રહો નત્થિ સેસં તહેવ' ઉત્તરે લોકચરમાન્તે સમુપધમાનાના મેકસામયિકો વિગ્રહો ન ભવતિ, કિન્તુ દ્વયાદિ સામયિક એવ વિગ્રહો વર્ણયિતવ્યઃ । શેષમ્-પ્રાથમિક વિગ્રહવ્યતિરિક્તં સર્વં પૂર્વવદેવ વર્ણનીયમ્ । કિયત્પર્યન્તં પૂર્વમ્કરણમ્ભુમ્મરણીયમ્, 'તત્રાહ-જાવ' ઇત્યાદિ । 'જાવ સુહુમવણસ્સહકાહો પજ્જત્તઓ સુહુમ્વણસ્સહ સમયકા વિગ્રહ નહીં હોતા છે । યહી યાત 'નવરં એગસમહો વિગ્રહો નત્થિ' હલ સૂત્ર પાઠ દ્વારા પ્રકટ થી ગઈ છે ।

'ઉત્તરિલ્લે સમોદયાણં દાહિણિલ્લે ઉવવજ્જમાણાણં જહા સટ્ટાણે' ઉત્તર ચરમાન્ત મેં સમવહત હુએ જીવોં કે દક્ષિણ ચરમાન્ત મેં ઉપપાત કે સમ્બન્ધ મેં ઉન્કે સ્વસ્થાન મેં ઉત્પાદ હોને કે જેસા હી એકસમયવાલા દો સમયવાલા ત્રીનસમયવાલા ઓર ચારસમયવાલા વિગ્રહ હોતા છે એસા જાનના ચાહિયે । 'ઉત્તરિલ્લે સમોદયાણં પચ્ચત્થિમિલ્લે ઉવવજ્જમાણાણં એગસમહો વિગ્રહો નત્થિ, સેસં તહેવ' લોકકે ઉત્તર ચરમાન્ત મેં સમવહત હુએ જીવોં કા પશ્ચિમ ચરમાન્ત મેં ઉત્પન્ન હોને કે સમ્બન્ધ મેં દો સમયવાલે વિગ્રહ સે લેકર ચાર સમયવાલા વિગ્રહ હોતા છે । યહાં એકસમયવાલા વિગ્રહ નહીં હોતા છે એસા જાનના ચાહિયે । બાકી કા ઓર સ્વ કથન પૂર્વકે જેસા હી છે । 'જાવ સુહુમવણસ્સહકાહો પજ્જત્તઓ સુહુમવણસ્સહકાહણુ પજ્જત્તણુ ચેવ'

'ઉત્તરિલ્લે સમોદયાણં દાહિણિલ્લે ઉવવજ્જમાણાણં જહા સટ્ટાણે' ઉત્તર ચરમાન્તમાં સમુદ્ધાત કરેલ જીવોનો ઉપપાત દક્ષિણ ચરમાન્તમાં હોવાના સંબંધમાં તેઓને સ્વસ્થાનમાં ઉત્પાદ હોવાની જોમજ એક સમયવાળી, બે સમયવાળી, ત્રણ સમયવાળી અને ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિ હોય છે. તેમ સમજવું. 'ઉત્તરિલ્લે સમોદયાણં પચ્ચત્થિમિલ્લે ઉવવજ્જમાણાણં એગસમહો વિગ્રહો નત્થિ સેસં તહેવ' લોકના ઉત્તર ચરમાન્તમાં સમુદ્ધાત કરેલ જીવોનો ઉપપાત પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં થવાના સંબંધમાં બે સમયવાળી વિગ્રહગતિથી લઈને ચાર સમયવાળી વિગ્રહ ગતિ હોય છે. અહિયાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિ હોતી નથી તેમ સમજવું બાકીનું બીજું સઘણું કથન પડોલા કહ્યા પ્રમાણે જ છે 'જોવ સુહુમવણસ્સહકાહો પજ્જત્તઓ સુહુમવણસ્સહકાહણુ પજ્જત્તણુ ચેવ' આ કથન યાવત

કાઇએસુ પજ્જત્તએસુ ચેવ' યાવત્ સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાયિકઃ પર્યાપ્તકઃ સૂક્ષ્મવનસ્પતિ કાયિકેષુ પર્યાપ્તકેષ્વેવ । અત્ર યાવત્પદેન અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકત આરભ્ય અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાયિકાન્તસ્થ ગ્રહણં ભવતિ । દ્વાદશાનાં દ્વાદશસ્થાનેષુ ઉપપાતપ્રકારઃ સ્વયમેત્રોહનીય ઇતિ ॥સૂ.૦૭॥

एवमुत्पादमधिकृत्य एकेन्द्रियप्ररूपणा कृता, अथ तेषामेव स्थानादि प्ररूपणायाह—‘कहिं णं भंते !’ इत्यादि ।

મૂલમ્—કહિં ણં ભંતે ! બાયરપુઢવીકાઇયા ણં પજ્જત્તગાળં ઠાળા પળણત્તા ? ગોયમા ! સટ્ટાળેણં અટ્ટસુ પુઢવીસુ જહા ઠાળ-પદે જાવ સુહુમવણસ્સઙ્કાઇયા જે ય પજ્જત્તગા જે ય અપજ્જત્તગા તે સઠ્ઠે એગ્ગિવિહા અવિસેસમણાળત્તા સઠ્ઠલોગપરિયાવન્ના પન્નત્તા સમણાઉસો ! અપજ્જત્તસુહુમપુઢવીકાઇયા ણં ભંતે ! કઙ્ક કમ્મ-પગડીઓ પન્નત્તાઓ ? ગોયમા ! અટ્ટ કમ્મપગડીઓ પન્નત્તાઓ, તં જહા નાળાવરણિજ્ઞં જાવ અંતરાઇયં । એવં ચઠ્ઠકાળં ભેણં જહેવ એગ્ગિદિયસસુ જાવ બાયરવણસ્સઙ્કાઇયાણં પજ્જત્તગાળં । અપજ્જત્તસુહુમપુઢવીકાઇયાણં ભંતે ! કઙ્ક કમ્મપગડીઓ વંધંતિ ? ગોયમા ! સત્તવિહ વંધગા વિ, અટ્ટવિહ વંધગા વિ, જહા એગ્ગિ-

एवं यह कथन 'यावत् पर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिक का पर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिकों में ही उपपात होता है' यहां तक कहना चाहिए यहां यावत्पद से अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक से लेकर अपर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिकान्त के जीवोंका ग्रहण हुआ है । तात्पर्य कहनेका यही है कि १२ प्रकार के जीवोंका १२ प्रकार के स्थानों में उपपात कहना और इस सम्बन्ध में उपपात प्रकार अपने आप उद्भावित कर लेना चाहिए ॥सू.० ७॥

પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિકોના પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિ કાયિકોમાં જ ઉપપાત થાય છે આ કથન સુધી કહેવું જોઈએ એહિયાં યાવત્પદથી અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકથી લઈને અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિ કાયિક સુધીના જીવો ગ્રહણ કરાયા છે કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-૧૨ બ.૨ પ્રકારના જીવોનો ૧૨ બાર પ્રકારના સ્થાનોમાં ઉપપાત કહેવો અને આ સંબંધમાં ઉપપાત પ્રકાર સ્વયં બનાવીને સમજી લેવો જોઈએ, ॥સૂ.૦૭॥

दिय सएसु जाव पज्जत्त वायरवणस्सइकाइया । अपज्जत्तसुहुम-
 पुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ वेदेति ? गोयमा !
 चोदस कम्मपगडीओ वेदेति, तं जहा नाणावरणिज्जं जहा
 एगिंदियसएसु जाव पुरिसवेदवज्झं । एवं जाव वायरवणस्सइ-
 काइयाणं पज्जत्तगाणं । एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति, किं
 नेरइएहिंतो उववज्जंति ? जहा वक्कंतीए पुढवीकाइयाणं उव-
 वाओ । एगिंदियाणं भंते ! कइ समुग्घाया पन्नत्ता ? गोयमा !
 चत्तारि समुग्घाया पन्नत्ता, तं जहा—वेयणा समुग्घाए जाव
 वेउट्ठिवयसमुग्घाए ४ । एगिंदिया णं भंते ! किं तुल्लट्ठिइया तुल्ल-
 विसेसाहियं कम्मं पकरेति । तुल्लट्ठिइया वेमाय विसेसाहियं कम्मं-
 पकरेति ? वेमायट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेति, वेमाय-
 ट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेति ? गोयमा ! अत्थे-
 गइया तुल्लट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेति, अत्थेगइया
 तुल्लट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेति । अत्थेगइया
 वेमायट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेति । अत्थेगइया
 वेमायट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेति । से केणट्ठेणं
 भंते ! एवं तुच्चइ ? अत्थेगइया तुल्लट्ठिइया जाव वेमायविसे-
 साहियं कम्मं पकरेति ? गोयमा ! एगिंदिया चउट्ठिवहा पन्नत्ता,
 तं जहा—अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा । १ । अत्थेगइया
 समाउया विसमाउया समोववन्नगा । २ । अत्थेगइया विसमाउया समो-
 ववन्नगा । ३ । अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा । ४ ।
 तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा तेणं तुल्लट्ठिइया तुल्ल-
 विसेसाहियं कम्मं पकरेति १ । तत्थ णं जे ते समाउया विसमो-
 ववन्नगा ते णं तुल्लट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेति २ ।

तत्थ णं जे ते विसमाउथा समोववन्नगा ते णं वेमायट्ठिइया
तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ३। तत्थ णं जे ते विसमाउथा
विसमोववन्नगा ते णं वेमायट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं
पकरेंति ४। से तेणट्ठेणं गोयसा ! जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं
पकरेंति ! सेवं भंते ! सेवं भंतं ! त्ति जाव विहरइ ॥सू० ८॥

चउतीसइमे सए पढमे एगिंदियसए पढमो उद्देसो समन्नो ॥३४-१॥

छाय—कुत्र खलु भदन्त ! चादर पृथिवीकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि
प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! स्वस्थानेनाष्टासु पृथिवीषु यथा स्थानपदे यावत् सूक्ष्मवन-
स्पतिकायिका ये च पर्याप्तका ये चापर्याप्तका स्ते सर्वे एकविधा अविशेषा
अनानात्वाः, सर्वलोके पर्यापन्नाः प्रज्ञप्ताः श्रवणाद्युत्पन् ! अपर्याप्तं सूक्ष्मपृथिवी
कायिकानां भदन्त ! कति कर्मप्रकृताः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अष्टौ कर्मप्रकृतयः
प्रज्ञप्ताः । तद्यथा—ज्ञानावरणीयं यावदन्तरागिकम् । एवं चतुष्केन भेदेन यथैव
एकेन्द्रियशतकेषु यावद् चादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तकानाम् । अपर्याप्तं
सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! कति कर्म प्रकृतीर्वहन्ति ? गौतम ! सप्त
विधवन्धका अपि अष्टविधवन्धका अपि, यथा एकेन्द्रियशतकेषु यावत् पर्याप्ता
चादरवनस्पतिकायिकाः । अपर्याप्तं सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त !
कति कर्मप्रकृति वेदयन्ति ? गौतम ! चतुर्दशकर्मप्रकृति वेदयन्ति । तद्यथा—
ज्ञानावरणीयं यथा एकेन्द्रियशतेषु यावत्पुरुषवेदवन्धम् । एवं यावद् चादरवन-
स्पतिकायिकानां पर्याप्तकानाम् । एकेन्द्रियाः । एकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत्र
उत्पद्यन्ते ? किं नैरयिकेभ्य उत्पद्यन्ते ? यथा व्युत्क्रान्तौ पृथिवीकायिकाना-
मुपपातः । एकेन्द्रियाणां भदन्त ! कति समुद्घाताः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! चत्वारः
समुद्घाताः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा—वेदनासमुद्घातो १ यावद् वैक्रियसमुद्घातः
४ एकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! किं तुल्यस्थितिकाः तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकु-
र्वन्ति ? तुल्यस्थितिका विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति ? विमात्रस्थितिका
स्तुल्य विशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति ? विमात्रस्थितिका विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकु-
र्वन्ति ? गौतम ! अस्त्येकके तुल्यस्थितिकाः तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति ।
अस्त्येकके तुल्यस्थितिका विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति अस्त्येकके विमात्र
स्थितिकाः तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति । तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते
अस्त्येकके तुल्यस्थितिका यावद् विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति ? गौतम ! एके-
न्द्रियाश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा—अस्त्येकके समायुष्काः समोपपन्नकाः १ अस्त्ये-

કકે સમાયુક્તા વિષમોપપન્નકાઃ ૨ । અસ્ત્યેકકે વિષમાયુક્તાઃ સમોપપન્નકાઃ ૩ । અસ્ત્યેકકે વિષમાયુક્તાઃ વિષમોપપન્નકાઃ ૪, તત્ર खलु ये ते समायुक्ताः समोपपन्नकास्ते खलु तुल्यस्थितिकास्तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति १ तत्र खलु ये ते समायुक्ता विषमोपपन्नकास्ते खलु तुल्यस्थितिका विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति २ तत्र खलु ये ते विषमायुक्ताः समोपपन्नकाः ते खलु विमात्रस्थितिकास्तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति ३ तत्र खलु ये ते विषमायुक्ता विषमोपपन्नकास्ते खलु विमात्रस्थितिका विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति ४ तत्तेनार्थेन गौतम ! यावद् विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति यावद्विहरति ॥ સુ૦ ૮ ॥

इति चतुस्त्रिंशत्तमे शतके प्रथमे एकेन्द्रियशते प्रथमोद्देशकः समाप्तः ।

ટીકા—‘કહિ ણં મંતે ! વાયરપુઢવીકાઈયાણં પજ્જત્તગાણં ઠાણા પન્નત્તા’ કુત્ર खलु भदन्त ! वादरपृथिवीकाइकानां पर्याप्तता गुणविशिष्टानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि—कथितानि, इति स्थानविषयकः प्रश्नः, भगवानाह—‘गोयमा’ इत्यादि । ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘सद्वाणेणं अट्टसु पुढवीसु’ स्वस्थानेनाण्टसु पृथिवीसु रत्नप्रभापृथिवीत आरभ्य तमस्तमापृथिवी पर्यन्तासु सप्तसु, अष्टम्यां च ईष-

इस प्रकार से उत्पादको आश्रित करके सूत्रकारने एकेन्द्रिय जीवों की प्ररूपणा की अब उन्हीं के स्थान आदिकों की प्ररूपणा के लिये वे सूत्र का कथन करते हैं—‘कहि णं मंते ! वायरपुढवीकाइयाणं’ इत्यादि

ટીકાર્થ—‘કહિ ણં મંતે ! વાયરપુઢવીકાઈયાણં પજ્જત્તગાણં ઠાણા પણ્ણત્તા’ હે ભદન્ત ! પર્યાપ્ત વાદપૃથિવીકાયિકોંકે સ્થાન કહાં પર કહે ગયે હું । ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હું—‘ગોયમા ! સદ્વાણેણં અટ્ટસુ પુઢવીસુ’ સ્વ-સ્થાન કી અપેક્ષા સે પર્યાપ્ત વાદરપૃથિવીકાયિકોંકે સ્થાન રત્નપ્રભાપૃથિવી

આ રીતે ઉત્પાદનો આશ્રય કરીને સૂત્રકારે એકેન્દ્રિય જીવોની પ્રરૂપણા કરી છે. હવે તેમના જ સ્થાન વિગેરેની પ્રરૂપણા કરવા માટે સૂત્રકાર સૂત્રનું કથન કરે છે.—‘કહિ ણં મંતે ! વાયર પુઢવીકાઈયાણ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—‘કહિ ણં મંતે ! વાયરપુઢવીકાઈયાણં પજ્જત્તગાણં ઠાણા પન્નત્તા’ હે ભગવન્ પર્યાપ્ત વાદર પૃથ્વીકાયિકોના સ્થાનો કયા કહેવામાં આવ્યા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—‘ગોયમા ! સદ્વાણેણં અટ્ટસુ પુઢવીસુ’ સ્વસ્થાનની અપેક્ષાથી પર્યાપ્ત વાદર પૃથ્વીકાયિકોનું સ્થાન રત્નપ્રભા પૃથ્વીથી સદ્યે તમઃતમા સુધીની સાત પૃથ્વીઓમાં અને આઠમી ધૃતિપ્રાગભારા

તપાગભારાપૃથિવ્યા મિત્યષ્ટસુ પૃથિવીષુ સ્વસ્થાનં ચત્ર વાદરપૃથિવીકાયિક આસ્તે તેન સ્વસ્થાનેન સ્વસ્થાનમાશ્રિત્યેત્યર્થઃ । ‘જહા ઠાળપદે’ યથા સ્થાનપદે’ સ્થાન પદં ચ પ્રજ્ઞાપનાસૂત્રરચ દ્વિતીયં પદમ્ । તચ્ચૈવમ્, ‘તં જહા રચણપ્પમાણ સકર-પ્પમાણ વાલુયપ્પમાણ’ ઇત્યાદિ । કિયત્પર્યન્તમિહ સ્થાનપદમધ્યેતવ્યમ્, તત્રાહ- ‘જાવ’ ઇત્યાદિ, ‘જાવ સુહુમવણસ્સહકાહયા’ યાવત્ સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાયિકાઃ ઇતિ પર્યન્તમ્, અત્ર યાવત્પદેન વાદરપૃથિવીકાયિકાનન્તરં સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાઃ, વાદ-રાપ્કાયિકાઃ, સૂક્ષ્માપ્કાયિકાઃ વાદરતેજસ્કાયિકાઃ, સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિકાઃ વાદર-વાયુકાયિકાઃ, સૂક્ષ્મવાયુકાયિકાઃ, વાદરવનસ્પતિકાયિકાઃ, ઇત્યેવાં ગ્રહણં ભવતિ । એતે ચ ‘જે ય પઞ્જત્તગા જે ય અપઞ્જત્તગા તે સવ્વે’ યે ચ પર્યાપ્તકા યે ચ

સે લેકર તમસ્તમા તકક્કી સ્થાન પૃથિવિચોં મેં ઓર આઠવીં ઈષત્પાગભારા પૃથિવી મેં કહે ગયે હિં । ક્યોંકિં હન પૃથિવિચોં મેં વાદરપૃથિવીકાયિક જીવ રહતે હિં । હસીલિયે યહાં સ્વસ્થાન કો આશ્રિત કરકે વાદરપૃથિવી-કાયિક જીવોં કે સ્થાન કહે ગયે હિં । ‘જહા ઠાળપદે’ પ્રજ્ઞાપના સૂત્રકા સ્થાન પદ દ્વિતીય પદ હૈ-ઉસ્મિં એલા પ્રકટ કિયા ગયા હૈ-‘તં જહા-રચણપ્પમાણ સકરપ્પમાણ વાલુયપ્પમાણ’ ઇત્યાદિ-કિ રત્નપ્રમા-પૃથિવી મેં, શર્કરાપ્રમા પૃથિવી મેં વાલુકાપ્રમા પૃથિવી મેં ઇત્યાદિ પ્રકટ કિયા ગયા હૈ । ‘જાવ સુહુમવણસ્સહકાહયા’ યાવત્ સૂક્ષ્મવનસ્પતિકા-યિક, જીવોં કા સ્થાન હૈ ‘યહાં યાવત્પદ સે વાદર પૃથિવીકાયિક કે વાદ ‘સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક, વાદર અપ્કાયિક, સૂક્ષ્મઅપ્કાયિક, વાદર-તેજસ્કાયિક, સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિક, વાદરવાયુકાયિક, સૂક્ષ્મવાયુકાયિક ઓર વાદરવનસ્પતિકાયિક’ હન સવકા ગ્રહણ હુઆ હૈ । ‘જે ય પઞ્જ-ત્તગા જે ય અપઞ્જત્તગા તે સવ્વે’ યે સવ ચાહે પર્યાપ્ત હો ચાહે અપર્યાપ્ત

પૃથ્વીમાં કહેવામાં આવ્યા છે. કેમકે આ પૃથ્વીઓમાં બાદર પૃથ્વીકાયિક જીવો રહે છે. તેથી અહિયાં સ્વસ્થાનનો આશ્રય કરીને બાદર પૃથ્વીકાયિક જીવોના સ્થાનો કહેવામાં આવેલ છે. ‘જહા ઠાળપદે’ પ્રજ્ઞાપના સૂત્રનું બીજું જે સ્થાન પદ કહેલ છે, તેમાં એ પ્રમાણે કહેલ છે ‘તં જહા રચણપ્પમાણ સકરપ્પમાણ વાલુયપ્પમાણ’ ઇત્યાદિ રત્નપ્રમા પૃથ્વીમાં, શર્કરા પ્રમા પૃથ્વીમાં, વાલુકા પ્રમા પૃથ્વીમાં ‘જાવ સુહુમ વણસ્સહ કાહયા’ યાવત્ સૂક્ષ્મ વનસ્પતિ-કાયિક જીવોનું સ્થાન છે. અહિયાં યાવત્પદથી બાદર પૃથ્વીકાયિક પછી સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક અને બાદર અપ્કાયિક સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક, બાદર તેજસ્કાયિક, સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિક બાદર વાયુકાયિક સૂક્ષ્મવાયુકાયિક અને બાદર વનસ્પતિકાયિક આ બધા ગ્રહણ કરાયા છે. ‘જે ય પઞ્જત્તગા જે ય અપઞ્જત્તગા તે સવ્વે’ આ

અપર્યાપ્તકા સ્થે સર્વે 'અગ્નિદા' એકવિધાઃ એકપ્રકારકા એવ પ્રકૃત સ્વસ્થાનાદિ વિચાર મધિકૃત્યૌઘનાઃ, 'અવિસેસમણાણત્તા' અવિશેષા અનાનાત્વાઃ અવિશેષાઃ વિશેષરહિતાઃ, યથા પર્યાપ્તકા સ્તથૈવેતરેડપિ અનાનાત્વાઃ નાનાત્વવર્જિતાઃ યેષ્વેવ આધારભૂતાકાશપ્રદેશેષુ એકે-પર્યાપ્તકા-ભવન્તિ તેષ્વેવ ઇતરે અપર્યાપ્તા અપિ ભવન્તીત્યર્થઃ । 'સર્વલોગ પરિયાવન્ના' સર્વલોકપર્યાવન્નાઃ ઉપપાત સમુદ્ધાત સ્વસ્થાનૈઃ સર્વલોકે વર્તન્તે ઇત્યર્થઃ, તત્રોપપાત ઉપપાતામિસુસ્થમ્' સમુદ્ધાત રૂપ મારણાન્તકાદિઃ સ્વસ્થાનં યત્ર તે આસતે 'પન્નત્તા' પ્રજ્ઞપ્તાઃ-કથિતાઃ । 'સમણાડસો' હે શ્રમણ । હે આયુષ્મન્ ! એતેપાં સર્વેપામાલાપકપ્રકારઃ પ્રજ્ઞાપના સૂત્રસ્ય દ્વિતીયસ્થાનપદે દ્રષ્ટવ્યઃ તદ્વ્યાખ્યાનમપિ તત્રૈવ મત્કૃત્વાયાં પ્રમેયવોધિની વ્યાખ્યાયાં દ્રષ્ટવ્યમ્ । 'અપજ્જત સુહુમ્પુઢવીકાદ્યાણં ભંતે ! કહ્ કમ્મપગ્ગીઓ

હો સર્વ સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાચિક સામાન્ય સ્થે એક પ્રકાર કે હૈ । इनमें कोई भिन्नता नहीं है । जिस प्रकार पर्याप्तक हैं उसी प्रकार अपर्याप्तक हैं जिन आधारभूत प्रदेशों में पर्याप्तक रहते हैं उन्हीं आकाश प्रदेशों में अपर्याप्तक रहा करते हैं । 'सर्वलोग परियावन्ना' उपपात समुद्घात एवं स्वस्थानों की अपेक्षा से ये सर्वलोक में पाये जाते हैं उत्पत्तिका नाम उपपात है मारणान्तिक आदि समुद्घात है और जहां ये रहते हैं वह स्वस्थान है ।' इस प्रकार से ये हे आयुष्मन् ! श्रमण ! सर्व-लोकमें हैं' इनका आलापक प्रकार प्रज्ञापना सूत्रके द्वितीय स्थान पद में देख लेना चाहिये । इस पर मैंने प्रमेयवोधिनी टीका लिखी है । उस टीका से इसका व्याख्यान समझ लेना चाहिये ।

'અપજ્જત સુહુમ્પુઢવીકાદ્યાણં ભંતે ! કહ્ કમ્મપગ્ગીઓ પગ્ગત્તાઓ

બધા પર્યાપ્ત હોય કે અપર્યાપ્ત હોય બધા સૂક્ષ્મ વનસ્પતિ કાચિક સામાન્ય રીતે એક પ્રકારના છે. તેમાં કાંઈ જ ભિન્ન પણ નથી. જે પ્રમાણે પર્યાપ્તક કહ્યા છે, એજ રીતે અપર્યાપ્તક પણ કહેલા છે, જે આધારભૂત પ્રદેશમાં પર્યાપ્તકો રહે છે, એજ આકાશ પ્રદેશમાં અપર્યાપ્તકો રહે છે. 'સર્વલોગ-પરિયાવન્ના' ઉપપાત સમુદ્ધાત અને સ્વસ્થાનની અપેક્ષાથી આ સર્વ લોકમાં રહેલા છે. ઉત્પત્તિનુ નામ ઉપપાત છે, મારણાન્તિક વિશેરે સમુદ્ધાતો છે. અને જ્યાં તેઓ રહે છે. તે સ્વસ્થાન કહેવાય છે. તેના આલાપકોનો પ્રકાર પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના બીજા સ્થાન પદમાંથી સમજ લેવો જોઈએ.

આ વિષયમાં પ્રમેયવોધિની ટીકા કે જે મેં રચી છે, તેમાંથી આ સંબંધનું કથન સમજ લેવું.

'અપજ્જત સુહુમ્પુઢવીકાદ્યાણં ભંતે ! કહ્ કમ્મપગ્ગીઓ પગ્ગત્તાઓ'

પન્નત્તાઓ' અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાના મેકેન્દ્રિયજીવાનાં સહુ મદન્ત !
 વતિ કર્મપ્રકૃતયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ-કથિતાઃ । એતેષાં કતિ કર્મપ્રકૃતયો મદન્તીતિ પ્રશ્નઃ ।
 મગવાનાહ-‘ગોયમા’ રૂપાદિ । ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘અદૃ કમ્મપગડીઓ પન્ન-
 ત્તાઓ’ અષ્ટૌ કર્મ પ્રકૃતયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ । ‘તં જહા’ તથથા-‘નાણાવરણિજ્જં જાવ
 અંતરાઈયં’ જ્ઞાનાવરણીયં યાવદન્તરાયિકમ્, અત્ર યાવત્પદેન દર્શનાવરણીય, વેદનીય,
 મોહનીયાયુષ્ય નામ ગોત્રકર્મપ્રકૃતીનાં ગ્રહણં ભવતીતિ ભાવઃ । ‘એવં ચઙ્કણં
 મેદેણં જહેવ ઇગિંદિયસણુ’ એવં ચતુષ્કેન મેદેન યથૈવ એકેન્દ્રિયશતકેષુ ત્રય-
 સ્ત્રિશતમે શતકે દ્વાદશસુ એકેન્દ્રિયશતેષુ મધ્યે પ્રથમ એકેન્દ્રિય શતકે પૃથિ-
 વ્યાદિવનસ્પતિકાયિકાન્તાનાં દ્વૌ મેદૌ સૂક્ષ્મવાદરૌ કથિતૌ, તદન્તુ પર્યાપ્તા-
 પર્યાપ્તૌ દ્વૌ મેદૌ, મિલિત્વા ચતુષ્કો ભવતિ’ તદ્વદિહાપિ ચતુષ્કો મેદો

હે મદન્ત ! અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક જીવોં કે કિતની કર્મપ્રકૃતિયોં
 કા સન્ન (સત્તા) કહા ગયા હૈ ? અર્થાત્ इनके कितनी कर्मप्रकृतियां
 होती हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-‘गोयमा ! अदृ कम्मपगडीओ पन्न-
 त्ताओ’ हे गौतम ! इनके आठ कर्म प्रकृतियां कही गई हैं । ‘तं जहा’
 जिनके नाम इस प्रकार से हैं-‘नाणावरणिज्जं जाव अंतराईयं’ ज्ञाना-
 वरणीय यावत् अन्तरायिक यहां यावत् पदसे ‘दर्शनावरणीय वेदनीय
 मोहनीय आयु, नाम, गोत्र, इन प्रकृतियों का ग्रहण हुवा है । ‘एवं
 चङ्कणं मेदेणं जहेव इगिंदियसणु’ इस प्रकार सूक्ष्म, वादर, पर्याप्त
 और अपर्याप्त इन चारों प्रकार के पृथिवीकायिकोंके एवं इन्हीं चारों
 भेदवाले अप્कायिक जीवों के, इन्हीं चारों भेदवाले तेजस्कायिक
 जीवों के, इन्हीं चारों भेदों वाले वायुकायिक जीवों के और इन्हीं

હે ભગવન્ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોને કેટલી કર્મપ્રકૃતિયો કહેવામાં
 આવેલ છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘ગોયમા ! અદૃ કમ્મપગડીઓ
 પન્નત્તાઓ’ હે ગૌતમ ! તેઓને આઠ કર્મપ્રકૃતિયો કહેવામાં આવેલ છે.
 ‘તં જહા’ તેમના નામો આ પ્રમાણે છે. ‘નાણાવરણિજ્જં જાવ અંતરાઈય’
 જ્ઞાનાવરણીય યાવત્ અન્તરાયિક અહિયાં યાવત્ પદથી દર્શનાવરણીય, વેદનીય,
 મોહનીય, આયુ, અને નામ ગોત્ર આ કર્મપ્રકૃતિયો ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે.
 ‘એવં ચઙ્કણં મેદેણં તહેવ ઇગિંદિયસણુ’ આ રીતે સૂક્ષ્મ, વાદર, પર્યાપ્ત
 અને અપર્યાપ્ત આ ચાર પ્રકારના પૃથ્વીકાયિકોના અને આ ચાર ભેદવાળા
 અપ્કાયિકોના એજ પ્રમાણેના ચાર ભેદવાળા તેજસ્કાયિકોના આજ પ્રમાણેના
 ચાર ભેદવાળા વાયુકાયિક જીવોના અને એજ રીતના ચારભેદવાળા વનસ્પતિ
 કાયિક જીવોના જ્ઞાનાવરણીય કર્મપ્રકૃતિથી લઈને અન્તરાયિક કર્મપ્રકૃતિ સુધી

જ્ઞાતવ્યઃ, કિયત્પર્યન્ત મેકેન્દ્રિયશતકં જ્ઞાતવ્યમ્, તત્રાહ-‘જાવ’ ઇત્યાદિ’ ‘જાવ વણસ્સહકાહયાણં પજ્જત્તનાણં’ યાવદ્વનસ્પતિકાયાિકાનાં પર્યાપ્તકાનાં યાવત્પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયાિકત આરમ્ભ અપર્યાપ્ત વાદરવનસ્પતિકાયાિકાન્તસ્ય ગ્રહણં ભવતિ । તથા ચ સૂક્ષ્મવાદરપર્યાપ્તાપર્યાપ્તભેદચિન્નાનાં પૃથિવ્યાદિ વનસ્પતિકાયાિકાન્તાનાં સર્વેકેન્દ્રિયાણાં પચ્છાનામપિ જ્ઞાનાવરણીયાદિકા અન્તરાય-પર્યન્તા અષ્ટૌ કર્મપ્રકૃતયો જ્ઞાતવ્યા હતિ પ્રકરણાશયઃ ।

‘અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહયા ણં મંતે ! કહ કમ્મપગહીયો વંધંતિ’ । અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયાિકાઃ સ્વલુ ભદન્ત ! કતિ-કિયત્સંસ્થકાઃ કર્મપ્રકૃતી વંધન્તીતિ કર્મવન્ધવિષયકઃ પ્રશ્નઃ । મગવાનાહ-‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ । ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘સત્તવિહવંધગા વિ અટ્ટવિહવંધગા વિ’ સપ્તપ્રકારકર્મપ્રકૃતીનાં વન્ધકા અપિ ભવન્તિ સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયાિકા અપર્યાપ્તકાઃ, તથા-અષ્ટવિધકર્મપ્રકૃતીનાં વન્ધકા

ચારો ભેદવાળે વનસ્પતિકાયાિક જીવોં કે જ્ઞાનાવરણીય કર્મ પ્રકૃતિ સે લેકર અન્તરાયિક કર્મપ્રકૃતિ તક ૮ હી કર્મપ્રકૃતિયાં હોતી હૈં એસા જાનના ચાહિયે । ૩૩ વેં શતક રૂપ એકેન્દ્રિય શતક મેં એસા હી પ્રતિ-પાદન સૂત્રકાર ને કિયા હૈં । યહી વાત ‘એવં ચચક્કણં મેદેણં જહેવ ઇન્દિયસણુ જાવ વણસ્સહકાહયાણં પજ્જત્તનાણં’ હસ સૂત્ર પાઠ દ્વારા યહી સમજાઈ ગઈ હૈં ।

‘અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહયા ણં મંતે ! કહ કમ્મપગહીઓ વંધંતિ’ હે ભદન્ત ! અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયાિક જીવ કિતની કર્મ પ્રકૃતિયોં કા વંધ કરતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રમુશ્રી કહતે હૈં-‘ગોયમા ! સત્તવિહ વંધગા વિ અટ્ટવિહ વંધગા વિ’ હે ગૌતમ ! અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયાિક જીવ સાત પ્રકાર કી કર્મપ્રકૃતિયોં કા ઓ વન્ધ કરતે હૈં ઓર ધાઠ

૮આઠ જ કર્મપ્રકૃતિયો હોય છે. તેમ સમજવું. બત્રીસમા શતકના એકેન્દ્રિય શતકમાં સૂત્રકારે એજ પ્રમાણે પ્રતિપાદન કરેલ છે. એજ વાત ‘એવં ચચક્કણં મેદેણં જહેવ ઇન્દિયસણુ જાવ વણસ્સહકાહયાણં’ આ સૂત્રપાઠ દ્વારા અહિયાં સમજાવી છે.

‘અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહયાણં મંતે ! કહ કમ્મપગહીઓ વંધંતિ’ હે ભગવન્ અપર્યાપ્તક પૃથ્વીકાયાિક એવ કેટલી કર્મપ્રકૃતિયોના વંધ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રમુશ્રી કહે છે કે-‘ગોયમા ! સત્તવિહ વંધગા વિ અટ્ટવિહ વંધગા વિ’ હે ગૌતમ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયાિક એવ સાત પ્રકારની કર્મપ્રકૃતિયોના

અપિ ભવન્તિ તે । ‘જહા ઇન્દિયસપ્સુ’ યથા-યેન પ્રકારેણ એકેન્દ્રિયશતકેષુ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક પ્રભૃત્યેકેન્દ્રિયજીવાનાં કર્મપ્રકૃતિ બન્ધવિષયે કથિતં તથૈદેહાપિ સર્વં જ્ઞાતવ્યમિતિ । તથાહિ-સપ્તકર્મપ્રકૃતી વૃંધનન્ત આયુર્વર્જાઃ સપ્તજ્ઞાનાદરણીયાદિકાઃ કર્મપ્રકૃતી વૃંધનન્તિ, અષ્ટદિધર્મપ્રકૃતી વૃંધનન્તઃ પરિ-પૂર્ણાં અષ્ટાન્વપિ કર્મપ્રકૃતી વૃંધનન્તીતિ । કિયત્પર્યન્તમેકેન્દ્રિયશતકમિદાધ્યે-તવ્યં તત્રાહ-‘જાવ’ इत्यादि । ‘જાવ પજ્જત્તા વાયરવણસ્સડકાહ્યા’ યાવસ્પ-ર્યાપ્તા વાદરવનસ્પતિકાયિકાઃ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકત આરભ્ય અપર્યાપ્ત વાદરવનસ્પતિકાયિકાન્તાઃ સર્વેઽપિ યાવત્ પદગ્રાહ્યા ભવન્તિ । તથા ચ-અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકત આરભ્ય પર્યાપ્ત વાદરવનસ્પતિકાયિકાન્તાઃ સર્વેઽપિ એકે

પ્રકાર કી કર્મપ્રકૃતિયોં કા બી બન્ધ કરતે હૈં । ‘જહા ઇન્દિયસપ્સુ’ હસ સમ્બન્ધ મૈં જૈસો કથન એકેન્દ્રિય શતક મૈં કિયા ગયા હૈં ઉસી પ્રકાર સે વહી કથન યહાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાદિ એકેન્દ્રિય જીવોં કૈ કર્મપ્રકૃતિયોં કૈ બન્ધ કૈ સમ્બન્ધ મૈં બી કર લેનાં ચાહિયે । જૈસે-જબ વે સાતકર્મ પ્રકૃતિયોં કૈ બન્ધક હોતે હૈં-તવ વે આયુકર્મ કો છોડકર શેષ સાતકર્મ પ્રકૃતિયોં કા બન્ધ કરતે હૈં ઓર જબ આઠ કર્મપ્રકૃતિયોં કૈ બન્ધક હોતે હૈં તવ પૂરી કી પૂરી વે આઠોં કર્મપ્રકૃતિયોં કા બન્ધ કરતે હૈં । હસી પ્રકાર કા કથન યાવત્ પર્યાપ્ત વાદરવનસ્પતિકાયિક જીવોં તરુ કરતે જાનાં ચાહિયે । અર્થાત્ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક સે લેકર અપર્યાપ્ત વાદરવનસ્પતિકાયિક તકકે જીવ યહાં યાવત્ પદસે ગૃહીત હુએ હૈં-સો વે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ-પૃથિવીકાયિક સે લેકર પર્યાપ્ત વાદરવનસ્પતિકાયિક તક કૈ સમસ્ત

પણ બંધ કરે છે. અને આઠ પ્રકારની કર્મપ્રકૃતિયોનાં પણ બંધ કરે છે ‘જહા ઇન્દિયસપ્સુ’ આ સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું કથન અહિંયાં એકેન્દ્રિય શતકમાં કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે એજ કથન અહિંયાં એકેન્દ્રિય વિગેરે જીવોને કર્મપ્રકૃતિયોના બંધના સંબંધમાં પણ કહેવું જોઈએ. જેમ કે-જ્યારે તેઓ સાત કર્મપ્રકૃતિયોના બંધ કરનાર હોય છે. ત્યારે તે અથુ કર્મપ્રકૃતિને છોડીને બાકીની સાત કર્મપ્રકૃતિયોના બંધ કરે છે અને જ્યારે તેઓ આઠ કર્મપ્રકૃતિયોના બંધ કરે છે, ત્યારે તેઓ પૂરેપૂરી આ આઠ કર્મપ્રકૃતિયોના બંધ કરે છે આજ પ્રમાણેનું કથન યાવત્ પર્યાપ્ત બાદર વનસ્પતિકાયિક જીવોના કથન સુધીમાં સમજી લેવું અર્થાત્ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકથી લઈને અપર્યાપ્તક બાદર વનસ્પતિકાયિક સુધીના જીવો અહિંયાં યાવત્પદથી ગ્રહણ કરાયા છે. તો આ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકથી લઈને અપર્યાપ્ત બાદરવનસ્પતિ

ન્દ્રિયજીવાઃ સપ્તપ્રકારકર્મપ્રકૃતીનાં વન્ધકા અપિ ભવન્તિ, તથાષ્ટવિધકર્મ-
પ્રકૃતીનાં વન્ધકા અપિ ભવન્તીતિ ભાવઃ । ‘અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહયાણં મંતે ।
કહ્કમ્મપગ્ગહીઓ વેદેતિ’ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયાિકાઃ સ્વલ્પ ભદન્ત ! કતિ
કર્મપ્રકૃતી વેદયન્તીતિ ભાવઃ । મગવાનાહ-‘ગોયમા’ इत्यादि । ‘ગોયમા !’
હે ગૌતમ ! ‘ચોદસકમ્મપગ્ગહીઓ વેદેતિ’ ચતુર્દશ-ચતુર્દશસંખ્યકાઃ કર્મપ્રકૃતી
વેદયન્તિ । ચતુર્દશ એદસેવ દર્શયતિ-‘તં જહા’ इत्यादि । ‘તં જહા’ તથથા-
‘નાનાવરણિજ્જં’ જ્ઞાનાવરણીયમ્ ‘જહા ઇગિંદિયસણ્ણુ’ યથા-એકેન્દ્રિયશતકેપુ
કથિતમ્ જ્ઞાનાવરણીયાદિ કર્મપ્રકૃતિવેદનં તથૈવેદાપિ કર્મપ્રકૃતિવેદનં જ્ઞાતવ્યમ્ ।
કિયત્પર્યન્તમેકેન્દ્રિયશતકે જ્ઞાતવ્યં તન્નાહ-‘જાવ’ इत्यादि । ‘જાવ પુરિસવેદ-
વજ્જ’ યાવત્પુવેદવધ્ધમ્ । અત્ર યાવત્પદેન દર્શનાવરણીયતઃ આરભ્ય અન્તરાય

જીવ સાત પ્રકાર કી કર્મપ્રકૃતિયોં કે બી વન્ધકા હોતે હૈં ઔર આઠ
પ્રકાર કી કર્મપ્રકૃતિયોં કે બી વન્ધકા હોતે હૈં ।

‘અપજ્જત્તસુહુમપુઢવીકાહયા ણં મંતે ! કહ્કમ્મપગ્ગહીઓ વેદેતિ’
હે ભદન્ત ! અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયાિક જીવ કિતની કર્મપ્રકૃતિયોં
કા વેદન કરતે હૈં ? ઉત્તર મૈં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં-‘ગોયમા ! ચોદસ
કમ્મપગ્ગહીઓ વેદેતિ’ હે ગૌતમ ! અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયાિક જીવ
૧૪ કર્મપ્રકૃતિયોંકા વેદન કરતે હૈં । ‘તં જહા’ જિનકે નામ્મ હસ પ્રકાર
સે હૈં-‘નાનાવરણિજ્જં જહા ઇગિંદિયસણ્ણુ’ જ્ઞાનાવરણીય આદિ જૈસા
કિ એકેન્દ્રિય શતક મૈં કહા ગયા હૈ । હન ૧૪ પ્રકૃતિયોં મૈં ‘જાવ
પુરિસવેદવજ્જ’ યાવત્ પુરુષવેદાવરણીય તક્ કહી ગઈ પ્રકૃતિયાં આ
જાતી હૈ । જો હસ પ્રકાસે હૈં-‘જ્ઞાનાવરણીય, દર્શનાવરણીય, વેદનીય,

કાયિક સુધીના ઊવો સાત પ્રકારની કર્મપ્રકૃતિયોનો પણ બંધ કરે છે. અને
આઠ કર્મપ્રકૃતિયોનો પણ બંધ કરે છે.

‘અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાહયાણં મંતે ! કહ્કમ્મપગ્ગહીઓ વેદેતિ’ હે
ભગવન્ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયાિક ઊવ કેટલી કર્મપ્રકૃતિયોનું વેદન કરે
છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે “ગોયમા ! ચોદસ
કમ્મપગ્ગહીઓ વેદેતિ” હે ગૌતમ ! અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયાિક ઊવ ૧૪ ઔદ
કર્મપ્રકૃતિયોનું વેદન કરે છે ? ‘તં જહા’ તેના નામો આ પ્રમાણે છે.-
‘નાનાવરણિજ્જં જહા ઇગિંદિયસણ્ણુ’ જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે જે પ્રમાણે એકેન્દ્રિય
શતકમાં કહેવામાં આવેલ છે, આ ૧૪ ઔદ કર્મપ્રકૃતિયોમાં ‘જાવ પુરિસવેદવજ્જ’
યાવત્ પુરુષ વેદાવરણીય સુધી કહેલ કર્મપ્રકૃતિયો આવી જાય છે. જે આ પ્રમાણે

પર્યન્તાનાં તથા શ્રોત્રેન્દ્રિયવધ્ય, ચક્ષુરિન્દ્રિયવધ્ય, રસનેન્દ્રિયવધ્ય, ગ્રાણેન્દ્રિય વધ્ય-સ્ત્રીવેદવધ્યાન્તાનાં ચ કર્મપ્રકૃતીનાં સંગ્રહો ભવતિ । તથા ચ જ્ઞાનાવરણીયાદાર્થ્ય પુરુષવધ્યાન્ત ચતુર્દશ કર્મપ્રકૃતીનામપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવી-કાયિકાદયઃ સર્વેઽપિ વેદયન્તીતિભાવઃ । ‘એવં જાવ વાયર વળસ્સઙ્કાઙ્કાયાણં પઙ્ગત્તગાણં’ એવમ્-અપર્યા ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાનાં યથા ચતુર્દશ કર્મ-પ્રકૃતિ વેદનં કથિતં તથૈવ યાવદ્ વાદરવનસ્પતિકાયિકપર્યાપ્તકાનામપિ ચતુર્દશ કર્મપ્રકૃતિ વેદનં જ્ઞાતવ્યમ્ અપ્રાપિ યાવત્પદેન પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકત આરમ્ભ્ય અપર્યાપ્ત વાદરવનસ્પતિકાયિકાન્તાઃ મત્રાદરામૂક્ષપર્યાપ્તપર્યાપ્તમેદ-

મોહનીય, આયુ, નામ, ગોત્ર ઓર અન્તરાય તક ૮ કર્મપ્રકૃતિયાં તથા શ્રોત્રેન્દ્રિયવધ્ય ચક્ષુરિન્દ્રિય વધ્ય ગ્રાણેન્દ્રિય વધ્ય રસનેન્દ્રિય વધ્ય સ્ત્રીવેદ વધ્ય ઓર પુરુષવેદ વધ્ય’ હસ પ્રકાર અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવી-કાયિક આદિ સે લેકર દોનો પ્રકારકે વનસ્પતિકાયિક તકકે સમસ્ત એકેન્દ્રિય જીવ જ્ઞાનાવરણીય આદિ સે લેકર અન્તરાય કર્મ તક ઓર શ્રોત્રેન્દ્રિય સે લેકર પુરુષવેદાવરણ તક ૧૪ કર્મ પ્રકૃતિયોં કા વેદન કરતે હૈં । યાહે યે પર્યાપ્ત હોં અથવા અપર્યાપ્ત હોં । ‘એવં જાવ વાયર વળસ્સઙ્કાઙ્કાયાણં પઙ્ગત્તગાણં’ યહી વાત હસ સૂત્ર પાઠ દ્વારા પ્રકટ કી ગઈ હૈ । અર્થાત્ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકોં કૈ સમ્બન્ધ મૈં જિસ પ્રકારસે ૧૪ કર્મપ્રકૃતિયોં કા વેદન કરના કહા ગયા હૈં ઊસી પ્રકાર સે યાવત્ પર્યાપ્ત વાદરવનસ્પતિકાયિકોં કૈ સમ્બન્ધ મૈં બી ૧૪ કર્મ-પ્રકૃતિયોં કા વેદન કરના કહ લેના ચાહિયે । યહાં યાવત્ પદસે પર્યાપ્ત

છે.-જ્ઞાનાવરણીય, દર્શનાવરણીય, વેદનીય, મોહનીય, આયુ, નામ, ગોત્ર અને અન્તરાય, સુધીની આઠ કર્મપ્રકૃતિયો તથા શ્રોત્રેન્દ્રિયવધ્ય, ચક્ષુરિન્દ્રિય વધ્ય ગ્રાણેન્દ્રિયવધ્ય, રસનેન્દ્રિયવધ્ય, સ્ત્રીવેદવધ્ય અને પુરુષ વેદવધ્ય આ રીતે અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકથી લઈને બન્ને પ્રકારના વનસ્પતિ-કાયિક સુધીના સઘળા એકેન્દ્રિય જીવો જ્ઞાનાવરણીય વિગેરેથી લઈને અન્તરાય કર્મ સુધી અને શ્રોત્રેન્દ્રિયથી લઈને પુરુષ વેદાયરણ સુધી ૧૪ ચૈદ કર્મપ્રકૃતિયોનું વેદન કરે છે. તે પર્યાપ્ત હોય કે અપર્યાપ્ત હોય ‘એવં જાવ વાયરવળસ્સઙ્કાઙ્કાયાણં પઙ્ગત્તગાણં’ એજ વાત આ સૂત્ર પાઠદ્વારા પ્રગટ કરવામાં આવેલ છે. અર્થાત્ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકોના સંબંધમાં જે પ્રમાણે ૧૪ ચૈદ કર્મપ્રકૃતિયોનું વેદન કરવાનું કહ્યું છે, એજ પ્રમાણે યાવત્ બાહર વનસ્પતિ કાયિકોના સંબંધમાં પણ ૧૪ ચૈદ કર્મપ્રકૃતિયોનું વેદન કરવાનું કહ્યું છે.

મિન્નાઃ સર્વેઽપિ સંગ્રહીતવ્યા ઇતિ । અથૈકેન્દ્રિયાણા મુત્પત્તિવિપયં સૂત્રમાહ—
'એગિંદિયા ણં મંતે ! કમો ઉવવજ્જંતિ' એકેન્દ્રિયજીવાઃ સ્વલુ મદન્ત ! કુતઃ—
કસ્માત્ સ્થાનવિશેષાદ્ આગત્ય સમુત્પદ્યન્તે 'કિં નેરહ્મંતો ઉવવજ્જંતિ' કિં
નૈરયિકેભ્ય આગત્યોત્પદ્યન્તે કિં વા—તિર્યગ્ચોનિકેભ્ય આગત્ય સમુત્પદ્યન્તે મનુ-
ષ્યેભ્યો વા આગત્ય સમુત્પદ્યન્તે દેવેભ્યો વા આગત્ય સમુત્પદ્યન્તે ઇતિ પ્રશ્નઃ ।
ઉત્તરમાહ—'જહા' ઇત્યાદિ । 'જહા વક્કંતોર પુઢવીકાહયાણં ઉવવાઓ' યથા
વ્યુત્ક્રાન્તૌ પ્રજ્ઞાપનાસૂત્રસ્ય પઠ્યપદે પૃથિવીકાયિકાનામુપપાતઃ તથૈવેહાપિ
એકેન્દ્રિયાણા મુપપાતો વર્ણયિતવ્યઃ । તથાહિ—એકેન્દ્રિયા નૈરયિકેભ્ય આગત્ય
નોત્પદ્યન્તે, કિન્તુ દેવેભ્ય આગત્યોત્પદ્યન્તે, મનુષ્યેભ્ય આગત્યોત્પદ્યન્તે । તથા—

સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક સે લેકર સૂક્ષ્મ વાદર પર્યાપ્ત ઔર અપર્યાપ્ત ભેદ
વાલે વનસ્પતિકાયિક તક કે સમસ્ત એકેન્દ્રિય જીવ ગૃહીત હુએ હૈં ।

'એગિંદિયા ણં મંતે ! કમો ઉવવજ્જંતિ' હે મદન્ત ! એકેન્દ્રિય જીવ
કિસ સ્થાન વિશેષ સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? 'કિં નેરહ્મંતો ઉવવજ્જંતિ'
કયા વે નૈરયિકોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા
તિર્યગ્ચોનિકોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા મનુષ્યોં મેં સે
આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા દેવોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે
હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રમુશ્રી કહતે હૈં—'જહા વક્કંતોર પુઢવીકાહયાણં ઉવ-
વાઓ' હે ગૌતમ ! જિસ રીતિસે પ્રજ્ઞાપના સૂત્રકે છદ્દે વ્યુત્ક્રાન્તિકપદ
મેં પૃથિવીકાયિકોં કા ઉપપાદ કહા ગયા હૈં ઉસી રીતિ સે ઉનકા વહ
ઉત્પાદ ઘહાં પર મી જાન લેના ચાહિયે । જૈસે—એકેન્દ્રિય જીવ નૈરયિકોં
મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન નહીં હોતે હૈં કિન્તુ દેવોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન

તેમ સમજવું. અહિયાં યાવત્ પદથી સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકથી લઇને સૂક્ષ્મ બાહર
પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત લેહોવાળા વનસ્પતિકાયિક સુધીના તમામ એકેન્દ્રિય
જીવો. ગ્રહણ કરાયેલ છે.

'એગિંદિયા ણં મંતે ! કમો ઉવવજ્જંતિ' હે ભગવન્ એકેન્દ્રિય જીવો કયા
સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? કિં નેરહ્મંતો ઉવવજ્જંતિ'
જીવો તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી
આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને તેઓ ઉત્પન્ન થાય છે ?
આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રમુશ્રી કહે છે કે—'જહા વક્કંતોર પુઢવીકાહયાણં ઉવવાઓ'
હે ગૌતમ ! જે પ્રમાણે પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના છદ્દા વ્યુત્ક્રાન્તિ પદમાં પૃથ્વીકાયિકોના
ઉપપાદ કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે તેઓના ઉપપાત અહિયાં પણ
સમજવો. જેમકે—એકેન્દ્રિય નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થતા નથી, અને

તિર્યગ્યોનિકેભ્ય આગત્ય એકેન્દ્રિયેષુ સમુત્પદ્યન્તે' इति प्रज्ञापना सूत्रोक्तोत्तरमिति भावः । 'एगिंदिया णं भंते ! कइ समुग्घाया पण्णत्ता' एकेन्द्रियाणां खलु भदन्त ! कति समुद्घाताः प्रज्ञप्ताः-कथिता इति प्रश्नः । भगवानाह-‘गोयमा’ इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता’ चत्वारः समुद्घाताः प्रज्ञप्ताः-कथिताः । प्रकारभेदमेव दर्शयति-‘तं जहा’ इत्यादि, ‘तं जहा’ तद्यथा-‘वेयणा समुग्घाए जाव वेउव्विय समुग्घाए’ वेदनासमुद्घातो यावद् वैक्रिय समुद्घातः । अत्र यावत्पदेन कषाय समुद्घात मारणान्तिक समुद्घातयोः संग्रहो भवति । तथा च-वेदनाकषाय मारणान्तिक वैक्रियारूपाश्चत्वारः समुद्घाता भवन्तीति भावः । अत्र यत् चत्वारः समुद्घाताः कथिता स्तत्र वैक्रिय समुद्घातो

होते हैं । मनुष्यों में से भी आकरके उत्पन्न होते हैं और तिर्यग्यो-
निको में से भी आकरके उत्पन्न होते हैं । ऐसा ही यह उत्तर प्रज्ञा-
पना सूत्र का है । ‘एगिंदियाणं भंते कइ समुग्घाया पण्णत्ता’ हे भदन्त !
एकेन्द्रिय जीवों के कितने समुद्घात होते कहे गये हैं ? ‘गोयमा !
‘चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता’ हे गौतम ! एकेन्द्रिय जीवों के चार
समुद्घात कहे गये हैं । ‘तं जहा’ जो इस प्रकार से हैं -‘वेयणा समु-
ग्घाए जाव वेउव्वियसमुग्घाए’ वेदना समुद्घात, यावत् वैक्रिय
समुद्घात यहां यावत्पद से कषाय समुद्घात, मारणान्तिक समुद्घात,
इन दो समुद्घातों का ग्रहण हुआ है । तथा च-वेदना, कषाय, मार-
णान्तिक और वैक्रिय ये चार समुद्घात इन एकेन्द्रिय जीवों के होते
हैं यहां चार जो समुद्घात कहे गये हैं सो इनमें जो वैक्रिय समुद्घात

દેવોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થતા નથી. પરંતુ ગર્ભજ મનુષ્યોમાંથી આવીને
ઉત્પન્ન થાય છે, અને તિર્યંચ યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, આ
પ્રમાણે આ પ્રજ્ઞાપના સૂત્રનું કથન કહેલ છે. ‘एगिंदिया णं भंते ! कइ समुग्घाया
पण्णत्ता’ હે ભગવન એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોને કેટલા સમુદ્ઘાતો હોવાનું કહેલ
છે ? ‘गोयमा ! चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता’ હે ગૌતમ ! એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોને
ચાર સમુદ્ઘાતો હોવાનું કહેલ છે. ‘तं जहा’ તેઆ પ્રમાણે છે.-‘वेयणा समु-
ग्घाए जाव वेउव्विय समुग्घाए’ વેદના સમુદ્ઘાત યાવત્ વૈક્રિય સમુદ્ઘાત
અહિયાં યાવત્પદથી કષાય સમુદ્ઘાત, મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત આ બે સમુદ્ઘા-
તો ગ્રહણ કરાયા છે. જેમ કે-વેદના, કષાય, મારણાન્તિક, અને વૈક્રિય આ
ચાર સમુદ્ઘાતો આ એકેન્દ્રિય જીવોને હોય છે, અહિયાં જે ચાર સમુદ્ઘાતો

વાયુકાયિકાનાશ્રિત્ય કથિત', વાયુકાયિકાન વિદ્યાયાન્યેષાં વેદનાકષાયમાર-
ણાન્તિકરૂપા સ્ત્રય એવ સમુદ્ધાતા ભવન્તિ ન તુ વૈક્રિયસમુદ્ધાત હતિ । 'ઈન્દ્રિ-
યાણ મંતે !' એકેન્દ્રિયજીવાઃ સ્વલ્પ ભદન્ત ! 'કિં તુલ્લલ્લિહ્યા તુલ્લલિસે-
સાહિયં કમ્મં પકરેતિ' કિં તુલ્યસ્થિતિકા પરસ્પરાપેક્ષયા સમાનાયુગ્માઃ
તુલ્યવિશેષાધિકં કર્મ પ્રકુર્વન્તિ । પરસ્પરાપેક્ષયા તુલ્યત્વેન વિશેષેગ અસંખ્યેય
ભાગાદિના અધિકં પૂર્વકાલવદ્ધકર્માપેક્ષયાઽધિકતરં તુલ્યવિશેષાધિક કર્મ
જ્ઞાનાવરણીયાદિકં પ્રકુર્વન્તિ કિમિતિ પ્રશ્નઃ । તથા 'તુલ્લલ્લિહ્યા વેમાય
લિસેસાહિયં કમ્મં પકરેતિ' તુલ્યસ્થિતિકાઃ વિમાત્રઃ અન્યોઽન્યા-
પેક્ષયા વિષમપરિમાણઃ કસ્યાઽપ્યસંખ્યેયભાગરૂપોઽન્યસ્ય સંખ્યેયભાગરૂપયો
વિશેષસ્તેનાધિકં પૂર્વકાલવદ્ધકર્માપેક્ષયા યત્ તદ્ વિમાત્રવિશેષાધિકં કર્મ

હૈ વહ વાયુકાયિકોં કો આશ્રિત કરકે કહા ગયા હૈ । વાયુકાયિકોંકો
છોડકર અન્ય એકેન્દ્રિય જીવોં કો વેદના કષાય ઓર ધારણાન્તિક
યે તીન હી સમુદ્ધાત હોતે હૈ । વૈક્રિય સમુદ્ધાત હનકોં નહીં હોતા હૈ ।

‘ઈન્દ્રિયા ણં મંતે । કિં તુલ્લલ્લિહ્યા તુલ્લલિસેસાહિયં કમ્મં પક-
રેતિ’ ‘હે ભદન્ત ! એકેન્દ્રિય જીવ કી જિનકી આયુ આપસમેં સમાન
હોતી હૈ કયા તુલ્ય ઓર વિશેષાધિક કર્મકા બન્ધ કરતે હૈ ?
પરસ્પરકી અપેક્ષા સમાનતા કો લેકર યહાં તુલ્યતા કર્મ મેં ફહી ગઈ
ઓર પૂર્વકાલ મેં વદ્ધ કર્મોં કી અપેક્ષા અસંખ્યાતવેં ભાગ આદિકો
લેકર કર્મ મેં વિશેષાધિકતા કહી ગઈ હૈ ।

અથવા—‘તુલ્લલ્લિહ્યા વેમાયલિસેસાહિયં કમ્મં પકરેતિ ? ‘તુલ્ય-
સ્થિતિવાલે એકેન્દ્રિય જીવ પરસ્પર ભિન્ન ૨ વિશેષાધિક કર્મબન્ધ કરતે
હૈ ? કિસી એકેન્દ્રિય જીવ કે પૂર્વવદ્ધ કર્મોંકી અપેક્ષાસે અસંખ્યેય

કહ્યા છે, તે પૈકી જે વૈક્રિયસમુદ્ધાત છે, તે વાયુકાયિકોના આશ્રય કરીને કહેલ
છે વાયુકાયિકોને છોડીને બીજા એકેન્દ્રિયવાળા જીવોને વેદના, કષાય અને
મારણાન્તિક આ ત્રણ સમુદ્ધાત જ હોય છે. તેઓને વૈક્રિય સમુદ્ધાત હોતો નથી.

‘ઈન્દ્રિયા ણં મંતે । કિં તુલ્લલ્લિહ્યા તુલ્લલિસેસાહિયં કમ્મં પકરેતિ’ હે
ભગવન્ એકેન્દ્રિયવાળા જીવો કે જેઓનું આયુષ્ય પરસ્પરમાં સરખું હોય
છે, એવા જીવો શું તુલ્ય અને વિશેષાધિક કર્મોના બંધ કરે છે ? પરસ્પરની
અપેક્ષાથી સમાન પણાને લઈને આહિયા કર્મમાં તુલ્યપણું કહ્યું છે, અને પૂર્વ
કાળમાં બધા કર્મની અપેક્ષાથી અસંખ્યાતમા ભાગ વિશેરેને લઈને કર્મમાં
વિશેષાધિક પણું કહ્યું છે. અથવા ‘તુલ્લલ્લિહ્યા વેમાયલિસેસાહિયં કમ્મં પકરેતિ’
સમાન સ્થિતિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો અન્યો અન્ય જુદા જુદા વિશેષાધિક કર્મોના
બંધ કરે છે ? કોઈ એકેન્દ્રિયવાળા જીવના અસંખ્યાત ભાગ રૂપ અને

જ્ઞાનાવરણીયાદિકં પ્રકુર્વન્તિ વધનન્તિ । તથા-‘વેમાયદ્વિદ્યા તુલ્લવિસેસાદિયં કમ્મં પકરેન્તિ’ વિમાત્રસ્થિતિકાઃ વિમાત્રા-વિપમમાત્રા સ્થિતિઃ-આયુ યૈવાં તે વિમાત્રસ્થિતિકાઃ વિપમાયુષ્કા इत्यर्थः । તુલ્યવિશેષાધિકં પૂર્વવદેવ કર્મ પ્રકુર્વન્તિ । ૩ । ‘વેમાયદ્વિદ્યા વેમાયવિસેસાદિયં કમ્મં પકરેન્તિ ૪’ વિમાત્ર-સ્થિતિકાઃ વિમાત્રવિશેષાધિકં કર્મ જ્ઞાનાવરણીયાદિકં પ્રકુર્વન્તિ વધનન્તિ કિમિતિ પ્રશ્નઃ । મયવાનાહ-‘ગોયમા’ इत्यादि ‘गोयमा’ हे गौतम । ‘अथे गइया तुल्लद्विदया तुल्लविसेसादियं कम्मं पकरेन्ति’ अस्त्येकके तुल्यस्थितिका

भाग रूप और किसी एकेन्द्रिय जीवके संलघेय भाग रूप अधिक कर्मबन्ध को लेकर इस विकल्प में कर्मबन्ध में भिन्नता कही गई जाननी चाहिये । अथवा-‘वेमायद्विदया तुल्लविसेसादियं कम्मं पकरेन्ति’ ‘भिन्न २ स्थितिवाले एकेन्द्रिय जीव परस्पर में तुल्य विशेषाधिक कर्म का बन्ध करते हैं ? अथवा-‘वेमायद्विदया वेमाय विसेसादियं कम्मं पकरेन्ति’ ‘भिन्न २ स्थितिवाले एकेन्द्रिय जीव भिन्न २ विशेषाधिक कर्मका बन्ध करते हैं ? ऐसे ये बन्ध के विषय में चार विकल्प रूप प्रश्न हैं । इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-‘गोयमा ! अथेगइया तुल्ल-द्विदया तुल्लविसेसादियं कम्मं पकरेन्ति’ ‘हे गौतम ! कितनेक एकेन्द्रिय जीव जो तुल्यस्थितिवाले होते हैं तुल्य विशेषाधिक कर्मका बन्ध करते हैं । ‘अथेगइया तुल्लद्विदया वेमायविसेसादियं कम्मं पकरेन्ति’

કોઈ એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવના સંજ્ઞાત લાગે રૂપ કર્મ બંધને લઈને આ વિકલ્પમાં કર્મબંધમાં જુદાપણુ ઠહું છે, તેમ સમજવું. અથવા-‘વેમાયદ્વિદ્યા તુલ્લવિસેસાદિયં કમ્મં પકરેન્તિ’ જુદી જુદી સ્થિતિવાળા એક ઇન્દ્રિય જીવો પરસ્પરમાં તુલ્ય અથવા વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે ? અથવા ‘વેમાયદ્વિદ્યા વેમાયવિસેસાદિયં કમ્મં પકરેન્તિ’ જુદી જુદી સ્થિતિવાળા એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો જુદા જુદા વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે ? આ રીતે આ બંધના સંબંધમાં ચાર વિકલ્પોરૂપ પ્રશ્ન ગૌતમસ્વામીએ પ્રશ્નને પૂછેલ છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘ગોયમા ! અથેગइया तुल्लद्विदया तुल्लविसेसादियं कम्मं पकरेन्ति’ હે ગૌતમ ! કેટલાક એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો કે જે સમાન સ્થિતિવાળા હોય છે, તેઓ તુલ્ય અને વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે. ‘અથેइया तुल्लद्विदया वेमायविसेसादियं कम्मं पकरेन्ति’ તથા કોઈ કોઈ સમાન સ્થિતિવાળા એક ઇન્દ્રિય જીવો એવા હોય છે કે જેઓ જુદી જુદી માત્રામાં વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે. ‘अथेगइया तुल्लद्विदया तुल्लविसेसादियं

તુલ્ય વિશેષાધિકં કર્મ પ્રકુર્વન્તિ । ‘અત્યેગહ્યા વેમાયદ્વિહ્યા તુલ્લવિસેસાહિયં કમ્મં પકરે’તિ’ અસ્ત્યેકકે વિમાત્રસ્થિતિકાઃ તુલ્યવિશેષાધિકં કર્મ પ્રકુર્વન્તિ । ‘અત્યેગહ્યા વેમાયદ્વિહ્યા વેમાયવિસેસાહિયં કમ્મં પકરે’તિ’ અસ્ત્યેકકે વિમાત્રસ્થિતિકા વિમાત્રવિશેષાધિકં કર્મ પ્રકુર્વન્તીત્યુત્તરમ્ । ‘સે કેણદ્દેણં મંતે ! એવં વુચ્ચહ અત્યેગહ્યા તુલ્લદ્વિહ્યા જાવ વેમાયવિસેસાહિયં કમ્મં પકરે’તિ ?’ તત્કેનાર્યેન મદન્ત ! એવમુચ્યતૈ, અસ્ત્યેકકે તુલ્યસ્થિતિકાઃ યાવદ્ વિમાત્ર-વિશેષાધિકં કર્મ પ્રકુર્વન્તિ, અત્ર યાવત્પદેન અસ્ત્યેકકે તુલ્યસ્થિતિકા સ્તુલ્ય-

‘તથા કોઈ કોઈ તુલ્યસ્થિતિવાળે એકેન્દ્રિય જીવ એસે હોતે હૈં જો બિન્ન બિન્ન માત્રા મેં વિશેષાધિક કર્મબન્ધ કરતે હૈં, ‘અત્યેગહ્યા વેમાયદ્વિહ્યા તુલ્લવિસેસાહિયં કમ્મં પકરે’તિ’ તથા કોઈ કોઈ એકેન્દ્રિય જીવ એસે બી હોતે હૈં કિ જિનકી આયુ પરસ્પર મેં બિન્ન બિન્ન હોતી હૈ પર વે તુલ્ય વિશેષાધિક કર્મકા બન્ધ કરતે હૈં । તથા—‘અત્યેગહ્યા વેમાય-દ્વિહ્યા વેમાયવિસેસાહિયં કમ્મં પકરે’તિ’ કોઈ કોઈ એકેન્દ્રિય જીવ એસે બી હોતે હૈં કિ જિનકા આયુકર્મ બી પરસ્પર મેં બિન્ન બિન્ન હોતા હૈ ઓર વે બિન્ન બિન્ન વિશેષાધિક કર્મકા બન્ધ કરતે હૈં । ‘સે કેણદ્દેણં મંતે ! ‘એવં વુચ્ચહ અત્યેગહ્યા તુલ્લદ્વિહ્યા જાવ વેમાયવિસેસાહિયં કમ્મં પકરે’તિ’ હે મદન્ત એસા આપ કિસ કારણ સે કહતે હૈં કિ કિતને ક તુલ્યસ્થિતિવાળે એકેન્દ્રિય જીવ તુલ્યવિશેષાધિક જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મકા બન્ધ કરતે હૈં ઓર યાવત્ કિતનેક બિન્ન બિન્ન સ્થિતિવાળે

કમ્મં પકરે’તિ’ તથા કોઈ કોઈ એક ઇન્દ્રિયવાળા એવા એવા પણ હોય છે કે—એઓનું આયુષ્ય પરસ્પર બુદ્ધં બુદ્ધં હોય છે. પરંતુ તેઓ તુલ્ય અને વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે. તથા ‘અત્યેગહ્યા વેમાયદ્વિહ્યા વેમાયવિસેસાહિયં કમ્મં પકરે’તિ’ કોઈ કોઈ એક ઇન્દ્રિય એવા એવા પણ હોય છે કે—એઓનું આયુષ્ય કર્મ પણ પરસ્પરમાં બુદ્ધં બુદ્ધં હોય છે અને તેઓ ભિન્ન-ભિન્ન વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે. તથા ‘અત્યેગહ્યા વેમાયદ્વિહ્યા વેમાયવિસેસાહિયં કમ્મં પકરે’તિ’ કોઈ કોઈ એક ઇન્દ્રિય એવા એવા પણ હોય છે કે—આયુષ્ય કર્મ પણ પરસ્પરમાં બુદ્ધં બુદ્ધં હોય છે. અને તેઓ ભિન્ન-ભિન્ન વિશેષા-ધિક કર્મનો બંધ કરે છે ‘સે કેણદ્દેણં મંતે ! એવં વુચ્ચહ અત્યેગહ્યા તુલ્લ દ્વિહ્યા જાવ વિસેસાહિયં કમ્મં પકરે’તિ’ હે ભગવન્ આપ એ પ્રમાણે શા કારણથી કહો છો કે—કેટલાક તુલ્ય—સરખા શરીરોવાળા એકેન્દ્રિય એવા તુલ્ય અને વિશેષાધિક જ્ઞાનાવરણીય વગેરે કર્મનો બંધ કરે છે ? અને યાવત્કેટલાક જૂની જૂની સ્થિતિવાળા એકેન્દ્રિય એવા જૂના

વિશેષાધિકં કર્મ કુર્વન્તિ । અસ્ત્યેકકે તુલ્યસ્થિતિકા વિમાત્રવિશેષાધિકં કર્મ કુર્વન્તિ, અસ્ત્યેકકે વિમાત્રસ્થિતિકા સ્તુલ્યવિશેષાધિકં કર્મ કુર્વન્તિ, इत्येषां संग्रहो भवतीत्यवान्तरप्रश्नः । મગધનાદ-‘ગોયમા’ इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘एगिंदिया चउन्विहा पणत्ता’ एकेन्द्रिया श्रतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः ‘तं जहा’ तद्यथा-‘अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा’ अस्त्येकके समायुष्काः समोपपन्नकाः, समस्-तुल्यम् आयुर्येषां ते समायुष्काः समानस्थितिका इत्यर्थः । ‘अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा’ अस्त्येकके समायुष्काः-तुल्यायुष्काः समोपपन्नकाः, ‘अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा’ अस्त्येकके विषमायुष्का समोपपन्नकाः अस्त्येकके विषमायुष्काः

एकेन्द्रिय जीव भिन्न भिन्न विशेषाधिक कर्मका बन्ध करते हैं ? यहां यावत् पदसे बीच के दो विकल्प गृहीत हुए हैं । इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-‘गोयमा ! एगिंदिया चउन्विहा पणत्ता’ हे गौतम ! एकेन्द्रिय जीव चार प्रकार के कहे गये हैं । ‘तं जहा’ ‘जो इस प्रकार से हैं-‘अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा’ एक वे एकेन्द्रिय जीव जो समान आयुवाले होते हैं और एक ही साथ उत्पन्न होते हैं । ‘अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा’ ‘दूसरे वे एकेन्द्रिय जीव जो समान आयुवाले तो होते हैं पर एक ही साथ उत्पन्न नहीं होते हैं किन्तु भिन्न भिन्न समय में उत्पन्न होते हैं । तीसरे ‘अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा’ ‘वे एकेन्द्रिय जीव जो विषम आयुवाले तो होते हैं पर साथ साथ में एक समयमें उत्पन्न होते हैं ३ । चौथे वे एकेन्द्रिय जीव जो

જૂદા વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે ? અહિયાં યાવત્પદથી વચ્ચેના બે વિકલ્પો ગ્રહણ કરાયા છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-‘ગોયમા ! ઇગિંદિયા ચરન્વિહા પણત્તા’ હે ગૌતમ ! એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો ચાર પ્રકારના કહેવામાં આવેલા છે. ‘તં જહા’ જે આ પ્રમાણે છે. ‘અત્થે ગઈયા સમાઉયા સમોવવન્નગા’ એક તે એક ઇન્દ્રિય જીવો છે, કે જેઓ સરખા આયુષ્યવાળા હોય છે અને એક સાથે જ ઉત્પન્ન થાય છે ‘અત્થેગઈયા સમાઉયા સમોવવન્નગા’ બીજા તે એકેન્દ્રિય જીવો હોય છે કે જેઓ સરખી આયુષ્યવાળા તો હોય છે, પણ એક સાથે ઉત્પન્ન થતા નથી. પરંતુ જુદા જુદા સમયે ઉત્પન્ન થાય છે. ‘અત્થેગઈયા વિસમાઉયા સમોવવન્નગા’ અત્થે ગઈયા વિસમાઉયા વિસમોવવન્નગા’ અને ત્રીજા તે એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો જેઓ વિષમ આયુષ્યવાળા તો હોય છે, પરંતુ સાથે સથે એક સમયમાં જ ઉત્પન્ન થાય છે. ચોથા તે એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો જૂદા જૂદા આયુષ્યવાળા પણ હોય છે, અને જૂદા જૂદા સમયમાં પણ ઉત્પન્ન થાય છે. આ રીતે એક ઇન્દ્રિયવાળા

વિષમોપવન્નકા સ્ત ઇમે ચત્વારો ભેદા ભવન્તિ એકેન્દ્રિયાણામ્ । 'તત્થ ણં જે તે સમાડયા સમોવવન્નગા તે ણં તુલ્લઢ્ઢિયા તુલ્લ વિસેસાહિયં કમ્મં પકરેતિ' તત્ત્વ ચતુર્થુ મધ્યે યે તે એકેન્દ્રિયાઃ સમાયુક્તા સમોપવન્નકા સ્તે સ્વલ્લ તુલ્યસ્થિતિકાઃ સમકમેવોત્પન્ના સ્તુલ્યવિશેષાધિકં કર્મ પ્રકુર્વન્તિ તત્રૈતે તુલ્યસ્થિતિકાઃ સમોત્પન્નત્વેન પરસ્પરેણ સમાનયોગત્વાત્ તુલ્ય મિતિ સમાનમેવ કર્મ કુર્વન્તિ, તથા તે ચ પૂર્વકર્માપેક્ષયાઃ હીનં વા અધિકં વા કર્મ કુર્વન્તિ યદ્યધિકં તથા વિશેષાધિક મપિ, તત્ત્વ પરસ્પરતઃ તુલ્ય વિશેષાધિકં ન તુ વિશેષાધિકમેવ હત્યત ઉક્તં તુલ્ય-વિશેષાધિકમિતિ ૧ । 'તત્થ ણં જે તે સમાડયા વિસમોવવન્નગા તે ણં તુલ્લઢ્ઢિયાં

ભિન્ન ભિન્ન આયુવાલે ખી હોતે હૈં ઓર ભિન્ન ધિન્ન સમયમેં ખી ઉત્પન્ન હોતે હૈં ।' હસ પ્રકાર સે એકેન્દ્રિયોં કે યે ચાર પ્રકાર હોતે હૈં 'તત્થ ણં જે તે સમાડયા સમોવવન્નગા તે ણં તુલ્લઢ્ઢિયા તુલ્લવિસેસાહિયં કમ્મં પકરેતિ' હનમેં જો એકેન્દ્રિય જીવ સમાન આયુવાલે ઓર એક હી સાંથ મેં ઉત્પન્ન હુએ હોતે હૈં-વે એકસી સ્થિતિવાલે હોતે હૈં । ઓર તુલ્યવિશેષાધિક કર્મકે બન્ધક હોતે હૈં । કયોંકિ તુલ્ય-સ્થિતિવાલે જીવ સમકાલમેં ઉત્પન્ન હોને કે કારણ આપસ મેં સમાન યોગવાલે હોતે હૈં-હસલિયે વે સમાન હી કર્મકા બન્ધ કરતે હૈં । અથવા તો વે પૂર્વ કર્મકો હીન કર્મ કરતે હૈં અથવા અધિક કર્મ કરતે હૈં । યદિ અધિક કર્મ કરતે હૈં તો વહ પરસ્પર મેં તુલ્ય હોતા હુઆ ખી પૂર્વ કર્મ કી અપેક્ષા વિશેષાધિક હોતા હૈં કેવલ વિશેષાધિક હી નહીં હોતા હૈં । હસીલિયે ઉસે તુલ્ય ઓર વિશેષાધિક હન દો વિશેષણોં સે વિશિષ્ટ વત્તલાયા ગયા હૈં ।

જીવોના ચાર ભેદો હોય છે. 'તત્થ ણં જે તે સમાડયા સમોવવન્નગા તે ણં તુલ્લઢ્ઢિયા તુલ્લ વિસેસાહિયં કમ્મં પકરેતિ' આમાં જે એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો સમાન આયુષ્યવાળા અને એક સાથે જ ઉત્પન્ન થાય છે, તેઓ સરખી સ્થિતિવાળા હોય છે. અને તુલ્ય વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરવા-વાળા હોય છે. કેમ કે-તુલ્ય સ્થિતિવાળા જીવો સરખા કાળમાં ઉત્પન્ન થવાને કારણે પરસ્પરમાં સરખા યોગવાળા હોય છે. તેથી તેઓ સરખા કર્મનો જ બંધ કરે છે. અથવા તો તે પૂર્વ કર્મને ઓટલે કે પહેલા કરેલા કર્મને હીન ઓછા કરે છે અથવા અધિક કર્મ કરે છે. જો અધિક કર્મ કરે તો તેઓ પરસ્પરમાં તુલ્ય થઈને પણ પૂર્વકર્મની અપેક્ષાથી વિશેષાધિક હોય છે. કેવળ વિશેષાધિક જ હોતા તેથી તેઓને તુલ્ય અને વિશેષાધિક આ બે વિશેષણોથી યુક્ત કહેલ છે. 'તત્થ ણં જે તે સમાડયા

વેમાયવિસેસાહિયં કમ્મં પકરે'તિ' તત્ર खलु ये ते समायुष्का विषमोपपन्नास्ते खलु तुल्यस्थितिका विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति, एते समायुष्का विषमोपपन्नाः स्तुल्यस्थितिकाः विषमोपपन्नत्वेन च योगवैषम्याद् विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्तीति २ ।

‘तत्थ णं जे ते विसमाउया समોવવન્નગા તે णं वेमायट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरे'ति' तत्र खलु ये ते विषमायुष्काः समोपपन्नकास्ते खलु विमात्रस्थितिका स्तुल्यविशेषाधिकं कर्म दानावरणीयादिकं प्रकुर्वन्ति-बध्नन्ति एते विमात्रस्थिकाः समोपपन्नत्वेन च समानयोगत्वात् तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्तीति । ३।

‘तत्थ णं जे ते समाउया विसमોવવન્નગા તે णं तुल्लट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरे'ति' ‘तथा जो एकेन्द्रिय जीव समान आयुवाले होते हुए भी भिन्न भिन्न समय में उत्पन्न हुए होते हैं वे तुल्यस्थितिवाले होने पर भी भिन्न भिन्न समय में उत्पन्न होने के कारण योगों की विषमता को लेकर भिन्न भिन्न विशेषाधिक कर्म के बन्धक होते हैं । ‘तत्थ णं जे ते विसमाउया समોવવન્નગા તે णं वेमायट्ठिइया तुल्ल विसेसाहियं कम्मं पकरे'ति' तथा जो एकेन्द्रिय जीव विषम आयुवाले होते हैं और साथ साथ में उत्पन्न हुए होते हैं वे विषमस्थितिवाले होते हैं और तुल्यविशेषाधिक कर्मके बन्धक होते हैं । ये विमात्र स्थिति के एकेन्द्रिय जीव समोपपन्न होने के कारण तुल्ययोगवाले होते हैं, इससे वे तुल्यविशेषाधिक कर्म के बन्धक होते हैं । ३ ‘तत्थ णं जे ते विसमाउया विसमોવવન્નગા તે णं वेमायट्ठिइया वेमाय-

વિસમોવવન્નગા તેણં તુલ્લટ્ઠિइया વેમાયવિસેસાહિયં કમ્મં પકરે'તિ' તથા જે એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો સમાન આયુષ્યવાળા હોવા છતાં પણ જુદા જુદા સમયમાં ઉત્પન્ન થાય છે. તેઓ તુલ્ય સ્થિતિવાળા હોવા છતાં પણ જુદા જુદા સમયે ઉત્પન્ન થવા ને કારણે યોગોના વિષમ પશ્ચાત્તે લઈને જુદા જુદા વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરવાવાળા હોય છે. ‘તત્થ ણં જે તે વિસમાઉયા સમોવવન્નગા તે ણં વેમાયટ્ઠિइયા તુલ્લવિસેસાહિયં કમ્મં પકરે'તિ' તથા જે એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો વિષમ આયુષ્યવાળા હોય છે, અને એક સાથે ઉત્પન્ન થયેલા હોય છે, તેઓ વિષમ સ્થિતિવાળા તુલ્ય વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે. તેઓ વિમાત્રસ્થિતિના એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો સમાન ઉત્પત્તિવાળા હોવાને કારણે સરખા યોગવાળા હોય છે. તેથી તેઓ તુલ્ય વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરનારા હોય છે. ૩ ‘તત્થ ણં જે તે વિસમાઉયા

‘તત્થ ણં જે તે વિસમાડયા વિસમોવવન્નગા તે ણં વેમાયદ્વિદયા વેમાય-
વિસેસાહિયં કમ્મં પકરે’તિ’ તત્ર સ્વલુ યે તે વિપમાયુક્કા વિપમોપપન્નકારતે સ્વલુ
વિમાત્ર વિશેષાધિકં કર્મ જ્ઞાનાવરણીયાદિકં પ્રકુર્વન્તિ, એને વિમાત્રસ્થિતિકા વિપ-
માયુષો વિપમોપપન્નકાઃ વિપમોપપન્નત્વાચ્ચ યોગવૈષમ્યેણ વિમાત્રવિશેષાધિકં
કર્મ પ્રકુર્વન્તીતિ ૪ ।

‘સે તેણદ્દેણં ગોયમા ! વેમાયવિસેસાહિયં કમ્મં પકરે’તિ’ તત્ તેનાર્થેન
ગૌતમ !, યાવદ્ વિમાત્રવિશેષાધિકં કર્મ પ્રકુર્વન્તિ, અત્ર યાવત્પદેન એવમુચ્યતે,
અસ્ત્યેકકે તુલ્યસ્થિતિકાઃ તુલ્યવિશેષાધિકં કર્મ પ્રકુર્વન્તિ इत्यारभ्य અસ્ત્યેકકે
વિમાત્રસ્થિતિકા એતદન્ત પ્રકરણસ્ય સંગ્રહો ભવતીતિ ।

વિસેસાહિયં કમ્મં પકરે’તિ’ ‘તથા જો એકેન્દ્રિય જીવ વિષમ આયુવાલે
હોતે હૈં ઓર વિષમ સમય મેં ઉત્પન્ન હુએ હોતે હૈં વે વિષમ સ્થિતિવાલે
હોતે હૈં ઓર વિષમ વિશેષાધિક કર્મકે બન્ધક હોતે હૈં । ૪ તાત્પર્ય
કહને કો યહી હૈં કિ જહાં વિષમકાલ મેં ઉત્પન્ન હોતા હૈં વહાં પર યોગો
કી વિષમતા હૈં ઓર ડસકી વિષમતા સે ભિન્ન ભિન્ન વિશેષાધિક
કર્મોકી બન્ધકતા હૈં ઓર જહાં સમાન સમય મેં ઉપપાત હૈં વહાં
યોગો કી સમતા હૈં ઇસસે વહાં સમાન વિશેષાધિક કર્મો કી બન્ધ-
કતા હૈં એસા જાનના ચાહિયે । ‘સે તેણદ્દેણં ગોયમા જાવ વેમાયવિસે-
સાહિયં કમ્મં પકરે’તિ’ ઇસી કારણ હે ગૌતમ ! મેંને એસા કહા હૈં કિ વે
એકેન્દ્રિય જીવ યાવત્ વિષમ વિશેષાધિક કર્મકા બન્ધ કરતે હૈં । યહાં
યાવત્પદ સે ‘એવમુચ્યતે અસ્ત્યેકકે તુલ્યસ્થિતિકા તુલ્યવિશેષાધિકં

વિસમોવવન્નગા તેણં વેમાયદ્વિદયા વેમાયવિસેસાહિયં કમ્મં પકરે’તિ’ તથા જે
એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો વિષય આયુષ્યવાળા હોય છે, અને વિષમ સમયમાં
ઉત્પન્ન થાય છે, તે વિષમ સ્થિતિવાળા હોય છે અને વિષમ વિશેષાધિક
કર્મનો બંધ કરનારા હોય છે. ૪ આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે-ન્યાં
વિષમ કાળમાં ઉત્પન્ન થાય છે, ત્યાં યોગોનું વિષમપણું હોય છે. અને તે
વિષમ પણાથી જુદા જુદા વિશેષાધિક કર્મોનું બંધ પણું રહે છે અને ન્યાં
સમાન સમયમાં ઉત્પન્ન થવાનું કહેલ છે, ત્યાં યોગોનું સમાનપણું છે. તેથી
ત્યાં સમાન વિશેષાધિક કર્મોનું બંધકપણું કહેલું છે તેમ સમજી લેવું
‘સે તેણદ્દેણ ગોયમા ! જાવ વેમાયવિસેસાહિયં કમ્મં પકરે’તિ’ આ કારણથી
હે ગૌતમ ! મેં એવું કહેલ છે કે-તે એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો યાવત્ વિષમ
વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે. અહિંયાં યાવત્પદથી ‘એવમુચ્યતે અસ્ત્યેકકે

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ જાવ વિહરઈ’ તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત !
 इति यावद् विहरति । हे भदन्त ! एकेन्द्रियजीवानां विषये यद् देवानुप्रियेण
 कथितं तत् सर्वमेवमेव सर्वथैव सत्यमिति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नम-
 स्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति ॥सू० ८॥

इति श्री - विश्वविख्यातजगद्बल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि - ‘जैनाचार्य’

पूज्यश्री-घासीलालत्रतिविरचितायां “श्री भगवतीसूत्रस्य” प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां

व्याख्यायां चतुस्त्रिंशत्तमे शतके प्रथमस्य एकेन्द्रियशतकस्य

प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥३४॥१॥१॥

‘કર્મ પ્રકુર્વન્તિ’ યહાં સે લેકર ‘અસ્ત્યેકકે વિમાત્રસ્થિતિકા ‘યહાં તક
 का पाठ ग्रहीत हुआ है । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ત્તિ’ જાવ વિહરઈ ‘હે
 भदन्त ! एकेन्द्रिय जीवों के विषय में जो आप देवानुप्रियने जो कहा है
 વંહ સર્વ હી સર્વથા સત્ય હૈ ૨ હસ પ્રકાર કહકર ગૌતમને ભગવાન કો
 वन्दना की और नमस्कार किया वन्दना और नमस्कार कर फिर वे
 સંયમ ઔર તપ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુએ અપને સ્થાન પર
 विराजमान हो गये ॥सू० ८॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજીમહારાજકૃત

“ભગવતીસૂત્ર” કી પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાકે ચૌતીસવેં શતક કે

પ્રથમ એકેન્દ્રિયશતક કા પહલા ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥૩૪-૧॥

तुल्यस्थितिकाः तुल्य विशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति’ आ कथनथी लछने ‘अस्त्येकके
 વિમાત્રસ્થિતિકા’ અહિયાં સુધીના પાઠ ગ્રહણ કરેલ છે.

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ જાવ વિહરઈ’ હે ભગવન્ એક ઈન્દ્રિયવાળા
 જીવોના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સમગ્ર કથન
 સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય છે. આ
 પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના
 નમસ્કાર કરીને તેપછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા
 થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ.૦૮॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત ‘ભગવતીસૂત્ર ની

પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ચૌત્રીસમાં શતકમાં એકેન્દ્રિય શતકને

પહેલો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૪-૧॥

अथ द्वितीयोद्देशकः प्रारभ्यते

मूलम्—कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता तं जहा—पुढवीकाइया दुया भेओ जहा—एगिंदियसएसु जाव बायरवणस्सइकाइया य, कहिं णं भंते ! अणंतरोववन्नगा णं बायरपुढवीकाइयाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सट्टाणेणं अट्टसु पुढवीसु तं जहा—रयणप्पभाए जहा ठाणपदे जाव दीवेषु ससुद्देषु । एत्थ णं अणंतरोववन्नगाणं बायरपुढवीकाइयाणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं सव्वलोए । समुग्घाएणं सव्वलोए । सट्टाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे । अणंतरोववन्नग सुहुमपुढवीकाइया एगविहा अविलेसमणाणत्ता सव्वलोए परियावन्ना पन्नत्ता समणाउसो ! एवं एएणं कमेणं सव्वे एगिंदिया भाणियव्वा, सट्टाणाइं सव्वेसिं जहा ठाणपदे तेसिं पज्जत्तगाणं बायराणं उववाय समुग्घाय सट्टाणाणि जहा तेसिं चैव अपज्जत्तगाणं बायराणं सुहुसाणं सव्वेसिं जहा—पुढवीकाइयाणं भाणिया तहेव भाणियव्वा जाव वणस्सइकाइयत्ति । अणंतरोववन्नगाणं सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! अट्ट कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ, एवं जहा एगिंदियसएसु अणंतरोववन्नग उद्देसए तहेव पन्नत्ताओ तहेव बंधंति । तहेव वेदंति जाव अणंतरोववन्नगा बायरवणस्सइकाइया । अणंतरोववन्नगएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति । जहेव ओहिओ उद्देसओ भाणिओ तहेव । अणंतरोववन्नगएगिंदियाणं भंते ! कइ समुग्घाया पन्नत्ता । गोयमा ! दोन्नि समुग्घाया पन्नत्ता । तं जहा—वेयणासमुग्घाए य कसायसमुग्घाए य । अणंतरोववन्नग एगिंदियाणं

भन्ते ! किं तुल्लट्टिइया तुल्ल विसेसाहियं कम्मं पकरेति ?,
 पुच्छा तहेव । गोयमा ! अत्थेगइया तुल्लट्टिइया तुल्ल विसे-
 साहियं कम्मं पकरेति, अत्थेगइया तुल्लट्टिइया वेमायविसेसा-
 हियं कम्मं पकरेति । से केणट्टेणं जाव वेमाय विसेसाहियं कम्मं
 पकरेति ? गोयमा ! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया दुविहा पन्नत्ता ।
 तं जहा—अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा १, अत्थेगइया
 समाउया विसमोववन्नगा २ । तत्थ णं जे ते समाउया समो-
 ववन्नगा ते णं तुल्लट्टिइया तुल्ल विसेसाहियं कम्मं पकरेति ।
 तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते णं तुल्लट्टिइया
 वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेति, से तेणट्टेणं जाव वेमाय विसे-
 साहियं कम्मं पकरेति । सेवं भन्ते ! सेवं भन्ते ! त्ति ॥सू० १॥

चोत्तीसइमेसए पढमे एगिंदियसए वीओ उदेसो समत्तो । ३४-१-२।

छाया—कतिविधाः खलु भदन्त ! अनन्तरोपपन्नका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः ?
 गौतम ! पञ्चविधा अनन्तरोपपन्नका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा—पृथिवी-
 कायिका द्विषदो भेदो यथा—एकेन्द्रियशतकेषु यावद् वादर वनस्पतिकायिकाश्च ।
 कुत्र खलु भदन्त ! अनन्तरोपपन्नकाणां वादरपृथिवीकायिकानां स्थानानि प्रज्ञ-
 प्तानि ? गौतम ! स्वस्थानेनाष्टसु पृथिवीसु, तद्यथा—रत्नप्रभायां यथा स्थानपदे
 यावद् द्वीपेषु समुद्रेषु, अत्र खलु अनन्तरोपपन्नकानां वादरपृथिवीकायिकानां
 स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन सर्वलोके, समुद्रघातेन सर्वलोके, स्वस्थानेन
 लोकस्यासंख्येयभागे, अनन्तरोपपन्नकं सूक्ष्मपृथिवीकायिका एकविधा अवि-
 शेषा अनानात्वाः सर्वलोके पर्यापन्नाः प्रज्ञप्ताः, श्रमण ! आयुष्मन् ! एवमेतेन
 क्रमेण, सर्वे एकेन्द्रिया भणितव्याः, स्वस्थानानि सर्वेषां यथा स्थानपदे ।
 तेषां पर्यन्तकानां वादराणामुपपातसमुद्रघातस्वस्थानानि यथा तेषामेवापर्याप-
 कानां वादराणाम् । सूक्ष्माणां सर्वेषां यथा पृथिवीकायिकानां भणितानि तथैव
 भणितव्यानि यावद् वनस्पतिकायिका इति । अनन्तरोपपन्नकानां सूक्ष्मपृथिवी-
 कायिकानां भदन्त ! कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः, गौतम ! अष्टौ कर्मप्रकृतयः
 प्रज्ञप्ताः । एवं यथा एकेन्द्रियशतेषु अनन्तरोपपन्नकोद्देशके तथैव वध्नन्ति, तथैव
 वेदयन्ति, यावदनन्तरोपपन्नकाः वादरवनस्पतिकायिकाः । अनन्तरोपपन्नकैके-

ન્દ્રિયાઃ સ્વલ્ભદન્ત ! કુત ઉત્પન્નતે, યથૈવૌધિકુદ્દેશકો મણિતસ્તથૈવ ।
 અનન્તરોપપન્નકૈકેન્દ્રિયાણામ્, ભદન્ત ! કતિ સમુદ્ઘાતાઃ પ્રજ્ઞાપ્તાઃ ? ગૌતમ !
 દ્વૌ સમુદ્ઘાતૌ પ્રજ્ઞાપ્તૌ, તચ્ચથા-વેદના સમુદ્ઘાતશ્ચ કષાયસમુદ્ઘાતશ્ચ । અનન્ત-
 રોપપન્નકૈકેન્દ્રિયાઃ સ્વલ્ભદન્ત ! કિં તુલ્યસ્થિતિકા સ્તુલ્યવિશેષાધિકં કર્મ પ્રકુ-
 વ્વન્તિ ? પૃચ્છા તથૈવ । ગૌતમ ! અસ્ત્યેકકે તુલ્યસ્થિતિકા સ્તુલ્યવિશેષાધિકં
 કર્મ પ્રકુવ્વન્તિ । અસ્ત્યેકકે તુલ્યસ્થિતિકા વિમાત્રવિશેષાધિકં કર્મ પ્રકુવ્વન્તિ ।
 તત્કેનાર્થેન યાવદ્ વિમાત્રવિશેષાધિકં કર્મ પ્રકુવ્વન્તિ ? ગૌતમ ! અનન્તરોપપન્નકા
 એકેન્દ્રિયા દ્વિવિધા, પ્રજ્ઞાપ્તાઃ । તચ્ચથા-અસ્ત્યેકકે સમાયુષ્કાઃ સમોપપન્નકાઃ ૧,
 અસ્ત્યેકકે સમાયુષ્કાઃ વિષમોપપન્નકાઃ ૨ તત્ર સ્વલ્ભયે તે સમાયુષ્કાઃ સમોપપન્નકા
 સ્તે સ્વલ્ભ તુલ્યસ્થિતિકા સ્તુલ્યવિશેષાધિકં કર્મ પ્રકુવ્વન્તિ । તત્ર સ્વલ્ભયે તે સમા-
 યુષ્કા વિષમોપપન્નકાસ્તે સ્વલ્ભ તુલ્યસ્થિતિકા વિમાત્રવિશેષાધિકં કર્મ પ્રકુવ્વન્તિ ।
 તત્કેનાર્થેન યાવદ્ વિમાત્રવિશેષાધિકં કર્મ પ્રકુવ્વન્તિ । તદેવં ભદન્ત ! તદેવં ભદન્ત !
 ચતુસ્ત્રિંશતમે શતે પ્રથમે એકેન્દ્રિયશતે દ્વિતીયોદ્દેશકઃ સમાપ્તઃ ॥૩૪।૧।૨।

ટીકા—‘કહ્વિહાણં મંતે ! અણંતરોવવન્નગા એગિંદિયા પન્નત્તા’ કતિવિધાઃ
 કતિ પ્રકારાઃ સ્વલ્ભદન્ત ! અનન્તરોપપન્નકાઃ, યે અનન્તરે-ઉત્પન્નતેઃ પ્રથમે સમયે
 વર્તન્તે । તેઽનન્તરોપપન્નકાઃ સ્થિત્યભૂતા એકેન્દ્રિયજીવાઃ પ્રજ્ઞાપ્તાઃ કથિતાઃ,
 કિયન્તો મેદા એકેન્દ્રિયાણામિતિ પ્રશ્નઃ । મગવાનાહ-‘ગોયમા’ સ્ત્યાદિ ।
 ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘પંચવિહા અણંતરોવવન્નગા એગિંદિયા પન્નત્તા’ પશ્ચદ્વિધાઃ—

દ્વસરે ઉદ્દેશેકા પ્રારંભ—

‘કહ્વિહાણં મંતે ! અણંતરોવવન્નગા એગિંદિયા’ સ્ત્યાદિ

ટીકાર્થ—‘કહ્વિહા ણં મંતે ! અણંતરોવવન્નગા એગિંદિયા પન્નત્તા’ હે
 ભદન્ત જો ઉત્પન્નિ કે પ્રથમ સમયમે વર્તતે હૈં એસે વે અનન્તરોપપન્નક
 એકેન્દ્રિય જીવ કિતને પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રશુશ્રી કહતે હૈં—
 ‘ગોયમા ! પંચવિહા અણંતરોવવન્નગા એગિંદિયા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ।

॥૩૪॥ ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

‘કહ્વિહા ણં મંતે ! અણંતરોવવન્નગા એગિંદિયા’ સ્ત્યાદિ

‘કહ્વિહાણં મંતે ! અણંતરોવવન્નગા એગિંદિયા પન્નત્તા’ હે ભગવન્ બે
 ઓની ઉત્પન્નિ એક જ સમયમાં હોય છે. એવા તે અનંતરોપપન્નક એક-
 ઇન્દ્રિય એવા કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? ‘ગોયમા ! પંચવિહા

પંચપ્રકારકા અનન્તરોપપન્નકા એકેન્દ્રિયજીવાઃ પ્રજ્ઞતા-કથિતાઃ । પ્રકાર-
ભેદમેવ દર્શયતિ-‘તં જહા’ इत्यादि । ‘તં જહા’ તથા-‘પૃથ્વીકાઈયા દુયા ભેદો
જહા ઇન્દ્રિયસપ્સુ જાવ વાયરવણસ્સઙ્કાઈયાય’ પૃથ્વીકાયિકાઃ દ્વિપદો ભેદો
યંથા-એકેન્દ્રિયશતેષુ ત્રયસ્તિશતમે શતે એકેન્દ્રિયશતેષુ મધ્યે પ્રથમસ્ય એકેન્દ્રિય
શતસ્ય દ્વિતીયે ઉદ્દેશકે યાવદ્ વાદરવનસ્પતિકાયિકાશ્ચ દ્વિપદો ભેદઃ સૂક્ષ્મ-
વાદરૂપઃ । इहानन्तरोपपन्नकैकेन्द्रियाणामधिकारात् અનન્તરોપપન્નકાનાં ચ
પર્યાપ્તકત્વાભાવાત્ અપર્યાપ્તકાનાં સતાં સૂક્ષ્મા વાદરાશ્ચેતિ દ્વિપદ એવ ભેદઃ
કથિતો નેત્વન્યત્રેવ ચતુષ્કો ભેદઃ કથિતં इति । સ્થાનભેદનિરૂપણાયાહ-‘કહિં ણં’
इत्यादि । ‘કહિં ણં ભંતે ! અણંતરોવવન્નગાણં વાયરપૃથ્વીકાઈયાણં ઠાણા પન્નત્તા’
कुत्र-खलु भदन्त ! अनन्तरोपपन्नकानां वादरपृथिवीकायिकानां स्थानानि-निवा-
साधिकरणानि प्रज्ञप्तानि-कथितानीति प्रश्नः । भगवान्नाह-‘गोयमा’ इत्यादि ।

અનન્તરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવ પાંચ પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં ‘તં જહા’
જૈસે-‘પૃથ્વીકાઈયા દુયા ભેદો જહા ઇન્દ્રિયસપ્સુ જાવ વાયરવણ-
સ્સઙ્કાઈયા ય’ ‘પૃથ્વીકાયિક વગૈરહ્મનકે દો દો ભેદ જૈસે એકે-
ન્દ્રિય શતકો’ મેં કહે ગયે હૈં સૂક્ષ્મ ઓર વાદર કે ભેદ સે યાવત્
વનસ્પતિકાયિક તક વૈસે હી યહાં જાનના ચાહિયે । યહાં અનન્તરો-
પપન્નક એકેન્દ્રિયો’ કા અધિકાર હૈ । ફલલિયે હનમેં પર્યાપ્તકતા કા
અભાવ રહતા હૈ । ફલલિયે યહાં સૂક્ષ્મ ઓર વાદર એસે યે દો ભેદ
હી હનકે કહે ગયે હૈં । દૂસરી જગહ કે જૈસે યહાં એકેન્દ્રિય પૃથ્વી
કાયિકકે ચાર ભેદ નહીં કહે હૈં । ‘કહિં ણં ભંતે ! અણંતરોવવન્નગાણં
વાયરપૃથ્વીકાઈયાણં ઠાણા પન્નત્તા’ હે ભદન્ત ! હન અનન્તરોપપન્નક
વાદર પૃથ્વીકાયિક એકેન્દ્રિય જીવો’ કે સ્થાન કહાં કહે ગયે હૈં ?

અણંતરોવવન્નગા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિય હોવે । પાંચ
પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. ‘તં જહા’ તે આ પ્રમાણે છે. ‘પૃથ્વીકાઈયા દુયા
ભેદો જહા ઇન્દ્રિયસપ્સુ જાવ વાયરવણસ્સઙ્કાઈયા ય’ પૃથ્વીકાયિક વિગેરેના
બે ભેદો બે રીતે એકધન્દ્રિય શતકમાં કહેવામાં આવેલ છે. સૂક્ષ્મ અને બાદરના
ભેદથી યાવત્ વનસ્પતિકાયિક સુધીના કહ્યા છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ
સમજવું. અહિયાં અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિયોના અધિકાર છે. તેથી પર્યાપ્ત
પણાનો અભાવ રહે છે. તેથી અહિયાં સૂક્ષ્મ અને બાદર એવા બે બે ભેદો
તેઓના કહ્યા છે. અન્ય સ્થળની જેમ અહિયાં એકધન્દ્રિયવાળા પૃથ્વીકાયિકોના
આર ભેદો કહ્યા નથી. ‘કહિં ણં ભંતે ! અણંતરોવવન્નગાણં વાયર પૃથ્વીકાઈયાણં
ઠાણા પન્નત્તા’ હે ભગવન્ આ અનંતરોપપન્નક બાદર પૃથ્વીકાયિક એકધન્દ્રિય

‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘સદ્ગણેણં અદ્દસુ પુઢવીસુ’ સ્વસ્થાનેન અદ્દમ્ પૃથિવીપુ
યત્ર તે તિષ્ઠન્તિ તાનિ તેષાં સ્વસ્થાનાનિ, તદપેક્ષયા તેષામણાસુ પૃથિવીપુ
સ્થાનાનિ કથિતાનિ, ‘તં જહા’ તદ્વત્થા—‘રયણપ્પમાણ જહા ઠાણપદે’ રત્નપ્રમાયાં
યથા—સ્થાનપદે પ્રજ્ઞાપનાયા દ્વિતીયં પદં તત્ર યથા રત્નપ્રમાદિકં પ્રાગ્ભારાપૃથિવી
પર્યન્તં સ્થાનતયા કથિતં તદેવ સ્થાનતયા અત્રાપિ જ્ઞાતવ્યમિતિ । કિયત્પર્યન્તં
પ્રજ્ઞાપનાયાઃ સ્થાનપદમિદં ગ્ર હમ્, તત્રાહ—‘જાવ’ ઇત્યાદિ । ‘જાવ દીવેસુ સમુ-
દેસુ’ યાવદ્દીપેષુ સમુદ્રેષુ દ્વીપસમુદ્રાદિકં સર્વમેવ અનન્તરોપપન્ન વાદરપૃથિવીકાયિકૈ-
કેન્દ્રિયાણાં સ્થાનમિતિ । સ્થાનમુપસંહરન્નાહ—‘પત્થ ણં’ ઇત્યાદિ । ‘પત્થ ણં અણંત-

ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં—‘ગોયમા ! સદ્ગણે ણં અદ્દસુ પુઢવીસુ’ હે
ગૌતમ ! સ્વસ્થાન કી અપેક્ષા સે હન અનન્તરોપપન્નક વાદર એકેન્દ્રિય
જીવોંકે સ્થાન આઠ પૃથિવિયોં મેં કહે ગયે હૈં ક્યોંકિ ચે વહાં પર
રહતે હૈં । વે આઠ પૃથિવિયાં હસ પ્રકાર સે હૈં—‘રયણપ્પમાણ જહા
ઠાણપદે’ સ્થાનપદ યહ પ્રજ્ઞાપના કા દ્વિતીય પદ હૈં । ઉસમેં રત્નપ્રમા
સે લેકર ઈષ્ટપ્રાગ્ભારા પૃથિવી તરુઠ્ઠે સ્થાન કો હનકા નિવાસસ્થાન
બતલાયા ગયા હૈં । સો એસા હી યહાં પર હનકે નિવાસસ્થાન કે
સમ્બન્ધ મેં જાનના ચાહિયે । ‘જાવ દીવેસુ સમુદેસુ’ હન પૃથિવિયોં
આદિ કે અતિરિક્ત ઔર ખી હન અનન્તરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવોંકે
રહને કે સ્થાન હૈં જો હસ સૂત્રપાઠ દ્વારા બતલાયે ગયે હૈં વે સ્થાન
હૈં દ્વીપ ઔર સમુદ્ર । સમસ્ત દ્વીપોંમેં ઔર સમસ્ત સમુદ્રોં મેં ખી
ચે અનન્તરોપપન્નક વાદરપૃથિવીકાયિક એકેન્દ્રિય જીવ રહતે હૈં ।

જીવોંનું સ્થાન કયાં કહેવામાં આવેલ છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે
છે કે—‘ગોયમા ! સદ્ગણેણં અદ્દસુ પુઢવીસુ’ હે ગૌતમ ! સ્વસ્થાનની અપેક્ષાથી
આ અનંતરોપપન્નક વાદર એકેન્દ્રિયવાળા જીવોના સ્થાનો આઠ પૃથ્વીયોમાં
કહેવામાં આવેલ છે, કેમ કે તે ત્યાં રહે છે. તે આઠ પૃથ્વીયો આ પ્રમાણે
છે ‘રયણપ્પમાણ જહા ઠાણપદે’ પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના બીજા સ્થાન પદમાં રત્નપ્રમા
વિશેષથી લઈને પ્રાગ્ભારા પૃથ્વી સુધીના સ્થાનો તેઓના નિવાસ સ્થાન
કહેલ છે. તે તે જ પ્રમાણે અહીંયા તેઓના નિવાસ સ્થાનના સંબંધમાં
સમજવું. ‘જાવ દીવેસુ સમુદેસુ’ આ પૃથ્વીયો શિવાય બીજા પણ આ અનંત-
રોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવોને રહેવાના સ્થાનો છે જે આ સૂત્રપાઠ દ્વારા
બતાવવામાં આવેલ છે તે સ્થાનો દ્વીપ અને સમુદ્ર છે સઘળા દ્વીપોમાં
અને સઘળા સમુદ્રોમાં પણ આ અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિયવાળા જીવો
રહે છે. આ રીતે ‘પત્થ ણં અણંતરોવવણગાણં વાયર પુઢવીકાઙ્ગાણં ઠાણા

શેવવન્નગાણં વાયરપુઠ્ઠવીકાહયાણં ઠાણા પન્નત્તા' અન્ન રત્નપ્રમાદિપુ દ્વીપસમુદ્રાદિપુ
ચ લલુ અનન્તરોપપન્નકાનાં વાદરપૃથિવીકાચિકાનાં સ્થાનાનિ પ્રહ્લપ્તાનિ કથિ-
તાનિ । એતેપુ દ્વીપસમુદ્રાદિપુ એતે તિષ્ઠન્તીતિ ભાવઃ ।

તત્ કિમેતાવદેવ સ્થાનમ્ અનન્તરોપપન્નકાનાં તન્નાહ—'ઉવવાણં' ક્ષયાદિ ।
'ઉવવાણં સવ્વલોએ' ઉપપાત્તેન સર્વલોકે સ્થાનમ્, 'સમુગ્ધાણં સવ્વલોએ' સમુદ્-
ધાતેન સર્વલોકે તત્ત્રોપપાતેન—ઉપપાતાભિમુખ્યેનાપાન્તરાલ્લટ્ટરયેત્યર્થઃ સમુદ્ધાતેન
મારણાન્તિકેનેતિ । અનન્તરોપપન્નકા હિ ઉપપાતમારણાન્તિક સમુદ્ધાતાભ્યામતિ
વહુત્વાત્ સર્વલોકમપિ વ્યાપ્ય વર્તન્તે, અન્નચૈવં ભૂતયા સ્થાપનયા ભાવના કર્તવ્યા ।



અન્ન પ્રથમવક્ત્રં યથૈવ એકે સંહરન્તિ, તદૈવ તદ્વક્રદેશ
મન્યે પૂરયન્તિ । એવં દ્વિતીયવક્ત્રસંહરણેઽપિ અવક્રોત્પન્નાવપિ
પ્રવાહતો ભાવનીયમ્ । અનન્તરોપપન્નકત્વં ચેહ ભાવિભાવાપેક્ષં

હસ પ્રકાર 'એત્થ ણં અણંતરોવવન્નગાણં વાયર પુઠ્ઠવીકાહયાણં ઠાણા
પણ્ણત્તા' હન રત્નપ્રમા આદિ પૃથિવિયોં મેં ઔર જમ્બૂદ્વીપ આદિ
દ્વીપોં મેં એવં લલણ સમુદ્ર આદિ સમુદ્રોં મેં અનન્તરોપપન્નક વાદરપૃથિવી-
કાચિક એકેન્દ્રિય જીવોં કે સ્થાન કહે ગયે હેં । હન સવ મેં યે એકેન્દ્રિય
જીવ રહતે હેં । 'ઉવવાણં સવ્વલોએ સમુગ્ધાણં સવ્વલોએ' ઉપપાત
કી અપેક્ષા સે ઔર મારણાન્તિક સમુદ્ધાત કી અપેક્ષા યે જીવ
વહુત હી અધિક હોનેકે કારણ સમરત લોકકો વ્યાપ કર કે રહ
રહે હેં । હનકી એસી રચનાસે ભાવના કરની ચાહિયે ।

યહાં જય પ્રથમ વક્ત્ર સ્થાનકો કિતનેક અનન્તરો-
પપન્નક જીવ સંહત કરતે હેં—જાલી કરતે હેં—તવ



ઉસી સમય ઉસ વક્ત્ર સ્થાનકો દૂસરે ઔર અનન્તરોપપન્નક જીવ
ભર દેતે હેં । હસી પ્રકાર સે જય દ્વિતીય વક્ત્ર સ્થાનકા સંહરણ હોતા
હે તવ ઉસે ઔર દૂસરે અનન્તરોપપન્નક જીવ ભર દેતે હેં । હસ

પન્નત્તા' આ રત્નપ્રમા વિગેરે પૃથ્વીયોમાં અને જમ્બૂદ્વીપ વિગેરે દ્વીપોમાં તથા
લલણ સમુદ્ર વિગેરે સમુદ્રોમાં અનંતરોપપન્નક વાદર એકધન્દ્રિયવાળા જીવોના
સ્થાનો કહેવામાં આવેલ છે. આ બધામાં એક ધન્દ્રિયવાળા જીવો રહે છે.
'ઉવવાણં સવ્વલોએ સમુગ્ધાણં સવ્વલોએ' ઉપપાતની અપેક્ષાથી અને મારણાન્તિક
સમુદ્ધાતની અપેક્ષાથી આ જીવો ઘણા વધારે હોવાને કારણે ઘણા લોકને
વ્યાપ્ત કરીને રહે છે. તેઓની રચના આ પ્રકારની કરીને ભાવના
કરવી જોઈએ. અહિયાં જ્યારે પહેલા વક્ત્રસ્થાનને કેટલાક અનંત-
રોપપન્નક જીવો ખાલી કરે છે, ત્યારે તેજ સમયે તે વક્ત્રસ્થાનને
બીજા અનંતરોપપન્નક જીવો ભરી દે છે, એ રીતે જ્યારે બીજા વક્ત્ર



ગ્રાહ્યમપાન્તરાલે તસ્ય સાક્ષાદભાવાત્ । મારણાન્તિકસમુદ્ઘાતશ્ચ પ્રાક્તન ભાવાપેક્ષયા
અનન્તરોપપન્નકાવસ્થાયાં તસ્યાસમ્ભવાદિતિ । ‘સદ્ગણેનં લોગસ્સ અસંખેજ્જહ
માગે ત્તિ’ સ્વસ્થાનેન લોકરયાસંખ્યેયમાગે રત્નપ્રભાદિ પૃથિવીનાં વિમાનાનાં ચ
લોકસ્યાસંખ્યેયમાગવર્તિત્વાત્, પૃથિવ્યાદીનાં ચ પૃથિવીકાયિકાનાં સ્વસ્થાન-
ત્વાદિતિ । ‘અણંતરોવવન્નગ સુહુમપુઢવીકાહયા એગવિહા અવિસેસમણાણત્તા’
અનન્તરોપપન્નક સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાઃ સર્વેઽપિ એકવિધા એકપ્રકારકા એવ ભવન્તિ
અવિશેષાઃ પરસ્પર વિશેષરહિતા અત્તાનાત્વાઃ પરસ્પરં મેદરહિતાશ્ચ ભવન્તિ ‘સવ્વ
લોએ પરિયાવન્ના’ સર્વલોકે પર્યાપન્નાઃ વ્યાપ્તાઃ ‘પન્નત્તા’ પ્રજ્ઞપ્તાઃ-કથિતા इति

પ્રકાર પ્રવાહ રૂપ સે યહ સદા સરા હી રહતા હૈ । અનન્તરોપપન્નકતા
ગ્રહાં ભાવી ભવ કી અપેક્ષા સે કહી ગઈ હૈ । ક્યોંકિ અપાન્તરાલ
મેં હસકા સાક્ષાત્ અભાવ રહતા હૈ । મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત પ્રાક્તન
ભવકી અપેક્ષા સે કહાં ગયા હૈ । ક્યોંકિ અનન્તરોપપન્નક કી અવસ્થા
મેં હસકા અભાવ હોતા હૈ, ‘સદ્ગણેનં લોગસ્સ અસંખેજ્જહમાગે ત્તિ’
સ્વસ્થાન કી અપેક્ષા યે લોકકે અસંખ્યાતવેં ભાગ મેં રહતે હૈં ।
ક્યોંકિ રત્નપ્રભા આદિ પૃથિવિયાં ઔર વિમાન યે સવ લોકકે
અસંખ્યાતવેં ભાગ મેં હૈં । ઔર પૃથિવી આદિ પૃથિવીકાયિકોં કે
સ્વસ્થાન હૈં । ‘અણંતરોવવન્નગ સુહુમપુઢવીકાહયા એગવિહા અવિસેસ-
મણાણત્તા’ સવ અનન્તરોપપન્નક સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક એકેન્દ્રિય જીવ
એકપ્રકાર કે હી હોતે હૈં । પરસ્પર મેં યે વિશેષતા સે રહિત હોતે
હૈં । ઔર હનમેં કોઈ એદ નહીં હોતા હૈ । ‘સવ્વલોએ પરિયાવન્ના’ યે

સ્થાનનું સંહરણુ થાય છે ત્યારે તેનાથી બીજા અનંતરોપપન્નક હોવો
તે સ્થાન ભરી દે છે. આ પ્રમાણે પ્રવાહ રૂપથી અહિયાં બધા
ભર્યાજ રહે છે. અનંતરોપપન્નકપણુ અહિયાં આગામી ભવની અપેક્ષાથી
કહેલ છે. કેમ કે-અપાન્તરાલમાં તેનો સાક્ષાત્ અભાવ રહે છે. ‘સદ્ગણેનં
લોગસ્સ અસંખેજ્જહ માગેત્તિ’ સ્વસ્થાનની અપેક્ષાથી તેઓ લોકના અસંખ્યાત
ભાગમાં રહે છે. કેમ કે રત્નપ્રભા વિગેરે પૃથ્વીયો અને વિમાનો એ બધા
લોકના અસંખ્યાતમા ભાગમા છે. અને પૃથ્વી વિગેરે પૃથ્વીકાયિકોનું સ્વસ્થાન
છે. ‘અણંતરોવવન્નગસુહુમપુઢવીકાહયા એગવિહા અવિસેસમણાણત્તા’ સઘળા
અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક એક ઈન્દ્રિયવાળા હોવો એક પ્રકારના જ
હોય છે. તેઓ અન્યો અન્ય વિશેષ પણાથી રહિત હોય છે. અને તેઓમાં
કાંઈજ ભેદ હોતો નથી. ‘સવ્વલોએ પરિયાવન્ના’ આ સઘળા લોકમાં વ્યાપ્ત

‘સમણાડસો’ હે શ્રમણ આયુષ્મન્ ! ‘એવં એણં કમેણં સવ્વે ઇગિંદિયા માણિ-
યવ્વા’ એવમ્ અનન્તરોપપન્નક પૃથિવીકાયિકૈકેન્દ્રિયવદેવ સર્વેઽપિ અપ્કાયિકાદય
એકેન્દ્રિયા મણિતવ્યાઃ પ્રરૂપનીયા इति । ‘સદ્ધાણાં સવ્વેસિં જહા ઠાણપદે તેસિં
પઙ્ગત્તગાણં વાયરાણં’ સ્વસ્થાનાનિ સર્વેષાં શેવાણામપ્કાયિકાદેકેન્દ્રિયાણાં યથા-
સ્થાનપદે-પ્રજ્ઞાપનાયા દ્વિતીયપદે તેષાં પર્યાપ્તકાનાં વાદરાણાં યથા કથિતાનિ
તથૈવ જ્ઞાતવ્યાનિ । વાદરપૃથિવીકાયિકાનાં સ્વસ્થાનાનિ ચૈત્રમ્-‘અટ્ટસુ પુઢવીસુ તં
જહા-રયણપ્પમાએ’ અટ્ટસુ પૃથિવીષુ તથથા-રત્નપ્રમાયામ્ इत्यादि, વાદરા-
પ્કાયિકાનામ્ ‘સત્તસુ ઘણોદહીસુ’ સપ્ત ઘનોદધયઃ સ્વસ્થાનમ્, વાદરતેજસ્કાયિકા-

સમસ્ત લોક મેં વ્યાસ હોકર રહતે હૈ એસા ‘સમણાડસો’ હે શ્રમણ
આયુષ્મન્ ! इनके सम्बन्ध में कहा गया है । ‘एवं एणं कमेणं
सव्वे इगिंदिया भाणियव्वा’ इसी प्रकार से समस्त सूक्ष्म अप्कायिक
आदि एकेन्द्रिय जीव कह देने चाहिये । ‘सद्धानां सव्वेसिं जहा
ठाणपदे, तेसिं पङ्गत्तगाणं वायराणं’ इन पृथिवीकायिक जैसा ही समस्त
अप्कायिक आदि एकेन्द्रिय जीवों के स्वस्थान प्रज्ञापना के स्थान पद
में कहे गये अनुसार जानना चाहिये ! जिस प्रकारसे पर्याप्त वादर
एकेन्द्रियों के उपपात, समुद्घात और स्वस्थान कहे गये हैं उसी
प्रकार से वे अपर्याप्त वादर एकेन्द्रिय जीवों के भी जानना
चाहिये । वादरपृथिवीकायिकों के स्वस्थान इस प्रकार से हैं-‘अट्टसु
पुढवीसु तं जहा रयणपपमाए’ वादरपृथिवीकायिकों का स्वस्थान
रत्नप्रभा आदि आठ पृथिवियों में है ‘सत्तसु घणोदहीसु’ वादरअप्का-
यिकों का स्वस्थान सात घनोदधियों में हैं । वादर तेजस्कायिकों का

થઈને રહે છે. એ પ્રમાણે ‘સમણાડસો’ હે શ્રમણ આયુષ્મન્ આમના
વિષયમાં કહેલ છે. ‘એવં એણં કમેણં સવ્વે ઇગિંદિયો માણિયવ્વા’ આજ પ્રમાણે
સઘળા સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક વિગેરે એકેન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં કહેલ છે.
‘સદ્ધાણાં સવ્વેસિં જહા ઠાણપદે તેસિં પઙ્ગત્તગાણં વાયરાણં’ આ સઘળા અપ્કાયિક
એકેન્દ્રિય જીવોનું સ્વસ્થાન પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના સ્થાનપદમાં કહ્યા પ્રમાણે
સમજવું. જે રીતે પર્યાપ્ત બાદર એકેન્દ્રિયવાળા જીવોના ઉપપાત, સમુદ્-
ઘાત અને સ્વસ્થાન કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે આ અપર્યાપ્ત
બાદર એકેન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં પણ સમજવું. બાદર પૃથ્વીકાયિકોના
સ્વસ્થાન આ પ્રમાણે કહેલ છે.-‘અટ્ટસુ પુઢવીસુ તં જહા રયણપપમાએ’ બાદર
પૃથ્વીકાયિકોનું સ્વસ્થાન રત્નપ્રભા વિગેરે આઠ પૃથ્વીઓમાં છે. ‘સત્તસુ
ઘણોદહીસુ’ બાદર અપ્કાયિકોનું સ્વસ્થાન સાતઘનોદધિ છે. બાદર

નામ્ 'અંતોમણુસ્સલ્લેક્ષે' અન્તર્મણુસ્સલ્લેક્ષેત્તિમિત્યાદિ, વાદરવાયુકાયિકાનાં પુનઃ સ્વસ્થાનમ્ 'સત્તસુ ઘગવાયલ્લેક્ષે' સત્તઘનવાતલયાઃ વાદરવનસ્પતીનાં તુ સ્વસ્થાનમ્ 'સત્તસુ ઘણોદહીસુ' સત્તઘનોદધિરિત્યાદિ । 'ઉચ્ચવાય સમુચ્ચવાય સદ્ધાણાણિ જહા તેસિં ચેવ અપ્પજ્જત્તગાણં વાયરાણં' ઉપપાતસમુદ્ધવાતસ્વસ્થાનાનિ યથા તેપાં પૃથિવીકાયિકાનામેવ અપર્યાપ્તકાનામ્ અપર્યાપ્તતાગુણવિશિષ્ટાનાં વાદરાણામ્, અપર્યાપ્ત વાદરપૃથિવીકાયિકાદીનાં યેન પ્રકારેણોપપાતસમુદ્ધવાત સ્વસ્થાનાનિ કથિતાનિ તેનૈવ રૂપેણ પર્યાપ્ત વાદરપૃથિવીકાયિકાદીનામપિ ઉપપાત સમુદ્ધવાત સ્વસ્થાનાનિ જ્ઞાતવ્યાનિ, તાનિ ચૈવમ્ 'જત્યેવ વાયરપુઢવીકાહ્યાણં પ્પજ્જત્તગાણં ઠાણા તત્યેવ વાયર પુઢવીકાહ્યાણં અપ્પજ્જત્તગાણં ઠાણા પન્નત્તા, ઉચ્ચવાણં સવ્વલોહ, સમુચ્ચવાણં સવ્વલોહ, સદ્ધાણેણં લોમસ્સ અસંલેક્ક

સ્વસ્થાન 'અંતો મણુસ્સલ્લેક્ષે' અન્તર્મણુસ્સલ્લેક્ષેત્તિમિત્યાદિ । 'સત્તસુ ઘગવાયલ્લેક્ષે' વાદરવાયુકાયિકાનાં કા સ્વસ્થાન સાત ઘનવાત આદિ હૈં । વાદરવનસ્પતિકાયિકાનાં કા સ્વસ્થાન 'સત્તસુ ઘણોદહીસુ' સાત ઘનોદધિયોં મૈં હૈં । ઇત્યાદિ । 'ઉચ્ચવાય સમુચ્ચવાય સદ્ધાણાણિ જહા તેસિં ચેવ અપ્પજ્જત્તગાણં વાયરાણં' ઉપપાત, સમુદ્ધવાત ઔર સ્વસ્થાન યે ત્રિલ્લ પ્રકાર સે પર્યાપ્ત વાદર એકેન્દ્રિય જીવોં કે કહે હૈં । ડસી પ્રકારસે યે અપર્યાપ્ત વાદરપૃથિવીકાયિકા આદિકોં કે કહે ગયે હૈં એસા જાનના ચાહિયે । 'જત્યેવ વાયરપુઢવીકાહ્યાણં પ્પજ્જત્તગાણં ઠાણા તત્યેવ વાયરપુઢવીકાહ્યાણં અપ્પજ્જત્તગાણં ઠાણા પન્નત્તા' ઇતીલિયે એસા યદ્દ સૂત્ર કહા ગયા હૈં જહાં પર પર્યાપ્ત વાદરપૃથિવીકાયિકોં કે સ્થાન હૈં વહીં પર અપર્યાપ્ત વાદરપૃથિવીકાયિકોં કે સ્થાન હૈં । 'ઉચ્ચવાણં સવ્વલોહ, સમુચ્ચવાણં

તેજસ્કાયિકોં સ્વસ્થાન 'અંતોમણુસ્સલ્લેક્ષે' અન્તર્મણુસ્સલ્લેક્ષેત્તિમિત્યાદિ વાદરવાયુ કાયિકોં સ્વસ્થાન સાત ઘનવાત વિગેરે છે. વાદર વનસ્પતિકાયિકોં સ્વસ્થાન 'સત્તસુ ઘણોદહીસુ' સાત ઘનોદધિવાત વલય છે ઇત્યાદિ 'ઉચ્ચવાય સમુચ્ચવાય સદ્ધાણાણિ જહા તેસિં ચેવ અપ્પજ્જત્તગાણં વાયરાણં' ઉપપાત, સમુદ્ધવાત, અને સ્વસ્થાન એ બધા જે પ્રમાણે પર્યાપ્ત વાદર એકેન્દ્રિયવાળા જીવોના કહ્યા છે, એજ પ્રમાણે આ અપર્યાપ્ત વાદર પૃથ્વીકાયિક વિગેરેના પણ કહેલા છે. તેમ સમજવું 'જત્યેવ વાયરપુઢવીકાહ્યાણં પ્પજ્જત્તગાણં ઠાણા તત્યેવ વાયર પુઢવીકાહ્યાણ અપ્પજ્જત્તગાણં ઠાણા પન્નત્તા' એ માટે જ આ પ્રમાણેનું આ સૂત્ર કહેલ છે. જ્યાં પર્યાપ્ત વાદર પૃથ્વીકાયિકોં સ્વસ્થાન છે, ત્યાં જ અપર્યાપ્ત વાદર પૃથ્વીકાયિકોં સ્થાન છે. 'ઉચ્ચવાણં સવ્વલોહ સમુચ્ચવાણં

ઇમાગે' इत्यादि । यथैव वादरपृथिवीकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि तथैव वादरपृथिवीकायिकानामपर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि उपपातेन सर्व-
लोके, समुद्घातेन सर्वलोके, स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे, इत्यादीति-
च्छाया । 'सुहुमाणं सव्वेसिं जहा पुढवीकाइयाणं भणिया तहेव भाणियव्वा जाव
वणस्सइकाइयत्ति' सूक्ष्माणं सर्वेषामप्कायिकादीनां वनस्पतिकायिकान्तानां
यथा पृथिवीकायिकानां मुपपातसमुद्घातस्वस्थानानि तथैव-तेनैव रूपेण
अप्कायिकादीनां सूक्ष्माणामपि उपपातसमुद्घात स्वस्थानानि भणितव्यानि यावद्व-
नस्पतिकायिका इति, अप्कायिकादारभ्य वनस्पतिकायपर्यन्तानां मुपपात समु-
द्घात स्वस्थानानि पृथिवीकायिकवदेव ज्ञातव्यानीति भावः । 'अणंतरोववन्नगाणं
सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' 'अनन्तरोपपन्नकानां
सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां भदन्त ! कति-कियत्संख्यकाः कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः ?

सव्वलोए, सट्टाणेणं लोवस्स असंखेज्जइ भागे' ये उपपातकी अपेक्षा
से सर्वलोक में हैं' समुद्घातकी अपेक्षा से भी ये सर्वलोक में हैं और
स्वस्थान की अपेक्षा से ये लोकके असंख्यातवे' भागमें रहते हैं ।
'सुहुमाणं सव्वेसिं जहा पुढवीकाइयाणं भणिया तहेव भाणियव्वा
जाव वणस्सइकाइयत्ति' जिस प्रकार से सूक्ष्म पृथिवीकायिकों के उप-
पात समुद्घात और स्वस्थान कहे गये हैं उसी प्रकार से समस्त
सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके-अप्कायिक से लेकर वनस्पतिकायिकों तकके
उपपात समुद्घात और स्वस्थान कह लेना चाहिये । 'अणंतरोवव-
न्नगाणं सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ'
'हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नक सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवों के कितनी
कर्मप्रकृतियां कही गई हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं- 'जोयमा अट्ट-

સવ્વલોએ, સટ્ટાણેણં લોવસ્સ અસંખેજ્જઈ ભાગે' ઉપપાતની અપેક્ષાથી આ સર્વ
લોકમાં રહે છે. સમુદ્ધાતની અપેક્ષાથી પણ આ સર્વ લોકમાં રહે છે. અને
સ્વસ્થાનની અપેક્ષાથી આ સર્વ લોકના અસંખ્યાતમા ભાગમાં રહે છે.
'સુહુમાણં સવ્વેસિં જહા પુઢવીકાઈયાણં ભણિયા તહેવ ભાણિયવ્વા' જાવ વણ-
સ્સઈકાઈયત્તિ' જે પ્રમાણે સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકોના ઉપપાત, સમુદ્ધાત, અને
સ્વસ્થાન કહ્યા છે. એજ પ્રમાણેસઘળા સૂક્ષ્મ એકેન્દ્રિયવાળા જીવોને અપ્કાયિકથી
લઈને વનસ્પતિ કાયિકો સુધીના ઉપપાત, સમુદ્ધાત અને સ્વસ્થાન કહેવા
જોઈએ 'અણંતરોવવન્નગાણં' સુહુમપુઢવીકાઈયાણં ભંતે ! કહ કમ્મપગડીઓ
પન્નત્તાઓ' જે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોને કેટલી કમ
પ્રકૃતિયો કહેવામાં આવી છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને

इति प्रश्नः, भगवानाह—‘गोयमा’ इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘अष्ट कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ’ अष्ट कर्मप्रकृतयः ज्ञानावरणीयादिकाः प्रज्ञप्ताः—कथिताः ‘एवं जहा एग्गि-
दिय सएसु अणंतरोववन्नगउद्देसए तहेव पन्नत्ताओ तहेव बंधंति तहेव वेदेति’ एवं
यथा—एकेन्द्रियशतैषु त्रयस्त्रियत्तमशतकस्य प्रथमे एकेन्द्रियशते द्वितीये अनन्तरो-
पपन्नकोद्देशके तथैव प्रज्ञप्ताः । तथा तथैव बन्धन्ति तथैव वेदयन्ति इति ज्ञातव्यम् ।
प्रज्ञापनबन्धनवेदनरूपा स्तिस्त्रोऽपि वक्तव्यता एकेन्द्रियशतकोक्तवदेव वाच्या
इति भावः, तथाहि—एकेन्द्रियशतके पञ्चविधा एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ता इति, बन्धन
सूत्रे सप्तकर्मप्रकृती बन्धन्ति २, वेदनसूत्रे चतुर्दशविधाः ज्ञानावरणीया-

कम्म पगडीओ पन्नत्ताओ’ हे गौतम ! इनके आठ कर्मप्रकृतियां कही
गई हैं । ‘एवं जहा एग्गिदियसएसु अणंतरोववन्नग उद्देसए तहेव
पन्नत्ताओ तहेव बंधंति तहेव वेदेति’ जिस प्रकार से ३३ वे शतक के
एकेन्द्रिय शतको में से प्रथम एकेन्द्रियशतक में द्वितीय अनन्तरो-
पपन्नक उद्देशक में हे गौतम ! बन्ध और वेदन के सम्बन्ध में जैसा
कहा गया है उसी प्रकारसे इनके सम्बन्ध में भी कहा गया जानना
चाहिये । तात्पर्य इस कथनका केवल ऐसा ही है कि प्रज्ञापन-सत्त्व,
बन्धन एवं वेदन के सम्बन्ध में जैसा कथन एकेन्द्रिय शतको के अनन्त-
रोपपन्नक उद्देशक में कहा है, उसी प्रकार का कथन यहां पर भी कह
लेना चाहिये । जैसे इस सम्बन्ध में एकेन्द्रिय शतक में पांच प्रकारके
एकेन्द्रिय जीव कहे गये हैं—बन्धन सूत्र में सात कर्मप्रकृतियों का इनके

કહે છે કે—‘ગોયમા ! અષ્ટ કમ્મપગડીઓ પન્નત્તાઓ’ હે ગૌતમ ! તેઓને આઠ
કર્મ પ્રકૃતિયો કહેવામાં આવી છે. ‘એવં જહા એગ્ગિદિયસસુ અણંતરોવવન્નગ
ઉદ્દેસસુ તહેવ પન્નત્તાઓ તહેવ બંધંતિ તહેવ વેદેતિ’ જે પ્રમાણે ૩૩ તેત્રીસમા
શતકના એકેન્દ્રિય શતકોમાંથી પહેલા એકેન્દ્રિય શતકમાં બીજા અનંતરો-
પપન્નક ઉદ્દેશમાં હે ગૌતમ ! બંધ અને વેદનના સમ્બન્ધમાં જે પ્રમાણે
કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે તેઓના સમ્બન્ધમાં પણ કહેવું જોઈએ.
કહેવાતું તાત્પર્ય એ છે કે—સત્ત્વ, બંધન અને વેદનના સંબંધમાં એકેન્દ્રિય
શતકોના અનંતરોપપન્નક ઉદ્દેશમાં જે પ્રમાણેનું કથન કરવામાં આવેલ છે,
એજ પ્રમાણેનું કથન આ પ્રકરણમાં એટલે કે અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મ પૃથ્વી-
કાયિકોના સંબંધમાં સમજવું. જેમ કે—પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમાં પાંચ પ્રકારના એકેન્દ્રિય
જીવો કહેવામાં આવ્યા છે. બન્ધન સૂત્રમાં સાત કર્મપ્રકૃતિયોના તેઓને બંધ થાય
છે, તેમ કહેવામાં આવેલ છે. વેદના સૂત્રમાં આ ચૌદ પ્રકારની કર્મપ્રકૃતિયોનું

ઘટ ૮, શ્રોત્રેન્દ્રિયાઘાતસઃ ૪, સ્ત્રી પુરુષવધ્યરૂપે દ્વે ૨, एवं चतुर्दश कर्मप्रकृती वेदयन्तीति तात्पर्यार्थः । ક્રિયત્પર્યન્ત મેકેન્દ્રિયશતકમિદાધ્યેતવ્યં તત્રાહ—‘જાવ’ इत्यादि । ‘જાવ અણંતરોવવન્નગા વળસસહકાઈયા’ યાવદનન્તરોપપન્નકા વનસ્પતિકાયાિકાઃ અપ્કાયિકાદારભ્ય વનસ્પતિકાયાિકાન્તાઃ સર્વેऽपि अनन्तरोपपन्नकै केन्द्रिया इत्यमेव पञ्चविधाः मज्ञप्ताः इत्यमेव कर्मप्रकृती बंधन्ति वेदयन्ति चेति भावः । ‘અણંતરોવવન્નગા એગિંદિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ અનન્તરોપપન્નકૈકેન્દ્રિયાઃ સ્વલ્લ મદન્ત ! કુતઃ—કસ્માત્ સ્થાનવિશેષાદાગત્યોત્પન્નં ? इत्युत्पादविषयकः प्रश्नः उत्तरमाह—‘जहेव ओहिओ उद्देसओ भणिओ तहेव’ यथैव औधिक उद्देशको भणितः, अस्यैव चतुस्त्रिंशत्तमस्य शतकस्य पथमे एकेन्द्रियशते

बन्ध होना है ऐसा कहा गया है । वेदन सूत्र में ये चौदह प्रकार की कर्मप्रकृतियों का वेदन करते हैं ऐसा कहा गया है । वे चौदह प्रकृतियां इस प्रकारसे हैं—ज्ञानावरणीयादिक ८ श्रोत्रेन्द्रियावरण ४ स्त्रीपुरुषावरणरूप दो २ । ‘जाव अणंतरोववन्नगा वणस्सइकाइया’ इसी प्रकार का कथन यावत् अनन्तरोपपन्नक वनस्पतिकायिक तक जानना चाहिये । अर्थात् ‘अपकायिक से लेकर वनस्पतिकायिक तक सब अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीव जो कि पांच प्रकार के कहे गये हैं’ इसी प्रकारसे कर्मप्रकृतियों का बन्ध करते हैं और इसी प्रकारसे वे उनका वेदन करते हैं ।

‘अणंतरोववन्नग एगिंदियाणं मंते ! कओ उववज्जंति’ हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीव कहां से आकर के उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—‘जहेव ओहिओ उद्देसओ भणिओ तहेव’ ‘हे गौतम ! जैसा सामान्य उद्देशक में कहा गया है वैसाही यहां पर भी

वेदन કરે છે. એટલે કે જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે આઠ ૮ શ્રોત્રેન્દ્રિયાવરણ ૪ તથા સ્ત્રીવેદાવરણ ૧૩ પુરુષવેદાવરણ ૧૪ ‘જાવ અણંતરોવવન્નગા વળસસહકાઈયા’ આજ પ્રમાણેનું કથન યાવત્ અનંતરોપપન્નકવનસ્પતિકાયાિકના કથન સુધી સમન્વયું. અર્થાત્ અપ્કાયિકથી લઈને વનસ્પતિકાયાિક સુધી સઘળા અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવો કે જે પાંચ પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે, તે બધા એજ પ્રમાણે કર્મપ્રકૃતિયોના બંધ કરે છે. અને એજ પ્રમાણે તેઓ તેનું વેદન કરે છે.

‘અણંતરોવવન્નગ એગિંદિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવો ક્યાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—‘જહેવ ઓહિઓ ઉદ્દેસઓ ભણિઓ

પ્રથમોદ્દેશકે એકેન્દ્રિયાણા ઉત્પાદઃ કથિતઃ તત્રાપિ વ્યુત્ક્રાન્તિપદસ્ય પ્રજ્ઞાપનાયાઃ
પઠ્ઠપદસ્ય સંકેતઃ ક્રુત સ્તત સ્તત્ર યેન રુપેણ ઉત્પાદઃ કથિતઃ સ્તથૈવેદાપિ
જ્ઞાતવ્યઃ । તથાહિ-સામાન્યતયા એકેન્દ્રિયાઃ નારકાન્ વિહાય તિર્યઙ્મનુષ્ય દેવેભ્ય
આગત્યોત્પદ્યન્તે । પૃથિવ્યજ્વનસ્પતિકાયિકેષુ દેવાનામપિ ઉત્પત્તિ સદ્ભાવાત્ ।
તેજોવાયુકાયિકેષુ દેવેભ્ય આગત્ય નોત્પદ્યન્તે, તત્ર ચ તિર્યગ્યોનિકેભ્યઃ સંમૂર્છિમ
ગર્ભજેતિ દ્વિવિધેભ્યોઽપિ મનુષ્યેભ્ય આગત્યોત્પદ્યન્તે, ઇતિ વિવેકઃ ।

અથ સમુદ્ધાતસૂત્રમાહ-‘અણંતરોવવન્નગ’ ઇત્યાદિ । ‘અણંતરોવવન્નગ
ર્મિદિયાણં મંતે ! કહસમુધાયા પન્નત્તા’ અનંતરોપપન્નકૈકેન્દ્રિયાણાં મદન્ત । કતિ
કહ લેનાં ચાહિયે । અર્થાત્ હસી ચૌતીસવે’ શતક કે પ્રથમ એકેન્દ્રિ-
યશતક મે પ્રથમ .ઉદ્દેશક મે’ એકેન્દ્રિય જીવો’કા ઉત્પાદ કહા ગયા હૈ
ઔર इस सम्बन्धमें वहाँ प्रज्ञापना के छठे व्युत्क्रान्तिपदका संकेत किया
गया है, इसलिये वहाँ जिस रूपसे उत्पाद कहा गया है उसी प्रकार से
वह वहाँ पर भी जानना चाहिये । सामान्यतया एकैन्द्रिय जीव नैरयिकों
को छोड़कर तिर्यश्च मनुष्य एवं देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ।
पृथिवीकायिकों में अप्कायिकों में और वनस्पतिकायिकों में देवों
की उत्पत्ति हो जाती है । तेजस्कायिकों में एवं वायुकायिकों में देवों
की उत्पत्ति नहीं होती है । वहाँ तिर्यग्योनिकों से एवं संमूर्च्छिम
और गर्भज मनुष्यों से आकरके ही जीव उत्पन्न होते हैं ।

‘અણંતરોવવન્નગર્મિદિયાણં મંતે ! કહ સમુધાયા પન્નત્તા’ હે
મદન્ત જો અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવ હૈ’ ઉનકે કિતને સમુદ્ધાત

તહેવ’ હે ગૌતમ ! સામાન્ય ઉદ્દેશમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ
પ્રમાણે અહિયાં પણ સમજ લેવું. અર્થાત્ આ ચોતીસમા શતકના પહેલા
એકેન્દ્રિય શતકમાં પહેલા ઉદ્દેશમાં એકેન્દ્રિય જીવોનો ઉપપાત કહેલ છે,
અને તે સંબંધમાં ત્યાં પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના છઠા વ્યુત્ક્રાન્તિ પદની બલામણ
કરેલ છે, તેથી ત્યાં જે પ્રમાણે ઉત્પાદ કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે
તે કથન અહિયાં પણ સમજવું. સામાન્ય રીતે એક ઈન્દ્રિયવાળા જીવો નૈર-
યિકોને છોડીને તિર્યંચ મનુષ્ય અને દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે,
પૃથ્વીકાયિકોમાં, અપ્કાયિકોમાં, અને વનસ્પતિકાયિકોમાં દેવોની ઉત્પત્તિ
પણ થાય છે, તેજસ્કાયિકોમાં અને વાયુકાયિકોમાં દેવોની ઉત્પત્તિ થતી નથી.
ત્યાં તિર્યંચ યોનિકોમાંથી અને સંમૂર્છિમ અને ગર્ભજ મનુષ્યોમાંથી આવી
ને જ જીવ ઉત્પન્ન થાય છે.

‘અણંતરોવવન્નગર્મિદિયાણં મંતે ! કહ સમુધાયા પન્નત્તા’ હે ભગવન્
અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જે જીવો છે. તેઓને કેટલા સમુદ્ધાતો કહ્યા છે ?

સમુદ્ધાતા:-કિયત્સંસ્ક્રયકાઃ સમુદ્ધાતા ભવન્તીતિ પ્રશ્નઃ । ભગવાનાહ-‘ગોચમા’
 इत्यादि, ‘गोचमा’ हे गौतम । ‘दोन्नि समुग्धाया पन्नत्ता’ द्वौ समुद्धानौ मन्त्रर्तौ
 ‘तं जहा’ तद्यथा-‘वेयणा समुग्धाए य कसाय समुग्धाए य’ वेदना समुद्घातश्च
 कषाय समुद्घातश्च अनन्तरोपपन्नरूपत्वेन मारणान्तिकादि समुद्घातानामसंभवात्
 द्वौ एव वेदनाकषयात्मकौ समुद्घातौ कथितविति भावः । ‘अनंतरोववन्नग
 एगिंदियाणं भंते ।’ अनन्तरोपपन्नकैकेन्द्रियाः खलु भदन्त । ‘किं तुल्लद्विइया
 तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरे’ति पुच्छा तदेव’ किं तुल्यस्थितिकाः तुल्यविशेषाधिकं
 कर्म प्रकुर्वन्ति अथवा तुल्यस्थितिका विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति अथवा
 विमात्रस्थितिकाः तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति अथवा-विमात्रस्थितिका

કહે ગયે હૈં ? હસકે ઉત્તર મેં પ્રશુશ્રી કહતે હૈં-‘ગોચમા ! દોન્નિ સમુ-
 ગ્ધાયા પન્નત્તા’ ‘હે ગૌતમ ! અનન્તરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવોંકે દો
 સમુદ્ધાત કહે ગયે હૈં’ ‘તં જહા’ જૈસે-‘વેયણાસમુગ્ધાए कसायसमुग्धाए’
 ‘વેદનાસમુદ્ધાત ઔર કષાયસમુદ્ધાત મારણાન્તિક આદિ સમુદ્ધાતોં
 કા યહાં અનન્તરોપપન્નક હોને સે અજ્ઞાન રહતા હૈં । ‘અનંતરોવવન્નગ
 एगिंदियाणं भंते ! किं तुल्लद्विइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरे’તિ’
 હે ભદન્ત ! જો અનન્તરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવ સમાન આયુવાલે હોતે
 હૈં વે કયા તુલ્ય વિશેષાધિક કર્મકા વન્ધ કરતે હૈં ? ‘પુચ્છા તદેવ’ હસ
 પ્રકાર સે પહિલે કે જૈસે યહાં પ્રશ્ન કરના ચાહિયે । અતઃ યહાં યે ત્રીન
 પ્રશ્ન ઔર કર લેના ચાહિયે । જૈસે-હે ભદન્ત ! જો અનન્તરોપપન્નક
 એકેન્દ્રિય જીવ સમાન આયુવાલે હોતે હૈં વે કયા ભિન્ન ભિન્ન રૂપ મેં

આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રશુશ્રી કહે છે કે-‘ગોચમા ! દોન્નિ સમુગ્ધાયા પન્નત્તા’ હે
 ભગવન્ અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવોને એ સમુદ્ધાતો કહેવામાં આવેલ છે.
 ‘તં જહા’ જેમ કે-‘વેયણા સમુગ્ધાए कसायसमुग्धाए’ वेदना समुद्घात અને
 कषाय समुद्घात અહિયાં અનંતરોપપન્નક હોવાથી મારણાન્તિક વિગેરે સમુદ્ધાતો
 નો અભાવ છે. ‘અનંતરોવવન્નગ એગિંદિયાણં મંતે । કિં તુલ્લદ્વિહયા તુલ્લ વિસેસાહિયં
 कम्मं पकरे’તિ’ હે ભગવન્ જે અને અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિયવાળા જીવો
 સરખા આયુષ્યવાળા હોય છે. તેઓ શું તુલ્ય અથવા વિશેષાધિક કર્મનો
 બંધ કરે છે ? ‘પુચ્છા તદેવ’ આ પ્રમાણે ગૌતમસ્વામીએ પહેલા કહ્યા પ્રમાણેના
 પાંચ પ્રશ્નો પૂછ્યા છે. જેથી અહિયાં બાકીના બીજા ત્રણ પ્રશ્નો કરી લેવા
 જોઈએ. જેમ કે-હે ભગવન્ જે અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિયવાળા જીવો
 સમાન આયુષ્યવાળા હોય છે, તેઓ શું જુદા જુદા પ્રકારથી વિશેષાધિક

વિમાત્રવિશેષાધિકં કર્મ પ્રકુર્વન્તિ, इति पृच्छया संगृह्यते, भगवानाह—‘गोयमा’ इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘अत्येगइया तुल्लट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरे’ति’ अस्त्येकके तुल्यस्थितिकाः तुल्यविशेषाधिकं कर्म ज्ञानावरणीयादिकं प्रकुर्वन्ति ‘अत्येगइया तुल्लट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरे’ति’ अस्त्येकके तुल्यस्थितिका विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्तीत्युत्तरम् । पुनः शङ्कते ‘से केणट्ठेण’ इत्यादि, ‘से कणट्ठेण जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरे’ति’ तत्केनार्थेन भदन्त ! यावद् विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति इति, अत्र यात्प-

विशेषाधिक કર્મકા બન્ધ કરતે હૈં ? અથવા જો અનન્તરોપપન્નક જીવ ભિન્ન ભિન્ન સ્થિતિવાલે હોતે હૈં વે તુલ્ય વિશેષાધિક કર્મકા બન્ધ કરતે હૈં ? અથવા જો ભિન્ન ભિન્ન સ્થિતિવાલે અનન્તરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવ હૈં વે વિષમ વિશેષાધિક કર્મકા બન્ધ કરતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં—‘ગોયમા ! અત્યેગइया तुल्लट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरे’ति’ હૈ ગૌતમ ! કિતનેક અનન્તરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવ એસે હોતે હૈં જો સમાન સ્થિતિવાલે હોતે હૈં એસે વે જીવ તુલ્યવિશેષાધિક જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મકા બન્ધ કરતે હૈં । ‘અત્યેगइया तुल्लट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरे’ति’ તથા કિતનેક અનન્તરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવ એસે હોતે હૈં જો સમાન સ્થિતિવાલે તો હોતે હૈં પર વે ભિન્ન ભિન્ન રૂપ મેં વિશેષાધિક કર્મપ્રકૃતિયોં કા બન્ધ કરતે હૈં ।

‘સે કેણट्ठेण’ जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरे’ति’ હૈ ભદન્ત ! એસા

કર્મનો બંધ કરે છે ? અથવા જે અનંતરોપપન્નક એવ જુદી જુદી સ્થિતિવાળા હોય છે, તેઓ શું તુલ્ય અથવા વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે ? અથવા જે જુદી જુદી સ્થિતિવાળા અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિય એવો છે. તેઓ વિષમ પશ્ચાત્થી વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘ગોયમા ! અત્યેगइया तुल्लट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरे’ति’ હૈ ગૌતમ ! કેટલાક અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિયવાળા એવો એવા હોય છે, કે જેઓ સમાન સ્થિતિવાળા હોય છે, એવા તે એવો તુલ્ય વિશેષાધિક જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે કર્મનો બંધ કરે છે. ‘અત્યેगइया तुल्लट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरे’ति’ તથા કેટલાક અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિયવાળા એવો એવા હોય છે કે જેઓ સમાન સ્થિતિવાળા હોય છે, પરંતુ તેઓ જુદા જુદા પ્રકારે વિશેષાધિક કર્મપ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે.

‘સે કેણट्ठेण’ जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरे’ति’ હૈ ભગવન્

દેન તુલ્યસ્થિતિકાઃ તુલ્યવિશેષાધિકં કર્મ પ્રકુર્વન્તિ અસ્ત્યેકકે તુલ્યસ્થિતિકા
 इत्यन्तस्य प्रकरणस्य संग्रहो भवतीति । ‘उत्तरमाह—‘गोयमा’ इत्यादि, ‘गोयमा’
 हे गौतम ! ‘अणंतरोवचन्नगा एगिंदिया दुविहा पन्नत्ता’ अनन्तरोपपन्नका एके-
 न्द्रिया द्विविधाः प्रज्ञप्ताः—कथिताः ‘तं जहा’ तद्यथा—‘अत्येगइया समाउया
 समोववन्नगा’ अस्त्येकके अनन्तरोपपन्नका एकेन्द्रियाः समायुष्काः समोपपन्नकाः
 ‘अत्येगइया समाउया विसमोववन्नगा’ अस्त्येकके समायुष्का विषमोपपन्नकाः

આપ કિસ કારણ સે કહતે હૈં કિ કિતનેક અનન્તરોપપન્નક એકેન્દ્રિય
 जीव ऐसे होते हैं जो समान स्थितिवाले होते हैं और तुल्यविशेषाधिक
 જ્ઞાનાવરણીયાદિ કર્મકા પન્થ કરતે હૈં ? ઓર કિતનેક અનન્તરોપપન્નક
 એકેન્દ્રિય જીવ જો સમાન સ્થિતિવાલે તો હોતે હૈં પર વે ભિન્ન ભિન્ન
 વિશેષાધિક કર્મકા પન્થ કરતે હૈં ? યહાં યાવત્ પદ સે યહી પાઠ ગ્રહીત
 છુઆ હૈં । હસ સમ્બન્ધ મેં ઉત્તર દેતે હુએ પ્રસુશ્રી ગૌતમ સે કહતે હૈં—
 ‘ગોયમા ! અણંતરોવચન્નગા એગિંદિયા દુવિહા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ !
 અનન્તરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવ દો પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં । ‘તં જહા’
 જૈસે—‘અત્યેગહયા સમાઝયા સમોવવન્નગા, અત્યેગહયા સમાઝયા વિસ
 મોવવન્નગા’ કિતનેક અનન્તરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવ એસે હોતે હૈં જો
 બરાબર કી આયુવાલે હોતે હૈં ઓર સાથ સાથ ઉત્પન્ન હોતે હૈં । તથા—
 કિતનેક અનન્તરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવ એસે હોતે હૈં જો બરાબર કી
 આયુવાલે તો હોતે હૈં પર વે ભિન્ન ભિન્ન સમય મેં ઉત્પન્ન હુએ હોતે

આપ એવું શા કારણથી કહે છે ? કે કેટલાક અનંતરોપપન્નક એકધન્દ્રિયવાળા
 જીવો એવા હોય છે, કે જેઓ સરખી સ્થિતિવાળા હોય છે. અને તુલ્ય
 વિશેષાધિક જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે કર્મનો બંધ કરે છે ? તથા કેટલાક અનંત-
 રોપપન્નક જીવો એવા હોય છે કે—જેઓ સમાન સ્થિતિવાળા હોય છે, પરંતુ
 તેઓ જુદા જુદા વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે ? આ પાઠ અધિયાં યાવ
 ત્પદથી ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે. આ પ્રશ્નોઉત્તર આપતાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામી
 ને કહે છે કે—‘ગોયમા ! અણંતરોવવણગા એગિંદિયા દુવિહા પણત્તા’ હે ગૌતમ !
 અનંતરોપપન્નક એકધન્દ્રિય જીવો બે પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે. ‘તં જહા’
 તે આ પ્રમાણે છે.— ‘અત્યેગહયા સમાઝયા સમોવવન્નગા અત્યેગહયા સમાઝયા
 વિસમોવવન્નગા, કેટલાક અનંતરોપપન્નક એકધન્દ્રિયવાળા જીવો એવા હોય
 છે કે જેઓ સરખી આયુષ્યવાળા હોય છે, અને એક સાથે જ ઉત્પન્ન થાય
 છે. તથા કેટલાક અનંતરોપપન્નક એકધન્દ્રિયવાળા જીવો એવા હોય છે કે

‘તત્થ ણં જે તે સમાડયા સમોવવન્નગા’ તત્ર સ્વલુ યે તે સમાયુષ્કાઃ સમોપપન્નકાઃ
 ‘તે ણં તુલ્લઢિહ્યા તુલ્લ વિસેસાહિયં કમ્મં પકરેંતિ’ તે સ્વલુ તુલ્યસ્થિતિકાઃ
 તુલ્ય વિશેષાધિકં કર્મ જ્ઞાનાવરણીયાદિકં પ્રકુર્વન્તિ । યે સમાયુષ્કા અનન્તરોપપ-
 ન્નક પર્યાયમાશ્રિત્ય એકસમયમાત્રસ્થિતિકાઃ તત્પરતઃ પરસ્પરોપપન્નકઋપદે-
 શાત્, સમોપપન્નકા એકસ્મિન્નૈવ સમયે ઉત્પત્તિસ્થાનં પ્રાપ્તા સ્તે તુલ્યસ્થિતયઃ
 સમોપપન્નકત્વેન સમયોગત્વાત્ તુલ્યવિશેષાધિકં કર્મ પ્રકુર્વન્તિ । ‘તત્થ ણં જે તે
 સમાડયા વિસમોવવન્નગા તેણં તુલ્લઢિહ્યા વેમાયવિસેસાહિયં કમ્મં પકરેંતિ’
 તત્ર સ્વલુ યે તે સમાયુષ્કા વિપ્રમોપપન્નકા સ્તે સ્વલુ તુલ્યસ્થિતિકા વિમાત્રવિશે-
 હૈં । ‘તત્થ ણં જે તે સમાડયા સમોવવન્નગા’ હનમેં જો યે સમાયુષ્ક
 સમોપપન્નક અનન્તરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવ હૈં, ‘તે ણં તુલ્લઢિહ્યા
 તુલ્લવિસેસાહિયં કમ્મં પકરેંતિ’ તુલ્યસ્થિતિવાલે હોતે હૈં ઓર તુલ્ય
 વિશેષાધિક જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મકા બન્ધ કરતે હૈં । તાત્પર્ય હસ
 કથન કા એસા હૈં કિ જો સમાયુષ્ક હોતે હૈં અનન્તરોપપન્નક પર્યાય કો
 આશ્રિત કરકે એક સમય માત્ર કી સ્થિતિવાલે હોતે હૈં ક્યો કિ હસકે
 ષાદ વે પરસ્પરોપપન્નક હો જાતે હૈં । સમોપપન્નક એક સમય મેં ઉત્પત્તિ
 સ્થાન કો પ્રાપ્ત હો જાતે હૈં હસલિયે વે તુલ્યસ્થિતિવાલે હોતે હુએ સમો-
 પપન્નક હોને કે કારણ સમાન યોગવાલે હોતે હૈં । હસ કારણ વે તુલ્ય
 ઓર વિશેષાધિક રૂપસે જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મપ્રકૃતિયોં કા બન્ધ
 કરતે હૈં । ‘તત્થ ણં જે તે સમાડયા વિસમોવવન્નગા તે ણં તુલ્લઢિહ્યા
 વેમાયવિસેસાહિય કમ્મં પકરેંતિ’ તથા જો સમાયુષ્ક હોતે હૈં ઓર

જેઓ સમાન આયુષાળા તેા હોય છે, પરંતુ તેઓ બુદ્ધા બુદ્ધા સમયે ઉત્પન્ન
 થાય છે. ૧ ‘તત્થ ણં જે તે સમાડયા સમોવવન્નગા’ તેઓમાં જે આ સમાન
 આયુષ્યવાળા અને સાથે ઉત્પન્ન થવાવાળા અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિયવાળા હોવે
 છે. ‘તે ણં તુલ્લઢિહ્યા તુલ્લવિસેસાહિયં કમ્મં પકરેંતિ’ તેઓ તુલ્ય સ્થિતિવાળા
 હોય છે, અને તુલ્ય વિશેષાધિક જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે કર્મનો બંધ કરે છે.
 કહેવાતું તાત્પર્ય એ છે કે-જેઓ સમાન આયુષ્યવાળા હોય છે. તેઓ અનંત-
 રોપપન્નક પર્યાયનો આશ્રય કરીને એક સમય માત્રની સ્થિતિવાળા હોય છે.
 કેમ કે તે પછી તેઓ પરપરોપપન્નક થઈ જાય છે, સમોપપન્નક-એક સાથે
 ઉત્પન્ન થવાવાળા અને એક સમયમાંજ ઉત્પત્તિ સ્થાનને પ્રાપ્ત કરી લે છે.
 તેથી તેઓ તુલ્યસ્થિતિવાળા હોવા છતાં સમાન ઉત્પત્તિવાળા હોવાને કારણે
 સમાન યોગવાળા હોય છે. તે કારણથી તેઓ તુલ્ય અને વિશેષાધિક પશ્ચાત્થી
 જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે કર્મપ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે. ‘તત્થ ણં જે તે સમાડયા

પાધિકં કર્મ પ્રકુર્વન્તિ ये तु समायुष्का स्तथैव विपमोपपन्नका विग्रहगत्या सम-
यादि भेदेनोत्पत्तिस्थानं प्राप्ता स्ते तुल्यस्थितय उत्पत्तिस्थानप्राप्तिवैषम्ये
णोत्पत्तिस्थानप्राप्तिकालवैषम्याद् વિગ્રહેડપિ ચ વન્ધકસ્વાદ્ વિમાત્ર વિશેષા-
ધિકં કર્મ પ્રકુર્વન્તિ, વિષમસ્થિતિક સમ્બન્ધિ તુ અન્તિમમજ્જદ્વયમનન્તરોપપ-
ન્નકાનાં ન સમ્બન્ધતિ અનન્તરોપપન્નકત્વે વિષમસ્થિતેરમાવાત્ ઇતિ । ‘સે

વિપમોપપન્નક હોતે હૈં વે યદ્યપિ તુલ્યસ્થિતિવાલે હોતે હૈં પર વિષમોપ-
પન્નક હોને કે કારણ વિષમયોગ યુક્ત હોને સે વિમાત્ર વિશેષાધિક
કર્મ કા બન્ધ કરતે હૈં । તાત્પર્ય હસ કથન કા એસા હૈં કિ જો અનન્ત-
રોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવ સમાન આયુવાલે હોતે હૈં વે તુલ્ય સ્થિતિવાલે
તો હોતે હી હૈં પરન્તુ ઇન્હે જો વિમાત્ર વિશેષાધિક કર્મ કા બન્ધક
કહા ગયા હૈં વહ વિપમોપપન્નક હોને કે કારણ કહા ગયા હૈં ।
વિષમોપપન્નકતા હનમેં હસલિયે આતી હૈં કિ એસે યે જીવ વિગ્રહ
ગતિ સે કિ જિરા મેં સમયાદિક કા ભેદ હોતા હૈં ઉત્પત્તિ સ્થાન મેં
આતે હૈં અતઃ વે તુલ્યસ્થિતિવાલે બલે હી રહે પરન્તુ ઉત્પત્તિ સ્થાન કો
પ્રાપ્ત હોને કો વિષમતા સે ઉત્પત્તિ કાલ કી વિષમતા કો લેકર ઓર
વિગ્રહ મેં બી કર્મબન્ધ કરને કે કારણ એસે યે અનન્તરોપપન્નક એકે-
ન્દ્રિય જીવ વિમાત્ર વિશેષાધિક કર્મ કે બન્ધક હોતે હૈં । વિષમસ્થિતિ
સે સમ્બન્ધ રચનેવાલે અન્તિમ દો મજ્જા અનન્તરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવો

વિસમોવવન્નગા તેજાં તુલ્લલ્લિહયા વેમાયવિસેસાહિય કર્મં પકરેતિ’ તથા જ્ઞેઓ
સમાન આયુષ્યવાળા હોય છે, અને વિષમોપપન્નક હોય છે, તેઓ
જ્ઞેકે-સરખી સ્થિતિવાળા હોય છે, પરંતુ વિષમોપપન્નક હોવાના કારણથી
વિષમ યોગવાળા હોવાથી વિમાત્રથી વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે. આ
કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે-જે અનંતરોપપન્નક એકધન્દ્રિયવાળા જીવો સમાન
આયુષ્યવાળા હોય છે, તેઓ તુલ્ય સ્થિતિવાળા તો હોય છે. પરંતુ તેઓને
જે વિમાત્રથી વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરવાવાળા કહ્યા છે, તે વિષમોપપન્નક
હોવાના કારણે કહેલ છે. તેઓમા વિષમોપપન્નક પણ એ માટે આવે છે કે-
એવા એ જીવો વિગ્રહ ગતિથી કે જેમાં સમય વિગેરેનો ભેદ હોય છે, ઉત્પત્તિ
સ્થાનમાં આવે છે. તેથી તેઓ સમાનસ્થિતિવાળા રહેવા છતાં પણ આયુષ્યના
ઉદયના વિષમ પણાને લીધે અને વિગ્રહગતિમાં પણ કર્મનો બંધ કરવાના કારણે
એવા આ અનંતરોપપન્નક એકધન્દ્રિયવાળા જીવો વિમાત્રથી વિશેષાધિક કર્મનો
બંધ કરવાવાળા હોય છે. વિષમ સ્થિતિથી સંબંધ રાખવાવાળા છેલ્લા એ ભંગો
અનંતરોપપન્નક એકધન્દ્રિયવાળા જીવોને સંભવતા નથી. કેમ કે અનંતરોપ-
પપન્નક હોવાથી તેઓમાં વિષમ સ્થિતિનો અભાવ રહે છે.

તેણદ્વેણં જાવ વેમાયવિસેસાહિયં કમ્મં પકરેતિ' તત્તેનાથેન ગૌતમ ! એવમુચ્યતે
અસ્યેકકે તુલ્યસ્થિતિકાઃ તુલ્યવિશેષાધિકં કર્મ પ્રકુર્વન્તિ અસ્યેકકે તુલ્ય-
સ્થિતિકા વિમાત્રવિશેષાધિકં કર્મ પ્રકુર્વન્તીતિ । 'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ'
તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ, હે મદન્ત ! અનન્તરોપપન્નકૈકેન્દ્રિયપૃથિ-
વ્યાદિ જીવવિષયે યદ્ દેવાહુપ્રિયેણ કથિતં તત્સર્વં સર્વથૈવ તત્યમિતિ કથયિત્વા
ગૌતમો મગવન્તં વન્દતે નમસ્યતિ વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા સંપ્રયેન તપસા આત્માનં
ભાવયન્ યથાસુખં વિહરતીતિ ॥૨૦ ॥

ઇતિ શ્રી વિશ્વવિરુદ્ધાત-જગદ્બલ્લભ-પ્રસિદ્ધવાચક-પશ્ચદશભાષા-
કલિતલલિતકલાપાલાયકપ્રવિશુદ્ધગણપદ્યાનૈકગ્રન્થનિર્માપક,
વાદિમાનમર્દક-શ્રીશાહુચ્છત્રપતિ કોલહાપુરરાજમદત્ત-
'જૈનાચાર્ય' પદભૂષિત — કોલહાપુરરાજગુરુ-
વાલભ્રહ્મચારિ-જૈનાચાર્ય — જૈનધર્મદિવાકર
પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલવ્રતિવિરચિતાયાં શ્રી
"મગવતીમુત્રસ્ય" મમેયચન્દ્રિકાસ્વાયાં
વ્યાખ્યાયામ્ ચતુસ્ત્રિંશતમે શ્લોકે
પ્રથમે એકેન્દ્રિયશતે દ્વિતીયોદેશક
સમાપ્તઃ ॥૩૪-૧-૨॥

કે સંભવિત નહીં હોતે હૈં । ક્યોં કિ અનન્તરોપપન્નક હોને સે હનમેં
વિષમસ્થિતિ કા અભાવ રહતા હૈ । 'સે તેણદ્વેણં જાવ વેમાયવિસેસાહિયં
કમ્મં પકરેતિ' હસ કારણ હે ગૌતમ ! મૈને એસા કહા હૈ કિ કિનનેક
અનન્તરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવ એસે હોતે હૈં જો તુલ્ય સ્થિતિવાળે હોતે
હુએ તુલ્યવિશેષાધિક કર્મ કા વન્ધ કરતે હૈં જૌર કોઈ કોઈ અનન્તરો-
પપન્નક એકેન્દ્રિય જીવ એસે હોતે હૈં જો તુલ્યસ્થિતિવાળે હોતે હુએ મી
વિમાત્ર વિશેષાધિક કર્મ કા વન્ધ કરતે હૈં । 'સેવં મંતે ! સેવં મંતે !

'સે તેણદ્વેણં જાવ વેમાયવિસેસાહિયં કમ્મ પકરેતિ' તે શરણુથી હે
ગૌતમ ! મેં એવું કહેલ છે કે-કેટલાક અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિયવાળા
હોવા એવા હોય છે કે-જેઓ સરળી સ્થિતિવાળા હોવા છતાં સમાન અને
વિશેષાધિક કર્મના બંધ કરે છે અને કોઈ કોઈ અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિય
વાળા હોવા એવા હોય છે કે જેઓ તુલ્ય સ્થિતિવાળા હોવા છતાં પણ
વિમાત્રથી વિશેષાધિક કર્મના બંધ કરે છે.

'સેવં મંતે ! સેવં ! મંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક પૃથ્વીકાધિક
એકેન્દ્રિયવાળા હોવાના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે

સિ' હૈં અદન્ત ! અનન્તરોપપન્નકં પૃથિવ્યાદિ એકેન્દ્રિય જીવોં કે વિષય મૈં જો આપ દેવાનુપ્રિય ને કહા હૈં વહ સબ સર્વથા હી સત્ય હૈં । હસ પ્રકાર કહકર ગૌતમને ભગવાન્ કો વન્દના કો ઔર નમસ્કાર કિયા । વન્દના નમસ્કાર કર ફિર વે સંયમ ઔર તપ સે આત્મા કો ભાવિત્ કરતે હુએ અપને સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે ॥સૂ. ૨॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજીમહારાજકૃત “ભગવતીસૂત્ર” કી પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાકે ચૌતીસવેં શતક કે પ્રથમ એકેન્દ્રિયશતક કા દૂસરા ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥૩૪-૨॥

સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે, હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં કરેલ કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથીપોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ.૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત ‘ભગવતીસૂત્ર’ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ચોત્રીસમાં શતકમાં પહેલા એકેન્દ્રિય શતકનો ॥ગી.ને ઉદ્દેશે સમાપ્ત ૩૪-૨॥



अथ तृतीयोद्देशकः प्रारभ्यते

मूलम्—कइविहा णं भंते ! परंपरोववन्नगा एगिंदियां पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा परंपरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता, तं जहा-पुढवीकाइया भेओ चउक्कओ जाव वणस्सइकाइ-यत्तिं । परंपरोववणग अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते ! इमीस्से रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोह-णिता जे भविए इमीस्से रयणप्पभाए पुढवीए जाव पच्चत्थि-मिल्ले चरिमंते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जि-त्तए० एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमो उद्देसओ जाव लोग चरिमंतो त्ति । कहि णं भंते ! परंपरोववन्नग वायरपुढवी-काइयाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणैणं अट्ठसु पुढवीसु एवं एएणं अभिलावेणं जहा पढमे उद्देसए जाव तुल्लट्ठिइय-त्ति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥सू० १॥

चोत्तीसइमे सए पढमे एगिंदियसए तइओ उद्देसो समत्तो । ३४-३।

छाया—कतिविधाः खलु भदन्त ! परोपन्नका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पञ्चविधाः परम्परोपपन्नका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-पृथिवी-कायिकाः भेदो चतुष्को यावद् वनस्पतिकायिका इति । परम्परोपपन्नकाऽप-र्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः समवहत्य यो भव्य एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या यावत्पाश्चत्ये चरमान्ते अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया उपपत्तुम् एवमेतेनाभिलापेन यथैव प्रथमोद्देशको यावत्लोकचरमान्त इति । कुत्र खलु भदन्त ! परम्परोपपन्नक वादरपृथिवीकायिकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! स्वस्थानेनाष्टासु पृथिवीषु, एवमेतेनाभिलापेन यथा-प्रथमे उद्देशके यावत् तुल्यस्थितिका इति । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥ सू० १॥

चतुस्त्रिंशत्तमे शतके प्रथमे एकेन्द्रियशतके तृतीयोद्देशकः समाप्तः ॥३४॥१॥३॥

ટીકા:--‘કહ્વિહાણં મંતે !’ કતિવિધાઃ સ્વલુ ભદન્ત ! ‘પરંપરોવવન્નગા
 ઇગિંદિયા પન્નત્તા’ પરમ્પરોપપન્નકાઃ એકેન્દ્રિયાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ--કથિતાઃ ? इति
 પ્રશ્નઃ, મગવાનાહ-‘ગોયમા’ इत्यादि, ‘ગોયમા !’ ‘હે ગૌતમ !’ ‘પંચવિહા
 પરંપરોવવન્નગા ઇગિંદિયા પન્નત્તા’ પશ્ચવિધાઃ--પશ્ચપ્રકારકાઃ પરમ્પરોપપન્નકા
 ઉત્પત્તે દ્વિતીયાદિસમયે વર્તમાના એકેન્દ્રિયાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ--કથિતાઃ ‘તં જહા’
 તથથા--‘પૃથ્વીકાયિકા’ પૃથિવીકાયિકાઃ અપ્કાયિકાઃ તેજસ્કાયિકાઃ વાયુકા-
 યિકાઃ, વનસ્પતિકાયિકાશ્ચ । પૃથિવીકાયિકાઃ કતિવિધાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ ગૌતમ !
 દ્વિવિધાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ સૂક્ષ્માશ્ચ વાદરાશ્ચ एवं यावद्वनस्पतिकायिका अपि सूक्ष्म-

શ્લોક ૨૪ ઉદ્દેશક ૩

‘કહ્વિહાણં મંતે ! પરંપરોવવન્નગા ઇગિંદિયા પન્નત્તા’ इत्यादि
 ટીકાર્થ--‘કહ્વિહાણં મંતે ! પરંપરોવવન્નગા ઇગિંદિયા પન્નત્તા’ હે
 ભદન્ત ! એકેન્દ્રિય પરમ્પરોપપન્નક જીવ કિતને પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં--
 ‘ગોયમા ! પંચવિહા પરંપરોવવન્નગા ઇગિંદિયા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! એકે-
 ન્દ્રિય પરમ્પરોપપન્નક જીવ પાંચ પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં । જો જીવ ઉત્પત્તિ
 કે દ્વિતીયાદિ સમય મેં વર્તેતે હૈં વે પરમ્પરોપપન્નક કહે ગયે હૈં । ‘તં
 જહા’ વે પરમ્પરોપપન્નકોં કે પાંચ ભેદ હસ પ્રકાર સે હૈં--પૃથિવીકાયિક,
 અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક વાયુકાયિક ઓર વનસ્પતિકાયિક, હે ભદન્ત !
 પૃથિવીકાયિક કિતને પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં ? હે ગૌતમ ! પૃથિવીકાયિક
 દો પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં । વે દો પ્રકાર સૂક્ષ્મ ઓર વાદર કે ભેદ સે
 હોતે હૈં । હસી પ્રકાર સે દો ભેદ યાવત્ વનસ્પતિકાયિકોં તક જાનના

ત્રીજા ઉદ્દેશાને પ્રારંભ--

‘કહ્વિહાણં મંતે ! પરંપરોવવન્નગા ઇગિંદિયા પન્નત્તા’ इत्यादि

ટીકાર્થ--‘કહ્વિહાણં મંતે ! પરંપરોવવન્નગા ઇગિંદિયા પન્નત્તા’ હે

ભગવન્ એકધન્દ્રિયવાળા પરંપરોપપન્નક જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં
 આવ્યા છે, આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે--‘ગોયમા ! પંચવિહા પરંપ-
 રોવવન્નગા ઇગિંદિયા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! એકધન્દ્રિયવાળા પરંપરોપપન્નક જીવો
 પાંચ પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે. ‘તં જહા’ તે પરંપરોપપન્નકોના પાંચ
 ભેદો આ પ્રમાણે છે--પૃથ્વીકાયિક, અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક અને
 વનસ્પતિકાયિક હે ભગવન્ પૃથ્વીકાયિકો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા
 છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે હે ગૌતમ ! પૃથ્વીકાયિકો બે પ્રકારના કહે-
 વામાં આવ્યા છે. તે બે પ્રકાર સૂક્ષ્મ, અને બાહર એ પ્રમાણે છે. આજ
 પ્રમાણે સૂક્ષ્મ અને બાહર એ બે ભેદો યાવત્ વનસ્પતિકાયિકો સુધી સમજવા.

વાદરભેદેન દ્વિવિધાઃ । પરંપરોપપન્નકાઃ સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાઃ કતિવિધાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ ગૌતમ ! દ્વિવિધાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ પર્યાપ્તાશ્ચ અપર્યાપ્તાશ્ચ एवं यावद्वनस्पतिकायिका अपि पर्याप्तापर्याप्तभेदेन द्विविधा भवन्तीति एतदाशयेनैवाह— 'भेदो चउक्को जाव वणस्सइ काइयत्ति' भेद अतुप्को यावद्वनस्पतिकायिका इति, वनस्पतिकायिकपर्याप्तानाम् एते चत्वारः सूक्ष्मवादरपर्याप्ता पर्याप्तरूपा भेदा ज्ञातव्या इति । 'परंपरोववन्नग अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइएणं भंते !' परंપરોપपन्નकापर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः 'समोहणित्ता जे भविए

चाहिये । हे भदन्त ! परंપરોપપન્નક સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક કિતને પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં ? हे गौतम ! ये दो प्रकार के कहे गये हैं एक पर्याप्तक और दूसरे अपर्याप्तक, वनस्पतिकायिक तक इसी प्रकार से दो भेद होते हैं एक पर्याप्तक और दूसरे अपर्याप्त इसी आशय को लेकर 'भेदो चउक्को जाव वणस्सइ काइयत्ति' सूत्रकार ने यह सूत्र कहा है । पृथिवीकायिक से लेकर वनस्पतिकायिक तक ये चार चार सूक्ष्म वादर पर्याप्तक और अपर्याप्तक भेद होते हैं ।

‘પરંપરોવવન્નગ અપજ્જત્તસુહુમપુઢવીકાઈયણં ભંતે ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए०’ हे भदन्त । वह परंपरोपपन्नक अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव कि जिसने इस रत्नप्रभा पृथिवी के पूर्वचरमान्ते में मारणान्तिक समुद्घात किया है । और समुद्घात करके इस रत्नप्रभापृथ्वी के पश्चिम चरमान्ते में

હે લગવન્ પરંપરોપપન્નક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે હે ગૌતમ ! પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત એ બે ભેદથી પરંપરોપપન્નક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકો બે પ્રકારના છે. આજ પ્રમાણે આ બે ભેદો યાવત્ વનસ્પતિકાયિક સુધી સમજવા. અર્થાત્ અષ્ટકાયિકથી લઈને વનસ્પતિકાયિક સુધીના જીવો પર્યાપ્તક અને અપર્યાપ્તક એ બે ભેદવાળા હોય છે. તેમ સમજવું. આ અભિપ્રાયથી ‘ભેદો ચउक्को जाव वणस्सइ काइयत्ति’ સૂત્રકારે આ સૂત્રપાઠ કહેલ છે. પૃથ્વીકાયિકથી લઈને વનસ્પતિકાય સુધીના જીવને સૂક્ષ્મ, બાદર પર્યાપ્તક અને અપર્યાપ્તક એ રીતના ચાર ભેદો હોય છે.

‘પરંપરોવવન્નગા અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાઈયણં ભંતે ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते ! समोहए’ હે લગવન્ તે પરંપરોપપન્નક અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ કે જેણે આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરેલ છે, અને મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને જે આ

इमीसे रयणप्पभाए पुढनीए पच्चत्थिमिलळे चरिमंते अपज्जत्त सुहुमपुढवी-
काइयत्ताए उनवज्जित्तए' समवहत्य यो भव्य एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः
पाश्चात्ये चरमान्ते अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकत्वा उत्पत्तुं स खलु भदन्त !
क्रियत्सामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येतेति प्रश्नः, उत्तरमाह—'एवं' इत्यादि, एवं एएणं
अभिलावेणं जहेव पढमो उद्देसओ' एवमेतेनाभिलापेन यथैव प्रथमोद्देशकः एत-
स्यैव चतुर्विंशत्तमशतकस्य प्रथमोद्देशके यथा यथा यद् यत् कथितं तत्सर्वं
तेनैव रूपेणेहापि ज्ञातव्यम्, क्रियत्पर्यन्तः प्रथमोद्देशक इहाध्येतव्य स्तत्राह—
'जाव' इत्यादि, 'जाव लोगचरिमंते त्ति' यावत् लोकचरमान्त इति एकसा
मधिकेन यावत् चतुःसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येतेत्वारभ्य लोकचरमान्त पर्यन्तं
सर्वमपि वक्तव्यम् किन्तु औत्तरे चरमान्ते समवहतानां पाश्चात्ये चरमान्ते च

अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न होने के योग्य है,
वह कितने समयवाले विग्रह से वहां उत्पन्न होता है ? इसके उत्तर
में प्रभुश्री कहते हैं—'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमउद्देसओ' हे
गौतम ! इस अभिलाप द्वारा जैसा इसी चौतीसवें शतक के पूरे
प्रथम उद्देशक में जैसा जैसा जो जो कहा गया है वह सब उसी रूप
से यहां पर भी जानना चाहिये । और ऐसाही यह सब कथन इस
सम्बन्ध में 'जाव लोगचरिमंते त्ति ।' यावत् लोक के चरमान्त तक
करना चाहिये अर्थात् यह यावत् लोकके चरमान्त तक में एक समय
वाले विग्रह से दो समयवाले विग्रह से तीन समयवाले विग्रह से
और चार समयवाले विग्रह से उत्पन्न होना है किन्तु उत्तर लोक को

રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ વાયુકાયિક પણાથી
ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય બનેલ છે, તે ત્યાં કેટલા સમયની વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન
થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે 'एएणं'
अभिलावेण जहेव पढमो उद्देसओ' हे गौतम ! આ અભિલાપ દ્વારાજે રીતે આ
ચોત્રીસમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશમાં કહેવામાં આવેલ છે તે સઘળું કથન એજ
પ્રમાણે અહિયાં પણ સમજવું અને એજ પ્રમાણેવું તે સઘળું કથન આ વિષયમાં
'जाव लोगचरिमंते । त्ति' यावत् લોકના ચરમાન્ત સુધી કહેવું જોઈએ. અર્થાત્
તે યાવત્ લોકના ચરમાન્તમાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી અથવા બે
સમયવાળી વિગ્રહગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી અથવા ચાર
સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. પરંતુ ઉત્તર લોકના ચરમાન્તમાં
સમુદ્ધતા કરીને પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં ઉત્પન્ન થવાવાળાઓને એક સમયનો
વિગ્રહ હોતો નથી આ કથન સુધી કહેવું જોઈએ. આ સંબંધમાં આ શતકના

સમુત્પદ્યમાનાનામેકસામયિકો વિગ્રહો ન ભવતિ અત્તસ્તેપાં દ્વચાદિ ચતુઃસામયિકો વિગ્રહો ભવતિ, ઉક્તં ચ પ્રથમોદ્દેશકાન્તે—‘ઉત્તરિલ્લે સમોહયાણં પચ્ચત્થિમિલ્લે ઉવવજ્જમાણાણં ઇગસમહો વિગ્રહો નત્થિ’ इत्यन्तं वाच्यम् ‘કહિં ણં મંતે ! પરંપરોવવન્નગ વાયરપુઢવીકાહયાણં ઠાણા પન્નત્તા’ કુત્ર સ્વલુ ભદન્ત ! પરમ્પરોપ-પન્નક વાદરપૃથિવીકાયિકાનાં સ્થાનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ—કથિતાનીતિ પ્રશ્નઃ, ભગવા-નાહ—‘ગોયમા’ इत्यादि, ‘ગોયમા ! હે ગૌતમ ! ‘સદ્દાણેણં અદ્દસુ પુઢવીસુ’ સ્વસ્થા-નેન યત્ર પરમ્પરોપપન્નકા જીવા આસતે તત્ સ્વસ્થાનમ્ સ્થાનાપેક્ષયા અપ્પાસુ રત્નપ્રમા દીપ્તપ્રાગ્મારા પૃથિવી પર્યન્તેષુ પરમ્પરોપપન્નક વાદરપૃથિવીકાયિકૈ-કેન્દ્રિયજીવાનાં સ્થાનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનીત્યુત્તરમ્ । ‘એવં ઇણં અભિલાવેણં જહા પઢમે ઉદેસણ જાવ તુલ્લઢિઈયત્તિ’ एवमेतेन पूर्वोक्तेनाभिलापेन आलापकमकारेण यथैव

चरमान्त में समुद्घात करके पश्चिम चरमान्त में उत्पन्न होनेवालों को एकसमयका विग्रह नहीं होता हैं, यहां तक कहना चाहिये इस संबन्ध में इसी शतक के प्रथम उद्देशक के अन्त में भगवानने कहा है—‘उत्तरिल्ले समोहयाणं पच्चत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमहो विगग्रहो नत्थि’ ‘कहिणं भंते ! परंपरोववन्नगा वायर पुढवीकाहयाणं ठाणा पन्नत्ता’ हे भदन्त ! परमपरोपपन्नक वादर पृथिवीकायिक के स्थान कहां पर कहे गये हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—‘गोयमा ! सद्दाणेणं अद्वसु पुढवीसु’ हे गौतम ! परमपरोपपन्नक वादर पृथिवीकायिकों के स्थान स्वस्थानकी अपेक्षासे आठ पृथिवियों में कहे गये हैं वे आठ पृथिवीयां रत्नप्रभापृथिवी से लेकर ईषत्प्रागमारा पृथिवी तक हैं । ‘एवं एणं अभिलावेणं जहा पढमे उदेसए जाव तुल्लट्ठिइयत्ति’ इसी प्रकार से इस अभिलाप द्वारा इनके सम्बन्ध का सब प्रश्नोत्तर रूप कथन यावत् तुल्यस्थितिवाले परमपरोप-

પડેલા ઉદ્દેશાના અંતમા ભગવાને કહ્યુ છે કે—‘ઉત્તરિલ્લે સમોહયાણં પચ્ચત્થિમિલ્લે ઉવવજ્જમાણા ણં ઇગસમહો વિગ્રહો નત્થિ !

‘કહિ ણ મંતે ! પરંપરોવવન્નગ વાયરપુઢવીકાહયાણં ઠાણા પણ્ણત્તા’ હે ભગવન્ પરંપરોપપન્નક વાદર પૃથ્વીકાયિકોના સ્થાનો કયા કહ્યા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—‘ગોયમા ! સદ્દાણેણં અદ્દસુ પુઢવીસુ’ હે ગૌતમ ! પરંપરોપપન્નક વાદર પૃથ્વીકાયિકોના સ્થાનો આઠ પૃથ્વીઓમાં કહ્યા છે તે આઠ પૃથ્વીઓ રત્નપ્રભા પૃથ્વીથી લઇને ઇષત્ પ્રાગ્મારા પૃથ્વી સુધીની આઠ પૃથ્વીઓ છે. ‘એવં ઇણ અભિલાવેણં જહા પઢમે ઉદેસણ જાવ તુલ્લઢિઈયત્તિ’ એજ પ્રમાણે આ અભિલાપદ્વારા આ વિષય સંબંધમાં બીજા સઘળા પ્રશ્નોત્તર રૂપ કથન યાવત્ કેટલાક તુલ્ય સ્થિતિવાળા

અર્થેવ શતકસ્ય પ્રથમોદ્દેશકે કથિતં તથૈવ સર્વમિદાપિ જ્ઞાતવ્યમ્ । ક્રિયત્પર્યન્તં પ્રથમોદ્દેશકમ્કરણમવગન્તવ્યં તત્રાહ—‘જાવ’ ઇત્યાદિ, ‘જાવ તુલ્લઠ્ઠિઈયત્તિ’ યાવત્ તુલ્યસ્થિતિકા ઇતિ, ‘પરંપરોપપન્નકા એકેન્દ્રિયા-ર્કિં તુલ્યસ્થિતિકાઃ તુલ્યવિશેષાધિકં કર્મ પ્રકુર્વન્તિ’ ર્કિં વા તુલ્યસ્થિતિકા વિમાત્રવિશેષાધિકં કર્મ પ્રકુર્વન્તી ત્યાદિકં પ્રશ્નઃ હે ગૌતમ ? તુલ્યસ્થિતિકા વિમાત્રવિશેષાધિકં કર્મ પ્રકુર્વન્તી ત્યાદ્યુત્તરાદિકં ચ પ્રથમોદ્દેશકવદેવ જ્ઞાતવ્યમ્ । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ હે મદન્ત ! પરમ્પરોપપન્નકૈકેન્દ્રિયજીવવિષયે યદ્દેવાનુ પ્રિયેણ કથિતં તત્પર્યં સત્યમેવેતિ કથયિત્વા ગૌતમો ! મગવન્તં વન્દતે નમસ્યતિ વન્દિત્વા નમસ્કૃત્વા સંયમેન તપસા આત્માનં ભાવયન્ વિહરતીતિ ॥સૂ૦ ૧॥

ઇતિ શ્રી - વિશ્વવિખ્યાતજગદ્ગુરુમાદિપદભૂષિતવાલ્મીકિચારિ - ‘જૈનાચાર્ય’ પૂજ્યશ્રી-ધાસીલાલત્રિવિરચિનાયાં “શ્રી મગવતીસૂત્રસ્ય” પ્રમેયચન્દ્રિકાશ્રયાયાં વ્યાખ્યાયાં ચતુસ્ત્રિંશતમે શતકે પ્રથમમેકેન્દ્રિયશતકસ્ય તૃતીયોદ્દેશકઃ સમાપ્તઃ ॥૩૪।૧।૧॥

પન્નક અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ વિમાત્ર વિશેષાધિક કર્મ કા બન્ધ કરતે હૈં, યદાં તક પ્રથમ ઉદ્દેશક કે જૈસા હી જાનના ચાહિયે ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે મદન્ત ! પરમ્પરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવોં કે વિષય મેં જો આપ દેવાનુપ્રિય ને કહા હૈં વહ સય સર્વથા હી સત્ય હૈં । હસ પ્રકાર કહકર ગૌતમને મગવાન કો વત્તના કી ઔર નમસ્કાર કિયા । વન્દવા નમસ્કાર કર ફિર વે સંયમ ઔર તપ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુએ અપને સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે ॥સૂ૦ ૧॥

તૃતીય ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥૩૪-૩॥

પરંપરોપપન્નક અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવો વિમાત્રાથી વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે. આ કથન સુધી પહેલા ઉદ્દેશમાં કહ્યા પ્રમાણેનું કથન સમજવું.

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ પરંપરોપપન્નક એકેન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી ગૌતમસ્વામી તપ અને સંયમથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦ ૧॥

॥ત્રીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૪-૩॥

अथ चतुर्थोद्देशकः प्रारभ्यते-

मूलम्-‘एवं सेसा वि अट्ट उद्देशगा जाव अचरिमोत्ति’ नवरं
अणंतरसरिसा परंपरा परंपरसरिसा चरमा य अचरमा य
एवं चेव । एवं एए एकारस उद्देशगा ॥३४-११-१॥

चोत्तीसइमे सए पढमे एगिंदियसए ॥३४-४-११ उद्देशगा समत्ता

॥ पढमं एगिंदियसेढीसयं समत्तं ॥

छाया--‘एवं शेपा अपि अष्टौ’ उद्देशका यावदचरम इति । नवरम् अनन्त
रसदृशाः परम्पराः परम्परसदृशा थरमाश्चाचरमाथ एवमेव । एवमेते एका
दशोद्देशकाः ॥३४॥११॥

चतुस्त्रिंशत्तमे शतके प्रथमे एकेन्द्रियशते ४-११ उद्देशाः समाप्ताः
प्रथममेकेन्द्रियश्रेणिशतकं समाप्तम् ॥

टीका--‘एवं सेसा वि अट्ट उद्देशगा जाव अचरिमोत्ति’ एवम्-परम्परोपपन्न-
कोद्देशकवदेव शेपा एतद्भिन्ना अष्टावपि उद्देशकाः यावद् अचरमोद्देशक इति ।
तत्राष्टौ चतुर्थत आरभ्य एकादश पर्यन्ताः-अनन्तरावगाढ ४-परम्परावगाढ ५
-अनन्तराहारक ६-परम्पराहारक ७-अनन्तरपर्याप्त ८-परम्परपर्याप्त ९=चरमा
१०=चरम ११ रूपा अवसेया इति । ‘नवरं अणंतरा ‘अणंतरसरिसा’ अनन्तरो-

॥शतक ३४ उद्देशक ४-११॥

‘एवं सेसावि अट्ट उद्देशगा जाव अचरिमोत्ति’ इत्यादि

टीकार्थ-इसी प्रकार से बाकी के भी आठ उद्देशक अवश्य उद्देशक
तक कह लेना चाहिये। वे आठ उद्देशक इस प्रकार से हैं-‘अन्तरावगाढ
४, परम्परावगाढ ५, अनन्तराहारक ६, परम्पराहारक ७, अनन्तरपर्याप्त ८,
परम्परपर्याप्त ९, चरम १०, और अचरम ११ ‘नवरं अणंतरा अणंतर-
सरिसा परंपरा परंपरसरिसा चरमा य अचरमाय एवं चेव’ जितने

॥ योथा उद्देशानो प्रारंभ ॥

‘एवं सेसा अट्ट उद्देशगा जाव अचरिमोत्ति’ इत्यादि

आज प्रभावे गाझीना आठे उद्देशाओ यावत् अचरम उद्देशा सुधी
छडेवा नेछये ते आठ उद्देशाओ आ प्रभावे छे. अनतरावगाढ ४ परम्परावगाढ
५ अनंतरहारक ६ परम्परहारक ७ अनन्तर पर्याप्त परम्परपर्याप्त ८ चरम
१० अने अचरम ११ ‘नवरं’ अणतरसरिसा परम्परा, परम्परसरिसा

દેશકા યાવન્ત સ્તે સર્વેઽપિ અનન્તરોપપન્નકવદેવ જ્ઞાતવ્યાઃ ‘પરંપરા પરંપર-
સરિસા’ પરમ્પરોદેશકાઃ પરમ્પરોપપન્નકોદેશક સદશા જ્ઞાતવ્યાઃ ચરમા અચરમા
અપિ એવમેવ-પરમ્પરોપપન્નકવદેવેતિ ‘એવં એ એકારસ ઉદેસગા’ એવં પૂર્વોક્ત
પ્રકારેણ એતે-પૂર્વોક્તા એકાદશોદેશકાઃ ચતુસ્ત્રિંશત્તમશતકે પ્રથમેકેન્દ્રિયશતે
ભવન્તીતિ ॥૩૪।૧।૪=૧૧।

इति श्री-विश्वविख्यातजगद्बल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि - ‘जैनाचार्य’
पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां “श्री भगवतीसूत्रस्य” प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायां चतुस्त्रिंशत्तमे शतके प्रथमस्य एकेन्द्रियशतकस्य चतुर्थ
एवं एकादशोददेशकः समाप्त ॥३४-४-१-११॥

इति प्रथममेकेन्द्रिय श्रेणिशतकं समाप्तम् ।

અનન્તરોદેશક હૈં વે સવ અનન્તરોપપન્નક કે જૈસે હૈં ‘પરંપરા પરંપર-
સરિસા’ એવં પરમ્પરોદેશક પરમ્પરોદેશક કે જૈસે હૈં તથા ચરમ ઓર
અચરમ મી હસી પ્રકાર અર્થાત્ પરમ્પરોપપન્નક કે જૈસે હી જાનના
ચાહિયે । ‘એવં એ એકારસ ઉદેસગા’ હસ પ્રકાર સે યે ૩૪ વેં શતક મેં
પ્રથમ એકેન્દ્રિય શતક મેં ૧૧ ઉદેશક હૈં ॥મુ૦ ૧॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
“भगवतीसूत्र” की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके चोतीसवें शतक का
चार से ग्यारहवां उद्देशक समाप्त ॥३४-१-४-११॥

यह पहला एकेन्द्रियश्रेणि शतक समाप्त हुआ ॥

ચરમા ય અચરમા ય એવં ચેવ’ જેટલા અનંતરોદેશક છે, તે બધા અનંતરોપ-
પન્નક પ્રમાણે છે. તેમ સમજવું. એવં પરંપરોદેશક પરમ્પરોપપન્નકોદેશક
પ્રમાણે છે. તથા ચરમ અને અચરમ પણ આજ પ્રમાણે સમજવા ‘એવં એ
એકારસ ઉદેસગા’ આ રીતે આ ૩૪ ઉદેશકો કહ્યા છે. ॥મુ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત “ભગવતીસૂત્ર”ની
પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ચોત્રીસ શતકના ચારથી અગીયાર ઉદેશ

સમાપ્ત ॥૩૪-૧-૪-૧૧॥

પહેલું એકેન્દ્રિયશતક સમાપ્ત થયું. ॥

द्वितीयमेकेन्द्रियशतं प्रारभ्यते

मूलम्—कइविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता । भेओ
चउक्कओ जहा—कण्हलेस्स एगिंदियस्सए जाव वणस्सइकाइयत्ति ।
कण्हलेस्स अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइए णं भंते ! इमीसे रयण-
प्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिह्ले० एवं एएणं अभिलावेणं जहेव
ओहि उद्देसओ जाव लोगचरिंमंते ! त्ति, सव्वत्थ कण्हलेस्सेसु
चेव उववाएयव्वो । कहि णं भंते ! कण्हलेस्स अपज्जत्तवायर-
पुढवीकाइयाणं ठाणा पन्नत्ता ? एवं एएणं अभिलावेणं जहा
ओहि उद्देसओ जाव तुल्लट्ठियत्ति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।
एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमं सेढिसयं तहेव एक्कारस
उद्देसगा भाणियव्वा ॥३४-१॥

विद्ध्यं एगिंदियसेढिसयं समत्तं ॥३४-२॥

छाया--कतिविधाः खलु भदन्त ! कृष्णलेश्या एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः ?
गौतम ! पञ्चविधाः कृष्णलेश्या एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः भेदश्चतुष्को यथा कृष्ण-
लेश्यैकेन्द्रियशते यावद्वनस्पतिकायिका इति । कृष्णलेश्याऽपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवी-
कायिकः खलु भदन्त ! एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पौरस्त्ये० एवमेतेना
मिलापेन यथैवौघिकोद्देशको यावल्लोकचरमान्ते इति, सर्वत्र कृष्णलेश्येष्वेदो-
पपातयितव्यः । कुत्र खलु भदन्त ! कृष्णलेश्याऽपर्याप्त वादरपृथिवीकायिकानां
स्थानानि प्रज्ञप्तानि, एवमेतेनामिलापेन यथा—औघिकोद्देशको यावत्तुल्यस्थितिका
इति, तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति । एवमेतेनामिलापेन यथैव प्रथमं
श्रेणिशतं तथैव एकादशोद्देशका भणितव्याः ॥३४-२-१॥

द्वितीयमेकेन्द्रियश्रेणीशतं समाप्तम् । ३४-२॥

टीका—‘कइविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता’ कतिविधाः
कतिप्रकारकाः खलु भदन्त ! कृष्णलेश्यैकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ता—कथिता ? इति

પ્રશ્નઃ, મગધનાહ-‘ગોયમા’ ક્ષ્યાદિ, ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘પંચવિહા કળ્હલેસ્સા ઇગિંદિયા પન્નત્તા’ પંચવિધાઃ-પંચપ્રકારકાઃ પૃથિવીકાયિકાદિ વનસ્પતિ કાયિકાન્તાઃ કૃષ્ણલેશ્યા એકેન્દ્રિયાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ કથિતાઃ । ‘મેઓ ચઙ્કઓ જહા કળ્હલેસ્સા ઇગિંદિયસણ જાવ વણસ્સહકાઈયત્તિ’ મેદ શ્વતુષ્કકો યથા કૃષ્ણલેશ્યેકેન્દ્રિયશતે ત્રયસિંશત્તમે શતકે દ્વિતીયે એકેન્દ્રિયશતે યાવદૂ વનસ્પતિકાયિકા ઇતિ । કૃષ્ણલેશ્ય પૃથિવીકાયિકાદારભ્ય કૃષ્ણલેશ્ય વનસ્પતિકાયિકાનાં પંચાનામપિ સૂક્ષ્મ-બાદર-પર્યાપ્તા-અપર્યાપ્તરૂપા ચત્વારો ભેદાઃ, ઇતિ

શતક ૩૪ મેં દૂસરા એકેન્દ્રિય શતક ૨

‘કહ્વિહા ણં મંતે ! કળ્હલેસ્સા ઇગિંદિયા પળ્ણત્તા’ ૩૪-૧૧

ટીકાર્થ--‘કહ્વિહા ણં મંતે ! કળ્હલેસ્સા ઇગિંદિયા પળ્ણત્તા’ હે મગધન્ત ! ‘કૃષ્ણલેશ્યાવાળે એકેન્દ્રિય જીવ કિતને પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં ? ‘ગોયમા !’ પંચવિહા કળ્હલેસ્સા ઇગિંદિયા પળ્ણત્તા’ હે ગૌતમ ! કૃષ્ણલેશ્યાવાળે એકેન્દ્રિય જીવ પાંચ પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં । ઓર યે પૃથિવીકાયિક સે લેકર વનસ્પતિકાયિક તક હૈં । ‘મેઓ ચઙ્કઓ જહા કળ્હલેસ્સા ઇગિંદિયસણ જાવ વણસ્સહકાઈયત્તિ’ હન કે ચાર ભેદ કૃષ્ણલેશ્યાવાળે એકેન્દ્રિયશતક મેં કહે અનુસાર યાવત્ વનસ્પતિકાયિક તક જાનના વાહિયે અર્થાત્ ૩૩ વેં શતક મેં દ્વિતીય એકેન્દ્રિય શતક મેં યાવત્ વનસ્પતિકાયિક તક પાંચો કૃષ્ણલેશ્યાવાળે એકેન્દ્રિયોં કે સૂક્ષ્મ બાદર પર્યાપ્ત ઓર અપર્યાપ્ત રૂપ સે

બીજા એકેન્દ્રિય શતકનો પ્રારંભ —

‘કહ્વિહા ણં મંતે ! કળ્હલેસ્સા ઇગિંદિયા પળ્ણત્તા’ ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ-- ‘કહ્વિહા ણં મંતે ! કળ્હલેસ્સા ઇગિંદિયા પળ્ણત્તા’ હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે ? ‘ગોયમા ! પંચવિહા કળ્હલેસ્સા ઇગિંદિયા પળ્ણત્તા’ હે ગૌતમ ! કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય જીવો પાંચ પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. અને તે પૃથ્વીકાયિકથી લઈને વનસ્પતિ કાયિક સુધીના સમજવા. ‘મેઓ ચઙ્કઓ જહા કળ્હલેસ્સા ઇગિંદિયસણ જાવ વણસ્સહકાઈયત્તિ’ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય શતકમાં કહ્યા પ્રમાણે તેઓના ચાર ભેદો યાવત્ વનસ્પતિકાય સુધી સમજવા. અર્થાત્ ૩૩ તેત્રીશમાં શતકના બીજા એકેન્દ્રિય શતકમાં યાવત્ વનસ્પતિકાય સુધી પાંચે પ્રકારના કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય જીવને સૂક્ષ્મ, બાદર, પર્યાપ્તક અને અપર્યાપ્તક રૂપથી ચાર ભેદો જે પ્રમાણે કહ્યા છે, એજ પ્રમાણે અહિંયાં પણ સમજવા.

ચત્વારો ભેદા ભવન્તીતિ । ‘કળ્હલેસ્સ અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાદ્દણ્ણં મંતે !’
કૃષ્ણલેશ્યાપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકઃ સ્વલ્પ મદન્ત ! ‘इमीसे रयणप्पभाए
पुढवीए पुरत्थिमिल्ले’ एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पौरस्त्ये० ‘एवं एणं
अभिलावेणं जहेव ओहिउदेसओ जाव लोगचरिमंतेत्ति’ एवमेतेनाभिलापेन
यथैव औधिकोद्देशको यावल्लोकचरमान्त इति, ‘सर्व्वत्थ कण्हलेस्सेसु
चेव उववाएयव्वो’ सर्वत्र कृष्णलेश्येष्वेव उपपातयितव्यः । यथैवौघिक उद्देशकः
अत्रैव चतुस्त्रिंशत्तमशतकगते प्रथमे एकेन्द्रियशतके सामान्येन-अपर्याप्त सूक्ष्म-
पृथिवीकायिकप्रकरणोक्तं सर्वं प्रकरणं वाच्यम्, विशेष एतावानेव यत्

चार भेद जैसे कहे गये हैं वैसे ही वे यहां पर भी जानना चाहिये ।
‘कण्हलेस्स अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयाणं’ मंते । हे भदन्त ! वह कृष्ण-
लेश्यावाले अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव कि जिसने ‘इमीसे
रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले’ इस रत्नप्रभापृथिवी के पूर्व चरमान्त में
मारणान्तिक समुद्घात किया है और पश्चिम चरमान्त में उत्पन्न होने
के योग्य हुआ है तो हे भदन्त ! ऐसा वह जीव वहां कितने समयवाले
विग्रह से उत्पन्न होता है ? इत्यादि पाठ द्वारा जैसा औघिक उद्दे-
शक में कहा गया है वैसा ही लोक के चरमान्तसंबन्धी प्रकरण तक
समझना चाहिये । ‘सर्व्वत्थ कण्हलेस्सेसु चेव उववाएयव्वो’ और इन
सबका सर्वत्र कृष्णलेश्यावालों में ही उपपात कहना चाहिये । तात्पर्य
कहने का यही है कि जिस प्रकार से ३४ वें शतक गत प्रथम एकेन्द्रिय
शतक में सामान्य से अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक के प्रकरण में कहा

‘कण्हलेस्स अपज्जत्त सुहुमપુઢવીકાદ્દયાણં’ મંતે ! હે ભગવન્ તે કૃષ્ણ-
લેશ્યાવાળા અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ કે જેણે ‘इमीसे रयणप्पभाए
पुढवीए पुरत्थिमिल्ले’ આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મારણાન્તિક
સમુદ્ઘાત કરીને પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય હોય તો હે
ભગવન્ એવા તે જીવ ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ?
ઇત્યાદિ પાઠદ્વારા ઔઘિક ઉદ્દેશમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે એજ
પ્રમાણે લોકના ચરમાન્ત સુધી સમજવું નોંધ્યે. ‘सर्व्वत्थ कण्हलेस्सेसु चेव
उववाएयव्वो’ અને આ બધાને ઉપપાત બધે કહેણે કૃષ્ણલેશ્યાવાળામાં કહેવો
નોંધ્યે. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-જે પ્રમાણે ચોત્રીસમાં શતકના પહેલા
એકેન્દ્રિય શતકમાં સામાન્ય પણાથી અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકના પ્રકરણમાં
કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણેનું સઘળું પ્રકરણ અહિયાં પણ કહેવું નોંધ્યે.

અત્ર કૃષ્ણલેશ્યવિશેષણવિશિષ્ટાઃ સર્વે પૃથિવ્યાદયો વાચ્યાઃ, ઉપપાતોઽપિ સર્વેષાં સર્વત્ર કૃષ્ણલેશ્યેષ્વેવ વર્ત્તવ્યઃ । કિયત્પર્યન્તમિત્યાદ-‘જાવ લોગચરિ-મંતે’ યાવલ્લોકચરમાન્ત ઇતિ, લોક-ચરમાન્તસૂત્રપર્યન્તં સંગ્રાહ્યમ્ । જીવો યસ્યાં લેશ્યાયાં મ્રિયતે તરયામેવોત્પદ્યતે, ઇતિ ન્યાયાત્ કૃષ્ણલેશ્ય જીવાનાં કૃષ્ણલેશ્યેષ્વેવ ઉપપાતો વર્ણનીયઃ, ઇતિ યાવઃ । ‘કહિ ણં મંતે ! કણ્હલેસ્સ અપજ્જત્તવાયરપુઢવીકાહયાણં ઠાણા પન્નત્તા’ કુત્ર સ્વલુ ભદન્ત ! કૃષ્ણલેશ્ય પર્યાપ્ત વાદરપૃથિવીકાયિકાનાં સ્થાનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનીતિ પ્રશ્નઃ સ્વસ્થાનાપેક્ષયાઽષ્ટસુ પૃથિવીપુ ઇત્યુત્તરમ્ ઇત્યાદિ, ‘ઇવં એણં અમિલાવેણં

ગયા હૈ વહી સ્વ પ્રકરણ યહાં વાચ્ય હુઆ હૈ । વિશેષતા ઉસ પ્રકરણ સે હસ પ્રકરણ મેં કેવલ હતની સી હૈ કિ ઘટાં પર સમસ્ત પૃથિવીકાયિક આદિ એકેન્દ્રિય જીવ કૃષ્ણલેશ્યા સ્વ વિશેષણ સે વિશિષ્ટ હુએ હૈ । તથા હન સ્વ કા ઉપપાત મી સર્વત્ર કૃષ્ણલેશ્યાવાલોં મેં હી કર્ત્તવ્ય હુઆ હૈ । એસા યહ સ્વ ઉપપાત સમ્બન્ધી કથન લોક કે ચરમાન્ત પ્રકરણ તક ગૃહીત હુઆ હૈ । વયોં કિ જીવ જિસ લેશ્યા મેં મરતા હૈ વહ ઉસી લેશ્યા મેં ઉત્પન્ન હોતા હૈ । હસ ન્યાય કે અનુસાર કૃષ્ણલેશ્યાવાલે જીવોંકા ઉપપાત કૃષ્ણલેશ્યાવાલોં મેં હી હોતા હૈ । એસા વર્ણન કરલેના ચાહિયે ।

‘કહિ ણં મંતે ! કણ્હલેસ્સ અપજ્જત્ત વાયરપુઢવીકાહયાણં ઠાણા પણ્ણત્તા’ હે ભદન્ત ! કૃષ્ણલેશ્યાવાલે અપર્યાપ્ત વાદર પૃથિવીકાયિકોં કે સ્થાન કહાં પર કહે ગયે હૈં ? હસકે ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં-હે ગૌતમ ! સ્વસ્થાન કી અપેક્ષા સે અનેકે સ્થાન આઠોં પૃથિવિયોં મેં અર્થાત્

તે પ્રકરણ કરતાં આ પ્રકરણમાં વિશેષતા કેવળ એટલી જ છે કે અહિયાં સઘળા પૃથ્વીકાયિકો વિગેરે એકેન્દ્રિય હોયો કૃષ્ણલેશ્યાના વિશેષણથી કહેવાના છે. તથા આ બધાનો ઉપપાત પણ બધે જ કૃષ્ણલેશ્યાવાળાઓમાં જ કહેવો જોઈએ. આ પ્રમાણે આ સઘળું ઉપપાત સંબંધી કથન લોકના ચરમાન્ત સૂત્ર સુધી ગ્રહણ કરાયેલ છે. કેમ કે હવે જે લેશ્યામાં મરણપામે છે, તે એજ લેશ્યામાં ઉત્પન્ન થાય છે. આ ન્યાય પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા હોવાનો ઉપપાત કૃષ્ણલેશ્યાવાળાઓમાં જ થાય છે એ પ્રમાણેનું વર્ણન કરી લેવું જોઈએ.

‘કહિ ણં મંતે ! કણ્હલેસ્સ અપજ્જત્ત વાયરપુઢવી કાહયાણં ઠાણા પણ્ણત્તા’ હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા અપર્યાપ્તક બાદર પૃથ્વીકાયિકોના સ્થાનો કયાં કહેવામાં આવેલ છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે છે કે-હે ગૌતમ ! સ્વસ્થાનની અપેક્ષાથી તેઓના સ્થાનો રત્નપ્રભા પૃથ્વીથી

જહા ઓહિ ઉદેસઓ જાવ તુલ્લટ્વિચ્છિત્તિ' એવમેતેન પૂર્વોક્તેનામિલાપેન-
અમિલાપપ્રકારેણ યથા અસ્ય ઔઘિકઃ પ્રથમોદેશકઃ શ્વતુસ્ત્રિશત્તમસ્ય શતકસ્ય
પ્રથમે એકેન્દ્રિયશતે પ્રથમોદેશકે, યાવત્ તુલ્યસ્થિતિકા ઇતિ, 'સેવં મંતે !
સેવં મંતે ! ત્તિ' તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ યાવદ્વિહરતિ, 'એવં એણં
અમિલાવેણં જહેવ પદમં સેહિસયં તહેવ એકારસ ઉદેસગા માણિયવ્વા' એવમેતે-
નામિલાપેન યથૈવ પ્રથમં શ્રેણિશતકં તથૈવ એકાદશોદેશકા મણિતવ્યાઃ ॥મૂ. ૧॥

इति श्री - विश्वविख्यातजगद्बल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचरि - 'जैनाचार्य'
पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां 'श्री भगवतीसूत्रस्य' प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायां चतुस्त्रिंशत्तमे शतके द्वितीयमेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥३४-२॥

રત્નપ્રભા પૃથિવી સે લેકર ઈષ્ટપ્રાગ્ભારા પૃથિવી તક મેં કહે ગયે હૈં
इत्यादि 'एवं एएणं' अमिलावेणं जहा ओहिओ उदेसओ जाव तुल्ल-
ट्टिह्यत्ति' इसी प्रकार पूर्वोक्त अमिलाप से जैसा इसका चौंतीसवें
शतक का प्रथम उद्देशक कहा गया है एकेन्द्रिय शतक में यावत् तुल्य
स्थितिवाले प्रकरण तक कहा गया है वैसा ही यहाँ पर भी तुल्य
स्थिति प्रकरण तक कह लेना चाहिये । 'सेव' मंते ! सेव' मंते ! त्ति'
हे भदन्त ! जैसा आपने कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है २ । इस
प्रकार कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया ।
वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित
करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

લખને ઇષ્ટપ્રાગ્ભારા પૃથ્વી સુધીમાં કહેલ છે. ઇત્યાદિ 'એવં એણં' અમિલાવેણં
જહા ઓહિઓ ઉદેસઓ જાવ તુલ્લટ્વિચ્છિત્તિ' આજ પ્રમાણે આ પહેલા કહેલ
અમિલાપ પ્રમાણે જે રીતે ચોત્રીસ ૩૪ મા શતકના પહેલા ઉદેશમાં કહેવામાં
આવેલ છે, અર્થાત્ એકેન્દ્રિય શતકમાં યાવત્ તુલ્ય સ્થિતિવાળાનાકથન સુધી કહેલ
છે, એજ પ્રમાણેનું કથન અહિયા પણ તુલ્યસ્થિતિવાળા કથન સુધી કહેવું જોઇએ.

'સેવ' મંતે ! સેવ' મંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણેનું
કથન આ વિષય સંબંધમાં કરેલ છે, તે સઘળું કથન સત્ય છે, હે ભગવન્
આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમ-
સ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી
સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાનપર
બિરાજમાન થયા.

‘एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमं सेढिसयं तहेव एक्कारस उद्देशणा भाणियव्वा’ इस अभिलाप से जैसा प्रथम श्रेणिशतक कहा गया है उसी प्रकार से इसके भी ११ उद्देशक कह लेना चाहिये ।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत “भगवतीसूत्र” की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके चौतीसवें शतकका द्वितीय एकेन्द्रिय शतक समाप्त ॥३४-२॥

‘एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमं सेढिसयं तहेव एक्कारस उद्देशणा भाणियव्वा’ આ અભિલાપથી પહેલા શ્રેણી શતકમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે આના ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ કહેવા નેઈએ ॥સૂ.૦૧॥
જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત “ભગવતીસૂત્ર”ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ચોત્રીસમા શતકનું બીજુ એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત



‘અહ તદ્ય ચત્થ પંચમ સયાઈ’

મૂલમ્—એવં નીલલેસેહિ વિ તદ્યં સયં । કાઉલેસેહિ વિ સયં એવં
ચેવ ચત્થં સયં । ભવસિદ્ધિર્ઘિં વિ સયં । પંચમં સયં સમત્તં । સૂ. ૨।

છાયા—એવં નીલલેશ્યૈરપિ તૃતીય શતમ્ ॥૩॥ કાપોતલેશ્યૈરપિ શતમ્ એવમેવ
ચતુર્થ શતમ્ ॥૪॥ ભવસિદ્ધિકૈરપિ શતમ્ । પંચમં શતં સમાપ્તમ્ ॥સુ૦ ૧॥૩૪ ૫

ટીકાઃ—‘એવં નીલલેસેહિ વિ તદ્યં સયં’ એવં યથા કૃષ્ણલેશ્યૈકેન્દ્રિ-
યસ્ય શતમેકાદશોદેશકયુતં મણિતં તથૈવ નીલલેશ્યૈરપિ તૃતીયં શતમ્ એકા-
દશોદેશકયુતં મણિતવ્યમ્ ॥૩૪।૩।

‘કાઉલેસે વિ સયં એવં ચેવ ચત્થં સયં’ કાપોતલેશ્યૈરપિ શતમ્ એવમેવ-
તૃતીયશતવદેવ ચતુર્થ શતમપિ મણિતવ્યમ્ । એવમેકાદશોદેશકયુતં ચતુર્થ
કાપોતલેશ્યશતં નિરૂપણીયમિતિ ચતુર્થ શતં સમાપ્તમ્ ॥૩૪।૪

‘ભવસિદ્ધિર્ઘિં વિ સયં’ એવં યથા નીલલેશ્યાદિમિઃ શતં મણિતં તથૈવ
ભવસિદ્ધિકૈરપિ શતં મણિતવ્યમ્ । તથાદિ-ભવસિદ્ધિકૈકેન્દ્રિયાઃ સ્વલ્પ મદન્ત !

ત્રીસરે સે પાંચ તક કે ત્રીન ઉદેશક

‘એવં નીલલેસેહિ વિ તદ્યં સયં’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—જિસ પ્રકાર સે ૧૧ ઉદેશો સે યુક્ત કૃષ્ણલેશ્યાવાલે એકેન્દ્રિય
જીવ કા શતક કહા ગયા હૈ ડસી પ્રકાર સે નીલલેશ્યાવાલોં કે સમ્બન્ધ
મેં મી ૧૧ ઉદેશકોં સે યુક્ત તૃતીય શતક મી કહલેના ચાહિયે ॥૩૪-૩।

‘કાઉલેસેહિ વિ સયં એવં ચેવ ચત્થં સયં’ ઇસી પ્રકાર સે કાપોત-
લેશ્યાવાલોં કે સમ્બન્ધ મેં મી ૧૧ ઉદેશકોં સે યુક્ત ચતુર્થ શતક મી
કહ લેના ચાહિયે ॥૩૪-૪।

‘ભવસિદ્ધિર્ઘિં વિ સયં’ જિસ પ્રકાર સે નીલલેશ્યાદિવાલોં કે સમ્બન્ધ
મેં શતક કહે ગયે હૈ ડસી પ્રકાર સે ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવોં કે

ત્રીન, ચોથા, અને પાંચમા શતકનો પ્રારંભ—

‘એવં નીલલેસેહિ વિ તદ્યં સયં’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—જે પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય જીવના સંબંધમાં ૧૧
અગિયાર ઉદેશ્યાવાળું શતક કહેલ છે, એજ પ્રમાણે નીલલેશ્યાવાળાઓના
સંબંધમાં પણ ૧૧ અગિયાર ઉદેશ્યાવાળું ત્રીજું શતક કહેવું જોઈએ ॥૩૪-૩।

‘કાઉલેસેહિ વિ સયં એવં ચેવ ચત્થં સયં’ આજ પ્રમાણે કાપોતલેશ્યાવાળા
જીવોના સંબંધમાં પણ ૧૧ અગિયાર ઉદેશ્યાઓવાળું ચોથું શતક પણ કહેવું
જોઈએ. ॥૩૪-૪।

‘ભવસિદ્ધિર્ઘિં વિ સયં’ જે પ્રમાણે નીલલેશ્યા વિગેરે વાળાઓના
સંબંધમાં શતક કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયવાળા

કતિ પ્રકારકાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ હે ગૌતમ ! પચ્ચપ્રકારકાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ તથા-પૃથિવી-
કાયિકા યાવદ્વનસ્પતિકાયિકાઃ । મવસિદ્ધિક પૃથિવીકાયિકાઃ સ્વલુ મદન્ત !
કતિપ્રકારકાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ હે ગૌતમ ! દ્વિવિધાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ તથા-સૂક્ષ્માશ્ચ
વાદરાશ્ચ । એવમેવ યાવદ્વનસ્પતિકાયિકા અપિ । મવસિદ્ધિકસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાઃ
કતિવિધાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ હે ગૌતમ ! દ્વિવિધાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ અપર્યાપ્તાશ્ચ પર્યાપ્તાશ્ચ
એવં યાવદ્વનસ્પતિકાયિકાઃ । હે મદન્ત ! મવસિદ્ધિકાપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવી-
કાયિકઃ એતસ્યા રત્નપ્રમાયા પૌરસ્ત્યે ચરમાન્તે સમવહતઃ સમવહત્ય
એતસ્યા રત્નપ્રમાયાઃ પૌરસ્ત્યે ચરમાન્તે મવસિદ્ધિકાપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવી
કાયિકત્વયા સમુત્પત્તિયોગ્યો વિદ્યતે સ સ્વલુ કિયત્સામયિકેન વિગ્રહેણોત્પદ્યેતે-

સમ્બન્ધ મેં મી શતક કહલેના યાહિયે । તથા ચ-હે મદન્ત ! મવ-
સિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવ કિતને પ્રકાર કે વહે ગયે હૈ ? હે ગૌતમ ! વે
પાંચ પ્રકાર કે કહે ગયે હૈ । જૈસે-પૃથિવીકાયિક સે લેકર યાવત્ વન-
સ્પતિકાયિક તક હે મદન્ત ! મવસિદ્ધિક પૃથિવીકાયિક કિતને પ્રકાર
કે કહે ગયે હૈ ? હે ગૌતમ ! દો પ્રકાર કે કહે ગયે હૈ । સૂક્ષ્મ ઓર વાદર
હસી પ્રકાર સે યે દો ભેદ યાવત્ વનસ્પતિકાયિક જીવોં કે મી જાનના
ચાહિયે । મવસિદ્ધિક સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવ કિતને પ્રકાર કે કહે
ગયે હૈ ? હે ગૌતમ ! દો પ્રકાર કે કહે ગયે હૈ । પર્યાપ્ત ઓર અપર્યાપ્ત હસી
પ્રકાર કે દો ભેદ યાવત્ વાદરવનસ્પતિકાયિક તક જાનના યાહિયે ।
હે મદન્ત વહ મવસિદ્ધિક અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવ જો હસ
રત્નપ્રમાપૃથિવી કે પૂર્વ ચરમાન્ત મેં સમવહત હુમ્મં હૈ ઓર સમવહત
હોકર હસી પૂર્વ ચરમાન્ત મેં મવસિદ્ધિક અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક

જીવના સંબંધમાં પણ શતક કહેવું જોઈએ, તથા હે ભગવન્ ભવસિદ્ધિક
એકેન્દ્રિય જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા ? છે હે ગૌતમ ! તેઓ પાંચ
પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે. જેમ કે-પૃથ્વીકાયિકથી લઈને યાવત્ વનસ્પતિ
કાય સુધીના પાંચ પ્રકાર સમજવા. હે ભગવન્ ભવસિદ્ધિક પૃથ્વીકાયિક જીવો
કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? હે ગૌતમ ! તેઓ બે પ્રકારના કહેવામાં
આવ્યા છે ? તે બે પ્રકારો પર્યાપ્તક અને અપર્યાપ્તક એ રીતે છે. આજ
પ્રમાણેના બે ભેદો યાવત્ વનસ્પતિકાય સુધી સમજવા.

હે ભગવન્ તે ભવસિદ્ધિક અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ કે જેણે
આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં સમુદ્ધાત કરેલ છે, અને સમુદ્ધાત
કરીને આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં ભવસિદ્ધિક અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ

ત્યારમ્બ તુલ્યસ્થિતિકાઃ તુલ્યવિશેષાધિકં કર્મ પ્રકુર્વન્તિ એતત્પર્યન્તમેતસ્ય પ્રથમ શતવદેવ સર્વમિદાપિ, એવમેકાદશોદેશકાઃ પૂર્વવદેવ મણિતવ્યાઃ તદિત્યમ્ એકાદ- શોદેશકયુક્તં પંચમં ભવસિદ્ધિક્ષતં સમાપ્તં ભવતિ ॥૨૦૦ ૧॥

॥ ઇતિ શ્રી વિશ્વવિખ્યાત-જગદ્બલ્લભ-પ્રસિદ્ધવાચક-પશ્ચદશમાપા-
કલિતલલિતકલાપાલાપકપવિશુદ્ધગદ્યપદ્યનૈકગ્રન્થનિર્માપક,
વાદિમાનમર્દક-શ્રીશાહુચ્છત્રપતિ કોલ્હાપુરરાજપદત્ત-
'જૈનાચાર્ય' પદભૂષિત—કોલ્હાપુરરાજગુરુ-
વાલબ્રહ્મચારિ — જૈનાચાર્ય — જૈનધર્મદિવાકર
—પૂજ્યશ્રી ઘાસિલાલવ્રતિચિરચિતાયાં શ્રી “ભગ-
વતીસૂત્રસ્ય ” પ્રમેયચન્દ્રિકાખ્યાયાં
વ્યાખ્યાયાં ચતુર્લિંગશતકમશતકે
પશ્ચમમેકેન્દ્રિયશતં સમાપ્તમ્ ॥૩૪૫॥

રૂપ સે હી ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હુઆ હૈં વહ કિતને સમયવાલે વિગ્રહ સે
વહાં ઉત્પન્ન હોતા હૈ ? હસ પ્રશ્ન સૂત્ર સે લેકર ‘તુલ્યસ્થિતિવાલે તુલ્ય
વિશેષાધિક કર્મ’ કા બન્ધ કરતે હૈં ‘યહાં તરુ કા સમસ્ત કથન હસી
કે પ્રથમ શત કે જૈણા હી યહાં પર ખી જાનના ચાહિયે ઓર યહાં પર
ખી ૧૧ ઉદેશક પૂર્વ કે જૈસે હી કહલેના ચાહિયે । હસ પ્રકાર યહ
પાંચવાં ભવસિદ્ધિક્ષ શતક જો કિ ૧૧ ઉદેશકોં યુક્ત કહા ગયા હૈ
સમાપ્ત હોતા હૈ ।

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજીમહારાજકૃત
“ભગવતીસૂત્ર” કી પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાકે ચૌનીસવેં શતક કા
પાંચવાં એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત ॥૩૪-૫॥

પૃથ્વીકાયિક પશુપતી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય બનેલ છે, તેઓ ત્યાં કેટલાસમયની
વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્ન સૂત્રથી લઇને તુલ્ય સ્થિતિવાળા
તુલ્ય વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે. આ કથન સુધીનું સંઘર્ષ કથન આ
૩૪ ચોત્રીસમા શતકના ત્રીજા ઉદેશના પહેલા એકેન્દ્રિય શતકમાં કહ્યા પ્રમાણે
છે તેમ સમજવું અને અડિયાં પણ ૧૧ અગીયાર ઉદેશાઓ પહેલા કહ્યા
પ્રમાણે કહ્યા છે તેમ સમજવું. આ રીતે આ પાંચમું ભવસિદ્ધિક્ષ શતક કે
જે ૧૧ અગીયાર ઉદેશાઓવાળું છે. તે સમાપ્ત થયું છે.

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર શ્રી પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત ‘ભગવતીસૂત્ર’ની
પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ત્રીસમા શતકનું પાંચમું
એકેન્દ્રિયશતક સમાપ્ત ॥૩૪-૫॥

अथ षष्ठं शतकं प्रारभ्यते

मूलम्—कइविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगि-
दिया पन्नत्ता एवं जहेव ओहि उद्देसओ । कइविहा णं भंते !
अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिदिया पन्नत्ता
जहेव अणंतरोववन्नगा उद्देसओ ओहिओ तहेव । कइविहा णं
भंते ! परंपरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धिय एगिदिया पन्नत्ता
ओहिओ भेओ चउक्कओ जाव वणस्सइकाइय त्ति । परंपरोववन्न
कण्हलेस्स भवसिद्धिय अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते !
इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए एवं एएणं अभिलावेणं जहेव
ओहिओ उद्देसओ जाव लोयचरिभंते त्ति । सुव्वत्थ कण्हलेस्सेसु
भवसिद्धिएसु उववाएयव्वो । कहि णं भंते ! परंपरोववन्न
कण्हलेस्स भवसिद्धिय पज्जत्तवायरपुढवीकाइया णं ठाणा
पन्नत्ता एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव
तुल्लट्ठिइयत्ति । एवं एएणं अभिलावेणं कण्हलेस्स भवसिद्धिय
एगिदिएहिं वि तहेव एक्कारस्स उद्देसगसंजुत्तं छट्ठं सयं । सु०१।

चोत्तीसइमे सए छट्ठं एगिदियसयं समत्तं

छाया--कतिविधाः खलु भदन्त ! कृष्णलेश्यभवसिद्धिका एकेन्द्रियाः
प्रज्ञप्ताः ? यथैवाधिकोद्देशकः । कतिविधाः खलु भदन्त ! अनन्तरोपपन्नकाः
कृष्णलेश्या भवसिद्धिका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः यथैवानन्तरोपपन्नकोद्देशक औधिक-
स्तथैव । कतिविधाः खलु भदन्त ! परम्परोपपन्नकाः कृष्णलेश्या भवसिद्धिकै-
केन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पञ्चविधाः परम्परोपपन्नकाः कृष्णलेश्य भवसि-
द्धिकैकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः औधिको भेदश्चतुष्को यावद्वनस्पतिकायिकाः इति ।
परंपरोपपन्न कण्हलेस्सभवसिद्धिकापर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त !
एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः एवमेतेनाभिज्ञापेन यथैवाधिक उद्देशकः
यावदलोकचरमान्त इति । सर्वत्र कृष्णलेश्येषु भवसिद्धिकेषु उपपातयितव्यः
कुत्र खलु भदन्त ! परम्परोपपन्न कृष्णलेश्यभवसिद्धिकपर्याप्तवादरपृथिवी-

कायिकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि एवमेतेनामिलापेन यथैवाधिक उद्देशको यावत् तुल्यस्थितिका इति । एवमेतेनामिलापेन कृष्णलेश्य भवसिद्धिकैकेन्द्रियैरपि तथैव एकादशोद्देशकसंयुक्तं पष्ठं शतम् ॥मृ० १॥

चतुस्त्रिंशत्तमे शतके पष्ठमेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥३४॥६॥

टीका—‘कइविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता’ कतिविधाः—कतिप्रकारकाः खलु भदन्त ! कृष्णलेश्या भवसिद्धिका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः ? इति प्रश्नः, उत्तरमाह—‘एवं जहेव ओहियउदेसओ’ एवं यथैवाधिकोद्देशकः, अस्यैव चतुस्त्रिंशत्तमशतकस्य औधिके उद्देशके—प्रथमे उद्देशके यथा

शतक ३४ छठाशत

‘कइविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया’ इत्यादि

टीकार्थ—हे भदन्त ! कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक एकेन्द्रियजीव कितने प्रकार के कहे गये हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—‘एवं जहेव ओहिओ’ हे गौतम ! जैसे ३४ वे शतक के प्रथम उद्देशक में भेदों का कथन किया गया है । उसी प्रकार से यहाँ पर पृथिवीकायिक से लेकर यावत् वनस्पतिकायिक तक पांच भेद इसके जानना चाहिये ।

‘कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता’ हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—‘जहेव अणंतरोववन्न उदेसओ ओहिओ तहेव’ हे गौतम ! जैसा इसी ३४ वे शतक का अनन्तरोपपन्नक उद्देशक कहा गया है । उसी

छठा ऐकेन्द्रियशतकने प्रारंभ—

‘कइविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया’ इत्यादि

टीकार्थ—हे भगवन् कृष्णलेश्यावाणा भवसिद्धिक ऐकेन्द्रियवाणा छवो केटला प्रकारना कडेवाभां आव्या छे ? आ प्रश्नना उत्तरभां प्रभुश्री गौतम स्वामीने कडे छे के—‘एवं जहेव ओहिय उदेसओ’ हे गौतम ! ३४ यात्रीसभा शतकना पहिला उद्देशाभां के प्रमाणे लेदोनुं कथन करवाभां आवेल छे, ओज प्रमाणेनुं कथन अडियां पृथ्वीकायिकथी लधने यावत् वनस्पतिकाय सुधी पांच लेदो समजवा.

‘कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पणत्ता’ हे भगवन् अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्यावाणा भवसिद्धिक ऐकेन्द्रियवाणा छवो केटला प्रकारना कडेवाभां आवेल छे ? आ प्रश्नना उत्तरभां प्रभुश्री कडे छे के ‘जहेव अणंतरोववन्न उदेसओ ओहिओ तहेव’ हे गौतम ! आ यात्रीसभा

ભેદાઃ કથિતા સ્તથૈવાત્રાપિ પશ્ચવિધા જ્ઞાતવ્યાઃ પૃથિવીકાયિકા યાવદ્વનસ્પતિ-
કાયિકા ઇતિ । ‘કહ્વિદ્વા ણં મંતે ! અણંતરોવવન્નગા કળ્હલેસ્સા ભવસિદ્ધિયા
ર્ણિદિયા પન્નતા’ કતિવિધાઃ—કતિપ્રકારકાઃ સ્વલુ મદન્ત ! અનન્તરોપપન્નકાઃ
કૃણ્ણલેશ્યા ભવસિદ્ધિકા એકેન્દ્રિયાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ કથિતાઃ ? ઇતિ પ્રશ્નઃ, ઉત્તર-
માહ—‘જહેવ’ ઇત્યાદિ, ‘જહેવ અણંતરોવવન્ન ઉદેસઓ ઓદ્ધિઓ તહેવ’ યથૈવાનન્ત-
રોપપન્નોદેશક ઔષિક્ક સ્તથૈવ ચતુસ્તિશ્ચ્છત્તકસ્ય ઔષિકે દ્વિતીયે અનન્તરોપપ-
ન્નકમકરણે યથા કથિતં તથૈવાત્રાપિ સર્વં જ્ઞાતવ્યમ્ । કતિપ્રકારકા ઇતિ પ્રશ્નસ્ય
પશ્ચપ્રકારકાઃ તચ્ચથા—પૃથિવીકાયિકા યાવદ્વનસ્પતિકાયિકાઃ, અનન્તરોપપન્ન
કૃણ્ણલેશ્યભવસિદ્ધિક પૃથિવીકાયિકાઃ કતિ પ્રકારકા ઇતિ પ્રશ્નસ્ય દ્વિપ્રકારકાઃ
સૂક્ષ્માશ્ચ વાદરાશ્ચ એવં યાવદ્વનસ્પતિકાયિકાઃ । અત્ર દ્વિપદ એવ ભેદો વર્ણયિતવ્યઃ
અનન્તરોપપન્નકત્વાદેવ પર્યાપ્તાપર્યામ્ભેદયોરભાવાદિતિ । અન્યત્સર્વં પ્રથમોદેશક-
વદેવ જ્ઞાતવ્યમ્ ॥ ‘કહ્વિદ્વા ણં મંતે ! પરંપરોવવન્નગા કળ્હલેસ્સા ભવસિદ્ધિ

પ્રકાર સે યહાં પર ઓ સ્વ પ્રકરણ જાનના ચાહિયે । જૈસે—કૃણ્ણલેશ્યા
વાલે ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવ પૃથિવીકાયિક સે લેકર વનસ્પતિ
કાયિક તક પાંચ પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં’ અનન્તરોપપન્નક કૃણ્ણલેશ્યા
વાલે ભવસિદ્ધિક પૃથિવીકાયિક જીવ સૂક્ષ્મ ઓર વાદર કે ભેદ સે દો
પ્રકાર અપ્કાયિક તેજસ્કાયિક વાયુકાયિક ઓર વનસ્પતિકાયિક इन
સવ એકેન્દ્રિય જીવોં કે ઓ જાનના ચાહિયે । યહાં પર્યાપ્ત ઓર અપ-
ર્યાપ્ત એસે દો ભેદ વિવક્ષિત નહી હુએ હૈં । કયો કિ અનન્તરોપપન્નક
હોને સે इन સેં યે દો ભેદ હોતે નહીં હૈ । ઓર સ્વ કથન इन કે
સંબન્ધ મેં પ્રથમોદેશક કે જૈસા હી સમજના ચાહિયે । ‘કહ્વિદ્વા ણં
મંતે ! પરંપરોવવન્નગા’ હે મદન્ત ! પરંપરોપપન્નક કૃણ્ણલેશ્યાવાલે

શતકનેા અનંતરોપપન્નક સંબંધી ઉદેશા જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ
પ્રમાણે અહિયાં પણ તમામ પ્રકરણ સમજવું. જેમ કે—કૃણ્ણલેશ્યાવાળા ભવ-
સિદ્ધિક એકેન્દ્રિય પૃથ્વીકાયિકથી લઇને વનસ્પતિકાયિક સુધી પાંચ પ્રકારના
કહેવામાં આવેલ છે. અનંતરોપપન્નક કૃણ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક પૃથ્વીકાયિક
જીવ સૂક્ષ્મ અને વાદરના ભેદથી જે પ્રકારના કહેલ છે. આજ પ્રમાણેના આ
જે ભેદો અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક અને વનસ્પતિકાયિક આ સઘળા
એકધન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં પણ સમજવા. અહિયાં પર્યાપ્ત અને
અપર્યાપ્ત આ જે ભેદોની વિવક્ષા કરેલ નથી. જેમ કે અનંતરોપપન્નક કહેવાથી
આમનામાં આ જે ભેદો હોતા નથી. બાકીનું સઘળું કથન આ વિષયના
સંબંધમાં પડેલા ઉદેશામાં કહ્યા પ્રમાણે સમજવું.

અર્ગિદિયા પન્નત્તા' કતિવિધાઃ-કૃતિપ્રકારકાઃ સ્વલુ મદન્ત ! પરમ્પરોપપન્નાઃ
કૃષ્ણલેશ્યા ભવસિદ્ધિકૈકેન્દ્રિયાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ-કથિતાઃ ? इति પ્રશ્નઃ, ઉત્તરમાહ-
'ગોયમા !' इत्यादि 'गोयमा' हे गौतम ! 'पंचविहा परंपरोवयन्नगा कण्हलेस्सा
भवसिद्धियर्गिदिया पन्नत्ता' पञ्चविधाः-पञ्चप्रकारकाः परम्परोपपन्नकाः कृष्ण
लेश्या भवसिद्धिकैकैन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः । तद्यथा-पृथिवीकायिका यावद्वन-
स्पतिकायिकाः परम्परोपपन्नक पृथिवीकायिकाः स्वलु मदन्त ! कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ?
गौतम ! द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-सूक्ष्माश्च बादराश्च तत्र सूक्ष्मा पुनर्द्वि-
विधाः पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्च बादरा अपि द्विविधाः पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्च एवं
यावद्वनस्पतिकायिकाः, एतदाशयेनाह-'ओहिओ भेदो चउक्कओ जाव वण-

भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं ? उत्तर में
प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! पंचविहा परंपरोवयन्नगा कण्हलेस्सा भव-
सिद्धियर्गि दिया पन्नत्ता' हे गौतम ! परम्परोपपन्नक कृष्णलेश्यावाले
भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीव पांच प्रकार के कहे गये हैं । जैसे-पृथिवी-
कायिक यावद्वनस्पतिकायिक । परम्परोपपन्नक पृथिवीकायिक जीव हे
मदन्त ! कितने प्रकार के कहे गये हैं ! हे गौतम ! ये दो प्रकार के
कहे गये हैं । एक सूक्ष्म और दूसरे बादर इन में सूक्ष्म भी पर्याप्त और
अपर्याप्त के भेद से दो प्रकार के कहे गये हैं । इसी प्रकार के भेदवाले
एकेन्द्रिय जीव यावत् वनस्पतिकायिक तक जानना चाहिये । इसी
आशय को लेकर सूत्रकार ने 'ओहिओ भेदो चउक्कओ जाव वणस्सइ
काइयत्ति' ऐसा यह सूत्रपाठ कहा है । 'परंपरोवयन्न कण्हलेस्स भव-

'કઈવિહા જા' મતે ! પરંપરોવયન્નગક' હે ભગવન્ પરપરોપપન્નક કૃષ્ણ-
લેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે ?
આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'ગોયમા ! પંચવિહા પરપરોવયન્નગા
કણ્હલેસ્સા ભવસિદ્ધિયર્ગિ દિયા પન્નત્તા' હે ગૌતમ ! પરપરોપપન્નક કૃષ્ણ-
લેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયવાળા જીવો પૃથ્વીકાયિકથી લઈને વનસ્પતિ
કાય સુધીના પાંચ પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે. હે ભગવન્ પરપરોપપન્નક
પૃથ્વીકાયિક જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે
છે કે-હે ગૌતમ ! તેઓ સૂક્ષ્મ અને બાદરના લેદથી બે પ્રકારના કહેવામાં
આવેલ છે. તેઓમાં સૂક્ષ્મ પણ પર્યાપ્તક અને અપર્યાપ્તકના લેદથી બે
પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે. આ પ્રમાણેના લેદોવાળા એકેન્દ્રિયાળા જીવો
યાવત્ વનસ્પતિકાય સુધીના સમજવા. આજ અભિપ્રાયથી સૂત્રકારે 'ઓહિઓ
ભેઓ ચરુક્કઓ જાવ વણસ્સइકાઈયત્તિ' આ પ્રમાણેના સૂત્રપાઠ કહેલ છે.

સસકાદયત્તિ' ઔધિકો ભેદશ્ચતુષ્કો સૂક્ષ્મવાદરપર્યાપ્તાપર્યાપ્તરૂપો યાવદ્-
નસ્પતિકાયિકા ઇતિ । 'પરંપરોવવન્ન કળ્હલેસ્સ ભવસિદ્ધિય અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવી-
કાદ્દણં મંતે !' પરમ્પરોપપન્ન કુળ્લલેદ્ધયા ભવસિદ્ધિકાપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવી-
કાયિકઃ સ્વલુ મદન્ત ! 'ઈમીસે રયણપ્પમાણ પુઢવીણં' એતસ્યા રત્નપ્રમાયાઃ
પૃથિવ્યાઃ પૂર્વે ચરમાન્તે સમવહતઃ સમવહત્ય યો મવ્ય એતસ્યા એવ રત્નપ્રમાયાઃ
પશ્ચિમે ચરમાન્તે પરમ્પરોપપન્ન કુળ્લલેદ્ધય ભવસિદ્ધિકાપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથિવી-
કાયિકતયા સમુત્પત્તું મ સ્વલુ મદન્ત ! કિયત્સામયિકેન વિગ્રહેણોત્પદ્યેત હે
ગૌતમ ! એકસામયિકેન વા યાવત્ ત્રિસામયિકેન વા સમુત્પદ્યેત ઇત્યારમ્બ-
લોકચરમાન્તપર્યન્તં સર્વમપિ ઔધિકપ્રકરણવદેવ જ્ઞાતવ્યમિત્યાશયેનાદ્-
'એવં એણં અમિલાવેણં જહેવ ઓહિઓ ઉદ્દેસઓ જાવ લોચચરિમંતે ત્તિ'

સિદ્ધિય અપજ્જત્તસુહુમ પુઢવીકાદ્દણં મંતે !' વહ પરમ્પરોપપન્નક
કુળ્લલેદ્ધયાવાલા ભવસિદ્ધિક અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવ જો
'ઈમીસે રયણપ્પમાણ પુઢવીણં' હસ રત્નપ્રમા પૃથિવી કે પૂર્વ ચરમાન્ત
મે સમવહત હુઆ હૈ ઓર સમવહત હોકર હસી રત્નપ્રમા પૃથ્વી કે
પશ્ચિમ ચરમાન્ત મે પરમ્પરોપપન્નક કુળ્લલેદ્ધયા યુક્ત ભવસિદ્ધિક
અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક રૂપ સે ઉત્પન્ન હોને કે યોગ્ય હૈ કિતને
સમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ? હે ગૌતમ ! વહ વહાં 'એકસમય
વાલે વિગ્રહ સે યાવત્ ત્રિસમયવાલે વિગ્રહ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ' એસે
હસ કથન સે લગાકર લોક ચરમાન્ત પ્રકરણ તક કા સવ કથન
ઔધિક પ્રકરણ જાનના ચાહિયે । હસી આશય કો લેકર 'એવં એણં
અમિલાવેણં જહેવ ઓહિઓ ઉદ્દેસઓ જાવ લોચ ચરિમંતે । ત્તિ' એસા

'પરંપરોવવન્ન કળ્હલેસ્સ ભવસિદ્ધિય અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાદ્દણં મંતે !' હે
ભગવન્ પરંપરોપપન્નક કુળ્લલેદ્ધયાવાળા ભવસિદ્ધિક અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વી
કાયિક જીવ કે જે 'ઈમીસે રયણપ્પમાણ પુઢવીણં' આ રત્નપ્રમા પૃથ્વીના પૂર્વ
ચરમાન્તમાં સમુદ્ધાત કર્યો છે. અને સમુદ્ધાત કરીને આ રત્નપ્રમા પૃથ્વીના
પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં પરંપરોપપન્નક કુળ્લલેદ્ધયા યુક્ત ભવસિદ્ધિક અપર્યાપ્તક
સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય હોય છે ? હે ગૌતમ ! તે
ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. યાવત્ ત્રણ સમયવાળી
વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. એ પ્રમાણેના કથનથી લઈને ચરમાન્ત સુધીનું
તમામ કથન ઔધિક પ્રકરણમાં કહ્યા પ્રમાણે સમજવું. આ અભિપ્રાયને લઈને
સૂત્રકારે 'એવં એણં અમિલાવેણં જહેવ ઓહિઓ ઉદ્દેસઓ જાવ ચરિમંતે ત્તિ'

एवमेतेन पूर्वोदितेनाभिलाषेन प्रकारेण यथैवौधिकोद्देशकः चतुस्त्रिंशत्तमशत-
कस्य प्रथमोद्देशः, यावत्लोकचरमान्त इति । औधिकप्रकरणवदेव सर्वं ज्ञात-
व्यमिति । 'सर्व्वत्थ कण्हलेस्सेसु भवसिद्धिएसु उववाएयव्वो' सर्व्वत्र कृष्णलेश्येषु
भवसिद्धिकेषूपपातयितव्यः परम्परोपपन्न कृष्णलेश्यभवसिद्धिकानां कृष्णलेश्य-
भवसिद्धिकेष्वेवोपपातो वर्णयितव्यः, 'कहि णं भंते ! परंपरोववन्नकण्हलेस्स
भवसिद्धियपज्जत्तवायरपुढवीकाइयाणं ठाणा पणत्ता' कुत्र खलु भदन्त !
परम्परोपपन्न कृष्णलेश्य भवसिद्धिक वादरपृथिवीकायिकानामेकेन्द्रियाणां
स्थानानि प्रज्ञप्तानि-कथितानीति प्रश्नः, हे गौतम ! स्वस्थानापेक्षया अष्टासु
पृथिवीषु स्थानानि प्रज्ञप्तानि इत्यारभ्य यावत् तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ती-
त्येतत् पर्यन्तम् औधिकोद्देशकवदेव ज्ञातव्यमित्याशयेनाह-'एवं' इत्यादि, 'एवं

यह सूत्रपाठ कहा है 'सर्व्वत्थ कण्हलेस्सेसु भवसिद्धिएसु उववाएयव्वो'
सर्व्वत्र परम्परोपपन्नक कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिकों का कृष्णलेश्यावाले
भवसिद्धिकों में ही उपपात वर्णित करना चाहिये ।

‘कहि णं भंते ! परंपरोववन्न कण्हलेस्स भवसिद्धिय पज्जत्तवायर
पुढवीकाइयाणं ठाणा पणत्ता’ हे भदन्त ! परम्परोपपन्नक कृष्णलेश्या
वाले भवसिद्धिक वादर पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय जीवों के स्थान कहां
पर कहे गये हैं । उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-‘हे गौतम ! स्वस्थान की
अपेक्षा से इनके स्थान आठ पृथिवीयों आदिकों में ७ साल रत्नप्रभा-
दिक नरकों में एवं आठवीं पृथिवी ईषत्प्राग्वारा पृथिवी में कहे
गये हैं । इस के अतिरिक्त और भी इस सम्बन्ध में जो कथन है वह
सब कथन यावत् तुल्य विशेषाधिक कर्म का वे बन्ध करते हैं’ इत्यादि

આ પ્રમાણેનો સૂત્રપાઠ કહેલ છે ‘સર્વ્વત્થ કણ્હલેસ્સેસુ ભવસિદ્ધિણ્ણેસુ ઉવવાપ્પયવ્વો
લોકના પૂર્વ ચરમાન્તમાં સમુદ્ધત કરેલ પરંપરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા
ભવસિદ્ધિકેનો ઉપપાત કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિકોમાં જ વર્ણવેલો જોઈએ.

‘કહિણ’ મંતે ! પરંપરોવવન્ન કણ્હલેસ્સ ભવસિદ્ધિય અપજ્જત્ત વાયરપુઢવી
કાઈયાણં ઠાણા પણત્તા’ હે ભગવન્ પરંપરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક
આદર પૃથ્વીકાયવાળા એકેન્દ્રિય જીવોના સ્થાન ક્યાં કહેવામાં આવેલ છે ?
આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-હે ગૌતમ ! સ્વસ્થાનની
અપેક્ષાથી તેઓના આઠ સ્થાનો પૃથ્વીકાયિકોમાં, રત્નપ્રભા વિગેરે નરકોમાં.
તેમજ આઠમી ઇષત્પ્રાગ્સારા પૃથ્વીમાં કહેવામાં આવેલ છે. આ શિવાય આ
વિષયના સંબંધમાં બીજું જે કથન છે, તે સ્પષ્ટું કથન યાવત્ તુલ્ય વિશેષાધિક
કર્મનો બાંધ કરે છે. આ કથન સુધી ઔધિક ઉદ્દેશમાં કદા પ્રમાણે સમજવું

एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव तुल्लट्ठिइयत्ति' एवमेतेन पूर्वोक्तेनाभिलापेन प्रकारेण यथैवौधिक उद्देशकः चतुस्त्रिंशत्तमशतकस्य प्रथमो-
यावत्तुल्यस्थितिका इति, सर्वमिदं औधिकं प्रकरणद्वयेन ज्ञातव्यं यावत्तुल्य
स्थितिका स्तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्तीति भावः । 'एवं एएणं अभिला-
वेणं कण्हलेस्स भवसिद्धि एगिदिएहिं' वि तहेन एकारस उद्देससंजुत्तं छट्ठं सयं'
एवमेतेनाभिलापेन यथा-औधिकं भवसिद्धि सम्बन्धि पञ्चमं शतकं कथितं तथैवास्य
षष्ठशतकस्य औधिकानन्तरोपपन्नक परस्पररोपपन्नकेत्युद्देशकत्रयविशिष्टैकेन्द्रि-
यैरपि तथैवैकादशोद्देशकसंयुक्तं षष्ठं शतम्, अनन्तरावगाढ परस्परावगाढानन्तरा-
हारक परस्पराहारकानन्तरपर्याप्तकपरस्परपर्याप्तक चरमाचरमेत्यष्टौ उद्देशका
अपि वक्तव्याः तद्विच्यमेकादशोद्देशक संयुक्तं षष्ठं शतं निर्मातव्यमिति भावः ॥

इति श्री - विश्वविख्यातजगद्गुरुलभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि - 'जैनाचार्य'
पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां 'श्री भगवतीसूत्रस्य' प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायां चतुस्त्रिंशत्तमशतके षष्ठमेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥३४॥

कथन तक औधिक उद्देशक के जैसा ही जानना चाहिये । हमी आशय
को लेकर 'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव तुल्ल
ट्ठिइयत्ति' सूत्रकार ने ऐसा यह सूत्रपाठ यहां कहा है । 'एवं एएणं
अभिलावेणं कण्हलेस्स भवसिद्धिय एगिदिएहिं' वि तहेव एकारस
उद्देससंजुत्तं छट्ठं सयं' इस के अभिलाप प्रकार से कृष्णलेश्यावाले
भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में भी ग्यारह उद्देशकों से युक्त
यह छठा शतक कहना चाहिये । अर्थात् जिस रीति से औधिक
सामान्य भवसिद्धिक संबंधी पांचवां शतक कहा गया है उसी प्रकार
से इस छठे शतक के औधिक अनन्तरोपपन्नक परस्पररोपपन्नक इनतीन

આ અભિપ્રાયથી સૂત્રકારે 'એવં' એએણં' અભિલાવેણં' જહેવ ઓહિઓ ઉદ્દેસઓ
જાવ તુલ્લટ્ઠિહયત્તિ' આ પ્રમાણે સૂત્રપાઠ કહેલ છે. 'એવં' એએણં' અભિલાવેણં'
કણ્હલેસ્સ ભવસિદ્ધિય એગિદિએહિં' વિ એકારસઉદ્દેસસંજુત્તં છટ્ઠં સયં' આ
પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં પણ ૧૧
અગિયાર ઉદ્દેશોઆ આ છઠ્ઠા શતકમાં કહેવા જોઇએ. અર્થાત્ જે પ્રમાણે
પર'પરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોના ઉદ્દેશો કહેલ છે,

उद्देशक के अतिरिक्त शेष अनन्तरावगाढ, परम्परावगाढ अनन्तरा-
हारक, परम्पराहारक, अन्तरपर्याप्तक, परम्परपर्याप्तक, चरम और अच-
रम ये आठ उद्देशक भी इसके सम्बन्ध में कहलेना चाहिये ।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
“भगवतीसूत्र” की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके चौतीसवें शतक के
छद्मा एकेन्द्रिय शतक समाप्त ॥३४-६॥

એજ પ્રમાણે અનંતરાવગાઢ, પરંપરાવગાઢ, અનંતરાહારક, પરંપરાહારક,
અનંતરપર્યાપ્તક, પરંપરપર્યાપ્તક ચરમ અને અચરમ આ બધાના સંબંધમાં
પણ ઉદ્દેશાઓ કહેવા ભેધએ. ॥૨૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત ‘ભગવતીસૂત્રની’
પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ચોત્રીસમાં શતકનું
॥છટ્ટું એકેન્દ્રિયશતક સમાપ્ત ॥૩૪-૬॥



अथ सप्तममण्टमादि शतकानि

मूलम्—नीललेस्स भवसिद्धिय एगिंदिएसु सयं सत्तमं समत्तं ।
एवं काउलेस्स भवसिद्धिय एगिंदिएहि वि अट्टमं सयं ।
जहा भवसिद्धिएहिं चत्तारि सयाणि एवं अभवसिद्धिएहि वि
चत्तारि सयाणि भाणियव्वाणि । नवरं चरम अचरमवज्जा नव
उद्देसगा भाणियव्वा सेसं तं चेव । एवं एयाइं बारस एगिंदिय-
सेढिसयाइं सेवं भन्ते ! सेवं भन्ते ! त्ति जाव विहरइ ॥सू०१॥

एगिंदियसेढिसयाइं समत्ताइं ॥३४-१२॥

चउत्तीसइमे छट्ठं एगिंदियसेढिसयं समत्तं ॥३४॥

छाया—नीललेश्य भवसिद्धिकैकेन्द्रियेषु शतं सप्तमं समाप्तम् । एवं
कापोतलेश्य भवसिद्धिकैकेन्द्रियैरपि अष्टमं शतम् । यथा भवसिद्धिकैश्चत्वारि
शतानि, एवमभवसिद्धिकैरपि चत्वारि शतानि भणितव्यानि । नवरं चरमा-
चरमवर्जं नवोद्देशका भणितव्याः शेषं तदेव । एवमेतानि द्वादश एकेन्द्रिय
श्रेणिशतानि । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति यावद्विहरति ॥ सू० १॥

चतुस्त्रिंशत्तमशतके षष्ठमेकेन्द्रियश्रेणि शतम् समाप्तम् ॥३४॥

टीका—‘नीललेस्स भवसिद्धियएगिंदिएसु सयं सत्तमं’ नीललेश्य भव-
सिद्धिकैकेन्द्रियेषु शतं सप्तमं समाप्तम्, यथा कृष्णलेश्य भवसिद्धिकैकेन्द्रियै-
रेकं शतमधीतं तद्वत् सप्तमं शतं नीललेश्य भवसिद्धिकैकेन्द्रियाणामपि वक्त-

चोत्तीसवे शतक का सानवां एकेन्द्रिय शतक

‘नीललेस्स भवसिद्धियएगिंदिएसु’ इत्यादि

टीकार्थ—नीललेश्यावाले भवसिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में
सप्तम शतक समाप्त कर लेना चाहिए । अर्थात् जैसा—कृष्णलेश्यावाले
भवसिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में कहा गया है । उसी प्रकार से यह

॥सातमा ऐकेन्द्रियशतकनो प्रारंभ—

‘नीललेस्स भवसिद्धियएगिंदिएसु’ इत्यादि

टीकार्थ—नीललेश्यावाला भवसिद्धिक ऐकैन्द्रियवालाओंना स'बंधमां
सातमु' शतक समाप्ति पर्यन्त कडेवु' जेठिजे. अर्थात् जे प्रमाणे कृष्णलेश्या-
वाला भवसिद्धिक ऐकैन्द्रियवालाओंना स'बंधमां कडेवामां आवेल छे. जे

વ્યમ્, નવરં પૂર્વં યત્ર કૃષ્ણલેશ્યપદં દત્તં તાદૃશસ્થાને હ્ર નીલલેશ્યપદં
દેયમ્, અન્યત્સર્વં પૂર્વવદેવ જ્ઞાતવ્યમિતિ । તથા તત્ર યથા એકાદશોદેશકાઃ
કથિતાઃ તથા અત્રાપિ એકાદશોદેશકાઃ કથયિતવ્યા, ઇતિ સપ્તમં શતમ્
'એવં કાઉલેસ્સ ભવસિદ્ધિય ઇગિંદિએહિ વિ અટ્ટમં સયં' એવં કાપોતલેશ્ય
ભવસિદ્ધિયકૈકેન્દ્રિયૈરપિ અષ્ટમં શતં જ્ઞાતવ્યમ્, નવરં નીલલેશ્ય-સ્થાને કાપોત-
લેશ્યપદં દેયમ્ અત્રાપિ પૂર્વવદેવ એકાદશોદેશકા જ્ઞાતવ્યાઃ પ્રકારસ્તુ સર્વત્ર પૂર્વ-

સાતવાં શતક નીલલેશ્યાવાલે ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોં કે સમ્બન્ધ મેં
કહ લેનાં યાહિયે । પરન્તુ હસ સસમ શતક મેં પૂર્વ શતક કી અપેક્ષા
યહી વિશેષતા હૈ કિ હસ શતક મેં જૈસા કિ પૂર્વ શતક મેં જહાં કૃષ્ણ
લેશ્યાપદ દિયા ગયા હૈ । ઉસ જગહ નીલલેશ્યાપદ રલના યાહિયે ।
બાકી કા ઓર સ્થ કથન પહિલે કે જૈસા હી જાનના યાહિયે । તથા
જિસ રીતિ સે વહાં ૧૧ ઉદેશક કહે ગયેં ઉસી રીતિ સે યહાં પર ભી
૧૧ ઉદેશક કહેલના યાહિયે । ॥સૂ.૦૧॥

સસમ એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત ॥૩૪-૭॥

ચોતીસવે શતક કે આઠવાં એકેન્દ્રિય શતક

'એવં કાઉલેસ્સ ભવસિદ્ધિય ઇગિંદિએ હિ વિ અટ્ટમં સયં' ઇત્યાદિ
ટીકાર્થ—હસી રીતિ સે કાપોતલેશ્યાવાલે ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોં
કે સમ્બન્ધ મેં ભી આઠવાં શતક કહ લેનાં યાહિયે । પરન્તુ નીલલેશ્ય

પ્રમાણે સાતમું શતક નીલલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયવાળાઓના
સંબંધમાં કહેવું નોંધ્યે પરંતુ આ સાતમા શતકમાં પહેલા શતક કરતાં એ
લિખ્તપણું છે કે આ શતકમાં પહેલાના શતકોમાં ન્યાં કૃષ્ણલેશ્યા પદ આપવામાં
આવેલ છે. ત્યાં નીલલેશ્યા પદ મૂકીને કહેવું નોંધ્યે. બાકીનું બીજું સઘળું
કથન પહેલા કહ્યા પ્રમાણે જ સમજવું. નોંધ્યે તથા જે પ્રમાણે ત્યાં
અગીયાર ઉદેશ્યાઓ કહેવામાં આવ્યા છે. એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ
અગીયાર ઉદેશ્યાઓ કહેવા નોંધ્યે.

॥સાતમું શતક સમાપ્ત ॥૩૪-૭॥

આઠમા એકેન્દ્રિય શતકનો પ્રારંભ—

'એવં કાઉલેસ્સ ભવસિદ્ધિય ઇગિંદિએહિ વિ અટ્ટમં સયં' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—આ નીલલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયવાળાઓના સંબં-
ધમાં કહેલ રીત પ્રમાણે કાપોતલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોના સંબંધમાં
પણ આઠમું શતક કહેવું નોંધ્યે. પરંતુ નીલલેશ્યા એ પદના સ્થાને કાપોત-

વદેવ જ્ઞાતવ્ય इत्यष्टमं शतं समान्तम् । 'जहा भवसिद्धिर्एहिं चत्वारि सयाणि एवं
अभवसिद्धिर्एहि वि चत्वारि सयाणि भाणियव्वाणि' यथा भवसिद्धिकै श्रत्वारि
शतानि भणितानि एवम् अभवसिद्धिकैरपि चत्वारि शतानि भणितव्यानि । तत्रा-
भवसिद्धिकस्यौधिकं शतं प्रथमम् । द्वितीयं शतं कृष्णलेश्यभवसिद्धिकस्य
तृतीयं चतुर्थं च नीलकापोतेति लेश्याद्वयमधिकृत्य भवति, तदेवं चत्वारि
शतानि भवन्ति अभवसिद्धिकस्य । 'नवरं चरम अवरमवज्जा नव उद्देशगा
पद के स्थान में कापोतलेश्य पद रखना चाहिये । यहाँ पर भी पूर्व के
जैसे ११ उद्देशक है । इन में अलापक प्रकार सर्वत्र पूर्व के जैसा ही
जानना चाहिये ॥सू० १॥

આઠવાં શતક સમાપ્ત ॥૩૪-૮॥

નવવાં એકેન્દ્રિય શતક

‘જહા ભવસિદ્ધિર્એહિં ચત્તારિ સયાણિ એવં અમં’ इत्यादि

ટીકાર્થ—જિસ રીતિ સે ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોં કે સમ્બન્ધ મેં ચાર
શતક કહે ગયે હેં, उसी रीति से अभवसिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध
भी शत-शतक-कह लेना चाहिये । इन में अभसिद्धिक एकेन्द्रिय के
सम्बन्ध में औधिक शतक प्रथम है । कृष्णलेश्यावाले अभवसिद्धिक
के सम्बन्ध में द्वितीय शत है । तृतीय और चतुर्थ शत नीललेश्यावाले
एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में और कापोतलेश्यावाले एकेन्द्रियों के सम्बन्ध
में हैं । इस प्रकार से ये चार शत अभवसिद्धिक एकेन्द्रियों के

લેશ્ય પદ મૂકવું જોઈએ અહિયાં આ કાપોતલેશ્યાના સંબંધમાં પણ પહેલાં
કહ્યા પ્રમાણેના ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશ્યો સમજવા, તેઓમાં આલાપનો પ્રકાર
બધેજ પહેલા કહ્યા પ્રમાણે જ સમજી લેવો ॥સૂ૦ ૧॥

॥આઠમું શતક સમાપ્ત ॥૩૪-૮॥

‘जहा भवसिद्धिर्एहिं चत्तारि सयाणि एवं अमं’ इत्यादि

ટીકાર્થ—જે પ્રમાણે ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં ચાર
શતક કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોના સંબંધમાં
પણ ચાર શતકો કહેવા જોઈએ આમાં ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોના સંબંધમાં
ઔધિક શતક પહેલું છે. ૧ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિકના સંબંધમાં બીજું
શતક કહેલ છે. તથા ત્રીજું અને ચોથું શતક નીલલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય
જીવોના સંબંધમાં અને કાપોતલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય જીવોના કહેલ છે. ૩-૪
આ રીતે આ ચાર શતકો અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોના સંબંધમાં કહેલ છે.

માણિયવ્વા' નવરં વૈલક્ષણ્યમેતદેવ યત્ પૂર્વપૂર્વશતેષુ ઔધિકોદ્દેશતોઽનન્તરોપપન્નાદિકા અચરમપર્યન્તા એકાદશેકાદશોદ્દેશકા નિર્મિતાઃ, અભવસિદ્ધિકશત-ચતુષ્ટયેતુ ચરમવર્જા નવૈવોદ્દેશકાઃ પઠનીયાઃ અભવસિદ્ધિકાનાં ચરમાચરમયોરમાવાદિતિ । 'સેસં તં ચેવ' શેષમન્યત્સર્વં મયસિદ્ધિકપ્રકરણવદેવ સર્વં મવતીતિ । 'એવં એયાઈં વારસર્ગિદિયસેહિસયાઈં' એવં પૂર્વપ્રદર્શિતક્રમેણ એતાનિ દ્વાદશ એકેન્દ્રિય શ્રેણિશતાનિ મવન્તિ, ઔધિકકૃષ્ણનીલકાપોતલેશ્યેતિ ચતુષ્ટયમાશ્રિત્યૈકેન્દ્રિયશતાનિ

સમ્બન્ધ મેં । 'નવરં ચરમઅચરમવજ્જા નવ ઉદ્દેસગા માણિયવ્વા' પરન્તુ યહાં જો મિત્રતા હૈ વહ એસી હૈ કિ મવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોં કે પૂર્વ પૂર્વ શતોં મેં ઔધિક ઉદ્દેશ સે લેકર અનન્તરોપપન્નાદિક અચરમ પર્યન્ત ૧૧-૧૧ ઉદ્દેશક હૈં । પરન્તુ અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોં કે ચાર શતોં મેં ચરમ ઔર અચરમ इन શતોં કો છોડકર નૌ હી ઉદ્દેશક હોતે હૈં । કયોં કિ અભવસિદ્ધિકોં કે ચરમ અચરમ યે દો ઉદ્દેશક નહીં હૈં કારણ કિ इनका उन મેં અભાવ હૈ । 'સેસં તં ચેવ' વાકી કા ઔર સવ કથન યહાં મવસિદ્ધિક પ્રકરણ કે હી જૈલા હૈ ।

'એવં એયાઈં વારસર્ગિદિયસેહિસયાઈં' ઇસ પ્રકાર પૂર્વપ્રદર્શિત ક્રમ કે અનુસાર યે ૧૨ એકેન્દ્રિય શ્રેણિ શત હોતે હૈં । ઔધિક શતકો એવં કૃષ્ણ, નીલ, ઔર કાપોતલેશ્યા इन सम्बन्धी तीन शतों को आश्रित कर के એકેન્દ્રિય સમ્બન્ધી ચાર શતક હૈં ઔર મવસિદ્ધિક

'નવરં' ચરમ અચરમવજ્જા નવ ઉદ્દેસગા માણિયવ્વા' પરન્તુ અહિયાં જે કિત્ર પાણું છે, તે એવું છે કે-અવસિદ્ધિક એક ઇન્દ્રિયવાળાઓના પહેલાના શતકોમાં ઔધિક ઉદ્દેશથી લઇને અનન્તરોપપન્નકાદિ અચરમ સુધીના ૧૧-૧૧ અગિયાર અગિયાર ઉદ્દેશાઓ કહ્યા છે પરન્તુ આ અભવસિદ્ધિક એક ઇન્દ્રિય જીવોના ચાર શતકોમાં ચરમ અને અચરમ આ શતકોને છોડીને નવઉદ્દેશાઓ જ હોય છે. કેમ કે-અભવસિદ્ધિકોમાં ચરમ અને અચરમ આ બે ઉદ્દેશાઓ હોતા નથી. કારણ કે તેઓમાં આ ચરમ અચરમ પાણાનો અભાવ રહે છે.

'સેસં તં ચેવ' આ શિવાય બાકીનું સઘળું કથન આ અભવસિદ્ધિકોના સંબંધમાં અવસિદ્ધિક પ્રકરણમાં કહ્યા પ્રમાણે જ સમજવું લેખ્યું. 'એવં એયાઈં વારસર્ગિદિયસેહિસયાઈં' આ રીતે પહેલાં બતાવેલ કેમ પ્રમાણે આ ૧૨ બાર એકેન્દ્રિય શ્રેણી શતકો થાય છે, ઔધિક શતકને તથા કૃષ્ણ, નીલ, અને કાપોતલેશ્યાવાળાના સંબંધમાં. ત્રણ શતકોનો આશ્રય કરીને એકે

ચત્વારિ, एवं भवसिद्धिकैकेन्द्रियशतानि चत्वारि, तथा अभवसिद्धिकैकेन्द्रियैः सह चत्वारि शतानि, सर्वसङ्कलनया चतुस्त्रिंशत्तमशतके द्वादशशतानि भवन्ति, आद्याष्टशतेषु एकादशैकादशोद्देशकाः, अन्तिमाऽभवसिद्धिकशतचतुष्टये तु नवनवोद्देशकाः, तदेवं सर्वसङ्कलनया चतुर्विंशत्यधिकशतमुद्देशकाः (१२४) एतस्मिन् शतके भवन्तीति । ‘सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ’ तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति यावद्विहरति हे भदन्त ! एकेन्द्रियविषये यद् देवानुप्रियेण कथितं तत् सर्वं सत्यमेवेति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्थित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विरहतीति ॥ ‘एगिंदिय सेहि सयाइ’ समत्ताइ’ एकेन्द्रियश्रेणिशतानि समाप्तानि ॥सू० १॥

इति चतुस्त्रिंशत्तमैकेन्द्रियश्रेणिशतकं समाप्तम् ॥३४॥

एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में चार शतक हैं । तथा अभवसिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में चार शतक हैं । कुल मिलाकर ये सब १२ शतक इस चौतीसवें शतक में हैं । अन्तिम जो चार अभवसिद्धिक शतक हैं उनमें ९-९ उद्देशक हैं । इस प्रकार इन १२ शतकों के १२४ उद्देशक होते हैं । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ’ हे भदन्त ! एकेन्द्रिय जीवों के विषय में जो आप देवानुप्रियने कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप

ન્દ્રિય ૭૪ સંબંધી ચાર શતકો થાય છે. તથા અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયો સંબંધમાં ચાર શતકો થાય છે તેમ જ અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોના સંબંધમાં ચાર શતકો થાય છે. તે રીતે કુલ ૧૨ ચાર શતકો આ ચોત્રીસમા શતકમાં કહ્યા છે. છેલ્લા ચાર જે અભવસિદ્ધિક શતક છે તેમાં ૯-૯ નવ નવ ઉદ્દેશાઓ કહ્યા છે. આ રીતે આ ચાર શતકોના કુલ ૧૨૪ એકસોચોવીસ ઉદ્દેશાઓ થાય છે.

‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ જાવ વિહરइ’ હે ભગવન્ એકેન્દ્રિય ૭૪ોના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા. વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત

से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये । इस प्रकार से एकेन्द्रिय श्रेणि शतक समाप्त हुए । इनकी समाप्ति में ३४ वाँ एकेन्द्रिय श्रेणि शतक समाप्त हुआ ॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहारजकृत
“भगवतीसूत्र” की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके चौतीसवें शतक में
॥ सातवें से बारहवें पर्यन्तके श्रेणिशतक समाप्त ॥

॥ चौतीसवां शतक समाप्त ॥

करता था। पोताना स्थानपर विराजमान था। आ रीते ऐकेन्द्रिय श्रेणी शतक
समाप्त था। तेनी साथे आ योत्रीसमुं ऐकेन्द्रिय श्रेणि शतक समाप्त थयुं छे.

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराजकृत ‘भगवतीसूत्र’नी
प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याना योत्रीसमा शतकना सातमाथी आरमा
सुधीना ऐकेन्द्रिय शतकना समाप्त ॥

॥ योत्रीसमुं शतक समाप्त ॥



॥ 'अह पणतीसइमं सयं' ॥ (पढमो उद्देशो)

चतुस्त्रिंशत्तमे शतके एकेन्द्रियजीवाः श्रेणीक्रमेण प्रायो निरूपिताः, अथ पञ्चत्रिंशत्तमे शतके तु ते एव एकेन्द्रियाः राशिक्रमेण निरूप्यन्ते तदनेन सम्बन्धेन आयातस्य द्वादशावान्तरशतयुत्तरस्य पञ्चत्रिंशत्तमशतकस्येदमादिमं युनय्—'कङ्कणं' ६०

मूलम्—कङ्क णं भंते ! महाजुम्मा पन्नत्ता ? गोयमा ! सोलस महाजुम्मा पन्नत्ता, तं जहा—कडजुम्मकडजुम्मे १, कडजुम्म-तेओगे २, कडजुम्मदावरजुम्मे ३, कडजुम्मकलिओगे ४, तेओए कडजुम्मे ५, तेओगतेओए ६, तेओगदावरजुम्मे ७, तेओग-कलिओगे ८, दावरजुम्मकडजुम्मे ९, दावरजुम्मतेओगे १०, दावरजुम्मदावरजुम्मे ११, दावरजुम्मकलिओगे १२, कलिओग कडजुम्मे १३, कलिओग तेओगे १४, कलिओग दावरजुम्मे १५, कलिओगकलिओगे १६, से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ सोलस महाजुम्मा पन्नत्ता तं जहा—कडजुम्मकडजुम्मे १ जाव कलि-यागकलिओगे १६, गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहार-समया ते वि कडजुम्मा से त्तं कडजुम्म कडजुम्मे १ । जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए । जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा से त्तं कडजुम्म तेओगे २ । जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स समया कडजुम्मा से त्तं कडजुम्मदावर-जुम्मे ३ । जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एग-पज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा से त्तं कडजुम्म कलियोगे ४, (१) । जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं

अवहीरमाणे चउपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहार-
समया तेओगा से त्तं तेओगकडजुम्मे ५। जे णं रासी चउक्क-
एणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए जे णं तस्स रासि-
स्स अवहारसमया तेओगा से त्तं तेओगतेओगे ६। जे णं रासी
चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दो पज्जवसिए जे णं तस्स
रासिस्स अवहारसमया तेओगा से त्तं तेओगदावरजुम्मे ७।
जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए
जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा से त्तं तेओग
कलिओगे ८। (२) जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीर-
माणे चउपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया
दावरजुम्मा से त्तं दावरजुम्म कडजुम्मे ९। जे णं रासी चउक्क-
एणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए जे णं तस्स रासि-
स्स अवहारसमया दावरजुम्मा से त्तं दावरजुम्मतेओगे १०।
जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुप्पज्जवसिए
जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा से त्तं दावर-
जुम्म दावरजुम्मे ११। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अव-
हीरमाणे एगपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया
दावरजुम्मा से त्तं दावरजुम्मकलिओगे १२। (३) जे णं रासी
चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए जे णं तस्स
रासिस्स अवहारसमया कलिओगा से त्तं कलियोगकड-
जुम्मे १३। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिप-
ज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलिओगा से
त्तं कलियोगतेओगे १४। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अव-

हीरमाणे दुपञ्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया
कलिओगा से त्तं कलिओगदावरजुम्मे १५। जे णं रासी चउ-
क्खणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपञ्जवसिए जे णं तस्स
रासिस्स अवहारसमया कलिओगा से त्तं कलिओगकलिओगे
१६ (४) से तेणट्ठेणं जाव कलिओगकलिओगे ॥सू० १॥

छाया—कति खलु भदन्त ! महायुग्माः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पोडश
महायुग्मानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा—कृतयुग्मकृतयुग्म १, कृतयुग्मत्र्ययोजः २, कृतयुग्म-
द्वापरयुग्मः ३, कृतयुग्मकल्योजः ४, त्र्ययोजकृतयुग्मः ५, त्र्ययोजत्र्ययोजः ६,
त्र्ययोजद्वापरयुग्मः ७, त्र्ययोजकल्योजः ८, द्वापरयुग्मः कृतयुग्मः ९, द्वापरयुग्मत्र्ययोजः
१०, द्वापरद्वापरयुग्मः ११, द्वापरयुग्मकल्योजः १२, कल्योजकृतयुग्मः १३
कल्योजत्र्ययोजः १४, कल्योजद्वापरयुग्मः १५, कल्योजकल्योजः १६ तत्केनार्थेन
भदन्त ! एवमुच्यते पोडश महायुग्माः प्रज्ञप्ताः तद्यथा कृतयुग्मकृतयुग्मः याव-
त्कल्योजकल्योजः । गौतम ! यः खलु राशिः चतुष्केणापहारेण अपह्रियमाणश्चतुः-
पर्यवसितः, ये खलु तस्य राशेरपहारसमया सोऽपि कृतयुग्माः सोऽयं कृतयुग्म-
कृतयुग्मः १, यः खलु राशिश्चतुष्केणापहारेणापह्रियमाणस्त्रिपर्यवसितः, यः खलु
तस्य राशेरपहारसमयाः कृतयुग्मा सोऽयं कृतयुग्मत्र्ययोजः । यः खलु राशिः चतु-
ष्केणापहारेण अपह्रियमाणो द्विपर्यवसितः ये खलु तस्य राशेरपहारसमयाः कृत-
युग्माः सोऽयं कृतयुग्मद्वापरयुग्मः । ३ यः खलु राशिः चतुष्केणापहारेण अपह्रिय-
माण एक पर्यवसितः ये खलु तस्य राशेरपहारसमयाः कृतयुग्माः सोऽयं कृतयुग्म-
कल्योजः ४ । (१) यः खलु राशिश्चतुष्केणापहारेणापह्रियमाणश्चतुःपर्यवसितः ये
खलु तस्य राशेरपहारसमयाः त्र्ययोजाः सोऽयं त्र्ययोजकृतयुग्मः ५ । यः खलु राशिः
चतुष्केणापहारेणापह्रियमाणस्त्रिपर्यवसितः, ये खलु तस्य राशेरपहारसमया
सत्र्ययोजाः, सोऽयं त्र्ययोजत्र्ययोजः ६ । यः खलु राशिः चतुष्केणापहारेणा-
पह्रियमाणो द्विपर्यवसितः ये खलु तस्य राशेरपहारसमया सत्र्ययोजाः
सोऽयं त्र्ययोजद्वापरयुग्मः ७ । यः खलु राशिश्चतुष्केणापहारेणापह्रियमाण
एकपर्यवसितः, ये खलु तस्य राशेरपहारसमयाः त्र्ययोजाः सोऽयं त्र्ययोज-
कल्योजः ८ । (२) यः खलु राशिश्चतुष्केणापहारेणापह्रियमाणः चतुः-
पर्यवसितः ये खलु तस्य राशेरपहारसमया द्वापरयुग्माः सोऽयं द्वापर-
कृतयुग्मः ९ । यः खलु राशिश्चतुष्केणापहारेण अपह्रियमाण स्त्रिपर्यवसितः

યે ચલુ તસ્ય રાશેરપહારસમયા દ્વાપરયુગ્માઃ સોડયં દ્વાપરયુગ્મઞ્ચોજઃ ૧૦
 યઃ ચલુ રાશિ શ્વતુષ્કેનાપહારેનાપહ્રિયમાણો દ્વિપર્યવસિતઃ યે ચલુ
 તસ્ય રાશેરપહારસમયા દ્વાપરયુગ્માઃ સોડયં દ્વાપરયુગ્મદ્વાપરયુગ્મઃ ૧૧ ।
 યઃ ચલુ રાશિ શ્વતુષ્કેણ અપહારેનાપહ્રિયમાણ એકપર્યવસિતઃ યે ચલુ તસ્ય
 રાશેરપહારસમયા દ્વાપરયુગ્માઃ સોડયં દ્વાપરયુગ્મકલ્પોજઃ ૧૨ । (૩)
 યઃ ચલુ રાશિ શ્વતુષ્કેનાપહારેણ અપહ્રિયમાણ શ્વતુષ્કપર્યવસિતઃ યે ચલુ
 તસ્ય રાશેરપહારસમયાઃ કલ્પોજા સોડયં કલ્પોજકૃતયુગ્મઃ ૧૩ । યઃ
 ચલુ રાશિ શ્વતુષ્કેનાપહારેનાપહ્રિયમાણ દ્વિપર્યવસિતઃ યે ચલુ તસ્ય
 રાશેરપહારસમયાઃ કલ્પોજાઃ સોડયં કલ્પોજઞ્ચોજઃ ૧૪ યઃ ચલુ રાશિ
 શ્વતુષ્કેનાપહારેણ અપહ્રિયમાણો દ્વિપર્યવસિતઃ યે ચલુ તસ્ય રાશેરપહારસમયાઃ
 કલ્પોજાઃ સોડયં કલ્પોજદ્વાપરયુગ્મઃ ૧૫ યઃ ચલુ રાશિ શ્વતુષ્કેનાપહારેના-
 ઽપહ્રિયમાણ એકપર્યવસિતઃ યે ચલુ તસ્ય રાશેરપહારસમયાઃ કલ્પોજાઃ સોડયં
 કલ્પોજકલ્પોજ ઇતિ ૧૬ (૧) તત્તેનાર્થેન યાવત્ કલ્પોજ કલ્પોજઃ ॥સૂ. ૧॥

ટીકા—‘કહ ણં મંતે ! મહાજુમ્મા પન્નત્તા’ કતિ ચલુ ભદન્ત ! ૩૬
 યુગ્મશબ્દેન રાશિવિશેષા કથ્યન્તે તે ચ ક્ષુલ્લકા અપિ ભવન્તિ યથા પ્રાક્-

પૈત્તીસલ્લે શતક કો પ્રથમ ઉદ્દેશક

ચૌત્તીસલ્લે શતક મેં એકેન્દ્રિય જીવોં કા શ્રેણિ ક્રમ સે પ્રાયઃ
 નિરૂપણ હો ચુકા હૈ પરન્તુ અવ્વ હસ ૩૫ લેં શતક મેં ઉન્હીં એકેન્દ્રિય
 જીવોં કા રાશિક્રમ સે નિરૂપણ હોના હૈં । હસી સમ્બન્ધ સે હસે
 પ્રારમ્ભ કિયા જા રહા હૈ—

‘કહ ણં મંતે ! મહાજુમ્મા પન્નત્તા’ હત્થાદિ સૂત્ર ॥૧॥

ટીકાર્થ—હે ભદન્ત ! મહાયુગ્મ-મહારાશિયાં-કિતને કહે ગયે હૈં ?
 યુગ્મ શબ્દ સે યહાં રાશિવિશેષ કહા ગયા હૈં યે યુગ્મ ક્ષુલ્લક ભી હોતે

પાંત્રીસમા શતકનો પ્રારંભ—

ઉદ્દેશો પહેલો.

ચોત્રીસમા શતકમાં એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોને શ્રેણિના ક્રમથી પ્રાયઃ
 નિરૂપણ કરવામાં આવી ગયું છે પરંતુ હવે આ ૩૫ પાંત્રીસમા શતકમાં
 એ એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોનું રાશિના ક્રમથી નિરૂપણ કરવામાં આવશે. એ
 સંબંધી આ પાંત્રીસમું શતક પ્રારંભ કરવામાં આવે છે.—

‘કહણં મંતે ! મહાજુમ્મા પન્નત્તા’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ મહાયુગ્મ-મહારાશિયો કેટલા કહેવામાં આવ્યા છે ?
 અહિયાં યુગ્મ શબ્દથી રાશિ વિશેષ કહેલ છે. આ યુગ્મ ક્ષુલ્લક પણ હોય

પ્રરુપિતા અતસ્તદ્વ્યવચ્છેદાર્થ મહદિતિ વિશેષણં દત્તમ્ । તથા ચ-મહાન્તિ-
ચ તાનિ યુગ્માનીતિ મહાયુગ્માનિ-રાશિ વિશેષાઃ ? इति प्रश्नः, भगवानाह-
'गोयमा' इत्यादि, गोयमा' हे गौतम ! 'सोलस महाजुम्मा पन्नत्ता' षोडश
महायुग्मानि राशिविशेषाः प्रज्ञप्तानि-कथितानि 'तं जहा' तद्यथा 'कडजुम्म
कडजुम्मे' कृतयुग्मकृतयुग्मः यो राशिः सामयिकेन चतुष्कापहारेणापह्रिय-
माण श्रतुःपर्यवसितो भवेत् तथा अपहारसमया अपि चतुष्कापहारेण चतु-
पर्यवसिता एव भवेयुः असौ राशिः कृतयुग्म इत्यभिधीयते अपह्रियमाणद्रव्या

हैं । जैसा कि पहिले प्ररुपित किया जा चुका है । अतः उनका व्यवच्छेद
करने के लिये यहां युग्म शब्द के साथ 'महत्' यह विशेषण रखा गया
है । उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! सोलस महाजुम्मा पन्नत्ता'
हे गौतम ! महायुग्म १६ कहे गये हैं । 'तं जहा' जो इस प्रकार
से हैं 'कडजुम्म कडजुम्मे' कृतयुग्म कृतयुग्म १, कृतयुग्मऽयोज २,
कृतयुग्म द्वापरयुग्म ३, कृतयुग्म कल्योज ४, ऽयोजकृतयुग्म ५, ऽयोज
ऽयोज ६, ऽयोज द्वापरयुग्म ७, ऽयोज कल्योज ८, द्वापरयुग्म कृतयुग्म
९, द्वापरयुग्म ऽयोज १०, द्वापरयुग्म द्वापरयुग्म ११, द्वापरयुग्म
कल्योज १२, कल्योज कृतयुग्म १३, कल्योज ऽयोज १४, कल्योज
द्वापरयुग्म १५, और कल्योज कल्योज १६, इन में जिस राशि को
प्रति समय चार चार से अपहृत करते हुए अन्त में उस में से चार बचे
रहते हैं और अपहार (नीकालना) समयों में से भी चार चार के

છે. જેમ કે પહેલા પ્રતિપાદન કરવામાં આવી ગયેલ છે. તેથી તેનો વ્યવચ્છેદ
કરવા માટે અહિયાં યુગ્મ શબ્દની સાથે "મહત્" શબ્દનું વિશેષણ રાખવામાં
આવેલ છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'ગોયમા !
સોલસ મહાજુમ્મા પન્નત્તા' હે ગૌતમ ! મહાયુગ્મ શબ્દ ૧૬ સોળ પ્રકારના
કહેવામાં આવેલ છે. 'તં જહા' તે આ પ્રમાણે છે.—કડજુમ્મકડજુમ્મે'
કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૧ કૃતયુગ્મ યોજ ૨, કૃતયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ ૩, કૃતયુગ્મ કલ્યોજ
૪, યોજ કૃતયુગ્મ ૫, યોજ યોજ ૬, યોજ દ્વાપરયુગ્મ ૭, યોજ કલ્યોજ
૮, દ્વાપરયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૯, દ્વાપરયુગ્મ યોજ ૧૦, દ્વાપરયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ ૧૧,
૧૨, કલ્યોજ કૃતયુગ્મ ૧૩, કલ્યોજ યોજ ૧૪, કલ્યોજ દ્વાપરયુગ્મ ૧૫,
અને કલ્યોજ કલ્યોજ ૧૬, આમાં જે રાશીને પ્રતિસમય ચાર ચારનો
અપહાર (પહાર કહાડવું તે) કરતાં કરતાં છેવટે તેમાંથી ચાર બચે છે,
અને અપહાર સમયમાંથી પણ ચાર ચારના અપહારથી તે નીકળી જતાં છેવટે ચાર

પેક્ષયા તત્સમયાપેક્ષયા ચ દ્વિધા કૃતયુગ્મત્વાત્ । એવમન્યત્રાપિ શબ્દાર્થો યોજનીયઃ સ ચ દ્વિલ જઘન્યતઃ પોડશ સંખ્યાત્મકઃ ણાં હિ ચતુષ્કાપહારત શ્વતુરગ્રત્વાત્ સમયાનાં ચ ચતુઃસંખ્યત્વાદિતિ ૧ 'કલ્પજુગમતેઓગે ૨' કૃતયુગ્મ યોજઃ યો રાશિઃ પ્રતિસમયં ચતુષ્કાપહારેણાપહ્રિયમાણ સ્તિર્ધર્મવસાનો ભવતિ તત્સમયાથ ચતુઃપર્યવસિતા એવ, અસૌ અપહ્રિયમાણાપેક્ષયા યોજઃ અપહારાપેક્ષયા કૃતયુગ્મ એવેતિ કૃતયુગ્મ યોજ ઇતિ કથ્યતે તત્ સંખ્યકા જઘન્યતણ્કોનવિંશતિઃ તન્ન ચતુષ્કાપહારે ત્રયોઽવશિષ્યન્તે તત્સમયાથ

અપહાર સે ઉત્તકે અપહ્રત હોને પર અન્ત મેં ચાર વચ્ચે રહતે હેં એસી જો રાશિ હૈ વહ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિ હૈ । કારણ કિ અપહ્રિયમાણ દ્રવ્ય કી અપેક્ષા સે ઔર સમય કી અપેક્ષાસે દોનો રીતિ સે ઉત્ત રાશિ મેં કૃતયુગ્મતા આતી હૈ । ઇસી પ્રકાર અન્યત્ર ખી શબ્દ કા અર્થ યોજિત કર લેના ચાહિયે । જૈસે ૧૬ સંખ્યાત્મક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિ જઘન્ય રૂપ હૈ । ક્યોંકિ ઇસ રાશિ કો ચાર સે અપહ્રત કરને પર મેં અન્ત મેં ચાર હી વચ્ચે હેં ઔર અપહાર સમય ચાર હી હૈ । જો રાશિ પ્રતિસમય ચાર સે અપહ્રત હોકર અન્ત મેં ૩ વાકી વચાતી હૈ ઔર ઉત્તકે સમય ચાર મેં હી પર્યવસિત (સમાપ્ત) હોતે હેં એસી વહ રાશી અપહ્રિયમાણ કી અપેક્ષા યોજરૂપ ઔર અપહાર કી અપેક્ષા કૃતયુગ્મ હોતી હૈ । જઘન્ય સે ઇસ કૃતયુગ્મ યોજ કી સંખ્યા ૧૯ હૈ । ઇસ સંખ્યા કો ચારસે અપહ્રત કરને પર અન્ત મેં ત્રીન વચ્ચે હેં ઔર ઇસ કે સમય ચાર હી હૈ । ઇસ પ્રકાર સે રાશિ એક કે સૂત્ર ઇસ કે

વધે છે, એવી જે રાશી (સમૂહ) તે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશી કહેવાય છે. કારણ કે બહાર કાઢનાર દ્રવ્યની અપેક્ષાથી અને સમયની અપેક્ષાથી એમ બન્ને પ્રકારથી તે રાશિમાં કૃતયુગ્મ પણ આવી જાય છે. આજ પ્રમાણે બીજે પણ શબ્દોના અર્થની યોજના કરીને સમજી લેવું. જેમ કે-૧૬ સોળ સંખ્યાવાળી કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મરાશી જઘન્ય રૂપ છે. કેમ કે આ રાશીને ચારની સંખ્યાથી અપહાર કરતાં છેવટે ચાર જ બચે છે અને અપહાર સમય પણ ચાર જ છે. જે રાશીમાંથી પ્રતિસમયે ચારનો અપહાર કરતાં છેવટે ત્રણ બાકી રહે છે, અને તેના સમય ચારમાંજ સમાપ્ત થાય છે, એવી તે રાશી અપહારમાણ (બહાર કાઢવા)ની અપેક્ષાથી યોજ રૂપ અને અપહારની અપેક્ષાથી કૃતયુગ્મ રૂપ હોય છે. જઘન્યથી આ કૃતયુગ્મ યોજની સંખ્યા ૧૯ આગણીસની થાય છે. આ સંખ્યાનો ચારથી અપહાર કરતાં છેવટે ત્રણ બચે

ચત્વાર એવેતિ ૨ । एवं राशिभेदसूत्राणि एतद्विवरणसूत्रेभ्यो ज्ञातव्यानि
इह च सर्वत्रापि अपहारकसमयापेक्षयाऽऽद्यं पदम् अपह्रियमाणद्रव्या
पेक्षया तु द्वितीयमिति । ‘कइणं भंते । महाजुम्मा पन्नत्ता ? ‘गोयमा’ । सोलस
महाजुम्मा पणत्ता’ इत्यादि, संख्यासूत्रे विशेषणविशेष्यभावे विशेषणस्य
प्राक् प्रयोगः विशेष्यस्य च परप्रयोग इति नियमेन द्रव्यबोधक सूत्रसिद्धपदस्य
परप्रयोगः समयबोधक सूत्रसिद्धपदस्य च प्राक्प्रयोगः कृतः, ततः ‘से केण-
ट्टेण’ इत्यादि प्रश्नस्य ‘जे णं रासी’ इत्याद्युत्तर सूत्रव्याख्यानेतु द्रव्यबोधकपदस्य
प्रथमतो विवरणम्, समयबोधकस्य च पश्चाद्विवरणं कृतमिति । ‘कडजुम्मदारजुम्मे’

વિવરણ સૂત્રોં કે દ્વારા જ્ઞાતવ્ય છે । યહાં સર્વત્ર અપહારક સમય કી
અપેક્ષા સે આદ્ય પદ છે ઔર અપહ્રિયમાણ દ્રવ્ય કી અપેક્ષા સે દ્વિતીય
પદ છે ‘કહ ણં ભંતે । મહાજુમ્મા પન્નત્તા’ ‘ગોયમા । સોલસ મહાજુમ્મા
પન્નત્તા’ હત્યાદિ સંખ્યા સૂત્ર મેં જો કિ વિશેષણ વિશેષ્ય ભાવ સે
યુક્ત છે ‘વિશેષણ કા પહિલે પ્રયોગ હોતા છે’ ઔર વિશેષ્ય કા બાદ
મેં પ્રયોગ હોતા છે । હસ નિયમ કે અનુસાર દ્રવ્ય બોધક સૂત્ર સે સિદ્ધ
પદ કા પરપ્રયોગ ઔર સમય બોધક સૂત્ર સે સિદ્ધ પદ કા પહિલે
પ્રયોગ ક્રિયા ગયા છે । હસલિયે ‘કેળટ્ટેણં’ હત્યાદિ પ્રશ્ન કે ‘જે ણં
રાસિ’ હત્યાદિ ઉત્તર રૂપ સૂત્ર કે વ્યાખ્યાન મેં દ્રવ્યબોધક પદકા
પહિલે વિવરણ ક્રિયા ગયા છે ઔર સમયબોધક પદ કા પીછે વિવરણ
ક્રિયા ગયા છે । અવ ગૌતમસ્વામી હન સોલસ રાશિયોં કે અર્થ કો
પૂછતે હેં—‘સે કેળટ્ટેણં ભંતે । एवं बुच्चइ, सोलस महाजुम्मा’ हे भदन्त !

છે અને તેના સમય આર જ છે. આ રીતે રાશી લેના સૂત્રો તેના વિવરણ
સૂત્રોદ્વારા જણાય છે. અહિયાં બધે ઠેકાણે આહારક સમયની અપેક્ષાથી પહેલું
પદ છે. અને અપહીરમાણ દ્રવ્યની અપેક્ષાથી બીજું પદ કહેલ છે. ‘કઈણ
ભંતે । મહાજુમ્મા પન્નત્તા’ ગોયમા ! સોલસ મહાજુમ્મા પન્નત્તા’ ઇત્યાદિ સંખ્યા
સૂત્રમાં જે વિશેષ્ય વિશેષ ભાવથી યુક્ત છે, વિશેષણનો પહેલાં પ્રયોગ થાય
છે. અને વિશેષ્યનો પછીથી પ્રયોગ થાય છે, આ નિયમ પ્રમાણે દ્રવ્યનો બોધ
કરાવનાર બોધક સૂત્રથી સિદ્ધપદનો પહેલાં પ્રયોગ કરવામાં આવેલ છે. તેથી
‘કેળટ્ટેણ’ વિગેરે પ્રશ્નોના ‘જેણં રાસિ’ વિગેરે ઉત્તર રૂપ સૂત્રોના વ્યાખ્યાનમાં
દ્રવ્ય બોધક પદનું વિવરણ પહેલાં કરવામાં આવેલ છે. અને સમય બોધના
પદનું પછીથી વિવરણ કરેલ છે.

હવે ગૌતમસ્વામી આ સોળ રાશિયોના અર્થ પ્રભુશ્રીને પૂછે છે.
‘સે કેળટ્ટેણં ભંતે । एवं बुच्चइ सोलस महाजुम्मा’ हे भगवन् आप शा करवथी

કૃતયુગ્મદ્વાપરયુગ્મઃ ૩ 'કઢજુમ્મકલિઓગે' કૃતયુગ્મ કલયોજઃ ૪ । 'તેઓગ કઢ-
જુમ્મે' ંયોજકૃતયુગ્મઃ ૫ । 'તેઓગતેઓગે' ંયોજ-ંયોજઃ ૬ 'તેઓગ દાવરજુમ્મે'
ંયોજ દ્વાપરયુગ્મઃ ૭ । 'તેઓગકલિઓગે' ંયોજકલયોજઃ ૮ 'દાવરજુમ્મકઢજુમ્મે'
દ્વાપરયુગ્મ કૃતયુગ્મઃ ૯ 'દાવરજુમ્મતેઓગે' દ્વાપરયુગ્મંયોજઃ ૧૦ । 'દાવરજુમ્મ-
દાવરજુમ્મે' દ્વાપરયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મઃ ૧૧ 'દાવરજુમ્મકલિઓગે' દ્વાપરયુગ્મ
કલયોજઃ ૧૨ 'કલિઓગ કઢજુમ્મે ૧૩, કલયોજ કૃતયુગ્મઃ ૧૩ 'કલિઓગ
તેઓગે' કલયોજંયોજઃ ૧૪ 'કલિઓગ દાવરજુમ્મે' કલયોજ દ્વાપરયુગ્મઃ
૧૫ । 'કલિઓગકલિઓગે' કલયોજ કલયોજઃ ૧૬ । एते षोडश महायुगम्
राशयो भवन्तीति । षोडशराशीनामर्थं गौतमः पृच्छति—'से केणट्ठेणं भंते !
एवं वुच्चइ सोलस महाजुम्मा पन्नत्ता' तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते
षोडशमहायुग्माः प्रज्ञप्ता—कथिताः 'तं जहा' तद्यथा—'कडजुम्मकडजुम्मे जात्र
कल्लिओग कल्लिओगे' कृतयुगमकृतयुगमो यावत्कल्योजकल्योज इति अत्र
यावत्पदेन 'कडजुम्मतेंओगे' इत्यारभ्य 'कल्लिओग द्वावरजुम्मे' इत्यन्तानां
ग्रहणं भवतीत्यवान्तरप्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' 'हे गौतम !
'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसीए' यः खलु राशिः चतु-
ष्केणापहारेणापह्रियमाणश्चतुःपर्यवसितो भवति चतुःसंख्यया विभज्यमाने
चतुः शेषो भवतीत्यर्थः तथा—'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया ते वि कड

आप किस कारण से कहते हैं कि महायुगम सोलह होते हैं । जैसे कि
वे कृतयुगम कृतयुगम से लेकर आपने 'कल्लिओगकल्लिओग' पद तक कहे
हैं । यहां यावत् शब्द से 'कडजुम्म तेओगे' से लेकर 'कल्लिओगद्वावर
जुम्मे' तक के १४ महायुगम गृहीत हुए हैं इस प्रकार का यह अवान्तर
प्रश्न है । इस के उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—'गोयमा ! जे णं रासी
चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसीए' हे गौतम ! जो
राशि चार की संख्या से विभक्त होकर अन्त में चार बचाती है तथा

કહો છો કે મહાયુગ્મે સોળ છે ? જેમ કે—કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મથી લઈને કલિઓગ
પદ સુધી આપે કહ્યા છે અહિયાં યાવત્પદથી 'કઢજુમ્મ તેઓગે' આ પદથી
લઈને 'કલિઓગદાવરજુમ્મે' આ પદ સુધી ૧૪ ચૌદ મહાયુગ્મે ગ્રહણ
કરાયા છે. આ રીતે આ અવાન્તર પ્રશ્ન કરેલ છે આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી
ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—'ગોયમા ! જે ણં રાસી ચઉક્કણં અવહારેણં અવહીર-
માણે ચઉપજ્જવસીએ' હે ગૌતમ ! જે રાશીને ચારની સંખ્યામાંથી વિભાગ કરવાથી
છેવટે ચાર બચે છે, તથા 'જે ણં તસ્સ રાસિસ્સ અવહારસમયા તે વિ કઢજુમ્મા'

જુમ્મા' એ સ્વલ્પ તસ્ય રાશેરપહારસમયા સ્તૈડપિ કૃતયુગ્મસ્વરૂપાઃ ચતુઃ પર્યવસિતા એવ મવન્તિ । 'સેત્ત કઢજુમ્મ કઢજુમ્મે' સોડયં કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મઃ, તત્તેનાથેન ગૌતમ ! એવમુચ્યતે કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મઃ, इत्यग्रेण सम्बन्धः, स च जघन्यतः षोडशात्मकः (१६) अपह्रियमाण द्रव्यापेक्षया समयापेक्षया च कृतयुग-त्वादिति १ । 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे ति पज्जवसिए' यः स्वल्प राशि श्रुतुष्केणापहारेणापह्रियमाण स्त्रिपर्यवसितो भवति तथा—'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा सेत्तं कडजुम्म तेओए' ये स्वल्प तस्य राशेरपहारसमयाः कृतयुग्मा श्रुतुः पर्यवसाना भवन्ति 'से त्तं कडजुम्म तेओए' तस्मात्कारणात् सोऽयं राशिविशेषः कृतयुगम ज्योज इति कथ्यते स च जघन्यत एकोनविंशत्यात्मकः (१९) २ । 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं

'जे णं तस्स राસિસ્સ અવહાર સમયા તે વિ કઢજુમ્મા 'જો હસ રાશિ કે અપહારક સમય હોતે હૈં' વે મી ચાર રૂપ હી હોતે હૈં' એસી વહ રાશિ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ કહી ગઈ હૈ 'હસી લિયે મૈંને હસે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ કહા હૈ । જૈસે ૧૬ સંરૂપા કી રાશિ જવ ચાર સે વિમ્કત હોતી હૈ તો અન્ત મૈં હસકે ૪ બચતે હૈં' ઓર યહાં અપહારક સમય મી ચાર હૈ, હસલિયે અપહ્રિયમાણ દ્રવ્ય કી અપેક્ષા સે ઓર અપહારક સમય કી અપેક્ષા સે હમ મૈં કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપતા આતી હૈ એસા જાનના ચાહિયે । જે ણં રાસી ચઉક્કરૂપણં અવહારેણં અવહીરમાણે તિપજ્જવસિએ' જો રાશિ ચાર કે દ્વારા વિમ્કત હોતી હુઈ જિસ કે અન્ત મૈં ત્રીન વચે' એસી હોતી હૈ તથા—'જે ણં તસ્સ રાસિસ્સ અવહારસમયા કઢજુમ્મા સે ત્તં કઢજુમ્મતેઓએ' હસ રાશિ કે અપહાર સમય કૃતયુગ્મ

જે તે રાશીનો અપહાર કરવાનો સમય હોય છે, તે પણ ચારનો જ હોય છે. એવી તે રાશી કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ કહેવાય છે. તેથી મેં તેને કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ કહેલ છે. જે રીતે ૧૬ સોળ સંખ્યાની રાશીનો જ્યારે ચારથી વિભાજ કરવામાં આવે છે, તો છેવટે તેમાંથી ૪ ચાર બચે છે. અને અહિયાં અપહાર કરનાર સમય પણ ચાર જ છે. તેથી અપહાર કરતાં દ્રવ્યની અપેક્ષાથી અને અપહારક સમયની અપેક્ષાથી આમાં કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મપણું આવે છે. તેમ સમજીશું. જે ણં રાસી ચઉક્કરૂપણં અવહારેણં અવહીરમાણે તિપજ્જવસિએ' જે રાશી ચારથી વિભક્ત કરાતિ થકી જેના અંતમાં ત્રણ બચે એવી હોય છે. તથા 'જે ણં તસ્સ રાસિસ્સ અવહારસમયા કઢજુમ્મા સેત્તં કઢજુમ્મતેઓએ' તે રાશીનો અપહાર સમય કૃતયુગ્મ—ચાર રૂપ હોય છે. એવી તે રાશિ કૃતયુગ્મ, ત્રીજી

‘જે નં રાસી ચઝકણં અવહારેણં અવહીરમાણે ચઝવસિણ’ યઃ સ્વલ્લ રાશિ-
શ્વતુષ્કેણાપહારેણાપહિયમાણશ્વતુઃપર્યવસિતો ભવેત્ તથા—‘જે નં તસ્સ રાસિસ્સ
અવહારસમયા તેઓગા સેત્તં તેઓગકઢજુમ્મે ૫ । યે સ્વલ્લ તસ્ય રાશેરપહાર
સમયાઃ ય્યોજા ભવન્તિ તસ્માત્કારણાત્ સ રાશિવિશેષઃ ય્યોજ કૃતયુગ્મ રૂપ
સ્ત્યભિધીયતે સ ચ જઘન્યતો દ્વાદશાત્મકઃ (૧૨) ઇતિ ૫ । ‘જે નં રાસી ચઝ-
કણં અવહારેણં અવહીરમાણે તિ પઞ્જવસિણ’ યઃ સ્વલ્લ રાશિ શ્વતુષ્કેણા-
પહારેણ અપહિયમાણત્રિપર્યવસિતો ભવેત્ તથા—‘જે નં તસ્સ રાસિસ્સ અવહાર
સમયા તેઓગા સેત્તં તેઓગ તેઓગે’ યે સ્વલ્લ તસ્ય રાશેરપહારસમયાઃ
ય્યોજા ભવન્તિ તસ્માત્કારણાત્ સ રાશિવિશેષઃ ય્યોજ ય્યોજ રૂપોઽભિધીયતે’
સ ચ જઘન્યતઃ પશ્ચદશાત્મકઃ (૧૫) ઇતિ ૬ । ‘જેનં રાસી ચઝકણં અવહારેણં
અવહીરમાણે દો પઞ્જવસિણ’ યઃ સ્વલ્લ રાશિ શ્વતુષ્કેણાપહારેણ અપહિયમાણે
દ્વિપર્યવસિત એવ ભવતિ તથા—‘જે નં તસ્સ રાસિસ્સ અવહારસમયા તેઓગા

માણે ચઝવસિણ જે નં તસ્સ રાસિસ્સ અવહારસમયા તેઓગા સેત્તં
તેઓગ કઢજુમ્મે’ જો રાશિ ચાર સે અપહત હોને પર ચાર વચાતી
હૈં ઓર ઉસકે અપહાર સમય ૨ રૂપ હોતે હૈં એસી વહ રાશિ ય્યોજ
કૃતયુગ્મ રૂપ હાંતી હૈં । એસી વહ રાશિ જઘન્ય સે ૧૨ સંખ્યા રૂપ
હોતી હૈં । ‘જે નં રાસી ચઝકણં અવહારેણં અવહીરમાણે તિપઞ્જવસિણ
જે નં તસ્સ રાસિસ્સ અવહારસમયા તેઓગા સેત્તં તેઓગતેઓગે’
૬ ‘જો રાશિ ચાર સે અપહત હોને પર અન્ત મેં ત્રીન વચાતી હૈં
ઓર ઉસ રાશિ કે અપહાર સમય ય્યોજ રૂપ હોતે હૈં’ વહ ય્યોજ
ય્યોજ રાશિ હૈં । જઘન્ય પ્રમાણ ૧૫ હૈં । ‘જે નં રાસી ચઝકણં
અવહારેણં અવહીરમાણે દો પઞ્જવસિણ, જે નં તસ્સ રાસિસ્સ અવહાર

અપહારક સમય ચાર હોય છે. તેથી તેમાં કૃતયુગ્મ પણ આવે છે. એવી તે
રાશી જઘન્યથી ૧૭ સત્તર સંખ્યા રૂપ છે ‘જેનં રાસી ચઝકણં અવહારેણં
અવહીરમાણે ચઝવસિણ જેનં તસ્સ રાસિસ્સ અવહારસમયા તેઓગા સેત્તં
તેઓગ કઢજુમ્મે’ જે રાશીમાં ચારની સંખ્યાથી અપહાર કરતાં ચાર વધે છે,
અને તેના અપહારનો સમય ૩ ત્રણ રૂપ હોય છે. એવી તે રાશી ય્યોજ
કૃતયુગ્મ રૂપ હોય છે, એવી તે રાશી ૧૨ બારની સંખ્યા રૂપ હોય છે

‘જેનં રાસી ચઝકણં અવહારેણં અવહીરમાણે તિપઞ્જવસિણ જે નં તસ્સ
રાસિસ્સ અવહારસમયા તેઓગા સેત્તં તેઓગતેઓગે’ જે રાશીમાંથી ચાર
ના અપહારથી ઇવટે ત્રણ બચે છે, અને અપહારનો સમય ય્યોજ રૂપ હોય છે,
તે ય્યોજ ય્યોજ રાશી કહેવાય છે તેની સંખ્યાનું પ્રમાણ ૧૫નું છે, ‘જે નં રાસી ચઝ-
કણં અવહારેણં અવહીરમાણે દો પઞ્જવસિણ, જે નં તસ્સ રાસિસ્સ અવહારસમયા

સેત્તં તેઓગ દાવરજુમ્મે' યે સ્વલુ તસ્ય રાશેરપહારસમયાઃ ઝ્યોજા ભવન્તિ તસ્માત્કારણાત્ સ રાશિ વિશેષઃ ઝ્યોજ દ્વાપરયુગ્મ ઇતિ કથ્યતે સ ચ જઘન્યત શ્વતુર્દશાત્મકઃ (૧૪) ઇતિ ૭। 'જે ણં રાસી ચઝક્રુણં અવહારેણં અવહીરમાણે ઇગપ્પજ્જવસિણ' યઃ સ્વલુ રાશિ શ્વતુષ્કેણાપહારેણાપહિયમાણ એક એવ પર્યવસિતો ભવેત્ તથા—'જે ણં તસ્સ રાસિસ્સ અવહારસમયા તેઓગા સેત્તં તેઓગકલિઓગે' યે સ્વલુ તસ્ય રાશેરપહારસમયા ઝ્યોજા ભવન્તિ, તસ્માત્ કારણાત્ સ રાશિવિશેષઃ ઝ્યોજકલ્પોજ ઇત્યભિધીયતે સ ચ જઘન્યત સ્વયોદશાત્મકઃ (૧૩) ઇતિ ૮। 'જે ણં રાસી ચઝક્રુણં અવહારેણં અવહીરમાણે ચઝપ્પજ્જવસિણ' યઃ સ્વલુ રાશિ શ્વતુષ્કેણાપહારેણાપહિયમાણ ચતુઃપર્યવસિતો ભવતિ તથા—'જે ણં તસ્સ રાસિસ્સ અવહારસમયા દાવરજુમ્મા સેત્તં દાવરજુમ્મકઢજુમ્મે'

સમયા તેઓગા સેત્તં તેઓગદાવરજુમ્મે' ૭ જિસ રાશિ મેં સે ચતુષ્ક કે અપહાર સે અન્ત મેં દો બચતે હેં ઓર અપહાર સમય જિસકે ઝ્યોજ રૂપ હોતે હેં એસી વહ રાશિ ઝ્યોજદ્વાપરયુગ્મ રૂપ હોતી હૈં હસકા જઘન્ય પ્રમાણ ૧૪સંખ્યા રૂપ હૈં। 'જે ણં રાસી ચઝક્રુણં અવહારેણં અવહીરમાણે ઇગપ્પજ્જવસિણ' જો રાશિ ચતુષ્ક સે અપહન હોને પર અન્ત મેં એક બચાતી હૈં ઓર 'જે ણં તસ્સ રાસિસ્સ અવહારસમયા તેઓગા સેત્તં તેઓગ કલિઓગે' અપહાર સમય જિસરાશિ કે ઝ્યોજરૂપ હોતે હેં એસી વહ રાશિ ઝ્યોજ કલ્પોજ રૂપ હોતી હૈં। હસકા જઘન્ય પ્રમાણ ૧૩, સંખ્યારૂપ હોતા હૈં। 'જે ણં રાસી ચઝક્રુણં અવહારેણં અવહીરમાણે ચઝપ્પજ્જવસિણ' જો રાશિ ચાર સે વિભાજિત હોકર અન્ત મેં ચાર બચાતી હૈં તથા 'જે ણં તસ્સ રાસિસ્સ અવહારસમયા દાવરજુમ્મા સેત્તં દાવરજુમ્મ કઢજુમ્મે'

તેઓગા સેત્તં તેઓગદાવરજુમ્મે' ૭, જે રાશિમાંથી ચારનો અપહાર કરવાથી છેવટે બે બચે છે, અને જેના અપહારનો સમય યોગ ૩૫ હોય છે. એવી તે રાશી યોગ દ્વાપરયુગ્મ ૩૫ હોય છે. તેનું જઘન્ય પ્રમાણ ૧૪ ચૌદ સંખ્યા ૩૫ હોય છે. 'જે ણં રાસી ચઝક્રુણ અવહારેણં અવહીરમણે ઇગપ્પજ્જવસિણ' જે રાશી ચારની સંખ્યાથી અપહાર થવાથી છેવટે એક બચે છે, અને 'જે ણં તસ્સ રાસિસ્સ અવહારસમયા તેઓગા સેત્તં તેઓગકલિઓગે' અને જેનો અપહારનો સમય યોગ ૩૫ હોય છે. એવી તે રાશી યોગ કલ્પેયોગ ૩૫ હોય છે. તેનું પ્રમાણ ૧૩ તેર સંખ્યા ૩૫ હોય છે. ૨ 'જે ણં રાસી ચઝક્રુણ અવહારેણં અવહીરમાણે ચઝપ્પજ્જવસિણ' જે રાશીમાંથી ચારનો વિભાગ કરવાથી છેવટે ચાર બચે છે તથા 'જે ણં તસ્સ રાસિસ્સ અવહારસમયા દાવરજુમ્મા સેત્તં દાવરજુમ્મ કઢજુમ્મે' જે રાશિનો અપહાર સમય દ્વાપરયુગ્મ છે, એવી તે રાશિ દ્વાપર

યે સ્વલુ તસ્ય રાશોરપહારસમયા દ્વાપરયુગ્મના ભવન્તિ તસ્માત્કારણાત્ સ રાશિ-
વિશેષો દ્વાપરયુગ્મકૃતયુગ્મ ઇત્યભિધીયતે, સ ચ જઘન્યતોષ્ટાત્મકઃ, ઇતિ
(૮) ૯. 'જે જાં રાસી ચઝકકણં અવહારેણં અવહીરમાણે તિપજ્જવસિણ' યઃ
સ્વલુ રાશિ શ્વતુષ્કેણાપહારેણાપહીયમાણ સ્તિર્યવસિતો ભવતિ તથા—'જે જાં
તસ્સ રાસિસ્સ અવહારસમયા દાવરજુમ્મા સેત્તં દાવરજુમ્મતેઓગે' યે સ્વલુ
તસ્ય રાશોરપહારસમયા દ્વાપરયુગ્મરૂપા ભવન્તિ તસ્માત્કારણાત્ સ રાશિ
વિશેષઃ દ્વાપરયુગ્મવ્યોજ ઇતિ કથયતે સ ચ જઘન્યત્ત દ્વકાદશાત્મકઃ (૧૧)
ઇતિ ૧૦. 'જે જાં રાસી ચઝકકણં અવહારેણં અવહીરમાણે દુપજ્જ-
વસિણ' યઃ સ્વલુ રાશિ શ્વતુષ્કેણાપહારેણાપહીયમાણો દ્વિપર્યવસિતો ભવતિ
તથા—'જે જાં તસ્સ રાસિસ્સ અવહારસમયા દાવરજુમ્મા સેત્તં દાવરજુમ્મ
દાવરજુમ્મે' યે સ્વલુ તસ્ય રાશોરપહારસમયા દ્વાપરયુગ્મરૂપા ભવન્તિ
તસ્માત્કારણાત્ સ રાશિવિશેષો દ્વાપરયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ ઇતિ કથયતે સ ચ જઘ-

જિસ રાશિ કે અપહાર સમય દ્વાપરયુગ્મ હૈં એસી વહ રાશિ દ્વાપરયુગ્મ કૃત
યુગ્મ કહી ગઈ હૈં । વહ રાશિ જઘન્ય રૂપ સે ૮ સંખ્યાત્મક હૈં । ૯ 'જે જાં
રાસી ચઝકકણં અવહારેણં અવહીરમાણે તિપજ્જવસિણ' જો રાશિ
ચાર સે અપહાર હોકર અન્ત મેં ત્રીન બચાતી હૈં । તથા 'જે જાં તસ્સ
રાસિસ્સ અવહારસમયા દાવરજુમ્મા સેત્તં દાવરજુમ્મતેઓગે' જિસ
રાશિ કે અપહાર સમય દ્વાપરયુગ્મ રૂપ હૈં એસી વહ રાશિ દ્વાપરયુગ્મ
વ્યોજરૂપ હૈં । યહ સંખ્યા મેં જઘન્ય સે ૧૧ સંખ્યા રૂપ હોતી હૈં । 'જે જાં
રાસી ચઝકકણં અવહારેણં અવહીરમાણે દુપજ્જવસિણ' જો રાશિ ચાર
સે અપહાર હોકર—વિભાજિત હોકર અન્ત મેં દો બચાતી હૈં તથા 'જે જાં
તસ્સ રાસિસ્સ અવહારસમયા દાવરજુમ્મા' જિસ રાશિ કે અપહાર
સમય દ્વાપરયુગ્મ રૂપ હૈં—એસી વહ રાશિ દ્વાપરયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ રૂપ હૈં ।
વહ જઘન્ય સંખ્યા મેં ૧૦ રૂપ હોતી હૈં । 'જે જાં રાસી ચઝકકણં

યુગ્મ કૃતયુગ્મ કહેલ છે તે આઠ ૮ સંખ્યાત્મક છે. ૯ 'જે જાં રાસી ચઝકકણં
અવહારેણં અવહીરમાણે તિ પજ્જવસિણ' જે રાશી ચારથી અપહાર થઈને છેવટે
ત્રણ બચાવે છે, તથા 'જે જાં તસ્સ રાસિસ્સ અપહારસમયા દાવરજુમ્મા સેત્તં દાવર
જુમ્મ તેઓગે' જે રાશીને અપહાર સમય દ્વાપરયુગ્મ રૂપ છે, એવી તે રાશી
દ્વાપરયુગ્મ વ્યોજ રૂપ છે. તેની જઘન્ય સંખ્યા ૧૧ની હોય છે 'જે જાં રાસી ચઝ-
કકણં અવહારેણં અવહીરમાણે દુપજ્જવસિણ' જે રાશી ચારથી અપહાર થઈને
વહેંચવાથી છેવટે બે બચે છે, તથા 'જે જાં તસ્સ રાસિસ્સ અપહારસમયા દાવર
જુમ્મા' જે રાશીને અપહાર સમય દ્વાપરયુગ્મ રૂપ છે, એવી તે રાશી દ્વાપર
યુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ રૂપ છે, આ સંખ્યામાં ૧૦ હસ રૂપ હોય છે. 'જે જાં રાસી

ન્યતો દશાત્મકઃ (૧૦) इति ११ । 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अव-
हीरमाणे एणपज्जवसिए' यः खलु राशि श्रुत्तुक्केणापहारेणापहियमाण एक
पर्यवसित एव भवति तथा—'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावर जुम्मा
सेत्तं दावरजुम्मकलिओगे' ये खलु तस्य राशेरपहारसमया द्वापरयुग्म
रूपा भवन्ति तस्मात्कारणात् स राशिविशेषो द्वापरयुग्म कल्योज इति कथ्यते,
स च नवात्मकः (९) इति १२ । 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे
चउप्पज्जवसिए' यः खलु राशि श्रुत्तुक्केणापहारेणापहियमाण श्रुतुःपर्यव-
सितो भवति तथा 'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलिओगा सेत्तं कलि-
ओगा कडजुम्मे' ये खलु तस्य राशेरपहारसमयाः कल्योजाः तस्मात्कारणात्
स राशिविशेषः कल्योजकृतयुग्म इत्यभिधीयते, स च जघन्यत श्रुत्तुक्का-
त्मकः (४) इति १३ । 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्ज-
वसिए' यः खलु राशि श्रुत्तुक्केणापहारेणापहियमाणस्त्रिपर्यवसितो भवति

अवहारेणं अवहीरमाणे एणपज्जवसिए' जो राशि चार से अपहार होकर
अन्त में एक बचाती हैं तथा 'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावर-
जुम्मा सेत्तं दावरजुम्मकलिओगे' जो उस राशि के अपहार समय द्वापर-
युग्म रूप हैं ऐसी राशि द्वापरयुग्म कल्योज रूप होती है । यह जघन्य
संख्या में ९ रूप होती है । 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अव-
हीरमाणे चउप्पज्जवसिए' 'जो राशि चार से विभक्त होकर अन्त में चार
बचाती है । 'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोगा से त्तं
कलिओगा कडजुम्मे' तथा जिस राशि के अपहार समय कल्योज रूप
होते हैं ऐसी वह राशि कल्योज कृतयुग्म कहलानी है । संख्या में वह
जघन्य से चार रूप है । 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीर-

ચચ્ચકકણ અવહારેણ અવહીરમાણે એણપજ્જવસિએ' એ રાશી ચારથી અપહાર
થવાથી એક બચે તથા 'જે ન તસ્સ રાસિસ્સ અવહારસમયા દાવરજુમ્મા
સેત્તં દાવરજુમ્મકલિઓગે' એ રાશિનેા અપહાર સમય દ્વાપરયુગ્મ
રૂપ છે, એવી તે રાશીદ્વાપરયુગ્મ કલ્યોજ રૂપ હોય છે. આ સંખ્યામાં ૯ નવ
રૂપ હોય છે. 'જે નં રાસી ચચ્ચકકણં અવહારેણં અવહીરમાણે ચઉપજ્જવસિએ' એ
રાશી ચારથી વહેંચાઈને છેવટે ચાર બચાવે છે, 'જે ન તસ્સ રાસિસ્સ અવહાર-
સમયા કલિઓગા સેત્તં કલિઓગકડજુમ્મે' તથા એ રાશીનેા અપહાર
સમય કલ્યોજ રૂપ હોય છે, એવી તે રાશી કલ્યોજ કૃતયુગ્મ કહેવાય છે.
સંખ્યામાં તે ચાર રૂપ હોય છે. 'જે નં રાસી ચચ્ચકકણં અવહારેણં અવહીરમાણે
તિપજ્જવસિએ, જે નં તસ્સ રાસિસ્સ અવહારસમયા કલિઓગા સેત્તં કલિઓગ

તથા-‘જે જાં તસ્મ રાસિસ્સ અવહારસમયા કલિઓગા સેત્તં કલિયોગ તેઓને’
 યે સ્વલુ તસ્ય રાશેરપહારસમયાઃ કલ્યોજાઃ તસ્માત્કારણાત્ સ રાશિવિશેષઃ
 કલ્યોજ ંયોજ ઇતિ કથ્યતે સ ચ જઘન્યતઃ સસાત્મકઃ (૭) ઇતિ ૧૪।
 ‘જે જાં રાસી ચઽક્રકર્ણં અવહારેણં અવહીરમાણે દુપજ્જવસિણ’ યઃ સ્વલુ રાશિ
 શ્ચતુષ્કેણાપહારેણાપહ્રિયમાણા દ્વિપર્યવસિતો ભવતિ તથા ‘જે જાં તસ્મ રાસિસ્સ
 અવહારસમયા કલિઓગા સેત્તં કલિઓગદાવરજુમ્મે યે સ્વલુ તસ્ય રાશેરપહાર
 સમયાઃ કલ્યોજા ભવન્તિ તસ્માત્ કારણાત્ સ રાશિ વિશેષઃ કલ્યોજ દ્વાપરયુગ્મ
 ઇતિ કથ્યતે, સ ચ જઘન્યતઃ પડાત્મકઃ (૬) ઇતિ ૧૫। ‘જે જાં રાસી ચઽક્રકર્ણં
 અવહારેણં અવહીરમાણે ઇગપજ્જવસિણ’ યઃ સ્વલુ રાશિશ્ચતુષ્કેણાપહારેણાપહ્રિય-
 માણ એકપર્યવસિતો ભવેત્ તથા-‘જે જાં તસ્મ રાસિસ્સ અવહારસમયા કલિઓગા
 સેત્તં કલિઓગ કલિઓને’ યે સ્વલુ તસ્ય રાશેરપહારસમયાઃ કલ્યોજા ભવન્તિ

માણે તિપજ્જવસિણ ‘જે જાં તસ્મ રાસિસ્સ અવહારસમયા કલિઓગા
 સેત્તં કલિઓગતેઓને’ જો રાશિ ચાર સે વિભક્ત હોકર અન્ત મેં
 ત્રીન બચાતી હૈ, તથા ઉસ કે અપહાર સમય કલ્યોજ રૂપ હોતે હૈં એસી
 વહ રાશિ કલ્યોજ ંયોજ રૂપ કહી ગઈ। વહ જઘન્ય સંખ્યા મેં ૭ રૂપ
 હૈ। ‘જે જાં રાસી ચઽક્રકર્ણં અવહારેણં અવહીરમાણે દુપજ્જવસિણ’
 ‘જે જાં તસ્મ રાસિસ્સ અવહારસમયા કલિઓગા સેત્તં કલિઓગ
 દાવરજુમ્મે’ જો રાશિ ચાર સે વિભક્ત હોતી હુઈ અન્ત મેં દો બચાતી
 હૈં ઓર ઉસ કે અપહાર સમય કલ્યોજ રૂપ હોતે હૈ। એસી વહ કલ્યોજ
 દ્વાપરયુગ્મ કહી જાતી હૈં। સંખ્યા મેં વહ જઘન્ય સે ૬ રૂપ હોતી હૈ।
 ‘જે જાં રાસી ચઽક્રકર્ણં અવહારેણં અવહીરમાણે ઇગપજ્જવસિણ જે
 જાં તસ્મ રાસિસ્સ અવહારસમયા કલિઓગા સેત્તં કલિઓગકલિ-
 ઓને’ જો રાશિ ચાર સે અપહૃત હોકર અન્ત મેં એક બચાતી હૈ। તથા

તેઓને’ જે રાશી ચારથી વહેચાઈને છેવટમાં ત્રણ બચાવે છે, તથા તેના અપ-
 હારનો સમય કલ્યોજ ૩૫ હોય છે, એવી તે રાશી કલ્યોજ ૩૫ કહેલ
 છે. તે સંખ્યામાં ૭ સાત ૩૫ છે. ‘જેજાં રાસી ચઽક્રકર્ણં અવહારેણં અવહીરમાણે
 દુપજ્જવસિણ જેજાં તસ્મ રાસિસ્સ અવહારસમયા કલિઓગા સેત્તં કલિઓગદાવર
 જુમ્મે’ જે રાશી ચારથી વહેચાઈને છેવટે બે બચાવે છે, અને તેના જે
 અપહારનો સમય કલ્યોજ ૩૫ હોય છે, એવી તે રાશી કલ્યોજ દ્વાપરયુગ્મ
 ૩૫ કહેવામાં આવે છે. તે સંખ્યામાં ૬ છ ૩૫ છે. ‘જેજાં રાસી ચઽક્રકર્ણં
 અવહારેણં અવહીરમાણે ઇગપજ્જવસિણ જેજાં તસ્મ રાસિસ્સ અવહારસમયા
 કલિઓગા સેત્તં કલિઓગકલિઓને’ જે રાશી ચારની સંખ્યાથી અપહૃત થઈ
 ને છેવટે એક બચાવે છે. તથા ‘જેજાં તસ્મ રાસિસ્સ અવહારસમયા કલિઓગા

તસ્માત્કારણાત્ સ રાશિ વિશેષઃ કલયોજ કલયોજ इति कथ्यते एष च जघन्यतः
पञ्चात्मकः (५) इति १६ । 'से तेणहेणं जाव कलिभोगकलिभोगे' तत्तेनार्थेन
हे गौतम ! एवमुच्यते कृतयुग्मकृतयुग्मो यावत् कल्योज कल्योज इति षोडशा-
पहारराशयो भवन्ति यावत्पदेन 'कडजुम्मकडजुम्मे' इत्यारभ्य 'कलिभोग
दावरजुम्मे' इत्यन्तस्य सर्वस्य ग्रहणं भवतीति ॥सू० १॥

મૂલમ્-કડજુમ્મ કડજુમ્મ ઇર્ગિદિયા પાં મંતે ! કઓ ઉવવ-
જ્ઞંતિ ? કિં નેરહ્ણહિંતો ? જહા ઉપ્પલુદેસણ તહા ઉવવાઓ ।
તે પાં મંતે ! જીવા ઇગસમણં કેવહ્યા ઉવવજ્ઞંતિ ? ગોયમા !
સોલસ વા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા અણંતા વા ઉવવજ્ઞંતિ ।
તે પાં મંતે ! જીવા સમણ સમણ પુચ્છા, ગોયમા ! તે પાં અણંતા
સમણ સમણ અવહીરમાણા અવહીરમાણા અણંતાહિં ઉસસપ્પિણી
ઓસપ્પિણીહિં અવહીરંતિ પો ચેવ પાં અવહરિયા સિયા । ઉચ્ચત્તં
જહા ઉપ્પલુદેસણ । તે પાં મંતે ! જીવા નાણાવરણિજસસ કમ્મસસ
કિં વંધગા અવંધગા ? ગોયમા ! વંધગા, નો અવંધગા । એવં
સવ્વેસિં આઉયવજ્જાર્ણા । આઉયસસ વંધગા વા અવંધગા વા ।
તે પાં મંતે ! જીવા ણાણાવરણિજ્જસસ પુચ્છા, ગોયમા ! વેયગા
નો અવેયગા । એવં સવ્વેસિં । તે પાં મંતે ! જીવા કિં સાયાવેયગા

‘જે પાં તસસ રાસિસસ અવહારસમયા કલિભોગા સે ત્તં કલિભોગ
કલિભોગે’ જો उस राशि के अपहारसमय कल्योज रूप होते हैं,
ऐसी वह राशि कल्योज कल्योज है वह ५ संख्यारूप होती है । १६ ।
‘से तेणहेणं जाव कलिभोग कलिभोगे’ इस कारण हे गौतम ! मैंने
कृतयुग्म कृतयुग्म से लेकर कल्योज कल्योज तक १६ महाराशियां
कही हैं ॥सू० १॥

સે ત્ત કલિભોગકલિભોગે’ જે રાશીના અપહાર સમય કલ્યોજ રૂપ હોય છે એવી
તે રાશી કલ્યોજ કલ્યોજરૂપ છે. આની સંખ્યા ૫૬૨૧૫ રૂપ હોય છે. ૧૬૧
‘સે તેણહેણં જાવ કલિભોગ કલિભોગે’ આ કારણથી છે ગૌતમ ! મેં કૃતયુગ્મ
કૃતયુગ્મથી લઈને કલ્યોજ કલ્યોજ સુધી ૧૬ સોળ મહારાશીયો કહી છે. ॥સૂ० ૧॥

असायावेयगा पुच्छा, गोयसा ! सायावेयगा असायावेयगा वा ।
 एवं उप्पलुद्देसगपरिवाडी । सव्वेसिं कम्माणं उदई नो अणुदई ।
 छण्हं कम्माणं उदीरगा नो अणुदीरगा । वेयणिज्जाउयाणं उदी-
 रगा वा अणुदीरगा वा । तेणं भंते ! जीवा किं कण्हं पुच्छा,
 गोयसा ! कण्हलेस्सा वा, नीललेस्सा वा, काउलेस्सा वा
 तेउलेस्सा वा । नो सम्मदिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी, मिच्छा-
 दिट्ठी, नो नाणी अन्नाणी नियमं दुअन्नाणी, तं जहा मइ
 अन्नाणी य सुय अन्नाणी य नो मगजोगी, नो वइजोगी, काइ-
 जोगी । सागारोवउत्ता वा अणागारोवउत्ता वा । तेसिं णं
 भंते ! जीवाणं सरीरा कइ वन्ता जहा उप्पलुद्देसए सव्वत्थ
 पुच्छा गोयसा ! जहा उप्पलुद्देसए उप्पासगा वा, नीसासगा
 वा, नो उप्पासनीससगा वा । आहारगा वा अणाहारगा वा ।
 नो विग्घा अविरया, नो विरयाविरया, सकिरिया, नो अकि-
 रिया । सत्तविहवंधगा वा, अट्ठविहवंधगा वा । आहारसन्नोव-
 उत्ता वा जाव परिग्रहसन्नोवउत्ता वा । कोहकसाई वा माण-
 कसाइ जाव लोभकसाई वा । नो इत्थिवेयगा, नो पुरिसवेयगा
 णपुंसगवेयगा । इत्थिवेयबंधगा वा, पुरिसवेयबंधगा वा, णपुं-
 सगवेयबंधगा वा । णो सन्नी, असन्नी । सइंदिया नो अणिं-
 दिया । ते णं भंते ! कडजुम्म कडजुम्म एगिंदिया कालओ
 केवच्चिरं होति ? गोयसा ! जहन्नेणं एकं समयं, उक्कोसेणं अणंतं
 कालं—अणंता उस्सप्पिणी ओसप्पिणीओ वणस्सइकाइय कालो ।
 संवेहो न भवइ । आहारो जहा उप्पलुद्देसए । नवरं निव्वाघाएणं
 छदिसिं, बाधायं पडुच्च सिय तिदिसिं, सिय चउरिसिं सिय पंच
 दिसिं, सेसं तहेव । ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं

वाससहस्राङ्गं । समुग्धाया आदिल्ला चत्तारि । मारणंति य
समुग्धाएणं समोहया वि सरंति असमोहया वि सरंति । उव्व-
ट्ठणा जहा उप्पलुद्देसए । अह भंते ! सव्वपाणा जाव सव्व सत्ता
कडजुम्मकडजुम्मएणिंदियत्ताए उव्वन्नपुव्वा ? हंता गोयमा !
असइं अदुवा अणंतखुत्तो ॥सू० २॥

छाया--कृतयुग्मयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरकेभ्यः
यथोत्पलोद्देशके तथा उपातः ते खलु भदन्त ! जीवाः एकसमयेन कियन्त
उत्पद्यन्ते गौतम ! षोडश वा संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्ता वा, उत्पद्यन्ते ।
ते खलु भदन्त ! जीवाः समये समये पृच्छा गौतम ! ते खलु अनन्ताः
समये समये अपह्रियमाणा अपह्रियमाणा अनन्ताभिस्तत्सर्पिणीभिःपह्रियन्ते, नैव
खलु अपहृताः स्युः । उच्चत्वं यथोत्पलोद्देशके । ते खलु भदन्त ! जीवाः ज्ञाना-
वरणीयस्य कर्मणः किं बन्धका अबन्धकाः ? गौतम ! बन्धका नो अबन्धकाः ।
एवं सर्वेषां मायुष्कवर्जिणाम् । आयुष्कस्य बन्धका वा, अबन्धका वा । ते खलु
भदन्त ! जीवाः ज्ञानावरणीयस्य० पृच्छा गौतम ! वेदका नो अवेदका एवं
सर्वेषाम् । ते खलु भदन्त ! जीवाः किं सातावेदका असातावेदकाः० पृच्छा,
गौतम ! सातावेदका वा, असातावेदका वा, एवमुत्पलोद्देशकपरिपाटी ।
सर्वेषां कर्मणा मुदयिनो नो अनुदयिनः पण्णां कर्मणा मुदीरकाः, नो अनुदी-
रकाः, वेदनीयायुष्कायोः उदीरका वा, अनुदीरका वा । ते खलु भदन्त जीवाः
किं कृष्ण० पृच्छा, गौतम ! कृष्णलेश्या वा, नीललेश्या वा, कापोतलेश्या वा,
तेजोलेश्या वा । नो सम्पगृह्यः नो सम्पगृह्यः, मिथ्या-
दृष्टयः । नो ज्ञानिनः, अज्ञानिनः नियमात् द्वयज्ञानिनः तद्यथा--मत्यज्ञानिनश्च
श्रुताज्ञानिनश्च । नो मनोयोगिनो नो वचोयोगिनः काययोगिनः । साकारोपयुक्ता
वा, अनाकारोपयुक्ता वा । तेषां खलु भदन्त ! जीवानां शरीराणि कति वर्णानि,
यथोत्पलोद्देशके सर्वत्र पृच्छा, गौतम ! यथोत्पलोद्देशके उच्छ्वासका वा निःश्वा-
सका, वा, नो उच्छ्वासनिःश्वासकाः । आहारका वा अनाहारका वा, नो विरताः
अविरताः, नो विरताविरताः । सक्रियाः नो अक्रियाः । सप्तविधबन्धका वा
अष्टविधबन्धका वा । आहारसंज्ञोपयुक्ता वा यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्ता वा । क्रोध
कषायिनो वा मानकषायिनो यावत्लोभकषायिनो वा । नो स्त्रीवेदका नो
पुरुषवेदकाः, नपुंसकवेदकाः । स्त्रीवेदबन्धका वा, पुरुषवेदबन्धका वा, नपुं-
सकवेदबन्धका वा । नो संज्ञिनोऽसंज्ञिनः । सेन्द्रिया नो अनिन्द्रियाः । ते खलु
भदन्त ! कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः कालतः कियच्चिरं भवन्ति ? गौतम ।

जघन्येन एकं समयम्, उत्कर्षेणानन्तं कालम्, अनन्ता उत्सर्पिष्यवसर्पिष्यः वन-
स्पतिकाधिककालः । संवेधो न भण्यते, आहारो यथा—उत्पलोद्देशके, नवरं
निर्व्याधात्तेन षड्दिशम्, व्याघातं प्रतीत्य स्यात् चतुर्दिशम्, स्वात् पञ्चदिशं शेषं
तथैव । स्थितिर्जन्येनान्तर्मुहूर्तम्, उत्कर्षेण द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि । समु-
द्घाता आद्याश्चत्वारः । मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहता अपि म्रियन्ते,
असमवहता अपि म्रियन्ते । उद्वर्तना यथा उत्पलोद्देशके । अथ भदन्त ! सर्व-
प्राणा यावत् सर्वसस्याः कृतयुग्मकृतयुग्म एकेन्द्रियतया उत्पन्नपूर्वाः ? गौतम !
असकृत् अथवा—अनन्तकृत्वः ॥ सू० २॥

टीकाः—‘कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कृतयुग्मकृतयुग्मै-
केन्द्रियाः खलु भदन्त ! ये एकेन्द्रियाः चतुष्कापहारे चतुःपर्यवसिताः अप-
हारसमयाश्च चतुःपर्यवसानास्ते कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः कथ्यन्ते एवं
सर्वत्र ज्ञातव्यम् ‘कओ उववज्जंति’ इत्थंभूता एकेन्द्रियाः कुतः कस्मात् स्थान-
विशेषादागत्योत्पद्यन्ते ‘किं नेरइएहिंतो०’ किं नैरयिकेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते
तिर्यग्गोनिकेभ्यो वा आगत्योत्पद्यन्ते मनुष्येभ्यो वा आगत्योत्पद्यन्ते देवेभ्यो
वा आगत्योत्पद्यन्ते इति प्रश्नः, उत्तरमाह—अतिदेशमुखेन ‘जहा उप्पलुहेसए तहा

‘कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! इत्यादि

टीकार्थ—‘कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते !’ हे भदन्त ! जो
एकेन्द्रिय कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमाण है । ऐसे वे एकेन्द्रिय जीव
‘कओ उववज्जंति’ किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ?
‘किं नेरइएहिंतो०’ क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं
अथवा तिर्यग्गोनिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा मनुष्यों
में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा देवों से आकर के उत्पन्न
होते हैं ? इस प्रश्न का अतिदेश द्वारा उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतम-

‘कडजुम्मकडजुम्मएगिंदियाणं’ इत्यादि

टीकार्थ—कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! हे भगवन् ! वे एकेन्द्रिय
कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमाण होय ओवा ते एकेन्द्रिय ओवा ‘कओ उववज्जंति’
क्या स्थान विशेषमांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? ‘किं नेरइएहिंतो’ शुं
तेओ नैरयिकेमांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा तिर्यग्गोनिकेमांथी
आवीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा मनुष्येमांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ?
अथवा देवेमांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? आ प्रश्नना उत्तरमां अति देशथी
प्रभुश्री गौतमस्वामीने कहे छे छे—‘जहा उप्पलुहेसए तहा सववाओ’ आ भगवती

‘ઉવવાઓ’ યથા ઉત્પલોદેશે તથા ઉપપાતો ભગવતીસૂત્રસૈવ એકાદશશતકે પ્રથમો-
દેશક ઉત્પલોદેશકઃ તત્ર યથા-એકેન્દ્રિયાણામુપપાતઃ કથિત સ્તથૈવાત્રાપિ-
ઉપપાતો જ્ઞાતવ્યઃ નો નૈરયિકેભ્ય ઉપપદ્યન્તે, તિર્યગ્યોનિકેભ્યો વા, મનુષ્યેભ્યો
વા, દેવેભ્યો વા ઉપપદ્યન્તે, પૃથિવ્યવનસ્પતિષુ દેવાનામુત્પત્તિસંમત્વાત્, તદપેક્ષ-
યૈવ દેવેભ્ય આગત્ય એકેન્દ્રિયેષુ ઉત્પદ્યન્તે इति કથિતમ્ । इह यत्र यत्र यस्मिन्
यस्मिन् પદે ઉત્પલોદેશકસ્યાતિદેશઃ કૃતો મવેત્ તત્તદેવ પદં તત્રત્યં વાચ્યમ્ ।
‘તે નં મંતે ! જીવા ઇગસમણં કેવદ્યા ઉશ્વજ્જંતિ’ તે સ્વઙ્ગ મદન્ત ! જીવાઃ

સ્વામી સે કહતે હૈં ‘જહા ઉપ્પલુદ્દેસા તહા ઉવવાઓ’ હસ ભગવતી
સૂત્ર કા જો ૧૧ વેં શતક મેં પ્રથમ ઉદેશક હૈં-વહી ઉત્પલ ઉદેશક હૈં
સો હસ ઉત્પલ ઉદેશક મેં જિસ રીતિ સે એકેન્દ્રિય જીવોંકા ઉપપાત
કહા ગયા હૈં ઉસીરીતિ સે ઉનકા ઉપપાત યહાં પર મી જાનના ચાહિયે
તથા ચ-કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિ પ્રમાણ એકેન્દ્રિય જીવ નૈરયિકોં મેં સે
આકર કે ઉત્પન્ન નહીં હોતે હૈં, કિન્તુ વે તિર્યગ્યોનિકોં મેં સે આકર કે
મી ઉત્પન્ન હોતે હૈં મનુષ્યોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ઓર દેવોં
મેં સે મી આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં । કયોં કિ પૃથિવીકાયિક અપ્કાયિક
ઓર વનસ્પતિકાયિક હન મેં દેવોં કી ઉત્પત્તિ હો સકતી હૈં । હસલિયે
યહાં પર દેવોં સે આકર કે મી એકેન્દ્રિય જીવ રૂપ સે જીવ ઉત્પન્ન હોતે
હૈં એસા કહા ગયા હૈં । યહાં જહાં જહાં જિસ જિસ પદ મેં ઉત્પલ ઉદેશક
કા અતિદેશ ક્રિયા હો વહાં વહાં કા વહી પદ કહના ચાહિયે । ‘તે નં’

સૂત્રના ૧૧ અગિયારમા શતકનો પહેલો ઉદ્દેશો છે તેજ ઉત્પલ ઉદ્દેશો કહેવાય
છે. તે ઉત્પલ ઉદ્દેશોમાં જે પ્રમાણે એકેન્દ્રિયવાળા જીવોનો ઉપપાત કહેવામાં
આવેલ છે, એજ પ્રમાણે તેઓનો ઉપપાત અહિયાં કહેવો જોઈએ. તથા
કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોમાંથી નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન
થતા નથી પરંતુ તેઓ તિર્યગ્ય યોનિકોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે,
મનુષ્યોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે. અને દેવોમાંથી આવીને પણ
ઉત્પન્ન થાય છે. કેમ કે પૃથ્વીકાયિક, અપ્કાયિક અને વનસ્પતિ કાયિકોમાં
દેવોની ઉત્પત્તિ થઈ શકે છે. એજ કારણથી અહિયાં દેવોમાંથી આવીને પણ
એકેન્દ્રિય જીવ પણાથી જીવ ઉત્પન્ન થાય છે. તેમ કહેવામાં આવેલ છે.

અહિયાં જ્યાં જ્યાં જે જે પદમાં ઉત્પલ ઉદ્દેશોનો અતિદેશ-લલામણ
કરવામાં આવેલ છે, ત્યાં ત્યાં એજ પદો કહેવા જોઈએ. ‘તે નં’ મંતે ! ઇગ્નઃ

કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મરાશિપ્રમાણા એકેન્દ્રિયા એકસમયેન એકસ્મિન્ સમયે કિયન્તઃ કિયત્સંખ્યકા ઉત્પદ્યન્તે ? इति प्रश्नः, भगवानाह-‘गोयमा’ इत्यादि, ‘गोयमा हे गौतम ! ‘सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा, उववज्जंति’ पोटंश वा संख्याता वा असंख्याता वा अनन्ता वा उत्पद्यन्ते, अनन्ता इति वनस्पत्त्यपेक्षया इति । ‘ते णं भंते ! जीवा समए समए पुच्छा’ ते खलु भदन्त ! जीवाः समये समये अपह्रियमाणः कियता कालेनापह्रियन्ते ? इति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते । भगवानाह-‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘ते णं अणंता समए समए अवहीरमाणा अवहीरमाणा’ ते खलु अनन्ताः समये समये एकैकमाश्रित्य अपह्रियमाणाः अपह्रियमाणा ‘अणंताहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरंति’ अनन्ताभिरुत्सर्पिण्यव-
 भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति’ हे भदन्त ! वे कृतयुगम कृतयुगम राशि प्रमाण रूप एकेन्द्रिय जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-‘गोयमा । सोलसवा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति’ हे गौतम ! वे एक समय में सोलह अथवा संख्यात अथवा असंख्यात अथवा अनन्त उत्पन्न होते हैं’ ‘अनन्त उत्पन्न होते हैं’ ऐसा जो कहा गया है वह वनस्पतिकायिक जीवों की अपेक्षा से कहा गया है । ‘ते णं भंते ! जीवा समए समए पुच्छा’ हे भदन्त ! वे अनन्त जीव यदि एक एक समय में अपहृत किये जावे (निकाळे जावे) तो कितने काल में वे खाली हो सकते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं ‘गोयमा । ते णं अणंता, समए २ अवहीरमाणा अवहीरमाणा अणंताहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरंति’ हे गौतम ! वे अनन्त,

સમણં કેવડયા ઉવવજ્જંતિ’ હે ભગવન્ તે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મરાશિ પ્રમાણ વાળા એકેન્દ્રિય છે. એક સમયમાં કેટલા ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-‘ગોયમા ! સોલસ વા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા અણંતા વા ઉવવજ્જંતિ’ હે ગૌતમ ! તેઓ એક સમયમાં-સોળ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનંત ઉત્પન્ન થાય છે. ‘અનંત ઉત્પન્ન થાય છે’ એ પ્રમાણે જે કહેવામાં આવેલ છે તે વનસ્પતિકાયિક જીવોની અપેક્ષાથી કહેવામાં આવેલ છે. ‘તે ણં ભંતે ! જીવા સમએ સમએ પુચ્છા’ હે ભગવન્ તે અનંત જીવ જો એક એક સમયમાં અપહૃત કરવામાં આવે (ખડારકાઢાડવામાં) આવે તો કેટલા સમયમાં તેઓ ખાલી થઈ શકે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘ગોયમા ! તેણં અણંતા સમએ ૨ અવહીરમાણા અવહીરમાણા અણંતાહિં ઉસ્સપ્પિણીઓસપ્પિણિહિં અવહીરંતિ’ હે ગૌતમ ! તેઓ એક એક

સર્પિણીભિરપદ્ધિયન્તે 'ળો ચેવ ણં અવહરિયા સિયા' નૈવ સ્વલુ તે અનન્તા અપદ્ધતાઃ સ્યુઃ। 'ઉચ્ચત્તં જહા ઉપ્પલુદ્દેસણ' ઉચ્ચત્તં યથોત્પલ્લોદ્દેશકે તેણાં કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મકેન્દ્રિયજીવાનાં શરીરોચ્ચત્ત્વે યથોત્પલ્લોદ્દેશકે ઉત્પલ્લવિષયે કથિતં તથૈવ જ્ઞાતવ્યમ્, જઘન્યેનાંગુલોસંખ્યેયભાગમ્ ઉત્કર્ષેણ સાતિરેકં યોજનસદસં ચનસ્પત્યપેક્ષયા ઇતિ । 'તે ણં મંતે ! જીવા નાનાવરણિજ્જસ્સ કમ્મસ્સ કિં વંધગા અવંધગા' તે સ્વલુ મદન્ત ! કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મકેન્દ્રિયજીવાઃ જ્ઞાનાવરણીયસ્ય કર્મણઃ કિં વંધકા ભવન્તિ અથવા અવંધકા ભવન્તીતિ પ્રશ્નઃ । મગવાનાહ—'ગોયમા' ઇત્યાદિ,

યદિ એક એક સમય મેં એક એક નિકાલે જાવેં તો હન કે સ્વાલી કરને મેં અનન્ત ઉત્સર્પિણી ઓર અનન્ત અવસર્પિણી કાલ સમાપ્ત હો સકતે હૈં । પરન્તુ 'ળો ચેવ ણં અવહરિયા સિયા' વે સ્વાલી નહીં ક્રિયે જા સકતે હૈં । અર્થાત્ હતને કાલ મેં ઓ નહીં ગિને જા સકતે હૈં 'ઉચ્ચત્તં જહા ઉપ્પલુદ્દેસણ' હન કે શરીર કી ઝંચાઈ કે વિષય મેં જૈસા કથન ઉત્પલ્લ ઉદ્દેશક મેં ક્રિયા ગયા હૈ—વૈસા જાનના ચાહિયે । અર્થાત્ જઘન્ય સે હન કે શરીર કી ઝંચાઈ અંગુલ કે અસંખ્યાતવે ભાગ પ્રમાણ હોતી હૈ ઓર ઉત્કૃષ્ટ સે કુછ અધિક ૧ હજાર યોજન પ્રમાણ હોતી હૈ ચહ ઝંચાઈ કા ઉત્કૃષ્ટ રુપ સે કથન કમલ કી અપેક્ષા સે કહા ગયા જાનના ચાહિયે ।

'તે ણં મંતે ! જીવા નાનાવરણિજ્જસ્સ કમ્મસ્સ કિં વંધગા અવંધગા' હે મદન્ત ! વે જીવ કયા જ્ઞાનાવરણીય કર્મ કે વંધક હોતે હૈં અથવા અવંધક હોતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રશુશ્રી કહતે હૈં—'ગોયમા ! વંધગા, નો

સમયમાં અનંત અનંતની સંખ્યામાં કહાડવામાં આવે તો પણ તેઓને ખાલી કરવામાં અનંત ઉત્સર્પિણી અને અનંત અવસર્પિણીકાળ સમાપ્ત થઈ નય છે. પરંતુ 'ળો ચેવ ણં અવહરિયા સિયા' તેઓ ખાલી કરી શકતા નથી અર્થાત્ તે સ્થાન પરથી બિલકુલ ખસેડી શકતા નથી. 'ઉચ્ચત્તં જહા ઉપ્પલુદ્દેસણ' તેઓના શરીરની ઉચ્ચાઈ ના સંબંધમાં ઉત્પલ્લ ઉદ્દેશમાં જે પ્રમાણેનું કથન કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન સમજવું અર્થાત્ જઘન્યથી તેઓના શરીરની ઉચ્ચાઈ આંગળનાઅસંખ્યાતમા ભાગ પ્રમાણની હોય છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી કંઈક વધારે ૧ એક હજાર યોજન પ્રમાણની હોય છે. આ ઉચ્ચાઈનું પ્રમાણ ઉત્કૃષ્ટ પણથી કથન કરાજની અપેક્ષાથી કહેવામાં આવ્યું છે તેમ સમજવું જોઈએ.

'તેણ મંતે ! જીવા નાનાવરણીજ્જસ્સ કમ્મસ્સ કિં વંધગા અવંધગા' હે ભગવન્ તે શ્રવે જ્ઞાનાવરણીય કર્મને ખંધ કરવવાળા હોય છે, અથવા ખંધ કરનાર હોતા નથી ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રશુશ્રી કહે છે કે—'ગોયમા ! વંધગા

‘ગોચમા’ હે ગૌતમ ! ‘વંધના નો અવંધગા’ વંધકા એવ જ્ઞાનાવરણીયસ્ય કર્મણ સ્તે ભવન્તિ ન તુ અવંધકા ભવન્તીતિ । ‘એવં સવ્વેસિ આયવજ્જાણં’ એવં જ્ઞાનાવરણીયસ્ય કર્મણ ઇવ સર્વેષાં દર્શનાવરણીયાદીનામ્ આયુષ્કર્મવર્જિતાનાં સપ્તાનાં કર્મણાં નિયમાદ્ વંધકા એવ તે જીવા ભવન્તિ, નતુ અવંધકા ભવન્તિ આયુઃ કર્મવંધે ભજનેતિ પ્રાહ-‘આયસસ’ ઇત્યાદિ, ‘આયસસવંધગા વા અવંધગા વા’ આયુષ્કસ્ય તુ કર્મણસ્તે જીવા વંધકા અપિ ભવન્તિ અવંધકા અપિ ભવન્તીતિ પ્રાવઃ । ‘તે જાં મંતે ! જીવા’ તે સ્વલુ મદન્ત ! જીવાઃ ‘નાનાવરણિજ્જસસ પુચ્છા’ જ્ઞાનાવરણીયસ્ય કર્મણઃ કિં વેદકા અવેદકાઃ ? ઇતિ પ્રશ્નઃ પૃચ્છા શબ્દેન ગૃહ્યતે । મગવાનાહ-‘ગોચમા’ હે ગૌતમ ! ‘વેચગા’ નો અવેચગા’ વેદકાઃ, નો અવેદકાઃ કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મૈકેન્દ્રિયા જીવા જ્ઞાનાવરણીયં કર્મ વેદચયન્ત્યેવ નિયમાદિતિ પ્રાવઃ । ‘એવં સવ્વેસિ’ એવમ્-અનેનૈવ પ્રકારેણ

અવંધગા’ હે ગૌતમ ! જે જીવ જ્ઞાનાવરણીય કર્મ કે વંધકા હોતે હૈં અવંધકા નહીં હોતે હૈં । ‘એવં સવ્વેસિ આયવજ્જાણં’ હસ પ્રકાર જે સવ જીવ આયુષ્ક કર્મ કે શિવાય દર્શનાવરણીયાદિ સાત કર્મપ્રકૃતિયોં કે નિયમ સે વંધકા હી હોતે હૈં અવંધકા નહીં હોતે આયુ કર્મ કે વંધ મેં યહાં ભજના હૈં-યહી વાત-‘આયસસ વંધગા વા અવંધગા વા’ હસ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કી ગઈ હૈ-‘તે જાં મંતે ! જીવા નાનાવરણિજ્જસસ પુચ્છા’ હે મદન્ત ! જે જીવ કયા જ્ઞાનાવરણીય કર્મ કે વેદકા હોતે હૈં અથવા અવેદકા હોતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં-‘ગોચમા ! વેચગા, નો અવેચગા’ હે ગૌતમ ! જે જીવ જ્ઞાનાવરણીય કર્મ કે વેદકા હોતે હૈં અવેદકા નહીં હોતે હૈં । હસી પ્રકાર સે જે કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ શશિ પ્રમાણ એકેન્દ્રિય

નો અવંધગા’ હે ગૌતમ ! તે જીવે જ્ઞાનાવરણીય કર્મનો અંધ કરનાર હોય છે, અવંધકા હોતા નથી. ‘એવં સવ્વેસિ આયવજ્જાણં’ આ રીતે સધળા જીવે આયુષ્ય કર્મ શિવાય દર્શનાવરણીય વિગેરે સાત કર્મ પ્રકૃતિયોનો નિયમથી અંધ કરનારા જ હોય છે. અવંધકા હોતા નથી. આયુ કર્મના અંધમાં અધિયાં ભજના કહી છે, એજ વાત ‘આયસસ વંધગા વા અવંધગા વા’ આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કરેલ છે. ‘તેજાં મંતે ! નાનાવરણિજ્જસસ પુચ્છા’ હે ભગવન્ તે જીવે શું જ્ઞાનાવરણીય કર્મનું વેદન કરવાવાળા હોય છે ? અથવા અવેદકા હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-‘ગોચમા ! વેચગા, નો અવેચગા’ હે ગૌતમ ! તે જીવે જ્ઞાનાવરણીય કર્મનું વેદન કરવાવાળા હોય છે, અવેદકા હોતા નથી. એજ પ્રમાણે આ કૃતયુગ્મ કૃત-

‘સન્વેસિ’ સર્વેષાં કર્મણાં દર્શનાવરણીયાદારભ્યાન્તરાયિકર્ણ્યન્તાનાં વેદકા એવ
ભવન્તિ કિન્તુ અવેદકા ન ભવન્તીતિ ભાવઃ । ‘તે જાં મંતે ! જીવા કિં સાયાવેયગા
અસાયાવેયગા પુચ્છા’ હે મદન્ત ! તે કૃતયુગ્મકેન્દ્રિયજીવાઃ કિં સાતાવેદન્ય-
સાતાવેદનીયકર્મણો વેદકા અનુભવકર્તારો ભવન્તિ અથવા અસાતાવેદનીયસ્ય
વેદકા ભવન્તીતિ પ્રશ્નઃ પુચ્છયા સંગૃહ્યતે । મગવાનાહ-‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ,
‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘સાતાવેદગા વા અસાતાવેદગા વા’ તે જીવાઃ સાતાવેદકા
અપિ ભવન્તિ તથા અસાતાવેદકા અપિ ભવન્તીતિ । ‘એવં ઉત્પલુદ્દેશગપરિવાહી’
એવં યથા ઉત્પલોદ્દેશકે કર્મપરિપાટી કથિતા સૈવેદાપિ અનુસન્વેયા ‘સન્વેસિ
કર્મણાં ઉદર્દ’ તે જીવાઃ સર્વેષાં કર્મણા મુદયિનો ભવન્તિ તેષાં જીવાનાં સર્વ
કર્મણામેવોદયો ભવન્તીતિ । ‘નો અણુદર્દ’ નો અનુદયિનો ભવન્તિ કર્મણામિતિ ।

જીવ ‘સન્વેસિ’ દર્શનાવરણીયાદિ સે લેકર અન્તરાય કર્મ તક્ર કે
સમસ્ત કર્મો કે વેદક હી હોતે હૈં અવેદક નહીં હોતે હૈં । ‘તે જાં
મંતે ! જીવા કિં સાયાવેયગા અસાયાવેયગા’ હે મદન્ત ! યે કૃતયુગ્મ
કૃતયુગ્મ રાશિ પ્રમાણ એકેન્દ્રિય જીવ કયા સાતા વેદનીય કર્મ કે
વેદક હોતે હૈં ? અથવા અસાતા વેદનીય કર્મ કે વેદક હોતે હૈં ? ઉત્તર મેં
પ્રભુશ્રી કહતે હૈં-‘ગોયમા ! સાયાવેયગા વા અસાયાવેયગા વા’ હે
ગૌતમ ! વે સાતા કર્મ કે વેદક મી હોતે હૈં ઔર અસાતા કર્મ કે વેદક
મી હોતે હૈં । ‘એવં ઉત્પલુદ્દેશગપરિવાહી’ હસ પ્રકાર સે ઉત્પલ ઉદ્દેશક
મેં જૈસી કર્મ વેદન કી પરિપાટી કહી ગઈ હૈં વૈસી હી યહાં પર જાનના
ચાહિયે । ‘સન્વેસિ’ કર્મણા ઉદર્દ’ હન જીવોં કે સમસ્ત કર્મોં કા
ઉદય હોતા હૈં । ‘નો અણુદર્દ’ અનુદયવાલે યે નહીં હોતે હૈં । ઉદીરણા કે

યુગ્મરાશિ પ્રમાણ એકેન્દ્રિય જીવો ‘સન્વેસિ’ દર્શનાવરણીય વિગેરેથી લઈને
અન્તરાય કર્મ સુધીના સઘળા કર્મોનું વેદન કરવાવાળા જ હોય છે. અવેદક
હોતા નથી. ‘તે જાં મંતે ! જીવા કિં સાયાવેદગા અસાયાવેયગા’ હે ભગવન આ
કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશીપ્રમાણવાળા એકેન્દ્રિય જીવો શું સાતા વેદનીય કર્મનું વેદન
કરવાવાળા હોય છે ? અથવા અસાતા વેદનીય કર્મનું વેદન કરવાવાળા હોય છે ?
આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-‘ગોયમા ! સાયા વેદગા
વા અસાયા વેયગા વા’ હે ગૌતમ ! તેઓ સાતા કર્મનું વેદન કરવાવાળા
પણ હોય છે અને અસાતા કર્મનું વેદન કરવાવાળા હોય છે. ‘એવં ઉત્પલુદ્દેશગ
પરિવાહી’ આ રીતે ઉત્પલ ઉદ્દેશમાં જે પ્રમાણેની કર્મના વેદનની
પરિપાટી કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણેની પરિપાટી અક્રિયાં પણ
સમજવી. ‘સન્વેસિ’ કર્મણા ઉદર્દ’ આ જીવોને સઘળા કર્મોના ઉદય થાય છે.

ઉદીરકર્મકરણે - 'છપ્હં કસ્માણં ઉદીરગા નો અણુદીરગા' ષણ્ણાં વેદનીયાયુષ્ક-
વર્જનાં કર્મણાં જ્ઞાનાવરણીયાદીનાં નિયમાદુદીરકા એવ મવન્તિ ન તુ અનુદીરકા
મવન્તીતિ । કિન્તુ 'વેદણિજ્જાઝયાણં ઉદીરગા વા અણુદીરગા વા' વેદનીયકર્મણામ્
આયુષ્કર્મણાં ચોદીરકા વા મવન્તિ અનુદીરકા વા મવન્તીતિ તત્ર મજને
માત્રઃ । 'તે ણં મંતે ! જીવા કિં કપ્પહં પુચ્છા' તે સ્વલ્લ મદન્ત ! જીવાઃ કિં
કુષ્ણલેશ્યાવન્તો મવન્તિ અથવા-નીલકાપોતાદિલેશ્યાવન્તો મવન્તીતિ પ્રશ્નઃ
પૃચ્છયા સંગૃહ્યતે । મગધાનાહ- 'ગોયમા' ઇત્યાદિ, 'ગોયમા' હે ગૌતમ ! 'કપ્પ-
લેસ્સા વા' કુષ્ણલેશ્યા વા તે જીવાઃ કુષ્ણલેશ્યાવન્તોઽપિ મવન્તિ 'નીલલેસ્સા
વા કાઝલેસ્સા વા તેઽલેસ્સા વા' નીલલેશ્યા વા મવન્તિ કાપોતિકલેશ્યા વા,
મવન્તિ તેજોલેશ્યા વા મવન્તિ પૃથિવ્યપ્વનસ્પતીનામપર્યાપ્તાવસ્થાઽપેક્ષયા

પ્રકરણ ઐ યે- 'છપ્હં કસ્માણં ઉદીરગા નો અણુદીરગા' વેદનીય ઓર
આયુષ્ક કો છોડુકર શેષ જ્ઞાનાવરણીય આદિ છહ કર્મોં કે યે નિયમ
સે ઉદીરક હોતે હૈં અનુદીરક નહીં હોતે હૈં । કિન્તુ 'વેદનીય ઓર
આયુષ્ક કર્મોં કી ઉદીરણા ઇન મેં મજનીય હોની હૈં ઇસલિયે યે ઇનકે
ઉદીરક મી હોતે હૈં' ઓર ઉદીરક નહીં મી હોતે હૈં । યહી વાત-
'વેદણિજ્જાઝયાણં ઉદીરગાવા અણુદીરગા વા' ઇસ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ
કી ગઈ હૈં । 'તે ણં મંતે ! જીવા કિં કપ્પહં પુચ્છા' હે મદન્ત ! વે
જીવ કયા કુષ્ણલેશ્યાવાલે હોતે હૈં ? અથવા નીલકાપોત આદિ
લેશ્યાવાલે હોતે હૈં ? ઇસ કે ઉત્તર મેં પ્રમુશ્રી કહતે હૈં- 'ગોયમા !
કપ્પલેસ્સા વા, નીલલેસ્સા વા, કાઝલેસ્સા વા, તેઽલેસ્સા વા' હે
ગૌતમ ! યે કુષ્ણલેશ્યાવાલે મી હોતે હૈં, નીલલેશ્યાવાલે મી હોતે
હૈં, કાપોતલેશ્યાવાલે મી હોતે હૈં ઓર તેજોલેશ્યાવાલે મી હોતે હૈં ।

'નો અનુદર્શ' આ અનુદયવાળા હોતા નથી. ઉદીરણના પ્રકરણમાં આ 'છપ્હં
કસ્માણં ઉદીરગા નો અણુદીરગા' વેદનીય અને આયુષ્ય કર્મને છોડીને બાકીના
જ્ઞાનાવરણીય આદિ છ કર્મોના નિયમથી ઉદીરક હોય છે. અનુદીરક હોતા
નથી પરંતુ વેદનીય અને આયુષ્ય કર્મોની ઉદીરણ આમાં ભજનાથી હોય છે.
એજ વાત 'વેદણિજ્જાઝયાણં ઉદીરગાવા અણુદીરગાવા' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ
કરેલ છે. 'તેણં મંતે ! જીવા કિં કપ્પહં પુચ્છા' હે ભગવન્ તે જીવે શું કુષ્ણલેશ્યા-
વાળા હોય છે ? અથવા નીલલેશ્યાવાળા અથવા કાપોત વિગેરે લેશ્યા-
વાળા હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે- 'ગોયમા ! કપ્પ-
લેસ્સા વા, નીલલેસ્સ વા, કાઝલેસ્સા વા, તેઽલેસ્સા વા' હે ગૌતમ !
તે કુષ્ણલેશ્યાવાળા પણ હોય છે, નીલલેશ્યાવાળા પણ હોય છે, કાપોતિક
લેશ્યાવાળા પણ હોય છે, અને તેજોલેશ્યાવાળા પણ હોય છે. કેમ કે-પૃથ્વી,

તત્ર દેવાનામુત્પત્તિ સમ્ભવાદ્ ઇતિ । ‘નો સમ્મદિટ્ઠી’ તે જીવાઃ સમ્મદૃષ્ટયો ન ભવન્તિ તથા—‘નો સમ્મામિચ્છાદિટ્ઠી’ નો સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટયો મિથ્રદૃષ્ટયોઽપિ ન ભવન્તિ અપિતુ—‘મિચ્છાદિટ્ઠી’ મિથ્યાદૃષ્ટયો ભવન્તિ તે જીવાઃ । ‘નો નાણી અન્નાણી’ નો જ્ઞાનિનો ભવન્તિ તે જીવાઃ કિન્તુ અજ્ઞાનિનો ભવન્તિ તત્રાપિ ‘નિયમં દુઅન્નાણી નિયમા’ નિયમાદ્ અજ્ઞાનદ્વયવન્તો ભવન્તિ, તદેવ દર્શયતિ—‘તં જહા’ તદ્વથા ‘મહ અન્નાણીય સુય અન્નાણી ય’ સત્યજ્ઞાનિનશ્ચ ભવન્તિ તથા શ્રુતાજ્ઞાનિનશ્ચ ભવન્તિ । ‘ળો મળોજોગી ણો વહ્જોગી’ નો મનોયોગિનો ભવન્તિ નો ન વા, વચોયોગિનો ભવન્તિ । કિન્તુ ‘કાયજોગી’ કેવલં કાયયોગિન एव ભવન્તિ । ‘સાગારોવડત્તા વા અગારોવડત્તા વા, સાકારોયયોગવન્તા વા ભવન્તિ

क्योंकि पृथिवी, अप् और वनस्पतिकायिकों को अपर्याप्तावस्था में इन लेश्याओं का सद्भाव कहा गया है । इस का कारण यह है कि इनमें देवों की उत्पत्ति का सम्भव है । ‘नो सम्मदिट्ठी’ ये जीव सम्मदृष्टि नहीं होते हैं तथा—‘नो सम्मामिच्छादिट्ठी’ मिथ्र दृष्टि भी नहीं होते हैं किन्तु ‘मिच्छादिट्ठी’ मिथ्यादृष्टि होते हैं । ‘नो नाणी अन्नाणी’ ये ज्ञानी नहीं होते हैं । किन्तु अज्ञानी ही होते हैं, इनमें भी ‘नियमं दुअन्नाणी’ इस के दो अज्ञान नियम से होते हैं ‘त जहा’ जैसे ‘मह अन्नाणी य सुय अन्नाणी य’ नियम से सत्यज्ञान और श्रुताज्ञान ऐसे ये दो ही ज्ञान होते हैं ‘णो मणोजोगी, णो वह्जोगी’ इसी प्रकार से इन में केवल एक स्पर्शन इन्द्रिय होने से ये मनोयोगी और वचनयोगी नहीं होते हैं किन्तु ‘कायजोगी’ काययोगी ही होते हैं ‘सागारोवडत्ता वा अणगारोवडत्ता वा’ ये

અધ્યાયિક, અને વનસ્પતિકાયિકોને અપર્યાપ્ત અવસ્થામાં આ લેશ્યાઓનો સદ્-ભાવ કહેવામાં આવેલ છે તેનું કારણ એ છે કે—તેઓમાં દેવોની ઉત્પત્તિને સંભવ હોય ‘નો સમ્મદિટ્ઠી’ આ જીવો સમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા હોતા નથી ‘નો સમ્મામિચ્છાદિટ્ઠી’ મિથ્ર દૃષ્ટિવાળા પણ હોતા નથી પરંતુ ‘મિચ્છાદિટ્ઠી’ મિથ્યાદૃષ્ટિવાળા હોય છે. ‘નો નાણી’ તેઓ જ્ઞાની હોતા નથી. ‘અન્નાણી નિયમા’ પરંતુ તેઓ નિયમથી અજ્ઞાની જ હોય છે. તેમાં પણ તેઓ ‘નિયમ દુઅન્નાણી’ મતિઅજ્ઞાન અને શ્રુતઅજ્ઞાન એ રીતે એજ અજ્ઞાનોવાળા નિયમથી હોય છે. એજ વાત સૂત્રકાંદે ‘મહ અન્ન ણીય સુયઅન્નોણી’ આ સૂત્રપાઠ દ્વારા સમજાવી છે. ‘ળો મળોજોગી, ણોવહ્જોગી’ એજ રીતે તેઓમાં કેવળ એક સ્પર્શન ઇન્દ્રિય હોવાથી મનો યોગવાળા અને વચન યોગવાળા હોતા નથી પરંતુ ‘કાયયોગી’ તેઓ કાયયોગવાળા જ હોય છે. ‘સાગારોવડત્તાવા અણગારોવડત્તાવા’ તેઓ

અનાકારોપયોગયુક્તા વા ભવન્તીતિ 'તેસિં ણં મંતે ! જીવાણં સરીરા-
કઙ્કણા' તેષાં સ્વસ્થ પુચ્છા' યથોત્પલોદેશકે તથા સર્વત્ર પૃચ્છા-પ્રશ્નઃ, અયં
ભાવઃ-હે ભદન્ત ! તેષાં જીવાણાં શરીરાણિ કાલાદિવર્ણવન્તિ ભવન્તિ કિમ્
एवं क्रमेण विशिष्य पञ्चवर्णविषये प्रश्नः करणीय इति । भगवानाह-'गोयमा'
इत्यादि, गोयमा' हे गौतम ! 'जहा उत्पल्लुद्देसए' यथा उत्पल्लोद्देशके वर्णविषये
कथितं तथैवेहापि ज्ञातव्यम्, तथाहि-तेषां जीवानां शरीराणि पञ्चवर्णयुक्तानि
भवन्ति-पञ्चवर्णवन्ति भवन्ति द्विविधगन्धवन्ति भवन्ति, अष्टप्रकारकस्पर्शवन्ति
भवन्तीति । तथा-'ऊसासगा वा' ते जीवा उच्छ्वासवन्तो भवन्ति 'नीसासगा वा'
ते जीवा निःश्वासवन्तोऽपि भवन्ति 'नो ऊसासनीसासगावा' तथा-उच्छ्वास

સાકારોપયુક્ત બી હોતે હૈં ઓર અનાકારોપયુક્ત બી હોતે હૈં । 'તેસિં ણં
મંતે ! જીવાણં સરીરા કઙ્કણા' હે ભદન્ત ! इन जीवों के शरीर
કિતને વર્ણો વાલે હોતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં- 'જહા ઉપ્પલ્લુદેસए
સ્વસ્થ પુચ્છા' હે ગૌતમ ! इन जीवों के शरीर उत्पल्लोद्देशक में कहे
ગયે અનુસાર કાલ આદિ વર્ણવાલે હોતે હૈં । अर्थात् वहाँ पांच वर्णों के
વિષય મેં ગૌતમસ્વામીને પ્રભુશ્રી સે પ્રશ્ન કિયા હૈ-તબ પ્રભુશ્રીને ગૌતમ
સે એસા હી કહા હૈ હે ગૌતમ ! उत्पल्लोद्देशक में वर्ण के विषय में जैसा
કહા ગયા હૈ વૈસા હી યહાં પર બી જાનના ચાહિયે । तथा च-उनके
શરીર પાંચ વર્ણો સે યુક્ત હોતે હૈં । दो गंधवाले होते हैं । आठ प्रकार
કે સ્પર્શ વાલે હોતે હૈં । तथा ये जीव 'ऊसासगा वा, नीसागा वा'
ઉચ્છવાસ વાલે બી હોતે હૈં ઓર નિઃશ્વાસવાલે બી હોતે હૈં ઓર 'नो

સાકાર ઉપયોગવાળા પણ હોય છે. અને અનાકાર ઉપયોગવાળા પણ હોય છે.
'તેસિં ણં મંતે ! જીવાણં સરીરા કઙ્કણા' હે ભગવન્ તે જીવોના શરીરો કેટલા-
વર્ણવાળા હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે- 'જહા ઉપ્પલ્લુદેસए
સ્વસ્થ પુચ્છા' હે ગૌતમ ! આ જીવોના શરીરો ઉત્પલ્લોદેશમાં કહેવામાં આવ્યા
પ્રમાણેકાળા વિગેરે વર્ણવાળા હોય છે. અર્થાત્ ત્યાં પાંચ વર્ણોના સંબંધમાં
ગૌતમસ્વામીને પ્રભુશ્રીને પ્રશ્ન કરેલ છે, ત્યારે પ્રભુશ્રીએ ગૌતમસ્વામીને એવું જ કહ્યું
છે, કે હે ગૌતમ ! ઉત્પલ્લુદેશમાં વર્ણના સંબંધમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં
આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન અહિયાં પણ સમજવું. तथा-તેઓના
શરીરો પાંચ વર્ણવાળા હોય છે, તથા તે જીવો 'ऊसासगा वा, नीसासगा वा,
उच्छ्वासवाणा પણ હોય છે, અને નિઃશ્વાસવાળા પણ હોય છે, 'नो ऊसास

નિઃશ્વાસવન્તઃ અપર્યાપ્તાવસ્થાયાં વા ભવન્તિ । ‘આહારગા વા અણાહારગા વા’ તે જીવા આહારકા વા, ભવન્તિ તથા અનાહારકા વા વિગ્રહમમયાપેક્ષયા ભવન્તિ । ‘નો વિરયા’ નો વિરતાઃ સર્વવિરતિમંતો વા ન ભવન્તિ । ‘અવિરયા’ અવિરતાઃ સર્વવિરતિ રહિતા ભવન્તિ, ‘નો વિરયાવિરયા વા’ નો વિરતાઽવિરતા વા દેશવિરતા અપિ ન ભવન્તિ । ‘સક્રિરયા’ સક્રિયાઃ ક્રિયા સહિતા એવ ભવન્તિ । ‘નો અક્રિરયા’ નો અક્રિયાઃ ક્રિયારહિતા ન ભવન્તિ । ‘સત્તવિહવંધગા વા અદ્વિહવંધગા વા’ આયુર્વર્જનાં સપ્તવિધકર્મણાં વન્ધકા વા ભવન્તિ અષ્ટવિધકર્મણાં વન્ધકા વા ભવન્તિ । ‘આહારસન્નો વડ્ડતા વા જાવ પરિગ્રહસન્નોવડ્ડતાવા’ આહારસંજ્ઞોપયુક્તા વા ભવન્તિ યાવત્પરિગ્રહ-
ડસાસનીસાસગા વા’ નો ઉચ્છવાસ નિઃશ્વાસવાલે ભી હોતે હૈં । હાં અપર્યાપ્તાવસ્થા મૈં હન કે ઉચ્છવાસ નિઃશ્વાસ નહીં હોતે હૈં । હસલિયે ડસ અવસ્થા મૈં હનસે રહિત હોતે હૈં । અર્થાત્ ઉચ્છાસ નિઃશ્વાસ સે રહિત હોતે હૈં । ‘આહારગા વા અણાહારગાવા’ યે જીવ આહારક ભી હોતે હૈં ઓર અનાહારક ભી હોતે હૈં । યહાં અનાહારકતા વિગ્રહ ગતિકી અપેક્ષા સે કહી ગઈ હૈં ઁસા જાનના ચાહિયે । ‘નો વિરયા’ યે સર્વ વિરતિ સમ્પન્ન નહીં હોતે હૈં । કિન્તુ ‘અવિરયા’ સર્વ વિરતિ સે રહિત હી હોતે હૈં । હસી પ્રકાર સે યે ‘નો વિરયાવિરયા’ દેશવિરતિ સે ભી સહિત નહીં હોતે હૈં ‘સક્રિરયા, નો અક્રિરયા’ યે ક્રિયાવાલે હી હોતે હૈં અક્રિયાવાલે નહીં હોતે હૈં । ‘સત્તવિહ વંધગા વા અદ્વિહ વંધગા વા’ આયુ કો ઓડકર ડોષ સાનોં કર્મ પ્રકૃતિયોં કે ભી વન્ધક હોતે હૈં ઓર આઠોં કર્મ પ્રકૃતિયોં કે ભી વન્ધક હોતે હૈં । ‘આહારસન્નોવડ્ડતા

નીસાસગાવા’ ઉચ્છવાસ નિઃશ્વાસ વિનાના હોતા નથી કેવળ અપર્યાપ્ત અવસ્થામાં તેઓને ઉચ્છવાસ નિઃશ્વાસ હોતા નથી. તેઓ એ અવસ્થામાં ઉચ્છવાસ નિઃશ્વાસ વિનાના હોય છે. ‘આહારગા વા અણાહારગા વા’ તે એવો આહારક પણ હોય છે અને અનાહારક પણ હોય છે. અહિયાં અનાહારક પણ વિગ્રહ ગતિની અપેક્ષાથી કહેલ છે. તેમ સમજવું ‘નો વિરયા’ તેઓ સર્વ વિરતિ વાળા હોતા નથી. પરંતુ ‘અવિરયા’ સર્વ વિરતિ વિનાના હોય છે. એજ પ્રમાણે ‘નો વિરયાવિરયા’ તેઓ દેશવિરતિવાળા પણ હોતા નથી. સક્રિરયા, નો અક્રિરયા’ તેઓ ક્રિયાવાળા જ હોય છે, અક્રિયાવાળા હોતા નથી. ‘સત્તવિહવંધગા વા અદ્વિહવંધગા વા’ આયુ કર્મ પ્રકૃતિને ઓડીને ઓડીની સાથે કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધકરવાવાળા હોય છે. અને આઠે કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરવાવાળા પણ હોય છે. ‘આહારસન્નોવડ્ડતા વા જાવ પરિગ્રહસન્નોવડ્ડતા

સંજોપયુક્તા વા ભવન્તિ યાવત્પદેન મયમૈથુનસંજ્ઞયોઃ પરિગ્રહો ભવતિ । ‘કોહકસાઈ વા માળકસાઈ વા જાવ લોમકસાઈ વા’ ક્રોધકષાયિનો વા માનકષાયિનો વા યાવત્લોમકષાયિનો વા ભવન્તિ તે જીવાઃ યાવત્પદેન માયાકષાયકષાયસ્ય ગ્રહણં ભવતીતિ । ‘નો ઇત્થિવેયગા નો પુરિસવેયગા’ નો સ્ત્રીવેદકા નો વા પુરુષવેદકાસ્તે જીવા ભવન્તિ કિન્તુ ‘નપુ સગવેયગા’ નપુ સકવેદકાસ્તે જીવા ભવન્તિ । ‘ઈત્થિવેયવંધગા વા, પુરિસવેયવંધગા વા, નપુ સગવેયવંધગા વા’ સ્ત્રીવેદવંધકા વા ભવન્તિ પુરુષવેદવંધકા વા ભવન્તિ નપુ સકવેદવંધકા વા ભવન્તિ સ્વયં કેવલં નપુ સકવેદવંધકા સન્તોઽપિ વંધકારતુ ત્રયાણામપિ વેદાનાં ભવન્તીતિ ભાવઃ ‘નો સન્ની’ નો સંજ્ઞિતઃ અપિતુ ‘મસન્ની’ અસંજ્ઞિતસ્ય જીવા ભવન્તિ । ‘સઈંદિયા’ સેન્દ્રિયાઃ સ્પર્શને-

વા જાવ પરિગ્રહસન્નોચત્તા વા’ યે આહારસંજોપયુક્ત યાવત્ પરિગ્રહ સંજોપયુક્ત હોતે હૈં । યાવત્પદ સે ‘મયસંજ્ઞા’ ઓર મૈથુન સંજ્ઞા’ હન દો સંજ્ઞાઓં કા ગ્રહણ હુઆ હૈં । યે ‘કોહકસાઈ વા માળકસાઈ વા જાવ લોમકસાઈ વા’ ક્રોધ કષાયવાલે ભી હોતે હૈં, માનકષાયવાલે ભી હોતે હૈં માયાકષાયવાલે ભી હોતે હૈં । ‘નો ઇત્થિવેયગા, નો પુરિસવેયગા’ યે સ્ત્રીવેદવાલે ઓર પુરુષવેદવાલે નહીં હોતે હૈં કિન્તુ ‘નપુસંગવેયગા’ એક નપુસકવેદવાલે હી હોતે હૈં । ‘ઈત્થિવેયવંધગા વા પુરિસવેયવંધગા વા નપુસંગવેયવંધગા વા’ યે સ્ત્રીવેદ કે વંધક ભી હોતે હૈં, પુરુષ વેદ કે ભી વંધક હોતે હૈં ઓર નપુસકવેદ કે ભી વંધક હોતે હૈં, યદ્યપિ યે સ્વયં એક નપુસક વેદવાલે હી હોતે હૈં પરન્તુ ફિર ભી વંધક તીનોં વેદોં કે હોતે હૈં । ‘નો સન્ની’ યે સંજ્ઞી નહીં હોતે હૈં । કિન્તુ

વા’ તેઓ અહાર સંજોપયુક્ત યાવત્ પરિગ્રહ સંજોપયુક્ત હોય છે. અહિયાં યાવત્ પદથી “ભય સંજ્ઞા અને મૈથુન સંજ્ઞા આ બે સંજ્ઞાઓ ગ્રહણ કરાઈ છે. ‘કોહકસાઈ વા માળકસાઈ વા જાવ લોમકસાઈ વા’ તેઓ ક્રોધકષાયવાળા પણ હોય છે, માનકષાયવાળા પણ હોય છે, માયાકષાયવાળા પણ હોય છે. અને યાવત્ લોમકષાયવાળા પણ હોય છે. ‘નો ઇત્થિવેયગા, નો પુરિસવેયગા’ તેઓ સ્ત્રી વેદવાળા અથવા પુરુષવેદવાળા હોતા નથી. પરંતુ ‘નપુસંગવેદગા’ એક નપુસકવેદવાળા જ હોય છે. ‘ઈત્થિવેયવંધગા પુરિસવેયવંધગાવા’ નપુસંગવેદવંધગાવા’ તેઓ સ્ત્રી વેદનો બંધ કરવાવાળા પણ હોય છે, પુરુષવેદનો બંધ કરવાવાળા પણ હોય છે. અને નપુસક વેદનો બંધ કરવાવાળા પણ હોય છે. બે કે આ સ્વયં એક નપુસક વેદવાળા જ હોય છે. પરંતુ તેઓ ત્રણ વેદનો બંધ કરવાવાળા હોય છે. ‘નો સન્ની’ તેઓ સંજ્ઞી હોતા નથી. પરંતુ ‘અસન્ની’ અસંજ્ઞી જ હોય છે. ‘સઈંદિયા, નો અર્ણિદિયા’ તેઓ સ્પર્શન ઈન્દ્રિયો સહિત જ હોય છે, ઈન્દ્રિયો રહિત હોતા નથી.

ન્દ્રિયવન્તો ભવન્તિ 'નો અર્ણિદિયા:—ઇન્દ્રિયરહિત ન ભવન્તિ । 'તે ણં મંતે ! કઢજુમ્મ
 ઇર્ણિદિયા કાલઓ કેવલચ્ચિરં હોતિ' તે સ્વલુ ભદન્ત ! કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મકેન્દ્રિયા:
 કાલતઃ કિયચ્ચિરં ભવન્તિ ? इति प्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा'
 हे गौतम । 'जहन्नेणं एकं समयं' जघन्येनैकं समयम् 'उक्कोसेणं' अणंतं कालं
 अणंवा उत्सर्पिणी ओसर्पिणीओ' उत्कर्षेणानन्तं कालमनन्ता उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यः
 'वणस्सइकाइयकालो' वनस्पतिकायिककालः । 'संवेहो न भण्णइ' अत्र संवेधो न
 भण्यते उत्पलोद्देशके उत्पलजीवस्योत्पादो विरक्षितः तत्र च पृथिवीकायिकादिका-
 यान्तरापेक्षया कायसंवेधः संभवति इह तु एकेन्द्रियाणां कृतयुगमकृतयुगम विशेषा-

'असन्ની' અસજી હી હોતે હૈં । 'સહંદિયા નો અર્ણિદિયા' ચે સેન્દ્રિય
 સ્પર્શન ઇન્દ્રિય સહિત હી હોતે હૈં, ઇન્દ્રિય રહિત નહીં હોતા હૈં ।

'તે ણં મંતે ! કઢજુમ્મકઢજુમ્મ ઇર્ણિદિયા કાલઓ કેવલચ્ચિરં હોતિ'
 હે ભદન્ત ! ચે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિ પ્રમિત એકેન્દ્રિય જીવ કાલ કી
 અપેક્ષા સે કવ તરુ રહતે હૈં ! ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં !—'ગોયમા
 જહન્નેણં' એકકં સમયં ઉક્કોસેણં અણંતં કાલં' હે ગૌતમ । ચે જઘન્ય
 સે તો એક સમય તક રહતે હૈં' ઔર ઉત્કૃષ્ટ સે અનન્તકાલ તક રહતે
 હૈં । હસ અનન્તકાલ મેં અનન્ત ઉત્સર્પિણી ઔર અનન્ત અવસર્પિણી
 સમાજાતી હૈં । એસા યહ કથન 'વણસ્સહકાઈય કાલો' વનસ્પતિ
 કાયિક કે કાલ કી અપેક્ષા સે કહા ગયા જાનના ચાહિયે । 'સંવેહો ન
 ભણ્ણઈ' યહાં સંવેધ નહીંકહના હૈં । ક્યોંકિ ઉત્પલ ઉદ્દેશક મેં ઉત્પલ
 કે જીવ કા ઉત્પાદ વિવક્ષિત હુઆ હૈં ઔર વહ ઉત્પલ જીવ પૃથિવી
 આદિ અન્યકાયિક મેં ઉત્પન્ન હોકર ફિર સે વહી ઉત્પન્ન હો જાતે હૈં

'તે ણ મંતે ! કઢજુમ્મકઢજુમ્મ ઇર્ણિદિયા કાલઓ કેવલચ્ચિરં હોતી' હે ભગવન્ આ
 કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મરાશી પ્રમિત એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો કાળની અપેક્ષાથી ક્યાં
 સુધી રહે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'ગોયમા ! જહન્નેણં
 એક સમયં' 'ઉક્કોસેણં' અણંતં કાલં' હે ગૌતમ ! આ જઘન્યથી તો એક સમય
 સુધી રહે છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી અનંતકાળ સુધી રહે છે આ અનંતકાળમાં
 અનંત ઉત્સર્પિણી અને અનંત અવસર્પિણી સમાઈ જાય છે. એ પ્રમાણેતુ
 આ કથન 'વણસ્સહકાઈય કાલો' વનસ્પતિકાયિકના કાળની અપેક્ષાથી કહ્યાનું જાણવું
 જોઈએ 'સંવેહો ન ભણ્ણઈ' અહિયાં સંવેધ કહેવાનો નથી. કેમ કે—ઉત્પલ
 ઉદ્દેશમાં જીવનો ઉત્પાદ વિવક્ષિત થયેલ છે, અને તે ઉત્પલ જીવ પૃથ્વી
 વિગેરે અન્ય કાયિકોમાં ઉત્પન્ન થઈને ફરિથી ત્યાં જ ઉત્પન્ન થઈ જાય છે.
 તેથી ત્યાં કાયસંવેધ બની જાય છે. પરંતુ અહિયાં કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મરાશિ

ળામુખ્યાદોઽધિકૃતઃ તે ચૈકેન્દ્રિયા વસ્તુતોઽનન્તા એવોત્પદ્યન્તે તેણાં ચોદ્વૃત્તેર સંભવાત્ કાયસંવેધો ન સંભવતિ । યથ્વ પોડશાદીના મેકેન્દ્રિયેપૂપપાતઃ કથિતઃ સ ચ ત્રસકાયિકેભ્યો યે એકેન્દ્રિયેપૂત્પદ્યન્તે તદપેક્ષ એવ, ન પુનઃ પારમાર્થિકઃ અનન્તાનાં પ્રતિસમયં તેપૂત્પાદાદિતિ । ‘આહારો જહા ઉપ્પલુદ્દેસણ’ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મેકેન્દ્રિયાળામાહારો યથા ઉત્પલોદ્દેશકે કથિતસ્તથૈવાત્રાપિ જ્ઞાતવ્યઃ । ‘નવરં નિવ્વાધાણં છદ્ધિસિ’ નવરં કેવલમ્ ઉત્પલોદ્દેશકાપેક્ષયા इदं वैलक्षण्यं યત્ નિર્વ્યાધાતેન યદિ કશ્ચિત્પ્રતિબન્ધકો ન ભવેત્ તદા પઢ્ઢિશમ્ પઢ્ઢિગ્મ્ય આહારગ્રહણં કુર્વન્તીતિ । ‘વાધાયં પડુચ્ચ સિય તિદિસિ’ વ્યાધાતં પ્રતીત્ય સ્યાત્

હસલિયે વહાં કાય સંવેધ બનજાતા હૈ પર યહાં કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ રાશિ- પ્રમિત એકેન્દ્રિયોંકા ઉત્પાદ અધિકૃત હૈ । યે એકેન્દ્રિય વસ્તુતઃ અનન્ત રૂપ સેં ઉત્પન્ન હોતે હૈં ઓર યે ફિર સે નિકલ કર પુનઃ વહીં પર ઉત્પન્ન હોવેં તો હનકા કાય સંવેધ બન સકતા હૈ પર હનકા વહાં સે નિકલના અસંભવ હૈ અતઃ કાયસંવેધ નહીં બનતા હૈ પોડશ રાશિપ્રમિત જીવોં કા જો એકેન્દ્રિય જીવોં મેં ઉત્પાત કહા ગયા હૈ વહ જો ત્રસકાયિક સે આકર કે વહાં ઉત્પન્ન હોતે હૈં ઉસ અપેક્ષા સે કહા ગયા હૈ । પર વહ વાસ્તવિક ઉત્પાદ નહીં કારણ કિ એકેન્દ્રિયોં મેં અનન્ત જીવોં કા ઉત્પાદ હોતા હૈ । ‘આહારો જહા ઉપ્પલુદ્દેસણ’ કૃત યુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિયોં કા આહાર જૈસા ઉત્પલ ઉદ્દેશક મેં કહા ગયા હૈ વૈસા હી યહાં પર ઓ જાનના ચાહિયે ‘નવરં નિવ્વાધાણં છદ્ધિસિ’ પરન્તુ વદાં કો અપેક્ષા યહાં કેવલ હતની સી વિશેષતા હૈ કિ યદિ કોઈ પ્રતિબન્ધ નહીં હોતા હૈ તો યે છહોં દિશાઓં સે આહાર ગ્રહણ

પ્રમિત એકેન્દ્રિયોના ઉપપાતનો અધિકાર કહેલ છે. આ એકેન્દ્રિયો વસ્તુતઃ અનંતપણુથી ઉત્પન્ન થાય છે. અને તે દ્વિતી ત્યાંથી નીકળીને દ્વિતી ત્યાં જ ઉત્પન્ન થાય તો તેઓનો કાયસંવેધ બની શકે છે. પરંતુ ત્યાંથી તેઓનું નીકળવું અસંભવ થાય છે. તેથી કાયસંવેધ બનતો નથી. સોળરાશી પ્રમિત જીવોનો જે એકેન્દ્રિય જીવોમાં ઉત્પાત કહેલ છે, તે ત્રસકાયિકથી આવીને ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે તે અપેક્ષાથી કહેલ છે પરંતુ તે વાસ્તવિક ઉત્પાત નથી કારણ કે-એકેન્દ્રિયોમાં અનંત જીવોનો ઉત્પાદ થાય છે. ‘આહારો જહા ઉપ્પલુદ્દેસણ’ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિયોનો આહાર જે પ્રમાણે ઉત્પલ ઉદ્દેશમાં કહેલ છે, એ જ પ્રમાણે અહિયાં પણ સમજવો ભેદ છે. ‘નવરં નિવ્વાધાણં છદ્ધિસિ’ પરંતુ ત્યાંના કથન કરતાં અહિયાં કેવળ એટલું જ વિશેષપણું છે કે-જો કોઈ પ્રતિબંધ ન હોય તો આ છએ દિશાઓમાંથી

કદાચિત્ ત્રિદિશમ્ 'સિય ચડદિસિ' સ્પાત્ કદાચિત્ ચતુર્દિશમ્ 'સિય પંચદિસિ' સ્પાત્ કદાચિત્ પશ્ચદિશમ્ 'સેસં તહેવ' શેપમ્ એતદ્ વ્યતિરિક્તં સર્વં તથૈવ ઉત્પલોદ્દેશકવદેવ જ્ઞાતવ્યમ્ ઇતિ । ઠિઈ જહન્નેણં અંતોમુહુત્તં' રિથતિર્જઘન્યેનાન્ત-મુહૂત્તં તેષામેકેન્દ્રિયાણામ્ 'ઉવકોસેણં વાવીસ વાસસહસ્સાઈ' ઉત્કર્ષેણ દ્વાવિ-શતિવર્ષસહસ્રાણિ । 'સમુગ્ધાયા આદિલ્લા ચત્તારિ' સમુદ્ધાતા આઘાત્સ્ત્વારઃ વેદનાકપાયમારણાન્તિકૃત્તૈક્રિયાભ્યાઃ । 'મારણાંતિયસમુગ્ધાણં સમોહયા વિ મરંતિ અસમોહયા વિ મરંતિ' તે કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મેકેન્દ્રિયજીવા મારણાન્તિક સમુ-દ્ધાતેન સમવહતા અપિ મ્રિયન્તે અસમવહતા અપિ મ્રિયન્તે । 'ઉવ્વટ્ટુણા જહા

કરતે હૈં 'વાઘાય' પહુચ્ચ સિય તિદિસિ' ઔર યદિ પ્રતિબન્ધ હોતા હૈ તો યે કદાચિત્ ત્રીન દિશાઓં સે 'સિય ચડદિસિ' કદાચિત્ ચાર દિશાઓં સે 'સિય પંચદિસિ' કદાચિત્ પાંચ દિશાઓં સે આહાર ગ્રહણ કરતે હૈં । 'સેસં તહેવ' વાકી કા ઔર સબ કથન ઉત્પલ ઉદ્દેશક કે જૈસા હી હૈ । 'ઠિઈ જહન્નેણં અંતો મુહુત્તં' ઉવકોસેણ વાવીસ વાસસહ-સ્સાઈ' इनकी स्थिति जघन्य से अन्तर्मुहूर्त की होनी है और उत्कृष्ट से २२ हजार वर्ष की होती है । 'समुगधाया आदिल्ला चत्तारि समुद्घात इनके आदि के चार होते हैं—वेदनासमुद्घात, कपायसमुद्घात, मारणान्तिकसमुद्घात और वैक्रियसमुद्घात 'मारणांतिय समुगधाएणं समोहया वि मरंति असमोहया वि मरंति' ये मारणान्तिकसमुद्घात कर के भी मरते हैं और बिना मारणान्तिक समुद्घात के भी मरते हैं 'उव्वट्टुणा जहा उपप्लुद्देसए' इन कृतयुग्मकृतयुग्म एकेन्द्रिय जीवों की उद्धर्तना उत्पल उद्देशक में कही गई के अनुसार ही जाननी चाहिये ।

આહાર ગ્રહણ કરે છે. 'વાઘાય' પહુચ્ચ સિય તિદિસિ' અને ત્રે પ્રતિબન્ધ હોય તો તેઓ કદાચિત્ ત્રણ દિશાઓમાંથી સિય ચડદિસિ' કે.ઇ.વાર ચાર દિશાઓથી 'સિય પંચદિસિ' કે.ઇ.વાર પાંચ દિશાઓમાંથી આહાર ગ્રહણ કરે છે 'સેસં તહેવ' બાકીનું બીજુ તમામ કથન ઉત્પલ ઉદ્દેશમાં કહ્યા પ્રમાણે જ છે 'ઠિઈ જહન્નેણં અંતોમુહુત્તં' ઉવકોસેણ વાવીસ વાસસહસ્સાઈ' તેઓની સ્થિતિ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની હોય છે અને ઉત્કૃષ્ટથી ૨૨ બાવીસ હજારવર્ષની હોય છે 'સમુગ્ધાયા આદિલ્લા ચત્તારિ' તેઓને આદિના ચાર સમુદ્ધાતો હોય છે તે આ પ્રમાણે છે. વેદના સમુદ્ધાત કપાય સમુદ્ધાત મારણાન્તિક સમુદ્ધાત, અને વૈક્રિય સમુદ્ધાત 'મારણાંતિયસમુગ્ધાણં' સમોહયા વિ મરંતિ અસમોહયા વિ મરંતિ' તેઓ મારણાન્તિક સમુદ્ધાત કરીને પણ મરે છે અને મારણાન્તિક સમુદ્ધાત કર્યા વિના પણ મરે છે. ઉવ્વટ્ટુણા જહા ઉપ્પલુદ્દેસए' આ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશીવાળા એકેન્દ્રિય જીવોની ઉદ્ધર્તના ઉત્પલ ઉદ્દેશમાં કહેલ છે, તે પ્રમાણે સમજવી.

ઉપલુદ્દેસ' એપામેકેન્દ્રિય જીવાનામુદ્વર્તના યથા ઉત્પલોદ્દેશકે કથિતા તથૈવ જ્ઞાતવ્યા । 'અહ ણં મંતે ! સવ્વપાણા જાવ સવ્વ સત્તા કહજુમ્મ કહજુમ્મ ઇમિદિય-સાણ ઉવવન્નપુવ્વા' અથ સ્વલ્લ મદન્ત ! સર્વે પ્રાણાઃ સર્વેભૂતાઃ સર્વેજીવાઃ સર્વે સત્ત્વાઃ કિં કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મૈકેન્દ્રિયસ્વરૂપેણ ઉત્પન્નપૂર્વા.પૂર્વે સમુત્પન્નાઃ કિનિતિ પ્રશ્નઃ મગવાનાહ—'હંતા' इत्यादि, 'हंता गोयमा !' हन् गौतम ! पूर्वे समुत्पन्नाः ते पुनरेकवारं नेत्याह—'असइं अहुवा अणंतखुत्तो' असकृत् अनेकवारम् एतावदेव न अपितु अनन्तकृत्वाः अनन्तवारं पूर्वं ते तत्र समुत्पन्ना आसन् इति ॥सू० २॥

इति षोडश महायुग्मेषु कृतयुग्म कृतयुग्मैकैन्द्रियाणां प्रथमपद्यायुगमवक्तव्यता समाप्ता ॥१॥

‘અહ ણં મંતે ! સવ્વપાણા, જાવ સવ્વસત્તા કહજુમ્મકહજુમ્મ ઇમિદિયસાણ ઉવવન્નપુવ્વા’ હે મદન્ત ! સમસ્ત પ્રાણ યાવત્ સમસ્ત સત્ત્વ કયા પહિલે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિય રૂપ સે ઉત્પન્ન હો ચુકે હૈ ? યહાં યાવત્ પદસે સમસ્ત ભૂત ઓર સમસ્ત જીવ હન પદોંકા ગ્રહણ હુઆ હૈ । ઉત્તરમેં પ્રભુશ્રી કહતે હે—‘હંતા ગોયમા’ હાં ગૌતમ ! સમસ્ત પ્રાણ સમસ્ત ભૂત સમસ્ત જીવ ઓર સમસ્ત સત્ત્વ પહિલે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિ-પ્રમિત એકેન્દ્રિય જીવોં કી પર્વાય સે ઉત્પન્ન હો ચુકે હૈ । ‘અસઈં અહુવા અણંતખુત્તો’ વે વહાં એક હી વાર ઉત્પન્ન હુઇ હોં સો વાત નહોં કિન્તુ અનેક વાર ઓર અનન્તવાર વહાં વે ઉત્પન્ન હુઇ હૈ ॥સૂ. ૨॥

કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિય જીવોંકી મહાયુગ્મ વક્તવ્યતા સમાપ્ત ॥

‘અહ ણં મંતે ! સવ્વપાણા, જાવ સવ્વસત્તા કહજુમ્મકહજુમ્મ ઇમિદિયસાણ ઉવવન્નપુવ્વા’ હે ભગવન્ સઘળા પ્રાણિયો યાવત્ સઘળા સત્ત્વે શું પહેલાં કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિય પશ્ચાત્થી ઉત્પન્ન થઈ ચૂક્યા છે ? અહિયાં યાવત્ પદથી ‘સઘળા જીવો અને સઘળા ભૂતો’ આ પદો અહુચ્ચ કરાયા છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—‘હંતા ગોયમા ! હા ગૌતમ ! સઘળા પ્રાણી સઘળા જીવો, સઘળા ભૂતો અને સઘળા સત્ત્વો પહેલાં કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોની પર્વાયથી ઉત્પન્ન થઈ ચૂક્યા છે ‘અસઈં અહુવા અણંતખુત્તો’ તેઓ ત્યાં એક જ વાર ઉત્પન્ન થયા હોય એવી વાત નથી પરંતુ અનેક વાર અને અનંતવાર તેઓ ત્યાં ઉત્પન્ન થયા છે. ॥સૂ. ૨॥

કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિય જીવોંકી મહાયુગ્મ વક્તવ્યતા સમાપ્ત

अथ शेष पञ्चदशभेदानाह—‘कडजुम्मतेओग’ इत्यादि

मूळम्—कडजुम्मतेओगएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति उववाओ तहेव । तेणं भंते ! जीवा एगसमएणं पुच्छा, गोयमा ! एगूणवीसा वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति, सेसं जहा कडजुम्माणं जाव अणंतखुत्तो २ । कडजुम्म दावर-जुम्मएगिंदियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? उववाओ तहेव । ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं० पुच्छा, गोयमा ! अट्टारस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा उववज्जंति सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो ३ । कडजुम्म कलियोग एगिंदियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति उववाओ तहेव । परिमाणं सत्तरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो ४ । तेओग कडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? उववाओ तहेव । परिमाणं वारस वा, संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति, सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो ५ । तेओग तेओग एगिंदियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति, उववाओ तहेव । परिमाणं पन्नरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो ६ । एवं एएसु सोलससु महाजुम्मेसु एक्को गमओ । नवरं परिमाणं णाणत्तं तेओगदावरजुम्मेसु परिमाणं चोदस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति ७ । तेओग कलिओगेसु तेरस वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति ८ । दावरजुम्म कडजुम्मेसु अट्ट वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति ९ । दावरजुम्म तेओगेसु एकारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति १० । दावर-

जुम्म दावरजुम्मेसु दसवा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता
 वा उववज्जंति ११। दावरजुम्म कलिओगेसु नव वा संखेज्जा
 वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति १२। कलिओग कड-
 जुम्मेसु चत्तारि वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा
 उववज्जंति १३। कलिओग तेओगेसु सत्त वा संखेज्जा वा असं-
 खेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति १४। कलिओग दावरजुम्मेसु
 छवा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति १५।
 कलिओगकलिओगे एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति ?
 उववाओ तहेव । परिमाणं पंच वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा
 अणंता वा उववज्जंति १६। सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो । सेवं
 भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥सू० ३॥

पणतीसइमे सए पढमो उद्देसो समत्तो ॥३५-१॥

छाया-कृतयुग्मत्र्योजैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते उपपातस्तथैव
 ते खलु भदन्त ! जीवा एकसमयेन पृच्छा० गौतम ! एकोनविंशति वा संख्येया
 वा असंख्येया वा, अनन्ता वा उत्पद्यन्ते शेषं यथा कृतयुग्मकृतयुग्मानां यावदनन्त-
 कृत्वः २। कृतयुग्म द्वापरयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते उपपातस्त-
 थैव । ते खलु भदन्त ! जीवा एकसमयेन पृच्छा, गौतम ! अष्टादश वा, संख्येया
 वा, असंख्येया वा, अनन्ता वा, उत्पद्यन्ते शेषं तथैव यावदनन्तकृत्वः ३ कृत-
 युग्म कलयोजैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? उपपातस्तथैव । परिमाणं
 सप्तदशवा संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्ता वोत्पद्यन्ते । शेषं तथैव यावदनन्त-
 कृत्वः ४। त्र्योज कृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? उपपातस्त-
 थैव । परिमाणं द्वादशवा, संख्येया वा, असंख्येया वा अनन्ता वोत्पद्यन्ते' शेषं
 तथैव यावदनन्तकृत्वः ५ त्र्योजत्र्योजैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते उप-
 पातस्तथैव परिमाणं पञ्चदशवा-संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्ता वा, शेषं
 तथैव यावदनन्तकृत्वः ६। एवमेतेषु षोडशसु महायुग्मेषु एको गमकः । नवरं परि-
 माणे नानात्वम्-त्र्योजद्वापरयुग्मेषु परिमाणं चतुर्दश वा, संख्येया वा असंख्येया
 वा, अनन्तावोत्पद्यन्ते ७। त्र्योजकलयोजेषु त्रयोदश वा, संख्येया वा असंख्येया वा,

अनन्ता वोत्पद्यन्ते ८ द्वापरयुगकृतयुग्मेषु अष्टौ वा-संख्येया वा, असंख्येया वा,
अनन्तावोत्पद्यन्ते ९ द्वापरयुग त्रयोजेषु एकादश वा, संख्येया वा, असंख्येया वा,
अनन्तावोत्पद्यन्ते १० द्वापरयुग द्वापरयुग्मेषु दश वा संख्येया वा, असंख्येया वा
अनन्तावोत्पद्यन्ते ११ द्वापरयुगकलयोजेषु नव वा, संख्येया वा, असंख्येया
वा अनन्तावोत्पद्यन्ते १२ कलयोज कृतयुग्मेषु चत्वारो वा, संख्येया वा, असंख्येया
वा, अनन्तावोत्पद्यन्ते १३ कलयोजत्रयोजेषु सप्त वा, संख्येया वा, असंख्येया
वा, अनन्तावोत्पद्यन्ते १४ । कलयोज द्वापरयुग्मेषु पञ्च वा संख्येया वा, असंख्येया वा
अनन्तावोत्पद्यन्ते १५ कलयोजकलयोजैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ?
उपपातस्तथैव । परिमाणं पञ्च वा, संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्तावोत्पद्यन्ते
१६ शेषं तथैव यावदनन्तकृत्वः । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त इति ॥ सू० ३॥

‘पञ्चत्रिंशत्तमे शतके मथमोद्देशकः समाप्तः ॥ ३५॥१

टीका--‘कडजुम्मतेओग एगिंदियाणं भंते । कओ उववज्जंति’ कृतयुग
त्रयोजैकेन्द्रियजीवाः खलु भदन्त ! कुतः-कस्मात्स्थानविशेषादागत्य समुत्प-
द्यन्ते किं नैरयिकेभ्य आगत्य समुत्पद्यन्ते तिर्यग्भ्यो वा आगत्य मनुष्येभ्यो वा
आगत्य देवेभ्यो वा आगत्य समुत्पद्यन्ते ? इति प्रश्नः, उत्तरमाह-‘उववाओ’
इत्यादि, ‘उववाओ तद्देव’ उपपातः कृतयुग त्रयोजैकेन्द्रियाणां तथैव यथा कृतयुग-

पन्द्रह भेदो का कथन

‘कडजुम्म तेओग एगिंदियाणं भंते !’ इत्यादि

टीकार्थ-‘कडजुम्म तेओग एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति’ हे
भदन्त कृतयुग त्रयोजराशि प्रमित एकेन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष
से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न
होते हैं ? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा
मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा देवों में से आकर के
उत्पन्न होते हैं ? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-‘उववाओ तद्देव

पं० २ लेखोनु’ कथन

‘कडजुम्मतेओगएगिंदियाणं भंते । कओ उववज्जंति’ कृतयुग, त्रयो-
राशीवाणा एकेन्द्रिय जीवों क्या स्थान विशेष थी आतीने उत्पन्न थाय छे ?
शुं तेओ नैरयिकेमांथी आतीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा तिर्यग्भ्योनिके-
मांथी आतीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा मनुष्येमांथी आतीने उत्पन्न थाय
छे ? अथवा देवेमांथी आतीने उत्पन्न थाय छे ? आ प्रश्नना उत्तरमां प्रभुश्री
गौतमस्वामीने कहे छे के-‘उववाओ तद्देव’ छे गौतम । आ कृतयुग त्रयो-

કૃતયુગ્મૈકેન્દ્રિયાણાં કથિતઃ તિર્યગ્મ્યો વા આગત્ય મનુષ્યેભ્યો વા આગત્ય સમુ-
ત્પદ્યન્તે इति । ‘તે ણં મંતે ! જીવા એગસમણં પુચ્છા’ તે સ્વહ મદન્ત ! જીવા
કૃતયુગ્મ=યોજૈકેન્દ્રિયા એકસમયેન કિયન્ત ઉત્પદ્યન્તે इति પ્રશ્નઃ પૃચ્છયા સંગૃ-
હ્યતે । મગધનાહ-‘ગોયમા’ इत्यादि, ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘એગૂણવીસા વા’
એકોનવિંશતિર્વા ‘સંસ્થેજ્જા વા અસંસ્થેજ્જા વા અણંતાવા ઉવવજ્જંતિ’ સંસ્થાતા વા
અસંસ્થાતા વા અનન્તા વા કૃતયુગ્મ=યોજૈકેન્દ્રિયા એકસમયેન સમુત્પદ્યન્તે इति ।
‘સેસં જહા કહજુમ્મકહજુમ્માણં જાવ અણંતસુત્તો’ શેપં યથા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્માનાં

‘હે ગૌતમ ! હન કૃતયુગ્મ યોજ રાશિ પ્રમિત એકેન્દ્રિય જીવોં કા ઉત્પાદ
જેસા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત એકેન્દ્રિયોં કા કહા ગયા હૈ વૈસા હી
જાનનાં ચાહિયે । અર્થાત્ એ તિર્યગ્મ્યોનિકોં મેં સે આકરકે મી ઉત્પન્ન
હોતે હૈં, મનુષ્યોં મેં સે મી આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં’ ઓર દેવોં મેં સે
મી આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં । ‘તે ણં મંતે ! જીવા એગસમણં
પુચ્છા’ હે મદન્ત ! એ કૃતયુગ્મ યોજ પ્રમિત એકેન્દ્રિય જીવ એકસમય
મેં કિતને ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રભુ કહતે હૈં-‘ગોયમા’ એગૂણ
વીસા વા, સંસ્થેજ્જા વા અસંસ્થેજ્જા વા, અણંતા વા ઉવવજ્જંતિ’ હે
ગૌતમ ! એ એક સમય મેં ૧૯ તક ઉત્પન્ન હોતે હૈં અથવા સંસ્થાત,
અસંસ્થાત અથવા અનન્ત ઉત્પન્ન હોતે હૈં । ‘સેસં જહા કહજુમ્મ કહ-
જુમ્માણં જાવ અણંતસુત્તો’ હનકે સમ્બન્ધ મેં ઓર સવ કથન જેસાકિ
અમી અમી કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત એકેન્દ્રિય જીવોં કે પ્રકરણ
મેં કહા જાં ચુકા હૈ વૈસા હી સવ કથન યાવત્ અનન્તવારવે વહાં
ઉત્પન્ન હુએ હૈં યહાં તક કહ લેનાં ચાહિયે ।

રાશીવાળા એકધન્દ્રિયવાળા જીવોના ઉપપાત, કૃતયુગ્મરાશીવાળા એકેન્દ્રિયોના
જે રીતે ઉપપાત કહેલ છે, એજ પ્રમાણે સમજવો. અર્થાત્ તેઓ તિર્યગ્મ્યોમાંથી
આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે ? મનુષ્યેમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે ?
અને દેવોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે. ‘તેણં મંતે ! જીવા એગસમણં
પુચ્છા’ હે ભગવન આ કૃતયુગ્મ, એજ રાશીવાળા એકેન્દ્રિય જીવો એકસમ
યમાં કેટલાં થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે
કે-‘ગોયમા ! એગૂણવીસા વા, સંસ્થેજ્જા વા અસંસ્થેજ્જા વા, અણંતાવા ઉવવજ્જંતિ’
હે ગૌતમ ! તેઓ એક સમયમાં ૧૯ ઓગણીસ સુધી ઉત્પન્ન થાય છે. અથવા
સંસ્થાત અસંસ્થાત અથવા અનન્ત ઉત્પન્ન થાય છે ? ‘સેસં જહા કહજુમ્મ
કહજુમ્માણં જાવ અણંતસુત્તો’ આના સંબંધમાં બાકીનું સઘળું કથન હમણાં જ
કૃતયુગ્મ, કૃતયુગ્મ રાશીવાળા એકેન્દ્રિય જીવોના પ્રકરણમાં કરવામાં આવેલ
છે, એજ પ્રમાણેનું તમામ કથન યાવત્ અનન્તવાર તેઓ ત્યાં ઉત્પન્ન થયા છે,

કથિતં તથૈવ યાવત્ અનન્તકૃત્વ ઇતિ ૨ । ‘કહજુમ્મ દાવરજુમ્મ ઇગિદિયાણ મતે ! કમ્મોહિતો ઉવ્વજ્જંતિ’ કૃતયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મૈકેન્દ્રિયાઃ સ્વલુ ભદન્ત ! કૃત ઉત્પન્નન્તે કિં નૈરયિકેભ્ય ઇત્યાદિ પ્રશ્નઃ, ઉત્તરમાહ=‘ઉવ્વાઓ તહેવ’ ઉપપાતસ્તથૈવ-પૂર્વ કથિતપ્રકારેણૈવ । ‘તે ણં મંતે ! જીવા ઇગસમણં પુચ્છા’ તે સ્વલુ ભદન્ત ! કૃતયુગ્મદ્વાપરયુગ્મૈકેન્દ્રિયજીવા એકસમયેન ક્રિયન્ત ઉત્પન્નન્તે ઇતિ પ્રશ્નઃ, ઉત્તરમાહ-‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘અદ્ધારસ વા, સંસેજ્જા વા, અસંસેજ્જા વા, અણંતા વા ઉવ્વજ્જંતિ’ અષ્ટાદશ વા, સંસ્યાતા વા, અસંસ્યાતા વા, અનન્તા-

‘કહજુમ્મ દાવરજુમ્મ ઇગિદિયાણં મંતે ! કમ્મોહિતો ઉવ્વજ્જંતિ’ હે ભદન્ત ! કૃતયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ રાશિપ્રમિત એકેન્દ્રિયજીવ કિસ સ્થાનવિશેષ સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? કયા વે નૈરયિકોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા તિર્યગ્યોનિકોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા મનુષ્યોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા દેવોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? હસ પ્રશ્ન કે ઉત્તર મેં પ્રમુશ્રી ગૌતમસ્વામી સે કહતે હૈં- ‘ઉવ્વાઓ તહેવ હે ‘ગૌતમ ! હસ સમ્પન્ન મેં સમરત કથન પૂર્વ મેં જૈસા કહા ગયા હૈં વૈસા હી જાનનાં ચાહિયે । ‘તે ણં મંતે ! જીવા ઇગસમણં પુચ્છા’ હે ભદન્ત યે કૃતયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ રાશિપ્રમિત એકેન્દ્રિય જીવ એક સમયમેં કિતને ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રમુશ્રી કહતે હૈં- ‘ગોયમા ! અદ્ધારસ વા સંસેજ્જા વા અસંસેજ્જા વા અણંતા વા’ હે ગૌતમ ! એક સમય મેં ૧૮ ઉત્પન્ન હોતે હૈં અથવા સંસ્યાત અથવા અસંસ્યાત અથવા અનન્ત ઉત્પન્ન હોતે હૈં સેસં તહેવ જાય અણંતસ્સુતો’ અવગિષ્ટ ઔર

ત્યા સુધી કહી લેલું બેઠાએ ‘કહજુમ્મ દાવરજુમ્મ ઇગિદિયાણ મતે ! કમ્મોહિતો ઉવ્વજ્જંતિ’ હે ભગવન્ કૃતયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યગ્યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રમુશ્રી કહે છે કે- ‘ઉવ્વાઓ તહેવ’ હે ગૌતમ ! આ વિષયમાં સઘણ કથન પહેલાં બે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું સમજવું. ‘તે ણં મતે જીવા ઇગસમણં પુચ્છા’ હે ભગવન્ આ કૃતયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો એક સમયમાં કેટલા ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રમુશ્રી ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે- ‘ગોયમા ! અદ્ધારસ વા સંસેજ્જા વા અસંસેજ્જા વા અણંતા વા’ હે ગૌતમ ! તેઓ એક સમયમાં ૧૮ અદાર ઉત્પન્ન થાય છે, અથવા સંસ્યાત અથવા અસંસ્યાત

વોત્પદ્યન્તે इति ३ । 'कडजुम्म कलिओग एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' कृतयुग कल्यौजैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत्र उत्पद्यन्ते ? इति प्रश्नः, उत्तरयति- 'उववाओ तहेव' उपपातः पूर्ववदेव 'परिमाणं सत्तरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा' परिमाणद्वारे जघन्यतः सप्तदश वा संख्याता वा असंख्याता वा अनन्ता वा उत्पद्यन्ते' 'सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो' शेषं समये समये अपहरणादिकं सर्वं यावत् अनन्तकृत्व एतत्पर्यन्तं तथैव कृतयुग कृतयुगैकेन्द्रियप्रकरणवदेव ४ । 'तेओग कडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति' ऽयोज

સવ કથન યાવત્ 'વે વહાં અનન્તવાર ઉત્પન્ન હો ચુકે હૈં 'યહાં તક કા યહાં પર કહ લેના ચાહિયે । 'કડજુમ્મ કલિઓગ એગિંદિયાણં ભંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ' હે ભદન્ત ! કૃતયુગ્મ કલ્યોજ એકેન્દ્રિય કિસ સ્થાન સે આકર ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? કયા વે નૈરિયિકોં મેં સે તિર્યગ્યોનિકોં મેં સે મનુષ્યોં મેં સે અથવા દેવોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? હસકે ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામી સે કહતે હૈં 'ઉવવાઓ તહેવ' હનકા ઉપપાત પહલે જૈસાહી સમજના ચાહિયે 'પરિમાણં સત્તરસ વા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા અણંતા વા' પરિમાણ મેં વે જઘન્ય સે સત્રહ ૧૭ ઉત્પન્ન હોતે હૈં સંખ્યાતા અસંખ્યાતા અથવા અનન્ત ઉત્પન્ન હોતે હૈં 'સેસં તહેવ જાવ અણંતખુત્તો અવશિષ્ટ સવ કથન વે કૃતયુગ્મ કલ્યોજ એકેન્દ્રિયપને સે અનન્ત વાર ઉત્પન્ન હો ચુકે હૈં, યહાં તક યહાં પર કહના ચાહિયે ॥૪॥

'તેઓગ કડજુમ્મ એગિંદિયાણં ભંતે ! કઓહિંતો ઉવવજ્જંતિ' હે

અથવા અનંત ઉત્પન્ન થાય છે. 'સેસં તહેવ અણંતખુત્તો' બાકીનું તમામ કથન યાવત્ તેઓ ત્યાં અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચૂક્યા છે, આ કથન સુધીનું અહિંયાં કહેવું બેઠાયે.

'કડજુમ્મ કલિઓગ એગિંદિયાણં ભંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ' હે ભગવન્ કૃતયુગ્મ કલ્યોજ એકેન્દ્રિય કયા સ્થાનેથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરિયિકોમાંથી આવીને અથવા તિર્યગ્યોનિકોમાંથી અથવા મનુષ્યોમાંથી અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—'ઉવવાઓ તહેવ' તેમનો ઉપપાત પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે જ છે. 'પરિમાણં સત્તરસવા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા અણંતા વા' પરિમાણ તેમનું જઘન્યથી ૧૭ સત્તર સુધી ઉત્પન્ન થાય છે. અથવા સંખ્યાતા અથવા અસંખ્યાતા અથવા અનંત ઉત્પન્ન થાય છે 'સેસં તહેવ જાવ અણંતખુત્તો' બાકીનું તમામ કથન તેઓ કૃતયુગ્મ કલ્યોજ એકેન્દ્રિય પણાથી અનેકવાર ઉત્પન્ન થઈ ચુકેલ છે આ કથન સુધી અહિંયાં કહી લેવું બેઠાયે. ॥૪॥

'તેઓગ કડજુમ્મ એગિંદિયાણં ભંતે ! કઓહિંતો ઉવવજ્જંતિ' હે ભગવન્

कृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यः इत्यादि पूर्वव-
देव प्रश्नः, उत्तरमाह—‘उक्त्वाओ तहेव’ उपपात एतेषां तथैव पूर्वोक्तवदेव ज्ञातव्यः
‘परिमाणं चारस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा उववज्जंति’
त्रयोजकृतयुग्मैकेन्द्रियाणां परिमाणं द्वादश वा संख्याता वा असंख्याता वा,
अनन्तावोत्पद्यन्ते । ‘सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो’ शेषं परिमाणातिरिक्त सर्व
तथैव यावत् अनन्तकृत्वः ५ । ‘तेओगतेओग एगिंदियाणं भंते ! कओहिंतो
उववज्जंति’ त्रयोजत्रयौजैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यः

भदन्त ! त्रयोज कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीव द्विस्र स्थान विशेष
से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न
होते हैं ? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा
मनुष्यों में से आकरके उत्पन्न होते ? अथवा देवों में से आकरके
उत्पन्न होते हैं ? इसके उत्तर में प्रसुथ्री कहने हैं—‘उक्त्वाओ तहेव’ हे
गौतम ! इनका उपपाद पूर्व के जैसे ही जानना चाहिये । ‘परिमाणं
चारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति’ ये त्रयोज
कृतयुग्म रूप एकेन्द्रिय जीव एक समय में १२ अथवा संख्यात अथवा
असंख्यात अथवा अनन्त उत्पन्न होते हैं । ‘सेसं तहेव जाव अणंत
खुत्तो’ परिमाण कथन से अतिरिक्त और सब कथन ‘वे अनन्तवार
उत्पन्न हो चुके हैं’ यहां तकका यहां पर कह लेना चाहिये । ‘तेओग
तेओग एगिंदियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति’ हे भदन्त ! त्रयोज

त्रेओज कृतयुग्म राशिवाणा ओकेन्द्रिय ओवो क्या स्थान विशेषथी आवीने
उत्पन्न थाय छे ? शुं तेओ नैरयिकेभांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा
तिर्यथ्येनिकेभांथी आवीने त्यां उत्पन्न थाय छे ? अथवा मनुष्येभांथी
आवीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा देवोभांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? आ
प्रश्नना उत्तरमां प्रलुथ्री गौतमस्वाभीने कहे छे के—‘उक्त्वाओ तहेव’ हे गौतम !
तेओनेो उपपात पडेला कहेला प्रमाणे समज्जये। ‘परिमाणं चारस वा संखेज्जा
वा, असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति’ आ त्रेओज कृतयुग्म ३५ ओके
धन्द्रियवाणा ओवो ओके समयमां १२ बार अथवा संख्यात अथवा असंख्यात
अथवा अनंत उत्पन्न थाय छे. ‘सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो’ परिमाणना कथन
शिवायनुं भाडीनुं सधणुं कथन “तेओ अनंतवार उत्पन्न थधं यूक्या छे,”
आटला सुधीनुं कथन अडियां कहेबुं नेधओ ‘तेओग तेओग एगिंदियाणं भंते !
कओहिंतो उववज्जंति’ हे लगवन् त्रेओज त्रेओज ओकेन्द्रिय ओवो क्या स्थान

इत्यादि रूपेण प्रश्नः, उत्तरमाह—‘उववाओ तहेव’ उपपातस्तथैव यथा—कृतयुग्म-
कृतयुग्मप्रकरणे कथितः । ‘परिमाणं पन्नरस वा संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा,
अणंवा वा’ परिमाणं त्र्योज त्र्योजैकेन्द्रियाणां पञ्चदश वा, संख्याता वा, असं-
ख्याता वा, अनन्ता वेति । ‘सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो’ शेषं परिमाणातिरिक्तं
तथैव यावत् अनन्तकृत्यः ६ । ‘एवं एएसु सोलससु महाजुम्मेसु एको गमओ’

त्र्योज एकेन्द्रिय जीव किस स्थानविशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं ?
क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा तिर्यग्योनिकों
में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा मनुष्यों में से आकरके उत्पन्न
होने हैं ? अथवा देवों में आकरके उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री
कहते हैं—‘उववाओ तहेव’ हे गौतम । इनके उपपाद के सम्बन्ध में कथन
पूर्वके जैसाही जानना चाहिये । अर्थात् जैसा कथन कृतयुग्म कृतयुग्म
एकेन्द्रिय जीवों के प्रकरण में किया गया है वैसा ही यहां पर समझना
चाहिये । ‘परिमाणं पन्नरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंवा वा’
त्र्योज त्र्योज एकेन्द्रिय जीवों का एकसमय में उत्पन्न होने का परि-
माण १५ अथवा संख्यात अथवा असंख्यान अथवा अनन्त जानना
चाहिये । ‘सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो’ इस परिमाण कथन के अति-
रिक्त और सब कथन ‘वे अनन्तवार उत्पन्न हो चुके हैं’ यहां तक जैसा
पहिले कहा गया है वैसा ही यहां पर कह लेना चाहिये । ‘एवं एएसु
सोलससु महाजुम्मेसु एको गमओ’ इस प्रकार जैसा कि ऊपर में

विशेषથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન
થાય છે ? અથવા તિર્યંચોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી
આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ
પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે— ‘ઉવવાઓ તહેવ’ હે ગૌતમ ! આમના
ઉત્પાદના સંબંધમાં પહેલા કહ્યા પ્રમાણેનું જ કથન સમજવું અર્થાત્ જોવું કથન
કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિય જીવોના પ્રકરણમાં કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમા-
ણેનું કથન અહિયાં સમજવું જોઈએ ‘પરિમાણં પન્નરસવા સંખેજ્જા વા
અસંખેજ્જાવા અણંતાવા વા’ ત્ર્યોજ ત્ર્યોજ એકેન્દ્રિય જીવોનું એક સમયમાં
ઉત્પન્ન થવાનું પરિમાણ ૧૫ પંદર અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા
અનંત સમજવું. ‘સેસં તહેવ જાવ અણંતખુત્તો’ આ પરિમાણ શિવાયનું બાકીનું
બીજું તમામ કથન “તેઓ અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચૂક્યા છે, “આ કથન
સુધીનું પહેલાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે અહિયાં સમજવું

एवमुपरि प्रदर्शितप्रकारेण षोडशसु महायुग्मेषु एको गमकः सर्वत्र महायुग्मेषु एकएव प्रकार इति भावः । 'नवरं परिमाणे नाणत्वं' नवरं केवलं परिमाणे नानात्वं भेदोऽवगन्तव्यः अन्यत् सर्वमेकप्रकारकमेवेति । परिमाणे नानात्वमेव विशिष्य दर्शयति—'तेओगदावरजुम्मेसु परिमाणं चोदस वा संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंतावा उववज्जंति' त्र्योजद्वापरयुग्मेषु एकेन्द्रियेषु परिमाणं चतुर्दश वा, संख्याता वा, असंख्याता वा, अणंता वा एतादृश संख्यका इमे एकसमयेनोत्पद्यन्ते इति ७ । 'तेओगकलिओगेसु तेरस वा संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा उववज्जंति' त्र्योज कल्योजएकेन्द्रियेषु परिमाणं त्रयोदश वा, संख्याता वा, असंख्याता वा, अनन्ता वा, एतादृशपरिमाणविशिष्टा इमे

દિશ્વલાયા જા ચુકા હૈં સોલહ મહાયુગ્મોં મેં કથન પ્રકાર એક જેના હી હૈ, તાત્પર્ય હસકા એસા હૈ કિ પરિમાણ કથન સે અતિરિક્ત ઓર સચ કથન હન ૧૬ રાશિ પ્રમિત એકેન્દ્રિય જીવોં કે સમ્યન્થ મેં એક હી પ્રકાર કા હૈ । યહી બાત 'તેઓગદાવરજુમ્મેસુ પરિમાણં નાણત્વં' હસ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રદર્શિત કી ગઈ હૈ । પરિમાણ મેં નાનાત્વકા કથન હસ પ્રકાર સે હૈ—'તેઓગદાવરજુમ્મેસુ પરિમાણં ચોદસ વા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા અણંતા વા ઉવવજ્જંતિ' ત્ર્યોજ દ્વાપર યુગ્મ રાશિપ્રમિત એકેન્દ્રિય જીવોં કા એક સમય મેં ઉત્પન્ન હોનેકા પરિમાણ ૧૪ હૈ । અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનન્ત ઉત્પન્ન હોતે હૈ । 'તેઓગકલિઓગેસુ તેરસવા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા અણંતા વા ઉવવજ્જંતિ' ત્ર્યોજકલ્યોજ રાશિ પ્રમિત એકેન્દ્રિય જીવોં કા એકસમય મેં ઉત્પન્ન હોનેકા પરિમાણ ૧૩ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનન્ત હૈ । 'દાવરજુમ્મ

‘एवं एषु सोलसमहाजुम्मेसु एको गमओ’ आ दीते ते प्रमाणे उपर कडेवाभां आवेल छे, ते सोण महायुग्मेनो कथन प्रकार ओक सरणो छे. कडेवानुं तात्पर्य ओ छे के—परिमाणना कथन शिवायनुं आ.डीनुं सघणुं कथन १६ सोण राशिवाणा ओकेन्द्रिय लवोना सभंधमा ओक न सरणुं छे ओ न वात ‘नवरं परिमाणे नाणत्वं’ आ सूत्रपाठ द्वारा बतावेल छे, परिमाणभां नानात्व (लुदा लुदा प्रकारनुं) नुं कथन आ प्रमाणे छे—‘तेओग दावरजुम्मेसु परिमाणं चोदस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंतावा’ त्र्योजद्वापरयुग्म राशिवाणा ओकेन्द्रिय लवोनुं ओक समयभां उत्पन्न धवानुं परिमाण १४ औदनुं छे अथवा संख्यात अथवा असंख्यात अथवा अनन्त छे ‘तेओग कलिओगेसु तेरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति’ त्र्योज कल्योज राशिप्रमित ओकेन्द्रिय लवोनुं ओक समयभां उत्पन्न धवानुं परिमाण १३ तेर अथवा

૬૧૮૯. 'દાવરજુમ્મ કડજુમ્મેસુ અદ્વવા સંલેજ્જા વા, અસંલેજ્જા વા, અનન્તા વા, ઉવવજ્જંતિ' દ્વાપરયુગ્મ કૃતયુગ્મેષુ અદ્વૌ વા સંલ્યાતા વા, અસં-
લ્યાતા વા અનન્તા વા ઉત્પન્નંતે ૯. 'દાવરજુમ્મ તેઓમેસુ એકારસવા, સંલે-
જ્જા વા, અસંલેજ્જા વા, અનન્તા વા, ઉવવજ્જંતિ' દ્વાપરયુગ્મ યોજેષુ એકાદશ વા
સંલ્યાતા વા, અસંલ્યાતા વા, અનન્તાવોત્પન્નંતે ૧૦. 'દાવરજુમ્મ દાવર-
જુમ્મેસુ દસ વા, સંલેજ્જા વા, અસંલેજ્જા વા અણંતા વા ઉવવજ્જંતિ' દ્વાપરયુગ્મ
દ્વાપરયુગ્મેષુ દશ વા, સંલ્યાતા વા, અસંલ્યાતા વા અનન્તા વા ઉત્પન્નંતે ૧૧.

કડજુમ્મેસુ અદ્વ વા સંલેજ્જા વા અસંલેજ્જા વા અણંતા વા ઉવવજ્જંતિ'
'દ્વાપરયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત એકેન્દ્રિય જીવોં કા પરિમાણ એકસમય
મેં ઉત્પન્ન હોનેકા આઠ અથવા સંલ્યાત અથવા અસંલ્યાત અથવા અનન્ત
હૈ. 'દાવરજુમ્મ દાવરજુમ્મેસુ દસવા સંલેજ્જા વા અસંલેજ્જા વા અણંતા
વા ઉવવજ્જંતિ' દ્વાપરયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ રાશિ પ્રમિત એકેન્દ્રિય જીવોંકા
એકસમય મેં ઉત્પન્ન હોનેકા પરિમાણ દસ અથવા સંલ્યાત અથવા અસં-
લ્યાત અથવા અનન્ત હૈ. 'દાવરજુમ્મ તેઓમેસુ એકારસ વા સંલેજ્જા
વા અસંલેજ્જા વા અણંતા વા ઉવવજ્જંતિ' દ્વાપરયુગ્મ યોજ રાશિપ્રમિત
એકેન્દ્રિય જીવોંકા એકસમય મેં ઉત્પન્ન હોને કા પરિમાણ ૧૧ અથવા
સંલ્યાત અથવા અસંલ્યાત અથવા અનન્ત હૈ. 'દાવરજુમ્મ દાવર-
જુમ્મેસુ દસવા સંલેજ્જા વા અસંલેજ્જા વા અણંતા વા ઉવવજ્જંતિ
દ્વાપરયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ રાશિપ્રમિત એકેન્દ્રિય જીવોં કા એકસમય મેં ઉત્પન્ન
હોનેકા પરિમાણ ૧૦ અથવા સંલ્યાત અથવા અસંલ્યાત અથવા અનન્ત

સંજ્યાત અથવા અસંજ્યાત અથવા અનંત છે. 'દાવરજુમ્મકડજુમ્મેસુ અદ્વવા
સંલેજ્જાવા અસંલેજ્જા વા અણંતા વા ઉવવજ્જંતિ' દ્વાપરયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય
જીવોંનું પરિમાણ એક સમયમાં ઉત્પન્ન થવાનું આઠ અથવા સંજ્યાત અથવા
અસંજ્યાત અથવા અનંત છે. 'દાવરજુમ્મ દાવરજુમ્મેસુ દસ વા સંલેજ્જા વા
અસંલેજ્જા વા અણંતા વા ઉવવજ્જંતિ' દ્વાપરયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ રાશિવાળા એકે-
ન્દ્રિય જીવોંનું એક સમયમાં ઉત્પન્ન થવાનું પરિમાણ દસ અથવા સંજ્યાત
અથવા અસંજ્યાત અથવા અનંત છે. 'દાવરજુમ્મ તેઓમેસુ એકારસવા સંલેજ્જા
વા અસંલેજ્જા વા અણંતા વા ઉવવજ્જંતિ' દ્વાપરયુગ્મ યોજ રાશિવાળા એકે-
ન્દ્રિય જીવોંનું એક સમયમાં ઉત્પન્ન થવાનું પરિમાણ ૧૧ અગિયાર અથવા
સંજ્યાત અથવા અસંજ્યાત અથવા અનંત છે. 'દાવરજુમ્મ દાવરજુમ્મેસુ
દસ વા સંલેજ્જા વા અસંલેજ્જા વા અણંતા વા ઉવવજ્જંતિ' દ્વાપરયુગ્મ રાશિ-
વાળા એકેન્દ્રિય જીવોંનું એક સમયમાં ઉત્પન્ન થવાનું પરિમાણ ૧૦ દસ

‘દાવરજુમ્મ કલિયોગેસુ નવ વા, સંખેજ્જા વા, અસંખેજ્જા વા, અણંતા વા ઉવવ-
જ્જંતિ’ દ્વાપરયુગ્મકલ્યોજેષુ નવ વા, સંખ્યાતા વા, અસંખ્યાતા વા, અનન્તા વા,
ઉત્પદ્યન્તે ૧૨ । ‘કલિયોગકઢજુમ્મેસુ ચત્તારિ વા, સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા
વા, અણંતા વા ઉવવજ્જંતિ’ કલ્યોજકૃતયુગ્મેષુ ચત્તારો વા, સંખ્યાતા વા, અસં-
ખ્યાતા વા, અનન્તા વા, ઉત્પદ્યન્તે ૧૩ । કલિયોગ તેઓગેસુ સત્ત વા, સંખેજ્જા
વા, અસંખેજ્જા વા, અણંતા વા, ઉવવજ્જંતિ’ કલ્યોજત્રયોજેષુ સપ્ત વા, સંખ્યાતા
વા, અસંખ્યાતા વા, અનન્તા વા, ઉત્પદ્યન્તે ૧૪ । ‘કલિયોગદાવરજુમ્મેસુ છ વા,
સંખેજ્જા વા, અસંખેજ્જા વા, અણંતા વા ઉવવજ્જંતિ’ કલ્યોજદ્વાપરયુગ્મેષુ
પઙ્ચ વા, સંખ્યાતા વા, અસંખ્યાતા વા, અનન્તા વા ઉત્પદ્યન્તે ૧૫ । ‘કલિઓગ

હૈં । ‘દાવરજુમ્મ કલિઓગેસુ નવ વા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા અણંતા
વા ઉવવજ્જંતિ’ દ્વાપરયુગ્મ કલ્યોજ રાશિપ્રમિત એકેન્દ્રિય જીવોંકા
એકસમય મેં ઉત્પન્ન હોનેકા પરિમાણ નૌ અથવા સંખ્યાત અથવા અસં-
ખ્યાત અથવા અનન્ત હૈં । ‘કલિયોગ કઢજુમ્મેસુ ચત્તારિ વા સંખેજ્જા
વા અસંખેજ્જા વા અણંતા વા ઉવવજ્જંતિ’ કલ્યોજકૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત
એકેન્દ્રિય જીવોં કા એકસમય મેં ઉત્પન્ન હોને કા પરિમાણ ચાર અથવા
સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનન્ત હૈં । ‘કલિઓગતેઓગેસુ સત્ત
વા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા અણંતા વા ઉવવજ્જંતિ’ કલ્યોજ ત્રયોજ
રાશિ પ્રમિત એકેન્દ્રિય જીવોં કા ઉત્પન્ન હોને કા પરિમાણ એકસમય કા
સાત અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનન્ત હૈં ।’ ‘કલિઓગ
દાવરજુમ્મેસુ છ વા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા અણંતા વા ઉવવજ્જંતિ’
‘કલ્યોજ દ્વાપરયુગ્મ રાશિપ્રમિત એકેન્દ્રિય જીવોં કા એકસમય મેં

અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનન્ત છે. ‘દાવરજુમ્મ કલિઓગેસુ
નવ વા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા અણંતા વા ઉવવજ્જંતિ’ દ્વાપરયુગ્મ કલ્યોજ
રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોં કા એક સમયમાં ઉત્પન્ન થવાનું પરિમાણ નવ
અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનન્ત છે. ‘કલિઓગકઢજુમ્મેસુ
ચત્તારિ વા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા અણંતા વા ઉવવજ્જંતિ’ કલ્યોજ કૃતયુગ્મ
રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોં કા ઉત્પન્ન થવાનું પરિમાણ ચાર અથવા સંખ્યાત
અથવા અસંખ્યાત અથવા અનન્ત છે. ‘કલિઓગ તેઓગેસુ સત્ત વા સંખેજ્જા વા
અસંખેજ્જા વા અણંતા વા ઉવવજ્જંતિ’ કલ્યોજ ત્રયોજ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોં
કા ઉત્પન્ન થવાનું પરિમાણ એક સમયમાં સાત અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત
અથવા અનન્ત છે. ‘કલિઓગ દાવરજુમ્મેસુ છ વા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા
અણંતા વા ઉવવજ્જંતિ’ કલ્યોજ દ્વાપરયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોં કા

एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' कल्योजकल्योजैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य इत्यादि पूर्वप्रकारेणैव प्रश्नः, उत्तरमाह—‘उववाओ तहेव’ उपपात स्तथैव कृतयुग्मकृतयुग्म प्रकरणपठित एव ज्ञातव्यः । ‘परिमाणं पंच वा, संखेज्जा वा-असंखेज्जा वा, अणंता वा, उववज्जंति’ परिमाणं पञ्च वा, संख्याता वा असंख्याता वा अनन्ता वा उत्पद्यन्ते इति । ‘सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो’ शेषं परिमाणातिरिक्तं सर्वं तथैव कृतयुग्म प्रकरणपठितमेव यावदनन्तकृत्व इति १६ ।

उत्पन्न होने के परिमाण ६ अथवा संख्यात अथवा असंख्यात अथवा अनन्त है ‘कलिभोग कलिभोग एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति’ कल्योज कल्योज राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीव हे भदन्त ! किस स्थान विशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा मनुष्यों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—‘उववाओ तहेव’ ‘हे गौतम ! कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीवों के प्रकरण में जैसा उपपात के सम्बन्ध में कहा गया है वैसा ही यहां पर भी उपपात के सम्बन्ध में कथन जानना चाहिये यहां—‘परिमाणं पंच वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति’ उत्पन्न होनेका परिमाण पांच अथवा संख्यात अथवा असंख्यात अथवा अनन्त है । ‘सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो’ परिमाण पञ्च के अतिरिक्त और सब कथन यहां पर

સમયમાં ઉત્પન્ન થવાનું પરિણામ ૬ છ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનંત છે. ‘કલિભોગકલિભોગ એગિંદિયાણં ભંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ કલ્યોજ કલ્યોજ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો હે ભગવન કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? તિર્થંચોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં કહે છે કે—‘ઉવવાઓ તહેવ’ હે ગૌતમ ! કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોના પ્રકરણમાં ઉપપાતના સંબંધમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન અહિંયાં ઉપપાતના સંબંધમાં કહેવું જોઈએ. અહિંયાં ‘પરિમાણં પંચ વા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા અણંતા વા ઉવવજ્જંતિ’ પરિમાણ પાંચ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનંત છે. ‘સેસં તહેવ જાવ અણંતં ખુત્તો’ પરિમાણના કથન શિવાયનું સમગ્રું કથન અહિંયાં તેઓ

સંખ્યા ૧૬	મહાયુગ્મનામાનિ	યુગ્મનિર્માણસંખ્યા
૧	કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ:	૧૬
૨	કૃતયુગ્મ ંયોજ:	૧૯
૩	કૃતયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ:	૧૮
૪	કૃતયુગ્મ કલયોજ:	૧૭
૫	ંયોજ-કૃતયુગ્મ:	૧૨

‘વે અનન્તવાર ઉત્પન્ન હો ચુકે હૈં’ યહાં તરુકા પૂર્વ મેં કહે ગયે અનુસાર
એકસા હી જાનનાં ચાહિયે ।

યહ સવ પ્રકરણ હસ ચંત્ર સે સ્પષ્ટ જોના જા સકતા હૈ—

સંખ્યા	સોલહ-મહાયુગ્મો કે નામ	મહાયુગ્માદિકા નિર્માણ એવં મહાયુગ્માદિ રાશિ પ્રમિત એકેન્દ્રિય જોવોં કી એકસમયમેં ઉત્પન્ન હોનેકી જઘન્ય સંખ્યાકા પ્રમાણ
૧	કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ	૧૬
૨	કૃતયુગ્મ ંયોજ	૧૯
૩	કૃતયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ	૧૮
૪	કૃતયુગ્મ કલયોજ	૧૭
૫	ંયોજ કૃતયુગ્મ	૧૨

અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચૂકયા છે. આ કથન સુગ્રીવું પડેલાં કહ્યા પ્રમાણે
એક સરખું સમજવું.

આ પ્રકારનું તમામ કથન આ ચંત્રથી સ્પષ્ટ બહુવામા આવે છે—

સંખ્યા સોળ—	મહાયુગ્મોના નામે	મહાયુગ્મદિતું નિર્માણ અને મહાયુગ્મ વિગેરે રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવેની એક સમયની સંખ્યાનું પ્રમાણ
૧	કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ	૧૬
૨	કૃતયુગ્મ ંયોજ	૧૯
૩	કૃતયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ	૧૮
૪	કૃતયુગ્મ કલયોજ	૧૭
૫	ંયોજ કૃતયુગ્મ	૧૨

६	त्र्योज त्र्योजः ३-३	१५
७	त्र्योजद्वापरयुग्मः	१४
८	त्र्योज-कल्योजः	१३
९	द्वापरकृतयुग्मः	८
१०	द्वापरत्र्योजः	११
११	द्वापर द्वापरयुग्मः	१०
१२	द्वापरयुग्म कल्योजः	९
१३	कल्योज कृतयुग्मः	४
१४	कल्योज त्र्योजः	७
१५	कल्योज द्वापरयुग्मः	६
१६	कल्योज कल्योजः	५

६	त्र्योज त्र्योज-३-३	१५
७	त्र्योज द्वापरयुग्म	१४
८	त्र्योज कल्योज	१३
९	द्वापरयुग्म कृतयुग्म	८
१०	द्वापरयुग्म त्र्योज	११
११	द्वापरयुग्म द्वापरयुग्म	१०
१२	द्वापरयुग्म कल्योज	९
१३	कल्योज कृतयुग्म	४
१४	कल्योज त्र्योज	७
१५	कल्योज द्वापरयुग्म	६
१६	कल्योज कल्योज	५

६	त्र्येाज त्र्येाज	१५
७	त्र्येाज द्वापरयुग्म	१४
८	त्र्येाज कल्येाज	१३
९	द्वापरयुग्म कृतयुग्म	८
१०	द्वापरयुग्म त्र्येाज	११
११	द्वापर युग्म द्वापरयुग्म	१०
१२	द्वापर युग्म कल्येाज	९
१३	कल्येाज कृतयुग्म	४
१४	कल्येाज त्र्येाज	७
१५	कल्येाज द्वापरयुग्म	६
१६	कल्येाज कल्येाज	५

‘सेवं भंते ! सेवं भंते !’ तदेव भदन्त ! तदेव भदन्त ! इति हे भदन्त ! महायुग्मविषयये यद् देवानुप्रियेण कथितं तत्सर्वं सत्यमेवेति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति सू० ॥३॥

इति श्री विश्वविख्यात-जगद्बल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-

कलितकलितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यानैकग्रन्थनिर्मापक,

वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-

‘जैनाचार्य’ पदभूषित — कोल्हापुरराजगुरु-

बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य — जैनधर्मदिवाकर

पूज्य श्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री

“भगवतीसूत्रस्य” प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां

व्याख्यायाम् पञ्चत्रिंशत्तमे शतके

प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥३५॥ १॥

‘सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति’ ‘हे भदन्त महायुग्म के विषय में जो आप देवानुप्रिय ने कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है । इस प्रकार कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर वे गौतम संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० ३॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत “भगवतीसूत्र” की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके पैंतीसवें शतक का १ प्रथम उद्देशक समाप्त ॥३५-१॥

‘सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति’ हे लगवन् महायुग्मना विषयमां आप देवानुप्रिये जे कथन कथुं छे, ते सधणुं कथन सर्वथा सत्य जे छे, हे लगवन् आपदेवानुप्रियनुं कथन सर्वथा सत्य जे छे. आ प्रभाछे कहीने गौतम स्वाभीछे प्रभुश्रीने वंदना करी अने नमस्कार कर्था वंदना नमस्कार करीने ते पछी तेओ संयम अने तपथी पोताना आत्माने भावित करता थका पोताना स्थान पर गिराजमान थया. सू० ३॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराजकृत ‘भगवतीसूत्र’नी प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याना पांतीसमा शतकने पड़ेले उद्देशो समाप्त ॥३५-१॥

अथ द्वितीयोद्देशकः प्रारभ्यते

मूलम्—पठमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिदिया णं भंते !
कओ उववज्जंति ? गोयसा ! तहेव एवं जहेव पढमो उद्देसओ
तहेव सोलसखुत्तो वितिओ वि भाणियव्वो तहेव सव्वं । नवरं
इमाणि दस नाणत्ताणि ओगाहणा, जहन्नेणं अंगुलस्स असं-
खेज्जइभागं उक्कोसेण वि अंगुलस्स अरुंखेज्जइभागं १ । आउकम्म-
स्स नो बंधगा अवंधगा २ । आउयस्स नो उदीरगा अणुदी-
रगा ३ । नो उस्सासगा नो निस्सासगा नो उस्तासनिस्सासगा ४ ।
सत्तविहवंधगा नो अट्टविहवंधगा ५ । ते णं भंते ! पठमसमय
कडजुम्म कडजुम्म एगिदिय त्ति कालओ केवच्चिरं होंति ?
गोयसा ! एक्कं समयं ६ । एवं ठिईए वि ७ । समुग्घाया आदि-
ल्ला दोल्लि ८ । समोहया न पुच्छिज्जंति ९ । उव्वट्टणा न पुच्छि-
ज्जइ १० । सेसं तहेव राव्वं निरवसेसं । सोलससु वि गमएसु जाव
अणंतखुत्तो । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥सू० १॥

छाया—प्रथमसमय कृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्प-
द्यन्ते ? गौतम । तथैव एवं यथैन प्रथम उद्देशक स्तथैव षोडशकृत्वो द्वितीयो-
ऽपि भणितव्यः, तथैवं सर्वम् । नर मिश्रानि दश नानात्वानि अवगाहना जघ-
न्येनांगुलस्यासंख्येयभागम् उत्कर्षेणापि अंगुलस्यासंख्येयभागम् १ आयुष्क
कर्मणो नो बन्धकाः, अवन्धकाः २ आयुष्कस्य नो उदीरकाः अनुदीरकाः ३ ।
'नो उच्छ्वासकाः नो निश्वासकाः नो उच्छ्वासनिश्वासकाः ४ । सप्तविध-
बन्धकाः नो अष्ट विधबन्धकाः ५ । ते खलु भदन्त ! प्रथमसमयकृतयुग्मकृत-
युग्मैकेन्द्रिया इति कालतः कियच्चिरं भवन्ति ? गौतम ! एक्कं समयम् ६ । एवं
स्थितानपि ७ । समुद्घातावाधौ द्वौ ८ । समब्रह्मता न पृच्छयन्ते ९ । उद्वर्तना न
पृच्छयन्ते ? । शेषं तथैव सर्वं निरवशेषम् । षोडशस्वपि गमकेषु यावदनन्त
कृत्वः । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥सू० १॥

टीका—'पठमसमयकडजुम्मकडजुम्म एगिदिया णं भंते !' प्रथमसमय
कृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! एकेन्द्रियत्वेनोत्पत्तौ प्रथमः समयो

યેવાં તે પ્રથમસમયેકેન્દ્રિયાઃ ત એવ કૃતયુગમકૃતયુગમા ઇતિ પ્રથમસમયકૃત-
યુગમકૃતયુગમાઃ તાદૃશાશ્ચેકેન્દ્રિયા ઇતિ 'કઓ ઉવવજ્જંતિ' કુતઃ સ્થાનવિશેષા-
દાગત્ય સમુત્પચન્તે કિં નૈરયિકેભ્ય આગત્ય તિર્યગ્ભ્યો મનુષ્યેભ્યો વા દેવેભ્યો
વા આગત્ય સમુત્પચન્તે ? ઇતિ પ્રશ્નઃ । ઉત્તરમાહ—'ગોયમા' ઇત્યાદિ, 'ગોયમા'
હે ગૌતમ ! 'તહેવ' તથૈવ 'તિર્યગ્ભ્ય આગત્ય ઉત્પચન્તે મનુષ્યેભ્ય ઉત્પચન્તે દેવેભ્ય
ઉત્પચન્તે ઇતિ ભાવઃ । 'એવં જહેવ પદમો ઉદેસઓ' એવં યથૈવ પ્રથમઉદેશકઃ 'તહેવ

દૂરુરે ઉદેશે કા પ્રારભ

‘પદમસમય કહજુમ્મકહજુમ્મ એગિંદિયાણં મંતે !’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—‘પદમસમય કહજુમ્મકહજુમ્મ એગિંદિયાણં મંતે !’ હે મદન્ત !
એકેન્દ્રિય રુપસે ઉત્પત્તિ હોને મેં જિનકા પ્રથમ સમય હૈ એસે વે કૃતયુગમ
કૃતયુગમ એકેન્દ્રિય જીવ પ્રથમ સમયોત્પન્ન કૃતયુગમ કૃતયુગમ રાશિ-
પ્રમિત એકેન્દ્રિય જીવ—‘કઓ ઉવવજ્જંતિ’ કિસ સ્થાનવિશેષ સે આકર
કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? કયા વેનૈરિકોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા
તિર્યગ્ગોનિકોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા મનુષ્યોં મેં સે
આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા દેવોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ?
હસકે ઉત્તર મેં પ્રમુશ્રી કહતે હૈં—‘ગોયમા ! તહેવ’ હે ગૌતમ ! યે તિર્ય-
ગ્ગોનિકોં મેં સે આકરકે બી ઉત્પન્ન હોતે હૈં । મનુષ્યોં મેં સે બી આક-
રકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ઓર દેવોં મેં સે બી આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ।
‘એવં જહેવ પદમો ઉદેસઓ તહેવ સોલસચુત્તો વિતિઓ વિ મણિયવ્વો’

॥બીબ્બ ઉદેશાને પ્રારભ—

‘પદમસમય કહજુમ્મ કહજુમ્મએગિંદિયાણં મંતે !’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—‘પદમસમય કહજુમ્મ કહજુમ્મએગિંદિયાણં મંતે !’ હે ભગવન્
એકેન્દ્રિયપણથી ઉત્પન્ન થવામાં જેઓને પ્રથમ સમય છે, એવા તે કૃતયુગમ
કૃતયુગમ એકેન્દ્રિય જીવો અર્થાત્ પ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન થયેલા કૃતયુગમ કૃતયુગમ
રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો ‘કઓ ઉવવજ્જંતિ’ કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન
થાય છે ? શુ તેઓ નૈરયિકોંમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યગ્-
ગોનિકોંમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોંમાંથી આવીને ઉત્પન્ન
થાય છે ? કે દેવોંમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રમુશ્રી
ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—‘ગોયમા ! તહેવ’ હે ગૌતમ ! એ તિર્યગ્ ગોનિકોં
માંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે મનુષ્યોંમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય
છે અને દેવોંમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે ‘એવં જહેવ પદમો ઉદેસઓ
તહેવ સોલસચુત્તો વિતિઓ વિ મણિયવ્વો’ હે ગૌતમ ! આ સંબંધમાં

સોલસચુતો વિતિયો વિ મણિયવ્વો' તથૈવ-પ્રથમોદ્દેશકવદેવ ષોડશકૃત્વઃ ષોડ-
શરાશિભેદાનાશ્રિત્ય દ્વિતીયોઽપિ ઉદ્દેશકો મણિતવ્યઃ । 'તદેવ સર્વં' તથૈવ પ્રથમો-
દ્દેશકવદેવ સર્વમિદાપિ વક્તવ્યમ્ । 'નવરં હમાણિ ય દસ નાણત્તાણિ' નવરં-કેવલં
પ્રથમોદ્દેશકાપેક્ષ્યાઽત્ર હમાણિ અગ્રપદર્શ્યમાનાનિ દશનાનાત્વાનિ પૂર્વોક્તસ્ય વિલક્ષ-
ણત્વ સ્થાનાનિ ભવન્તિ, કેવાશ્રિત્ પૂર્વોક્તાનાં ભાવાનાં પ્રથમસમયોત્પન્નેષુ અસંભ-
વાત્ । તદ્વથા- 'ઓગાહના જહન્નેણં અંગુલસ્સ અસંખેજ્જહમાગં' શરીરાવગાહના
અંગુલસ્યાસંખ્યેયભાગરૂપા જઘન્યેન 'ઉક્કોસેણ વિ અંગુલસ્સ અસંખેજ્જહમાગં' ઉત્ક-
ર્ષેણાપિ અંગુલસ્યાસંખ્યેયભાગમ્, તત્ર પ્રથમોદ્દેશકે વાદરવનસ્પત્યપેક્ષ્યા ઉત્કર્ષેણ
સાતિરેકયોજનસદ્સરૂપા મહત્યવગાહના પ્રોક્તા, અત્ર તુ પ્રથમસમયોત્પન્નત્વે-

'હે ગૌતમ ! હસ સમ્બન્ધ મેં જૈસા પ્રથમ ઉદ્દેશક કહા ગયા હૈ ઉસી
પ્રકાર સે સોલહ રાશિ ભેદોંકો આશ્રિત કરકે યહ દ્વિતીય ઉદ્દેશક
મી કહ લેના ચાહિયે । 'તદેવ સર્વં' એવં પ્રથમ ઉદ્દેશકકે જૈસા હી
ઔર સવ કથન યહાં હૈ એસા જાનના ચાહિયે । 'નવરં હમાણિ ય દસ
નાણત્તાણિ' પરન્તુ પ્રથમ ઉદ્દેશકકી અપેક્ષા યહાં હન દશ વાર્તોં મેં
અન્તર હૈ-ક્યોંકિ પ્રથમ સમય મેં ઉત્પન્ન એકેન્દ્રિયોં મેં હનકી અસં-
ભવતા હૈ । વે દશ વાર્તેં યે હૈ--

'ઓગાહના જહન્નેણં અંગુલસ્સ અસંખેજ્જહમાગં' 'અવગાહના યહાં
અંગુલ કે અસંખ્યાતવે' ભાગ પ્રમાણ હૈ જઘન્ય સે તથા 'ઉક્કોસેણ વિ
અંગુલસ્સ અસંખેજ્જહમાગં' 'ઉત્કૃષ્ટ સે મી અંગુલ કે અસંખ્યાતવે' ભાગ
પ્રમાણ હૈ । પ્રથમ ઉદ્દેશક મેં વાદરવનસ્પતિકાચિક કી અપેક્ષા કુછ

પડેલા ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે સોળરાશિ
ભેદોનો આશ્રય કરીને આ બીજો ઉદ્દેશો પણ કહી લેવો જોઈએ. 'તદેવ સર્વં'
આ રીતે પડેલા ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે સમગ્રું કથન આ બીજા ઉદ્દેશામાં
સમગ્ર લેવું. 'નવરં હમાણિ ય દસ નાણત્તાણિ' પરંતુ પડેલા ઉદ્દેશાના કથન
કરતાં અહિયાં નીચે બતાવેલ દસ બાબતોમાં અંતર આવે છે-કેમ કે પ્રથમ
સમયમાં ઉત્પન્ન થયેલા એકઇન્દ્રિયવાળાઓમાં તેનું અસંલવ પણું છે. તે
દસ બાબતો નીચે બતાવ્યા પ્રમાણે છે.--

'ઓગાહના જહન્નેણં અંગુલસ્સ અસંખેજ્જહમાગં' અહિયાં અવગાહના
જઘન્યથી આંગળના અસંખ્યાતમા લાગ પ્રમાણ છે. તથા 'ઉક્કોસેણ વિ
અંગુલસ્સ અસંખેજ્જહમાગં' ઉત્કૃષ્ટથી પણ આંગળના અસંખ્યાત લાગ પ્રમાણ
છે. પડેલા ઉદ્દેશામાં બાહર વનસ્પતિકાચિકની અપેક્ષાથી કંઈક વધારે એક
હજાર યોજનની અવગાહના કહી છે. પરંતુ અહિયાં તે પ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન

નાલ્પા, इत्येवं नानात्वमत्रेति ? एव मन्यान्यपि नानात्वानि स्वधिया समुत्थानीति ।
 ‘आउयकम्मस्स नो वंधगा अवंधगा’ इमे प्रथमसमयकृतयुगमकृतग्नैकैन्द्रियजीवाः
 आयुष्कर्मणो नो बन्धका भवन्ति अपि तु अवन्धका एव भवन्ति २ । ‘आउ-
 यस्स नो उदीरगा अणुदीरगा’ आयुष्कस्य कर्मण उदीरका न भवन्ति किन्तु अनु-
 दीरका भवन्तीति ३ । ‘नो उस्सासगा नो नीसासगा, नो उस्सासनीसासगा’ न
 उच्छ्वासका उच्छ्वासवन्तो न भवन्ति, नो निःश्वासकाः, नो वा उच्छ्वासनिःश्वास-
 का भवन्तीति ४ । ‘सत्तविहवंधगा नो अट्टविहवंधगा’ आयुष्कवर्जानां सप्तविध
 कर्मणामेव बन्धका भवन्ति नो न तु अष्टविधकर्मणां बन्धका भवन्तीति ५ ‘ते णं

अधिक एक हजार योजन की अवगाहना कही गई है । पर यहां वह
 प्रथम समय में उत्पन्न होने के कारण अंगुल के असंख्यातवे भाग रूप
 से अल्प घतलाई गई है । इस प्रकार पूर्व उद्देशक की अपेक्षा अवगाहना
 कथन में भिन्नता है । इसी प्रकार से और भी अवशिष्ट भिन्नताएं
 अपनी बुद्धि से समझ लेनी चाहिये । ‘आउकम्मस्स नो वंधगा
 अबंधगा’ ‘ये प्रथम समयोत्पन्न कृतयुगम कृतयुगम राशिप्रमाण
 एकेन्द्रिय जीव आयुर्कर्म के बन्धक नहीं होते हैं किन्तु अवन्धक ही
 होते हैं । ‘आउयस्स नो उदीरगा, अणुदीरगा’ तथा ये आयुर्कर्म के
 उदीरक नहीं होते हैं किन्तु अनुदीरक होते हैं ३ । ‘नो उस्सा-
 सगा नो नीसासगा नो उस्सासनीसासगा’ ये उच्छ्वासवाले नहीं
 होते हैं निःश्वासवाले भी नहीं होते हैं उच्छ्वास निःश्वास वाले
 भी नहीं होते हैं, अर्थात् अनुच्छ्वास निःश्वासवाले होते
 हैं ४ ‘सत्तविह वंधगा, नो अट्टविह वंधगा’ ये आयुर्कर्म के सिवाय
 सात कर्मों के ही बन्धक होते हैं आठ कर्मों के बन्धक नहीं होते हैं ५ ।

થવાને કારણે આંગળના અસંખ્યાતમા ભાગ રૂપથી અલ્પ બતાવેલ છે. આ
 રીતે પહેલા ઉદ્દેશ કરતાં અવગાહનાના કથનમાં ભિન્નતા પણ આવે છે. આજ
 પ્રમાણે બીજું પણ બાકીનું ભિન્ન પણ પોતાની બુદ્ધિથી સમજી લેવું ‘આઉ
 કમ્મસ્સ નો વંધગા અવંધગા’ આ પ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન થયેલ કૃતયુગ્મ
 કૃતયુગ્મ રાશિવાળા ‘એકેન્દ્રિ જીવો આયુકર્મનો બંધ કરવાવાળા હોતા નથી.
 પરંતુ અબંધક જ હોય છે. ‘આઉયસ્સ નો ઉદીરગા અણુદીરગા’ તથા આ આયુ
 કર્મની ઉદીરણ કરવાવાળા હોતા નથી પરંતુ અનુદીરક હોય છે. ૩ ‘નો
 ઉસ્સાસગા નો નીસાસગા નો ઉસ્સાસનીસાસગા’ તેઓ ઉચ્છ્વાસવાળા હોતા નથી.
 નિઃશ્વાસવાળા પણ હોતા નથી તથા ઉચ્છ્વાસનિશ્વાસવાળા પણ હોતા નથી.
 ૪ ‘સત્તવિહવંધગા, નો અટ્ટવિહવંધગા’ આ આયુકર્મને છોડીને સાત કર્મ
 પ્રકૃતિઓનો જ બંધ કરવાવાળા હોય છે. આઠ કર્મપ્રકૃતિઓનો બંધ કરવાવાળા

મંતે ! પદમસમયકડજુમ્મકડજુમ્મ ઇગિદિયત્તિ વાલઓ કેવચ્ચિરં હોતિ' તે સ્વલ્લ મદન્ત ! પ્રથમસમયકૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મૈકેન્દ્રિયા ઇતિ કાલતઃ કિયચ્ચિરં ભવન્તિ ? ઇતિ પ્રશ્નઃ મગવાનાદ-‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ’ ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘એકં-સમયં’ એકપ્રમયમાત્રમેવ તે ભવન્તીતિ ૬ । ‘એવં ઠિઈંએ વિ’ એવં સ્થિતાવપિ સ્થિતિરપિ તેષામેકસમયમાત્રૈવેતિ ૭ । ‘સમુઘ્વાયા આદિલ્લા દોન્નિ’ સમુદ્ઘાતૌ આઘૌ દ્વૌ વેદનાકષાયરૂપૌ ભવતઃ ૮ । ‘સમોહયા ન પુચ્છિજ્જંતિ’ સમવહતા ઇતિ ન પૃચ્છયન્તે ૯ । ‘ઉવદ્દાના ન પુચ્છિજ્જંતિ’ ઉદ્વર્તના ન પૃચ્છયતે પ્રથમ-સમયકૃત્વાદેવ એત્થયોઃ સમુદ્ઘાતોદ્વર્તનયોરસંભવાદિતિ ૧૦ । ‘સેસં તદેવ સવ્વં નિરવસેસં’ શેષમ્-ઉત્પાદપરિણામાદિકં સર્વં પોહરવપિ મહાયુગ્મેષુ પ્રથમોદેશકવદેવ

‘તે ણં મંતે ! પદમસમયકડજુમ્મકડજુમ્મ ઇગિદિયત્તિ કાલઓ કેવ-ચ્ચિરં હોતિ’ હે અદન્ત ! યે પ્રથમ સમયોત્પન્ન કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિ પ્રમાણ એકેન્દ્રિય જીવ કાલકી અપેક્ષા કિતને સમય તક રહતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં-એકં સમયં’ હે ગૌતમ ! યે એક સમય માત્ર હી રહતે હૈં ૬ । ‘એવં ઠિઈંએ વિ’ હસ પ્રતાર સ્થિતિ મી હનકી એક સમય માત્ર કી હોતી હૈ ૭ । ‘સમુઘ્વાયા આદિલ્લા દોન્નિ’ સમુદ્ઘાત યહાં આદિ કે દો હોતે હૈં । વેદના સમુદ્ઘાત ઓર કષાય સમુદ્ઘાત ૮ । ‘સમોહયા ન પુચ્છિજ્જંતિ’ યે મારણાન્તિકસમુદ્ઘાત કરતે હૈં કયા એસી વાત યહાં નહીં પૂછની ચાહિયે તથા ઉદ્વર્તના કે સમ્બન્ધ મેં મી નહીં પૂછના ચાહિયે । કયોંકિ યે પ્રથમસમયવર્તી હોતે હૈં, હસલિયે હન દોનોં કી યહાં સંભાવના નહીં હૈ । ૧૦ ‘સેસં તદેવ સવ્વં નિરવસેસં’

હોતા નથી. ૫ તે ણં મંતે ! પદમસમય કડજુમ્મ કડજુમ્મ ઇગિદિયત્તિ કાલઓ કેવચ્ચિરં હોતિ’ હે ભગવન્ આ પ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન થયેલા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવે કાળની અપેક્ષાથી કેટલા સમય સુધી રહે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-‘એકં સમયં’ હે ગૌતમ ! આ એક સમય માત્રજ રહે છે. ૬, ‘એવં ઠિઈંએ વિ’ એજ પ્રમાણે તેઓની સ્થિતિ પણ એક સમયમાત્રની જ હોય છે. ૭ ‘સમુઘ્વાયા આદિલ્લા દોન્નિ’ તેઓને આદિના બે સમુદ્ઘાતો હોય છે. તે બે વેદના સમુદ્ઘાત અને કષાય સમુદ્ઘાત છે. ૮, ‘સમોહયા ન પુચ્છિજ્જંતિ’ તેઓ મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરે છે ? એ પ્રમાણે નો પ્રશ્ન અહિ થતો નથી તથા ઉદ્વર્તનાના સંબંધમાં પણ પ્રશ્ન કરવો નહીં કેમકે તેઓ પ્રથમ સમયમાં રહેવાવાળા હોય છે. તેથી તે બન્નેની સંભવના અહિયાં રહેતી નથી. ૧૦ ‘સેસં તદેવ સવ્વં નિરવસેસં’ બાકીનું બીજું સઘળું ઉત્પાદ, પરિભાષ,

જ્ઞાતવ્યમ્ 'સોલસસુ વિ ગમણસુ જાવ અણંતસુતો' પોહશસાપિ યાવદનન્ત કૃત્વઃ,
 इति पर्यन्तं विज्ञेयम्। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त तदेवं भदन्त ! इति,
 हे भदन्त ! प्रथमसमयकृतयुगमकृतयुगैकेन्द्रियाणामुपपातादिविषये यद् देवानु-
 प्रियेण कथितं तत् सर्वथा सत्यमेवेति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति
 वन्दित्वा नमस्सित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति ॥सू० १। ૩૫॥૨॥

इति श्री - विश्वविख्यातजगद्गुरुलभादिपदभूषितबालब्रह्मचरि - 'जिनाचार्य'
 पूज्यश्री-घासीलालत्रिविरचितायां 'श्री भगवतीसूत्रस्य' प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
 व्याख्यायां पञ्चत्रिंशत्तमे शतके द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥३५-२॥

ચાકી કા ઓર સબ ઉત્પાદ પરિમાણ આદિકા કથન સોલહ મહાયુગ્મો
 में प्रथम उद्देशक के जैसा ही है। 'सोलससु वि गमणसु जाव अणंत-
 खुत्तो' सोलह महायुगमों में 'यावत् वे अनन्तवार उत्पन्न हो चुके हैं'
 इस पाठ तक और सब पाठ कह लेना चाहिये। 'सेव भंते ! सेवं भंते !
 त्ति' हे भदन्त ! प्रथम समयोत्पन्न कृतयुगम कृतयुगम एकेन्द्रियों के
 उपपात आदि के विषय में जो आप देवानुप्रियने कहा है वह सर्वथा
 सत्य ही है। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्रीको वन्दना की और नम-
 स्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तपसे आत्माको
 भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० १॥

द्वितीय उद्देशक समाप्त ॥३५-२॥

વિગેરેનુ' કથન સોળ મહાયુગ્મોમાં પડેલા ઉદ્દેશમાં દહ્યા પ્રમાણે છે તેમ
 સમજવું. 'સોલસસુ વિ ગમણસુ જાવ અણંતસુતો' સોળ મહાયુગ્મોમાં
 યાવત્ તેઓ અનંતવાર ઉત્પન્ન થઇ ચુક્યા છે. આ પાઠના કથન સુધી
 બાકીનો તમામ પાઠ સમજ લેવો.

'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ પ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન થવાવાળા
 કૃતયુગ્મ, કૃતયુગ્મ એક ઈન્દ્રિયવાળાઓના ઉપપાત વિગેરેના વિષયમાં આપ
 દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્
 આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને
 ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી અને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર
 કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા
 થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા.

॥ખીલે ઉદ્દેશેા સમાપ્ત ॥૩૫-૨॥

तृतीयादारभ्यैकादशपर्यन्ता नवोद्देशकाः

मूलम्—अपढमसमय कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते !
कओ उववज्जंति ? एसो जहा पढमुद्देसो सोलससु वि जुम्मेसु
तहेव नेयव्वो जाव कलियोग कलियोगत्ताए जाव अणंतखुत्तो ।
सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३५-३॥

चरमसमय कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कओ
उववज्जंति ? एवं जहेव पढमसमय उद्देसओ नवरं देवा न उव-
वज्जंति तेउलैस्सा न पुच्छिज्जंति, सेसं तहेव । सेवं भंते ! सेवं
भंते ! त्ति ॥३५-४॥

अचरमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते !
कओ उववज्जंति ? जहा—अपढसमय उद्देसओ तहेव निरव-
सेसो भाणियव्वो । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३५-५॥

पढमपढमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते !
कओ उववज्जंति ? जहा पढमसमय उद्देसओ तहेव निरवसेसं ।
सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥३५-६॥

पढमअपढमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते !
कओ उववज्जंति जहा पढम समय उद्देसओ तहेव भाणियव्वो ।
सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३५-७॥

पढमचरमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते !
कओ उववज्जंति ? जहा चरमुद्देसओ तहेव निरवसेसं । सेवं
भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३५-८॥

पढमअचरमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते !
कओ उववज्जंति ? जहा वीओ उद्देसो तहेव निरवसेसं । सेवं
भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥३५-९॥

चरमअचरमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते !
कओ उववज्जंति ? जहा—पढमसमय उद्देसओ तहेव निरव-
सेसं । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३५-१०॥

चरमअचरमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते !
कओ उववज्जंति ? जहा—पढमसमय उद्देसओ तहेव निरव-
सेसं । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥३५-११॥

एवं एए एकारस उद्देसगा । पढमतइओ पंचमओ य
सरिसगमा । सेसा अट्ट सरिसगमा । नवरं चउत्थे छट्टे अट्टमे
दसमे य देवा न उववज्जंति तेउलेस्सा नत्थि ॥३५-११॥

पणतीसइमे सए पढमं एगिंदियमहाजुम्मसयं समत्तं ॥

छाया—अप्रथमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्प-
द्यन्ते, एषो यथा प्रथमोद्देशकः षोडशस्वपि युग्मेषु तथैव ज्ञातव्यो यावत् कल्योज
कल्योजतया यावदनन्तकृत्वः । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥३५-३॥

चरमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ?
एवं यथैव प्रथमोद्देशकः । नवरं देवा नोत्पद्यन्ते तेजोल्लेख्या न पृच्छन्ते, शेषं
तथैव । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥३५।४॥

अचरमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते यथा
अप्रथमसमयोद्देशकः तथैव निरवशेषो भणितव्यः । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त !
इति ॥३५।५॥

प्रथमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते । यथा प्रथम
समयोद्देशकः स्तथैव निरवशेषम् । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥३५ ६॥

प्रथमअप्रथमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुतः उत्प-
द्यन्ते ! यथा प्रथमसमयोद्देशकः स्तथैव भणितव्यः ! तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त !
इति ॥३५।७॥

प्रथमचरमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रिया खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ।
यथा—चरमोद्देशकः स्तथैव निरवशेषम् । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥३५।८॥

प्रथमअचरमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते

યથા—દ્વિતીયોદ્દેશક સ્તથૈવ નિરવશેષમ્ । તદેવં ભદન્ત ! તદેવં ભદન્ત ! ઇતિ
યાવદ્વિહરતિ ॥૩૫।૯॥

ચરમચરમસમયકૃતયુગ્મકૃતયુગ્મૈકેન્દ્રિયાઃ સ્વલુ ભદન્ત ! કુત ઉત્પદ્યન્તે યથા—
ચતુર્થ ઉદ્દેશક સ્તથૈવ । તદેવં ભદન્ત ! તદેવં ભદન્ત ! ઇતિ ૩૫।૧૦।

ચરમઅચરમસમયકૃતયુગ્મકૃતયુગ્મૈકેન્દ્રિયાઃ સ્વલુ ભદન્ત ! કુત ઉત્પદ્યન્તે
યથા—પ્રથમસમયોદ્દેશક સ્તથૈવ નિરવશેષમ્ । તદેવં ભદન્ત ! તદેવં ભદન્ત ! ઇતિ
યાવદ્વિહરતિ ॥૩૫।૧૧॥

एषमेते एकादशोद्देशकाः । प्रथमस्तृतीयाः पञ्चमकश्च सदृशगमाः । शेषा
अष्टौ सदृशगमाः । नन्तरं चतुर्थे पष्ठे अष्टमे दशमे च देवा नोत्पद्यन्ते तेजो-
लेश्या नास्ति ॥

॥ पञ्चत्रिंशत्तमे शतके प्रथममेकेन्द्रियमहायुगमशतं समाप्तम् ॥ ૩૫.૧॥

ટીકા—‘અપદમસમયકહજુમ્મકહજુમ્મ ઇન્દિયાણં મંતે ! કમો ઉવવ-
જ્જંતિ’ અપ્રથમસમયકૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મૈકેન્દ્રિયાઃ સ્વલુ ભદન્ત ! કુત ઉત્પદ્યન્તે ।
અત્રાપ્રથમઃ સમયો યેષામેકેન્દ્રિયત્વેન ઉત્પન્નાનાં દ્વયાદયઃ સમયા સ્તે અપ્રથમ
સમયૈકેન્દ્રિયાઃ કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ રાશિ પ્રમાણાશ્ચ તે તાદૃશા એકેન્દ્રિયાઃ કુત
ઉત્પદ્યન્તે કિં નૈરયિકેભ્ય સ્તિર્યગ્મ્યો મનુષ્યેભ્યો દેવેભ્યો વા આગત્ય સમુત્પદ્યન્તે

શતક ૩૫ ઉદ્દેશક ૩ સે ૧૧ તક

‘અપદમ સમય કહજુમ્મકહજુમ્મ ઇન્દિયાણં મંતે ! કમો ઉવવ-
જ્જંતિ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—હે ભદન્ત ! અપ્રથમ સમયોત્પન્ન કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત
એકેન્દ્રિય જીવ કિસ સ્થાન વિશેષ સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? એકે-
ન્દ્રિય રૂપ સે ઉત્પન્ન હોને મેં જિન્હેં દો આદિ સમય હો ચુકે હૈં—એસે વે
એકેન્દ્રિય જીવ અપ્રથમ સમયોત્પન્ન કહે ગયે હૈં । કયા એસે યે એકેન્દ્રિય
જીવ નૈરયિકોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા તિર્યગ્મોનિકોં

ત્રીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

‘અપદમસમય કહજુમ્મ કહજુમ્મ ઇન્દિયાણં મંતે ! કમો ઉવવજ્જંતિ’ ઇત્યાદિ.

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ અપ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન થયેલા કૃતયુગ્મ, કૃતયુગ્મ,
રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? એકે-
ન્દ્રિયપણથી ઉત્પન્ન થવામાં જેઓને એ વિશેષ સમય થઈ ચૂકેલ હોય—એવા તે
એકેન્દ્રિય જીવો અપ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન થવાવાળા કહેવામાં આવેલ છે. એવા
એકે ઇન્દ્રિયવાળા જીવો શું નૈરયિકોંમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા

इति प्रश्नः । उत्तरमाह-‘एसो’ इत्यादि । ‘एसो जहा पढमुद्देशो सोलससु वि जुम्मेसु तहेव नेयव्वो’ एष रत्तीयोद्देशकः यथा-येन रूपेण प्रथमोद्देशकः षोडशसु अपि युग्मेषु कथित रतथैव-तेनैव रूपेण अयमपि तृतीयोद्देशः षोडशराशि भेदानाश्रित्य ज्ञातव्यो विचारयितव्यः । कियत्पर्यन्त तत्राह-‘जाव कलिभोग कलिभोगत्ताए’ यावत्कलयोज कलयोजतया कृतयुगमकृतयुगमतया इत्यत आरभ्य कलयोज द्वापरयुगम इत्येतत् पर्यन्तराशीनां ग्रहणं यावत्पदेन भवति । ‘जाव अणंत-

में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा मनुष्यों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा देवोंमें से आकरके उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-‘एसो जहा पढमुद्देशो सोलससु वि जुम्मेसु तहेव नेयव्वो’ हे गौतम । जिस रीति से प्रथम उद्देशक सोलह युग्यों को लेकर कहा गया है । उसी रीति से (१६) सोलह राशि भेदों को आश्रित करके यह तृतीय उद्देशक भी कह लेना चाहिये । यावत् ‘कलिभोग कलिभोगत्ताए’ अप्रथम समयोत्पन्न कलयोज कलयोज राशि प्रथित एकेन्द्रिय जीव यावत् अनन्तवार उत्पन्न हो चुके हैं’ यहां तक इस उद्देशकको कहकर समाप्त करना चाहिये । यहां प्रथम यावत्पद से बीच की शेष राशियां गृहीत हुई हैं । इस प्रकार ये अप्रथम समयोत्पन्न एकेन्द्रिय जीव कृतयुगम त्रयोजरूप से, कृतयुगम द्वापररूप से, कृतयुगम कलयोजरूपसे त्रयोज कृतयुगमरूप से, त्रयोजत्रयोजरूप से, द्वापरयुगम त्रयोजरूप से, द्वापरयुगम द्वापरयुगमरूपसे, द्वापरयुगम कलयोजरूपसे, कलयोजकृतयुगमरूपसे,

તિથ્ય ચોનિકામાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-‘एसो जहा पढमुद्देशो सोलससु वि जुम्मेसु तहेव नेयव्वो’ हे गौतम । જે પ્રમાણે પહેલા ઉદ્દેશમાં સોળ યુગ્મો ને લઈને કહેલ છે, એજ પ્રમાણે (૧૬) સોળ રાશિ ભેદે નો આશ્રય કરીને આ ત્રીજો ઉદ્દેશો પણ કહેવો જોઈએ. યાવત્ ‘કલિભોગ કલિભોગત્તાએ’ અપ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન થયેલા કલ્યોજ કલ્યોજ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો યાવત્ અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચુક્યા છે, આ કથન સુધી આ ઉદ્દેશો પુરો કહેવો જોઈએ અહિયાં પહેલા યાવત્પદથી વચલી બાકીની રાશિયો ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે. આ રીતે આ અપ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન થયેલા એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો કૃતયુગ્મ, ત્ર્યોજ પણાથી કૃતયુગ્મ દ્વાપરપણાથી કૃતયુગ્મ કલ્યોજ પણાથી ત્ર્યોજ, કૃતયુગ્મ પણાથી ત્ર્યોજ ત્ર્યોજ પણાથી ત્ર્યોજ દ્વાપર પણાથી ત્ર્યોજ કલ્યોજ પણાથી દ્વાપરયુગ્મ કૃતયુગ્મ પણાથી દ્વાપરયુગ્મ ત્ર્યોજ પણાથી

खुत्तो' यावद् अनन्तकृत्वः, अप्रथमसमय कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः कुत उत्प-
द्यन्ते इत्यारभ्य असकृत् अथवा' इत्यन्तस्य समग्रस्यापि प्रकरणस्य संग्रहो
यावत्पदेन ज्ञातव्यः तिर्यङ्मनुष्यदेवेभ्य उत्पद्यन्ते इत्यादिकं सर्वं प्रथमोद्देशक-
वदेव ज्ञातव्यमिति, 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त !
इति हे भदन्त ! अप्रथमसमय कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाणामुत्पादादिविषये यत्
कथितं तत्सर्वमेव सत्यमिति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा
नमस्यित्वा यावदयथासुखम्, विहरतीति ।

॥ पञ्चत्रिंशत्तमे शतके तृतीयोद्देशकः समाप्तः ॥३५॥३॥

कलयोज व्योजरूपसे कलयोजद्रापरयुग्मरूपसे वहां दूसरे यावत् पदसे कहाँ
से आकरके उत्पन्न होते हैं ? इत्यादि प्रश्न से लेकर 'असङ्ग-असकृत्'
इस अन्तिम पाठ तक सब कथन का संग्रह प्रथम उद्देशकके जैसा ही
यहां जानना चाहिये । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! अप्रथम
समयोत्पन्न कृतयुग्मकृतयुग्म एकेन्द्रिय जीवों के उत्पादादिके विषय में
जो आप देवानुप्रियने कहा है वह सब सत्य ही है २ । इस प्रकार
कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना
नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए
अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥१॥

॥ तृतीय उद्देशक समाप्त ॥३५-३॥

द्रापरयुग्म द्रापरयुग्म पञ्चाथी द्रापरयुग्म ऋद्योञ् पञ्चाथी ऋद्योञ् कृतयुग्म
पञ्चाथी ऋद्योञ् व्योञ्पञ्चाथी ऋद्योञ् द्रापरयुग्मपञ्चाथी कथाथी आवीने
उत्पन्न थाय छे ? विगेरे प्रश्नगी लछिने 'असङ्ग' 'असकृत्' आ छेवला पाठ सुधी
सधणुं कथन पछेला उद्देशा प्रमाणे समञ्जसुं.

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' छे भगवन् अप्रथम समयमां उत्पन्न
थयेला कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रिय जीवोना उत्पाद विगेरेना संभंधमां
आप देवानुप्रिये ने कथन कयुं छे, ते सधणुं कथन सर्वथा सत्य छे. छे भगवन्
आप देवानुप्रियनुं सधणुं कथन सर्वथा सत्य न छे. आ प्रमाणे कछीने गौतम-
स्वामीञ्छे प्रभुश्रीने वंदना करी नमस्कार कय्या वंदना नमस्कार करीने ते पछी
संयम अने तपथी पोताना आत्माने भावित करता थका पोताना स्थान पर
विराजमान थया. ॥सू०१॥

॥त्रीञ्छे उद्देशो समाप्त ३५-३॥

ચરમસમયકઢજુમ્મકઢજુમ્મ ઇગિંદિયાણં મંતે ! કઓર્હિતો ઉવવજ્જંતિ' ચરમસમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મકેન્દ્રિયાઃ સ્વલ્લ મદન્ત ! કુત ઉત્પદ્યન્તે કિં નૈરયિકેન્ધ સ્તિર્યગ્મ્યો મનુષ્યેન્ધ્યો દેવેન્ધ્યો વોત્પદ્યન્તે ઇત્યાદિ । અત્ર ચરમસમયશબ્દેન એકેન્દ્રિયાણાં મરણસમયો વિવક્ષિતઃ, સ ચ પરમવાયુપઃ પ્રથમસમયે એવ, તત્ર ચ વર્તમાનાઃ ચરમસમયાઃ, સંખ્યા ચ કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મરાશિપ્રમાણા યે એકેન્દ્રિયા સ્તે ચરમસમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મકેન્દ્રિયા ઇતિ । મગવાનાહ—‘એવં’ ઇત્યાદિ । ‘એવં જહેવ પદમસમય ઉદેસઓ’ એવં યથૈવ પ્રથમસમયાદેશકઃ દ્વિતીયોદેશકઃ એતસ્યૈવ

ચૌથે ઉદેશે કા પ્રારંભ

‘ચરમસમય કઢજુમ્મ કઢજુમ્મ ઇગિંદિયાણં મંતે’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે મદન્ત ચરમસમય મેં વર્તમાન એસે કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ એકેન્દ્રિયજીવ કિસ સ્થાન વિશેષ સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હેં ? કયા વે નૈરયિકોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હેં ? અથવા તિર્યગ્મ્યોનિકોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હેં ? અથવા મનુષ્યોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હેં ? અથવા દેવોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હેં ? યહાં ચરમ શબ્દ સે એકેન્દ્રિયોં કા મરણ સમય વિવક્ષિત હુઆ હૈ । ઓર યહ ઉનકી પર-ભવકી આયુકા પ્રથમસમય રૂપ હૈ । હસમેં વર્તમાન એકેન્દ્રિય ચરમસમય શબ્દ સે કહે ગયે હેં । અતઃ ચરમસમય મેં વર્તમાન ઓર સંખ્યા મેં કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ એકેન્દ્રિય જીવ કહાં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હેં ? એસે હસ ગૌતમ કે પ્રશ્ન કા ઉત્તર દેતે હુએ પ્રભુશ્રી કહતે હેં—‘એવં જહેવ પદમસમય ઉદેસઓ’ ‘હે ગૌતમ । હસ સમ્બન્ધ મેં જૈસા પ્રથમ સમયકે

ચોથા ઉદેશાનો પ્રારંભ—

ટીકાર્થ—‘ચરમસમયકઢજુમ્મકઢજુમ્મ ઇગિંદિયાણં મંતે ।’ ઇત્યાદિ હે ભગવન્ ચરમ સમયમાં રહેલા એવા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ એકેન્દ્રિય એવા કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોંમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યગ્મ્યોંમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે કે મનુષ્યોં-માંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? કે દેવોંમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અહિયાં ચરમ શબ્દથી એકેન્દ્રિયોનો મરણ સમય વિવક્ષિત થયેલ છે. અને આ તેઓના પરલવના આયુષ્યના પ્રથમ સમય રૂપ છે. તેમાં રહે-આરા એકેન્દ્રિય ચરમ સમય શબ્દથી કહેલ છે. તેથી ચરમ સમયમાં રહેલા અને સંખ્યામાં કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ એકેન્દ્રિય એવા કયાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપનાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—‘એવં જહેવ પદમ સમય ઉદેસઓ’ હે ગૌતમ ! આ સંબંધમાં પ્રથમ સમય

શતકસ્ય દ્વિતીયે પ્રથમસમયનામકે ઉદ્દેશકે યથા એકેન્દ્રિયાણાં તિર્યગાદિભ્ય ઉત્પાદાદિ કથિતમ્, તથૈવ સર્વમિદાપિ વક્તવ્યમ્ પ્રથમસમયે ઔષિકોદ્દેશકા-
પેક્ષયા દશનાનાત્વાનિ કથિતાનિ તાન્યેવ અત્રાપિ તેનૈવ રુપેણ વક્તવ્યાનિ ઉભયોઃ
સમાનરુપસ્ત્વાત્ પ્રથમસમય ચરમસમયૈકેન્દ્રિયાણાં યો વિશેષઃ તદર્શયતિ-
'નવરં' इत्यादि, 'नवरं देवा न उववज्जंति तेउलेस्सा न पुच्छिज्जंति' नवरं केवलं
देवा नोत्पद्यन्ते चरमसमय कृतयुग्मकृतयुग्मैकैन्द्रियेषु देवा नोत्पद्यन्ते अतोऽत्र
तेजोलेख्या न पृच्छयते । 'सेसं तद्देव' शेषं तथैव-प्रथमसमयैकैन्द्रियप्रकरण-

સમ્બન્ધ મેં દ્વિતીય ઉદ્દેશક કહા ગયા હૈ-અર્થાત્ હસી શતક કે દ્વિતીય
પ્રથમ સમય નામ કે ઉદ્દેશક મેં જૈસા એકેન્દ્રિયોં કે તિર્યગ્ આદિ સે
આક્રમે ઉત્પાદાદિ કે વિષયમેં કહા ગયા હૈ વૈસાહી સબ યહાં પર
કહનાં ચાહિયે । પ્રથમ સમયમેં ઔષિક ઉદ્દેશક કી અપેક્ષા જો ૧૦ ભિન્ન-
તાં કહી ગઈ હૈ વે હી ભિન્નતાંં ઉસી રુપ સે યહાં મી કહ લેની ચાહિયે
ક્યોંકિ દોનોં મેં સમાનરુપતા હૈ । પ્રથમ સમગધતીં ઓર ચરમસમય-
વર્તીં એકેન્દ્રિય જીવોં મેં જો વિશેષતા હૈ ઉસે પ્રકટ કરને કે લિયે
'નવરં દેવા ન ઉવવજ્જંતિ તેઉલેસ્સા ન પુચ્છિજ્જંતિ' સૂત્રકાર કહતે હૈ
કિ ચરમસમયવર્તીં કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ એકેન્દ્રિય જીવોં મેં
દેવ ઉત્પન્ન નહીં હોતે હૈં હસીલિયે યહાં તેજોલેખ્યા કે સમ્બન્ધ મેં પ્રશ્ન
નહીં કરનાં ચાહિયે ક્યોંકિ વહ યહાં હોતી હી નહીં હૈ । 'સેસં તદ્દેવ'
વાકીકા ઓર સબ કથન યહાં પ્રથમસમયવર્તીં એકેન્દ્રિય જીવ કે પ્રક-

ના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું કથન બીજા ઉદ્દેશમાં કરવામાં આવ્યું છે, અર્થાત્
આ શતકના બીજા પ્રથમ સમય નામના ઉદ્દેશમાં એકેન્દ્રિયોના તિર્યગ્
વિગેરેમાંથી આવીને ઉત્પાદ વિગેરેના સંબંધમાં કહેલ છે. એજ પ્રમાણેનું
સઘળું કથન અહિયાં કહેવું જોઈએ. પહેલા ઉદ્દેશમાં ઔષિક ઉદ્દેશાની
અપેક્ષાથી જે ૧૦ દસ પ્રકારનું ભિન્ન પણું કહ્યું છે. તે સઘળું ભિન્ન પણું
એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ કહેવું જોઈએ. કેમ કે બન્નેમાં સમાન પણું છે.
પ્રથમ સમયમાં રહેલ અને ચરમ સમયમાં રહેલ એકેન્દ્રિય જીવોમાં જે વિશેષ
પણું છે, તે બતાવવા માટે 'નવરં દેવા ન ઉવવજ્જંતિ' તેઉલેસ્સા ન પુચ્છિ-
જ્જંતિ' સૂત્રકારે આ સૂત્રપાઠ કહેલ છે. આ સૂત્રપાઠથી સૂત્રકાર એ કહે છે કે-
ચરમ સમયમાં રહેનારા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશીવાળા એકેન્દ્રિય જીવોમાં દેવો
ઉત્પન્ન થતા નથી. તેથી અહિયાં તેજોલેખ્યાના સંબંધમાં પ્રશ્ન કરેલ નથી, કેમ
કે તેજોલેખ્યા અહિયાં હોતી નથી. 'સેસં તદ્દેવ' બાકીનું બીજું સઘળું કથન
અહિયાં પ્રથમ સમયમાં રહેનારા એકેન્દ્રિય જીવોના પ્રકરણ પ્રમાણે સમજવું.

વદેવ સર્વ જ્ઞાતવ્યમિતિ । ‘સેવં મતે ! સેવં મતે ત્તિ’ તદેવં મદન્ત ! તદેવ મદન્ત !
 इति, हे भदन्त ! चरमसमयएकेन्द्रियाणां मुत्पादादि विषये यद् भावता कथितं
 तत्सर्वमेव सत्यमिति कथयित्वा यावत् संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन्
 विहरतीति ॥३५।४॥

‘અચરમસમયકહજુમ્મકહજુમ્મ ઇન્દિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જતિ’
 અચરમસમયકૃતયુગ્મકૃતયુગ્મકેન્દ્રિયાઃ સ્વલુ મદન્ત ! કુત ઉત્પદ્યન્તે, ન વિદ્યતે,
 मरणसमयात्मक चरमसमयो येषां मेकेन्द्रियाणां तादृशकृतयुगमकृतयुगं राशि
 प्रमाणानां ते अचरमसमयकृतयुगमकृतयुगमैकेन्द्रियाः कथ्यन्त इति प्रश्नः,

रण के जैसा ही है । ‘सेवં मंते ! सेवં मंते ! त्ति’ हे भदन्त ! चरमसमय-
 वर्ती एकेन्द्रिय जीवों के उत्पाद आदि के विषय में जो आपने कहा है
 वह सर्व ही सत्य है २ । ऐसा कहकर गौतमने प्रभुश्री को चन्दना की
 और नमस्तार किया चन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तपसे
 आत्माको आविष्ट करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये १॥

શતક ૩૫ ચતુર્થ ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥૩૫-૪॥

પાંચવેં ઉદ્દેશે કા પ્રારંભ

‘અચરમસમય કહજુમ્મકહજુમ્મ ઇન્દિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જતિ’
 ટીકાર્થ-હે ભદન્ત ! જો અચરમસમયવર્તી કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત
 एकेन्द्रिय जीव हैं वे किस स्थान विशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं ?
 जिन एकेन्द्रिय जीवोंका मरण समयात्मक चरमसमय नहीं है और जो
 संख्या में कृतयुगमकृतयुगं राशिप्रमाण है ऐसे वे एकेन्द्रिय जीव अचरम

સેવં મતે ! સેવં મતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ અચરમ સમયમા રહેતારા એકે-
 ન્દ્રિય જીવોના ઉત્પાદ આદિના વિષયમા આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કરેલ છે,
 તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રી
 ને વદના કરી નમસ્કાર કર્યા વદના નમસ્કાર કરીને સંયમ અને તપથી પોતાના
 આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ॥સુ.૦૧॥

॥ચોથો ઉદ્દેશે સમાપ્ત ॥૩૫-૪॥

પાંચમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

ટીકાર્થ-‘અચરસમય કહજુમ્મકહજુમ્મ ઇન્દિયાણ મંતે ! કઓ ઉવવજ્જતિ’
 ઇત્યાદિ હે ભગવન્ અચરમ સમયમા રહેતારા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા
 જે એકેન્દ્રિય જીવો છે, તેઓ કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ?
 જે એકેન્દ્રિય જીવોનો મરણ સમયાત્મક અચરમ સમય નથી. અને જે સંખ્યામાં
 કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ છે એવા તે એકેન્દ્રિય જીવો અચરમ સમયમાં
 રહેલા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણવાળા કહેવામાં આવ્યા છે, આ પ્રશ્નના

ઉત્તરમાહ—‘જહા’ इत्यादि, ‘जहा अपढमसमय उद्देशो तद्देव निरवसेसो भाणि-
यव्वो’ यथा अपथमसमयनामको तृतीयोद्देशक स्वयैव निरवशेषो भणितव्य
एतच्छतकीय द्वितीयोद्देशकवदेव यावन्तकृत्वः, इति पर्यन्त सर्व ज्ञातव्यम्, अत्र
देवा अपि उत्पद्यन्ते ‘सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति’ तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त !
इति हे भदन्त ! अचरमसमयैकेन्द्रियाणां मुत्पादादि विषये यत् कथितं देवानुप्रि-
येण तत्सर्वं सत्यमेवेति कथयित्वा वन्दित्वा नमस्यित्वा यावद्विहरतीति ॥३५॥५॥

॥ पञ्चत्रिंशत्तने शतके पञ्चमोद्देशकः समाप्तः ॥३५॥५॥

સમયવર્તી કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ કહે ગયે હૈં । इसके उत्तर में प्रभुश्री
कहते हैं—‘जहा अपढमसमय उद्देशो तद्देव निरवसेसो भाणियव्वो’
हे गौतम जैसा अप्रथम समय नामक तृतीय उद्देशक कहा गया है उसी
प्रकारसे यहाँ पर भी सब कथन कर लेना चाहिये और वह सब कथन
‘यावत् अनन्तवार वे वहाँ उत्पन्न हो चुके हैं’ इस अन्तिम सूत्रपाठ
तक कह लेना चाहिये । यहाँ देव भी उत्पन्न होते हैं । ‘सेवं भंते ! सेवं
भंते ! त्ति’ हे भदन्त ! अचरमसमयवर्ती एकेन्द्रिय के उत्पाद आदिके
विषय में जो आप देवानुप्रियने कहा है वह सब सत्य ही है २ । इस
प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया
वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तपसे आत्माको भावित करते
हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू०१॥

॥ शतक ३५ पञ्चमोद्देशक समाप्त ३५॥

ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—‘जहा पढमसमयउद्देशो तद्देव निरवसेसो
भाणियव्वो’ हे गौतम ने प्रमाणे प्रथम समय नामने। नीले उद्देशे। कही
छे ओज प्रमाणे अडियां पणु सत्रणुं कथन समजणुं लेधये, अने आ
सधणुं कथन यावत् तेओ अनंतवार त्यां उत्पन्न थणुं युक्रयां छे, आ प्रमाणे
उद्देशा सूत्रपाठ सुधी कहेणुं लेधये, अडियां देवो पणु उत्पन्न थाय छे.

‘सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति’ हे लगवन् अचरम समयમાં રહેવાળા
એકેન્દ્રિય જીવોના ઉત્પાદ ત્રિગેરે વિષયના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે ને
કથન કર્યું છે તે સર્વથા સત્ય છે હે લગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન
સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરીને
તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના
આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥પાંચમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૫-૫॥

પદમપદમ સમય કહજુમ્મકહજુમ્મ ઇન્દિયાણં મંતે ! કઠો ઉવવજ્જતિ ?
પ્રથમપ્રથમસમયકૃતયુગ્મકૃતયુગ્મકેન્દ્રિયાઃ સ્વલુ મદન્ત ! કુત ઉત્પદ્યન્તે ?
એકેન્દ્રિયોત્પાદસ્ય પ્રથમસમયયોગાદ્ યે પ્રથમાઃ પ્રથમશ્ચ સમય કૃતયુગ્મકૃતયુ
ગ્મત્વાનુભવસ્ય યેવા મેકેન્દ્રિયાણાં તે પ્રથમપ્રથમકૃતયુગ્મકૃતયુગ્મકેન્દ્રિયા ઇતિ
કથ્યન્તે એતે કુત ઉત્પદ્યન્તે ઇતિ પ્રશ્નઃ, ઉત્તરમાહ—અતિદેશદ્વારેણ ‘જહા’
ઇત્યાદિ, ‘જહા પદમસમય ઉદેસઓ તદેવ નિરવસેમં’ યથા પ્રથમસમયોદેશકો
દ્વિતીયઃ તથૈવ નિરવશેષમ્ એતચ્છતકીયદ્વિતીયોદેશકે યેન રૂપેણ એકેન્દ્રિયાણા

‘પદમ પદમસમય કહજુમ્મ કહજુમ્મ ઇન્દિયાણં મંતે ! કઠો ઉવ-
વજ્જતિ’ ઇત્યાદિ હે મદન્ત ! પ્રથમ પ્રથમ સમયવર્તી કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ-
રાશિપ્રમાણ એકેન્દ્રિય જીવ કિસ સ્થાન વિશેષસે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે
હૈં ? એકેન્દ્રિય રૂપસે ઉત્પાદ કે પ્રથમ સમય કે યોગ સે જો પ્રથમ હૈં તથા
કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મત્વ કે અનુભવ કે પ્રથમ સમય મેં જો વર્તમાન હૈં એસે
એકેન્દ્રિય જીવ પ્રથમસમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિય જીવ હૈં । યે કર્તા
સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? એસા યહ ગૌતમકા પ્રશ્ન હૈં હસકે ઉત્તર
મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં—‘જહા પદમસમય ઉદેસઓ તદેવ નિરવસેમં’ હે
ગૌતમ ! જૈસા પ્રથમસમયોદેશક-દ્વિતીય ઉદેશક મેં કહા ગયા હૈં ઝમી

॥છઠ્ઠા ઉદેશાનેા પ્રારંભ—

ટીકા—‘પદમસમય કહજુમ્મકહજુમ્મ ઇન્દિયાણં મંતે ! કઠો ઉવવજ્જતિ’
ઇત્યાદિ હે લગવન્ જેઓ પ્રથમ સમયમાં રહેવાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશી
વાળા એકેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવેને ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ?
એકેન્દ્રિય પશુથી ઉત્પાદના પ્રથમ સમયના યોગથી જેઓ પ્રથમ છે, તથા
કૃતયુગ્મ, કૃતયુગ્મપશુના અનુભવના પ્રથમ સમયમાં જેઓ ઉત્પન્ન થયેલા છે,
જેવા એકેન્દ્રિય જીવો પ્રથમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિય જીવો છે.
તે જીવો કયાંથી આવેને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રમાણે ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને
પૂછેલ છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—‘જહા પદમ-
સમય ઉદેસઓ તદેવ નિરવસેમં’ હે ગૌતમ ! જે રીતે પહેલા ઉદેશો બીજા
ઉદેશમાં કહેવામાં આવેલ છે, અર્થાત્ પહેલા ઉદેશ પ્રમાણેનું કથન બીજા
ઉદેશમાં સમજવું તેમ કહેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિંયાં પણ એકેન્દ્રિય

મુપપાતાદારમ્થ 'અસકૃત્ અથવા અનન્તકૃત્વઃ' એતત્પર્યન્તં સર્વમિદાપિ વક્તવ્યમ્
'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ જાત્ર વિહરત્' તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ
યાત્રદ્વિહરતિ, હે મદન્ત ! પ્રથમસમયકૃતયુગ્મકૃતયુગ્મેકેન્દ્રિયાણા મુપપાતાદિવિષયે
યદેવાનુપ્રિયેણ કથિતં તત્સર્વં સત્યમેવેતિ કથયિત્વા ગૌતમો મગધન્તં વન્દતે
નમસ્સ્યતિ વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા યાત્રદ્વિહરતીતિ ॥

॥ પશ્ચત્ત્રિશત્તમે શતકે ષષ્ઠોદ્દેશકઃ સમાપ્તઃ ॥૩૫૬॥

‘પદમઅપદમસમય કલ્પજુમ્મકલ્પજુમ્મઅગ્નિદિયા ણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’
પ્રથમાપ્રથમસમયકૃતયુગ્મકૃતયુગ્મેકેન્દ્રિયાઃ સ્વલુ મદન્ત ! કુત ઉત્પદ્યન્તે પ્રથમ-
પ્રકાર સ્થે યહાં પર ઓ એકેન્દ્રિય જીવોં કે ઉત્પાદ સે લેકર ‘યાવત્ વે
વહાં અનન્તવાર ઉત્પન્ન હો ચુકે હેં’ હસ અન્તિમ પાઠ તક, કહ લેના
ચાહિયે ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે મદન્ત ! પ્રથમ સમય કૃતયુગ્મ
કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિયોં કે ઉત્પાદ આદિ કે વિષય મેં જો આપ દેવાનુપ્રિયને
કહા હૈ વહ સ્વ સત્ય હી હૈ એસા કહકર ગૌતમને પ્રભુશ્રીકો વન્દના કી
ઔર નમસ્કાર કિયા વન્દના નમસ્કાર કર ફિર વે સંયમ ઔર તપસે
આત્મા કો ભાવિત કરતે હુઅ અપને સ્થાન પર ચિરાજમાન હો ગયે ॥

॥ શતક ૩૫ વાં ઉદ્દેશક છટ્ટા સમાપ્ત ૩૫-૬॥

‘પદમ અપદમ સમય કલ્પજુમ્મ કલ્પજુમ્મ અગ્નિદિયાણં મંતે ! ઇત્યાદિ’
ટીકાર્થ-હે મદન્ત ! પ્રથમ અપ્રથમ સમયવર્તી કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિ-
પ્રમિત એકેન્દ્રિય જીવ કિસ સ્થાન વિશેષ સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હેં ?

જીવોના ઉત્પાદથી લઈને યાવત્ તેઓ ત્યાં અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચુક્યા છે.
આ છેલ્લા પાઠ સુધી કહેવું બોધ્યું.

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ પહેલા પહેલા સમય કૃતયુગ્મ
કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિયોના ઉત્પાદ વિશેષે વિષયના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે
કથન કર્યું છે, તે સંબંધ કથન સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું
સંબંધ કથન સર્વથા સત્ય જ છે આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને
વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ
અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થઈ પોતાના સ્થાન પર
ચિરાજમાન થયા ॥૩૫૭॥

॥ છટ્ટો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૫-૬॥

સાતમા ઉદ્દેશોનો પ્રારંભ—

ટીકા-‘પદમઅપદમસમય કલ્પજુમ્મકલ્પજુમ્મ અગ્નિદિયાણં મંતે ! ઇત્યાદિ’ હે
ભગવન્ પ્રથમ અપ્રથમ સમયમાં રહેલાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા

स्तथैव ये अप्रथमो दृष्ट्यादि समयः कृतयुगमकृतयुगमत्वानुभूते येषां मेकेन्द्रियाणां ते प्रथमाप्रथमसमयकृतयुगमकृतयुगमैकेन्द्रिया इति कथ्यन्ते ते इत्थंभूता एकेन्द्रियाः कुत उत्पद्यन्ते इति प्रश्नः, उत्तरयति-इहापि अतिदेशद्वारेण 'जहा' इत्यादि 'जहा पढमसमय उद्देशो तहेव भाणियव्वो' यथा-प्रथमसमयोद्देशो द्वितीयोद्देशकस्तथैव सप्तमोद्देशकोऽपि समग्रो वक्तव्यः। अत्र च एकेन्द्रियत्वोत्पाद-प्रथमसमयवर्तित्वे तेषां यद्विवक्षितसंख्यानुभवस्याप्रथमसमयवर्तित्वं तत्प्राग्भवसम्बन्धिनीं समयसंख्यामधिकृत्येति विज्ञेयम्। एवमुत्तरत्रापीति 'सेवं

इस प्रश्न का अतिदेश द्वारा उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतम से कहते हैं- 'गोयमा ! जहा पढमसमय उद्देशो तहेव भाणियव्वो' हे गौतम ! जैसा प्रथम समय उद्देशक अर्थात् द्वितीय उद्देशक कहा जा चुका है इसी प्रकार से यह सानत्रां उद्देशक भी सम्पूर्ण रूपसे कह लेना चाहिये। यहां एकेन्द्रिय रूप से उत्पन्न होने के प्रथम समयवर्ति होने पर भी कृतयुगम कृतयुगम राशिरूपसे विवक्षित संख्याका जो यहाँ अनुभवन है-अर्थात् विवक्षित संख्या के अनुभवन करने की अप्रथम समयवर्तिता है-वह पूर्वभव की समय संख्या को लेकर कहा गया है ऐसा जानना चाहिये। तात्पर्य इसका ऐसा है कि एकेन्द्रिय रूप होने के प्रथम समय में वर्तमान जो जीव हैं उन्होंने पूर्वभव में विवक्षित राशि रूप संख्या का अनुभवन किया है-अतः ऐसे जीव प्रथमाप्रथम समयवर्ती एकेन्द्रिय जीव कहे गये हैं। आगे भी इसी प्रकार से जानना चाहिये। 'सेवं

એકેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નનો અતિદેશ (બલામણ) દ્વારા ઉત્તર આપતાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે- 'ગોયમા ! જહા પઢમસમય ઉદ્દેસો તહેવ ભાણિયવ્વો' હે ગૌતમ ! જે પ્રમણે પ્રથમ સમય સંબંધી ઉદ્દેશો અર્થાત્ બીજો ઉદ્દેશો કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં સાતમો ઉદ્દેશો પણ સમજવો. બોધજો અહિયાં એકેન્દ્રિય પણાથી ઉત્પન્ન થવાના પ્રથમ સમયમાં રહેનારા હોવા છતાં પણ કૃતયુગમ કૃતયુગમ રાશિરૂપ છે. અહિયાં વિવક્ષિત સંખ્યાનો અનુભવ કરવો તે અપ્રથમ સમયવર્તિ પણ કહેલ છે. આ પૂર્વભવની સમયસંખ્યાને લઈને કહેવામાં આવેલ છે તેમ સમજવું. કહેવાતું તાત્પર્ય એ છે કે-એકેન્દ્રિય રૂપ હોવાના પ્રથમ સમયમાં રહેનારા જીવો છે, તેઓએ પૂર્વભવમાં વિવક્ષિત રાશિરૂપ સંખ્યાનો અનુભવ કરેલ છે જેથી એવા જીવો પ્રથમ અપ્રથમ સમયમાં રહેનારા એકેન્દ્રિય જીવો કહેવાય છે હવે પછી પણ એજ પ્રમાણે સમજવું બોધજો.

મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! इति हे भदन्त ! પ્રથમા પ્રથમસમયકૃતયુગ્મકૃતયુગ્મૈકેન્દ્રિયાણા મુત્પાતાદિવિષયે યત્ કથિતં તત્સર્વં સત્યમેવેતિ કથયિત્વા ગૌતમો મગવન્તં વન્દતે યાત્રદ્ યથામુખે વિહરતીતિ ।

॥ પશ્ચત્રિંશત્તમે શતકે સપ્તમોદેશકઃ સમાપ્તઃ ॥૩૫।૭॥

‘પ્રથમચરમસમય કહજુમ્મકહજુમ્મ ઇગિંદિયા ણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ પ્રથમચરમસમય કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મૈકેન્દ્રિયાઃ સ્વલુ મદન્ત ! કુત ઉત્પચન્તે પ્રથમા-શ્ચ તે વિવક્ષિતસંખ્યાનુભૂતેઃ પ્રથમસમયવર્તિત્વાત્ ચરમસમયાશ્ચ મરણસમયવર્તિનઃ પરિશાટગતા इति પ્રથમચરમસમયાઃ, इत्थं भूता स्ते च ते कृतयुगमराशि प्रमाण एकेन्द्रिया स्ते प्रथमचरम कृतयुगम कृतयुगमैकेन्द्रिया इति કથ્યન્તે એતે કુત ઉત્પચન્તે इति પ્રશ્નઃ, उत्तरयति-इहापि अतिदेशद्वारेणैव ‘जहा’ इत्यादि’ ‘जहा

મંતે ! સેવં મંતે !’ ત્તિ’ હે મદન્ત ! પ્રથમાપ્રથમસમયવર્તી કૃતયુગ્મ-કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિય જીવોં કે ઉત્પાદ આદિકે વિષય મેં જો આપને કહા હૈ વંહ સર્વ સત્ય હી હૈ । इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तपसे आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।सू०१।

॥ શતક ૩૫ વાં ઉદ્દેશક સાતવાં સમાપ્ત ૩૫-૭॥

‘પ્રથમચરમસમય કહજુમ્મકહજુમ્મ ઇગિંદિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—હે મદન્ત ! પ્રથમચરમસમયવર્તી કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ રાશિપ્ર-મિત એકેન્દ્રિય જીવ કિસ સ્થાનવિશેષ સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? इस

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ પ્રથમ અપ્રથમ સમયમાં રહેવા વાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિય જીવોના ઉત્પાદ વિગેરેના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથાસત્ય છે, હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રી ને વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમઅને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ॥સૂ૦૧॥

॥સાતમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ૩૫-૭।

આઠમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

‘પ્રથમ ચરમસમય કહજુમ્મકહજુમ્મ ઇગિંદિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ इत्यादि હે ભગવન્ પ્રથમ ચરમ સમયમાં રહેવાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ

ચરમુદ્દેસઓ તદેવ નિરવસેસ' યથા ચરમોદ્દેશકશ્વર્તુઃ કથિત સ્તથૈવ નિરવશેષમષ્ટ-
મોદ્દેશકોઽપિ મણિતવ્યઃ, અત્ર દેશ નોત્પદ્યન્તે ડાસ્તેનોલેક્ષ્યાઽપિ ન ભવતિ ઉપ-
પાતાદારમ્બ્ય 'અસદ્ અદુવા અણંતચુત્તો' 'અસકૃત અથવા અનન્તકૃત્વઃ' એતત્પર્યન્તં
સંપૂર્ણમપિ પ્રકરણં વક્તવ્યમ્ । સેવ મંતે ! સેવ મંતે ! ત્તિ' તદેવં મદન્ત ! તદેવં
મદન્ત ઇતિ ॥

॥ પશ્ચત્રિશત્તમે શતકેઽષ્ટમોદ્દેશકઃ સમાપ્તઃ ॥૩૫૮॥

સમ્બન્ધમે અતિદેશ દ્વારા ઉત્તર દેસે હુએ પ્રભુશ્રી ગૌતમ સે કહતે હૈ-
'જહા ચરમુદ્દેસઓ તદેવ નિરવસેસ' જૈસા ચરમુદ્દેશક-ચૌથા ઉદ્દેશક-
કહા ગયા હૈ । વૈસા હી યહ આઠવાં ઉદ્દેશક કહા ગયા હૈ । જો એકેન્દ્રિય
જીવ વિવક્ષિત સંખ્યાકી અનુભૂતિ કે પ્રથમ સમયવર્તી હોકર મરણવર્તી
હૈ એસે વે કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ રાશિરૂપ એકેન્દ્રિય જીવ પ્રથમ ચરમ સમય-
વર્તી કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિય જીવ કહે ગયે હૈ । યહાં દેવ ઉત્પન્ન
નહીં હોતે હૈ । ઇસલિયે તેજોલેક્ષ્યા મી નહીં હોતી હૈ । ઇનકે ઉત્પાદસે
લેકર 'યે યહાં અનેકવાર અથવા અનન્તવાર ઉત્પન્ન હો ચુકે હૈ' ઇસ
અન્તિમ પ્રકરણ તક સબ પ્રકરણ વક્તવ્ય હૈ । સેવં મંતે ! સેવં મંતે !
ત્તિ' 'હે મદન્ત આપકા યહ સબ કથન સર્વથા સત્ય હૈ ॥ ઇસ પ્રકાર
કહકર ગૌતમને પ્રભુશ્રી કો વન્દના કી ઓર નમસ્કાર કિયા વંદના

રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાનથી આવેને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના
ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી અતિદેશ દ્વારા ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે- 'જહા -ચરમુદ્દેસઓ
તદેવ નિરવસેસ' જે પ્રમાણે ચરમ ઉદ્દેશો એટલે કે- ચોથો ઉદ્દેશો કહેલ છે,
છે, એજ પ્રમાણે આ આઠમા ઉદ્દેશાતું કથન પણ સમજવું. જે એકેન્દ્રિય
જીવો વિવક્ષિત સંખ્યાના અનુભૂતિના-અનુભવના પ્રથમ સમયમાં રહેવાવાળા
થઈને મરણના સમયવર્તી છે. એવા તે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિરૂપ એકેન્દ્રિય
વાળા જીવો પ્રથમ સમયમાં રહેવાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિરૂપ કહેવામાં
આવેલ છે. તેમાં દેવો પણ ઉત્પન્ન થાય છે. તેથી તેઓને તેજોલેક્ષ્યા પણ
હોય છે. તેઓના ઉત્પાદથી લઈને તેઓ અહિંયાં અનેકવાર અથવા અનંતવાર
ઉત્પન્ન થઈ ચૂક્યા છે આ છેલ્લા પ્રકરણ સુધીનું પ્રકરણ કહી લેવું.

'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ પ્રથમ અપ્રથમ સમયમાં રહેવા-
વાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિય જીવોના ઉત્પાદ વિગેરેના સંબંધમાં આપ
દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે, હે ભગવન્
આપ દેવાપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમ-

‘પ્રથમ અચરમસમય કહજુમ્મકહજુમ્મ ઇન્દિયાળું મંતે ! કઓ ઉવવ-
જ્જંતિ’ પ્રથમાચરમસમય કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મેન્દ્રિયાઃ સ્વલ્લ મદન્ત ! કૃત
ઉત્પદ્યન્તે એકેન્દ્રિયત્વેનોત્પત્તૌ પ્રથમઃ સમયો વિદ્યતે યેષાં તે પ્રથમાઃ
તથૈવાચરમસમયાસ્તુ એકેન્દ્રિયોત્પાદાપેક્ષયા પ્રથમ સમયવર્તિન ઇહ વિવ-
ક્ષિતાઃ, ચરમત્તનિપેધસ્ય તેષુ વિચિન્નતાવાત્, અન્યથાહિ દ્વિતીયાંદેશકોક્તાના-
મવગાહનાદીનાં યદિ સમત્વં કથિતં તન્ન સ્યાત્ તતઃ કર્મધારયઃ અતઃ પ્રથમા

નમસ્કાર કરવા મેં જે સંયમ ઓર તપસે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુ
અપને સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે ॥સૂ. ૧॥

૩૫ પૈતીસ વે શતક કા આઠવાં ઉદ્દેશક સમાપ્ત

‘પ્રથમ અચરમ સમય કહજુમ્મકહજુમ્મ ઇન્દિયાળું મંતે ! કઓ-
હિંતો ઉવવજ્જંતિ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે મદન્ત ! પ્રથમ અચરમ સમયવર્તી કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ રાશિ-
પ્રમિત એકેન્દ્રિય જીવ કિસ સ્થાન વિશેષ સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ?
ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં હે ગૌતમ ! જેણા દ્વિતીય ઉદ્દેશક મેં કહા ગયા
હે વૈસા હી ઇસ ઉદ્દેશક મેં કહ લેના ચાહિયે । જો એકેન્દ્રિય જીવ વિવ-
ક્ષિત સમય કી અનુભૂતિ કે પ્રથમ સમય મેં હૈં એસે વે એકેન્દ્રિય જીવ
પ્રથમ કહલાતે હૈં ઓર એકેન્દ્રિય રૂપતે ઉત્પાદ કી અપેક્ષા જો પ્રથમાદિ
સમયવર્તી હૈં એસે વે એકેન્દ્રિય પ્રથમ અચરમ હૈં । इनमें चरमताका
निषेध किया गया है । यदि ऐसा न हो तो फिर उद्देशक में कथित

સ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વદના નમસ્કાર કરીને તે
પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના
સ્થાન પર વિરાજમાન થયા ॥સૂ. ૧॥

આઠમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૫-૮॥

નવમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

‘પ્રથમ અચરમ કહજુમ્મકહજુમ્મ ઇન્દિયાળું મંતે ! કઓહિંતો !
ઉવવજ્જંતિ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ પ્રથમ અચરમ સમયમાં રહેવાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ
રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષમાંથી આવેને ઉત્પન્ન થાય છે ?
આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—હે ગૌતમ ! એવા
ઉદ્દેશમાં જે પ્રમાણેનું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણેનું કથન આ
ઉદ્દેશમાં કહેવું ભોધ્યું. એકેન્દ્રિય પશુથી ઉત્પન્ન થવામાં જેઓને પ્રથમ
સમય લાગે છે, એવા તે એકેન્દ્રિય જીવો પ્રથમ અચરમ કહેવાય છે. તેઓમાં
અચરમ પશુનો નિષેધ કરવામાં આવેલ છે. જો તેમ ન હોય તો પછી બીજા

चरमसमय कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः कथरन्ते एतेषा मुत्पत्तिः कुत आगत्य भवन्ति ? इति प्रश्नः उत्तरयति-अतिदेशेन 'जहा' इत्यादि, 'जहा वीओ उद्देशो तद्देव निरवसेसं' यथा द्वितीयोद्देशकस्तथैव निरवशेषम् एतच्छास्त्रीय द्वितीयोद्देशक प्रथमसमयैकेन्द्रियाणां यथा उपपातादिकं कथितं तथैव निरवशेषमिहापि ज्ञातव्यमिति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति जात्र विहरइ' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति यावद्विहरति, हे भदन्त ! प्रथमाचरमकृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रियाण उपपातादि विषये यद्देवानुप्रियेण कथितं तत्सर्वं सत्यमेवेति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते यावद्विहरतीति ।

॥ पञ्चविंशत्तमे शतके नवमोद्देशकः समाप्तः ॥ ३५-९ ॥

अवगाहना आदि की जो समानता यहाँ कही गई है वह नहीं हो सकती है । हरी शतक के छिनीय उद्देशक में प्रथम समयमें एकेन्द्रियों का जैसा उत्पाद आदि कहा गया है वैसा ही भव कथन यहाँ ९ वें उद्देशक में है ऐसा जानना चाहिये । सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति जात्र विहरइ' हे भदन्त ! प्रथमाचरम कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीवों के उपपात आदि के विषय में जो आप देवानुप्रिय ने कहा है वह सब सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे तप और संघमसे आत्माको भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये १॥

॥ शतक ३५ वां उद्देशक नौवां समाप्त ॥ ३५-९ ॥

उद्देशाभां कहेल अवगाहना विगेरेनु ने समान पणु अडियां कडेवाभां आवेल छे, अज प्रभाणुनु सधणु कथन अडियां आ ६ नवभां उद्देशाभां पणु कहेल छे, तेम समजणु'.

'सेवं भते ! सेवं भते ! ति' छे भगवन् प्रथम अरम कृतयुग्म कृतयुग्म ऐकेन्द्रियणुवोना उपपात विगेरे विषयना सण धमां आप देवानुप्रिये ने कथन कथुं छे, ते सधणुं कथन सर्वा सत्य छे छे भगवन् आप देवानुप्रियणुं सधणु कथन सर्वा सत्य न छे. आ प्रभाणु कहीने गौतमस्वामीने प्रभुश्रीने वंदना करी तेओने नमस्कार कया वंदना नमस्कार करीने ते पछी तेओ संघम अने तपशी पोताना आत्माने भावित करता थका पोताना स्थान पर विराजमान थया. । सू. १॥

॥ नवमो उद्देशो समाप्त ॥ ३५-६ ॥

‘ચરમચરમ સમય કઢજુમ્મકઢજુમ્મ ઇન્દિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’
 ચરમચરમસમય કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મકેન્દ્રિયાઃ સ્વલુ મદન્ત ! કુત ઉત્તચન્તે ? ચરમાશ્વ
 તે વિવક્ષિતસંલ્પાનુધૂતેશ્વરમમયવર્તિત્વાદ, ચરમસમયા મરણસમયવર્તિનઃ,
 દ્વયંધૂતા એકેન્દ્રિયા ચરમચરમસમયકૃતયુગ્મકૃતયુગ્મકેન્દ્રિયા ઇતિ કથ્યન્તે
 એતેષા મુત્પાદઃ કુત ઇતિ પ્રશ્નઃ, ઉત્તરયતિ-અતિદેશદ્વારેણ-‘જહા’ ઇત્યાદિ
 ‘જહા ચઉત્થો ઉદ્દેસઓ તહેવ’ યથા ચતુર્થ ઉદ્દેશક સ્તથૈવ એતચ્છતકીય ચતુર્થો-
 દેશકે યથા કથિતં તદિદાપિ તથૈવ સર્વં જ્ઞાતવ્યમિતિ, સેવં મંતે ! સેવં મંતે !
 ત્તિ’ તદંવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ, હે મદન્ત ! ચરમચરમસમય કૃતયુગ્મ

‘ચરમ ચરમ કઢજુમ્મ કઢજુમ્મ ઇન્દિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવ-
 જ્જંતિ’ હે મદન્ત ! ચરમ ચરમ સમયવર્તી કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિ-
 રૂપ એકેન્દ્રિય જિવ કિંચ સ્થાન વિશેષ સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હે ?
 વિવક્ષિત સંલ્પાની રાશિકે અનુભવ કે અન્તિમ સમય મેં વર્તમાન હોને
 સે ચરમ ઓર મરણ સમયવર્તિ એનેસે ચરમવાલે એસે જો કૃતયુગ્મ
 કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત એકેન્દ્રિય જીવ હેં વે ચરમચરમસમય-
 કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિય જીવ હેં । હનકા જન્મ કહાં સે આકરકે
 હોતા હે ? હસ પ્રશ્ન કે ઉત્તર મેં અતિદેશ દ્વારા ગૌતમ કો સમજાતે
 હુણ પ્રભુશ્રી કહતે હેં-‘જહા ચઉત્થો ઉદ્દેસઓ તહેવ’ હે ગૌતમ ! હંસી
 શતકકે ચતુર્થ ઉદ્દેશક મેં જૈતા કહા ગયા હે વૈસા હી વહ સવ યહાં
 કહ લેના ચાહિયે ।’ ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ ‘હે મદન્ત ! ચરમ

દસમા ઉદ્દેશ નો પ્રારંભ—

‘ચરમ ચરમ કઢજુમ્મકઢજુમ્મ ઇન્દિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ, ઇ.
 હે લગવન્ ચરમ ચરમ સમયમાં રહેનારા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિરૂપ
 એકેન્દ્રિય એવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? વિવક્ષિત
 સંખ્યાની રાશિના અનુભવના છેલ્લા સમયમાં રહેનારા હોવાથી ચરમ અને
 મરણ સમયમાં રહેવાવાળા હોવાથી ચરમ સંખ્યાવાળા એવા બે કૃતયુગ્મ
 કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિય એવો છે, તેઓ ચરમ ચરમ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશી
 વાળા એકેન્દ્રિય એવો છે, તેઓ ચરમ ચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકે-
 ન્દ્રિય એવો છે. તેઓનો જન્મ કયાંથી આવીને થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં
 અતિદેશ-લલામણથી પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-હે ગૌતમ ! આ
 પાંચીસમા શતકના એવા ઉદ્દેશમાં બે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ
 પ્રમાણેનું તે સઘળું કથન અહિંયાં પણ સમજવું જોઈએ.

કૃતયુગ્મૈકેન્દ્રિયાણામુપપાતાદિ વિષયે યદ્ દેવાનુપ્રિયેણ કથિત તત્સર્વં સત્થમેવેતિ
કથયિત્વા ગૌતમો ભગવન્તં વન્દતે નમસ્યતિ વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા સંયમેન
તપસા આત્માનં ભાવયન્ વિહરતીતિ ॥૩૫॥૧૦॥

॥ પશ્ચત્રિશત્તમે શતકે દશમોદ્દેશકઃ સમાપ્તઃ ॥૩૫॥૧૦॥

‘ચરમ અચરમસમય કહજુમ્મકહજુમ્મ ઇગિંદિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવ-
જ્જંતિ’ ચરમાચરમસમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મૈકેન્દ્રિયાઃ સ્વલ્લ ભદન્ત ! કુત ઉત્પ-
ચન્તે ? ચરમાઃ વિવક્ષિતસંખ્યાનુભૂતે ચરમા સપયે યે વર્તમાનાઃ તથા-અચરમ
સમયાઃ પ્રાગુક્તયુગ્મતેરેકેન્દ્રિયોત્પાદાપેક્ષયા પ્રથમસમયવર્તિનઃ ક્વચિત્પ્રભૂતાઃ કૃતયુગ્મ

ચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિ પ્રમિત એકેન્દ્રિય જીવોં કે ઉત્પાત
આદિ વિષય મેં આપ દેવાનુપ્રિયને જોર કહા હૈ વહ સચ હત્ય હી હૈર ।
હસ પ્રકાર કહકર ગૌતમ ને પ્રભુશ્રી કી સ્તુતિ કી ઓર નમસ્કાર ક્રિયા
સ્તુતિ ઓર નમસ્કાર કર ફિર વે તપ ઓર સંયમ સે આત્મા કો ભાવિત
કરતે હુએ અપને સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે ॥

॥ શતક ૩૫ વાં ઉદ્દેશક ૧૦ વાં સમાપ્ત ॥૩૫-૧૦

ટીકાર્થ-‘ચરમ અચરમસમય કહજુમ્મ કહજુમ્મ ઇગિંદિયાણં
મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ હે ભદન્ત ! જો એકેન્દ્રિય જીવ ચરમ ઓર
અચરમ સમયવર્તી કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત હૈં વે ક્રિય સ્થાન
વિશેષ સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? વિવક્ષિત સંખ્યાની અનુભૂતિ કે
ચરમ સમય મેં વર્તમાન હોને સે इनमें ચરમતા ઓર એકેન્દ્રિય રૂપસે

‘સેવ મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ ચરમચરમ સમયમા રહેતાવાળા
કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મરાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોના ઉત્પાત વિગેરે વિષયના સંબંધમા
આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સત્ય છે, આપ દેવાનુ-
પ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ
પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ
અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર
વિરાજમાન થયા. ॥સૂ.૦૧॥

॥દસમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૫-૧૦॥

અગીયારમા ઉદ્દેશનો પ્રારભ -

‘ચરમ અચરમ સમય કહજુમ્મકહજુમ્મ ઇગિંદિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’
હે ભગવન્ એકેન્દ્રિય જીવો ચરમ અને અચરમ સમયવર્તી કૃતયુગ્મ
કૃતયુગ્મ રાશિવાળા છે, તેઓ કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ?
વિવક્ષિતસંખ્યાના અનુભવનના ચરમ સમયમાં રહેનારા હે વાઘી તેઓમાં ચરમ

कृतयुग्मैकेन्द्रिया स्ते चरमाचरम कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रिया इति कथ्यन्ते । एतेषा
 युत्पादः कृतः ? इति प्रश्ना, उत्तरयति अतिदेशद्वारेण—‘जहा’ इत्यादि, ‘जहा
 पदममय उद्देश्यो तदेव निरवसेसं’ यथा, प्रथममयोद्देशको द्वितीय स्तथै-
 वेहापि निरवशेषं ज्ञातव्यमिति । ‘सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति जाव विहरइ’
 तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति यावद् विहरति, इति ॥

॥ पञ्चविंशतमे शतके एकादशोद्देशकः समाप्तः ॥३५॥११

उत्पाद की अपेक्षा प्रथमादि समयवर्ती होने से इनमें अचरम
 समयता नहीं गई है, इनका उत्पाद कदा से होता है ? तो हम
 सम्बन्ध में उत्तर देने हुए प्रभुश्री गौतम से कहते हैं—‘जहा पदम समय
 उद्देश्यो तदेव निरवसेसं’ हे गौतम ! जैसा इसी शतक के द्वितीय
 उद्देशक में कहा गया है वैसा ही स्वस्त कथन यहां पर भी करलेना
 चाहिये । ‘सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति जाव विहरइ’ हे भदन्त चरमा-
 चरम समय कृतयुग्मकृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीवों के उत्पाद
 आदि के विषय में जो आप देवानुप्रियने कहा गया है यह सब सत्य ही
 है । २ इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार
 किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को
 भाविन करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥३६॥११॥

पैतृसवे शतक का ? ? ग्यान्हवां उद्देशक समाप्त ॥३६॥११॥

पण्डित अने ओकेन्द्रियपन्थाधी उत्पादनी अपेक्षाधी प्रथम समयमां वर्तमान
 देवाधी तेजोमां अचरम समय पाण्डुं कहेव छे, तेजोने उत्पाद कथांभी
 थाय छे ? तो आ प्रश्नो उत्तर आपनां प्रभुश्री गौतमस्वामीने कहे छे हे-
 ‘जहा पदमसमयउद्देश्यो तदेव निरवसेसं’ छे गौतम ! आ शतकता भील
 उद्देश्यामां ने प्रमाणे कहेव मां आवेल छे, ओज प्रमाणेतुं सद्युं कथन
 अहियां पण्डु कहेवुं लेईओ

‘सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति’ छे लगवन् अरम अचरम समय कृतयुग्म
 कृतयुग्म राशिवाणा ओकेन्द्रियधोना उत्पाद विगेरे विषयमां आप देवानुप्रिये
 ने कथन क्युं छे ते सद्युं कथन सर्वथा सत्य न छे, २ आ प्रमाणे इहीने
 गौतमस्वामीने प्रभुश्री ने वंदना करी तेजोने नमस्कार कथां वंदना नमस्कार
 करीने ते पथी संयम अने तपथी पोताना आत्माने भाविन करता यथा
 पोताना स्थान पर विराजमान थया, ॥३७॥११॥

॥अजिगारमो उद्देशो समाप्त ॥३५-११॥

‘एवं एए एकारस उद्देशगा’ एवम् उपरोक्त प्रदर्शितक्रमेणैकादशोद्देशकाः संज्ञाताः ‘पदमो तद्भो पंचमभो य सरिसगमा’ प्रथम स्तुतीयः पञ्चमकश्च सदृश गमाः सदृशालापकाः ‘सेसा अट्ट सरिसगमा’ शेषा अष्टौ द्वितीयचतुर्थ षष्ठ सप्तमाष्टम नवम दशमैकादशः सदृशालापकाः ‘नवरं चउत्थे छट्टे अट्टमे दसमेय देवा न उववज्जंति तेउलेस्सा नत्थि’ नवरं चतुर्थे षष्ठे अष्टमे दशमे चोद्देशके देवा नोत्पद्यन्ते तथा तेषां तेजोलेश्या नास्ति तत्र चरमसमय कृतयुगमकृतयुगमै- केन्द्रियोद्देशके, षष्ठे प्रथमप्रथम समयकृतयुगमकृतयुगमैकेन्द्रियोद्देशके, अष्टमे- प्रथमचरमसमय कृतयुगमकृतयुगमैकेन्द्रियोद्देशके, दशमे-चरमचरम समय कृतयुगम कृतयुगमैकेन्द्रियोद्देशके, एषु चतुर्ष्वेद्देशकेषु देवोत्पत्तिर्न वक्तव्येति भावः ।

॥ पञ्चत्रिंशत्तमे शतके प्रथममेकेन्द्रिय महायुगमशतं समाप्तम् ॥ ३५॥ १॥

टीકાર્થ-‘एवं एए एकारस उद्देशगा’ इस पूर्वोक्त क्रम से ११ उद्देशक हैं । ‘पदमो तद्भो पंचमभो य सरिसगमा’ इनमें प्रथम, तृतीय और पंचम ये उद्देशक सदृश आलापवाले हैं । ‘सेसा अट्ट सरिसगमा’ और द्वितीय, चतुर्थ षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम एवं ग्यारह वां ये आठ उद्देशक समान आलापकवाले हैं । ‘नवरं चउत्थे छट्टे अट्टमे दसमे य देवा न उववज्जंति’ परन्तु चौथे छठवें, आठवें और दशवें उद्देशक में देवों का उत्पाद नहीं है । इसलिये वहां तेजोलेश्या नहीं है । चरमसमय कृतयुगम कृतयुगम एकेन्द्रिय उद्देशक चतुर्थ उद्देशक है । प्रथम प्रथमसमय कृतयुगमकृतयुगम एकेन्द्रिय उद्देशक छठवां उद्देशक है । प्रथम चरम समय कृतयुगम एकेन्द्रिय उद्देशक आठवां उद्देशक है । चरमचरम समय कृतयुगम कृतयुगम एकेन्द्रिय उद्देशक दशवां उद्देशक है । इनमें देवों की उत्पत्ति वक्तव्य नहीं हुई है ।

॥ पैतीसवें शतक में एकेन्द्रिय महायुगम शत समाप्तः ॥

‘एवं एए एकारस उद्देशगा’ આ પૂર્વોક્ત ક્રમથી ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ કહ્યા છે. ‘પદમો તદ્ભો પચમભો ય સરિસગમા’ તેમાં પહેલો અને ત્રીજો તથા પાંચમો સરખા આલાપકોવાળા છે ‘સેસા અટ્ટ સરિસગમા’ તથા બીજો, ચોથો, છઠ્ઠો, સાતમો આઠમો નવમો, દસમો અને અગિયારમો આ આઠે ઉદ્દેશાઓ સરખા આલાપકોવાળા છે ‘નવરં ચઉત્થે છટ્ટે અટ્ટમે દસમે ય દેવા ન ઉવવજ્જંતિ’ પરંતુ ચોથા, છઠ્ઠા, આઠમાં તથા દસમા ઉદ્દેશામાં દેવોનો ઉત્પાદ થતો નથી. તેથી ત્યાં તેજોલેશ્યા હોતી નથી ચરમ સમય કૃતયુગમ કૃતયુગમ એકેન્દ્રિય ઉદ્દેશક છઠ્ઠો, ઉદ્દેશો છે પ્રથમ ચરમ સમય કૃતયુગમ કૃતયુગમ એકેન્દ્રિયોનો આઠમો ઉદ્દેશો છે ચરમસમય કૃતયુગમ કૃતયુગમ એકેન્દ્રિયોનો દસમો ઉદ્દેશો છે તેમાં દેવોની ઉત્પત્તિ કહેલ નથી

એકેન્દ્રિય મહાયુગમ શતક સમાપ્ત

‘अहं वितियं एगिदियमहाजुम्म सयं’

मूलम्—कणहलेस्स कडजुम्म कडजुम्म एगिदियाणं भंते !
कओ उववज्जंति ? गोयमा ! उववाओ तहेव एवं जहा ओहि
उद्देसए । नवरं इमं नाणत्तं—ते णं भंते ! जीवा किं कणहलेस्सा ?
हंता गोयमा ! कणहलेस्सा तेणं भंते ! कणहलेस्स कडजुम्म
कडजुम्म एगिदियत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जह-
न्नेणं एकं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । एवं ठिईए वि । सेसं
तहेव जाव अणंतखुत्तो । एवं सोलस वि जुम्मा भाणियव्वा ।
सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३५॥सू० १॥

पढम समय कणहलेस्स कडजुम्म कडजुम्म एगिदियाणं
भंते ! कओ उववज्जंति ? जहा—पढम समय उद्देसओ । नवरं
ते णं भंते ! जीवा कणहलेस्सा ? हंता कणहलेस्सा । सेसं तं चेव ।
सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३५—२॥सू० २॥

एवं जहा ओहियसए एक्कारस उद्देसगा भाणिया तहा
कणहलेस्ससए वि एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा । पढमो तइओ
पंचमो य सरिसगमा, सेसा अट्ट वि सरिसगमा । नवरं चउत्थ
छट्ट अट्टमदसमेसु उववाओ नत्थि देवस्स । सेवं भंते ! सेवं
भंते ! त्ति ॥३५—२॥

छाया—कृष्णलेश्य कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ?
गौतम ! उपपातस्तथैव । एव यथा औघिफोद्देशकः । नवरसिद्धं नानात्वम्—ते खलु
भदन्त ! जीवाः किं कृष्णलेश्याः ? हत, गौतम ! कृष्णलेश्याः । ते खलु भदन्त !
कृष्णलेश्य कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रिया इति कालतः कियच्चिरं भवन्ति ? गौतम !
जघन्येन एकं समयम्, उत्कर्षेणान्तर्मुहूर्तम् । एवं स्थितावपि । शेषं तथैव यावदनन्त
कृत्वः, एवं षोडश अपि युग्मा भणितव्याः । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त इति ३५।

प्रथमसमय कृष्णलेश्य कृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्प-
द्यन्ते यथा प्रथमसमयोद्देशकः । नवरं ते खलु भदन्त ! जीवाः कृष्णलेश्याः ?
हन्त कृष्णलेश्याः शेषं तदेव । तदेवं भदन्त तदेवं भदन्त ! इति ॥३५॥१॥२॥

एवं यथा औधिकशते एकादशोद्देशका भणिताः तथा कृष्णलेश्य शतेऽपि एकादशोद्देशका भणितव्याः । प्रथम स्तुतीयः पञ्चमश्च सदृशगमाः शेषा अष्टावपि सदृशगमाः । नवरं चतुर्थं षष्ठाष्टम-दशमेषु उपपातो नास्ति देवस्य । तदेव भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥३५॥२

॥ पञ्चत्रिंशत्तमे शते द्वितीयमेकेन्द्रियमहायुग્मशतं समाप्तम् । ३५।२॥

ટીકા-‘કળ્હલેસ્સ કહજુમ્મ કહજુમ્મ ઇગિંદિયાળ મંતે । કઓ ઉવવજ્જંતિ’ કૃષ્ણલેશ્ય કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મકેન્દ્રિયાઃ સ્વલ્લુ ભદન્ત ! કુત આગત્ય ઉત્પદ્યન્તે કિં નૈરયિકેભ્ય સ્તિર્યગ્મ્યો મનુષ્યેભ્યો દેવેભ્યો વા આગત્યોત્પદ્યન્તે ? इति प्रश्नः, भगवानाह-‘गोयमा’ इत्यादि, ‘गोयमा ! हे गौतम ! ‘उववाओ तहेव एवं जहा ओहि उद्देसए’ उपपातः, कृष्णलेश्यैकेन्द्रियाणां तथैव एवं यथा औधिकोद्देशकः, अस्यैव शतकस्य प्रथमोद्देशको वर्णितः प्रथमोद्देशकवर्णितप्रकारेणैव कृष्णलेश्य कृतयुग્मकृतयुग્म-केन्द्रियाणामुपपातो ज्ञातव्य इति ‘नवरं इमं नाणत्तं’ नवरमिदं वक्ष्यमाणनानात्वं

द्वितीय एकेन्द्रिय महायुगम् शत

‘કળ્હલેસ્સ કહજુમ્મ કહજુમ્મ ઇગિંદિયાળ મંતે !’ इत्यादि

ટીકાર્થ-હે ભદન્ત ! કૃષ્ણલેશ્યાવાળે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત એકેન્દ્રિય જીવ કિસ સ્થાન વિશેષ સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? વ્યા વે નૈરયિકોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા તિર્યગ્યોનિકોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા મનુષ્યોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા દેવોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં-‘ગોયમા ! ઉવવાઓ તહેવ એવં જહા ઓહિ ઉદ્દેસએ’ इन कृष्णलेश्यावाले कृतयुगम् कृतयुगम् राशिप्रमित एकेन्द्रियों का उपपात जैसा कि इसी शतक के प्रथम उद्देशक में कहा गया है वैसा ही हैं । ‘नवरं इमं नाणत्तं’ परन्तु यहां ऐसी विशेष-

ગીળ એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતકનો પ્રારભ—

‘કળ્હલેસ્સ કહજુમ્મ કહજુમ્મ ઇગિંદિયાળ મંતે । ઇત્યાદિ

હે ભગવન કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યગ્યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘ગોયમા ! ઉવવાઓ તહેવ એવં જહા ઓહિઉદ્દેસએ’ આ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશીવાળા એકેન્દ્રિયોનો ઉપપાત જેમ કે આ શતકના પહેલા ઉદ્દેશમાં કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે છે. ‘નવરં’ इमं

મેદઃ સામાન્યૈકેન્દ્રિયેભ્યઃ કૃષ્ણલેશ્ય કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મેકેન્દ્રિયાણામ્ । 'તે ણં મંતે !
 જીવા કિં કણ્હેસ્સા' તે खलु भदन्त ! जीवाः किं कृष्णलेश्यावन्तः ? उत्तर-
 माह—'हंता गोयमा ! कण्हेस्सा' इन्त गौतम ! ते जीवाः कृष्णलेश्यावन्तो
 भवन्तीति ! 'ते णं मंते ! कण्हेस्स कडजुम्मकडजुम्म एगिदियत्ति कालओ
 केवच्चिरं होति' ते खलु भदन्त ! कृष्णलेश्यकृतयुग્मकृतयुग્મેकેન્દ્રિયા इति कालतः
 कियच्चिरं भवन्तीति मदनः । भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, गोयमा' हे गौतम ।
 'जहन्नेणं एकं समयं' जघन्येन एकं समयं जघन्यत एकसमयानन्तरं संख्यानंतरं
 भवन्तीति । 'उक्कोसेणं अंतो मुहुत्तं' उत्कर्षेणान्तर्मुहूर्तं यावत् कृष्णलेश्यैकેન્દ્રિયા
 भवन्तीति । तदनन्तरं कृतयुग્मकृतयुग્मत्वानुपवाभावात् 'एवं ठिईए वि' एवं

વતા હૈ—અર્થાત્ સામાન્ય એકેન્દ્રિયોં કી અપેક્ષા હન કૃષ્ણલેશ્યાવાલે
 કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત એકેન્દ્રિયોં કે કથન મેં એસી વિશેષતા
 હૈ—'તે ણં' મંતે ! જીવા કિં કણ્હેસ્સા' હે ભદન્ત ! કયા યે જીવ
 કૃષ્ણલેશ્યાવાલે હોતે હૈં ? 'હંતા ગોયમા !' હાં, ગૌતમ ! યે જીવ
 કૃષ્ણલેશ્યાવાલે હોતે હૈં । 'તેણં' મતે ! કણ્હેસ્સ કડજુમ્મ કડજુમ્મ
 'એગિદિયત્તિ કાલઓ કેવચ્ચિરં' હોતિ' હે ભદન્ત । યે કૃષ્ણલેશ્યાવાલે
 કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત એકેન્દ્રિય જીવ કાલકી અપેક્ષા હસ રુપ
 મેં કય તક રહતે હૈં ? 'ગોયમા ! જહન્નેણં' એકં સમયં 'ઉક્કોસેણં
 અંતોમુહુત્તં' હે ગૌતમ । યે એકેન્દ્રિય જીવ હસ રુપ મેં જઘન્ય સે તો એક
 સમય તક રહતે હૈં ઓર ઉત્કૃષ્ટ સે એક અન્તર્મુહૂર્ત તક રહતે હૈં ।
 હસ કે બાદ હનમેં ઘરૂ રુપતા નહીં રહતી હૈ । 'એવં ઠિઈએ વિ' હસી પ્રકાર

નાણત્ત' પરંતુ અહિયાં એ વિશેષ પાણુ છે અર્થાત્ સામાન્ય એકેન્દ્રિયો
 કરતાં આ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોના
 કથનમાં આ પ્રમાણે વિશેષપણુ છે—'તે ણં મંતે ! જીવા કિં કણ્હેસ્સા' હે
 ભગવન્ શુ' તે જીવો કૃષ્ણલેશ્યાવાળા હોય છે ? 'હંતા ગોયમા !' હા ગૌતમ !
 આ જીવ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા હોય છે. 'તે ણં મતે ! કણ્હેસ્સ કડજુમ્મ કડજુમ્મ
 એગિદિયત્તિ કાલઓ કેવચ્ચિરં હોતિ' હે ભગવન્ આ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ
 કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો કાળની અપેક્ષાએ આ રૂપથી કયાં સુધી રહે
 છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'ગોયમા ! જહન્નેણં' એકં સમયં 'ઉક્કોસેણં
 અંતોમુહુત્તં' હે ગૌતમ ! આ એકેન્દ્રિય જીવો આ રૂપમાં જઘન્યથી તો એક
 સમય સુધી રહે છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી એક અંતર્મુહૂર્ત સુધી રહે છે. તે પછી
 તેઓમાં આ પ્રકાર પાણુ રહેતું નથી. 'એવં ઠિઈએ વિ' એજ પ્રમાણે તેઓની

પૂર્વદેવ સ્થિતાવપિ જગન્મેનૈકં સમયમુત્કર્ષેણાન્ત મુંહર્ત્તમ્ કૃષ્ણલેશ્યાવતા સ્થિતિ કૃષ્ણલેશ્યા કાલવદસેયેત્યર્થઃ । ‘સેસં તદેવ જાવ અણત્તુત્તો’ શેવં સ્થિત્યતિરિ- વતં સર્વં તથૈવ ઔઘિકશત્રીયમથમોદેશકવદેવ યાવદનન્તકૃત્વઃ । ‘એવં સોલસ વિ જુમ્મા માણિયવ્વા’ એવં કથિત પ્રકારેણ ષોડશાપિ યુગ્મા કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મદારમ્ય કલ્પોજકલ્પોજા અપિ પઠનીયા ઇતિ । ‘સેવં મતે ! સેવં મતે ! ત્તિ’ તદેવં મદન્ત ! તદેવ મદન્ત ! ઇતિ હે મદન્ત ! કૃષ્ણલેશ્યકૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મૈકેન્દ્રિય જીવાનામુ- સે દ્વિતીય સ્થિતિ ધી જગન્મે સે એક સમય કી ઓર ઉત્કૃષ્ટ સે એક અન્તર્મુંહર્ત્ત કી હોની હૈ । ‘સેસં તદેવ જાવ અણત્તુત્તો’ વાકી કા ઓર સવ કથન સોમાન્ય એકેન્દ્રિય જીવોં કે જેસા હી હૈ । ઓર યહ કથન દ્વિતીય સમ્બન્ધ મેં ‘યાવત્ત્વે દ્વિતીય રૂપ મેં અનન્તવાર ઉત્પન્ન હોતે હૈ’ યહાં તક હૈ । ‘એવં સોલસ વિ જુમ્મા માણિયવ્વા’ હસી પ્રકારસે દ્વિતીય સોલસ મહાયુગ્મ ધી કહહેના ચાહિયે । અર્થાત્ત્વે દ્વિતીય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સે લેક્ષ્ય કલ્પોજ કલ્પોજ મહાયુગ્મ તક જો દ્વિતીય કે મહાયુગ્મ પ્રકટ કિયે હૈ સો યહ ૨ મહારાશિવાલે દ્વિતીય એકેન્દ્રિયોં કે સમ્બન્ધ મેં પૂર્વોક્ત કથન કે અનુસાર હી કથન કરલેના ચાહિયે ઓર યહ કથન ‘યાવત્ત્વે દ્વિતીય દ્વિતીય મહાયુગ્મોં કે રૂપ મેં અનન્તવાર ઉત્પન્ન હો ચુકે હૈ’ હસ અન્તિમ કથન તક જાનના ચાહિયે ।

‘સેવં મતે ! સેવં મતે ! ત્તિ’ હે મદન્ત ! કૃષ્ણલેશ્યાવાલે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિમિત એકેન્દ્રિય જીવોં કે ઉપાત આદિ મેં જો આપ

સ્થિતિ પણ જગન્મે ધી એક સમયની અને ઉત્કૃષ્ટથી એક અતર્મુંહર્ત્તની હે ય છે. ‘સેસં તદેવ જાવ અણત્તુત્તો’ બાકીનું બીજું સઘણ કથન સામાન્ય એકેન્દ્રિય જીવોના કથન પ્રમાણે જ છે. અને આ કથન તેના સંબંધમાં યાવત્ત્વે તેઓ આ પ્રકારથી અનન્તવાર ઉત્પન્ન થઈ ચૂક્યા છે, ‘આ કથન સુધી કહેલ છે. ‘એવં સોલસ વિ જુમ્મા માણિયવ્વા’ આજ પ્રમાણે આના સોળ મહાયુગ્મો પણ કહેવા જોઈએ. અર્થાત્ત્વે આમને કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મથી લઈને કલ્પોજકલ્પોજ મહાયુગ્મ સુધી આમના જે મહાયુગ્મો બતાવ્યા છે તે તે મહારાશિવાળા આ એકેન્દ્રિયોના સંબંધમાં પહેલા કહેલ કથન પ્રમાણે કથન કહેવું જોઈએ. અને આ કથન યાવત્ત્વે તેઓ અનન્તવાર ઉત્પન્ન થઈ ચૂક્યા છે આ છેલ્લા કથન સુધી સમજવું

‘સેવં મતે ! સેવં મતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોના ઉપાત વિગેરેના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે

પપાતાદિ ત્રિપયે યદ્ દેવાનુપ્રિયેણ કથિતં તત્સર્વં સત્યમેવેતિ કથયિત્વા
ગૌતમો મગનન્તં વન્દતે નમસ્યતિ વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા યાવદ્ વિહરતીતિ ॥૩૫।૨।૧
इति पञ्चत्रिंशत्तमे शतके द्वितीयैकेन्द्रियमहायुग्मशते प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥३५।२।१॥

‘પઢમ સમય કળ્હલેસસ કડજુમ્મકડજુમ્મ ઇગિંદિયા ણં મંતે ! કમ્મો ઉવ્વ
જમંતિ’ પ્રથમસમયકૃણ્ણલેશ્ય કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મૈકેન્દ્રિયાઃ સ્વલ્લ મદન્ત ! કુત
ઉત્પચન્તે ? इति प्रश्नः, उत्तरयति अतिदेशद्वारेण—‘जहा’ इत्यादि, ‘जहा पढम
समय उद्देशओ’ यथा प्रथमसमयोद्देशकः, प्रथमसमयोद्देशके एतच्छतकस्य प्रथम

देवानुप्रियને कहा है । वह सब सत्य ही है । २ इस प्रकार कहकर
गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया वन्दना नमस्कार
कर फिर वे संघम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने
स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० १॥

द्वितीय एकेन्द्रिय महायुग्म शत में प्रथम उद्देशक समाप्त । ३५-२-१॥

‘પઢમ કળ્હલેસસ કડજુમ્મ કડજુમ્મ ઇગિંદિયાણં મંતે ! इत्यादि

टीकार्थ—हे भदन्त ! प्रथम समय के कृण्णलेश्यावाले कृतयुग्म
कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकर के
उत्पन्न होते हैं ? इस प्रश्न का अतिदेश द्वारा उत्तर देते हुए प्रभुश्री
गौतमस्वामी से कहते हैं ? ‘जहा पढम समय उद्देशओ’ हे गौतम !
जैसा कथन इसी शतक के प्रथम शत के द्वितीय उद्देशक में एकेन्द्रिय

ને કથન થયું છે, તે સઘળું કથન સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું
આ વિષય સંબંધી સઘળું કથન સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમ-
સ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને
તે પછી સંઘમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના
સ્થાન પર બિરાજમાન થયા.

બીજા એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતકમાં પહેલો ઉદ્દેશો સમાપ્ત

બીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારભ—

‘પઢમસમય કળ્હલેસસ કડજુમ્મ કડજુમ્મ ઇગિંદિયાણં મંતે ! इत्यादि

टीकार्थ—हे भगवन् प्रथम समयना कृण्णलेश्यावाणा कृतयुग्म कृतयुग्म राशि-
वाणा एकेन्द्रिय जिवो क्या स्थान विशेषधी आवीने उत्पन्न थाय છે ?
આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં અતિદેશ દ્વારા પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—
‘जहा पढमसमय उद्देशओ’ हे गौतम ! આ શતકના પહેલા ઉદ્દેશમાં એકે

शतकीय द्वितीयोद्देशके येन प्रकारेणैकेन्द्रियाणां विषये कथितं तथैवात्रापि ज्ञातव्यमिति । 'नवरं तेणं भंते । जीवा किं कण्हलेस्सा' नवरं प्रथम शतापेक्षया इदं वैलक्षण्यं यत् ते खलु भदन्त ! जीवाः किं कृष्णलेश्यान्तः ? इति प्रश्नः । उत्तर-यति—'हंता' इत्यादि, 'हंता कण्ह लेस्सा' हे गौतम ! ते जीवाः कृष्णलेश्यान्तो भवन्ति, इत्युत्तरम् 'सेसं तं चेव' शेषं तदेव यत् पूर्वशते कथितमिति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त तदेवं भदन्त ! इति यावद्विहरति ॥

इति पञ्चत्रिंशत्तमेशतके द्वितीयैकेन्द्रियमहाशते द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥३५-२॥

॥ पञ्चत्रिंशत्तमे शतके द्वितीयशते तृतीयाद्येकादशोद्देशकाः पारभ्यन्ते ।

'एवं जहा ओहियसए एकारस उद्देशगा भणिया' एवं यथा औघिकशते पञ्चत्रिंशत्तमशतकस्य प्रथमे शतके औघिक-कृतयुग्मकृतयुग्माः १, प्रथमसमय

के सम्बन्ध में किया जा चुका है वैसा ही वह यहां पर जानना चाहिये । 'नवरं तेणं जीवा किं कण्हलेस्सा' परन्तु वहां के कथन की अपेक्षा यहां के कथन में यही विशेषता है कि ये जीव कृष्णलेश्यावाले होते हैं । यही बात प्रश्नोत्तर रूप से प्रकट की गई है । 'सेसं तं चेव' अवशिष्ट कथन पूर्वशत में कहे गये अनुसार है । 'सेवं भंते । सेवं भंते । त्ति' हे भदन्त ! जैसा आपने कहा है वह सब सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप के आश्रय को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥३५-२-२॥

पैंतीसवें शतक के दूसरे एकेन्द्रिय महाशतक का

दूसरा उद्देशक समाप्त ॥३५-२॥

न्द्रिय लोकोना संषंधमां ने प्रमाणेतुं कथन कथ्युं छे, ओज प्रमाणेतुं कथन अहियां समज्जुं 'नवरं ते णं जीवा किं कण्हलेस्सा' परंतु त्यांना कथन करतां आ कथनमां ओज विशेष पणुं छे के आ लोको कृष्णलेश्यावाणा होय छे, ओज वात अहियां प्रश्नोत्तर रूपी प्रकट कट्ये छे 'सेस तं चेव' भाकीनुं कथन पड़ेला शतकमां कहा प्रमाणे छे.

'सेवं भंते । सेवं भंते । त्ति' छे लगवन् आप देवानुप्रिये ने प्रमाणेतुं कथन कथ्युं छे ते सधणुं कथन सत्य न छे २ आ प्रमाणे कहीने गौतम-स्वामीओ प्रभुश्रीने वंदना करी आने नमस्कार कर्या वंदना नमस्कार करीने ते पछी संयम आने तपथी पोताना आत्माने भावित करता थका पोताना स्थान पर विराजमान थका.

णीज ओकेन्द्रिय महाशतकमां णीने उद्देशो समाप्त ॥३५-२-२॥

કૃતયુગ્મકૃતયુગ્માઃ ૨, અપ્રથમસમય કૃતયુગ્મકૃતયુગ્માઃ ૩, ચરમસમય કૃતયુગ્મ
કૃતયુગ્માઃ ૪, અચરમસમયકૃતયુગ્મકૃતયુગ્મા ૫, પ્રથમપ્રથમસમય કૃતયુગ્મ
કૃતયુગ્માઃ ૬, પ્રથમાપ્રથમ સમયકૃતયુગ્મકૃતયુગ્માઃ ૭ । પ્રથમચરમસમય
કૃતયુગ્મકૃતયુગ્માઃ ૮ । પ્રથમાચરમસમય કૃતયુગ્મકૃતયુગ્માઃ ૯, ચરમ ચરમ
સમય કૃતયુગ્મકૃતયુગ્માઃ ૧૦, ચરમાચરમસમય કૃતયુગ્મકૃતયુગ્માઃ ૧૧, इत्येत
द्विशेषणविशिष्टानेकेन्द्रियानाश्रित्य ये एकादशोद्देशका भणिताः कथिताः
'तद्वा कण्ठलेखसप्त ए वि एकारस उद्देशगा भाणियन्वा' तथा तेनैव रूपेण
कृष्णलेख्य पदविशिष्ट द्वितीयशतेऽपि एकादश उद्देशका भणितव्याः आलाप-

શતક ૩૫ ઉદ્દેશક ૩-૧૧ તક

ટીકાર્થ-‘एवं जहा ओहियसए एक्कारस उद्देशगा भणिया’ जिस
प्रकार से औघिक शत में ३५ वे शतक के प्रथम शतक में-कृतयुग
कृतयुग १, प्रथमसमय कृतयुग कृतयुग २, अप्रथम, समय कृतयुग
कृतयुग ३, चरम समय कृतयुग कृतयुग ४, अचरम समय
कृतयुग कृतयुग ५, प्रथम प्रथम समय कृतयुग कृतयुग ६, प्रथमा-
प्रथम चरमसमय कृतयुग कृतयुग ७, प्रथम चरम समय कृतयुग
कृतयुग ८, प्रथमाचरम समय कृतयुग कृतयુग ९, चरम चरम
समय कृतयुग कृतयुग १०, और चरमाचरम समय कृतयुग कृतयुग
११ इन विशेषणों से विशिष्ट एकेन्द्रियों को आश्रित करके ११
उद्देशक कहे गये हैं । ‘तद्वा कण्ठलेखसप्त ए वि एक्कारस उद्देशगा
भाणियन्वा’ उसी रूप से कृष्णलेख्यपद विशिष्ट द्वितीय शत में भी
११ उद्देशक कहलेना चाहिये । तथा इस सम्बन्ध में आलाप प्रकार भी

ત્રીભથી ૧૧ મા સુધીના ઉદ્દેશાઓનો પ્રારંભ—

‘एवं जहा ओहियसए एक्कारस उद्देशगा भणिया’

ટીકાર્થ-જે પ્રમાણે ૩૫ પાત્રીસમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં-કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ ૧,
પ્રથમસમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૨, અપ્રથમસમય કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ ૩, ચરમસમય
કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૪, અચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૫, પ્રથમ પ્રથમસમય
કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૬, પ્રથમાપ્રથમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૭ પ્રથમ ચરમ
સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૮ પ્રથમ અચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૯ ચરમ
ચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૧૦ અને ચરમ અચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ
૧૧ આ પ્રકારના વિશેષણોવાળા એકેન્દ્રિય ઓળખેના આશ્રય કરીને ૧૧ અગિયાર
ઉદ્દેશાઓ કહ્યા છે. ‘તદ્વા કાલેલેક્ષસપ્ત એ વિ એક્કારસ ઉદ્દેશગા ભાણિયન્વા’ એજ
પ્રમાણે કૃષ્ણલેખ્યાના પદવાળા બીજા શતકમાં પણ ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ

પ્રથમોદેશક સ્વયમૂહનીય इति । तत्र 'पहमो तहओ पंचमो य सरिसगमा' प्रथमोदेशक तृतीयोदेशकः पञ्चमोदेशकश्च सदृशगमाः समानालापका भवन्ति । 'सेसा अट्टवि सरिसगमा' शेषाः द्वितीयचतुर्थषष्ठसप्तपाष्टमनवमदशमैकादशात्मका अष्टावपि उद्देशकाः सदृशगमाः सदृशालापकाः सन्ति । 'नवरं चउत्थ छट्ट अट्टम दसमेसु उववाओ नत्थि देवस्स' नवरं चतुर्थषष्ठाष्टमदशमोद्देशकेषु उपपातो नास्ति देवस्य एषु देवा नोत्पद्यन्ते इति भावः । 'सेव भंते सेव भंते । त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति यावद्विहरति ॥

इति श्री - विश्वविख्यातजगद्गुरुमादिपद्भूपितबालब्रह्मचारि - 'जैनाचार्य' पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां "श्री भगवतीयूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां पञ्चत्रिंशत्तमे शतके द्वितीयशते तृतीयादारभ्य एकादशान्ताः उद्देशकाः समाप्ताः ॥३५२॥११॥

॥ इति पञ्चत्रिंशत्तमे शतके द्वितीयमेकेन्द्रियमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥३५२॥

अपने आप बना लेना चाहिये । इन में 'पहमो तहओ पंचमो य सरिसगमा' प्रथम उद्देशक, तृतीय उद्देशक और पंचम उद्देशक एक से आलापक वाले हैं । 'सेसा अट्ट वि सरिसगमा' और द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम और एकादश ये आठ उद्देशक एक से आलापकवाले हैं । 'नवरं चउत्थ, छट्ट, अट्टम, दसमेसु उववाओ नत्थि देवस्स' परन्तु चतुर्थ में, छठे में, आठवें में एव दशवें में देव का उपपात नहीं होता है । 'सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति' हे भदन्त ! जैसा

કહેવા બોધવું તથા આ સબંધમાં આલાપનો પ્રકાર પણ સ્વયં બનાવીને સમજી લેવો. 'પહમો તહઓ પંચમો ય સસિસગમા' પહેલા ઉદ્દેશો ત્રીજો ઉદ્દેશો અને પાંચમો ઉદ્દેશો એકસરખા આલાપકોવાળા છે, 'સેસા અટ્ટ વિ સરિસગમા' તથા બીજો, ચોથો, છઠ્ઠો, સાતમો, આઠમો, નવમો, દસમો, અને અગિયારમો આ આઠ ઉદ્દેશોએ એક સરખા આલાપકોવાળા છે 'નવરં ચઉત્થ છટ્ટ અટ્ટમ દસમેસુ ઉવવાઓ નત્થિ દેવસ્સ' પરંતુ ચોથા, છઠા, આઠમા અને દશમા ઉદ્દેશોમાં દેવોનો ઉપપાત થતો નથી.

આપને यह कहा है वह सब कथन सर्वथा सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજીમહારાજકૃત “ભગવતીસૂત્ર” કી પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાકે પૈતીસવે શતક કે દ્વિતીય શતક મેં તૃતીય ઉદ્દેશક સે લેકર ૧૧ વેં ઉદ્દેશકે પર્યન્ત કે ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥૩૫-૨-૧૧॥

દ્વિતીય એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત હુઆ ॥૩૫-૨॥

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! તિ’ હે ભગવન્ આપે જે પ્રમાણે આ વિષયમાં કથન કરેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ.૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત ‘ભગવતીસૂત્ર’ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના પાંત્રીસમા શતકમાં બીજા ઉદ્દેશાથી લઈને અગિયારમા

ઉદ્દેશા સુધીના સઘળા ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૩૫-૨-૧૧

૩૫ મા શતકમાં બીજું એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત ॥૩૫-૨॥



‘અહં તદ્વ્યં ઇન્દ્રિયમહાયુગ્મસયં

મૂલમ્—એવં નીલલેસેહિ વિ સયં કળહલેસસ સયસરિસં એકારસ
રસ ઉદેસગા તહેવ સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ ॥સૂ૦ ૧॥

પળતીસદ્દમે સપ્ત તદ્વ્યં ઇન્દ્રિય મહાયુગ્મ સયં સમન્તં ॥૩૫-૩॥

છાયા:--એવં નીલલેશ્યૈરપિ શતં કૃષ્ણલેશ્યશતસદ્દશમ્, એકાદશોદેશકા-
સ્તથૈવ । તદેવં મદન્ત । તદેવં મદન્ત ! ઇતિ ॥

પચ્ચત્રિશતમે શતકે તૃતીયમેકેન્દ્રિયમહાયુગ્મશતં સમાપ્તમ્ ॥૩૫।૩॥

ટીકા—‘એવં નીલલેસેહિ વિ સયં કળહલેસસસરિસં’ એવં નીલલેશ્યૈરપિ
શતં કૃષ્ણલેશ્યશતસદ્દશં જ્ઞાતવ્યમ્, યથા—કૃષ્ણલેશ્યામન્તર્ભાવ્ય શતમેકેન્દ્રિયં
મહાયુગ્માભ્યં નિર્મિતં તથૈવ નીલલેશ્યમન્તર્ભાવ્યાપિ તૃતીયમેકેન્દ્રિયમહાયુગ્મશતં
નિર્માતવ્યમ્ । ‘એકારસ ઉદેસગા તહેવ’ યથૈવ કૃષ્ણલેશ્યશતે ઔધિકકૃતયુગ્મ કૃત-

શતક ૩૫ તૃતીય એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શત

ટીકાર્થ—‘એવં નીલલેસેહિ વિ સયં કળહલેસસસરિસં એકારસ
ઉદેસગા તહેવ સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ કૃષ્ણલેશ્યાવાલોં કે
સમ્બન્ધ મેં જૈસા કૃષ્ણલેશ્યા શતક કહા ગયા હૈ । ડસી રીતિ સે
નીલલેશ્યાવાલોં કે સમ્બન્ધ મેં નીલલેશ્યા શતક ખી કહલેના ચાહિયે
જૈસે વહાં ૧૧ ઉદેશક કહે ગયે હૈં વૈસે હી યહાં પર ખી ૧૧ ઉદેશક
હૈં એસા સમજના ચાહિયે । તાત્પર્ય હસ કથન કા એસા હૈ કિ જિસ
રીતિ સે કૃષ્ણલેશ્યા કો આશ્રિત કરકે એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ નામ કા
શતક નિર્મિત હુઆ હૈ । ડસી પ્રકાર સે નીલલેશ્યા કો આશ્રિત કરકે
તૃતીય એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતક ખી નિર્મિત કર લેના ચાહિયે । તથા
‘એકારસ ઉદેસગા તહેવ’ કૃષ્ણલેશ્યાવાલોં કે શત મેં ઔધિક

ત્રીજા એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતકનો પ્રરંભ—

‘એવં નીલલેસેહિ સયં કળહલેસસસરિસં એકારસઉદેસગા તહેવ—સેવં મંતે !
સેવં મંતે ! ત્તિ’ કૃષ્ણલેશ્યાવાળાઓના સંબંધમાં જે પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યા શતક
કહેવામાં આવેલ છે એજ પ્રમાણે નીલલેશ્યાવાળાઓના સંબંધમાં નીલ-
લેશ્યા શતક પણ કહેવું જોઈએ, ત્યાં જે પ્રમાણે ૧૧ અગિયાર ઉદેશાઓ કહ્યા
છે, એજ પ્રમાણેના ૧૧ અગિયાર ઉદેશાઓ અહિયાં પણ છે તેમ સમજવું.
આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે-જે રીતે કૃષ્ણલેશ્યાનો આશ્રય કરીને એકેન્દ્રિય
મહાયુગ્મ નામનું શતક કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે નીલલેશ્યાનો
આશ્રય કરીને એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતક પણ સમજી લેવું જોઈએ. તથા

યુગ્મોદ્દેશાદારમ્ય ચરમાચરમકૃતયુગ્મકૃતયુગ્મોદ્દેશપર્યન્તમેકાદશોદ્દેશકાઃ કૃતા સ્ત-
થૈવ્દ્વિહાપિ નીલલેશ્ય પદમધિકૃત્ય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્માદિ ઘટિતા એકાદશોદ્દેશકા
અપિ કરણીયાઃ । સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ ॥

ઇતિ શ્રી - વિશ્વવિરુદ્ધાતજગદ્વલ્લભાદિપદભૂષિતવાલ્બ્રહ્મવારિ - 'જૈનાચાર્ય'

પૂજ્યશ્રી-ઘામીલાલવ્રતિવિરચિતાયાં 'શ્રી ભગવતીમૂત્રસ્ય' પ્રમેયચન્દ્રિકાવ્યાયાં

વ્યાખ્યાયાં પચ્ચત્રિશત્તમશતકે તૃતીયમેકેન્દ્રિયમહાયુગ્મશતં સમાપ્તમ્ ॥૩૫૩

કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ઉદ્દેશક સે લેકર ચરમ ચરમ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ
ઉદ્દેશક તક ૧૧ ઉદ્દેશક કિયે ગયે હૈં ઉસી પ્રકાર સે યહાં પર ભી
નીલલેશ્ય પદ કો લગાકર કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ આદિ ઘટિત ૧૧ ઉદ્દેશક
કર લેના ચાહિયે । 'સેવં' મંતે સેવં મંતે ! ત્તિ' હે મદન્ત ! જૈસા આપને
યહ કથન કિયા હૈ, વહ સર્વથા સત્ય હી હૈ ૨ । હસ પ્રકાર કહકર
ગૌતમસ્વામીને પ્રભુશ્રી કો વન્દના કી ઓર નમસ્કાર કિયા । વન્દના
નમસ્કાર કર ફિર વે સંયમ ઓર તપ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે
હુએ અપને સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે ॥૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘામીલાલજીમહારાજકૃત

“ભગવતીસૂત્ર” કી પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાકે પૈંતીસવેં શતકકા

તીસરા મહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત ॥૩૫-૩॥

‘એકકારસ ઉદ્દેશગા તદેવ’ કૃષ્ણુદેશ્યાવાળાઓના શતકમાં ઔધિક કૃતયુગ્મ
કૃતયુગ્મ ઉદ્દેશથી લઈને ચરમ ચરમ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ઉદ્દેશા સુધી ૧૧
અગિયાર ઉદ્દેશાઓ કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયા પણ નીલલેશ્યા
પદ લગાવીને કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ વિગેરે ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ સમજવા.

‘સેવં મંતે ! સેવ મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમણે આ
વિષયમાં કહ્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે હે ભગવન્ આપનું
કથન સત્ય જ છે, એ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી
નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના
આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર ગિરાજમાન થયા. ॥સૂ.૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘામીલાલજી મહારાજકૃત “ભગવતીસૂત્ર”ની

પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના પાંત્રીસમા શતકનું ત્રીજુ એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ

શતક સમાપ્ત ॥૩૫-૩॥

॥ 'अह चउत्थं एगिदिय महाजुग्मसयं ॥

मूलम्—एवं काउलेस्सेहि वि सयं कणहलेस्ससयसरिसं ।
सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

छाया—एवं कापोतलेश्यैरपि शतं कृष्णलेश्यशतसदृशम् । तदेवं भदन्त !
तदेवं भदन्त ! इति ।

टीका—एवं कापोतलेश्यैरपि शतं कृष्णलेश्यशतसदृशम् । अत्र कापोत
लेश्यपदमधिकृत्य एकादशादेशका कृष्णलेश्यकृतयुग्मकृतयुग्मोद्देशकः देव एका-
दशोद्देशकाः पठनीया इति भावः । 'सेवं भंते । सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त !
तदेवं भदन्त ! इति ।

॥ पञ्चत्रिंशत्तमशतके चतुर्थमेकेन्द्रियमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥ ३५॥४

शतक ३५ चतुर्थ एकेन्द्रिय महायुग्म शत

'टीकार्थ'—'एवं काउलेस्सेहि वि सयं कणहलेस्ससयसरिसं'—'सेवं भंते !
सेवं भंते ! त्ति' कापोतलेश्यावालों के सम्बन्ध में श्री कृष्णलेश्या
शतक के जैसा शतक बना लेना चाहिये । यहां कृष्णलेश्या के स्थान
में कापोतलेश्यापद रखकर ११ उद्देशक बनता है । हे भदन्त ! जैसा
आपने यह कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर
गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार
कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने
स्थान पर विराजमान हो गये ।

॥ चतुर्थ एकेन्द्रिय महायुग्म शत समाप्त ॥ ३५—४॥

अथैकैन्द्रिय महायुग्म शतकने प्रारंभ—

'एवं काउलेस्सेहि' वि सयं कणहलेस्ससयसरिसं 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति'
कापोतलेश्यावाणाओना स भ धमां पणु कृष्णलेश्या शतकनी जेम शतक अनावीने
कडेपुं जेधंओ अहियां कृष्णलेश्याना स्थानमां कापोतलेश्या पद भूमीने ११
अगियार उद्देशाओ अनावी लेवा. छे लगवन् आपे आ विषयमां जे कडेल छे
ते सधणुं कथन सर्वथा सत्य न छे. छे लगवन् आपनु कथन सर्वथा सत्य
न छे. आ प्रमाणे कडीने गौतमस्वामीओ प्रभुश्रीने वन्दना करी तेओने
नमस्कार कर्या वन्दना नमस्कार करीने ते पछी संयम अने तपथी पोताना
आत्माने भावित करता थका पोताना स्थान पर विराजमान थया. ॥ सू० १॥

अथैकैन्द्रिय महायुग्म शतक समाप्त ॥ ३५—४॥

॥ अह ५-१२ सयाई'

मूलम्-भवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते !
कओ उववज्जंति ? जहा ओहियसयं तहेव । नवरं एकारससु
वि उद्देसएसु अह भंते ! सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता भवसि-
द्धिय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियत्ताए उववन्न पुव्वा ? गोयमा !
णो इणट्ठे समट्ठे सेसं तहेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥सू० १॥

पणतीसइमे सए पंचमं सयं समत्तं ॥३५-५॥

कणहलेस्स भवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं
भंते ! कओहिंनो उववज्जंति ? एवं कणहलेस्स भवसिद्धिय
एगिंदिए वि सयं वितियसयं कणहलेस्ससरिसं भाणियव्वं ।
सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३५-६॥

एवं नीललेस्स भवसिद्धिय एगिंदिएहि वि सयं । सेवं
भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३५-७॥

एवं काउलेस्स भवसिद्धिय एगिंदिएहि वि तहेव एकारस
उद्देसगलंजुत्तं सयं । एवं एयाणि चत्तारि भवसिद्धियसयाणि ।
चउसु वि सएसु सव्वे पाणा जाव उववन्नपुव्वा ? णो इणट्ठे
समट्ठे । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३५-८॥

जहा भवसिद्धिएहिं चत्तारि सयाईं भणियाईं एवं अभव-
सिद्धिएहिं वि चत्तारि सयाणि लेस्सा संजुत्ताणि भाणियव्वाणि ।
सव्वे पाणा० तहेव नो इणट्ठे समट्ठे । एयाईं वारसएगिंदिय-
महाजुम्म सयाईं भवंति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३५-१२॥

पणतीसइमं सयं समत्तं ॥३५॥

छाया—भवसिद्धिय कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते यथौघिकशतं तथैव । नवरमेकादशश्चपि उद्देशकेषु अथ भदन्त ! सर्वे प्राणायामावत्सर्वे सत्त्वाः भवसिद्धिकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियतया उत्पन्नपूर्वाः शौतम ! नायमर्थः समर्थः शेषं तथैव । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥ ३५ ५ ॥

कृष्णलेश्य भवसिद्धिकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते एवं कृष्णलेश्य भवसिद्धिकैरपि शतं द्वितीयशत कृष्णलेश्यसदृशं भणितव्यम् तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥ ३५ ६ ॥

एवं नीललेश्य भवसिद्धिकैकेन्द्रियैरपि शतम् । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥ ३५ ७ ॥

एवं कापोतलेश्य भवसिद्धिकैकेन्द्रियैरपि तथैव एकादशोद्देश्यसंयुक्तं शतम् एवमेतानि चत्वारि भवसिद्धिकशतानि । चतुर्वर्षपि शतेषु सर्वे प्राणा यावत् उत्पन्नपूर्वाः, नायमर्थः समर्थः । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥ ३५ ८ ॥

यथा—भवसिद्धिकैश्चत्वारि शतानि भणितानि एवमभवसिद्धिकैरपि चत्वारि शतानि लेश्या संयुक्तानि भणितव्यानि । सर्वे प्राणा तथैव नायमर्थः समर्थः । एवमेतानि द्वादश एकेन्द्रियमहायुग्मशतानि भवन्ति । तदेवं भदन्त । तदेवं भदन्त इति ३५ १२ ॥

॥ पञ्चत्रिंशत्तमं शतकं समाप्तम् । ३५ ॥

टीका—‘भवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्म एगिदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति’ भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य आगत्य तिर्यग्भ्यो वा आगत्य मनुष्येभ्यो वा आगत्य देवैर्भ्यो वा आगत्य समुत्पद्यन्ते इति पूर्ववदेव प्रश्नः, उत्तरमाह—अतिदेशद्वारेण ‘जहा’ इत्यादि

शतक ३५ पंचम शत से लेकर १२ वें शतक

टीकार्थ—‘भवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्म एगिदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति’ हे भदन्त ! भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म राशि प्रमित एकेन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा तिर्यग्भ्योनिर्गोनों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा मनुष्यों में से आकर

पांचमा शतकेना प्रारंभ—

‘भवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्म एगिदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति’ हे भगवन् भवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्म राशिवाणा एकेन्द्रिय एवो क्या स्थान विशेषथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? शुं तेओ नैरयिकेभाथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा तिर्यग्भ्योनिर्गोभाथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा

‘જહા ઓહિયસયં તહેવ’ યથા એતસ્યૈવ શતકમ્યૌધિકશતં પ્રથમશતં તથૈવ-પ્રથમ શતકવદેવ સર્વં પ્રશ્નોત્તરાદિ જ્ઞાતવ્યમ્ । ઔધિકશતાપેક્ષયા યદ્વૈલક્ષણ્યં તદર્શયતિ-
‘નવરં’ इत्यादिना-‘नवरं एकारससु वि उद्देमएसु’ नवरमेकादशस्वपि उद्देशकेषु
‘अह भंते ! सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता’ भदन्त ! सर्वे पाणा यावत् सर्वे सत्ताः
यावत्पदेन भूतजीवयोः संग्रहो भवति ‘भवसिद्धि कडजुम्म कडजुम्म एगि-
दियत्ताए उववन्नपुव्वा’ भवसिद्धिकृतयुग्मकृतयुग्मेकेन्द्रियतया उत्पन्नपूर्वाः हे
भदन्त ! सर्वे प्राणजीवधूतसत्ताः भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्मेकेन्द्रियतया
किं पूर्वं समुत्पन्ना इति प्रश्नः, भगवानाह-‘गोयमा’ इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम !
‘नो इणट्ठे समट्ठे’ नायमर्थः समर्थः सर्वे जीवाः सोत्पन्नपूर्वा एतादृशेकेन्द्रियतयेति

के उत्पन्न होते हैं ? अथवा देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? इस प्रश्न का अतिदेश द्वारा उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतमस्वामी से कहते हैं-‘जहा ओहियसयं तहेव’ हे गौतम ! जैसा औधिक शतक में- इसी शतक के प्रथम शतक में कहा गया है-वैसा ही सब प्रश्न और उत्तर के सम्बन्ध में यहां कथन जानना चाहिये । ‘नवरं’ एकारससु वि उद्देमएसु अह भंते ! सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता भवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्म एगिदियत्ताए उववन्नपुव्वा’ परन्तु औधिक शतक की अपेक्षा जो भिन्नता यहां है यह ऐसी है-‘हे भदन्त ! क्या समस्त प्राण यावत् सत्त्व भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय रूप से पहिले उत्पन्न हो चुके हैं ? तो इस पर प्रभुश्री कहते हैं-‘गोयमा णो इणट्ठे समट्ठे’ हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है । अर्थात् समस्त

મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નનો અતિદેશ દ્વારા ઉત્તર આપતાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-‘જહા ઓહિયસયં’ હે ગૌતમ ! ઔધિક શતકમાં એટલે કે આ શતકના પહેલા શતકમાં જે રીતે કથન કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેતું કથન પ્રશ્ન અને ઉત્તરરૂપ સઘળું કથન અહિયાં કહેવું જોઈએ. ‘નવરં’ એકારસસુ વિ ઉદ્દેમસુ અહ ભંતે ! સવ્વે પાણા જાવ સવ્વે સત્તા ભવસિદ્ધિય કડજુમ્મ કડજુમ્મ એગિ દિયત્તાએ ઉવવન્નપુવ્વા’ પરંતુ ઔધિક શતકના કથન કરતાં આ કથનમાં જે ભિન્નપણું છે, તે એવું છે કે-‘હે ભગવન શું સઘળા પ્રાણી યાવત્ સઘળા સત્ત્વો ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય પણાથી પહેલાં ઉત્પન્ન થઈ ચૂકયા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-‘ગોયમા ! ણો ઇણટ્ઠે સમટ્ઠે’ હે ગૌતમ ! આ અર્થ બરાબર નથી. અર્થાત્ સઘળા પ્રાણ,

ભાવઃ । ‘સેસં તહેવ’ શેષમ્-અતદતિરિક્તં તથૈવ શેષમ્ ઉપપાતાદિકમ્ અસ્યૈવ શત-
કસ્ય પ્રથમ શતોક્તયેવ જ્ઞાતવ્યમિતિ ભાવઃ । ‘સેવં મંતે । સેવં મંતે ત્તિ’ તદેવં
મદન્તં । તદેવં મદન્ત્વ ઇતિ ।

इति श्री - विश्वविख्यातजगद्गुरुभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि - ‘जैनाचार्य’
पूज्यश्री-घासीलालब्रह्मचरिचितावां “श्री भगवतीसूत्रय” प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायां पञ्चविंशत्तमे शतके पञ्चममेकेन्द्रियमहायुगमशतं समाप्तम् । ३५।५।

પ્રાણ, સમસ્તજીવ, સમસ્તભૂત, ઔર સમસ્ત સત્ત્વ હસ પ્રકાર કે
એકેન્દ્રિય કે રૂપસે પહિલે ઉત્પન્ન નહોં હુએ હૈં । ‘સેસં તહેવ’ હસ ભિન્નતા
કે અતિરિક્ત સ્વ કથન ઉપપાત આદિ કે સમ્બન્ધ કા વિવેચન-હસી
શતક કે પ્રથમ શત મેં કહે ગયે અનુસાર હૈં । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે !
ત્તિ’ હે મદન્ત ! આપકે દ્વારા કહા ગયા યહ સ્વ સર્વથા સત્ય હી હૈં
હસ પ્રકાર કહકર ગૌનમને પ્રભુશ્રીકો વન્દના કી નમસ્કાર કિયા
વન્દના નમસ્કાર કર ફિર વે સંયમ ઔર તપ સે આત્મા કો ભાવિત
કરતે હુએ અપને સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે ।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
“भगवतीसूत्र” की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके पैंतीसवें शतकका
पांचवा एकेन्द्रिय महायुगम शतक समाप्त ॥३५-५॥

સઘળા જીવો, સઘળા ભૂતો, અને સઘળા સત્ત્વો આ પ્રકારના એકેન્દ્રિય
પણાથી પહેલાં ઉત્પન્ન થયા નથી. ‘સેસ તહેવ’ આ કિન્નપણા શિવાય બાકીનું
બીજું સઘળું ઉપપાત વિગેરે સંબંધી કથનનું વિવેચન આજ શતકના પહેલા
શતકમાં કહ્યા પ્રમાણે છે.

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે કહેલ આ
સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે, હે ભગવન્ આપે પ્રતિપાદન કરેલ આ
સઘળું કથન સત્ય જ છે આ પ્રમાણે કહીને જૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વદના
કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને
તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા થકા પોતાના સ્થાન પર વિરાજ-
માન થયા ॥૩૫૦૧॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजी महाराजकृत “भगवतीसूत्र” नी
प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याना पात्रीसभा शतकनું पाचवું એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ
શતક સમાપ્ત ॥૩૫-૫॥

‘कण्ठलेस्स भवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्मएगिंदियाणं भंते !’ कृष्णलेश्य भवसिद्धिक कृतयुगमकृतयुगमैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ‘कओहिंतो उव्वज्जंति’ कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य आगत्य यावद् देवेभ्यो वा आगत्य समुत्पद्यन्ते पूर्ववदेव प्रश्नः, इति पूर्ववदेवोत्तरयति—‘एवं’ इत्यादि, ‘एवं’ कण्ठलेस्स भवसिद्धिय एगिंदिएहिं वि सयं वित्तिय कण्ठलेस्ससरिसं भाणियव्व’ एवं कृष्णलेश्यभवसिद्धिककृतयुगम कृतयुगमैकेन्द्रियैरपि शतम् एतच्छतकस्यैव द्वितीय कृष्णलेश्यशतसदृशमेव भणितव्यं द्वितीय कृष्णलेश्य शते यत्—यथा कथितं तत् तथैव सर्वमिहापि ज्ञातव्यमिति । ‘सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति’ तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥

पञ्चत्रिंशत्तमे शतके पष्ठं शतं समाप्तम् ॥३५६॥

टीकार्थ—‘कण्ठलेस्स भवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते !’ हे भदन्त ! कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक कृतयुगमकृतयुगम राशि प्रमित एकेन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—‘एवं’ कण्ठलेस्स भवसिद्धिय एगिंदिएहिं वि वित्तियसयं कण्ठलेस्ससरिसं भाणियव्व’ हे गौतम ! इन कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक कृतयुगम कृतयुगम एकेन्द्रियों के सम्बन्ध भी यह शत इसी शतक के द्वितीय कृष्णलेश्या शतक के जैसा ही जानना चाहिये । अतः द्वितीय कृष्णलेश्यावालों के सम्बन्ध में जैसा

छट्ठा ऐकेन्द्रिय महायुगशतकने। प्रारंभ—

‘कण्ठलेस्स भवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते !’ हे लगवन् कृष्णलेश्यावाणा भवसिद्धिक कृतयुगम कृतयुगम राशिवाणा ऐकेन्द्रिय एवे। क्या स्थान विशेषथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? शुं तेओ नैरयिकोभांथीआवीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा तिर्यग्योनिकोभांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा मनुष्योभांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? के देवोभांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? आ प्रश्नना उत्तरमां प्रभुश्री गौतमस्वामीने कहे छे के—‘एवं’ कण्ठलेस्स भवसिद्धिय एगिंदिएहिं वि वित्तियसयं कण्ठलेस्ससरिसं भाणियव्व’—हे गौतम ! आ कृष्णलेश्यावाणा भवसिद्धिक कृतयुगम कृतयुगम ऐकेन्द्रियोना संणंधमां पणु शतके आ पांत्तीसमा शतकना भीण्ण कृष्णलेश्याशतकना कथन प्रमाणे समज्जुं भीण्ण कृष्णलेश्यावाणाओना संणंधमां ने प्रमाणे त्यां कडेवामां आवेल छे, ओ न प्रमाणेनुं ते तमांम कथन अडियां पणु समज्जुं’.

‘एवं नीललेख भवसिद्धि एगिदि एहि वि सयं’ एवमेव नीललेखभवसिद्धि कृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रियैरपि शतम् एतत् शतमपि पूर्ववदेव प्रयोत्तराभ्यां निरूपणीयम् । ‘सेवं भंते । सेवं भंते । त्ति’ तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त इति ॥

पञ्चत्रિंशत्तमे शतके समाप्तम् ॥૩૫ ૭॥

વહાં કહા ગયા હૈ વૈસા હી વહ સબ યહાં પર ખી જાનના ચાહિયે । ‘સેવં’ ભંતે ! સેવં’ ભંતે ! ત્તિ’ હે ભદન્ત ! જૈસા આપને યહ સબ કહા હૈ વહ સબ સર્વથા સત્ય હી હૈ ૨ હસ પ્રકાર કહકર ગૌતમને પ્રભુશ્રી કો વન્દના કી ઓર નમસ્કાર ક્રિયા વન્દના નમસ્કાર કર કે ફિર વે સંયમ ઓર તપ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુએ અપને સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે । છટ્ટા શત સમાપ્ત ॥૩૫-૬॥

ટીકાર્થ-‘एवं नीललेख भवसिद्धि एगिदि एहिं वि सयं’ इसी प्रकार से नीललेखावाले भवसिद्धि कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिक जीवों के सम्बन्ध में भी शतक का निर्माण कर कथन कर लेना चाहिये । ‘सेवं’ भंते । सेव भंते । त्ति’ हे भदन्त ! आपका कथन सर्वथा सत्य ही है २ । इत्यादि सब कथन पूर्व के ही जैसा है । सातवां शत समाप्त ॥૩૫-૭॥

‘સેવં’ ભંતે ! સેવં’ ભંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણે આ વિષયમાં કહેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્, આપદેવાનુ પ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥છઠ્ઠું એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત ॥૩૫-૬॥

‘एवं नीललेख भवसिद्धि एगिदि एहि वि सयं’ आज प्रमाणे नीललेखा-वाणा भवसिद्धि कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीवों ने संश्लेषण शतक बनावीने कथन करी देवुं लोभ्ये.

‘સેવં’ ભંતે ! સેવં’ ભંતે ત્તિ’ હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે કથન કર્યું છે તે સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥સાતમું એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત ॥૩૫-૭॥

‘एवं काउलेस्स भवसिद्धिय एगिदिग्धि वि तहेव एकारस उद्देसगसंजुत्तं सयं’ एवं पूर्ववदेव कापोतलेश्य भवसिद्धिक कृन्युग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियैरपि तथैव पूर्ववदेव एकादशोद्देशकसंयुक्तं शतं भवति । एते जीवा कुत उत्पद्यन्ते ? इत्यादि प्रश्नोत्तरादिकं पूर्ववदेषोदनीयम् । ‘एवं एयाणि चत्वारि भवसिद्धियसयाणि’ एवमेतानि चत्वारि भवसिद्धिकशतानि औधिक कृष्णनील कापोतलेश्याख्यानि चत्वारि भवन्ति ‘चउसु वि सएसु’ चतुર્ध्वपि शतकेषु ‘सव्वे पाणा जाव उव्वन्न-पुव्वा ? नो इणट्ठे समट्ठे’ सर्वे पाणा यावद् उत्पन्न पूर्वाः ? नायमर्थः समर्थः ।

टीका—‘एवं काउलेस्स भवसिद्धिय एगिदिग्धि वि तहेव एकारस उद्देसगसंजुत्तं सयं’ इसी प्रकार से कापोतलेश्यावाले भवसिद्धिक कृन्युग्म राक्षिप्रसिद्ध एकेन्द्रिय जीवों के साथ भी पहिले के जैसा ११ उद्देशकों वाला शत होता है । अतः ये जीव कहां से आकर के उत्पन्न होते हैं इत्यादि प्रश्न और हे गौतम ! ये जीव तिर्यग्योनि-कादिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं इत्यादि उत्तर पूर्वोक्त जैसा ही जानना चाहिये । ‘एवं एयाणि चत्वारि भवसिद्धियसयाणि चउसु वि सएसु’ इन औधिक, कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावाले भवसिद्धिक एकेन्द्रिय सम्बन्धी चार शतकों में ‘सव्वे पाणा जाव उव्वन्नपुव्वा, नो इणट्ठे समट्ठे’ समस्त प्राण यावत् समस्त सत्त्व पहिले उत्पन्न हो चुके हैं यह अर्थ समर्थित नहीं है ऐसा कहना चाहिये । क्योंकि ऐसे अभव्य एकेन्द्रिय जीव अनन्त हैं जो इस रूप से उत्पन्न नहीं हुए हैं ।

“આઠમા એકેન્દ્રિય શતકનો પ્રારંભ—”

‘एवं काउलेस्स भवसिद्धिय एगिदिग्धि वि तहेव एकारस उद्देसग संजुत्तं सयं’ આજ પ્રમાણે કાપોતલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાક્ષિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોની સાથે પણ પહેલાં કહ્યા પ્રમાણેના ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશ્યાવાળું શતક થાય છે. તેથી ‘જીવો કયાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? વિગેરે પ્રશ્નો અને હે ગૌતમ ! તે જીવો તિર્યગ્યોનિક વિગેરેમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, વિગેરે ઉત્તર પહેલા કહ્યા પ્રમાણે સમજી લેવા. ‘एवं एयाणि चत्वारि भवसिद्धियसयाणि चउसु वि सएसु’ औधिक, कृष्ण, नील, અને कापोतलेश्यावाળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવો સંબંધી ચાર શતકોમાં ‘સવ્વે પાણા જાવ ઉવ્વન્નપુવ્વા, નો ઇણટ્ઠે, સમટ્ઠે’ સઘળા પ્રાણો યાવત્ સઘળા સત્ત્વો પહેલાં

‘એતત્પ્રકરણં સર્વત્ર ચતુર્થપિ ભવસિદ્ધિક્ષતેષુ યોજ્યમ્ । ન સર્વે જીવાઃ ભવ-
સિદ્ધિક કૃષ્ણનીલકાપોતકૃતયુગ્મતયા નોત્પન્નપૂર્વાઃ અનન્તત્વાત્ ‘સેવં’ મંતે !
સેવં મંતે । ત્તિ તદેવં મદન્ત । તદેવં મદન્ત । ઇતિ ॥

પશ્ચન્નિશત્તમે શતકે ૫૬૮મં શતં સમાપ્તમ્ ॥૩૫૮॥

‘જહા ભવસિદ્ધિર્ણિ ચત્તારિ સયાઈ મળિયાઈ’ યથા ભવસિદ્ધિકૈ શ્વત્વારિ
શતાનિ મળિતાનિ ‘એવં અભવસિદ્ધિર્ણિ વિ ચત્તારિ સયાણિ સંજુતાણિ મળિય-
વાણિ’ એવમભવસિદ્ધિકૈપિ ચત્તારિ શતાનિ ઔધિક કૃષ્ણનીલકાપોતલેશ્યા
સંયુક્તાનિ મળિતવ્યાનિ ‘સર્વે પાળા૦ તદેવ ણો ઇણ્ઠે સમઠ્ઠે’ સર્વે પાળાઃ તથૈવ,
‘સેવં’ મંતે ! સેવં’ મંતે ! ત્તિ’ હે મદન્ત । આપકા યહ વથન સર્વથા
સત્ય હી હૈ ૨ । હસ પ્રકાર કહકર ગૌતમ ને પ્રભુશ્રી કો વન્દના કી
ઔર નમસ્કાર ક્રિયા । વન્દના નમસ્કાર કર ફિર વે સંયમ ઔર તપ
સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુએ અપને સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે ।

અષ્ટમ શત સમાપ્ત ॥૩૫-૮॥

‘જહા ભવસિદ્ધિર્ણિ ચત્તારિ સયાઈ મળિયાઈ’ જિસ પદ્ધતિ સે
ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવોં કો સમ્બન્ધ મેં ઔધિક શતક, કૃષ્ણલેશ્યા
શતક, નીલલેશ્યા શતક, ઔર કાપોતલેશ્યા શતક કહે ગયે હૈં’ ડસી
પદ્ધતિ સે ઇન્હીં શતકોં કો આશ્રિત કરકે અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયજીવોં
કો સમ્બન્ધ મેંમી ચાર શતક કહલેના ચાહિયે । ઇન મેંમી એસા હી

ઉત્પન્ન થઇ ચુકયા છે. આ અર્થ બરોબર નથી. તેમ કહેવું નોંધએ. કેમકે-
એવા એકેન્દ્રિય એવા અનંત છે. જે અત્યાર સુધી આ રૂપથી ઉત્પન્ન થયા નથી.

‘સેવં’ મંતે ! સેવં’ મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન આપ દેવાનુપ્રિયનું આ વિષય
સંબંધમાં કરેલ કથન સર્વથા સત્ય છે. ૨ આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ
પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ
અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર
વિરાજમાન થયા. ॥૩૫૦૧॥

આઠમું શતક સમાપ્ત ॥૩૫-૮॥

નવમા શતકથી બારમા શતક સુધીના શતકોતું કથન

‘જહા ભવસિદ્ધિર્ણિ ચત્તારિ સયાઈ મળિયાઈ’ જે પ્રમાણે ભવસિદ્ધિક
એકેન્દ્રિય એવાના સંબંધમાં ઔધિક શતક, કૃષ્ણલેશ્યા શતક નીલલેશ્યા
શતક અને કાપોતલેશ્યા શતક કહેવામાં આવેલ છે, એજ રીતે એજ
શતકોનો આશ્રય કરીને એકેન્દ્રિય એવાના સંબંધમાં ચાર શતકો કહેવા નોંધએ,

નાયમર્થઃ સમર્થ ઇતિ વ્યક્તવ્યમ્ અનન્તત્વાત્ । એવં એયાઈં વ્વારસ ઇગિંદિય મહા-
જુમ્મ સયાઈં ભવંતિ' એવમેતાનિ દ્વાદશૈકેન્દ્રિય મહાયુગ્મશતાનિ ભવન્તીતિ, 'સેવં
મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ઇતિ ॥

ઇતિ શ્રી - વિશ્વવિખ્યાતજગદ્વલ્લભાદિપદભૂષિતવાલ્મીકીચારિ - 'જૈનાચાર્ય'
પૂજ્યશ્રી-ઘાસીલાલત્રિવિરચિતાયાં 'શ્રી મગવતીસૂત્રસ્ય' પ્રમેયચન્દ્રિકાખ્યાયાં
વ્યાખ્યાયાં પञ્ચત્રિંશચ્છતકે નવમતઃ દ્વાદશાન્તા શતાનિ સમાપ્તાનિ ૩૫-૯-૧૨।

॥ પञ્ચત્રિંશત્તમં શતકં સમાપ્તમ્ ॥

કથન કરનાં ચાહિયે કિ સમસ્ત પ્રાણ યાવત્ સમસ્ત સત્ત્વ દ્વનમેં પહિલે
ઉત્પન્ન હોં ચુકે હેં એસા અર્થ સમર્થિત નહોં હુઆ હેં । કયોં કિ એસે
મગ્ય એકેન્દ્રિય જીવ અનન્ત હેં જો હસ રૂપ સે ઉત્પન્ન નહોં હુએ હેં ।
'એવં એયાઈં વ્વારસ ઇગિંદિયમહાજુમ્મસયાઈં' ભવંતિ' હસ પ્રકાર યે
૧૨ એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શત હોતે હેં । 'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ'
હે મદન્ત ! આપકા યહ કથન સર્વથા સત્ય હી હે ૨ । હત્યાદિ સ્વ
ગૌતમ કે સમ્બન્ધ કી પ્રક્રિયા પૂર્વ કે જૈસી હી જાનની ચાહિયે ।

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજીમહારાજકૃત
“મગવતીસૂત્ર” કી પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાકે પૈતીસવેં શતક કે
નવવેં સે ચારહવેં પર્યન્તકે શતક સમાપ્ત ॥૩૫-૯-૧૨॥

॥ ૩૫ વાં શતક સમાપ્ત ॥

આમાં પણ એજ પ્રમાણેનું કથન કહેવું જોઈએ.—સઘળા પ્રાણ યાવત્ સઘળા
સત્ત્વો આમાં પહેલાં ઉત્પન્ન થઈ ચૂક્યાં છે, એ પ્રમાણેનો અર્થ સમર્થિત
થતો નથી. કેમ કે એકેન્દ્રિય જીવો અનન્ત છે. કે જેઓ અત્યાર સુધી આ
રૂપથી ઉત્પન્ન થઈ શક્યા નથી 'એવં એયાઈં' વારસ ઇગિંદિયમહાજુમ્મસયાઈં
ભવંતિ' આ પ્રમાણે ૧૨ બાર એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતક થાય છે તેમ સમજવું.

'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ આપે કહેલ આ સઘળું કથન
સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય
છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર
કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને
ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્ર'ની
પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના પાંત્રીસમા શતકમાં નવમા શતકથી બારમા શતક

સુધીના શતકો સમાપ્ત ॥૩૫-૯-૧૨॥

પાંત્રીસમું શતક સમાપ્ત ॥૩૫॥

॥ (छत्तीसइमं सयं) ॥

॥ (पढमं वेइंदियमहाजुम्मसयं) ॥

॥ (पढमो उद्देसो) ॥

पञ्चत्रिंशत्तमे शतके संख्यापदैरेकेन्द्रिजीवाः प्ररूपिताः अथ पङ्क्तित्रिंशत्तमे शतके तैरेव संख्यापदैः द्वीन्द्रियाः प्ररूप्यन्ते इत्येवं सम्बन्धेनायातस्य शतकस्येदमादिमं सूत्रम्—‘कडजुम्म’ इत्यादि ।

मूलम्—कडजुम्म कडजुम्म वेइंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? उववाओ जहा वक्कंतीए । परिमाणं सोलस वा संखेज्जा वा उववज्जंति, असंखेज्जा वा उववज्जंति । अवहारो जहा उप्पलुद्देसए । ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जभागं उक्कोसेणं बारस जोयणाइं । एवं जहा एगिंदियमहाजुम्माणं पढमुद्देसए तहेव । नवरं तिन्नि लेस्साओ देवा न उववज्जंति सम्मदिट्ठी, वा मिच्छादिट्ठी वा, नो सम्मामिच्छादिट्ठी । नाणी वा अन्नाणी वा । नो मणजोगी वयजोगी वा कायजोगी वा । ते णं कडजुम्मकडजुम्म वेइंदिया कालओ केवच्चिरं होति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं संखेज्जं कालं । ठिई जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं बारससंवच्छराइं । आहारो नियमा छदिसिं । तिन्नि समुग्घाया । सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो । एवं सोलससु वि जुम्मेसु । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

छत्तीसइमे सए पढमे वेइंदिय महाजुम्मसए

पढमो उद्देसो समत्तो ॥३६-१-१॥

छाया—कृतयुग्म कृतयुग्म द्वीन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? उपपातो यथा व्युत्क्रान्तौ । परिमाणं षोडश वा संख्येया बोत्पद्यन्ते असंख्येया वोत्पद्यन्ते । अपहारो यथा उत्पल्लोद्देशके । अवगाहना जघन्येनांगुलभ्यासंख्येयभागम् उत्कर्षेण द्वादश योजनानि । एवं यथा—एकेन्द्रियमहायुग्मानां प्रथमोद्देशके तथैव नवरं तिस्रो लेख्याः, देवा नोत्पद्यन्ते । सम्यग्दृष्टयो वा, मिथ्यादृष्टयो वा नो सम्यग् मिथ्यादृष्टयः । ज्ञानिनो वा अज्ञानिनो वा, नो मनोगिनो वचोयोगिनो

વા કાયયોગિનો વા । તે સ્વલ્પ ભદન્ત ! કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ દ્વીન્દ્રિયાઃ કાલતઃ કિયચ્ચિરં શ્વન્તિ ? ગૌતમ ! જઘન્યેન એકં સમયમ્ ઉત્કર્ષેણ સંખ્યેયં કાલમ્ । સ્થિતિર્જઘન્યેનૈકં સમયમ્, ઉત્કર્ષેણ દ્વાદશસંવત્સરાન્ । આહારો નિયમાત્ પઢ-
દિશમ્ । ત્રયઃ સમુદ્ઘાતાઃ । શેષં તથૈવ યાવદનન્તકૃત્વઃ । એવં પોઢશસ્વપિ યુગ્મેષુ તદેવં ભદન્ત ! તદેવં ભદન્ત ! ઇતિ ।

॥ ૫૬ ત્રિંશત્તમે શતકે પ્રથમે દ્વીન્દ્રિયમહાયુગ્મશતકે પ્રથમોદ્દેશકઃ સમાપ્તઃ ૩૬॥

ટીકા—‘કઢજુમ્મકઢજુમ્મ વેદિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ દ્વીન્દ્રિયાઃ સ્વલ્પ ભદન્ત ! કુત ઉત્પચ્ચન્તે કિં નૈરયિકેભ્યો વા તિર્યગ્મ્યોવા મનુષ્યેભ્યો વા દેવેભ્યો વા આગત્યોત્પદ્યન્તે ? ઇતિ પ્રશ્નઃ, ઉત્તરમાહ—‘ઉવવાઓ જહા વકંતીય’

૩૬ વાં શતક કા પ્રારમ્ભ

પ્રથમ દો ઇન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતક પ્રથમ ઉદ્દેશક ।

૩૫ વેં શતક મેં સંખ્યાપદોદ્ધારા એકેન્દ્રિય જીવોં કી પ્રરૂપણા કી ગઈ હૈ । અવ હસ ૩૬ વેં શતક મેં ઉન્હીં સંખ્યાપદોદ્ધારા દ્વીન્દ્રિય જીવોં કી પ્રરૂપણા હોતી હૈ । હસી સમ્બન્ધકો લેકર હસ ૩૬ વેં શતક કા પ્રારમ્ભ હુઆ હૈ ‘કઢજુમ્મકઢજુમ્મ વેદિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ હ.

ટીકાર્થ—‘કઢજુમ્મ કઢજુમ્મ વેદિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ હે ભદન્ત ! કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત દો ઇન્દ્રિય જીવ કિસ સ્થાન વિશેષ સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? કયા વે નૈરયિકોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા તિર્યગ્યોનિકોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા મનુષ્યોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા

છત્રીસમા શતકનો પ્રારંભ—

પ્રથમ બે ઇન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતક નામનો પહેલો ઉદ્દેશો

પાંત્રીસમા શતકમાં સંખ્યાપદોદ્ધારા એકેન્દ્રિય જીવોની પ્રરૂપણા કરવામાં આવી છે, હવે આ છત્રીસમા શતકમાં એજ સંખ્યાપદોદ્ધારા દ્વીન્દ્રિય જીવોની પ્રરૂપણા કરવામાં આવશે આ સંબંધને લઈને આ છત્રીસમા શતકનો પ્રારંભ કરવામાં આવે છે, ‘કઢજુમ્મકઢજુમ્મ વેદિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ ઇ.

ટીકાર્થ—‘કઢજુમ્મકઢજુમ્મ વેદિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ હે ભગવન્ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ બે ઇન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યગ્યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ

ઉપપાતો યથા વ્યુત્ક્રાન્તૌ પ્રજ્ઞાપનાયાઃ પઠ્ઠે પદે તિર્યગ્મ્યો વા મનુષ્યેભ્યો વા આગત્ય સમુત્પદ્યન્તે ઇત્યુત્તરમ્ । ‘પરિમાણં સોલસ વા સંસ્થેજ્જા વા ઉવવજ્જંતિ અસં-સ્થેજ્જા વા ઉવવજ્જંતિ’ પરિમાણં ષોડશ વા સંસ્થાતા વા તે સદૈર્ગોત્પદ્યન્તે અસં-સ્થેયા વા સદૈર્ગોત્પદ્યન્તે ઇતિ । ‘અવહારો જહા ઉપ્પલુદ્દેસ’ અપહારસ્તુ યથા ઉત્પ-લોદ્દેશકે કથિત સ્તથૈવ તત્ત્વ એવાદ્યન્તવ્યઃ । એતસ્યા એવ એકાદશ શતકસ્ય પ્રથ-મોદ્દેશકે । ‘ઓગાહના જહન્નેણં અંગુલસ્સ અસંસ્થેજ્જાદ્ધમાગં’ શરીરાવગાહના દ્વીન્દ્રિયજીવાનાં જઘન્યા અંગુલસ્સાસંસ્થેયમાગપરિવિતા ‘ઉવકોસેણ વારસ-દેવોં મેં સ્થે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હિં ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં ? ઉવ-વાઓ જહા વક્કંતી’ એ મૌનસ ! જેણા મિ પ્રજ્ઞાપના કે છટે વ્યુત્ક્રાન્તિ પદ મેં એલા કરા ગયા હૈં મિ એ તિર્યગ્મ્યોન્દ્રિયોં મેં સ્થે આકર કે અથવા મનુષ્યોં મેં સ્થે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હિં એલા હી કમન યહાં પર કરલેના ચાહિયે । ‘પરિમાણં સોલસ વા, સંસ્થેજ્જા વા અસંસ્થેજ્જા વા ઉવવજ્જંતિ’ એક સમય મેં એ કિતને ઉત્પન્ન હોતે હિં ? તો હશ સમ્બન્ધ મેં એલા કહના ચાહિયે । કિ એ એક સમય મેં ૧૬ અથવા સંસ્થાતા અથવા અસંસ્થાતા ઉત્પન્ન હોતે હિં । ‘અવહારો જહા ઉપ્પલુદ્દેસ’ ઉત્પલ ઉદ્દેશક મેં હસી કે ૧૧ વેં જાતક કે પ્રથમ ઉદ્દેશક મેં અપહાર કે સમ્બન્ધ મેં જો કથન આદ્યા હિં વહી યહાં પર સી સમજાના ચાહિયે । ‘ઓગાહના જહન્નેણં અંગુલસ્સ અસંસ્થેજ્જાદ્ધમાગ’ હન દ્વીન્દ્રિય જીવોં કી શરીરાવ-ગાહના જઘન્ય સ્થે અંગુલ કે અસંસ્થાતા વેં માગ પ્રમ્પણ હોતી હૈ

પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમખામીને કહે છે કે—‘ઉવવાઓ જહા વક્કંતી’ એ ગૌતમ ! પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના વ્યુત્ક્રાન્તિપદમાં જે પ્રમાણે કહ્યું છે એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ સમજવું. અર્થાત્ વ્યુત્ક્રાન્તિ પદમાં એવું કહેલ છે કે—તેઓ તિર્યગ્મ્યો નિકામાંથી આવીને અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, એજ પ્રમાણેવું કથન અહિયાં પણ સમજ લેવું. ‘પરિમાણ સોલસવા સંસ્થેજ્જા વા અસંસ્થેજ્જા વા ઉવવજ્જંતિ’ એક સમયમાં આ કેટલા ઉત્પન્ન થાય છે ? તો આ સંબંધમાં એવું કહેવું જોઈએ કે આ એક સમયમાં ૧૬ સોળ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત ઉત્પન્ન થાય છે. ‘અવહારો જહા ઉપ્પલુદ્દેસ’ ઉત્પલ ઉદ્દેશમાં એટલે કે આ ભગવતી સૂત્રના ૧૧ અગિયારમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશમાં આમના અપહારના સંબંધમાં કહેવામાં આવેલ છે, તે સઘળું કથન અહિયાં પણ સમજવું. ‘ઓગાહના જહન્નેણં અંગુલસ્સ અસંસ્થેજ્જાદ્ધમાગ’ આ બે દ્વીન્દ્રિય યાના જીવોના શરીરની અવગાહના જઘન્ય આગળના અસંખ્યાતમાં ભાગ

જોયનાઈ' ઉત્કર્ષેણ તુ દ્વાદશયોજનપ્રમાણા ભવન્તીતિ । 'एवं जहा एगिंदिय महाजुम्माणं पढमुद्देसए तहेव' एवं प्रकारेण यथा एकेन्द्रियमहायुग्मानां पञ्चत्रिंश-
 क्लतकस्य प्रथमोद्देशके कथिता तथैवेहापि सामग्राऽपि ज्ञातव्या । 'नवरं तिन्नि-
 लेस्साओ देवा न उववज्जंति' नवरं प्रथमोद्देशकापेक्षया इदमेव वैलक्षण्यं यत् प्रथमो
 देशके चतस्रो लेख्याः कथिता इहतु तिस्र एव कृष्णनीलकापोताख्या ज्ञातव्याः इह
 च देवा नोत्पद्यन्ते, अत्र तेजोलेश्याया असद्भावात् 'सम्मदिट्ठी वा मिच्छादिट्ठी वा'
 सम्यग्दृष्टयो वा अपर्याप्तावस्थायां सास्वादन सम्यक्त्वापेक्षया, मिथ्या दृष्टयो

और 'उक्कोसेणं वारसजोयणाइ' उत्कृष्ट से १२ योजन प्रमाण होती
 है । 'एवं जहा एगिंदिय महाजुम्माणं पढमुद्देसए तहेव' इस प्रकार
 जैसा एकेन्द्रिय महायुग्मों के सम्बन्ध में ३५ वे शतक के प्रथम उद्देशक
 में कहा गया है वैसाही वह सब कथन यहां पर भी कहलेना चाहिये ।
 'नवरं तिन्नि लेस्साओ देवा न उववज्जंति' परन्तु उस प्रथम उद्देशक की
 अपेक्षा केवल यहां विशेषता है कि वहां पर चारलेश्याओ का होना
 कहा गया है और यहां तीन लेश्याएं होती हैं ऐसा कहा गया है । वहां
 पर देवों का उनमें एकेन्द्रिय में उत्पाद बतलाया गया है पर यहां वह
 नहीं होता है ऐसा कहा गया है । इसीलिये यहां तेजोलेश्या नहीं होती
 है । 'सम्मदिट्ठी वा मिच्छादिट्ठी वा' ये सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि होते
 हैं । अपर्याप्तावस्था में सास्वादन सम्यक्त्व का इनमें सद्भावपाया
 जाता है इस अपेक्षासे इन्हे सम्यग्दृष्टि कहा गया है । 'नो सम्मामि-

પ્રમાણની હોય છે. અને 'ઉક્કોસેણં વારસ જોયનાઈ' ઉત્કૃષ્ટથી આ ૧૨
 યોજન પ્રમાણની હોય છે. 'एवं जहा एगिंदियमहाजुम्माणं पढमुद्देसए तहेव'
 આ રીતે એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મેના સંબંધમાં જે પ્રમાણે પાંત્રીસમા શતકના
 પહેલા ઉદ્દેશમાં કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન અહીંયાં પણ
 સંપૂર્ણ સમજી લેવું. 'नवरं तिन्नि लेस्साओ देवा न उववज्जंति' પરંતુ પહેલા
 ઉદ્દેશના કથન કરતાં આ કથનમાં કેવળ એજ વિશેષપણું છે કે-ત્યાં લેશ્યાઓ
 ચાર હોવાનું કથન કરવામાં આવેલ છે, તથા અહિયાં ત્રણ લેશ્યાઓ હોય
 છે તેમ કહેલ છે, ત્યાં દેવાનો ઉપપાત આ એકેન્દ્રિયોમાં હોવાનું કહેલ છે.
 પરંતુ અહિયાં દેવાની ઉત્પત્તી થતી નથી તેમ કહેલ છે તેથી આ પ્રકરણમાં
 તેજોલેશ્યાનો સંભવ હોતો નથી. 'सम्मदिट्ठी वा मिच्छादिट्ठी वा' આ સમય
 દૃષ્ટીવાળા અને મિથ્યાદૃષ્ટીવાળા હોય છે. અપર્યાપ્ત અવસ્થામાં સાસ્વાદન
 સમ્યક્ત્વ તેઓમાં હોય છે. તે અપેક્ષાથી તેઓને સમ્યગ્ દૃષ્ટિવાળા કહેલ

વા દ્વીન્દ્રિય જીવાઃ 'નો સમ્મામિચ્છાદિદ્વી' નો સમ્યગ્ મિથ્યાદૃષ્ટયઃ । 'નાણી વા અન્નાણી વા' જ્ઞાનિનો વા અજ્ઞાનિનો વા ભવન્તિ દ્વીન્દ્રિયાઃ । 'નો મળયોગી' નો મનોયોગિનો ભવન્તિ, 'વય જોગી વા, કાયજોગી વા, વચો યોગિનો વા ભવન્તિ કાયયોગિનો વા ભવન્તિ 'તે ણં મંતે ! કહજુમ્મ કહજુમ્મ વેદિયા કાલઓ કેવ ચિરં હોતિ' તે સ્વસ્થ ભદન્ત ! કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ દ્વીન્દ્રિયાઃ જીવાઃ કાલતઃ કિય-ચિરં ભવન્તિ, ઇતિ પ્રશ્નઃ, મળવાનાહ-‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ, ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘જહન્નેણં એકકં સમયં ઉક્કોસેણં સંસેજ્જં કાલં’ જઘન્યેન એકં સમયમ્ ઉત્તરેણ સંસેયં કાલમ્’ ઠિઈ જહન્નેણં એકકં સમયં ઉક્કોસેણં વારસસંવચ્છરાઈ’ સ્થિતિ જઘન્યેન એક સમયમમાણા ઉત્તરેણ તુ દ્વાદશસંવત્સરરૂપા ભવતીતિ । ‘આહારો નિયમં છદ્ધિસિ’ આહારો નિયમાત્ પહ્લિદિશમાશ્રિત્ય પહ્લિદિગ્મ્યઃ ઇત્યર્થઃ દ્વીન્દ્રિ-

ચ્છાદિદ્વી’યે મિથ્યદૃષ્ટિ નહીં હોતે હૈં । ‘નાણી વા અન્નાણી વા’ યે જ્ઞાની અથવા અજ્ઞાની હોતે હૈં । ‘જો મળો જોગી’ યે મનોયોગી નહીં હોતે હૈં । ‘વયજોગી કાયજોગી વા’ વચનયોગી ઓર કાયયોગી હોતે હૈં । ‘તે ણં મંતે ! કહજુમ્મ કહજુમ્મ વેદિયા કાલઓ કેવચ્ચિરં હોતિ’ હે ભદન્ત ! યે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ દ્વીન્દ્રિય જીવ કિતને સમય તક રહતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં-‘ગોયમા ! જહન્નેણં એકક સમયં ઉક્કોસેણં સંસેજ્જં કાલં’ હે ગૌતમ ! યે હસ રૂપ મેં જઘન્ય સે તો એક સમય તક રહતે હૈં ઓર ઉત્કૃષ્ટ સે સંસ્યાત કાલ તક રહતે હૈં । ‘ઠિઈ જહન્નેણં એકકં સમયં ઉક્કોસેણં વારસ સંવચ્છરાઈ’ હનકી સ્થિતિ જઘન્ય સે એક સમય કી ઓર ઉત્કૃષ્ટ સે ૧૨ વર્ષ કી હોતી

છે, ‘નો સમ્મામિચ્છદિદ્વી’ આ સમ્યગ્ મિથ્યાદૃષ્ટીવાળા હોતા નથી. એટલે કે મિથ્યદૃષ્ટીવાળા હોતા નથી. ‘નાણી વા અન્નાણી વા’ આ જ્ઞાની અથવા અજ્ઞાની હોય છે. ‘જો મળોજોગી’ આ મનોયોગવાળા હોતા નથી. ‘વયજોગી કાયજોગી વા’ વચન યોગવાળા અને કાય યોગવાળા હોય છે. ‘તેણં મંતે ! કહજુમ્મ કહજુમ્મ વેદિયા કાલઓ કેવચ્ચિરં હોતિ’ હે ભગવન્ આ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એ દ્વીન્દ્રિય-વાળા જીવો કે જાની અપેક્ષાથી કેટલા સમય સુધી રહે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-‘ગોયમા ! જહન્નેણં એકકં સમયં ઉક્કોસેણં સંસેજ્જં કાલં’ હે ગૌતમ ! આ રૂપથી તેઓ જઘન્યથી તો એક સમય સુધી અને ઉત્કૃષ્ટથી સંસ્યાત કાળ સુધી રહે છે. ‘ઠિઈ જહન્નેણં એકકં સમયં ઉક્કોસેણં વારસ સંવચ્છરાઈ’ તેઓની સ્થિતિ જઘન્યથી એક સમયની અને ઉત્કૃષ્ટથી આ ૧૨ વર્ષની હોય છે. ‘આહારો નિયમં છદ્ધિમિ’ તેઓ આહાર નિયમથી

યાનાં લોકમધ્યે એવ સ્થિતત્વાત્ પ૨ દિગ્ભ્યો આહારો જાયતે । ‘તિન્નિ સમુઘ્વાયા’ ત્રયઃ વેદના કપાય મારણાન્તિકાઃ સમુદ્ઘાતા ભવન્તીતિ । ‘સેસં તદેવ જાવ અણંત ત્વુત્તો’ શેપં સમુદ્ઘાતાવિરિક્તં સર્વં ચાવત્ દીન્દ્રિયા અસકૃત્ અથવા અનન્તકૃત્વઃ ઉત્પન્નપૂર્વાઃ એતત્સર્વં પશ્ચત્રિંશત્તમશતકીય મથમોદેશકવદેવ જ્ઞાતવ્યમ્, ‘એવં સોલસસુ વિ જુમ્મેસુ’ એવમનેનૈવ પ્રકારેણ પોહશશ્વતિઃ યુગ્મેષુ કૃતયુગ્મકૃતયુગ્માદારમ્ય કલ્યોજ કલ્યોજાન્ત મહાયુગ્મેષ્વપિ ઉપપાતાદિકં સર્વં જ્ઞાતવ્યમિતિ । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! તિ’ તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ઇતિ ॥

ઇતિ શ્રી વિશ્વવિખ્યાત-જગદ્વલ્લભ-પ્રસિદ્ધાચક-પશ્ચદશભાષા-
કલિતલલિતકલાપાલાપકમ્વિશુદ્ધગદ્યપદ્યાનૈકગ્રન્થનિર્માપક,
વાદિમાનમર્દક-શ્રીગાદ્ગુરુપતિ કોલ્હાપુરરાજમદત્ત-
‘જૈનાચાર્ય’ પદભૂષિત — કોલ્હાપુરરાજગુરુ-
વાલ્મજીચારિ-જૈનાચાર્ય — જૈનધર્મદિવાકર
પૂજ્ય શ્રી ઘાંસીલાલવ્રતિવિરચિતાયાં શ્રી
“મગવતીસૂત્રસ્ય” પ્રમેયચન્દ્રિકાસ્વાયાં
વ્યાખ્યાયામ્ પટ્ટત્રિંશતમે શતકે પ્રથમે
દીન્દ્રિયમહાયુગ્મશત મથમોદેશકઃ
સમાપ્તઃ ૧૩૫૧૧૧।

હૈ । ‘આહારો નિયમં છદિસિ’ એ આહાર નિયમ સે છહોં દિશાઓં સે ગ્રહણ કરતે હૈં । કયોં તિ યે લોક કે મધ્ય સે તી સ્થિત રહતે હૈં । ‘તિન્નિ સમુઘ્વાય’ વેદના કપાય ઔર મારણાન્તિક એ ત્રીન સમુદ્ઘાત इन કે હોતે હૈં । ‘સેસં તદેવ જાવ અણંતત્વુત્તો’ પાકીં કા ઔર સવ કથન ૩૬ વેં શતક કે પ્રથમોદેશક કે જૈસા હી હૈ ચાવત્ અનન્તવાર હસ રુપ મેં ઉત્પન્ન હો ચુકે હૈં । યહાં તક કા યહાં કહ લેનાં ચાહિયે । ‘એવં સોલસસુ વિ જુમ્મેસુ’ હસીપ્રકાર સે ૧૬ યુગ્મોં મેં કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સે લેકર કલ્યોજ કલ્યોજ તક કે મહાયુગ્મોં મેં શી ઉપપાત આદિ કા

છએદિશાઓમાંથી ગ્રહણ કરે છે. કેમ કે તેઓ લોકની મધ્યમાજ સ્થિત રહે છે. ‘તિન્નિ સમુઘ્વાયા’ વેદના, કપાય, અને મારણાન્તિક આ ત્રણ સમુદ્ઘાતો તેઓને હોય છે. ‘સેસં તદેવ જાવ અણંતત્વુત્તો’ પાકીનું ધીનું સધણું કથન ૩૫ પાંત્રીસમા શતકના પહેલા ઉદેશમાં કહ્યા પ્રમાણે સમજવું ચાવત તેઓ અનંતવાર આ રૂપે ઉત્પન્ન થઈ ચુકલ છે, આ કથન સુધીનું કથન અહિયાં સમજવું. ‘એવં સોલસસુ વિ જુમ્મેસુ’ આજ પ્રમાણે સોળ ૧૬ યુગ્મોમાં કૃતયુગ્મ યોજથી લઈને કલ્યોજ કલ્યોજ સુધીના મહાયુગ્મોમાં પણ ઉપપાત વિગેરેનું કથન સમજી લેવું.

कथन कर लेना चाहिये । 'सेव' भंते ! सेव' भंते ! त्ति' हे भदन्त जैसा आपने यह कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही २ । इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को चन्दना की और नमस्कार किया चन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥

जैनाचार्य जैनधर्मद्विवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके छत्तीसवें शतक का द्वीन्द्रिय महायुगम शतक में प्रथम उद्देशक समाप्त ॥३६-१-१॥

'सेव' भंते ! सेव' भंते ! त्ति' हे भगवन् आप देवानुप्रिये ने प्रमाणे कथन क्युं' छे, ते सधणुं कथन सर्वथा सत्य छे. हे भगवन् आ विषयमां आप देवानुप्रिये ने कथन क्युं' छे, ते सधणुं कथन सत्य न छे आ प्रमाणे कहीने गौतमस्वामीछे प्रभुश्रीने वंदना करी नमस्कार कयां वंदना नमस्कार करीने ते पछी संयम अने तपथी पोताना आत्माने भावित करता थका पोताना स्थान पर विराजमान थया. ॥सू०१॥

जैनाचार्य जैनधर्मद्विवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराजकृत 'भगवतीसूत्र'नी प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याना छत्तीसवा शतकना द्वीन्द्रिय महायुगम शतकमां पडेले उद्देशो समाप्त ॥३६-१-१॥



॥२-११ उद्देशगा

मूलम्—पढमसमयकडजुम्मकडजुम्म वेदियाणं भंते !
 कओ उववज्जंति एवं जहा एगिंदिय महाजुम्माणं पढमसमय
 उद्देसए, दस नाणत्ताइं ताइं चेव दस इह वि । एकारसमं इमं
 नाणत्तं नो मणजोगी नो वयजोगी कायजोगी सेसं जहा वेदि-
 याणं चेव पढमुद्देसए । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति

एवं एएवि जहा एगिंदिय महाजुम्मेसु एकारस उद्देसगा
 तहेव भाणियव्वा । नवरं चउत्थ छट्ठ अट्ठमदसमेसु सम्मत्त
 नाणाणि न भवंति । जहेव एगिंदिएसु पढमो तइओ पंचमो
 य एकगमा सेसा अट्ठ एकगमा ॥

छत्तीसइमे सए पढमं वेदियमहाजुम्मसयं समत्तं ॥३६-१॥

छाया—प्रथमसमयकृतयुग्मकृतयुग्म द्वीन्द्रियाः खलु भदन्त कुत उत्पद्यन्ते ?
 एवं यथा एकेन्द्रियमहायुग्मानां प्रथमसमयोद्देशके । दशनानात्त्वानि तान्येव दश
 इहापि । एकादशमिदं नानात्वम्—नो मनोयोगिनो नो वचोयोगिनः, काययोगिनः
 शेषं यथा द्वीन्द्रियाणामेव प्रथमोद्देशके । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ।
 एवमेतेऽपि यथा एकेन्द्रियमहायुग्मेषु एकादशोद्देशकास्तथैव भणितव्या । नवरं
 चतुर्थं षष्ठं अष्टमदशमेसु सम्यक्त्वज्ञाने न भवतः । यथैवैकेन्द्रियेषु प्रथमं तृतीयः
 चतुर्थः षष्ठः अष्टमदशमेसु सम्यक्त्वज्ञाने न भवतः । यथैवैकेन्द्रियेषु प्रथमं तृतीयः
 चतुर्थः षष्ठः अष्टमदशमेसु सम्यक्त्वज्ञाने न भवतः । यथैवैकेन्द्रियेषु प्रथमं तृतीयः

पट्त्रिंशत्तमे शतके प्रथमं द्वीन्द्रियमहायुग्मतं समाप्तम् ३६।१॥

टीका—‘पढमसमयकडजुम्मकडजुम्म वेदियाणं भंते कओ उववज्जंति’
 प्रथम समय कृतयुग्म कृतयुग्म द्वीन्द्रियाः खलु भदन्त ! जीवाः कुत उत्पद्यन्ते किं

शतक ३६ उद्देशक २-११

‘पढमसमय कडजुम्म कडजुम्म वेदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति’
 इत्यादि सूत्र ॥१॥

टीकार्थ—हे भदन्त ! प्रथम समयोत्पन्न कृतयुग्म कृतयुग्म राशि
 रूप दो द्वीन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ?

गी. उद्देशाधी अगियारमा सुधीना उद्देशाधोना प्रारंभ—

‘पढमसमय कडजुम्म कडजुम्म वेदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति’ छं.

टीकार्थ—हे भगवन प्रथम समयमा उत्पन्न थयेला कृतयुग्म कृतयुग्म
 राशि.वा.जे द्वीन्द्रिय लोको क्या स्थान विशेषधी आवीने उत्पन्न थाय छे ?

નૈરયિકેભ્યો યાવદેવેભ્યઃ ? इति प्रश्नः, उत्तरमाह-अतिदेशद्वारेण 'एव जहा-
एगिंदिय महाजुम्माणं पढमसमय उद्देशए' एवं यथा एकेन्द्रिय महायुग्मानां प्रथम
समयोद्देशके कथितं तथैव प्रथमसमयद्वोन्द्रियाणामपि उपपातादिकमवगन्तव्यम्
'दसणाणत्ताइं ताइं चेव दस इह वि' । एकेन्द्रियमहायुग्मानां प्रथमोद्देशो यानि
दश नानात्वानि तान्येव दशापि नानात्वानि इहापि ज्ञातव्यानि । अत्र तु 'एका-
रसमं इमं नाणत्तं' एकादशमिदं नानात्वम् अत्र प्रथमोद्देशद्वोन्द्रियस्यौघिकापेक्षया
'नो मणजोगी नो वयजोगी कायजोगी' नो मनोयोगिनः प्रथमसमयद्वोन्द्रिया

કયાવે નૈરયિકો મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા તિર્યગ્યોનિકો
મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા મનુષ્યોં મેં સે આકર કે
ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા દેવોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અતિ-
દશ દ્વારા હસકા ઉત્તર દેતે હુએ પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામી સે કહતે હૈં-
'એવં જહા એગિંદિયમહાજુમ્માણં પઢમસમયઉદ્દેસએ' હે ગૌતમ ! જૈસા
કથન પ્રથમ સમયોત્પન્ન પ્રથમ કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત એકેન્દ્રિય
જીવોં કે ઉત્પાદ આદિ કે સમ્બન્ધ મેં ક્રિયા ગયા હૈ-ઉસી પ્રકાર કા
કથન પ્રથમ સમયોત્પન્ન દ્વોન્દ્રિય જીવોં કે ઉત્પાદ આદિ કે સમ્બન્ધ મેં
ભી જાનના ચાહિયે । 'દસણાણત્તાઈં તાઈં' ચેવ દસ ઇહ વિ' એકેન્દ્રિય
મહાયુગ્મોં કે પ્રથમ ઉદ્દેશક મેં જો ભિન્નતાએં પ્રકટ કી ગઈ હૈં' વે હી દશ
ભિન્નતાએં યહાં પર પર ભી પ્રકટ કર લેની ચાહિયે । તથા યહાં પર એક
૧૧ વીં ભિન્નતા હૈ જો 'નો મણજોગી નો વયજોગી કાયજોગી' હસ

શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યગોમાંથી
આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ?
કે દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર અતિદેશદ્વારા
આપતાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-‘એવં જહા એગિંદિયમહાજુમ્મા
ણં પઢમસમયઉદ્દેસએ’ હે ગૌતમ ! પહેલા સમયમાં ઉત્પન્ન થનારા કૃતયુગ્મ
કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોના ઉત્પાદ વિગેરેના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું
કથન કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રકારનું કથન પ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન
થવાવાળા એ દ્વોન્દ્રિય જીવોના ઉત્પાદ વિગેરેના સંબંધમાં પણ સમજવું. એઈ એ
'દસ નોણત્તાઈં તાઈં' ચેવ દસ ઇહ વિ' એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મોના પ્રથમ ઉદ્દેશમાં
દસ પ્રકારનું ભિન્નપણું પ્રગટ કરવામાં આવેલ છે. એજ પ્રકારથી દસ રીતનું
ભિન્નપણું અહિંયાં પણ સમજવું તથા અહિંયાં એક અગિયાર ૧૧મું ભિન્નપણું
આવે છે, તે 'નો મણજોગી નો વયજોગી કાયજોગી' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ કર-

નો વચોયોગિનઃ કિન્તુ કાયયોગિનઃ । ‘સેસં જહા વેંદિયાણં ચેવ પદ્મુદેસણં’
જોષં-કથિતવ્યતિરિક્તં સર્વં યથા દ્વીન્દ્રિયાણામેવ પ્રથમોદેશકે કથિતં તથેવ
દ્વિતીયાદ્યેકાદશાન્તોદેશકેષુ જ્ઞાતવ્યમ્, ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ તદેવં
મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ ।

સૂત્ર દ્વારા પ્રકટ કી ગર્હ હૈ કિ પ્રથમ સ્વયયોત્પન્ન દો ઇન્દ્રિયજીવ
મનોયોગી તો હોતે હી નહીં હૈ પરન્તુ ન વચનયોગી હોને કા પ્રસન્ન
પ્રાપ્ત હોતા હૈ-સો હસકે લિયે કહા ગયા હૈ કિ વે વચનયોગી भी नहीं
હોતે હૈ ક્યોં કિ અપર્યાપ્ત અવસ્થા મેં વચનયોગ નહીં હોતા હૈ । કેવલ યે
કાયયોગી હી હોતે હૈ । ‘સેસં જહા વેંદિયાણં ચેવ પદ્મુદેસણં’ હસકે
અતિરિક્ત ઓર સવ કથન જૈસા દ્વીન્દ્રિયોં કા પ્રથમ ઉદેશક મેં કહા
હૈ વૈસા હી વહ જવ કથન દ્વિતીય સ્ત્રે લેકર ૧૧ વે ઉદેશક તક કે
ઉદેશકોં મેં જાનનાં ચાહિયે । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હૈ મદન્ત !
જૈસા આપને યહ કહા હૈ વહ સવ સર્વથા સત્ય હી હૈ ૨ । હસ પ્રકાર
કહકર ગૌતમને પ્રભુશ્રી કો વન્દના કી ઓર નમસ્કાર કિયા વન્દના
નમસ્કાર કર ફિર વે સંયમ ઓર તપ સે આત્માકો ભાવિત કરતે હુણ
અપને સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે ।

વામાં આવેલ છે કે-પ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન થયેલા બે ઇન્દ્રિય જીવો મનોયોગવાળા
તો હોતા નથી. તથા તેઓને વચનયોગીપણાનો પ્રસંગ પણ પ્રાપ્ત થતો નથી.
તે માટે કહેવામાં આવેલ છે કે-તેઓ વચનયોગી પણ હોના નથી. કેમ કે
અપર્યાપ્ત અવસ્થામાં વચનયોગ હોતો નથી કેવળ તેઓ કાયયોગી જ હોય
છે. ‘સેસં જહા વેંદિયાણં ચેવ પદ્મુદેસણં’ આ કથન શિવાય બાકીનું સઘળું
કથન જેરીતે બે ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં પડેલા ઉદેશમાં કહેવામાં
આવેલ છે. એજ પ્રમાણેનું સઘળું કથન બીજા ઉદેશથી લઇને અગીયારમા
ઉદેશાઓ સુધીના ઉદેશાઓમાં સમજવું.

“સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ આપે આ વિષયના સંબંધમાં
જે પ્રમાણેનું કથન કયું છે, તે સઘળું કથન સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ
દેવાનુપ્રિયનું આ વિષય સંબંધમાં કહેલ સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ
પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના
નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત
કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ”

‘एवं एएचि जहा एगिदियमहाजुग्मेसु एकारस उद्देशगा तहेव भणियच्चा’ एवमेतैऽपि यथा एकेन्द्रियमहायुगमशतेषु एकादशोद्देशकाः कथिता स्तथैवेहापि तएव एकादशोद्देशकाः पञ्चत्रिंशच्छतकीय प्रथमशते वर्त्तमाना, भणितव्याः, आला पकपकारश्च पूर्ववदेव ऊहनीयः । ‘नवरं चउत्थ छठ अट्टम दसमेसु सम्मत्त नाणाणि न भवंति’ नवरमत्र चतुर्थ-षष्ठा-ष्टम-दशमेषु, तत्र चतुर्थे-चरमसमयकृतयुगमकृत-युगोद्देशके ४, षष्ठे प्रथम प्रथम समय कृतयुगमकृतयुगोद्देशके ६, अष्टमे-प्रथम चरमसमय कृतयुगमकृतयुगोद्देशके ८, दशमे-चरम चरम समय कृतयुगमकृतयुगोद्देशके १०, एषु चतुर्षोद्देशकेषु सम्यक्त्वं ज्ञानं च न भवति अतस्ते न वक्तव्ये ‘जहेव एगिदिएसु पढयो ताओ पंचमो च एकादशो’ यथा-एकेन्द्रियेषु पञ्चत्रिंश

‘एवं एए चि जहा एगिदिय महाजुग्मेसु एकारस उद्देशगा तहेव भणियच्चा’ जिस रीति से एकेन्द्रिय महायुगम शतों में ११ उद्देशक कहे गये हैं उसी प्रकार से ३५ वें शतक के प्रथम शत में वर्त्तमान वे ११ उद्देशक यहाँ पर भी कहलेना चाहिये । इस सम्बन्ध में आलाप प्रकार अपने आप पूर्व के जैसे बना लेना चाहिये । ‘नवरं चउत्थ छठ अट्टम दसमेसु सम्मत्त नाणाणि न भवंति’ परन्तु इन ११ उद्देशकों में से चरम समय कृतयुगम कृतयुगम उद्देशक में (चतुर्थोद्देशक में) प्रथम प्रथम समय कृतयुगम कृतयुगम उद्देशक में (छठे उद्देशक में) प्रथम चरम चरम कृतयुगम कृतयुगम उद्देशक में (८ वें उद्देशक में) और चरम चरम समय कृतयुगम कृतयुगम उद्देशक में (१० वें उद्देशक में) इन चार उद्देशकों में सम्यक्त्व और ज्ञान नहीं होते हैं अतः वे वहाँ नहीं कहना चाहिये । ‘जहेव एगिदिएसु पढयो ताओ पंचमो च

‘एव एएचि जहा एगिदिय महाजुग्मेसु एकारस उद्देशगा तहेव भणियच्चा’ जे प्रमाणे ओकेन्द्रिय महायुगम शतकोंमां ११ अगियार उद्देशाओ कडेवांमां आवेल छे ओज प्रमाणे ३५ पांत्रीसमा शतकना पडेलाशतकमां कडेल ते ११ अगियार उद्देशाओ कडेवा ओउओ. आ सणंधमां आलापनो प्रकार पडेला कहा प्रमाणे पोते स्वयं णनावीने समञ्ज लेवो. ‘नवरं चउत्थ छठ, अट्टम दसमेसु सम्मत्त नाणाणि न भवंति’ परंतु आ ११ अगियार उद्देशाओमाथी अरम समय कृतयुगम, कृतयुगम, उद्देशांमां ओटले के ओथा उद्देशांमा प्रथम प्रथम समय कृतयुगम कृतयुगम उद्देशांमां ओटले के ६ छहा उद्देशांमा प्रथम समय कृतयुगम कृतयुगम उद्देशांमां ओटले के-८ आठमा उद्देशांमा अने अरम अरम समय कृतयुगम कृतयुगम उद्देशांमां ओटले के-१० दसमा उद्देशांमा आ आदे उद्देशांमां

ત્તમશતકેષુ પ્રથમઃ તૃતીયઃ પञ્ચમઃ તત્ર પ્રથમઃ, કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મરૂપઃ તૃતીયઃ અપ્રથમસમયકઃ, પञ્ચમઃ ચરમસમયકઃ એકગમાઃ સદ્શાલાપકાઃ કથિતાઃ તથાઽપિ તે સદ્શાલાપકા એવં । ‘સેસા અદ્વ એકગમા’ શેષા અષ્ઠૌ દ્વિતીય-ચતુર્થ-ષઠ-સપ્તમા-ઽષ્ટમ નવમ-દશમૈ-વાદશરૂપા ઉદ્દેશકા એકગમાઃ-સદ્શાલાપકાઃ સન્તિ, તત્ર-દ્વિતીયઃ પ્રથમસમયકઃ, ૧, ચતુર્થઃ ચરમસમયકઃ ૨, ષઠઃ પ્રથમ-પ્રથમસમયકઃ ૩, સપ્તમઃ પ્રથમાપ્રથમસમયકઃ ૪, અષ્ટમઃ પ્રથમચરમસમયકઃ ૫,

એકગમા’ ૩૫ વેં શતક મેં પ્રથમ, તૃતીય, ઓર પંચમ યે ઉદ્દેશક સમાન આલાપકવાલે કહે ગયે હૈં-વૈસે હી વે સમાન આલાપવાલે યહાં પર મી કહે ગયે હૈં કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ પ્રથમ ઉદ્દેશક હૈં । અપ્રથમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ તૃતીય ઉદ્દેશક કહે ઓર ચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ પાંચવાં ઉદ્દેશક હૈં ‘સેસા અદ્વ એકગમા’ તથા વાકી કે આઠ ઉદ્દેશક-દ્વિતીય ઉદ્દેશક, ચતુર્થ ઉદ્દેશક, ષઠ ઉદ્દેશક, સપ્તમ, ઉદ્દેશક, અષ્ટમ ઉદ્દેશક નૌવાં ઉદ્દેશક દશવાં ઉદ્દેશક ઓર ગ્યારહવાં ઉદ્દેશક યે આઠ ઉદ્દેશક એક સરીલે આલાપકવાલે કહે ગયે હૈં । પ્રથમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ દ્વિતીય ઉદ્દેશક હૈં । ચરમ સમય કૃતયુગ્મ તત્કયુગ્મ રૂપ ચતુર્થ ઉદ્દેશક હૈં । પ્રથમ પ્રથમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ છઠા ઉદ્દેશક હૈં । પ્રથમાપ્રથમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ સાતવાં ઉદ્દેશક હૈં । પ્રથમ ચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ આઠવાં ઉદ્દેશક હૈં । પ્રથમા ચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ ૯ વાં ઉદ્દેશક હૈં । ચરમ

સમ્યક્ત્વ અને જ્ઞાન થતા નથી. તેથી ત્યાં તેતુ’ કથન કરવું ન લેઈએ. ‘જહેવ ઇગિદિણસુ પઢમો તદ્દઓ પંચમોય એકગમા’ ઉપ પાંત્રીસમા શતકના પહેલા, ત્રીજા અને પાંચમા આ ઉદ્દેશાઓ સરખા આલાપકોવાળા જ કહેલ છે એજ પ્રમાણે અહિંયાં પણ તે સમાન પ્રકારવાળા જ કહ્યા છે. કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ પહેલો ઉદ્દેશો છે, અપ્રથમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૩૫ ત્રીજો ઉદ્દેશો કહેલ છે, અને અચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૩૫ પાંચમો ઉદ્દેશો છે તથા બાકીના આઠ ઉદ્દેશાઓ એટલે કે બીજો ઉદ્દેશો, ચોથો ઉદ્દેશો, સાતમો ઉદ્દેશો, આઠમો ઉદ્દેશો, નવમો ઉદ્દેશો, દશમો ઉદ્દેશો અને અગિયારમો ઉદ્દેશો આ આઠ ઉદ્દેશાઓ એક સરખા આલાપકોવાળાકહેલ છે. પ્રથમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૩૫ બીજો ઉદ્દેશો છે. ચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૩૫ ચોથો ઉદ્દેશો કહેલ છે. પ્રથમ પ્રથમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૩૫ છઠો ઉદ્દેશો કહેલ છે. પ્રથમ અપ્રથમ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૩૫ સાતમો ઉદ્દેશો કહેલ છે. પ્રથમ ચરમ સમય

નવમઃ પ્રથમાઽચરમસમયકઃ ૬, દશમઃ ચરમચરમસમયકઃ ૭, એકાદશઃ ચરમા-
ચરમસમયકઃ ૮, એતૈ અઠ્ઠૌ ઉદ્દેશકાઃ સમાનાલાપકાઃ સન્તીતિ ભાવઃ ॥

॥ ઇતિ શ્રી વિશ્વવિખ્યાત-જગદ્બલ્લભ-પ્રસિદ્ધવાચક-પશ્ચદશભાષા-
કલિતલલિતકલાપાલાપકપ્રવિશ્વદ્રગધપદ્યનૈકગ્રન્થનિર્માપક,
વાદિમાનમર્દક-શ્રીશાહુચ્છત્રપતિ કોલ્હાપુરરાજપદત્ત-
'જૈનાચાર્ય' પદભૂષિત-કોલ્હાપુરરાજગુરુ-
બાલવ્રહ્મચારિ — જૈનાચાર્ય — જૈનધર્મદિવાકર
-પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલવ્રતિવિરચિતાયાં શ્રી "ભગ-
વતીસૂત્રસ્ય" પ્રમેયચન્દ્રિકાખ્યાયાં
વ્યાખ્યાયાં ષટ્ત્રિંશત્તમે શતકે પ્રથમે
દ્વિન્દ્રિયમહાયુગ્મશતં સમાપ્તમ્ ॥૩૬।૧॥

ચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ દસવાં ઉદ્દેશક હૈં ઓર ચરમ ચરમ
સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ ગ્યારહવાં ઉદ્દેશક હૈં । ચે આઠોં ઉદ્દેશક
સમાન આલાપક બાલે હૈં ।

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજીમહારાજકૃત
“ભગવતીસૂત્ર” કી પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાકે છત્રીસવેં શતક કા
પ્રથમ દ્વિન્દ્રિય મહાયુગ્મ શત સમાપ્ત ॥૩૬-૧॥

કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૩૫ આઠમે ઉદ્દેશે કહેલ છે. પ્રથમ અચરમ સમય કૃતયુગ્મ
કૃતયુગ્મ ૩૫ નવમે ઉદ્દેશે કહેલ છે. ચરમ ચરમ સમય કૃ-યુગ્મ કૃતયુગ્મ
૩૫ દસમે ઉદ્દેશે કહ્યો છે. અને ચરમ અચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૩૫
અગીયારમે ઉદ્દેશે છે. આ આઠ-ઉદ્દેશાઓ સરખા આલાપ પ્રકારવાળા છે.
જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર શ્રી પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત ‘ભગવતીસૂત્ર’ની
પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના છત્રીસમા શતકનું પ્રથમ,
દિન્દ્રીય મહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત ॥૩૬-૧॥



॥२-४ वेदियमहाजुम्मसयाइं ॥

मूलम्—कणहलेस्स कडजुम्मकडजुम्म वेदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति ? एवं चेव । कणहलेस्सेसु वि एक्कारस उद्देसग-
संजुत्तं सयं । नवरं लेस्सा संचिट्ठणा ठिई जहा एगिंदिय
कणहलेस्साणं ॥३६-२॥

एवं नीललेस्सेहि वि सयं ॥३६-३॥ एवं काउलेस्सेहि वि
सयं चउत्थं समत्तं ॥३६-४॥

छत्तीसइमे सए।२।३।४। वेदियमहाजुम्मसयाइं समत्ताइं

छाया—कृष्णलेश्य कृतयुग्म कृतयुग्म द्वीन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्प-
द्यन्ते ? । एवमेव कृष्णलेश्येष्वपि एकादशोद्देशकसंयुक्तं शतम् । नवरं लेश्यासं
स्थितिः, स्थितिर्यथा एकेन्द्रियकृष्णलेश्यानाम् ॥३-२॥

एवं नीललेश्यैरपि शतम् ॥३६-३॥ एवं कापोतलेश्यैरपि शतं चतुर्थं
समाप्तम् ॥३६-४॥

षट्त्रिंशत्तमे शतके द्वितीयतृतीयचतुर्थानि द्वीन्द्रियमहायुग्मशतानि समाप्तानि ॥

टीका—‘कणहलेस्स कडजुम्मकडजुम्म वेदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति,
कृष्णलेश्य कृतयुग्मकृतयुग्मद्वीन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो

शतक ३६-२-४ दो इन्द्रिय महायुग्मशत ।

‘कणहलेस्स कडजुम्म कडजुम्म वेदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति’
इत्यादि सूत्र—

टीकार्थ—‘कणहलेस्स कडजुम्म कडजुम्म वेदियाणं भंते ! कओ
उववज्जंति’ हे भदन्त ! कृष्णलेश्यावाले कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित
द्वीन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या
वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा तिर्यग्योनिकों
में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा मनुष्यों में से आकर के

भीलथी योथा सुधीना जेन्द्रिय महायुग्म शतक

‘कणहलेस्स कडजुम्म कडजुम्म वेदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति’ छं.

टीकार्थ—‘कणहलेस्स कडजुम्म कडजुम्म वेदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति’
छे लगवन् कृष्णलेश्यावाणा कृतयुग्म कृतयुग्म राशिवाणा जेन्द्रिय जेवो
क्या स्थान विशेषथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? शुं तेओ नैरयिकेमाथी
आवीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा तिर्य्ययोनिक्केमाथी आवीने उत्पन्न थाय छे ?

યાવદેવેભ્યો વેતિ પ્રશ્નઃ । ઉત્તરમાહ-‘એવં’ ઇત્યાદિ । ‘એવં’ એવં એવમેવ એવમ્
એતચ્છતકીય કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ દ્વીન્દ્રિયાલ્પપ્રથમશતકવદેવ ‘કળહલેસ્સેસુ એકા-
રસ ઉદેસગ સંજુતં સયં’ કૃષ્ણલેશ્યેત્વપિ ઔધિકપ્રથમસમયાપ્રથમસમયાધેકા-
દશોદેશકસંયુક્ત શતં મણિતવ્યમ્ । નવરં લેસ્સા સંચિદ્વળા ઠિર્ઠે જહા એગિદિય
કળહલેસ્સાણં’ નવર મેતચ્છતકીયપ્રથમશતાપેક્ષયા ઇદં વૈલક્ષણ્ય યદત્ર લેશ્યા
સંસ્થાનં સ્થિતિશ્ચ યથા એકેન્દ્રિયકૃષ્ણલેશ્યાનાં કથિતા તથૈવ જ્ઞાતવ્યા ॥

પટ્ટત્રિશત્તમે શતકે દ્વિતીયં દ્વીન્દ્રિયમહાયુગ્મ શતં સમાપ્તમ્ ॥૩૬-૨॥

‘એવં નીલલેસ્સેહિ વિ સયં’ એવં યથા કૃષ્ણલેશ્યૈરેકાદશોદેશકસંયુક્તં દ્વિતીયં

ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા દેવોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ! હસ
પ્રશ્ન કે ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં-‘એવં એવં’ હે ગૌતમ ! જૈવા હસ
સમ્બન્ધ મેં હસી શતક મેં કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ દ્વીન્દ્રિય નામક ઔધિક,
પ્રથમ શતક મેં કહા ગયા હૈં વૈસા હી શતક કૃષ્ણલેશ્યાવાલે દ્વીન્દ્રિય
જીવો કે સમ્બન્ધ મેં ઓ ઔધિક પ્રથમ સમય, અપ્રથમ સમય આદિ
૧૧ ઉદેશકોં સે યુક્ત યહાં પર ઓ કહલેનાં ચાહિયે । ‘નવરં’ લેસ્સા
સંચિદ્વળા ઠિર્ઠે જહા એગિદિય કળહલેસ્સાણં’ પરંતુ હસ શતક કે પ્રથમ
શતકી અપેક્ષા યહાં પર એસી વિલક્ષણતા હૈં કિ યહાં લેશ્યા સંચિદ્વળા
સ્થિતિકાલ ઓર આયુષ્ય સ્થિતિ યે કૃષ્ણલેશ્યાવાલે એકેન્દ્રિય જીવોં કે
જેસે હી કહે ગયે હૈં ।

દ્વિતીય દ્વીન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત ॥૩૬-૨॥

‘એવં નીલલેસ્સેહિ વિ સયં’ જૈસા ૧૧ ઉદેશકોં સે યુક્ત શતક

અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન
થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-‘એવં એવં’
હે ગૌતમ ! આ સંબંધમાં આ શતકમાં કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ દ્વીન્દ્રિય નામનું
ઔધિક-પહેલું શતક કહેલ છે, એજ પ્રમાણેનું શતક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એ
ઈન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં પણ ઔધિક પ્રથમ સમય, અપ્રથમ સમય
વિગેરે ૧૧ અગિયાર ઉદેશઓવાળું શતક અહિંયાં પણ સમજવું ‘નવરં’
લેસ્સા સંચિદ્વળાઠિર્ઠે જહા એગિદિયકળહલેસ્સાણં’ પરંતુ આ શતકમાં પહેલા
શતકના કથન કરતાં એવું વિલક્ષણ પણ છે કે-અહિંયાં લેશ્યા સંચિદ્વળા
સ્થિતિકાલ અને આયુષ્ય સ્થિતિ આ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય જીવોની જેમ
જ કહેલ છે.

॥ખીલુ દ્વીન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત ॥૩૬-૨॥

‘એવં નીલલેસ્સેહિ વિ સયં’ અગિયાર ઉદેશોવાળું શતક કૃષ્ણલેશ્યા-

शतं निर्मितं तथैव नीललेश्यैरपि शतं नीललेश्यापदमन्तर्भाव्य शतं निर्मितव्यम् ॥

पट्टत्रिंशत्तमशतके तृतीयं द्वीन्द्रियमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥३६-३॥

‘एवं काउलेस्सेहि वि’ एवमेव कापोतलेश्यैरपि शतं भणितव्यम्,

पट्टत्रिंशत्तमे शतके चतुर्थं द्वीन्द्रियमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥३६-४॥

अह ५-१२ बेदियमहाजुम्मसयाइ’

मूलम्-भवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्म बेदियाणं भन्ते ! एवं
भवसिद्धियसयापि चत्तारि तेणैव पुव्व गमएणां नेयव्वा । नवरं
सव्वे पाणा० णो इणट्ठे समट्ठे । सेसं तहेव ओहियसयाणि
चत्तारि । सेवं भन्ते ! सेवं भन्ते ! त्ति ॥३६-५-८॥

जहा भवसिद्धिय सयाणि चत्तारि एवं अभवसिद्धिय
सयाणि चत्तारि । नवरं सम्मत्तं नाणाणि नत्थि सेसं तं चेव ।

कृष्णलेश्यावालों के सम्बन्ध में कहा गया है वैसा ही शत ग्यारह
उद्देशकों से युक्त नीललेश्यावाले द्विन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में भी
कहलेना चाहिये । सिर्फ कृष्णलेश्यापद के स्थान में नीललेश्यापद लगा-
कर आलापक बना लेना चाहिये । इस प्रकार से नीललेश्यावाले
द्विन्द्रियों के सम्बन्ध में ११ उद्देशकों वाला एक तृतीय शत बन जाता है ।

तृतीय शत समाप्त ॥३६-३॥

‘एवं काउलेस्सेहि विसम’ इसी प्रकार से ११ उद्देशकों से युक्त कापोत-
लेश्यावाले द्विन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में चतुर्थ शत बना लेना चाहिये ।

चौथा महायुग्म शत समाप्त ॥३६-४॥

पाणाओना संभंधमां जे प्रमाणेनु कडेवामा आवेल छे ओज प्रमाणेनुं शतक
अग्यार उद्देशाओवाणुं नीललेश्यवाणा जे द्विन्द्रियवाणा एवोना संभंधमां पणु
समजवुं इकत ‘कृष्णलेश्या ओ पटना स्थाने “नीललेश्या” ओ पद लगावीने
सधणा आलापके बनावीने कडेवा लेछे, आ रीते नीललेश्यावाणा द्विन्द्रिय
एवोना संभंधमां ११ अगियार उद्देशाओवाणुं ओक त्रीणु शतक बनावीने
कडी लेवुं लेछे

॥त्रीणु शतक समाप्त ॥३६-३॥

‘एवं काउलेस्से हि विसय’ आ उपर बतावेल प्रकारथी ११ अगियार
उद्देशावाणुं कापोतिलेश्यावाणा द्विन्द्रिय एवोना संभंधमां ओथुं शतक
बनावी लेवुं लेछे.

॥ओथुं शतक समाप्त ३६-४॥

एवं एयाणि बारस वेदियमहाजुम्मसयाणि भवंति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

पंचमओ बारस पज्जत्ताइं वेदियमहाजुम्मसयाइं समत्ताइं । ५-१२।

छत्तीसइमं सयं समत्तं ॥३६॥

छाया—भवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्मद्वीन्द्रिया खलु भदन्त ! एवं भवसिद्धिशतान्यपि चत्वारि तेनैव पूर्वगमकेन नेतव्यानि । नवरं सर्वे प्राणाः, नायमर्थः समर्थः । शेषं तथैव औघिकशतानि चत्वारि । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥३६-५-८॥

यथा भवसिद्धिकशतानि चत्वारि एवमभवसिद्धिकशतानि चत्वारि भणितव्यानि । नवरं सस्यक्त्वज्ञाने न स्तः । शेषं तदेव । एतानि द्वादश द्वीन्द्रियमहायुग्मशतानि भवन्ति । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥

पञ्चम आरभ्य द्वादशपर्यन्तानि द्वीन्द्रियमहायुग्मशतानि समाप्तानि ॥५-१२॥

षट्त्रिंशत्तमं शतं समाप्तम् ॥३६॥

टीका—‘भवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्म वेदियाणं भंते !’ भवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्म द्वीन्द्रियाः खलु भदन्त कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावदेवेभ्यवेति प्रश्नः, उत्तरमाह—हे गौतम ! नो नैरयिकेभ्यः’ इत्यादिरूपेणोपपातविषयकं

॥शतक ३६-५-१२ दो इन्द्रिय महायुग्म शत॥

‘भवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्म वेदियाणं भंते !’ इत्यादि सूत्र

टीकार्थ—हे भदन्त ! भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित दो इन्द्रिय जीव कहां से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? हे गौतम ! ये नैर-

पांचमा शतकथी आठमा सुधीना महायुग्म शतकेनु कथन

‘भवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्मवेदियाण भंते !’ इत्यादि

टीकार्थ—हे भगवन् भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म राशिवाणा ओ इन्द्रिय जीवो कथांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? शुं तेओ नैरयिकेमाथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा तिर्यग्योनिकेमाथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा मनुष्येमाथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा देवोमाथी आवीने

પૂર્વવદેવોત્તરમ્ एवं परिमाणादिकमपि प्रथमशतवदेव ज्ञातव्यम् एतदभिप्रायेणै-
 वाह—‘एवं’ इत्यादि ‘एवं’ भवसिद्धियसया वि चत्वारि तेणेव पुण्यगमएणं
 नेयन्वा’ एवं भवसिद्धिकशतान्यपि चत्वारि पूर्वगमकेन ज्ञातव्यानि, यथा कृत-
 युग्मकृतयुग्मद्वीन्द्रियस्य चत्वारि शतानि औधिक कृष्णलेश्य नीललेश्य कापोत-
 लेश्याख्यानि कथितानि तथैव भवसिद्धिकद्वीन्द्रियाणामपि चत्वारि औधिक
 कृष्णनीलकापोतलेश्याख्यानि वक्तव्यानि सर्वत्र शतेषु पूर्ववदेव एकादश एकादशो-
 देशका अपि वक्तव्याः । ‘नवरं सव्वे पाणा० णो इणट्ठे समट्ठे’ नवरं सर्वे प्राणाः०
 नायमर्थः समर्थः सर्वे प्राणा यावत् सर्वे सत्त्वाः भवसिद्धिककृतयुग्मकृतयुग्मद्वीन्द्रि-
 यतया समुत्पन्नपूर्वा इति प्रश्नस्य नायमर्थः समर्थः इत्युत्तरम् । अत्र सर्वे प्राणभूत
 जीव सत्त्वा भवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्म द्वीन्द्रियतया पूर्वं नोत्पन्ना आसन्
 अतोऽत्र ‘असइं अदुवा अनंतखुत्तो’ इति पाठो न वाच्य इति । ‘सेसं तदेव’ शेषं

‘यिकો’ में से आकर के उत्पन्न नहीं होते हैं इत्यादि रूप से उपपन्न
 विषयक उत्तर पहिले कहे गये जैसा ही जानना चाहिये ।

‘एवं भवसिद्धिय सया वि चत्वारि तेणेव पुण्यगमएणं नेयन्वा’
 जिस प्रकार से कृतयुग्म कृतयुग्म द्वीन्द्रिय जीव के औधिक शत,
 कृष्णलेश्य शत, नीललेश्य शत, और कापोतलेश्य शत ये चार शतक
 कहे गये हैं उसी प्रकार से भवसिद्धिक द्वीन्द्रिय जीवों के भी ये ही चार
 शत कहलेना चाहिये सर्वत्र शतों में पूर्व के जैसे ११-११ उद्देशक
 वक्तव्य कहे गये हैं । ‘नवरं सव्वे पाणा० णो इणट्ठे समट्ठे’ परन्तु इन
 उद्देशकों में ‘समस्स प्राण यावत् समस्स सत्त्व अनन्तवार भवसिद्धिक
 कृतयुग्म कृतयुग्म द्वीन्द्रिय रूप से जन्म धारण कर चुके हैं’ ऐसा पाठ

ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે હે ગૌતમ ! તેઓ
 નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થતા નથી વિગેરે પ્રકારથી ઉપપત્તના સંબંધમાં
 પહેલા કહ્યા પ્રમાણેના ઉત્તર સમજ લેવો.

‘एवं भवसिद्धियसया वि चत्वारि तेणेव पुण्यगमएणं नेयन्वा’ જે
 પ્રમાણે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ જે ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં ઔધિક શતક,
 કૃષ્ણલેશ્યા શતક, નીલલેશ્યા શતક અને કાપેતલેશ્યા શતક આ ચાર શતકો
 કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે ભવસિદ્ધિક દ્વીન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં
 પણ આજ પ્રમાણેના ચાર શતકો કહેવા જોઈએ બધા જ શતકોમાં પહેલા
 કહ્યા અનુસાર ૧૧-૧૧ અગિયાર અગિયાર ઉદ્દેશાઓ કહેવાનું કહેલ છે.
 ‘नवरं सव्वे पाणा० नो इणट्ठे समट्ठे’ પરંતુ સઘળા પ્રાણો યાવત્ સઘળા સત્ત્વો
 અનંતવાર ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ દ્વીન્દ્રિય પણાથી જન્મ લઈ ચુકેલ

नवरमित्यादिना यत् कथितं तदतिरिक्तं पूर्ववदेव ज्ञातव्यम् 'ओहिय सयाणि च चारि' औघिक शतयुक्तानि चत्वारि भवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्म-भवसिद्धिक कृष्णलेश्य-भवसिद्धिक नीललेश्य-भवसिद्धिक कापोतलेश्याख्यानि ज्ञातव्यानि । 'सेव' भंते ! सेव' भंते ! त्ति' तदेव' भदन्त ! तदेव' भदन्त ! इति ॥

पट्त्रिंशत्तमे शतके पञ्चमादारभ्याष्टमपर्यन्तानि

द्वीन्द्रिय महायुग्मशतानि समाप्तानि ॥३६-५-८॥

समर्थित नहीं हुआ है । इसलिये यहाँ 'असइ' अहुवा अनंतखुत्तो' ऐसा पाठ वाच्य नहीं बतलाया गया है । 'सेस' तहेव' इस भिन्नता कथन से अतिरिक्त और सब कथन पूर्व के जैसा ही है ऐसा जानना चाहिये । 'ओहियसयाणि चचारि' भवसिद्धिक दो इन्द्रिय जीवों के औघिक शतक युक्त ४ शत इस प्रकार से हैं-भवसिद्धिक कृतयुग्म १, भवसिद्धिक कृष्णलेश्या शत २, भवसिद्धिक नीललेश्या शत ३ और भवसिद्धिक कापोतलेश्या शत ४ । 'सेव' भंते ! सेव' भंते ! त्ति' हे भदन्त ! जैसा आपने यह कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है २ । ऐसा कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तपसे आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

पांचवे' से आठ वे' महायुग्म शत समाप्त ॥३६-५-८॥

छे, ये प्रभाणेने। पाठ समर्थित थयेल नथी तेथी अछियां 'असइ' अहुवा अणंतखुत्तो' आ प्रभाणेने। पाठ कडेवानुं' कडेल छे. 'सेस' तहेव' आ अलग प्रकारना कथन शिवायनु जीवुं' सधणुं' कथन पडेलां कह्या प्रभाणे न छे, तेम समजवुं. 'ओहिय सयाणि चचारि' भवसिद्धिक ये द्वीन्द्रियवाणा जीवोना औघिक शतक युक्त आर ४ शतके। आ प्रभाणे छे.-भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म १ भवसिद्धिक कृष्णलेश्या शतक २ भवसिद्धिक नीललेश्याशतक ३ अने भवसिद्धिक कापोतलेश्या शतक ४

'सेव' भंते ! सेव' भंते ! त्ति' छे लगवन् आपे आ विषयमां न् प्रभाणे कथन कथुं' छे, ते सधणुं' कथन सर्वथा सत्य न छे छे लगवन् आप देवानु प्रियनु कथन सर्वथा सत्य न छे. आ प्रभाणे कहीने गौतमस्वामीये प्रभुश्री ने वंदना करी तेआने नमस्कार कया वंदना नमस्कार करीने ते पछी संयम अने तपथी पोताना आत्माने भावित करता थका पोताना स्थान पर विराजमान थया ॥सू०१॥

॥पांचमाथी आठमा सुधीना आर शतके समाप्त ३६-५-८॥

‘જહા ભવસિદ્ધિયસયાણિ ચત્તારિ એવં અભવસિદ્ધિયસયાણિ ચત્તારિ ભાણિ-
યઞ્વાણિ’ યથા ભવસિદ્ધિક્ષત્તાનિ ચત્તારિ કથિતાનિ એવમેવ અભવસિદ્ધિક્ષ-
ત્તાન્યપિ ચત્તારિ, તત્રૈકમભવસિદ્ધિક્ષત્તર્થોઽધિકં ૧, દ્વીતીયં કૃષ્ણલેશ્યા ભવ-
સિદ્ધિક્ષતં ૨, તૃતીયં નીલલેશ્યા ભવસિદ્ધિક્ષતં ૩, ચતુર્થં કાપોતલેશ્યાઽભવ-
સિદ્ધિક્ષતં ૪, તદેવમભવસિદ્ધિક્ષરય ચત્તારિ શતાનિ ભવન્તિ । પ્રત્યેકસ્મિન્
શતે એકાદશ એકાદશોઽશકા અપિ વક્તવ્યાઃ । ‘નવરં સમ્મત્ત નાણાણિ નત્થિ’
નવરં કેવલમેતસ્મિન્ શતચતુષ્ટયે સમ્યક્ત્વં જ્ઞાનં ચ ન ભવતિ ‘સેસં તં ચેવ’ શેષં
નવરમિત્યાદિના યત્ કથિતં તદતિરિક્તં સર્વયુપપાતપરિમાણાદિકં સર્વત્ર તદેવ
પશ્ચત્ત્રિશચ્છતકીય પ્રથમશતકથિતમેવેતિ, ‘એવં’ એવાણિ વારસ વેંદિયમઢાજુમ્મ-

ટીકાર્થ-‘જહા ભવસિદ્ધિક્ષયાણિ ચત્તારિ એવં અભવસિદ્ધિયસયાણિ
ચત્તારિ ભાણિયઞ્વાણિ’ જિસ રીતિ સે ભવસિદ્ધિક્ષ દ્વીન્દ્રિય જીવોં જે
સમ્બન્ધ મેં ચાર શત કહે ગયે હેં ડસી રીતિ સે અભવસિદ્ધિક્ષ દ્વીન્દ્રિય
જીવોં કે સમ્બન્ધ મેં ઓ ચાર શત કહ લેના ચાહિયે । જૈસે પ્રથમ
ઔઘિક અભવસિદ્ધિક્ષ શત, દ્વિતીય કૃષ્ણલેશ્યા અભવસિદ્ધિક્ષ શત,
તૃતીય નીલલેશ્યા અભવસિદ્ધિક્ષ શત ઓર ચતુર્થ કાપોતલેશ્યા અભવ-
સિદ્ધિક્ષ શત । इन प्रत्येक शत में ११-११ उद्देशक है । ‘नवरं सम्मत्त
नाणानि नत्थि’ इन चार शतों में विशेषना केवल इतनी सी है कि
इनमें अभावसिद्धिक दो इन्द्रिय होने के कारण सम्यक्त्व एवं ज्ञान नहीं
कहे गये हैं-क्यों कि दोनों यहां नहीं होते हैं । इस अन्तर के अति-
रिक्त और सब उपपात परिमाण आदि का कथन सर्वत्र ३५ वें शतक

‘જહા ભવસિદ્ધિયસયાણિ ચત્તારિ એવં અભવસિદ્ધિયસયાણિ’ ચત્તારિ
ભાણિયઞ્વાણિ’ જે પ્રમાણે ભવસિદ્ધિક્ષ દ્વીન્દ્રિય હોવાના સંબંધમાં ચાર શતકો
કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે અભવસિદ્ધિક્ષ દ્વીન્દ્રિયોના સંબંધમાં પણ
ચાર શતકો કહેવા લેઈએ. જેમ કે-પ્રથમ ઔઘિક અભવસિદ્ધિક્ષ શતક
દ્વિતીય કૃષ્ણલેશ્યા ભવસિદ્ધિક્ષ શતક, તૃતીય નીલલેશ્યા ભવસિદ્ધિક્ષ શતક,
અને એ થુ કાપોતલેશ્યા ભવસિદ્ધિક્ષ શતક આ દરેક શતકમાં ૧૧-૧૧ અગિયાર
ઉદ્દેશાઓ કહ્યા છે. ‘નવરં સમ્મત્ત નાણાણિ નત્થિ’ આ ચાર શતકોમાં કેવળ
એજ વિશેષપણ છે કે-તેઓમાં અભવસિદ્ધિક્ષ બે ઈન્દ્રિય હોવાને કારણે
સમ્યક્ત્વ અને જ્ઞાન કહેલ નથી. કેમ કે એ બન્ને આહીં હોતા નથી આ
જુદાપણા શિવાય બાકીના ઉપપાત, પરિમાણ વિગેરે સંબંધી સઘળું કથન
બધે ઠેકાણે પાંત્રીસમા શતકના પહેલા શતકના કથન પ્રમાણુ જ છે. ‘એવં’

સયાણિ ભવંતિ' એવમુપરોક્તપ્રકારેણ એતાનિ દ્વીન્દ્રિયમહાયુગ્મશત્તાનિ દ્વાદશસંખ્ય-
કાનિ ભવન્તિ ઔષ્ઠિક દ્વીન્દ્રિયશતમેકમ્ ૧, કૃષ્ણનીલકાપોતલેશ્યાત્રયયુક્તં શત-
ત્રયમિતિ ચત્વારિઃ, ભવસિદ્ધિકસ્ય ચતુષ્ટયમ્ ૮, અભવસિદ્ધિકસ્ય ચતુષ્ટયમ્ ૧૨,
સકલનયા દ્વાદશશત્તાનિ કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મદ્વીન્દ્રિયાણામ્ । એવં કૃતયુગ્મત્રયોજ
દ્વીન્દ્રિયત આરમ્ભ યાવત્ કલ્પયોજકલ્પયોજદ્વીન્દ્રિયાણાં ત્રિપયેઽપિ જ્ઞાતવ્યમ્ ।
એવમેતાનિ દ્વાદશશતકાનિ ભવન્તિ' પ્રત્યેકં શતકે એકાદશૈકાદશ ઉદ્દેશા સન્તિ
તતઃ દ્વાદશ ૧૨ એકાદશૈર્ગુણે ત્રાવિંશદધિકમેકં શતમ્ (૧૩૨) ઉદ્દેશકાનામ-
સ્મિન્ પદ્ત્રિંશશતકે ભવન્તીતિ । 'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' તદેવં ભદન્ત !

કે પ્રથમ શતક કે જેસા હી હૈં । 'એવં' એયાણિ બારસ વેદ્દિયહાજુમ્મ
સયાણિ ભવંતિ' યહાં યે દ્વીન્દ્રિય મહાયુગ્મ શત ૧૨ હૈં । જૈસે-ઔષ્ઠિક
દ્વીન્દ્રિય શત ૧ કૃષ્ણ નીલ કાપોતલેશ્યા ત્રય યુક્ત ત્રીન શત ૩ ભવ-
સિદ્ધિકદ્વીન્દ્રિય શત ૪ અભવસિદ્ધિક દ્વીન્દ્રિય શત ૪ હસ પ્રકાર સે
કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત દ્વીન્દ્રિય જીવો' કે ૧૨ મહાયુગ્મશત હૈં ।

હસી પ્રકાર સે કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ ત્રયોજ રાશિપ્રમિત દ્વીન્દ્રિય સે લેકર
કલ્પયોજ કલ્પયોજ રાશિપ્રમિત દ્વીન્દ્રિયો' કે સંબંધ મેં મી સમજ્ઞ લેના
ચાહિયે । હસ પ્રકાર યે ૧૨ બારહ શતક હોતે હૈં । પ્રત્યેક શતક મેં
ગ્યારહ ગ્યારહ ઉદ્દેશક હૈં અતઃ (૧૨×૧૧=૧૩૨) બારહ કો ગ્યારહ સે
ગુણા કરને પર એકસૌ બતીસ ઉદ્દેશક હસી છત્તીસ વેં શતક મેં હૈં ।

'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' હે ભદન્ત ! અભવસિદ્ધિક દ્વીન્દ્રિય
જીવો' કે ઉપપાતાદિ કે સમ્બન્ધ મેં જો આપ દેવાનુપ્રિયને કહા હૈં વહ સય

એયાણિ બારસ વેદ્દિય મહાજુમ્મસયાણિ ભવંતિ' અહિયાં આ રીતે ૧૨ બાર
દ્વીન્દ્રિય સંબંધી મહાયુગ્મ શતકો ઔષ્ઠિક દ્વીન્દ્રિય શતક ૧ કૃષ્ણલેશ્યા
નીલલેશ્યા અને કાપોતલેશ્યા સંબંધી ત્રણ શતક, ભવસિદ્ધિક દ્વીન્દ્રિયના ૪
બાર શતક અભવસિદ્ધિક બે દ્વીન્દ્રિય સંબંધી ૪ શતક આ રીતે કૃતયુગ્મ
કૃતયુગ્મ રાશિવાળા દ્વીન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં ૧૨ મહાયુગ્મ શતકો કહ્યા છે.

આજ પ્રમાણે કૃતયુગ્મ ત્રયોજ રાશિવાળા દ્વીન્દ્રિય જીવોથી લઈને
કલ્પયોજ કલ્પયોજ રાશિવાળા દ્વીન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં પણ ૧૨-૧૨ બાર
શતકો હોય છે. તેથી સે બે મહા શતકોમાં બધા મળીને કુલ ૧૩૨ એકસો
બત્રીસ શતકો થઈ જાય છે. ૧૨- માં ૧૧-૧૧ ઉદ્દેશાઓ છે. તેથી સઘળા
ઉદ્દેશાઓની કુલ સંખ્યા ૨૧૧૨ એકવીસસો બારની થઈ જાય છે.

'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ અભવસિદ્ધિક દ્વીન્દ્રિય જીવોના
ઉપપાત વિગેરેના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે બે કથન કર્યું છે તે સઘળું કથન

तदेवं भदन्त ! इति हे भदन्त ! अभवसिद्धिं द्वीन्द्रियाणामुपपातादि विषये यत्क-
थितं तत्सर्वं सत्यमिति कथयित्वा यावत्त्यथासुखं विहरतीति ॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्बल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक-श्रीशाहच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित—कोल्हापुरराजगुरु-वाक-
ब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्य श्री
वासीलालव्रतिविरचितायां श्री “भग
वतीसूत्रस्य” प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां-
व्याख्यायां अष्टमः द्वादशान्तानि
द्वीन्द्रिय महायुगमशतानि
समाप्तानि ॥३६-५-१२॥
॥ पट्त्रिंशत्तमं शतकं समाप्तम् ॥३६॥

सर्वथा सत्य ही है। इस प्रकार कहकर गौतमस्वामीने प्रभुश्री को वन्दना
की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और
तपसे आत्मा को आविर्त करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री वासीलालजीमहारजकृत
“भगवतीसूत्र” की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके छतीसवें शतक में
आतवे से चारहवें पर्यन्तके द्वीन्द्रिय महायुगम
शत समाप्त ॥३६-५-१२॥
॥ ३६ वां शतक समाप्त ॥

सर्वथा सत्य જ છે, હે ભગવન્ આપ દેવાતુપ્રિયતું સઘળું કથન આપ્ત હોવાથી
સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને
નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના
આત્માને ભાવિત કરતા પકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ.૦૧॥
જૈનાચાર્ય જનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી વાસીલાલજી મહારાજકૃત ‘ભગવતીસૂત્રની’
પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના છત્રીસમાં શતકના આઠમાથી બારમા સુધીના
દ્વીન્દ્રિય મહાયુગમ શતકો સમાપ્ત ॥૩૬-૫-૧૨॥
॥છત્રીસમું શતક સમાપ્ત॥



अह सत्ततीसइम तेदियसयं

मूलम्—कडजुम्मकडजुम्म तेदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति ? एवं तेदिएसु वि बारससया कायव्वा वेदियसयसरिसा । नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइं । ठिई जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं एगूणवन्नं राइंदियाइं । सेसं तहेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति

सत्ततीसइमे सए तेदियमहाजुम्मसया समत्ता ॥३७-१२॥

सत्ततीसइमं तेदियसयं समत्तं ॥३७॥

छाया—कृतयुग्मकृतयुग्म त्रीन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते एवं त्रीन्द्रियेष्वपि द्वादशशतानि कर्त्तव्यानि द्वीन्द्रियशतसदृशानि नवरमवगाहना जघन्येनांगुलस्यासंख्येयभागम् उत्कर्षेण तिस्रो गव्यूतयः । स्थितिर्जघन्येनैकं समयम् उत्कर्षेण एकोनपञ्चाशद्रात्रिदिनानि । शेषं तथैव । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ।

सप्तत्रिंशत्तमे शते त्रीन्द्रिय महायुग्मशतानि समाप्तानि ॥३७-१२॥

॥ सप्तत्रिंशत्तमं शतकं समाप्तम् ॥३७॥

टीका—‘कडजुम्मकडजुम्म तेदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति’ कृतयुग्म-कृतयुग्मत्रीन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते यावद्देवेभ्य आगत्य उत्पद्यन्ते इति प्रश्नः, उत्तरमाह अतिदेशद्वारेण—‘एवं’

॥३७ वां शतक त्रीन्द्रिय शत॥

टीकार्थ—‘कडजुम्म कडजुम्म तेदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति, हे भदन्त ! कृतयुग्म कृतयुग्म राशिपमित त्रीन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा

साक्षात्रीसभा शतकनेा प्रारंभ—

कडजुम्म कडजुम्म तेदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति’ इत्यादि

हे भगवन् कृतयुग्म कृतयुग्म राशिपमिता त्रय इन्द्रियपणा लोको कथा स्थान विशेषथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? शुं तेयो नैरयिकेमांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा तिर्यग्योनिकेमांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा मनुष्येमांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा देवोमांथी आवीने

इत्यादि, 'एवं तेऽदिपसु वि वारससया कायव्वा वेदिय सयसरिसा' एवं त्रीन्द्रियेष्वपि द्वादशशतानि अभूवन् तथैवान्नापि द्वादशशतानि कर्त्तव्यानि प्रथममौघिकं शतं द्वितीयं कृष्णलेशघटितं तृतीयं नीललेशघटितम् चतुर्थं कापोतलेशघटितं भवसिद्धिकस्यैवमेव चत्वारि शतानि एवमेव अभवसिद्धिकस्य चत्वारि शतानि सर्वशतेषु एकादश एकादशोद्देशकाः प्रथमसमयादिका अपि वक्तव्याः । द्वीन्द्रियशतकापेक्षया यद् वैलक्षण्यं तदर्शयति—'नवरं' इत्यादि, 'नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जभागं' नवरं—केवलं शरीरावगाहना त्रीन्द्रियाणां जघन्येनांगुलस्यासंख्येयभागप्रमाणा 'उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइ' उत्कर्षेण तिस्रो गव्यू-

દેવો' નેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈ ? 'एवं तेऽदिपसु वि वारस सया कायव्वा वेदिय सयसरिसा' इस प्रश्न का उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतमस्वामी कहतेहैं—'हे गौतम ! जिस रीति से द्वीन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में १२ शत प्रकट किये गये हैं, इसी रीति से यहां पर भी १२ शत प्रकट कर लेना चाहिये । जैसे प्रथम औघिक शतक द्वितीय कृष्णलेशघा घटित शत, तृतीय नीललेशघा घटित शत, चतुर्थ कापोतलेशघा घटित शत, भवसिद्धिक त्रीन्द्रिय जीव के भी ऐसे ही चार शत और अभवसिद्धिक त्रीन्द्रिय के भी चार शत इन सब शतों में ११-११ उद्देशक भी कहना चाहिये । परन्तु द्वीन्द्रिय शतक की अपेक्षा जो इस शतक में भिन्नता है वह ऐसी है कि 'नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जभागं' यहां जघन्य अवगाहना तो अंगुल के असंख्यात वे भाग प्रमाण है और 'उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइ'

ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે 'एवं तेऽदिपसु वि वारससया कायव्वा वेदियसयसरिसा' હે ગૌતમ ! દ્વીન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં જે પ્રમાણે બાર શતકો બતાવ્યા છે, એજ પ્રમાણેના બાર શતકો અહિયાં આ ત્રણ ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં પણ કહેવા નેઈએ. જેમ કે—પહેલું ઔઘિક શતક ખીજું કૃષ્ણલેશ્યાવાળા યુક્ત, ત્રીજું નીલલેશ્યા યુક્ત, શતક, ચોથું કાપોતલેશ્યા યુક્ત, શતક ભવસિદ્ધિક ત્રણ ઇન્દ્રિયવાળા જીવોને પણ એજ પ્રમાણના ચાર શતકો તથા અભવસિદ્ધિક ત્રણ ઇન્દ્રિયવાળા જીવોને પણ ચાર શતકો એ રીતે આ બારે શતકોમાં ૧૧-૧૧ અગિયાર અગિયાર ઉદ્દેશાઓ પણ કહેવા નેઈએ પરંતુ એ ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના શતક કરતાં આ શતકોમાં જે બુદ્ધાપણ આવે છે, તે એવું છે કે—'नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जभागं' અહિયાં જઘન્ય અવગાહનાતો આંગળના અસંખ્યાતમા ભાગ પ્રમાણની છે, અને 'उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइ'

તયઃ । ‘ઠિર્ઈ જહન્નેનં એકં સમયં’ સ્થિતિર્જઘન્યેન એકસમયપ્રમાણા ‘ઉક્કોસેનં
એગૂણવન્નં રાહંદિયાહં’ ઉત્કર્ષેણ એકોનપચ્ચાશત્ રાત્રિં દિવાનિ, ‘સેસં તહેવ’ શેપ
મદગાહનાસ્થિત્યતિરિક્તં સર્વં દ્વીન્દ્રિયશતરૂદેવ ત્રીન્દ્રિયશતકેઽપિ જ્ઞાતવ્યમ્ ‘સેવં
ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ ॥

॥ ઇતિ ત્રીન્દ્રિયમહાયુગ્વશતાનિ સમાપ્તાનિ ॥૩૭-૧૨॥

॥ સપ્તત્રિંશત્તમં શતકં સમાપ્તમ્ ॥૩૭॥

ઉત્કૃષ્ટ અવગાહના ત્રીણ કોશ કી હૈ । ‘ઠિર્ઈ જહન્નેનં એકં સમયં’
એગૂણવન્નં રાહંદિયાહં’ તથા સ્થિતિ જઘન્ય સે એક સમય કી હૈ ઓર
ઉત્કૃષ્ટ ૪૯ દિક રાતકી હૈ । ‘સેસં તહેવ’ અવગાહના એવં સ્થિતિ સે
અતિરિક્ત ઓર ઉપપાત આદિ કા કથન દ્વીન્દ્રિય શતક કે જૈસા હી હૈ ‘સેવં
ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ હે મદન્ત ! જૈસા આપને ઘહ કહા હૈ ઘહ સર્વ
સર્વથા સત્ય હી હૈ ૨ । હસ પ્રકાર કહકર ગૌતમને પ્રભુશ્રી કો વન્દના
કી ઓર નમસ્કાર ક્રિયા વન્દના નમસ્કાર કર ફિર વે સંયમ ઓર તપ
સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુએ અપને સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે ।

॥ ૩૭ વાં શતક સમાપ્ત ॥

ઉત્કૃષ્ટથી અવગાહના ત્રણ ગાઉની છે, ‘ઠિર્ઈ જહન્નેનં એકં સમયં’ ઉક્કોસેનં
એગૂણવન્નં રાહંદિયાહં’ તથા સ્થિતિ જઘન્યથી એક સમયની છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી
૪૯ ઓગણપચાસ દિવસ રાતની કહેલ છે. ‘સેસં તહેવ’ અવગાહના અને સ્થિતિના
કથન શિવાય બાકીના ઉપપાત વિગેરે સંબંધી કથન બે ઈન્દ્રિયવાળા જીવોના
શતકમાં કહ્યા પ્રમાણે જ છે

‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ ત્રણ
ઈન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં બે પ્રમાણેનું કથન કયું છે તે સર્વથા સત્ય
જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે
કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર
કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા
પોતાના સ્થાન પર બિરાજમન થયા ॥સૂ.૦૧॥

॥સાડત્રીસમું શતક સમાપ્ત ॥૩૭॥

‘अह अद्वतीसइमं चउरिंदियसयं’

मूलम्—चउरिंदिएहि वि एवं चेव बारससया कायव्वा, नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं । ठिई जहन्नेणं एकं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा, सेसं जहा बेदियाणं । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति

चउरिंदियसहाजुम्मसया समत्ता ॥३८-१२॥

अद्वतीसइमं सयं समत्तं ॥३८॥

छाया—चतुरिन्द्रियैरपि एवमेव द्वादशशतानि कर्त्तव्यानि, नवरम्—अवगाहना जघन्येन अंगुलस्य असंख्येयभागम्, उत्कर्षेण चतस्रो गव्यूतयः स्थिति-जघन्येन एकं समयम्, उत्कर्षेण षण्मासाः, शेषं यथा द्वीन्द्रियाणाम्, तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥

चतुरिन्द्रिय महायुग्मशतानि समाप्तानि ॥३८-१२॥

अष्टत्रिंशत्तमं शतं समाप्तम् ॥३८॥

टीका—‘चउरिंदिएहि वि एवं चेव बारससया कायव्वा’ पञ्चत्रिंशत्तमशतगतैकेन्द्रिय शतवत् चतुरिन्द्रियैरपि एवमेव द्वादशशतानि कर्त्तव्यानि । औधिक कृतयुग्मकृतयुग्म चतुरिन्द्रियादारभ्य चरमाचरम कृतयुग्मकृतयुग्म चतुरिन्द्रियपर्यन्तमेकादशोद्देशक-गर्भितानि प्रत्येकम् औधिक-कृष्णनीलकापोतलेश्या घटितानि चत्वारि शतानि

शतक ३८ वा चौइन्द्रिय शत

टीकार्थ—चौइन्द्रिय जीवों के साथ भी ३५ वें शतक में वर्णित एकेन्द्रिय शतके जैसे १२ शतक कर्त्तव्य हैं । औधिक कृतयुग्मकृतयुग्म चौइन्द्रिय से लेकर चरमाचरम कृतयुग्म कृतयुग्म चौइन्द्रिय तक के ११ उद्देशकों से युक्त औधिक शत, कृष्णलेश्या घटित शतक, नील

॥आउत्रीसभा शतकनो प्रारंभ—

टीकार्थ—चार छिन्द्रियवाणा ज्वेना संभंधमां यल्ल ३५ पांत्रीसभा शतकमां वल्लुवेद ओकेन्द्रिय ज्वेना शतके प्रमाज्जेना १२ आर शतके कडेवा जेधजे. औधिक कृतयुग्म कृतयुग्मथी लधने चरम—अचरम कृतयुग्म कृतयुग्म चार छिन्द्रियवाणा सुधीमां ११ अगियार उद्देशाओथी युक्त औधिक शतक, कृष्णलेश्यवाणुं शतक, नीललेश्याथी युक्त, शतक, कापोतिक लेश्यायुक्त शतक

एवमेव भवसिद्धिकघटितानि चत्वारि शतानि, तथा अभवसिद्धिकघटितानि चत्वारि शतानि चेति, सर्वसंकुलितानि चतुरिन्द्रियैरपि कर्तव्यानीतिभावः । अत्र यद् वैलक्षण्यं तदाह—‘नवरं’ इत्यादि, नवरं केवलं विशेषस्त्वयम् यत् एषां चतुरिन्द्रियाणाम् ‘ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं’ अवगाहना जघन्ये नांगुलस्यासंख्येयभागप्रमिता, ‘उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइ’ उत्कर्षेण चतस्रो गव्यूतयः, इति चतुर्गव्यूति प्रमिता चतुःकोशप्रमाणा उत्कर्षेण तादृशचतुरिन्द्रियाणामवगाहना प्रोक्तेति भावः । एषां ‘ठिई जहन्नेणं एकं समयं’ स्थितिर्जघन्येन एकं समयं यावत्, ‘उक्कोसेणं छम्मासा’ उत्कर्षेण स्थितिः षण्णासान् यावत् एतदेव वैलक्षण्यम्, ‘सेसं जहा वेइंदियाणं’ शेषम्—अवगाहना स्थित्यतिरिक्तं सर्वं

लेइया घटित शत, कापोतलेइया घटित शत, भवसिद्धिक घटित चार शतक और अभवसिद्धिक घटित चार शतक इस प्रकार से सब शतक १२ हो जाते हैं । ये १२ शत चौइन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में हैं । पूर्व शतक की अपेक्षा जो यहाँ अन्तर आता है उसे ‘ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइ’ इस सूत्रपाठ द्वारा प्रकट किया गया है—यहाँ जघन्य से अवगाहना-शरीर की ऊँचाई अंगुल के असंख्यात वे भाग प्रमाण है और उत्कृष्ट से चार कोश की है । ‘एवं ठिई जहन्नेणं एकं समयं उक्कोसेणं छम्मासा’ इनकी जघन्य स्थिति एक समय की और उत्कृष्ट स्थिति छहमास की हैं । ‘सेसं जहा वेइंदियाणं’ अवगाहना और स्थिति के अतिरिक्त और सब कथन जैसा दो इन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में कहा

भवसिद्धિકવાળા ચાર શતકો અને અભવસિદ્ધિકવાળા ચાર શતકો આ રીતે સઘળા મળીને ૧૨ બાર શતકો થઈ બાંધ છે. આ બાર શતકો ચાર ઇન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં કહેલ છે પહેલા શતકના કથન કરતાં આ કથનમાં જે અંતર આવે છે, તે ‘ઓગાહણા જહણેણં અંગુલસ્સ અસંખેજ્જઈ ભાગં, ઉક્કોસેણં ચત્તારિ ગાઉયાઈ’ આ સૂત્રદ્વારા પ્રગટ કરેલ છે. અહિયાં જઘન્યથી અવગાહના શરીરની ઉચાઈ આંગળના અસંખ્યાતમા ભાગ પ્રમાણુવાળી છે અને ઉત્કૃષ્ટ અવગાહના ચારગાઉની કહેલ છે. ‘એસો ઠિઈ જહણેણં એકં સમયં ઉક્કોસેણં છમ્માસા’ આમની જઘન્ય સ્થિતિ એક સમયની અને ઉત્કૃષ્ટથી સ્થિતિ છ માસની કહી છે. ‘સેસં જહા વેઈંદિયાણં’ અવગાહના અને સ્થિતિના કથન કરતાં બાકીનું સઘળું કથન બે ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં જે પ્રમાણુ કહેવામાં આવેલ છે, તેજ પ્રમાણુનું છે

યથા દ્વીન્દ્રીયાણાં તથા વાચ્યમ્ । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! તિ’ તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ ॥

ઈતિ શ્રી-વિશ્વવિખ્યાતજગદ્વલ્લભાદિપદભૂપિતવાલ્મીકીચારિ - ‘જૈનાચાર્ય’
પૂજ્યશ્રી-ઘાસીલાલવ્રતિવિરચિતાયાં “શ્રી મગવતીસૂત્રસ્ય” પ્રમેયચન્દ્રિકાખ્યાયાં
વ્યાખ્યાયાં ચતુરિન્દ્રિયમહાયુગ્મશ્ચત્તાનિ સમાપ્તાનિ ॥૩૮-૧૨॥
અષ્ટત્રિંશત્તમશતં સમાપ્તમ્ ॥૩૮॥

હૈ વેસા હી હૈ ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! તિ’ હૈ મદન્ત આપકા યહ
સથ કથન સર્વથા સત્ય હી હૈ ૨ । હસ પ્રકાર કહકર ગૌતમને પ્રભુશ્રી
કો વન્દના કી ઔર નમસ્કાર ક્રિયા । વન્દના નમસ્કાર કર
ફિર વે સંયમ ઔર તપ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુએ અપને સ્થાન
પર વિરાજમાન હો યાયે ।

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજીમહારાજકૃત
“મગવતીસૂત્ર” કી પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાકે અહતીસવેં શતક કા
ચૌહિન્દ્રિય મહાયુગ્મ શત સમાપ્ત ॥૩૮-૧૨॥
૩૮ વાં શતક સમાપ્ત

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! તિ જાવ વિહરઈ’ હે ભગવન્ આપનું આ વિષય
સંબંધમાં કહેલ સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે
કહેલ સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ
પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી
સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન
પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત “મગવતીસૂત્ર”ની
પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના આઠત્રીસમા શતકનું
મહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત ॥૩૮-૧૨॥
॥આઠત્રીસમું શતક સમાપ્ત॥



‘અહ એગૂળયાલીસદ્મં સયં’

મૂલમ્—કડજુમ્મકડજુમ્મ અસન્નિ પંચિંદિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ જહા વેંદિયાણં તહેવ અસન્નિસુ વિ વારસસયા કાયવા । નવરં ઓગાહના જહન્નેણં અંગુલસ્સ સંખેજ્જહમાગં, ઉક્કોસેણં જોયણસહસ્સં । સંચિટ્ટણા જહન્નેણં એકં સમયં ઉક્કોસેણં પુવ્વકોડીપુહુત્તં । ઠિઈ જહન્નેણં એકં સમયં ઉક્કોસેણં પુવ્વકોડી, સેસં જહા વેંદિયાણં । સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ ॥

અસન્નિપંચિંદિયમહાજુમ્મસયા સમત્તા ॥૩૯-૧૨॥

એગૂળયાલીસદ્મં સયં સમત્તં ॥૩૯॥

છાયા--કૃતયુગ્મકૃતયુગ્માસંજિપચ્ચેન્દ્રિયાઃ સ્વલ્પ મદન્ત ! કુત ઉત્પન્નન્તે ? યથા દ્વીન્દ્રિયાણાં તથૈવાસંજિપચ્ચ દ્વાદશશતાનિ કર્તવ્યાનિ । નવરમવગાહના જઘન્યેનાંશુલયાસંખ્યેયમામ્, ઉત્કર્ષેણ યોજનસહસ્રમ્, સંસ્થિતિઃ કાયસ્થિતિઃ જઘન્યેનૈકં સમયમ્ ઉત્કર્ષેણ પૂર્વકોટિઃ । શેયં યથા દ્વીન્દ્રિયાણામ્ । તદેવ મદન્ત ! તદેવ મદન્ત ! ઇતિ ॥

અસંજિપચ્ચેન્દ્રિય મહાયુગ્મશતાનિ સમાપ્તાનિ ॥૩૯-૧૨॥

એકોનચત્વારિંશત્તમં શતકં સમાપ્તમ્ ॥૩૯॥

ટીકા--‘કડજુમ્મકડજુમ્મ અસન્નિ પંચિંદિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ કૃતયુગ્મકૃતયુગ્માસંજિપચ્ચેન્દ્રિયાઃ સ્વલ્પ મદન્ત ! કુત ઉત્પન્નન્તે ? ઇતિ પ્રશ્નઃ,

૩૯ વાં શતક

‘કડજુમ્મ કડજુમ્મ અસન્નિ પંચિંદિયાણં મંતે ॥હત્યાદિ સૂત્ર ૧॥

ટીકાર્થ--હે મદન્ત ! કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત અસંજીપચ્ચેન્દ્રિય જીવ કિસ સ્થાન વિશેષ સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? કયા વે નૈરયિકોં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા તિર્યગ્યોનિકોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા મનુષ્યોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે

ઓગણુયાલીસમા શતકનો પ્રારંભ--

‘કડજુમ્મ કડજુમ્મ અસન્નિ પંચિંદિયાણં મંતે ! ધત્યાદિ

હે ભગવન્ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિ પ્રમાણુવાળા અસંજી પંચેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શુ તેઓ નૈરયિકોંમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યગ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા

ઉત્તરમાહ અતિદેશદ્વારેણ-‘જહા’ इत्यादि, ‘जहा वेदियाणं तहेव असन्निसु वि वारससया कायव्वा’ यथा द्वीन्द्रियाणां द्वादशशतानि कथितानि तथैवासंज्ञि-
ष्वपि द्वादशशतानि कर्तव्यानि । मृत्येकस्मिन् शते एकादश एकादशोद्देशका,
अपि वक्तव्याः । द्वीन्द्रियापेक्षया यद्वैलक्षण्यं तदाह-‘नवरं’ इत्यादिना ‘नवरं
ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं’ नवरं केवलं वैलक्षण्यं द्वीन्द्रिय-
शतापेक्षया इदमेव यत् शरीरावगाहना चतुरिन्द्रियाणां जघन्येनांगुलस्यासंख्येय-
भागप्रमाणा ‘उक्कोसेणं जोयणसहस्सं’ उत्कर्षेण योजनसहस्रम् । ‘संचिट्ठणा जह-
न्नेणं एकं समयं’ ‘संचिट्ठणा’ कालतः कायस्थिति र्जघन्येन एकसमयप्रमाणा

हैं ? अथवा देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? इस प्रश्न के उत्तर
के सम्बन्ध में प्रभुश्री गौतमस्वामी से कहते हैं-‘जहा वेदियाणं तहेव
असन्निसु वि वारस सया कायव्वा’ हे गौतम ! जिस रीति से द्वीन्द्रिय
जीवों के १२ शतक कहे गये हैं उसी रीति से असंज्ञी जीवों के भी
१२ शतक कहलेना चाहिये और मृत्येक शतक में ११-११ उद्देशक भी
कहना चाहिये । द्वीन्द्रिय की अपेक्षा जो यहां अन्तर है वह ‘नवरं ओगा-
हणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं’, ‘उक्कोसेणं जोयणसहस्सं’
इस सूत्रद्वारा किया गया है-यहां जघन्य अवगाहना अंगुल के असंख्यात
वें भाग प्रमाण है और उत्कृष्ट अवगाहना एक हजार योजन की है ।
‘संचिट्ठणा जहन्नेणं एकं समयं’ काल की अपेक्षा कायस्थिति रूप संचि-

મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન
થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-“જહા
વેદિયાણં તહેવ અસન્નિસુ વિ વારસસયા કાયવ્વા” હે ગૌતમ ! જે પ્રમાણે બે
દ્વિન્દ્રિયાવાળા જીવોના સંબંધમાં ૧૨ બાર શતકો કહેલ છે, એજ પ્રમાણે આ
અસંજ્ઞી જીવોના સંબંધમાં પણ ૧૨ શતકો કહી લેવા અને દરેક શતકમાં
૧૧-૧૧ અગિયાર-અગિયાર ઉદ્દેશાઓ પણ કહી લેવા. જે દ્વિન્દ્રિયાવાળા જીવો
કરતાં આ કથનમાં જે અંતર છે, તે ‘નવરં’ ઓગાહના જહણેણં અંગુલસ્સ
અસંખેજ્જઇભાગં ઉક્કોસેણં જોયણસહસ્સં’ આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ કરવામાં આવેલ
છે. અહિયાં જઘન્ય અવગાહના આંગળના અસંખ્યાત ભાગ પ્રમાણ છે અને
ઉત્કૃષ્ટ એકહજાર યોજનની કહેલ છે. ‘સંચિટ્ઠણા જહણેણં એકકં સમયં’
‘ઉક્કોસેણં’ કાળની અપેક્ષાથી કાયસ્થિતિ રૂપ સંચિટ્ઠણુ જઘન્ય એક સમય

સમયાનન્તર સંસ્થાન્તરસદ્ભાવાત્ 'ઉક્કોસેણં પુન્નવકોડીપુહુત્તં' ઉત્કર્ષેણ પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વં દ્વિ પૂર્વકોટિત આરમ્ભ નવ પૂર્વકોટિપર્યન્તમિત્યર્થઃ । 'ઠિઈ જહન્નેણં એકકં સમયં' સ્થિતિરાયુષઃ જઘન્યેનૈકસમયપ્રમાણા સમયાનન્તરં મવાન્તરસદ્ભાવાત્ 'ઉક્કોસેણં પુન્નવકોડી, ઉત્કર્ષેણ પૂર્વકોટિઃ । 'સેસં જહા વેંદિયાણં' શેષમ્ અવગાહના સ્થિત્યતિરિક્તં યથા દ્વીન્દ્રિયાણાં વધિતં તથૈવ જ્ઞેયમિતિ । 'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' તદેવં મદન્ત ! તદેવ મદન્ત ! ઇતિ ॥

ઈત્યસંજ્ઞિપદ્ધેન્દ્રિયમહાયુગ્મશતાનિ સમાપ્તાનિ ॥૩૯-૧૨॥

। ઇકોનચત્ત્વારિંશતમં શતકં સમાપ્તમ્ ॥૩૯॥

ટુળા જઘન્ય સે એક સમય પ્રમાણ ઓર 'ઉક્કોસેણં' ઉત્કૃષ્ટ સે 'પુન્નવકોડી પુહુત્તં' પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ હૈ । અર્થાત્ દો પૂર્વકોટિ સે લેકર નો પૂર્વકોટિ તક હૈ । 'ઠિઈ જહન્નેણં એકકં સમયં' ઉક્કોસેણં પુન્નવકોડી' इनके आयुष्य की स्थिति जघन्य से एक समय की और उत्कृष्ट से एक पूर्व कोटि की है । 'सेसं' जहा वेहं'दियाणं' इस प्रकार अवगाहना और स्थिति इन दोनों भिन्नताओं के अतिरिक्त और सब कथन द्वीन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में जैसा कहा गया है वैसा ही है 'सेव' मंते ! सेव' मंते ! त्ति' हे मदन्त ! आपने जो यह कथन किया है । वह सब सर्वथा सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर वे संघम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

॥असंज्ञि पद्धेन्द्रिय शत समाप्त ३९ वां शतक समाप्त॥

પ્રમાણુ અને ઉત્કૃષ્ટથી 'પુન્નવકોડી પુહુત્તં' પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ છે. અર્થાત્ એ પૂર્વકોટિથી લઈને નવ પૂર્વકોટિ સુધી કહેલ છે. 'ઠિઈ જહન્નેણં એકકં સમયં' ઉક્કોસેણં પુન્નવકોડી' સ્થિતિ આયુષ્ય કર્મની સ્થિતિ જઘન્યથી એક સમયની અને ઉત્કૃષ્ટ એક પૂર્વકોટિની છે. 'સેસં' જહા વેહં'દિયાણં' આ રીતે અવગાહના અને સ્થિતિ આ બે વિષયના ભિન્નપણા શિવાય બાકીનું સઘણુ કથન બે દ્વિન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં બે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું છે, તેમ સમજવું.

'સેવ' મંતે ! સેવ' મંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ આપે આ વિષયમાં બે કથન કર્યું છે, તે સર્વથા સત્ય છે. ૨ આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તપ અને સંયમથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ.૦૧॥

અસંજ્ઞિપદ્ધેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત
॥ઓગણુયાણીસમુ શતક સમાપ્ત ॥૩૯॥

‘अह चत्तालीसइमं सय’

मूळम्--कडजुम्मकडजुम्म सन्निपंचिदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति ? उववाओ चउसु वि गइसु । संखेज्ज वासाउय असंखेज्जवासाउय पज्जत्तअपज्जत्तएसु य न कओ वि पडिसेहो जाव अणुत्तरविमाणत्ति । परिमाणं अवहारो ओगाहणा य जहा असन्निपंचिदियाणं । वेयणिज्जवज्जाणं सत्तण्हं कम्म-पगडीणं बंधगा वा, अबंधगा वा, वेयणिज्जस्स बंधगा नो अबंधगा । मोहणिज्जस्स वेदगा वा, अवेदगा वा, सेसाणं सत्त-ण्ह वि वेदगा नो अवेदगा । सयावेयगा वा असायावेयगा वा मोहणिज्जस्स उदई वा अणुदई वा सेसाणं सत्तण्ह वि उदई नो अणुदई । नामस्स गोयस्स य उदीरगा नो अणुदीरगा वा, कणहलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा, सम्मदिट्ठी वा मिच्छा-दिट्ठी वा, सम्मामिच्छादिट्ठी वा । णाणी वा अन्नाणी वा, मणजोगी वयजोगी कायजोगी, उवओगो वन्नमाई, उसासगा वा नीसासगा वा, आहारगा य जहा एगिंदियाणं, विरयाय अविरयाय विरयाविरयाय । सकिरिया नो अकिरिया । ते णं भंते ! जीवा किं सत्तविहबंधगा वा अट्ठविहबंधगा वा, छव्विह बंधगा वा एगविहबंधगा वा ? गोयमा ! सत्तविहबंधगा वा, जाव एगविहबंधगा वा । ते णं भंते ! जीवा किं आहारसन्नो-वउत्ता वा जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता वा नो सन्नोवउत्ता वा, गोयमा ! आहारसन्नोवउत्ता जाव नो सन्नोवउत्ता वा । सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा कोहकसाई वा जाव लोभकसाई वा अकसाई वा । इत्थिवेयगा वा पुरिसवेयगा वा नपुंसगवेयगा वा अवेदगा वा । इत्थिवेयबंधगा वा, पुरिसवेयबंधगा वा, णपुंसगवेयबंधगा

वा अवंधगा वा । सन्नी नो असन्नी । सइंदिया णो अणिंदिया ।
 संचिद्वणा जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं सागरोवमस्यपुहुत्तं
 सातिरेगं । आहारो तहेव जाव नियमं छदिसिं । ठिई जहन्नेणं
 एक्कं समयं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमइं । छ समुग्घाया
 आदिल्लगा । मारणांतियसमुग्घाएणं समोहया वि मरंति असमो-
 हया वि मरंति । उव्वद्वणा जहेव उववाओ न कत्थइ पडिसेहो
 जाव अणुत्तरविमाणत्ति । अह भंते ! सव्व पाणा जाव अणंत-
 खुत्तो । एवं सोलससु वि जुम्मेसु भाणियव्वं जाव अणंतखुत्तो ।
 नवरं परिमाणं जहा वेदियाणं सेसं तहेव । सेवं भंते ! २ त्ति ॥४०-१॥

पढमसमय कडजुम्मकडजुम्म सन्निपंचिदियाणं भंते !
 कओ उववज्जंति ? उववाओ, परिमाणं, आहारो, जहा एएसिं
 चेव पढमुद्देसए । ओगाहणा बंधो वेदो वेयणा उदयी उदीरगा
 य जहा वेदियाणं पढमसमयाणं तहेव । कणहलेस्सा वा जाव
 सुकलेस्सा वा । सेसं जहा वेदियाणं पढमसयाणं जाव अणं-
 तखुत्तो । नवरं इत्थेवेयगा वा पुरिसवेयगा वा नपुंसगवेयगा
 वा, सन्नी णो असन्नीणो सेसं तहेव । एवं सोलससु वि
 जुम्मेसु परिमाणं तहेव सव्वं । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥४० १॥

एवं एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा तहेव । पढमो तइओ
 पंचमो य सरिसगमा, सेसा अट्ट वि सरिसगमा । चउत्थ छट्ठ
 अट्ठमदसमेसु नत्थि विसेसो कायव्वो । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

चत्तालीसइमे सए पढमं सन्निपंचिदिय

महाजुम्मसयं समत्तं ॥४०-१२॥

छाया--कृतयुग्म कृतयुग्म संज्ञि पञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ?
 उपपातश्चतसृभ्योऽपि गतिभ्यः । संख्येयवर्षायुष्कासंख्येयवर्षायुष्क पर्याप्तापर्याप्त-
 केभ्यश्च न कुतोऽपि प्रतिषेधो यावदनुत्तरविमानमिति, परिमाणमपहारोऽवगाहना
 च यथा असंज्ञिपञ्चेन्द्रियाणाम् । वेदनीयवर्जानां सप्तानां कर्मप्रकृतीनां बन्धका वा
 अवन्धका वा वेदनीयस्य बन्धका नो अवन्धकाः । मोहनीयस्य वेदका वा अवेदका
 वा शेषाणां सप्तानामपि वेदका नो अवेदकाः । सातावेदका वा असातावेदका वा
 मोहनीयस्योदयिनो वा, अनुदयिनो वा, शेषाणां सप्तानामपि उदयिनो नो अनुद-
 यिनः । नास्मिन् गोत्रस्य चोदीरका नो अनुदीरकाः शेषाणां पण्णामपि उदीरका
 अनुदीरका वा । कृष्णलेश्या वा यावत् शुक्ललेश्या वा । सम्यग्दृष्टयो वा, मिथ्या
 दृष्टयो वा, सम्यग्मिथ्यादृष्टयो वा । ज्ञानिनो वा अज्ञानिनो वा, मोनोयोगिनो
 वा वचोयोगिनः काययोगिनः । उपयोगो वर्णादिः, उच्छ्वासका वा निश्वासका
 वा आहारकाश्च यथा एकेन्द्रियाणाम् । विरताश्चाविरताश्च विरताविरताश्च ।
 सक्रिया नो अक्रिया । ते खलु भदन्त ! जीवाः किं सप्तविधबन्धका वा अष्टवि-
 धबन्धका वा पञ्चविधबन्धका वा ? गौतम ! सप्तविधबन्धका वा यावत् एकविध-
 बन्धका वा । ते खलु भदन्त ! जीवाः किमाहारसंज्ञोपयुक्ता यावत् परियह
 संज्ञोपयुक्ता वा नो संज्ञोपयुक्ता वा, गौतम ! आहारसंज्ञोपयुक्ता यावत् नो संज्ञो-
 पयुक्ता वा सर्वत्र पृच्छा भणितव्या, क्रोधकपायिनो वा यावत् लोभपाययिनो वा
 अकपायिनो वा । स्त्रीवेदका वा पुरुषवेदका वा नपुंसकवेदका वा अवेदका वा ।
 स्त्रीवेदबन्धका पुरुषवेदबन्धका वा नपुंसकवेदबन्धका वा अवन्धका वा । संज्ञिनः,
 नो असंज्ञिनः । सेन्द्रिया नो असेन्द्रियाः । संस्थितिः जघन्येनैकं समयमुत्कर्षेण
 सागरोपमशतपृथक्त्वं सातिरेकम् । आहारस्तथैव यावत् नियमतः पृष्टदिशि ।
 स्थितिर्जघन्येनैकं समयमुत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि । पट्टं समुद्धाता आदिकाः
 मारणान्तिकसमुद्धातेन समवहता अपि म्रियन्ते । असमवहता अपि म्रियन्ते ।
 उद्धर्तना यथैवोपपातः न कुत्रापि प्रतिषेधो यावदनुत्तरविमानमिति । अथ भदन्त ! सर्वे
 प्राणा यावदनन्त कृत्वः । एवं षोडशस्वपि युग्मेषु भणितव्यं यावदनन्तकृत्वः नवरं
 परिमाणं यथा द्वीन्द्रियाणाम् शेषं तथैव । तदेव भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति । ४० १ ।

प्रथमसमय कृतयुग्म कृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते
 उपपातः परिमाणमाहारो यथा एतेषामेव प्रथमोद्देशके । अवगाहना बन्धो वेदो
 वेदना उदयिन उदीरकाश्च यथा द्वीन्द्रियाणां प्रथमसमयानाम् । तथैव कृष्णलेश्या
 वा यावत् शुक्ललेश्या वा । शेषं यथा द्वीन्द्रियाणां यावदनन्तकृत्वः । नवरं स्त्री-
 वेदका वा पुरुषवेदका वा नपुंसकवेदका वा संज्ञिनोऽसंज्ञिनः । शेषं तथैव । एवं
 षोडशस्वपि युग्मेषु परिमाणं तथैव सर्वम् तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ।

एवमत्रापि एकादशोद्देशकास्तथैव प्रथमातृतीयः पञ्चमश्च सदृशगमाः शेषा
अष्टावपि सदृशगमाः । चतुर्थपष्ठाष्टमदशमेषु नास्ति विशेषः कर्त्तव्यः । तदेवं
भदन्त ! तदेवं भदन्त इति ॥

॥चत्वारिंशत्तमे शतके प्रथमं संज्ञिपच્ચેન્દ્રિયमहायुग्मशतम्, समाप्तम् ॥४०-१-१२॥

टीकार्थ—કડજુમ્મકડજુમ્મ સંજ્ઞિપંચિદિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ' કૃતયુગ્મ
કૃતયુગ્મ સંજ્ઞિ પચ્ચેન્દ્રિયાઃ સ્વલ્લ ભદન્ત ! કૃત આગત્યોત્પન્નન્તે'ઇત્યાદિ, ઉત્તરમાહ-
ઉવવાઓ' ઇત્યાદિ, 'ઉવવાઓ ચહસુ વિ ગઈસુ' ઉપચારશ્વતસમ્બોડપિ ગતિમ્બ્યઃ,
અત્ર સૂત્રે પચ્ચમ્બ્યથે સમ્મતી, હે ગૌતમ ! ત હમે કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિયજીવાઃ
નરકેમ્બ્યોડપિ આગત્ય ઇતાદશપચ્ચેન્દ્રિયતયા ઉત્પન્નન્તે તિર્યગ્મ્બ્યો વા આગત્ય મનુ-
ષ્યેમ્બ્યો વા આગત્ય દેવેમ્બ્યો વા આગત્ય સમુત્પન્નન્તે'ઇતિ ભાવઃ । 'સંલેજ્જવાસા-
ઉય અસંજ્જવાસાઉય પજ્જત્ત અપજ્જત્તણ્ણુ ન કઓ વિ પહિસેહો જાવ અણુત્તર-

શાનક ૪૦

‘કડજુમ્મકડજુમ્મ સંજ્ઞિ પંચિદિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ' ઇ.

ટીકાર્થ—હે ભદન્ત ! કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય જીવ કિસ
સ્થાનવિશેષ સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? કયા ચે નૈરયિકોં મેં સે આકર
કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા તિર્યગ્ગોનિકોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે
હૈં ? અથવા મનુષ્યોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા દેવોં મેં સે
આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? 'ઉવવાઓ ચહસુ વિ ગઈસુ' હે ગૌતમ !
કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ રાશિ પ્રમાણ સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિયજીવ નૈરયિકોં મેં સે આકર
કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં । તિર્યગ્ગોનિકોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ।
મનુષ્યોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ઓર દેવોં મેં સે આકર કે

ચાળીસમા શતકનો પ્રારંભ—

‘કડજુમ્મ કડજુમ્મસંજ્ઞિપચ્ચિદિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિયજીવ કયા સ્થાન વિશેષથી
આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોંમાથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ?
કે તિર્યગ્ગોનિકોંમાથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોંમાથી આવીને
ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોંમાથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી
કહે છે કે—‘ઉવવાઓ ચહસુ વિ ગઈસુ’ હે ગૌતમ ! કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા
સંજ્ઞિ પચ્ચેન્દ્રિય જીવો નૈરયિકોંમાથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે તિર્યગ્ગો-
નિકોંમાથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે, મનુષ્યોંમાથી આવીને પણ ઉત્પન્ન
થાય છે અને દેવોંમાથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે ‘સંલેજ્જવાસાઉય અસં-
લેજ્જવાસાઉય પજ્જત્ત અપજ્જત્તણ્ણુ ય ન કઓ વિ પહિસેહો જાવ અણુત્તરવિમાણત્તિ’

વિમાણ ત્તિ' સંખ્યેયવર્ષાયુષ્કાસંખ્યેયવર્ષાયુષ્ક પર્યાપ્તકાપર્યાકેભ્યો ન કુતો-
 ઽપિ પ્રતિષેધો યાવદનુત્તરવિમાનાદિતિ, સંખ્યાતવર્ષાયુષ્કેભ્યોઽપિ આગત્યા
 સંખ્યાતવર્ષાયુષ્કેભ્યોઽપિ આગત્ય પર્યાપ્તકેભ્યો વા આગત્ય અપર્યાપ્તકેભ્યો વા
 આગત્ય સંજ્ઞિપૃષ્ઠેન્દ્રિયતયા જીવાનાં સમુત્પાદઃ સંયત્તિ ન કુતોઽપિ નિષેધો દિદ્યતે,
 નરકાદારમ્ય યાવદનુત્તરવિમાનપર્યન્તરથાનેભ્યઃ સમુત્પદ્યન્તે સંજ્ઞિપૃષ્ઠેન્દ્રિયા
 હતિ ભાવઃ । 'પરિમાણં અવહારો ઓગાહના ય જઠા-અમન્નિપંચિદિયાણં' પરિ-
 માણમવહારોઽવગાહનાચ યથા અસંજ્ઞિપૃષ્ઠેન્દ્રિયાણાં કથિતા સ્તથૈવ પરિમાણં તાવત્
 પોડશ વા સંખ્યાતા વા અસંખ્યાતા વા । શરીરાદગાહના જઘન્યેનાંગુલસ્યાસંખ્યેય-
 ભાગમમાણા ઉત્કર્ષેણ યોજનસહસ્રપ્રમાણા ચ ભવતીતિ, 'વેયણિજ્જવજ્ઞાણં સત્તપ્પહં

મી ઉત્પન્ન હોતે હૈં । 'સંખેજ્જવાસાઉય અસંખેજ્જવાસાઉય પજ્જત્ત અપજ્જ-
 ત્તણ્ણુ ન કઓવિ પડિસેહો જાવ અણુત્તરવિમાણત્તિ' સંખ્યાત વર્ષકી
 આયુવાલોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં અસંખ્યાતવર્ષ કી આયુ-
 વાલોં મેં સે મી આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં । પર્યાપ્તોં મેં સે મી આકર
 કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં અપર્યાપ્તોં મેં સે મી આકર કે મી ઉત્પન્ન હોતે હૈં ।
 સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય જીવ રૂપ સે ઉત્પાદ હોને કા નિષેધ કિસી મી અવસ્થા
 સે નહીં હૈં । નરક સે યાવત્ અનુત્તરવિમાન તક કે જીવ સંજ્ઞિ
 પૃષ્ઠેન્દ્રિય જીવ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ।

'પરિમાણં અવહારો ઓગાહના ય જઠા અમન્નિ પંચિદિયાણં'
 પરિમાણ, અપહાર ઓર અવગાહના કે સમ્બન્ધ મેં જૈસા અસંજ્ઞિ
 પૃષ્ઠેન્દ્રિયોં કે સમ્બન્ધ મેં કહા ગવા હૈં વૈસા હી જાનના ચાહિયે ।
 અસંજ્ઞિ પૃષ્ઠેન્દ્રિય જીવોં કે પરિમાણ સોલહ, સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત

સંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળાઓમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે. અસંખ્યાત
 વર્ષની આયુષ્યવાળાઓમાંથી પણ આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, પર્યાપ્તોમાંથી આવીને
 પણ ઉત્પન્ન થાય છે. અપર્યાપ્તોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે. સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય-
 જીવપણાથી ઉત્પાદ થવાનો કોઈપણ અવસ્થામાં નિષેધ નથી. નરકથી લઈને યાવત્
 અનુત્તર વિમાન સુધીના જીવો દેવ સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય જીવ પણાથી ઉત્પન્ન થાય છે.

'પરિમાણં અવહારો ઓગાહના ય જઠા અમન્નિ પંચિદિયાણં' પરિમાણ,
 અપહાર અને અવગાહના ના સંબંધમાં જે રીતે અસંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિયોના સંબંધમાં
 કહેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન સમજવું. આ રીતના કથનથી. વ્યુત્કાંતિપદ
 ના અતિદેશથી અસંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય જીવોના પરિમાણ કથન પ્રમાણે સંજ્ઞિ જીવોનું
 પરિમાણ સોળ, અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત આવે છે. તેના શરીરની

પગડીળં વંધગા વા અવંધગા વા' વેદનીયવર્જાનાં સપ્તાનાં કર્મપ્રકૃતિનાં વન્ધકા વા અવંધકા વા વેદનીયસ્ય કર્મણો વન્ધપ્રકારં વિશેષરૂપેણ કથયિષ્યતીતિ કૃત્વા વેદનીયવર્જાનામિત્યુક્તમ્, તત્ર ચોપશાંતમોહાઃ ક્ષીણમોહાશ્ચ સપ્તાનાં પ્રકૃતીનામ-વન્ધકા એવ, તદિતિરિક્તાસ્તુ યથાસમ્પ્રવં વન્ધકા ભવન્તિ । 'વેયણિજ્જસ્સ વંધગા નો અવંધગા' વેદનીયસ્ય કર્મણઃ સર્વે વન્ધકા એવ ભવન્તિ ન તુ અવન્ધકાઃ કેવલિત્વપ્રાપ્તિપૂર્વે સર્વેડપિ સંજ્ઞિપદ્વિન્દ્રિયા ઇતિ, તે ચ વેદનીયકર્મણો વન્ધકા એવ ભવન્તિ નત્તવન્ધકા ઇતિ ભાવઃ । 'મોહણિજ્જસ્સ વેદગા વા અવેદગા વા, મોહનીયસ્ય કર્મણઃ સંજ્ઞિપદ્વિન્દ્રિયા વેદકા વા અવેદકા વા ભવન્તિ, તત્ર મોહનીયસ્ય કર્મણો વેદકાઃ સૂક્ષ્મ સંપરાયાન્તા ભવન્તિ, અવેદકાસ્તુ ઉપશાન્તમોહાઃ ક્ષીણમોહા

આતા હૈ । इनके शरीर की अवगाहना जधन्ध से अंगुल के असंख्यातवे भाग प्रमाण आती है और उरकुष्ट से एक हजार योजन प्रमाण आती है । 'वेयणिज्जवज्जाणं सत्तण्हं पगडीणं वंधगावा अवंधगावा' वेदनीय कर्म को छोड़कर ये सात प्रकार की कर्मप्रकृतियों के बन्धक होते हैं और अबन्धक ही होते हैं । इन में उपशान्त मोहवाले जीव और क्षीण मोहवाले जीव सात कर्मप्रकृतियों के अबन्धक ही होते हैं बाकी के जीव यथासंभव बन्धक होते हैं । 'वेयणिज्जस्स वंधगा नो अवंधगा' केवल-पद की प्राप्ति के पहिले सबस्त संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव वेदनीय कर्म के बन्धक ही होते हैं । अबन्धक नहीं होते हैं । 'मोहणिज्जस्स वेदगा वा अवेदगा वा' संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव मोहनीय कर्म के वेदक भी होते हैं और अवेदक भी होते हैं । सूक्ष्म संपराय तक के सबस्त संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव मोहनीय कर्म के वेदक ही होते हैं । उपशान्त गुणस्थानवर्ती

અવગાહના જધન્યથી આગળના અધ્યાત્મભાગ પ્રમાણ આવે છે, અને ઉરકુષ્ઠથી એક હજાર યોજન પ્રમાણ આવે છે. 'વેયણિજ્જવજ્જાણં સત્તણ્હ પગડીળં વંધગા વા અવંધગા વા' વેદનીય કર્મને છોડીને તેઓ સાત કર્મપ્રકૃતિ-યોના બંધ કરે છે, અને અબંધક પણ હોય છે. તેમાં ઉપશાંત મોહવાળા જીવો અને ક્ષીણ મોહવાળા જીવો સાત કર્મપ્રકૃતિયોના અબંધક હોય છે. બાકીના જીવો યથાસંભવ બંધક હોય છે. 'વેયણિજ્જસ્સ વંધગા નો અવંધગા' કેવલિ પદની પ્રાપ્તિ પહેલાં સઘળા સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવો વેદનીય કર્મના બન્ધક જ હોય છે. અબંધક હોતા નથી. 'મોહણિજ્જસ્સ વેદગા વા અવેદગા વા' સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવો મોહનીય કર્મના વેદક પણ હોય છે, અને અવેદક પણ હોય છે, સૂક્ષ્મ સંપરાય સુધીના સઘળા સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવો મોહનીય

અથ ભવન્તીતિ । ‘સેસાણં સત્તળ્લહ વિ વેદગા નો અવેદગા’ શેષાણાં સપ્તાનામપિ કર્મણાં મોહનીયવ્યતિરિક્તાનાં સંજ્ઞિપશ્ચેન્દ્રિયા વેદકા एव भवन्ति नो अवेदका भवन्ति, उपशान्तमपि मोहादयः संज्ञिपश્चેન્દ્રિયાस्ते मोहनीयव्यतिरિક्તાનાં સપ્તાનામપિ કર્મણાં વેદકા एव नो अवेदका भवन्ति । यद्यपि केवलिनश्चतसृणामघाति કર્મપ્રકૃતિનાં વેદકા ભવન્તિ તથાપિ કેવલિન ઇન્દ્રિયવ્યાપારાતીતત્ત્વાત્ ન પશ્ચેન્દ્રિયા ઇતિ કથ્યન્તે, ઇતિ શ્રાવઃ ‘સાયાવેયગા વા અસાયાવેયગા વા’ સંજ્ઞિપશ્ચેન્દ્રિય જીવાઃ સાતાવેદકા અપિ અસાતાવેદકા અપિ સંજ્ઞિપશ્ચેન્દ્રિયાણામેવં વિધસ્વરૂપત્વાદિતિ । ‘મોહણિજ્જરસ્સ ઉદર્હ વા અણુદર્હ વા, સંજ્ઞિ પશ્ચેન્દ્રિયા જીવા મોહનીયકર્મપ્રકૃતે રુદ્ધિકો વા અનુદયિનો વા ભવન્તિ, તત્ર સૂક્ષ્મ સંપરાયાન્તાઃ

સંજ્ઞિપશ્ચેન્દ્રિય જીવ ઓર ક્ષીણ મોહવાળે સંજ્ઞિ પશ્ચેન્દ્રિય જીવ મોહનીય કર્મ’ કે વેદક નહીં હોતે હે ‘સેસાણં સત્તળ્લહ વિ વેદગા નો અવેદગા’ વાકી કે સાત કર્મો કે મોહનીય કે સિવાય સાતકર્મો’ કે યે સંજ્ઞિ પશ્ચેન્દ્રિય જીવ વેદક હોતે હે અવેદક નહીં હોના હે । યદ્યપિ કેવલી જીવ ચાર અઘાતિયા કર્મપ્રકૃતિયોં કે વેદક હોતે હે તથા બી કેવલી ઇન્દ્રિય વ્યાપારાતીત હોને સે પશ્ચેન્દ્રિય નહીં કહલાતે હે । ‘સાયાવેદગા વા અસાયા વેદગા વા’ યે સંજ્ઞિ પશ્ચેન્દ્રિય જીવ સાતા કે બી વેદક હોતે હે ઓર અસાતા કે બી વેદક હોતે હે । જ્યોં કિ સંજ્ઞિ પશ્ચેન્દ્રિય જીવોં કા એસા હી સ્વભાવ હોતા હે । ‘મોહણિજ્જરસ્સ ઉદર્હ વા અણુદર્હ વા’ યે સંજ્ઞિ પશ્ચેન્દ્રિય જીવ મોહનીય કર્મપ્રકૃતિ કે ઉદયવાળે બી હોતે હે ઓર અનુદયવાળે બી હોતે હે । इनमें जो संज्ञी पश्चेंद्रिय जीव सूक्ष्म

કર્મનુ વેદન કરનારા જ હોય છે. ઉવાશ ત શુશુ સ્થાનમા રહેવાવાળા સંજ્ઞી પશ્ચેન્દ્રિય જીવો અને ક્ષીણ મોહવાળા સંજ્ઞી પશ્ચેન્દ્રિય જીવો મોહનીય કર્મનુ વેદન કરવાવાળા હોતા નથી. ‘સેસાણં સત્તળ્લહ વિ વેદગા નો અવેદગા આકીના સાત કર્મપ્રકૃતિયોનુ મોહનીય કર્મ’ શિવાયની આ સંજ્ઞી પશ્ચેન્દ્રિય જીવો વેદન કરવાવાળા હોય છે. જો કે કેવલી જીવો ચાર અઘાતિયા કર્મપ્રકૃતિયોનુ વેદન કરવાવાળા હોય છે. તો પણ તે કેવલી ઇન્દ્રિયનાવ્યાપારથી પર હોવાથી પશ્ચેન્દ્રિય કહેવાતા નથી. ‘સાયાવેદગાવા અસાયા વેદગા વા’ સંજ્ઞી પશ્ચેન્દ્રિય જીવો સાતાનુ પણ વેદન કરવાળા હોય છે, અને અસાતાનુ પણ વેદન કરવાળા હોય છે. કેમ કે-સંજ્ઞી પશ્ચેન્દ્રિય જીવોનો સ્વભાવ જ એવો હોય છે, ‘મોહિણિજ્જરસ્સ ઉદર્હ વા અણુદર્હ વા આ સંજ્ઞી પશ્ચેન્દ્રિય જીવો મોહનીય કર્મપ્રકૃતિના ઉદયવાળા પણ હોય છે, અને અનુદયવાળા પણ હોય છે. આમાં

સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિયાઃ મોહનીયકર્મપ્રકૃતેરુદયિનો ભવન્તિ, ઉપશાન્તમોહાદયસ્તુ સંજ્ઞિ-
પચ્ચેન્દ્રિયા અનુદયિનો ભવન્તીતિ । ‘સેસાણં સત્ત્વહં વિ ઉદર્દ્ધં નો અનુદર્દ્ધં’ શેષાણાં
મોહનીયવ્યવિરિક્તાનાં સર્વેષામપિ કર્મણાં સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિયા ઉદયિન એવ ભવન્તિ
ન તુ અનુદયિનો ભવન્તીતિ । વેદનોદયયોઃ કો ભેદઃ ? इत्याह—वेदकत्वमनुक्रमेणो-
दीरणाकरणेन च उदयागतानां कर्मणामनुभवनम्, उदयस्तु अनुक्रमागतानां
कर्मप्रकृतीना मनुभवनमिति भेद इति । ‘नामस्स गोयस्स य उदीरगा नो अणु
दीरगा’ नाम्नो गोत्रस्य च कर्मणः सर्वे संज्ञिपच्येन्द्रिया अकपायान्ता उदीरका एव
भवन्ति न तु अनुदीरका भवन्तीति । ‘सेसाणं छण्ह वि उदीरगा वा अणुदीरगा
वा’ शेषाणां नामगोत्रवर्जानां षण्णामपि ज्ञानावरणीयादीनां यथासंभवम् उदीरका

સંપરાય ગુણસ્થાન તક કે હૈં વે તો મોહનીય કર્મ કે ઉદયવાલે હોતે હૈં
ઔર ઉપશાન્ત મોહવાલે હૈં અથવા ક્ષીણમોહવાલે હૈં વે મોહનીય કર્મ
કે ઉદયવાલે નહીં હોતે હૈં । ‘સેસાણં સત્ત્વહં વિ ઉદર્દ્ધં નો અનુદર્દ્ધં’ મોહ-
નીય કર્મ કે સિવાય શેષ સાત કર્મપ્રકૃતિયોં કે યે ઉદયવાલે હી હોતે
હૈં અનુદયવાલે નહીં હોતે । વેદના ઔર ઉદય મેં કયા અન્તર હૈં ? ઉત્તર
—અનુક્રમ સે અથવા ઉદીરણા કરણ સે ઉદય મેં આયે હુએ કર્મોં કા
અનુભવ કરના સો વેદકતા હૈં ઔર અનુક્રમ સે ઉદય મેં આયે હુએ કર્મોં
કા અનુભવન કરના વહ ઉદય હૈં । ‘નામસ્સ ગોયસ્સ ય ઉદીરગાણો
અણુદીરગા’ યે સમસ્ત સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિય જીવ નામકર્મ કે ઔર ગોત્ર કર્મ
કે ક્ષીણમોહ ગુણસ્થાન તક ઉદીરક હોતે હૈં અનુદીરક નહીં હોતે હૈં ।
‘સેસાણં છણ્હ વિ ઉદીરગા વા અણુદીરગા વા’ યાકી કે છહ કર્મપ્રકૃ-
તિયોં કે નામગોત્ર કો છોડકર જ્ઞાનાવરણીય આદિ ૬ કર્મપ્રકૃતિયોં કે

જે સંજ્ઞી પચ્ચેન્દ્રિય જીવો સૂક્ષ્મ સંપરાય ગુણ સ્થાન સુધીના છે, તેઓ તો
મોહનીય કર્મના ઉદયવાળા હોય છે. અને ઉપશાન્ત મોહવાળા હોય છે. તેઓ
મોહનીય કર્મના ઉદયવાળા હોતા નથી. ‘સેસાણં સત્ત્વહં વિ ઉદર્દ્ધં નો અણુદર્દ્ધં’
મોહનીય કર્મ સિવાય બાકીની સાત કર્મપ્રકૃતિયોના તેઓ ઉદયવાળા જ હોય
છે. અનુદયવાળા હોતા નથી. વેદન અને ઉદયમાં શું અંતર છે ? ઉત્તરમાં
પ્રભુશ્રી કહે છે કે—અનુક્રમથી અથવા ઉદીરણા કરણથી ઉદયમાં આવેલા કર્મોના
અનુભવ કરવો તે વેદનપણું છે અને અનુક્રમથી ઉદયમાં આવેલા કર્મોના
અનુભવ કરવો તે ઉદય છે ‘નામસ્સ ગોયસ્સ ય ઉદીરગા ણો અણુદીરગા’ આ
સઘણા જીવો નામ કર્મના તથા ગોત્ર કર્મના ક્ષીણ મોહગુણ સ્થાન સુધી ઉદીરક

આનુદીરકાશ્ચ ભવન્તિ । અત્રાયં ક્રમ પ્રમત્તાઃ સર્વેઽપિ સામાન્યતોઽપ્તાનામપિ
કર્મણામુદીરકાઃ આવલિકાશ્ચ શેષાયુષ્કારતુ તથા આયુર્વર્જમ્પ્તાનામુદીરકા
શર્વાન્ત, તથા યદા તે વેદનીય કર્મણ ઉદીરણાં ન કુર્વન્તિ તદા વેદનીયયુર્વર્જ શેષ
ષટ્ કર્મણા મુદીરકા ભવન્તિ અપ્રમત્તાદિ ચતુર્ગુણાસ્થાનવર્તિનો વેદનીયાયુર્વર્જનાં
ષણ્ણામુદીરકાઃ તથા સૂક્ષ્મસંપરાયાઃ આવલિકાયાં રવાદ્યાયાઃ શેષાયાં મોહનીય
વેદનીયાયુર્વર્જનાં પશ્ચાનામપિ કર્મણામુદીરકાઃ ઉપશાન્તમોહાસ્તુ ઉક્તરૂપાણાં
પશ્ચાનાં કર્મણાં મોહનીયવેદનીયાયુષ્કવર્જનામેવ ઉદીરકાઃ, ક્ષીણકપાયાઃ પુનઃ

એ યથા સંભવ ઉદીરક બી હોતે હૈં ઓર અનુદીરક બી હોતે હૈં । ઉદી-
રણા કા ક્રમ હસ પ્રકાર સે હૈ-પ્રમત્ત સમસ્ત સંજીવચ્ચેન્દ્રિય જીવ સામા-
ન્યત આઠો હી કર્મપ્રકૃતિયોં કે ઉદીરક હોતે હૈં ઓર જવ હનકી
આવલિમાત્ર આયુશેષ રહતી હૈ તવ યે આયુ કે સિવાય સાત કર્મપ્રકૃ-
તિયોં કે ઉદીરક હોતે હૈં । તથા જિસ સમય યે વેદનીય કર્મ કી બી
ઉદીરણા ન કરતે હોં । ઉસ સમય યે વેદનીય ઓર આયુષ્ક કે સિવાય
શેષ છહ કર્મોં કે ઉદીરક હોને કે કારણ અપ્રમત્ત આદિ ગુણસ્થાન સે
વેદનીય ઓર આયુષ્ય કર્મ કો છોડકર છહ કર્મપ્રકૃતિયોં કે ઉદીરક હોતે
હૈં । તથા સૂક્ષ્મસંપરાયવાલે સંજીવચ્ચેન્દ્રિય જીવ જવ અપના અર્થાત્ સૂક્ષ્મ
સંપરાય ગુણસ્થાનકા કાલ આવલિકા માત્ર બાકી રહ જાતા હૈ તવ વહ
મોહનીય વેદનીય ઓર આયુષ્ય કર્મ કે સિવાય શેષ પાંચ કર્મપ્રકૃતિયોં
કા ઉદીરક હોના હૈં । તથા ઉપશાન્ત મોહવાલે સંજીવચ્ચેન્દ્રિય જીવ બી
મોહનીય આદિ ત્રીન કર્મપ્રકૃતિયો કો છોડકર શેષ પાંચ કર્મપ્રકૃતિયોં
કે હી ઉદીરક હોતે હૈં । તથા ક્ષીણ કપાયવાલે સંજીવચ્ચેન્દ્રિય જીવ જવ

હોય છે. અનુદીરક હોતા નથી. ‘સેષાણં છણ્હ વિ ઉદીરગા વા અનુદીરગા વા’
બાકીની છ કર્મપ્રકૃતિયોને નામ ગોત્રને છોડીને જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે છ
કર્મપ્રકૃતિયોના આ યથ સંભવ-ક્રમથી ઉદીરક પણ હોય છે, અને ઉદીરણાને
ક્રમ આ પ્રમાણેનો છે.-પ્રમત્ત સુધીના સઘળા સંજી પંચેન્દ્રિય જીવો સામાન્ય
રીતે આઠે કર્મપ્રકૃતિયોના ઉદીરક હોય છે, અને જ્યારે તેઓની આવલિકા
માત્રની આયુષ્ય બાકી રહે ત્યારે તેઓ આયુષ્ય શિવાય સાત કર્મપ્રકૃતિયોના
ઉદીરક હોય છે. અપ્રમત્ત વિગેરે ચાર વેદનીય અને આયુષ્ય કર્મને છોડીને છ
કર્મપ્રકૃતિયોના ઉદીરક હોય છે. તથા સૂક્ષ્મ સાંપરાયવાળા સંજી પંચેન્દ્રિય
જીવો જ્યારે પોતાનો કાળ આવલિકા માત્ર બાકી રહે ત્યારે તે મોહનીય,
વેદનીય અને આયુષ્ય કર્મ શિવાય બાકીની પાંચ કર્મપ્રકૃતિયોના ઉદીરક હોય
છે. તથા ઉપશાન્ત મોહનીયવાળા સંજીવચ્ચેન્દ્રિય જીવો પણ મોહનીય વિગેરે
ત્રણ કર્મપ્રકૃતિયોને છોડીને બાકીની પાંચ કર્મપ્રકૃતિયોના જ ઉદીરક હોય છે.

સ્વાદ્યાયા આવલિકાયાં શેપાયાં નામ-ગોત્રયોરેવ કેવલમુદીરકા ભવન્તિ. સયો-
ગિનોઽપિ કેવલં નામગોત્રયોરેવોદીરકા ભવન્તિ, અયોગિનસ્તુ અનુદીરકા એવ
કેવલં ભવન્તીતિ ભાવઃ । ‘કળહલેસ્સા વા જાવ સુકલેસ્સા વા’ સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિયાઃ
કૃષ્ણલેશ્યા વા ભવન્તિ યાવત્ શુકલલેશ્યા વા ભવન્તિ, અત્ર યાવત્પદેન નીલ-
કાપોતતેજઃ પદ્મલેશ્યાનાં સંગ્રહો ભવતિ । તથા ચ કૃષ્ણલેશ્યાઃ આરભ્ય યાવન્તુ-
લ્કલેશ્યાન્તા ઇમે પચ્ચેન્દ્રિયા ભવન્તીતિ ભાવઃ । ‘સમ્મદિટ્ઠી વા મિચ્છાદિટ્ઠી વા
સમ્મામિચ્છાદિટ્ઠી વા’ સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિયાઃ સમ્યગ્દષ્ટયો વા ભવન્તિ મિથ્ય દષ્ટયો વા
ભવન્તિ સમ્યગ્ મિથ્યાદષ્ટયો મિશ્રદષ્ટયો વા ભવન્તીતિ । ‘નાણી વા અન્નાણી વા
જ્ઞાનિનો વા ભવન્તિ અજ્ઞાનિનો વા ભવન્તિ સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિયાઃ । ‘મળજોગી વયજોગી
કાયજોગી’ મનોયોગિનો વા ભવન્તિ-વચ્ચોયોગિનો વા ભવન્તિ કાયયોગિનો વા

ક્ષીણમોહ ગુણસ્થાન કા વાલ એક આવલિકા માત્ર બાકી રહતા હૈં ઉસ
સમય નામગોત્ર ઇન દો કર્મોં કે હી ઉદીરક હોતે હૈં । સયોગી જીવ
મી ઇન્હી દો કર્મોં કે ઉદીરક હોતે હૈં । ‘એવં અયોગી જીવ
અનુદીરક હોતે હૈં ।

‘કળહલેસ્સા વા જાવ સુકલેસ્સા વા’ સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિય જીવ કૃષ્ણલે-
શ્યાવાલે યાવત્ શુકલલેશ્યાવાલે હોતે હૈં । યહાં યાવત્પદ સે શેષ નીલ,
કાપોત, તેજ, પદ્મ ઇન લેશ્યાઓં કા સંગ્રહ હુઆ હૈં । તથા ચ યે સંજ્ઞિ-
પચ્ચેન્દ્રિય જીવ કૃષ્ણલેશ્યા સે લેકર શુકલલેશ્યાવાલે તક હોતે હૈં ।
‘સમ્મદિટ્ઠી વા, મિચ્છાદિટ્ઠી વા’ સમ્મામિચ્છાદિટ્ઠી વા’ યે સમ્ય-
ગ્દષ્ટિ મી હોતે હૈં, મિથ્યાદષ્ટિ મી હોતે હૈં ઓર મિશ્રદષ્ટિ મી હોતે
હૈં । ‘મળજોગી વયજોગી કાયજોગી’ મનોયોગવાલે, વચ્ચનયોગવાલે

તથા ક્ષીણ કષાયવાળા સંજ્ઞી પચ્ચેન્દ્રિય ળવો બ્યારે પોતાનો કાળ એક આ
વલિકામાત્ર બાકી રહે છે. ત્યારે નામગોત્ર આ બે કર્મોના જ ઉદીરક હોય
છે, સયોગી ળવ પણ આજ બે કર્મોના ઉદીરક હોય છે, અને અયોગી ળવો
અનુદીરક હોય છે.

‘કળહલેસ્સા વા જાવ સુકલેસ્સા વા’ સંજ્ઞી પચ્ચેન્દ્રિય ળવો કૃષ્ણલેશ્યા
વાળા યાવત્ શુકલલેશ્યાવાળા હોય છે. અહિયાં યાવત્પદથી બાકીની નીલ,
કાપોત, તેજ, પદ્મ, આ લેશ્યાઓનો સંગ્રહ થયેલ છે તથા આસંજ્ઞી પચ્ચેન્દ્રિય
ળવો કૃષ્ણલેશ્યાથી લઈને શુકલલેશ્યાવાળા સુધી હોય છે. ‘સમ્મદિટ્ઠી વા,
મિચ્છાદિટ્ઠી વા, સમ્મામિચ્છાદિટ્ઠી વા’ આ સમ્યગ્દષ્ટિવાળા પણ હોય છે. અને
મિથ્યાદષ્ટિવાળા પણ હોય છે અને મિશ્રદષ્ટિવાળા પણ હોય છે ‘નાણી વા
અન્નાણી વા’ તેઓ જ્ઞાની પણ હોય છે, અને અજ્ઞાની પણ હોય છે. મળજોગી,

भवन्तीति । ‘उवजोगो वन्तमाई उस्सासगा वा नीसासगा वा आहारगा वा जहा एगिंदियाणं’ उपयोगो वर्णादिः उच्छ्वासका वा निःश्वासका वा आहारकाश्च यथा एकेन्द्रियाणाम् एकेन्द्रियवद्देवोपयोगादयः पञ्चेन्द्रियाणामपि ज्ञातव्याः तत्र उपयोगो द्विविधोऽपि, पञ्चापि वर्णाः, द्वौ गन्धौ, पञ्चापि रसाः, अष्टौ स्पर्शा भवन्ति उच्छ्वासका वा भवन्ति निःश्वासका वा भवन्ति । आहारकाश्च भवन्ति यथा एकेन्द्रियाणां प्रकरणे तथा ‘विरयाय अविरयाय विरया विरयाय’ संज्ञिपञ्चेन्द्रिया विरताश्च भवन्ति अविरताश्च भवन्ति । विरताविरताश्चापि भवन्तीति । ‘सक्रिया नो अक्रिया’ सक्रिया भवन्ति पञ्चेन्द्रियाः, नो न तु अक्रिया भवन्ति । ‘ते णं भंते ! जीवा किं सत्तविहवंधगा वा अट्टविहवंधगा वा’ ते खलु भदन्त ! जीवाः संज्ञिपञ्चेन्द्रियाः सप्त विधकर्मप्रकृतीनां बन्धका वा भवन्ति, अष्टविधकर्मप्रकृतीनां बन्धका वा भवन्ति ‘छव्विहवंधगा वा एगविहवंधगा’ वा पइविधकर्मप्रकृतीनां बन्धका वा एकविधकर्म-

और काययोगवाले होते हैं । ‘उवजोगो, वन्तमाई, उस्सासगा वा नीसासगा वा आहारगा वा जहा एगिंदियाणं’ ये दोनो प्रकार के उपयोगवाले होते हैं । पाँचो रसोवाले, दो गंधोवाले, पाँचो वर्णोवाले और आठ प्रकार के स्पर्श वाले होते हैं । उच्छ्वासवाले निश्वासवाले होते हैं और आहारक होते हैं । इत्यादि जैसा एकेन्द्रिय के प्रकरण में कहा है वैसा ही समझलेना चाहिये । ‘विरया य अविरया य विरया विरया य’ ये संज्ञीपञ्चेन्द्रिय विरत, अविरत एवं विरताविरत होते हैं । ‘सक्रिया नो अक्रिया’ क्रिया सहित होते हैं, अक्रिया-क्रिया रहित नहीं होते हैं । ‘ते णं भंते ! जीवा किं सत्तविह वंधगा वा अट्टविह वंधगा वा’ हे भदन्त ! ये जीव क्या सात प्रकार की कर्मप्रकृतियों के बन्धक होते हैं ? अथवा आठ प्रकार की कर्मप्रकृतियों के बन्धक होते

વયજોગી, કાયજોગી’ મનોયોગવાળા વચ્ચનયોગવાળા અને કાયયોગવાળા હોય છે. ‘ઉવજોગો વન્તમાઈ, ઉસ્સાસગા વા નીસાસગાવા, આહારગાવા જહા એગિંદિયાણં’ એકેન્દ્રિય એવાની જેમ તેઓ બન્ને પ્રકારના ઉપયોગવાળા હોય છે પાંચે પ્રકારના રસોવાળા હોય છે, બે ગંધોવાળા, પાંચવર્ણોવાળા અને આઠ પ્રકારના સ્પર્શોવાળા હોય છે. ઉચ્છ્વાસ નિઃશ્વાસવાળા હોય છે. અને આહારક હોય છે. ‘વિરયાય અવિરયા ય વિરયાવિરયાય’ તે સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય વિરત-અવિરત અને વિરતાવિરત હોય છે ‘સક્રિયા નો અક્રિયા’ ક્રિયા સહિત હોય છે, અક્રિયા-ક્રિયા વિનાના હોતા નથી. ‘તે ણં’ ભંતે ! જીવા કિં સત્તવિહવંધગા વા અટ્ટવિહવંધગા વા’ હે ભગવન આ એવા શું સાત પ્રકારની કર્મપ્રકૃતિયોનો બંધ કરવાવાળા હોય છે ? અથવા આઠ પ્રકારની કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરવાવાળા

પ્રકૃતીનાં વન્ધકા વા ભવન્તીતિ પ્રશ્નઃ । મગવાનાહ-ગોયમા ! इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'सत्तविहवंधगा वा जाव एगविहवंधगा वा' सप्तविधकर्मप्रकृतीनां वन्धका वा संज्ञिपञ्चेन्द्रियाः यावत् एकविधवन्धका वा, अत्र यावत्पदेन अष्टविध-वन्धका वा पञ्चविधवन्धका वा, एतयोः संग्रहो भवतीति । 'तेणं भंते ! जीवा किं आहारसन्नोदत्ता जाव परिग्रहसन्नोदत्ता' ते खलु भदन्त । जीवाः संज्ञिपञ्चेन्द्रियाः किमाहारसंज्ञोपयुक्ता भवन्ति यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्ता वा भवन्ति अत्र यावत्पदेन भयसैथुनसंज्ञयोः परिग्रहो भवति 'नो सन्नोदत्ता वा' नो संज्ञो-पयुक्ता वा भवन्ति ? 'सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा' सर्वत्र पृच्छा-प्रश्नरूपा भणि-तव्या, पृथक् पृथक् रूपेण सर्वप्रश्नः करणीय इति । मगवानाह-गोयमा ! इत्यादि, 'गोयमा !' हे गौतम ! 'आहारसन्नोदत्ता जाव नो सन्नोदत्ता' आहारसंज्ञोप-

हैं ! 'छविह वंधगा वा' छ प्रकार की कर्मप्रकृतियों के बन्धक होते हैं अथवा 'एगविह वंधगा वा' एक प्रकार की कर्मप्रकृतियों के बंधक होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-गोयमा ! ये जीव 'सत्त-विहा वंधगा वा जाव एगविह वंधगा वा' सात प्रकार की कर्मप्रकृतियों के बन्धक होते हैं यावत् एक प्रकार की कर्मप्रकृतियों के बन्धक होते हैं । यहाँ यावत् शब्द से 'अष्टविधबंधका वा पञ्चविध बन्धका वा' इन पदों का संग्रह हुआ है । 'ते णं भंते ! जीवा किं आहारसन्नोदत्ता जाव परिग्रहसन्नोदत्ता' हे भदन्त ! वे संज्ञोपपंचेन्द्रिय जीव क्या आहारसंज्ञोपयुक्त यावत् परिग्रह संज्ञोपयुक्त होते हैं ? यहाँ यावत् पद से 'भय सैथुन संज्ञाओं' का ग्रहण हुआ है । अथवा 'नो सन्नोदत्ता वा' ये नो संज्ञोपयुक्त होते हैं ? इस प्रकार 'सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा' पृथक् पृथक् रूप से प्रश्न कर लेना चाहिये ।

હોય છે ? અથવા 'છવિહ વંધગા વા' છ પ્રકારની કર્મપ્રકૃતિયોનો બંધ કરવાવાળા હોય છે ? અથવા 'એગવિહવંધગા વા' એક પ્રકારની કર્મપ્રકૃતિનો બંધ કરવાળા હોય છે. ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-ગોયમા ! હે ગૌતમ ! આ જીવો 'સત્તવિહ વંધગા વા જાવ એગવિહ વંધગા વા' સાત પ્રકારની કર્મપ્રકૃતિયોનો બંધ કરવાળા પણ હોય છે અહિયાંયાવત્ શબ્દથી 'અષ્ટવિધ વંધગાવા પંચવિધ વંધગાવા' આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે 'તેણં ભંતે ! જીવાં કિં આહારસન્નોદત્તા જાવ પરિગ્રહસન્નોદત્તા' હે ભગવન તે સંજ્ઞોપપંચેન્દ્રિય જીવો શું આહાર સંજ્ઞોપયોગવાળા હોય છે ? યાવત્ પરિગ્રહ સંજ્ઞોપયોગવાળા હોય છે ? અહિયાં યાવત્પદથી 'ભય અને સૈથુન સંજ્ઞાઓ' ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે અથવા 'નોસન્નોદત્તા વા' આ નોસંજ્ઞોપયોગવાળા હોય છે ? આ રીતે 'સવ્વત્થ પુચ્છા ભાણિયવ્વા' જુદા જુદા રૂપથી પ્રશ્ન કરી લેવો જોઈએ.

યુક્તાઃ યાવત્ નો સંજોપયુક્તા વા ભવન્તિ । ‘કોહકસાઈ વા જાવ લોભકસાઈ વા અકસાઈ વા’ સંજિપશ્ચેન્દ્રિયાઃ ક્રોધકષાયિનો વા લોભકષાયિનો વા અકષાયિનો વા ભવન્તિ । ‘ઈત્થિવેયગા વા, પુરિસવેદગા વા, નપુંસગવેયગા વા અવેયગા વા’ તે સંજિપશ્ચેન્દ્રિયજીવાઃ સ્ત્રીવેદકા વા ભવન્તિ, પુરુષવેદકા વા ભવન્તિ નપુંસકવેદકા વા ભવન્તિ અવેદકા વા ભવન્તીતિ । ‘ઈત્થિવેદવંધગા વા, પુરિસવેદવંધગા વા, નપુંસગવેદવંધગા વા, અવંધગા વા’ સ્ત્રીવેદવન્ધકા વા ભવન્તિ પુરુષવેદવન્ધકા વા ભવન્તિ નપુંસકવેદવન્ધકા વા ભવન્તિ અવન્ધકા વા ભવન્તીતિ । ‘સન્ની નો અસન્ની’ સંજિપશ્ચેન્દ્રિયજીવાઃ સંજિનો ભવન્તિ નો અસંજિનો

હસ કે ઉત્તર મેં પ્રશુશ્રી કહતે હૈં—‘ગોયમા ! આહારસન્નોવઉત્તા, જાવ નો સન્નોવઉત્તા’ હે ગૌતમ ! યે આહાર સંજોપયુક્ત હોતે હૈં યાવત્ નો સંજોપયુક્ત હોતે હૈં । ‘કોહકસાઈ વા જાવ લોભકસાઈ વા’ યે ક્રોધ કષાય સે લેકર લોભકષાય સે યુક્ત હોતે હૈં । તથા કષાયો સે રહિત ભી હોતે હૈં । ‘ઈત્થિવેયગા વા પુરિસવેયગા વા નપુંસગવેયગા વા’ યે સ્ત્રી વેદવાલે ભી હોતે હૈં, પુરુષ વેદવાલે ભી હોતે હૈં ઓર નપુંસક વેદવાલે ભી હોતેહૈં । તથા—‘અવેયગા વા ભવંતિ’ વિના વેદવાલે ભી હોતે હૈં । ‘ઈત્થિવેદવંધગા વા, પુરિસવેદવંધગા વા નપુંસગવેદવંધગા વા, અવંધગા વા’ યે સ્ત્રીવેદ કે વન્ધક હોતે હૈં, પુરુષવેદ કે વન્ધક હોતે હૈં ઓર નપુંસક વેદ કે ભી વન્ધક હોતે હૈં । તથા હન તીનો વેદો કે અવંધક ભી હોતે હૈં । ‘સન્ની નો અસન્ની’ યે સંજી હી હોતે હૈં અસંજી નહીં હોતે હૈં । ‘સહંદિયા નો અણિંદિયા’ યે સેન્દ્રિય હોતે હૈં ઇન્દ્રિયો સે રહિત નહીં હોતે હૈં ।

આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રશુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—‘ગોયમા ! આહારસન્નોવઉત્તા, જાવ નો સન્નોવઉત્તા’ હે ગૌતમ ! આ આહારસંજોપયોગવાળા યાવત્ અથ સંજોપયોગવાળા હોય છે ‘કોહકસાઈ વા જાવ લોભકસાઈ વા અકસાઈ વા’ આ ક્રોધ કષાયથી લઈને લોભકષાયવાળા હોય છે, તથા કષાયોથી રહિત પણ હોય છે ‘ઈત્થિવેયગા વા પુરિસવેયગા વા નપુંસગવેયગા વા’ આ સ્ત્રીવેદવાળા પણ હોય છે, પુરુષવેદવાળા પણ હોય છે, અને નપુંસક વેદવાળા પણ હોય છે. તથા ‘અવેદગા વા ભવંતિ’ તેઓ વેદવિનાના પણ હોય છે. ‘ઈત્થિવેદવંધગા વા, પુરિસવેદવંધગા વા નપુંસકવેદવંધગા વા, અવંધગા વા’ આ સ્ત્રીવેદનો અથ કરવાવાળા પણ હોય છે, પુરુષવેદનો અથ કરવાવાળા પણ હોય છે, અને નપુંસકવેદનો અથ કરવાવાળા પણ હોય છે. અને ત્રણે પ્રકારના વેદોનો અથ નથી પણ કરતા. ‘સન્ની નો અસન્ની’ આ સંજી જ હોય છે. અસંજી હોતા નથી. ‘સહંદિયા નો અણિંદિયા’ આ ઇન્દ્રિયોવાળા હોય છે. ઇન્દ્રિય

भवन्तीति । ‘संदिद्या नो अणिदिद्या’ सेन्द्रियाः संज्ञिपच्येन्द्रिया इन्द्रिय-
वन्तो भवन्ति नो अनिन्द्रिया भवन्ति । ‘संचिद्वणा जहन्नेण एक्कं समयं’
संस्थानमवस्थितिः संज्ञिपच्येन्द्रियाणां जघन्येनैकं समयं कृतयुग्म कृतयुग्म
संज्ञिपच्येन्द्रियाणामवस्थितिरेकं समयं समयानन्तरं संख्यानन्तरसदृभावा
दिति । ‘उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेगं’ उत्कर्षेणावस्थिति सागरो-
पमशतपृथक्त्वम्, सातिरेकम्, कृतयुग्मकृतयुग्मसंज्ञिपच्येन्द्रियाणामुत्कर्षेण
अवस्थानं कालस्थितिः सागरोपमशतपृथक्त्वं द्विसागरोपमशतादारभ्य नव
सागरोपमशतपर्यन्तं सातिरेकं भवति, यत इतः परं ते संज्ञिपच्येन्द्रियतया न
भवन्तीति भावः । ‘आहारो तहेव जाव नियमं छदिसि’ आहार स्तथैव आहारो
देशकवदेव, क्रियत्पर्यन्तं तत्राह-यावत् नियमात् षड्दिशि संज्ञिपच्येन्द्रियाणामाहारो
नियमतः षड्दिग्भ्योऽपि भवति लोकमध्येऽवस्थितानामेषां व्याघाताभावत् इति,

‘संचिद्वणा जहन्नेण एक्कं समयं’ संचिद्वणा इन कृतयुग्मकृतयुग्म राशि-
प्रमित संज्ञिपच्येन्द्रिय जीवों की अवस्थिति जघन्य से एक समय की होती
हैं कारण कि एक समय के बाद संख्यांतर होने की संभवना रहती है
और ‘उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेगं’ उत्कृष्ट से कुछ अधिक
सागरोपम शतपृथक्त्व की होती है । बाद में ये अन्य राशिप्रमित हो
जाते हैं । अर्थात् संज्ञिपच्येन्द्रिय रूपता इनमें नहीं रहती है दो सागरो-
पम शत से लेकर नौ सागरोपम शतका नाम सागरोपम शत पृथक्त्व
है । ‘आहारो तहेव जाव नियमं छदिसि’ आहार का प्रकरण प्रज्ञापना
के आहार पद २८ वां के जैसे है अर्थात् इनका आहार लोक के मध्य
में इनकी स्थिति होने के कारण नियम से यावत् छहों दिशाओं से
होता है । क्योंकि उस में इन्हें किसी भी प्रकार का व्याघात नहीं होता

વિનાના હોતા નથી. “સંચિદ્વણા જહણેણ એકકં સમય” આ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ
રાશિ પ્રમાણવાળા સંજી પચેન્દ્રિય છવોની સંચિદ્વણા-અવસ્થિતિ જઘન્યથી
એક સમયની હોય છે, કારણ કે એક સમય પછી સંખ્યાંતર હોવાની સંભવના
રહે છે. અને ‘ઉક્કોસેણં સાગરોવમસયપુહુત્તં સાઈરેગં’ ઉત્કૃષ્ટથી કંઈ વધારે
સાગરોપમશત પૃથક્ત્વની હોય છે. તે પછી તેઓ :અન્ય ૨.૨ી પ્રમાણવાળા
થઈ જાય છે અર્થાત્ સંજી પચેન્દ્રિય પણ તેઓમાં રહેતું નથી એ સાગરો-
પમ શતથી નવ સાગરોપમશતનું નામ સાગરોપમ શત પૃથક્ત્વ છે, ‘આહારો
તહેવ જાવ નિયમ છદિસિ’ તેઓનો આહાર લોકની મધ્યમાં તેઓ રહેલા
હોવાને કારણે નિયમથી યાવત્ છઠ્ઠે દિશાઓથી હોય છે. કેમ કે તેમાં તેઓને
કોઈપણ રીતનો વ્યાધાત થતો નથી. અહિંયાં યાવત્પદથી ત્રણ દિશાઓથી પણ

‘ઠિઈ જહન્નેણં એકં સમયં’ સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિયાણાં સ્થિતિર્જગન્થેનૈકં સમયં ભવતિ, ‘ઉત્ત્રકોસેણં તેત્તીસં સાગરોવમાઈ’ ઉત્કર્ષેણ ત્રયસ્વિસત્સાગરોપમાણિ । ‘છ સમુગ્ધાયા આદિલ્લા’ પદ્ સમુદ્ધાતા આદિમાઃ વેદના કષાયાદિકાઃ પદ્ કેવલિ સમુદ્ધાત-વર્જાં ભવન્તીતિ । સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિયાણામેવમાયાઃ વેદનાકષાયમારણાન્તિકવૈક્રિય તૈજસાહારકારુધાઃ પડેવ સમુદ્ધાતા ભવન્તિ, સત્તમરતુ કેવલિસમુદ્ધાતઃ કેવલિનામેવ ભવતિ તેષાં શેષાઃ પદ્સમુદ્ધાતા ન ભવન્તિ, ઇન્દ્રિયોપયોગાભાવેન કેવલિનામનિન્દ્રિયત્વાદિતિ તે સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિયત્વેન ન ગૃહ્યન્તે इति भावः । ‘મારણાંતિય સમુગ્ધાણં સમોહયા વિ મરંતિ’ તે સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિય જીવાઃ મારણાન્તિક સમુદ્ધાતેન સમવહતા અપિ મ્રિયન્તે ‘અસમોહયા વિ મરંતિ’ અસમવહતા અપિ મ્રિયન્તે । ‘ઉવટ્ટુણા જહેવ ઉવત્તઓ’ ઉદ્વર્તેશ ચપ્પેવોપપાતઃ ચત્તસમ્મ્યોઽપિ ગતિભ્યઃ

હૈ । ‘ઠિઈ જહન્નેણં એકં સમયં’ इनकी जघन्य स्थिति एक समय की होती है और ‘उत्तक्रोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइ’ उत्कृष्ट स्थिति ३३ सागरोपम की होती है । ‘छ समुग्धाया आदिल्ला’ आदि के छहसमुद्घात होते हैं । इन के केवल ससुद्घात नहीं होता है । वेदना, कषाय मारणान्तिक वैक्रिय तैजस और आहारक ये छ ससुद्घात इनके होते हैं । केवलियों के वे ६ ससुद्घात नहीं होते हैं । क्योंकि इनमें इन्द्रिय जन्य उपयोग का अभाव रहता है । इसलिये इनमें संज्ञी पंचेन्द्रिय संज्ञा नहीं होती है । इसीलिये इन्हे अनिन्द्रिय कहा गया है । ‘मारणांतिय समुग्धाणं समोहया वि मरंति’ ये संज्ञीपंचेन्द्रिय जीव मारणान्तिक समुद्घात से समवहत होकर भी मरते हैं । ‘असमोहया वि मरंति’

‘થાય છે. ચાર દિશાઓથી પણ થાય છે અને પાંચ દિશાઓથી પણ હોય છે. આ પાઠ ગ્રહણ કરાયો છે. ‘ઠિઈ જહન્નેણં એકં સમયં’ તેઓની જઘન્ય સ્થિતિ-આયુકાળ એક સમયની હોય છે. અને ‘ઉત્ત્રકોસેણં તેત્તીસં સાગરોવમાઈ’ ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ તેત્રીસ સાગરોપમની થાય છે. ‘છ સમુગ્ધાયા આદિલ્લા’ અને તેઓના આદિના એટલે કે-વેદના કષાય મારણાન્તિક વૈક્રિય અને તૈજસ, આ છ સમુદ્ધાતો હોય છે તેઓને કેવલી સમુદ્ધાત હોતો નથી. કેમ કે કેવલી સમુદ્ધાત કેવલીએને જ હોય છે, કેવલિએને છ સમુદ્ધાતો હોતા નથી. ઇન્દ્રિય જન્ય ઉપયોગનો અભાવ રહે છે. તેથી તેઓમાં સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય સંજ્ઞા હોતી નથી. તેથી તેઓને અનિન્દ્રિય કહ્યા છે. ‘મારણાંતિય સમુગ્ધાણં સમોહયા વિ મરંતિ’ આ સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવો મારણાન્તિક સમુદ્ધાતથી સમુદ્ધાત -કરીને પણ મરે છે. અને ‘અસમોહયા વિ મરંતિ’ મારણાન્તિક

પ્રોક્તસ્તથૈવ ઉદ્વર્તના નિસ્સરણમ્ ઉદ્વૃત્ત્ય ગમનમપિ તેષાં ચતસૃષ્વપિ ગતિષુ નૈરયિક
તિર્યગ્-પ્રત્યુષ્પ-દેવેષુ મન્વન્તીતિ ભાવઃ, ન કત્થહ પહિસેહો' ન કુત્રચિદપિ પ્રતિ-
ષેધઃ 'જાવ અણુત્તરવિમાણત્તિ' યાવદનુચરવિમાનમિતિ, નારકાદિ ચતુર્ગતિષ્વપિ
પચ્છેન્દ્રિયાણા મુદ્વર્તના મન્વન્તિ અણુત્તરવિમાનપર્યન્તં કસ્યાપિ સ્થાનસ્ય પ્રતિષેધો
નાસ્તીતિ । 'અહ મંતે ! સર્વે પાણા જાવ અણંતસુતો' અથ મદન્ત ! સર્વે પાણા
યાવત્ સર્વે સત્તાઃ કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ સંજ્ઞિપચ્છેન્દ્રિયતયા કિં સમુત્પન્ન પૂર્વા ? હે ગૌતમ !
સર્વે પાણાઃ સર્વે ભૂતાઃ સર્વે જીવાઃ સર્વે સત્તાઃ કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મસંજ્ઞિપચ્છેન્દ્રિયતયા
અસકૃત્ અથવા અનન્તકૃત્વઃ સમુત્પન્નપૂર્વા इति । 'एवं सोलससु वि जुम्मेसु भाणिय-

और मारणान्तिक समुद्घात से समवहत हुए बिना भी मरते हैं ।
'उचट्टणा जहेव उववाओ' इनमें उपपात के जैसे उद्वर्तना होती हैं ।
अर्थात् इनका चारों गतियों में उपपात होता है और चारों गतियों के
जीवों का इनमें उत्पाद होता है । 'न कत्थह' पडिसेहो' इन्हें आनेजाने
की कहीं पर भी रुकावट नहीं है । 'जाव अणुत्तरविमाणत्ति' यावत्
ये अनुत्तर विमानों तक जाते हैं अर्थात् वहां तक इनका उत्पाद होता
है । 'अह मंते ? सर्वे पाणा जाव अणंतसुतो' हे भदन्त ! क्या समस्त
प्राण यावत् समस्त सत्त्व, कृतयुगम कृतयुगमसंज्ञिपचेंद्रिय रूप से उत्पन्न
हो चुके हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—'सर्वे पाणा सर्वे भूआ सर्वे
जीवा सर्वे सत्ता' हे गौतम ! समस्त प्राण, समस्त भूत, समस्त जीव
और समस्त सत्त्व अक्षत-वारंवार अथवा अनन्तवार कृतयुगमकृतयुगम
संज्ञिपचेंद्रिय रूप से उत्पन्न हो चुके हैं । 'एवं सोलससु वि जुम्मेसु

સમુદ્ઘાત કયાં બિના પણ મરે છે. 'ઉચટ્ટણા જહેવ ઉવવાઓ' તેઓને ઉપપાતની જેમ જ ઉદ્વર્તના પણ હોય છે. અર્થાત્ તેઓને ચારે ગતિયોમાં ઉપપાત હોય છે. અને ચારે ગતિયોના જીવોના તેઓમાં ઉત્પાદ હોય છે. 'ન કત્થહ પહિસેહો' તેઓને અવશ્યવરમાં ક્યાંઈ પણ રૂકાવટ થતી નથી. 'જાવ અણુત્તરવિમાણત્તિ' યાવત્ તેઓ અણુત્તર વિમાનો સુધી જાય છે અર્થાત્ ત્યાં સુધી તેઓનો ઉત્પાદ હોય છે 'અહમંતે ! સર્વે પાણા જાવ અણંતસુતો' હે ભગવન સધળા પ્રાણો, સધળા સત્ત્વો, કૃતયુગ્મ, કૃતયુગ્મ સંજ્ઞી પચેન્દ્રિય પણાથી ઉત્પન્ન થઈ ચુક્યા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'સર્વે પાણા સર્વે ભૂઆ સર્વે જીવા સર્વે સત્તા' હે ગૌતમ ! સધળા પ્રાણો સધળા ભૂતો, સધળા જીવો. અને સધળા સત્ત્વો, અસકૃત-વારંવાર અથવા અનંતવાર કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજ્ઞી પચેન્દ્રિય પણાથી ઉત્પન્ન થઈ ચુક્યા

‘જાવ અણંતસ્વુત્તો’ एवं कृतयुग्म कृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रिययुग्मेषु उपपातादारभ्य अनन्त कृत्वः समुत्पन्न पूर्वा इति कथितं तथैव ‘सोलससु वि वि जुम्मेसु भाणियच्चं जाव अणंत खुत्तो’ षोडशष्वपि द्वितीय कृतयुग्म त्र्योज संज्ञिपञ्चेन्द्रियत आरभ्य यावत् कल्योजकल्योज संज्ञिपञ्चेन्द्रियपर्यन्तेषु युग्मेषु भणितव्यं यावद् अनन्त कृत्वः अनन्तशस्तद्रूपेण पूर्वं समुत्पन्ना इति पर्यन्तमिति भावः । ‘नवरं परिमाणं जहा वेदियाणं’ नवरं कृतयुग्म कृतयुग्म संज्ञेन्द्रियाणां यथा द्वीन्द्रियाणां षोडश, संख्याता वा असंख्यातावेति । ‘सेसं तहेव’ शेषं परिमाणव्यतिरिक्त मुपपातादिकं तथैव-पूर्ववदेव पूर्वोक्त प्रथमयुग्मवदेव प्रथमयुग्मे यत् यथा कथितं तत्सर्वं तथैव

‘भाणियच्चं જાવ અણંતસ્વુત્તો’ હસી પ્રકાર સે ‘કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિયોં મેં સમસ્ત પ્રાણાદિ જીવોં કા જૈસા ઉપપાત સે લેકર અનન્ત વાર તક કા ઉપપાત હો ચુકના કહા ગયા હૈ ‘દ્વિતીય કૃતયુગ્મ ત્ર્યોજ સંજ્ઞિપંચેન્દ્રિય રુપ સે ડનકે ઉપપાત કો લેકર યાવત્ કલ્યોજ કલ્યોજ સંજ્ઞિપંચેન્દ્રિય પર્યન્ત યુગ્મોં સેં ઘે અનન્તવાર ઉત્પન્ન હો ચુકે હેં એસા કહ લેના ચાહિયે । ‘નવરં પરિમાણં જહા વેદિયાણં’ દ્વીન્દ્રિય જીવોં કા જૈસા પરિમાણ ૧૬ અથવા સંખ્યાતઆદિ રુપ સે કહા ગયા હૈ ડસી પ્રકાર સે ડન કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્માદિ સંજ્ઞિપંચેન્દ્રિય જીવોં કા બી પરિમાણ જાનના ચાહિયે । ‘સેસં તહેવ’ પરિમાણ સે અતિરિક્ત ઉપપાત આદિ જિસ જિસ પ્રકાર સે પ્રથમ યુગ્મ મેં કહે ગયે હેં વૈસે હી વે સબ જાનના ચાહિયે ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે ભદન્ન ! જૈસા આપને યહ કહા હૈ વહ સબ

છે, ‘एवं सोलससु वि जुम्मेसु भाणियच्चं जाव अणंतस्वुत्तो’ આજ પ્રમાણે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિયોમાં સઘળા પ્રાણ વિગેરે જીવોના ઉપપાતથી લઈને અનંતવાર સુધીનો ઉપપાત થઈ ચૂક્યો છે, એ કથન સુધી જે રીતે કહેલ છે, એજ પ્રમાણે બીજા કૃતયુગ્મ ત્ર્યોજ સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય પણથી તેના ઉપપાતથી લઈને યાવત્ કલ્યોજ કલ્યોજ સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય પર્યન્તના યુગ્મોમાં તેઓ અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચૂક્યા છે. તેમ કહેવું જોઈએ. ‘नवरं परिमाणं जहा वेदियाणं’ જે ઇન્દ્રિય જીવોનું પરિમાણ જે પ્રમાણે ૧૬ સોજ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત પણાગી કહેલ છે, એજ પ્રમાણે આ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવોનું પરિમાણ પણ સમજવું. ‘सेसं तहेव’ પરિમાણ શિવાય ઉપપાત વિગેરે જે રીતે પહેલા યુગ્મોમાં કહેલ છે. તેજ પ્રમાણે તે સઘળું કથન સમજ લેવું.

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન આપ દેવાનુગ્રિયે જે આ વિષયના

ज्ञातव्यमिति 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥
इति चत्वारिंशत्तमे शतके प्रथमे शते प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥४०॥१॥

॥ इति चत्वारिंशत्तमे शतके प्रथमे शते प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥४०॥१॥

द्वितीयोद्देशकः २

'पढम समय कडजुम्मकडजुम्म सन्निपंचिदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति'
प्रथम समय कृतयुग्मकृतयुग्मसंज्ञिञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ?
इत्यादि प्रश्नः, उत्तरमाह—'उववाओ परिमाणं आहारो जहा एएसिं चेव पढमुद्दे-

सर्वथा सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना
की और नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर ये संयम और तप
से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

४० वें शतक के प्रथम शत में प्रथम उद्देशक समाप्त ॥४०-१॥

'पढमसमय कडजुम्मकडजुम्म सन्निपंचिदियाणं भंते ! कओ
उववज्जंति' इत्यादि

टीकार्थ—हे भदन्त ! प्रथम समय कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित
संज्ञिपञ्चेन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ?
क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा तिर्यग्योनिकों
में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न
होते हैं ? अथवा देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? इसके उत्तर में
प्रभुश्री कहते हैं—'उववाओ परिमाणं आहारो जहा एएसिं चेव पढमु-

संयममां कथन करेला छे. ते सधणुं कथन सर्वथा सत्य ज छे. हे लगवन्
आप देवानुप्रियनु कथन सत्य ज छे. आ प्रभाणु कहीने गौतमस्वामीणे प्रभुश्रीने
वन्दना करी नमस्कार कर्या वन्दना नमस्कार करीने तपअने संयमथी पोताना
आत्माने भावित करता थका पोताना स्थान पर विराजमान थया. ॥सू०१॥

॥आणीसमां शतकमा पडेला शतकने पडेला उद्देशो समाप्त ॥४०-१॥

॥पडेला शतकना गीळ उद्देशानो प्रारंभ—

'पढमसमय कडजुम्मकडजुम्मसन्नि पंचिदियाण भंते कओ उववज्जंति' छ.

टीकार्थ—हे लगवन् प्रथम समय कृतयुग्म कृतयुग्म राशिवाणा संज्ञि
पञ्चेन्द्रिय लुवे कया स्थान विशेषी आवाने उत्पन्न थाय छे ? शुं तेओ
नैरयिकेमांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा तिर्यग्योनिकेमांथी आवीने
उत्पन्न थाय छे ? अथवा मनुष्येमांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा
देवेमांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? आ प्रश्नना उत्तरमां प्रभुश्री छे छे
हे—'उववाओ परिमाणं आहारो जहा एएसिं चेव पढमुद्देसप' हे गौतम ! तेओने

સર્' ઉપપાતઃ પરિમાણમાહારો યથા દ્વૈતેષામેવ ચત્વારિંશત્તમશતકે પ્રથમોદ્દેશકે
 ઉપપાતપરિમાણાહારો યથા દ્વૈતેષાં પ્રથમોદ્દેશકે કથિતા રતથૈવ વિજ્ઞેયાઃ । તત્રો
 પપાતો નૈરયિકાદિભ્ય સર્વેભ્યઃ ન કુત્રતોઽપિ પ્રતિષેધઃ, પરિમાણં ષોડશ વા
 સંખ્યાતા અસંખ્યાતા વા ઉત્પદ્યન્તે । આહારો નિષ્ક્રમાત્ પદ્મદિશમ્ । 'ઓગાહના
 વંધો વેદો વેદના ઉદય ઉદીરણાય જહા વેદિયાણં પદમસમહયાણં' અવગાહના
 વન્ધો વેદો વેદના ઉદય ઉદીરણા ચ યથા-દ્વીન્દ્રિયાણાં પ્રથમસામયિકાનામ્, યથા
 પ્રથમસામયિક દ્વીન્દ્રિયાણાં વન્ધવેદ વેદનાદિક વિપયે કથિતં તથૈવ इहापि ज्ञातव्य-
 मिति । 'तदेव कण्ठलेस्सा वा जात्र सुदकलेस्सा वा' तथैव कृष्णलेख्या वा यावत्

દેસર્' હે ગૌતમ ! इनका उपपात परिमाण और आहार जैसा इसी
 शतक के प्रथम उद्देशक में कहा गया है वैसा ही जानना चाहिये ।
 इस प्रकार इन का उपपात सम्बन्ध चारों गतियों में से होता है ।
 किसी भी गति में से आकर के इनके उपपात होने का प्रतिषेध
 नहीं है एक साथ इनके उत्पन्न होने का परिमाण १६ अथवा
 संख्यात अथवा असंख्यात है । आहार इनका निष्य से चारों
 दिशाओं से होता है । 'ओगाहना वंधो, वेदो वेयणा, उदय
 उदीरणा य जहा वेदियाणं पदमसमहयाणं' प्रथम सामयिक दो
 इन्द्रिय जीवों की जैसी अवगाहना कही गई है, जैसा बन्ध कहा
 गया है, वेद कहा है, वेदना कही गई है । जैसा उदय कहा
 गया है और जैसी उदीरणा कही गई है वैसा ही यह सब कथन इन
 कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमाण संज्ञीपचेन्द्रियों के सम्बन्ध में भी कर
 लेना चाहिये । प्रथम समयवर्ती कृतयुग्म कृतयुग्मसंज्ञीपचेन्द्रिय जीव

ઉપપાત, પરિમાણ અને આહાર આ શતકના પહેલા ઉદ્દેશમાં જે પ્રમાણે
 કહેલ છે, તેજ પ્રમાણેનો સમજવો. આ રીતે તેઓનો ઉપપાત ચારે ગતિવાળા
 જીવોમાંથી હોય છે. કેઈ પણ ગતિમાંથી આવીને તેઓનો ઉપપાત થવાનો
 નિષેધ કહેલ નથી. એક સાથે તેઓને ઉત્પન્ન થવાનું પરિમાણ ૧૬ સોળ
 અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત કહેલ છે તેઓનો આહાર નિષ્યમાંથી છ
 એ દિશાઓમાંથી હોય છે. 'ઓગાહના વંધો, વેદો વેચણા ઉદયો ઉદીરણાય જહા
 વેદિયાણં પદમસમહયાણં' પ્રથમ સમયવાળા જે ઈન્દ્રિય જીવોની અવગાહના
 જે પ્રમાણેની કહેલ છે, જે રીતનો બંધ કહેલ છે જે રીતે વેદના કહેલ છે,
 વેદનપણુ જે રીતે કહેલ છે, જેવા ઉદયવાળા તેઓને કહેલ છે. જે રીતના
 ઉદીરક કહેલ છે, એજ પ્રમાણેનું આ સઘળું કથન આ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ
 રાશિવાળા સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં પણ કહેવું જોઈએ પ્રથમ
 સમયવર્તી કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવ કૃષ્ણલેખ્યાથી

શુક્લલેશ્યાઃ પ્રથમ સમય કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિયા ભવન્તીતિ । 'સેસં જહા વેંદિયાણં પદમસમદ્યાણં જાવ અણંતચુત્તો' શેષં પૂર્વં કથિતાતિરિક્તં સર્વં યથા દ્વીન્દ્રિયાણાં પ્રથમ સામયિકાનાં કથિતં તથૈવ અનન્તવારં સમુત્પન્નપર્વાઃ एतत्પ-
ર્યન્તમ્ 'નવરં' इत्थिवेदगा वा पुरितवेदगा वा नपुंसगवेदगा वा, सन्निणो अस-
न्निणो' नवरं-केवलम् द्वीन्द्रिय प्रकरणापेक्षया इदमेव वैलक्षण्यं यत् प्रथमसमय
कृतयुग્म कृतयुग્म સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિયા સ્ત્રીવેદકા વા ભવન્તિ પુરુષવેદકા વા ભવન્તિ
નપુમકવેદકા વા ભવન્તિ, કિન્તુ અવેદકા ન ભવન્તીત્યેતદેવ વૈલક્ષણ્યમ્ । સંજ્ઞિનો
અસંજ્ઞિનો વા ભવન્તીતિ । તત્ર તુ 'નો અહન્ત્રી' इति पाठः एतदेव वैलक्षण्यम् । 'સેસં

કૃણલેશ્યા સે લેકર યાવત્ શુક્લલેશ્યાવાલે હોતે હેં સો इनके
सम्बन्ध में भी ऐसा ही कथन जानना चाहिये । 'સેસં' જહા વેદિયાણં
પદમસમદ્યાણં જાવ અણંતચુત્તો' યાત્રી કા ઝૌર કથન પ્રથમ સમય-
વર્તી' દો દ્વિન્દ્રિય જીવોં કે સમ્બન્ધ મેં જૈસા કહા ગયા હૈ વૈસા હી હૈ ।
યહ કથન 'યાવત્ એ સમસ્ત પ્રાણ આદિ જીવ અનન્તવાર પ્રથમ સમય
વર્તી' કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ સે ઉત્પન્ન હો ચુકે હેં' યહાં તક કરના
ચાહિયે । પરન્તુ જો વિશેષતા દ્વીન્દ્રિય પ્રકરણ કી અપેક્ષા હસ મેં હૈ વહ
'નવરં' इत्थिवेदगा वा पुरितवेदगा वा नपुंसगवेदगा वा सन्निणो अस-
न्निणो' इस सूत्र पाठ द्वारा यहां स्पष्ट की गई हैं द्वीन्द्रिय जीव केवल
एक नपुंसक वेदवाले ही होते हैं तब कि ये तीनों वेदवाले होते हैं । ये
अवेदक नहीं होते हैं । द्वीन्द्रिय असंज्ञी ही होते हैं । ये प्रथम समय-
वर्ती कृतयुग્म कृतयुगम् राशिप्रमित पंचेन्द्रिय जीव संज्ञी भी होते हैं
और असंज्ञी भी होते हैं ।

લઈને યાવત્ શુક્લલેશ્યાવાળા હોય છે. આ કથન સુધીનું સઘળું કથન આમના
સંબંધમાં પણ કહેવું જોઈએ. 'સેસં' જહા વેદિયાણં પદમસમદ્યાણં જાવ
અણંતચુત્તો' યાત્રીનું સઘળું કથન પ્રથમ સમયમાં રહેનારા બે ઇન્દ્રિય જીવોના
સંબંધમાં બે પ્રમાણે કહેલ છે, એજ પ્રમાણે આ સઘળું કથન યાવત્ તેઓ
સઘળા પ્રાણો વિગેરે જીવો અનંતવાર પ્રથમ સમયમાં રહેનારા કૃતયુગ્મ
કૃતયુગ્મ રૂપથી ઉત્પન્ન થઈ ચુક્યા છે આ કથન સુધી કહેવું જોઈએ. પરંતુ બે
વિશેષપણ છે. એટલે કે બે ઇન્દ્રિય પ્રકરણ કરતાં બે જુદાપણું આવે છે, તે
'નવરં' इत्थिवेदगा वा पुरितवेदगा वा नपुंसगवेदगा वा सन्निणो असन्निणो'
આ સૂત્ર પાઠ દ્વારા અહિંયાં બતાવેલ છે. બે ઇન્દ્રિય જીવો કેવળ એક નપુંસક
વેદવાળા જ હોય છે. બ્યારે આ ત્રણે વેદવાળા હોય છે આ અવેદક હોતા
નથી. દ્વીન્દ્રિય જીવો અસંજી જ હોય છે, આ પ્રથમ સમયવર્તી કૃતયુગ્મ

તદેવ' શેષં નવરમિત્યાદિના યત્ કથિતં તદતિરિક્તં સર્વં પ્રથમસામયિક દ્વીન્દ્રિય-
વદેવ જ્ઞાતવ્યમિતિ । 'एवं सोलससु वि जुम्मेसु' एवं પ્રથમસમય કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ
સંજ્ઞિપશ્ચેન્દ્રિયસ્ય યથા કથિતં તથૈવ કૃતયુગ્મ ટ્ર્યોજાદિરૂપ દ્વિતીય યુગ્મત આરમ્ભ
ષોડશસ્વપિ યુગ્મેષુ જ્ઞાતવ્યમ્, 'परिमाणं तदेव सत्त्वं' પરિમાણં તથૈવ સર્વં પરિમાણં
સર્વમપિ પ્રથમસમય દ્વીન્દ્રિયવદેવ જ્ઞાતવ્યમિતિ । 'सेवं भंते ! सेवं भंते त्ति' તદેવં
મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! इति॥

॥ इति चत्वारिंशत्तमे शतके प्रथमे शते द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥४०॥१॥२

'एवं एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा तदेव' एवमत्रापि शते प्रथमे एकादशो-

'एवं सोलससु वि जुम्मेसु' जैसा यह कथन प्रथम समय कृतयुगम
जीवों के सम्बन्ध में कहा गया है उसी प्रकार से प्रथम समय कृतयुगम
त्र्योजादि रूप द्वितीययुगम से लेकर सोलहयुगमों में भी कह लेना
चाहिये । 'परिमाणं तदेव सत्त्वं' प्रथम समयवर्ती द्वीन्द्रिय के जैसा
सर्वत्र की कथन यहां कर लेना चाहिये ।

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' 'हे भदन्त जैसा आपने यह कहा है
वह सर्वथा सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतम ने प्रभुश्री को
वन्दना की नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और
तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

४० वे शतक में प्रथम शत में यह द्वितीय उद्देशक समाप्त हुआ

॥४०-१-२॥

કૃતયુગ્મ રાશિવાળા પંચેન્દ્રિય ભવેા સંજ્ઞી પણ હોય છે, અને અસંજ્ઞી પણ
હોય છે, 'સેસં તદેવ' બાકીનું બીજું સઘળું કથન પ્રથમ સમયવાળા દ્વીન્દ્રિય
ભવેાના કથન પ્રમાણે જ છે. 'एवं सोलससु वि जुम्मेसु' આ કથન જે પ્રમાણે
પ્રથમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ટ્ર્યોજ વિજેરે રૂપથી બીજા યુગ્મથી લઈને
સોળે યુગ્મોમાં પણ કહેવું જોઈએ 'परिमाणं तदेव सत्त्वं' પ્રથમ સમયમાં
રહેવાવાળા દ્વીન્દ્રિય ભવેાના કથન પ્રમાણે જ બધે ઠેકાણે અહિયા પરિમાણ
સંબંધી કથન કહેવું જોઈએ.

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં
જે પ્રમાણે કથન કરેલ છે. તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ હે ભગવન્ આપ
દેવાનુપ્રિયનું તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમ-
સ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરી
ને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના
સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ.૦૧॥

આળીસમા શતકમાં પહેલા શતકને બીજા ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૪૦-૧-૨॥

દેશકાઃ જ્ઞાતવ્યાઃ । તત્ર 'પદમો તદ્વો પંચમો ય સરિસગમા' પ્રથમસ્તૃતીયઃ પચ્ચ-
મશ્ચ સદશગમા એકાલાપકા इत्यर्थः । 'સેસા અદ્વ વિ સરિસગમા' શેષા અટાવપિ
દ્વિતીયચતુર્થપષ્ઠસપ્તમાષ્ટમ નવમ દશમેકાદશાહ્યાઃ સદશગમા સમાનાઃ । 'ચઉત્થ
છટ્ટ અદ્દમ દસમેસુ નત્થિ વિસેમો કાયવ્વો' ચતુર્થ પષ્ઠાદ્દમ દશમેપુ નાસ્તિ વિશેષઃ
કર્તવ્ય इति । સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! इति
॥ ચત્વારિંશત્તમે શતકે પ્રથમં સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિયમહાયુગ્મશતં સમાપ્તમ્ ॥૪૦૧૨॥

ટીકાર્થ-‘એવં एत्थ वि एक्कारस उद्देशगा’ इस प्रथम शत में भी
११ उद्देशक हैं । इन -में ‘पदमो तद्वो पंचमो य सरिसगमा’ प्रथम
द्वितीय उद्देशक और पांचवा उद्देशक ये तीन एकसरीखे आलापकवाले
हैं । और ‘सेसा अद्व वि सरिसगमा’वाकी के आठ उद्देशक द्वितीय,
चतुर्थ, षष्ठ, उद्देशक सप्तम, अष्टम, नवम, दसम और ११ वां ये आठ
उद्देशक समान आलापवाले हैं । ‘चउत्थ छट्ट अद्वम दसमेसु नत्थि
विसेसो कायव्वो’ चतुर्थ छट्टे आठ वे इन उद्देशको में कोई विशेषता
कर्त्तव्य नहीं है ‘सेवं मंते ! सेवं मंते ! त्ति’ हे मदन्त ! आपका यह
कथन सर्वथा सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को
वन्दना की और नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर वे
संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर
विराजमान हो गये ।

४० वे शतक में संज्ञिपंचेन्द्रिय महायुगम शत समाप्त हुआ ॥४०-१॥

‘एवં एत्थवि एक्कारस उद्देशगा’ આ પહેલા શતકમાં પણ ૧૧ અગિયાર
ઉદ્દેશાઓ છે. તેમાં ‘પદમો તદ્વો પંચમો ય સરિસગમા’ પહેલો ઉદ્દેશો બીજો ઉદ્દેશો
અને પાંચમો ઉદ્દેશો આ ત્રણ ઉદ્દેશાઓ સરખા આલાપકોવાળા હોય છે. અને
‘સેસા અદ્વ વિ સરિસગમા’ બાકીના આઠ ઉદ્દેશાઓ એટલે કે બીજો, ચોથો,
છઠ્ઠો, સાતમો આઠમો નવમો દશમો અને અગિયારમો આ આઠ ઉદ્દેશાઓ
સરખા આલાપકોવાળા છે. ‘ચઉત્થ છટ્ટ અદ્દમદસમેસુ નત્થિ વિસેસો કાયવ્વો’
ચોથો, છટ્ટો આઠમો દશમો આ ઉદ્દેશાઓમાં કોઈ પણ વિશેષપણું કહેલ નથી.

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું આ કથન
સર્વથા સત્ય જ છે, હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું આપ્ત કથન સર્વથા સત્ય
જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને
નમસ્કર કર્યા વંદના નમસ્કાર કર્યા પછી સંયમ અને તપથી યોતાના આત્માને
ભાવિત કરતા થકા યોતાના સ્થાનપર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ.૦૧॥

આબીસમા શતકમાં સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત ॥૪૦-૧-૨॥

‘अह वितियं कणहलेस्स सन्नि पंचिदियमहाजुम्मसयं’

मूलम्—कणहलेस्स कडजुम्मकडजुम्म सन्नि पंचिदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति, तहेव जहा पढमुद्देसओ सन्नीणं । नवरं बंधो वेओ उदय उदीरणा लेस्सा बंधगसन्ना कसायवेद बंधगा य एयाणि जहा वेदियाणं । कणहलेस्साणं वेओ तिविहो अवेदगा नत्थि । संचिट्टणा जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमवभहियाइं । एवं ठिईए वि । नवरं ठिईए अंतोमुहुत्तमवभहियाइं न भन्नंति । सेसं जहा एएसिं चेव पढमुद्देसए जाव अणंतखुत्तो । एवं सोलससु वि जुम्मेसु । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥४०—२॥

पढससमय कणहलेस्स कडजुम्मकडजुम्म सन्नि पंचिदिया-
णं भंते ! कओ उववज्जंति जहा सन्नि पंचिदिय पढससमय
उद्देसए, तहेव निरवसेसं । नवरं तेणं भंते ! जीवा कणहलेस्सा
सेसं तं चेव । एवं सोलससु वि जुम्मेसु । सेवं भंते ! सेवं भंते !
त्ति । एवं एएवि एक्कारस वि उद्देसगा कणहलेस्साए । पढमतइय
पंचमा सरिसगमा । सेसा अट्ट वि एक्क गमा । सेवं भंते !
सेवं भंते ! त्ति ॥४०—२॥

चत्तालीसइमे सए वितियं सन्नि सहाजुम्मसयं समत्तं ॥४०—२॥

छाया—कृष्णलेश्य कृतयुग्मकृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्य-
न्ते ? तथैव यथा प्रथमोद्देशकः संज्ञिनाम् । नवरं बन्धो वेद उदयी उदीरणा लेश्या-
ग्रन्थक संज्ञा कपाय वेदवन्धका श्रैतानि यथा—द्वीन्द्रियाणाम् । कृष्णलेश्यानां वेद-
स्त्रिविधः अवेदका न सन्ति । संस्थानं जघन्येनैकं सप्तमम्, उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सा-
गरोपमाणि अन्तर्मुहूर्त्ताभ्यधिकानि । एवं स्थितावपि । नवरं स्थितौ अन्तर्मुहूर्त्ताभ्य-
धिकानि न भण्यन्ते । शेषं यथा एतेषामेव प्रथमे उद्देशके यावदनन्तकृत्वः । एवं
षोडशस्वपि युग्मेषु । तदेवं भदन्त तदेवं भदन्त ! इति ॥

प्रथमसमय कृष्णलेश्य कृतयुग्म कृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत

ઉત્પદ્યન્તે ! યથા સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિયમથમસમયોદેશકે તથૈવ નિરવશેષમ્ । નવરં તે
 ચલુ ભદન્ત ! જીવાઃ કૃષ્ણલેશ્યાઃ ? હન્ત કૃષ્ણલેશ્યાઃ । શેષં તદેવ । એવં ષોડશ-
 સ્વપિયુગ્મેષુ । તદેવં ભદન્ત ! તદેવં ભદન્ત ! ઇતિ । એવમેતેઽપિ એકાદશાપિ
 ઉદેશકાઃ કૃષ્ણલેશ્યશતે ! પ્રથમતૃતીયપચ્ચમાઃ સદશગમાઃ, શેષા અષ્ટાવપિ એક-
 ગમાઃ । તદેવં ભદન્ત ! તદેવં ભદન્ત ! ઇતિ ॥૪૦૧૨॥

॥ચત્વારિંશત્તમે શતકે દ્વિતીયં સંજ્ઞિ મહાયુગ્મશતં સમાપ્તમ્ ॥૪૦ ૩॥

ટીકા — ‘કળહલેસ્સ કલ્લજુમ્મકલ્લજુમ્મ સન્નિપંચિદિયા ણં મંતે ! કઓ ઉવવ
 ડંજંતિ’ કૃષ્ણલેશ્ય કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિયાઃ ચલુ ભદન્ત ! કુત ઉત્પદ્યન્તે ?
 કિં નૈરયિકેભ્યો યાત્ત્વ દેવેભ્યો વોત્પદ્યન્તે ઇતિ પ્રશ્નઃ, ઉત્તરમાહ પૂર્વાતિદેશેન—
 ‘તદેવ’ ઇત્યાદિ, ‘તદેવ પઢમુદેસણ સન્નીણં’ તથૈવ યથા મથમોદેશકે સંજ્ઞિનામ્,
 સંજ્ઞિનાં ચત્વારિંશત્તમશતકસ્ય મથમોદેશે યેન રૂપેણોપપાત શ્વતુર્ગતિભ્યઃ કથિત

॥દ્વિતીય કૃષ્ણલેશ્ય સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શત॥

‘કળહલેસ્સ કલ્લજુમ્મકલ્લજુમ્મ સન્નિ પંચિદિયા ણં મંતે ! ઇત્યાદિ
 ટીકાર્થ—હે ભદન્ત ! કૃષ્ણલેશ્યાવાલે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ
 સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિય જીવ કિલ્લ સ્થાન વિશેષ સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હેં ?
 કયા વેનૈરયિકોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હેં ? અથવા તિર્યગ્ગોનિકોં
 મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હેં ? અથવા મનુષ્યોં મેં સે આકર કે
 ઉત્પન્ન હોતે હેં ? અથવા દેવોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હેં ? અતિ-
 દેશ દ્વારા ઇસકે ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હેં—‘તદેવ જહા પઢમુદેસણ
 સન્નીણ’ હે ગૌતમ ! જૈસા સંજ્ઞી જીવોં કે સમ્બન્ધ મેં પ્રથમ ઉદેશક
 કહા ગયા હૈ વૈસા હી મહાં પર ઓ કહ લેના ચાહિયે । ૪૦ વે’ શતક

ખીલ કૃષ્ણલેશ્યા સંજ્ઞિ પચ્ચેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતકનો પ્રારંભ—

‘કળહલેસ્સ કલ્લજુમ્મકલ્લજુમ્મ સન્નિપંચિદિયા ણં મંતે ! ઇત્યાદિ

હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા સંજ્ઞિ પચ્ચેન્દ્રિય
 જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી
 આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યગ્ગોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન
 થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી
 આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘તદેવ
 જહા પઢમુદેસણ સન્નીણ’ હે ગૌતમ ! સંજ્ઞી જીવોના સંબંધમાં પહેલા
 ઉદેશમાં જે પ્રમાણેનું કથન કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન
 અહિંયાં પણ કહેવું જોઈએ. ૪૦ આળીસમા શતકના પહેલા ઉદેશમાં આદે

સ્તથૈવ ચતુર્ગતિનારકતિર્યદ્મનુષ્યદેવેભ્યઃ કૃષ્ણલેશ્ય કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ સંજ્ઞિપંચેન્દ્રિયાણામપિ વક્તવ્ય ઇતિ । 'નવરં વંધો વેઓ ઉદયી ઉદીરણા લેસ્સા વંધગ સન્ના કસાય વેદવંધગાય' નવરં-કેવલં પ્રથમોદેશકાપેક્ષયા ઇદં વૈલક્ષણ્યં તત્ર વંધઃ જ્ઞાનાવરણીયસ્ય વંધકા નો અવંધકા । વેદો જ્ઞાનાવરણીયાદીનાં વેદકા નો અવેદકાઃ । ઉદયિનો નો અનુદયિનઃ । કર્મણા મુદીરકા વા અનુદીરકા વા । લેશ્યા કૃષ્ણૈવ, કર્મપ્રકૃતીનાં સપ્તવિધ વંધકા અપિ અષ્ટવિધવંધકા અપિ । સંજ્ઞા-આદા-

કે પ્રથમ ઉદ્દેશ મેં ચારોં ગતિયોં મેં સે આયે હુએ જીવોં કા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત સંજ્ઞિપંચેન્દ્રિય રૂપ સે ઉપપાત કહા ગયા હૈ ઉસી પ્રકાર યહાં પર ભી ચારોં ગતિયોં મેં સે આયે હુએ જીવોં કા ઉપપાત હોના હૈ એસા જાનના ચાહિયે । અર્થાત્ કૃષ્ણલેશ્યાવાલેકૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજ્ઞિપંચેન્દ્રિય જીવ રૂપ સે ચારોં ગતિયોં મેં સે આયે હુએ જીવ ઉત્પન્ન હોતે હૈ । 'નવરં વંધો, વેઓ, ઉદયી, ઉદીરણા, લેસ્સા વંધગસન્ના' કસાય વેદ, વંધગાય' પરન્તુ પ્રથમોદેશક કી અપેક્ષા યહાં યહ અન્તર હૈ કિ વંધ, વેદ, ઉદયી, ઉદીરણા લેશ્યા વંધક, સંજ્ઞા, કપાય, ઓર વેદ વંધક યે સવ દો ઇન્દ્રિયોં કે જૈસે કહે ગયે હૈ વૈસે યહાં કહલેના ચાહિયે । અર્થાત્ યે જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મોં કે વંધક હોતે હૈ કિન્તુ અવંધક નહીં હોતે હૈ, વેદક હોતે હૈ, કિન્તુ અવેદક નહીં હોતે હૈ, ઉદયવાલે હી હોતે હૈ, કિન્તુ અનુદયવાલે નહીં હોતે હૈ । કર્મોં કે ઉદીરક મી હોતે હૈ ઓર અનુદીરક મી હોતે હૈ । इनके कृष्णलेश्या ही होती

ગતિવાળાઓમાંથી આવેલા છવે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિ પ્રમાણવાળા સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય પણાથી ઉત્પન્ન થાય છે. તેમ કહેવામાં આવેલ છે એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ ચારે ગતિયોમાંથી આવેલા છવેનો ઉપપાત થાય છે, તેમ સમજવું અર્થાત્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય પણાથી ચારે ગતિયોમાંથી આવેલા છવે ઉત્પન્ન થાય છે.

'નવરં વંધો, વેઓ, ઉદયી, ઉદીરણા, લેસ્સા, વંધગસન્ના કસાય, વેદ વંધગાય,' પહેલા ઉદ્દેશા કરતા આ કથનમાં એ અંતર છે કે-વંધ, વેદ, ઉદયી, ઉદીરણા, લેશ્યા, વંધક, સંજ્ઞા, કપાય, અને વેદવંધ આ તમામ બેઈન્દ્રિયો ને જે પ્રમાણે કહેલ છે તેજ પ્રમાણે અહિયાં કહેવા નોઈએ. અર્થાત્ આ જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે કર્મોના વંધ કરવાવાળા પણ હોય છે, અને અવંધક પણ હોય છે. વેદક પણ હોય છે. અને અવેદક પણ હોય છે. ઉદયવાળા પણ હોય છે, અને અનુદયવાળા પણ હોય છે, કર્મોના ઉદીરક પણ હોય છે અને અનુદીરક પણ હોય છે. તેઓને છ એ લેશ્યાઓ હોય

રાદિરૂપા, વેદઃ સ્ત્રીવેદાદિઃ સ્ત્રીવેદાદીનાં બન્ધકાવેતિ । ‘एयाणि’ एतानि बन्धा-
दीनि ‘जहा वेदियाणं’ यथा द्वीन्द्रियाणं कथितानि तथैव इहापि ज्ञातव्यानि
द्वીन्द्रियशतं षट्त्रिंशत्तमशतकम्, तत्र पञ्चत्रिंशत्तमशतकस्यातिदेशः ततः पञ्चत्रि-
शत्तमशतकात् सर्वं ज्ञातव्यम् अत्र यद् वैलक्षण्यं तदेव स्पष्टयति—‘कण्ठलेस्साणं वेदो
तिविहो’ कृष्णलेख्यानां वेदस्त्रिविधः स्त्रीपुंनपुंसकरूपा स्रयो वेदा भवन्ति, ‘अवेदगा
नत्थि’ कृष्णलेख्यावन्तोऽवेदका न भवन्ति इति । ‘संचिद्वृणा जहन्नेण एकं समयं’
संस्थानम्—अवस्थितिकालो जघन्येन एकं समयं भवति । ‘उक्कोसेण तेत्तीसं
सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमव्महियाइं’ उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि अन्त-

है ये कर्मप्रकृतियों के सप्तविध बन्धक भी होते हैं और अष्ट-
विध बन्धक भी होते हैं। आहारादि रूप चारों प्रकारकी संज्ञावाले
होते हैं। स्त्रीवेदादि रूप तीनों वेदवाले होते हैं और उनके
ये बन्धक होते हैं। द्वीन्द्रिय शत यह ३६ वां शतक है। इसके निरूपण
में ३५ वे शतक का अतिदेश किया गया है इसलिये ३५ वे शतक से
ही यह सब जानना चाहिये। यहां वेद्विन्द्रिय शतक की जो विलक्षणता
है वह इस प्रकार से—है ‘कण्ठलेस्साणं वेदो तिविहो’ कृष्णलेख्यावालो
के तीनवेद होते हैं, स्त्रीवेद होता है, पुरुषवेद होता है और नपुंसक वेद
होता है। ‘अवेदगा नत्थि’ ये अवेदक नहीं होते हैं। ‘संचिद्वृणा जह-
न्नेण एकं समयं’ अवस्थिति काल यहां जघन्य से एक समय का
है और ‘उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमव्महियाइं’

છે તેઓ કર્મપ્રકૃતિયોના બધ કરવાવાળા પણ હોય છે અને અબધક પણ
હોય છે આહાર વિગેરે ૩૫ ચારે પ્રકારની સંજ્ઞાવાળા હોય છે. સ્ત્રીવેદ વિગેરે
ત્રણે વેદવાળા હોય છે અને તેનો બધ કરવાવાળા હોય છે. દ્વીન્દ્રિય શતક
એ છત્રીસમા શતકમાં આવે છે. તેનું નિરૂપણ કરવામાં ૩૫ પાંત્રીસમા શતક
નો અતિદેશ કહેલ છે. તેથી ૩૫ પાંત્રીસમાં શતકમાંથી જ આ તમામ પ્રકરણ
સમજી લેવું તેનું સ્પષ્ટી કરણ આ પ્રમાણે છે. ‘કણ્ઠલેસ્માણં વેદો તિવિહો’
કૃષ્ણલેશ્યાવાળાને ત્રણ વેદ હોય છે. એટલે કે—સ્ત્રીવેદ, પુરુષવેદ અને નપુંસક
વેદ એ ત્રણે વેદ હોય છે. ‘અવેદગા નત્થિ’ આ અવેદક હોતા નથી ‘સંચિદ્વૃણા
જહણેણ એકકં સમયં’ અવસ્થિતિ તે કાળ જઘન્યથી અહિયા એક સમયનો કહેલ
છે અને ‘ઉક્કોસેણં તેત્તીસં સાગરોવમાઈં અંતોમુહુત્તમવ્મહિયાઈં’ ઉત્કૃષ્ટથી એક

મુહૂર્ત્તમ્બધિકાનિ, ૩૨ ચ કૃષ્ણલેઝ્ય સંજ્ઞિપશ્ચેન્દ્રિયાવસ્થાનં સપ્તમપૃથિવ્યુત્કૃષ્ટ-
સ્થિતિ પૂર્વભવપર્યન્તવર્ત્તિનં ચ કૃષ્ણલેઝ્યા પરિણામમાશ્રિત્ય કથિતમિતિ । ‘અં
ઠિર્દેવિ’ અં સ્થિતાવપિ અં સંસ્થાનવદેવ સ્થિતૌ અપિ જગન્મયેનૈકં સમયમુત્ક-
ર્ષેણ ત્રયસ્ત્રિંશત્સાગરોપમાણિ । ‘નવરં ઠિર્દેવિ અંતો મુહૂત્તમઽમદિયાઈ ન મન્નંતિ’
નવરં-કેવલં સ્થિતૌ અન્તર્મુહૂર્ત્તમ્બધિકાનિ, અવસ્થાનં પૂર્વભવપર્યન્તવર્ત્તિકાલો-
ગૃહીતઃ આયુષ્કં તુ ન તદપેક્ષયા અતોઽન્તર્મુહૂર્ત્તમિદં ન કથિતમિતિ અન્તર્મુહૂર્ત્ત-
મ્બધિકાનિ ન મળ્યન્તે । ‘સેસં જહા અપસિં ચેવ પદમે ઉદેસપ જાવ અણંતસુત્તો’
શેષમવસ્થાનસ્થિત્યતિરિક્તં સર્વમપિ યથા એતેષાં સંજ્ઞિપશ્ચેન્દ્રિયાણામેવ ચત્ત્વારિં-
ઉત્કૃષ્ટ સે એક અન્તર્મુહૂર્ત્ત અધિક ૩૨ સાગરોપમ કા હૈ । યહાં જો
હસકા કાલ કહા ગયા હૈ વહ સસન પૃથિવી કે નારક કી ઉત્કૃષ્ટ
સ્થિતિ ઓર પૂર્વભવ પર્યન્ત વર્ત્તો કૃષ્ણલેઝ્યા કે પરિમાણ કો આશ્રિત
કરકે કહા ગયા હૈ । ‘અં ઠિર્દેવિ’ સંસ્થાન કે જૈસે હી સ્થિતિ મી
જગન્મય સે એક સમય કી ઓર ઉત્કૃષ્ટ સે ૩૨ સાગરોપમ કી હૈ યહાં એક
અન્તર્મુહૂર્ત્ત અધિક નહીં કહનાં ચાહિયે । અર્થાત્-અવસ્થાન મેં પૂર્વભવ
પર્યન્તવર્ત્તો કાલ ગૃહીત હુઆ હૈ । હસલિયે વહાં એક અન્તર્મુહૂર્ત્ત કી
અધિકતા કહી ગઈ હૈ પરન્તુ આયુષ્ક મેં યહ અપેક્ષા હોતી નહીં હૈ ।
હસલિયે યહાં અન્તર્મુહૂર્ત્ત કી અધિકતા નહીં કહી હૈ । ‘સેસં જહા
અપસિં ચેવ પદમે ઉદેસપ જાવ અણંતસુત્તો’ હસ પ્રકાર અવસ્થાન ઓર
સ્થિતિ કે અતિરિક્ત ઓર સવ કથન હન સંજ્ઞિપશ્ચેન્દ્રિયોં કે સમ્બન્ધ મેં
૪૦ વેં શતક કે પ્રથમ ઉદેશક મેં જૈસા કહા ગયા હૈ વૈસા હી યહાં મી

અંતર્મુહૂર્ત્ત અધિક ૩૩ તેત્રીસ સાગરોપમનો છે. અહિયાં જે આ પ્રમાણેનો
તેઓનો કાળ કહેલ છે, તે સાતમી પૃથ્વીના નારકની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ અને
પૂર્વભવ પર્યન્તમાં રહેલ કૃષ્ણલેઝ્યાના પરિણામનો આશ્રય કરીને કહેલ છે.

‘અં ઠિર્દેવિ’ સંસ્થાનના કથન પ્રમાણે જ સ્થિતિ પણ જગન્મયથી એક
સમય અને ઉત્કૃષ્ટથી ૩૩ તેત્રીસ સાગરોપમની છે. અહિયાં એક અંતર્મુહૂર્ત્તનું
અધિકપણું કહેલ નથી. અર્થાત્ અવસ્થાનમાં પૂર્વભવ પર્યન્તવર્ત્તિકાળ ગ્રહણ
થયેલ છે. તેથી ત્યાં એક અન્તર્મુહૂર્ત્તનું અધિકપણું કહ્યું છે, પરંતુ
આયુષ્યકમાં તે અપેક્ષા રહેતી નથી. તેથી અહિયાં એક અંતર્મુહૂર્ત્તનું
અધિકપણું કહેલ નથી ‘સેસં’ જહા અપસિં ચેવ પદમે ઉદેસપ
જાવ અણંતસુત્તો’ આ રીતે અવસ્થાન અને સ્થિતિના કથન શિવાય
બાકીનું સઘળું કથન આ સંજ્ઞી પશ્ચેન્દ્રિયના સંબંધમાં ૪૦ આળીસમા શત-

શત્તમશતકસ્ય પ્રથમમોદેશકે કથિતં તથૈવેહાપિ જ્ઞાતવ્યમ્ । કિયત્પર્યન્તં ? તત્રાહ-
'જાવ' ઇત્યાદિ, 'જાવ અણંતચુતો' યાવદનન્તકૃત્વઃ, અથ ભદન્ત ! સર્વે પ્રાણા
યાવત્ સર્વે સત્વાઃ કૃષ્ણલેશ્ય સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિયતયા સમુત્પન્નપૂર્વાઃ કિમ્, હે ગૌતમ !
અનન્તકૃત્વઃ સમુત્પન્ન પૂર્વાઃ ઇત્યુત્તરપર્યન્તં જ્ઞાતવ્યમિતિ । 'એવં સોલસસુ વિ
જુમ્મેસુ' એવં કૃષ્ણલેશ્યકૃતયુગ્મકૃતયુગ્મસંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિયાણાં યથા ઉપપાતાદિઃ
કથિત સ્તેનૈવ રુપેણ પોડશસુ યુગ્મેષુ કૃષ્ણલેશ્ય કૃતયુગ્મત્રયોજાદ્ દ્વિતીય યુગ્મા-
દારભ્ય કલ્પયોજકલ્પયોજપર્યન્તેષુ યાવદનન્તકૃત્વ ઇત્યાદિકં વક્તવ્યમિતિ ।
'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ તદેવં ભદન્ત ! તદેવ ભદન્ત ! ઇતિ ॥

જાનના ચાહિયે । ઔર यह कथय यावत् समस्त प्राण यावत् समस्त
सत्त्व अनन्तवार हल रूप से पूर्व में उत्पन्न हो चुके हैं इस पाठ तक
उपों का त्यों कहलेना चाहिये । 'एवं सोलससु वि जुम्वेसु' जिस रीति
से यह कृष्णलेश्यावाले कृतयुग्म कृतयुग्म संज्ञी पचेन्द्रियों का उपपात
आदि कहा है उसी प्रकार-से उसी रीति से सोलह युग्मों में-कृष्ण-
लेश्यावाले कृतयुग्म त्रयोजराशि संज्ञी पचेन्द्रिय रूप द्वितीययुग्म से
लेकर फल्योज कल्योज राशिप्रमित कृष्णलेश्यावाले संज्ञी पचेन्द्रिय के
जीवों में समस्त प्राण यावत् समस्त सत्त्व अनन्तवार उत्पन्न हो चुके हैं"
इत्यादि सब कहलेना चाहिये । । 'सेव' मंते सेव' मंते । त्ति' हे भदन्त !
जैसा आपने यह कहा है वह सर्वथा सत्य ही है २ । इस प्रकार
कहकर गौतमस्वामीने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया ।
वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित
करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

કના પહેલા ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણે કહેલ છે, એજ પ્રમાણે ગાહીયા પણ સમજવું.
અને આ કથન યાવત્ સઘળા પ્રાણો સઘળા સત્વો અનંતવાર આ રૂપથી
પહેલાં ઉત્પન્ન થઈ ચૂકેલ છે, આ પછી સુધી જેમનું તેમ કહેવું નોંધ્યે.
'એવં સોલસસુ વિ જુમ્મેસુ' જે પ્રમાણે આ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ
સંજ્ઞી પચેન્દ્રિયોના ઉપપાત કહેલ છે, એજ પ્રમાણે-સોળે યુગ્મોમાં કૃષ્ણલેશ્ય-
વાળા કૃતયુગ્મ ત્રેજ રાશિપ્રમાણવાળા સંજ્ઞી પચેન્દ્રિય રૂપ બીજા યુગ્મથી
લઈને કલ્પેજ કલ્પેજ રાશિપ્રમાણવાળા કૃષ્ણલેશ્યાવાળા સંજ્ઞી પચેન્દ્રિય
બીજામાં સઘળા પ્રાણો યાવત્ સઘળા સત્વો અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચૂક્યા
છે, વિગેરે સઘળું કથન કહી લેવું નોંધ્યે

'સેવ મંતે ! સેવ મંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ આપ દેવાતુપ્રિયે આ વિષયમાં
જે પ્રમાણે કહેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપનું

‘પદમસમય કણ્ઠલેસ્સ કહજુમ્મકહજુમ્મ સન્નિપંચિદિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ પ્રથમસમય કૃણ્ણલેશ્ય કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિયાઃ खलु भदन्त ! કુત ઉત્પદ્યન્તે કિં નૈરયિકેભ્યો યાવદ્ દેવેભ્યો વેતિ પ્રશ્નઃ, ઉત્તરમાઠ અતિદેશદ્વારેણ—‘જહા’ ઇત્યાદિ, ‘જહા સન્નિ પંચિદિય—પદમસમય ઉદેસણ તહેવ નિરવસેસં’ યથા સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિય પ્રથમસમયોદેશકે ચત્વારિંશચ્છતકસ્ય પ્રથમશત દ્વિતીયોદેશકે સત્રાપિ અતિદેશેન પ્રથમોદેશકે યથા કથિતં તેનૈવ રૂપેણ નિરવશેષં સર્વમપિ અત્ર મણિતવ્યમ્ । ‘નવરં તે ણં મંતે ! જીવા કણ્ઠલેસ્સા’ નવરં કેવલમયં વિશેષઃ તે खलु

‘પદમસમય કણ્ઠલેસ્સ કહજુમ્મકહજુમ્મ સન્નિ પંચિદિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે ભદન્ત ! પ્રથમ સમયવર્તી કૃણ્ણલેશ્યાવાલે કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત સંજી જીવ કિસ સ્થાન વિશેષ સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? કયા વે નૈરયિકોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા તિર્યગ્યોનિકોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા મનુષ્યોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા દેવોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્નહોતે હૈં ? અતિદેશ દ્વારા હસ પ્રશ્ન કા ઉત્તર વેતે હુણ પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામી સે કહતે હૈં—‘જહા સન્નિપંચિદિય પદમસમયઉદેસણ તહેવ નિરવસેસં’ હે ગૌતમ ! જૈસા પ્રથમ સમયવર્તી સંજીપંચેન્દ્રિયોં કે ઉદેશક મેં કહા ગયા હૈ— ૪૦ વે શતક કે પ્રથમ શતકે દ્વિતીય ઉદેશક મેં—વહાં પર મી અતિદેશ સે પ્રથમ ઉદેશક મેં—જૈસા કહા ગયા હૈં વસી રૂપ સે સવ કથન યહાં પર

કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા.

‘પદમસમય કણ્ઠલેસ્સ કહજુમ્મકહજુમ્મ પંચિદિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ હે મગવન્ પ્રથમ સમયમાં રહેનારા કૃણ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મરાશિ પ્રમાણુવાળા સંજીપંચેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યગ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર અતિદેશ દ્વારા આપતા પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘જહા સંન્નિપંચિદિય પદમસમયઉદેસણ તહેવ નિરવસેસં’ હે ગૌતમ ! પ્રથમ સમયમાં રહેલા સંજી પંચેન્દ્રિયોના સંબંધમાં જે પ્રમાણે કહેલ છે, એટલે કે—૪૦ આબીસમા શતકના પહેલા શતકના બીજો ઉદેશ

भदन्त ! जीवाः कृष्णलेश्याः केवलं चत्वारिंशत्तमशतके प्रथमशतापेक्षया द्वितीयशते कृष्णलेश्यपद घटितया प्रश्नः कर्तव्यः तथा तद् घटितरूपेण उत्तरं दातव्यमेतदेव वैलक्षण्यमिति, 'सेसं तं चेव' शेषं तदतिरिक्तं सर्वमपि प्रथमसमय कृतयुगमोद्देशकत्वं देवज्ञातव्यमिति । 'एवं सोलससु वि जुम्मेसु' एवं यथा कृष्णलेश्य-कृतयुगम कृतयुगमे कथितं तथैव षोडशसु कृष्णलेश्य कृतयुगम उपोजादारभ्य कल्योज कल्योज पर्यन्तेष्वपि सर्वमुपपांतादिकं ज्ञातव्यमिति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥

इति श्री-विश्वविख्यातजगद्बल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि - 'जैनाचार्य' पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां "श्री भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां चत्वारिंशत्तमे शतके द्वितीय प्रथमसमय कृष्णलेश्य कृतयुगम कृतयुगम संज्ञिपञ्चेन्द्रिय शतम् समाप्तम् ॥

भी कर लेना चाहिये । 'नवरं तेणं' भंते ! जीवा कणहलेस्सा' हे भदन्त ! क्या वे सब जीव कृष्णलेश्यावाले हैं ? 'हंता, कणहलेस्सा' हां गौतम ! वे सब जीव कृष्णलेश्यावाले हैं-तात्पर्य इसका ऐसा है कि ४० वें शतक के प्रथम शतकी अपेक्षा इस द्वितीय शत में कृष्णलेश्यापद लगाकार प्रश्न कहना कहा गया है और उसी पदको रखकर उत्तर देना कहा गया है यही दोनों में अन्तर है ऐसा जानना चाहिये । 'सेस तं चेव' इसके सिवाय और सब कथन प्रथम समयवर्ती कृतयुगमकृतयुगम राशिप्रमित संज्ञि पञ्चेन्द्रियो के उद्देशक के जैसा ही है । 'एवं सोलससु वि जुम्मेसु' इस प्रकार जैसा कृष्णलेश्या कृतयुगम कृतयुगम में कहा गया है वैसा ही कृष्णलेश्य कृतयुगम उपोज से लेकर कल्योज कल्योज तक के सोलह

प्रमाणे कडेવાનું કહેલ છે. એજ પ્રમાણેનું સઘળું કથન અહિયાં પણ કહેવું બાધીએ. 'નવરં તેણં' ભંતે ! જીવા કણહલેસ્સા' પરંતુ વિશેષપણું એ છે કે-હે ભગવન શું તેઓ સઘળા જીવો કૃષ્ણલેશ્યાવાળા હોય છે ? 'હંતા કણહલેસ્સા' હા ગૌતમ ! તે બધા જીવો કૃષ્ણલેશ્યાવાળા હોય છે. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે આળીસમા શતકના પહેલા શતકની અપેક્ષાથી આ બીજા શતકમાં કૃષ્ણલેશ્યાપદ લગાવીને પ્રશ્ન કરવાનું કહેલ છે. અને એજ પદને રાખીને ઉત્તર આપવો બાધીએ. 'સેસં તં ચેવ' આ કથન શિવાય બાકીનું સઘળું કથન પ્રથમ સમયમાં રહેલ કૃતયુગમ કૃતયુગમ રાશિપ્રમાણવાળા સંજ્ઞી પચ્ચેન્દ્રિયાના ઉદ્દેશના કથન પ્રમાણે જ છે 'एवं सोलससु वि जुम्मेसु' આ રીતે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગમ કૃતયુગમમાં કહેલ છે, એજ પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગમ યોજથી લઈને

યુગ્મોં મેં મી સમસ્ત ઉપપાત આદિ કહ લેના ચાહિયે । ‘સેવં મંતે !
 સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે મદન્ત ! જૈસા આપને કહા હૈ વહ સવ કથન સત્ય
 હી હૈ ૨ । હસ પ્રકાર કહકર ગૌમમસ્વામીને પ્રભુશ્રી કો વન્દના કી
 ઓર નમસ્કાર ક્રિયા । વન્દના નમસ્કાર કર ફિર વે સંયમ ઓર તપસે
 આત્મા કો ભાવિત કરતે હુએ અપને સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે ।
 જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજીમહારાજકૃત
 “ભગવતીસૂત્ર” કી પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાકે ચાલીસવેં શતક કા
 પ્રથમ સમય કૃષ્ણલેશ્ય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજિપચ્ચેન્દ્રિય
 નામ કા દ્વિતીય શત કા દ્વિતીય ઉદ્દેશક સમાપ્ત

કલ્યોજ કલ્યોજ સુધીના સોળ યુગ્મોમાં પણ ઉપપાત વિગેરે સઘળું કથન
 કહી લેવું, બોધ્યું.

‘સેવં મંતે ! સેવં ! મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કરેલ
 છે તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપનું કથન સર્વથા સત્ય
 જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા
 વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત
 કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા.

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત “ભગવતીસૂત્ર”ની
 પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ચાલીસમા શતકનું પ્રથમ સમય કૃષ્ણલેશ્ય
 કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજિપચ્ચેન્દ્રિય નામના બીજા શતકને
 બીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥



‘एवं एएवि उद्देशगा कण्ठलेस्ससए’ एवमेतेऽप्रथम समयादारभ्य चरमाचरम समयपर्यन्ता एकादशापि नव उद्देशकाः सङ्कलनया एकादशाद्देशका भवन्ति कृष्णलेश्यशतके । तत्र ‘पढमतइयपचमा सरिसगमा’ प्रथम तृतीय पञ्चमा इति उद्देशकत्रयम् सदृशगमं सदृश प्रकारकमिति । ‘सेसा अट्ट वि एक्कगमा’ शेपा अष्टौ द्वितीयचतुर्थषष्ठसप्तमाष्टमनवमदशमैकादशोद्देशकाः सदृशाः समानालापका भवन्तीति । ‘सेवं भंते । सेवं भंते ! तदेव भदन्त तदेवं भदन्त ! इति ॥

॥ चत्वारिंशत्तमे शतके द्वितीयं संज्ञिमहायुगमशतं समाप्तम् ॥ ४०-२ ॥

ટીકાર્થ-‘एवं एएवि उद्देशगा कण्ठलेस्ससए’ इसी रीति से अप्रथम समय से लेकर चरम समय पर्यन्त बाकी के नौ उद्देशक होते हैं-अतः पहिले के दो उद्देशक और ९ उद्देशक ये कुल ११ उद्देशक इस कृष्णलेश्य शतक में होते हैं । इन में ‘पढमतइय पंचमा सरिसगमा’ प्रथम तृतीय और पंचम वे तीन उद्देशक एक सरीखे आलापवाले हैं और ‘सेसा अट्ट वि एक्कगमा’ बाकी के द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम और ११ वां ये आठ उद्देशक समान आलापवाले हैं । ‘सेवं भंते । सेवं भंते । त्ति’ हे भदन्त । जैसा आपने कहा है वह सब सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

॥ ४० वे शतक में दूसरा संज्ञिमहायुगम शत समाप्त ४०-२ ॥

‘एवं एएवि उद्देशगा कण्ठलेस्ससए’ આજ રીતથી અપ્રથમ સમયથી લઇને ચરમ અચરમ સમય પર્યન્ત બાકીના નવ ઉદ્દેશાઓ થાય છે. જેથી પહેલાના બે ઉદ્દેશાઓ અને આ નવ ઉદ્દેશાઓ મળીને કુલ ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ આ કૃષ્ણલેશ્યા શતકમાં હોય છે. તેમાં ‘પઢમતઇયપંચમા સરિસગમા’ પહેલા ત્રીણે અને પાંચમો એ ત્રણ ઉદ્દેશાઓ એક સરખા આલાપવાળા કહ્યા છે. અને ‘સેસા અટ્ટ વિ એક્કગમા’ બાકીના બીણે, ચોથો, છઠ્ઠો સાતમો, આઠમો, નવમો, દશમો, ૧૧ અગિયારમો આ આઠ ઉદ્દેશાઓ સરખા આલાપકાવાળા કહ્યા છે.

સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥ ૪૦ આળીસમા શતકમાં બીજું સંજી મહાયુગમ શતક ॥ સમાપ્ત ॥ ૪૦-૨ ॥

॥ અહ તદ્યં સન્નિમહાયુગ્મસયં ॥

મૂલમ્—એવં નીલલેસ્મેસુ વિ સયં । નવરં સંચિદ્વૃણા જહન્નેણં
 એકં સમયં ઉક્કોસેણં દસસાગરોવમાઈં પલિઓવમસ્સ અસંખે-
 જ્જહ્માગમવ્ભહિયાઈં । એવં તિસુ ઉદેસણસુ સેસં તં ચેવ । સેવં
 ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ ॥

॥ ચત્તાલીસહમે સણ તદ્યં સન્નિમહાયુગ્મસયં સમત્તં ॥

છાયા—એવં નીલલેશ્યેષ્વપિ શતમ્ । નવરં સંસ્થાના જઘન્યેનૈકં સમયમ્
 ઉત્કર્ષેણ દશસાગરોપમાણિ પલ્યોપમસ્યાસંખ્યેયમાગાભ્યધિકાનિ । એવં ત્રિપૂદેશ-
 કેષુ શેષં તદેવ । તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! इति

॥ ચત્વારિંશત્તમે શતકે તૃતીયં સંજ્ઞિમહાયુગ્મશતં સમાપ્તમ્ ॥૪૦॥૩॥

ટીકા—‘એવં નીલલેસ્મેસુ વિ સયં’ નીલલેશ્યેષ્વપિ શતં યથા કૃષ્ણલેશ્યા
 શતં નિરૂપિતં તેનૈવ રૂપેણ નીલલેશ્યશતમપિ મણિતવ્યમ્ । પ્રથમસમયાદિકા
 એકાદશોદેશકા અપિ પૂર્વવદેવ જ્ઞાતવ્યાઃ । ‘નવરં સંચિદ્વૃણા જહન્નેણં એકં
 સમયં’ નવરં સંસ્થાના-અવસ્થિતિકાલઃ જઘન્યેનૈકં સમયમ્ ‘ઉક્કોસેણં દસ-
 સાગરોવમાઈં પલિઓવમસ્સ અસંખેજ્જહ્માગમવ્ભહિયાઈં’ ઉત્કર્ષેણ દશ સાગરોપ
 માણિ પલ્યોપમસ્યાસંખ્યેયમાગાભ્યધિકાનિ પશ્ચમનારકપૃથિવ્યા ધૂમપ્રભાયા

શતક ૪૦ તૃતીય સંજ્ઞિ મહાયુગ્મ શત

ટીકાર્થ—‘એવં નીલલેસ્મેસુ વિ સયં’ જિસ પ્રકાર સે કૃષ્ણલેશ્યા-
 ચાલોં કે સમ્બન્ધ મેં શત નિરૂપિત હુ મા હૈ, ઉસી પ્રકાર સે નીલલેશ્યા
 ચાલોં કે સમ્બન્ધ મેં બી શતક નિરૂપિત કર લેના ચાહિયે । યહાં પર
 બી પ્રથમ સમયાદિક ૧૧ ઉદેશક પહિલે કે જૈસા હી જાનના ચાહિયે ।
 ‘નવરં સંચિદ્વૃણા જહન્નેણં એકં સમયં’ પરન્તુ યહાં પર અવસ્થાન
 કાલ જઘન્ય સે એક સમય કા હૈં ઓર ઉત્કૃષ્ટ સે પલ્યોપમ કે અસં-

ત્રીજા સંજ્ઞી મહાયુગ્મ શતકનો પ્રશ્ન—

‘એવં નીલલેસ્મેસુ વિ સયં’ જે પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યાવાળાના સંબંધમાં
 શતક કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે નીલલેશ્યાવાળાના સંબંધમાં પણ
 શતકનું નિરૂપણ કરી લેવું જોઈએ. અહિયાં પણ પ્રથમ સમય વિગેરે ૧૧
 અગિયાર ઉદ્દેશાઓ પહેલાં પ્રમાણે સમજવા ‘નવરં સંચિદ્વૃણા જહન્નેણં એકં
 સમયં’ પરંતુ અહિયાં અવસ્થાન કાળ જઘન્યથી એક સમયનો છે, અને
 ઉત્કૃષ્ટથી પલ્યોપમના અસંખ્યાત લાગ અધિક દશ સાગરોપમનો છે. આ

ઉપરિતનપ્રતટે દશસાગરોપમાણિ પલ્યોપમસ્યાસંસ્થેયમાગાધિકાન્યાયુઃ સમ્ભ-
વતિ નીલલેશ્યા ચ તત્ર સ્યાદત ઉક્તમ્ 'ઉવકોસેણં' इत्यादि, यदिह पूर्वभवस्या-
न्तिमान्तर्मुहूर्त्तं तत्पल्योपमस्यासंस्थेयभागे एव सन्निवेश्य प्रकृष्टमिति न भेदेन
कथितमिति भावः । 'एवं ठिई ए वि' एवं भवस्थितिकालवदेव स्थितावपि ज्ञात-
व्यम् । इति । 'एवं तिसु उद्देशसु' एवं त्रिष्वपि प्रथमतृतीयपञ्चमेष्टदेशक
त्रयेषु नवर मित्यादिना कथितं वैलक्षण्यं ज्ञातव्यम् । 'सेसं नवरमित्यादिना यद्वै-
लक्ष्यं दर्शितं तदतिगित्तं सर्वं प्रथम शतवदेव ज्ञातव्यम्, इहापि एकादशेष्टेशकाः

ख्यात वे' भाग अधिक दश सागरोपम का है । यह उत्कृष्ट हाल पांचवीं
धूमप्रभा नरक पृथिवी के ऊपर के प्रतर की अपेक्षा से कहा गया है ।
क्यों कि यहां पर उत्कृष्ट आयु पल्योपम के असंख्यात वे' भाग से
अधिक दश सागरोपम की है वहां नीललेश्या है । यहां जो पूर्व भव
का अन्तिम अन्तर्मुहूर्त्त गणना में नहीं आया है उसका कारण उसका
पल्योपम के असंख्यात वे' भाग में समाविष्ट कर लेना है । 'एवं ठिई
ए वि' अवस्थान काल के जैसी ही भवस्थिति यहां है । 'एवं तिसु
उद्देशसु' 'नवरम्' पद से जो अवस्थान काल में एवं भवस्थिति
में यह भिन्नता कृष्णलेश्याशत की अपेक्षा प्रकट की गई है सो ऐसी
ही भिन्नता इनकी प्रथम तृतीय और पञ्चम इन तीन उद्देशकों में भी
जाननी चाहिये । 'सेसं त चेव' बाकी का और सब कथन प्रथम शत
के ही जैसा है । यहां पर भी पूर्व के जैसे ११ उद्देशक हैं और इन

ઉત્કૃષ્ટકાળ પાચમી ધૂમપ્રભા નરક પૃથ્વીના ઉપરના પ્રતરની અપેક્ષાથી કહેલ
છે. કેમ કે ત્યાં ઉત્કૃષ્ટ આયુષ્ય પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગથી વધારે
દશ સાગરોપનું છે. ત્યાં નીલલેશ્યા છે. અહિયાં જે પૂર્વભવતુ છેલ્લું અંતર્મુહૂર્ત
ગણનામા આવેલ નથી. તેનું કારણ તેનો પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગમાં
સમાવેશ કરી લેવાનું છે.

'एवं ठिई ए वि' अवस्थान કાળમાં કહ્યા પ્રમાણેનું જ ભવસ્થિતિનું
કથન કહેલ છે 'एवं तिसु उद्देशसु' 'नवरम्' पदથી જે अवस्थान કાળમાં અને
ભવસ્થિતિમાં આ ભિન્નપણુ કૃષ્ણલેશ્યા શતકની અપેક્ષાથી પ્રગટ કરેલ છે
અને એજ પ્રમાણેનું ભિન્નપણુ તેના પહેલા, ત્રીજા, અને પાચમા આ ત્રણ
ઉદ્દેશાઓમાં પણ સમજવું. 'सेसं तं चेव' બાકીનું બીજુ સઘણુ કથન પહેલા
શતકના કથન પ્રમાણે જ છે અહિયાં પણ પહેલા પ્રમાણે ૧૧ અગિયાર
ઉદ્દેશાઓ છે. અને તે બધામાં આલાપકોનો પ્રકાર પણ પહેલા કહ્યા પ્રમાણેનો જ છે,

पूर्ववदेव ज्ञातव्याः सर्वत्राऽऽप्यप्रकारः पूर्ववदेवोदनीयः 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ।

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्बल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
कलितकलितकलापाळापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित—कोल्हापुरराजगुरु-
बालब्रह्मचारि — जैनाचार्य — जैनधर्मदिवाकर
-पूज्यश्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री "भग-
वतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायां चत्वारिंशत्तमे शतके
तृतीयं नीललेख्य संज्ञि महायुग्म
शतं समाप्तम् ॥४०-३॥

सब में आलाप प्रकार भी पूर्वके ही जैसा है । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! आपका यह सब कथन सर्वथा सत्य ही २ इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तपस्से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये । ४०।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके चालीसवें शतक का
तृतीय नीललेख्य संज्ञि महायुग्म शत समाप्त ॥४०-३॥

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भगवन् आप देवानुप्रियनुं आ विषय संभंधी सधणुं कथन सर्वथा सत्य छे. हे भगवन् आप देवानुप्रिये कहेला आ सधणु कथन सर्वथा सत्य न छे. आ प्रमाणे कहीने गौतमस्वामीये प्रभुश्रीने वंदना करी तेणेने नमस्कार कर्या वंदना नमस्कार करीने ते पछी संयम अने तपथी पोताना आत्माने भावित करता थका पोताना स्थान पर विराजमान थया.

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराजकृत 'भगवतीसूत्र'नी प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याना आणीसमा शतकसां त्रीजु नीललेख्यावाणुं
संज्ञा महायुग्म शतक समाप्त ॥४०-३॥



‘અહ ચતુર્થ સન્નિમહાયુગ્મસયં’

મૂલ્ય—અર્થ કાઉલેસસયં વિ । નવરં સંચિટ્ટુણા જહન્નેણં
 એકકં સમયં, ઉક્કોસેણં તિન્નિ સામરોવસાઈં પલિઓવસસ્સ
 અસંસેજ્જહાગમ્મવધિયાઈં । એવં ટિઈંણ વિ, એવં તિરુ વિ
 ઉદેસણસુ સેસં તં ચેવ । સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! તિ ॥

ચત્તાલીસદ્વમે સપ્ત ચતુર્થં સન્નિમહાયુગ્મસયં સમયત્તં ॥૪૦—૪॥

છાયા—અર્થ કાપોતલેશ્યશતમપિ । નવરં સંસ્થાના જગ્યન્યૈકં મમયમ્ ઉત્-
 કર્પેણ ગ્રીણિ સામરોપલાણિ પલ્યોવમસ્વાસંસ્થયેમાગ્નાશ્યધિકાતિ એવં સ્થિતા-
 વપિ । એવં ત્રિવિધપિ ઉદેશકેષુ, શેષં તદેવ ! તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ ।

॥ ઇતિ ચન્દ્રારિક્ષત્તમે શતકે ચતુર્થ સંશ્લિમહાયુગ્મશતં સમાપ્તમ્ ॥૪૦૧૪॥

ટીકા—‘અર્થ કાઉલેસસયં વિ’ એવં યથા કૃષ્ણલેશ્યશત કથિતં તથૈવ
 કાપોતલેશ્યશતમપિ વક્તવ્યમ્ । અગ્રાદિ પૂર્વલેખ ઔષ્ધિકપ્રથમસમયાચારમ્
 ચરમાચરમસમયપર્યન્તા એકાદશોદેશકા અપિ વક્તવ્યાઃ । કેાલં પૂર્વાપેક્ષયાઽસ્ય
 શતસ્ય યદ્વૈલક્ષણ્યં તદ્દર્શયતિ—‘નવરં’ ઇત્યાદિતા, ‘નવરં સંચિટ્ટુણા જહન્નેણં એકકં

શતક ૪૦ ચતુર્થ સંશ્લિમહાયુગ્મ શત

‘અર્થ કાઉલેસસયં વિ-નવરં સંચિટ્ટુણા’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—જેવા કૃષ્ણલેશ્યાવાળો લે સમ્બન્ધ મેં પૂર્વ જાત મેં કહા
 ગયા હૈં ઉત્તી પ્રકાર લે કાપોતલેશ્યાવાળો લે સમ્બન્ધ મેં મીઃ યહ જાત
 કહ લેનાં ચાહિયે । યહાં પર મીઃ પૂર્વ લે જેલે ઔષ્ધિક પ્રથમ તસ્ય આદિ લે
 લેકર ચરમાચરમ સમય તક ૧૧ ઉદેશક હૈં । પરન્તુ જો નિત ગા પૂર્વ લે
 અપેક્ષા હસ જાત મેં હૈં વર ‘નવરં સંચિટ્ટુણા જહન્નેણં એકકં સમય
 ઉક્કોસેણં તિન્નિ સામરોવસાઈં પલિઓવસસ્સ અસંસેજ્જહાગમ્મવધિ-

યેથા સન્નિમહાયુગ્મ શતકનો પ્રારંભ—

‘અર્થ કાઉલેસસયં વિ નવરં સંચિટ્ટુણા’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—કૃષ્ણલેશ્યાવાળાઓના સમ્બન્ધમાં પૂર્વશતકમાં કહેવામાં આવેલ
 છે, એજ પ્રમાણે કાપોતલેશ્યાવાળાઓના સમ્બન્ધમાં પણ આ શતક કહેવું
 જોઈએ અહિયાં પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે ઔષ્ધિક પ્રથમ સમય વિગેરેથી લઈને
 ચરમાચરમ સમય સુધી ૧૧ અગિયાર ઉદેશાઓ થાય છે. પરંતુ જે નિતપાત્ર
 પહેલાં શતકો ક્રમમાં આ કથનમાં આવે છે તે ‘નવરં સંચિટ્ટુણા જહન્નેણં

સમયં' સંસ્થાના-અવસ્થિતિકાલો જઘન્યેનૈકં સમયમ્ 'ઉક્કોસેણં તિન્નિ સાગરો-
વમાઈં પલ્લિઓવમસ્સ અસંસ્થેજ્જહમાગમન્ઘહિયાઈં' ઉત્કર્ષેણ ત્રીણિ સાગરોપમાણિ
પલ્યોપમસ્યાસંસ્થેયમાગાભ્યધિકાનિ इदं तु कथनं तृतीयपृथिव्या उपरितन
प्रस्तटस्थितिमाश्रित्य तृतीय पृथिव्या उपरितनप्रस्तटे पल्योपमस्यासंस्थेयमाग-
धिकानि त्रीणि सागरोपमाण्यायुर्भवतीति पूर्वभवान्तिमान्तर्मुहूर्त्तं तु पार्थक्येन
न कथितं तादृशान्तर्मुहूर्त्तस्य पल्योपमासंस्थेयभाग एव समादिष्टत्वादिति । 'एवं
ठिईए वि' एवं स्थितावपि स्थितिरपि जघन्येन एकममयात्मिका उत्कर्षेण पल्यो-
पमस्यासंस्थेयमागधिका त्रिसागरोपमप्रमाणैव ज्ञातव्या इति । 'एवं तिसु वि-
उद्देसएसु' एवं त्रिष्वपि प्रथमतृतीयपञ्चमेषु देशकेषु अवस्थानकालस्थितिकालौ
जघन्योत्કૃષ્ટાભ્યાં ક્રમશઃ કથિતપ્રકારેણ સમયમાત્રઃ, પલ્યોપમાસંસ્થેયમાગાભ્ય-

હિયાઈં' હસ સૂત્ર પાઠ દ્વારા સૂત્રકાર પ્રકટ કરતે હૈં-યહાં અવસ્થાન કાલ
જઘન્ય સે એક સ્થાન્ય કા હૈં ઓર ઉત્કૃષ્ટ સે પલ્યોપમ કે અસંસ્થાતવે
ભાગ સે અધિક ત્રીણ સાગરોપમ કા હૈં । યહ કથન તૃતીય પૃથિવી કે
ઉપરિતન પ્રસ્તટ કી સ્થિતિ કો લેકર કહા ગયા હૈં । કયોંકિ યહાં પર
પલ્યોપમ કે અસંસ્થાતવે ભાગ સે અધિક ત્રીણ સાગરોપમ કી સ્થિતિ હૈં ।
યહાં પર ભી પૂર્વભવ અન્તર્મુહૂર્ત્ત પૃથ્વરૂપ સે નહીં કહા ગયા હૈં કયોંકિ
હસકા સમાવેશ પલ્યોપમ કે અસંસ્થાતવે ભાગમેં કહા હૈં । 'એવં ઠિઈએ
વિ' ઉસી કે જમી સ્થિતિ ભી હૈં । અર્થાત્ જઘન્ય સ્થિતિ એક સમય કી
ઓર ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ પલ્યોપમ કે અસંસ્થાત વેં ભાગ સે અધિક ત્રીણ
સાગરોપમ કી હૈં । 'એવં તિસુ વિ ઉદ્દેસેસુ' હસી પ્રકાર સે અવસ્થાન
કાલ ઓર સ્થિતિકાલ જઘન્ય ઓર ઉત્કૃષ્ટ પ્રથમ, તૃતીય ઓર પંચમ

एकं समयं उक्कोसेणं तिन्नि सागरोवमाइं पल्लियोवमस्स असंस्थेज्जहमागमन्-
हियाइं' आ सूत्रपाठ द्वारा सूत्रकारे प्रकट करेला છે. અહિયાં અવસ્થાનકાળ
જઘન્યથી એક સમયનો છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી પલ્યોપમના અસંખ્યાતા ભાગથી
વધારે ત્રણ સાગરોપમનો છે. આ કથન ત્રીણ પૃથ્વીના ઉપરના પ્રસ્તરની
સ્થિતિને લઈને કહેલ છે. કેમ કે-અહિયાં પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગથી
વધારે ત્રણ સાગરોપમની સ્થિતિ છે. અહિયાં પણ પૂર્વભવનો અંતર્મુહૂર્ત
અલગરૂપથી કહેલ નથી કેમ કે તેનો સમાવેશ પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા
ભાગમાં કહેલ છે. 'એવં ઠિઈએ વિ' અને સ્થિતિ પણ તેના પ્રમાણે જ છે.
અર્થાત્ જઘન્ય સ્થિતિ એક સમયની કહેલ છે. અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ પલ્યોપમના
અસંખ્યાતમા ભાગથી વધારે ત્રણ સાગરોપમની છે. 'એવં તિસુ વિ ઉદ્દેસેસુ'
આજ પ્રમાણે અવસ્થાનકાળ અને સ્થિતિકાળ જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટથી પહેલા,

धिक त्रिसागरोपप्रमाणश्चेति ज्ञातव्यौ । 'सेसं तं चेव' शेषं-तदतिरिक्तं सर्वम्
एषोद्देशकत्रितयेषु तथा शेषाष्टोद्देशकेषु प्रथमशतवदेव ज्ञातव्यमिति । अत्रापि पूर्व-
वदेवैकादशोद्देशका ज्ञातव्या इति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते त्ति तदेवं भदन्त !
तदेवं भदन्त ! इति ।

॥ चत्वारिंशत्तमे शतके चतुर्थं संक्षिप्तमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥४०॥४॥

॥ 'अहं पंचमं संक्षिप्तमहायुग्मसयं' ॥

मूलम्—एवं तेउलेस्सेसु वि सयं । नवरं संचिट्टुणा जहन्नेणं
एककं समयं उक्कोसेणं दो लागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखे-
ज्जइभागमवभहियाइं । एवं ठिईएसु वि । नवरं नो सन्नोवउत्ता वा ।
एवं तिसुवि उदेसएसु सेसं तं चेव । सेवं भंते सेवं भंते ! त्ति । ४०-५।

इन उद्देशकों का भी है ऐसा जानना चाहिये । 'सेसं तं चेव' पाक्षीका
और सब कथन इन ३ उद्देशकों में एवं अवशिष्ट आठ उद्देशकों में
प्रथम शतक के जैसा ही जानना चाहिये । यहाँ पर भी पूर्व के जैसे ही
११ उद्देशक हैं । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! जैसा आपने
यह कहा है वह सब कथन सर्वथा सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर
गौतमस्वामीने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना
नमस्कार कर फिर वे गौतम संघम और तप से आत्मा को भावित
करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये॥

४० वे शतक में यह चतुर्थं संक्षिप्त महायुग्म शत समाप्त ॥४०-४॥

नील, અને પાંચમા ઉદ્દેશાઓમાં પણ છે તેમ સમજવું 'સેસં તં ચેવ' તે
શિવાય બાકીનું બીજું સઘળું કથન આ ઉદ્દેશામાં અને બાકીના આઠ ઉદ્દેશામાં
પહેલા કહ્યા પ્રમાણે ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ કહ્યા છે.

'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણે આ
વિષયમાં કહેલ છે તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ
દેવાનુપ્રિયનું આ વિષય સંબંધીનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ
પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા
વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત
કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ॥૪૦૧॥

॥ચાળીસમા શતકમાં આ ચોથું સંક્ષિપ્તમહાયુગ્મ નામનું શતક સમાપ્ત ॥૪૦-૪॥

છાયા—એવં તેજોલેશ્યેષ્વપિ શતમ્ । નવરં સંસ્થાના જવન્યેન એકં સમયમ્
ઉત્કર્ષેણ દ્વે સાગરોપમે પલ્યોપમસ્યાસંખ્યેયમાભ્યધિકે । એવં સ્થિતાવપિ ।
નવરં નો સંજ્ઞોપયુક્તા વા । એવં ત્રિષ્વપિ ઉદ્દેશકેષુ શેષં તદેવ । તદેવં મદન્ત !
તદેવ મદન્ત ! इति ॥૪૦॥૫॥

ટીકા—‘એવં તેજોલેશ્યેષ્વપિ શતમ્, તેજોલેશ્યઃ
કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજિવશ્ચિન્દ્રિયાઃ સ્વલુ મદન્ત ! કુન ઉત્પન્નને કિં, નૈરયિકેભ્યો
યાવદેવેભ્યો વા આગમ્યોત્પન્નતે ? इत्यादि समग्रमपि एतच्छतकीय प्रथमशत
मत्रावर्तनीयम् । प्रथमशतापेक्षया यद्वैलक्षण्यं तद्दर्शयति—‘नवरं’ इत्यादिना—
‘नवरं संचिह्णना जहन्नेणं एककं समयं’ नवरं संस्थाना—अवस्थितिकालो जवन्त्येन
एकं समयम्, ‘उक्कोसेण दो सागरोवमाहं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमव्वहि-
याइ’ उत्कर्षेण द्वे सागरोपमे पल्योपमस्यासंख्येयमाभाभ्यधिके पल्योपमा

જાનક ૪૦ પાંચનાં સંજ્ઞા મહાયુગ્મ જ્ઞાત

‘એવં તેજોલેશ્યેષ્વપિ શતમ્’ इत्यादि

ટીકાર્થ—હે મદન્ત ! કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ તેજોલેશ્યાવાણે
સંજ્ઞા પંચેન્દ્રિય જીવ તિસ સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન હોતે હે ?
કયાવે નૈરયિકો મેં હે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હે ? અથવા યાવત્ દેવો મેં
સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે ? इत्यादि रूप से सम्पूर्ण प्रथम शत इसी
४० वें ज्ञात या यहाँ का लेना नाहिये परन्तु यहाँ जो प्रथम शत
की अपेक्षा कथन में अन्तर है, उसे ‘नवरं संचिह्णना जहन्नेणं एककं
समयं’ उक्कोसेण दो सागरोवमाह, पलिओवमस्स असंखेज्जइभाग
मव्वहियाइ’ सूत्रकार ने इस सूत्रपाठ द्वारा प्रदर्शित किया है—यहाँ

॥પાથમા સંજ્ઞી મહાયુગ્મ શતકનો પ્રારંભ—

‘એવં તેજોલેશ્યેષ્વપિ શતમ્’ इत्यादि

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણવાળા તેજોલેશ્યાવાળા
સંજ્ઞા પંચેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ
નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યચ્ચોનિકોમાંથી આવીને
ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા
દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ વિગેરે પ્રકારથી આ આળીસમા
શતકનું પહેલું શતક સંપૂર્ણ રીતે અહિયાં કહેવું જોઈએ. પરંતુ તે પહેલા
શતકના કથન કરતાં અહિયાં જે વિશેષપણું છે, તે ‘નવરં સંચિહ્ણના જહન્નેણં
એકકં સમયં’ ઉક્કોસેણ દો સાગરોવમાહ પલિઓવમસ્સ અસંખેજ્જઇભાગમવ્વહિયાઈ’
સૂત્રકારે આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ કરેલ છે. અહિયાં અવસ્થાન કાળ બદલ્યથી

સંખ્યેયભાગાધિક સાગરદ્વયાત્મકાવસ્થાન કાલ કથન મીશાનદેવ પરમાયુરાશ્રિત્ય જ્ઞાતવ્યમિતિ । ‘એવં ઠિર્દિવ વિ’ એવં સ્થિતાવપિ એવમાયુપઃ સ્થિતિરપિ જઘન્યો ત્કૃષ્ટાભ્યામેકસમયપ્રમાણા પલ્યોપમાસંખ્યેયભાગાભ્યધિકદ્વિસાગરોપમપ્રમાણા ચ ભવતીતિ ભાવઃ । ‘નવરં નોસન્નોવચ્ચતા વા’ નવરં તેજોલેશ્ય સંજિપચ્ચેન્દ્રિયા નો સંજીપયુક્તા વા ભવન્તીતિ । ‘એવં તિસુ વિ ઉદેસણસુ’ એવમેવ ત્રિણ્શપિ પ્રથમ તૃતીય પશ્ચમોદેશકેષ્વપિ અવસ્થિતિ સ્થિત્યાદે જ્ઞાતવ્યમ્ ‘સેસં તં ચેવ’ શેષ-તદતિરિક્તં સર્વં ત્રિપૂર્વેશકેષુ શેષાષ્ટોદેશકેષુ ચ તદેવ પ્રથમશતકોક્તમેવ જ્ઞાતવ્યમિતિ । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ ॥

॥ ચત્વારિંશતમે શતકે પંચમં સંજિમહાયુગ્મશતં સમાપ્તમ્ ॥૪૦૧॥

અવસ્થાન કાલ જઘન્ય સે એક સમય કા ઓર ઉત્કૃષ્ટ સે પલ્યોપમ કે અસંખ્યાતવે ભાગ સે અધિક દો સાગરોપમ કા હૈ એસે અવસ્થાન કાલ કા કથન યહાં તેજોલેશ્યા કી ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ કો લેકર કહા ગયા હૈ । વર્ષોં કિ ઈશાનદેવલોક કે દેવોં કી ઉત્કૃષ્ટ આયુ પલ્યોપમ કે અસંખ્યાતવે ભાગ સે અધિક દો સાગરોપમ કી હૈ । ‘એવં ઠિર્દિવ વિ’ સ્થિતિકાલ મી અવસ્થાન કાલ કે જૈસા હી હૈ । ‘નવરં નો સન્નોવચ્ચતા’ યે તેજોલેશ્યાવાલે સંજિ પંચેન્દ્રિય જીવ નો સંજીપયુક્ત મી હોતે હૈ । ‘એવં તિસુ વિ ઉદેસણસુ’ ઈસી પ્રકાર સે અવસ્થાનકાલ ઓર સ્થિતિ કાલ આદિ કા કથન પ્રથમ, તૃતીય ઓર પંચમ હન ત્રીન ઉદેશકોં મેં મી કર લેના ચાહિયે ‘સેસં તં ચેવ’ હનકે અતિરિક્ત ઓર સર્વ કથન અવશિષ્ટ આઠ ઉદેશકોં મેં ૩ ત્રીન ઓર ૮-૧૧ ઉદેશોં મેં પ્રથમ શતક મેં જૈસા કહા ગયા હૈ વૈસા હી હૈ । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે મદન્ત ! જૈસા આપને યહ કહા હૈ વહ સર્વથા સત્ય હી હૈ ૨ ।

એક સમયનો અને ઉત્કૃષ્ટથી પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગથી વધારે જે સાગરોપમનો છે. એવા અવસ્થાન કાળનું કથન અધિયાં તેજોલેશ્યાની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિને લઈને કહેલ છે. કેમકે-ઈશાન દેવમાં દેવોનું ઉત્કૃષ્ટ આયુ પલ્યોપમના અસંખ્યાત ભાગથી વધારે જે સાગરોપમનું છે. ‘એવં ઠિર્દિવ વિ’ સ્થિતિકાળ પણ અવસ્થાનકાળ પ્રમાણે જ છે. ‘એવં તિસુ વિ ઉદેસણસુ’ આજ પ્રમાણે અવસ્થાનકાળ અને સ્થિતિકાળનું કથન પહેલા, ત્રીજા, અને પાંચમા આ ત્રણ ઉદેશાઓમાં પણ કરી લેવું જોઈએ. આ કથન શિવાય બીજું કથન બાકીના આઠ ઉદેશાઓમાં ૩ અને ૮-૧૧ ઉદેશાઓમાં પહેલા શતકમાં જે પ્રમાણે કહેલ છે, એજ પ્રમાણે છે.

॥ ‘અહ છટ્ટં મહાજુમ્મ સયં’ ॥

મૂલમ્—જહા તેઉલેસ્સા સયં તહા પમ્હલેસ્સાસયં પિ ।
નવરં સંચિટ્ટુણા જહન્નેણં એકકં સમયં ઉક્કોસેણં દસ સાગરો-
વસાઈં અંતોમુહુત્તમભહિયાઈં । એવં ઠિઈંણ વિ । નવરં અંતો-
મુહુત્તં ન ભન્નઈં । સેસં તં ચેવ । એવં એસુ પંચસુ સપ્પસુ
જહા કપ્પહલેસ્સાસપ્પ ગમ્મઓ તહા નેયવ્વો જાવ અણંતચુત્તો ।
સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ ॥

॥ ચત્તાલીસડમે સપ્પ છટ્ટં મહાજુમ્મસયં સમત્તં ॥

છાયા—યથા તેજોલેશ્યાશતં તથા પદ્મલેશ્યાશતમપિ । નવરં સંસ્થાના
જઘન્યેનૈકં સમયમ્ ઉત્કર્ષેણ દશ સાગરોપમાગિ અન્તર્મુહૂર્ત્તમ્યધિકાનિ । એવં સ્થિતા-
વપિ નવરમન્તર્મુહૂત્તં ન ભણ્યતે શેષં તદેવ । એસ્મેતેષુ પશ્ચસુ શતેષુ યથા કૃષ્ણ-
લેશ્યાશતે ગમક સ્તથા નેતવ્યો યાવદન્તકૃત્યઃ । તદેવં ભદન્ત ! તદેવં ભદન્ત !

॥ ચત્તારિંશત્તમે શતકે પષ્ટં સંજ્ઞિમહાયુગ્મશતં સમાપ્તમ્ ॥૪૦૬॥

ટીકા—‘જહા તેઉલેસ્સાસયં તહા પમ્હલેસ્સાસયં પિ’ યથા તેજોલેશ્યા

હસ પ્રકાર કહકર ગૌતમને પ્રભુશ્રી કો વન્દના કરી ઔર નમસ્કાર ક્રિયા ।
વન્દના નમસ્કાર કર ફિર વે સંયમ ઔર તપ સે આત્મા કો ભાવિત
કરતે હુએ અપને સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે ।

॥૪૦ વે શતક મેં યહ પાંચવાં સંજ્ઞિ મહાયુગ્મશત સમાપ્ત હુઆ ॥૪૦-૬॥

શતક ૪૦ છટ્ટા મહાયુગ્મ શત

‘જહા તેઉલેસ્સાસયં તહા પમ્હલેસ્સાસયં પિ’ હત્યાદિ ૪૦-૬॥

ટીકાર્થ—જિસ પ્રકાર ૧૧ ઉદ્દેશકો સે સમન્વિત તેજોલેશ્યા શત

‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં
જે પ્રમાણે કહેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ
દેવાનુપ્રિયતું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ
પ્રભુશ્રીને વંદના કરી અને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી
સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર
વિરાજમાન થયા.

॥ચાળીસમા શતકમાં આ પાંચમું સંજ્ઞિ મહાયુગ્મ નામનું શતક સમાપ્ત॥

॥૪૦-૫॥

છટ્ટા મહાયુગ્મ શતકનો પ્રારંભ—

‘જહા તેઉલેસ્સાસયં તહા પમ્હલેસ્સાસયં પિ’ હત્યાદિ

જે પ્રમાણે અગિયાર ઉદ્દેશાઓવાળું તેજોલેશ્યા શતક કહેલ છે, એજ

શતમેકાદશોદેશકસંયુક્તં મણિતં તથા તેનૈવ પ્રકારેણ પદ્મલેશ્યાશતમપિ એકા-
દશોદેશકસંયુક્તં મણિતવ્યમ્ । એવમેવ તેજોલેશ્યાશતે યત્ યત્-યથા-યથા
કથિતં તત્ તત્ સર્વં તેનૈવ રૂપેણાત્ર પદ્મલેશ્યાશતેઽપિ જ્ઞાતવ્યમિતિ । તેજો-
લેશ્યશદાપેક્ષયા ચઢૈલક્ષણં તદર્શયતિ-‘નવરં’ હત્યાદિના ‘નવરં સંચિદ્વળા જહ-
ન્નેણં એકકં સમયં’ નવરં સંસ્થાના-તેપામવરિથતિકાલો જઘન્યેન એકં સમયમ્-
એકસમયાત્મકઃ ‘ઉક્કોસેણં દસસાગરોવમાઈ અંતોમુદ્વત્તમન્મહિયાઈ’ ઉત્કૃષ્ટેણાવ-
સ્થિતિકાલો દશસાગરોપમાણ્યન્તર્મુદ્વર્ત્તમ્પ્રધિકાનિ । ઉત્કૃષ્ટેણ દશ સાગરોપ-

કહા ગયા છે । ઊભી પ્રકાર સે યહ પદ્મલેશ્યાશત મી એકાદશ ઉદેશકો
સે સમન્વિત કરકે કહ લેના ચાહિયે । હસ પ્રકાર તેજોલેશ્યાશત મેં
જેસા જેસા કહા ગયા છે વેસા વેસા પદ્મલેશ્યા શત મેં મી કહના
ચાહિયે । પરન્તુ જો ઊસકી અપેક્ષા યહાં મિત્રતા છે ઊસે સૂત્રકારને
‘નવરં સંચિદ્વળા જહન્નેણં એકકં સમયં ઉક્કોસેણં દસ સાગરોવમાઈ’
અંતોમુદ્વત્તમન્મહિયાઈ’ હસ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કિયા છે-યહાં
અવસ્થાન કાલ જઘન્ય સે એક સમય કા ઓર ઉત્કૃષ્ટ એક અન્તર્મુદ્વર્ત્ત
અધિક દશ સાગરોપમ કા છે । ઉત્કૃષ્ટ સે અવસ્થાન કાલ જો હસ
પ્રમાણ કા કહા ગયા છે વહ વ્રહ્મલોક કે દેવોં કી આયુ કો આશ્રિત
કર કે કહા ગયા છે । વ્રહ્મલોક મેં પદ્મલેશ્યા હોતી છે ઓર વહાં હતની
આયુ હોતી છે । યહાં જો હસે એક અન્તર્મુદ્વર્ત્ત કો વિશેષિત કિયા છે
વહ પૂર્વભવ કે અન્તિમ અન્તર્મુદ્વર્ત્ત કો આશ્રિત કર કે કિયા છે ।

પ્રમાણે આ પદ્મલેશ્યા શતક પણ અગિયાર ઉદેશ્યાઓથી યુક્ત કહેવું બેઠ્યું
આ રીતે તેજોલેશ્યા શતકમાં જે જે રીતથી કહેવામાં આવેલ છે. એજ
પ્રમાણે આ પદ્મલેશ્યા શતકમાં પણ કહેવું બેઠ્યું. પરંતુ તે કથન કરતાં આ
કથનમાં જે વિશેષપણ છે તે સૂત્રકારે ‘નવરં સંચિદ્વળા જહણેણ એકકં સમયં’
‘ઉક્કોસેણં દસસાગરોવમાઈ અંતોમુદ્વત્તમન્મહિયાઈ’ આ સૂત્ર પાઠ દ્વારા પ્રગટ કરેલ
છે અહિયાં અવસ્થાનકાળરહેવા નો સમય જઘન્યથી એક સમયનો અને ઉત્કૃષ્ટથી
એક અંતર્મુદ્વર્ત્ત દશ સાગરોપમનો છે ઉત્કૃષ્ટથી અવસ્થાન કાળનું જે આ
પ્રમાણ કહેલ છે, તે પ્રદક્ષીકના દેવોની આયુષ્યનો આશ્રય કરીને કહેલ છે.
પ્રદક્ષીકમાં પદ્મલેશ્યા હોય છે અને ત્યાં તે પ્રમાણેનું આયુષ્ય હોય છે.
અહિયાં જે તેને એક અંતર્મુદ્વર્ત્તનું વિશેષણ કહેલ છે તે પૂર્વભવના દેહના
અંતર્મુદ્વર્ત્તનો આશ્રય કરીને કહેલ છે ‘જવ ટિદ્દિય વિ’ સ્થિતિકાળ પણ
અવસ્થાન કાળ પ્રમાણેનો જ છે. ‘નવરં અંતોમુદ્વત્તન મન્નદ’ પરંતુ સ્થિતિકાળના

માણીત્યાદિ યત્ કથિતં તદ્ 'બ્રહ્મલોકદેવાનામાયુરાશ્રિત્યેતિ જ્ઞાતવ્યમ્, બ્રહ્મલોકે
 હિ પદ્મલેશ્યા ભવતિ એતાવદાયુશ્ચ ભવતિ અન્તર્મુહૂર્ત્તં ચ યાક્તન મયાવસાનવર્તીતિ
 'એવં ઠિઈં એ વિ' એવં સ્થિતાવપિ સ્થિતિરપિ જગન્મ્યોત્કર્ષાભ્યામેતાવત્ પ્રમાણૈવ । 'નવરં
 અંતોમુહુત્તં ન ભન્નઈ' નવરં કેવલં સ્થિતૌ અન્તર્મુહૂર્ત્તં ન મળ્યતે દશસાગરોપમમાત્રમેવ
 વક્તવ્યમિતિ । 'સેસં તં ચેવ' શેપં-નવરમિત્યાદિના યત્ કથિતં તદતિરિક્તં સર્વં
 તેજોલેશ્યાવદેવ વક્તવ્યમિતિ । 'એવં એસુ પંચસુ સપ્સુ જહા કળ્હલેસ્સા એ ગમઓ
 તહા નેયવ્વો' એતેષુ પશ્ચસુ શતેષુ કૃષ્ણનીલકપોતતેજઃ પદ્મલેશ્યાશતેષુ યથા
 કૃષ્ણલેશ્યાશતે ગમકસ્તથૈવ ગમકો નેતવ્યઃ સર્વાણ્યપિ એતાનિ શતાનિ કૃષ્ણ-
 લેશ્યાશતવદેવ જ્ઞાતવ્યાનિ, इति । एकादश एकादशौधिकाद्युद्देशयुक्तानि । कियत्प-

'એવ ઠિઈં એ વિ' સ્થિતિકાલ સી અવસ્થાનકાલ કે જૈસા હી હૈ । 'નવરં
 અંતોમુહુત્તં ન ભન્નઈ' પરન્તુ સ્થિતિકાલ કે કથન મેં અન્તર્મુહુર્ત્ત નહીં હૈ
 અતઃ યહાં સ્થિતિકાલ કેવલ દશ સાગરોપમ કા હી હૈ । એક અન્ત-
 ર્મુહૂર્ત્ત અધિક દશ સાગરોપમ કા નહીં હૈ । 'સેસં તં ચેવ' હન કે
 સિવાય-અવસ્થાન ઓર સ્થિતિ કાલ કે વિના ઓર ત્વ કથન યહાં
 તેજોલેશ્યા કે કથન કે જૈસા હી હૈ । 'એવં એસુ પંચસુ સપ્સુ જહા
 કળ્હલેસ્સા એ ગમઓ તહા નેયવ્વો' હસ પ્રકાર હન પાંચ શતોં મેં કૃષ્ણ,
 નીલ, કાપોત, તેજ, ઓર પદ્મલેશ્યા શતોં મેં-કૃષ્ણલેશ્યા શત મેં જૈસા
 પાઠ કહા ગયા હૈ ડસી પ્રકાર સે પાઠ કહના ચાહિયે । ચે સ્વ શત
 ૧૧-૧૧ ઉદેશકોં મેં સે યુક્ત હૈં । કૃષ્ણલેશ્યા શત કે જૈસે સમસ્ત
 પ્રાણ, યાવત્ સમસ્ત સત્ત્વ કૃષ્ણલેશ્યાવાલે જીવ રૂપ સે પહિલે
 યાવત્ અનન્નવાર ઉત્પન્ન હો ચુકે હૈં । યહાં તક કા કથન

કથનમાં અંતર્મુહૂર્ત્ત હોતું નથી. તેથી અહિયાં સ્થિતિકાળ કેવળ દશ સાગરો-
 પમનો જ છે એક અંતર્મુહૂર્ત્ત અધિક દસ સાગરોપમનો નથી 'સેસં તં
 ચેવ' આ કથન સિવાય અવસ્થાન અને સ્થિતિકાળના કથન સિવાય બાકીનું
 સઘળું કથન અહિયાં તેજોલેશ્યાના કથન પ્રમાણે જ છે. 'એવં એસુ પંચસુ
 સપ્સુ જહા કળ્હલેસ્સા એ ગમઓ તહા નેયવ્વો' આ રીતે આ પાંચ શતકોમાં
 એટલે કે કૃષ્ણ, નીલ, કાપોત તેજ અને પદ્મ લેશ્યાવાળા શતકમાં કૃષ્ણલેશ્યા
 વાળા શતકમાં જે પ્રમાણે કહેલ છે, એજ પ્રકારનું કથન સઘળી લેશ્યાઓના
 સંબંધમાં કહેવું જોઈએ આ બધા શતકો ૧૧-૧૧ અગિયાર અગિયાર
 ઉદેશાઓવાળા થાય છે. કૃષ્ણલેશ્યાવાળા શતકનો પાઠ સઘળા પ્રાણે યાવત્
 સઘળા સત્ત્વે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા જીવ પણાથી પહેલાં યાવત્ અનંતવાર ઉત્પન્ન
 થઈ ચુક્યા છે. આ કથન સુધીનું કથન અહિયાં કહેવું જોઈએ.

ર્યન્તં કૃષ્ણલેશ્યશતઃ જ્ઞાતવ્યં તત્રાહ—‘જાવ’ ઇત્યાદિ, ‘જાવ અણંતચુત્તો’ યાવ-
દનન્તકૃત્વઃ ઉપપાત્તદારભ્ય અથ ભદન્ત ! સર્વે પ્રાણાઃ યાવત્સર્વે સત્ત્વાઃ કૃષ્ણાદિ-
લેશ્યતયા સમુત્પન્નપૂર્વાઃ કિમ્ ? ગૌતમ ! સર્વે પ્રાણાઃ યાવત્સર્વે સત્ત્વાઃ અસકૃત્
અનન્તકૃત્વો વા સમુત્પન્નપૂર્વાઃ કૃષ્ણલેશ્યાદિ લેશ્યતયા, एतत्पर्यन्तं જ્ઞાતવ્યમિતિ
‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ તદેવં ભદન્ત ! તદેવં ભદન્ત ! ઇતિ ॥

॥ ચત્વારિંશત્તમે શતકે પઠં સંક્ષિપ્તમહાયુગ્મશતં સમાપ્તમ્ ॥૪૦૬॥

॥ ‘અહ સત્તમં સન્નિમહાજુગ્મસયં

મૂલમ્—સુક્કલેસ્સસયં જહા ઓહિસયં । નવરં સંચિટ્ટુણા
ઠિર્ઘ્ય જહા કઠ્ઠલેસ્સસય સેસં તહેવ જાવ અણંતચુત્તો । સેવં
ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ ॥

ચત્તાલીસદ્દમે સય સત્તમં સન્નિ મહાજુગ્મસયં સમત્તં ॥૪૦-૭॥

છાયા—શુક્લલેશ્યશતં યથૌધિકશતમ્ । નવરં સંસ્થાના સ્થિતિથ્થ યથા—
કૃષ્ણલેશ્યશતે । શેપં તથૈવ યાવદનન્તકૃત્વઃ । તદેવં ભદન્ત ! તદેવં ભદન્ત ! ઇતિ

॥ ચત્વારિંશત્તમે શતકે સપ્તમં સંક્ષિપ્તમહાયુગ્મશતં સમાપ્તમ્ ॥૪૦૭॥

યહાં કહના ‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ હે ભદન્ત ! જૈસા આપને યહ
કહા હૈ વહ સર્વથા સત્ય હી હૈં ૨ । ઇસ પ્રકાર કહકર ગૌતમને પ્રભુશ્રી
કો વન્દના કી ઓર નમસ્કાર ક્રિયા । વન્દના નમસ્કાર કર ફિર વે
સંયમ ઓર તપ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે છુપ અપને સ્થાન પર વિરાજ-
માન હો ગયે ।

૪૦ વેં શતક મેં યહ છઠ્ઠા સંજ્ઞિ મહાયુગ્મ શત સમાપ્ત હુઆ ॥૪૦-૬॥

શતક ૪૦ સાતર્વા સંજ્ઞિ મહાયુગ્મ શત

‘સુક્કલેસ્સસયં જહા ઓહિસયં’ ઇત્યાદિ૦

‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ આ વિષયમાં આપ દેવાનુપ્રિયે
જે પ્રમાણેનું કથન કરેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે, હે ભગવન્
આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને
ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે
પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન
પર બિરાજમાન થયા. ૧૨૦૦૧

॥યાળીસમાં શતકમાં છટ્ઠું સંજ્ઞિ મહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત ॥૪૦-૬॥

સાતમા સંજ્ઞિ મહાયુગ્મ શતકનો પ્રારંભ—

‘સુક્કલેસ્સસયં જહા ઓહિસયં’ ઇત્યાદિ

ટીકા--‘શુક્લલેસસયં જહા ઔદિગસયં’ શુક્લલેશ્યશતં યથૌધિકશતમ્’
પ્રથમયં ચાર્ણિશતમશનકસ્ય યત્ પ્રથમં શતં તત્ ઔધિકશતં તસ્મિન્ પ્રથમ-
શતકે કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મસંજિપશ્ચેન્દ્રિયાણાં યેન રુપેણોત્પાતાદિકં કથિતં તેનૈવ
રુપેણ ઉપપાતાદિકં યથાગ્નિરૂપ્ય શુક્લલેશ્યશતમપિ ભણિતવ્યમ્ । પ્રથમ શતા-
પેક્ષયા યદ્દેલક્ષણં તદ્દર્શયતિ ‘નવરં’ इत्यादिना-‘नवरं संचिद्वृणा ठिईय जहा
कणहलेस्ससए’ नवरं-केवलं संस्थानाऽवस्थितिकालः स्थितिरायुपो यथा कृष्णलेश्य-
शते अवस्थितिकालो जघन्येन एकं समय मुत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि अन्त-
र्मुहूर्त्ताभ्यधिकानि शुक्ललेश्यावस्थानमित्यर्थः । एतच्च पूर्वं भवगतान्तिमान्त-

ટીકાર્થ-જેહા ઔધિક શત કહા ગયા હૈ વૈસો હી શુક્લલેશ્યા
વાલે જીવો કે સમ્બન્ધ મેં ભી કહ લેના ચાહિયે । ચાલીશ વેં શતક
કા જો પ્રથમ શત હૈ ઉસકા નામ ઔધિક શત હૈ । ઉસ પ્રથમ શત
મેં કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજિ પશ્ચેન્દ્રિય જીવો કા જિસ રુપ સે ઉત્પાદ
આદિ કહા ગયા હૈ ઉસી રુપ સે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત શુક્લ-
લેશ્યાવાલે ઇન સંજિ પશ્ચેન્દ્રિય જીવો કા ભી ઇસ શત મેં ઉત્પાદ આદિ
કહ લેના ચાહિયે । ‘નવરં સંચિદ્વૃણા ઠિઈ ય જહા કણહલેસ્સસए’ પરન્તુ
ઉસ પ્રથમ શત કી અપેક્ષા ઇસ શુક્લલેશ્ય શત મેં અવસ્થાન ઔર
સ્થિતિ કો લેકર ભિન્નતા હૈ । યહાં અવસ્થાન કાલ ઔર સ્થિતિકાલ
કૃષ્ણલેશ્ય શત મેં જૈસા કહા ગયા હૈ વૈસા હી હૈ । ઇસ પ્રકાર અવસ્થાન
કાલ યહાં પર જઘન્ય સે ૧ સમય કા ઔર ઉત્કૃષ્ટ સે અન્તર્મુહૂર્ત

ટીકાર્થ-ઔધિક શતકમાં જે પ્રમાણેનું કથન કહેવામાં આવેલ છે, એજ
પ્રમાણેનું કથન શુક્લલેશ્યાવાળા જીવોના સમ્બન્ધમાં પણ શતક કહેવું જોઈએ.
ચાળીસમા શતકનું જે પહેલું શતક છે, તેનું નામ ઔધિક શતક કહેલ છે.
તે પહેલા શતકમાં કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજી પશ્ચેન્દ્રિય જીવોના ઉત્પાદ જે
પ્રમાણે કહેલ છે, એજ પ્રમાણે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણવાળા શુક્લ-
લેશ્યાવાળા આ સંજિ પશ્ચેન્દ્રિય જીવોના આ શતકમાં ઉત્પાદ વિગેરે કહેવા
જોઈએ. ‘નવરં સંચિદ્વૃણા ઠિઈ ય જહા કણહલેસ્સસए’ પરંતુ તે પહેલાં શતકની
અપેક્ષાએ આ શુક્લલેશ્યા શતકમાં અવસ્થાન અને સ્થિતિ સંબંધી જૂદાપણું
કહેલ છે. અહિંયાં અવસ્થાન કાળ અને સ્થિતિ કાળ કૃષ્ણલેશ્યાશતકમાં જે
પ્રમાણે કહેલ છે, એજ પ્રમાણે છે. આ રીતે અહિંયાં અવસ્થાનકાળ જઘન્યથી
૧ એક સમયનો અને ઉત્કૃષ્ટથી અન્તર્મુહૂર્ત વધારે ૩૩ તેત્રીસ સાગરોપમનો

મુદ્દર્શન, અનુત્તરવિમાનદેવાયુષ આશ્રિત્ય ઝિજેષુ સ્થિતિતુ ત્રયસ્તિગત્તાવતે
પમાણીતિ । અત્ર ‘અન્તર્મુદ્દર્શનમધિકાનિ’ इति न वक्तव्यमिति ‘सेवं તહેવ જાવ
અંગતલુત્તો’ શેવં નવરમિત્યાદિના યત્ કથિતં તદનિરિક્તં સર્વં પરિમાણાદિકં

અધિક ૩૩ સાગરોપમ યદ્વાં ઉત્કૃષ્ટ સે જો इतना काल कहा गया है
वह पूर्वभव के अन्तिम अन्तर्मुदूर्त्त को लेकर तो अन्तर्मुदूर्त्त अधिक
कहा है और अनुत्तर देवों की उत्कृष्ट आयु ३३ सागरोपम की होती
है और वहीं शुक्ललेश्या होती है । इस आद को आश्रित कर ३३
सागरोपम काल कहा है । स्थिति के सम्बन्ध में भी ऐसा ही कथन है ।
परन्तु ३३ सागरोपम को यहां ‘एक अन्तर्मुदूर्त्त से अधिक’ इस विशेष-
ण से विशेषित नहीं किया है । ‘सेवं तहेव जाव अंगतलुत्तो’ वाक्य
का और सब उत्पाद आदि का कथन प्रथम शत के जैसा ही है । इन
प्रकार यहां प्रथमशत का कथन ‘समस्त प्राण यावत् समस्त सत्य
कृतयुगम कृतयुगम राशि प्रमित शुक्ललेश्यावाले संज्ञि पंचेन्द्रिय जीव
रूप से अनन्तवार उत्पन्न हो चुके हैं’ इस अन्तिम पाठ तक का यहां
पर कथन करना चाहिये । ‘सेवं भंते । सेवं भंते । त्ति’ हे भदन्त ! जैसा
आपने यह कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर

કહેલ છે. અહિયાં ઉત્કૃષ્ટથી જે આટલો કાળ કહેલ છે, તે પૂર્વભવના છેલ્લા
અંતર્મુદ્દર્ત ને લઈને અંતર્મુદ્દર્ત અધિક કહેલ છે. અને અનુત્તર દેવોતું
ઉત્કૃષ્ટ આયુષ્ય ૩૩ સાગરોપમનું હોય છે અને શુક્લલેશ્યાનું આયુષ્ય પણ
એજ પ્રમાણે હોય છે. આ ભાવનો આશ્રય કરીને ૩૩ તેત્રીસ સાગરોપમકાળ
કહેલ છે. સ્થિતિના સંબંધમાં પણ એજ પ્રમાણેનું કથન સમજવું પરંતુ ૩૩
તેત્રીસ સાગરોપમને અહિયાં એક અંતર્મુદ્દર્તથી અધિક એમ કહેલ નથી.
‘સેવં તહેવ જાવ અંગતલુત્તો’ બાકીનું બીજું સઘળું એટલે કે ઉત્પાદ વિગેરે
સંબંધી કથન પહેલા શતકમાં કહ્યા પ્રમાણે છે. આ રીતે અહિયાં પહેલા
શતકનું કથન સઘળા પ્રાણે યાવત્ સઘળા સત્વો કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ, રાશિ-
પ્રમાણવાળા શુક્લલેશ્યાવાળા સંજિ પચેન્દ્રિય છવ પણાથી અનંતવાર ઉત્પન્ન
થઈ ચુકેલ છે, આ છેલ્લા પાઠ સુધીનું કથન અહિયાં કહેવું જોઈએ.

‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ આ વિષયમાં આપ દેવાનુપ્રિયે
જે પ્રમાણે કહેલ છે તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું
સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને

तदेव प्रथमशतवदेव ज्ञातव्यं यावत् अनन्तकृत्वः । एतत्पर्यन्तं प्रथमशतमिहाध्ये-
तव्यमिति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त इति ॥

इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
कलितकलितकलापालापक्रमविशुद्धगद्यपद्यानैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित — कोल्हापुरराजगुरु-
बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर
पूज्य श्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री
“भगवतीसूत्रस्य” प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायाम् चत्वारिंशत्तमे शतके सप्तमं
संज्ञिमहायुगमशतं समाप्तम् । १४०।७॥

गौतमने प्रभुश्री को वन्दना और नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार
कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने
स्थान पर विराजमान हो गये ।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत,
“भगवतीसूत्र” की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके चालीसवें शतक का
सातवां संज्ञि महायुगम शत समाप्त ४०-७॥

वंदना करी तेआने नमस्कार कर्या वंदना नमस्कार करीने ते पछी संयम
अने तपथी पोताना आत्माने भावित करता थका पोताना स्थान पर
विराजमान थया. ॥सू०१॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर श्री पूज्य श्री घासीलालजी महाराजकृत ‘भगवतीसूत्र’ की
प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याना आलीसवा शतकेभा सातवुं शतके समाप्त ॥४०-७॥



‘अह अहमं सन्निमहायुग्मसयं’ ॥

मूळप-भवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्मसन्निपंचिदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति ? जहा पढमं सयं तहा णेयव्वं भव-
सिद्धियाभिलावेणं । नवरं सव्वपाणां णो इण्णट्ठे समट्ठे । सेसं
तहेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! च्चि ॥

चत्तालीसइमे सए अट्ठमं सन्निमहायुग्मसयं समत्तं ॥४०-८॥

छाया--भवद्विककृतयुग्मकृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्प-
द्यन्ते ? यथा प्रथमं संज्ञिशतं तथा ज्ञातव्यं भवसिद्धिकाऽभिलापेन । नवरं सर्वे
पाणाः० नायमर्थः समर्थः । शेरं तदेव । तदेव भदन्त ! २ इति ॥

॥ चत्वारिंशत्तमे शतके अष्टमं संज्ञिमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥४०-८॥

टीका--‘भवसिद्धिरुडजुम्मकडजुम्मसन्निपंचिदियाणं भंते ! कओ उवव-
ज्जंति’ भवद्विक कृतयुग्मकृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्य-
न्ते किं नैरयिकेभ्यो यावदेवेभ्यो वा आगत्योत्पद्यन्ते इति प्रश्नः । उत्तरमाह--
अतिदेशद्वारेण--‘जहा’ इत्यादि, ‘जहा पढमं सन्निमयं तहा नेयव्वं भवसिद्धिया-

शतक ४० आठवां संज्ञि महायुग्म शत

‘भवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्म सन्नि पंचिदियाणं भंते !’ इत्यादि

टीकार्थ--हे भदन्त ! भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म संज्ञि पंचेन्द्रिय
जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैर-
यिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा यावत् देवों में से आकर
के उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं--‘जहा पढमं सन्निमयं
तहा नेयव्वं भवसिद्धिय अभिलावेणं’ हे गौतम ! जिस प्रकार से

आठमां संज्ञि महायुग्म शतकने। प्रारंभ--

‘भवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्म सन्निपंचिदियाणं भंते !’ इत्यादि

टीकार्थ--हे लगवन भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म संज्ञि पंचेन्द्रिय छवे।
क्या स्थान विशेषथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? शु तेणो नैरयिकेमांथी आवीने
उत्पन्न थाय छे ? अथवा तिर्य्यथेनिकेमांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ?
अथवा मनुष्येमांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा देवेमांथी आवीने
उत्पन्न थाय छे ? आ प्रश्नने। उत्तर आपतां प्रभुश्री अतिदेशथी छे छे छे--
‘जहा पढमं सन्निमयं तहा नेयव्व भवसिद्धिय अभिलावेणं’ छे गौतम ! ७ प्रभावे

મિલાવેજ' યથા પ્રથમં સંજ્ઞિશતં તથા જ્ઞાતવ્યમ્, ભવસિદ્ધિકામિલાપેન એતસ્ય ચત્વાર્શત્તમશતકમથમશતે સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિયાણામુપપાતો યેન રુપેણ કથિત સ્તેનૈવ રુપેણ ભવસિદ્ધિકામિલાપેન 'ભવસિદ્ધિકકૃતયુગ્મકૃતયુગ્મસંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિયાઃ સ્વરૂપં એવં રૂપામિલાપેન ઉપપાતાદિ વર્ણનીયઃ । અત્રાપિ એકાદશોદેશકા વક્તવ્યાઃ । સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિયશતાપેક્ષયા યદ્વૈલક્ષણ્યં તદર્શયતિ—'નવરં' इत्यादि, 'नवरं सव्वपाणा, णो इण्ठे समट्ठे' नवरं सर्वे प्राणाः० नायमर्थः समर्थः, हे भदन्त ! सर्वे प्राणा यावत् सर्वे सत्ताः किं भवसिद्धिककृतयुगमकृतयुगमसंज्ञिपच्येन्द्रियतया समुत्पन्नपूर्वाः, इति प्रश्नस्य प्रथमशते अनन्तकृत्वः समुत्पन्नपूर्वा इत्युत्तरं दत्तम्, इदमु 'नायमर्थः समर्थः' सर्वे जीवाः नाम संज्ञिपच्येन्द्रियत्वे भवसिद्धिकतया समु-

इसी ४० वे' शतकके प्रथम शतक में संज्ञिपंचेन्द्रिय जीवों का उपपात कहा गया है उसी प्रकार से भवसिद्धिक अभिलाष से—हे भदन्त ! भवसिद्धिक कृतयुगम कृतयुगम संज्ञि पंचेन्द्रिय जीव 'इस रूप अभिलाष से—इनका भी उपपात आदि वर्णित कर लेना चाहिये । यहां पर भी ११ उद्देशक हैं । संज्ञि पंचेन्द्रिय शत की अपेक्षा जो इस शत में भिन्नता है वह 'नवरं सव्वे पाणा णो इण्ठे समट्ठे' इस सूत्रपाठ द्वारा प्रकट की गई है—अर्थात् 'हे भदन्त ! समस्त प्राण यावत् समस्त सत्त्व क्या कृतयुगम कृतयुगम संज्ञि पंचेन्द्रिय रूप से पहिले उत्पन्न हो चुके हैं ? हां, गौतम ! यावत् अनन्तवार वे इस रूप से उत्पन्न हो चुके हैं' ऐसा उत्तर प्रभुश्रीने कहा है । सो ऐसा उत्तर इस प्रश्न का यहां पर नहीं कहना । क्यों कि समस्त प्राण यावत् समस्त सत्त्व यहां संज्ञि

આ આળીસમા શતકના પહેલા શતકમાં સંજ્ઞિ પચ્ચેન્દ્રિય જીવોનો ઉપપાત કહેલ છે, એજ પ્રમાણે ભવસિદ્ધિક અભિલાષથી હે ભગવન્ ! ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિય જીવો આ પ્રમાણેના અભિલાષથી તેઓના ઉપપાત વિગેરેનું વર્ણન કરી લેવું જોઈએ. અહિયાં ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ કહેલ છે. તે 'નવરં સવ્વે પાણા ણો ઇણ્ઠે સમટ્ઠે' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ કરવામાં આવેલ છે. અર્થાત્ હે ભગવન્ સઘળા પ્રાણો યાવત્ સઘળા સત્ત્વો શું ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજ્ઞિ પચ્ચેન્દ્રિય પદ્ધતી પહેલાં ઉત્પન્ન થઈ ચુકેલા છે ? હા ગૌતમ ! યાવત્ અનંતવાર તેઓ એ રૂપથી ઉત્પન્ન થઈ ચુક્યા છે. આ પ્રમાણેનો પ્રશ્નોત્તર પ્રભુશ્રીએ કહેલ છે તો આ પ્રમાણેનો ઉત્તર અહિયાં કહેવાનો નથી. કેમ કે—સઘળા પ્રાણો યાવત્ સઘળા સત્ત્વો આ રૂપથી અનંતવાર ઉત્પન્ન થયા નથી. આ કથન શિવાય બાકીનું સઘળું કથન પહેલા શતક પ્રમાણે જ છે.

त्पक्षपूर्वा इत्युत्तरम् अत एतद् उभयोः शतयो वैलक्षण्यमिति । 'सेसं तदेव' शेषं
भयरमित्यनेन यत् कथितं तदतिरिक्तं सर्वं प्रथम शतवदेव ज्ञातव्यम् । 'सेवं
भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥

॥ चत्वारिंशत्तमे शतके अष्टमं संज्ञिमहायुगमशतं समाप्तम् ॥४०।८॥

॥ 'अह नवमं सन्निमहायुगमसयं' ॥

मूलम्—कणहलेस्स भवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्म सन्नि-
पंचिदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति ? एवं एएणं अभिलावेणं
जहा ओहियकणहलेस्ससयं सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

चत्तालीसइमे सए नवमं सन्निमहायुगमसयं समत्तं ॥४०—९॥

छाया—कृष्णलेश्य भवसिद्धिक कृतयुगमकृतयुगमसंज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु
भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते एवमेतेनाभिलापेन यथा औघिककृष्णलेश्यशतम् ।
तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥

॥ चत्वारिंशत्तमे शतके नवमं संज्ञिमहायुगमशतं समाप्तम् ॥४०।९॥

पञ्चेन्द्रिय में भवसिद्धिक रूप से अनन्तवार उत्पन्न नहीं हुए हैं ।
'सेसं तदेव' बाकी का और सब कथन प्रथम शतक के जैसा ही है ।
'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! आप का यह कथन सर्वथा
सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना एवं
नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से
आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

॥४० वे शतक में यह आठवां महायुगमशत समाप्त ४०-८॥

शतक नौवां महायुगमशत

'कणहलेस्स भवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्म सन्निपंचिदियाणं भंते !'

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भगवन् आप देवानुप्रियन्तुं आ कथन
सर्वथा सत्य न छे, हे भगवन् आपन्तुं आ कथन सर्वथा सत्य न छे, आ
प्रभाणु इहीने प्रभुश्रीने वंदना करी नमस्कार कर्या वंदना नमस्कार करीने ते
पछी संयम अने तपधी पोताना आत्माने भावित करता थदा पोताना
स्थान पर विराजमान थया.

॥याणीसमा शतकमां आ आठमुं महायुगम शतक समाप्त ॥४०-८॥

नवमा महायुगम शतकनो प्रारंभ—

'कणहलेस्स भवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्म सन्निपंचिदियाणं भंते ! इत्यादि

ટીકા--‘કૃષ્ણલેશ્ય ભવસિદ્ધિ કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ સંજિપંચિન્દ્રિયાણં મંતે । કથો ઉત્તવજ્જંતિ’ કૃષ્ણલેશ્યે ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ સંજિપંચેન્દ્રિયાઃ સ્વદ્-ભદન્ત ! કૃત ઉત્પદ્યન્તે કિં નૈરયિકેભ્ય આગત્ય યાવદ્ દેવેભ્યો વા આગત્યે-ત્યાદિ પ્રશ્નઃ, ઉત્તરમાહ--‘एवं’ इत्यादि, ‘एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहिय कणह्लेस्ससयं’ एवमेतेनाभिलापेन यथा औघिककृष्णलेश्यशतम् तत्र यथा कृष्णलेश्यानामुपपातादिको वर्णित स्तथैव कृष्णलेश्यभवसिद्धिक कृतयुगमकृतयुगम संजिपञ्चेन्द्रियाणामपि उपपातो वक्तव्यः । एकादशोद्देशका अपि वक्तव्याः ‘सेवं मंते ! सेवं मंते ! ति’ तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥

॥ चत्वारिंशत्तमे शतके नवमं संजिपञ्चेन्द्रियमहायुगमशतं समाप्तम् ॥४०॥९॥

ટીકાર્થ--હે ભદન્ત ! કૃષ્ણલેશ્યાવાલે ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ કૃત-યુગ્મ સંજિ પંચેન્દ્રિય જીવ કિસ સ્થાન વિશેષ સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હે ? કયા વે નૈરયિકો મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હે ? અથવા દેવોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હે ? હસ પ્રશ્ન કેં ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હે--‘एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहिय कणह्लेस्ससयं’ હે ગૌતમ ! હસ અભિલાપ દ્વારા જૈસા કૃષ્ણલેશ્યાવાલોં કે સમ્બન્ધ મેં ઔઘિક-કૃષ્ણ-લેશ્યશત કહા ગયા હૈ વૈસા હી યહાં પર ભી કહ લેના ચાહિયે । ઔઘિક કૃષ્ણલેશ્યા શત યહ ૪૦ વેં શતક કા દ્વિતીયશત હૈ । ઉસ મેં કૃષ્ણ-લેશ્યાવાલોં કા ઉપપાત આદિ વર્ણિત હુઆ હૈ । સો ઉસી પ્રકાર સે હસ શત મેં ભી કૃષ્ણલેશ્યાવાલે ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજિ પંચેન્દ્રિયોં કે ભી ઉપપાત આદિ કા વર્ણન કર લેના ચાહિયે । યહાં

ટીકાર્થ--હે ભગવન કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજિ-પંચેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિયોં યથોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે--‘एवं एएणं अभिलावेणं जहा कणह्लेस्ससयं’ હે ગૌતમ ! આ અભિલાપ દ્વારા કૃષ્ણલેશ્યાવાળાઓના સંબંધમાં ઔઘિક કૃષ્ણલેશ્યાશતક કહેલ છે. એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ કહેવું જોઈએ ઔઘિક કૃષ્ણલેશ્યાશતક એ ૪૦ યાજીસમા શતકનું બીજું શતક છે. તેમાં કૃષ્ણલેશ્યાવાળાઓના ઉપપાત આદિનું વર્ણન કરવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે આ-શતકમાં પણ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવ-સિદ્ધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજિ પંચેન્દ્રિયોના ઉપપાત વિશેરનું વર્ણન પણ કરી લેવું જોઈએ. અહિયાં પણ ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશોઓ કહેવા જોઈએ.

॥ 'अहं दसमं सन्निमहाजुग्मसयं' ॥

मूळम्—एवं नीललेश्य भवसिद्धिएहि वि सयं । सेवं भंते ।
सेवं भंते ! त्ति

चत्तालीसइमे दसमं सन्निमहाजुग्म सयं ॥४०—१०॥

छाया—एवं नीललेश्यसिद्धिकैरपि शतम् । तदेवं भदन्त । तदेवं भदन्त ।

चत्वारिंशत्तमे शतके दशमं संज्ञि महायुग्मशतं समाप्तम् ॥४०॥१०॥

टीका—'एवं नीललेश्य भवसिद्धिएहि वि सयं' एवं नीललेश्य भवसिद्धि-
कैरपि शतं यथा कृष्णलेश्यभवसिद्धिकृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रियशतम्
अस्यैव शतकस्य तथैव नीललेश्य भवसिद्धिकृतयुग्मकृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रिय

पर भी ११ उद्देशक कहना चाहिये । 'सेवं' भंते । 'सेवं' भंते ! 'त्ति' हे
भदन्त । जैसा आपने यह कहा है वह सब सत्य ही है २ । इस प्रकार
कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया वन्दना
नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते
हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

शतक ४० दशवां संज्ञि महायुग्म शत

चालीसवां वे शत में नववां महायु महायुग्म शत समाप्त ॥४०—१॥

'एवं नीललेश्य भवसिद्धिए वि सयं—सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति'

टीकार्थ—इसी प्रकार नीललेश्यावाले कृतयुग्मकृतयुग्म राशि प्रमित
भवसिद्धिक संज्ञि पञ्चेन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में भी यह शत कहलेना
चाहिये । यह शत भी ११ उद्देशकों से युक्त है । यहाँ अतिदेश द्वारा

'सेवं' भंते ! 'सेवं' भंते ! 'त्ति' हे लगवन आप देवानुप्रिये आ विषयमा
ने प्रमाणेनुं कथन करेला छे. ते सधणुं कथन सत्य न छे. हे लगवन आप
देवानुप्रियनुं सधणुं कथन सर्वथा सत्य न छे आ प्रमाणे कहीने गौतमस्वामीजे
प्रभुश्रीने वंदना करी तेज्याने नमस्कार कर्या वंदना नमस्कार करीने ते पछी
संयम अने तपशी पोताना आत्माने भावित करता थका पोताना स्थान
पर निराजमान थया ॥सू०१॥

॥नवमुं महायुग्म शतके समाप्त ॥४०—६॥

दशमा संज्ञि महायुग्म शतकेनो आरंभ—

'एवं नीललेश्यभवसिद्धिए वि सयं—सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति'

टीकार्थ—आज प्रमाणे ओटले के उपर द्वा प्रमाणे नीललेश्यावाणा कृतयुग्म
कृतयुग्म राशिप्रमाणवाणा भवसिद्धिक पञ्चेन्द्रिय श्रवणा संबंधमां पणु आ
शतक कहेपुं लेपये, आ शतक पणु अगियार उद्देशाओधी युक्त छे. अहियां

भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति, हे भदन्त ! नीललेश्य भवसिद्धिकविषये यद्
देवानुप्रियेण कथितं तत्सर्वं सर्वथैव सत्यमिति कथयित्वा गौतमो याचतु
यथासुखं विहरतीति ॥

॥ चत्वारिंशत्तमे शतके दशम संज्ञिमहायुगमशतं समाप्तम् ॥४०॥१०॥

‘११-१४ संनिमहाजुम्मसयाइं’

मूलम्—एवं जहा ओहियाणं सन्नि पंचिंदियाणं सत्त
सयाणि भणियाणि एवं भवसिद्धिएहि वि सत्त सयाणि काय-
व्वाणि । नवरं सत्तसु वि सएसु सव्व पाणा० जाव णो इणट्ठे
समट्ठे, सेसं तं चेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

भवसिद्धिय सया समत्ता

चत्तालीसइमे सए ११-१४ संनिमहाजुम्मसयाणि समत्ताणि

छाया—एवं यथोधिकारानि संज्ञिपञ्चिंदियाणां सप्त शतानि भणितानि एवं
भवसिद्धिकैरपि सप्तशतानि कर्त्तव्यानि । नवरं सप्तस्वपि शतेषु सर्वपाणा याचतु
नायमर्थः समर्थः । शेषं तदेव । तदेव भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥

॥ भवसिद्धिकशतानि समाप्तानि ॥

चत्वारिंशत्तमे शतके एकादशादारभ्य चतुर्दशं

संज्ञिमहायुगमशतं समाप्तम् ॥४०॥११-१४॥

वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम
और तप से आत्मा को भाविन करते हुए अपने स्थान पर विराजमान
हो गये ।

॥४० वे शतक में यह १० वां संज्ञि महायुगम शत समाप्त ४०-१०॥
शतक ४० ग्यारहवां, बारहवां, तेरहवां, और चौदहवां, महायुगम शत
‘एवं जहा ओहियाणि सन्निपंचिंदियाणं सत्त सयाणि भणियाणि
एवं भवसिद्धिएहि वि सत्त सयाणि कायव्वाणि ॥४०-१०॥

प्रमाणे कहीने गौतमस्वामीये प्रबुश्रीने वंदना करी नमस्कार कथा वंदना
नमस्कार करीने ते पछी संयम अने तपथी पोताना आत्माने लावित करता
थका पोताना स्थान पर विराजमान था।

चाणीसभा शतकमां आ दसभुं संज्ञिमहायुगम शतक समाप्त ॥४०-१०॥

अग्यारभा बारभा तेरभा चौदभा महायुगमाने प्रारंभ—

एवं जहा ओहियाणि सन्नि पंचिंदियाणं सत्त सयाणि भणियाणि एवं
भवसिद्धि एहि वि सत्त सयाणि कायव्वाणि’

ટીકા--‘एवं जहा ओहियाणि सन्निपंचिदियाणं सत्त सयाणि भणियाणि’ एवं यथा औघिकानि सेज्ञपञ्चेन्द्रियाणां सप्तशतानि प्रथमम् औघिकम्, द्वितीयं कृष्णलेश्यम् २, तृतीयं नीललेश्यम् ३, चतुर्थं कापोतलेश्यम् ४, पञ्चमं तेजोलेश्यम् ५, षष्ठं पद्मलेश्यम् ६, सप्तमं शुक्ललेश्यम् ७, एवंरूपाणि औघिक संज्ञिपञ्चेन्द्रियसम्बन्धीनि चत्वारिंशत्तमशतकस्य प्रथमद्वितीयतृतीयचतुर्थषष्ठसप्तमरूपाणि शतानि भणितानि-कथितानि ‘एवं भवसिद्धि एहि वि सत्त सयाणि कायव्वाणि’ एवं भवसिद्धिकैरपि सप्तशतानि कर्त्तव्यानि तत्र प्रथममौघिकं भवसिद्धिशतम् १, द्वितीयं कृष्णलेश्यभवसिद्धिशतम्, तृतीयं नीललेश्यभवसिद्धिशतम् ३, चेतित्रयं भवसिद्धिशतं पूर्वं कथितम्, अस्मिन् सूत्रे तु

ટીકાર્થ-जैसे संज्ञि पंचेन्द्रियों के सम्बन्ध में सात औघिक शतक कहे गये हैं। वैसे ही संज्ञि पंचेन्द्रिय भवसिद्धिकों के सम्बन्ध में भी सात शतक कह लेना चाहिये औघिक संज्ञि पंचेन्द्रियों के वे सात शतक इस प्रकार से हैं-औघिकशत १, कृष्णलेश्यशत २, नीललेश्यशत ३, कापोतलेश्यशत ४, तेजोलेश्यशत ५, पद्मलेश्यशत ६, और शुक्ललेश्यशत ७, इस प्रकारसे ये संज्ञि पंचेन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में ४० वें शतक में प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, षष्ठ और सप्तम शत रूप से कहे गये हैं। इसी प्रकार से ‘भवसिद्धि एहि वि सत्त सयाणि कायव्वाणि’ भवसिद्धिक जीवों के सम्बन्ध में भी सात शत कह लेना चाहिये। इन में प्रथम औघिक भवसिद्धिक शत है १ द्वितीय कृष्णलेश्य भवसिद्धिक शत है। तृतीय नीललेश्य भवसिद्धिक शत है। ये तीन भवसिद्धिक शत तो पहिले कहे जा चुके हैं। इस सूत्र में तो

સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિયોના સમ્બન્ધમાં સાત ઔઘિક શતકો કહેલા છે, એજ પ્રમાણે સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય ભવસિદ્ધિકોના સંબંધમાં પણ સાત શતકો કહેવા જોઈએ. સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિયોના તે સાત ઔઘિક શતકો આ પ્રમાણે છે.-ઔઘિક શતક ૧ કૃષ્ણલેશ્યા શતક ૨ નીલલેશ્યા શતક ૩ કાપોતલેશ્યા શતક ૪ તેજલેશ્યા શતક ૫ પદ્મલેશ્યા શતક ૬ અને શુક્લલેશ્યા શતક ૭ આ રીતે આ ઔઘિક સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં આગીસમા શતકમાં પહેલા, બીજા, ત્રીજા, ચોથા, પાંચમાં, છઠા અને સાતમા શતક રૂપથી કહેલ છે. એજ પ્રમાણે ‘ભવસિદ્ધિ એહિ વિ સત્તસયાણિ કાયવ્વાણિ’ ભવસિદ્ધિક જીવોના સંબંધમાં પણ સાત શતકો કહેવા જોઈએ. તેમાં પહેલું ઔઘિક ભવસિદ્ધિક શતક છે. ૧ બીજું કૃષ્ણલેશ્ય ભવસિદ્ધિક શતક છે. ત્રીજું નીલલેશ્ય ભવસિદ્ધિક શતક છે. આ ત્રણ શતકોતો પહેલા કહેલા છે. આ સૂત્રમાં તો કેવળ કાપોત, તેજ,

કાપોત-તેજઃ-પદ્મ-શુક્લલેશ્યાવિશિષ્ટાનિ ચત્વારિ શતાનિ एवं सङ्गकितानि सप्तशतानि प्रत्येकमेकादशोद्देशरुग्मितानि क्रमेण कर्त्तव्यानि । आलापप्रकार-स्तु सर्वत्र पूर्ववदेव कर्त्तव्य इति । 'नवरं सत्तसु वि सव्य पाणा जाव णो इणट्ठे समट्ठे' नवरं-केवलमौघिकशतापेक्षया इदमेव वैलक्षण्यं यत् सप्तस्वपि शतेषु सर्वे प्राणा यावत् सर्वे सत्ताः औघिक भवसिद्धिककृष्णलेश्यादिक भव-सिद्धिकतया समुत्पन्नपूर्वाः किमिति प्रश्नं कृत्वा नायमर्थः समर्थः, एवं रूपेण सर्वत्रापि उत्तर मुन्नेयम्, सेसं तं चेव' शेषं नवर-मित्यनेन यद्वैलक्षण्यं प्रतिपादितं ततोऽन्यत् सर्वम्-औघिक संज्ञिपञ्चेन्द्रियसप्तशतसदृशमेव ज्ञातव्यमिति । 'सेव' भंते ! सेव' भंते ! त्ति' तदेव' भदन्त ! २ इति ।

॥चत्वारिंशत्तमे शतके एकादशशतादारभ्य चतुर्दशशतपर्यन्तं

चत्वारि संज्ञिमहायुग्मशतानि समाप्तानि ॥४०-११-१४॥

કેવલ કાપોત, તેજ, પદ્મ ઓર શુક્લ હન લેશ્યાઓં સે વિશિષ્ટ ચાર હી શત કહે હૈં । અતઃ સવ મિલકર કુલ સાત શત હો જાતે હૈં । યે સાત શત હૈં પ્રત્યેક શત ૧૧ ઉદ્દેશક કોં સે યુક્ત હૈં । અતઃ હન મેં પ્રત્યેક મેં આલાપ પ્રકાર પૂર્વ મેં જૈસા કહા ગયા હૈં વૈસા કહલેના ચાહિયે 'નવરં સત્તસુ વિ સવ્ય પાણા જાવ ણો ઇણટ્ઠે સમટ્ઠે' પરન્તુ યહાં એસા નહીં કહના ચાહિયે કિ સમસ્ત પ્રાણ યાવત્ સમસ્ત સત્ત્વ ઔઘિક ભવસિદ્ધિક રૂપ સે અથવા કૃષ્ણલેશ્યાવાલે ભવસિદ્ધિક રૂપ સે પહિલે યાવત્ અનન્તવાર ઉત્પન્ન હો ચુકે હૈં । યહી વિલક્ષણતા યહાં ઔઘિકશત કી અપેક્ષા સે હૈં । 'સેસં તં ચેવ' પાકી કા ઓર સવ કથન ઔઘિક સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય સપ્ત શત કે જૈસા હી હૈં । 'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ' હે ભદન્ત ! જૈસા આપને યહ કહા હૈં વહ સવ સર્વથા સત્ય હી હૈં ૨ ।

પક્ષ અને શુક્લ આ લેશ્યાઓથી યુક્ત ચાર શતકો ૪ કહેલા છે તેથી બધા મળીને કુલ ૭ સાત શતકો થઈ જાય છે. આ સાતે શતકોમાં-દરેક શતકોમાં ૧૧-૧૧ અગિયાર અગિયાર ઉદ્દેશ્યો કહેલા છે તેથી દરેકમાં આલાપકોનો પ્રકાર પહેલાં કહ્યા પ્રમાણેનો સમજવો. 'નવરં સત્તસુ વિ સવ્ય પાણા જાવ નો ઇણટ્ઠે સમટ્ઠે' પરંતુ અહિયાં એ પ્રમાણે કહેવું જોઈએ કે-સઘળા પ્રાણો યાવત્ સઘળા સત્ત્વો ઔઘિક ભવસિદ્ધિક પશુથી અથવા કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક પશુથી પહેલાં યાવત્ અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચૂકેલ છે ઔઘિક શતકના કથન કરતા અહિયાં એજ જુદાપણુ છે. 'સેસં તં ચેવ' બાકીનું બીજુ સઘળુ કથન ઔઘિક પંચેન્દ્રિય શતકના કથન પ્રમાણે જ છે.

'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ' હે ભગવન આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં

॥ ‘અહ પત્રસમં સન્નિ મહાજુમ્મસયં’

મૂળ—અભવસિદ્ધિય કહજુમ્મકહજુમ્મ સન્નિ પંચિંદિયાણં
મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ ? ઉવવાઓ તહેવ અણુત્તરવિમાણવજ્જો ।
જહા પરિમાણં અવહારો ઉચ્ચત્તં વંધો વેદો વેદણં ઉદયો ઉદીરણા ય
કળહલેસસણ । કળહલેસસા વા જાવ સુક્કલેસસા વા । નો સમ્મ-
દિટ્ઠી, મિચ્છાદિટ્ઠી, નો સમ્મામિચ્છાદિટ્ઠી । નો નાણી, અન્નાણી,
ઘવં જહા કળહલેસસણ । નવરં નો વિરયા અવિરયા નો વિરયા-
વિરયા સંચિટ્ઠણા ઠિર્ઘય જહા ઓહિય ઉદેસણ । સમુઘ્વાયા
આદિલ્લા પંચ । ઉવ્વટ્ઠણા તહેવ અણુત્તરવિમાણવજ્જં । સવ્વ-
પાણા જાવ ણો ઇણટ્ટે સમટ્ટે, સેસં જહા કળહલેસસણ જાવ
અણંતખુત્તો । ઇવં સોલસસુ વિ જુમ્મેસુ । સેવં મંતે !
સેવં મંતે ! ત્તિ । ॥૪૦-૧૫-૧॥

પદમસમય અભવસિદ્ધિય કહજુમ્મકહજુમ્મ સન્નિ પંચિ-
દિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ ? જહા—સન્નીણં પદમસમય
ઉદેસણ તહેવ । નવરં સમ્મત્તં સમ્મામિચ્છત્તં નાણં ચ સવ્વત્થ

इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार
क्रिया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को
भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

॥ इस प्रकार ४० वें शतक में ग्यारहवें शत से लेकर चौदहवें
शतक के चार संज्ञि महायुगम शत समाप्त हुए ॥

જે પ્રમાણે કહેલ છે તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન આપ દેવાનુપ્રિયનું
કહેલ સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ
પ્રભુશ્રીને વંદનાકરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કર કરીને તે પછી
સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર
બિરાજમાન થયા. ॥સૂ.૦૧॥

॥આ રીતે આળીસમા શતકમાં અગિયારમાં શતકથી લઈને ચૌદમા શતક
સુધીના આર સંજ્ઞિ મહાયુગમ શતકો સમાપ્ત ॥૪૦-૧૧-૧૪॥

नत्थि सेसं तहेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥४०-१५-२॥

एवं एत्थ वि एक्कारस्स उद्देसगा कायव्वा पढमतइय पंचमा
एक्कगमा सेसा अट्ठ वि एक्कगमा । सेवं भंते । सेवं भंते । त्ति ।
चत्तालीसइमे सए पन्नरसमं सन्नि महाजुम्मसयं समत्तं । ४०-१५।

छाया--अभवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत
उत्पद्यन्ते ? उपपात स्तथैव अनुत्तरविमानवर्जाः । परिमाणमपहार उच्चत्वं बन्धो
वेदन मुरय उदीरगा च यथा कृष्णलेश्यशते । कृष्णलेश्या वा यावत् शुक्ल-
लेश्या वा नो सम्यग्दृष्टयः मिथ्यादृष्टयः नो सम्यग् मिथ्यादृष्टयः । नो ज्ञानिनः
अज्ञानिनः एवं यथा कृष्णलेश्यशते । नवरं नो विरताः अविरताः नो विरता-
विरता । संस्थाना स्थितिश्च यथा औघिकोद्देशके । समुद्रघाता आघाः पञ्च
चद्वर्तनाः तथैवानुत्तरविमानवर्जाः सर्वे प्राणाः यावत् नायमर्थः समर्थः शेषं यथा
कृष्णलेश्यशते यावदनन्तकृत्वः । एवं षोडश्वपि युग्मेषु तदेवं भदन्त !
तदेवं भदन्त ! इति ॥४०॥१५॥१॥

प्रथमसमयाभवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त !
कुत उत्पद्यन्ते ? यथा संज्ञिनां प्रथमसमयोद्देशके तथैव । नवरं सम्यक्त्वं सम्यग्-
मिथ्यात्वं ज्ञानं च सर्वत्र नास्ति । शेषं तथैव । तदेवं भदन्त ! तदेवं
भदन्त ! इति ॥४०॥१५॥२॥

एव मन्नापि एकादशोद्देशकाः कर्तव्याः प्रथमतृतीयपञ्चमाः एकगमकाः,
शेषा अष्टावपि एकगमकाः । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ।

चत्वारिंशत्तमे शतके पञ्चदशं महायुग्मशत समाप्तम् । ४०॥१५

टीका--'अभवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्मसन्निपंचिदियाणं भंते ! कओ उवव-
ज्जंति' अभवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त । कुत उत्पद्य

'अभवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्म सन्निपंचिदियाणं भंते ! कओ
उववज्जंति ।

टीकार्थ--हे भदन्त ! अभवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञि पञ्चे-
न्द्रिय जीव कित्ति स्थान विशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं ? क्या वे

पदरमां सन्नि महायुग्म शतकेनो प्रारंभ--

'अभवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्म पंचिदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति'

टीकार्थ--हे भगवन् अभवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञि पञ्चेन्द्रिय जीवो
क्या स्थानविशेषथी आवीने उत्पन्न धाय छे ? शुं तेजो नेरथिकेमांथी आवीने

નતે ? કિં નૈરયિકેભ્ય આગત્ય યાવદેવેભ્ય આગત્ય સમુત્પન્નતે ઇતિ પ્રશ્નઃ, મગ-
ધાનાહ-અતિદેશદ્વારેણ-‘ઉવવાઓ’ ઇત્યાદિ, ‘ઉવવાઓ તદેવ અનુત્તરવિમાનવજ્જો’
ઉપપાત સ્તથૈવ અનુત્તરવિમાનવર્જઃ અનુત્તરવિમાનદેવાન્ પરિત્યજ્યાન્યતઃ સર્વત
પ્વ નૈરયિકતિર્યગ્મનુષ્યદેવેભ્ય ઉપપાત ઇતિ । ‘પરિમાણં અવહારો
ઉચ્ચત્તં વંધો વેદો વેયળં ઉદીરણા ય જહા ક્ષણ્ણલેસસપ્પ’ પરિમાણઅપહાર ઉચ્ચત્તં
વંધો વેદો વેદનમુદય ઉદીરણા ચ યથા ક્ષણ્ણલેસ્યશતે ક્ષણ્ણલેસ્યશતે ચ દ્વીન્દ્રિય
શતકસ્યાતિદેશઃ કૃતઃ, તત્રાપિ એકેન્દ્રિયશત્વાતિદેશોડ્વોગ્ધ્યા પરિમાણાદિક-
મુદીરણાન્તં કથિતં તથૈવેહાપિ ચથાસમ્ભવં તત્ર તત્રતઃ જ્ઞાતવ્યમ્ । ‘ક્ષણ્ણલેસ્યા

નૈરયિકોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન છાતે હિં ? યાવત્ દેવોં મેં સે આકરકે
ઉત્પન્ન હોતે હિં ? હસકા અતિદેશ દ્વારા પ્રશ્ન ઉત્તર દેતે હુપ કહતે હિં-
‘ઉવવાઓ તદેવ અનુત્તર વિમાનવજ્જો’ ‘હે ગૌતમ ! અનુત્તરવિમાનવાસી
દેવોં કો છોડકર સ્વય જગહોંસે નૈરયિકોં મેં સે, તિર્યગ્ગોનિકોં મેં સે
મનુષ્યોં મેં સે ઔર દેવોં મેં સે-હનકા ઉપપાત હોતા હે । ‘પરિમાણં
અવહારો, ઉચ્ચત્તં વંધો, વેદો, વેયળં, ઉદીરણા ય જહા ક્ષણ્ણલેસસપ્પ’
પરિમાણ અપહાર ઝંચાઈ વન્ધ, વેદ વેદન, ઉદીરણા યે સવ ક્ષણ્ણલેસ્ય-
શતકે જૈસે જાનને ચાહિયે । ક્ષણ્ણલેસ્ય શત મેં દ્વીન્દ્રિય શતક કા
અતિદેશ ક્રિયા ગયા હૈ । દ્વીન્દ્રિય શતક મેં મી એકેન્દ્રિય શતકા અતિ-
દેશ હુઆ હૈ । હસલિયે વઢાં પરિમાણ સે લેકર ઉદીરણા નકકા કથન
જૈસા ક્રિયા ગયા હૈ ડસી પ્રકાર સે યહાં પર મી હનકા કથન
ચથા સંભવ વહોં સે જાનના ચાહિયે । ‘ક્ષણ્ણલેસ્યા વા જાવ સુક્કલેસ્યા

ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યગ્ગોનિકોં માથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા
મનુષ્યોં માથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોં માથી આવીને ઉત્પન્ન
થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-‘ઉવવાઓ
તદેવ અનુત્તરવિમાનવજ્જો’ હે ગૌતમ ! અનુત્તર વિમાનવાસી દેવોંને છોડીને
દરેક સ્થળોં માથી અર્થાત્ નૈરયિકોં માથી તિર્યગ્ગોનિકોં માથી, મનુષ્યોં માથી,
અને દેવોં માથી તેઓંને ઉપપાત થાય છે. ‘પરિમાણં અવહારો, ઉચ્ચત્તં, વંધો,
વેદો, વેયળં, ઉદીરણા ય જહા ક્ષણ્ણલેસસપ્પ’ પરિમાણ અપહાર ઝંચાઈ,
વન્ધ, વેદ, વેદન ઉદીરણા આ બધા ક્ષણ્ણલેસ્યા શતકમાં દ્વીન્દ્રિય શતકને
અતિદેશ-લલામણુ કરેલ છે. અને દ્વીન્દ્રિય શતકમાં પણ એકેન્દ્રિય શતકને
અતિદેશ કરેલ છે. તેથી ત્યાં પરિમાણથી લઈને ઉદીરણા સુધીનું કથન જે
રીતે કરેલ છે, એજ રીતે અહિંયાં પણ યથાસંભવ તેઓંનું કથન ત્યાંના કથન
પ્રમાણે કરી લેવું. ‘ક્ષણ્ણલેસ્યા વા, જાવ સુક્કલેસ્યા વા’ આ અભવસિદ્ધિક

‘વા જાવ સુકલેસ્તા વા’ इमे अभवसिद्धिकाः कृष्णलेश्या भवन्ति यावत् शुक्ल-
लेश्या वा भवन्ति यावत् पदेन नीलकापोततेजःपद्मलेश्यानां संग्रहो भवतीति ।
‘नो सम्मदिष्टी’ इमे अभवसिद्धिका नो सम्यग्दृष्टयो भवन्ति किन्तु ‘मिच्छादिष्टी’
‘मिथ्यादृष्टयो’ भवन्ति ‘नो सम्मामिच्छादिष्टी’ नो न वा सम्यग्मिथ्यादृष्टयो
मिश्रदृष्टयो भवन्तीति । ‘नो नाणी अन्नाणी’ नो ज्ञानिनो भवन्ति, किन्तु
अज्ञानिनः तत्रापि नियमतो व्यज्ञानिनः मत्तज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनो विभङ्गज्ञानिन
भेति । ‘एवं जहा कण्णलेस्ससए’ एवं यथा कृष्णलेश्यशतके कथितं तथैवात्रापि
एतस्यैव द्वितीयशते ज्ञातव्यमिति । कृष्णलेश्यशतापेक्षया यद्वैलक्षण्यं तद्वक्ति
‘नवरं नो विरया अविरया नो विरयाविरया, नवरं’ विशेषस्तावदयम्—इमे अभव-

‘વા’ ‘ये अभवसिद्धिक जीव कृष्णलेश्यावाले होते हैं यावत् शुक्ललेश्या-
वाले होते हैं । यहां यावत्पद से ‘नील, कापोत तेजः और पद्मले-
श्याओं का संग्रह हुआ है । ‘नो सम्मदिष्टि’ ‘ये सम्यग्दृष्टि नहीं होते
हैं । किन्तु—‘मिच्छादिष्टि’ मिथ्यादृष्टि ही होते हैं । ‘नो सम्मामिच्छा-
दिष्टी’ ये मिश्रदृष्टि भी नहीं होते हैं । ‘नो नाणी, अन्नाणी’ ये ज्ञानी
नहीं होते हैं अज्ञानी ही होते हैं । अज्ञान में इनके तीन अज्ञान होते
हैं—मति अज्ञान श्रुत अज्ञान और विभंगज्ञान ये तीन अज्ञान होते हैं
‘एवं जहा कण्णलेस्ससए’ इस प्रकार से जैसा कृष्णलेश्य शतक में
कहा गया है वैसा ही यहां पर समझना चाहिये । कृष्णलेश्यशत इसी
४० वें शतकका द्वितीय शत है । ‘नवरं नो विरया अविरया, नो
विरया विरया’ कृष्णलेश्य शतकी अपेक्षा यहां जो अन्तर आता है

છવે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા હોય છે. નીલલેશ્યાવાળા હોય છે કાપોતલેશ્યાવાળા
હોય છે. તેજલેશ્યાવાળા હોય છે. અને પદ્મલેશ્યાવાળા હોય છે તથા શુક્લ-
લેશ્યાવાળા હોય છે. ‘નો સમ્મદિઢ્ઠી’ આ સમ્યગ્દૃષ્ટિ હોતા નથી. પરંતુ
‘મિચ્છાદિઢ્ઠી’ મિથ્યાદૃષ્ટિવાળા જ હોય છે. ‘નો સમ્મામિચ્છાદિઢ્ઠી’ તેઓ
મિશ્રદૃષ્ટિવાળા પણ હોતા નથી. ‘નો નાણી અન્નાણી’ તેઓ જ્ઞાની પણ હોતા
નથી. અજ્ઞાની હોય છે, તેઓને અજ્ઞાનમાં મતિઅજ્ઞાન અને શ્રુતઅજ્ઞાન એ બે
જ અજ્ઞાન હોય છે તેમને વિભંગ અજ્ઞાન હોતું નથી ‘એવં જહા કણ્ણલેસ્સસए’
એજ પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યા શતકમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે
અહીંયાં પણ સમજવું કૃષ્ણલેશ્યા શતક આ ૪૦ આળીસમા થનકતું
ગીતું શતક છે. ‘નવરં નો વિરયા અવિરયા નો વિરયાવિરયા’ કૃષ્ણલેશ્યાશતકની

મિદિકા નો વિરતા અવસ્થિત, અવિરતા મવન્તિ કિન્તુ નો વિરતાવિરતા મવન્તીતિ ।
 'સંચિદ્વળા ઠિર્દય જહા ઓહિય ઉદેસ' સંસ્થાના અવસ્થિતિકાલઃ સ્થિતિરાયુષ્ય-
 કાલઃ ચ યથોદિકશતે ચત્વારિંશત્તમશતકસ્ય પ્રથમોદેશકે કથિતસ્તથૈવ જ્ઞાતવ્યઃ
 સજાવસ્થિતિકાલો જઘન્યેનૈકં સમય મુત્કર્ષેણ સાગરોપમશતપૃથક્ત્વં સાતિરેકમ્
 સ્થિતિસ્તુ જઘન્યેનૈકં સમયમુત્કર્ષેણ ત્રયસ્તિંશત્સાગરોપમાણિ । 'સમુઘાયા
 આદિલ્લા પંચ' સમુદ્ઘાતા આચ્યાઃ પંચ વેદનાકપાયમારણાન્તિકવૈક્રિયતૈજ-

ઘની હસ સૂત્રપાઠ દ્વારા યહાં પ્રકટ કિયા ગયા હૈ-ઉસ કૃષ્ણલેદ્યશત
 ણી અપેક્ષા હસમેં યહી અન્તર હૈ કિ યે કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ
 અભવસિદ્ધિક સંજી જીવ વિરતિયુક્ત નહીં હોતે હૈં । અવિરતિવાલે
 હોતે હૈં । વિરતાવિરત-દેશસંયમી-મી યે નહીં હોતે હૈં । 'સંચિદ્વળા
 ઠિર્દય જહા ઓહિય ઉદેસ' અવસ્થાના કાલ ઓર આયુષ્કાલ જૈસા
 ૪૦ વેં જાતકકે પ્રથમ ઉદેશક મેં કહા ગયા હૈ વૈસા હી યહાં પર મી
 જાનના ચાહિયે । હસ પ્રકાર અવસ્થિતિ કાલ જઘન્ય સે એક સમય
 કા ઓર ઉત્કૃષ્ટ સે કુછ અધિક સાગરોપમશત પૃથક્ત્વકા હૈ । તથા
 સ્થિતિ જઘન્ય સે એક સમય કી ઓર ઉત્કૃષ્ટ સે ૩૩ સાગરોપમ કી
 હૈ । 'સમુઘાયા, આદિલ્લા પંચ' યહાં સમુદ્ઘાત આદિ કે પાંચ હોતે
 હૈ-વેદનાસમુદ્ઘાત કપાયસમુદ્ઘાત, મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત, વૈક્રિય
 સમુદ્ઘાત ઓર તૈજસસમુદ્ઘાત । આહારકસમુદ્ઘાત એવં કેવલિસમુ-

અપેક્ષાએ આ કથનમાં જે અંતર આવે છે તેજ આ સૂત્રદ્વારા પ્રગટ
 કરવામાં આવેલ છે. તે કૃષ્ણલેદ્ય શતકની અપેક્ષાએ આમાં એજ
 અંતર છે કે આ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણવાળા અભવસિદ્ધિક
 સંજી જીવો વિરતિવાળા હોતા નથી. અવિરતિવાળા હોય છે. વિરતા-
 વિરત-દેશસંયમી શ્રાવકો પણ તેઓ હોતા નથી. 'સંચિદ્વળા ઠિર્દય
 જહા ઓહિય ઉદેસ' અવસ્થાનકાળ અને આયુષ્યકાળ ૪૦ આળીસમા શતકતા
 પડેલા ઉદેશમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ
 સમજવું. આ રીતે અવસ્થિતિકાળ જઘન્ય એક સમયનો અને ઉત્કૃષ્ટથી કંઈક
 વધારે સાગરોપમશત પૃથક્ત્વનો છે તથા સ્થિતિ જઘન્ય એક સમયની અને
 ઉત્કૃષ્ટથી ૩૩ તેત્રીસ સાગરોપમની કહેલ છે. 'સમુઘાયા અદિલ્લા' પંચ' તેઓને
 આદિના પાંચ સમુદ્ઘાતો હોય છે.-એટલે-વેદના સમુદ્ઘાત ૧ કપાયસમુદ્ઘાત
 ૨, મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત, ૩ વૈક્રિય સમુદ્ઘાત ૪ અને તૈજસમુદ્ઘાત ૫
 આહારક સમુદ્ઘાત અને કેવલી સમુદ્ઘાત એ બે સમુદ્ઘાતો અહિં કહેલ

સાચ્યાઃ આહારકેવલિસમુદ્ઘાતવર્જાઃ ‘ઉચ્ચટ્ટુના તદેવ અણુત્તર વિમાણવજ્જા’ ઉદ્ઘર્તના તથેવ-ઉપપાતવદેવ અનુત્તરવિમાણવર્જિતાઃ એતે સમનાદ્ ઉદ્ઘટ્ય અનુત્તર વિમાણેષુ નોત્પદ્યન્તે તદરિક્તેષુ સર્વે સ્થાનેપ્તપદ્યન્તે, ઇતિ ભાવઃ । ‘સવ્વપ્પાણા જાવ ણો ઇણદ્દે સમદ્દે’ સર્વે પ્રાણાઃ યાવત્ સર્વે સત્ત્વાઃ અભવસિદ્ધિમસંનિપજ્ઞેન્દ્રિયતયા સમુત્પન્નપૂર્વાઃ કિમિતિ પ્રશ્નસ્ય, નાચમર્થઃ સમર્થઃ, દત્તુત્તરમ્ । ‘સેસં જહા કણ્હલેસ્સસપ્’ શેપમ્-ઉપરિ યત્ કથિતં તદતિરિક્તં સર્વં કૃષ્ણલેશ્યશતત્વ જ્ઞાતવ્યમ્, કિયત્પર્યન્તં કૃષ્ણલેશ્યશતં જ્ઞાતવ્યં તત્રાહ-‘જાવ’ ઇત્યાદિ, ‘જાવ અણંતરુત્તો’ યાવત્ અનન્તકૃત્વઃ એતત્પર્યન્તં સર્વં જ્ઞાતવ્યમિતિ । ‘એવં સોલસાનુ

દ્ઘાત યહાં નહીં હોતે હેં । ‘ઉચ્ચટ્ટુના તદેવ અણુત્તરવિમાણવજ્જા’ ઉદ્ઘર્તના અનુત્તરવિમાણોં કો છોડકર ઉપપાત કે જૈની હી હે । તાત્પર્ય કહને કા યહ હે કિ યે જવ અપને ભવ સે ઉદ્ઘટ્ટ હોતે હેં તો અનુત્તર વિમાણોં મેં ઉત્પન્ન નહીં હોતે હેં । હનકે સિવાય ઓર સવ સ્થાનોં મેં યે ઉત્પન્ન હો જાતે હેં । ‘સવ્વપ્પાણા જાવ ણો ઇણદ્દે સમદ્દે’ હે અદન્ત । સમસ્ત પ્રાણ યાવત્ સમસ્ત સત્ત્વ અભવસિદ્ધિક રૂપ સે પહિલે ઉત્પન્ન હોં ચુકે હેં ? તો હસ પ્રશ્ન કે ઉત્તર મેં એસા કહનાં ચાહિયે કિ હે ગૌતમ - ત્ અર્થ સમર્થ નહીં હેં । ‘સેસં જહા કણ્હલેસ્સસપ્’ હસ પ્રકાર સે જો જવર મેં કહા ગયા હેં ડસકે અતિરિક્ત ઓર સવ કથન જૈના કૃષ્ણલેશ્યશત મેં કહા ગયા હેં વૈસા હી હે । ‘જાવ અણંતરુત્તો’ ઓર યહ વાક્ય ‘યાવત્ પૂર્વ મેં અનન્તવાર ઉત્પન્ન નહીં છુપ હેં’ યહાં તકકા યહાં કાગા

નથી. ‘ઉચ્ચટ્ટુના તદેવ અણુત્તરવિમાણવજ્જા’ ઉદ્ઘર્તના અનુત્તર વિમાણોને છોડીને ઉપપાત પ્રમાણે જ છે. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-તે બ્યારે પોતાના ભવથી ઉદ્ઘર્તના કરે છે, તો તે અનુત્તરવિમાણોમાં ઉત્પન્ન થતા નથી અનુત્તરવિમાણ શિવાય બધા જ સ્થાનોમાં તેઓ ઉત્પન્ન થાય છે ‘સવ્વપ્પાણા જાવ ણો ઇણદ્દે સમદ્દે’ હે ભગવન્ સઘણા પ્રાણો યાવત્ સઘણા સત્ત્વો શું અભવસિદ્ધિકપણથી પહેલાં ઉત્પન્ન થઈ ચુક્યા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં એવું કહ્યું છે કે હે ગૌતમ ! આ અર્થ બરોબર નથી ‘સેસં જહા કણ્હલેસ્સસપ્’ આ રીતે ઉપર જે પ્રમાણે કથન કરેલ છે, તે શિવાય બાકીનું સઘણું કથન કૃષ્ણલેશ્યા શતકમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, તેજ પ્રમાણે સમજવું. ‘જાવ અણંતરુત્તો’ અને આ કથન યાવત્ પહેલાં અનન્તવાર ઉત્પન્ન થયા છે આ કથન સુધીનું કૃષ્ણલેશ્યાના પ્રકરણનું કથન કહ્યું છે તેજ પ્રમાણે કથન કહેવું

વિ જુમ્મેસુ' एवं कृतयुग्मकृतयुग्मेषु यथा उपपातादारभ्य अनन्तकृत्व इत्येत-
त्पर्यन्तं कथितं तथैव कृतयुग्मत्रयोज महायुग्मादारभ्य कल्योजकल्योज पर्यन्ते
षोडशमहायुग्मेषु उपपातादारभ्य अनन्तकृत्व एतत्पर्यन्तं वक्तव्यमिति । 'सेवं
भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥

इति श्री-विश्वविख्यातजगद्बल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि - 'जैनाचार्य'
पूज्यश्री-घासीलालब्रतिविरचितायां "श्री भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायां चत्वारिंशत्तमशतकस्य पञ्चदशे शते प्रथमोद्देशकः समाप्तः॥४०-१५-१॥

चाहिये।' 'एवं सोलससु वि जुम્मेसु' जिस प्रकार से कृतयुग्मकृतयुग्मो'
में उपपात से लेकर अनन्तकृत्व तक पाठ कहा गया है उसी प्रकार से
कृतयुग्म त्रयोज से लेकर कल्योज कल्योज तक के सोलह महायुग्मों में
भी उपपात से लेकर अनन्तकृत्व पाठ तक सब कथन कह लेना चाहिये।
'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! जैसा यह कथन आप देवानु-
प्रियने कहा है वह सब सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतमने
प्रभुश्री को वन्दना की नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर वे
संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर
विराजमान हो गये ।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके चालीसवें शतक के
१५ वें शतमें प्रथम उद्देशक समाप्त ॥४०-१५-१॥

નોંધણી. 'एवं' सोलससु वि जुम્मेसु' જે પ્રમાણે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મોમાં ઉપ-
પાતથી લઈને અનંતકૃત્વ સુધીના પાઠ કહેલ છે, એજ 'પ્રમાણે કૃતયુગ્મ
ત્રયોજથી લઈને કલ્યોજ કલ્યોજ સુધીના સોળે મહાયુગ્મોમાં પણ ઉપ-
પાતથી લઈને અનંતકૃત્વ પાઠ સુધી સઘળું કથન કહેવું' નોંધણી.

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે રીતે આ
કથન કહેલ છે, તે સઘળું કથન સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ
વિષયમાં કહેલ સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમ-
સ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યો વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી
સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન
પર ગિરાજમાન થયા. ॥૪૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્ર'ની
પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ચાલીસમા શતકમાં પહેલો ઉદ્દેશો. સમાપ્ત ॥૪૦-૧૫-૧॥

અથ દ્વિતીયોદેશકઃ પ્રારંભ્યતે-

‘પદમ સમય અભવસિદ્ધિય કહજુમ્મકહજુમ્મ સન્નિપંચિદિયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ પ્રથમસમયાભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મસંઘ્નિપચ્ચેન્દ્રિયાઃ સ્વલ્લ મદન્ત ! કુત ઉત્પચન્તે કિં નૈરયિકેભ્યો યાવદેવેભ્ય હિતિ પ્રશ્નઃ । ઉત્તરમાહ અતિદેશદ્વારેણ-‘જહા’ ઇત્યાદિ, ‘જહા સન્નીણં પદમસમયઉદેસણ તહેવ’ યથા સંઘ્નિનાં પ્રથમસમયોદેશકે તથૈવ પ્તત્યૈવ પ્રથમશતકસ્ય દ્વિતીયોદેશકે કથિતં તથૈવોપપાતાદિકં સર્વં જ્ઞાતવ્યમિતિ । પૂર્વપેક્ષયા ચઢૈલશ્ણયં તદ્દર્શયતિ-‘નવરં’ ઇત્યાદિ, ‘નવરં સમ્મત્તં સમ્મામિચ્છત્તં નાણં ચ સવ્વત્થ નત્થિ’ નવરં સમ્યક્ત્વં સમ્યગ્મિથ્યાત્વં જ્ઞાનં ચ ન સન્તિ, ઇતાવાન્ એવ પૂર્વપેક્ષયા મેઃ ‘સેસં તહેવ’

‘પદમસમય અભવસિદ્ધિય કહજુમ્મકહજુમ્મ સન્નિપંચિદિયાણં મંતે !’

ટીકાર્થ-હે મદન્ત પ્રથમસમયવર્તી અભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત સંજી પચ્ચેન્દ્રિય જીવ કિસ સ્થાનવિશેષ સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? કયા વે નૈરયિકોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા યાવત્ દેવોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અતિદેશદ્વારા હિસકા ઉત્તર દેતે હુણ પ્રભુશ્રી ગૌતમ સે કહતે હૈં-‘જહા સન્નીણં પદમસમય ઉદેસણ તહેવ’ હે ગૌતમ ! જૈસા હિસી કે પ્રથમશતક કે દ્વિતીય ઉદેશક મેં કહા ગયા હૈં વૈસા હી ઉપપાત આદિક સવ કથન યહાં જોનના ચાહિયે । પરન્તુ યહાં સમ્યક્ત્વ, સમ્યગ્મિથ્યાત્વ ઓર જ્ઞાન ચે નહીં હૈ । યહી ઘાત-‘નવરં સમ્મત્તં સમ્મામિચ્છત્તં નાણં ચ સવ્વત્થ નત્થિ’ ‘હિસ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કી ગઈ હૈ । હિમ અન્તર કે અતિરિક્ત ઓર સવ કથન પ્રથમસમય-

બીજા ઉદેશાનો પ્રારંભ--

‘પદમસમય અભવસિદ્ધિય કહજુમ્મ કહજુમ્મ સન્નિપંચિદિયાણ મંતે ! ઈ

ટીકાર્થ-હે ભગવન્ પ્રથમ સમયમાં રહેવાવાળા અભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણવાળા સંજી પચ્ચેન્દ્રિય હોવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિથિયોનાં કોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અતિદેશ દ્વારા આ પ્રશ્નોના ઉત્તર આપતાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘જહા સન્નીણં’ પદમસમયઉદેસણ તહેવ’ હે ગૌતમ ! આ ચાળીસમા શતકના પહેલા સંજિ મહાયુગ્મ પહેલા શતકના બીજા ઉદેશમાં જે પ્રમાણે કહેલ છે, એજ પ્રમાણે કહેલ છે. એજ પ્રમાણે ઉપપાત વિગેરે સઘણું કથન સમજવું. પરંતુ અહિયાં સમ્યક્ત્વ સમ્યક્ મિથ્યાત્વ અને જ્ઞાન એ હોતા નથી એજ ઘાત ‘નવરં’

શેષં નવરમિત્યાદિના યત્ કથિતં તદતિરિક્તં સર્વં તથૈવ-સંજ્ઞિનાં પ્રથમસમય-
વદેવેતિ । ‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ તદેવં ભદન્ત ! તદેવં ભદન્ત ઇતિ ॥

इति चत्वारिंशत्तमशतकस्य पञ्चदशे शते द्वितीयोद्देशकः ॥४०॥१५॥२॥

‘एवं एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा कायव्वा’ एवमत्रापि अभवसिद्धिकप्र-
णोऽपि एकादशोद्देशकाः कर्त्तव्याः । तत्र-औधिकोद्देशकः प्रथमसमयोद्देशकः,
इत्युद्देशद्वयं कथितमेव शेषा अप्रथमसमयादारभ्य चरमाचरमसमयपर्यन्ता नवोद्दे-

वतीं સંજ્ઞી જીવોં કે જૈસા હી જાનના યાહિયે । સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે !
ત્તિ’ હે ભદન્ત ! જૈસા આપને યહ કહા હૈ વૈસા હી વહ સબ સત્ય હૈ
૨ । હસ પ્રકાર કહકર ગૌતમને પ્રભુશ્રી કો વન્દના કી ઓર નમસ્કાર
કિયા વન્દના નમસ્કારકર ફિર વે સંયમ ઓર તપ સે આત્મા કો
ભાવિત કરતે હુએ અપને સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે ।

॥૪૦ વેં શતક કે ૧૫ વેં શત મેં યહ દ્વિતીય

ઉદ્દેશક સમાસ હુઆ ૧૪૦-૧૫-૨॥

‘एवं एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा कायव्वा’ इस अभवसिद्धिक
प्रकरण में भी ११ उद्देशक कहना चाहिये । इन में औधिक उद्देशक
और प्रथम समय उद्देशक ये दो उद्देशक तो सूत्रकार ने स्वयं कह दिये
हैं । बाकी के अप्रथम समय से लेकर चरमाचरम समय तक के ९ उद्दे-

સમ્મત્તં સમ્મામિચ્છત્તં નાણં ચ સ્રવ્વથ્થ નત્થિ’ આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ
કરેલ છે. આ ફેરફાર શિવાય બાકીનું સઘળું કથન પ્રથમ સમયમાં રહેલા
સંજ્ઞિ જીવોના કથન પ્રમણે જ છે તેમ સમજવું.

‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ હે લગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણે
આ વિષયના સંબંધમાં કહેલ છે, તે સઘળું કથન સત્ય જ છે. હે લગવન્
આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ
પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી
સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન
પર ગિરાજમાન થયા. ॥સૂ.૦૧॥

॥આબીસમા શતકના પંદરમાં શતકમાં આ બીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૪૦-૧૫-૨॥

‘एवं एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा कायव्वा’ ‘आ अभवसिद्धिकेना प्रकरणम्
११ अगियार उद्देशाओ कहेवा नेछये. आमां औधिक उद्देशाओ तथा प्रथम
समय उद्देशो आ जे उद्देशाओ सूत्रकारे स्वयं कहेवा जे छे बाकीना अप्रथम
समयથી लघने अरम अरम समय सुधीना ९ नव उद्देशाओ अहियां पहेलां

શકા અત્ર પૂર્વોક્તવદેવ વાચ્યા इति भावः । 'पढमतइय पंचमा एकगमा' तत्र प्रथमतृतीयपञ्चमा उद्देशका एकगमाः सदृशा ज्ञातव्याः 'सेसा अट्टवि एकगमा' शेषा अष्टावपि उद्देशका एकगमाः सदृशा ज्ञातव्याः । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त इति ॥

प्रथममभवसिद्धिकमहायुगमशतं समाप्तम् ॥

॥ चत्वारिंशत्तमे शतके पञ्चदशं संज्ञिमहायुगमशतं समाप्तम् ॥

શક યહાં પૂર્વોક્ત જૈસે હી હૈં । 'પઢમતઇય પંચમા એકગમા' હનમેં પ્રથમ તૃતીય પંચમ યે ત્રીન ઉદ્દેશક એક સરીખે ગમ જૈસે હૈં । 'સેસા અટ્ટ વિ એકગમા' બાકી કે જો દ્વિતીય, ચતુર્થ, પઠ્ઠ, સપ્તમ, અષ્ટમ, નવમ, દશમ ઓર ગ્યારહવાં યે ૮ ઉદ્દેશક હૈં-વે સય એક સરીખે ગમ-વાલે હૈં । 'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ' હે ભદન્ત ! જૈસા આપને યહ કહા હૈ વહ સર્વથા સત્ય હી હૈ ૨ । હસ પ્રકાર કહકર ગૌતમને પ્રભુશ્રી કો વન્દના કી ઓર નમસ્કાર કિયા । વન્દના નમસ્કાર કર ફિર ગૌતમ સંયમ ઓર તપ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુએ અપને સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે ।

પ્રથમ અભવસિદ્ધિક મહાયુગ્મશતક સમાપ્ત ઓર હસ પ્રકાર ૪૦ વેં શતક મેં ૧૫ વાં સંજ્ઞિમહાયુગ્મશતક સમાપ્ત હુઆ ॥૪૦-૧૫॥

ઠહ્યા પ્રમાણે જ છે. 'પઢમ તઇય પંચમા એકગમા' તેમાં પહેલો ત્રીજો અને પાંચમોએ ત્રણ ઉદ્દેશાઓ એક સરખા આલાપકોવાળા છે. 'સેસા અટ્ટ વિ એકગમા' બાકીના જે બીજો, ચોથો, છઠ્ઠો સાતમો, આઠમો, નવમો, દસમો, અને અગ્યારમો આ આઠ ઉદ્દેશાઓ એક સરખા આલાપકોવાળા છે.

'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું કથન કરેલ છે તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે, હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે ઠહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥૪૦૧॥

॥પહેલું અભવસિદ્ધિક મહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત ચાળીસમા શતકમાં પદરમું સંજ્ઞિ મહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત ॥૪૦-૧૫॥

॥ ‘અહ સોલસમં સન્નિમહાયુગ્મસયં’ ॥

સૂલમ્--કળહલેસ્સ અભવસિદ્ધિય કડજુમ્મકડજુમ્મ સન્નિ પંચિદિયાણં ભંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ ? જહા ઇણંતિં ચેવ ઓહિય સયં તહા કળહલેસ્સસયં પિ । નવરં તે ણં ભંતે ! જીવા કળહલેસ્સા હંતા કળહલેસ્સા સંચિટ્ટુણા ઠિઈય જહા કળહલેસ્સસયં સેસં તં ચેવ । સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ ।

ચત્તાલીસઠમે સય સોલસમં સન્નિમહાયુગ્મસયં સમત્તં

છાય:--કૃષ્ણલેશ્યાભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિયાઃ સ્વલુ ભદન્ત ! કુત ઉત્પદ્યન્તે યથા ઇતેષામેવ ઔધિકશતં તથા કૃષ્ણલેશ્યશતમપિ । નવરં તે સ્વલુ ભદન્ત ! જીવાઃ કૃષ્ણલેશ્યશતે શેષં તદેવ । તદેવં ભદન્ત ! તદેવં ભદન્ત ! ઇતિ ।

દ્વિતીયમભવસિદ્ધિકશતં સમાપ્તમ્ ॥

॥ ચત્વારિંશત્તમે શતકે પોડશં સંજ્ઞિમહાયુગ્મશતં સમાપ્તમ્ ॥

ટીકા--‘કળહલેસ્સ અભવસિદ્ધિય કડજુમ્મકડજુમ્મ સન્નિપંચિદિયાણં ભંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ કૃષ્ણલેશ્યાભવસિદ્ધિકકૃતયુગ્મકૃતયુગ્મસંજ્ઞિપંચેન્દ્રિયાઃ સ્વલુ ભદન્ત ! જીવાઃ કુત આગત્યોત્પદ્યન્તે કિં નૈરયિકેભ્ય આગત્ય યાવત્ દેવેભ્યો વા આગત્ય સમુત્પદ્યન્તે ઇતિ પ્રશ્નઃ, ઉત્તરમાહ અતિદેશદ્વારેણ

સોલહવાં સંજ્ઞિમહાયુગ્મશતક

‘કળહલેસ્સ અભવસિદ્ધિય કડજુમ્મકડજુમ્મ સન્નિ પંચિદિયાણં ભંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’

ટીકાર્થ--હે ભદન્ત ! કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત કૃષ્ણલેશ્યાવાલે અભવસિદ્ધિક સંજ્ઞિપંચેન્દ્રિય જીવ કિસ સ્થાનવિશેષ સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? કયા વે નૈરયિકોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા યાવત્ દેવોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અતિદેશદ્વારા ઇસ

સોળમા સંજ્ઞિ મહાયુગ્મ શતકનો પ્રારંભ--

‘કળહલેસ્સ અભવસિદ્ધિયકડજુમ્મકડજુમ્મ સન્નિપંચિદિયાણં ભંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’

ટીકાર્થ--હે ભગવન કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણવાળા કૃષ્ણલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિક સંજ્ઞિપંચેન્દ્રિય જીવ કયા સ્થાનવિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોંમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિથિઓમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ?

‘જહા’ ઇત્યાદિ, ‘જહા ઇમં ચેવ ઓદિયસયં તહા કળ્હલેસ્સસયંપિ’ યથા
 ઇતેપામેવ અભવસિદ્ધિકાનામેવૌધિકશતં પશ્ચદશં શતં તથા કૃષ્ણલેશ્યાભવસિ-
 દ્ધિકશતમપિ અસ્યૈવ વત્વારિંશ્ચત્તકસ્ય પશ્ચદશે શતે યથા ઔધિકા ભવસિદ્ધિક
 સંક્ષિપ્તચ્ચેન્દ્રિયાણામુપપાતાદિઃ કથિત-સ્તેનૈવ રૂપેણ કૃષ્ણલેશ્યાભવસિદ્ધિકાનામપિ
 ઉપપાતાદયો જ્ઞાતવ્યાઃ । ઔધિકાભવસિદ્ધિકાપેક્ષયા કૃષ્ણલેશ્યાભવસિદ્ધિકશતે
 યદ્વૈલક્ષણ્યં તત્ સ્વયમેવ સૂત્રકાર આહ-‘નવરં’ ઇત્યાદિ, ‘નવરમ્-વિશેષ સ્વયમ્-
 ‘તે ણં મંતે ! જીવા કળ્હલેસ્સા’ તે સ્વલ્પ ભદન્ત ! જીવાઃ કિં કૃષ્ણલેશ્યાવન્તો
 ભવન્તીતિ પ્રશ્નઃ । ઉત્તરમાહ-‘હંતા’ ઇત્યાદિ ‘હંતા કળ્હલેસ્સા’ હન્ત હે ગૌતમ !
 તે જીવાઃ કૃષ્ણલેશ્યાવન્તો ભવન્તીત્યુત્તરમ્ ‘સંચિટ્ટુણા ઠિર્ઠ્ય જહા કળ્હલેસ્સાસપ્’

પ્રશ્ન કા ઉત્તર દેતે હુએ પ્રભુશ્રી ગૌતમ સે કહતે હૈં-‘જહા ઇમં ચેવ
 ઓદિયસયં તહા કળ્હલેસ્સ સયં પિ’ હે ગૌતમ ! જૈસા ઇન અભવસિદ્ધિકો
 કા ઔધિક શતક કહા ગયા હૈં ડસી પ્રકાર સે ઇનકા યહ કૃષ્ણલેશ્યા
 શતક ભી કહ લેના ચાહિયે । અર્થાત્ ૪૦ વેં શતક કે ૧૫ વેં શતમેં
 જિસ રીતિ સે ઔધિક અભવસિદ્ધિક સંક્ષીપ્તચ્ચેન્દ્રિયોં કે ઉપપાત આદિ
 કહે ગયે હૈં ડસી રીતિ સે કૃષ્ણલેશ્યાવાલે અભવસિદ્ધિક સંક્ષીપ્તચ્ચેન્દ્રિયોં
 કે ભી ઉપપાત આદિ કહ લેના ચાહિયે । ઔધિક અભવસિદ્ધિકોં કી
 અપેક્ષા ઇનમેં જો અન્તર હૈં વહ ઇસ પ્રકાર સે હૈં-‘તે ણં મંતે ! જીવા
 કળ્હલેસ્સા’ હે ભદન્ત ! યે જીવ વ્યા કૃષ્ણલેશ્યાવાલે હોતે હૈં ? ‘હંતા,
 કળ્હલેસ્સા’ હાં, ગૌતમ ! યે જીવ કૃષ્ણલેશ્યાવાલે હોતે હૈં । ‘સંચિટ્ટુણા
 ઠિર્ઠ્ય જહા કળ્હલેસ્સાસપ્’ ઇનકા અવરથાનકાલ ઔર આયુકાલ જૈસા

અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અતિદેશ દ્વારા આ પ્રશ્નનો ઉત્તર
 આપતાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-‘જહા ઇમં ચેવ ઓદિયસયં તહા
 કળ્હલેસ્સસયં પિ’ હે ગૌતમ ! જે પ્રમાણે આ અભવસિદ્ધિકોના ઔધિક શતક
 કહેલ છે, એજ પ્રમાણે તેઓના સંબંધમાં આ કૃષ્ણલેશ્યા શતક પણ કહેવું
 જોઈએ. અર્થાત્ ચાળીસમા શતકના ૧૫ પંદરમાં શતકમાં જે પ્રમાણે ઔધિક
 અભવસિદ્ધિક સંક્ષિપ્તચ્ચેન્દ્રિયોના ઉપપાત વિગેરે કહેવામાં આવ્યા છે, એજ
 રીતે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિક સંક્ષિપ્તચ્ચેન્દ્રિયોના ઉપપાત વિગેરે પણ
 કહેવા જોઈએ. ઔધિક અભવસિદ્ધિકવાળાઓની અપેક્ષાએ આમાં જે
 અંતર આવે છે, તે આ પ્રમાણે છે. ‘તે ણં મંતે ! જીવા કળ્હલેસ્સા’ હે ભગવન્
 આ જીવો કૃષ્ણલેશ્યાવાળા હોય છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘હંતા ગોચમા ।
 કળ્હલેસ્સા’ હા ગૌતમ ! તે જીવો કૃષ્ણલેશ્યાવાળા હોય છે. ‘સંચિટ્ટુણા ઠિર્ઠ્ય

સમ્થાના સ્થિતિશ્ચ અવસ્થાનકાલ આયુઃ કાલશ્ચ કૃષ્ણલેશ્યજીવાનાં યથાઽસ્યૈવ
શતકસ્ય કૃષ્ણલેશ્યશતે કથિત સ્તેનૈવ રૂપેનાત્રાપિ જ્ઞાતવ્યઃ । ‘સેસં તં ચેવ’
શેષમ્-અવસ્થાન સ્થિત્યતિરિક્તં સર્વમપિ તદેવ-ઔધિકશતોક્તમેવ જ્ઞાતવ્યમિતિ ।
સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ તદેવં મદન્ત તદેવં મદન્ત । ઇતિ ॥

દ્વિતીયમભવસિદ્ધિક મહાયુગ્મશતં સમાપ્તમ્ ॥

ચત્વારિશત્તમે શતકે પોડશં કૃષ્ણલેશ્યાભવસિદ્ધિક

સંજ્ઞિમહાયુગ્મશતં સમાપ્તમ્ ॥૪૦૧૬॥

હસી શતક કે કૃષ્ણલેશ્યાશત મેં કહા ગયા હૈ વૈસા હી યહાં પર મી કહ
લેના ચાહિયે । ‘સેસં તં ચેવ’ इनके अतिरिक्त और सब कथन औधिक
शत में जैसा कहा गया है वैसा ही है । ‘सेवં मंते ! सेवं मंते ! त्ति’ हे
भदन्त ! आपका यह कथन सर्वथा सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर
गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार
कर फिर वे संयम और तप से आत्माको भावित करते हुए अपने स्थान
पर विराजमान हो गये । दूसरा अभवसिद्धिक म्हायुगमशत समाप्त ।

ચાલીસવેં શતકમેં સોલહવાં કૃષ્ણલેશ્ય અભવસિદ્ધિક
સંજ્ઞિમહાયુગ્મશતક સમાપ્ત હુઆ ।

જહા કળ્હલેસ્ત્રસપ્ તેઓનેા અવસ્થાન કાળ અને આયુકાળ આ ૪૦ આળીસમા
શતકના કૃષ્ણલેશ્યા શતકમાં કહેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ કહેવું
જોઈએ. ‘સેસં તં ચેવ’ આ કથન શિવાય બાકીનું સઘળું કથન ઔધિક
શતકમાં કહ્યા પ્રમાણેનું સમજવું.

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ આ વિષયના સંબંધમાં આપ
દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણે કથન કરેલ છે. એ સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે.
હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે
કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના
નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા
થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥ળીજું અભવસિદ્ધિક મહાયુગ્મ શતક સમાપ્તા॥

આળીસમા શતકમાં સોળમું કૃષ્ણલેશ્યા અભવસિદ્ધિક સંજ્ઞિમહાયુગ્મ શતક
સમાપ્ત ॥૪૦-૧૬

॥ 'अह १७-२१ सयाइ' ॥

मूलम्—एवं छहि वि लेस्साहिं छ सया कायव्वा जहा कण्हलेस्ससयं । नवरं संचिट्ठणा ठिईय जहेव ओहियसए तहेव भाणियव्वा । नवरं संचिट्ठणा सुक्कलेस्साए उक्कोसेणं एकतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमव्वभहियाइं, ठिई एवं जेव, नवरं अंतो-मुहुत्तं नत्थि जहन्नगं तहेव । सव्वत्थ सम्मत्त नाणाणि नत्थि । विरई विरयाविरई अणुत्तरविमाणोववत्तीय एयाणि नत्थि सव्व-पाण० जाव णो इणट्ठे समट्ठे । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति । एवं एयाणि सत्त अभवसिद्धिय महाजुम्मसया भवंति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति । एवं एयाणि एकवीसं सन्नि महाजुम्मसयाणि । सव्वाणि वि एक्कासीतिमहाजुम्मसयाइं समत्ताइं ॥

चत्तालीसइमं सन्निमहाजुम्मसयं समत्तं

छाया—एवं षड्भिल्लेश्याभिः षट्शतानि कर्त्तव्यानि यथा कृष्णलेखा-शतम् । नवरं संस्थाना स्थितिश्च यथैव औघिकशते तथैव भणितव्या । नवरं संस्थाना शुक्ललेश्यायाम् उत्कर्षेण एकत्रिंशत्सागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्त्ताभ्य-धिकानि । स्थितिरेवमेव, नवरं मन्तर्मुहूर्त्तनास्ति । ज्ञान्यकं तथैव । सर्वत्र सम्यक्त्वं ज्ञानानि सन्ति । विरतिः विरताविरतिः अनुत्तरविमानोन्पत्तिश्च, एतानि न सन्ति । सर्वमाणा यावन्नायमर्थः समर्थः । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त इति । एवमेतानि सप्त अभवसिद्धिकमहायुगमशतानि भवन्ति । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति । एवमेतानि एकविंशतिः संक्षिप्तमहायुगमशतानि । सर्वाण्यपि एकाशीतिमहायुगमशतानि समाप्तानि ॥

चत्वारिंशत्तमं संक्षिप्तमहायुगमशतं समाप्तम् ॥

सप्तदशतः एकविंशतितम शतकानि

टीका—'एवं छहि वि लेस्साहिं छ सया कायव्वा जहा कण्हलेस्ससयं' एवं

'एवं छहिं वि लेस्साहिं छ सया कायव्वा जहा कण्हलेस्ससयं'

टीकार्थ—जिस प्रकार कृष्णलेखापदको जोड़कर अभवसिद्धिक

सत्तरमा महायुगम शतकथी ऐकवीसमा सुधीना पात्र महायुगम शतकेना प्रारंभ

'एवं छहिं वि लेस्साहिं छ सया कायव्वा जहा कण्हलेस्ससयं' ७२

પદ્મિરપિ લેશ્યાભિઃ પદ્મશતાનિ કર્તવ્યાનિ યથા કૃષ્ણલેશ્યાશતં યથા કૃષ્ણલેશ્યા મન્તર્માવ્ય અભવસિદ્ધિકસ્ય દ્વિતીયં શતં ભવતિ તથેવ નીલકાપોત તૈજસપદ્મ-શુક્લલેશ્યા મન્તર્માવ્યાપિ શતાનિ કર્તવ્યાનિ તદેવમભવસિદ્ધિકમધિકૃત્ય સપ્ત-શતાનિ ભવન્તિ એકમૌધિકં પદ્મલેશ્યાન્તર્માવેન પદ્મશતાનીતિ । ‘નવરં સંચિદ્વળા ઠિઈ જહેવ ઓહિયસપ તહેવ માણિયવ્વા’ નવરં-કેવલં વિશેષોડયં યત્ સંસ્થાનાડવ-સ્થિતિ કાલઃ સ્થિતિરાયુષ્યકાલથ્થ યથૈવ ઔધિક નીલલેશ્યાદિશતે કથિતા તથૈવ તેનૈવરુપેણ જ્ઞાતવ્યા । નતુ કૃષ્ણલેશ્યાશતવદિતિ । ‘નવરં સંચિદ્વળા સુક્લેસ્સાપ ઉકો-સેળં એકતીસં સાગરોવમાઈં અંતોમુદ્દુત્તમવ્મહિયાઈં’ નવરં-કેવલમેતાવદેવ વૈલક્ષણ્યં યત્ સંસ્થાના-અવસ્થિતિકાલઃ શુક્લલેશ્યાયાં શુક્લલેશ્યાશતે, ઉત્કૃષ્ટેણૈકત્રિંશત્સાગ-

સંજી પન્નેન્દ્રિયકે સમ્બન્ધ મેં દ્વિતીયશત કહા ગયા હૈ, ડસી પ્રકાર સે નીલ કાપોત, તૈજસ, પદ્મ, શુક્લલેશ્યા હન પદોં કો જોડકર મી ૬ શત કહે ગયે હૈં । હસ પ્રકાર અભવસિદ્ધિક સંજીપન્નેન્દ્રિય જીવ કો લેકર સાતશત હો જાતે હૈં । જૈસે-એક ઔધિક શતક ઓર ૬ લેશ્યા સમ્બન્ધી ૬ શતક ‘નવરં સંચિદ્વળા ઠિઈ જહેવ ઓહિયસપ તહેવ માણિયવ્વા’ પરન્તુ યહાં જો વિશેષતા હૈ વહ એસી હૈ કિ યહાં અવ-સ્થિતિ કાલ ઓર આયુષ્યકાલ યે દો યાતેં જૈસી અભવમિદ્ધિક કે ઔધિક નીલલેશ્યાદિશત મેં કહી ગઈ હૈં વૈસી હી યહાં પર કહ લેની યાહિયે । કૃષ્ણલેશ્યાશત કે જૈસે હન્હેં યહાં નહીં કહના યાહિયે । ‘નવરં સંચિદ્વળા સુક્લેસ્સાપ ઉકોસેળં એકતીસં સાગરોવમાઈં અંતોમુદ્દુત્તમવ્મહિયાઈં’ પરન્તુ શુક્લલેશ્યા શતક મેં ઉત્કૃષ્ટ સે એક

પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યાપદ લઈને અભવસિદ્ધિકવાળા સંજીપન્નેન્દ્રિયના સંબંધમાં બીજી શતક કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે નીલ, કાપોત, તૈજસ, પદ્મ, શુક્લલેશ્યાના સંબંધમાં તે તે પદોને બેડોને છ શતકો કહેલા છે. આ રીતે અભવસિદ્ધિક સંજી એકેન્દ્રિય છવને લઈને સાત શતક અને છ લેશ્યાઓના સંબંધમાં છ શતકો એ રીતે સાત શતકો થઈ જાય છે. ‘નવરં સંચિદ્વળા ઠિઈ જહેવ ઓહિયસપ તહેવ માણિયવ્વા’ પરંતુ અહિયાં જે વિશેષપણું છે, તે એવું છે કે-અહિયાં અવસ્થિતિકાળ અને આયુષ્યકાળ આ બે બાબતો જે પ્રમાણે અભવસિદ્ધિક સંબંધી ઔધિક શતકમાં કહેલ છે, એજ પ્રમાણે છે, તેમ સમજવું કૃષ્ણલેશ્યા શતકના કથન પ્રમાણે તેને અહિયાં કહેવાતું નથી. ‘નવરં સંચિદ્વળા સુક્લેસ્સાપ ઉકોસેળં એકતીસં સાગરોવમાઈં અંતોમુદ્દુત્તમ-વ્મહિયાઈં’ શુક્લલેશ્યામાં-એટલે કે શુક્લલેશ્યાશતકમાં ઉત્કૃષ્ટથી એક અંતર્મુદ્દુત્ત

કાલવદેવેતિ । ‘સવ્વત્થ સમ્મત્તનાણાણિ નત્થિ’ સર્વત્રાપિ સમ્યક્ત્વં જ્ઞાનં ચ ન ભવતીતિ, ‘વિરઈ વિરયા વિરઈ અણુત્તરવિમાણોવવત્તી ઇયાણિ નત્થિ’ વિરતિઃ વિરતાવિરતિસ્તથા અણુત્તરવિમાનાદુપપાતથેત્યેતાનિ ન સન્તિ અભવસિદ્ધિક પ્રકરણે અભવસિદ્ધિક સ્વભાવત્ત્વાત્ । ‘સવ્વપ્પાણા જાવ ણો ઇણદ્દે સમદ્દે’ હે ભદન્ત ! સર્વે પ્રાણા યાવત્ સર્વે-સત્ત્વા અભવસિદ્ધિકસંજ્ઞિપચ્ચેન્દ્રિયતયા સમુત્પન્નપૂર્વાઃ કિમિતિ પ્રશ્નઃ, હે ગૌતમ ! નાયમર્થઃ સમર્થઃ, ઇત્યુત્તરમ્, ચેહ વક્તવ્યમિતિ ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ તદેવં ભદન્ત ! તદેવં ભદન્ત ! ઇતિ । ‘એવં ઇયાણિ સત્ત અભવસિદ્ધિય મહાજુમ્મ સયા ભવંતિ’ એવમ્-ઉપરોક્તદર્શિત ક્રમેણ સપ્ત સપ્ત સંખ્યકાનિ

સ્થિતિકાલ સંસ્થાનકાલ કે હી જઘન્યકાલ કે ઘરાવર હૈ । અર્થાત્ જઘન્ય-કાલ ૧ એકસમય માત્ર હૈ । ‘સવ્વત્થ સમ્મત્તનાણાણિ નત્થિ’ યહાં સમસ્ત સ્થાનોં મેં સમ્યક્ત્વ એવં જ્ઞાન નહીં હૈ । ‘વિરઈ અણુત્તરવિમાણો-વવત્તી ઇયાણિ નત્થિ’ વિરતિ વિરતાવિરતિ ઓર અણુત્તર વિમાન સે આકરકે ઉપપાત યે સઘ નહીં હૈ । કયોંકિ યહ અભવસિદ્ધિક કા પ્રકરણ હૈ । હસ મેં યે સઘ અભવસિદ્ધિ સ્વભાવ હોને સે નહીં હોતે હૈ । ‘સવ્વપ્પાણા જાવ ણો ઇણદ્દે સમદ્દે’ હે ભદન્ત ! સમસ્ત પ્રાણ યાવત્ સમસ્ત સત્ત્વ કયા અભવસિદ્ધિક સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય રૂપ સે પહિલે ઉત્પન્ન હો ચુકે હૈ ? તો હસ પ્રશ્ન કે ઉત્તર મેં યહાં એસા કહના ચાહિયે કિ યહ અર્થ સમર્થ નહીં હૈ । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે ભદન્ત ! જૈસા આપને યહ કહા હૈ વહ સઘ સત્ય હી હૈ ૨ । હસ પ્રકાર કહકર ગૌતમ ને પ્રમુશ્રી કો વન્દના કી ઓર નમસ્કાર કિયા વન્દના નમસ્કાર કર

કાલ એક સમય માત્ર જ છે. ‘સવ્વત્થ સમ્મત્તનાણાણિ નત્થિ’ અહિયાં સઘળા સ્થાનોમાં સમ્યક્ત્વ અને જ્ઞાન કહેલ નથી. ‘વિરઈ વિરયા વિરઈ અણુત્તરવિમા-ણોવવત્તી ઇયાણિ નત્થિ’ વિરતિ વિરતાવિરતિ અણુત્તર વિમાનથી આવીને ઉપપાત આ બધા કહેલ નથી. કેમ કે-આ અભવસિદ્ધિકનું પ્રકરણ છે. તેમાં આ બધા અભવસિદ્ધિક સ્વભાવ હોવાથી હોતા નથી. ‘સવ્વપ્પાણા જાવ ણો ઇણદ્દે સમદ્દે’ હે ભગવન્ સઘળા પ્રાણો યાવત્ સઘળા સત્ત્વો શું અભવ સિદ્ધિક પણથી પહેલાં ઉત્પન્ન થઈ ચૂક્યાં છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં અહિયાં એવું કહેવું બોધ એ કે-આ અર્થ સમર્થ નથી.

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે પ્રમાણે કહેલ છે, તે સઘળું કથન સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુ-પ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ

અભવસિદ્ધિકાનાં મહાયુગ્મશતતાનિ એકઔઘિક પદ્ધતિશાન્તભૂતાનિ પદ્ તદેવં સપ્ત
શતતાનિ ભવન્તીતિ । ‘સેવં મંતે । સેવં મંતે । ત્તિ’ તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત !
ઈતિ । ‘એવં ઇયાણિ એકઔસં સન્નિ મહાયુગ્મસયાણિ’ એવમુપરોક્તદર્શિતક્રમેણ
ચત્વારિંશત્તમે શતકે સંજ્ઞિનામેકવિંશતિર્મહાયુગ્મશતતાનિ ભવન્તીતિ । ‘સઘ્વાણિ વિ
‘એકાસીર્દ મહાયુગ્મસયાઈ’ સમત્તાઈ’ સર્વાણ્યપિ એકાસીર્તિર્મહાયુગ્મશતતાનિ સમા-
પ્તાનિ, તથાહિ-પચ્ચત્તિશત્તમે શતકે દ્વાદશ મહાયુગ્મશતતાનિ ૧૨ પદ્તિશત્તમે
ફિર વે સંયમ ઓર તપ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુપ્ અપને સ્થાન
પર વિરાજમાન હો ગયે ।

‘એવં ઇયાણિ સત્ત અભવસિદ્ધિય મહાયુગ્મસયા ભવંતિ’ હસ પ્રકાર
ઉપરોક્ત દર્શિત ક્રમાનુસાર સાન અભવસિદ્ધિક જીવોં કે મહાયુગ્મ
શત હોતે હેં । એક ઔઘિકશત ઓર ૬ છહ્લેશ્યાઓં કે । ‘સેવં મંતે !
સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે મદન્ત ! યહ એસા હી હૈ ૨ । હસ પ્રકાર ‘એવં ઇયાણિ
એકઔસં સન્નિમહાયુગ્મ સયાણિ’ ઉપર્યુક્ત દર્શિત ક્રમ સે ૪૦ વેં શતક
મેં સંજ્ઞી જીવોં કે ૨૧ મહાયુગ્મશત હોતે હેં । ‘સઘ્વાણિ વિ એકાસીર્દ
મહાયુગ્મસયાઈ સમત્તાઈ’ યે સઘ્ મિલકર ૮૧ મહાયુગ્મશત સમાપ્ત
હુપ્ । ૮૧ મહાયુગ્મશત હસ પ્રકાર સે હોતે હેં-૩૫ વેં શતક મેં ૧૨

પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી
સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન
પર ગિરાજમાન થયા.

‘એવં ઇયાણિ સત્ત અભવસિદ્ધિયમહાયુગ્મસયા ભવંતિ’ આ પ્રમાણે
ઉપર બતાવેલ, કમ પ્રમાણે અભવસિદ્ધિક જીવોના સાત મહાયુગ્મ શતકો
થાય છે. તેમાં એક ઔઘિક શતક અને છ લેશ્યાઓના છ શતકો મળીને
સાત શતકો સમજી લેવા.

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ આપ દેવાનુગ્રિયે આ વિષયમાં
કહેલ સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે હે ભગવન્ આપનું કથન સર્વથા
સત્ય જ છે એ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને
નમસ્કાર કર્યા તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા
થકા પોતાના સ્થાન પર ગિરાજમાન થયા.

‘એવં ઇયાણિ એકઔસં સન્નિમહાયુગ્મ સયાણિ’ ઉપર બતાવેલ કમપ્રમાણે
આ આળીસમા શતકમાં ૨૧ એકઔસ મહાયુગ્મ શતકો હોય છે. ‘સઘ્વાણિ
વિ એકાસીર્દ મહાયુગ્મ સયાઈ’ સમત્તાઈ’ આ કુલ મળીને ૮૧ એકાસી મહા-
યુગ્મ શતકો સમાપ્ત થયા. આ એકાસી મહાયુગ્મ શતકો આ પ્રમાણે કહ્યા

સતત્વેऽપિ દ્વાદશ ૨૪, સપ્તત્રિશત્તમેऽપિ દ્વાદશ ૩૬, અષ્ટત્રિશત્તમેऽપિ દ્વાદશ ૪૮, ષ્કોનચત્વારિંશત્તમેऽપિ દ્વાદશશતાનિ ૬૦ ચત્વારિંશત્તમે એકવિંશતિઃ ૮૧ શતાનિ સર્વસંકલનયા એકાશીતિ મહાયુગ્મશતાનિ ભવન્તિ । એકાશીતેઃ પ્રત્યેક-મુદેશાના મેકાદશત્વેન એકાદશસંખ્યયા ગુણને એકનવત્યુત્તરાષ્ટશતાનિ ઉદેશ-કાનાં ભવન્તિ । તાનિ ચ મહાયુગ્મશતાનિ સમાપ્તાનિ ॥

इति श्री - विश्वविख्यातजगद्बलभादिपदभूषितवाल्मज्जिवारि - 'जैनाचार्य' पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां 'श्री भगवतीसूत्रस्य' प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां चत्वारिंशत्तमं शतकं समाप्तम् ॥४०॥

મહાયુગ્મશત હૈં, ૩૬ વેં શતક મેં ખી ૧૨ મહાયુગ્મશત હૈં, ૩૭ વેં શતક મેં ખી ૧૨ મહાયુગ્મશત હૈં, ૩૮ વેં શતક મેં ખી ૧૨ મહાયુગ્મ-શત હૈં, ૩૯ વેં શતક મેં ખી ૧૨ મહાયુગ્મશત હૈં ઓર ૪૦ વેં શતક મેં ૨૧ મહાયુગ્મશત હૈં । इन सब ८१ शतों के ११-११ उद्देशक हैं । इसलिये इन सब उद्देशकोंकी संख्या ८९१ होती है । ये सब महायुगमशन समाप्त हुए ।

जैनाचार्य जैनधर्मद्विवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
“भगवतीसूत्र” की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके
चालीसवां शतक समाप्त ॥४०॥

છે. પાંત્રીસમાં શતકમાં ૧૨ બાર મહાયુગ્મ શતક કહેલ છે ૩૬ છત્રીસમા શતકમાં પણ ૧૨ બાર મહાયુગ્મ શતકો બતાવ્યા છે. ૩૭ સાડત્રીસમાં શતકમાં પણ ૧૨ મહાયુગ્મ શતકો કહ્યા છે. ૩૮ આડત્રીસમા શતકમાં પણ ૧૨ બાર મહાયુગ્મ શતકો કહ્યા છે. ૩૯ ઓગણચાળીસમા શતકમાં પણ બાર ૧૨ મહાયુગ્મ શતક કહેલ છે. અને ૪૦ ચાળીસમાં શતકમાં ૨૧ એકવીસ એક વીસ મહાયુગ્મ શતકો કહ્યા છે. આ બધા મળીને ૮૧ એકાશી મહાયુગ્મ શતકો થાય છે. તે બધા શતકોમાં ૧૧-૧૧ અગિયાર-અગિયાર ઉદેશાઓ કહેલ છે. તેથી બધા ઉદેશાઓની સંખ્યા ૮૯૧ આઠસોએકાણી થાય છે.
॥સત્તરમાથી ૨૧ એકવીસમા મહાયુગ્મો સુધીના પાંચ મહાયુગ્મ શતકો સમાપ્ત ॥૪૦-૧૭-૨૧॥

जैनाचार्य जैनधर्मद्विवाकर पूज्यश्री घासीलालजी महाराजकृत “भगवतीसूत्र”ની प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याના ચાલીસમા શતકતુ' ચાળીસમું શતક સમાપ્ત ॥४०॥

अथ एक चत्वारिंशत्तमं शतम्

अह पदमो उद्देशो

मूलम्—कड्ढं णं भंते ! रासिजुग्मा पन्नत्ता ? गोयसा ! चत्तारि
 रासिजुग्मा पन्नत्ता तं जहा—कडजुग्म कलिओगे । से
 केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ चत्तारि रासिजुग्मा पन्नत्ता
 तं जहा—जाव कलिओगे । गोयसा ! जे णं रासी चउक्कएणं
 अवहारेणं अवहीरमाणे चउयज्जवसिए से तं रासिजुग्मकड-
 जुग्मे । एवं जाव जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीर-
 माणे एगपज्जवसिए से तं रासीजुग्मकलिओगे । से तेणट्टेणं
 जाव कलिओगे । रासिजुग्म कडजुग्म नेरइयाणं भंते ! कओ
 उववज्जंति ? उववाओ जहा वक्कंतीए । ते णं भंते ! जीवा
 एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? गोयसा ! चत्तारि वा अट्ट
 वा बारस वा सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति ।
 ते णं भंते ! जीवा किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ?
 गोयसा ! संतरं पि उववज्जंति निरंतरं पि उववज्जंति । संतरं
 उववज्जमाणा जहन्नेणं एकं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जा
 समया अंतरं कट्टु उववज्जंति । निरंतरं उववज्जमाणा जह-
 न्नेणं दो समया उक्कोनेणं असंखेज्जा तमाया अणुसमयं
 अविरहियं निरंतरं उववज्जंति । ते णं भंते ! जीवा जं समयं
 कडजुग्मा, तं समयं तेओगा, जं समयं तेओगा तं समयं कड-
 जुग्मा ? णो इणट्टे समंटे । जं समयं कडजुग्मा तं समयं दावर-
 जुग्मा जं समयं दावरजुग्मा तं समयं कडजुग्मा नो इणट्टे
 समट्टे । जं समयं कडजुग्मा तं समयं कलिओगा, जं समयं

कलिओगा तं समथं कडजुम्मा । णो इणट्ठे समट्ठे । ते णं भंते !
जीवा कहं उववज्जंति ? गोयमा ! से जहानामए पवए पव-
माणे एवं जहा उववायसए जाव नो परप्पओगेणं उववज्जंति ।
ते णं भंते ! जीवा किं आयजसेणं उववज्जंति आयअजसेणं
उववज्जंति ? गोयमा ! नो आयजसेणं उववज्जंति आयअज-
सेणं उववज्जंति । जइ आयअजसेणं उववज्जंति किं आयजसं
उवजीवंति आयअजसं उवजीवंति ? गोयमा ! नो आयजसं
उवजीवंति, आयअजसं उवजीवंति । जइ आयजसं उव-
जीवंति किं सलेस्सा अलेस्सा ? गोयमा ! सलेस्सा नो अलेस्सा ।
जइ सलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया ? गोयमा ! सकिरिया
नो अकिरिया । जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति,
जाव अंतं करेति ? णो इणट्ठे समट्ठे । रासिजुम्म कडजुम्म असुर-
कुमाराणं भंते ! कओ उववज्जंति ? जहेव नेग्गया तहेव निर-
वसेसं । एवं जाव पंचिदियतिरिक्खजोणिया । नवरं वणस्सइ-
काइया जाव असंखेज्जा वा अणाना वा उववज्जंति सेसं एवं
चेव । मणुस्सा वि एवं चेव जाव नो आयजसेणं उववज्जंति,
आयअजसेणं उववज्जंति । जइ आयअजसेणं उववज्जंति किं
आयजसं उवजीवंति आयअजसं उवजीवंति ? गोयमा ! आय-
जसंपि उवजीवंति आयअजसंपि उवजीवंति । जइ आयजसं
उवजीवंति किं सलेस्सा अलेस्सा ? गोयमा ! सलेस्सा वि
अलेस्सा वि । जइ अलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया ? गोयमा !
नो सकिरिया, अकिरिया । जइ अकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं
सिज्झंति जाव अंतं करेति ? हंता सिज्झंति जाव अंतं करेति ।

जइ सलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया ? गोयमा ! सकिरिया
नो अकिरिया । जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव
अंतं करेति ? गोयमा ! अत्थेगइया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति
जाव अंतं करेति, अत्थेगइया नो तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति
जाव अंतं करेति । जइ आयअजसं उद्वज्जंति किं सलेस्सा
अलेस्सा । गोयमा ! सलेस्सा नो अलेस्सा जइ सलेस्सा किं सकि-
रिया अकिरिया ? गोयमा ! सकिरिया नो अकिरिया । जइ
सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेति ? नो
इण्टे समट्ठे । वाणमंतरजोइसिय वेमाणिया जहा नेरइया ।
सेवं भंते ! २ त्ति ॥सू०१॥

इक्कचत्तालीसइमे सए रासियुग्मसए पढमो उदेसो समत्तो

छाया-कति खलु भदन्त ! राशियुग्माः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! चत्वारो राशि-
युग्माः प्रज्ञप्ताः ? तद्यथा कृतयुग्मो यावत् कल्योजः । तत्केनार्थेन भदन्त ! एव-
मुच्यते चत्वारो राशियुग्माः प्रज्ञप्ता इत्यथा यावत् कल्योजः ? गौतम ! यः
खलु राशिचतुष्केणापहारेणाऽपह्रियमाणश्चतुः पर्यवसितः सोऽयं राशियुग्म कृत-
युग्मः एवं यावद् यः खलु राशिचतुष्केणापहारेणैरुपर्यवसितः सोऽयं राशियुग्म
कल्योजः । तत्तेनार्थेन यावत् कल्योजः । राशियुग्मकृतयुग्मनैरयिकाः खलु
भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? उपपाते यथा व्युत्क्रान्तौ । ते खलु भदन्त ! जीवा
एकसमयेन क्रियन्ते उत्पद्यन्ते ? गौतम ! चत्वारो वा अष्टौ वा द्वादश वा षोडश
वा संख्याता वा असंख्यातानोत्पद्यन्ते । ते खलु भदन्त ! जीवाः किं सान्तर
मुत्पद्यन्ते निरन्तरमुत्पद्यन्ते ? गौतम ! सान्तरमपि उत्पद्यन्ते निरन्तरमपि
उत्पद्यन्ते ? सान्तरमुत्पद्यमाना जघन्येनैकं समयम् उत्कर्षेणासंख्येयान् समयान्
अनन्तरं कृत्वोत्पद्यन्ते । निरन्तरमुत्पद्यमाना जघन्येन द्वौ समयौ, उत्कर्षेण संख्ये-
यान् समयान् अनुपमयमविरहितं निरन्तरं मुत्पद्यन्ते । ते खलु भदन्त ! जीवाः
यस्मिन् समये कृतयुग्मा स्तस्मिन् समये त्र्योजाः, यस्मिन् समये त्र्योजा स्तस्मिन्
समये कृतयुग्माः ? नायमर्थः समर्थः । यस्मिन् समये कृतयुग्मा स्तस्मिन् समये
द्वापरयुग्माः, यस्मिन् समये द्वापरयुग्माः तस्मिन् समये कृतयुग्माः ? नायमर्थः
समर्थः । यस्मिन् समये कृतयुग्माः तस्मिन् समये कल्योजाः, यस्मिन् समये
कल्योजा स्तस्मिन् समये कृतयुग्माः ? नायमर्थः समर्थः । ते खलु भदन्त !

जीवाः कथमुत्पद्यन्ते ? गौतम ! स यथानामकः प्लवकः प्लवमानः, एवं यथोप-
पातयते यावत् नो परमयोगोत्पद्यन्ते । ते खलु भदन्त ! जीवाः किमात्मयशसा
उत्पद्यन्ते आत्माऽयशसोत्पद्यन्ते ? गौतम ! नो आत्मयशसोत्पद्यन्ते आत्मा-
यशसोत्पद्यन्ते । यदि आत्मायशसोत्पद्यन्ते । किमात्मयश उपजीवन्ति,
आत्मायश उपजीवन्ति ? गौतम ! नो आत्मयशसोपजीवन्ति आत्मायशसो-
पजीवन्ति । यदि आत्मायश उपजीवन्ति किं सलेश्या अलेश्याः ? गौतम !
सलेश्याः नो अलेश्याः । यदि सलेश्याः । किं सक्रिया अक्रियाः ? गौतम !
सक्रियाः, नो अक्रियाः । यदि सक्रिया स्तेनैव भवग्रहणेन सिद्ध्यन्ति यावदन्तं
कुर्वन्ति ? नायमर्थः समर्थः । राशियुग्मकृतयुगमानुरकुमाराः खलु भदन्त !
कुत उत्पद्यन्ते ? यथैव नैरयिका स्तेनैव निरवशेषम् । एवं यावत् पञ्चेन्द्रियतिर्य-
ग्योनिःकाः । नवरं वनरपत्निकायिका यावत् असंख्येया वा अनन्तावोत्पद्यन्ते,
शेषम् एवमेव । मनुष्या अपि एवमेव यावत् नो आत्मयशसा उत्पद्यन्ते आत्मा-
यशसा उत्पद्यन्ते । यदि आत्मायशसा उत्पद्यन्ते किमात्मयश उपजीवन्ति आत्मा-
यश उपजीवन्ति ? गौतम ! आत्मयशोऽपि उपजीवन्ति आत्मायशसोऽपि उपजी-
वन्ति । यथात्मयश उपजीवन्ति किं सलेश्याः अलेश्या ? गौतम ! सलेश्या अपि
अलेश्या अपि । यदि अलेश्याः किं सक्रिया अक्रियाः ? गौतम ! नो सक्रिया
अक्रियाः । यदि अक्रियाः तेनैव भवग्रहणेन सिद्ध्यन्ति यावत् अन्तं कुर्वन्ति ?
हन्त सिद्ध्यन्ति यावदन्तं कुर्वन्ति । यदि सलेश्याः किं सक्रिया अक्रियाः ?
गौतम ! सक्रियाः, नो अक्रियाः । यदि सक्रिया स्तेनैव भवग्रहणेन सिद्ध्यन्ति
यावदन्तं कुर्वन्ति ? गौतम ! अस्त्येकके तेनैव भवग्रहणेन सिद्ध्यन्ति यावदन्तं
कुर्वन्ति, अस्त्येकके नो तेनैव भवग्रहणेन सिद्ध्यन्ति यावदन्तं कुर्वन्ति । यथात्मा-
यश उपजीवन्ति किं सलेश्या अलेश्याः ? गौतम ! सलेश्या नोऽलेश्याः । यदि
सलेश्याः किं सक्रिया अक्रियाः ? गौतम ! सक्रिया नो अक्रियाः । यदि सक्रिया
स्तेनैव भवग्रहणेन सिद्ध्यन्ति यावदन्तं कुर्वन्ति ? नायमर्थः समर्थः । वानव्यन्तर-
ज्योतिष्कर्मणानिका यथा नैरयिकाः । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥ मू० १॥

॥ एक चत्वारिंशत्तमे राशियुग्मशतके प्रथमोद्देशकः समाप्तः ।

टीका—‘कह णं भंते ! रासिजुम्मा पन्नत्ता ?’ कति खलु भदन्त ! राशियुग्माः

शतक ४१ प्रथम उद्देशक

‘कह णं भंते ! रासिजुम्मा पन्नत्ता’ इत्यादि सूत्र १॥

श्रेष्ठताणीसभा शतकेनो आरंभ—

पडेवे। उद्देशे।

‘कहि णं भंते ! रासिजुम्मा पणत्ता’ इत्यादि

પ્રજ્ઞપ્તાઃ ? યુગ્મશબ્દો યુગલવાચકોડપિ અરિત ઇત્યતોડસૌ ઇહ ગણિશબ્દેન વિશેષ્યતે તેન રાશિરૂપાઃ યુગ્માઃ ન તુ દ્વિતીયરૂપા ઇતિ રાશિયુગ્માઃ, તે સમ્યગ્યા કતીતિ પ્રશ્નઃ, ભગવાનાહ-‘ગૌયમા’ ઇત્યાદિ, ‘ગૌયમા’ હે ગૌતમ ! ‘ચત્તારિ રાસિજુમ્મા પન્નત્તા’ ચત્તારઃ રાશિયુગ્માઃ પ્રજ્ઞપ્તા - કથિતાઃ । ‘તં જહા’ તથથા- ‘કહજુમ્મે જાવ કલિઓમે’ કૃતયુગ્મો યાવત્ કલ્પયોજઃ અત્ર યાવત્પદેન ંયોજ દ્વાપરયુગ્મયોઃ સંગ્રહઃ । તદેવ સૂત્રકારઃ સ્પષ્ટવતિ-‘સે કેળદ્દેણં ભંતે ! एवं वुच्चह चत्तारि रासिजुम्मा पन्नत्ता तं जहा जव कलिओमे’ तत्केनार्थेन भदन्त । एदमुच्यते चत्वारो राशियुग्माः प्रज्ञप्ताः तद्यथा यावत् कल्योजः, अत्र यावत्पदेन कृत युग्मव्योज द्वापरयुग्मानां संग्रहो भवतीति प्रश्नः । भगवानाह-‘गौयमा’ इत्यादि,

ટીકાર્થ-હે ભદન્ત ! રાશિયુગ્મ કિતને કહે ગયે હિં ? યુગ્મ જાવર યુગલ કા ખી વાચક હોતા હૈ ફલિલિયે ડસે યહાં રાશિ શબ્દ સે વિશે પિત કિયા ગયા હૈ । અતઃ રાશિરૂપ જો યુગ્મ હિં વે રાશિયુગ્મ હિં કિન્તુ દ્વિકરૂપ વે રાશિયુગ્મ નહીં હિં । વે સંખ્યા મેં દિતને હોતે હિં ? એસા યહ પ્રશ્ન હૈ । ઇસકે ડત્તર મેં પ્રશ્ન કહતે હિં-‘ગૌયમા ! ચત્તારિ રાસિજુમ્મા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! ચાર રાશિરૂપ યુગ્મ કહે ગયે હિં । ‘તં જહા’ જૈસે- ‘કહજુમ્મે જાવ કલિ ંયોમે’ કૃતયુગ્મ યાવત્ કલ્પયોજ યહાં યાવત્ પદસે વ્યોજ ઓર દ્વાપરયુગ્મ ઇનકા ગ્રહણ હુઆ હૈ ।

ગૌતમસ્વામી અવ પ્રભુશ્રી સે એસા પ્રશ્ન કરતે હિં-‘સે કેળદ્દેણં ભંતે ! एवं वुच्चह चत्तारि रासि जुम्मा पन्नत्ता तं जहा कहजुम्म जाव कलिओमे’ हे भदन्त । ऐसा आप किम् कारण से कहते हैं कि कृतयुग्म से लेकर

ટીકાર્થ-હે ભગવન રાશિયુગ્મે કેટલા પ્રકારના કહેવામા આવેલ છે ? યુગ્મ શબ્દ યુગલનો વાચક પણ હોય છે. તેથી તેને અહિયાં રાશિ શબ્દથી કહેવામાં આવેલ છે. જેથી રાશિ ૩૫ જે યુગ્મ છે, તે રાશિયુગ્મ છે જે ૩૫ યુગ્મ રાશિયુગ્મ નથી. તે સખ્યામા કેટલા હોય છે ? આ રીતનો અહિં ગૌતમસ્વામીએ પ્રશ્ન કરેલ છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-‘ગૌયમા ! ચત્તારિ રાસિજુમ્મા પન્નત્તા’ હે ગૌતમ ! રાશિયુગ્મે ચાર પ્રકારના કહેવામા આવેલ છે. ‘તં જહા’ જેમકે-‘કહજુમે જાવ કલિઓમે’ કૃતયુગ્મ યાવત્ કલ્પયોજ અહિયા યાવત્પદથી વ્યેજ અને દ્વાપરયુગ્મ અહવુ દરાયેલ છે.

હવે ગૌતમસ્વામી પ્રભુશ્રીને એવુ પૂછે છે કે-‘સે કેળદ્દેણં ભંતે ! एवं वुच्चह चत्तारि रासि जुम्मा पन्नत्ता तं जहा कहजुम्मकहजुम्म जाव कलिओमे’ हे भगवन् आप એવું શા કારણથી કહેા છે ? કે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મથી લઈને કલ્પયોજ

‘નોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘જે નં રાસી ચઝક્રુણં અવહારેણં અવહીરમાણે ચઝપજ્જવસિણ સેત્તં રાસીજુમ્મ કહજુમ્મે’ યઃ સ્વલ્લ રાશિશ્ચતુઃ સમુદાયરૂપશ્ચતુષ્કેનાપહારેણાપહ્રિયમાણશ્ચતુષ્પર્યવસિતઃ સોઽયં રાશિયુગ્મકૃતયુગ્મમ્મ ઇતિ કથ્યતે । ‘એવં જાવ જે નં રાસિચઝક્રુણં અવહારેણં અવહીરમાણે ઇગપજ્જવસિણ સેત્તં રાસિજુમ્મકલિઓમે’ એવં યાવદ્ યઃ સ્વલ્લ રાશિશ્ચતુષ્કેનાપહારેણાપહ્રિયમાણ એકપર્યવસિતો ભવતિ સોઽયં રાશિયુગ્મ કલ્પોજઃ અત્ર યાવત્પદ્દેન યઃ સ્વલ્લ રાશિશ્ચતુષ્કેનાપહારેણાપહ્રિયમાણે દ્વિપર્યવસિતો ભવતિ સોઽયં રાશિયુગ્મ ત્રયોજઃ ૨, યઃ સ્વલ્લ રાશિચતુષ્કેનાપહ્રિયમાણો દ્વિપર્યવસિતો ભવતિ સોઽયં રાશિયુગ્મ દ્વાપરઃ ૩, ઇત્યનયોઃ સંગ્રહો ભવતિ ઇતિ । ‘સે તેણદ્દેણં યંતે ! જાવ કલિઓમે’ તત્તેનાર્યેન ગૌતમ ! એવમુચ્યતે

કલ્પોજ પર્યન્ત રાશિયુગ્મ ચાર કહે ગયે હિં ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હિં—‘નોયમા ! જે નં રાસી ચઝક્રુણં અવહારેણં અવહીરમાણે ચઝપજ્જવસિણ સેત્તં રાસીજુમ્મ કહજુમ્મે’ હે ગૌતમ ! જો રાશિ ચાર સે વિભક્ત્ત હતી હુઈ અન્ત મેં ચાર વચાતી હૈ એસા વહ રાશિ કૃતયુગ્મ-રાશિ કહી ગઈ હૈ । ‘એવં જાવ જે નં રાસિ ચઝક્રુણં અવહારેણં અવહીરમાણે ઇગપજ્જવસિણ સેત્તં રાસિજુમ્મ કલિઓમે’ હસી પ્રકાર યાવત્ જો રાશિ ચાર હૈ વિભક્ત્ત હતી હુઈ અન્ત મેં એક વચાતી હૈ વહ રાશિ-યુગ્મ કલ્પોજ કહા ગયા હૈ । યહાં યાવત્પદ્દ સે ‘જો રાશિ ચાર સે વિભક્ત્ત હુઈ અન્ત મેં ત્રીન વચાતી હૈ વહ રાશિયુગ્મ ત્રયોજ હૈ । તથા જો રાશિ ચાર સે વિભક્ત્ત હતી હુઈ અન્ત મેં દો વચાતી હૈ વહ રાશિયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ હૈ’ દન દોનોં કા સંગ્રહ હુમા હૈ ।

શુધીના રાશિ યુગ્મે ચાર કહ્યા છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘નોયમા ! જે નં રાસી ચઝક્રુણં અવહારેણં અવહીરમાણે ચઝપજ્જવસિણ સેત્તં રાસિજુમ્મ કલિઓમે’ હે ગૌતમ ! જે રાશિ ચારથી વહેંચવામાં આવતાં છેવટે ચાર બચે તે રાશિને કૃતયુગ્મ રાશિ કહેવામાં આવે છે. ‘એવં જાવ જે નં રાસિ ચઝક્રુણં અવહારેણં અવહીરમાણે ઇગપજ્જવસિણ સેત્તં રાસિજુમ્મ કલિઓમે’ આજ પ્રમાણે યાવત્ જે રાશિને ચારથી વહેંચવામાં આવતાં છેવટે એક વધે છે તે રાશિ યુગ્મને કલ્પોજ કલ્પોજ રાશિયુગ્મ કહેવય છે. અહિયાં યાવત્પદ્ધતી “જે રાશિ ચારથી વહેંચાઇને છેવટે ત્રણ બચાવે છે, તે રાશિયુગ્મ ત્રયોજ” છે, તથા જે રાશિ ચારથી વહેંચાઇને છેવટે બે બચાવે છે, તે રાશિયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ રાશિ છે. આ બન્નેનો સંગ્રહ થયેલ છે. ‘સે તેણદ્દેણં જાવ કલિઓમે’ આ કારણથી છે હે ગૌતમ ! મેં એવું કહ્યું છે કે—રાશિયુગ્મ-

ચત્વારઃ રાશિયુગ્માઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ રાશિયુગ્મ કૃતયુગ્મો ૧, રાશિયુગ્મ ઝ્વોજો ૨, રાશિયુગ્મ દ્વાપરો ૩, રાશિયુગ્મ કલ્પયોજઃ ૪, इति । 'राशिजुग्म कडजुग्म नेरइयाणं भंते । कओ उववज्जंति' રાશિયુગ્મ કૃતયુગ્મ નૈરયિકઃ સ્વલુ ભદન્ત ! કૃત ઉત્પદ્યન્તે કિં નૈરયિકેભ્ય આગત્ય ચાનદેવેભ્યો વા આગત્ય ઉત્પદ્યન્તે ? હતિ પ્રશ્ન', ઉત્તરમાહ—'उववाओ जहा वक्तुंतीए' ઉપપાતો યથા વ્યુત્ક્રાન્તૌ પ્રજ્ઞાપ્નાયાઃ પઠ્યપદે ન નૈરયિકેભ્ય આગત્યોત્પદ્યન્તે ન વા દેવેભ્ય આગત્યોત્પદ્યન્તે કિન્તુ તિર્યગ્ભ્યો મનુષ્યેભ્યો વા આગત્યોત્પદ્યન્તે, इत्युत्तरमिति । 'ते णं भंते ! जीवा एगममएणं

'से तेणट्ठेणं जाव कलिओगे' इस कारण हे गौतम ! मैंने ऐसा कहा है कि राशियुगम कृतयुगम, राशियुगम ष्वोज, राशियुगम द्वापरयुगम और राशियुगम कल्पयोज ऐसे चार राशियुगम होते हैं ।

'राशिजुग्म कडजुग्म नेरइयाणं भंते । कओ उववज्जंति' हे भदन्त ! जो नैरयिक राशियुगम कृतयुगम कृतयुगम प्रमित है—वे किस स्थान-विशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा यावत् देवों से आकरके उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—'उववाओ जहा वक्तुंतीए' हे गौतम ! जैसा इस सम्बन्ध में कथन प्रज्ञापना के व्युत्क्रान्तिपद में—छठे पद में किया गया है वैसा ही यहाँ पर कर लेना चाहिये । इस प्रकार वे न नैरयिकों से आकरके उत्पन्न होते हैं और न देवों से आकरके उत्पन्न होते हैं । किन्तु तिर्यग्वर्गों में से और मनुष्यों में से आकरके वे उत्पन्न होते हैं ऐसा जानना

કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિયુગ્મ, કૃતયુગ્મ ઝ્વોજરાશિયુગ્મ, દ્વાપરરાશિયુગ્મ અને કલ્પયોજ રાશિયુગ્મ એ પ્રમાણેના ચાર રાશિયુગ્મો છે.

'રાશિજુગ્મ કડજુગ્મ નેરહયાણ ભંતે । કઓ ઉવવજ્જંતિ' હે ભગવન જે નૈરયિકો રાશિયુગ્મ પ્રમાણવાળા છે તેઓ કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા યાવત્ દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'उववाओ जहा वक्तुंतीए' હે ગૌતમ ! આ વિષયના સંબંધમાં પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના વ્યુત્ક્રાન્તિ પદમાં એટલે કે છઠ્ઠા પદમાં જે પ્રમાણેનું કથન કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન અહિયાં કહેવું લેઈએ. આ રીતે તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થતા નથી. તથા દેવોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થતા નથી. પરંતુ તિર્યગ્ગોમાંથી અને મનુષ્યોમાંથી આવીને તેઓ ઉત્પન્ન થાય છે. તેમ સમજવું. 'ते णं भंते ! जीवा एगममएणं नेरइया उववज्जंति' હે

કેવદ્વયા ઉવવજ્જંતિ' તે સ્વલ્પ ભદન્ત ! જીવા રાશિયુગ્મકૃતયુગ્મનારકા એક-સમયેન એકસ્મિન્ સમયે इत्यर्थः કિયન્ત ઉત્પદ્યન્તે ? इति પ્રશ્નः, મગધવાનાહ—'ગોયમા' હે ગૌતમ ! 'ચત્તારિ વા અટ્ઠ વા વારસ વા સંઘેજ્જા વા અસંઘેજ્જા વા ઉવવજ્જંતિ' ચત્તારો વા અષ્ટૌ વા દ્વાદશ વા સંખ્યાતા વા અસંખ્યાતા વા સમુ-ત્પદ્યન્તે इति । 'તે ણં ભંતે ! જીવા કિં સંતરં ઉવવજ્જંતિ નિરંતરં ઉવવજ્જંતિ' તે સ્વલ્પ ભદન્ત ! જીવાઃ કિં સાન્તરમ્ અન્તરસહિતં યથા ભવેત્તથોત્પદ્યન્તે અથવા નિરન્તરમ્-અન્તરરહિતં સમુત્પદ્યન્તે ? इति પ્રશ્નः । મગધવાનાહ—'ગોયમા' इत्यादि 'ગોયમા' હે ગૌતમ ! 'સંતરંપિ ઉવવજ્જંતિ નિરંતરંપિ ઉવવજ્જંતિ' સાન્તરમપિ ઉત્પ-દ્યન્તે નિરન્તરમપિ ઉત્પદ્યન્તે ! 'સંતરં ઉવવજ્જમાણા જહન્નેણં એકં સમયં' સાન્તર-મુપપદ્યમાના જઘન્યેન એકં સમયં જઘન્યતઃ સમયમાત્રસ્ય વ્યવધાનં કૃત્વા સમુત્પ-દ્યન્તે इत्यर्थः । 'ઉક્કોસેણં અસંઘેજ્જા સમયા અન્તરં કટ્ટુ ઉવવજ્જંતિ' ઉત્કર્ષેણા

ચાહિયે । 'તે ણં ભંતે ! જીવા એગસમણં કેવદ્વયા ઉવવજ્જંતિ' હે ભદન્ત ! વે જીવ એકસમય મેં કિતને ઉત્પન્ન હોતે હેં ? 'ગોયમા ! ચત્તારિ વા, અટ્ઠ વા, વારસ વા, સોલસ વા, સંઘેજ્જા વા, અસંઘેજ્જા વા ઉવવજ્જંતિ' હે ગૌતમ ! વે જીવ એક સમય મેં ચાર અથવા આઠ, અથવા વારસ, અથવા સોલસ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત ઉત્પન્ન હોતે હેં । 'તે ણં ભંતે ! જીવા કિં સંતરં ઉવવજ્જંતિ' નિરંતરં ઉવવજ્જંતિ' હે ભદન્ત ! વે જીવ કયા સાન્તર-અન્તરસહિત-ઉત્પન્ન હોતે હેં ? અથવા નિરન્તર-અન્તર-રહિત ઉત્પન્ન હોતે હેં ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હેં—'ગોયમા ! સંતરંપિ ઉવવજ્જંતિ નિરંતરં વિ ઉવવજ્જંતિ' હે ગૌતમ ! વે જીવ સાન્તર મી ઉત્પન્ન હોતે હેં ઓર નિરન્તર મી ઉત્પન્ન હોતે હેં । 'સંતરં ઉવવજ્જમાણા જહન્નેણં એકં સમયં ઉક્કોસેણં અસંઘેજ્જા સમયા અન્તરં કટ્ટુ ઉવવજ્જંતિ'

મગધન્ તે જીવે એક સમયમાં કેટલા ઉત્પન્ન થાય છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'ગોયમા ! ચત્તારિ વા, અટ્ઠ વા, વારસ વા, સંઘેજ્જા વા, અસંઘે-જ્જા વા, ઉવવજ્જંતિ' હે ગૌતમ ! તે જીવે એક સમયમાં ચાર, અથવા આઠ, અથવા બાર, અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત ઉત્પન્ન થાય છે. 'તે ણં ભંતે ! જીવા કિં સંતરં ઉવવજ્જંતિ, નિરંતરં ઉવવજ્જંતિ' હે મગધન્ તે જીવે શું સાન્તર-અન્તર સહિત ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા નિરંતર અન્તર વિના ઉત્પન્ન થાય છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'ગોયમા ! સંતરંપિ ઉવવજ્જંતિ, નિરંતરં વિ ઉવવજ્જંતિ' હે ગૌતમ ! તે જીવે સાન્તર પણ ઉત્પન્ન થાય છે. અને નિરંતર પણ ઉત્પન્ન થાય છે. 'સંતરં ઉવવજ્જમાણા જહન્નેણં એકં સમયં ઉક્કોસેણં અસંઘેજ્જા સમયા અન્તરં કટ્ટુ ઉવવજ્જંતિ' સાન્તર-અન્તર સહિત

સંખ્યેયાન્ સમયાન્ અન્તરં કૃત્વા સમુપપન્તે । ‘નિરંતરં ઉવવજ્જમાણા જહન્નેણં
દો સમયા’ નિરન્તરમુદયમાનાઃ જઘન્યેન દ્વૌ સમયૌ યાવત્ ‘ઉવ્કોસેણં અસંખેજ્જા
સમયા અણુસમયં અચિરહિયં નિરંતરં ઉવવજ્જન્તિ’ ઉત્કર્ષેણાસંખ્યેયાન્ સમયાન્
યાવત્ અનુસમયમવિરહિતં નિરન્તરં સમુપપન્તે । ‘અનુસમય’ ઇત્યાદિ પદત્રયમે-
કાર્થકમ્ । ‘તે ણં મતે ! જીવા જં સમયં’ કહજુમ્મા તં સમયં તેઓગા’ તે સ્વલ્પ
ભદન્ત । જીવા યસ્મિન્ સમયે કૃતયુગ્મા ઇત્યભિધીયન્તે તસ્મિન્ સમયે કિં યોજ
પદવાચ્યાઃ સમ્ભવન્તિ ? તથા-‘જં સમયં તેઓગા તં સમયં કહજુમ્મા’ યસ્મિન્
સમયે યોજ પદવાચ્યાઃ તસ્મિન્ સમયે કૃતયુગ્મ શબ્દવાચ્યાઃ સમ્ભવન્તિ કિમિતિ
પ્રશ્નઃ, ઉત્તરમાહ-‘ણો ઇણદ્દે સમદ્દે’ નાયમર્થઃ મમર્થઃ એક સંખ્યાશ્રિતાનાં

સાન્તર ઉત્પન્ન હોને પર વે જઘન્ય સે એકસમય ના ઓર ઉત્કૃષ્ટ સે
અસંખ્યાત સમયના અન્તર કર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં । ‘નિરંતરં ઉવવજ્જ-
માણા જહન્નેણં દો સમયા’ ઓર નિરન્તરરૂપ સે જબ વે ઉત્પન્ન હોતે
હૈં તબ વે જઘન્ય સે દો સમયં તક એવં ‘ઉવ્કોસેણં અસંખેજ્જા સમયા
અણુસમયં અચિરહિયં નિરંતરં ઉવવજ્જન્તિ’ ઉત્કૃષ્ટ સે અસંખ્યાતસમય
તક પ્રત્યેક સમય મેં વિના અન્તર કે ઉત્પન્ન હોતે રહતે હૈં । ‘અનુસમય
આદિ વે ત્રીન પદ એક હી અર્થવાલે હૈં । ‘તે ણં મતે ! જીવા જં
સમયં કહજુમ્મા તં સમયં તેઓગા’ હે ભદન્ત । વે જીવ જિસ સમય
મેં કૃતયુગ્મપદવાચ્ય હોતે હૈં ઉસ સમય મેં વે કયાં યોજપદવાચ્ય હોતે
હૈં ? તથા-‘જં સમયં તેઓગા તં સમયં કહજુમ્મા’ વે જિસ સમય મેં
યોજપદવાચ્ય હોતે હૈં ઉસ સમય મેં વે કૃતયુગ્મપદવાચ્ય હોતે હે ?

ઉત્પન્ન થાય ત્યારે તેઓ જઘન્યથી એક સમયથી અને ઉત્કૃષ્ટથી અસંખ્યાત
સમયના અંતરથી ઉત્પન્ન થાય છે. ‘નિરંતરં ઉવવજ્જમાણા જહન્નેણં દો
સમયા’ અને નિરંતરપણાથી ત્યારે તેઓ ઉત્પન્ન થાય છે, ત્યારે તેઓ જઘ-
ન્યથી બે સમય સુધી અને ‘ઉવ્કોસેણં અસંખેજ્જા સમયા અણુસમયં અચિરહિયં
નિરંતરં ઉવવજ્જન્તિ’ ઉત્કૃષ્ટથી અસંખ્યાત સમય સુધી પ્રત્યેક સમયમાં અંતર
વિના ઉત્પન્ન થતા રહે છે. “અનુ સમય વિગેરે આ ત્રણ પદો એક જ
પ્રકારના અર્થને બતાવવાવાળા છે. ‘તે ણં મતે જીવા જં સમયં કહજુમ્મા તં
સમયં તેઓગા’ હે ભગવન્ તે છવે જે સમયમાં કૃતયુગ્મ પદવાળા હોય
છે, તે વખતે તેઓ શું યોજ પદવાળા હોય છે ? તથા ‘જં સમયં તેઓગા
તં સમયં કહજુમ્મા’ જે વખતે તેઓ યોજપદથી યુક્ત હોય છે, તે વખતે
તેઓ શું કૃતયુગ્મ પદવાળા હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રબુધી ગૌતમ-

વિરુદ્ધસંખ્યાન્તરાધિકરણત્વાદિતિ । एवम् 'जं समयं कडजुम्मा तं समयं दावरजुम्मा' यस्मिन् समये कृतयुग्माः तस्मिन् समये द्वापरयुग्माः संभवन्ति ? 'जं समयं दावरजुम्मा तं समयं कडजुम्मा' यस्मिन् समये द्वापरयुग्माः तस्मिन् समये कृतयुग्माः संभवन्ति किमिति प्रश्नः, उत्तरमाह—'णो इणट्ठे समट्ठे' नायमर्थः समर्थः । 'जं समयं कडजुम्मा तं समयं कलियोगा' यस्मिन् समये कृतयुग्मास्तस्मिन् समये कल्योजाः किम् ? तथा—'जं समयं कलियोगा' तं समयं कडजुम्मा' यस्मिन् समये कल्योजास्तस्मिन् समये कृतयुग्माः किमिति प्रश्नः,

इस प्रश्न के उत्तर में प्रमुश्री कहते हैं—'णो इणट्ठे समट्ठे' हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है । क्योंकि जो एक संख्याश्रित हैं उनमें विरुद्ध संख्यान्तर की अधिकरणता नहीं बनती है । इस प्रकार 'जं समयं कडजुम्मा तं समयं दावरजुम्मा' यह प्रश्न भी कि जिस समय वे कृतयुग्म रूप होते हैं उस समय में वे क्या द्वापरयुग्म रूप होते हैं ? 'णो इणट्ठे समट्ठे' इस सूत्र के अनुसार समर्थित नहीं हुआ है । और इसी प्रकार से—'जं समयं दावरजुम्मा तं समयं कडजुम्मा' यह प्रश्न भी कि "जिस समय वे द्वापरयुग्म रूप होते हैं, उस समय में वे क्या कृतयुग्म रूप भी होते हैं ? 'णो इणट्ठे समट्ठे' सूत्र के अनुसार समर्थित नहीं हुआ है । 'जं समयं कडजुम्मा तं समयं कलियोगा' तथा—'जिस समय में कृतयुग्मपदवाच्य होते हैं उस समय में वे कल्योज पदवाच्य होते हैं तथा 'जं समयं कलियोगा तं समयं कडजुम्मा' जिस समय वे कल्योज पदवाच्य होते हैं उस समय वे क्या कृतयुग्म पद-

સ્વામીને કહે છે કે—'ણો ઇણટ્ઠે સમટ્ઠે' હે ગૌતમ ! આ અર્થ બરોબર નથી કેમ કે—એઓ એક સંખ્યાના આશ્રયવાળા છે, તેઓમાં વિરુદ્ધ પ્રકારના સંખ્યાન્તરનું અધિકરણપણ બનતું નથી એજ પ્રમાણે 'જં સમયં કડજુમ્મા તં સમયં દાવરજુમ્મા' જે સમયે કૃતયુગ્મ હોય છે, તે સમયમાં તે શું દ્વાપરયુગ્મ રૂપ હોય છે ? આ પ્રશ્ન પણ 'ણો ઇણટ્ઠે સમટ્ઠે' આ સૂત્રપાઠના કથન પ્રમાણે સમર્થિત થયેલ નથી. અને એજ પ્રમાણે 'જં સમયં દાવરજુમ્મા તં સમયં કડજુમ્મા' આ પ્રશ્ન કે—બ્યારે તેઓ દ્વાપરયુગ્મ પદવાળા હોય છે, તે સમયે તેઓ શું કૃતયુગ્મ રૂપ પણ હોય છે ? આ પ્રશ્ન પણ 'ણો ઇણટ્ઠે સમટ્ઠે' આ સૂત્રપાઠ પ્રમાણે સમર્થિત થયેલા નથી. 'જં સમયં કડજુમ્મા તં સમયં કલિઓગા' તથા જે સમયે કૃતયુગ્મ પદવાળા હોય છે, તે વખતે તેઓ કલ્યોજ પદથી યુક્ત હોય છે. 'જં સમયં કલિઓગા તં સમયં કડજુમ્મા' બ્યારે તેઓ કલ્યોજ પદથી યુક્ત હોય છે, તે વખતે તેઓ

ઉત્તરમાહ—‘જો ઇળદે સમદે’ નાયમર્થઃ સમર્થઃ, ઇત્યુત્તરમ્. યુક્તિ પૂર્વોક્તવ ‘તેણં મંતે ! જીવા કહિં ઉવવજ્જંતિ’ તે સ્વલુ મદન્ત ! જીવાઃ કથમુત્પદ્યન્તે ઇતિ પ્રશ્નઃ, મગવાનાહ—‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ, ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘સે જહાનામણ પવણ પવમાણે એવં જહા ઉવવાયસણ જાવ નો પરપ્પઓમેણં ઉવવજ્જંતિ’ સ યથાનામકઃ પ્લવકઃ પ્લવમાનઃ એવં યથા ઉપપાતશતકે મગવત્યા એવ ત્રિંશત્તમશતકે પ્રથમો દેશકે કથિતં તથાઽત્રાપિ જ્ઞાતવ્યમ્ કિયત્પર્યન્તં તત્રાહ—‘જાવ’ ઇત્યાદિ, યાવત્ ‘નો પરપ્પઓમેણં ઉવવજ્જંતિ’ નો પરમયોગેણોત્પદ્યન્તે એતત્પર્યન્તમ્ ઉપપાત-શતકમત્રાધ્યેતવ્યમ્ એકત્રિંશત્તમશતકે પચ્ચવિંશતિશતકીયાષ્ટમોદેશકસ્યાતિદેશો વિદ્યતે તથા ચ અધ્યવસાનયોગનિર્વર્તિતેન કરણોપાયેનેત્યારમ્ય આત્મપ્રયોગેણો-

વાચ્ય હોતે હૈં ?’ કયા યહ પ્રશ્ન ઓ ‘જો ઇળદે સમદે’ સૂત્ર કે અનુ-સાર હે ગૌતમ ! સમર્થિત નહીં હુઆ હૈં !

‘તે જાં મંતે ! જીવા કહિં ઉવવજ્જંતિ’ હે મદન્ત ! વે જીવ કૈસે કિસ પ્રકાર સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? ‘ગોયમા ! સે જહાનામણ પવણ પવમાણે એવં જહા ઉવવાયસણ જાવ નો પરપ્પઓમેણં ઉવવજ્જંતિ’ હે ગૌતમ ! જૈસે કોઈ એક પ્લવક કૂદતા કૂદતા અપને સ્થાન સે આગે કે સ્થાન પર પહુંચ જાતા હૈં—ઇત્યાદિ રૂપ સે જૈસા ઉપપાત શતકમેં હસી મગવતી કે ૩૧ વેં શતક મેં પ્રથમ ઉદેશક મેં કહા ગયા હૈં વહ યહાં પર કહ લેના ચાહિયે ! ‘જાવ નો પરપ્પઓમેણં ઉવવજ્જંતિ’ હસ સૂત્રપાઠ તક તાત્પર્ય કહને કા યહ હૈં કિ ૩૧ વેં શતક મેં પચ્ચીસ વેં શતક કે આઠ વેં ઉદેશકકા અતિદેશ હૈં જો વરાં કે ‘અધ્યવસાન યોગ નિર્વર્તિતેન કરણો-

કૃતયુગ્મ પદ્ધતી યુક્ત હોય છે ? આ પ્રશ્ન પણ ‘જો ઇળદે સમદે’ આ સૂત્ર પાઠના કથન પ્રમાણે હે ગૌતમ સમર્થિત થયેલ નથી.

‘તે જાં મંતે ! જીવા કહિં ઉવવજ્જંતિ’ હે ભગવન્ તે હવેા કેવી રીતે ઉત્પન્ન થય છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘ગોયમા ! સે જહાનામણ પવણ પવમાણે એવં જહા ઉવવાયસણ જાવ નો પરપ્પઓમેણં ઉવવજ્જંતિ’ હે ગૌતમ ! જેમ કોઈ એક કૂદતાર પુરૂષ કૂદતો કૂદતો પોતાના સ્થાનથી આગળના સ્થાન પર પહોંચી જાય છે, વિશેષ પ્રકારથી જે પ્રમાણે ઉપપાત શતકમાં એટલે કે આ ભગવતી સૂત્રના ૩૧ એકત્રીસમા શતકના પહેલા ઉદેશમાં કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું સ્વયં કથન અદિયા સમજ લેવું. ‘જાવ નો પરપ્પઓમેણં ઉવવજ્જંતિ’ આ સૂત્રપાઠ સુધી તે કથન કહી લેવું આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે—એકત્રીસમા શતકમાં પચ્ચીસમા શતકના

ત્પદ્યન્તે એતત્પર્યન્તં પશ્ચવિંશતિશતકીયાપ્ટમોદેશકમ્પરુણમિદાધ્યેતવ્યમિતિ । 'તે
 ણં મંતે ! જીવા કિં આયજસેણં ઉવવજ્જંતિ આયઅજસેણં ઉવવજ્જંતિ' તે સ્વલુ
 મદન્ત ! જીવાઃ કિમાત્મયશસા ઉત્પદ્યન્તે આત્મનઃ સ્વપ્રત્નિ યશઃ યશઃકારણ-
 ત્વાત્ આત્મનઃ યશઃ-સંયમ આત્મ યશ સ્તેન આત્મયશમા સમુત્પદ્યન્તે અથવા
 આત્મનોડયશસા સમુત્પદ્યન્તે ? इति प्रश्नः, भगवानाह-‘गोयमा’ इत्यादि ‘गोयमा’
 हे गौतम ! 'नो आयजसेणं उववज्जंति आय अजसेणं उववज्जंति' नो आत्मयशसा
 उत्पद्यन्ते किन्तु आत्माऽयशसोत्पद्यन्ते इह च सर्वेषामात्माऽयशसैवोत्पत्ति मंत्रति
 उत्पत्तौ सर्वेषां मविरत्नादिति । 'जइ आय अजसेणं उववज्जंति किं आयजसं
 उवजीवंति आय अजसं उवजीवंति' यदि आत्माऽयशसा उत्पद्यन्ते तदा किमात्म

પાચેન' હસ પાઠ સે લેકર 'આત્મપ્રયોગેણ ઉત્પદ્યન્તે' હસ પાઠ તક પચ્ચીસ
 વેં શતક કા અપ્ટમોદેશક પ્રકરણ ગ્રહણ કર લેના ચાહિયે ।
 'તે ણં મંતે ! જીવા કિં આયજસેણં ઉવવજ્જંતિ' હે મદન્ત । યે જીવ
 કયા અપને યશ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા 'આય અજસેણં ઉવવ-
 જ્જંતિ' અથવા અપને અસંયમ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? 'ગોયમા । નો
 આયજસેણં ઉવવજ્જંતિ, આય અજસેણં ઉવવજ્જંતિ' હે ગૌતમ । વે
 અપને સંયમ સે ઉત્પન્ન નહીં હોતે હૈં, કિન્તુ અપને અસંયમ સે ઉત્પન્ન
 હોતે હૈં । યહાં સમસ્ત જીવોં કી ઉત્પત્તિ અપને અસંયમ સે હી હોતી
 હૈ । વયોં કિ ઉત્પત્તિ મૈં યહાં સમસ્ત જીવોં કી અવિરત અવસ્થા હી
 કારણ હૈ । 'જહ આય અજસેણં ઉવવજ્જંતિ' કિં આયજસં ઉવજીવંતિ'
 આય અજસં ઉવજીવંતિ યદિ વે આત્મ અસંયમ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં તો
 કયા વે આત્મ સંયમ કા આશ્રય કરતે હૈં ? અથવા આત્મ અસંયમ કા

આઠમા ઉદ્દેશાની લક્ષામણુ કરેલ છે, તો ત્યાથી 'અવ્યવસાનયોગનિવર્તિત્વેન
 કરણોપાચેન' આ પાઠથી લઈને 'આત્મપ્રયોગેણ ઉત્પદ્યન્તે' આ પાઠ સુધી પચ્ચીસ
 શતકના આઠમા ઉદ્દેશાનું કથન અહિયાં પ્રહસુ કરીને કહેવું જોઈએ. 'તે ણં
 મંતે ! જીવા આયજસેણ ઉવવજ્જંતિ' હે ભગવન્ તે શ્રી પોતાના યશથી
 સંયમથી ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા 'આય અજસેણ ઉવવજ્જંતિ' અથવા પોતાના
 અસંયમથી ઉત્પન્ન થાય છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘ગોયમા ! નો આયજસેણં
 ઉવવજ્જંતિ, આય અજસેણં ઉવવજ્જંતિ' હે ગૌતમ ! તેઓ પોતાના સંયમથી
 ઉત્પન્ન થતા નથી. પરંતુ પોતાના અસંયમથી જ ઉત્પન્ન થાય છે. કેમ કે
 'જહ આય અજસેણં ઉવજીવંતિ કિં આયજસં ઉવજીવંતિ આય અજસં
 ઉવજીવંતિ' જો તે આત્મ અસંયમથી ઉત્પન્ન થાય છે, તો શું

યશઃ-આત્મસંયમમુપજીવન્તિ-આશ્રયન્તિ વિદધતીત્યર્થઃ જયદા આત્મનોડયશઃ
આત્મનોડસંયમમુપજીવન્તિ-આશ્રયન્તિ કિમિતિ પ્રશ્નઃ, મગવાનાહ-‘ગોયમા’
इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘नो आयजसं उवजीवंति आय अजसं उवजीवंति’
नो आत्मनो यश -आत्मसंयम रतम् नो उपजीवन्ति किन्तु आत्मायशः आत्मनोऽ
संयममुपजीवन्ति आश्रयन्तीति । ‘जइ आय अजसं उवजीवंति सलेस्सा अलेस्सा’
हे भदन्त ! यत्रात्मयशः आत्मनोऽसंयममुपजीवन्ति, तदा किं ते जीवाः सलेश्या
भवन्ति अलेश्या वा भवन्तीति प्रश्नः, मगवानाह-‘गोयमा’ इत्यादि, ‘गोयमा’
हे गौतम ! ‘सलेस्सा नो अलेस्सा’ सलेश्याः लेश्यावन्त एव भवन्ति न तु लेश्या-
रहिता भवन्तीति । ‘जइ सलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया’ हे भदन्त ! यदि ते
जीवाः सलेश्याः तदा सक्रिया अक्रिया वा भवन्तीति प्रश्नः, मगवानाह-‘गोयमा’
इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘सकिरिया नो अकिरिया’ सक्रिया एव भवन्ति
न तु क्रिया रहिता भवन्तीति । ‘जइ सकिरिया तेणेन भवग्गहणेण सिज्झंति जाव

આશ્રય કરતે હૈં ‘ગોયમા ! નો આયજસં’ ઉવજીવંતિ આય અજસં
ઉવજીવંતિ’ હે ગૌતમ ! વે આત્મ સંયમ વા આશ્રય નહીં કરતે હૈં
કિન્તુ આત્મ અસંયમ કા હી આશ્રય કરતે હૈં । ‘જઈ આય અજસં’
ઉવજીવંતિ, સલેસ્સા અલેસ્સા’ હે ભદન્ત ! યદિ વે આત્મ અસંયમ કા
આશ્રય કરતે હૈં તો કયા યે લેશ્યાસહિત હી હોતે હૈં અથવા લેશ્યા-
રહિત હોતે હૈં ? ‘ગોયમા સલેસ્સા નો અલેસ્સા’ હે ગૌતમ ! યે લેશ્યા
સહિત હી હોતે હૈં લેશ્યા રહિત નહીં હોતે હૈં । ‘જઈ સલેસ્સા કિં
સકિરિયા અકિરિયા’ હે ભદન્ત ! યદિ યે લેશ્યાસહિત હોતે હૈં તો
કયા વે ક્રિયાયુક્ત હોતે હૈં ? અથવા ક્રિયાયુક્ત નહીં હોતે હૈં ? ‘ગોયમા !

તેઓ આત્મ સંયમનો આશ્રય કરે છે ? અથવા આત્મ અસંયમનો આશ્રય
કરે છે ? ‘ગોયમા ! નો આયજસં ઉવજીવંતિ, આય અજસં ઉવજીવંતિ’ હે ગૌતમ !
તેઓ આત્મ સંયમનો આશ્રય કરતા નથી પરંતુ આત્મ અસંયમનો જ
આશ્રય કરે છે ‘જઈ આય અજસં ઉવજીવંતિ, સલેસ્સા, અલેસ્સા’ હે ભગવન્
જે તેઓ આત્મ અસંયમનો આશ્રય કરે છે તો શું તેઓ લેશ્યા સહિત હોય
છે ? કે લેશ્યા વિનાના હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે ‘ગોયમા !
સલેસ્સા નો અલેસ્સા હે ગૌતમ ! તેઓ લેશ્યા સહિત જ હોય છે, લેશ્યારહિત
હોતા નથી ‘જઈ સલેસ્સા કિં સકિરિયા અકિરિયા’ હે ભગવન્ જે તેઓ લેશ્યા
સહિત હોય છે, તો શું ક્રિયા યુક્ત હોય છે ? અથવા ક્રિયાયુક્ત હોતા નથી ?
ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-‘ગોયમા ! સકિરિયા નો અકિરિયા’ હે ગૌતમ તેઓ
ક્રિયારહિત હોય છે, ક્રિયા વિનાના હોતા નથી. ‘જઈ સકિરિયા તેણે ભવગ્ગ-

અંતં કરેતિ' હે મદન્ત ! યદિ તૈ જીવાઃ સક્રિયાઃ તદા તેનૈવ ભવગ્રહણેન સિદ્ધયન્તિ
યાવદન્તં કુર્વન્તિ અત્ર યાવતાદેન બુદ્ધયન્તે મુચ્યન્તે પરિનિર્વાસ્યન્તિ સર્વદુઃસ્વાના-
મિત્યસ્ય ગ્રહણં મદતીતિ પ્રશ્નઃ, મગવાનાહ—'ળો ઇળદ્દે સમદ્દે' નાયમર્થઃ
સમર્થઃ । તે તેનૈવ ભવગ્રહણેન ન સિદ્ધયન્તિ ૫ ઇતિ ભાવઃ ।

‘રાસિજુમ્મ કહજુમ્મ અસુરકુમારાણાં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ રાશિયુગ્મ
કૃતયુગ્માસુરકુમારાઃ સ્વદુ મદન્ત ! કુત ઉત્પદ્યન્તે કિં નૈરયિકેભ્ય આગત્યોત્પદ્યન્તે
યાવદ્દેવેભ્ય આગત્યોત્પદ્યન્તે ઇતિ પ્રશ્નઃ, ઉત્તરમાહ—અતિદેશદ્વારેણ 'જહેવ' ઇત્યાદિ

સકિરિયા નો અકિરિયા' હે ગૌતમ ! ચે ક્રિયા સહિત હી હોતે હૈં ક્રિયા
રહિત નહીં હોતે હૈં । 'જહ સકિરિયા તેણેય ભવગ્રહણેણં સિજ્જંતિ જાવ
અંતં કરેતિ' હે મદન્ત ! યદિ ક્રિયા સહિત હી હોતે હૈં તો કયા વે ઉસી
ભવ સે સિદ્ધ હો જાતે હૈં યાવત્ અન્ત કર દેને હૈં ? યહાં યાવત્પદ સે
'બુદ્ધય તે, મુચ્યન્તે પરિનિર્વાસ્યન્તિ સર્વ દુઃસ્વાનામ્' ઇતિ પદોં કા ગ્રહણ
હુઆ હૈં । ઉત્તર એ પ્રભુશ્રી કહતે હૈં—'ળો ઇળદ્દે સમદ્દે' હે ગૌતમ !
યહ અર્થ સમર્થિત નહીં હુઆ હૈં । ઇસ કારણ વે મ્હી ઇસી ભવ સે ન
સિદ્ધ હોતે હૈં ન બુદ્ધ હોતે હૈં ન મુક્ત હોતે હૈં ન પરિનિર્વાત હોતે હૈં
ન સમસ્ત દુઃખોં કા અન્ત કરતે હૈં ।

‘રાસિજુમ્મ કહજુમ્મ અસુરકુમારાણાં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ હે
મદન્ત ! રાશિયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ અસુરકુમાર કિમ્ સ્થાન
વિશેષ સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? કયા વે નૈરયિકોં મેં સે આકર
કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા યાવત્ દેવોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ?

હણેણં સિજ્જંતિ જાવ અત કરેતિ' હે ભગવન્ નો ક્રિયા સહિત ન હોય
છે, તો શું તેઓ એજ ભવમાં સિદ્ધિ પ્રાપ્ત કરી લે છે ? બુદ્ધ થઈ જાય છે ?
મુક્ત થઈ જાય છે ? યાવત્ સર્વ દુઃખોનો અંત કરી દે છે ? અહિયા યાવ
તેથી બુદ્ધયન્તે, મુચ્યન્તે પરિનિર્વાસ્યન્તિ સર્વદુઃસ્વાનામ્' આપદોનો સંથડ થયો
છે આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'ળો ઇળદ્દે સમદ્દે' હે ગૌતમ ! આ
અર્થ સમર્થિત થયેલ નથી, તેથી તેઓ એજ ભવમાં સિદ્ધ થતા નથી, મુક્ત
થતા નથી પરિનિર્વાત થતા નથી, અને સઘળા દુઃખોનો અંત કરતા નથી.

‘રાસિજુમ્મ કહજુમ્મ અસુરકુમારાણાં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ' હે ભગવન્
રાશિયુગ્મ રૂપ કૃતયુગ્મ રાશિ પ્રમાણ અસુરકુમાર કયા સ્થાન વિશેષથી
આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોંમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય
છે ? અથવા તિર્યચોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી
આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોંમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અતિ

‘જહેવ નેરહ્યા તહેવ નિરવસેસ’ યથૈન નૈરયિકાસ્તથૈવ નિરવશેષમ્ તિર્યગ્મયો-
મનુષ્યેભ્યો વા આગત્યોત્પદ્યન્તે इत्यादि सर्वे नैरयिक प्रकरणवद्देशावगन्तव्यं नवर
नैरयिकस्थाने असुरकुमारेति पदं संयोज्य अलापको वक्तव्यः, आलापप्रकारश्च
स्वयमेव ऊहनीय इति । ‘एवं जाव पंचिदियतिरिक्खजोणिया’ एवं नैरयिक
वदेव यावत् पञ्चेन्द्रियतिर्यग्गोणिकाः यावत्पदेन असुरकुमारादारभ्य चतुरिन्द्रिया-
न्तानां संप्रहस्तथा च एकैन्द्रियादारभ्य पञ्चेन्द्रियतिर्यग्गोणिकानामुपपत्तादयः
नारकवदेव ज्ञातव्याः । ‘नवरं’ वणस्सइकाइया जाव असंखेज्जा वा अणता वा
उववज्जंति’ नवरं—केवलं नारकप्रकरणापेक्षया इदमेव वैलक्षण्यं यद् वनस्पति-

અતિદેશ દ્વારા ઉત્તર દેતે છુપ પ્રભુશ્રી કહતે હૈ—‘જહેવ નેરહ્યા તહેવ
નિરવસેસ’ હે ગૌતમ ! જેસા નૈરયિકોં કે સમ્બન્ધ મેં કહા જા ચુકા
હૈ વૈસા હી इनके सम्बन्ध में कहलेना चाहिये । इस प्रकार ये तिर्यग्गो-
निकों में से आकर के अथवा मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं
इत्यादि समस्त प्रकरण यहां जानने का हो जाता है । आलापक की
रचना करते समय नैरयिक के स्थान में असुरकुमार पद रखना चाहिये
और आलाप प्रकार अपने आप समझ लेना चाहिये ‘एवं जाव पंचिदिय
तिरिक्ख जोणिया’ इसी प्रकार से यावत् पञ्चेन्द्रियतिर्यग्गोणिक जीवों के
भी उत्पाद आदि जानना चाहिये । यहां यावत्पद से ‘एकैन्द्रिय नागकुमार
से लेकर चौहन्द्रिय तक के जीवों का ग्रहण हुआ है । तथा च असुरकुमार
से लेकर पंचेन्द्रिय तिर्यग्गोणिकों का उत्पात आदि नारक के जैसा ही
होता है । ‘नवरं’ वणस्सइकाइया जाव असंखेज्जा वा अणतावा उवव
ज्जंति’ परन्तु वनस्पतिकायिक जीव यावत् अमखयान अधना अनन्त

દેશ દ્વારા આ પ્રશ્નને ઉત્તર આપતાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—
‘જહેવ નેરહ્યા તહેવ નિરવસેસ’ હે ગૌતમ ! નૈરયિકોના સંબંધના જે પ્રમાણે
કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન આ રાશિયુગ્મ કૃત્યુગ્મ અયુગ
કુમારોના સંબંધમાં પણ સમજવું. આ ગીતે તેઓ તિર્યગ્ગોનિકોના
અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, વિગેરે મધ્ય પ્રકરણ અદિયાં
સમજી લેવું. આલાપકો કહેતી વખતે નૈરયિકોના સ્થાને અસુરકુમાર આ પદ
મૂકીને આલાપકો કહેવા જોઇએ આલાપકોના પ્રકાર સ્વયં સમજી લેવો ‘તવ
જાવ પંચિદિયતિરિક્કજોણિયા’ એજ પ્રમણે યાવત્ પંચેન્દ્રિય તિર્યગ્ગોનિકોના
ઉપપાત વિગેરે પણ સમજવા. અહિયા યાવત્ પદથી એકેન્દ્રિયોથી લઈને
ચાર ઇન્દ્રિય સુધીના છવે ગ્રહણ કરાયા છે. એટલે કે એકેન્દ્રિયોથી લઈને
પંચેન્દ્રિય તિર્યગ્ગોનિકોના ઉપપાત વિગેરે નારકોના કથન પ્રમાણે હોય છે
‘નવરં’ વણસ્સइकाइया जाव असंखेज्जा वा अणता वा उववज्जंति’ પરન્તુ

કાયિકા યાવદ્ અસંખ્યાતા વા અનન્તા વોત્પદ્યન્તે હિતિ યાવત્પદેન ચત્વારોઽષ્ટૌ દ્વાદશ પોડશ સંખ્યાતા વા એતદન્તસ્ય ગ્રહણમ્ । ‘સેસં એવં ચેવ’ શેષમ્-પરિમાણા-તિરિક્તં સર્વમપિ એવમેવ-નારકવદેવ જ્ઞાતવ્યમિતિ । ‘મણુસ્સા વિ એવં ચેવ જાવ નો આયજસેણં ઉવવજ્જંતિ આયઅજસેણં ઉવવજ્જંતિ’ મનુષ્યા અપિ એવમેવ-નૈર-યિકવદેવ જ્ઞાતવ્યાઃ કિયન્તં પ્રકરણં મનુષ્યે યોજ્યં તન્નાહ-‘જાવ’ ઇત્યાદિ, યાવત્ આત્મયશસા નોત્પદ્યન્તે કિન્તુ આત્માયશસામુન્પદ્યન્તે એતત્પર્યન્તં નારકપ્રકરણમવ-ગન્તવ્યમિતિ । ‘જહ આય અજસેણં ઉવવજ્જંતિ કિં આયજસં ઉવજીવંતિ આય-અજસં ઉવજીવંતિ’ હે મદન્ત । તે મનુષ્યાઃ યદિ આત્મનોડયશસા-અસંયમેનોત્પ-દ્યન્તે તદા કિમ્ આત્મયશઃ-આત્મનઃ સંયમમુરજીવન્તિ-આશ્રયન્તિ, અથવા આત્મનોડસંયમમુપજીવન્તીતિ પ્રશ્નઃ, મગવાનાહ-‘ગોયમા’ ઇત્યાદિ, ‘ગોયમા’ હે ગૌતમ ! ‘આયજસંપિ ઉવજીવંતિ આયઅજસંપિ ઉવજીવંતિ’ આત્મયશઃ આત્મનઃ

હોતે હૈં । યહાં યાવત્ પદ સે ચાર આઠ બારહ સોલહ અથવા સંખ્યાત હસ પાઠકા ગ્રહણ હુઆ હૈં । ‘સેસં એવં ચેવ’ પરિમાણ કે અતિરિક્ત ઓર સ્વ કથન નારક કે પ્રકરણ કે જૈસા હી હૈં । ‘મણુસ્સા વિ એવં ચેવ જાવ નો આયજસેણં ઉવવજ્જંતિ આય અજસેણં ઉવવજ્જંતિ’ હસ પ્રકાર સે મનુષ્ય ખી યાવત્ આત્મસંયમ સે ઉત્પન્ન નહીં હોતે હૈં કિન્તુ આત્મ અસંયમ સે હી ઉત્પન્ન હોતે હૈં । ‘હસ પાઠકા મનુષ્યાં કે સમ્બન્ધ મેં ખી સ્વ કથન નારક કે પ્રકરણ જૈસા હી કહ લેના ચાહિયે । ‘જહ આય અજસેણં ઉવવજ્જંતિ, કિં આયજસં ઉવજીવંતિ, આય અજસં ઉવજીવંતિ’ હે મદન્ત । યદિ વે મનુષ્ય આત્મ અસંયમ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં તો જ્યા વે આત્મ સંયમકા આશ્રય કરતે હૈં અથવા આત્મ અસંયમકા

વનસ્પતિકાયિક છવો યાવત્ અસંખ્યાત અથવા અનંત ઉત્પન્ન થાય છે. અહિયાં યાવત્પદથી એક અથવા બે યાવત્ હસ અથવા અસંખ્યાત આ પાઠ ગ્રહણ કરાયો છે. ‘સેસં એવં ચેવ’ પરિણામના કથન શિવાય બાકીનું સઘળું કથન નારકના પ્રકરણ પ્રમાણે જ છે. ‘મણુસ્સા વિ એવં ચેવ જાવ નો આય જસેણં ઉવવજ્જંતિ આય અજસેણં ઉવવજ્જંતિ’ એજ પ્રમાણે મનુષ્ય પણ યાવત્ આત્મ સંયમથી ઉત્પન્ન થતા નથી. પરંતુ આત્મ અસંયમથી જ ઉત્પન્ન થાય છે, આ પાઠ સુધી મનુષ્યોના સંબંધમાં પણ પરિણામના કથન શિવાય બાકીનું સઘળું કથન નારકના પ્રકરણમાં કહ્યા પ્રમાણે કહેવું જોઈએ ‘જહ આયજસેણં ઉવવજ્જંતિ કિં આયજસં ઉવજીવંતિ આય અજસં ઉવજીવંતિ’ હે ભગવન જો તે મનુષ્યો આત્મસંયમથી ઉત્પન્ન થાય છે, તો શું તેઓ આત્મ સંયમનો આશ્રય કરે છે? અથવા આ અસંયમનો આશ્રય કરે છે? ઉત્તરમાં

સંયમમપિ ઉપજીવન્તિ તે મનુષ્યાઃ તથા-આત્મનોડયશઃ અસંયમમપિ ઉપજીવન્તીતિ 'જહ આયજસં ઉવજીવંતિ કિં સલેસ્સા અલેસ્સા' યદિ તે મનુષ્યા આત્મયશઃ આત્મનઃ સંયમયુપજીવંતિ તદા કિં તે સલેશ્યા લેશ્યાસહિતાઃ કિં વા અલેશ્યાઃ-લે.યારહિતા વા ભવન્તીતિ પ્રશ્નઃ । ભગવાનાહ-'ગોયમા' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'सलेस्सा वि अलेस्सा वि' सलेश्या अपि भवन्ति अलेश्याः-लेश्यारहिता अपि भवन्ति । 'जह अलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया' यदि सलेश्या भवन्ति तदा किं ते मनुष्याः सक्रिया भवन्ति अक्रियाः-क्रियारहिता वा भवन्तीति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'नो सकिरिया अकिरिया नो सक्रिया भवन्ति, किन्तु अक्रिया भवन्तीति । 'जह अकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झन्ति जाव अंतं करे'ति' यदि ते मनुष्याः अक्रियाः तदा किं तेनैव भवग्रहणेन

આશ્રય કરતે હું ? 'ગોયમા ! આયજસં' વિ ઉવજીવંતિ આય અજસંપિ ઉવજીવંતિ' હે ગૌતમ ! વે આત્મ સંયમકા મી આશ્રય કરતે હું ઔર આત્મ અસંયમ કા મી આશ્રય કરતે હું । 'જહ આયજસં ઉવજીવંતિ કિં સલેસ્સા અલેસ્સા' હે ભદન્ત ! યદિ વે આત્મ સંયમ કા આશ્રય કરતે હું તો કયા વે સલેશ્ય હોતે હું અથવા અલેશ્ય હોતે હું ? 'ગોયમા ! સલેસ્સા વિ અલેસ્સા વિ' હે ગૌતમ ! વે સલેશ્ય મી હોતે હું ઔર અલેશ્ય મી હોતે હું । 'જહ અલેસ્સા કિં સકિરિયા, અકિરિયા' યદિ વે અલેશ્ય હોતે હું તો વે કયા ક્રિયા સહિત હોતે હું ? અથવા ક્રિયા રહિત હોતે હું ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હું-'ગોયમા ! નો સકિરિયા અકિરિયા' વે સક્રિય નહીં હોતે હું કિન્તુ અક્રિય હોતે હું । 'જહ અકિરિયા તેણેવ ભવગ્ગહણેણં સિજ્ઝન્તિ જાવ અંતં કરે'તિ' હે ભદન્ત ! યદિ વે અક્રિય હોતે હું તો કયા વે ડસી અવસે સિદ્ધિક હોતે હું યાવત્ અન્ત કરતે હું ? યહાં યાવત્

પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'ગોયમા ! આયજસં વિ ઉવજીવંતિ આય અજસં વિ ઉવજીવંતિ' હે ગૌતમ ! તેઓ આત્મ સંયમનો પણ આશ્રય કરે છે. અને આત્મ અસંયમનો પણ આશ્રય કરે છે. 'જહ આયજસં ઉવજીવંતિ કિં સલેસ્સા અલેસ્સા' હે ભગવન્ ને તેઓ આત્મ સંયમનો આશ્રય કરે છે, તો શું તેઓ લેશ્યાવાળા હોય છે ? અથવા લેશ્યા વિનાના હોય છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે 'ગોયમા ! સલેસ્સા વિ અલેસ્સા વિ' હે ગૌતમ ! તેઓ લેશ્યા વાળા પણ હોય છે, અને લેશ્યાવિનાના પણ હોય છે. 'જહ અલેસ્સા કિં સકિરિયા અકિરિયા' ને તેઓ લેશ્યાવિનાના હોય છે, હા શું ક્રિયા સહિત હોય છે ? કે ક્રિયા વિનાના હોય છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'ગોયમા ! નો સકિરિયા અકિરિયા' તેઓ ક્રિયાવાળા હોતા નથી પણ અક્રિયા-ક્રિયા વિનાના હોય છે. 'જહ અકિરિયા તેણેવ ભવગ્ગહણેણં સિજ્ઝન્તિ જાવ અંતં કરે'તિ' હે ભગવન્ ને તેઓ ક્રિયા વિનાના હોય છે, તો શું તેઓ એજ ભવમાં

સિદ્ધયન્તિ બુદ્ધયન્તે મુચ્ચન્તે પરિનિર્વાન્તિ સર્વં દુઃખાનામન્તં કુર્વન્તીતિ પ્રશ્નઃ, ઉત્તરમાહ—‘હંતા’ इत्यादि, ‘हंता सिज्झंति जाव अंतं करेति’ इति गौतम ! इत्थं भूता मनुष्याः सिद्धयन्ति बुद्ध्यन्ते मुच्यन्ते परिनिर्वान्ति सर्वदुःखानामन्तं च कुर्वन्त्येवेति । ‘जइ सलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया’ हे भदन्त ! ते मनुष्या यदि सलेइयाः तदा किं सक्रिया भवन्ति अक्रिया वा भवन्तीति प्रश्नः भगवानाह—‘गोयमा’ इत्यादि, ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘सकिरिया नो अकिरिया’ ये सलेइयास्ते सक्रिया एव भवन्ति नो अक्रिया भवन्ति, इति । ‘जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेति’ यदि ते सक्रियाः तदा किं तेनैव भवग्रहणेन सिद्धयन्ति यावत्सर्वदुःखानामन्तं कर्षन्तीति प्रश्नः, भगवानाह—‘गोयमा’ इत्यादि ‘गोयमा’ हे गौतम ! ‘अत्थेगइया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेति’

પદ સે બુદ્ધ હોતે હૈ, મુક્ત હોતે હૈ, પરિનિર્વાન હોતે હૈ ઓર સર્વ દુઃખોં કા (અન્ત કરતે હૈ) હન પદોં કા ગ્રહણ છુઆ હૈ । ઉત્તર મેં પ્રમુશ્રી કહતે હૈ—‘હંતા, સિજ્ઝંતિ જાવ અન્તં કરેતિ’ હાં ગૌતમ ! વે ઉસી ભવ સે સિદ્ધ હોતે હૈ યાવત્ સમસ્ત દુઃખોં કા અન્ત કરતે હૈ । ‘જહ સલેસ્સા કિં સકિરિયા અકિરિયા’ હે ભદન્ત ! યદિ વે સલેઇય હોતે હૈ તો કયા સક્રિય હોતે હૈ અથવા અક્રિય હોતે હૈ ? ‘ગોયમા ! સકિરિયા નો અકિરિયા’ હે ગૌતમ ! વે સક્રિય હોતે હૈ અક્રિય નહીં હોતે હૈ । ‘જહ સકિરિયા તેણેવ ભવગ્ગહણેણં સિજ્ઝંતિ જાવ અન્તં કરેતિ’ યદિ વે સક્રિય હોતે હૈ તો કયા વે ઉસી ભવ સે સિદ્ધ હોતે હૈ યાવત્ સમસ્ત દુઃખોં કા અન્ત કરતે હૈ ? ‘ગોયમા ! અત્થેગઇયા તેણેવ ભવગ્ગહણેણં સિજ્ઝંતિ, જાવ

સિદ્ધ થાય છે, યાવત્ અન્ત કરે છે ? અહિયાં યાવત્પદથી બુદ્ધ થાય છે ? મુક્ત થાય છે ? પરિનિર્વાત થાય છે ? અને સર્વ દુઃખોના અન્ત કરે છે ? આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—‘હંતા ! સિજ્ઝંતિ જાવ અન્તં કરેતિ’ હા ગૌતમ ! તેઓ એજ ભવમાં સિદ્ધ થાય છે. યાવત્ સઘળા દુઃખોના અન્ત કરે છે ‘જહ સલેસ્સા કિં સકિરિયા અકિરિયા’ હે ભગવન્ ને તેઓ લેશ્યાવાળા હોય છે તો શું તેઓ સક્રિય-ક્રિયા સહિત હોય છે ? અથવા અક્રિય-ક્રિયા વિનાના હોય છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘ગોયમા ! સકિરિયા નો અકિરિયા’ હે ગૌતમ ! તેઓ ક્રિયા સહિત હોય છે, ક્રિયાવિનાના હોતા નથી. ‘જહ સકિરિયા તેણેવ ભવગ્ગહણેણં સિજ્ઝંતિ, જાવ અન્તં કરેતિ’ ને તેઓ ક્રિયા સહિત હોય છે, તો શું તેઓ એજ ભવમાં સિદ્ધિ થઈ નાથ છે ? યાવત્ સઘળા દુઃખોના અન્ત કરે છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘ગોયમા ! અત્થેગઇયા તેણેવ ભવગ્ગહણેણં સિજ્ઝંતિ, જાવ

અસ્ત્યેકકે તેનૈવ ભવગ્રહણેન વિદ્ધયતિ યાદ્ અન્તં કુર્વન્તિ । તેવાં સોક્ષ્મ્ય
પ્રાપ્સ્યમાનત્વેન તત્સમયે અક્રિયત્વ સદ્ભાવાત્, 'અત્યેગદ્યા નો તેણેવ ભવગ્રહ-
ણેનં સિજ્ઞન્તિ જાવ અન્તં કરેન્તિ' અસ્ત્યેકકે મનુષ્યા નો તેનૈવ ભવગ્રહણેન
સિદ્ધયન્તિ યાવત્ સર્વદુઃખાનામન્તં કુર્વન્તીતિ । 'જહ આય અજસં ઉવજીવન્તિ કિં
સલેસ્સા અલેસ્સા' યદ્યાત્મનોડયશ ઉવજીવન્તિ તદા કિં તે મનુષ્યાઃ સલેસ્સા
અલેશ્યા વા ભવન્તીતિ પ્રશ્નઃ, ભગવાનાહ--'ગોયમા ! સલેસ્સા નો અલેસ્સા'
હે ગૌતમ ! તદા તે સલેશ્યા નો અલેશ્યા ભવન્તીતિ । 'જહ સલેસ્સા કિં સકિરિયા
અકિરિયા' યદિ સલેશ્યાસ્તે મનુષ્યા સ્તદા કિં સક્રિયા અક્રિયા વા ભવન્તીતિ
પ્રશ્નઃ, ભગવાનાહ--'ગોયમા' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'सकिरिया नो

અન્તં કરેન્તિ' હે ગૌતમ ! હવ મેં કિતનેક એસે મનુષ્ય હોતે હિં જો ડહી
ભવસિદ્ધિક હોતે હિં યાવત્ સમસ્ત દુઃખોં કાં અન્ત કરતે હિં । વહાં મોક્ષ
કી ભવિષ્યત્ મેં પ્રાપ્તિ કે સદ્ભાવ મે અક્રિયતા કા સદ્ભાવ હો જાના
હે । 'અત્યેગદ્યા નો તેણેવ ભવગ્રહણેનં સિજ્ઞન્તિ જાવ અન્તં કરેન્તિ'
તથા હવ મેં કિતનેક મનુષ્ય એસે હોતે હિં જો ડહી અવ સે સિદ્ધ નહીં હોતે
હિં યાવત્ સમસ્ત દુઃખોં કા અન્ત નહીં કરતે હિં 'જહ આય અજસં ઉવ-
જીવન્તિ કિં સલેસ્સા અલેસ્સા' યદિ વે આત્મ અસંયમ કા આશ્રય કરતે
હિં તો વ્યા વે મનુષ્ય સલેશ્ય હોતે હિં અથવા અલેશ્ય હોતે હિં ? 'ગોયમા !
સલેસ્સા નો અલેસ્સા' હે ગૌતમ ! વે સલેશ્ય હોતે હિં અલેશ્ય નહીં હોતે
હિં ? 'જહ સલેસ્સા કિં સકિરિયા અકિરિયા' યદિ વે સલેશ્ય હોતે હિં
તો વ્યા ક્રિયા સહિત હોતે હિં અથવા ક્રિયા રહિત હોતે હિં ? 'ગોયમા !

અન્તં કરેન્તિ' હે ગૌતમ ! તેઓમાં કેટલાક મનુષ્યો એવા હોય છે કે-એજ
ભવમાં સિદ્ધ થઈ નાથ છે, યાવત્ સધળા દુઃખોનો અન્ત કરે છે. અહિયા
ભવિષ્યમાં મોક્ષ પ્રાપ્તિના સદ્ભાવથી અક્રિયપણાનો સદ્ભાવ થઈ નાથ છે.
'અત્યેગદ્યા નો તેણેવ ભવગ્રહણેનં સિજ્ઞન્તિ જાવ અન્તં કરેન્તિ' તથા તેઓમાં
કેટલાક મનુષ્યો એવા હોય છે કે-એઓ એજ ભવમાં સિદ્ધ થતા નથી. યાવત્
સધળા દુઃખોનો અન્ત કરતા નથી. 'જહ આય અજસં ઉવજીવન્તિ કિં સલેસ્સા
અલેસ્સા' એ તેઓ આત્મ અસંયમનો આશ્રય કરે છે તો શું તે મનુષ્યો
લેશ્યા સહિત હોય છે ? કે લેશ્યા વિનાના હોય છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે
કે-'ગોયમા ! સલેસ્સા નો અલેસ્સા' હે ગૌતમ ! તેઓ લેશ્યાવાળા હોય છે, લેશ્યા
વિનાના હોતા નથી. 'જહ સલેસ્સા કિં સકિરિયા અકિરિયા' એ તેઓ લેશ્યાવાળા
હોય છે, તો શું ક્રિયા સહિત હોય છે કે ક્રિયા વિનાના હોય છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી
કહે છે કે-'ગોયમા ! સકિરિયા નો અકિરિયા' હે ગૌતમ ! તેઓ ક્રિયા સહિત

અક્રિયા' સક્રિયાસ્તે ભવન્તિ નતુ અક્રિયા ભવન્તીતિ । 'જહ સક્રિયા તેજેવ ભવગ્રહણેણં સિજ્ઞન્તિ જાવ અંતં કરેતિ' યદિ તે સક્રિયા સ્તદા કિં તેનૈવ ભવગ્રહણેન સિદ્ધયન્તિ યાવદન્તં કુર્વન્તીતિ મશ્નઃ, ઉત્તરમાહ—'જો ઇણદ્દે સમદ્દે' નાયમર્થઃ સમર્થઃ । એતે તેનૈવ ભવગ્રહણેન ન સિદ્ધયન્તિ આત્માડયશસ્કત્વેન તદ્ભાવમોક્ષાડપદ્ભાવાત્ । 'વાણમંતર જોહસિયવેમાણિયા જહા નેરહ્યા' વાનવ્યન્તર જ્યોતિષ્ક વૈમાનિકા યથા નૈરયિકાઃ નૈરયિકવદેવ એતેષામપિ તિર્યગ્મનુષ્યાભ્યામાગત્યોત્પત્તિરિત્યાદિકં સર્વં જ્ઞાતવ્યમિતિ । 'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ત્તિ' તદેવં

સક્રિયા નો અક્રિયા' હેઘૌતમ ! વે સક્રિય હોતે હૈં અક્રિય નહીં હોતે હૈં । 'જહ સક્રિયા તેજેવ ભવગ્રહણેણં સિજ્ઞન્તિ, જાવ અંતં કરેતિ' યદિ વે સક્રિય હોતે હૈં તો કયા વે ઉછી ભવ સે સિદ્ધ હોતે હૈં યાવત્ સમસ્ત દુઃખોં કા અન્ત કરતે હૈં ? 'જો ઇણદ્દે સમદ્દે' હે ઘૌતમ ! યહ અર્થ સમર્થિત નહીં હુઆ હૈં । કયોંકિ આત્મ અસંયમવાલે હોને સે વે તદ્ભવ મોક્ષગામી નહીં હોતે હૈં । 'વાણમંતર જોહસિય વેમાણિયા જહા નેરહ્યા' વાનવ્યન્તર, જ્યોતિષ્ક ઓર વૈમાનિક હન કે સમ્બન્ધ મેં મી નૈરયિકોં કે જૈસા હી કથન જાનનાં ચાહિયે । હનકી મી ઉત્પત્તિ તિર્યગ્ચોનિક જીવોં મેં સે ઓર મનુષ્યોં મેં સે આયે હુએ જીવોં સે હોતી હૈં । અર્થાત મનુષ્ય ગતિ સે ઓર તિર્યગ્ગતિસે આયે હુએ જીવ હી વાનવ્યન્તરાદિ રૂપ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં । હત્યાદિ સબ કથન નૈરયિકોં કે જૈસા હી જાનનાં ચાહિયે । 'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' હે મદન્ત જૈસા આપને યહ કહા હૈં વહ સબ સર્વથા સત્ય હી હૈં ૨ । હસ પ્રકાર કહકર ઘૌતમને

હોય છે. ક્રિયા વિનાના હોતા નથી. 'જહ સક્રિયા તેજેવ ભવગ્રહણેણ સિજ્ઞન્તિ, જાવ અંતં કરેતિ' જો તેઓ ક્રિયા સહિત હોય છે ? તો શું તેઓ જોજી ભવમાં સિદ્ધ થાય છે ? યાવત્ સઘણા દુઃખોનો અંત કરે છે ? જો ઇણદ્દે સમદ્દે' હે ઘૌતમ ! આ અર્થ બરોબર નથી. કેમકે—આત્મ સંયમવાળા હોવાથી તેઓ જોજી ભવમાં મોક્ષ પ્રાપ્ત કરવાવાળા હોતા નથી 'વાણમંતર જોહસિય વેમાણિયા જહા નેરહ્યા' વાનવ્યન્તર, જ્યોતિષ્ક અને વૈમાનિકોના સંબંધમાં પણ નૈરયિકોના કથન પ્રમાણે જ કથન સમજવું. તેઓની ઉત્પત્તિ પણ તિર્યગ્ચોનિવાળા જીવોમાંથી અને મનુષ્યોમાંથી આવેલા જીવોમાંથી થાય છે. અર્થાત્ મનુષ્યગતિથી અને તિર્યગ્ચગતિથી આવેલા જીવો જ વાનવ્યન્તર વિગેરે પણાથી ઉત્પન્ન થાય છે. વિગેરે તમામ કથન નૈરયિકોના કથન પ્રમાણે જ સમજવું.

'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે કથન કર્યું છે, તે સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘણું

भदन्त ! तदेवं भदन्त इति । हे भदन्त ! राशियुग्म कृतयुग्म नारकादिवैमानिकान्त
जीवानामुत्पादादि विषये यत् कथितं देवानुप्रियेण तत्सर्वं सत्यमेवेति कथ-
यित्वा गौतमो यावद्विहरतीति ॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्बल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
कलितकलितकलापाळापरुप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक-श्रीशाहूञ्जपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित—कोल्हापुरराजगुरु-
बालब्रह्मचारि — जैनाचार्य — जैनधर्मदिवाकर
— पूज्यश्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री “भग-
वतीसूत्रस्य ” प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायां एकचत्वारिंशत्तमे राशि
युग्मशतके प्रथमोद्देशकः
समाप्तः ॥४१।१।१॥

प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर
फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान
पर विराजमान हो गये ।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
“भगवतीसूत्र” की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके एकतालीसवें शतक के
राशियुग्म शतक में प्रथम उद्देशक समाप्त ॥४१-१॥

कथन सर्वथा सत्य न छे. आ प्रभावे कहीने गौतमस्वामीओ प्रभुश्रीने वन्दना
करी नमस्कार कया वन्दना नमस्कार करीने ते पश्री संयम अने तपशी पोताना
आत्माने लावित करता थका पोताना स्थान पर गिराजमान थया. ॥सू०१॥
जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराजकृत ‘भगवतीसूत्र’नी
प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याना ओकतालीसमां शतकमां राशियुग्मशतकने
पडेले उद्देशे समाप्त ॥४१-१॥



॥ ‘અહ વીઓ ઉદેસો’ ॥

મૂલ્ય-રાસિજુમ્મ તેઓગનેરહયાણં મંતે ! કઓ ઉવવ-
જંતિ એવં ચેવ ઉદેસો આણિયવ્વો । નવરં પરિમાણં તિન્નિ વા
સત્ત વા પંચદસ વા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા ઉવવજ્જંતિ ।
સંતરં તહેવ । તે ણં મંતે ! જીવા જં સમયં તેઓગા તં સમયં
કહજુમ્મા જં સમયં કહજુમ્મા તં સમયં તેઓગા ? ણો ઇણટ્ટે
સમટ્ટે । જં સમયં તેઓગા તં સમયં દાવરજુમ્મા જં સમયં દાવર-
જુમ્મા તં સમયં તેઓગા ? ણો ઇણટ્ટે સમટ્ટે । એવં કલિઓગેણ
વિ સસં સેસં તં ચેવ જાવ વેમાણિયા । નવરં ઉવવાઓ સવ્વેસિં
જહા વહંતીણ । સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ ॥૪૧-૨॥

॥ વીઓ ઉદેસો સમત્તો ॥

છાયા—રાશિયુગ્મ ટ્રયોજ નૈરયિકાઃ સ્વલ્પ મદન્ત । કુત ઉત્પદ્યન્તે એવમેવ
ઉદેશો મણિતવ્યઃ । નવરં પરિમાણં ત્રયો વા, સપ્ત વા, એકાદશ વા, પશ્ચદશ વા,
સંખ્યાતા વા, અસંખ્યાતાવોત્પદ્યન્તે । સાન્તરં તથૈવ । તે સ્વલ્પ મદન્ત । જીવાઃ
યસ્મિન્ સમયે ટ્રયોજા સ્તસ્મિન્ સમયે કૃતયુગ્માઃ યસ્મિન્ સમયે કૃતયુગ્મા
સ્તસ્મિન્ સમયે ટ્રયોજાઃ નાયમર્થઃ સમર્થઃ । યસ્મિન્ સમયે ટ્રયોજા સ્તસ્મિન્
સમયે દ્વાપરયુગ્માઃ યસ્મિન્ સમયે દ્વાપરયુગ્મા સ્તસ્મિન્ સમયે ટ્રયોજાઃ નાયમર્થઃ
સમર્થઃ । એવં કલ્યોજેનાપિ સમમ્, શેપં તદેવ યાવદ્દૈમાનિકાઃ । નવરમુપપાતઃ
સર્વેપાં યથા વ્યુત્ક્રાન્તૌ । તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ ॥

॥ દ્વિતીયોદેશકઃ સમાપ્તઃ ॥૪૦॥૨॥

ટીકા—‘રાસિજુમ્મ તેઓગ નેરહયાણં મંતે । કઓ ઉવવજ્જંતિ’ રાશિયુગ્મ-
ટ્રયોજ નૈરયિકાઃ સ્વલ્પ મદન્ત । કુત ઉત્પદ્યન્તે કિં નૈરયિકેભ્યો યાવદ્દેવેભ્યો વેતિ

શતક ૪૧ ઉદેશક ૨

‘રાસિજુમ્મ તેઓગનેરહયાણં મંતે । કઓ ઉવવજ્જંતિ’ હે મદન્ત !
રાશિયુગ્મ ટ્રયોજ નૈરયિક કિસ સ્થાન વિશેષ સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે

બીજા ઉદેશાનો પ્રારંભ—

‘રાસિજુમ્મ તેઓગ નેરહયાણં મંતે । કઓ ઉવવજ્જંતિ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ રાશિયુક્ત ટ્રયોજ નૈરયિક કયા સ્થાન વિશેષથી
આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ?

પ્રશ્નઃ, ઉત્તરમાહ—‘एवं चेव उद्देशओ भाणियव्वो’ एवमेव प्रथमोद्देशकवदेव द्वितीयो-
द्देशकोऽपि भणितव्यः । प्रथमोद्देशके यथा यथा कथितं तत्सर्वमिहापि तथैव वक्तुं
व्यमिति । प्रथमोद्देशकापेक्षया द्वितीये वैलक्षण्यं दर्शयति—‘नवरं’ इत्यादि, ‘नवरं
परिमाणं तिन्नि वा सत्त वा एकारस वा पंचदस वा संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा
उववज्जंति’ नवरं परिमाणं त्रयो वा सप्त वा एकादश वा, पञ्चदश वा, संख्याता
वा असंख्यातावोत्पद्यन्ते इति । ‘संतरं तहेव’ सान्तरमुत्पद्यन्ते निरन्तरं वोत्पद्यन्ते
इत्यस्योत्तरं प्रथमोद्देशकवदेव ज्ञातव्यमिति । ‘तेणं भंते ! जीवा’ ते खलु भदन्त !
राशियुग્म ञ्चो ज जीवाः ‘जं समयं तेओगा तं समयं कडजुम्मा’ यस्मिन्

હે ? કયા વે નૈરયિકોં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હે ? અથવા યાવત્તુ
દેવોં મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હે ? ‘एवं चेव उद्देशओ भाणिय-
व्वो’ હે ગૌતમ ! હસ સમ્બન્ધ મેં જેસા પ્રથમ ઉદ્દેશક કહા ગયા હે ઉસી
પ્રકાર સે યહ દ્વિતીય ઉદ્દેશક ભી કહ લેના ચાહિયે । પરન્તુ ઉસકી
અપેક્ષા જો યહાં ભિન્નતા હે વહ ‘नवरं परिमाणं तिन्नि वा सत्त वा
एकारस वा पंचदस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति’ હસ સૂત્ર
પાઠ દ્વારા પ્રકટ કી ગઈ હૈ—હનસે યહ પ્રકટ કિયા ગયા હૈ કિ
રાશિયુગ્મ નૈરયિક એક સમય મેં ત્રીન, અથવા સાત અથવા ગ્યારહ
અથવા પન્દ્રહ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત ઉત્પન્ન હોતે હે ।
‘संतरं तहेव’ યે નારક સાન્તર ઉત્પન્ન હોતે હે અથવા નિરન્તર ઉત્પન્ન
હોતે હે ? હસ સમ્બન્ધ મેં ઉત્તર પ્રથમ ઉદ્દેશક મેં જેસા કહા ગયા હૈ

અથવા તિયં ચ્યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી
આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ
પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી જીતમસ્વામીને કહે છે કે—‘एवं चेव उद्देशओ भाणि-
यव्वो’ હે ગૌતમ ! આ સંબંધમાં પહેલા ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણેનું કથન કર-
વામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન આ બીજા ઉદ્દેશામાં પણ કહી લેવું
લેઈએ. પરંતુ પહેલા ઉદ્દેશાના કથન કરતાં આ ઉદ્દેશામાં જે ફેરફાર આવે
છે, તે ‘नवरं परिमाण तिन्नि वा सत्त वा एकारस वा पंचदस वा संखेज्जा वा
असंखेज्जा वा उववज्जंति’ આ સૂત્રપાઠ દ્વારા અહિયા પ્રગટ કરવામાં આવેલ
છે—આ સૂત્રપાઠથી એ બતાવેલ છે કે—રાશિયુગ્મ ઞ્ચોજ નૈરયિક એક
સમયમાં ત્રણ અથવા સાત અથવા અગિયાર અથવા પંદર અથવા
સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત ઉત્પન્ન થાય છે. ‘संतरं तहेव’ આ નારકા
સાંતર—અંતરસહિત પણ ઉત્પન્ન થાય છે અને નિરંતર પણ ઉત્પન્ન થાય છે,
આ વિષય સંબંધી ઉત્તર પહેલા ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે જ છે. ‘ते ण’

સમયે ડ્યોજા સ્તસ્મિન્ સમયે કૃતયુગ્માઃ 'જં સમયં કલ્પજુમ્મા તં સમયં તેઓગા' યસ્મિન્ સમયે કૃતયુગ્માઃ તસ્મિન્ સમયે ડ્યોજાઃ કિંચિત્તિ પ્રશ્નઃ, ઉત્તરમાદ- 'નો ઇણદ્દે સમદ્દે' નાયમર્થઃ સમર્થઃ યસ્મિન્ સમયે ડ્યોજાઃ ન તસ્મિન્ સમયે કૃતયુગ્માઃ તથા યદા કૃતયુગ્મા સ્તદા ન ડ્યોજા ઇતિ ભાવઃ । 'જં સમયં તેઓગા તં સમયં દાવરજુમ્મા જં સમયં દાવરજુમ્મા તં સમયં તેઓગા' યસ્મિન્ સમયે ડ્યોજાઃ તસ્મિન્ સમયે દ્વાપરયુગ્માઃ યસ્મિન્ સમયે દ્વાપરયુગ્મા સ્તસ્મિન્ સમયે ડ્યોજાઃ,

વૈસા હી હૈ । 'તે જાં મંતે ! જીવા જં સમયં તેઓગા તં સમયં કલ્પજુમ્મા' હે મદન્ત । યે રાશિયુગ્મ ડ્યોજ જીવ જિમ સમય ડ્યોજ રાશિપ્રમાણ હોતે હૈં' ઉસ સમય મેં વે કયા કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ હો જાતે હૈં ? 'જં સમયં કલ્પજુમ્મા તં સમયં તેઓગા' ઓર જિસ સમય યે કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ હોતે હૈં' ઉસ સમય કયા વે ડ્યોજ રાશિપ્રમાણ હો જાતે હૈં' ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં- 'જો ઇણદ્દે સમદ્દે' હે ગૌતમ । યહ અર્થ સમર્થ નહીં હૈ । અર્થાત્ જિસ સમય યે ડ્યોજરાશિપ્રમાણ હોતે હૈં' ઉસ સમય મેં યે કૃતયુગ્મ રાશિ રુપ નહીં હોતે હૈં' તથા જવ યે કૃતયુગ્મ રાશિરુપ હોતે હૈં, તવ વે ડ્યોજ રાશિરુપ નહીં હોતે હૈં । 'જં સમયં તેઓગા તં સમયં' હે મદન્ત । યે જીવ જિસ સમય ડ્યોજરાશિરુપ હોતે હૈં' તવ કયા યે ઉસ સમય 'દાવરજુમ્મા' દ્વાપરયુગ્મ રુપ હોતે હૈં ? ઓર જિસ સમય યે દ્વાપરયુગ્મ હોતે હૈં' ઉસ સમય કયા વે ડ્યોજરાશિ રુપ હો જાતે હૈં ?

મંતે ! જીવા જં સમયં તેઓગા તં સમયં કલ્પજુમ્મા' હે ભગવન્ આ રાશિયુગ્મ ડ્યોજ જીવ જિમ સમય ડ્યોજ રાશિપ્રમાણ હોય છે તે સમયે તેઓ શું કૃતયુગ્મરાશિ પ્રમાણવાળા થઈ જાય છે ? 'જં સમયં કલ્પજુમ્મા તં સમયં તેઓગા' અને જિસ સમયે તેઓ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણવાળા હોય છે, ત્યારે તેઓ ડ્યોજ રાશિરુપ થઈ જાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે- 'જો ઇણદ્દે સમદ્દે' હે ગૌતમ ! આ અર્થ બરાબર નથી. અર્થાત્ જિસ સમયે તેઓ ડ્યોજ રાશિરુપ હોય છે, ત્યારે તેઓ કૃતયુગ્મ રાશિરુપ હોતા નથી. તથા જિસ સમયે તેઓ કૃતયુગ્મ રાશિરુપ હોય છે, ત્યારે તેઓ ડ્યોજ રાશિરુપ હોતા નથી. 'જં સમયં તેઓગા તં સમયં' હે ભગવન્ આ જીવો જિસ સમયે તેઓ રાશિ પ્રમાણવાળા હોય છે, ત્યારે શું તેઓ 'દાવરજુમ્મા' દ્વાપરયુગ્મ રુપ હોય છે, અને જિસ સમયે તેઓ

भवन्ति किमिति प्रश्नाः, उत्तरमाह—‘णो इण्टे समट्टे’ नायमर्थः समर्थः ‘एवं कलि ओगेण वि समं’ एवमेव कल्योजेनापि सह प्रश्नं कृत्वा उत्तरणीयम् इति । ‘सेसं तं चेव जाव वेमाणिआ’ अपेक्षं तदेव यावद्वैमानिकाः ते खलु भदन्त ! जीवाः कुत उत्पद्यन्ते ? इत्यारब्ध वेमानिकपर्यन्तं प्रथमोद्देशकवदेव ज्ञातव्यमिति । ‘नवरं उववाओ सव्वेसिं जहा वक्कंतीए’ नवरमुपपातः सर्वेषां यथा व्युत्क्रान्ती प्रज्ञापनायाः एण्ठे पदे कथित इत्येवेहापि ज्ञातव्य इति । ‘सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति’ तदेवं भदन्त ! तदेन भदन्त ! इति ।

इति श्री - विश्वरिख्यातजगद्गुरुभादिपदभूषितवाक्यब्रह्मचारि - ‘जैनाचार्य’
पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां “श्री भगवतीसूत्रस्य” प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायां एतच्चत्वारिंशत्तमशतकस्य द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥४१॥

उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—‘णो इण्टे समट्टे’ हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है । ‘एवं कलिओगेणं वि समं’ इसी प्रकार से कल्योज के साथ भी प्रश्न करके उत्तर कह लेना चाहिये । ‘सेसं तं चेव जाव वेमाणिआ’ हे भदन्त ! ये जीव किन स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? यहां से लेकर वैमानिकों तक जैसा प्रथम उद्देशक में कहा गया है वैसा ही यहां पर भी कह लेना चाहिये । ‘नवरं उववाओ सव्वेसिं जहा वक्कंतीए’ परन्तु उपपात के विषय में जैसा कथन प्रज्ञापना के

દ્વાપરયુગ્મ રૂપ હોય છે, તે વળતે શું તેઓ યોગરાશિ પ્રમાણુ હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘ણો ઇણ્ટે સમટ્ટે’ હે ગૌતમ ! આ અર્થ બરાબર નથી. ‘એવં કલિઓગેણ વિ સમં’ આજ પ્રમાણે ઠલ્યોજ સંબંધમાં પણ પ્રશ્ન ઉપસ્થિત કરીને તેનો ઉત્તર કહેવો જોઈએ. ‘સેસં તં ચેવ જાવ વેમાણિઆ’ હે ભગવન્ આ જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નથી લઈને વૈમાનિકો સુધી પહોંચતા ઉદ્દેશમાં જે પ્રમાણુ કહેલ છે. એજ પ્રમાણુ અહિયાં પણ કહેવું જોઈએ. ‘નવરં’ ઉવવાઓ સવ્વેસિં જહા વક્કંતીએ’ પરંતુ ઉપપાતના સંબંધમાં પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના છટ્ટા વ્યુત્ક્રાંતિ પદમાં જે પ્રમાણુનું કથન કરવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણુનું કથન મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે. એ પ્રમાણુ સમજવું જોઈએ.

‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે પ્રમાણુનું કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે જે ભગવન્,
મ૦ ૨૧

छट्टे व्युत्क्रान्ति पद में किया है वैसा ही यहां पर भी कर लेना चाहिये।
‘खेवं भंते ! खेवं भंते ! त्ति’ इन पदों का अर्थ पूर्व में जैसा कहा गया
है वैसा ही जानना चाहिये।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
“भगवतीसूत्र” की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके एकतालीसवें शतक का
द्वितीय उद्देशक समाप्त ॥४१-२॥

આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા જ સત્ય છે. આ પ્રમાણે કહીને
ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર
કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા
પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ.૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર શ્રી પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત ‘ભગવતીસૂત્ર’ની
પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના એકતાલીસમા શતકનો બીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૪૧-૨॥



॥ ‘અહ તદ્ઓ ઉદ્દેસો’ ॥

મૂલમ—રાસિજુમ્મ દાવરજુમ્મ નેરહયાણં ભંતે ! કઓ ઉવવ-
જ્જંતિ ? એવં ચેવ ઉદ્દેસઓ । નવરં પરિમાણં દો વા છ વા દસ
વા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા ઉવવજ્જંતિ સંવેહો । તે ણં ભંતે !
જીવા જં સમયં દાવરજુમ્મા તં સમયં કહજુમ્મા જં સમયં કહ-
જુમ્મા તં સમયં દાવરજુમ્મા ? ણો ઇણટ્ટે સમટ્ટે । એવં તેઓણ
વિ સમં, એવં કલિઓગેણ વિ સમં । સેસં જહા પઢમે ઉદ્દેસણ
જાવ વેમાણિયા । સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ ।

॥ તદ્ઓ ઉદ્દેસો સમત્તો ॥૪૧-૩॥

છાયા—રાશિયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ નૈરયિકાઃ સ્વલુ ભદન્ત ! કુત ઉત્પચન્તે એવ-
મેવોદેશકઃ । નવરં પરિમાણં દ્વૌ વા પઙ્ક વા દશ વા સંખ્યાતા વા, અસંખ્યાતા-
વોત્પચન્તે સંવેદ્યઃ । તે સ્વલુ ભદન્ત ! જીવાઃ યસ્મિન્ સમયે દ્વાપરયુગ્માઃ તસ્મિન્
સમયે કૃતયુગ્માઃ યસ્મિન્ સમયે કૃતયુગ્મા સ્તસ્મિન્ સમયે દ્વાપરયુગ્માઃ ? નાય-
મર્થઃ સમર્થઃ । એવં ત્રયોજેનાપિ સમમ્, એવં કલ્પોજેનાપિ સમમ્ । શેષં યથા
પ્રથમોદેશકે યાવદ્વૈમાનિકાઃ । તદેવં ભદન્ત ! તદેવં ભદન્ત ! ઇતિ ॥૧

॥ તૃતીયોદેશકઃ સમાપ્તઃ ॥૪૧-૩॥

ટીકા—‘રાસિજુમ્મ દાવરજુમ્મ નેરહયાણં ભંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ રાશિ-
યુગ્મ દ્વાપરયુગ્મનૈરયિકાઃ સ્વલુ ભદન્ત ! કુત ઉત્પચન્તે ? કિં નૈરયિકેભ્યો
યાવદેવેભ્યો વેતિ પ્રશ્નઃ, ઉત્તરમાહ—‘એવં ચેવ ઉદ્દેસઓ’ એવમેવોદેશકો યયા

શતક ૪૧ ઉદ્દેશક ૩

‘રાસિજુમ્મ દાવરજુમ્મ નેરહયાણં ભંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ ઇત્યાદિ
ટીકાર્થ—હે ભદન્ત ! રાશિયુગ્મ સ્વે દ્વાપરયુગ્મ રાશિપ્રમાણ નૈરયિક
કિસ સ્થાન વિશેષ સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈ ? કયા વે નૈરયિકો
મેં સે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હૈ ? અથવા યાવત્ દેવોં મેં સે આકર

ત્રીભ ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

‘રાસિજુમ્મ દાવરજુમ્મ નેરહયાણં ભંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ રાશિયુગ્મમાં દ્વાપરયુગ્મ રાશિપ્રમાણુવાળા નૈરયિકો
કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને
ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યચોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા

પ્રથમોદ્દેશકઃ તથૈવ તૃતીયોદ્દેશકોઽપિ જ્ઞાતવ્ય इति । 'નવરં પરિમાણં દ્વો વા છ વા દસ વા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા ઉવવ્વજ્જંતિ' 'નવરં પરિમાણં દ્વો વા પદ્ વા દશ વા સંખ્યાતા વા અસંખ્યાતા વા ઉત્પચ્ચન્તે' એવા પ્રથમોદ્દેશકા-
પેક્ષયેતિ । 'સંવેહો' સંવેધઃ, સંવેધોઽપ્યત્ર વાચ્યઃ । 'તેજં મંતે ! જીવા' તે સ્વલુ
મદન્ત ! જીવા રાશિયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ નૈરયિકાઃ 'જં સમયં દાવરજુમ્મા તં સમયં
કહજુમ્મા' યસ્મિન્ સમયે દ્વાપરયુગ્મા સ્તસ્મિન્ સમયે કૃતયુગ્માઃ 'જં સમયં કહ-
જુમ્મા તં સમયં દાવરજુમ્મા' યસ્મિન્ સમયે કૃતયુગ્મા સ્તસ્મિન્ સમયે દ્વાપરયુગ્મા
કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રશ્નશ્રી કહતે હૈં—'એવં ચેવં ઉદેસઓ' હે
ગૌતમ ! હસ સમ્બન્ધ મેં પ્રથમ ઉદેશક કે જેણા હી કથન જામના ચાહિયે
'નવરં પરિમાણં' દ્વો વા છ વા દસ વા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા ઉવવ-
જ્જંતિ' પરન્તુ પરિમાણ પ્રકરણ મેં યહાં એસા હી કહનાં ચાહિયે કિં યે નૈર-
યિક એક સાથ મેં દ્વો ઉત્પન્ન હોતે હૈં અથવા છ હ ઉત્પન્ન હોતે હૈં, અથવા
દસ ઉત્પન્ન હોતે હૈં, અથવા સંખ્યાત ઉત્પન્ન હોતે હૈં, અથવા અસંખ્યાત
ઉત્પન્ન હોતે હૈં । વસ યહી એક વિશેષતા પ્રથમ ઉદેશક કી અપેક્ષા
હસ તૃતીય ઉદેશક મેં હૈં । 'સંવેહો' યહાં સંવેધ ણી વાચ્ય હૈં । 'તેજં
મંતે ! જીવા' હે મદન્ત ! યે રાશિયુગ્મ મેં દ્વાપરયુગ્મ રાશિપ્રમિત
નૈરયિક 'જં સમયં દાવરજુમ્મા' જિસ સમય મેં દ્વાપરયુગ્મ હોતે હૈં
ઉસ સમય મેં કયા યે કૃતયુગ્મ રૂપ હો જાતે હૈં ? 'જં સમયં કહજુમ્મા
તં સમયં દાવરજુમ્મા' ઓર જિસ સમય મેં યે કૃતયુગ્મ રૂપ હોતે હૈં
ઉસ સમય મેં કયા યે દ્વાપરયુગ્મ રૂપ હો જાતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રશ્નશ્રી

મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન
ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રશ્નશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે
છે કે—'એવં ચેવં ઉદેસઓ' હે ગૌતમ ! આ વિષયના સંબંધમાં પહેલા
ઉદેશમાં કહ્યા પ્રમાણેનું સઘળું કથન સમજવું 'નવરં પરિમાણં દ્વો વા છ વા
દસ વા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા ઉવવ્વજ્જંતિ' પરન્તુ પરિમાણના સંબંધમાં
અહિયાં એવું કહેવું જોઈએ કે આ નૈરયિકો એટલી સાથે જે
ઉત્પન્ન થાય છે. અથવા છ ઉત્પન્ન થાય છે. અથવા દસ ઉત્પન્ન થાય છે,
અથવા સંખ્યાત ઉત્પન્ન થાય છે, અથવા અસંખ્યાત કેવળ એજ વિશેષપણ
પહેલા ઉદેશના કથન કરતાં આ ત્રીજા ઉદેશમાં છે. 'સંવેહો' અહિયાં
સંવેધ પણ કહેલ છે, 'તેજં મંતે ! જીવા' હે ભગવન્ આ રાશિયુગ્મમાં દ્વાપર
યુગ્મ રાશિ પ્રમાણવાળા નૈરયિકો 'જં સમયં દાવરજુમ્મા' જે સમયે દ્વાપર
યુગ્મ હોય છે, તે સમયે શું તેજો કૃતયુગ્મ થઈ જાય છે ? 'જં સમયં
કહજુમ્મા તં સમયં દાવરજુમ્મા' અને જ્યારે તેજો કૃતયુગ્મ રૂપ

भवन्ति किमिति प्रश्नः, उत्तरमाह—‘णो इण्डे समेटे’ नायमर्थः समर्थः । ‘एव तेओ-
एण वि समं एवं कलिओगेण वि समं’ एवमेव व्योजेनापि समम्, एवमेव कल्यो-
जेनापि समं प्रश्न कृता उत्तरणीयमिति । ‘सेसं जहा पढमुदेसए जाव वेमाणिया’
शेषं परिमाणान्तिरिक्तं सर्वं यथा प्रथमोद्देशके वैमानिकान्त पर्यन्तं कथितं तथैवा-
त्रापि ज्ञातव्यम् । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति’ तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥

इति श्री-विश्वविख्यातजगद्बल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि — ‘जैनाचार्य’
पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां “श्री भगवतीसूत्रस्य” प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायां एकचत्वारिंशत्तमे राशियुगमशतके तृतीयोद्देशकः समाप्तः ॥४२॥३॥

કહેતે હેં । ‘ણો ઇણડે સમઢે’ હે ગૌતમ ! યહ અર્થ સમર્થ નહીં હૈ ।
‘એવં તેઓણ વિ સમં એવ કલિઓગેણ વિ સમં’ હસી પ્રકાર સે
વ્યોજ કે સાથ સી ઓર હસી પ્રકાર સે કલ્યોજ કે સાથ સી પ્રશ્ન
કરકે ઉત્તર કહ લેના ચાહિયે । ‘સેસં જહા પઢમુદેસએ જાવ વેમાણિયા’
પરિમાણ કે અતિરિક્ત ઓર સર્વ કથન પ્રથમોદ્દેશક મેં જૈસા વૈમાનિકો
તક કહા ગયા હૈ વેસા હી યહાં પર કહ લેના ચાહિયે । ‘સેવં ભંતે !
સેવં ભંતે ! ત્તિ’ હન પદો પ્તા અર્થ પૂર્વોક્ત જૈસા હી હૈ ।

॥૪૧ વેં રાશિયુગ્મ શતક મેં તૃતીય ઉદ્દેશક સમાપ્ત ૪૧-૩॥

હોય છે, ત્યારે શું તેઓ દ્વાપરયુગ્મ રૂપ હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં
પ્રભુશ્રી કહે છે કે-હે ગૌતમ ! આ અર્થ બરોબર નથી, આજ રીતે વ્યોજની
સાથે પણ અને આજ રીતે કલ્યોજના સંબંધમાં પ્રશ્નો કરીને ઉત્તર વાક્યો
કહી લેવા લેઈએ. ‘સેસં જહા પઢમુદેસએ જાવ વેમાણિયા પરિમાણના કથન
શિવાય બાકીનું સઘળું કથન પહેલાં ઉદ્દેશમાં કહ્યા પ્રમાણે વૈમાનિકો સુધીના
કથન પર્યન્ત કહેલ છે એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ કહેવું લેઈએ

‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ આપ દેવાતુપ્રિયે આ વિષયમાં
જે પ્રમાણે કહેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્
આપ દેવાતુપ્રિયનું સઘળું કથન સત્ય જ છે આ પ્રમાણે કહીને
ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વદના નમસ્કાર
કરીને તે પછી સયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા
પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ॥૪૦૧॥

॥ત્રીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૪૧-૩॥

॥ 'अह चउत्थो उद्देसो' ॥

मूलम्—राशिजुम्भ कलिओग नेरइयाणं भंते ! कओ उवव-
ज्जंति एवं चेव । नवरं परिमाणं एक्को वा पंच वा नव वा
तेरस्स वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति । संवेहो । तेणं
भंते ! जीवा जं समयं कलिओगा तं समयं कडजुम्मा जं समयं
कडजुम्मा तं समयं कलिओगा ? णो इणट्ठे समट्ठे । एवं तेओगेण
वि समं दावरजुम्मेण वि समं । सेसं जहा पढमुद्देसए जाव
वेमाणिया । सेवं भंते ! सेवं भंते त्ति ॥

चउत्थो उद्देसो समत्तो ॥४१-४॥

छाया—राशियुग्म कल्योज नैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते एवमेव ।
नवरं परिमाणम् एको वा पञ्च वा नव वा त्रयोदश वा संख्याता वा असंख्याता-
वोत्पद्यन्ते । संवेधः । ते खलु भदन्त ! जीवाः यस्मिन् सभये कल्योजा स्तस्मिन्
समये कृतयुग्माः यस्मिन् समये कृतयुग्माः तस्मिन् समये कल्योजाः ? नायमर्थः
समर्थः । एवं त्र्योजेनापि समस्य, एवं द्वापरयुग्मेनापि समम् । शेषं यथा प्रथमो-
द्देशके यावद् वैमानिकाः । तदेव भदन्त ! तदेव भदन्त ! इति ॥ सू. २॥

॥ चतुर्थोद्देशकः समाप्तः ॥

टीका—'राशिजुम्भ कलिओग नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' राशियुग्म
कल्योजनैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावद्देवेभ्यो-
वेति प्रश्नः, उत्तरमाह—'एवं चेव' एवमेव यथा प्रथमोद्देशके कथितमत्रापि तथैव

। शतक ४१ चतुर्थ उद्देशकः ॥

'राशिजुम्भ कलिओग नेरइयाणं भंते कओ । उववज्जंति' इत्यादि
टीकार्थ—हे भदन्त राशियुग्म कल्योज राशिप्रमित नैरयिक किस
स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से
आकर के उत्पन्न होते हैं अथवा यावत् देवों में से आकर के उत्पन्न

येथा उद्देशानो प्रारंभ—

'राशिजुम्भ कलिओग नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' इत्यादि

टीकार्थ—हे भगवन् राशियुग्म कल्योज राशिप्रमाणवाणा नैरयिके क्या
स्थान विशेषથી आवीने उत्पन्न થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકેમાંથી આવીને
ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યચ્ચેાનિકેમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા
મનુષ્યેમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવેમાંથી આવીને ઉત્પન્ન

સર્વં જ્ઞાતવ્યમિતિ । 'નવરં પરિમાણં એકો વા પંચ વા નવ વા તેરસ વા સંખેજ્જા-
વા, અસંખેજ્જા વા ઉવવજ્જંતિ' નવરં પરિમાણમેકો વા ૫૨૩ વા નવ વા ત્રયોદશ
વા, સંખ્યાતા વા, અસંખ્યાતા વા, ઉત્પદ્યન્તે ઇતિ । 'સંવેદ્યો' સંવેધઃ કાયસંવેધો-
ઽપિ અત્ર વક્તવ્યઃ । 'તે ણં મંતે ! જીવા જં સમયં કલિઓગા તં સમયં કલ્પજુમ્મા
જં સમયં કલ્પજુમ્મા તં સમયં કલિઓગા' હે ભદન્ત ! તે રાશિયુગ્મ કલ્પોજ નારકા
યસ્મિન્ સમયે કલ્પોજાઃ કિં તસ્મિન્ સમયે કૃતયુગ્માઃ ? યસ્મિન્ સમયે કૃતયુગ્મા
સ્તસ્મિન્ સમયે કિં કલ્પોજાઃ સમ્ભવન્તીતિ પ્રશ્નઃ, ઉત્તરમાહ—'ણો ઇણદ્વે સમદ્વે'

હોતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં—'એવં ચેવ' હે ગૌતમ । જૈસા પ્રથમ
ઉદ્દેશક મેં કહા ગયા હૈં વૈસા હી સવ કથન હસ ઉદ્દેશક કે સમ્યન્ધ
મેં બી જાનના ચાહિયે । પરન્તુ પરિમાણ મેં યહાં ઉસ ઉદ્દેશક કી અપેક્ષા
મિન્નતા આતી હૈં જો 'નવરં પરિમાણં એકો વા પંચ વા નવ વા તેરસ
વા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા ઉવવજ્જંતિ' હસ સૂત્રપાઠ દ્વારા વતલાઈ
ગઈ હૈં—હસસે યહાં એકસમય મેં એક અથવા પાંચ, અથવા નૌ અથવા
તેરહ, અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત નૈરિક ઉત્પન્ન હોતે હૈં ।
'સંવેદ્યો' કાયસંવેધ બી યહાં પર વક્તવ્ય હૈં । 'તે ણં મંતે ! જીવા જં
સમયં કલિઓગા તં સમયં કલ્પજુમ્મા, જં સમયં કલ્પજુમ્મા તં સમયં
કલિઓગા' હે ભદન્ત । વે જીવ જિસ સમય કલ્પોજ રાશિપ્રમિત રહતે
હૈં ઉસ સમય કયા વે કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત હો જાતે હૈં ? ઔર જિસ
સમય વે કૃતયુગ્મરાશિપ્રમિત હોતે હૈં ઉસ સમય કયા વે કલ્પોજ રાશિ

થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'એવંચેવ' હે ગૌતમ ।
પહેલા ઉદ્દેશમાં જે પ્રમાણે કથન કરેલ છે, એજ પ્રમાણેનું સઘળું કથન
આ ઉદ્દેશમાં સંબંધમાં પણ સમજવું. પરંતુ પરિમાણમાં અહિંયાં તે ઉદ્દેશની
અપેક્ષાએ ભિન્નપણું આવે છે, જે 'નવરં પરિમાણં એકો વા પંચ વા નવ વા
તેરસ વા સંખેજ્જા વા અસંખેજ્જા વા ઉવવજ્જંતિ' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા કહેલ છે
તેથી અહિંયાં એક સમયમાં પાંચ અથવા નવ અથવા તેર અથવા સંખ્યાત
અથવા અસંખ્યાત નૈરયિકો ઉત્પન્ન થાય છે. 'સંવેદ્યો' કાયસંવેધ પણ
અહિંયાં કહેવો જોઈએ 'તેણં મંતે ! જીવા જં સમયં કલિઓગા તં સમયં
કલ્પજુમ્મા જં સમયં કલ્પજુમ્મા તં સમયં કલિઓગા' હે ભગવન્ તે છવેા જે
સમયે કલ્પોજ રાશિપ્રમાણવાળા હોય છે. તે સમયે શું કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ-
વાળા થઈ જાય છે ? અને જ્યારે જે સમયે કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણવાળા હોય
છે ત્યારે શું તેઓ કલ્પોજ રાશિપ્રમાણવાળા થઈ જાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં

નાયમર્થઃ સમર્થઃ । ‘એવં તેઓણ વિ સમં એવં દાવરજુમ્મેણ વિ સમં’ એવમેવ કુત-
યુગ્મવદેવ ડ્યોજેનાપિ સમં દ્વાવરયુગ્મેનાપિ ચ સમં પ્રશ્ન-કૃત્વા સમુત્તરણીયમિતિ ।
‘સેસં જહા પઢમુદેસણે જાવ વેમાણિયા’ શેષં કથિતાતિરિક્તં સર્વં તથૈવ જ્ઞાત-
વ્યમ્ યથા-પ્રથમોદ્દેશકે વૈમાનિકપર્યન્તં કથિતમિતિ । ‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે !
ત્તિ’ તદેવ ભદન્ત ! તદેવં ભદન્ત ! इति ॥૧

इति श्री - विश्वविख्यातजगद्बल्लभादिपदभूषितवाल्म्वहचारि - ‘जैनाचार्य’
पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां ‘श्री भगवतीसूत्रस्य’ प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायां एकचत्वारिंशत्तमे राशियुगमशतके चतुर्थोद्देशकः समाप्तः ॥४१॥४॥

પ્રમિત હો જાતે હૈં ? ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં-‘જો હજી સમઢે’ હે ગૌતમ ! યહ અર્થ સમર્થ નહીં હૈ । ‘એવં તેઓણ વિ સમં એવં દાવર-
જુમ્મેણ વિ સમં’ હસી પ્રકાર સે ડ્યોજ કે સાથે ઓર હસી પ્રકાર
સે દ્વાવર યુગ્મ કે સાથે ઓર પ્રશ્ન કરકે ઉત્તર કહ લેના ચાહિયે । ‘સેસં
જહા પઢમુદેસણે જાવ વેમાણિયા’ હસ કથન કે અતિરિક્ત ઓર સર્વ
કથન વૈમાનિકોં તક પ્રથમ ઉદ્દેશક મેં ક્રિયા હૈ વૈસા હી સર્વ યહાં પર
ઓ જાનના ચાહિયે । ‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ હન પદોં કા
અર્થ પૂર્વોક્ત જૈસા હી હૈ ।

॥૪૧ વેં શતક મેં રાશિયુગ્મશતક મેં યહ ચતુર્થ ઉદ્દેશક સમાપ્ત
હુઆ । ૪૧-૪॥

પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-‘જો હજી સમઢે’ હે ગૌતમ ! એ અર્થ
ખરોખર નથી. ‘એવં તેઓણ વિ સમં એવં’ દાવરજુમ્મેણ વિ સમં’ આજ
પ્રમાણે ટોળની સાથે અને આજ પ્રમાણે દ્વાવર યુગ્મની સાથે પણ પ્રશ્નોત્તરો
બનાવીને સમજી લેવા. ‘સેસં જહા પઢમુદેસણે જાવ વેમાણિયા’ આ કથન
શિવાય બાકીનું સઘળું કથન જે રીતે વૈમાનિકો સુધી પહોંચા ઉદ્દેશમાં કહેલ
છે. એજ પ્રમાણેનું સઘળું કથન અહિયાં પણ સમજવું.

‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં
જે પ્રમાણે કહ્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુ
પ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ
પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ
અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાનાસ્થાન પર બિરાજ-
માન થયા. ॥૪૧॥

॥ચોથો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૪૧-૪॥

॥ 'अह ५-८ उद्देसगा' ॥

पृष्ठ-कणहलेस्स रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते !
कओ उववज्जंति उववाओ धूमप्पभाए सेसं जहा पढमुद्देसए ।
असुरकुमाराणं तहेव, एवं जाव वाणभंतराणं । मणुहसाण वि
जहेव नेरइयाणं आयअजसं उवजीवंति । अलेस्सा अकिरिया
तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति एवं न भाणियच्चं । सेसं जहा
पढमुद्देसए । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥५१-५॥

कणहलेस्स तेओएहि वि एवं चेव उद्देसओ । सेवं भंते !
सेवं भंते ! त्ति ॥४१-६॥

कणहलेस्स दावरजुम्मेहिं एवं चेव उद्देसओ । सेवं भंते !
सेवं भंते ! त्ति ॥४१-७॥

कणहलेस्स कलिओएहि वि एवं चेव उद्देसओ । परिमाणं संवेहो
य जहा ओहिएसु उद्देसएसु । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥४१-८॥

॥ ५-८ उद्देसगा समत्ता ॥

छाया—कृष्णलेश्य राशियुग्म कृत्युग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्प-
द्यन्ते उपपातो धूमप्रभायां शेष यथा प्रथमोद्देशके । असुरकुमाराणां तथैव एवं
यावद्दानव्यन्तराणाम्, मनुष्याणानपि यथैव नैरयिकाणाम् आत्मायश उव
जीवन्ति । अलेश्याः अक्रियाः तेनैव भवग्रहणेन सिद्ध्यन्ति एवं न मणितव्यम् ।
शेषं यथा प्रथमोद्देशके । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥४१५॥

कृष्णलेश्य ऋषीरपि एवमेवोद्देशकः । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥४१६॥
कृष्णलेश्य द्वापरयुग्मैरेवमेवोद्देशकः । तदेवं भदन्त । तदेव भदन्त ! इति ॥४१७॥

कृष्णलेश्य कल्योर्जैरपि एवमेवोद्देशकः । परिमाणं संवेधश्च यथा औघिकेष्ट-
देशकेषु । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥४१८॥

॥ पञ्चमादारभ्याष्टमान्ता उद्देशकाः समाप्ताः ॥४१५।८॥

॥ शतक ४१ उद्देशक ५ से ८ तक ॥

‘कणहलेस्मरासिजुम्मकडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति’

पाथमा उद्देशाथी आह्वया सुधीना आर उद्देशानो प्रारंभ—

‘कणहलेस्म रासिजुम्म कडजुम्मनेरइयाण भंते । कओ उववज्जंति’ इत्यादि.

ટીકા—‘કળ્હેલેસ રાસિયુમ્મ કહજુમ્મ નેરડયા ણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ હે મદન્ત ! કળ્હેલેસરાશિયુમ્મકૃતયુમ્મ નૈરયિકાઃ કુતઃ સ્વત્પચન્તે કિં નૈરયિકેમ્મો યાવદેવેમ્મ્ય ઇતિ પ્રશ્નઃ, ઉત્તરમાહ—અતિદેશદ્વારેણ—‘ઉવવાઓ જહા’ ઇત્યાદિ, ‘ઉવવાઓ જહા ધૂમપ્પમાણ’ ઉપપાતો ધૂમપ્રમાનારકે ચેન પ્રકારેણ કથિત સ્તેનૈવ રૂપેણાત્રપિ જ્ઞાતવ્યઃ ‘સેસં જહા પઢમુદ્દેસણ’ શોમુપપાતાતિરિક્તં સર્વં યથા પ્રથમોદ્દેશકે કથિતં તથૈવ સર્વમત્રપિ જ્ઞાતવ્યમિતિ । ‘અસુરકુમારાણં તહેવ’ અસુરકુમારાણામપિ તથૈવ નારકચ્ચદેવ સર્વં જ્ઞાતવ્યમિતિ । ‘એવં જાવ વાળમંતરાણં’ એવમેવ નારકચ્ચદેવોપપાતાદિકં સર્વં યાવદ્ વાનવ્યન્તરાણામપિ જ્ઞાતવ્યમિતિ । ‘મણુસ્સાણ

ટીકાર્થ—હે મદન્ત ! રાશિયુમ્મ મેં કૃતયુમ્મ પ્રમાણ કળ્હેલેસ્યાવાલે નૈરયિક કિસ સ્થાનવિશેષ સ્થે આકર કે ઉત્પન્ન હોતે હેં ? ત્યાં વે નૈરયિક મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હેં અથવા યાવત્ દેવોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હેં ? અતિદેશ દ્વારા ઉત્તર મેં પ્રશુત્રી કહતેં હેં—‘ઉવવાઓ જહા ધૂમપ્પમાણ’ હે ગૌતમ ! જૈલા ઉપપાત કે સમ્બન્ધ મેં કથન ધૂમપ્રમાનારક મેં ક્રિયા જા ચુકા હેં વૈસા હી અહાં પર મી કર લેનાં ચાહિયે । ‘સેસં જહા પઢમુદ્દેસણ’ તથા ઉપપાત કે અતિરિક્ત ઓર સવ કથન પ્રથમ ઉદ્દેશક કે અનુમાર હી જાનનાં ચાહિયે । ‘અસુરકુમારાણં તહેવ’ તથા અસુરકુમારોં કે સમ્બન્ધ મેં મી નારક કે જૈસા હી કથન સમજનાં ચાહિયે । ‘એવં જાવ વાળમંતરાણં’ ઓર અહ કથન યાવત્ વાનવ્યન્તરોં તક નૈરયિકોં કે કથન જૈસા હી હેં એસા જ્ઞાત કરનાં ચાહિયે ।

ટીકાર્થ—હે લગવન્ રાશિયુમ્મમાં કૃતયુમ્મ પ્રમાણવાળા કળ્હેલેસ્યાવાળા નૈરયિકો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકો માંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્થંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નોના ઉત્તર અતિદેશ દ્વારા આપતાં પ્રશુત્રી કહે છે કે—‘ઉવવાઓ જહા ધૂમપ્પમાણ’ હે ગૌતમ ! ઉપપાતના સંબંધમાં કથન ધૂમપ્રમાનારકમાં કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન અહિયાં પણ કરી લેવું જોઈએ. ‘સેસં જહા પઢમુદ્દેસણ’ ઉપપાતના કથન શિવાય બાકીનું સમગ્ર કથન પડેલા ઉદ્દેશમાં કહ્યા પ્રમાણે જ સમજવું. ‘અસુરકુમારાણં મંતે ! તહેવ’ તથા અસુરકુમારોના સંબંધમાં પણ નારકના કથન પ્રમાણેનું જ કથન સમજવું જોઈએ. ‘એવં જાવ વાળમંતરાણં’ અને આ કથન યાવત્ વાનવ્યન્તરના કથન સુધી નૈરયિકોના કથન પ્રમાણે જ છે. તેમ સમજ લેવું.

વિ તદેવ જહા નેરહ્યાણં' મનુષ્યાણામપિ તથૈવ જ્ઞાતવ્યં તથૈવ નારકાણામુપપાતા
દિકં કથિતમિતિ । 'આય અજસં ઉવજીવંતિ' મનુષ્યા આત્મનઽયશઃ અસંયમમુપજીવ-
ન્તીતિ વિશેષો વક્તવ્યઃ । 'અલેસ્સા અકિરિયા તેણેવ ભવગ્ગહણેણ સિજ્ઞંતિ एवं
ન માણિયવ્વં' અલેશ્યા અક્રિયા સ્તેનૈવ મયગ્ગહણેણ સિદ્ધચન્તિ इत्येवमत्र कृष्णलेश्य-
પ્રકરણે નો મણિતવ્યં કૃષ્ણલેશ્યાનામલેશ્યત્વસ્યાઽક્રિયત્વસ્ય તદ્ભવસિદ્ધેશ્વાભાવા
દિતિ ભાવઃ । 'સેસં જહા પઢમુદેસણ' શેષં કથિતવ્યતિરિક્તં સર્વં યદ્યા પ્રથમો-
દેશકે કથિતં તથૈવાત્રાપિ જ્ઞાતવ્યમિતિ । 'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' તદેવં
મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! इति ॥૪૧॥૫

॥ પંચમોદેશકઃ સમાપ્તઃ ॥૪૧॥૫॥

'મણુસ્સાણ વિ તદેવ જહા નેરહ્યાણં' નારકોં કે જૈસે ઉપપાત આદિ
કહે ગયે હૈં વૈસે હી વે મનુષ્યોં કે મો જાનનાં ચાહિયે । 'આય અજસં
ઉવજીવંતિ' મનુષ્ય આત્મા કે પ્રસંયમ ના આશ્રય કરતે હૈં । 'અલેસ્સા
અકિરિયા તેણેવ ભવગ્ગહણેણ સિજ્ઞંતિ एवं ન માણિયવ્વં' યે લેશ્યા
રહિત હોતે હૈં ક્રિયા રહિત હોતે હૈં, ઊસી ભવ સે સિદ્ધ હોતે હૈં' યહ સ્વ
યહાં કૃષ્ણલેશ્ય કે પ્રકરણ મેં નહીં કરનાં ચાહિયે । ક્યોંકિ કૃષ્ણલેશ્યા-
વાલોં મેં અલેશ્યત્વ અક્રિયત્વ ઔર તદ્ભવસિદ્ધત્વ કા અભાવ રહતા
હે । 'સેસં જહા પઢમુદેસણ' વાકી કા ઔર સ્વ કથન પ્રથમ ઉદ્દેશક મેં
જૈસા કહા ગયા હે વૈસા હી હે એસા જાનનાં ચાહિયે । 'સેવં મંતે ! સેવં
મંતે ! ત્તિ' હન પદોં કા અર્થ જૈસા પહિલે કહા ગયા હે વૈસા હી હે ।

॥ પંચમ ઉદ્દેશક ત્યાગ સમાપ્ત હુઆ-૪૧-૫॥

'મણુસ્સાણ વિ તદેવ જહા નેરહ્યાણં' નારકોના સંબંધમાં જે પ્રમાણે ઉપપાત
વિગેરે કહેવામા આવેલ છે, એજ પ્રમાણે મનુષ્યોના સંબંધમાં પણ સમજવું
'આય અજસં' ઉવજીવંતિ' મનુષ્ય અસંયમ આત્માને આશ્રય કરીને ઉત્પન્ન
થાય છે 'અલેસ્સા અકિરિયા તેણેવ ભવગ્ગહણેણ સિજ્ઞંતિ एवं ન માણિયવ્વં' આ
લેશ્યા વિનાના હોય છે, ક્રિયાવિનાના હોય છે, એજ ભવમા સિદ્ધ થાય છે,
આ સઘણું કથન અહિયાં આ કૃષ્ણલેશ્યાના પ્રકરણનું ન કરેવું જોઈએ. કેમકે
-કૃષ્ણલેશ્યાવાગ્ગાઓમાં અલેશ્યાપણાને અક્રિયપણાને તદ્ભવસિદ્ધપણાને અભાવ
રહે છે. 'સેસં જહા પઢમુદેસણ' બીજીનું સઘણું કથન પહેલાં ઉદ્દેશમાં જે
પ્રમાણે કહેવામા આવેલ છે એજ પ્રમાણે સમજવું જોઈએ.

'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ આપન્ કથન સર્વથા સત્ય જ
વિગેરે પહેલા કહ્યા પ્રમાણે આ પદોના અર્થ સમજવો.

॥ પાંચમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ૪૧-૫॥

‘કળ્હલેસ્સ તેઓઈ વિ સમં એવં ચેવ ઉદેસઓ’ કળ્હલેશ્ય ંયોજૈરપિ
 એવમેવોદેશકો વાચ્યઃ । ‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે । ત્તિ’ ત્તદેવં ભદન્ત તદેવં
 ભદન્ત ! ઇતિ ॥૪૧૬॥

પષ્ઠં દેશકઃ સમાપ્તઃ ॥

‘કળ્હલેસ્સ દાવરજુમ્મેહિ એવં ચેવ ઉદેસઓ’ કળ્હલેશ્ય દ્વાપરયુગ્મૈરપિ એવમેવ
 પૂર્વવદેવ ઉદેશકો વક્તવ્યઃ । સર્વં પ્રથમોદેશકવદેવ જ્ઞાતવ્યમ્ । ‘સેવં ભંતે ! સેવં

‘કળ્હલેસ્સ તેઓઈ વિ સમં એવંચેવ ઉદેસઓ’ કળ્હલેશ્યાવાલે
 રાશિયુગ્મ પ્રમાણ નૈરયિકોં કે સમ્બન્ધ મેં મી હસી પ્રકાર સે ઉદેશક
 કહ લેના ચાહિયે । અતઃ પ્રથમ ઉદેશક કે જૈસા હી યહ ઉદેશક હૈ
 એસા જાનના ચાહિયે । ‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ હે ભદન્ત ! જૈસા
 આપને યહ કહા હૈ વહ સર્વથા સત્ય પ્રમાણ હૈ ૨ । હસ પ્રકાર કહકર
 ગૌતમને પ્રભુશ્રી કો વન્દના ઔર નસસ્કાર ક્રિયા વન્દના નમસ્કાર કર
 ફિર વે સંયમ ઔર તપ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુએ અપને
 સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે ।

છઠ્ઠા ઉદેશક સમાપ્ત હુઆ ૪૧-૬॥

‘કળ્હલેસ્સ દાવરજુમ્મેહિ એવં ચેવ ઉદેસઓ’ ઇત્યાદિ ।
 કળ્હલેશ્યાવાલે દ્વાપરયુગ્મ પ્રમિત નૈરયિકોં કે સમ્બન્ધ મેં મી

છઠ્ઠા ઉદેશાનો પ્રારંભ—

‘કળ્હલેસ્સ તેઓઈ વિ સમં એવં ચેવ ઉદેસઓ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—કળ્હલેશ્યાવાળા રાશિયુગ્મમાં ંયોજયુગ્મ પ્રમાણવાળા નૈરયિકો
 ના સંબંધમાં પણ આજ પ્રમણેના ઉદેશાઓ કહેવા જોઈએ.

‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ સંબંધમાં
 જે પ્રમાણે કથન કરેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્
 આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને
 ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર
 કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા
 પોતાના સ્થાનપર બિરાજમાન થયા.

॥છઠ્ઠો ઉદેશો સમાપ્ત ॥૪૧-૬॥

॥સાતમા ઉદેશાનો પ્રારંભ—

‘કળ્હલેસ્સ દાવરજુમ્મેહિ એવં ચેવ ઉદેસઓ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—કળ્હલેશ્યાવાળા દ્વાપરયુગ્મ પ્રમાણવાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં

મંતે ! ત્તિ' તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ઇતિ ॥૪૧૭॥

॥ સપ્તમોદેશકઃ સમાપ્તઃ ॥

‘કળહલેસ્ત કલિઓઈ વિ એવં ચેવ ઉદેસઓ’ કૃષ્ણલેશ્ય કલ્પોજનારકૈ-
રપિ એવમેવ-પૂર્વવદેવ ઉદેશકો વક્તવ્યઃ । ‘પરિમાણં સંવેહો ય જહા ઓહિણ્સુ
ઉદેસણ્સુ’ પરિમાણ કાયસંવેદ્યશ્ચ ઔધિકેષૂદેશકેષુ કથિત સ્તથૈવાત્રાપિ જ્ઞાતવ્યઃ
‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ તદેવં મદન્ત તદેવં મદન્ત ! ઇતિ ॥૪૧૮॥

અષ્ટમોદેશકઃ સમાપ્તઃ ॥

હસી પ્રકાર સે ઉદેશક કહ લેના ચાહિયે । તાત્પર્ય યહી હૈ કિ યહાં સવ
કથન પ્રથમ ઉદેશક કે જૈસા હી હૈ એસા જાનના ચાહિયે । ‘સેવં
મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હન પદોં કી વ્યાખ્યા પહિલે કી ગઈ વ્યાખ્યા
જૈસી હી હૈ । સસમ ઉદેશક સમાપ્ત હુઆ-૪૧-૭॥

‘કળહલેસ્ત કલિઓઈ વિ એવં ચેવ ઉદેસઓ’ ઇત્યાદિ ।

‘કલ્પોજ રાશિપ્રમાણ કૃષ્ણલેશ્યાવાલે નૈરયિકોં કે સમ્બન્ધ મેં મી
પૂર્વ કે જૈસે હી ઉદેશક કહ લેના ચાહિયે । ‘પરિમાણં સંવેહો ય જહા
ઓહિણ્સુ ઉદેસણ્સુ’ પરિમાણ ઓર કાયસંવેદ્ય જૈસા ઔધિક ઉદેશકોં
મેં કહા ગયા હૈ વૈસા હી યહાં પર મી કહ લેના ચાહિયે । ‘સેવં મંતે !

પણ આજ પ્રમાણે ઉદેશાઓ કહેવા લેઈએ કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-
આ વિષયમાં સઘળું કથન પહેલા ઉદેશાના કથન પ્રમાણે જ છે.

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં
જે કથન કરેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે, હે ભગવન આપ દેવાનુ
પ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે, આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ
પ્રભુશ્રીને વદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી
સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન
પર ણિગજમાન થયા.

॥સાતમો ઉદેશો સમાપ્ત ॥૪૧-૭॥

‘કળહલેસ્ત કલિઓઈ વિ એવં ચેવ ઉદેસઓ’ ઇત્ય દિ

ટીકાથ—કલ્પોજ રાશિપ્રમાણ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નૈરયિકેના સંબંધમાં
પણ પહેલાના કથન પ્રમાણેના ઉદેશકો કહેવા લેઈએ, ‘પરિમાણ સંવેહો ય
જહા ઓહિણ્સુ ઉદેસણ્સુ’ પરિમાણ અને કાયસંવેદ્ય જે પ્રમાણે ઔધિક
ઉદેશમાં કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે અહીંયા પણ કહી લેવા, લેઈએ,

॥ 'અહ ૯-૧૨ ઉદેશગા' ॥

મૂલ્ય-જહા કળહલેસ્સેહિં એવં નીલલેસ્સેહિં વિ ચત્તારિ ઉદેસગા માણિયવ્વા નિરવસેસા । નવરં ઉવવાઓ નેરહયાણં જહા વાલુચપ્પમાણે સેસં તં ચેવ । સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ ॥૯-૧૨॥

છાયા--યથા કૃષ્ણલેશ્યૈ એવં નીલલેશ્યૈરપિ ચત્તાર ઉદેશકા મણિતવ્યા નિરવશેષાઃ । નરમુપપાતો નૈરથિકાણાં યથા વાલુકામમાયામ્ । શેપં તદેવ । તદેવં મદન્ત ! તદેવ મદન્ત ! ઇતિ ॥૯-૧૨॥

ટીકા--'જહા કળહલેસ્સેહિં એવં નીલલેસ્સેહિં વિ ચત્તારિ ઉદેસગા માણિયવ્વા નિરવસેસા' યથા-કૃષ્ણલેશ્યનારકાણાં ચત્તાર ઉદેશકાઃ કથિતા સ્થૈવ નીલલેશ્યૈરપિ ચત્તાર ઉદેશકાઃ કૃતયુગ્મ-ત્રયોજ-દ્વાપર-ચત્તોજપદવિશિષ્ટા મણિતવ્યાઃ નિરવશેષાઃ । 'નવરં' નવરં-કેવલમ્ 'નેરહયાણં' ઉવવાઓ જહા વાલુચપ્પમાણે' કૃષ્ણલેશ્યમકરણાપેક્ષયા इदं वैलक्षण्यं यदेषां નારકાણામુપપાતો યથા વાલુકા-

સેવં મંતે ! ત્તિ' હન પદોં કી વ્યાખ્યા પૂર્વ મેં કી ગઈ વ્યાખ્યા કે હી જૈસી હૈ ।

આઠવાં ઉદેશક સમાપ્ત હુઆ ॥૪૧-૮॥

॥ શતક ૪૧ ઉદેશક ૯ સે ૧૨ તક ॥

'જહા કળહલેસ્સેહિં એવં નીલલેસ્સેહિં વિ ચત્તારિ ઉદેસગા માણિયવ્વા નિરવસેસા' ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ--જિસ પ્રકાર સે કૃષ્ણલેશ્યાવાલોં કે સમ્બન્ધ મેં પૂર્વોક્તરૂપ સે ચાર ઉદેશક કહે ગયે હૈં, ડસી પ્રકાર સે નીલલેશ્યાવાલોં કે સમ્બન્ધ મેં સ્ત્રી ચાર ઉદેશક કહ લેના ચાહિયે । 'જહા ઉવવાઓ નેરહયાણં જહા વાલુચપ્પમાણે' પરન્તુ યહાં પર નારકોં કા ઉપપાત વાલુકા-

'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' આ પદોની વ્યાખ્યા પડેલા કહ્યા પ્રમાણે જ છે.

આઠમે ઉદેશે સમાપ્ત ॥૪૧-૮ ।

નવમા ઉદેશાથી બારમા સુધીના ચાર ઉદેશાઓનો પ્રારંભ--

'જહા કળહલેસ્સેહિં એવં નીલલેસ્સેહિં વિ ચત્તારિ ઉદેસગા માણિયવ્વા નિરવસેસા' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ--જે પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યાવાળાઓના સંબંધમાં પૂર્વોક્ત પ્રકારથી ચાર ઉદેશાઓ કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે નીલલેશ્યાવાળાના સંબંધમાં પણ ચાર ઉદેશાઓ કહેવા બોધ્યે 'નવરં' ઉવવાઓ નેરહયાણં જહા વાલુચપ્પમાણે' પરંતુ અહિંયાં નારકોનો ઉપપાત વાલુકાપ્રભામાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ

પ્રમાણં કથિત સ્તથૈવ મણિતવ્યમિતિ । ‘સેવં તં ચેવ’ ગ્રેષ્મયુગ્મપાતાતિરિક્તં સર્વમપિ
કૃષ્ણલેશ્યવદેવેતિ ભાવઃ । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! તિ’ તદેવં મદન્ત તદેવં
મદન્ત ! ઇતિ ॥

॥ એકચત્વારિંશતમે શતકે નવમાદિ દ્વાદશાન્તા ઉદેશકાઃ સમાપ્તાઃ ॥૧૧૨

પ્રમા મેં જૈસા કહા ગયા હૈ વૈસા હી કહના ચાહિયે । તાત્પર્ય હમ કથન
કા એસા હૈ કિ જિસ રીતિ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત કૃષ્ણલેશ્યાવાલે નૈર-
યિકોં કે, યોજરાશિપ્રમિત કૃષ્ણલેશ્યાવાલે નૈરયિકોં કે દ્વાપરયુગ્મ
રાશિપ્રમિત કૃષ્ણલેશ્યાવાલોં નૈરયિકોં કે ઓર કલ્પયોજરાશિપ્રમિત
કૃષ્ણલેશ્યાવાલે નૈરયિકોં કે સમ્બન્ધ મેં ચાર ઉદેશક પૂર્વોક્ત રૂપસે
પ્રકટ કિયે ગયે હૈં ઉસી પ્રકારસે કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત નીલલેશ્યાવાલે
નૈરયિકોં કે સમ્બન્ધ મેં યોજરાશિ પ્રમિત નીલલેશ્યાવાલે નૈરયિકોં કે
સમ્બન્ધ મેં દ્વાપરયુગ્મ રાશિપ્રમિત નીલલેશ્યાવાલે નૈરયિકોં કે સમ્બન્ધ
મેં ઓર કલ્પયોજ રાશિપ્રમિત નીલલેશ્યાવાલે નૈરયિકોં કે સમ્બન્ધ મેં બી
ચાર ઉદેશક વનાકર કહ લેના ચાહિયે । પરન્તુ યહાં પર કૃષ્ણલેશ્યાવાલે
નૈરયિકોં કી અપેક્ષા યદિ કોઈ વિશેષતા હૈ તો વહ ઉપપાત કી અપેક્ષા
સે હૈ । અતઃ યહાં પર ઉપપાત ચાલુકા પ્રમા મેં જૈસા વતલાગા ગયા
હૈ વૈસા હી હૈ । કૃષ્ણલેશ્યાવાલે નારકોં કે પ્રકરણ દો જૈસા નહીં હૈ ।
બાકીકા ઓર સબ કથન કૃષ્ણલેશ્ય પ્રકરણ કે જૈસા હી હૈ । સેવં મંતે !

છે, એજ પ્રમાણે કહેવો જોઈએ આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે-જે પ્રમાણે
કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નૈરયિકોના તથા યોજ રાશિપ્રમાણ
કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નૈરયિકોના તથા દ્વાપરયુગ્મ રાશિપ્રમાણ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નૈર-
યિકોના અને કલ્પયોજ રાશિપ્રમાણ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં પહેલા
કહ્યા પ્રમાણેના ચાર ઉદેશ્યો કહેવામાં આવ્યા છે, એજ પ્રમાણે કૃતયુગ્મ
રાશિપ્રમાણ નીલલેશ્યાવાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં યોજ રાશિપ્રમાણ નીલલેશ્યા
નૈરયિકોના સંબંધમાં દ્વાપરયુગ્મ રાશિપ્રમાણ નીલલેશ્યાવાળા નૈરયિકોના
સંબંધમાં અને કલ્પયોજ રાશિપ્રમાણ નીલલેશ્યાવાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં પણ
ચાર ઉદેશ્યો બતાવીને કહેવા જોઈએ પરંતુ અહિયાં કૃષ્ણલેશ્યાવાળા
નૈરયિકોની અપેક્ષાથી કંઈ વિશેષપણું હોય તો તે ઉપપાતની અપેક્ષાએ જ
છે. જેથી અહિયાં ઉપપાત વાણકાપ્રભામાં જે પ્રમાણે કહેલ છે એજ પ્રમાણે
છે. કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નારકોના પ્રકરણ પ્રમાણે નથી બાકીનું સઘળું કથન
કૃષ્ણલેશ્યાવાળા પ્રકરણમાં કહ્યા પ્રમાણે જ છે.

॥ 'अह १३-२० उद्देशगा' ॥

मूल—काउलेस्सेहि वि एवं चेव चत्तारि उद्देशगा काय-
व्वा । नवरं नेरइयाणं उववाओ जहा रयणप्पभाए । सेसं तं
चेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥१३-१६॥

तेउलेस्स रासिजुम्म कडजुम्म असुरकुमाराणं भंते ! कओ
उववज्जंति एवं चेव । नवरं जेसु तेउलेस्सा अत्थि तेसु भाणि-
यव्वं । एवं एए वि कण्हलेस्सा सरिसा चत्तारि उद्देशगा काय-
व्वा । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥४१-१६-२॥

छाया—कापोतलेश्यैरपि एवमेव चत्वार उद्देशकाः कर्तव्याः । नवरं नैरयि-
काणामुपपातो यथा रत्नप्रभायाम् । शेषं तदेव । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त !
इति । १३-१६॥

तेजोलेश्या राशियुग्म कृतयुग्मासुरकुमाराः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते
एवमेव । नवरं येषु तेजोलेश्या अस्ति तेषु भणितव्यम् । एवमेतेऽपि कृष्ण-
लेश्यसदृशाश्चत्वारः उद्देशकाः कर्तव्याः । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥

त्रयोदशादारभ्य विंशन्त्यतोद्देशकाः समाप्ताः ॥४१॥१३-२०॥

टीका—'काउलेस्सेहि वि एवं चेव चत्तारि उद्देशगा कायव्वा' यथा कृष्ण-
सेवं भंते । त्ति' हे भदन्त ! आपका कड़ा हुआ यह सब विषय सर्वथा
सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और
नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से
आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

॥ ४१ वें शतक का ९ से १२ उद्देशक समाप्त ॥

॥ शतक ४१ उद्देशक १३ से २० तक ॥

'काउलेस्सेहिं वि एवं चेव चत्तारि उद्देशगा कायव्वा' इत्यादि ।

टीकार्थ—कापोतलेश्यावाले नैरयिकों के सम्यग्ध में भी कृष्णलेश्या

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भगवन आपे कहेल आ तमाभ विषय
सर्वथा सत्य ज छे. २ आ प्रमाणे कहीने वंदना नमस्कार करी गौतमस्वामी
तप आने संयमथी पोताना आत्माने भावित करता थका पोताना
स्थानपर गिरजमान थया.

॥नवमा उद्देशाथी ॥१३॥ सुधीना आर उद्देशाथी समाप्त ॥४१-६-१२

तेरमा उद्देशाथी सोणमा सुधीना आर उद्देशाथीनो प्रारंभ—

टीकार्थ—'कण्हलेस्सेहिं वि एवं चेव चत्तारि उद्देशगा कायव्वा' कापोत-

છેડ્યૈશ્વર્ય ઉદેશકાઃ કથિત્વા એવમેવ કાપોતલેશ્યૈરપિ ચત્વાર ઉદેશકાઃ કર્તવ્યાઃ
કાપોતલેશ્ય કૃતયુગ્મનારકાદેઃ પ્રથમઃ, કાપોતલેશ્ય ઓજરાશિ-
પ્રમિત કાપોતલેશ્યાવાલે નૈરયિકાદિર્થો દ્વિતીયઃ, કાપોતલેશ્ય દ્વાપરયુગ્મનારકાદેસ્તૃતીયઃ, કાપોતલેશ્ય કલ્યોજનાકાદેશ્ચતુર્થો-
દેશકઃ। ‘નવરં નેરહ્યાણં ઉચ્ચાઓ જહા રચણપ્પમાણ’ નવરં પૂર્ણપેશ્યા કાપોતલેશ્ય
પ્રકરણે રૂપમેવ વૈલક્ષણ્યં યત્ અત્ર નારકાણામુપપાતો રત્નપ્રભાયામિવ વક્તવ્યઃ।

વાલે નૈરયિકોં કે જૈસે ચાર ઉદેશક હૈં જો મલ્લ પ્રકાર સે હૈં। જૈસે-
કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિતવાલે નૈરયિકોં કા પ્રથમ ઉદેશક હૈ। ઓજરાશિ-
પ્રમિત કાપોતલેશ્યાવાલે નૈરયિકાદિર્થોં કા દ્વિતીય ઉદેશક હૈ। દ્વાપર-
યુગ્મ રાશિપ્રમિત કાપોતલેશ્યાવાલે નૈરયિકોં કા તૃતીય ઉદેશક હૈ ઓર
કલ્યોજરાશિપ્રમિત કાપોતલેશ્યાવાલે નૈરયિકોં કા ચતુર્થ ઉદેશક હૈ।
‘નવરં નેરહ્યાણં ઉચ્ચાઓ જહા રચણપ્પમાણ’ પરંતુ કૃષ્ણલેશ્ય પ્રકરણ
કી અપેક્ષા રસ કાપોતલેશ્યા પ્રકરણ મેં ઘડિ કોઈ વિલક્ષણતા હૈ તો
વહ ઉપપાત કી અપેક્ષા સે હૈ-ચહી વાત ‘નવરં નેરહ્યાણં ઉચ્ચાઓ
જહા રચણપ્પમાણ’ રસ સૂત્ર દ્વારા પ્રકટ કી ગઈ હૈ। અતઃ ઘડાં ઉપપાત
રત્નપ્રભા પૃથિવી મેં જૈસા વતલાયા ગયા હૈ-વૈસા હી કહના ચાહિયે।
‘સેસં તં ચેવ’ ઉપપાત સે અતિરિક્ત ઓર સર્વ કાવન કૃષ્ણલેશ્ય પ્રકરણ
કે જૈસા હી હૈ। ‘સેવં મંતે! સેવં મંતે! ત્તિ’ હે મદન્ન! આપ

લેશ્યાવાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં પણ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નૈરયિકોના કથન
પ્રમાણના ચાર ઉદેશોએ કહ્યા છે જે આ પ્રમાણે છે, -એમકે-કૃતયુગ્મ
રાશિપ્રમાણ કાપોતલેશ્યાવાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં પહેલો ઉદેશો કહેલ
છે. ૧ ઓજરાશિપ્રમાણ કાપોતલેશ્યાવાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં બીજો
ઉદેશો કહેલ છે. ૨ દ્વાપરયુગ્મ રાશિપ્રમાણ કાપોતલેશ્યાવાળા નૈરયિકોના
સંબંધમાં ત્રીજો ઉદેશો કહેલ છે ૩ અને કલ્યોજ રાશિપ્રમાણ કાપોતલેશ્યા
વાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં ચોથો ઉદેશો કહેલ છે. ‘નવરં નેરહ્યાણં ઉચ્ચાઓ
જહા રચણપ્પમાણ’ પરંતુ કૃષ્ણલેશ્યાના પ્રકરણ કરતાં આ કાપોતલેશ્યા પ્રકરણમાં
જો કંઈ વિલક્ષણપણું છે, તો તે ઉપપાતના સંબંધમાં કહેલ છે. એજ વાત
‘નવરં નેરહ્યાણં ઉચ્ચાઓ જહા રચણપ્પમાણ’ આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ કરેલ છે
જેથી અહિયાં ઉપપાત રત્નપ્રભા પૃથ્વીના સંબંધમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં
આવેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં કહેવું જોઈએ. ‘મેમં તં ચેવ’ ઉપપાતના કથન
કરતાં બાકીનું સઘળું કથન કૃષ્ણલેશ્યાના પ્રકરણની જેમ જ છે. તેમ અમરપું.
‘સેવં મંતે! સેવં મંતે! ત્તિ’ હે ભગવન આપ દેવાનુપ્રિયે આ સંબંધમાં

‘સેસં તં ચૈવ’ શેષ મુપપાતાતિરિક્તં સર્વં તદેવ કૃષ્ણલેશ્યમકરણવદેવેતિ માવઃ ।
‘સેવં મંતે । સેવં મંતે ! ત્તિ’ તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! હતિ ॥

ત્રયોદશાદારમ્ય પોઢશાન્તોદેશનાઃ સમાપ્તાઃ ॥૧૩।૧૬॥

‘તેઝલેસ્સ રાશિજુમ્મ કહજુમ્મ અસુરકુમારાણં મંતે । કઓ ઉવવજ્જંતિ’
તેજોલેશ્ય રાશિયુગ્માસુરકુમારાઃ સ્વલુ મદન્ત ! કુત ઉત્પચન્તે કિં નૈરયિકેમ્યો
યાવદેવેમ્ય હતિ પ્રશ્નઃ, ઉત્તરમાહ—‘એવં ચૈવ’ એવમેવ—કૃષ્ણલેશ્યવદેવેતિ હહાપિ
સર્વમુપપાતાદિકં પૂર્વવદેવ જ્ઞાતવ્યમિતિ માવઃ । ‘નવરં જેસુ તેઝલેસ્સા અત્થિ તેસુ

દેવાનુપ્રિયને જૈસા ચહ કહા હૈ ચહ સર્વથા સત્ય હી હૈ ૨ । હત્યાદિરૂપ
સે હન પદોં કી વ્યાખ્યા પૂર્વ કે જૈસી હી જાનની ચાહિયે ।

॥૪૧ વેં શતક્રકા ૧૨-૧૬ ઉદેશક સમાપ્ત હુઆ ॥

ઉદેશક ૧૭ સે ૨૦ પર્યન્ત

“તેઝલેસ્સરાશિજુમ્મ કહજુમ્મ અસુરકુમારાણં મંતે ! હત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—‘તેઝલેસ્સ રાશિજુમ્મ કહજુમ્મ અસુરકુમારાણં મંતે ! કઓ
ઉવવજ્જંતિ’ હે ‘મદન્ત ! રાશિયુગ્મ મેં કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ તેજોલેશ્યાવાલે
અસુરકુમાર કિસ સ્થાન વિશેષ સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? કયા વે નૈર-
યિકોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા યાવત્ દેવોં મેં સે આકરકે
ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? ‘એવં ચૈવ’ ઉત્તર મેં પ્રશ્નશ્રી કહતે હૈં—હે ગૌતમ !

જે કથન કથું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે હે ભગવન્ આપ
દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ
પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓ ને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી
સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર
બિરાજમાન થયા. ॥૨૪૦૧॥

॥તેરમા ઉદેશાથી સોળ સુધીના ચાર ઉદેશાઓ સમાપ્ત ॥૪૧-૧૩-થી ૧૬॥

સત્તરમા ઉદેશાથી વીસમા સુધીના ચાર ઉદેશાનો પ્રારંભ—

‘તેઝલેસ્સ રાશિજુમ્મ કહજુમ્મ અસુરકુમારાણં મંતે !’ હત્યાદિ

ટીકાર્થ—‘તેઝલેસ્સ રાશિજુમ્મ કહજુમ્મ અસુરકુમારાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’
હે ભગવન્ રાશિયુગ્મમાં કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ તેજોલેશ્યાવાળા અસુરકુમારો
કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને
ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યચ્યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા
મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય
છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘એવં ચૈવ’ હે ગૌતમ ! કૃષ્ણલેશ્યાના

માણિયવ્વં' નવરં જેષુ અસુરકુમારેષુ તેજોલેશ્યા અસ્તિ તેષ્વેવ દ્વં સૂત્રં મણિતવ્યં નાન્યત્રેતિ । 'एवं एष वि कण्ठलेस्सा सरिसा चत्तारि उद्देशगा कायव्वा' एवમેतेऽपि चत्वार उद्देशकाः तेजोलेश्य कृतयुग्म, तेजोलेश्यव्योज-तेजोलेश्य द्वापरयुग्म-तेजोलेश्य कल्योजरूपाः कर्त्तव्या-वक्तव्या इति । 'सेवं भંवे ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त इति ॥

एकचत्वारिंशत्तमे शतके सप्तदशादिविंशत्यन्ता उद्देशकाः समाप्ताः । ४१.१७ २० ।

॥ 'अह २१-२८ उद्देशगा' ॥

મૂલમ-एवं पम्हलेस्साए वि चत्तारि उद्देशगा कायव्वा ।
पंचिदियतिरिक्खजोगियाणं मणुस्साणं वेमाणियाणं य एएसिं
पम्हलेस्सा सेसाणं नत्थि । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति । ४१-२१-२४।

કૃષ્ણલેશ્ય પ્રકરણ કે સમાન હી યહાં પર સમસ્ત ઉપપાત આદિ વાચ્ય હુએ હૈં એસા જાનના ચાહિયે । 'નવરં' જેસુ તેજોલેસ્સા અત્થિ તેસુ માણિ-યવ્વં' પરન્તુ જિન અસુરકુમારોં મેં તેજોલેશ્યા હૈં ઉન્હોં કે સમ્બન્ધ મેં હસ સૂત્ર કા કથન કરનાં ચાહિયે અન્ય મેં નહીં । 'एवं एष वि कण्ठलेस्स सरिसा चत्तारि उद्देशगा कायव्वा' हस प्रकार कृष्णलेश्य प्रकरण के जैसे ही यहां तेजोलेश्य कृतयुग्म तेजोलेश्य व्योज, तेजोलेश्य द्वापर-युग्म, तेजोलेश्य कल्योजरूप चार उद्देशक वक्तव्य है । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' इन पदों का अर्थ पूर्वोक्त जैसा ही है ।

१७-२० उद्देशक समाप्त हुआ । ४१-१७-२०॥

પ્રકરણમાં કહ્યા પ્રમાણે જ અહિયાં ઉપપાત વિગેરે સઘળું કથન કહેવું નોઈએ. તેમ સમજવું 'નવરં' જેસુ તેજોલેસ્સા અત્થિ તેસુ માણિયવ્વં' પરંતુ જે જે અસુર કુમારોમા તેજોલેશ્યા હોય તેઓના સંબંધમા આ સૂત્રનુ કથન કહેવું નોઈએ. બીજામાં નહીં. 'एवं एष वि कण्ठलेस्स सरिसा चत्तारि उद्देशगा कायव्वा' આ રીતે કૃષ્ણલેશ્યા પ્રકરણની જેમ જ અહિયાં તેજોલેશ્યા કૃતયુગ્મ, તેજોલેશ્યા વ્યોજ તેજોલેશ્યા દ્વાપરયુગ્મ, અને તેજોલેશ્યા કલ્યોજરૂપ ચાર ઉદ્દેશાઓ સમજી લેવા.

'सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે કથન કર્યું છે, તે સર્વથા સચ જ છે ૨ આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ.૦૧॥

અત્તરમા ઉદ્દેશાથી વીસમા ઉદ્દેશા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૧૭-૨૦॥

જહા પમ્હલેસ્સાણ એવં સુક્કલેસ્સાણ વિ ચત્તારિ ઉદ્દેસગા
કાયવ્વા । નવરં મણુસ્સાણં ગમઓ જહા ઑહિ ઉદ્દેસણસુ સેસં તં
ચેવ । એવં એણ છસુ લેસ્સાસુ ચૌવીસં ઉદ્દેસગા ઑહિયા ચત્તારિ
સવે તે અટ્ટાવીસં ઉદ્દેસગા ભવંતિ । સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ । ૨૪-૨૮ ।

છાયા—‘એવં પદ્મલેશ્યાયામપિ ચત્તાર ઉદ્દેશકાઃ કર્તવ્યા । પન્નેન્દ્રિયતિ-
ર્યગૂયોનિકાનાં મનુષ્યાણાં વૈમાનિકાનાં ચૈતેપાં પદ્મલેશ્યા, શેષાણાં નાસ્તિ ।
તદેવં મદન્ત ! તદેવ મદન્ત !’ इति ॥ २१-२४

યથા પદ્મલેશ્યાયામેવં શુક્લલેશ્યાયામપિ ચત્તાર ઉદ્દેશકાઃ કર્તવ્યાઃ । નવરં
મનુષ્યાણાં ગમકો યથા ઔષ્ઠિકોદ્દેશકેષુ । શેષં તદેવ । એવમેતે પદ્મસુ લેશ્યાસુ
ચતુર્વિંશતિરુદ્દેશકા, ઔષ્ઠિકાશ્ચત્તારઃ, સર્વે તે અટ્ટાવિંશતિરુદ્દેશકા ભવન્તિ ।
તદેવં મદન્ત ! ૨ इति । २४-२८ ઉદ્દેશકાઃ સમાપ્તાઃ ।

ટીકા—‘એવં પમ્હલેસ્સાણ વિ ચત્તારિ ઉદ્દેસગા કાયવ્વા’ એવં કૃષ્ણલેશ્યાદિવદેવ
પદ્મલેશ્યાયામપિ ચત્તાર ઉદ્દેશકાઃ પદ્મલેશ્યકૃતયુગ્માઃ પદ્મલેશ્યવ્યોજાઃ પદ્મલેશ્ય
દ્વાપરયુગ્માઃ પદ્મલેશ્યકલ્યોજાઃ ક્ષત્યેવંરૂપાઃ કર્તવ્યાઃ સર્વત્રાલાપકમકારઃ સ્વય-
મેવોદ્દેશનીયઃ । કેપાં જીવાનાં પદ્મલેશ્યા ભવતીતિ તાન્ દર્શયતિ—‘પંચિદિય’

શ્લોક ૪૧ ઉદ્દેશક ૨૧ સે ૨૮ તક

‘એવં પમ્હલેસ્સાણ વિ ચત્તારિ ઉદ્દેસગા કાયવ્વા’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—કૃષ્ણલેશ્ય પ્રકરણ મેં જોણે ચાર ઉદ્દેશક પ્રકટ કિયે જા
ચુકે હેં હૈણે હી ચાર ઉદ્દેશક પદ્મલેશ્ય જીવોં કે સમ્બન્ધ મેં ખી કહ
લેના ચાહિયે । જોણે પદ્મલેશ્ય કૃતયુગ્મ ઉદ્દેશક ૧ પદ્મલેશ્ય વ્યોજ
ઉદ્દેશક ૨ પદ્મલેશ્યદ્વાપરયુગ્મ ઉદ્દેશક ૩ ઔર પદ્મલેશ્ય કલ્યોજ
ઉદ્દેશક ૪ હન સ્વ મેં આલાપ પ્રકાર અપને આપ ઉદ્ભાવિત કર લેના
ચાહિયે । પદ્મલેશ્યા કિન કિન જીવોં કે હોની હૈ સો સૂત્રકારને ‘પંચિ-

એકવીસમા ઉદ્દેશાથી અઠ્યાવીસમા સુધીના આઠ ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

‘એવં પમ્હલેસ્સાણ વિ ચત્તારિ ઉદ્દેસગા કાયવ્વા’ इत्यादि

ટીકાર્થ—કૃષ્ણલેશ્યાનાં પ્રકરણમાં જે પ્રમાણેનું કથન કરવામાં આવેલ છે. એજ
પ્રમાણેનું કથન આર ઉદ્દેશાણ પદ્મલેશ્યા નારકો વિગેરેના સંબંધમાં પણ કહેવા
જોઈએ તે આ પ્રમાણે સમજવા પદ્મલેશ્યા કૃતયુગ્મ ઉદ્દેશો ૧ પદ્મલેશ્યા વ્યોજ
ઉદ્દેશો ૨ પદ્મલેશ્યા દ્વાપરયુગ્મ ૩ અને પદ્મલેશ્યા કલ્યોજ ઉદ્દેશક ૪ આ બધામાં
આલાપનો પ્રકાર સ્વયં બનાવીને સમજી લેવો. પદ્મલેશ્યા કયા કયા જીવોને હોય

इत्यादि 'पंचिन्द्रियतिरिक्खजोणिघाणं मणुस्साणं वेमाणियाणय एएसि पम्ह-
लेस्सा' पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां मनुष्याणां वैमानिकानां च एतेषां जीवानां
पद्मलेश्या भवति । 'सेसाणं नत्थि' शेषाणामेतद्व्यतिरिक्तानां पद्मलेश्या न
भवतीति 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! २ इति ।

‘जहा पम्हलेस्साए एवं सुक्कलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा’ यथा—
पद्मलेश्यायां चत्वार उद्देशकाः कथिता एवमेव शुक्ललेश्यायामपि चत्वार उद्देशकाः
कर्तव्या सर्वत्राऽऽलपप्रकारः स्वयमेवोद्दीय इति । ‘नवरं मणुस्साणं गमओ

દિય તિરિક્ક જોણિયાણં મણુસ્સાણં વેમાણિયાણય એસિં પમ્હલેસ્સા’
इस सूत्र पाठ द्वारा स्पष्ट किया है—पञ्चेन्द्रियतिर्यग्यो के, मनुष्यों के एवं
वैमानिक देवों के पद्मलेश्या होती है । ‘सेसाणं नत्थि’ इनके सिवाय
और जो जीव बचते हैं उनके पद्मलेश्या नहीं होती है । ‘सेवं भंते !
सेवं भंते ! त्ति’ हे भदन्त । जैसा आपने यह कहा है वह सब सर्वथा
सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की
और नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तपसे
आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

‘जहा पम्हलेस्साए एवं सुक्कलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा’
पद्मलेश्या में जिस पद्धति से चार उद्देशक प्रकट किये गये हैं

છે ? તે માટે સૂત્રધારે ‘પંચિન્દ્રિયતિરિક્કજોણિયાણં મણુસ્સાણ વેમાણિયાણય એસિ
પમ્હલેસ્સા’ આ સૂત્ર પાઠદ્વારા સ્પષ્ટ કરેલ છે. પંચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોને, મનુષ્યોને,
તથા નૈરયિક દેવોને પદ્મલેશ્યા હોય છે. ‘સેસાણ નત્થિ’ આમના શિવાય
જે જીવો બાકી રહે છે, તેઓને પદ્મલેશ્યા હોતી નથી.

‘સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણે કહ્યું
છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું આ
વિષયના સંબંધમાં કહેલ સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે આ પ્રમાણે કહીને
ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર
કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા
પોતાના સ્થાન પર વિરાજમાન થયા

‘જહા પમ્હલેસ્સાએ એવં સુક્કલેસ્સાએ વિ ચત્તારિ ઉદ્દેસગા કાયવ્વા’ પદ્મ
લેશ્યાના કથનમાં જે પ્રમાણે ચાર ઉદ્દેશાઓ કહેલા છે, એજ પ્રમાણે શુક્લ
લેશ્યાના સંબંધમાં પણ ચાર ઉદ્દેશાઓ સમજી લેવા. તથા આ બધામાં

જહા ઓહિ ઉદેસણુ' નવરં મનુષ્યાણાં ગમકઃ પ્રકારો યથા ઔધિકોદેશકેષુ
 એતસ્યૈવ શતકસ્ય પ્રથમોદેશકે કથિત સ્તથૈવ જ્ઞાતવ્યઃ । 'સેસં તં ચેવ' શેષં તદેવ-
 પૂર્વવદેવ જ્ઞાતવ્યમિતિ । 'એવં એષ છસુ લેસ્સાસુ ચત્તરીસં ઉદેસગા' એવમ્ ઉપરોક્ત
 પ્રકારેણ એતે ઉદેશકા પદસુ લેશ્યાસુ ચતુર્વિંશતિ ભવન્તિ । પ્રત્યેકલેશ્યાનાં કૃત-
 યુગ્માદિ ચતુશ્ચતુરુદેશકસંજ્ઞાવાત્ । 'ઓહિયા ચત્તારિ' ઔધિકાશ્ચત્તાર ઉદેશકા
 ભવન્તિ । 'સવ્વે તે અઢાવીસં ઉદેસગા ભવંતિ' સર્વે તે સઙ્કલનયા અષ્ટાવિંશતિરુદે-
 શકા ભવન્તીતિ । 'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ ।

॥ એકચત્તારિંશતમે શતકે ૨૧-૨૮ ઉદેશકાઃ સમાપ્તાઃ ॥

અસી પદ્ધતિ સે શુચલલેશ્યા મેં ખી ચાર ઉદેશક કહ લેના ચાહિયે ।
 તથા હન સય મેં આલાપ પ્રકાર સ્વયં હી ઉદ્ભાવિત કર લેના ચાહિયે ।
 પરન્તુ મનુષ્યોં કે સમ્બન્ધ મેં ગમક પ્રકાર જૈસા ઔધિક ઉદેશક મેં
 કહા જા ચુકા હૈ વૈસા હી યહાં વક્તવ્ય હુઆ હૈ । યહી વાત 'નવરં
 મણુસ્સાણં ગમકો જહા ઓહિ ઉદેસણુ' હમ સૂત્રપાઠ દ્વારા યહાં
 સમજાઈ ગઈ હૈ । 'સેસં તં ચેવ' વાકી કા ઓર સબ કથન પૂર્વ કે હી
 જૈસા હૈ । 'એવં એષ છસુ લેસ્સાસુ ચત્તરીસં ઉદેસગા' હસ પ્રકાર છહ
 લેશ્યાઓં કે સમ્બન્ધ મેં સમસ્ત ઉદેશક ૨૪ હોતે હૈ । વ્યોંકિ પ્રત્યેક
 લેશ્યા મેં પ્રત્યેક લેશ્યાવાલો મેં કૃતયુગ્માદિરૂપ ચાર ચાર ઉદેશક હૈ ।
 તથા-'ઓહિયા ચત્તારિ' ઔધિક ઉદેશક ૪ હૈ । હસ પ્રકાર સે સબ

આલાપનો પ્રકાર સ્વયં બનાવીને સમજી લેવો જોઈએ પરંતુ મનુષ્યોના સંબં-
 ધમાં ગમકોનો પ્રકાર ઔધિક ઉદેશમાં એટલે કે-આ ભગવતી સૂત્રના એક-
 તાળીસમા શતકના પહેલા ઉદેશમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ
 પ્રમાણેનું કથન સમજી લેવું. એજ વાત 'નવરં મણુસ્સાણં ગમકો જહા ઓહિ
 ઉદેસણુ' આ સૂત્રપાઠદ્વારા અહિયાં સમજાવેલ છે, 'સેસં તં ચેવ' બાકીનું બીજું
 તમામ કથન પહેલા કહ્યા પ્રમાણેનું જ છે. 'એવં એષ છસુ લેસ્સાસુ ચત્તરીસગં'
 ઉદેસગા' આ રીતે આ છ લેશ્યાઓના સંબંધમાં સઘળા મળીને ૨૪ ચોવીસ
 ઉદેશાઓ થઈ જાય છે કેમ કે દરેક લેશ્યામાં-એટલે કે દરેક લેશ્યાવાળા
 ઓમાં કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્માદિ રૂપ ચાર ચાર ઉદેશાઓ થાય છે. તથા 'ઓહિયા
 ચત્તારિ' ઔધિક ઉદેશાઓ ૪ ચાર છે. આ રીતે બધા મળીને ૨૮ અઠ્યાવીસ
 ઉદેશાઓ થઈ જાય છે.

॥ 'અહ ૨૯-૫૬ ઉદ્દેસગા' ॥

મૂળ-ભવસિદ્ધિય રાસિજુમ્મ કહજુમ્મનેરહયાણં મંતે !
કઓ ઉવવજ્જંતિ જહા ઓહિયા પઢમગા ચત્તારિ ઉદ્દેસગા તહેવ
નિરવસેસં એ ચત્તારિ ઉદ્દેસગા । સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ ॥ ૨૯-૩૨ ॥

કળહલેસ્સ ભવસિદ્ધિય રાસિજુમ્મ કહજુમ્મ નેરહયાણં મંતે !
કઓ ઉવવજ્જંતિ જહા કળહલેસ્સાએ ચત્તારિ ઉદ્દેસગા મવંતિ
તહા ઇમે વિ ભવસિદ્ધિય કળહલેસ્સેહિ વિ ચત્તારિ ઉદ્દેસગા
કાયવા ॥ ૪૧-૩૩-૩૬ ॥

એવં નીલલેસ્સ ભવસિદ્ધિએહિ વિ ચત્તારિ ઉદ્દેસગા કાય-
વા ॥ ૪૧-૩૭-૪૦ ॥

એવં કાઉલેસ્સેહિ વિ ચત્તારિ ઉદ્દેસગા ॥ ૪૧-૪૧-૪૪ ॥

તેઉલેસ્સેહિ વિ ચત્તારિ ઉદ્દેસગા ઓહિયસરિસા ॥ ૪૧-૪૫-૪૮ ॥

પમ્હલેસ્સેહિ વિ ચત્તારિ ઉદ્દેસગા ॥ ૪૧-૪૯-૫૨ ॥

મુક્કલેસ્સેહિ વિ ચત્તારિ ઉદ્દેસગા ઓહિયસરિસા । એવં
એ વિ ભવસિદ્ધિએહિ વિ અટ્ટાવીસં ઉદ્દેસગા મવંતિ । સેવં
મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ ॥ ૪૧-૫૩-૫૬ ॥

૪૧-૨૯-૫૬-ઉદ્દેસગા સમત્તા

મિલકર ૨૮ ઉદ્દેશક હોતે હે । 'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ત્તિ' એન પદો
કી વ્યાખ્યા પૂર્વ કે હી જૈસી હૈ ।

૪૧ વે' શતક મેં ૨૧ સે લેકર ૨૮ તકકે ઉદ્દેશક સમાપ્ત હુએ ।

'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમા
કહેલ સઘળું કથન સત્ય છે હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે કહેલ સઘળું કથન
સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે ઠહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી
નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સયમ અને તપથી પોતાના
આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ॥ સૂ. ૦૧ ॥
એકવીસમા ઉદ્દેશથી અડધાવીસમા સુધીના આઠ ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ૪૧-૨૧ થી ૨૮

छाया--‘भवसिद्धिं राशियुग्मं कृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते यथा औघिकाः प्रथमका श्रवण उद्देशका स्तथैव निरवशेषम् एते चत्वार उद्देशकाः तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥४१. २९-३२॥

कृष्णलेश्य भवसिद्धिं राशियुग्मं कृतयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? यथा कृष्णलेश्यायां चत्वार उद्देशका भवन्ति तथा-इमेऽपि भवसिद्धिं कृष्णलेश्यैरपि चत्वार उद्देशकाः कर्तव्याः ॥४१. ३३-३६॥

एवं नीललेश्य भवसिद्धिकैरपि चत्वार उद्देशकाः कर्तव्याः ॥३७-४०॥

एवं कापोतलेश्यैरपि चत्वार उद्देशकाः ॥४१, ४१-४४॥

तेजोलेश्यैरपि चत्वार उद्देशकाः ॥४१, ४५-४८॥

पद्मलेश्यैरपि चत्वार उद्देशकाः ॥४१, ४९-५२॥

शुक्ललेश्यैरपि चत्वार उद्देशका औघिकसदृशाः । एवमेतेऽपि भवसिद्धिकैरपि अष्टाविंशतिरुद्देशका भवन्ति । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥४१, ५३-५३ ॥४१, २९-५६ उद्देशकाः समाप्ताः ॥

टीका--‘भवसिद्धिरासियुग्मं कृतयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावदेवेभ्यः ? इति प्रश्नः, उत्तरमाह-‘जहा’ इत्यादि, ‘जहा ओहिया-पद्मगा चत्वारि उद्देशगा’ यथा औघिकाः सामान्याः प्रथमका आद्या श्रवण

शतक ४१ उद्देशक २९ से ५६ तक

‘भवसिद्धिरासियुग्मं कृतयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावदेवेभ्यः ? इति प्रश्नः, उत्तरमाह-‘जहा’ इत्यादि, ‘जहा ओहिया-पद्मगा चत्वारि उद्देशगा’ यथा औघिकाः सामान्याः प्रथमका आद्या श्रवण

टीकार्थ-हे भदन्त ! राशियुग्म में कृतयुग्म राशिप्रमित भवसिद्धिं नैरयिक किस स्थान विशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं अथवा यावत् देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभुश्री कहने हैं-‘जहा ओहिया पद्मगा चत्वारि उद्देशगा’ ‘हे गौतम ! जैसे पहिलेके चार औघिक उद्देशक कहे

आगच्छन्तीसमा उद्देशाथी अत्रीसमा सुधीना चार उद्देशानो प्रारंभ-

‘भवसिद्धिरासियुग्मकृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावदेवेभ्यः ? इति प्रश्नः, उत्तरमाह-‘जहा’ इत्यादि, ‘जहा ओहिया-पद्मगा चत्वारि उद्देशगा’ यथा औघिकाः सामान्याः प्रथमका आद्या श्रवण

टीकार्थ-हे भगवन् राशियुग्ममां कृतयुग्म राशिप्रमाणाणां भवसिद्धिं नैरयिके कया स्थान विशेषात् आवीने उत्पन्नं थाय्ये १ शुं तेन्यो नैरयिके-मांथी आवीने उत्पन्नं थाय्ये ? अथवा त्रियंथ्येनिकेमांथी आवीने उत्पन्नं थाय्ये ? अथवा भुध्यामांथी आवीने उत्पन्नं थाय्ये ? अथवा द्वेमांथी आवीने उत्पन्नं थाय्ये ? आ प्रश्नना उत्तरमां प्रभुश्री कहे छे के-‘जहा ओहिया पद्मगा

ઉદ્દેશકાઃ કથિતા એતસ્મિન્નેવ શતકે 'તદેવ નિરવસેસં એ ચત્તારિ ઉદ્દેશગા' તથૈવ તેનૈવ રુપેણ નિરવશેષમ્ એતેઽપિ ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મનાદિ નારકાદીનામપિ ચત્તાર ઉદ્દેશકા વક્તવ્યા इति, 'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! इति ॥

॥ ૪૧, ૨૧-૩૨ ઉદ્દેશકાઃ સમાપ્તાઃ ॥

કળહલેસ ભવસિદ્ધિય રાસિજુમ્મ કઢજુમ્મ નેરહયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ' કૃણ્ણલેશ્ય ભવસિદ્ધિકરાશિયુગ્મ કૃતયુગ્મ નારકાઃ સ્વલુ મદન્ત ! કુત ઉત્પચન્તે કિં નૈરયિકેભ્યો યાવત્ દેવેભ્યો વા સમુત્પચન્તે ? इति પ્રશ્નઃ, ઉત્તરમાહ-પૂર્વાતિદેશેન

ગયે હૈં હસી શતક મેં 'તદેવ નિરવસેસં એ ચત્તારિ ઉદ્દેશગા' ડમી પ્રકાર સે હન ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મનાદિ નારક આદિકોં કે ભી ચાર ઉદ્દેશક યહી વક્તવ્ય હુએ હૈં । 'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' હન પદોં કી વ્યાખ્યા પૂર્વકે જૌસી હૈ ।

॥ ૪૧ વેં શતક મેં ૨૧ સે લેકર ૩૨ તક કે ઉદ્દેશક સમાપ્ત હુઆ ।

'કળહલેસ ભવસિદ્ધિય રાસિજુમ્મ કઢજુમ્મ નેરહયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ' इत्यादि ।

ટીકાર્થ-હે મદન્ત ! રાશિયુગ્મ મેં કૃતયુગ્મનાદિપ્રમિત કૃણ્ણલેશ્ય ભવસિદ્ધિક નૈરયિક કિસ સ્થાન વિશેષ સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ?

ચત્તારિ ઉદ્દેશગા' હે ગૌતમ ! જેવી રીતે આ શતકમાં પહેલાના ચાર ઔષ્ધિક ઉદ્દેશાઓ કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે 'તદેવ નિરવસેસં એ ચત્તારિ ઉદ્દેશગા' આ ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ વિગેરે નારકાના સંબંધમાં પણ ચાર ઉદ્દેશાઓ પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે અહિયાં સમજવા.

'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ત્તિ' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં કહેલ સઘણું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે કહેલ સઘણું કથન સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિન કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ઓગણત્રીસમા ઉદ્દેશાથી લઈને બત્રીસમા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત

॥૪૧-૨૮-૩૨॥

તેત્રીસમા ઉદ્દેશાથી છત્રીસમા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓનું કથન—

'કળહલેસ ભવસિદ્ધિય રાસિજુમ્મ કઢજુમ્મ નેરહયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ' इत्यादि

ટીકાર્થ—હે ભગવન રાશિયુગ્મમાં કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ કૃણ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક નૈરયિકો કયા સ્થાન વિશેષથી આવંને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિયંચયોનિકોમાંથી આવીને

‘જહા’ इत्यादि, ‘जहा कणहलेस्साए चत्तारि उद्देशगा भवन्ति’ यथा कृष्णलेश्या प्रकरणे एतस्यैव शतकस्य पञ्चमाद्युद्देशकेषु चत्वार उद्देशका भवन्ति ‘तहा इमे वि’ तथा—तेनैव प्रकारेण इमेऽपि । ‘कणहलेस्स भवसिद्धिएहि वि चत्तारि उद्देशगा कायव्वा’ कृष्णलेश्य भवसिद्धिक नैरयिकादिकैरपि कृष्णलेश्य भवसिद्धिक कृत-युग्म कृष्णलेश्य भवसिद्धिक त्र्ययोज भवसिद्धिक कृष्णलेश्य द्वापरयुग्म कृष्णलेश्य भवसिद्धिक कल्योज रूपा श्रत्वार उद्देशकाः कर्त्तव्या इति

अथस्त्रिंशत्तमात् षट्त्रिंशत्तमपर्यन्तोद्देशकाः समाप्ताः ॥३३-३६॥

क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं अथवा यावत् देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? इसका पूर्वातिदेश से उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतम से कहते हैं—‘जहा कणहलेस्साए चत्तारि उद्देशगा भवन्ति’ हे गौतम ! इसी शतक के पंचमादि चार उद्देशकों में जिस प्रकार से बताया गया है ‘तहा इमे वि’ उसी प्रकार से ये ‘कणहलेस्स भवसिद्धिएहि वि चत्तारि उद्देशगा कायव्वा’ कृष्णलेश्य भवसिद्धिक नैरयिकादि जीवों के साथ भी चार उद्देशक बना लेना चाहिये । जैसे—कृष्णलेश्य कृतयुग्म भवसिद्धिकोद्देशक १, कृष्णलेश्य त्र्ययोज भवसिद्धिकोद्देशक २, कृष्णलेश्य द्वापरयुग्म भवसिद्धिकोद्देशक ३, और कृष्णलेश्य कल्योज भवसिद्धिकोद्देशक ४ इस प्रकार से राशियुग्म में कृष्णलेश्य भवसिद्धिक नैरयिकों के सम्बन्ध में ये चार उद्देशक हो जाते हैं । इस प्रकार ३३ वे उद्देशक से लेकर ३६ वे उद्देशक तकके ४ उद्देशक ४१ वे शतक में समाप्त हुए । ४१, ३३-३६।

ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે ‘જહા કણહલેસ્સાએ ચત્તારિ ઉદ્દેશગા ભવન્તિ’ હે ગૌતમ ! આ એકતાળીસ શતકના પાંચમા ઉદ્દેશમાં જે પ્રમાણેના ચાર ઉદ્દેશાઓ કહેવામાં આવ્યા છે, ‘તહા હમે વિ’ એજ પ્રમાણે આ ‘કણહલેસ્સ ભવસિદ્ધિએહિ વિ ચત્તારિ ઉદ્દેશગા કાયવ્વા’ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક નૈરયિક છવેના સંબંધમાં પણ ચાર ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ. જેમ કે—કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના સંબંધમાં પહેલો ઉદ્દેશો ૧ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ત્ર્યેજ ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના સંબંધમાં બીજો ઉદ્દેશો ૨ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા દ્વાપરયુગ્મ ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના સંબંધમાં ત્રીજો ઉદ્દેશો ૩ અને કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કલ્યેજ ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના સંબંધમાં ચોથો ઉદ્દેશો ૪ આ રીતે રાશિયુગ્મમાં કૃષ્ણલેશ્યાવાળા

‘एवं नीललेश्य भवसिद्धिर्वाहि वि चत्वारि उद्देशगा कायवा’ एवमेव कृष्ण-
लेश्य भवसिद्धिकवदेव नीललेश्य भवसिद्धिकैरपि चत्वार उद्देशकाः कृतयुग्मादि
रूपाः कर्तव्याः ॥ सप्तत्रिंशत्तमाच्चत्वारिंशत्तम पर्यन्ताः समाप्ताः ॥३७-४०॥

‘एवं काउलेश्येहि वि चत्वारि उद्देशगा’ एवमेव कापोतलेश्यैरपि चत्वार
उद्देशकाः कर्तव्याः । एते चत्वारिंशत्तमात् चतुश्चत्वारिंशत्तमपर्यन्ता उद्देशका
समाप्ताः ॥४१-४४॥

‘एवं नीललेश्य भवसिद्धिर्वाहि वि चत्वारि उद्देशगा कायवा’

टीकार्थ—इसी प्रकार से—कृष्णलेश्य भवसिद्धिक जैसे ही नील-
लेश्य भवसिद्धिक नैरयिकादिकों के सम्बन्ध में भी चार उद्देशक कर्तव्य
होते हैं। जैसे—नीललेश्य कृतयुग्म भवसिद्धिकोद्देशक १ नीललेश्ययोज
भवसिद्धिकोद्देशक २, नीललेश्य द्वापरयुग्म भवसिद्धिक उद्देश ३ और
नीललेश्य कल्योज भवसिद्धिक उद्देशक ४ इस प्रकार ३७ वें उद्देशकसे
लेकर ४० वें उद्देशक तक के ४ उद्देशक ४१ वें शतक में समाप्त हुए ।

भवसिद्धिक नैरयिकना संभंधमां आ चार उद्देशाञ्चो यध नय छे. आ रीते
तेत्रीसमा उद्देशाथी लधने छत्रीसमा उद्देशा सुधीना ४ उद्देशाञ्चो समाप्त

॥४१-३३ थी ३६॥

॥तेत्रीसमा उद्देशाथी ३६ सुधीना उद्देशाञ्चो समाप्त॥

‘एवं नीललेश्य भवसिद्धिर्वाहि वि चत्वारि उद्देशगा कायवा’ धत्याहि

टीकार्थ—आज प्रमाणे—कृष्णलेश्यावाणा भवसिद्धिकना कथन प्रमाणे न
नीललेश्यावाणा भवसिद्धिक नैरयिकेना संभंधमा पणु चार उद्देशाञ्चो कडेवा
जेधञ्चे जेमके—नीललेश्यायुक्त कृतयुग्म भवसिद्धिक नैरयिकेना संभंधमां पडेदी
उद्देशो १ नीललेश्यावाणा योज भवसिद्धिक नैरयिकेना संभंधमां भीजे उद्देशो.
नीललेश्यावाणा द्वापरयुग्म भवसिद्धिक नैरयिकेना संभंधमा त्रीजे उद्देशो
३ अने नीललेश्यावाणा कल्योज भवसिद्धिकना संभंधमा ४ योथो उद्देशो साड
त्रीसमा उद्देशाथी ४० सुधीना चार उद्देशाञ्चो समाप्त थया ॥४१-३७थी४०॥

‘एवं काउलेश्येहि वि चत्वारि उद्देशगा कायवा’ धत्याहि

टीकार्थ—आज प्रमाणे कापोतलेश्यावाणा भवसिद्धिक नैरयिकेना संभंध-
मां पणु चार उद्देशाञ्चो कडेवा जेधञ्चे.

आ रीते आ ऐकताणीसमा ४१ शतकमां ४१ ऐकताणीसमा उद्देशाथी
लधने युग्माणीस सुधीना चार उद्देशाञ्चो समाप्त ॥४१-थी ४१ ४४॥

‘तेजोलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देशगा ओहिय सरिसा’ तेजोलेख्यैरपि तेजोलेख्य भवसिद्धिकासुरकुमारादिकैरपि चत्वार उद्देशका औघिकसदृशाः कर्तव्याः ॥ पञ्चवत्वारिंशत्तमाद् अष्टवत्वारिंशत्तमपर्यन्ता उद्देशकाः समाप्ताः ॥४५-४८॥

‘पद्मलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देशगा’ पद्मलेख्यामाश्रित्यापि पद्मलेख्य भवसिद्धिक तिर्यक् पञ्चेन्द्रियादिकमाश्रित्यापि कृतयुग्मादिरूपाश्चत्वार उद्देशकाः कर्तव्याः । एकोनपञ्चाशत्तमाद् द्विपञ्चाशत्तमपर्यन्ता उद्देशका समाप्ताः ॥४९-५२॥

‘एवं काउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देशगा कायव्वा’ इत्यादि ।

इसी प्रकार से कापोतलेख्य भवसिद्धिक नैरयिकादिकों के सम्बन्ध में भी चार उद्देशक करने योग्य होते हैं । इस प्रकार ४१ वें उद्देशक से लेकर ४४ वें उद्देशक तक के ४ उद्देशक ४१ वें शतक में समाप्त हुए । ४१, ४१-४४॥

‘तेजोलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देशगा ओहिय सरिसगा’ इत्यादि ।

तेजोलेख्य भवसिद्धिक असुरकुमारादिकों के सम्बन्ध में भी चार उद्देशक औघिक उद्देशक के जैसे करने योग्य होते हैं । इस प्रकार ४५ वें उद्देशक से लेकर ४८ वें उद्देशक तक के ४ उद्देशक ४१ वें शतक में समाप्त हुए । ४१, ४५-४८॥

‘पद्मलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देशगा’ इत्यादि’

पद्मलेख्य भवसिद्धिक तिर्यक्पञ्चेन्द्रियादिकों को लेकर भी कृतयुग्मादिरूप चार उद्देशक कर लेना चाहिये । इस प्रकार ४९ वें उद्देशक से लेकर ५२ वें उद्देशक तक के ४ उद्देशक ४१ वें शतक में समाप्त हुए ४१, ४९-५२॥

‘तेजोलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देशगा ओहिय सरिसगा’ इत्यादि

टीका—तेजोलेख्या भवसिद्धिक नैरयिकाना सम्बन्धमां पञ्च चार उद्देशाओ औघिक उद्देशाना कथन प्रमाणे उही लेवा लेख्ये.

आ रीते पिस्ताणीसमा उद्देशाथी लधने अउताणीसमा उद्देशा सुधीना चार उद्देशाओ समाप्त ॥४५-४८ थी ४८॥

‘पद्मलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देशगा’ इत्यादि

टीका—पद्मलेख्यामाणा भवसिद्धिक तिर्यक् पञ्चेन्द्रियेने लधने पञ्च कृतयुग्म विगेरे इये चार उद्देशाओ णनावीने सयल लेवा.

आ रीते ओगणपयासमा उद्देशाथी पर आवन सुधीना चार उद्देशाओ समाप्त ॥४९-४८-थी ५२॥

‘સુક્લેસ્તેહિ વિ ચત્તારિ ઓહિય સરિસા’ શુક્લલેશ્ય મન્તર્માન્યાપિ કૃતયુગ્માદિરૂપા શ્વત્વાર ઉદેશકા ઔઘિકરાદશા એવ કર્તવ્યા ઇતિ । ‘એવં એવિ મવસિદ્ધિએ વિ અઢાવીસં ઉદેશગા મવંતિ’ એવં પૂર્વવદેવ એતે મવસિદ્ધિકૈરપિ અષ્ટાવિંશતિરુદેશકા મવન્તીતિ । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ તદેવ મદન્ત તદેવં મદન્ત ! ઇતિ । ત્રિપશ્ચાશત્તમાત્ પદ્ પશ્ચાશત્તમ પર્યન્તા ઉદેશકા સમાપ્તાઃ ॥૫૩ ૫૬

‘સુક્લેસ્તેહિ વિ ચત્તારિ ઓહિય સરિસા’ ઇત્યાદિ ।

શુક્લલેશ્યાવાલો કો આશ્રિત કરકે મી ઔઘિક ઉદેશકોં કે જૈસે હી કૃતયુગ્માદિ રૂપ ચાર ઉદેશક ઘના લેના ચાહિયે । ‘એવં એવિ મવસિદ્ધિએ વિ અઢાવીસં ઉદેશગા મવંતિ’ હસ પ્રકાર મવસિદ્ધિકોં કે સમ્બન્ધ મેં મી ૨૮ ઉદેશક હો જાતે હૈં । તાત્પર્ય કહને કા યહ હૈં કિ મવસિદ્ધિક જીવોં કે કૃતયુગ્માદિરૂપ સે ચાર ઉદેશક તો ઔઘિક હૈં ઔર ૬ લેશ્યાઓ સમ્બન્ધી ચાર ચાર ઉદેશક હોને સે ચૌવીસ ઉદેશક યે હો જાતે હૈં । હસ પ્રકાર સે કુલ યહાં ૨૮ ઉદેશક હૈં । ‘સેવ મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હન પદોં કી વ્યાખ્યા પૂર્વવત્ હી હૈં । હસ પ્રકાર ૫૩ વેં ઉદેશક સે લેકર ૫૬ વેં ઉદેશક તક કે ૪ ઉદેશક ૪૧ વેં શતક મેં સમાપ્ત હુએ ૪૧, ૫૩-૫૬॥

‘સુક્લેસ્તેહિ ચત્તારિ ઓહિય સરિસા’ શુક્લલેશ્યાવાળાઓને આશ્રય કરીને ઔઘિક ઉદેશાઓને જેમ જ કૃતયુગ્માદિ ૩૫ ચાર ઉદેશાઓ કહેવા બોલ્યો. ‘એવં એવિ મવસિદ્ધિએ વિ અઢાવીસં ઉદેશગા મવંતિ’ આ રીતે મવસિદ્ધિકોના સબધમાં પણ ૨૮ અઠ્યાવીસ ઉદેશાઓ થઈ જાય છે. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-શુક્લલેશ્યાવાળાઓના કૃતયુગ્માદિ ૩૫ ચાર ઉદેશાઓ તો ઔઘિક છે. અને છ લેશ્યાઓ સબધી ચાર ચાર ઉદેશાઓ થવાથી તેના ૨૪ ચૌવીસ ઉદેશાઓ થાય છે. આ રીતે અહિયાં બધા મળીને કુલ ૨૮ અઠ્યાવીસ ઉદેશાઓ થાય છે

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે કથન કર્યું છે તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે, હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સત્ય જ છે આ પ્રમાણે કહીને જૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને સયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ.૦૧॥ આ રીતે ૫૩ તેપનમાં ઉદેશાથી લઈને ૫૬ છપ્પન સુધીના ૪ ચાર ઉદેશાઓ સમાપ્ત ॥૪૧-૫૩ થી ૫૬॥

‘अह ५७-८४ उद्देशगा’

गूलम्—अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते !
कओ उववज्जंति ? जहा पढसो उद्देशो । नवरं मणुस्सा नेरइया
य सरिस्सा भाणियव्वा सेसं तहेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।
एवं चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देशगा ॥५७-६०॥

कणहलेस्स अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं
भंते ! कओ उववज्जंति एवं चेव चत्तारि उद्देशगा ॥६१-६४॥
एवं नीललेस्स अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं
चत्तारि उद्देशगा ॥६५-६८॥ काउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देशगा
॥६९-७२॥ तेउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देशगा ॥७३-७६॥ पम्ह-
लेस्सेहि वि चत्तारि उद्देशगा ॥७७-८०॥ सुकलेस्स अभवसि-
द्धिएहि वि चत्तारि उद्देशगा ॥८१-८४॥ एवं एएसु अट्ठावीसाए वि
अभवसिद्धिय उद्देशएसु मणुस्सा नेरइयगमेणं णेयव्वा । सेवं
भंते ! सेवं भंते ! त्ति । एवं एए वि अट्ठावीसं उद्देशगा ॥६१-८४॥

छाया—अभवसिद्धिक राशियुग्म कृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते
यथा प्रथम उद्देशकाः । नवरं मनुष्याः नैरयिकाश्च सदृशा भणितव्याः । शेषं तथैव,
तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति । एवं चतुर्विंशत्युग्मेषु चत्वार उद्देशका ॥५९-६०॥

कृष्णलेख्याभवसिद्धिक राशियुग्मकृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत
उत्पद्यन्ते एवमेव चत्वार उद्देशकाः । एवं नीललेख्याऽभवसिद्धिकराशियुग्म-
नैरयिकाणां चत्वार उद्देशकाः । कापोतलेख्यैरपि चत्वार उद्देशकाः । तेजोलेख्यै-
रपि चत्वार उद्देशकाः । पद्मलेख्यैरपि चत्वार उद्देशकाः । शुक्ललेख्याऽभवसिद्धि-
कैरपि चत्वार उद्देशकाः । एवमेतेषु अष्टाविंशत्वामपि अभवसिद्धिकदेशकेषु मनुष्या
नैरयिकभेदेण नेतव्याः । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति । एवमेतेऽपि
अष्टाविंशतिरुद्देशकाः ॥

सप्त पञ्चाशत्तमात् चतुरशीतितमपर्यन्ताः,

एकचत्वारिंशत्तमे शतके समाप्ताः ॥५९-८४॥

ટીકા—‘અભવસિદ્ધિય રાસિજુમ્મ કહજુમ્મ નેરહયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ અભવસિદ્ધિક રાશિયુગ્મ કૃતયુગ્મ નૈરયિકાઃ સ્વલ્લ-મદન્ત ! કુત ઉત્પન્નન્તે કિં નૈર-યિકેભ્યો યાવદેવેભ્યો વા આગત્યોત્પન્નન્તે ? इति પ્રશ્નઃ, ઉત્તરમાહ—પૂર્વાતિદેશેન ‘જહા’ ઇત્યાદિ, ‘જહા પદમો ઉદ્દેસો’ યથા પ્રથમ ઉદ્દેશકઃ, એતસ્યેવ શતકસ્ય પ્રથમો-દેશકે નારકાણાં વક્તવ્યતા કથિતા તથૈવાત્રાપિ જ્ઞાતવ્યા । તિર્યગ્ભ્યો મનુષ્યેભ્યો વાऽऽગત્યોત્પન્નન્તે । શેષં પ્રથમોદ્દેશકવદેવ જ્ઞાતવ્યમિતિ । ‘નવરં મણુસ્સા નેરહયાય

શતક ૪૧ ઉદ્દેશક ૫૭ સે ૮૪ તક ॥

‘અભવસિદ્ધિયા રાસિજુમ્મ કહજુમ્મ નેરહયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ ઇત્યાદિ । ૫૭-૬૦॥

ટીકા—‘અભવસિદ્ધિયા રાસિજુમ્મ કહજુમ્મ નેરહયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ હે મદન્ત ! રાશિયુગ્મ મેં કૃતયુગ્મ પ્રમાણ અભવ-સિદ્ધિક નૈરયિક કિસ સ્થાન વિશેષ સે આકર ઉત્પન્ન હોતે હેં ? કયા વે નૈરયિકોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હેં અથવા યાવત્ દેવોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હેં ? પૂર્વાતિદેશ દ્વારા હસ પ્રશ્ન કા ઉત્તર દેતે હુપ પ્રભુશ્રી ગૌતમ સે કહતે હેં—‘જહા પદમો ઉદ્દેસો’ હે ગૌતમ ! જૈસી વક્તવ્યતા નારકોં કે સમ્બન્ધ મેં હસી શતક કે પ્રથમ ઉદ્દેશક મેં કહી ગઈ હેં વૈસી વક્તવ્યતા હનકે સમ્બન્ધ મેં યહાં જાનની જાહિયે । તથા ચ-યે નૈરયિક તિર્યગ્ભ્યોં મેં સે આકરકે ઓર મનુષ્યોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હેં—એસા હસ પ્રશ્ન કા ઉત્તર હૈ । વાકી વા ઓર કથન પ્રથમ ઉદ્દેશક કે જૈસા હી હૈ । ‘નવરં મણુસ્સા નેરહયાય ચ સરિસા

સત્તાવનમા ઉદ્દેશાથી સાઈઠમા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓનુ કથન

‘અભવસિદ્ધિયા રાસિજુમ્મ કહજુમ્મ નેરહયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ ઇ.

ટીકાર્થ—હે ભગવન રાશિયુગ્મમાં કૃતયુગ્મ પ્રમાણ અભવસિદ્ધિક નૈરયિક કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શુ તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યગ્ભ્યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યેમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નોનો ઉત્તર અતિદેશ દ્વારા આપતાં પ્રભુશ્રી ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—‘જહા પદમોઉદ્દેસો’ હે ગૌતમ ! નારકોના સંબંધમાં આ એકતાળીસમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું સઘળું કથન તેઓના સંબંધમાં અહિં પણ સમજવું એટલે કે—તે નૈરયિકો તિર્યગ્ભ્યોનિકોમાંથી આવીને અથવા મનુષ્યે માંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, આ પ્રમાણેનો આ પ્રશ્નોનો ઉત્તર છે, બાકીનું સઘળું કથન પહેલા

સરિસા માણિયવ્વા' નવરમ્-કેવલં પ્રથમોદ્દેશકાપેક્ષયા इदमेव वैलक्षण्यं यत्
अनामवसिद्धिकप्रकरणे मनुष्या नारकाश्च सदृशा एव वक्तव्या इति । 'सेसं तद्देव'
शेषं' तथैव प्रथमोद्देशकवद्देव ज्ञातव्यम् 'चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा' चतु-
र्ध्वपि युग्मेषु कृतयुग्म त्र्योज द्वापरयुग्म कल्योजरूपयुग्मचतुष्टयेषु चत्वार उद्दे-
शका भवन्ति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ।

एकचत्वारिंशत्तमे शतके सप्त पञ्चाशत्तमाद् आरभ्य षष्ठि पर्यन्ता उद्देशकाः
समाप्ताः । ५७-६०॥

માણિયવ્વા' પરન્તુ પ્રથમ ઉદ્દેશકની અપેક્ષા યહાં કેવલ યહી વિશેષતા
હૈ કિ હસ અભવસિદ્ધિક પ્રકરણ મેં મનુષ્ય ઓર નારક સમાન રીતિ
મેં કહના ચાહિયે । 'સેસં તદ્દેવ' ઓર ઘાકી કા કથન પ્રથમોદ્દેશક કે
હી જૈસા હૈ । 'ચઉસુ વિ જુમ્મેસુ ચત્તારિ ઉદ્દેસગા' યહાં પર બી ચાર
યુગ્મોં મેં-કૃતયુગ્મ, ત્ર્યોજ, દ્વાપરયુગ્મ ઓર કલ્યોજ-इन युग्मों में
ચાર ઉદ્દેશક હોતે હિં । 'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ' હે ભદન્ત ! જૈસા
આપને યહ કહા હૈ વહ સર્વથા સત્ય હી હૈ ૨ । હસ પ્રકાર કહકર
ગૌતમને પ્રભુશ્રીકો વંદના કી ઓર નમસ્કાર કિયા । વંદના નમસ્કાર
કર ફિર વે સંયમ ઓર તપ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુए अपने
સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે । હસ પ્રકાર ૫૭ વેં ઉદ્દેશક સે લેકર
૬૦ વેં ઉદ્દેશક તકકે ૪ ઉદ્દેશક ૪૧ વેં શતક મેં સમાપ્ત ॥૪૧, ૫૭, ૬૦

ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે જ છે. 'નવર' મણુસા નેરહ્યાય સરિસા માણિયવ્વા'
પરંતુ પહેલા ઉદ્દેશા કરતાં આ કથનમાં કેવળ એજ વિશેષપણું આવે છે-આ
અભવસિદ્ધિકના પ્રકરણમાં મનુષ્ય અને નારકા સરખા જ કહેવા બેઠાએ. 'સેસ'
તદ્દેવ' આ શિવાય બાકીનું સઘળું કથન પહેલા ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે જ છે.
'ચઉસુ વિ જુમ્મેસુ ચત્તારિ ઉદ્દેસગા' અહિયાં પણ ચાર યુગ્મોમાં-કૃતયુગ્મ-
ત્ર્યોજ દ્વાપરયુગ્મ અને કલ્યોજ આ ચાર યુગ્મોના ચાર ઉદ્દેશાઓ થાય છે.

'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં
જે પ્રમાણે કહેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ
દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ
પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી
સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર
બિરાજમાન થયા ॥સૂ.૦૧॥

આ પ્રમાણે ૫૭ સત્તાવનમા ઉદ્દેશાથી લઇને ૬૦ સાધકમા ઉદ્દેશા સુધીના ચાર
ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૪૧-૫૭ થી ૬૦

१) 'कण्ठलेस्स अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उव-
वज्जंति' कृष्णलेइयाऽभवसिद्धिक राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त । कृत
उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावदेवेभ्यो वा आगत्योत्पद्यन्ते इति प्रश्नः, उत्तरमाह-
पूर्ववदेव 'एवं चेव' इत्यादि, 'एवं चेव चत्तारि उद्देशगा' एवं पूर्ववदेव चतुरो
युग्मानाश्रित्य चत्वार उद्देशकाः कर्तव्याः ॥६१-६४॥

• 'एवं नीललेस्स अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं चत्तारि उद्दे-

कण्ठलेस्स अभवसिद्धिय रासिजुम्मकडजुम्मनेरइयाणं भंते ! कओ-
उववज्जंति' इत्यादि सूत्र-६१-६४ ।

• टीकार्थ- 'कण्ठलेस्स अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं
भंते ! कओ उववज्जंति'

१) हे भदन्त ! राशियुग्म में कृतयुग्म प्रमाण कृष्णलेइयावाले अभव-
सिद्धिक नैरयिक किस स्थान विशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं ?
क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा यावत् देवों में
से आकरके उत्पन्न होते हैं ? 'एवं चेव' हे गौतम ! पूर्वके जैसे यहां
पर भी चार युग्मों को आश्रित करके चार उद्देशक कह लेना चाहिये ।
इस प्रकार ६१ वे उद्देशक से लेकर ६४ वे उद्देशक तकके चार उद्देश
४१ ये शतक के समाप्त हुए । ४१, ६१-६४॥

एवं नीललेस्स अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं चत्तारि
उद्देशगा इत्यादि ६५-६८॥

'कण्ठलेस्स अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ
उववज्जंति' इत्यादि

टीकार्थ-—हे भगवन राशियुग्ममां कृतयुग्म प्रमाण कृष्णलेइयावाणा
अभवसिद्धिक नैरयिके कया स्थान विशेषथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? तेओ
नैरयिकेमांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा तिर्य'थयेनिकेमांथी आवीने
उत्पन्न थाय छे ? अथवा भनुष्येमांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? इ द्वे
मांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? आ प्रश्नना उत्तरमां प्रबुथी कडे छे इ-
'एवं चेव' हे गौतम ! पड़ेलां ने प्रमाणे कडेवामां आवेल छे, ओए प्रमाणे
अडियां पणु यार युग्मेनो आश्रय करीने यार उद्देशाओ कडेवा नेधओ.
आ रीते ६१ ओकसठमा उद्देशाथी लधने ६४ ओसठमा उद्देशाओ समाप्त
॥४१-६१- थी ६४॥

'एवं नीललेस्स अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं चत्तारि
उद्देशगा' इत्यादि.

सगा' एवमौघिक प्रकरणवदेव अभवसिद्धिक राशियुग्म कृतयुग्म नारकाणामपि चतुरो युग्मानाश्रित्य चत्वार उद्देशका वक्तव्याः ॥६५-६८॥

'काउलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा' इहापि पूर्ववदेव कापोतलेश्यैः कापोत-
लेश्यामन्तर्भाव्यापि चतुरो युग्मानाश्रित्य चत्वार उद्देशकाः कर्तव्याः ॥६९-७२॥

तेउलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा' तेजोलेश्यैरपि चत्वार उद्देशकाः इहापि
पूर्ववदेव तेजोलेश्यामन्तर्भाव्याभवसिद्धिकराशियुग्मकृतयुग्मादि नारकाणां युग्म-
भेदात् चत्वार उद्देशकाः कर्तव्या इति ॥७२-७६॥

टीकार्थ—'एवं नीललेस्स अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेर-
इयाणं चत्तारि उद्देसगा' औघिक प्रकरण के जैसे राशियुग्म में कृत-
युग्म प्रमाण नीललेश्यावाले अभवसिद्धिक नैरयिको के सम्बन्ध में भी
चार उद्देशक कहना चाहिये। इस प्रकार ६५ वें उद्देशक से लेकर ६८
वें उद्देशक तक के चार उद्देशक ४१ वें शतक में समाप्त हुए ४१, ६५-६८॥

'काउलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा' इत्यादि ६९-७२॥

'काउलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा' पहिले के जैसे ही यहाँ पर भी
कापोतलेश्यावालों अभवसिद्धिक नैरयिकों के सम्बन्ध में चार युग्मों
को आश्रित करके चार उद्देशक होते हैं, ऐसा जानना चाहिये। इस
प्रकार ६९ वें उद्देशक से लेकर ७२ वें उद्देशक तक के चार उद्देशक ४१
वें शतक में समाप्त हुए। ४१, ६९-७२॥

'तेउलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा' इत्यादि ७३-७६॥

टीकार्थ—'एवं नीललेस्स अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं चत्तारि
उद्देसगा' औघिक प्रकरणमां कथा प्रमाणे राशियुग्ममां कृतयुग्म प्रमाणे नील-
लेश्यावणा अवसिद्धिक नैरयिकाना सम्बन्धमां पण्य्यार युग्मेनो आश्रय
करीने यार उद्देशाओ कडेवा जेअओ.

आ रीते ६५ पासठमा उद्देशाथी लधने ६८ अउसठमा उद्देशा सुधीना यार
उद्देशाओ समाप्त ॥४१-६५ थी ६८॥

'काउलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा' इत्यादि

टीकार्थ—'काउलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा' पहिलानी जेम न अडियां
पण्य्य कापोतलेश्यावणा अवसिद्धिक नैरयिकाना सम्बन्धमां यार युग्मेनो
आश्रय करीने यार उद्देशाओ थाय छे, तेम समजवु,

आ प्रमाणे ६९ ओगाणसित्तेरमा उद्देशाथी लधने यार उद्देशाओ समाप्त
थया. ॥४१-६९ थी ७२॥

'तेउलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा' इत्यादि

‘પમ્હલેસ્સે હિ વિ ચત્તારિ ઉદેસગા’ પદ્મલેશ્યૈરપિ ચત્તાર ઉદેશકાઃ પદ્મ-
લેશ્યા ઘટિતાઽભવસિદ્ધિક રાશિયુગ્મ કૃતયુગ્મ ઝ્યોજ દ્વાપરયુગ્મ કલ્પોજ નાર-
કાણામપિ ચત્તાર ઉદેશકાઃ કર્તવ્યાઃ ॥૭૭-૮૦॥

‘સુક્કલેસ્સ અભવસિદ્ધિર્હિ વિ ચત્તારિ ઉદેસગા’ સુક્કલેશ્યાઽભવસિદ્ધિ-

‘તેઝલેસ્સેહિં વિ ચત્તારિ ઉદેસગા’ રાશિયુગ્મ મેં કૃતયુગ્માદિ પ્રમાણ
પ્રમિત તેજોલેશ્યાવાલે અભવસિદ્ધિક નૈરયિકોં કે સમ્બન્ધ મેં મી ચાર
ઉદેશક બનતે હેં । એસા જાનનાં ચાહિયે । હસ પ્રકાર ૭૩ વેં ઉદેશક સે
લેકર કે ૭૬ વેં ઉદેશક તક કે ચાર ઉદેશક ૪૧ વેં શતક મેં
સમાપ્ત હુવ । ૪૧, ૭૩-૭૬॥

‘પમ્હલેસ્સેહિં વિ ચત્તારિ ઉદેસગા’ ઇત્યાદિ ૭૭-૮૦॥

‘પમ્હલેસ્સેહિં વિ ચત્તારિ ઉદેસગા’ પદ્મલેશ્યાવાલે અભવસિદ્ધિક
નૈરયિકોં કે સમ્બન્ધ મેં મી ચાર ઉદેશક બનતે હેં-અર્થાત્ રાશિયુગ્મ મેં
કૃતયુગ્મ પ્રમાણ, ઝ્યોજ પ્રમાણ, દ્વાપરયુગ્મ પ્રમાણ ઓર કલ્પોજ પ્રમાણ
પ્રમિત પદ્મલેશ્યાવાલે અભવસિદ્ધિક નૈરયિકોં કે ચાર ઉદેશક
બનતે હેં, એસા જાનનાં ચાહિયે । હસ પ્રકાર ૭૭ વેં ઉદેશક સે લેકર
૮૦ વેં ઉદેશક તક કે ચાર ઉદેશક ૪૧ વેં શતક મેં સમાપ્ત
હુવ ૪૧, ૭૭-૮૦॥

‘સુક્કલેસ્સ અભવસિદ્ધિર્હિ વિ ચત્તારિ ઉદેસગા’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—‘તેઝલેસ્સેહિં વિ ચત્તારિ ઉદેસગા’ રાશિયુગ્મમાં કૃતયુગ્મ વિગેરે
પ્રમાણવાળા નીલલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના સંબંધમાં પણ ચાર
ઉદેશાઓ થાય છે, તેમ સમજવું.

આ રીતે ૭૩ તોતેરમા ઉદેશાથી લઈને ૭૬ છોતેરમા ઉદેશા સુધીના ચાર
ઉદેશાઓ સમાપ્ત ॥૪૧-૭૬ થી ૭૬

‘પમ્હલેસ્સેહિં ચત્તારિ ઉદેસગા’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—‘પમ્હલેસ્સેહિં ચત્તારિ ઉદેસગા’ પદ્મલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિક
નૈરયિકોના સંબંધમાં પણ ચાર ઉદેશાઓ થાય છે. અર્થાત્-રાશિયુગ્મમાં
કૃતયુગ્મ પ્રમાણ, ઝ્યોજ પ્રમાણ દ્વાપરયુગ્મ પ્રમાણ અને કલ્પોજ પ્રમાણ
પ્રમિત પદ્મલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના ચાર ઉદેશાઓ બને
છે, તેમ સમજવું.

આ રીતે સત્યોતેરમા ઉદેશાથી લઈને ૮૦ એસીમા ઉદેશા સુધીના ચાર
ઉદેશાઓ સમાપ્ત ॥૪૧-૭૭-૮૦॥

‘સુક્કલેસ્સ અભવસિદ્ધિર્હિ વિ ચત્તારિ ઉદેસગા’ ઇત્યાદિ

कैरपि चत्वार उद्देशका भवन्तीति । 'एवं एषु अष्टावीसा ए वि अभवसिद्धिषु उद्देशेषु मणुस्सा नेरइयगमेणं नेयव्वा' एवमेतेषु अष्टाविंशतावपि उद्देशकेषु मनुष्याणां वक्तव्यता नैरयिकवदेव ज्ञातव्येति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति । ८१-८४॥

'एवं एषु अष्टावीसं उद्देशगा' एवमेतेऽपि अष्टाविंशतिरुद्देशका भवन्तीति ।

'सुकलेस्स अभवसिद्धि एहिं वि चत्तारि उद्देशगा' इसी प्रकार से शुक्ललेश्यावाले अभवसिद्धिकों के सम्बन्ध में भी चार उद्देशक बनते हैं । 'एवं एषु अष्टावीसा ए वि अभवसिद्धिषु उद्देशेषु मणुस्सा नेरइयगमेणं नेयव्वा' जैसी इन २८ उद्देशकों में नैरयिकों की वक्तव्यता प्रकट की गई है वैसे ही वक्तव्यता मनुष्यों के सम्बन्ध में भी कर लेनी चाहिये । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भगवन् ! जैसा आपने यह विषय कहा है वह सर्वथा सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये । इस प्रकार ८१ वें उद्देशक से लेकर के ८४ वें उद्देशक तक के चार उद्देशक ४१ वें शतक में समाप्त हुए । ४१, ८१-८४॥

'एवं एषु अष्टावीसं उद्देशगा' इस प्रकार से ये भी २८ उद्देशक

टीका—'सुकलेस्स अभवसिद्धि एहिं वि चत्तारि उद्देशगा' आ० प्रमाणे शुक्ललेश्यावाणां अलवसिद्धिकोना संबन्धमां पणु अ. २ उद्देशाओ भने छे, 'एवं एषु अष्टावीसा ए वि अभवसिद्धिषु उद्देशेषु मणुस्सा नेरइयगमेणं नेयव्वा' आ अष्टावीस उद्देशाओमां नैरयिको संबन्धी कथन प्रगट करवामां आवेल छे, ओ० प्रमाणुं कथन मनुष्याणां संबन्धमां पणु समञ्ज लेवुं.

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भगवन् आप देवानुप्रिये ७ प्रमाणुं कथन क्युं छे, ते सधणुं कथन सर्वथा सत्य ० छे. हे भगवन् आप देवानु प्रियनुं सधणुं कथन सर्वथा सत्य ० छे. आ प्रमाणे कहीने गौतमस्वामीओ प्रभुश्रीने वन्दना करी तेओने नमस्कार कयां वन्दना नमस्कार करीने ते पछी संयम अने तपथी पोताना आत्माने लावित करता थका पोताना स्थान पर विराजमान थया. ॥सू०१॥

आ रीते ८१ ओक्यासीमा उद्देशाथी लघने ८४ ओकाशी सुधीना आर उद्देशाओ समाप्त ॥४१-८१-थी ८४॥

'एवं एषु अष्टावीसं उद्देशगा' आ रीते आ अष्टावीस उद्देशाओ थाय छे.

एकचवारिशत्तमे शतके सप्त पञ्चाशत्तमोद्देशतश्चतुरशीत्यन्ता अष्टाविंशतिरुद्देशका समाप्ताः ॥५७-८४॥

अह ८१-११२ उद्देशगा

मूलम्—सम्मदिट्टि रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति एवं जहा पढमो उद्देशओ । एवं चउसु विजुम्मेसु चत्तारि उद्देशगा भवसिद्धियसरिसा कायव्वा । सेवं भंते ! २ त्ति ॥८५-८८॥

कणहलेस्स सम्मदिट्टि रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति ? एए वि कणहलेस्ससरिसा चत्तारि वि उद्देशगा कायव्वा । एवं सम्मदिट्टीसु वि भवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देशगा कायव्वा । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥८९-११२ उद्देशगा॥

छाया—सम्यग्दृष्टि राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? एव यथा प्रथम उद्देशकः । चतुर्ष्वपि युग्मेषु चत्वार उद्देशका भवसिद्धिसदृशाः कर्त्तव्याः । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥८५-८८॥

कृष्णलेश्य सम्यग्दृष्टि राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? एतेऽपि कृष्णलेश्य सदृशाश्चत्वारोऽपि उद्देशकाः कर्त्तव्याः । एवं सम्यग्दृष्टिष्वपि भवसिद्धिसदृशा अष्टाविंशतिरुद्देशकाः कर्त्तव्याः । तदेवं भदन्त तदेवं भदन्त ! इति यावद्विहरति ॥८८-११२ उद्देशकाः ॥

टीका—‘सम्मदिट्टि रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति’ सम्यग्दृष्टि राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरहोते हैं । ५७ उद्देशक से लेकर ८४ उद्देशक समाप्त ॥

॥ शतक ४१ उद्देशक ८५-११२॥

‘सम्मदिट्टि रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति’

टीकार्थ—‘सम्मदिट्टि रासिजुम्म कडजुम्मनेरइयाणं भंते ! कओ उव-

सत्तावनमा उद्देशाथी योयाशी सुधीना उद्देशाओ समाप्त ॥४१-५७-८४॥

पञ्चासीमा उद्देशाथी अठ्यासी उद्देशासुधी

‘सम्मदिट्टी रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति’ ध.

यिकेभ्यो यावदेवेभ्यो वा आगत्य समुत्पद्यन्ते इति पूर्वदेव प्रश्नः । उत्तरमाह—
पूर्वातिदेशेन—‘एवं’ इत्यादि, ‘एवं’ जहा पढमो उद्देशओ’ एवं यथा प्रथम उद्देशकः
एतस्यैव शतकस्य प्रथमे उद्देशके येन प्रकारेण उपपातादिकं कथितं तेनैव रूपेण
इहापि सर्वं ज्ञातव्यमिति । ‘एवं चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देशगा भवसिद्धिय
सरिसा कायव्वा’ एवं चतुर्ष्वपि युग्मेषु कृतयुग्मत्रयोजद्वापरयुग्मकल्योजेषु
चत्वार उद्देशकाः भवसिद्धिकसदृशाः कर्तव्या यथा भवसिद्धिकप्रकरणे युग्म चतु-
ष्टयमन्तर्भाव्य चत्वार उद्देशका औघिकाः कथिता स्तथाऽत्रापि युग्म चतुष्टयघटिता

वज्जन्ति’ हे भदन्त ! राशियुग्म में कृतयुग्म प्रमाण सम्यग्दृष्टि नैरयिक
किस स्थान विशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से
आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा यावत् देवों में से आकरके उत्पन्न होते
हैं ? पूर्वातिदेश से उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतम से कहते हैं—‘एवं जहा
पढमो उद्देशओ’ हे गौतम ! जिस प्रकार से इसी शनक के प्रथम उद्दे-
शक में उपपात आदि कहे गये हैं उसी प्रकार से वे सब यहां पर भी
कह लेना चाहिये । ‘एवं चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देशगा भवसिद्धिय
सरिसा कायव्वा’ इस प्रकार चार युग्मों में कृतयुग्म त्रयोज द्वापरयुग्म
एवं कल्योज में चार उद्देशक भवसिद्धिक नैरयिकादिकों के जैसे
कर लेना चाहिये । अर्थात्—जैसे भवसिद्धिक प्रकरण में युग्म चतुष्टय
को लेकर चार औघिक उद्देशक कहे गये हैं वैसे ही युग्म चतुष्टय को
लेकर यहां पर भी चार औघिक उद्देशक कह लेना चाहिये । ‘सेव’ भन्ते !

टीका—‘सम्यग्दृष्टि राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिका’ भन्ते ! कओ उववज्जन्ति’
हे भगवन् राशियुग्ममां कृतयुग्म प्रमाण सम्यग्दृष्टिनैरयिके। क्या स्थान विशेषशी
आवीने उत्पन्न थाय छे ? शुं तेओ नैरयिकेमांशी आवीने उत्पन्न थाय छे ?
अथवा तिर्य्ययेनिडेमांशी आवीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा मनुष्येमांशी
आवीने उत्पन्न थाय छे ? के देवेमांशी आवीने उत्पन्न थाय छे ? आ प्रश्नना
उत्तरमां प्रभुश्री गौतमस्वामीने कहे छे—‘एवं जहा पढमो उद्देशओ’ हे गौतम !
हे प्रमाणे आ ओकताणीसमा शतकना पडेला उद्देशमां कडेवामां आवेल छे.
ओज प्रम छे तेओना उपपात विगेदे सधणुं कथन अहियां पणु कडेवुं नेधओ.
‘एवं चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देशगा भवसिद्धियसरिसा कायव्वा’ ओज प्रमाणे
भवसिद्धिक नैरयिकेना कथन प्रमाणे चार युग्मेमां कृतयुग्म, त्रयोज द्वापरयुग्म
अने कल्योजमां चार उद्देशओ। भवसिद्धिक नैरयिकेना कथन प्रमाणे कडेवा
नेधओ. अर्थात् हे प्रमाणे भवसिद्धिक प्रकरणमां चार युग्मने लधने चार
औघिक उद्देशओ कडेल छे, ओज प्रमाणे चार युग्मने आश्रय करीने अहियां
पणु चार औघिक उद्देशओ कडेवा नेधओ.

સ્ત્વાર ઉદ્દેશકા : કર્ત્ત્વજ્ઞાંતિ । સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ । ॥૮૫-૮૮॥

અકચ્ચત્વારિંશત્તમે શતકે સમ્યગ્દષ્ટેશ્ચત્વાર ઔધિકાઃ સમાપ્તાઃ ।

‘કળ્હલેસ્સ સમ્મદિટ્ઠિરાસિજુમ્મ કહ્હજુમ્મ નેરહયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ કળ્હલેશ્ચ સમ્યગ્દષ્ટિ રાશિયુગ્મ કૃતયુગ્મ નૈરયિકાઃ સ્વલ્પ મદન્ત ! કુત ઉત્પચન્તે કિં નૈરયિકેભ્યો યાવદેવેભ્યો વા આગત્ય સમુત્પચન્તે ઇતિ પૂર્વવદેવ પ્રશ્નઃ । ઉત્તરમાહ-પૂર્વાતિદેશેન ‘અપિ’ ઇત્યાદિ, ‘અપિ કળ્હલેસ્સ સરિસા ચત્તારિ વિ ઉદેસગા કાયવ્વા’ એતેઽપિ કળ્હલેશ્ચ સદૃશા એતચ્છતકીય પશ્ચમોદ્દેશકસદૃશા સેવં મંતે ! ત્તિ’ ઇતિ પદોં કા અર્થ પૂર્વોક્ત જૈમા હી હૈ ।

૪૧ વેં શતક મેં ચે સમ્યગ્દષ્ટિ કે ચાર ઔધિક ઉદ્દેશક સમાપ્ત હુએ ॥૪૧, ૮૫-૮૮॥

‘કળ્હલેસ્સ સમ્મદિટ્ઠિ રાસિજુમ્મ કહ્હજુમ્મ નેરહયાણં મંતે । કઓ ઉવવજ્જંતિ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—‘કળ્હલેસ્સ સમ્મદિટ્ઠિ રાસિજુમ્મ કહ્હજુમ્મ નેરહયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ હે મદન્ત ! રાશિયુગ્મ મેં કૃતયુગ્મ પ્રમિત કળ્હલેશ્ચાવાલે સમ્યગ્દષ્ટિ નૈરયિક કિસ સ્થાન વિશેષ સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? કયા વે નૈરયિકોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા યાવત્ દેવોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? પૂર્વાતિદેશ દ્વારા ઉત્તર દેતે હુએ પ્રભુશ્રી ગૌતમ સે કહતે હૈં—‘અપિ કળ્હલેસ્સસરિસા ચત્તારિ વિ ઉદેસગા

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે લગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણે કહેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે, હે લગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે કહેલ સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે, આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥આ રીતે સમ્યગ્દષ્ટિના ચાર ઔધિક ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૪૧-૮૫-૮૮॥

‘કળ્હલેસ્સ સમ્મદિટ્ઠિ રાસિજુમ્મ કહ્હજુમ્મ નેરહયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’

ટીકાર્થ—‘કળ્હલેસ્સ સમ્મદિટ્ઠિ રાસિજુમ્મ કહ્હજુમ્મ નેરહયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ હે લગવન્ રાશિયુગ્મમાં કૃતયુગ્મ પ્રમાણ કળ્હલેશ્ચાવાળા સમ્યગ્દષ્ટિ નૈરયિકો કયા વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શુ તેઓ નૈરયિકોમથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યચ ચોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? પ્રશ્નો ઉત્તર અતિદેશ દ્વારા આપતાં ગૌતમસ્વામીને પ્રભુશ્રી કહે છે કે—‘અપિ કળ્હલેસ્સસરિસા ચત્તારિ વિ ઉદેસગા કાયવ્વા’ હે ગૌતમ !

चत्वारोऽपि उद्देशकाः कृतयुगम ज्योतिषं द्वापरयुगम कल्योज घटिताः वर्तन्त्याः । 'एवं सम्मद्विद्विषु वि भवसिद्धयसरिसा अष्टावीसं उद्देशगा कायन्वा' एवं सम्यग्दृष्टिष्वपि राशियुगम कृतयुगमस्यैकः, सम्यग्दृष्टियोजस्य द्वितीयः, सम्यग्दृष्टि द्वापरयुगमस्य तृतीयः, सम्यग्दृष्टि कल्योजस्य चतुर्थः, ते एते चत्वार उद्देशका औघिकाः ४, ततः कृष्णलेश्य सम्यग्दृष्टेः कृतयुगमादि घटितस्य चत्वारः ८ । 'एवं नीललेश्य

कायन्वा' हे गौतम ! इनके सम्बन्ध में भी कृष्णलेश्यावालों के जैसे-इसी शतक के पांचवें उद्देशक के जैसे-चार उद्देशक-कृतयुगम, ज्योतिषं द्वापरयुगम और कल्योज पद घटित चार उद्देशक-बनालेना चाहिये । 'एवं सम्मद्विद्विषु वि भवसिद्धय सरिसा अष्टावीसं उद्देशगा कायन्वा' इसी प्रकार से सम्यग्दृष्टियों के सम्बन्ध में भी भवसिद्धि नैरयिक-आदिकों के जैसे अठारह उद्देशक, बनालेना चाहिये । वे इस प्रकार से बनते हैं—राशियुगम में कृतयुगमप्रमित सम्यग्दृष्टि नैरयिकादिकों का प्रथम उद्देशक ज्योतिषं राशिप्रमित सम्यग्दृष्टि नैरयिक आदिकों का द्वितीय उद्देशक, द्वापरयुगम राशिप्रमित सम्यग्दृष्टि नैरयिकादिकों का तृतीय उद्देशक कल्योजराशिप्रमित सम्यग्दृष्टि नैरयिकादिकों का चतुर्थ उद्देशक ऐसे ये चार उद्देशक औघिक हैं । तथा-कृतयुगमादि राशिप्रमित कृष्णलेश्यावाले सम्यग्दृष्टि नैरयिकादिकों के चार उद्देशक, तथा

आ राशियुगममां कृतयुगम प्रमाण कृष्णलेश्यावाणा सम्यग्दृष्टि नैरयिकाना सम्बन्धमां पणु कृष्णलेश्यावाणाना कथन प्रमाणे अर्थात् आ ऐकतादीसमा शतकना पांथमा उद्देशाना कथन प्रमाणे अष्टवे के-कृतयुगम, ज्योतिषं, द्वापरयुगम, अने कल्योजपदयुक्त चार उद्देशाओ जतावी देवा 'एवं सम्मद्विद्विषु वि भवसिद्धयसरिसा अष्टावीसं उद्देशगा कायन्वा' आण प्रमाणे सम्यग्दृष्टि वाणाओना सम्बन्धमां पणु भवसिद्धि नैरयिकाना कथन प्रमाणे अठ्यावीस उद्देशाओ समल देवा, ते आ प्रमाणे अने छे राशियुगममां कृतयुगम प्रमाण सम्यग्दृष्टि नैरयिकाना सम्बन्धमां पहेले उद्देशो. १ ज्योतिषं राशि प्रमाण सम्यग्दृष्टि नैरयिकाना सम्बन्धमां णीले उद्देशो. २ द्वापरयुगमराशिप्रमाण सम्यग्दृष्टि नैरयिकाना सम्बन्धमां त्रीले उद्देशो. ३ कल्योज राशिप्रमाण सम्यग्दृष्टि नैरयिकाना सम्बन्धमां चोथे उद्देशो. ४ आ प्रमाणे चार औघिक उद्देशाओ तथा कृतयुगम विगेरे राशिप्रमाण कृष्णलेश्यावाणा सम्यग्दृष्टि नैरयिकाना सम्बन्धमां चार उद्देशाओ तथा कृतयुगम विगेरे राशिप्रमाण नीललेश्यावाणा सम्यग्दृष्टि नैरयिकाना सम्बन्धमां चार उद्देशाओ तथा कृतयुगम विगेरे राशिप्रमाण तेजलेश्यावाणा सम्यग्दृष्टि नैरयिकाना सम्बन्धमां चार

કાપોતલેશ્ય તેજોલેશ્ય પદ્મલેશ્ય શુક્રલેશ્યાનાં પ્રત્યેકસ્ય ચત્વાર ચત્વાર ઉદ્દેશકા સ્તદેવં સર્વે સંકુલનયા અષ્ટાવિંશતિરુદ્દેશકા ભવન્તિ, इति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति' जाव बिहरइ' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति यावद्विहरति ।

‘एकचत्वारिंशत्तमे शतके ८९-११२ उद्देशकाः समाप्ताः ॥

કૃતયુગ્માદિરાશિપ્રમિત બીજલેશ્યાવાળે સમ્યગ્દષ્ટિ નૈયિકાદિકોં કે ચાર ઉદ્દેશક, તથા કૃતયુગ્માદિરાશિપ્રમિત કાપોતલેશ્યાવાળે સમ્યગ્દષ્ટિ નૈરયિકાદિકોં કે ચાર ઉદ્દેશક તથા કૃતયુગ્માદિ રાશિપ્રમિત તેજોલેશ્યાવાળે સમ્યગ્દષ્ટિ અસુરકુમારાદિકોં કે ચાર ઉદ્દેશક, તથા કૃતયુગ્માદિરાશિપ્રમિત પદ્મલેશ્યાવાળે સમ્યગ્દષ્ટિ તિર્યક્પંચેન્દ્રિય આદિકોં કે ચાર ઉદ્દેશક ઓર કૃતયુગ્માદિરાશિપ્રમિત શુક્રલેશ્યાવાળે સમ્યગ્દષ્ટિ તિર્યક્પંચેન્દ્રિયઆદિકોં કે ચાર ઉદ્દેશક હસ પ્રકાર ૬ લેશ્યા સમ્યન્ધી ૨૪ ઉદ્દેશક યે હૈં સબ કુલ મિલાકર યહાં ૨૮ ઉદ્દેશક હોતે હૈં । 'સેવં' ભંતે ! 'સેવં' ભંતે ! 'તિ જાવ વિહરઈ' હે ભદન્ત ! જેસા આપને યહ કહા હૈ યહ સબ સર્વથા સત્ય હી હૈ ૨ । હસ પ્રકાર કહકર ગૌતમને પ્રમુશ્રી કો વન્દના કી ઓર નમસ્કાર ક્રિયા । વન્દના નમસ્કાર કર ફિર વે સંયમ ઓર તપ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુઅ અપને સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે ॥

શતક ૪૧ ઉદ્દેશક ૮૯સે૧૧૨ તક સમાપ્ત હુઅ ॥

ઉદ્દેશાઓ તથા કૃતયુગ્મ વિગેરે રાશિપ્રમાણ પદ્મલેશ્યાવાળા સમ્યગ્દષ્ટિ નૈરયિકોના સંબંધમાં ચાર ઉદ્દેશાઓ તથા કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ શુક્રલેશ્યાવાળા સમ્યગ્દષ્ટિ નૈરયિકોના સંબંધમાં ચાર ઉદ્દેશાઓ આ રીતે છ લેશ્યા-સંબંધી ૨૪ ચોવીસ ઉદ્દેશાઓ થાય છે. અને બધા મળીને અહિંયાં ૨૮ અઠ્યાવીસ ઉદ્દેશાઓ થાય છે.

‘સેવં' ભંતે ! 'સેવં' ભંતે ! 'તિ જાવ વિહરઈ' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે, આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રમુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥૨૫૦૧॥

નેળ્યાસીમા ઉદ્દેશાથી ૧૧૨ એકસોબાર સુધીના ચોવીસ ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૪૧-૮૯ થી ૧૧૨॥

॥ અહ ૧૧૩-૧૪૦ ઉદ્દેશગા ॥

મૂલમ્—મિચ્છાદિદ્વિ રાસિજુમ્મ કહજુમ્મ નેરહયાણં મંતે !
કઓ ઉવવજ્જંતિ ? एवं एत्थ वि मिच्छादिद्वि अभिलावेणं
अभवसिद्धिय खरिसा अट्ठावीसं उद्देशगा कायव्वा । सेवं मंते !
सेवं मंते ! त्ति ॥

॥૧૧૩-૧૪૦ ઉદ્દેશગા સમાપ્તા॥

છાયા—મિથ્યાદ્વિ રાશિયુગ્મ કૃતયુગ્મ નૈરયિકાઃ खलु भदन्त ! कुत उत्प-
द्यन्ते ? एवमत्रापि मिथ्याद्वयभिलापेनाभवसिद्धिकसदृशा अष्टाविंशतिरुद्देशकाः
कर्त्तव्याः । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ।

૧૧૩-૧૪૦ ઉદ્દેશકાઃ સમાપ્તાઃ ॥

ટીકા—‘મિચ્છાદિદ્વિરાસિજુમ્મ કહજુમ્મ નેરહયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’
મિથ્યાદ્વિ રાશિયુગ્મ કૃતયુગ્મ નૈરયિકાઃ खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैर-
यिकेभ्यो यावदेवेभ्यो वा आगत्य समुत्पद्यन्ते इति पूर्ववदेव प्रश्नः । उत्तरयत्यति-
देशद्वारेण—‘एवं’ इत्यादि, ‘एवं एत्थ वि मिच्छादिद्वि अभिलावेणं अभवसिद्धिय

॥ શતક ૪૧ ઉદ્દેશક ૧૧૩-૧૪૦॥

‘મિચ્છાદિદ્વિરાસિજુમ્મ કહજુમ્મનેરહયાણં મંતે ! કઓ ઉવવ-
જ્જંતિ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—‘મિચ્છાદિદ્વિરાસિજુમ્મ કહજુમ્મનેરહયાણં મંતે ! કઓ ઉવવ-
જ્જંતિ હે ભદન્ત ! રાશિયુગ્મ મેં કૃતયુગ્મરાશિપ્રમિત મિથ્યાદ્વિ નૈરયિક
કિમ સ્થાનવિશેષ સે આકર ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? કયા વે નૈરયિકોં મેં સે આકર
કે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ? અથવા યાવત્ દેવોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ?
અતિદેશદ્વારા ઉત્તર દેતે હુણ પ્રભુશ્રી ગૌતમ સે કહતે હૈં—‘एवं एत्थ वि

એકસોતેરમા ઉદ્દેશાથી એકસોચાળીસ મુધીના ઉદ્દેશાઓનું કથન

‘મિચ્છાદિદ્વિ રાસિજુમ્મ કહજુમ્મનેરહયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ इत्यादि

ટીકાર્થ—‘મિચ્છાદિદ્વિ રાસિજુમ્મકહજુમ્મ નેરહયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’
હે ભગવન્ રાશિયુગ્મમાં કૃતયુગ્મ ૨ શિપ્રમાણ મિથ્યાદ્વિ નૈરયિકે કયા સ્થાન
વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકેમાંથી આવીને ઉત્પન્ન
થાય છે ? અથવા તિર્યંચ્યોનિકેમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુ-
ષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય
છે ? અતિદેશ દ્વારા આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે

સરિસા અઢાવીસં ઉદેસગા કાયવા' एवं पूवदेवत्रापि मिथ्यादृष्ट्यभिलाषेना
भवसिद्धिर्क सदृशा अष्टाविंशतिरुद्देशकाः कर्तव्याः, यथाऽभवसिद्धिकप्रकरणे
अष्टाविंशतिरुद्देशकाः कथिता स्तेनैव रूपेण औघिकोद्देशकस्तथा पड्लेक्ष्यान्तर्भा-
वेण पड्लेक्षका मिलित्वा सप्तोद्देशकाः सर्वत्र कृतयुग्मादिवत्तुर्विधयुग्मानु प्रवेशेना-
ष्टाविंशतिरुद्देशका वक्तव्याः, पूर्वं यत्राभवसिद्धिकपदं दत्तं तत्र प्रकृते मिथ्या-
दृष्टिपदं देयम् । 'सेव' भंते । सेव' भंते । त्ति' तदेव' भदन्त तदेव' भदन्त इति ।

૧૧૩-૧૪૦ ઉદેશકાઃ સમાપ્તાઃ ॥

મિચ્છાદિદ્વિ અભિલાષેણં અભવસિદ્ધિયસરિસા અઢાવીસં ઉદેસગા
કાયવા' હે ગૌતમ ! इनके सम्बन्ध में भी मिथ्यादृष्टि पद के उच्चा-
रण से अभावसिद्धिर्क नैरयिकादिकों के जैसे २८ उद्देशक बनालेना
चाहिये । इनमें चार औघिक उद्देशक हैं । और ६ लेक्ष्या सम्बन्धी २४
उद्देशक हैं । सब मिलकर २८ उद्देशक हो जाते हैं । इनके बनाने की
विधि ऊपर प्रकट की जा चुकी है । इस प्रकार पहिले जहां भवसिद्धिक
पदका प्रयोग किया गया है वहां वहां प्रकृत में मिथ्यादृष्टि पदका
प्रयोग करना चाहिये । 'सेव' भंते । सेव' भंते ! त्ति' हे भदन्त । जैसा
आपने यह कहा है वह सब सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतम
ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर
फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान

છે કે-‘एव’ एत्थवि मिच्छादिद्वि अभिलाषेणं अभावसिद्धि्यसरिसा अट्टावीसं उदेसगा
कायवा’ हे गौतम ! આ સંબંધમાં પણ મિથ્યાદૃષ્ટિ એ પદના ઉચ્ચારણ સાથે
અભવસિદ્ધિઃ નૈરયિકાના કથન પ્રમાણેના ૨૮ અઠ્યાવીસ ઉદેશાઓ કહેવા
જોઈએ. આમાં પણ ૪ ચાર ઔઘિક ઉદેશાઓ થાય છે. અને ૬ લેક્ષ્યા
સંબંધી ૨૪ ચોવીસ ઉદેશાઓ થાય છે. એ રીતે બધા મળીને ૨૮ અઠ્યાવીસ
ઉદેશાઓ થઈ જાય છે આ અઠ્યાવીસ ઉદેશાઓ કહેવાની રીત ઉપર પહેલાં
બતાવવામાં આવેલ છે, તે પ્રમાણેની સમજવી. આ રીતે પહેલાં ત્યાં અભવ-
સિદ્ધિઃ એ પદનો પ્રયોગ કરવામાં આવેલ છે. ત્યાં ત્યાં મિથ્યાદૃષ્ટિ પદનો
પ્રયોગ કરીને સમગ્રું કથન કહેવું જોઈએ.

‘सेव’ भंते । सेव’ भंते । त्ति’ हे लगवन् आप देवानुप्रिये आ संबंધમાં
જે કથન કર્યું છે, તે સમગ્રું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે લગવન્ આપ
દેવાનુપ્રિયનું સમગ્રું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ
પ્રભુશ્રીને વંદના કરી અને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી

‘અહ ૧૪૧-૧૬૮ ઉદ્દેશગા’

સૂત્રમ્—કૃષ્ણપક્ષિચય રાસિજુમ્મ કહજુમ્મ નૈરહયાણં મંતે !
કઓ ઉવવજ્જંતિ એવં એત્થ વિ અમવસિદ્ધિયસરિસા અટ્ટા-
વીસં ઉદ્દેસગા કાયઠ્ઠવા । સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ ।

॥૧૪૧-૧૬૮ ઉદ્દેસગા સમત્તા॥

છાયા—કૃષ્ણપાક્ષિક રાશિયુગ્મ કૃતયુગ્મ નૈરયિકાઃ સ્વલુ મદન્ત ! કુત ઉત્પ-
દ્યન્તે એવમત્રાપિ અમવસિદ્ધિકસદશા અષ્ટાવિંશતિરુદ્દેશકાઃ સમાપ્તાઃ । તદેવં
મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ

॥૧૪૧-૧૬૮ ઉદ્દેશકા સમાપ્તાઃ ॥

ટીકા—‘કૃષ્ણપક્ષિચય રાસિજુમ્મ કહજુમ્મ નૈરહયાણં મંતે ! કઓ ઉવવ-
જ્જંતિ’ કૃષ્ણપાક્ષિક રાશિયુગ્મ કૃતયુગ્મ નૈરયિકાઃ સ્વલુ મદન્ત ! કુત ઉત્પદ્યન્તે
કિં નૈરયિકેભ્ય આગત્ય યાવદેવેભ્યો વા આગત્યોત્પદ્યન્તે ઇતિ પૂર્વવદેવ પ્રશ્નઃ,
ઉત્તરમાહ અતિદેશદ્વારેણ—‘એવં’ ઇત્યાદિ, ‘એવં એત્થ વિ અમવસિદ્ધિયસરિસા

પર વિરાજમાન હો ગયે । શતક ૪૧ ઉદ્દેશક ૧૧૩-૧૪૦ સભાસ હુએ ॥

શતક ૪૧ ઉદ્દેશક ૧૪૧-૧૬૮॥

‘કૃષ્ણપક્ષિચય રાસિજુમ્મ કહજુમ્મ નૈરહયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’

ટીકાર્થ—‘કૃષ્ણપક્ષિચયરાસિજુમ્મ કહજુમ્મ નૈરહયાણં મંતે ! કઓ ઉવ-
વજ્જંતિ’ હે મદન્ત ! રાશિયુગ્મ કૃતયુગ્મરાશિપ્રમિત કૃષ્ણપાક્ષિક નૈરયિક
કિસ સ્થાનવિશેષ સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈ ? કયા વે નૈરયિકોં મેં સે
આકરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈં અથવા યાવત્ દેવોં મેં સે આકરકે ઉત્પન્ન હોતે
હૈં ? અતિદેશદ્વારા હસ પ્રશ્ન કા ઉત્તર દેતે હુએ પ્રભુશ્રી ગૌતમ સે કહતે

સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર
ખિરાજમાન થયા. ॥સૂ.૦૧॥

એકસોતેરમા ઉદ્દેશાથી એકસોઆળીસ સુધીના અઠગાવીસ ઉદ્દેશાઓ સંપૂર્ણ
॥૪૧-૧૧૩-થી ૧૪૦॥

એકસોએકતાળીસમા ઉદ્દેશાથી એકસોઅડસઠ સુધીના અઠગાવીસ ઉદ્દેશાઓનું કથન
પ્રારંભ—‘કૃષ્ણપક્ષિચય રાસિજુમ્મ કહજુમ્મ નૈરહયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’ ઇ.

ટીકાર્થ—‘કૃષ્ણપક્ષિચય રાસિજુમ્મ કહજુમ્મનૈરહયાણં મંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ’
હે ભગવન્ રાશિયુગ્મમાં કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ કૃષ્ણપક્ષવાળા નૈરયિકો કયા સ્થાન
વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન
થાય છે ? અથવા તિર્થંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા
મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન
થાય છે ? અતિદેશ દ્વારા આ પ્રશ્નો ઉત્તર ગૌતમસ્વામીને આપતાં પ્રભુશ્રી

અઢાવીસં ઉદેસગા કાયવ્વા' એવમ્-પૂર્વરૂદેશત્રાપિ કૃષ્ણપાક્ષિક પ્રકરણેઽપિ અભવ-
સિદ્ધિકરૂદેવાઢ્ટાવિંશતિરૂદેશકાઃ કર્તવ્યાઃ, યથા-અભવસિદ્ધિક પ્રકરણેઽઢ્ટા-
વિંશતિરૂદેશકાઃ કથિતાઃ તથૈત્રાત્રાપિ તેનૈવ રૂપેણ અઢ્ટાવિંશતિરૂદેશકાઃ કર્તવ્યાઃ
સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ' તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ઇતિ ।

‘એકચત્તારિંશત્તમે શતકે એકચત્તારિંશદધિક શતતમાદારમ્યાઢ્ટ પઢ્ટયધિક
શત પર્યન્તા-ઉદેશકાઃ સમાપ્તાઃ ॥૧૪૧-૧૬૮॥

હૈં-હે ગૌતમ ! ‘એવં એત્થ વિ અભવસિદ્ધિય સરિસા અઢાવીસં ઉદેસગા
કાયવ્વા’ પહિલે કે જૈસે યહાં પર મી-હસ કૃષ્ણપાક્ષિક પ્રકરણ મેં
મી-અભવસિદ્ધિક નૈરયિકકાદિકોં કે જૈસે ૨૮ ઉદેશક બનાલેના
ચાહિયે । અતઃ અભવસિદ્ધિક પ્રકરણ મેં જૈસે અઢાઈસ ઉદેશક કહે
ગયે હૈં વૈસે હી ઉદેશક ૨૮ યહાં પર કહ લેના ચાહિયે । ‘સેવં મંતે !
સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે અદન્ત ! જૈસા આપને યહ કહા હૈ વહ સર્વથા સત્ય
હી હૈ ૨ । હસ પ્રકાર કહકર ગૌતમને પ્રભુશ્રી કો વન્દના કી ઓર
નમસ્કાર કિયા, વન્દના નમસ્કાર કર ફિર વે સંયમ ઓર તપસે
આત્મા કો ભાવિત કરતે હુઢ અપને સ્થાન પર વિરાજમાન હો ગયે ।
॥૧૪૧ સે લેકર ૧૬૮ તક કે ઉદેશક ૪૧ વેં શતક મેં સમાપ્ત હુઢ ।

કહે છે કે-‘એવં એત્થ વિ અભવસિદ્ધિયસરિસા અઢાવીસં ઉદેસગા કાયવ્વા’
હે ગૌતમ પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે અઢિયાં પણ આ કૃષ્ણપાક્ષિકના પ્રકરણમાં પણ
અભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના કથન પ્રમાણે અઢયાવીસ ૨૮ ઉદેશાઓ બનાવીને
કહેવા લેઈ એ. જેથી અભવસિદ્ધિક પ્રકરણમાં જે પ્રમાણે અઢયાવીસ ઉદેશાઓ
કહેવામાં આવ્યા છે, એજ પ્રમાણેના ૨૮ અઢયાવીસ ઉદેશાઓ અઢિયાં પણ
કહેવા લેઈએ.

‘સેવ મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે લગવન્ આ વિષયમાં આપ દેવાનુપ્રિયે
જે પ્રમાણે કહેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે લગવન્ આપ
દેવાનુપ્રિયે કહેલ સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમ-
સ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને
તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થઈ પોતાના
સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ॥૨૦૧॥

એકસો એકતાળીસમા ઉદેશાથી એકસો અઢસઠ સુધીના અઢયાવીસ ઉદેશાઓ
સમાપ્ત ॥૪૧-૧૪૧ થી ૧૬૮॥

‘अह १६९-१९६ उद्देसगा’

मूलम्—सुकपक्खिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते !
कओ उववज्जंति एवं एत्थ वि भवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं
उद्देसगा भवंति । एवं एए सव्वे वि छन्नउयं उद्देसगसयं
भवंति रासिजुम्मसयं ॥४१-१९६॥

जाव सुक्कलेस्सा सुक्कपक्खिय रासिजुम्म कलिओगवेमा-
णिया जाव जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव
अंतं करेति ? णो इणट्ठे समट्ठे । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति, भगवं
गोयमे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं
करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-
एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं
भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छियपडि-
च्छियमेयं भंते ! सच्चेणंए समट्ठे जे णं गव्वे वयह त्ति कट्ठु
अपूतिवयणा खलु अरिहंता भगवंतो समणं भगवं महावीरं
वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तपसा अप्पाणं
भांवेमाणे विहरइ ॥१६९-१९६॥

इगचत्तालीसइमं रासिजुम्मसयं समत्तं ॥४१॥ भगवई समत्ता॥

छाया—शुक्लपाक्षिकराशियुग्म कृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत
उत्पद्यन्ते ? एवमत्रापि भवसिद्धिर्क सद्यशा अष्टाविंशतिरुद्देशका भवन्ति एवमेते
सर्वेऽपि पण्णवतीकमुद्देशकशतं १९६ भवति राशियुग्मशचे ॥४१-१९६॥

यावत् शुक्ललेश्याः शुक्लपाक्षिकराशियुग्म कल्योज वैमानिकाः यावत् यदि
सक्रियाः तेनैव भवग्रहणेन सिद्ध्यन्ति यावदन्तं कुर्वन्ति ? नायमर्थः समर्थः ।
तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति भगवान् गौतमः श्रमणं भगवन्तं महावीरं
त्रिकृत्व आदक्षिणपदक्षिणं करोति कृत्वा वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा
एवमवादीत्—एवमेतद् भदन्त ! तथ्यमेतद् भदन्त ! अवितथमेतद् भदन्त ! असं-
दिग्धमेतद् भदन्त ! इच्छितमेतद् भदन्त ! प्रतीच्छितमेतद् भदन्त ! इच्छित-
प्रतीच्छितमेतद् भदन्त ! सत्यः खलु एवोऽर्थः यत् खलु यूयं वदथ इति कृत्वा

अपूर्तिवचनाः खलु अर्हन्तो भगवन्तः श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दते नमस्यति
वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरति ॥४१॥

एकचत्वारिंशत्तमं राशियुग्म शतं समाप्तम् ॥४१॥

भगवती समाप्ता

टीका — 'सुकपक्खिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते । कओ उववज्जंति'
शुक्लपाक्षिकराशियुग्मकृतयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं
नैरयिकेभ्य आगत्य यावदेवेभ्यो वा आगत्य समुत्पद्यन्ते इति पूर्ववदेव प्रश्नः उत्तर-
माह—इहापि पूर्वातिदेशेनैव 'एवं' इत्यादि, 'एवं एत्थ वि भवसिद्धियसरिसा
अट्टावीसं उद्देसगा भवन्ति' एवं पूर्ववदेवात्रापि शुक्लपाक्षिकेऽपि भवसिद्धिक
सदृशा अष्टाविंशतिरुद्देशका भवन्ति चत्वार औघिकाः कृतयुग्मादि चतुष्टय घटिताः

॥ शतक ४१ उद्देशक १६९-१९६॥

'सुकपक्खिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उवव-
ज्जंति' इत्यादि ।

टीकार्थ — 'सुकपक्खिय रासिजुम्म कडजुम्मनेरइयाणं भंते ।
कओ उववज्जंति' राशियुग्म से कृतयुग्मराशिप्रमाण शुक्लपाक्षिक
नैरयिक हे भदन्त ! किस स्थान विशेष से आकरके उत्पन्न होते
हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा
यावत् देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? इस प्रश्न का
उत्तर भी पूर्वातिदेशद्वारा देते हुए भगवान् गौतमस्वामी से
कहते हैं—'एवं एत्थ वि भवसिद्धियसरिसा अट्टावीसं उद्देसगा भवन्ति'
हे गौतम ! पूर्व के जैसे यहां शुक्लपाक्षिक के सम्बन्ध में भी भव-
सिद्धिक नैरयिकादिकों के प्रकरण के जैसे २८ उद्देशक होते हैं । इन

एकसो आगणुसित्तेरमा उद्देशाथी एकसो छन्नु सुधीना उद्देशाओनुं कथन

'सुकपक्खिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' इत्यादि

टीकार्थ — 'सुकपक्खिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति'
राशियुग्ममां कृतयुग्म राशिप्रमाण शुक्लपाक्षिकना नैरयिके हे भगवन् क्या
स्थान विशेषथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? शुं तेओ नैरयिकेमांथी आवीने उत्पन्न
थाय छे ? अथवा तिर्य'अये निकेमांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा भनु
प्येमांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? अथवा देवेमांथी आवीने उत्पन्न थाय
छे ? आ प्रश्नेना उत्तर अतिदेश द्वारा आपतां प्रबुश्री कडे छे के—'एवं एत्थ
वि भवसिद्धियसरिसा अट्टावीसं उद्देसगा भवति' हे गौतम भवसिद्धिकेना
कथन प्रम छे अहियां शुक्लपाक्षिकना संणंधमा पणु २८ अट्टावीस उद्देशाओ

પદ્મલેશ્યા ઘટિતા થતુર્વિંશતિરિત્યેશમષ્ટાવિંશતિરુદ્દેશકા યવન્તિ, 'एवं एए सव्वे वि छन्नउयं उद्देसगसयं भवन्ति रासिजुम्मसए' અષ્ટાવિંશતિરૌધિકાઃ, અષ્ટાવિંશતિ-
 ભવસિદ્ધિકસ્ય, અષ્ટાવિંશત્યયસિદ્ધિકસ્ય સમ્યગ્દષ્ટિ મિથ્યાદષ્ટિ કૃષ્ણપાક્ષિક
 શુક્લપાક્ષિકાનાં સર્વસંકલનયા એવમેતે એવેંડપિ પળ્લવતિકદુદ્દેશકશતં ભવતિ
 રાશિયુગ્મશતે રાશિયુગ્મશતકે દ્વત્ચત્વારિંશતમે સર્વેંડપિ ઉદ્દેશકાઃ પળ્લવત્રયુત્તર-
 શતમમાણા ભવન્તીત્યર્થઃ । 'जाव सुक्कलेस्सा सुक्कपक्खियरासिजुम्मकलियोग-
 में कृतयुग्मादि चार पद घटित चार तो औधिक उद्देशक हैं' और
 कृष्णलेश्यादि ६ लेश्याओं के ४-४ उद्देशक हैं । इस प्रकार सब २४
 उद्देशक हो जाते हैं । 'एवं एए सव्वे वि छन्नउयं उद्देसगसयं भवन्ति
 रासिजुम्मसए' इस प्रकारसे इस राशियुग્म शतक में समस्त उद्देशक
 १९६ हो जाते हैं । इनमें २८ औधिक उद्देशक हैं । भवसिद्धिक नैर-
 यिकों के २८ उद्देशक हैं । अभवसिद्धिक नैरयिकोंके २८ उद्देशक हैं ।
 सम्यग्दष्टि नैरयिकों के २८ उद्देशक हैं । मिथ्यादष्टि नैरयिकों के २८
 उद्देशक हैं शुक्लपाक्षिक नैरयिकों के २८ उद्देशक हैं । और कृष्ण-
 पाक्षिक नैरयिकों के २८ उद्देशक हैं । सब मिलकर ये इस राशियुग્म
 शतक में १९६ उद्देशक हैं ।

‘जाव सुक्कलेस्सा सुक्कपक्खिय रासिजुम्म कलियोग वेमाणिया’
 हे भदन्त ! यावत् राशियुग્म में कलियोज राशिप्रमित शुक्ललेश्या

થાય છે, તેમાં કૃતયુગ્મ વિગેરે ચાર પદો યુક્ત ચાર ઉદ્દેશાઓ ઔધિક ઉદ્દે-
 શાઓ થાય છે, અને કૃષ્ણલેશ્યા વિગેરે છ લેશ્યાઓના ચાર-ચાર ઉદ્દેશાઓ
 થાય છે. બધા મળીને અઠ્યાવીસ ઉદ્દેશાઓ થઈ બીચ છે. ‘एवं एए सव्वे वि
 छन्नउयं उद्देसगसयं भवन्ति रासिजुम्मसए’ આ રીતે આ રાશિયુગ્મ શતકમાં
 બધા મળીને એકસોછન્નુ ઉદ્દેશાઓ થાય છે તેમાં ૨૮ અઠ્યાવીસ ઉદ્દેશાઓ
 છે, ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના ૨૮ અઠ્યાવીસ ઉદ્દેશાઓ છે. અભવસિદ્ધિક નૈર-
 યિકોના સંબંધમાં ૨૮ અઠ્યાવીસ ઉદ્દેશાઓ થાય છે. સમ્યગ્દષ્ટિ નૈરયિકોના
 સંબંધમાં અઠ્યાવીસ ઉદ્દેશાઓ થાય છે. મિથ્યાદષ્ટિ નૈરયિકોના સંબંધમાં
 અઠ્યાવીસ ઉદ્દેશાઓ થાય છે. શુક્લપાક્ષિક નૈરયિકોના સંબંધમાં અઠ્યાવીસ
 ઉદ્દેશાઓ થાય છે અને કૃષ્ણપાક્ષિક નૈરયિકોના સંબંધમાં અઠ્યાવીસ ઉદ્દે-
 શાઓ થાય છે. આ બધા મળીને આ રાશિયુગ્મ શતકમાં ૧૯૬ એકસોછન્નુ
 ઉદ્દેશાઓ થાય છે.

‘जाव सुक्कलेस्सा सुक्कपक्खिय रासिजुम्म कलियोगवेमाणिया’ હે ભગવન્
 યાવત્ રાશિયુગ્મમાં કલ્યોજ રાશિપ્રમાણ શુક્લલેશ્યાવાળા શુક્લપાક્ષિક નૈરયિક

વૈમાણિયા' યાવત્શુક્લલેશ્યા શુક્લપાક્ષિક રાશિયુગ્મ કલ્પયોજ વૈમાણિકાઃ યાવત્પદેન કૃષ્ણલેશ્ય નીલલેશ્ય કાપોતલેશ્ય તેજોલેશ્ય પદ્મલેશ્ય શુક્લપાક્ષિક કૃતયુગ્મત આરભ્ય શુક્લપાક્ષિક રાશિયુગ્મ કલ્પયોજ વૈમાણિકાન્તાનાં પૂર્વવર્તિનાં સંગ્રહો ભવતિ इति । 'જાવ જઈ સકિરિકા તેનેવ ભવગ્રહણેણં સિજ્ઞંતિ-જાવ અંતં કરે'તિ' યાવત્ યદિ સક્રિયા સ્તેનૈવ ભવગ્રહણેન સિદ્ધયન્તિ યાવદન્તં કુર્વન્તિ ? અત્ર પ્રથમ યાવત્પદેન પ્રથમોદ્દેશકીયઃ 'યદિ સક્રિયા' એતત્પૂર્વતન સંપૂર્ણસ્ય પ્રકરણસ્ય સંગ્રહો ભવતિ । દ્વિતીય યાવત્પદેન બુદ્ધયન્તિ મુચ્યન્તે પરિનિર્વાન્તિ સર્વદુઃખાના મિત્યસ્ય પ્રદર્શનં ભવતીતિ સક્રિયાઃ સર્વે તેનૈવ ભવગ્રહણેન સિદ્ધયન્તીત્યાદિ પ્રશ્નઃ, ઉત્તરમાહ-

વાલે શુક્લપાક્ષિક વૈમાણિક 'જાવ જઈ સકિરિયા' યાવત્ યદિ વે સક્રિય હૈ' તો કયા 'તેનેવ ભવગ્રહણેણં સિજ્ઞંતિ' ડસી ભવ સે સિદ્ધ હોતે હૈ 'જાવ અંતં કરે'તિ' યાવત્ સમસ્ત દુઃખોંકા અન્ત કરતે હૈ ? યહાં પ્રથમ યાવત્પદ સે એસા પાઠ ગૃહીત હુઆ હૈ કિ રાશિયુગ્મ મેં કૃષ્ણલેશ્યાવાલે, નીલલેશ્યાવાલે, કાપોતલેશ્યાવાલે, તેજોલેશ્યાવાલે, પદ્મલેશ્યાવાલે કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ પ્રમિત, યોજરાશિ પ્રમાણ પ્રમિત, દ્વાપરયુગ્મરાશિપ્રમાણ પ્રમિત એવં કલ્પયોજ રાશિપ્રમાણ પ્રમિત શુક્લપાક્ષિક તક કે વૈમાણિકદેવ હૈ વે કયા ડમી ભવ ગ્રહણ સે સિદ્ધ હોતે હૈ-યાવત્-બુદ્ધ હોતે હૈ, મુક્ત હોતે હૈ, પરિનિર્વાત હોતે હૈ ઓર સર્વ દુઃખોંકા અન્ત કરતે હૈ ? 'જાવ જઈ સકિરિયા' હસ પાઠ મેં જો યાવત્પદ આયા હૈ ડસસે સક્રિયપદ કે પૂર્વ મેં આગત જો પાઠ હૈ વહ સવ ગૃહીત હુઆ હૈ । યહ પાઠ હસી શતક કે પ્રથમ ઉદ્દેશક મેં આ તુકા હૈ । હસ

'જાવ જઈ સકિરિયા' યાવત્ જો તેઓ ક્રિયા સહિત હોય તો શું 'તેનેવ ભવગ્રહણેણં સિજ્ઞંતિ' એજ ભવમાં સિદ્ધ થાય છે ? 'જાવ અંતં કરે'તિ' યાવત્ સમસ્ત દુઃખોનો અંત કરશે ? અહિયાં પહેલા યાવત્પદથી એવો પાઠ ગ્રહણ કરાયો છે કે-રાશિયુગ્મમાં કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નીલલેશ્યાવાળા કાપોતલેશ્યાવાળા તેજોલેશ્યાવાળા, પદ્મલેશ્યાવાળા જે કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ પ્રમિત, યોજરાશિ પ્રમાણવાળા, દ્વાપરયુગ્મ રાશિપ્રમાણવાળા, અને હવે એજ રાશિપ્રમાણવાળા, શુક્લપાક્ષિક સુધીના વૈમાણિક દેવો છે, તેઓ શું એજ ભવગ્રહણથી સિદ્ધ થઈ જાય છે ? યાવત્ બુદ્ધ થાય છે ? મુક્ત થાય છે ? પરિનિર્વાત થાય છે ? અને સર્વ દુઃખોનો અંત કરે છે ? 'જાવ જઈ સકિરિયા' આ પાઠમાં જે યાવત્પદ આવેલ છે, તેનાથી સક્રિય એ પદની પહેલાં જે પાઠ આવેલ છે, તે સમગ્રો પાઠ ગ્રહણ કરાયો છે, આ પાઠ આ શતકના પહેલા ઉદ્દેશમાં

‘જો ઇળદે સમદે’ નામર્થઃ સમર્થઃ દેશ એતે તેનેવ મવગ્રહણેન ન સિદ્ધયન્તિ દેવાનો સિદ્ધયાવાદિતિ માવઃ । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ તદેવં મદન્ત ! તદેવં મદન્ત ! ઇતિ કથયિત્વા ‘મગવં ગોયમે’ મગવાન્ ગૌતમઃ ‘સમણં મગવં મહાવીરં’ શ્રમણં મગવાન્તં મહાવીરમ્ ‘તિવસુત્તો આયાહિણં પયાહિણં કરેહ’ ત્રિકૃત્વઃ - ત્રિવા-
રમ્ આદક્ષિણં પ્રદક્ષિણં કરોતિ, ‘કરેત્તા’ કૃત્વા ‘વંદહ નમંસહ’ વન્દતે નમસ્યતિ’
વંદિત્તા નમંસિત્તા’ વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા ‘એવં વયાસી’ એવમ્-વક્ષ્યમાણપ્રકારેણ
અવાદીત્-‘એવમેયં મંતે’ એવમેદ્ મદન્ત ! યદ્ દેવાનુમિયેણ કથિતં તત્ એવમેવ
‘તહમેયં મંતે !’ તથ્યં-સત્યમેતદ્ મદન્ત ! ‘અવિતહમેયં મંતે !’ અવિતથમેતદ્ મદન્ત !

પ્રશ્ન કે ઉત્તર મેં પ્રભુશ્રી કહતે હૈં-‘જો ઇળદે સમદે’ હે ગૌતમ ! યહ અર્થ સમર્થિત નહીં હુઆ હૈ । કયોંકિ જો દેવ હોતે હૈં વે હસી મવગ્રહણ સે સિદ્ધ નહીં હોતે હૈં દેવોંકે સિદ્ધિ કા અભાવ રહતા હૈ । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે મદન્ત ! જૈસા આપને યહ કહા હૈ વહ સવ સર્વથા સત્ય હી હૈ ૨ । હસ પ્રકાર કહકર ‘મગવં ગોયમે’ મગવાન્ ગૌતમને ‘સમણં મગવં મહાવીરં’ શ્રમણ મગવાન્ મહાવીરકો ‘તિવસુત્તો આયાહિણં પયાહિણં કરેહ’ ત્રીન વાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ ક્રિયા । ‘કરેત્તા વંદહ, નમંસહ’ આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કરકે વંદના કી, નમસ્કાર ક્રિયા । ‘વંદિત્તા નમંસિત્તા’ વંદના નમસ્કાર કર ફિર ઉન્હોંને પ્રભુશ્રી સે ‘એવં વયાસી’ એસા કહા ‘એવમેયં મંતે ! તહમેયં મંતે ! ‘અવિતહમેયં મંતે ! અસંદિદ્ધમેયં મંતે ! હચ્છિયમેયં મંતે ! પહિચ્છિયમેયં મંતે ! ‘હે મદન્ત ! જૈસા

આવેલ છે, આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-‘જો ઇળદે સમદે’ હે ગૌતમ ! આ અર્થ અસંભવ નથી. કેમ કે-જે સક્રિય હોય છે, તેઓ આજીવન પ્રવૃત્તિથી સિદ્ધ થતા નથી સક્રિયોને-સિદ્ધિની પ્રાપ્તિનો અભાવ રહે છે.

‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ’ હે ભગવન્ આપ દેવાનુમિયે જે પ્રમાણે કથન કરેલ છે, તે સમગ્રું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુમિયનું સમગ્રું કથન સર્વથા સત્ય જ છે આ પ્રમાણે કહીને ‘મગવં ગોયમે’ ભગવાન્ ગૌતમસ્વામીએ ‘સમણં મગવં મહાવીરં’ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને ‘તિવસુતો આયાહિણં પયાહિણં કરેહ’ ત્રણવાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કરી ‘કરેત્તા વંદહ નમંસહ’ આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કરીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા. ‘વંદિત્તા નમંસિત્તા’ વંદના નમસ્કાર કરીને તેઓએ પ્રભુશ્રીને ‘એવં વયાસી’ આ પ્રમાણે કહ્યું ‘એવમેયં મંતે તહમેયં મંતે ! અવિતહમેયં મંતે ! અસંદિદ્ધમેયં મંતે ! હચ્છિયમેયં મંતે ! પહિચ્છિયમેયં મંતે !’ હે ભગવન્ આપ દેવાનુમિયે જે પ્રમાણે કહેલ છે, તે સમગ્રું કથન

હે ભદન્ત ! અવિતર્થ સર્વથૈવ સત્યમિત્યર્થઃ ‘અસંદિગ્ધમેયં મંતે !’ અસંદિગ્ધમ્-
સન્દેહરહિતં યથા મવેત્તથા એતત્ ‘ઈચ્છિયમેયં મંતે !’ ઇચ્છિતમ્ અધિક્ષાપાત્રિપ-
યીભૂતમ્ એતદ્ મવદુક્તમ્ ‘પડિચ્છિયમેયં મંતે’ પ્રતીચ્છિતં પ્રકર્પેનામિલપિતમેતત્ ।
‘ઈચ્છિયપડિચ્છિયમેયં મંતે’ ઇચ્છિત પ્રતીચ્છિતમેતત્ ભદન્ત ! ‘સચ્ચેણં એસમદ્દે’
હે ભદન્ત ! દેવાનુપ્રિયેણ કથિત એવઃ સ્વલુ અર્થઃ સર્વથૈવ સત્યઃ । ‘જળ્ણં તુલ્લમે
વદહ’ યત્ સ્વલુ યુયં વદથ ત્તિ કદ્દુ’ ઇતિ કૃત્વા-કથયિત્વા, ઇત્યર્થઃ, ‘અપૂતિ-
વચના સ્વલુ અરિહંતા મગવંતો’ અપૂતિ વચનાઃ સ્વલુ અર્હન્તો મગવન્તઃ । પૂતિર્દોષઃ
સ ગતો યસ્ય વચનાત્ ઇત્યં ભૂત્વા સ્વીર્થકરા મવન્તિ, એતાવતા વચનાતિશયત્વં વોધિ-
તમ્’ એવં કથનાનન્તરં મગવાન્ ગૌતમઃ ‘સમણં મગવં મહાવીરં વંદહ નમંસહ’ શ્રમણં
મગવન્તં મહાવીરં વંદતે નમસ્વતિ ‘વંદિતા નમંસિતા’ વન્દિત્વા નમસિત્વા ‘સંજમેણ
તપસા અપ્પાણં શાવેપાણે વિહરહ’ સંજમેણ તપસા આત્માનં ભાવયન્ વિહરતીતિ ॥
ઇતિ શ્રી - વિશ્વવિરુપાક્ષજગદ્વલ્લભાદિપદભૂષિતવાલ્મીકીચારિ - ‘જૈનાચાર્ય’
પૂજ્યશ્રી-વાલીલાલવ્રતિવિરચિતાયાં ‘શ્રી મગવતીમૃત્સ્ય’ પ્રમેયચન્દ્રિકાશ્યાયાં
વ્યાખ્યાયાં રાશિયુગ્મશતમેકચત્વારિંશત્તમં શતં સમાપ્તમ્ ॥૪૧॥

॥ મગવતી સમાપ્તા ॥

આપ દેવાનુપ્રિયને કહ્યા હૈ વહ એસા હી હૈ । ‘તહમેયં મંતે’ હે ભદન્ત !
યહ સર્વથા સત્ય હી હૈ । હે ભદન્ત ! યહ અસંદિગ્ધ હી હૈ હે ભદન્ત !
યહ મુજે દ્રષ્ટ હૈ । હે ભદન્ત ! યહ મુજે સ્વીકૃત હૈ । ‘ઈચ્છિયપડિચ્છિય-
મેયં મંતે !’ હે ભદન્ત ! યહ મુજે ઇચ્છિત પ્રતીચ્છિત હૈ । ‘સચ્ચેણં
એસમદ્દે જં ણં તુલ્લમે વદહ’ હે ભદન્ત ! જો આપ દેવાનુપ્રિયને કહ્યા હૈ એસા
યહ અર્થ સર્વથા સત્ય હી હૈ ‘ત્તિ કદ્દુ’ એસા કહકર ગૌતમને ‘અપૂતિ
વચના સ્વલુ અરિહંતા’ અર્હન્ત મગવન્ત નિર્દોષ વચનવાલે હોતે હૈ હસ
લિયે ‘સમણં મગવં મહાવીરં વંદહ નમંસહ’ શ્રમણ મગવાન્ મહાવીર કો

તેમ જ છે. ‘તહમેયં મંતે !’ હે ભગવન તે સર્વથા સત્ય જ છે હે ભગવન આ
કથન અસંદિગ્ધ જ છે. સંદેહ વગરનું છે. હે ભગવન તે મને ઈષ્ટ છે હે ભગવન
તે કથન મને સ્વીકાર્ય છે. ‘ઈચ્છિયપડિચ્છિયમેયં મંતે !’ હે ભગવન તે મને
ઈચ્છિત પ્રતિષ્ઠિત છે. ‘સચ્ચેણં એસમદ્દે જં ણ તુલ્લમે વદહ’ હે ભગવન આપ
દેવાનુપ્રિયે જે કહેલ છે, તે તેમજ છે, અર્થાત્ સર્વથા સત્ય જ છે. ‘તિકદ્દુ’
આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ ‘અપૂતિવચના સ્વલુ અરિહંતા’ અર્હન્ત ભગવાન
નિર્દોષ વચનવાળા હોય છે, તેથી ‘સમણં મગવં મહાવીર વંદહ નમંસહ’

वन्दना की नमस्कार क्रिया । 'वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ' वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
 "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके एकतालीसवां
 राशियुग्म शतक समाप्त ॥४१॥

॥ भगवतीसूत्र का अनुवाद समाप्त हुआ ॥

श्रमणु भगवन भडावीरने वंदना करी नमस्कार कर्या 'वंदित्ता नमंसित्ता' वंदना नमस्कार करीने 'संजमेणं तवसा अप्पाणं भावे माणे विहरइ' संयम अने तपथी पोताना आत्माने भावित करता थका पोताना स्थान पर गिराजमान थया.

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराजकृत 'भगवतीसूत्र'नी प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याना एकतालीसवुं राशियुग्म शतक समाप्त ॥४१॥

॥ भगवती सूत्रने अनुवाद समाप्त ॥



અથ શાસ્ત્રપ્રશસ્તિ પ્રરૂપયન્ પૂર્વ શાસ્ત્રસ્ય શતકાનામુદ્દેશકાનાં ચ પરિમાણ-
માહ-‘સઘ્વા.૯’ ઇત્યાદિ,

મૂળમ્-સઘ્વા.૯ ભગવર્દ્વ.૯ અઢ્ઢતીસં સતં સયાણં ૧૩૮ ઉદ્દે-
સગાણં ઇગૂણવીસઈ પંચવીસાઈં સયાઈં ૧૯૨૫॥

છાયા—સર્વસ્યા ભગવત્યા અષ્ટત્રિંશં શતં શતાનામ્ ઉદ્દેશકાનામ્ ઇકોન-
વિંશતિઃ પચ્ચવિંશાનિ શતાનિ ૧૯૨૫॥

ટીકા—‘સઘ્વા.૯ ભગવર્દ્વ.૯’ સર્વસ્યા ભગવત્યાઃ સર્વસ્ય ભગવતીસૂત્રસ્ય ‘અઢ્ઢ-
તીસં સયં સયાણં’ શતાનાં શતકાનામ્ અષ્ટત્રિંશમ્-અષ્ટત્રિંશદધિકં શતં ૧૩૮
ભવતિ । અત્ર ભગવત્યાઅષ્ટત્રિંશદધિક શતસંખ્યકાનિ ૧૩૮ શતકાનિ
સન્તીતિ । તથાહિ-પ્રથમાદારમ્બ્ય દ્વાત્રિંશત્પર્યન્તાનિ શતકાનિ અવાન્તરશતક-
રહિતાનિ ૩૨ ત્રયસ્ત્રિંશત્તમશતકાદારમ્બ્ય ઇકોનચત્વારિંશત્તમશતકં યાવત્ સમ્પ્તુ
શતકેષુ પ્રતિશતકં દ્વાદશ દ્વાદશ અવાન્તર શતકાનીતિ ચતુરશીતિઃ
શતકાનિ ૮૪ । ચત્વારિંશત્તમશતકે ઇકવિંશતિઃ શતકાનિ ૨૧, ઇકચત્વારિંશત્તમે

શાસ્ત્ર પ્રશસ્તિ કી પ્રરૂપણા કરતે હુણ સૂત્રકાર પહિલે હસ શાસ્ત્ર
કે શતકોં કા પરિમાણ પ્રકટ કરતે હૈ—

‘સઘ્વા.૯ ભગવર્દ્વ.૯ અઢ્ઢતીસં સતં સયાણં ઉદ્દેસગાણં ઇગૂણવીસઈ
પંચવીસાઈં સયાઈં’ હસ સમસ્ત ભગવતી શાસ્ત્ર કે ૧૩૮ શતક હૈ ।
હનકી ગણના હસ પ્રકાર સે હૈ—પ્રથમ શતક સે લેકર ૩૨ વૈ શતક તક
અવાન્તર શતક નહીં હૈ । ૩૩ વે શતક સે લેકર ૩૯ વે શતક તક કે
૭ શતકોં મૈં ૧૨-૧૨ અવાન્તર શતક હૈ । હસ પ્રકાર ૮૪ શતક હૈ ।
૪૦ વે શતક મૈં ૨૧ અવાન્તર શતક હૈ । ૪૧ વે શતક મૈં અવાન્તર

શાસ્ત્ર પ્રશસ્તિ

શાસ્ત્ર પ્રશસ્તિની પ્રરૂપણા કરતાં સૂત્રકાર સૌથી પહેલાં શાસ્ત્રના શતકો
અને ઉદ્દેશાઓના પ્રમાણનું કથન પ્રગટ કહે છે.—‘સઘ્વા.૯ ભગવર્દ્વ.૯ અઢ્ઢતીસં
સતં સયાણં, ઉદ્દેસગાણં ઇગૂણવીસઈં પંચવીસાઈં સયાઈં’ આ સંપૂર્ણ ભગવતી
સૂત્રના ૧૩૮ એકસોઆઠત્રીસ શતકો કહ્યા છે તેની ગણતરી આ પ્રમાણે છે.
પહેલા શતકથી આરંભીને બત્રીસમા શતક સુધીમાં અવાન્તર શતકો આવતા
નથી ૩૨ બત્રીસમા શતકથી ૩૬ ઓગણચાળીસમા શતક સુધી ૭ સાત
શતકોમાં ૧૨-૧૨ બાર બાર અવાન્તર શતકો આવે છે. આ રીતે ૮૪ ચોર્યાશી
શતકો થઈ જાય છે, ચાળીસમા શતકમાં ૨૧ એકવીસ અવાન્તર શતકો કહ્યા

શતકે તુ અવાન્તરશતકં નાસ્તીત્યેવમેકમેવ શતકમ્ ૧, તદેવં-૩૨-૮૪=૨૧=૧ સર્વસંકલનયા અઘટત્રિશદધિકમેકં શતં (૧૩૮) શતકાનાં ભવતિ । તથા-‘ઉદેશગાણં’ ઉદેશકાનામ્-‘અગૂણવીસઈ પંચવીસાઈં સયાઈં’ પશ્ચવિંશત્યધિકાનિ ઇકોનવિંશતિઃ શતાનિ ૧૯૨૫ ભવન્તીતિ ॥

અથોપસંહરન્ ભગવતીસૂત્રસ્થિતપદાનાં સંખ્યાપ્રતિપાદિકાં ગાથામાદ-‘ચુલસીઈ’ इत्यादि ।

મૂલમ્-ચુલસીઈ સય સહસ્સા, પયાણ પવરવરનાણદંસીઈં ।

ભાવાભાવમળંતા, પન્નત્તા एत्थ મંગંમિ ॥૧॥

છાયા-ચતુરશીતિ શતસહસ્રાણિ, પદાનાં પ્રવરવરજ્ઞાનદર્શિભિઃ ।

ભાવાભાવા અનન્તાઃ, પ્રજ્ઞપ્તા અત્રાકે ॥૧॥

ટીકા-‘ચુલસીઈ સયસહસ્સા પયાણ પવરવરનાણદંસીઈં’ ચતુરશીતિ શત પ્રવરવરજ્ઞાનદર્શિભિઃ પ્રજ્ઞપ્તાનિ અસ્મિન્-ભગવત્પાઠ્ય પશ્ચમાજ્ઞે પદાનિ ચતુર-શીતિ શતસહસ્રાણિ વિચ્યન્તે इति પદાનિ વિશિષ્ટસંપ્રદાયગમ્યાણિ પ્રવરાણાં વરં યજ્ઞજ્ઞાનં તેન જ્ઞાનેન પશ્યન્તીતિ પ્રવરવરજ્ઞાનદર્શિન રતૈઃ કેવલિભિરિત્યર્થઃ

શતક નહીં હૈં । એક હી શતક હૈં । હસ પ્રકાર ૩૨-૮૪-૨૧ ચે સચ મિલકર ૧૩૮ શતક હોતે હૈં । તથા ઉદેશકો કી સંખ્યા ૧૯૨૫ હૈં ।

અથ ભગવતીસૂત્ર સ્થિત પદોં કી સંખ્યા પ્રતિપાદક ગાથાકા કથન સૂત્રકાર કરતે હૈં--

‘ચુલસીઈ સયસહસ્સા પયાણ પવરવરનાણ દંસીઈં ।

ભાવાભાવ મળંતા પન્નત્તા एत्थ મંગંમિ ॥૧॥

હસ ભગવતી નામકે પંચમ અઙ્ગ મેં પદોં કી સંખ્યા કેવલી ભગ-વન્તોને ૪૪ લાખ કહી હૈં । યહ પદોં કી સંખ્યા વિશિષ્ટ સંપ્રદાય ગમ્ય

છે. તથા ૪૧ એકતાળીસમા શતકમાં અવાન્તર શતકો થતા નથી. એક જ શતક છે. આ રીતે ૩૨-૮૪-૨૧-૧ આ બધા મળીને કુલ ૧૩૮ એકસોને આઠત્રીસ શતકો થઈ જાય છે. તથા ઉદેશાઓની સંખ્યા કુલ ૧૯૨૫ એક હજાર નવસો પચીસની કહેલ છે.

હવે ભગવતી સૂત્રમાં કહેલ પદોની સંખ્યાનું પ્રતિપાદન કરનાર ગાથાનું સૂત્રકાર કથન કરે છે.--

‘ચુલસીઈ સયસહસ્સા પયાણ પવરવરનાણદંસીઈં ।

ભાવાભાવમળંતાં પન્નત્તા एत्थ મંગંમિ ॥૧॥

આ ભગવતી સૂત્ર નામના પાંચમા અંગમાં પદોની સંખ્યા કેવલી ભગવાનોએ ૮૪ ચોર્યાશીલાખ કહેલ છે. આ પદોની સંખ્યા વિશેષ સંપ્ર-

મજ્જપ્તાનીતિ યોગઃ । इदमतेस्य सूत्रस्य पदपरिमाणं कथितम् अथार्थ स्वरूपमाह—
'भावाभावमणंता' भावाः जीवादयः पदार्थाः अभावाश्च ते एव जीवादयः अन्या-
पेक्षया इति भावाभावाः, अथवा भावा विधयः अभावा निषेधा इति भावाभावाः
ते च भावाभावाः अनन्ताः 'एत्थ मंगंमि अत्र अस्मिन्-भगवतीनामके पञ्चमाङ्गे
अथवा भावाभावैः विषय भूतैरनन्तानि इति भावानन्तानि चतुरशीति शतसहस्राणि
पदानि मज्जपत्तानीति गार्थार्थः ॥१॥

મૂળમ્—પળણત્તીએ આહમાણં અટ્ટપહં સયાણં દો દો ઉદેસગા
ઉદ્દિસિજ્જંતિ । णवरं चउत्थे सए पढमदिवसे अट्ठ, वित्ति-
दिवसे दो उद्देसगा उद्दिसिज्जंति । णवमाओ सयाओ आरद्धं
जावइयं जावइयं पवेइ तावइयं तावइयं एगदिवसेणं उद्दि-
सिज्जइ, उक्कोसेणं सयं पि एगदिवसेणं, मज्झिसेणं दोहिं दिव-
सेहिं सयं, एवं जाव वीसइमं सयं, णवरं गोसालो एगदिवसेणं
उद्दिसिज्जइ । जइ ठिओ एगेण चेव आयंविलेणं अणुन्नच्चइ ।
अहणं ठिओ आयंविलेणं छट्ठेणं अणुपणच्चइ । एकवीस-
वावीस-तेवीसमाइं सयाइं एक्केक दिवसेणं उद्दिसिज्जंति । चउ-
वीसइमं सयं दोहिं दिवसेहिं छ छ उद्देसगा । पंचवीसइमं दोहिं
दिवसेहिं छ छ उद्देसगा । वंधिसयाइं अट्ठसयाइं एगेणं दिव-
सेणं, सेढिसयाइं वारस एगेणं, एगिंदिय महाजुम्मसयाइं वारस
एगेणं । एवं वेदियाणं वारस, तेइंदियाणं वारस, चउरिंदियाणं

है । तथा भगवती सूत्र में जीवादिरूप भावपदार्थ एवं अन्य की अपेक्षा
से अभाव रूप वे ही जीवादिरूप अभाव पदार्थ अथवा भाव-विधि और
अभाव-निषेध रूप भावाभाव अनन्त कहे हैं । अथवा विषयभूत भावा-
भावों से अनन्त चौरासी लाख पद कहे गये हैं । ऐसा यह गार्थार्थ है ।

દાયથી જાણી શકાય છે. તથા આ ભગવતી સૂત્રમાં જીવાદિરૂપ ભાવ પદાર્થ
અથવા ભાવ વિધિ અને અભાવ નિષેધરૂપ ભાવાભાવ અનન્ત કહેલ છે.
અથવા વિષયરૂપ ભાવાભાવોથી અનન્ત ચોર્યાશીલાખપદો કહેવામાં આવેલ છે.
આ પ્રમાણે આ ગાથાનો અર્થ થાય છે.

ચારસ એગે વા । અસન્નિ પંચિદિયમહાજુમ્મસયાઈં એકવીસં
એગદિવસેણં ઉદિસિજ્જંતિ । રાસિજુમ્મસયં એગદિવસેણં ઉદિસિજ્જંતિ ।

છાયા-પ્રજ્ઞપ્ત્યામ્ આદિમાનામ્ અષ્ટાનાં શતકાનાં દ્વી દ્વી ઉદેશકૌ ચ ઉદિ-
શ્યેતે, નવરં ચતુર્થે શતકે પ્રથમદિવસે અષ્ટ, દ્વિતીય દિવસે દ્વી ચ ઉદિશ્યન્તે ।
નવમાત્ શતકાત્ આરબ્ધં યાવત્કં યાવત્કં પ્રવેચને તાવત્કં તાવત્કમ્ એકદિવસેન
ઉદિશ્યતે, ઉત્કર્ષેણ શતકમપિ એકદિવસેન, મધ્યમેન દ્વાભ્યાં દિવસાભ્યાં શતકમ્
એવં યાવત્ વિંશતિતમં શતકમ્, નવરં ગોશાલમ્ (અધ્યયનમ્) એકદિવસેન ઉદિશ્યતે
યદિ સ્થિતઃ એકેનૈવ આચામામ્હેન અનુજ્ઞાપ્યતે । અથ સ્થિતઃ આચામામ્હેન
પષ્ઠેન અનુજ્ઞાપ્યતે એકવિંશદ્વાવિંશત્રયોવિંશતિતમાનિ શતકાનિ એકેકદિવસેન
શ્રેણિશતકાનિ દ્વાદશ એકેન એકેન્દ્રિયમહાયુગ્મશતકાનિ દ્વાદશ એકેન । એવં
દ્વીન્દ્રિયાણાં દ્વાદશ, ત્રીન્દ્રિયાણાં દ્વાદશ, ચતુરિન્દ્રિયાણાં દ્વાદશ એકેન । અસંજ્ઞિ-
પન્દ્રિયાણાં દ્વાદશ, સંજ્ઞિ પન્દ્રિયમહાયુગ્મ શતકાનિ એકવિંશતિઃ એકદિવસેન
ઉદિશ્યન્તે । રાશિયુગ્મશતકમ્ એકદિવસેન ઉદિશ્યન્તે ॥

ટીકા-કસ્મિન્ દિને કતિ ઉદેશકા ઉદિશ્યન્તે इत्याह-‘પન્નત્તીએ’ પ્રજ્ઞપ્ત્યામ્
‘આહમાણં અટ્ઠહં સયાણં’ આધ્યાનામષ્ટાનાં શતાનામ્ ‘દો દો ઉદેસગા ઉદિસિજ્જંતિ
દ્વી દ્વી ઉદેશકૌ ઉદિશ્યન્તે ‘નવરં’ ચતુર્થે સપ્ત પદમદિવસે અટ્ઠ’ નવરં વિશેષસ્ત્વયં
‘ચતુર્થે શતકે પ્રથમદિવસે અષ્ટ ઉદેશકા ઉદિશ્યન્તે તથા ‘વિતીયદિવસે દો ઉદેસગા
ઉદિસિજ્જંતિ’ દ્વિતીયદિવસે દ્વી ઉદેશકૌ ઉદિશ્યન્તે ‘નવમાઓ સયાઓ આરબ્ધં’
‘પણ્ણત્તીએ આહમાણં અટ્ઠહં સયાણં દો દો ઉદેસગા ઉદિસિજ્જંતિ’ હ.

ટીકાર્થ—એકદિન મેં કિતને ઉદેશક ઉપદિષ્ટ હોતે હૈં હસકે લિયે
કહા ગયા હૈં કિ પ્રજ્ઞપ્તિ મેં આદિ કે આઠ શતકોં કે દો દો ઉદેશક એક
એકદિન મેં ઉપદિષ્ટ હોતે હૈં । પરન્તુ ‘ચતુર્થે સપ્ત પદમદિવસે અટ્ઠ’ પહેલે
દિન ચતુર્થ શતક કે આઠ ઉદેશક ઓર દૂસરે દિન દો ઉદેશક ઉપદિષ્ટ
હોતે હૈં । ‘નવમાઓ સયાઓ આરબ્ધં જાવહયં ૨ પવેહ તાવહયં ૨ એગ

‘પણ્ણત્તીએ આહમાણં અટ્ઠહં સયાણં દો દો ઉદેસગા ઉદિસિજ્જંતિ’
इत्यादि सूत्र एकदिवसमां कटला उद्देशाञ्चोना उपदेश करी शक्य छे ?
आ प्रश्नना उत्तरमां कहेल छे के-प्रज्ञप्तिमां पहेला आठ शतकेना अप्पणे
उद्देशाञ्चो एक एक दिवसमां उपदेश आपी शक्य छे अर्थात्
पहेला आठ शतकेना अप्पणे उद्देशाञ्चोतुं कथन हरदेश करी शक्य
छे. परन्तु ‘चतुर्थे सप्ट पदमदिवसे अट्ठ’ पहेला दिवसे यथा शतकेना
आठ उद्देशाञ्चो अने भील दिवसे ते उद्देशाञ्चो उपदेश आपी शक्य छे,

નવમાત્ શતાદારબ્ધમ્ 'જાવહ્યં જાવહ્યં' યાવતિકં યાવતિકં યાવત્
'પવેહ્' પ્રવેદયતિ-પ્રવેદયતિ-શક્યતે 'તાવહ્યં તાવહ્યં' તાવત્પમાણમ્ તાવત્પ-
માણમ્ 'એગદિવસેણં' એકદિવસેન 'ઉદ્દિસિજ્જહ' ઉદ્દિશ્યતે નવમશતાદારબ્ધ
અગ્રે યાવત્પમાણં વ્યાખ્યાતું શક્યતે તાવત્પમાણં યથેચ્છં વ્યાખ્યાતવ્યમિ-
તિભાવઃ । કિયત્પર્યન્તં વ્યાખ્યાતવ્યમિત્યાહ-'ઉકોસેણં સયંપિ એગદિવસેણં'
ઉત્કર્ષેણ પરિપૂર્ણં શતમપિ એકદિવસેન 'મઙ્ગિમેણં' મધ્યમેન મધ્યમતયા 'દોહિં
દિવસેહિં સયં' દ્વાભ્યાં દિવસાભ્યાં શતમ્ 'ઉદ્દિસિજ્જહ' ઉદ્દિશ્યતે 'જહન્નેણં
તિહિં દિવસેહિં સયં' જઘન્યેન ત્રિભિર્દિવસૈઃ શતકમુદ્દિશ્યતે 'એવં જાવ વીસહમં
સયં' એવં યાવત્ વિંશતિતમં શતકં વિંશતિતમશતક પર્યન્ત મુદ્દિશ્યતે 'નવરં' વિશેષ-
સ્તવ્યમ્ 'ગોસાલો એગદિવસેણં ઉદ્દિસિજ્જહ' ગોશાલકશતં પશ્ચદશમ્ એકદિવસેન
ઉદ્દિશ્યતે 'જહ ઠિઓ' યદિ સ્થિતઃ યદિ ગોશાલકાધિકારઃ સ્થિતઃ અવશિષ્ટો ભવે-

દિવસેણ ઉદ્દિસિજ્જહ' તથા નીચે શતક સે લેકર આગે જિતના જિતના
એકદિન મેં કહા જા સકે ઉતના ઉતના હચ્છાનુસાર ઉપદિષ્ટ કરના
ચાહિયે-વ્યાખ્યાન મેં કહના ચાહિયે । હસ પ્રકાર યદિ એકદિન મેં બી
ઉત્કૃષ્ટ રૂપ સે એન પૂરા શતક વ્યાખ્યાત ઉપદિષ્ટ હો સકતા હો તો
વ્યાખ્યાત કર દેના ચાહિયે ઓર મધ્યમ રૂપ સે યદિ વહ દો દિન મેં
ઉપદિષ્ટ હો સકતા હો તો ઉસે દો દિન મેં બી ઉપદિષ્ટ કર દેના
ચાહિયે ઓર જઘન્ય સે ઉસે ત્રીન દિન મેં બી ઉપદેશ મેં કહ દેના ચાહિયે
'એવં જાવ વીસહમં સયં' એસા યહ શતક કે ઉપદિષ્ટ હોને કા કથન
વીસવેં શતક તક કહા ગયા જાનના ચાહિયે । પરંતુ 'ગોસાલો એગ-
દિવસેણં ઉદ્દિસિજ્જહ, પન્દરહવાં જો ગોશાલક શતક હૈં ઉસકા તો

'નવમાઓ સયાઓ આરબ્ધં જાવહ્યં ૨ તાવહ્યં ૨ એગદિવસેણં ઉદ્દિસિજ્જહ' તથા
નવમા શતકથી લઈને આગળ જેટલા જેટલા ઉદ્દેશાઓ એક દિવસમાં કહી શકાય
જેટલા જેટલા ઉદ્દેશાઓ ઈચ્છા પ્રમાણે કહેવા નેઈએ.-અર્થાત્ વ્યાખ્યાનમાં
કથન કરવા નેઈએ. આ રીતે જો એકદિવસમાં પણ ઉત્કૃષ્ટ રૂપથી એક શતક
પૂરેપૂરું વ્યાખ્યાનમાં કહી શકાય તેમ હોય તો પૂરેપૂરા એક શતકનો ઉપદેશ
કહેવો નેઈએ. અર્થાત્ ઉપદેશ આપવો નેઈએ. અને મધ્યમ પણથી જો તે
જો દિવસમાં ઉપદેશ કહી શકાય તેમ હોય તો જો દિવસમાં પણ તેનો ઉપદેશ
આપવો. અને જઘન્યથી ત્રણ દિવસમાં પણ ઉપદેશ રૂપે કહેવા નેઈએ. 'એવં
જાવ વીસહમં સયં' આ રીતે આ શતકોનો ઉપદેશ આપવા સંબંધી કથન
વીસમા શતક સુધી કહેલ છે. તેમ સમજવું. પરંતુ 'ગોસાલો એગદિવસેણં
ઉદ્દિસિજ્જહ' પંદરમુ જે ગોશાલક શતક છે, તેનો ઉપદેશ-વ્યાખ્યાન એક જ

તત્તા 'એણે ચેવ આયંવિલેણં' એકનૈવ આચામામ્ભેન એકમાચામામ્ભં કૃત્વા દ્વિતીય દિવસે 'અણુન્નચ્ચહ' અનુજ્ઞાપ્યતે ઉદિશ્યતે 'અહ ણં' અથ સ્વલ્લુ પુનરપિ ચ યદિ 'ઠિઓ' સ્થિતઃ અવશિષ્ટો મયેત્તદા સઃ 'આયંવિલેણ છદ્દેણ અણુણ્ણચ્ચહ' આચામામ્ભેન પષ્ઠેન-આચામામ્ભ દ્વયેન તૃતીય દિવસે અનુજ્ઞાપ્યતે ઉદિશ્યતે 'એકવીસ વાવીસ તેવીસ હમાઈં સયાઈં એકેકદિવસેણં ઉદિસિજ્જાંતિ' એકવિંશતિ-દ્વાવિંશતિ-ત્રયો-વિંશતિ-તમાનિ શતકાનિ એકદિવસેનૈવ ઉદિશ્યન્તે । 'ચત્તવીસહમં સયં દોહિં દિવસેહિં' છ છ ઉદેસગા' ચતુર્વિંશતિતમં શતકં દ્વામ્યાં દિવસાભ્યાં પદ પટ્ટુ ઇતિ દ્વિપદ્મલેખને દ્વાદશ ભવન્તિ, તેન મત્યેક દિવસે દ્વાદશેતિ દ્વામ્યાં દિવસાભ્યાં ચતુ-ર્વિંશતિરુદેશકા ઉદિશ્યન્તે, इत्यर्थो बोध्यः, ચતુર્વિંશતિતમશતકે ચતુર્વિંશત્યુદેશ-કાનાં સદ્ભાવાત્ 'પંચવીસહમં સયં દોહિં દિવસેહિં' છ-છ ઉદેસગા' પશ્ચવિંશતિતમં

વ્યાખ્યાન ઉપદેશ એક હી દિન મેં કરના યાહિયે । યદિ વહ કુછ યાકી યચા રહતા હૈ તો ડસકા એક આયંબિલકરકે દૂસરે દિન ઉપદેશ કરના યાહિયે । ફિર મી યદિ વહ યાકી યચા રહતા હૈ તો દો આયંબિલકરકે તૃતીય દિન ડસકા ઉપદેશ કરના યાહિયે 'એકવીસવાવીસ તેવીસ હમાઈં સયાઈં એકેકદિવસેણં ઉદિસિજ્જાંતિ' ૨૧ વાં શતક, ૨૨ વાં શતક એવં ૨૩ વાં શતક હનકા ઉપદેશ એક એક દિન મેં કરના યાહિયે 'ચત્તવીસહમં સયં દોહિં દિવસેહિં ૬-૬ ઉદેસગા' ચોવીસ વેં શતકકા એકદિન મેં છ-છ ઉદેશકોં કો લેકર વ્યાખ્યાન કરના યાહિયે હસ પ્રકાર એકદિન મેં ૧૨ ઉદેશકોં કા વ્યાખ્યાન હો યાતા હૈ । હસી પ્રકાર દો દિન મેં હસકે ૨૪ ઉદેશકોં કા વ્યાખ્યાન હો યાતા હૈ ।

દિવસમાં કરી લેવો. જોઈએ. એક દિવસમાં ઉપદેશ કરતાં જો કદાચ ખાડી રહી જાય તો એક આયંબિલ કરીને બીજો દિવસે તેનું વ્યાખ્યાન-ઉપદેશ કરી લેવો જોઈએ. તો પણ જો ખાડી રહી જાય તો બે આયંબિલ કરીને બીજો દિવસે તેનું કથન કરવું જોઈએ. 'એકવીસવાવીસતેવીસહમાઈં સયાઈં એકેકદિવસેણં ઉદિસિજ્જાંતિ' ૨૧ એકવીસનું શતક ૨૨ બાવીસનું શતક અને ૨૩ તેવીસનું શતક આને ઉપદેશ એક એક દિવસે કરી લેવો જોઈએ. 'ચત્તવીસહમં સયં દોહિં દિવસેહિં' છ છ ઉદેસગા' ચોવીસના શતકના એકદિવસમાં છ છ ઉદેશજો લઈને ઉપદેશ કરવો જોઈએ. આ રીતે એક દિવસમાં ૧૨ બાર ઉદેશજોનું કથન થઈ જાય છે. આજ પ્રમાણે બીજો દિવસે પણ બાર ઉદેશજોનું વ્યાખ્યાન કરી લેવું જોઈએ. આ પ્રમાણે બે દિવસમાં તેના ૨૪ ચોવીસ ઉદેશજોનું વ્યાખ્યાન થઈ જાય છે. ચોવીસના શતકમાં ૨૪ ચોવીસ

शतकं द्वाभ्यां दिवसाभ्यां षट् षट् उद्देशकानुद्दिश्य उपदिश्यन्ते । 'बन्धिसयाइं अट्ट-
सयाइं एगेणं दिवसेणं' बन्धिशतकाष्टशतानि एकेन दिवसेनोपदिश्यन्ते 'सेदि-
सयाइं बारस एगेणं' श्रेणि शतानि द्वादश एकेन दिवसेनोपदिश्यन्ते । 'एगिंदिय
महाजुम्मसयाइं बारस एगेणं' द्वादश एकेन्द्रिय महायुग्मशतानि एकदिवसेनोपदि-
श्यन्ते । 'एवं वे'दियाणं बारस' एवं द्वीन्द्रियाणां द्वादशशतानि 'तेइंदियाणं
बारस चउरिंदियाणं बारसएगेणं' त्रीन्द्रियाणां द्वादशशतानि चतुरिन्द्रियाणां
द्वादशशतानि एकेन दिवसेनोपदिश्यन्ते 'असन्निपंचिदियाणं बारस सन्निपंचिदिय-
महाजुम्म सयाइं एकवीसं एगदिवसेण उद्दिसिज्जंति' असंज्ञिपञ्चेन्द्रियाणां द्वादश

चौबीसवे शतक में २४ उद्देशक हैं । 'पंचवीसइमं सयं दोहिं दिवसेहिं'
छ छ उद्देशगा पञ्चीसवे शतकका व्याख्यान ५-६ उद्देशको को लेकर २
दिनमें करना चाहिये । 'बन्धिसयाइं अट्टसयाइं एगेणं दिवसेणं' बन्धिशतक
आदि आठ शतों का व्याख्यान एकदिनमें करना चाहिये । 'सेदिसयाइं
बारस एगेणं' श्रेणि शत आदि १२ शतों का व्याख्यान एकदिन में करना
चाहिए । 'एगिंदिय महाजुम्मसयाइं बारस एगेणं' एकेन्द्रिय के १२ महायु-
ग्म शतों का व्याख्यान एकदिन में करना चाहिए । 'एवं वे'दियाणं बारस'
दोइन्द्रिय के १२ महायुग्म शत तेइन्द्रियके १२ महायुग्म चौइन्द्रियों के
४१ महायुग्मशत और असंज्ञी पञ्चेन्द्रियों के ४१ महायुग्मशत एवं संज्ञी

उद्देशात्थो क्ख्वा छे. 'पंचवीसइमं सयं दोहिं दिवसेहिं छ छ उद्देशगा' पञ्चीसमा
शतकेतुं व्याख्यात छ छ उद्देशात्थो लधने २ जे दिवसमां क्खेवुं लेधत्थे.
'बन्धिसयाइं अट्टसयाइं एगेणं दिवसेणं' बन्धिशतक विगेरे आठ शतकेतुं व्या-
ख्यात अेक ७ दिवसे क्खेवुं लेधत्थे. 'सेदिसयाइं बारस एगेणं' श्रेणिशतक
विगेरे बार शतकेतुं व्याख्यात अेक ७ दिवसमां करवुं लेधत्थे 'एगिंदिय
महाजुम्मसयाणं बारस एगेणं' ८ अेकेन्द्रियोना १२ बार महायुग्म शतकेतुं
व्याख्यात अेक ७ दिवसमां करवुं लेधत्थे. 'एवं वे'दियाणं बारस' जे इन्द्रिय
वाणा लुवेना संअंधना १२ बार महायुग्म शतके, त्रय इन्द्रियवाणा लुवेना
संअंधमां १२ महायुग्म शतके, चार इन्द्रियवाणा लुवेना संअंधमां १२
बार महायुग्म शतके, तथा पांच इन्द्रियवाणा लुवेना संअंधमां १२ बार
महायुग्म शतके अने संज्ञी पञ्चेन्द्रियना संअंधमां २१ अेकवीस महायुग्म

શતાનિ તથા સંજિપશ્ચેન્દ્રિયમહાયુગ્મશતાનિ એકત્રિંશતિરેકદિવસેનોપદિશ્યન્તે ।
 ‘રાસીજુમ્મસયં એગદિવસેનં ઝદિસિજ્જઈ’ રાશિયુગ્મશતમેકચત્વારિંશં શતકં
 સમગ્રમપિ એકદિવસેન ઉપદિશ્યતે इति ।

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्बल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
 कलितकलितकलापालापकपविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,
 वादिमानमर्दक-श्रीशाहूरुछत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
 ‘जैनाचार्य’ पदभूषित—कोल्हापुरराजगुरु-
 बालब्रह्मचारि — जैनाचार्य — जैनधर्मदिवाकर
 -पूज्यश्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री “भग-
 वतीसूत्रस्य ” प्रमेयचन्द्रिकाख्या

व्याख्या समाप्ताः

॥ भगवती सम्पूर्णा ॥

પશ્ચન્દ્રિય કે ૪૧ મહાયુગ્મ શત થે સઘ મહાયુગ્મ શત એક એક દિન મેં
 ઉપદિષ્ટ કરદેના ચાહિએ તથા રાશિયુગ્મ શત ૪૧ વાં શતક પૂરા કા
 પૂરા એક દિન મેં ઉપદિષ્ટ કરના ચાહિએ ।

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજીમહારાજકૃત
 “ભગવતીસૂત્ર” કી પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યા સમાપ્ત ।

ભગવતી સૂત્ર સમાપ્ત ॥

શતક આ મહાયુગ્મ શતકોનું કથન એક એક દિવસમાં કરી લેવું બાધ એ.
 તથા રાશિયુગ્મ શતક ૪૧ એકતાળીસમાં શતકનું વ્યાખ્યાન પૂરેપૂરું એક જ
 દિવસમાં કરી લેવું બાધ એ. આ પ્રમાણે આ શાસ્ત્ર પ્રશસ્તિ કહેલ છે.

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર શ્રી પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત
 ‘ભગવતીસૂત્ર’ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યા સમાપ્ત ॥

॥ ભગવતીસૂત્ર સમાપ્ત ॥

ઓં શાન્તિઃ શાન્તિઃ શાન્તિઃ

॥ શ્રી સ્તુતે ॥

શ્રી મહા ઘાસીલાલ મુનીશ્વરો વિજયેતેતરામ



